मिलने का पता
विजयकृष्ण लखनपाल
८/२४, आसफ अली रोड
नई दिल्ली-१

मुद्रक — जयपद प्रेस, दिल्ली

विषय-सूची

(इस पुस्तक मे औषधिया अग्रेजी के अक्षर-क्रम के अनुसार दी गई हैं, हिन्दी के अक्षर-क्रम से नहीं, इसलिये इस सूची मे भी अग्रेजी का ही अक्षर-क्रम रखा गया है। औषधियों के पूरे नाम दिये गये हैं, परन्तु व्यवहार मे पूरे नाम का प्रयोग नहीं होता। उदाहरणार्थ, 'आर्निका मोन्टेना' की जगह सिर्फ 'अर्निका'-शब्द का प्रयोग होता है। यही बात अन्य औषधियो पर भी लागू है।)

परिशिष्ट

चित्र-सूची

मुख्य-रोग

[मुख्य-रोग जिनकी औषधियो का इस पुस्तक मे अपने-अपने स्थान पर विशेष रूप से तुलनात्मक विवेचन किया गया है नीचे दिये जा रहे हैं। रोग के साथ वह पृष्ठ-सख्या भी दी गई है जहा इस-इस रोग की औषधियो का तुलनात्मक वर्णन है। वैसे पुस्तक के अन्त मे ७४६ से ७६९ पृष्ट तक २८ पृष्टो मे रोगो की औषधियो का वर्णन है जिसे 'थेराप्यूटिक इडेक्स' (Therapeutic Index) या 'सक्षिप्त रिपर्टरी' (Repertory) कहा जा सकता है]

पुस्तक पढने से पहले निम्न परिवर्धन अथवा परिवर्तन कर लें

पृष्ठ	पंक्ति	परिवर्धन अथवा परिवर्तन
१२३	३१	१००० के आगे निम्न जोड दें चोट मे नील आदि पड जाने पर आर्निका लोशन लगाना चाहिए। इस लोशन को बनाने के लिए १ औंस ठंडे पानी मे ५ बूद आर्निका टिंक्चर डाल दो। कटी हुई जगह पर वह नही लगाना चाहिए, गर्म पानी मे भी इसे नही बनाना चाहिए।
३८३	२८	२८वीं पंक्ति के नीचे निम्न पैरा जोड दो डॉ० फैरिंगटन लिखते है कि हनीमैन का कहना था कि जिन लडकियो को मासिक-रक्तस्राव नही होता और नैट्रम म्यूर के लक्षण होने पर भी लाभ नही होता, उन्हे कैलि कार्ब से लाभ हो जाता है।
४५३	१७, २४ आदि	४५३ तथा ४५४ पृष्ठो मे जहा-जहा 'ऐंठन' शब्द आया है, वहा-वहा 'मरोड'—ऐसा परिवर्तन कर लें।
५१०	८	आठवी पंक्ति मे यह परिवर्धन कर दो डॉ० फैरिंगटन लिखते हैं कि बगल मे पसीना आने मे पैट्रोलियम सबसे उत्तम औषधि है।
५१५	८	आठवी पंक्ति के नीचे के पैरा मे निम्न परिवर्धन कर दो डॉ० फैरिंगटन लिखते हैं कि जब खांसी मे गले की बहुत गहराई से जोर लगाकर कफ उठाना पडे, तब फासफोरस से लाभ होता है।
५६६	२	पंक्ति २ के बाद निम्न परिवर्धन कर दो रस टॉक्स मे सिर पर पसीना नही आता, शरीर पसीने मे भीज जाता है, साईलीशिया मे शरीर खुश्क रहता है, सिर से गले तक रोगी पसीने मे भीज जाता है।
६१०	३४	३४वी पंक्ति के अन्त मे निम्न परिवर्धन कर दो

कैलकेरिया	साईलीशिया	सैनीक्युला
पसीने मे पाव भीजे रहते है, परन्तु रोगी की अंगुलियो के पोर नही गलते।	पसीने से पाव भीजे रहते हैं, और पावो की अंगुलियो के बीच के पोर भी गल जाते हैं।	

पृष्ठ	पंक्ति	परिवर्धन अथवा परिवर्तन
६७५	२१	२१वी लाइन के नीचे निम्न बढा दो (v) **समय-समय का अन्तर दे-देकर दर्द एकदम चढ़ आता है** The pains and sensation come suddenly and return at intervals **स्ट्रिकनीनम**

भूमिका

१९३० के लगभग की बात है। मैं मसूरी गया हुआ था। एक दिन मेरे एक मित्र जो देहरादून के एस० पी० थे मेरे ठिकाने पर आये और कहने लगे कि उन्हें नींद नहीं आती, इसका कोई इलाज है ? मुझे तबतक ऐलोपैथी तथा आयुर्वेद में ही परिचय था, होम्योपैथी का मुझे तबतक ज्ञान नहीं था, इसलिये ब्रोमाइड और सर्पगंधा आदि का मैंने नाम ले दिया। वे कहने लगे कि इन दवाओं को उन्होंने आजमा लिया है, इन से नींद तो आ जाती है, परन्तु इन की नींद नींद न होकर बेहोशी होती है। उन्हें डाक्टरों ने वायु-परिवर्तन की सलाह दी थी, परन्तु मसूरी के जल-वायु में उन्हें कुछ लाभ न हुआ, वे दूसरी जगह अपना इलाज कराने चले गये।

मई १९३५ में मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का उपकुलपति चला आ रहा था। १९३७-३८ में कुछ परेशानियों में मुझे भी उन्निद्र-रोग हो गया। संस्था की रोज-मर्रा की समस्याओं के साथ नींद भी न आना—एक विकट कठिनाई खड़ी हो गई। मैंने भी ब्रोमाइड लेना शुरु किया, परन्तु उस से मेरा भी वही अनुभव हुआ जो मेरे एस० पी० मित्र का था। वे अबतक ठीक हो चुके थे और अपने काम पर जुटे थे। मैंने उन्हें पत्र लिख कर पूछा कि उन्होंने क्या इलाज करवाया था ? उनका उत्तर आया कि वे मुरादाबाद के एक होम्योपैथ के इलाज से ठीक हुए थे। मेरे भी एक होम्योपैथ-मित्र बिजनौर में रहते थे। मैं छुट्टी लेकर उनके पास चला गया। प्रातःकाल के १०-११ बजे का समय था। मैं उनके घर पर बैठा था। उन्होंने अपने बक्से में से ४-५ छोटी-सी, मीठी-मीठी गोलियां मेरे मुँह में डाल दीं, और पलंग पर लेट जाने को कहा। लेटते ही मैं सो गया, और दो घंटे के बाद जब आंख खुली तो ऐसा तरो-ताजा होकर उठा मानो मुझे कोई रोग ही नहीं था। इस समय तक मैं यह तो जान चुका था कि 'होम्योपैथी'—इस नाम से एक चिकित्सा-पद्धति है, परन्तु इसकी औषधि के प्रयोग का अनुभव कभी नहीं किया था। होम्योपैथी की औषधि के अपने ऊपर प्रयोग का यह पहला अवसर था।

पहले ही दिन के अनुभव से मेरा अपने मित्र की योग्यता और होम्योपैथी पर विश्वास जम गया और उनका मेरे रोग को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने का उत्साह बढ़ गया। रात को सोने से पहले मैंने उन्हें फिर दवा देने को कहा तो बोले—होम्योपैथी में बार-बार दवा नहीं दी जाती, बिना दवा के नींद आ जायेगी। मैं लेटा, परन्तु नींद नहीं आयी। ११-१२ बजे मैं उनके मकान पर गया, और उन्हें जगाकर कहा कि भाई नींद तो नहीं आ रही। उन्होंने फिर

कुछ गोलिया दे दी और अपने ही कमरे मे सो जाने को कहा । वे तो दवा देते ही खुर्राटे भरने लगे किन्तु मै रात भर करवटे बदलता रहा । सवेरे मैने कहा कि मुझे तो रात भर नीद नही आयी तो बोले—२०० शक्ति की दवा दी थी, १००० शक्ति की देनी पडेगी । उन्होने १००० शक्ति की दवा भी रात मे लाकर दी । उस से भी नीद नही आयी, और वे और ऊपर चढे । दो-तीन दिन मे वे सी० एम० तक पहुच गये, और मुझे नये-नये लक्षण अनुभव होने लगे—ऐसे लक्षण जो मुझे पहले अनुभव नही हुए थे । [illegible], इस लिये मै यह तो सोच ही नही सकता था कि वे गलत औषधि भी दे सकते है, इसलिये मै यही सोचता रहा कि मेरा रोग होम्योपैथी से दब नही रहा, यह स्वयं ही बढता जा रहा है ।

मेरी और उनकी बेतकल्लुफी थी, इसलिये मै उनकी होम्योपैथी की पुस्तके लेकर पढने लगा । सब से पहले मेरे हाथ मे केन्ट की 'मैटीरिया मैडिका' पडी । अचानक मै इस ग्रन्थ मे ऑरम मेटैलिकम का विवरण पढ रहा था, उसके सब लक्षण मेरे ऊपर पूरे घट रहे थे । मैने डॉक्टर से कहा—यह दवा मुझे क्यो नही देते । बोले—यही दवा तो दी है, परन्तु देने मे गलती हो गई है । यह बहुत गूढ क्रिया करने वाली औषधि है, इसे न तो बार-बार देना चाहिए था, न इतनी जल्दी उच्च-शक्ति तक जाना चाहिये था । तुम्हारे मेरे पास लगातार बने रहने और मेरे घबरा कर एक शक्ति की दवा के बाद झट उस से ऊंची शक्ति की उसी दवा को बार-बार दिये जाने से अब औषधि गडबडाने लगी है । इसलिये अब हाथ-पर-हाथ धर कर बैठे रहने या दवा का असर दूसरी दवा से नष्ट कर देने के सिवाय कोई चारा नही, परन्तु अब मुझे उस मे भी डर लगता है ।

वे कहने लगे कि होम्योपैथी मे औषधि का चुनाव कर लेना ही काफी नही है, औषधि तथा रोग के स्तर का एक होना, औषधि का ठीक समय पर देना, समय से पहले न देना, ठीक शक्ति की औषधि का देना—दर्जनो बातें है जिन पर ध्यान देना लाज़मी होता है—उसी मे कही भूल हो गई है ।

उन बेचारो का २० साल हुए देहान्त हो चुका है, परन्तु उनकी ईमानदारी को मै अबतक भुला नही सका । उन्होने अपनी गलती बिना लाग-लपेट के स्वीकार कर ली, और मुझे कहा कि होम्योपैथी मे सब से बडी कठिनाई किसी कठिन रोग मे अपने सगे-सबधी-मित्र का इलाज करना होता है क्योकि जहा ऐलोपैथी-आयुर्वेद-यूनानी मे रोज़-रोज़ दवा दी जाती है, वहा होम्योपैथी मे रोज-रोज़ दवा नही दी जाती, दे दी जाय तो रोग घटने के स्थान मे गडबडा सकता है और औषधि का अपना रोग रोगी के रोग मे आ उलझ सकता है । क्योकि मरीज समझ नही पाता कि बिना दवा के रोग कैसे दूर होगा

इसलिये वह दवा लेने पर आग्रह करता है, और डॉक्टर भी कभी-कभी बिना दवा की गोलिया देने के स्थान मे घबरा कर जब दवा नही दी जानी चाहिये तब दवा दे डालता है, ऊची शक्ति पर चला जाता है, दोहरा देता है, परिणामस्वरूप रोग घटने के स्थान पर गडबडा जाता है, कभी-कभी दवा का ही अपना रोग उत्पन्न हो जाता है।

मैं अपने मित्र के इलाज से ठीक तो नही हुआ, उल्टे औषधि का नया रोग उत्पन्न हो गया, परन्तु इस बीमारी मे उनके सम्पर्क मे आकर मुझ मे एक नवीन चिकित्सा-पद्धति मे रुचि जागृत हो गई। यह एक विलक्षण चिकित्सा-पद्धति थी। इसमे औषधि की मात्रा जितनी कम होती जाती थी उतनी उसमे रोग को दूर करने की शक्ति बढती जाती थी, इसमे दवा के लगातार सेवन करने के स्थान मे दवा का एक बार या देर-देर मे सेवन करना महत्व रखता था, इसमे दवा को बार-बार देने मे दवा का अपना नया रोग भी उत्पन्न हो जाने का डर रहता था, यह पद्धति प्रचलित-पद्धतियो से बिल्कुल निराली थी।

मैं अपनी बीमारी के दिनो मे कई जगह भटका। एक महीने मेरठ रहा, फिर लाहौर चला गया—भिन्न-भिन्न इलाज कराये, अन्त मे एक साल तक घोर कष्ट पाने के बाद स्वस्थ हो गया, परन्तु इस अर्से मे होम्योपैथी की औषधियो का अपने ऊपर जो प्रत्यक्ष अनुभव हुआ था, दवा से एकदम लाभ भी हुआ, और दवा के ठीक ढंग पर न दिये जाने पर हानि भी हुई—इस अनुभव ने मुझे इस विलक्षण-चिकित्सा-पद्धति की तरफ बरबस खीच लिया।

१९३८ मे मेरी बीमारी के दिनो मे मेरी पत्नी श्रीमती चन्द्रावती लखन-पाल महादेवी कन्या पाठशाला कालेज देहरादून की प्रिन्सिपल नियुक्त हो गई थी। उन दिनो एक दिन मैं देहरादून के बाजार मे से गुजर रहा था कि एक दुकान पर एक भगवे वस्त्रधारी सज्जन बैठे दिखलाई दिये। उनके पास होम्योपैथिक औषधियो का एक बक्सा था, मुफ्त दवा बाँटते थे। उनका पूरा नाम क्या था—यह तो मुझे स्मरण नही रहा, परन्तु वे अपने को भटनागर कहते थे। मैं उनके पास बैठ गया, और होम्योपैथी की चर्चा करने लगा। जब उन्हें पता चला कि मैं गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का उपकुलपति हू और मेरी पत्नी स्थानीय कालेज की प्रिन्सिपल हैं, तब उनकी मेरे प्रति दिल-चस्पी कुछ जाग उठी। मैंने जब उन्हें कहा कि मुझे होम्योपैथी से लाभ भी हो चुका है, नुक्सान भी हो चुका है, इसलिये मुझे इसकी गहराई मे जाने की उत्कट इच्छा है, तब वे अपना होम्योपैथी का पूरा ज्ञान मुझे देने के लिये उत्सुक हो उठे और मेरे निवास-स्थान पर आकर लगातार महीनो इस पद्धति पर गहराई मे चर्चा करते रहे। मैं और मेरी पत्नी—हम दोनो उनकी बातो को ध्यान से सुनते रहे और उन्हें भी इस बात की प्रसन्नता रही कि उनके ज्ञान का लाभ

उठाने वाला कोई उन्हें मिल गया। उनका भी कई साल हुए देहान्त हो चुका है। जहां मेरे बिजनौर के मित्र होम्योपैथ डॉक्टर ने मेरी होम्योपैथी के विषय में रुचि को जागृत किया, वहां श्री भटनागर ने मेरी होम्योपैथी के ज्ञान की गाड़ी को पटरी पर डाल दिया।

१९३८-३९ के बाद से तो मुझे होम्योपैथी ने व्यसन के रूप में पकड़ लिया। मैंने कलकत्ते से होम्योपैथी का सारा साहित्य मंगवाया और मेरे दिन-रात के अध्ययन का मुख्य विषय होम्योपैथी की पुस्तकें हो गया। इन दिनों अनेक प्रसिद्ध होम्योपैथ डाक्टरों को मैंने गुरुकुल विश्वविद्यालय में निमन्त्रित कर इस पद्धति पर उनके व्याख्यान करवाये। डा० युद्धवीर सिंह जी दिल्ली के प्रसिद्ध होम्योपैथ हैं। उन्हें व्याख्यानों के लिये निमन्त्रित किया। लायलपुर में एक डा० हरबस सिंह हुआ करते थे, उनके व्याख्यान करवाये। एक दृष्टि से मैंने संस्था में होम्योपैथी का वातावरण उत्पन्न कर दिया।

इन दिनों मैंने शौकिया होम्योपैथिक औषधियों का रोगियों को देना शुरु कर दिया था। गुरुकुल विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर थे—लालचन्द जी, उनके पिता को प्रोस्टेट-ग्लैंड की शोथ की शिकायत थी, कैथीटर लगाने से पेशाब आता था, पेशाब में जलन होती थी, बड़े परेशान थे, मैंने उन्हें कैन्थरिस की कुछ मात्राओं से ठीक कर दिया, तो वे मेरे ऐसे भक्त बने कि कहने लगे—मैं आप की कुछ सेवा करना चाहता हूं, कुछ-न-कुछ भेंट तो अवश्य स्वीकार करनी ही होगी। मैंने हज़ार मना किया, कहा कि परमात्मा ने मुझे सब-कुछ दिया है, मुझे कुछ नहीं चाहिये, परन्तु वे न माने। अन्त में, उन्होंने कहा कि होम्योपैथी के साहित्य की ही कुछ पुस्तकें मंगवा लीजिये। उन दिनों बम्बई की राय एण्ड कम्पनी ने बोगर की 'कार्ड-रिपर्टरी' प्रकाशित की थी। प्रो० लालचन्द जी के पिता ने वह 'कार्ड-रिपर्टरी' तथा बोनिनघॉसन की 'कैरेक्टरिस्टिक्स एण्ड रिपर्टरी' मंगवा कर मुझे भेंट कर दी। इस पर भी उनको सन्तोष नहीं हुआ। वे कहने लगे कि आपने मेरा इतना बड़ा कष्ट दूर किया है कि मैं कुछ बड़ी राशि आपको भेंट करना चाहता हूं। उन दिनों मैंने गुरुकुल विश्वविद्यालय के चिकित्सा-विभाग के लिये 'श्रद्धानन्द-चिकित्सालय की योजना' प्रारंभ की हुई थी जिसमें बाहर से आने वाले रोगियों के निवास के लिये १०-१२ वार्ड बनवाने का काम शुरु किया था। मैंने उन से कहा कि अगर आप अपने नीरोग होने के उपलक्ष में कुछ-न-कुछ करना ही चाहते हैं, तो दो [illegible] रुपये से चिकित्सालय में एक वार्ड बनवा दीजिये। उन्होंने अपने नाम से ऐसा वार्ड झट-से बनवा दिया।

गुरुकुल विश्वविद्यालय में एक आयुर्वेद-कालेज है जिसमें एनोटोमी, फिजियोलोजी, डिसेक्शन आदि आधुनिक विषय पढ़ाये जाते हैं। मेरी योजना

यह भी थी कि गुरुकुल विश्वविद्यालय के साथ एक होम्योपैथिक कालेज भी खोल दिया जाय, जिसमे जो विद्यार्थी होम्योपैथी पढना चाहें वे एनोटोमी, फिजियोलोजी आदि विषयो को आयुर्वेद के छात्रो के साथ पढे, और होम्योपैथी का 'मैटीरिया-मैडिका' अलग-से एक-दो प्रोफेसरो से पढ ले। इस प्रकार होम्योपैथिक 'मैटीरिया-मैडिका' पढाने वाले एक-दो प्रोफेसर रखकर हम उसी स्टाफ से एक की जगह दो कालेज सफलतापूर्वक चला सकते हैं। इस योजना को शासक-सभा ने स्वीकार कर लिया, परन्तु जब इसे क्रियान्वित करने का समय निकट ही आ रहा था तभी १५ नवम्बर १९४१ को मेरा सेवा-काल समाप्त हो गया और मेरे गुरुकुल छोडने के बाद इस योजना को मूर्त रूप देने का किसी को उत्साह न रहा। ४ जून १९६० से मई १९६६ तक मैं फिर गुरुकुल विश्वविद्यालय का उपकुलपति रहा परन्तु तबतक परिस्थितिया बिल्कुल बदल चुकी थी, नई समस्याए थी और इन समस्याओ मे उलझे रहने के कारण मैं इधर ध्यान नही दे सका।

होम्योपैथी मे मेरे विश्वास का मुख्य-कारण इसका भौतिक न होकर आध्यात्मिक चिकित्सा-पद्धति होना है। यह पद्धति 'भौतिकवाद' (Materialism) पर आश्रित न होकर 'अध्यात्मवाद' (Spiritualism) पर आश्रित है। मनुष्य का जो स्थूल-शरीर हमे दीखता है उस पर सूक्ष्म-तत्वो का अमिट प्रभाव पल-पल हमे अनुभव होता है। घोर 'भौतिकवादी' (Materialist) भी इस से इन्कार नही कर सकता। मेरे एक रोगी को जब पता चला कि अदालत मे उसके खिलाफ निर्णय हो गया है—यह सुनते ही उसे पक्षाघात हो गया। गुस्सा आते ही शरीर थरथर कापने लगता है, भय से कभी-कभी हार्ट-फेल हो जाता है। स्थूल देह पर इन सूक्ष्म मनोभावो का इतना भयकर परिणाम क्यो होता है? ऐसा इसलिये होता है क्योकि भौतिक का नियत्रण अभौतिक से, स्थूल का नियत्रण सूक्ष्म से हो रहा है। स्थूल मे जो गति आती है उसका सूत्रपात सूक्ष्म मे होता है। मन कहता है, देह करता है, देह कहे और मन करे—ऐसा नही होता। सब चिकित्साओ मे होम्योपैथी ही एक ऐसी चिकित्सा-पद्धति है, जो इस आध्यात्मिक सचाई को पकड कर चलती है। भारतीय अध्यात्म-शास्त्र का कहना है 'मन एव मनुष्याणा कारण बन्ध मोक्षयो'—मन ही मानव के रोग मे बध जाने या उस से छूट जाने का कारण है। इस सत्य को आधार बनाकर होम्योपैथी का कहना है कि मानव के स्थूल-शरीर के अनुप्राणन का कारण सूक्ष्म-शरीर है—वह शरीर जिसे इस पद्धति मे 'जीवनी-शक्ति' (Vital force, Dynamis) कहा जाता है, जिसे भारतीय अध्यात्म-शास्त्र मे 'कारण-शरीर' (Causal body) कहा जाता है, रोग का प्रारम्भ 'स्थूल-शरीर' मे नही, 'जीवनी-शक्ति' मे है, 'कारण-शरीर' मे, 'सूक्ष्म-शरीर' मे

है, उसे रोग-मुक्त कर लिया, तो शरीर अपने-आप रोग-मुक्त हो जाता है, ठीक ऐसे जैसे मन को भय मे मुक्त कर लिया तो शरीर पर भय का प्रभाव नहीं होता। जीवनी-शक्ति स्थूल न होकर सूक्ष्म है, सूक्ष्म-तत्व पर सूक्ष्म-तत्व का ही प्रभाव होता है, ठीक ऐसे जैसे मन जैसे सूक्ष्म-तत्व पर मनोभाव जैसे सूक्ष्म-तत्व का झट-से प्रभाव होता देखा जाता है। इस विचारधारा को आधार बना कर होम्योपैथी मे सूक्ष्म जीवनी-शक्ति पर सूक्ष्म-औषधि का प्रयोग किया जाता है; औषधि के जिस रूप का प्रयोग किया जाता है वह इतनी सूक्ष्म होती है कि उस मे औषधि का स्थूल अश न होने के बराबर होता है। यह सब 'अध्यात्मवाद' नहीं तो क्या है? इसीलिये होम्योपैथी को मैं 'भौतिक-विज्ञान' (Material science) न कह कर 'आध्यात्मिक-विज्ञान' (Spiritual science) कहता हू, परन्तु क्योकि आध्यात्मिक होते हुए भी तत्वत इसका भौतिक-शरीर पर प्रभाव है, इसीलिये मै इसे 'आध्यात्मिक भौतिकवाद' (Spiritual materialism) कहता हू। दूसरे शब्दो मे यह पद्धति है तो भौतिक, क्योंकि इसका ध्येय भौतिक-शरीर को रोग-मुक्त करना है, परन्तु इसका आधार अभौतिक है, आध्यात्मिक है—इसमे पश्चिम के भौतिकवाद तथा पूर्व के अध्यात्मवाद का समन्वय है, और इस समन्वय मे भौतिकवाद पर अध्यात्मवाद को तरजीह दी गई है। मैंने अपने हिन्दी के ग्रथ 'वैदिक सस्कृति के मूल-तत्व' तथा अग्रेज़ी के ग्रथ 'Heritage of Vedic Culture' मे भारतीय अध्यात्मवाद को 'भौतिक अध्यात्मवाद' (Material spiritualism) का नाम दिया है, क्योंकि वैदिक दृष्टि-कोण से कोरा अध्यात्मवाद निरर्थक है, वैदिक-दृष्टि भौतिक को सत्य मान कर ही अध्यात्म की तरफ चलती है; इसी तरह होम्योपैथी मे कोरा भौतिकवाद निरर्थक माना गया है, होम्योपैथिक-दृष्टि आध्यात्मिक को सत्य मान कर भौतिक की तरफ चलती है, इसीलिये होम्योपैथी को मैने 'भौतिक-अध्यात्मवाद' का नाम न देकर 'आध्यात्मिक-भौतिकवाद' (Spiritual materialism) का नाम दिया है।

प्रश्न हो सकता है कि मुझे इस ग्रन्थ के लिखने की आवश्यकता क्यो हुई? मैने होम्योपैथी की हिन्दी-अग्रेजी की सैकडो पुस्तकें पढी, परन्तु मुझे वे सब समुद्र की तरह अथाह जल-राशि प्रतीत हुईं, जिसका कोई ओर-छोर नही दीखा। हनीमैन का 'मैटीरिया मैडिका प्यूरा', हेरिंग के 'गाइडिंग सिम्पटम्स', एलन का 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ मैटीरिया मैडिका' आदि ग्रथो मे एक-एक औषधि के दो-दो हजार लक्षण दिये हुए हैं जो विद्यार्थी को तो क्या नामी-ग्रामी होम्योपैथ को भी चकरा देते हैं, उसे समझ नही पडता कि एक ही औषधि के इतने लक्षणो मे से वह किस को चुने। औषधि का निर्वाचन करते हुए अनेक बातो को ध्यान मे रखना आवश्यक है। औषधि के लक्षण ही नही, अपितु 'व्यापक-

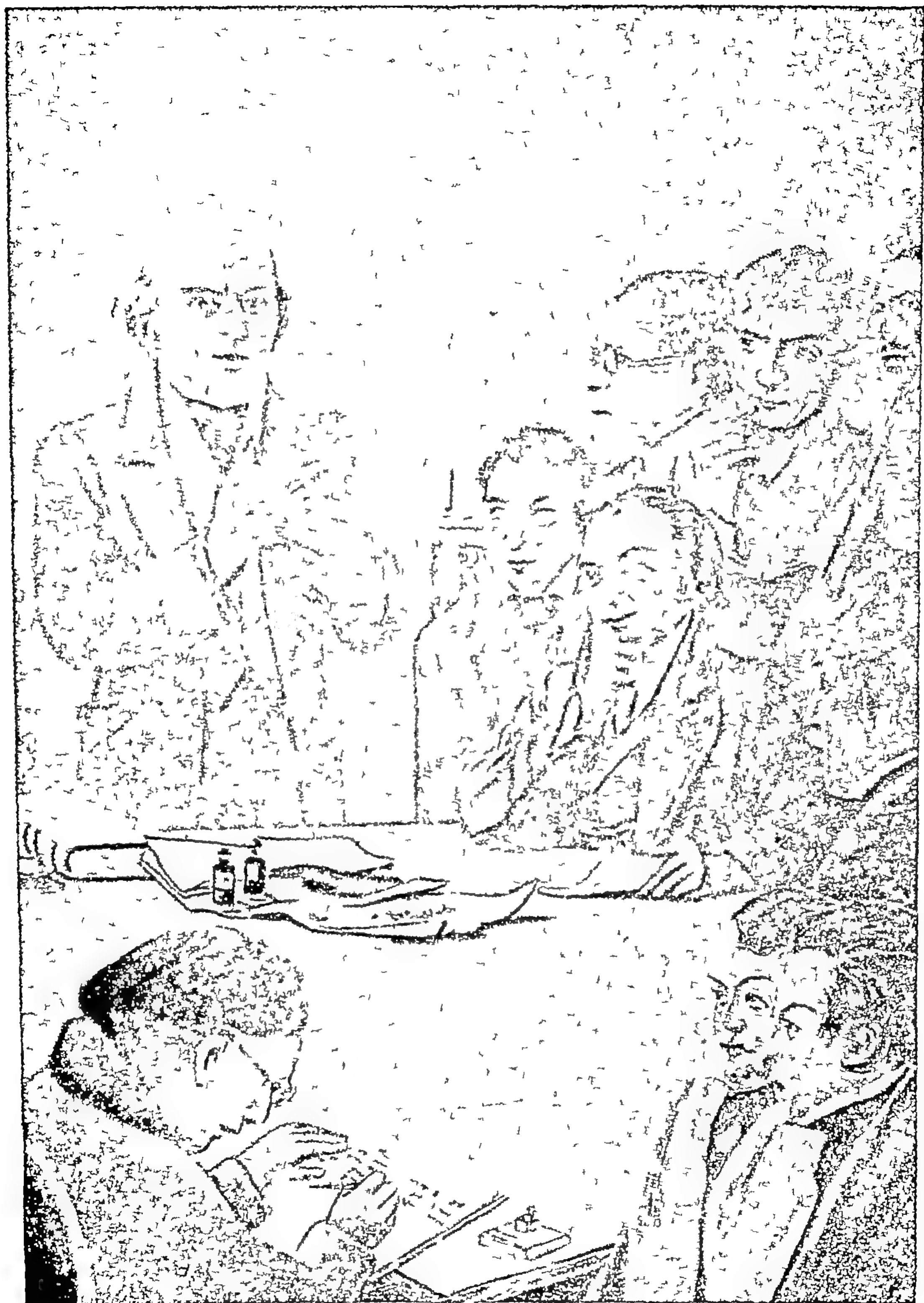
लक्षण' (General symptoms) क्या है, किन-किन 'विशेष-रोगों' (Particulars) के लिये उसका उपयोग होता है, औषधि की 'प्रकृति' (Modality) क्या है—वह 'शीत-प्रधान' (Chilly) है या 'ऊष्णता-प्रधान' (Hot) है, औषधि का धातुगत-रूप (Constitution) क्या है—औषधि का नाम लेते ही यह सब एक-साथ आंखों के सामने तस्वीर की तरह आ खड़ा हो, ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी जो चालू पुस्तकों में मुझे एक न मिली। जबतक औषधि को देखते ही ऊपर की सब बातें एक-साथ सामने न आ खड़ी हों, जबतक औषधि का मूर्त तथा सजीव चित्रण आंखों में न खिंच जाय, जबतक किसी रोगी को देख कर हम यह न कह सकें—आइए, सलफर महोदय, फॉसफोरस महोदय, ऐसिड फॉस महोदय, नक्स महोदय, आइये श्रीमती पल्सेटिला, श्रीमती सीपिया, श्रीमती इग्नेशिया, श्रीमती नैट्रम म्यूर —जबतक औषधि का जीता-जागता चित्र हमें अपने रोगी में चलता-फिरता न दिखलाई दे, तबतक हमारा अपनी औषधियों से परिचय अधूरा रह जाता है। होम्योपैथी के विद्यार्थी को इस प्रकार की पुस्तक की आवश्यकता है जो इस कमी को पूरा कर सके। इसी कमी को पूरा करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है, और इसीलिये इसका नाम 'होम्योपैथिक औषधियों का सजीव-चित्रण' (Homoeopathic Drug Pictures) रखा गया है। इस पुस्तक की रचना का यही मुख्य लक्ष्य है।

मुझे निश्चय है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जायगा त्यों-त्यों आध्यात्मिकता-प्रधान अपने देश में होम्योपैथी का प्रचार भी बढ़ता जायगा, और क्योंकि अधिकांश विद्यार्थी हिन्दी-भाषी होंगे इसलिये हिन्दी-भाषी राज्यों के होम्योपैथिक कालेजों में तो यह ग्रंथ 'पाठ्य-पुस्तक' (Text-Book) का काम देगा ही क्योंकि इसकी मुख्य-रचना होम्योपैथिक औषधियों का जीता-जागता चित्र उपस्थित करने के लिये की गई है जिसकी विद्यार्थी को या होम्योपैथी की चिकित्सा के विषय में जानकारी चाहने वाले किसी भी व्यक्ति को आवश्यकता है, किन्तु साथ ही इस का भारत की सब भाषाओं में भी अनुवाद होगा ताकि संपूर्ण देश की, सब भाषाओं के लोग इससे लाभ उठा सकें।

ऐ ३५ वर्षों के दिन-रात के परिश्रम के परिणाम-स्वरूप मेरे लाडले ग्रंथ! जाओ, जाओ, भारत के कोने-कोने में जाओ, भारत की हर भाषा के जामे को पहन कर जाओ और अध्यात्म-प्रधान इस देश में जिस आशा से मैंने तुम्हें जन्म दिया है उस आशा को सफल बनाओ।

——सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

(डब्ल्यू-७७ ए, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली-११००४८



डॉ० हनीमैन सहायक डाक्टरों को व्याख्यान देते हुए।

होम्योपैथी का संक्षिप्त परिचय

१ होम्योपैथी का जन्म

१० अप्रैल १७५५ मे जर्मनी के सैक्सन राज्य माइसेन नगर मे एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम फ्रेडरिक सैम्युअल हनीमैन रखा गया। इनके पिता मट्टी के बर्तन रग कर अपनी आजीविका का निर्वाह करते थे। बालक निर्धन परिवार मे उत्पन्न हुआ था, परन्तु वडा होनहार था। उसने वडी लगन से विद्या का अध्ययन किया और २४ वर्ष मे ही डाक्टरी मे एम० डी० की उपाधि प्राप्त कर ली। उसकी गति जर्मन, अग्रेजी, फ्रेंच, ग्रीक, लेटिन, हिब्रू, अरवी आदि अनेक भाषाओ मे थी और उसके पाण्डित्य को देखकर डा० रिक्टर कहा करते थे कि यह दो सिरवाला प्रतिभाशाली व्यक्ति है।

शिक्षा समाप्त करने के अनन्तर १० वर्ष तक हनीमैन प्रचलित एलोपैथिक ढग पर चिकित्सा करते रहे, परन्तु प्रचलित चिकित्सा पद्धति—एलोपैथी—पर उनकी निष्ठा नहीं जमी, उन्हें इस चिकित्सा पद्धति पर सन्देह वना रहा। वे देखते थे कि कब्ज दूर करने के लिये दस्तावर दवा दी जाती है, जिससे पेट तो एकदम साफ हो जाता है, परन्तु उसके वाद पहले से ज्यादा कब्ज हो जाती है, दर्द दूर करने के लिये अफीम दी जाती है परन्तु उससे इलाज नहीं होता, दर्द सिर्फ दव जाता है। उनके समय हर रोग का इलाज खून निकाल देने से किया जाता था, जोकें लगा दी जाती थीं, परन्तु वे सोचते थे कि खून तो प्राणदायिनी शक्ति है, इससे तो रोगी निर्वल हो जाता है, इससे वह ठीक कैसे हो सकता है ? इसी मानसिक दुविधा मे उन्होंने अपनी एलोपैथी की प्रैक्टिस बन्द कर दी और रसायन-शास्त्र तथा वैज्ञानिक पुस्तको का अग्रेजी से जर्मन मे अनुवाद कर अपनी आजीविका का उपार्जन शुरू कर दिया। जिस पद्धति पर उनका विश्वास नहीं जमता था उसे करते हुए वे कवतक अपनी आत्मा को शान्ति दे सकते थे।

१७९० मे वे कलेन के अग्रेजी मैटीरिया मैडिका का जर्मन भाषा मे अनुवाद कर रहे थे। अनुवाद का विषय सिनकोना था। सिनकोना कुनीन का ही एक भेद है। सिनकोना के विषय मे इस पुस्तक मे कुछ परस्पर विरुद्ध बातें लिखी हुई थीं। सिनकोना बुखार लाता भी है, इसे ठीक भी करता है। इन विरोधी वातो को पढकर उनके हृदय मे अचानक एक विचार उत्पन्न हुआ। वह विचार क्या था ? वह विचार यह था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि सिनकोना रुग्ण व्यक्ति मे बुखार को इसलिये ठीक कर देता है क्योकि स्वस्थ व्यक्ति मे यह बुखार के लक्षण उत्पन्न कर देता है ? जैसे न्यूटन ने वृक्ष से सेव को गिरते देखकर सोचना शुरू

किया कि यह फल नीचे क्यों गिरा, ऊपर क्यों नहीं चला गया, इधर-उधर क्यों नहीं गया, और ऐसा सोचते-सोचते उन्होंने पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का आविष्कार कर लिया, वैसे उक्त एक विचार ने, इस विचार ने कि कहीं ऐसा तो नहीं कि सिनकोना बुखार को इसलिये ठीक कर देती है क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति में यह बुखार को उत्पन्न कर देती है, हनीमैन को विचार-सागर में डुबो दिया, और सोचते-सोचते इसी एक विचार ने होम्योपैथी को जन्म दिया।

२ होम्योपैथी का पहला सिद्धान्त—'सम सम शमयति'

एलोपैथी का सिद्धान्त स्पष्ट है। शरीर में जो रोग हो, उससे विरोधी अवस्था को शरीर में उत्पन्न कर के रोग को दूर करना एलोपैथी है। दस्त आते हों, तो दस्तों को बन्द करनेवाली दवा, और कब्ज हो तो दस्त लानेवाली दवा देनी चाहिये। इस सिद्धान्त को 'विषमोपचार' (Contraria Contraris) कहते हैं। यही प्रचलित पद्धति है, और मोटी बुद्धि से यही बात समझ में ठीक लगती है। हनीमैन ने इससे विरुद्ध सिद्धान्त का आविष्कार किया। उन्होंने जिस सिद्धान्त का पता लगाया वह था—'समोपचार'। संस्कृत में इसे कह सकते हैं—'सम समं शमयति', अंग्रेजी में इसे Similia Similibus Curantur कहते हैं। उन्होंने इस सिद्धान्त का अपने ऊपर परीक्षण किया और इसे सत्य पाया।

होम्योपैथी का सिद्धान्त यह है कि स्वस्थ शरीर में जो औषधि रोग के जिन लक्षणों को उत्पन्न करती है, किसी भी रोग में, भले ही उसका कुछ ही नाम क्यों न हो, अगर वे लक्षण पाये जायें, तो वही औषधि उस रोग को और उन लक्षणों को दूर कर देगी। उदाहरणार्थ, स्वस्थ शरीर में संखिया (आर्सेनिक) बेचैनी पैदा करता है, जलन पैदा करता है, थोड़ी-थोड़ी देर में प्यास पैदा करता है, और इसी तरह के अनेक लक्षण पैदा कर देता है। होम्योपैथी का सिद्धान्त यह है कि अगर रोग में ये लक्षण पाये जायें, तो इन लक्षणों को आर्सेनिक दूर कर देगा। ये लक्षण हैजे में हो सकते हैं, पेट के अलसर में हो सकते हैं, सिर-दर्द, जुकाम में हो सकते हैं, नींद न आने में, बुखार में—किसी भी रोग में हो सकते हैं। हनीमैन का कहना है कि हमें रोग के नाम से कोई मतलब नहीं, रोग कुछ भी हो, अगर किसी भी प्रकार के रोग में वे लक्षण पाये जायें जो औषधि ने स्वस्थ मनुष्य में उत्पन्न किये हैं, तो वह औषधि उन लक्षणों को दूर कर देगी, और जब ये लक्षण दूर हो जायेंगे तब रोग अपने-आप नहीं रहेगा। संक्षेप में, होम्योपैथी का यही सिद्धान्त है, और यह होम्योपैथी का पहला सिद्धान्त है।

इस सिद्धान्त का यह अर्थ नहीं है कि जो औषधि जिस रोग को उत्पन्न करती है वह औषधि उस औषधि द्वारा उत्पन्न रोग को भी दूर करेगी। दूसरे शब्दों में, अगर किसी रोगी के लक्षण आर्सेनिक द्वारा उत्पन्न हुए हैं तब आर्सेनिक

काम नहीं देगा, आर्सनिक तभी रोग को दूर करेगा जब लक्षण आर्सनिक द्वारा तो न उत्पन्न हुए हों, परन्तु आर्सनिक स्वस्थ शरीर मे जिन लक्षणो को उत्पन्न करता है, रोगी मे वैसे लक्षण मौजूद हो। लक्षण 'वही' (Same) नहीं होने चाहियें, 'वैसे' (Similar) होने चाहियें, औषधि 'उन्हीं' लक्षणो को नहीं दूर करेगी, 'वैसे' लक्षणो को दूर करेगी। अगर दो योद्धाओं मे बल-परीक्षा हो, तो कोई योद्धा अपने-आप के साथ नहीं लडता, अपने-आप को ही स्वय नहीं हरा डालता, अपने जैसे के साथ लडता है, और अपने-जैसे को हराता है।

परन्तु प्रश्न यह है कि कोई भी औषधि स्वस्थ मनुष्य मे क्या लक्षण उत्पन्न करेगी—इसका कैसे पता लगाया जाय ? इसका पता लगाने को होम्योपैथी मे 'औषधि-सिद्धि' या 'औषधि-परीक्षा' (Proving of Drugs) कहते हैं।

३ औषधि-सिद्धि या औषधि-परीक्षा (Proving) क्या है ?

हनीमैन ने १७९० से १८०५ तक अपने जीवन के १५ वर्ष इसी काम मे व्यतीत किये। इस अर्से मे उन्होंने अपने शरीर पर ६० औषधियो की परीक्षा की। १५ वर्ष तक अपने शरीर को भिन्न-भिन्न विषो और औषधियो के प्रभाव में लाकर अपने ऊपर परीक्षण करना कितना कठिन कार्य है इसे वे ही लोग समझ सकते हैं जो कभी किसी विष के प्रभाव मे आये हो। हनीमैन ने अपने इर्द-गिर्द ऐसे उत्साही एव लगन के डाक्टर तथा विद्यार्थी इकट्ठे कर लिये थे जो उसी तरह अपने ऊपर औषधियो की परीक्षा करते थे जैसे हनीमैन अपने ऊपर किया करते थे। इन परीक्षण-कर्ताओ को यह नहीं बतलाया जाता था कि उन्हें क्या औषधि दी जा रही है। औषधि की मात्रा प्रतिदिन बढा दी जाती थी। औषधि की परीक्षा कई सप्ताह, कभी-कभी महीनो चलती थी। परीक्षण-कर्ता के शरीर मे और मन मे जो लक्षण उत्पन्न होते थे वे सब दर्ज किये जाते थे। कई परीक्षण-कर्ता तो इतने उत्साही थे कि वे औषधि की रोग उत्पन्न करने की शक्ति को जाचने के लिये अन्त तक अपने जीवन को जोखिम मे डाल देते थे। उनके भीतर जो लक्षण उत्पन्न हो गये वे जीवनभर बने रहे, गये ही नहीं।

होम्योपैथी मे दिलचस्पी रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की यह जानने की इच्छा होती है कि 'औषधि-परीक्षा' (Proving) किस शक्ति को लेकर की गई? श्री हनीमैन के ग्रन्थो के आधार पर डा० डनहम का कथन है कि सिलवर नाइट्रेट की परीक्षा १५ शक्ति मे, कार्बो वेज की ३ ट्रिच्युरेशन में, नैट्रम म्यूर की ३० शक्ति मे परीक्षा की गई। कई लोगों का कहना है कि हनीमैन तथा उनके साथियो ने निम्न शक्ति मे औषधियो की परीक्षा की थी, परन्तु पहले जो-कुछ भी किया हो, हनीमैन ने अपने तीस साल के अनुभव के बाद लिखा कि ३० शक्ति मे 'औषधि-परीक्षा' करने से ही औषधि अपने सब लक्षण ठीक-से प्रकट करती है।

इन औषधि-परीक्षाओं के विषय में यह भी जान लेना उचित है कि १८४२ से १८४८ के बीच 'आस्ट्रियन प्रूवर्स यूनियन' ने हनीमैन द्वारा परीक्षित औषधियों की 'पुन: परीक्षा' (Re-proving) की। वे लोग यह जानना चाहते थे कि हनीमैन की परीक्षाएँ सही थीं या उनमें कुछ गलतियां भी थीं। इन 'पुन: परीक्षाओं' से औषधियों के विषय में हनीमैन के निर्णयों की पुष्टि ही हुई।

होम्योपैथी के मत के अनुसार जानवरों पर या रोगियों पर परीक्षण करना और स्वस्थ मनुष्य पर परीक्षण करना—इन दोनों में महान् अन्तर है। अगर यह सिद्धान्त ठीक है कि स्वस्थ शरीर तथा मन पर औषधि का प्रयोग करने से जो लक्षण उत्पन्न होते हैं, रोग में उन लक्षणों के उत्पन्न होने पर वे उस औषधि से दूर हो जाते हैं, तो यह भी निश्चित है कि औषधि की परीक्षा स्वस्थ शरीर पर ही करनी होगी। जानवर तो कुछ बतला ही नहीं सकते, उन पर की गई परीक्षा होम्योपैथी के सिद्धान्त से बेमाइना है। रोगी पर की गई परीक्षा भी होम्योपैथी के मत से निरर्थक है क्योंकि रोगी तो पहले ही रोग के लक्षणों से आक्रान्त है। जब रोग का कोई लक्षण न हो, शरीर स्वस्थ हो, तभी तो पता लग सकता है कि औषधि ने अपने क्या लक्षण उत्पन्न किये। स्वास्थ्य में सब का शरीर एक-समान होता है, रोग में भिन्न-भिन्न होना है, इसलिये स्वस्थ शरीर में औषधि जिन लक्षणों को उत्पन्न करेगी वे ही सत्य, अखंड लक्षण होंगे, ऐसे लक्षण जो अपरिवर्तनीय हैं, इसलिये अपरिवर्तनीय हैं क्योंकि सब स्वस्थ मनुष्यों में औषधि के एक ही प्रकार के लक्षण उत्पन्न होंगे, भिन्न-भिन्न प्रकार के नहीं। इसी आधार पर हनीमैन का कहना है कि होम्योपैथी एलोपैथी की तरह समय-समय पर नहीं बदलती रहती, उसके जो आधार आज से सौ साल पहले थे वे ही आधार आज हैं, वे ही आधार आज से सदियों बाद रहेंगे।

८ होम्योपैथी का दूसरा सिद्धांत—'शक्तिकरण' (Potentization)

'सम: समं शमयति' के बाद होम्योपैथी का दूसरा सिद्धान्त 'शक्तिकरण' का सिद्धान्त है। शुरू-शुरू में हनीमैन सम-सिद्धान्त के अनुसार तो औषधि देते थे, परन्तु नक्स वोमिका ४ ग्रेन, सिनकोना २ ग्रेन आदि के रूप में एलोपैथिक ढंग से ही औषधि की मात्रा देते थे। इससे उन्होंने अनुभव किया रोग के अच्छा हो जाने पर भी शुरू में रोग कुछ बढ़ जाता था। इस दोष को दूर करने के लिये उन्होंने औषधि की मात्रा घटानी शुरू की। उन्हें यह अनुभव हुआ कि औषधि की मात्रा घटाने पर उसकी रोग को दूर करने की शक्ति बढ़ जाती थी। औषधि की मात्रा स्थूल रूप में कहां तक कम की जा सकती थी? इसके लिये उन्होंने दो माध्यमों का सहारा लिया। एक माध्यम था—'दूध की शर्करा' (Sugar of Milk) तथा दूसरा था—'अलकोहल'। औषधि के अंश को कम करने के लिये 'दूध

की शर्करा' में जब उसे एक सार करने के लिये उसका 'मर्दन' किया जाता था, या जब औषधि को उसका अंश कम करने के लिये 'अलकोहल' में डालकर उसे जोर से हिला कर मिलाया जाता था, तब हनीमैन ने अनुभव किया कि 'मर्दन' (Trituration) और अलकोहल में डाल कर 'जोर से आलोडन' (Succussion) करने में, इतना ही नहीं कि वे परिमाण में कम-से-कम औषधि का प्रयोग कर सकते थे, उन्होंने यह भी अनुभव किया कि 'दुग्ध-शर्करा' में 'मर्दन' करने और अलकोहल में 'आलोडन' करने से औषधि की कार्य-शक्ति भी बढ़ जाती थी। जैसे प्रथम सिद्धान्त को क्रिया रूप देने के लिये हनीमैन ने 'औषधि-परीक्षा' या 'औषधि-सिद्धि' (Proving) की पद्धति को जन्म दिया था, वैसे ही 'मर्दन' (Trituration) तथा 'आलोडन' (Succussion) से औषधि की शक्ति बढ़ जाती है—इस द्वितीय सिद्धान्त को क्रिया रूप देने के लिये उन्होंने औषधियों की शक्ति बढ़ाने की निम्न पद्धति को जन्म दिया जिसमें औषधि की मात्रा कम होती जाती थी किन्तु उसकी रोग को दूर करने की शक्ति बढ़ जाती थी।

५ 'शक्ति-करण', 'शक्ति-क्रम' तथा 'शक्ति-मात्रा' में भेद

भारत में प्राचीन-काल से आयुर्वेद में रस-विज्ञान एक शास्त्र चला आता है। इस विज्ञान के अनुसार भिन्न-भिन्न विषों की, धातुओं की भस्में तैयार की जाती है। इन भस्मों को तैयार करने की एक विधि है जिसके अनुसार शत-पुटी भस्म, सहस्र-पुटी भस्म तैयार होती है। आयुर्वेद के तरीके के अनुसार लोहा, पारा आदि धातुओं को मट्टी के बर्तनों में ढांक कर सौ बार, हजार बार कंडों की आग में रखने से इन धातुओं की भस्म बनाई जाती है जो शक्ति-सम्पन्न कही जाती है। शत-पुटी, सहस्र-पुटी भस्म के अतिरिक्त कई विषों को भिन्न-भिन्न औषधियों के रसों में एक महीना, दो महीना रगड़ा जाता है जिसे भावना देना कहा जाता है। इससे भी औषधि की मात्रा कम और शक्ति बढ़ जाती है। इन दोनों पद्धतियों का आधारभूत सिद्धान्त यही प्रतीत होता है कि आग की पुट देने या घर्षण -मर्दन द्वारा किसी औषधि को रस की भावना देने से उसकी मात्रा कम हो जाती है, उसके कण-कण अलग हो जाते हैं, और ये परमाणु रूप कण शरीर के तन्तुओं पर स्थूल औषधि की अपेक्षा अधिक गहरा प्रभाव डालते हैं।

ठीक इस तरह की तो नहीं परन्तु लगभग कुछ ऐसी-सी पद्धति का आविष्कार हनीमैन ने होम्योपैथिक औषधियों की स्थूल मात्रा कम करने किन्तु उनकी शक्ति बढ़ा देने—शक्तिकरण—के विषय में किया था जो निम्न प्रकार है

औषधियों की मात्रा कम करने और 'मर्दन' अथवा 'आलोड़न' द्वारा शक्ति बढ़ाने के लिये उन्हें पहले दो रूपों में लाया जाता है। कड़ी चीजों को—लोहा, सोना आदि को—'विचूर्ण' रूप में लाते हैं, उनका चूरा कर लेते हैं, किन्तु जड़ी-

बूटियों का रस निचोड़ कर उनका 'पूर्ण-घोल' तैयार कर लेते हैं। 'विचूर्ण' को अंग्रेज़ी में Crude Drug कह सकते हैं, 'पूर्ण-घोल' (Saturated solution) को अरिष्ट या अंग्रेज़ी में Mother Tincture कह सकते हैं। जब औषधि का रस अलकोहल में जितना घुल सकता है उससे ज्यादा नहीं घुल सकता तब उसे 'पूर्ण-घोल' (Saturated Solution या Mother Tincture) कहते हैं। होम्योपैथिक औषधियों की मात्राएँ, उनकी शक्तियां इन्हीं विचूर्णों तथा पूर्ण-घोलों से बनाई जाती हैं। पूर्ण-घोल को मदर-टिंचर इसलिये कहते हैं क्योंकि इससे आगे औषधि की जो शक्ति बनती है उस सब की मां यही मदर-टिंचर होता है। 'विचूर्ण' तथा 'पूर्ण-घोल' की उनके भीतर छिपी शक्ति को मर्दन तथा आलोडन से प्रकाश में ले आना ही 'शक्ति-करण' (Potentization) कहलाता है।

विचूर्ण (Crude Drug) तथा पूर्ण-घोल (Mother Tincture) से होम्योपैथिक औषधियों का शक्ति-क्रम (Attenuation) दो प्रकार का होता है। एक 'शक्ति-क्रम' तो ३x, ६x, ३०x, २००x आदि कहलाता है—यह 'दाशमिक-क्रम' (Decimal Attenuation) कहलाता है, दूसरा 'शक्ति-क्रम' १c, २c, ३c, ६c, ३०c, २००c, १०००c आदि कहलाता है—यह 'शत-क्रम' (Centesimal attenuation) कहलाता है। 'शक्ति-क्रम' और 'शक्ति-मात्रा' में भेद है। ३x, ६x, ३०x या १c, २c, ३c आदि तो शक्ति के क्रम हैं, और सिर्फ ३x कहा जाय या ६x इतना ही कहा जाय, या १c इतना ही कहा जाय, तो यह 'शक्ति-क्रम' (Attenuation) नहीं है, यह 'शक्ति-मात्रा' (Potency) है। शक्ति-क्रम के अन्दर शक्ति-मात्रा आ जाती है, शक्ति तो क्रम का एक हिस्सा है। 'शक्ति-क्रम' तो औषधि की शृंखला (Series of potency) का नाम है, जो शृंखला एक-एक 'शक्ति-मात्रा' के जोड़ से बनती है।

६ शक्ति-क्रम बनाने की पद्धति

विचूर्ण (Crude Drug) से ३x, ६x एवं १c, २c, ३c आदि कैसे बनते हैं? इनमें से अगर औषधि का दाशमिक-क्रम बनाना हो, तो मूल-औषध—अर्थात् सोना, पारा, कोयला आदि जो अलकोहल में नहीं घुल सकते—उनके विचूर्ण का एक भाग ९ भाग दुग्ध-शर्करा के साथ मिला कर उसका घर्षण किया जाता है। यह १x बन गया। फिर इसका एक भाग ९ भाग दुग्ध-शर्करा के साथ मिला कर रगड़ा जाता है। यह २x बन गया। फिर इसका एक भाग ९ भाग दुग्ध-शर्करा के साथ घोटा जाता है। यह ३x बन गया। इसी प्रकार यह क्रम आगे-आगे चलता जाता है। सोना, पारा, कोयला आदि जो पदार्थ अलकोहल में नहीं घुल सकते, उनका दाशमिक की जगह शत-क्रम बनाना हो, तो उनके विचूर्ण का एक भाग ९९ भाग दुग्ध-शर्करा में रगड़ा जाता है। यह १c बन गया।

फिर इस १C का एक भाग ९९ भाग दुग्ध-शर्करा के साथ रगडा जाता है। यह २C बन गया। इसी प्रकार आगे-आगे ६C, ३०C, २००C, १०००C आदि शक्ति-क्रम बनता जाता है। जो औषधियां अलकोहल मे घुल सकती हैं उनका मदर-टिंचर बनाकर उसका एक भाग ९९ भाग अलकोहल मे डाल कर उसे जोर से हिलाया जाता है। यह उस औषधि का १C बन गया। फिर इस १C का एक भाग ९९ भाग अलकोहल के साथ मिलाकर जोर से हिलाया—आलोडित—किया जाता है। यह २C बन गया। इस प्रकार आगे-आगे औषधि-क्रम बनाया जाता है। लिखते समय x लिखने का रिवाज तो है, परन्तु C लिखने का रिवाज नहीं है। दाशमिक क्रम की औषधि के आगे x लिखते हैं, यथा ३x, ६x आदि, परन्तु शत-क्रम के आगे C नहीं लिखते, उनमे सिर्फ ६, ३०, २०० आदि लिख देते है। जो औषधियां प्रारंभिक क्रम मे अलकोहल मे नहीं घुलतीं वे आगे के क्रमो मे ६C की अवस्था मे आ जाने पर अलकोहल मे घुल जाती हैं इसलिये लोहे, सोने, चाँदी आदि के उच्च-क्रम मे पहुचने पर अलकोहल मे बने शक्ति-क्रम मिलते हैं। इनके निम्न-क्रम अलकोहल मे बने नहीं मिलते, सिर्फ पाउडर के रूप मे मिलते हैं क्योंकि निम्न-क्रम मे वे अलकोहल मे नहीं घुल सकते।

७ क्या होम्योपैथिक औषधियो मे औषधि की स्थूल-मात्रा होती है?

होम्योपैथिक औषधियो की रचना की जिस पद्धति का हमने ऊपर उल्लेख किया है उससे स्पष्ट है कि होम्योपैथिक दवा मे दवा का स्थूल अंश कुछ क्रम तक ही रह सकता है, आगे नहीं। डा० डनहम 'दि सॉयन्स ऑफ थेराप्युटिक्स' (पृ० २४०) मे लिखते हैं अंकगणित की दृष्टि से हिसाब निकाला जाय तो होम्यो-पैथी की किसी दवा की ३री शक्ति के बाद अगली किसी शक्ति मे दवा का स्थूल अंश रहता ही नहीं। सूक्ष्मवीक्षण यंत्र से भी ३री शक्ति के आगे किसी शक्ति मे दवा के सूक्ष्म अंश का पता नहीं चलता। कई होम्योपैथ कहा करते थे कि दवा के 'मर्दन' (Trituration) से वह इतने सूक्ष्म अणुओ मे विभक्त हो जाती है कि आसानी से रक्त के कणो मे प्रविष्ट होकर रोग पर आक्रमण कर सकती है, परन्तु यह तो ३री शक्ति तक ही कहा जा सकता है। प्रश्न यह है कि होम्यो-पैथिक दवा की ३० शक्ति, जिसमे दवा का किसी दृष्टि से भी स्थूल अंश नहीं कहा जा सकता, रोग पर कैसे प्रभाव करती है?

इसका सिवा इसके क्या उत्तर दिया जा सकता है कि ३ शक्ति से ऊपर जितनी भी होम्योपैथिक दवा है उसमे दवा का सूक्ष्म भाग न रहकर उसका शक्ति-भाग ही रह जाता है, और तब दवा स्थूल दवा के रूप मे काम नहीं करती, शक्ति के रूप मे काम करती है। जब हम दवा का ३x देते हैं तब उसका अर्थ होता है १ ग्रेन का १ हजारवां हिस्सा, ओर जब हम १C देते हैं तब उसका अर्थ होता है—

१ के बाद ६० शून्य लगाकर जो संख्या बनती है—एक ग्रेन का उतनवां हिस्सा। यह तो १C का हाल है, इस दृष्टि से ३० शक्ति की दवा में १ के आगे कितने शून्य लगेंगे यह तो अंकगणित की गणना से समझ के बाहर की बात है। और फिर २०० शक्ति, १००० शक्ति, १० हजार शक्ति, १ लाख शक्ति की दवा में क्या दवा का कुछ भी अंश हो सकता है? उसमें तो शक्ति ही शक्ति है, स्थूल दवा का तो उसमें कोई अंश हो ही नहीं सकता।

यही कारण है कि होम्योपैथी में दो सम्प्रदाय हैं। एक सम्प्रदाय निम्न-शक्ति देने वालों का है वे ३, ६ से ऊपर दवा नहीं देते क्योंकि वे समझते हैं कि इससे ऊपर की शक्ति का दवा में दवा ही नहीं। दूसरा सम्प्रदाय उच्च-शक्ति की दवा देने वालों का है। वे ३०, २००, १००० से कम शक्ति की दवा देते ही नहीं क्योंकि उनका कहना है कि होम्योपैथिक दवा का रूप स्थूल दवा नहीं है, यह तो दवा के भीतर छिपी शक्ति है, जैसे चुम्बक में छिपी शक्ति या परमाणु में छिपी रचनात्मक या विध्वंसक शक्ति। होम्योपैथिक दवा में हम दवा नहीं दे रहे होते, रोगी में दवा के माध्यम से एक शक्ति का संचार कर रहे होते हैं। होम्योपैथिक दवा शरीर में एक शक्ति, एक लहर उत्पन्न करती है, और वही शरीर को नीरोग बनाती है। अगर यह दवा एक शक्ति नहीं है तो क्या कारण है कि उच्च शक्ति की दवा का असर देर तक रहता है, हफ्तों, महीनों, सालों रहता है. और यही नहीं कि वह रोग को नष्ट कर देती है, कभी-कभी उच्च-शक्ति में दी गई गलत दवा मनुष्य में नया रोग उत्पन्न कर देती है। डा० केन्ट अपने मैटीरिया मैडिका के 'हिपर सल्फ'-औषधि के प्रकरण में लिखते हैं कि अगर हमारी दवाएं लोगों को मृत्यु के गर्त में न धकेल सकें तो उनमें वह शक्ति भी नहीं हो सकती कि रोगी को नीरोग कर सकें। डा० केन्ट का कहना है कि होम्योपैथ को समझ रखना चाहिये कि जब वह उच्च-शक्ति की दवा का प्रयोग करता है तब वह छुरे की धार से खेल रहा होता है। डा० केन्ट पृ० ५४३ में लिखते हैं "If our medicines were not powerful enough to kill folks, they would not be powerful enough to cure sick folks It is well for you to realize that you are dealing with razors when dealing with high potencies I would rather be in a room with a dozen negroes slashing with razors than in the hands of an ignorant prescriber of high potencies They are means of tremendous harm as well as of tremendous good"—"मैं किसी अनाड़ी होम्योपैथ के हाथों उच्च-शक्ति की औषधि के प्रयोग को सहन करने की अपेक्षा कमरे में बन्द होकर एक नीग्रो के हाथों चाकू के वारों को सहन करना ज्यादा पसन्द करूंगा।"

/

डा० केन्ट का उच्च-शक्ति के विषय मे कथन एक तरफ है, दूसरी तरफ डा० डनहम ने अपनी पुस्तक 'सौयन्स ऑफ थेराप्युटिक्स' के २६५ पृष्ठ पर लिखा है : "Now in this way, with low potencies, a practitioner may do quite a business on a very slender capital of knowledge Not so if he uses the high potencies With these no change is effected in the case unless the remedy has been strictly homoeopathic to the case. They are like the rifle ball—if they hit, they kill, if not, there is no record of the shot There can be no good luck from scattering" थोडे शब्दो मे, डा० डनहम का कथन है कि उच्च-शक्ति रोग पर छोडी गई पिस्तौल की गोली की तरह है। या तो वह रोग को निशाना बनाकर उसे नष्ट कर देती है, या रोगी के बाजू से सनसनाती निकल जाती हे। अगर उच्च-शक्ति का रोग पर ठीक निशाना बैठा तो रोग धराशायी हो जाता है, न बैठा तो सिर्फ गोली ही नष्ट होती है, रोगी को कोई नुक्सान नहीं होता।

हमने ये दोनो दृष्टि-कोण इसलिये दे दिये हैं जिससे यह स्पष्ट हो जाय कि होम्योपैथी मे निम्न-शक्ति तथा उच्च-शक्ति के विषय मे बडे-बडो मे कुछ निश्चय नहीं हुआ। हनीमैन ने शुरू-शुरू मे निम्न शक्ति की औषधियो से काम शुरू किया था। वह नक्स वोमिका ९ शक्ति मे, आर्सेनिक १८ शक्ति मे देते थे। वाद को उन्होने सलाह दी कि सब औषधियो को ३० शक्ति मे देना चाहिये। इसके वाद उन्होंने लिखा कि उन्हें ६०, १५० तथा ३०० शक्ति की औषधियो के प्रयोग मे भी सफलता मिली है। यह सब उन्हें इसलिये लिखना पडा क्योंकि उच्च-शक्ति की औषधि देने मे आधारभूत आशंका यह रहती थी कि इसमे औषधि का कुछ अश बच भी रहता है या नहीं। अनुभव यही वतलाता हे कि उच्च-शक्ति मे औषधि का कुछ अंश हो या न हो, उसमे रोग को दूर करने की शक्ति निम्न शक्ति की औषधि की अपेक्षा अधिक रहती है। आजकल अणु-शक्ति के जो प्रयोग हो रहे हैं उनसे इस मत को पर्याप्त वल मिलता हे। होम्योपैथी मे औषधि की स्थूलता नहीं, उसकी शक्ति काम करती है।

८ पुराने तथा नवीन रोगो मे औषधि को कैसे दोहराया जाय ?

हमने इस ग्रन्थ मे प्रत्येक औषधि के लिये शक्ति का निर्देश भी दिया है। प्राय प्रत्येक औषधि ३० शक्ति मे देने का रिवाज है। निम्न-शक्ति मे उच्च-शक्ति तक औषध दी जाती है। हमने प्राय ६, ३०, २०० शक्तियो का निर्देश दिया है, परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं है कि इसके उच्च-शक्ति नहीं दी जानी चाहिये। ३० शक्ति से काम चले तो ठीक, नहीं तो २०० तक जाना ठीक रहता

है। उसके आगे सोच-समझकर चलना चाहिये। जिन चिकित्सको को अभ्यास है, वे रोगी को ३० से शुरू करके औषधियो की शक्ति की संपूर्ण शृंखला मे से गुज़ार देते हैं, परन्तु जिस शक्ति से रोग का जड से उन्मूलन हो जाय उससे आगे बढने की आवश्यकता नहीं है। प्रायः देखा गया है कि रोग का नाश करने के लिये ठीक औषध का चुन लेना ही काफी नहीं है, औषध की ठीक 'शक्ति' (Potency) का होना भी उतना ही आवश्यक है। यह सभव है कि ठीक 'औषध' चुनी गई हो, परन्तु उसकी ठीक 'शक्ति' न चुनी गई हो। ठीक शक्ति न चुने जाने पर औषध को लगातार देते रहने पर भी रोग का जड-मूल से नाश नहीं होता। जब औषध से रोग शान्त होने लगे तब औषधि रोक देनी चाहिये।

होम्योपैथिक औषधि को दोहराने मे साधारण नियम तो यह है कि निम्न-शक्ति की औषधि को दोहराया जा सकता है, उच्च-शक्ति की औषध को नहीं दोहराना चाहिये। क्योकि सर्वसाधारण को दिन मे कई बार, और कई दिन तक लगातार औषध लेने का अभ्यास चला आ रहा है, इसलिये रोगी के मानसिक सन्तोष के लिये उच्च-शक्ति की एक मात्रा देकर बाकी पाउडर खाली 'शूगर ऑफ मिल्क' के दिये जाते हैं जिससे रोगी समझता रहे कि वह दवा ले रहा है। 'नवीन-रोगो' (Acute diseases) मे निम्न-शक्ति तथा 'पुराने-रोगो' (Chronic diseases) मे उच्च-शक्ति दी जाती है और निम्न-शक्ति को दोहराया जा सकता है, उच्च-शक्ति को नहीं। यह साधारण नियम है। 'पुराने-रोगो' मे औषधि के दोहराने के विषय मे हनीमैन ने कुछ नवीन विचार भी प्रकट किये थे।

हनीमैन ने अपने ग्रन्थ 'औरगेनन' के छठे सस्करण मे औषध के दोहराये जाने पर अपने अन्तिम अनुभव के आधार पर जो लिखा है वह ध्यान देने योग्य है। वे २४८ पैरा मे लिखते हैं कि पुराने रोगो मे, अगर औषधि का ठीक निर्वाचन हुआ है, तो देर तक प्रभाव रखने वाली औषधियो को भी महीनो तक रोज़ या एक दिन छोड कर सफलतापूर्वक दोहराया जा सकता है। नवीन रोगो मे, अगर वे तीव्र हो, तो प्रति घटा या प्रति आध घटा, और साधारण नवीन रोगो मे प्रति दो या प्रति छ घटे बाद दोहराया जा सकता है। यह अल्पकालीन औषधियो की बात है, परन्तु पुराने रोगो मे इस प्रकार दीर्घकालीन औषध को दोहराने के सबध मे निर्देश देते हुए वे पैरा २४६ में लिखते हैं कि जब इस प्रकार लम्बे अर्से तक दीर्घ-कालीन उसी औषध को प्रतिदिन देना हो, तब पहली बात तो यह देख लेनी चाहिये कि औषध का ठीक निर्वाचन हुआ है, वह औषध रोग के लिये सही मानो मे होम्योपैथिक है। इस बात को जानने का तरीका यह है कि अगर वह औषध लाभ कर रही है, तब इसीलिये तो कर रही है क्योंकि वह रोग के लिये होम्योपैथिक है, सुनिर्वाचित है। उस दीर्घकालीन औषध को महीनो लगातार रोज़ देने मे दूसरी बात यह देख लेनी चाहिये कि जो औषध दी जा रही है उसकी पहली शक्ति

तथा अगली शक्ति मे भेद हो। इस भेद को करने का सहल तरीका यह है कि जो मात्रा दी जाय, उसे १० वार जोर का झटका दे दिया जाय। इस झटके से औषधि की शक्ति बढ जाती है। इस नियम को ध्यान मे रख कर कई चिकित्सक औषधि की पहले दिन ३०, दूसरे दिन २०० और तीसरे दिन १००० (1m) या पहले दिन १२, दूसरे दिन ३० और तीसरे दिन २०० शक्ति दिया करते हैं।

९ होम्योपैथिक दृष्टिकोण तथा भारतीय आध्यात्मिक दृष्टिकोण

हमने देखा कि होम्योपैथिक-औषधि भौतिक रूप मे औषधि नहीं है, शक्ति है। हनीमैन ने जब यह देख लिया कि उनकी शक्तिरूपा औषधिया रोग को जड-मूल से नष्ट कर देती हैं, तव उन्हें मानव के यथार्थ रूप के विषय मे सोचने के लिये बाधित होना पडा। मनुष्य क्या है? क्या यह शरीर मनुष्य है? क्या रोग इस स्थूल शरीर मे पैदा होता है? अगर रोग इस स्थूल शरीर से ही प्रारभ होता है तो नींद न आने पर, दर्द होने पर, अफीम देने से समस्या का हल हो जाना चाहिये। परन्तु ऐसा नहीं होता। अफीम से नींद तो आ जाती है, परन्तु साथ ही इन्द्रियाँ शिथिल पड जाती हैं, कब्ज हो जाती है, और बीसियो दूसरे नये उपद्रव खडे हो जाते हैं। हनीमैन ने देखा कि होम्योपैथिक-औषधि देने से नींद भी आती है, इन्द्रियाँ भी शिथिल नहीं होती, कोई नया उपद्रव भी खडा नहीं होता। ऐसा क्यो होता है? हनीमैन इस निर्णय पर पहुँचे कि मनुष्य इस स्थूल-शरीर का नाम नहीं है। शरीर के भीतर एक 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) है, वह स्वस्थ रहे तो शरीर के सब अग स्वस्थ रहते हैं, उसमे विकार उत्पन्न हो जाय तो वह विकार स्थूल-शरीर मे विकार को, रोग को उत्पन्न कर देता है। होम्योपैथिक औषधि क्योंकि शक्तिरूप है, इसलिये इसका सीधा असर उस 'जीवनी-शक्ति' पर होता है, और जीवनी-शक्ति के औषध-शक्ति द्वारा नीरोग हो जाने पर शरीर सब पहलुओ से स्वस्थ हो जाता है।

अपनी मुख्य पुस्तक 'ऑर्गेनन' मे हनीमैन ने लिखा है. "हमारा भौतिक-शरीर, अगर उसमे 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) न हो, तो वह न अनुभव कर सकता है, न कोई क्रिया कर सकता है, न आत्म-रक्षा कर सकता है। हमारा शरीर सब अनुभव तथा क्रियायें अपने अभौतिक शरीर से ही करता है, इस अ-भौतिक शरीर को दूसरे शब्दो मे 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) कहा जा सकता है। यह जीवनी-शक्ति ही स्वास्थ्य मे और रोग मे शरीर मे प्राण का संचार करती है, उसे जीवित बनाये रखती है।"

"जब कोई व्यक्ति रोगी होता है, तब मुख्य तौर पर यह जीवनी-शक्ति ही, जो शरीर के हर हिस्से मे व्याप्त है, जीवनी-शक्ति के विरोधी किसी विनाशक-तत्व से आक्रान्त होती है। जब जीवनी-शक्ति पर जीवन-विरोधी किसी शक्ति

का आक्रमण होता है तब मनुष्य को ऐसे अनुभव होने लगते है जो स्वस्थ-जीवन मे नहीं होते। स्वस्थ-जीवन मे न होने वाले, अस्वास्थ्य मे प्रकट होने वाले इन अनुभवो को ही हम रोग कहते हैं। जो 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) स्वय अदृश्य है, जिसे शरीर पर उसके प्रभाव के द्वारा ही जाना जा सकता है, उसमे अगर कोई विकार आ जाय, रोग आ जाय, तो वह अपने विकार को, अपने रोग को अपने 'सवेदनो' (Sensations) तथा 'क्रिया-कलापो' (Functions) की विकृति द्वारा ही प्रकट कर सकती है, अन्य किसी प्रकार नहीं। अदृश्य जीवनी-शक्ति पर विनाशकारी प्रभाव करने वाले कारणो का जब शरीर के सवेदनो तथा क्रिया-कलापों के विगड़ जाने के रूप मे प्रकाश होता है तब उसे ही 'रोग के लक्षण' (Morbific Symptoms) कहा जाता है।"

हनीमैन के उक्त सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए डा० केन्ट अपनी 'लेक्चर्स ऑन होम्योपैथिक फिलासफी' मे लिखते हैं "हम कितने ही सूक्ष्म-वीक्षण यत्र द्वारा क्यो न देखें हमे रोग का परिणाम ही दिखाई देगा। यह परिणाम दृश्य है, परन्तु मूलत यह किसी अदृश्य शक्ति से परिणत हुआ है। हमे सूक्ष्मवीक्षण यत्र से सूक्ष्म-कीटाणु दीखते है, परन्तु ये कीटाणु स्वय में रोग नहीं हैं, ये तो शरीर मे विद्यमान किसी अदृश्य-शक्ति के परिणाम है। जो हमे दीख रहा है उसका स्रोत वह है जो नहीं दीख रहा, जो बाहर नहीं, भीतर विद्यमान है।"

होम्योपैथी के प्रवर्तक हैनीमैन का कथन है कि रोग बाहर से नहीं आता, भीतर से आता है, और भीतर की शक्ति, जिसे वे 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) का नाम देते हैं, जब रुग्ण हो जाती है, तब शरीर मे कीटाणु भी पैदा हो जाते है, रोग के अन्य लक्षण भी प्रकट होने लगते है। रोग का कारण बाहर नहीं, भीतर है, इसलिये रोग का उपचार भी बाहर से नहीं, भीतर से होना जरूरी है। क्योंकि 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) शक्तिरूपा है, इसलिये इस पर प्रभाव भी उसी तत्व का हो सकता है, जो शक्तिरूप हो। होम्योपैथी की दवा, जैसा हम देख चुके हैं, शक्तिरूप होती है, इसलिये इसका जीवनी-शक्ति पर तुरत प्रभाव पडता है। हम कहते हैं सिर-दर्द हो रहा है, पेट खराब है, दस्त आ रहे हैं। वास्तव मे यह रोग सिर मे नहीं, पेट मे नहीं, आतो मे नहीं, 'जीवनी-शक्ति' (Vital Force) मे है। 'जीवनी-शक्ति' रुग्ण है इसलिये उस रोग का प्रकाश सिर, पेट, आत पर हो रहा है। बाहर से रोग का उपचार करने के स्थान मे भीतर से रोग का उपचार होगा तो स्वास्थ्य पूर्ण होगा, अन्यथा उपचार तात्कालिक होगा, सामयिक होगा। 'जीवनी-शक्ति' तक पहुँच 'शक्तिकृत्-औषधि' (Potentized drug) की है, स्थूल-औषधि की नहीं—यह होम्योपैथी का सिद्धान्त है। इसीलिये होम्योपैथी मे शक्तिकृत्-औषधि का प्रयोग होता है क्योंकि शक्तिकृत्-औषधि ही इतनी सूक्ष्म होती है जो सूक्ष्म जीवनी-शक्ति तक पहुँच

सकती है, स्थूल-औषधि तो स्थूल-भागों तक पहुँच कर ही रह जाती है। यही कारण है कि 'जीर्ण' अर्थात् पुराने रोगों (Chronic Diseases) का इलाज एलोपैथी द्वारा नहीं हो सकता, होम्योपैथी द्वारा होता है।

होम्योपैथी मे औषधि क्या करती है? कल्पना कीजिये कि जीवनी-शक्ति की विकृति के कारण कोई व्यक्ति रोगी हो गया। रोग का प्रकाश जब हुआ तब हमने देखा कि रोगी को जलन होती है, दस्त आते हैं, थोडी-थोडी देर बाद प्यास लगती है, रोगी घबडाया हुआ है, छटपटा रहा है, अत्यन्त कमजोर हो गया है, शक्तिहीन है। ये लक्षण 'जीवनी-शक्ति' ने प्रकट किये। औषधियो का निर्वाचन करते हुए हम देखते है कि आर्सेनिक के भी ये ही लक्षण हैं। क्योंकि रोग के लक्षण और औषधि के लक्षण एक-जैसे हैं, इसलिये हम जीवनी-शक्ति के रोग पर औषधि का वैसा ही कृत्रिम रोग आर्सेनिक देकर चढा देते है। परिणाम यह होता है कि 'सम सम शमयति' के सिद्धान्त के अनुसार औषधि द्वारा उत्पन्न किया हुआ कृत्रिम रोग 'जीवनी-शक्ति' के रोग को नष्ट कर 'जीवनी-शक्ति' पर अपनी कलम चढा देता है, और 'जीवनी-शक्ति' का अपना रोग नष्ट हो जाता है। क्योंकि औषधि का उत्पन्न किया हुआ रोग क्षणिक होता है इसलिये कुछ देर 'जीवनी-शक्ति' औषधिजन्य रोग से पीडित रह कर फिर अपने-आप इस कृत्रिम रोग से मुक्त हो जाती है। 'जीवनी-शक्ति' का अपना अस्ली रोग तो औषधि द्वारा उत्पन्न किये हुए उसी प्रकार के कृत्रिम रोग से 'सम सम शमयति' के सिद्धान्त के अनुसार चला गया, और औषधि ने थोडी देर के लिये जो अपने कृत्रिम रोग के पांव जमाये थे वे कृत्रिम होने के कारण थोडी देर मे अपने-आप चले जाते हैं। चिकित्सक की चतुराई इसी बात में है कि वह औषधि के कृत्रिम-रोग की मात्रा इतनी दे जिससे 'जीवनी-शक्ति' का रोग नष्ट हो जाय। नीची मात्रा देगा तो वह मात्रा 'जीवनी-शक्ति' के केन्द्र तक न पहुँच सकने के कारण रोग को नष्ट नहीं कर सकेगी, आवश्यकता से ऊँची मात्रा दे देगा तो 'जीवनी-शक्ति' का रोग तो नष्ट हो जायेगा, परन्तु 'जीवनी-शक्ति' पर औषधि का कृत्रिम रोग हावी हो जायगा।

हमने 'जीवनी-शक्ति' के इस प्रकरण मे भारतीय आध्यात्मिक-दृष्टिकोण का उल्लेख किया है। 'जीवनी-शक्ति' का विचार भारतीय अध्यात्म-शास्त्र के लिये नवीन नहीं है। भारतीय-अध्यात्मशास्त्र मे शरीर मे स्थूल-शरीर के अतिरिक्त 'कारण-शरीर' (Causal Body) को भी माना जाता है, इसे कई अध्यात्म-शास्त्री 'सूक्ष्म-शरीर' भी कहते हैं। यह सूक्ष्म-शरीर आत्मा तथा स्थूल-शरीर के बीच संबध स्थापित करने वाला भौतिक-शरीर ही है, परन्तु स्थूल न होता हुआ सूक्ष्म है। हमारे सब संस्कार इस सूक्ष्म-शरीर मे ही संचित रहते हैं। यह भी कहा जाता है कि मरने के बाद आत्मा इस सूक्ष्म-शरीर के साथ ही सब संस्कारों

को लेकर दूसरे जन्म मे जाता है। इस दृष्टि से हनीमैन का 'जीवनी-शक्ति' और भारतीय अध्यात्मशास्त्र का 'सूक्ष्म-शरीर' का विचार एक ही है। यह 'सूक्ष्म-शरीर' आत्मा नहीं है क्योकि आत्मा मे रोग नहीं आ सकता।

१० होम्योपैथिक-औषधि का निर्वाचन—यह एक समस्या है

ऊपर जो-कुछ कहा गया है उससे स्पष्ट है कि 'जीवनी-शक्ति' के रोग और औषधि से उत्पन्न होनेवाले रोग मे जब समता होती है, तब औषधि का रोग अपनी प्रबल शक्ति के कारण 'जीवनी-शक्ति' के रोग को नष्ट कर फिर अपने-आप नष्ट हो जाता है। इस दृष्टि से, यह जानने के लिये कि औषधिया स्वस्थ मनुष्य पर किस प्रकार के रोगो को उत्पन्न करती हैं, हनीमैन ने अपने पर 'औषधि-सिद्धि' (Proving) के परीक्षण किये और अन्य सहयोगियो की सहायता से भी औषधियो को सिद्ध किया। औषधियो के स्वस्थ मनुष्यो के ऊपर परीक्षणो के आधार पर उनमे जो शारीरिक तथा मानसिक लक्षण उत्पन्न हुए उनके सग्रह का नाम ही 'होम्योपैथिक मैटीरिया-मैडिका' है। किसी रोग पर तब तक सु-निर्वाचित औषधि सफलतापूर्वक नहीं दी जा सकती जब तक रोग के लक्षणो तथा औषधि के लक्षणो मे अधिक-से-अधिक समानता न हो। परन्तु इस समानता का निर्णय करना आसान नहीं है। रोग का इलाज तब तक नहीं हो सकता जब तक रोग के लक्षण और औषधि के लक्षण न मिल जायें, परन्तु अगर 'मैटीरिया-मैडिका' की किसी औषधि का भी अध्ययन क्यो न किया जाय, साधारण रूप से यही प्रतीत होता है कि प्रत्येक औषधि मे प्रत्येक रोग को उत्पन्न करने और इसीलिये दूर करने की शक्ति है, फिर औषधि का चुनाव कैसे किया जाय। यह कार्य एलोपैथी की अपेक्षा अत्यन्त कठिन है। एलोपैथी मे प्रत्येक रोग की कुछ निश्चित औषधियां हैं। अब तो इन औषधियो का इतना प्रचार हो गया है कि राह-चलता भी छोटी-मोटी बीमारी की पेटेंट गोली के विषय मे जानता है। होम्योपैथी मे यह बात नहीं है। होम्योपैथी म तो रोग तथा औषधि की लक्षण-समष्टि (Totality of Symptoms) के आधार पर दवा देने से ही रोग ठीक होता है। लक्षण-समष्टि को कैसे जानें, रोग के लक्षणो और दवा के लक्षणो मे समानता है—यह कैसे जानें जब कि सब दवाओं मे एक-से ही लक्षण पाये जाते हैं—होम्योपैथ के लिये यह सब से बडी तथा कठिन समस्या है। इस समस्या का क्या हल है?

११ होम्योपैथिक-औषधि का निर्वाचन कैसे हो?

डा० रोबर्ट गिबसन मिलर का कथन है कि सिद्धान्त रूप से होम्योपैथ का काम ऐसी औषधि का निर्वाचन है जिसके लक्षण हूबहू रोगी के लक्षणों से मिलते हो। ऐसा बहुत कठिन हो पाता है। खास कर पुराने रोगो मे हमे रोगो के

अनेक लक्षणो मे से ही कुछ लक्षणो को चुनना पडता है और उसी आधार पर औषधि का भी निर्वाचन करना पडता है। अगर रोगी के प्रत्येक लक्षण का औषधि के प्रत्येक लक्षण से मिलान करने पर ही दवा दी जा सके तब तो किसी रोग का इलाज करना ही कठिन हो जाय। हनीमैन के समय के होम्योपैथ ८० दवाइयों से कठिन-से-कठिन रोगो का इलाज कर देते थे फिर अब तो सैकडो दवाइयाँ नई निकल आयी हैं, इनके आधार पर हर किसी रोग का इलाज क्यो सभव नहीं होना चाहिये ? वे लोग अपने इलाज मे इसलिये सफल होते थे क्योकि जितनी भी औषधियाँ उनके पास थीं वे उनके अन्त करण मे प्रविष्ट हो जाते थे। औषधि की आत्मा और रोगी के लक्षणो का मूल्य जबतक समझ न लिया जाय तबतक होम्योपैथिक इलाज सभव नहीं है। औषधि की आत्मा को समझने के लिये तो 'मैटीरिया-मैडिका' मे वर्णित औषधियो के लक्षणो को स्मृति मे बैठा लेना आवश्यक है, परन्तु रोगी के लक्षणों को समझने के लिये प्रत्येक लक्षण का मूल्य समझना आवश्यक है। रोगी कहता है, उसे सिर-दर्द होती है, उसे ठड झट-से लग जाती है, वह हर काम मे जल्दबाजी करता है, हर समय चिडचिडा रहता है, मीठा खाना उसे बहुत पसन्द है—ये सब रोगी के लक्षण हैं। होम्योपैथ के लिये यह आवश्यक है कि इन लक्षणो को सुन कर यह निश्चय करे कि इनमे से किस लक्षण को प्रधानता देनी है, किसको छोड़ देना है, किस लक्षण के आधार पर उसने ठीक दवा का निर्वाचन करना है। लक्षणो के मूल्य-निर्धारण (Valuation of Symptoms) के बगैर होम्योपैथ ठीक दवा का निश्चय नहीं कर सकता। तो फिर रोगी के रोग-संबधी लक्षणो का मूल्य कैसे निर्धारण किया जाय ?

१२ रोगी के लक्षणो का मूल्य-निर्धारण करने की टैक्नीक

हनीमैन का कथन था 'There are no diseases but sick people'—संसार मे रोग नहीं हैं, परन्तु रोगी हैं। इसका क्या अर्थ है ? होम्योपैथी मे मलेरिया, हैज़ा, निमोनिया आदि इन नामो से किसी बीमारी का नाम नहीं लिया जाता, बीमार मे जो लक्षण हो, उन्हीं के आधार पर इलाज होता है, बीमारी भले ही कुछ हो। परन्तु बीमार कौन है ? हम पहले ही कह चुके हैं कि बीमारी का उद्भव शरीर नहीं, शरीर के भीतर है, 'जीवनी-शक्ति' है। इसलिये इलाज करते हुए 'जीवनी-शक्ति' पर छाये रोग का इलाज करना होता है, वह ठीक हो गई तो शरीर का रोग अपने-आप ठीक हो जाता है। रोग अन्दर से बाहर आया है, बाहर के इलाज से रोग नष्ट नहीं होता, दबता है, अन्दर के इलाज से रोग के केन्द्र-बिन्दु पर, रोग के उद्भव-स्थान पर चोट पहुँचती है, इसलिये रोग समूल नष्ट हो जाता है। प्रश्न यह है कि औषधि द्वारा रुग्ण-मनुष्य के अन्दर, उसकी 'जीवनी-शक्ति' तक पहुँचने की क्या तरकीब है, उसकी क्या टैक्नीक है ?

(क) मानसिक-लक्षण की प्राथमिकता (Mental symptoms are of first grade importance)—'जीवनी-शक्ति' अपने को मानसिक-लक्षणो द्वारा प्रकट करती है। हम करते पीछे हैं, सोचते पहले हैं। सोचने से करना बनता है। अत रोग के लक्षणो का मूल्याकन करते हुए सब से प्रबल लक्षण 'मानसिक-लक्षण' (Mental Symptoms) हैं। अगर रोगी मे औषधि के प्रबल मानसिक-लक्षण पाये जायें, जितने प्रबल वे औषधि मे हैं उतने ही प्रबल वे रोगी मे पाये जायें, तो अन्य छोटे-मोटे लक्षणो की परवाह किये बगैर वह औषधि रोगी के मानसिक-लक्षणों को ही नहीं, उसके शारीरिक-लक्षणों को भी ठीक कर देगी। क्योंकि 'जीवनी-शक्ति' से ही मनुष्य बनता है, और 'जीवनी-शक्ति' का प्रथम-प्रकाश मानसिक-लक्षणो से होता है, इसलिये 'जीवनी-शक्ति' के, केन्द्र के रोग को दूर करने का तरीका औषधि का निर्वाचन करते हुए मानसिक-लक्षणो को प्राथमिकता देना है। प्रबल-मानसिक-लक्षण का औषधि-निर्वाचन मे सब से प्रथम स्थान है। कई लोग समझते हैं कि मानसिक-लक्षण तो पागलपन, हिस्टीरिया, डिलीरियम आदि ही हैं। परन्तु ऐसी बात नहीं है। लोमडी की-सी धूर्तता टैरेंटुला का, अपने कुटुम्बियो के प्रति स्नेह का अभाव हो जाना सीपिया और फॉसफोरस का, अत्यन्त असहिष्णुता (Irritability) नक्स वोमिका तथा ब्रायोनिया का, आत्मघात के विचार ऑरम तथा चायना का, हरेक बात मे नुकताचीनी और 'यू नहीं तू की-सी' तबीयत आर्सेनिक का, मृत्यु की आशका एसिस का, मृत्यु का भयकर भय एकानाइट का, जिन्हें प्रेम करते हैं उन्हीं को मार डालने के विचार मर्क्यूरियम और नक्स वोमिका का, चित्तवृत्ति का झट-झट बदलना इग्नेशिया का, अहकारभरी उद्दडता का भाव प्लेटिना का, नम्र तथा मृदु स्वभाव के साथ रोते रहना पल्सेटिला का, सान्त्वना से क्रुद्ध हो जाना नैट्रम म्यूर का, गन्दगी पसन्द करना और आध्यात्मिक बातो की चर्चा करते रहना सल्फर का मानसिक लक्षण है। ये तो हमने दृष्टात दिये। इसी प्रकार अन्य अनेक औषधियो के और रोगो के अनेक मानसिक लक्षण हो सकते हैं। केन्ट की रिपर्टरी मे मन के प्रकरण मे मानसिक-लक्षण दिये हुए हैं। रोग का निदान करते हुए मानसिक-लक्षणो को सब से अधिक महत्व देना चाहिये। औषधि निर्वाचन मे उनका मूल्य सब से अधिक है क्योंकि वे ही तो असली मनुष्य को सूचित करते हैं। रोग का उपचार बीमारी का उपचार नहीं, रोगी का, रोगी की अन्तरात्मा का, उसकी 'जीवनी-शक्ति' का उपचार है, और क्योंकि 'जीवनी-शक्ति' मानसिक-लक्षणो मे अपने को अभिव्यक्त करती है इसलिये चिकित्सक का कर्तव्य है कि औषधि का निर्वाचन करते हुए मानसिक-लक्षणो को सब से प्रथम स्थान दे। यह बात पुराने रोगो (Chronic) के लिये है, सर्दी मे जुकाम-खाँसी हो जाने, बदहजमी से दस्त आ जाने आदि नवीन रोगो के विषय मे नहीं।

(ख) बार-बार एक-सा स्वप्न आना (Dreams)—मूल्यांकन मे मानसिक लक्षणो की प्राथमिकता के विषय मे विचार करते हुए स्वप्नो को भी ध्यान मे रखना आवश्यक है। जब कोई स्वप्न बार-बार उसी तरह से आता है तब वह 'मानसिक-लक्षण' बन जाता है, और उसे अन्य मानसिक-लक्षणो के समान औषधि-निर्वाचन मे प्राथमिकता दी जानी चाहिये। उदाहरणार्थ, थूजा मे ऊँचाई से गिरने का स्वप्न आता है, अर्जेन्टम नाइट्रिकम मे और लैक कैनाइनम मे बार-बार सॉंप देखने का स्वप्न आता है, रस टॉक्स मे आग लगने का स्वप्न आता है। किसी भी लक्षण के आधार पर औषधि का निर्वाचन करते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि औषधि के लक्षणो मे और रोग के लक्षणो मे प्रबल समानता हो, अर्थात् अगर रिपर्टरी मे औषधि मे वह लक्षण मोटे अक्षरो मे लिखा पाया जाय, तो रोगी मे भी वह लक्षण उसी गहराई मे होना चाहिये।

(ग) मानसिक-लक्षणो के बाद सर्वाङ्गीण या व्यापक लक्षणो का स्थान है (After mental symptoms General symptoms are of second grade in importance))—जैसे मानसिक-लक्षण का संबंध सीधा 'जीवनी-शक्ति' से होता है, वैसे सर्वाङ्गीण या व्यापक लक्षण का संबंध भी 'जीवनी-शक्ति' से होता है। उसका स्वरूप क्या है? रोगी की उसकी भौतिक-परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया क्या है—इसी को रोगी की 'जीवनी-शक्ति' के 'व्यापक-लक्षण' या 'सर्वाङ्गीण-लक्षण' (General symptoms) कहा जाता है। उदाहरणार्थ, व्यापक-लक्षणो का रूप निम्न हो सकता है

(i) समय—दिन, रात, सवेरे, शाम, रात के १ बजे, ३ बजे, दिन के १० बजे, शाम के ४ बजे आदि-आदि के समय रोगी की समय के प्रति क्या प्रतिक्रिया है। इस समय रोग बढ़ता है, घटता है आदि जानना औषधि का तथा रोग का व्यापक लक्षण है।

(ii) मौसम—ग्रीष्म-ऋतु, शरद्-ऋतु, वर्षा-ऋतु, तूफान, पतझड आदि के प्रति औषधि तथा रोग की क्या प्रतिक्रिया है?

(iii) सर्दी-गर्मी तथा खुली या बन्द हवा—औषधि शीत-प्रधान है या ऊष्णता-प्रधान है, इसी प्रकार जिस रोगी का उपचार हो रहा है वह सर्दी पसन्द करता है, या गर्मी। सर्दी-गर्मी के तथा खुली या बन्द हवा के प्रति उसकी क्या प्रतिक्रिया है—इसे जान लेना व्यापक लक्षण को जान लेना है।

(iv) दायाँ-बायाँ तरफ—क्या औषधि का विशेष प्रभाव शरीर के दायें भाग पर है या बायें भाग पर; इसी प्रकार रोग का प्रभाव दायें भाग पर हुआ है या बायें भाग पर?

(v) दवाव—क्या रोगी दर्द वाली तरफ़ लेटने से आराम अनुभव करता है या दूसरी तरफ़ ।

(vi) चलना-फिरना (गति) या आराम—गति का रोग पर क्या प्रभाव है? क्या चलने-फिरने से रोग बढ़ता है, या घटता है? क्या आराम करने से रोग बढ़ता है या घटता है?

(vii) शब्द तथा स्पर्श—क्या शोर-गुल को रोगी सहन कर सकता है या इससे वह एकदम घबरा जाता है? क्या कपड़े के छू जाने या किसी स्पर्श से रोगी एकदम बेचैन हो जाता है?

ऊपर हमने जिन बातों का उल्लेख किया उनका अभिप्राय इतना ही है कि किसी रोग का उपचार करते समय जहां हमे लक्षणों का मूल्यांकन करते हुए महत्व का प्रथम-स्थान 'मानसिक-लक्षणों' (Mental symptoms) को देना चाहिये, वहाँ लक्षणों के मूल्यांकन मे द्वितीय-स्थान 'व्यापक-लक्षणों' (Generals) को देना चाहिये। मानसिक-परिस्थिति के प्रति रोगी की प्रतिक्रिया मानसिक-लक्षणो द्वारा प्रकट होती है, भौतिक-परिस्थिति के प्रति रोगी को प्रतिक्रिया सर्वाङ्गीण या व्यापक-लक्षणों द्वारा प्रकट होती है।

इस बात को और अधिक स्पष्ट किया जाय तो कह सकते हैं कि जब रोगी अपनी तकलीफ का वर्णन करते हुए 'मैं' (I) शब्द का प्रयोग करता है, तब वह अपने सर्वाङ्ग के, अपने-आप के, जीवनी-शक्ति के विषय मे कह रहा होता है, और चिकित्सक के लिये उसी के विषय मे जानना उसका मुख्य कार्य है। चिकित्सक यह जानना चाहता है कि रोगी की 'जीवनी-शक्ति' की क्या पुकार है क्योंकि उसी को ठीक करने से रोगी का मूल कष्ट दूर हो सकता है। जब रोगी कहता है कि 'मैं उदास रहता हूँ', 'मैं काम मे जी नहीं लगा सकता', 'मैं अंधेरे में घबड़ा जाता हूं', 'मैं ठंड सहन नहीं कर सकता', 'बरसात मे मैं ढह जाता हूँ', 'मैं गर्मी पसन्द करता हूँ', 'अंधेरी-अन्धड़, बिजली की कड़क मे मैं परेशान हो जाता हूँ', 'मैं इकला नहीं रह सकता', 'मैं बन्द कमरे मे नहीं रह सकता', 'ठंड मे ओढ़न से बाहर हाथ नहीं निकाल सकता'—जब रोगी इस प्रकार 'मैं'-'मैं'-'मैं' का प्रयोग करता है, तब वह अपने किसी एक अंग के विषय मे नहीं कह रहा होता, तब वह अपने संपूर्ण के विषय मे, अपनी जीवनी-शक्ति के विषय मे कह रहा होता है।

औषधि के जो व्यापक-लक्षण हैं वे समय, मौसम, सर्दी-गर्मी आदि तक ही सीमित नहीं हैं। इनका ऊपर उल्लेख तो हमने दृष्टांत के तौर पर किया है। प्रत्येक औषधि के अपने व्यापक-लक्षण हैं। भौतिक या अन्य परिस्थिति के प्रति 'जीवनी-शक्ति' की प्रतिक्रिया का नाम ही 'व्यापक-लक्षण' (Generals) है। उपचार के लिये इनको ध्यान मे रखना चिकित्सक के लिये आवश्यक है क्योंकि लक्षणों के मूल्यांकन में इन व्यापक-लक्षणों का द्वितीय स्थान है।

(घ) उत्कट इच्छा तथा उत्कट घृणा का लक्षण-निर्वाचन मे तृतीय-स्थान है—मानसिक-लक्षणों तथा व्यापक-लक्षणों के बाद लक्षणो के मूल्याकन मे तृतीय-स्थान 'उत्कट-इच्छा' (Cravings) तथा 'उत्कट-घृणा' (Aversions) का है। उत्कट-इच्छा का अर्थ सिर्फ 'इच्छाएं' (Likes) या 'अनिच्छाएँ' (dislikes) ही नहीं है। साधारण तौर पर हर व्यक्ति को कुछ खाना, कुछ बातें अच्छी लगती हैं, कुछ खाना और कुछ बातें बुरी लगती हैं। औषधि-निर्वाचन के लिये इतना पर्याप्त नहीं है। ऐसी इच्छा जो घर दबाये, और ऐसी घृणा जो साफ़ नजर आये—यही 'जीवनी-शक्ति' के सर्वाङ्ग को प्रकट करती है, और होम्यो-पैथी मे क्योंकि रोग की नहीं रोगी की चिकित्सा की जाती है इसलिये संपूर्ण जीवनी-शक्ति को व्यक्त करने वाला लक्षण ही ध्यान देने योग्य लक्षण है।

(ङ) स्त्रियो की चिकित्सा मे मासिक-धर्म से पूर्व, मासिक-धर्म के समय और मासिक-धर्म के बाद के लक्षण महत्व के हैं—स्त्रियो की चिकित्सा करते हुए भी जीवनी-शक्ति के सर्वाङ्ग का जानना महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ भी हमने किसी रोग-विशेष की नहीं, रोगिणी की चिकित्सा करनी होती है। रोगिणी की 'जीवनी-शक्ति' के केन्द्र मे रोग की वजह से ही—पहले, बीच मे और बाद मे —मासिक-धर्म का आना होता है। मासिक-धर्म थोडा है, देर मे होता है, जल्दी हो जाता है या ज्यादा होता है—इन लक्षणों का महत्व पूर्व कहे गये लक्षणो के बाद आता है।

(च) लक्षणो के मूल्यांकन मे रोग-विशेष का अन्तिम स्थान है (Particulars of the disease have a last place in symptom valuation)—जब रोगी चिकित्सक के पास जाता है तब वह अपने 'रोग-विशेष' की शिकायत लेकर जाता है। उसे सिर-दर्द है, दमा है, लिवर की शिकायत है—या ऐसा ही कोई रोग-विशेष है। होम्योपैथी मे औषधि के तथा रोगी के लक्षणों का मूल्यांकन करते समय रोग-विशेष का अन्तिम स्थान है। रोगी की दृष्टि से जो सर्व-प्रथम है, होम्योपैथ की दृष्टि से उसका मूल्य सब से अन्तिम है। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिये है क्योंकि रोग तो मनुष्य के आभ्यन्तर से शुरू हुआ है, उसकी 'जीवनी-शक्ति' की विकृति से प्रारंभ हुआ है। वहाँ से शुरू होकर बाहर के अंगों मे तो वह अन्त मे आता है। अगर औषधि द्वारा हम रोगी की 'जीवनी-शक्ति' को, उसके केन्द्र को ठीक कर देंगे, तो बाहर प्रकट होने वाला 'रोग-विशेष' तो अपने-आप ठीक हो जायगा, अन्यथा बाहर के उपचार से या वह सामयिक तौर पर दब कर बार-बार प्रकट होगा, या दब कर किसी अन्य स्थान से किसी अन्य रोग को उत्पन्न कर देगा। यह बात नवीन (Acute) रोगों के विषय में नहीं, विशेष तौर से पुराने, जीर्ण (Chronic) रोगों के विषय मे कही जा रही है। इसका यह मतलब भी नहीं कि उपचार करते हुए 'रोग-विशेष' को आँखों

से ओझल ही कर देना चाहिये, इसका यह मतलब है कि ऐसे रोगी का उपचार करते हुए प्रमुखता उसके मानसिक तथा सर्वाङ्गीण लक्षणो को देनी चाहिये। साथ ही यह भी देख लेना चाहिये कि सर्वाङ्गीण लक्षण के साथ 'रोग-विशेष' के लक्षण भी मौजूद हैं।

सर्वाङ्गीण या व्यापक लक्षणो तथा 'रोग-विशेष' के लक्षणो मे भेद—व्यापक-लक्षणो तथा रोग-विशेष के लक्षणो मे क्या भेद है? हम 'सर्वाङ्गीण या व्यापक-लक्षणो' (Generals) की चर्चा करते हुए कह आये हैं कि जिन लक्षणो का ज़िक्र करता हुआ रोगी 'मैं' (I) का प्रयोग करे, वे सर्वाङ्गीण अथवा व्यापक-लक्षण हैं, वे लक्षण 'जीवनी-शक्ति' के हैं, समूचे मनुष्य के हैं। ठीक इसी तरह हम कह सकते हैं कि जिन लक्षणो का ज़िक्र करते हुए रोगी 'मेरा' (My)-शब्द का प्रयोग करे, वे सर्वाङ्गीण या व्यापक-लक्षण न होकर एकागी-लक्षण हैं, 'रोग-विशेष' के लक्षण हैं। उदाहरणार्थ, रोगी कहता है: 'मेरा सिर दर्द कर रहा है', 'मेरी टाँग मे पीड़ा है', 'मैं जब बाहर हवा मे निकलता हूँ तो मेरा सिर-दर्द ठीक हो जाता है', 'मैं जब ठडे पानी मे पैर रखता हूँ तब मेरे गठिया को आराम मिलता है', 'मेरा एग्ज़ीमा खुश्क है या तर है', 'मेरा गला बैठ गया है', 'ऐसा लगता है कि मेरी हड्डियां टूट रही हैं', 'मुझे ऐसा लगता है कि मेरे भीतर के अग बाहर निकले पड रहे हैं'। जब रोगी 'मैं'-'मैं'-'मैं' का प्रयोग करता है, तब वह अपने समूचेपन के विषय मे कह रहा होता है, जब वह 'मेरा'-'मेरा'-'मेरा'—इस शब्द का प्रयोग करता है, तब वह अपने अग-विशेष का, 'सर्वाङ्गीण-लक्षण' (General) का नहीं, 'एकागी-लक्षण' (Particular) का वर्णन कर रहा होता है। हनीमैन का कहना है कि एकागी-लक्षण का उपचार मे वह महत्व नहीं है जो सर्वाङ्गीण लक्षण का है, 'सर्वाङ्गीण-लक्षण' का उपचार करते हुए 'एकागी-लक्षण' अपने-आप ठीक हो जाता है। उपचार की दृष्टि से अत्यन्त-प्रबल-मानसिक लक्षण का उपचार करने से अन्य सब लक्षण दूर हो जाते हैं, अत्यन्त-प्रबल-मानसिक लक्षण न हो, परन्तु अगर अत्यन्त-प्रबल-सर्वाङ्गीण लक्षण हो, तो उसका उपचार करते हुए रोग-विशेषों के लक्षण, जिनका रोगी ने ज़िक्र तक न किया हो, वे भी दूर हो जाते हैं क्योंकि होम्योपैथी की दृष्टि से उपचार रोग का नहीं, रोगी का किया जाता है, 'रोग-विशेष' का नहीं, 'जीवनी-शक्ति' का किया जाता है।

तो क्या चिकित्सा की दृष्टि से 'रोग-विशेष' (Particular) का कोई महत्व नहीं है? ऐसी बात नहीं है। 'रोग-विशेष' के सबध मे चिकित्सक को दो बातो पर ध्यान देना होगा। वे हैं: रोग की प्रकृति (Modalities) तथा विलक्षण-लक्षण (Strange, Peculiar and Unusual symptoms)। ये क्या है?

(१) 'रोग-विशेष' के लक्षणो के मूल्याकन मे रोग की प्रकृति का महत्व है (Modalities have important place in Particulars)—

हमने व्यापक-लक्षणो की चर्चा करते हुए लिखा है कि समूची जीवनी-शक्ति की, अर्थात् रोगी के सपूर्ण शरीर की समय, मौसम, सर्दी-गर्मी, खुली-बन्द हवा, शरीर का दायाँ भाग, बायाँ भाग, दबाव, चलना-फिरना, गति-आराम, शब्द तथा स्पर्श एवं अन्य भौतिक परिस्थिति के प्रति जो प्रतिक्रिया हो, उसके आधार पर रोगी के सर्वाङ्गीण या व्यापक (Generals) लक्षणो का निश्चय किया जाता है। ठीक इसीतरह, इन सभी प्रकार की भौतिक-परिस्थितियो का रोगी के अंग-विशेषो पर भी प्रभाव पडता है। ठड से सिर-दर्द बढ़ भी सकता है, घट भी सकता है; मौसम का जहाँ समूचे मनुष्य पर प्रभाव पडता है वहाँ उसके भिन्न-भिन्न अंगों पर भी प्रभाव पड सकता है; समय के विषय मे भी यही कहा जा सकता है—किसी का सिर दर्द प्रातः १० बजे से प्रारभ होकर ३ बजे सायकाल तक रहता है, फिर समाप्त हो जाता है, किसी का ४ बजे से ८ बजे तक रहता है; किसी के गठिया मे गर्म पानी से आराम मिलता है, किसी के इसी रोगमे ठडे पानी से आराम मिलता है। शरीर के भिन्न-भिन्न अगों पर इन सब भौतिक-परिस्थितियो का जो प्रभाव है उसी को 'प्रकृति' (Modalities) कहा जाता है। किन परि-स्थितियों मे अग-विशेष का रोग बढ़ता है—इसे अग्रेजी मे Aggravation कहते हैं, किन में घटता है—इसे Amelioration कहते हैं। जैसे अंग-विशेष का रोग किन्हीं विशेष-परिस्थितियो मे बढता-घटता है, वैसे औषधि की भी उन्हीं परिस्थितियों मे रोग को बढाने-घटाने की प्रकृति होती है। अग-विशेष के रोग पर औषधि का निर्वाचन करते हुए औषधि तथा अग-विशेष के रोग की इस समता का ध्यान रखना पडता है। उदाहरणार्थ, अगर रोगी कहता है कि उसे सिर-दर्द होता है तो इतने-से लक्षण पर क्या निश्चय किया जा सकता है? रिपर्टरी मे सिर-दर्द की २५० दवाएँ हैं। परन्तु अगर रोगी कहे कि उसका सिर-दर्द सवेरे १० बजे से ३ बजे तक रहता है, फिर बन्द हो जाता है, तब रोग की यह 'प्रकृति' (Modality) सिर्फ एक अग मे सीमित रहने के कारण 'एकागी' (Particular) होती हुई भी 'सर्वाङ्गीण' या व्यापक-लक्षण (General) की-सी श्रेणी में आ जाती है। यह सर्वाङ्गीण तो नहीं बनती, परन्तु इसका महत्व, इसका मूल्या-कन सर्वाङ्गीण या व्यापक-लक्षण की श्रेणी मे आ जाता है। यह रोग तथा औषधि की यह 'प्रकृति' (Modality) नैट्रम म्यूर की है। अगर इस लक्षण के साथ 'नैट्रम म्यूर' के अन्य दो-तीन लक्षण मिल जायें, तब तो मानो ठीक औषधि का निर्णय ही हो गया। एक और दृष्टात लीजिये। रोगी कहता है कि मेरे गले मे ऐसी जलन होती है मानो अगारे पड़े हैं। अगर रिपर्टरी मे गले की जलन के लिये औषधियाँ देखी जायें, तो १७० दवायें मिलेंगी। इनमे से कौन-सी दवा दी जाय? परन्तु अगर रोगी कहता है कि गरम पानी पीने से मुझे आराम महसूस होता है, तब रोग तथा औषधि की 'प्रकृति' (Modality) का मिलान करते हुए

यह निर्णय करना आसान हो जाता है कि गले की यह जलन आर्सेनिक से दूर होगी क्योंकि उसमे जलन को गर्मी से आराम होने का लक्षण है। इस बात को समझने के लिये एक और दृष्टांत लें। एक रोगी को बुखार आता है। सिर्फ बुखार पर सैकड़ो दवाएं है, कौन-सी दवा दी जाय? रोगी कहता है कि शाम के ४ बजे बुखार शुरु होता है, ८ बजे समाप्त हो जाता है। यह बुखार की 'प्रकृति' (Modality) है, और यह लाइकोपोडियम मे पाया जाता है। इन सब दृष्टांतो मे यह स्पष्ट हो जायगा कि जब हमे 'रोग-विशेष' का उपचार करना हो, उसमे मानसिक अथवा सर्वाङ्गीण लक्षण प्रबल रूप में न दिखलाई दें, तब रोग की 'प्रकृति' (Modality) पर विचार करके औषधि देनी होगी। 'प्रकृति' (Modality) जानने के लिये यह जानना आवश्यक होगा कि किन परिस्थितियो मे 'रोग-विशेष' (Particular) बढ़ता है, घटता है। जब इन्हीं भौतिक-परिस्थितियो के प्रति प्रतिक्रिया समूचा व्यक्ति करता है तब प्रतिक्रिया के उन लक्षणो को 'सर्वाङ्गीण' या 'व्यापक' लक्षण (General symptoms) कहा जाता है, जब इन्हीं भौतिक-परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया रोग का कोई अग-विशेष—सिर, पेट, टॉग, हाथ आदि—करता है, तब उन लक्षणो को 'प्रकृति' (Modality) कहा जाता है। औषधि का निर्वाचन करने मे सर्वाङ्गीण या व्यापक लक्षण (General symptoms) प्रधान हैं, और अगर भिन्न-भिन्न अगो के रोगो मे औषधि और रोग की 'प्रकृति' (Modality) का साम्य दिखलाई दे, तो 'प्रकृति' (Modality) के ये लक्षण 'सर्वाङ्गीण-लक्षणों' (General symptoms) का-सा महत्व रखते हैं, यद्यपि ये सर्वाङ्गीण-लक्षण नहीं कहे जाते।

(ii) 'रोग-विशेष' के लक्षणो के मूल्यांकन मे विलक्षण-लक्षणो का महत्व है (Strange, Peculiar and Unusual symptoms have an important place in Particulars)—रोग-विशेष मे औषधि का निर्धारण करते हुए विलक्षण-लक्षणो पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, 'व्यापक-लक्षणों' (Generals) की दृष्टि से फॉसफोरस शीत-प्रधान औषधि है। फॉसफोरस के रोगी को ठड बहुत लगती है—यह उसका सर्वाङ्गीण, व्यापक लक्षण है। इस दृष्टि से उसे गर्म चाय, गर्म भोजन पसन्द होना चाहिये, परन्तु पेट की दृष्टि से उसे ठडी वस्तु, बर्फ-कुलफी ज्यादा पसन्द है। ठडा पानी पीने के बाद जब वह पेट मे गर्म हो जाता है, तो उसे उल्टी आ जाती है। ठडे मिजाज का आदमी बर्फ का पानी पसन्द करे—यह विलक्षण-लक्षण नहीं तो क्या है? फॉसफोरस के रोगी की समूची 'जीवनी-शक्ति' ठड से घबराती है, वह गर्मी पसन्द करता है, परन्तु जब पेट का सवाल आता है, तब वह बर्फ पसन्द करता है। यह विलक्षण-लक्षण है। पहले हम आर्सेनिक का दृष्टांत दे आये हैं। अगर

रोगी कहे कि उसके गले मे जलन है और गर्म चाय से उसे आराम मिलता है, तो यह विलक्षण-लक्षण है क्योंकि जलन मे तो ठंड से आराम मिलना चाहिये। किसी जगह की जलन मे अगर सेक से आराम मिले, तो इस विलक्षण-लक्षण पर आर्सेनिक लाभ करेगा। डा० केन्ट ने लीडम का दृष्टात दिया है। एक रोगी को गठिया था। गठिये मे सेक से आराम होना चाहिये, परन्तु वह जब तक वर्फ भरे टब मे पांव रखे रहता था तब तक उसे आराम रहता था, नहीं तो छटपटाता था। गठिये के रोगी के लिये यह विलक्षण बात थी, इसमे लीडम ने उसका रोग ठीक कर दिया। बुखार मे यह स्वाभाविक है कि जब ठंड की अवस्था हो तब प्यास न लगे, जब ताप बढ़ने की अवस्था हो तब प्यास लगे, परन्तु अगर ठंड की अवस्था में रोगी प्यासा हो और ज्वर चढ़ जाने की अवस्था मे प्यास न रहे, तो यह विचित्र बात है न! इग्नेशिया मे यह लक्षण पाया जाता है, और इस प्रकार के ज्वर को यह दवा एकदम सभाल लेती है। सूजन की हालत मे उस पर दवाव डालने से दुखना चाहिये, परन्तु अगर सूजन मे दवाने से आराम मालूम हो तो यह विलक्षण बात है, और इस लक्षण मे ब्रायोनिया लाभ करता है। सक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि रोगी के जिन लक्षणो के विषय मे साधारण बुद्धि से कहा जा सके कि वे होने ही चाहियें, जो साधारण कोटि के लक्षण (Common symptoms) हैं, वे औषधि निर्वाचन मे कोई मूल्य नहीं रखते, औषधि-निर्वाचन मे उन लक्षणो का मूल्य बहुत बढ़ जाता है, वे बहुमूल्य लक्षण हैं, जिनका कोई समाधान नहीं किया जा सकता, जो 'असाधारण' (Uncommon) हैं। ऐसे लक्षणो को रोग मे और औषधि मे ढूंढ निकालना चतुर चिकित्सक का काम है। ऐसी चतुराई अनुभव से ही प्राप्त होती है।

(छ) निर्वाचन के लिये औषिधियो की सख्या में कमी कैसे की जाय (How to eliminate drugs in drug selection)—होम्योपैथ के लिये सब से बडी कठिनाई इस बात की है कि रिपर्टरी मे किसी भी लक्षण के लिये एक-दो नहीं, सैकडों दवायें लिखी मिलती हैं, ऐसी अवस्था मे वह किस दवा को चुने, किसे छोड दे, और उसे कैसे पता चले कि कौन-सी दवा इलाज के लिये ठीक है? अगर इनी-गिनी दवायें हो, तव तो उनमे से किसी एक का चुनाव करना सहज हो सकता है, परन्तु जब दवाओं की सख्या हद से बाहर हो, तब चुनाव करना कठिन हो जाता है। इसके लिये ऊपर जो-कुछ कहा गया है वह तो सहायक है ही, इसके अतिरिक्त एक भारी सूची मे से जिस रोग का इलाज करना है उसके लिये किन दवाओं को छोड देना चाहिये इस तरीके को 'निरसनीय-लक्षण' (Eliminating symptoms) कहा जाता है। यह तरीका क्या है?

कल्पना कीजिये कि एक रोगी आपके पास आता है जिसे अपचन का रोग है, पेट मे जलन के साथ दर्द होता है और बार-बार खट्टी उल्टी आती है। वह

आकर अपने सब लक्षण उगल डालता है क्योंकि वे लक्षण ही उसकी चेतना में मुख्य स्थान पकड़े हुए हैं।

आप क्या करेंगे? आप उसके रोग को लिखेंगे। इसके बाद रोग की क्या 'प्रकृति' (Modality) है—यह लिखेंगे। गर्मी-सर्दी (Heat and cold) का, गति-आराम (Movement and rest) का, खड़े-बैठे, दायें लेटने, बायें लेटने (Position) का, दिन-रात के समय (Hours of day and night) का, खाने-पीने (Food or drink) का उसकी पेट-दर्द, डकार आदि तकलीफों पर क्या असर होता है—यह सब लिख लेंगे।

अब तक उसने जो लक्षण बतलाये वे 'मेरा-पेट', 'मेरा-दर्द'—'मेरा'-'मेरा'-'मेरा'—इस दृष्टि से बतलाये, परन्तु ये तो 'रोग-विशेष' (Particulars) के लक्षण थे, आपने उसके उन लक्षणों का चयन करना है जो उसके समूचे मनुष्य के, उसकी चेतना-शक्ति के लक्षण हैं, ऐसे लक्षण जिनमें वह 'मैं'-'मैं'-'मैं' कह सके, यह कह सके कि 'मैं ऐसा हूँ'।

आप देखते हैं कि जब उसने कमरे में प्रवेश किया तब सर्दियों के दिन होते हुए भी उसके कोट के बटन खुले हुए थे, कमीज की बाहें ऊपर कोहनियों तक चढ़ी हुई थीं। आप जब उससे पूछते हैं कि तुम्हारी सर्दी के प्रति क्या प्रतिक्रिया है तो वह कहता है कि मुझे गर्मी अत्यन्त सताती है, ठंड अच्छी लगती है, आग के नजदीक वह बैठ नहीं सकता।

इन लक्षणों को सुनते ही आप इस निर्णय पर पहुँच जाते हैं कि यह 'पित्त-प्रधान-रोगी' (Warm or hot patient) है। अब चाहे पेट की हालत कुछ भी क्यों न हो, आप अपनी सूची में से उन सब दवाइयों को बेधड़क काट दे सकते हैं जो 'कफ-प्रधान' (Cold or chilly drugs) हैं। उदाहरणार्थ, आर्सेनिक, फॉसफोरस, नक्स वोमिका, सीपिया—ये सब ठंडे रोगी के लिये हैं, ऐसा रोगी जो समूचा, सर्वाङ्गीण 'शीत-प्रधान' (Chilly) हो। इस रोगी के पेट के लक्षण कितने ही आर्सनिक, फॉसफोरस, नक्स वोमिका, सीपिया से मिलते हों, परन्तु इन औषधियों से उसका रोग भले ही कुछ देर के लिये शान्त हो जाय, यह शान्ति 'लघु-शमन' (Palliation) ही होगी, रोग जड़ से नहीं जा सकेगा। इस रोगी के लिये गर्म दवा लाभ देगी क्योंकि होम्योपैथी का नियम 'सम समं शमयति' का है। ठंडे रोगी को ठंडी दवा, गर्म रोगी को गर्म दवा। रोगी मूलतः, समूचे रूप में ठंडा नहीं, गर्म है—यह निश्चय आपने कर लिया और इस निश्चय को करके आप रोगी के 'सर्वाङ्गीण' अथवा 'व्यापक' लक्षण (General symptoms) पर पहुँच गये जिसका मूल्यांकन औषधि देने में अत्यन्त प्रधान है।

अगर इस लक्षण के बाद आप को पता चला कि रोगी अत्यन्त उदास रहता है, अगर उसे सान्त्वना दी जाय तो क्रुद्ध हो उठता है, किसी का सान्त्वना देना उसे

पसन्द नहीं, अगर कोई यह पूछ भी बैठे कि आपको क्या कष्ट है तो वह भडक उठता है, लोग उससे परे-परे रहते हैं, डरते हैं कि हाल पूछने पर बिगड़ न जाय, तब आप रोगी के मानसिक-लक्षण (Mental symptom) पर भी पहुँच गये।

अब इन दो ही लक्षणो के आधार पर—रोगी गर्मी अनुभव करता है और सान्त्वना पसन्द नहीं करता—अगर ये दोनो लक्षण रोगी मे और औषधि मे बड़े प्रबल रूप मे, साधारण रूप में नहीं, पाये जायें, तो औषधियो का निर्वाचन सिर्फ तीन दवाओ मे रह जाता है—लीलियम, नैट्रम म्यूर या प्लेटिना। लाइको-पोडियम और मर्क मे भी सान्त्वना से रोगी बिगडता है परन्तु उनमे सान्त्वना से बिगडने का लक्षण रिपर्टरी मे इतने बडे रूप मे नहीं पाया जाता जितना उक्त तीन दवाओ मे। अब तीन में से निर्णय करना कठिन नहीं रह जाता।

अब कल्पना कीजिये कि रोगी पित्त-प्रधान (गर्म मिजाज, Warm or hot) न होकर कफ-प्रधान (ठंडे मिजाज, Chilly or cold) है, और साथ ही सान्त्वना से बिगड जाता है। ऐसे ठडे रोगी के लिये गर्म दवाओ (Pre-dominantly hot remedies) को अपनी सूची मे से निकाल देना होगा, और शुरू से ही आप को आर्सेनिक, इग्नेशिया, सीपिया, कैलकेरिया फॉस, साइलीशिया आदि दवाओं मे से उचित औषधि को ढूढना होगा, ऐसे शीत-प्रधान रोगी को नैट्रम म्यूर लाभ नहीं पहुँचा सकेगी क्योकि नैट्रम म्यूर गर्म मिजाज की दवा है।

इस दृष्टि से यह जान लेना आवश्यक है कि ठडी या गर्म दवायें कौन-सी हैं, ताकि ठंडे मिजाज के रोगी के लिये दवा का निश्चय करते हुए गर्म दवाओ को अपनी सूची मे से काट दिया जाय, और गर्म मिजाज के रोगी के लिये दवा का निश्चय करते हुए ठडी दवाओ को अपनी सूची मे से निकाल दिया जाय। हम नीचे डा० गिबसन मिलर द्वारा डा० केंट के ग्रन्थो मे से छांटी हुई ठडी तथा गर्म दवाओं की सूची दे रहे हैं जिनमें काले टाइप की दवायें विशेष तौर से ठडी या गर्म हैं :

(1) ठडी दवाओं की सूची (Chilly drugs)—एब्रोटेनम, ऐसेटिक एसिड, एकोनाइट, एगैरिकस, एगनस, एलूमेन, एलूमीना, एलूमीना सिलीकेटा, अमोनिया कार्ब, एपोसाइनम, अर्जेन्टम मेट, आर्सनिक, आर्सनिक-सल्फ-फ्ले, एसरम, ऑरम, ऑरम आर्स, ऑरम सल्फ, बैडियागा, बैराइटा कार्ब, बैराइटा म्यूर, बैलेडोना, बैनज़ोइक एसिड, बोरेक्स, ब्रोमियम, कैडमियम, कैलकेरिया आर्स, कैलकेरिया कार्ब, कैलकेरिया फ्लोर, कैलकेरिया फॉस, कैलकेरिया सिल, कैम्फर, कैन्थरिस, कैपसिकम, कार्बो-एन, कार्बो वेज, कार्बन सल्फ, कारडुअस मैरिएनस, कॉलोफाइलम, कॉस्टिकम, कैमोमिला, चेलीडोनियम, चाइना, चिनिनम आर्स, सिमिसिफ्यूगा, सिस्टस, कौक्युलस, कौफिया, कौलचिकम, कोनायम, साइ-क्लेमन, डलकेमारा, युफ्रेशिया, फेरम, फेरम आर्स, फौरमेलीन, ग्रेफाइटिस, गुआ-एकम, हेलेबोरस, हैलोनियास, हिपर, हायोसाइमस, हाइपेरिकम, इग्नेशिया,

कैली आर्स, कैली बाईक्रोम, कैली कार्ब, कैली [illegible], [illegible], कैली [illegible], कैलमिया, क्रियोजोट, लैक डिफ्लोरेटम, लाइकोपोडियम, मैगनेशिया कार्ब, मैगनेशिया फॉस, मैगेनम, मोस्कस, म्यूरियेटिक एसिड, नैट्रम आर्स, नैट्रम कार्ब, नाइट्रिक एसिड, नक्स मोस्केटा, नक्स वोमिका, ओक्जैलिक एसिड, पैट्रोलियम, फॉसफोरस, फॉसफोरिक एसिड, प्लम्बम, पोडोफाइलम, सोरिनम, पाइरोजन, रेननकुलस बल्बोसस, रियम, रोडोडेन्ड्रन, रस टॉक्स, रूमैक्स, रूटा, सैबेडिला, सार्सापैरिला, सीपिया, साइलीशिया, स्पाइजेलिया, स्टैनम, स्टैफिसैग्रिया, स्ट्रैमो-नियम, स्ट्रोन्टियम, सल्फ्यूरिक एसिड, थैरीडियन, [illegible], जिंकम।

(ii) गर्म दवाओं की सूची (Hot drugs)—एस्क्युलस हिप्पोकास्ट, एलियम सीपा, ऐलो, एम्ब्रा ग्रीसिया, एपिस, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, एसाफेटिडा, ऑरम आयोडाइड, ऑरम म्यूर, बैराइटा आयोडाइड, ब्रायोनिया, कैलेडियम, कैल्केरिया आयोडाइड, कैलकेरिया सल्फ, कोकस कैक्टाई, [illegible], क्रोकस, ड्रोसरा, फेरम आयोडाइड, फ्लोरिक एसिड, ग्रैटियोला, हैमेमेलिस, आयोडम, कैली आयोडाइड, कैली सल्फ, लैकेसिस, लीडम, लिलियम टिग, लाइकोपोडियम, नैट्रम म्यूर, नैट्रम सल्फ, निकोलम, ओपियम, पिक्रिक एसिड, प्लैटिनम, टिलिया, पल्सेटिला, सैबाइना, सिकेल कोर, स्पंजिया, सल्फर, सल्फर आयोडाइड, थूजा, ट्यूबरक्युलीनम, युस्टिलैगो, वेस्पा क्रैबो, वाइबर्नम ओपुलस।

(iii) अति ठंड और अति गर्मी दोनों से प्रभावित होने वाली दवाएं (Sensitive to both extremes of temperature)—मरक्यूरियस, इपिकाक, नैट्रम कार्ब, सिन्नेबरिस, एन्टिम क्रूड। पुराने रोगों में मरक्यूरियस शीत-प्रधान होता है, नवीन रोगों में यह ऊष्णता-प्रधान होता है।

(iv) उन दवाओं की सूची जिनमें रोगी बरसात में अच्छा अनुभव करता है और खुश्क हवा में बुरा (Better in wet weather and worse in dry weather)—एलम, आर्स, एसरम, बैलेडोना, बोविस्टा, ब्रायोनिया, कार्बो एन, कार्बो वेज, कॉस्टिकम, कैमोमिला, फ्लोरिक एसिड, हिपर, इपिकाक, लॉरोसिरेसस, मैगेनम, मैडोराइनम, मेजेरियम, म्यूरियेटिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, नक्स वोमिका, प्लैटिनम, रोडोडेन्ड्रन, सबैडिला, सीपिया, साइलीशिया, स्पाइजेलिया, स्पंजिया, स्टैफिसेग्रिया, सलफर, जिंकम।

डा० मिलर का कथन है कि अगर बरसात में गठिये को आराम हो, तो मुख्य औषधियां ब्रायोनिया, कॉस्टिकम, हिपर तथा नक्स वोमिका होगी। गठिये में स्वभावतः ऋतु-परिवर्तन से रोग घटता या बढता है, परन्तु अगर गठिये पर ऋतु का कोई प्रभाव न पड़े तो यह एक 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptom) है। अगर रोगी में ऋतु-परिवर्तन का गठिये पर कोई प्रभाव न पड़ता हो, तब डलकेमारा, नक्स मोस्केटा, फासफोरस, रैननकुलस, रोडोडेन्ड्रन, रस टॉक्स,

साइलीशिया, ट्युबरक्यूलीनम को, जिनसे ऋतु-परिवर्तन का प्रभाव दीख पड़ता है, अपनी सूची मे से निकाल देना होगा। और, अगर बरसात का भी गठिये के रोगी पर कोई प्रभाव न दीखे तो उसके उपचार मे कैलकेरिया, मरक्युरियस, नैट्रम कार्ब, नैट्रम सल्फ और रूटा को भी अपनी सूची मे से निकाल देना होगा।

ऊपर जो सूचियाँ दी गई हैं वे इसी आशय से दी गई हैं कि रोगी का इलाज करते हुए सब से पहले हमे यह देख लेना चाहिये कि रोगी शीत-प्रधान श्रेणी मे आता है, या ऊष्ण-प्रधान श्रेणी मे। 'शीत-प्रधान' (Chilly) रोगी का गर्म दवाओ से और 'ऊष्ण-प्रधान' (Hot or warm) रोगी का ठडी दवाओ से इलाज नहीं हो सकता—'समः समं शमयति' का यह मूल आधार है।

प्रश्न हो सकता है कि रोगी 'शीत-प्रधान' है या 'ऊष्ण-प्रधान' है—यह किस अवस्था के विषय मे देखना होगा ? क्या जब वह स्वस्थ था तब की अवस्था, या जब वह रोगी है तब की अवस्था ? इसका उत्तर यही है कि रोगी की 'सर्वाङ्गता' (Generality) प्रायः नहीं बदलती, शीत-प्रधान व्यक्ति रोग मे भी शीत-प्रधान और ऊष्ण-प्रधान व्यक्ति रोग में भी ऊष्ण-प्रधान ही रहता है, परन्तु वैसा रहे या न रहे, हमे रोग की हालत मे देखना होता है कि उस अवस्था मे वह शीत-प्रधान है या ऊष्ण-प्रधान। पुराने, जीर्ण (क्रानिक) रोगो मे तो व्यक्ति का रूप—ग्रीष्म प्रधान या ऊष्ण-प्रधान—जैसा होता है वैसा ही बना रहता है, नवीन (एक्यूट) रोगो मे रोग के अनुसार शीत-प्रधानता और ऊष्ण-प्रधानता बदलती रहती है। शीत तथा ऊष्ण की जांच के लिये रोगी जिस अवस्था मे हमारे पास आया है, रोग का जो वर्तमान रूप है, उसमे सर्दी और गर्मी के प्रति रोगी की जो प्रतिक्रिया है, उसी को ध्यान मे रखना होगा।

१३ रोगी के लक्षणो का मूल्य-निर्धारण करने की डा० डनहम की टैक्नीक

(क) औषधि-निर्वाचन मे 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) को ढूंढना आवश्यक है—डा० डनहम का कथन है कि होम्योपैथिक मैटीरिया मैडिका का अध्ययन करते हुए हमे औषधि के 'विशिष्ट-लक्षणों' (Characteristic symptoms) को अपनी स्मृति मे गाड लेना चाहिये। 'विशिष्ट-लक्षण' का अर्थ है—ऐसा लक्षण जो किसी एक औषधि मे ही हो, अन्य किसी औषधि मे न हो। होम्योपैथी मे क्योंकि किसी रोग के लिये किसी एक ही औषधि को चुनना होता है, एलोपैथी की तरह कई औषधियो को मिला कर नहीं देना होता, इसलिये यह जरूरी है कि औषधि का 'विशिष्ट-लक्षण' पता लगाया जाय ताकि वह 'विशिष्ट-लक्षण' जिस रोग मे मिले उसमे उस औषधि का प्रयोग किया जा सके।

औषधि के 'विशिष्ट-लक्षणों' (Characteristic symptoms) के आधार पर जब हम उन्हीं 'विशिष्ट-लक्षणों' के रोग पर औषधि का प्रयोग करते हैं तभी रोग का उन्मूलन होता है। इस प्रक्रिया को होम्योपैथी मे 'वैय्यक्तिक-करण' (Individualization) कहते हैं। औषधि का विशिष्ट-लक्षणों के आधार पर और रोग का भी विशिष्ट लक्षणों के आधार पर व्यक्तिगत रूप क्या है—यह जानकर ही औषधि का प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, वामदेव को पकड लाओ कह देने से काम नहीं चलेगा। वामदेव के विषय मे दो बातों का जानना आवश्यक है, तभी वह पकडा जा सकता है। पहली बात तो यह है कि वामदेव किसी मनुष्य का नाम है, कुत्ते, घोडे, गधे का नाम नहीं। आखिर, इनका भी कोई मनचला यह नाम रख सकता है। मनुष्य एक 'समूह' (Group) का नाम है, जो उसे अन्य समूहो से पृथक् करता है। मनुष्य होने के कारण वामदेव कुत्ते, गधे के समूह से पृथक् है। इसके बाद वामदेव के विषय मे किन्हीं विशिष्ट-लक्षणो को जानना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, वामदेव का रंग काला है, उसकी नाक चपटी है। अब वामदेव को १०० आदमियों में भी क्यों न खड़ा कर दिया जाय, वह अपने काले रग और चपटी नाक से झट पहचाना जायगा।

यही प्रक्रिया होम्योपैथिक-औषधि के निर्वाचन मे काम करती है। उदाहरणार्थ, एक रोगिणी को जरायु से रुधिर आता (Uterine haemorrhage) है और सिर दर्द होता है। मैटीरिया मैडिका मे लगभग ४० दवायें रुधिर-रोग मे पायी जाती हैं। यह ४० दवाइयो का 'समूह' (Group) है जो मैटीरिया मैडिका की सैकडो दवाइयो से पृथक् है। इन ४० में से भी हमने एक दवाई को चुनना है, जैसे सैकडो मनुष्यो मे से हमने वामदेव को चुनना था। इसका क्या उपाय है? हमने पहले रुधिर लाने वाली दवाइयों को सैकडो मे से चुन कर ४० के एक 'समूह' मे छांट लिया। अब हम देखते हैं कि रोगिणी का रुधिर तो काले रंग का है। मैटीरिया मैडिका मे केवल १० दवाइयां काले रुधिर की हैं, शेष लाल, हल्के लाल आदि की हैं। ऐसी हालत मे हम इन १० को पकड़ कर शेष ३० को अपनी सूची में से निकाल देंगे। हमारे पास अब १० दवाइयों का एक छोटा-सा 'समूह' रह जायगा, परन्तु अब भी यह होगा एक 'समूह' ही। हमने छांटते-छांटते औषधि का और रोग का 'वैय्यक्तिक-करण' (Individualization) करना है। अब आगे कैसे चलें, हम अभी एक दवाई पर नहीं पहुंचे, और एक पर पहुंचे बिना उपचार सभव नहीं। और गहराई मे जाने पर हम देखते हैं कि इन १० में भी केवल ५ ऐसी दवाएं हैं जिनमे रुधिर का आना और सिर-दर्द दोनो पाये जाते हैं। अब हम १० के समूह को छोड कर ५ के समूह मे आ गये। अब तक हमारी दवा को छांटने की जो प्रक्रिया थी वह रोग-शास्त्र-विज्ञान (Pathology—the Science of Disease) के आधार पर थी। इस मार्ग पर चलते हुए हम

'औषधियों के समूह' (Group of drugs) तक तो पहुंच सकते हैं, 'औषध-विशेष' (Individual drug) पर नहीं।

'रोग क्या है' और उस 'रोग की दवायें क्या हैं'—इस 'पैथोलोजी' के मार्ग पर चलकर हम कुछ औषधियो के 'समूह' (Group) पर पहुंचे, परन्तु इन औषधियो मे अन्तिम रूप मे हम किस एक औषधि को छांटें—इस पर 'पैथोलोजी' काम नहीं देती। ऊपर हमने जिस रोगिणी का जिक्र किया उसके लक्षणों की जांच करते हुए हमे एक अजीब लक्षण दिखाई दिया। उसने शिकायत की कि खून आने और सिर दर्द के साथ उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पेट मे मानो एक जीवित वस्तु गति कर रही है। एलोपैथी की दृष्टि से यह एक उपेक्षणीय लक्षण है, परन्तु होम्योपैथी की दृष्टि से यह उपेक्षणीय लक्षण ही सब से अधिक महत्व का है, और यही औषधि के निर्वाचन मे अन्तिम निश्चय कर देता है। यह लक्षण क्रोकस का है और इस दवा मे रुधिर का आना तथा सिर दर्द के लक्षण भी मौजूद हैं। जैसे वामदेव को पहचानने के लिये उसकी नाक का चपटा होना उसके 'वैय्यक्तिक-करण' (Individualization) मे सहायक था, वैसे किसी जीवित वस्तु का पेट मे गति करने का लक्षण, जिसका वर्तमान रोग से कोई पैथोलोजिकल सबंध नहीं दीखता, उपयुक्त दवा के निर्धारण मे सहायक हो गया। ऐसे रोगी को क्रोकस देने से उसका रोग दूर हो जायगा। इस अवस्था मे 'पेट मे जीवित वस्तु की गति करने की प्रतीति' क्रोकस का 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) कहा जायगा, और इसी 'विशिष्ट-लक्षण' के आधार पर औषधि का चुनाव होगा। डा० डनहम के कथनानुसार 'रोग-शास्त्र-विज्ञान' (Pathology) के आधार पर 'औषधि-समूह' (Group of drugs) की छांट होती है, और 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) के आधार पर इन छंटी हुई दवाओ मे से किसी एक दवा का निश्चय किया जाता है। काले खून का आना क्रोकस का लक्षण तो है, परन्तु यह उसका 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) नहीं है क्योंकि काला खून तो अन्य भी पांच दवाओ मे आता है, परन्तु पेट मे जीवित वस्तु की प्रतीति इस दवा का 'विशिष्ट-लक्षण' है। चिकित्सक के लिये दवा का 'विशिष्ट-लक्षण' ढूंढ निकालना ही सफलता का मार्ग है।

(ख) 'विशिष्ट-लक्षण' को ढूढने का तरीका (How to find out the characteristic symptom)—'विशिष्ट-लक्षण' सामने नहीं पडा होता। कई अवस्थाओ मे वह बिल्कुल स्पष्ट तथा निश्चित होता है, परन्तु अनेक अवस्थाओ मे उसे ढूढ निकालना होता है। क्रोकस का लक्षण स्पष्ट है। इसी प्रकार स्ट्रैमोनियम मे एक की जगह वस्तु का दो दीखना भी एक निश्चित तथा स्पष्ट लक्षण है। परन्तु सब दवाओ मे तो ऐसा नहीं होता। तब क्या किया जाय?

ऐसी अवस्था मे यह होता है कि रोग के लक्षण के साथ कोई ऐसी 'विलक्षण हालत' (Peculiar condition) लगी होती है कि उस विलक्षण-हालत में 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) को ढूंढा जा सकता है। यह 'विलक्षण-हालत' (Peculiar condition) तीन तरह की हो सकती है :

(i) समय-सम्बन्धी विलक्षण हालत (Peculiar condition of time)

(ii) परिस्थिति-सम्बन्धी विलक्षण हालत (Peculiar condition of circumstances)

(iii) सहयोगी-लक्षण सम्बन्धी विलक्षण हालत (Peculiar condition of concomitance)

(i) समय-सम्बन्धी विलक्षण हालत (Peculiar condition of time)—कल्पना कीजिये कि रोगी को सूखी खांसी है, खांसी छाती के उस भाग से उठती है जहाँ छाती मे अन्दर को कुछ झुकाव है, सुरसुराहट से खांसी आती है। मान लो दो दवाओं मे यह लक्षण पाया जाता है, परन्तु एक दवा ऐसी है जिसमे यह खांसी सिर्फ शाम को उठती है। छाती की इस सूखी खांसी का सिर्फ शाम को उठना 'समय-सम्बन्धी विलक्षण हालत' (Peculiar condition of time) है, और जिस दवा मे यह लक्षण पाया जायगा उस दवा का यह 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) होगा और वही दवा शाम को उठने वाली इस खांसी को ठीक करेगी।

(ii) परिस्थिति-सम्बन्धी विलक्षण हालत (Peculiar condition of circumstance)—अब कल्पना कीजिये कि यह सूखी खांसी ठंडी हवा से बढ जाती है, गर्म कमरे मे रहने से रुकी रहती है। यहाँ ठंडी हवा से बढ़ जाना 'परिस्थिति-सम्बन्धी विलक्षण हालत' (Peculiar condition of circumstance) है, और जिस दवा मे यह लक्षण पाया जायगा उस दवा का यह 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) होगा और वही दवा ठंड से बढ जाने तथा गर्मी से घट जाने वाली इस खांसी को ठीक करेगी।

(iii) सहयोगी-लक्षण सबधी विलक्षण हालत (Peculiar condition of concomitance)—अब कल्पना कीजिये कि इस सूखी खांसी के साथ-साथ रोगी को उल्टी भी आ जाती है। इस दृष्टात में उल्टी खांसी की सहयोगी है। यहां खुश्क खांसी के साथ उलटी का जुड जाना 'सहयोगी-लक्षण सबधी विलक्षण हालत' (Peculiar condition of concomitance) है, और जिस दवा मे यह लक्षण पाया जायगा उस दवा का यह 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) होगा, और वही दवा इस खुश्क खांसी के साथ उल्टी आने के लक्षण मे रोगी को ठीक करेगी।

१४ हमारे इस ग्रन्थ की विशेषता

वैसे तो अंग्रेजी, और हिन्दी मे होम्योपैथिक औषधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के अनेक ग्रन्थ हैं, परन्तु उन सब के होते हुए भी हमे इस ग्रन्थ के लिखने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई ? हम पिछले तीस साल से होम्योपैथी का अध्ययन कर रहे हैं, परन्तु हमें प्रत्येक ग्रन्थ का अध्ययन करते हुए यही अनुभव हुआ कि हरेक औषधि मे सब प्रकार के लक्षण हैं, और उनको पढ़ते हुए विद्यार्थी का मन चकरा जाता है, और वह औषधि की अन्तरात्मा को नहीं पकड़ पाता। होम्योपैथिक औषधि की अन्तरात्मा तक पहुंचने के लिये उसके सर्वाङ्गीण तथा व्यापक-लक्षणों (Generals) को जानना, साथ ही उस औषधि के संबंध मे उसकी 'प्रकृति' (Modality) को जानना आवश्यक है। औषधि के 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristics) क्या हैं, 'समय' (Time), 'परिस्थिति' (Circumstances) तथा 'सहयोगी-लक्षण' (Concomitants) क्या हैं—इस सब को जाने बग़ैर औषधि का निर्वाचन नहीं हो सकता। औषधियों के इस ढेर मे से 'व्यापक-लक्षणों', 'प्रकृति', 'समय', 'परिस्थिति', सहयोगी-लक्षण' को जानकर मैटीरिया मैडिका का' अध्ययन हम इस दृष्टि से करें कि औषधि के मूल-भूत लक्षण, जीवनी-शक्ति को छू जाने वाले व्यापक-लक्षण, भिन्न-भिन्न अंगो के नहीं, संपूर्ण परिस्थिति के प्रति समूचे मनुष्य की प्रतिक्रिया के लक्षण हमारी आँखों के सामने आ खड़े हों, तब यथार्थ औषधि का निर्वाचन हो सकता है। मैटीरिया-मैडिका का इस दृष्टि से अध्ययन करना कि रोगी को देखकर हम कह सकें—आइये सलफर महोदय, आइये कैलकेरिया महोदय, आइये साईलीशिया जी, आइये श्रीमती पलसेटिला या श्रीमती सीपिया—इस प्रकार का अध्ययन करने वाला चिकित्सक रोगी को इसीलिये ठीक कर देता है क्योंकि उसके सामने औषधि की तसवीर उठ खड़ी होती है, औषधि मानो चित्रित होकर उसे अपने दर्शन दे देती है। इस ग्रन्थ की विशेषता यही है कि इसमे हमने होम्योपैथिक औषधियो का सजीव-चित्रण किया है, उनके विषय मे इतना ही लिखा है जिससे इन औषधियों के 'व्यापक तथा सर्वाङ्गीण लक्षण' एवं उनकी 'प्रकृति' देखकर पाठक औषधि का मूर्त तथा सजीव रूप अपने सामने खड़ा कर सके।

हमने तो होम्योपैथिक औषधियो की ऐसी रूप-रेखा खींच दी है जिससे औषधि का ढांचा, उसका व्यापक, सर्वाङ्गीण रूप तथा उसकी प्रकृति सामने आ जाती है, परन्तु होम्योपैथिक औषधि इतने से बहुत अधिक है। इस ग्रन्थ से औषधि की जो बाह्य-रेखाएँ (Out-lines) सामने खिंच जाती हैं उनमे रंग भरने का काम प्रत्येक पाठक का अपना-अपना है।

होम्योपैथिक औषधियों का सजीव-चित्रण

एबिस कैनेडैनसिस (ABIES CANADENSIS)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) अजीर्ण, पाचन-क्रिया की गडवडी, खरोच जैसी भूख लगना, भूख से ज्यादा खा जाना
(२) जरायु का अपने स्थान से हटना (Uterine displacement)
(३) वेहद कमज़ोरी (Great debility)
(४) कमज़ोरी मे एबिस की जेलसीमियम से तुलना
(५) दायें कन्धे की फलकास्थि मे दर्द
(६) ज्वर मे ठड से कापना, कन्धो के वीच ठडे पानी का-सा अनुभव
(७) आचार, गाजर, शलजम आदि खाने की चाह

(१) **अजीर्ण; पाचन-क्रिया की गडवडी, खरोचने जैसी भूख लगना, भूख से ज्यादा खा जाना**—डा० क्लार्क का कथन है कि पाचन-क्रिया पर इस औषध का विशेष प्रभाव है। पेट मे खरोचने जैसी भूख लगती है। इस खुरचन के कारण रोगी भूख से ज्यादा खा जाता है, उसे पता नही लगता कि कितना खा गया है। रोगी इतना खा जाता है कि पेट फूल उठता है जिसके दवाव से हृदय की क्रिया तेज़ होने लगती है। पेट की गैस से हृदय की गति मे वाधा पडती है, हृदय-स्पदन (Palpitation) होने लगता है।

(२) **जरायु का अपने स्थान से हटना** (Uterine displacement)—जरायु के अपने स्थान से हटने पर इसका प्रयोग लाभकारी है। जरायु मे अग्रभाग मे हल्का-हल्का एसा दर्द अनुभव होता है जो दवाने से या चलने के कारण दवाव पडने से कम हो जाता है। गर्भाशय कोमल तथा कमज़ोर अनुभव होता है।

(३) **वेहद कमज़ोरी** (Great debility)—रोगी वेहद कमज़ोरी अनुभव करता है। हर समय लेटे रहना चाहता है। इस प्रकार की कमज़ोरी के कारण रोगी सुस्त रहता है। यह सुस्ती जेलसीमियम मे भी पायी जाती है, परन्तु इन दोनो की कमज़ोरी तथा सुस्ती मे भेद है।

(४) **कमज़ोरी मे एबिस की जेलसीमियम से तुलना**—इसकी कमज़ोरी तथा सुस्ती का कारण अधिक खाना और उसका शरीर मे न लगना है; जैल्स की सुस्ती का कारण मास-पेशियो की कमज़ोरो, उनकी शिथिलता है।

(५) **दायें कन्धे की फलकास्थि मे दर्द होना** (Pain in the right shoulder blade)—इस औषध का एक लक्षण यह है कि दायें कन्धे की फलकास्थि मे दर्द होता है। **चैलीडोनियम** मे भी दायें कन्धे की फलकास्थि मे दर्द होता है। अगर दायें कन्धे की फलकास्थि के नीचे के विन्दु मे दर्द का रोग पुराना हो तो **लाइकोपोडियम** से लाभ होता है। इस प्रकार का दर्द बायी फल-कास्थि मे हो तो **ऑग्ज़ेलिक एसिड** पर ध्यान देना चाहिये।

(६) **ज्वर में ठंड से कापना; कधो के बीच ठडे पानी का-सा अनुभव**—ज्वर मे रोगी को ऐसा अनुभव होता है मानो नाडियो मे वर्फ-का-सा ठडा रुधिर बह रहा है। रोगी सर्दी से कापता है। हाथ तथा त्वचा ठडी हो जाती हैं। पीठ में ऊपर से नीचे की तरफ ठड चलती है। कन्धो के बीच ठडे पानी का-सा अनुभव होता है।

(७) **आचार, गाजर, शलजम आदि खाने की इच्छा**—रोगी को आचार, गाजर, शलजम आदि तथा मोटे अन्न खाने की इच्छा होती है। अगर किसी रोग मे बेहद कमजोरी हो, रोगी को ठड लगे, खरोचने-जैसी भूख लगे, आचार-चटनी, गाजर-शलजम के खाने की उत्कट इच्छा हो, तो इस औषधि से लाभ होगा।

(८) **शक्ति**—६, ३०, २००

एबिस नाइग्रा (ABIES NIGRA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) **खाने के बाद पेट-दर्द बढ़ जाना**—डा० गुएरेन्सी का कथन है कि जिन व्यक्तियो का खाने के वाद पेट-दर्द वढ जाता है, उनके लिये यह उत्तम औषध है। एनाकार्डियम मे खाने के वाद पेट-दर्द घट जाता है।

(२) **पेट के ऊपरी हिस्से (cardiac region) मे उबले हुए अडे की-सी किसी चीज़ का अटका होना अनुभव करना**—रोगी अनुभव करता है कि पेट के ऊपरी हिस्से मे कोई चीज़ अटकी पडी है जो दर्द करती है। ऐसा अनुभव होता है कि पेट के ऊपरी भाग मे उवले हुए अडे की-सी कोई कडी चीज़ अटकी पडी है, जो न वाहर आती है, न नीचे उतरती है, वही अडी हुई है। 'वक्षोस्थि' (Sternum) के नीचे के भाग मे इस प्रकार की कोई चीज़ अटकी अनुभव हो, तो **चायना** से लाभ होता है। अगर ऐसा अनुभव हो कि जो-कुछ खाया है वह पेट के ऊपर के हिस्से मे अटका पडा है, तो पल्सेटिला या ब्रायोनिया से लाभ होता है।

(३) **वृद्ध-व्यक्तियो की बदहज़मी की बीमारी**—वृद्ध-व्यक्तियो की वद-हज़मी की बीमारी मे, जहाँ साथ ही हृदय के लक्षण भी दिखाई देते हो, इस

औषधि का प्रयोग होता है। इनकी वदहज़मी का कारण चाय अथवा तम्वाकू का अधिक सेवन हो सकता है।

(४) **चाय तथा तम्वाकू के सेवन के बुरे परिणाम**—जो लोग चाय अथवा तम्वाकू के अधिक सेवन के फलस्वरूप पेट की वीमारियो के शिकार हो जाते हैं, उनमे प्राय देखा जाता है कि वे उत्साहहीन हो जाते है, रात को सो नही सकते। उनके लिये यह औषधि उपयोगी है।

(५) **प्रात काल भूख विल्कुल न लगना, दोपहर तथा रात को कडी भूख लगना**—जिन लोगो को प्रात काल विल्कुल भूख नही लगती, परन्तु दोपहर और रात को भोजन की उत्कट इच्छा होती है उनके लिये यह औषध उपयोगी है।

(६) **छाती मे कुछ अडा हुआ पदार्थ अनुभव होना**—छाती मे दर्द अनुभव होना, ऐसा प्रतीत होना कि छाती मे कुछ अटका हुआ है जो खासने से निकल जाना चाहिये। जैसे पेट मे कुछ अटका-सा अनुभव होता है, वैसे छाती मे भी कफ-जैसी कोई चीज़ अटकी अनुभव होती है।

(७) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i पीठ के नीचे के भाग मे दर्द (Pain in small of back)

ii हड्डियो मे वात-रोग का दर्द (Rheumatic bone pains)

iii पुराना मलेरिया, ज्वर मे गर्मी-सर्दी का एक-दूसरे के वाद आना-जाना

iv रात को नीद न आने के साथ भूख लगना

(८) **शक्ति**—१, ६, ३०

एब्रोटेनम (ABROTANUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) **वच्चे के सूके के रोग मे नीचे से सूकना (Marasmus)**—वच्चे के सूके के रोग मे इस औषध की वहुत अधिक उपयोगिता है। इस औषधि के सूके में सव से पहले नीचे के अगो मे दुवलापन आना शुरू होता है, सूकापन नीचे से ऊपर की तरफ चढता है। चेहरा सव से वाद को सूकने लगता है।

(सूके के रोग मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

एब्रोटेनम—सव से पहले टागे सूकनी शुरू होती हैं, ऊपर का धड वाद मे।

सार्सापेरिला तथा लाइको—सव से पहले ऊपर का भाग दुवला होना शुरू होता है, खासकर गर्दन दुवली हो जाती है, निचला भाग ठीक वना रहता है।

इसके अतिरिक्त लाइको के सूके मे इस औषधि के अन्य लक्षण—जैसे ४ से ८ के बीच लक्षणो मे वृद्धि आदि—रोगी मे रह सकते हैं।

नैट्रम म्यूर—इसमे लाइको की ही तरह पहले ऊपर का भाग दुबला होना शुरू होता है, निचला भाग ठीक बना रहता है, खासकर गर्दन दुबली हो जाती है। इसके अतिरिक्त **नैट्रम म्यूर** के अन्य लक्षण—जैसे नक्शा बनी-सी चित्रित जिह्वा, नमक खाने की उत्कट इच्छा, खाने के बाद थकावट, खाने के बाद सोना आदि—हो सकते हैं।

आयोडियम—इसमे सारा शरीर सूकता जाता है, मुह पर झुर्रिया पड जाती हैं। पुष्टिकारक भोजन खाने पर भी बच्चा सूकता जाता है। दिन भर खाने को मागता है। खाने के बाद तकलीफो को भूल जाता है। इसका रोगी पेट भर जाने के बाद **नैट्रम म्यूर** की तरह थकावट नही, आराम अनुभव करता है।

सिफिलीनम—इसमे भी सारा शरीर क्षीण हो जाता है, बाल झडने लगते हैं, सूर्यास्त से सूर्योदय तक रात्रि के समय रोगी के लक्षण बढ जाते हैं।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम—इसका भी सारा शरीर सूक जाता है, मुह पर झुर्रिया पड जाती है। सूके-रोग मे मिठाई खाने की इच्छा प्रबल होती है। मीठे के लिये विशेष रुचि इस औषधि का प्रधान लक्षण है।

कैलकेरिया कार्ब—इस औषधि के सूके-रोग मे सिर और पेट बहुत बडे होते हैं, गर्दन और पैर बहुत पतले होते हैं। सोने पर सिर पर पसीना बहुत आता है। अडे खाने की इच्छा प्रबल होती है। शरीर थुलथुला होता है। पसीने से खट्टी बू आती है। बच्चे को जहाँ बैठा दिया जाय वही पडा रहता है, चलना-फिरना जल्दी नही सीख पाता। जिन लोगो के यहा अडा नही खाया जाता वहा बच्चा चाक, मट्टी खाया करता है।

इथूजा—इस औषधि के सूके मे बच्चा दूध पीते ही उलट देता है। सूके के लक्षणो मे दूध को पेट मे न रख सकने के लक्षण मे यह औषधि उपयोगी है।

एण्टिम क्रूड—इस औषधि मे भी बच्चा दूध या भोजन की उल्टी कर देता है, परन्तु उसके साथ पतले दस्त भी आते हैं, जीभ पर अत्यन्त सफेद लेप रहता है, और बच्चा चिडचिडा होता है।

बैराइटा कार्ब—सूके की अन्य शारीरिक-अवस्थाओ के साथ अगर बच्चे का मानसिक-विकास भी बौनापन लिये हो, शारीरिक तथा मानसिक दोनो प्रकार से बच्चा बौना हो, अविकसित हो, और गले तथा अन्य स्थानो मे गिल्टिया हो, तो यह औषधि अच्छा काम करती है।

सिना—अगर सूके के साथ बच्चे की गुदा मे खुजली होती हो, बिस्तर मे पेशाब कर देता हो, पेट मे कृमि हो, बार-बार नाक को उगली से खुजलाता हो,

अत्यन्त चिडचिडा स्वभाव हो, झूले मे लगातार झुलवाना चाहता हो, तो सूके मे इस औषधि को स्मरण करना चाहिये।

पैट्रोलियम—सूके मे अगर बच्चे को ऐसे दस्त आते हो कि वह रात मे तो ठीक रहता हो और दिन मे दस्तो से परेशान रहता हो, तो इस विलक्षण-लक्षण मे **पैट्रोलियम** काम देता है। इस के अतिरिक्त रोगी के सास और मल से प्याज़ की गन्ध आती है, ठडी हवा से कतराता है और उसमे एग्ज़ीमा की प्रवृत्ति होती है।

फ़ॉसफोरस—इसके सूके मे एसे दस्त आते हैं जैसे नल से पानी एकदम झरे।

साइलीशिया—वडा सिर और सारा शरीर सूका हुआ, सोने पर माथे पर पसीना और शरीर सूखा।

सलफर—सूके मे इस औषधि की अन्य औषधियो की अपेक्षा अधिक आवश्यकता पडती है। **सलफर** का रोगी *अत्यन्त गन्दा, मलिन होता है।* जगह-जगह फोडे-फुन्सिया, ग्रन्थियां वढी हुई, सख्त कब्ज या लगातार कै-दस्त, शरीर से बदबू आना—ये एसे लक्षण हैं, जिन्हें भुलाया नही जा सकता। सब अग सूकते जाते हैं, पेट फूलता जाता है, पेट मे जलन होती है, गुडगुड होता है, गर्दन, पीठ, छाती की मासपेशिया और सब अग सूकते जाते हैं, पेट की मासपेशिया भी सूकती हैं परन्तु पेट फूल जाता है। **कैलकेरिया कार्ब** मे भी पेट फूलता है।

ट्यूवरक्युलीनम—सूके की अन्य औषधियो मे हमने देखा कि पुष्टिकर भोजन लेने पर भी रोगी दुवला होता जाता है। खाता-पीता है परन्तु साथ ही थका रहता है। प्रतिदिन कमज़ोर होता जाता है। ऐसी अन्य औषधियो के प्रयोग से लाभ न हो, तो **ट्यूबरक्युलीनम** लाभ करता है।

(२) **एक वीमारी के दवने से दूसरी बीमारी का खडे हो जाना** (Metastasis)—प्राय देखा जाता है कि जब एक वीमारी हटती है तब दूसरी वीमारी उठ खडी होती है। ऐसी स्थिति मे **एब्रोटेनम** लाभ करता है। उदाहरणार्थ—

i गठिये के रोगी को यदि पतले 'दस्त आते रहें तो दर्द कम हो जाता है और अगर कब्ज हो जाय तो दर्द वढ जाता है।

ii कर्णमूल (Mumps) की सूजन दव जाने से पुरुषो मे पोते तथा स्त्रियो मे स्तन की सूजन हो जाती है।

iii मालिश द्वारा गठिये के दव जाने से दिल की तकलीफ हो सकती है।

iv गठिया या दस्त ठीक होने पर ववासीर के लक्षण उभर आते हैं।

v दस्त एकदम वन्द कर देने पर गठिया हो जाता है।

(३) **एब्रोटेनम और पल्सेटिला मे भेद**—एक रोग के हटने पर दूसरे रोग के प्रकट हो जाने मे **एब्रोटेनम** और **पल्सेटिला** दोनो काम आते हैं, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि जहा **एब्रोटेनम** मे एक रोग के दवने से दूसरा जो रोग पैदा

होता है उसका पहले रोग से कोई सम्बन्ध नही होता, वहा **पल्सेटिला** मे जो रोग दवा है वही दूसरे स्थान मे चला जाता है। उदाहरणार्थ, **एब्रोटेनम** मे दस्त दबकर गठिया हो सकता है, बवासीर हो सकती है, कर्णमूल की सूजन दब कर पोते बढ सकते हैं। इस प्रकार जो रोग पैदा हो जाता है उसे एलोपैथ एक नया रोग कहते हैं, परन्तु होम्योपैथी मे इसे नया रोग न कह कर पुराने रोग का ही रूपान्तर मानते हैं। **पल्सेटिला** मे गठिये का दर्द जब अपना स्थान बदलता है, तब एक जोड से दूसरे जोड मे चला जाता है, अगर सूजन है तो एक गिल्टी से दूसरी गिल्टी मे चली जाती है, अगर दर्द है तो एक अग से दूसरे अग मे चला जाता है। **पल्सेटिला** मे रोग वही रहता है, केवल स्थान बदलता है, **एब्रोटेनम** मे रोग अपना रूप ही बदल देता है, एलोपैथिक परिभाषा में पहला रोग दब कर एक नया रोग बन जाता है, यद्यपि होम्योपैथी के अनुसार वह नया रोग न होकर पुराने रोग का ही रूपान्तर होता है।

(४) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

1. बच्चों की अण्ड-वृद्धि (Hydrocele) मे यह औषधि लाभ देती है

11 बच्चो की नाल से खून बहने को यह रोकती है

111 बच्चो की नकसीर मे यह लाभप्रद है

(५) **शक्ति, प्रकृति, तथा संबंध**—३ से ३०; औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है। प्लुरिसी मे, **एकोनाइट और ब्रायोनिया** के बाद अच्छा काम करता है।

ऐसेटिक एसिड—सिरका, (ACETIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **वशानुगत क्षय-रोग**	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) **रक्त स्राव**	***पेट के बल लेटने से आराम**
(३) **शोथ**	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) **बहुमूत्र**	***चित्त लेटने से वृद्धि**
	***ठंड से वृद्धि**

(१) **वशानुगत क्षय-रोग** (Hectic fever)—पुराने या वशानुगत क्षय-रोग मे जब सूकी खासी आती हो, रात को पसीना आता हो, दस्त आते हो, फेफड से खून आता हो, फेफडो मे घडघडाहट होती हो, ज्वर आता हो, सीने और छाती मे जलन होती हो, रोगी क्षीण होता जाता हो, भूख न रहे, कमज़ोरी बहुत अधिक महसूस होती हो—क्षय-रोग के इन लक्षणो मे यह औषधि उपयोगी है। इस क्षय-रोग मे हाथ-पैर की सूजन भी दिखाई दे सकती है।

(२) भिन्न-भिन्न अंगों से रक्त-स्राव (Hemorrhage)—शरीर के किसी भी अंग से रक्त-स्राव होता हो—नाक, पेट, मूत्र, फेफड़े, आंत, अर्थात् मासिक-धर्म तथा गर्भाशय। रक्त-स्राव में चायना के बाद यह अच्छा काम करती है। बवासीर में अधिक रुधिर जाने पर यह दी जा सकती है।

(३) शोथ—रोगी धड़ से क्षीण होता जाता है, परन्तु टांगों तथा पांवों में शोथ होती जाती है। शोथ में डिजिटेलिस के बाद यह अच्छा काम करती है।

(४) बहुमूत्र—बहुमूत्र रोग में चाहे शक्कर आती हो या न आती हो, अत्यन्त प्यास लगती हो, कमजोरी हो, शरीर पीला पड़ता जाता हो, शरीर का मास छँटता जाता हो तब इससे लाभ होता है।

(५) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i क्लोरोफार्म के बाद की दुर्बलता को यह दूर कर देती है।

ii गर्भावस्था के समय दिन-रात मुंह में पानी आने को ठीक करती है।

(६) शक्ति, प्रकृति तथा संबंध—३ से ३० शक्ति व्यवहार में आती है। यह औषधि गूढ़ क्रिया करने वाली है, एक महीने तक इसका असर रह सकता है, इसलिये इसका अधिक बार प्रयोग ठीक नहीं। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के रोगी के लिये है। क्लोरोफार्म, कोयले या गैस के धुएं, अफीम और धतूरे के दुष्परिणाम को दूर करती है। रक्तस्राव में चायना और शोथ में डिजिटेलिस के बाद अच्छा कार्य करती है। आर्निका, बैल, लैक, मर्क के साथ नहीं चलती।

एकोनाइट—मीठा-विष, (ACONITE)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) भय के कारण बीमारियां	लक्षणों में कमी (Better)
(२) घबराहट तथा बेचैनी	*खुली हवा से रोग में कमी
(३) खुश्क-शीत के कारण यकायक रोग	
(४) शीत से शोथकी प्रथमावस्था में	लक्षणों में वृद्धि (Worse)
एकाएकपना और प्रबलता	*शाम तथा आराम के समय
(५) जलन और उत्ताप	*गर्म कमरे में रोग-वृद्धि
(६) अत्यन्त प्यास	*बिछौने से उठने पर रोग-वृद्धि
(७) शीत द्वारा दर्द—स्नायु-शूल	*रोगाक्रान्त अंग की तरफ लेटने से

(१) भय के कारण बीमारियां—एकोनाइट का मुख्य तथा प्रबल लक्षण 'भय' है। किसी भी रोग में 'भय' अथवा 'मृत्यु के भय' के उपस्थित रहने पर

इसका प्रयोग आवश्यक है। मैटीरिया मैडिका की किसी अन्य औषधि मे भय का लक्षण इतना प्रधान नही है जितना इस औषधि मे। उदाहरणार्थ—

सडक पार करने से भय खाता है—इसका रोगी सडक पार करते हुए डरता है कि कही मोटर की लपेट मे न आ जाय। वैसे तो सब-कोई मोटर की लपेट मे आते हुए डरेगा, परन्तु **एकोनाइट** का रोगी बहुत दूर से आती हुई मोटर से भी भय खा जाता है।

भीड मे जाने से डरना—रोगी भीड मे जाने से, समाज मे जाने से डरता है, वाहर निकलने मे भय खाता है।

मृत्यु की तारीख बतलाता है—इस रोगी का चेहरा घबडाया हुआ रहता है। रोगी अपने रोग से इतना घबडा जाता है कि जीवन की आशा छोड देता है। समझता है कि उसकी मृत्यु निश्चित है। कभी-कभी अपनी मृत्यु की तारीख तक की भविष्यत् वाणी करता है। डाक्टर के आने पर कहता है डाक्टर, तुम्हारा इलाज व्यर्थ है, मैं शीघ्र ही अमुक तारीख को मर जाने वाला हूँ। घडी को देख कर कहता है कि जब घडी की सूई अमुक स्थान पर आ जायगी तब मैं मर जाऊगा।

प्रथम प्रसूति-काल मे लडकी डर के मारे रोती है—जब नव-विवाहिता लडकी प्रथम बार गर्भवती होती है तब माँ को पकड कर रोती है, कहती है: इतने बडे बच्चे को कैसे जनूगी, मैं तो मर जाऊगी। उसे **एकोनाइट** २०० की एक खूराक देने से ही उसका भय जाता रहता है और चित्त शान्त हो जाता है।

भय से किसी रोग का श्रीगणेश—जब किसी बीमारी का श्रीगणेश भय से हुआ हो तब **एकोनाइट** लाभप्रद है।

भूत-प्रेत का डर—बच्चो को अकारण भूत-प्रेत का भय सताया करता है। अन्य कारणो से भी बच्चे, स्त्रिया तथा अनेक पुरुष अकारण भय से परेशान रहते हैं। इन अकारण-भयो को यह औषधि दूर कर देती है।

भय मे एकोनाइट तथा अर्जेन्टम नाइट्रिकम की तुलना—इन दोनो औषधियो मे मृत्यु-भय है। दोनो रोगी कभी-कभी अपने मृत्यु-काल की भविष्यवाणी किया करते हैं। दोनो भीड से डरते हैं, घर से निकलने से डरते है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** की विशेषता यह है कि अगर कुछ काम उसे करना हो, तो उससे पहले ही उसका चित्त घबरा उठता है। किसी मित्र को मिलना हो, तो जबतक मिल नही लेता तबतक घबडाया रहता है, गाडी पकडनी हो तो जबतक गाडी पर चढ नही जाता तबतक परेशान रहता है, अगर व्याख्यान देने उसे जाना है तो घबडाहट के कारण उसे दस्त आ जाता है, शरीर मे पसीना फूट पडता है। आगामी आनेवाली घटना को सोच कर घबडाये रहना, उस कारण दस्त आ जाना, पसीना फूट पडना, उस कारण नीद न आना **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** का विशेष लक्षण है। ऊचे-ऊचे मकानो को देख कर उसे चक्कर आ जाता है। **एकोनाइट** ठड से

बचता है, **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** ठड को पसन्द करता है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** ठडी हवा, ठडे पेय, बरफ, आइस क्रीम पसन्द करता है। **पल्सेटिला** की तरह बन्द कमरे मे उसका जी घुटता है, **एकोनाइट** मे ऐसा नही होता। **अर्जेन्टम** का भय 'पूर्व-कल्पित भय' (Anticipatory) है, **एकोनाइट** का भय हर समय रहने वाला भय है।

भय मे एकोनाइट तथा ओपियम की तुलना—भय से किसी रोग का उत्पन्न हो जाना **एकोनाइट** तथा **ओपियम** इन दोनो मे है, परन्तु भय से उत्पन्न रोग की प्रारभिक अवस्था मे **एकोनाइट** लाभ करता है, परन्तु जब भय दूर न होकर हृदय मे जम जाय और रोगी अनुभव करे कि जब से मैं डर गया हू तब से यह रोग मेरा पीछा नही छोडता, तब **ओपियम** अच्छा काम करता है। इस लक्षण के साथ **ओपियम** के अन्य लक्षणो को भी देख लेना चाहिये।

(२) **घबराहट तथा बेचैनी** (Anxiety and Restlessness)—मृत्यु-भय, भय और घबराहट, ये तीनो एक-दूसरे से क्रमश हल्के शब्द हैं। यह ज़रूरी नही कि रोगी मे मृत्यु का भय ही हो, मृत्यु का भय तो सीमा की बात है, उससे उतर कर रोगी मे घबराहट (Anxiety) तथा बेचैनी (Restlessness) हो सकती है। घबराहट मे मृत्यु का भय अन्तर्निहित रहता है, यह मानसिक है, और इसी कारण घबराहट से बेचैनी होती है, यह शारीरिक है। डा० नैश ने घबराहट या बेचैनी की तीन मुख्य औषधिया बतलाई हैं—वे हैं, **एकोनाइट, आर्सेनिक** तथा **रस-टॉक्स**। इन्हें वे बचैनी का त्रिक कहते हैं।

बेचैनी मे एकोनाइट, आर्सेनिक तथा रस टॉक्स की तुलना—**एकोनाइट** का रोगी मानसिक घबराहट तथा शारीरिक बेचैनी के कारण बार-बार करवटें बदलता है, परन्तु उसके शरीर मे पर्याप्त शक्ति बनी रहती है। वह कभी उठता है, कभी बैठता है, कभी लेट जाता है, किसी तरह से उसे चैन नही मिलता। **एकोनाइट** के रोगी की बचैनी मन तथा शरीर दोनो मे बनी रहती है यद्यपि उसकी शारीरिक-शक्ति मे ह्रास नही होता। **आर्सेनिक** के रोगी का शरीर अत्यन्त कमजोर हो जाता है, शक्तिहीन हो जाता है, उसकी बचैनी मानसिक अधिक होती है जिसे घबराहट कहा जा सकता है। **आर्सेनिक** का रोगी शारीरिक-दृष्टि से अत्यन्त कमज़ोर होने पर भी मानसिक-घबराहट तथा बेचैनी के कारण बिस्तर पर इधर-उधर करवटें बदलता रहता है, एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर पर जाता है, परन्तु क्योकि बचैनी मानसिक है इसलिये उसे कही चैन नही पडता। **रस टॉक्स** के रोगी को शारीरिक कष्ट अधिक होता है, शरीर की मासपेशियो मे दर्द होता है और इसी कारण वह करवटें बदलता है और इसप्रकार उसे कुछ देर के लिये आराम मिलता है क्योकि **रस टॉक्स** के लक्षणो मे हिलने-जुलने से आराम होना पाया जाता है। इस प्रकरण मे यह भी ध्यान रखना चाहिये कि बिस्तर

सख्त मालूम होने के कारण बार-बार करवटें बदलते रहना और जिस तरफ भी लेटे उस तरफ बिस्तर सख्त ही मालूम देना आर्निका में पाया जाता है।

भय, क्रोध, अपमान से होनेवाले रोगो में एकोनाइट, कैमोमिला तथा स्टैफिसैग्रिया की तुलना—अगर शारीरिक अथवा मानसिक रोग का कारण 'भय' (Fright, Fear) हो तब **एकोनाइट** में लाभ होता है, अगर इसका कारण 'क्रोध' (Rage, Anger) हो तब **कैमोमिला** से लाभ होता है, अगर इसका कारण 'अपमान' (Insult, Grievance) हो तब **स्टैफिसैग्रिया** से लाभ होता है। भय, क्रोध, अपमान से मनुष्य को मानसिक रोग ही नही, दस्त, पीलिया आदि शारीरिक रोग भी हो जाया करते हैं।

(३) **खुश्क-शीत के कारण यकायक बीमारियो का हो जाना**—शीत दो प्रकार का हो सकता है, नमी वाली हवा का शीत, और खुश्क हवा का शीत। सूखी ठंडी हवा के शीत से यकायक जो रोग उत्पन्न हो जाते हैं, उन सब में **एकोनाइट** विशेष लाभप्रद है। नमीदार ठंडी हवा के शीत से जो रोग उत्पन्न होते हैं उनमें **डलकेमारा, रस टॉक्स** और **नैट्रम सल्फ़** लाभप्रद है। किस प्रकार के व्यक्तियो को खुश्क-शीत आसानी से आ घेरता है ? इस विषय में अनुभव बतलाता है कि मोटे-ताज़े, रक्त-प्रधान बच्चो तथा व्यक्तियो को खुश्क-शीत एकदम आ पकड़ता है, दुबले-पतले बच्चो पर इसका आक्रमण एकदम नही होता, धीरे-धीरे होता है। शीत का एकदम और प्रबल वेग से आक्रमण इसका विशेष लक्षण है।

मोटे-ताज़े तथा दुबले-पतले बच्चो पर क्रुप-खासी में खुश्क-शीत का आक्रमण—बुनिंघासन का नुस्खा—एक ही परिवार के दो बच्चो को, जिनमें से एक मोटा-ताज़ा तथा दूसरा दुबला-पतला हो, अगर खुश्क-शीत में भ्रमण करने के लिये बाहर ले जाया जाय, तो यह देखा जाता है कि मोटा-ताज़ा, तगड़ा बच्चा तो इस भ्रमण में सर्दी खाकर उसी रात क्रुप खासी का शिकार हो जाता है, और दूसरा दुबला-पतला जिसकी जीवनी-शक्ति न्यून-स्तर की है, एक-दो दिन बाद क्रुप की पकड़ में आता है। खुश्क-शीत का एकदम और प्रबल वेग से आक्रमण, पहली रात को ही उसका पकड़ में आ जाना **एकोनाइट** का सूचक है, जिस कमज़ोर बच्चे को पहली रात ही क्रुप का या शीत के किसी अन्य रोग का एकदम आक्रमण नही हुआ वह **हिपर सल्फ** का रोगी है। क्रुप-खासी में बुनिंघासन का नुस्खा था—**एकोनाइट २००, स्पंजिया २०० तथा हिपर सल्फ २००**। इन औषधियो को इस क्रम से देने से रोग दूर हो जाता है। अगर पहली मात्रा से ही दूर हो जाय तब इस क्रम को चलाने की ज़रूरत नही।

मोटे-ताज़े तथा दुबले-पतले लोगो पर जुकाम में खुश्क-शीत का आक्रमण—अगर मोटा-ताज़ा व्यक्ति हल्के कपड़े पहन कर बाहर जाने से खुश्क-शीत से पीड़ित होगा, तो उसे उसी रात को जुकाम हो जायगा, अगर कोई व्यक्ति गर्म

कोट पहनने के कारण सर्दी मे निकलने मे पसीना निकलने पर सर्दी खा जायगा, तो उसे कुछ दिन बाद जुकाम होगा। पहले व्यक्ति को मोटा-ताजा होने और तन्दुरुस्त होने पर सर्दी खाकर जुकाम हो जाने के कारण एकोनाइट दिया जायगा, दूसरे व्यक्ति को ठड लगने के कुछ दिन बाद जुकाम होने के कारण कार्बो वेज या सल्फर दिया जायगा क्योंकि एकोनाइट का आक्रमण एकदम होता है, बड़े वेग से होता है, कार्बो वेज और सल्फर का आक्रमण धीरे-धीरे होता है, कुछ दिनो के बाद होता है। जुकाम मे कार्बो वेज तथा सल्फर देते हुए उनके अन्य लक्षणो पर भी ध्यान देना होगा। कार्बो वेज के रोगी को अधिक कपडे पहनने के कारण पसीना आने पर सर्दी खा जाने से जुकाम हो जाता है, एकोनाइट के रोगी को कम कपडा पहनने के कारण सर्दी लग जाने से जुकाम हो जाता है—पहले मे धीरे-धीरे, दूसरे मे जल्दी-जल्दी ।

शीत से गठिये का आक्रमण—यह औषधि पुराने गठिया रोग मे तो काम नही देती, परन्तु शीत मे लम्बा सफर करने पर, ठडी हवा के लगने से अगर जोडो मे दर्द हो जाय, ज्वर हो और साथ बेचैनी हो तो एकोनाइट लाभप्रद है।

(४) **शीत से शोथ (Inflammation) की प्रथमावस्था मे एकाएकपना और प्रबलपना**—क्योंकि एकोनाइट मे शीत से रोग का होना एक प्रधान कारण है, इसलिये शीत-जन्य रोगो मे इसका विशेष उपयोग होता है। शीत से शोथ हो जाता है, इसलिये प्राय कहा जाता है कि शोथ की प्रथमावस्था मे एकोनाइट देना चाहिये। डा० कैन्ट का कहना है कि होम्योपैथी की प्राय सभी पुस्तको मे शोथ की प्रथमावस्था मे **एकोनाइट** देने को कहा जाता है, परन्तु यह बहुत अच्छी सलाह नही है। शोथ की प्रथमावस्था मे **एकोनाइट** तभी देना चाहिये जब शीत का एकाएक तथा प्रबल वेग से आक्रमण हो। शोथ के अतिरिक्त यह भी प्राय कहा जाता है **एकोनाइट** ज्वर की दवा है। यह भी भ्रमात्मक विचार है। **एकोनाइट** उसी ज्वर मे दिया जाना चाहिये जो शीत के एकाएक आक्रमण से, प्रबल वेग से आया हो। डनहम ने इस औषधि के विषय मे ठीक ही कहा है कि यह तूफान की तरह आता है और तूफान की तरह ही शान्त हो जाता है। ऐसे ही शोथ मे, ज्वर में तथा अन्य रोगो मे यह लाभप्रद है। ऐसे ही कुछ दृष्टात हम नीचे दे रहे हैं जिनसे स्पष्ट होगा कि किस प्रकार के शोथ मे **इकोनाइट** दिया जाना चाहिये। इन दृष्टातो को देने से पहले हम यह स्पष्ट कर देना चाहते है कि शोथ की प्रथमावस्था के बाद शोथ की जो द्वितीयावस्था होती है, जिसमे शोथ मे परिपाक हो जाता है, पस पड जाती है, उसमे एकोनाइट काम नही देता। **एकोनाइट** के प्रत्येक रोग मे इस बात को स्मरण रखना चाहिये। जिन रोगो मे शोथ के बाद उसके परिणाम उत्पन्न होने लगें, सिर्फ शोथ ही न हो, शोथ के बाद वह पकने लगे, पस पड जाय, वहा **एकोनाइट** उपयुक्त नही है।

शीत से आंख की सूजन की प्रथमावस्था मे—प्राय सर्दी लगने से आख एकदम सूज जाती है, लाल हो जाती है। यह आख की सूजन इतनी अचानक होती है कि समझ नही पडता कि एकाएक यह कैसे हो गई। इस सूजन मे आख से केवल पानी निकलता है, पस नही। इसी को शीत से सूजन की प्रथमावस्था कहा जाता है। सूजन की प्रथमावस्था के वाद सूजन की जो अगली अवस्थाएँ है, जिनमे सूजन का परिपाक हो जाता है, पस पड जाती है, उनमे **एकोनाइट** काम नही देता। आख की सूजन मे एकाएकपन और प्रवलपन—ये **एकोनाइट** के मुख्य लक्षण हैं।

शीत से ज्वर की प्रथमावस्था मे—जो ज्वर धीमी गति से आये, लगातार वना रहे, उसमे यह औषधि उपयुक्त नही है। **एकोनाइट** का तो रूप ही प्रवल वेग से आधी की तरह आना और उसी की तरह एकदम शान्त हो जाना है। इसलिये टाइफॉयड जैसे ज्वरो मे यह औषधि अनुपयुक्त है। ज्वर को शान्त करने मे **एकोनाइट** ने ऐसा नाम पाया है कि एलोपैथ भी ज्वर मे इस औषधि को दिया करते हैं। साधारण-ज्ञान के होम्योपैथ भी इसी राह चलते हैं। परन्तु यह गलत तरीका है। मलेरिया आदि मे भी इससे कोई लाभ नही होता क्योकि उसमे चढना-उतरना और फिर अपने समय पर चढना पाया जाता है जो **एको-नाइट** मे नही है। **एकोनाइट** उसी ज्वर मे उपयुक्त है जो शीत के कारण या पसीने के शीत से दव जाने के कारण एकदम आक्रमण करता है, प्रवल वेग से आक्रमण करता है, आधी की तरह, भूचाल की तरह आता है। अगर इस ज्वर की **एकोनाइट** दवा है, तो एक रात मे ही ज्वर उतर जायगा। बिना इन सव वातो को सोचे ज्वर मे **एकोनाइट** देने से कभी-कभी नुक्सान की भी सभावना रहती है। वीमार का इलाज करते हुए केवल इस वात पर ही ध्यान नही देना होता कि रोगी मे कौन-कौन-से लक्षण हैं, इस वात पर भी ध्यान देना होता है कि उसमे कौन-से लक्षण नही हैं। **एकोनाइट** के ज्वर मे एकाएकपन, अचानकपन तथा प्रवल-वेग—ये लक्षण हैं, और धीमे-धीमे ज्वर होना, और ज्वर का लगातार वने रहना—ये लक्षण नही हैं।

ज्वर मे एकोनाइट तथा वैलेडोना की तुलना—ज्वर मे **एकोनाइट** तथा **वैलेडोना** दोनो उपयुक्त है परन्तु कई चिकित्सक ज्वर मे **एकोनाइट** और **वैल** दोनो को क्रमश दे देते हैं, यह ठीक नही है। डा० नैश कहते है कि अगर गहराई से देखा जाय तो इन दोनो औषधियो की भिन्नता स्पष्ट हो जाती है। दोनो मे त्वचा मे गर्मी का लक्षण एक-समान है, परन्तु **वैलेडोना** मे **एकोनाइट** की अपेक्षा वाहरी त्वचा की गर्मी अधिक होती है, और ढके हुए अगो पर पसीना आता है, **एकोनाइट** मे जिस तरफ रोगी लेटा हुआ होता है उधर पसीना आता है। **एकोनाइट** का रोगी वेचैनी से, और यह सोचकर कि मैं मर जाऊगा विस्तर

मे इधर-उधर लोटता है, बैलेडोना के ज्वर मे रोगी अर्ध-निद्रित अवस्था मे पडा रहता है और नींद मे उसके अगो का स्फुरण होता है। एकोनाइट मे डिलीरियम नही होता, बैल मे डिलीरियम हो जाता है। एकोनाइट मे गर्म कमरे मे रहने से रोग मे वृद्धि होती है, बैल के रोगी को गर्म कमरे मे रहने से आराम मिलता है। एकोनाइट का रोगी थोडी-थोडी देर मे अधिक परिमाण मे पानी पीता है, बैल का रोगी थोडा-थोडा पानी पीता है। एकोनाइट का रोगी सारा शरीर खुला रखना पसन्द करता है, बैल का रोगी शरीर को ढाक कर रखना पसन्द करता है। अगर इन दोनो औषधियो के ज्वर मे क्रमश देने से ज्वर छूट जाता है, तो इसका कारण यह नही है कि ज्वर इसलिये छूटा है क्योंकि दोनो दवाए एक-दूसरे के बाद दी गई है, परन्तु इसका कारण यही है इन दोनो मे से जो दवा उपयुक्त थी उसने रोग को शान्त कर दिया, और दूसरी दवा ने रोग के शीघ्र शान्त होने मे कुछ बाधा ही डाली। अगर इन दोनो मे से लक्षणो के अनुसार ठीक दवा दी जाती तो अब की अपेक्षा ज्वर पहले ही टूट जाता।

शीत से कान के शोथ की प्रथमावस्था मे—जैसे आग का शोथ अचानक, एकदम तथा प्रबल वेग से होता है वैसे ही सर्दी लगने मे कान का शोथ भी अचानक, एकदम तथा प्रबल वेग से होता है जिसमे एकोनाइट उपयुक्त औषधि है। बालक बाहर सर्दी मे गया है। उसके तन पर काफी कपडे नही थे। घर आते ही कान पर हाथ रख कर चिल्लाने लगता है, या दिन को बाहर सर्दी मे गया था, शाम तक कर्ण-शूल प्रारभ होजाता है। अचानक और वेग इस शोथ के लक्षण है।

शीत से एकाएक निमोनिया के प्रथम आक्रमण मे—अगर रोगी को ठड लगने से यकायक निमोनिया का आक्रमण हो जाय, उसके चेहरे पर घबराहट और बचैनी दीख पडे, रोगी भला-चगा-तगडा था, परन्तु एकदम निमोनिया का शिकार हो गया, रोगी कहता है—'मैं अब बच नही सकता'—मृत्यु-भय और बेचैनी उसके चेहरे पर अकित होती है, छाती मे सूई के छेदन का-सा दर्द होता है, किसी करवट लेट नही सकता, खासते ही चमकीला सर्वथा लाल रग का खून निकलता है—ऐसे यकायक तथा प्रबल वेग के निमोनिया के आक्रमण मे शुरू-शुरू मे एकोनाइट लाभदायक है। निमोनिया मे फेफडो मे शोथ आ जाती है। इसके निमोनिया मे प्राय बायें फेफडे का ऊपरला आधा भाग आक्रान्त होता है।

शीत से एकाएक प्लुरिसी के प्रथम आक्रमण मे—फेफडे को ढकने वाली झिल्ली की शोथ को प्लुरिसी कहते है। एकदम सर्दी लगने से इस झिल्ली का शोथ हो जाता है। एकाएक प्लुरिसी के शोथ मे छाती मे दर्द होता है, ज्वर हो जाता है। एकदम इस प्रकार का वेग-पूर्वक आक्रमण हो जाने पर इसका उपयोग होता है।

शीत द्वारा पेट की एकाएक शिकायतो मे—सर्दी लगने से, अत्यन्त ठडे, बर्फीले जल मे स्नान करने से एकाएक पेट मे बडी जोर का दर्द उठ खडा हो सकता

है। इस सर्दी के पेट मे बैठ जाने से भयकर दर्द, उल्टी, खून की कय आदि उपद्रव उठ खडे होते हैं। उस समय रोगी कटु पदार्थ खाना चाहता है। पानी के सिवा उसे सब कडवा लगता है। इस प्रकार की पेट की असाधारण अवस्था मे जिसका मुख्य कारण पेट मे शीत का बैठ जाना, सहसा आक्रमण होना, वेग-पूर्वक आक्रमण होना है—यह सब **एकोनाइट** का लक्षण है। इन लक्षणो के साथ घबराहट, बेचैनी, मृत्यु-भय भी हो सकता है।

(५) **जलन और उत्ताप**—इसमे 'जलन' एक विशेष लक्षण है। हर प्रकार के दर्द मे जलन होती है। सिर मे जलन, स्नायु-शिरा के मार्ग मे जलन, रीढ मे जलन, ज्वर मे जलन, कभी-कभी ऐसी जलन जैसे मिर्च लग गई हो।

(६) **अत्यन्त प्यास** (Unquenchable thirst)—इसका रोगी कितना ही पानी पीता जाय उसकी प्यास नही बुझती। **आर्सनिक** का रोगी बार-बार किन्तु थोडा-थोडा पानी पीता है, **ब्रायोनिया** का रोगी देर-देर बाद बहुत-सा पानी पीता है, **एकोनाइट** का रोगी बार-बार, बहुत-सा पानी पीता है। **एकोनाइट** के जलन और प्यास के लक्षणो को ध्यान मे रखते हुए, आइये, इस औषधि के गले की सूजन—टासिल—के लक्षणो पर दृष्टिपात करें

शीत द्वारा गले की सूजन (टासिल) मे जलन और प्यास—गले की सूजन या टासिल बढ जाने पर निगलना कष्टप्रद होता है, परन्तु इतने से हम किसी औषधि का निर्णय नही कर सकते। ऐसा तो बीसियो औषधियो मे पाया जायगा। हा, अगर रोगी रक्त-प्रधान हो, तन्दुरुस्त हो, ठडी हवा मे सैर के लिये निकला हो, देर तक खुश्क, शीत-प्रधान वायु मे रहा हो, वह अगर उसी दिन की आधी रात गये गले मे तीव्र जलन अनुभव कर उठ बैठे, गले मे थूक निगलने मे दर्द अनुभव करे, तेज बुखार हो, ठडा पानी पीये और बस न करे, घबराहट और बेचैनी महसूस करे, तब **एकोनाइट** उसे एकदम स्वस्थ कर देगा। सिर्फ इतना कह देना कि गला लाल है—**एकोनाइट** देने के लिये पर्याप्त कारण नही है। गले के जिस रोग की हमने चर्चा की उसमे व्यक्ति रक्त-प्रधान है, उस पर खुश्क-शीत का असर हुआ है, असर होने मे देर नही लगी, दिन को सर्दी लगी और रात को ही उसका असर हो गया, जलन है, अत्यन्त प्यास है, आक्रमण वेग से हुआ है, तेज बुखार है, घबराहट और बेचैनी है—इन सब लक्षणो के इकट्ठा हो जाने पर ही **एकोनाइट** की उपयोगिता है।

(७) **शीत द्वारा दर्द—स्नायु-शूल** (Neuralgia)—सिर-दर्द तथा दात के दर्द मे भी यह एक उत्कृष्ट दवा है। इन दर्दों मे भी इसके आधारभूत लक्षण सदा रहने चाहिये। शीत से स्नायु-शूल के निम्न दृष्टात है —

शीत द्वारा स्नायु-शूल—कोई व्यक्ति ठडी, सूखी हवा मे घुड-सवारी के लिये या पैदल सैर करने के लिये निकलता है। उसका चेहरा ठडी हवा के सपर्क

मे आता है। स्नायु सुन्न हो जाती है, फिर दर्द शुरू होता है, रोगी उस दर्द से कराहता है। भला-चंगा आदमी है, हृष्ट-पुष्ट है, रक्त-प्रधान है, दर्द से बेचैनी और जलन है, दर्द यकायक अचानक आया है, बडे वेग से आया है, रोगी के चेहरे पर घबराहट है, चाकू की काट की तरह चेहरे मे दर्द हो रहा है। इस दर्द को एकोनाइट एकदम ठीक कर देगा।

शीत द्वारा शियाटिका का दर्द—शीत लगने से स्नायु के मार्ग मे जब बर्फ के समान ठडक अनुभव हो वहा भी एकोनाइट अच्छा काम करता है। कभी-कभी स्नायु के मार्ग मे जलन का अनुभव होता है। ऐसे शियाटिका मे यह लाभप्रद है।

शीत द्वारा सिर-दर्द—इसका सिर-दर्द बडे वेग से आता है। मस्तिष्क तथा खोपडी पर जलन होती है, कभी ज्वर होता है कभी नही होता, सर्दी लगने से सिर-दर्द होता है, कभी-कभी बहते जुकाम के बन्द हो जाने से दर्द शुरू हो जाता है। जुकाम के समय रक्त-प्रधान व्यक्ति सैर को बाहर ठडी हवा मे निकल जाता है और घर लौटने पर थोडी देर मे आखो के ऊपर के भाग मे सिर-दर्द होने लगता है। इस सिर-दर्द मे घबराहट बनी रहती है। क्रोध, भय से भी एकोनाइट का सिर-दर्द हो जाता है। स्त्रियो मे रजो-धर्म के अचानक रुक जाने से सिर मे खून का दौर बढ जाता है और सिर-दर्द हो जाता है। यह समझना भ्रम है कि सर्दी लगने से ही सिर-दर्द होता है। धूप मे रहने से या लू लग जाने से भी सिर-दर्द हो सकता है, परन्तु एकोनाइट के सब प्रकार के सिर-दर्द मे एकाएकपना, प्रबल वेग, घबराहट, बचैनी, प्यास आदि की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये, फिर भले ही वह सर्दी से हुआ हो या गर्मी से।

शीत द्वारा दातो मे दर्द—डा० कैन्ट इस औषधि के प्रकरण मे दन्त-शूल के विषय मे लिखते है "ओह! दन्त-शूल मे यह कितनी शान्तिप्रद औषधि है। दात के दर्द को शमन करने के लिये यह दवा इतनी प्रसिद्ध हो गई है कि प्रत्येक गृहस्थी मे वृद्धा माताए जानती हैं कि एकोनाइट के मदर-टिंचर की एक बूद थोडी-सी रुई से दात की खोल मे रख देने से दर्द शान्त हो जाता है। अगर शक्तिकृत एकोनाइट का प्रयोग किया जाय तो वह और अच्छा काम करेगा, परन्तु यह ध्यान रखने की बात है कि दर्द सर्दी लगने से हुआ हो, एकदम आया हो, बडे वेग से आया हो, रक्त-प्रधान व्यक्ति हो। कभी-कभी अच्छे, मजबूत दातो की सारी पक्ति मे सर्दी के कारण दर्द हो उठता है, उसमे भी एकोनाइट की एक ही मात्रा से दर्द शान्त हो जाता है।"

दर्द मे एकोनाइट, कैमोमिला तथा कॉफिया की तुलना—डा० नैश ने लिखा है कि एकोनाइट, कैमोमिला तथा कॉफिया दर्द की प्रमुख औषधिया हैं। कैमोमिला के दर्द मे अत्यन्त चिडचिडाहट (Intense irritability) होती है, कॉफिया के दर्द मे अत्यन्त उत्तेजना (Excitability) होती है, त्वचा

स्पर्श को सहन नही कर सकती, रोगी शोर को सहन नही कर सकता, **एकोनाइट** मे अत्यन्त घबराहट तथा मृत्यु का भय (Fear of death) होता है।

(८) इस औषधि के अन्य लक्षण—

1 **गर्मी से उत्पन्न रोगो मे**—यह औषधि केवल शीत की बीमारियो के लिय ही उपयुक्त नही है, किन्तु जहा इसका उपयोग अत्यन्त शीत के द्वारा उत्पन्न रोगो मे होता है, वहा अत्यन्त गर्मी से उत्पन्न रोगो मे भी इसका उपयोग है। फेफडे तथा मस्तिष्क के रोग शीत के कारण होते हैं और 'आन्त्र-शोथ' (Bowel inflammations) तथा पेट के रोग ग्रीष्म-ऋतु मे होते है। जब रक्त-प्रधान स्वस्थ व्यक्ति एकदम गर्मी खा जाते हैं तब लू से सिर-दर्द, गर्मी से पेट के दस्त आदि अनेक उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं। इनमे भी **एकोनाइट** लाभप्रद है। बच्चो के पेट की बीमारिया तो गर्मी की वजह से होती है और उनमे एका-एकपना, प्रबल वेग आदि होने पर **एकोनाइट** ही प्रयुक्त होता है।

ii **स्त्रियो तथा बच्चो के रोगो मे क्योकि वे भय के शिकार रहते हैं—** पुरुषो की अपेक्षा बच्चो तथा स्त्रियो के रोगो मे **एकोनाइट** विशेष उपयोगी है। इसका यह अभिप्राय नही है कि पुरुषो मे यह उपयोगी नही है। क्योकि बच्चे तथा स्त्रिया भय के शिकार जल्दी हो जाती है इसलिये उनके भय-जन्य रोगो मे इसका विशेष उपयोग होता है। भय से पुरुषो को किसी अग का शोथ (Inflammation) नही होता, परन्तु स्त्रियो मे प्राय सर्दी लगने या भय के कारण जरायु (Uterus) तथा डिम्ब-ग्रन्थि (Ovary) का शोथ हो जाता है। रजोधर्म रुक जाता है। कभी-कभी भय से गर्भपात होने की सभावना हो जाती है। बच्चो मे भी **एकोनाइट** उसी हालत मे काम करता है जब रोग भय के कारण उत्पन्न हुआ हो। बच्चे प्राय भयभीत रहते हैं, कभी माता-पिता, कभी अध्यापक उन्हें डराते हैं। इस प्रकार बच्चो को जो रोग हो जाते है—दस्त, अपचन, कनवलशन —उनमे **एकोनाइट** उपयोगी है। अगर प्रसव के बाद 'लोचिया' (प्रसवान्तिक क्लेद-स्राव) रुक जाय तो **एकोनाइट** नही देना चाहिये।

iii **नव-जात शिशु को 'शौक' के कारण मूत्र न आने मे**—जो बच्चा अभी पैदा हुआ है, उसे एकप्रकार का 'शौक'—'आघात'—लगा है। इस एकदम लगे धक्के के कारण उसकी नवीन-परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया मे रुकावट आ जाती है। प्राय उसे पेशाब नही उतरता। पेशाब न उतरने का कारण नवीन प्रकार के ससार मे आना है। यह भी एक प्रकार का भय ही है। नव-जात शिशु को जब पेशाब न आये, तो **एकोनाइट** की एक मात्रा समस्या को हल कर देती है। अगर शिशु की माता को पेशाब न आये, तो **कॉस्टिकम** की एक मात्रा देनी चाहिये।

iv. **जिस तरफ़ लेटे उधर के चेहरे पर पसीना आना और दूसरी तरफ**

न आना— ज्वर मे एकोनाइट का विशेष लक्षण यह है कि रोगी जिस तरफ लेटता है चेहरे के उस तरफ पसीना आने लगता है। अगर वह पासा पलट ले, तो चेहरे का पसीनेवाला भाग सूक जाता है, और दूसरा भाग जिधर वह लेटता है उधर पसीना फूट निकलता है।

V **श्वास-कष्ट मे पसीना आ जाना**—कभी-कभी ठड लगने के कारण या किसी प्रकार के भय या 'शौक' (मानसिक धक्का) के कारण फेफडो की छोटी-छोटी श्वास-प्रणालिकाए सकुचित होने लगती हैं और रोगी को दमा तो नहीं परन्तु दमे-जैसी शिकायत हो जाती है। इसप्रकार का श्वास-कष्ट किसी डर से, स्नायु-प्रधान, रक्त-प्रधान स्त्रियो को अधिक होता है। उनका श्वास जल्दी-जल्दी चलता है, घबराहट रहती है, श्वास लेने मे प्रयास करना पडता है, श्वास-प्रणालिकायें सूखी होने लगती हैं। रोगी पर यकायक तथा प्रवल वेग का आक्रमण होता है, रोगी बिस्तर से सीधा उठ बैठता है, गला पकडता है, कपडे उतार फैंकता है, प्यास लगती है, भय से रोगी आतकित हो उठता है। श्वास-कष्ट के साथ हृदय मे दर्द का अनुभव होता है। इस भय तथा घबराहट से रोगी पसीने से तर-ब-तर हो जाता है यद्यपि त्वचा गर्म ही रहती है। इस प्रकार के श्वास कष्ट मे **एकोनाइट** के सब प्रधान लक्षण पाये जाते हैं—अचानकपना, वेग, घबराहट, प्यास, भय। ऐसे समय एकोनाइट रोगी का परम सहायक सिद्ध होता है।

(९) **अल्पकालिक औषधि**—इसके प्रयोग मे यह ध्यान रखना चाहिये कि यह दीर्घकालिक औषधि नहीं है। इसकी क्रिया थोडे समय तक ही रहती है, इसलिये इसे दोहराया जा सकता है।

(१०) **एकोनाइट तथा सल्फ़र का पारस्परिक संबंध**—एकोनाइट तथा सल्फ़र का पारस्परिक विशेष सम्बन्ध है। **सल्फ़र** मे **एकोनाइट** के अनेक लक्षण पाये जाते हैं। जिन तरुण अर्थात् नवीन (Acute) लक्षणो में **एकोनाइट** दिया जाता है, वे ही लक्षण अगर जीर्ण, अर्थात् पुराने (Chronic) हो जाँय, तो उनमे सल्फ़र उपयोगी है। जब कोई ऐसा रोग मनुष्य को आ घेरता है जो अचानक आया है, प्रबल वेग से आया है, जिसे **एकोनाइट** ठीक कर सकता और कर देता है, परन्तु उसे बार-बार आने से नही रोक सकता, शरीर मे उस रोग के बार-बार आने की प्रवृत्ति बनी रहती है, इस प्रवृत्ति को रोक देने की शक्ति **सल्फ़र** मे है। **एकोनाइट** जिस रोग को शान्त करने लगता है **सल्फ़र** उसके बचे हुए लक्षणो को शान्त कर पूरे रोग को दूर कर देता है, इसलिये **एकोनाइट** के बाद दूर होते लक्षणो की पुनरावृत्ति न हो इस उद्देश्य से रोगी को **सलफर** दे देते हैं। जैसे **बेलेडोना** का क्रौनिक **कैलकेरिया कार्ब** है, वैसे **एकोनाइट** का क्रौनिक है।

(११) **डा० गुएरेन्सी का एकोनाइट को 'कहां नहीं देना' इस विषय मे**

निर्देश—डा० गुएरेन्सी ने एकोनाइट के विषय मे लिखा है "इस औषधि की अन्तरात्मा मानसिक लक्षणो का होना है। जहा रोगी अपने कष्ट को शान्ति, धैर्य और विना बेचैनी के सहन कर रहा हो, वहा एकोनाइट कभी नही देना चाहिये। एकोनाइट देने का विचार उसी रोग मे उपयुक्त है जहा मानसिक बेचैनी, चिन्ता, भय विद्यमान हो क्योंकि बेबसी की बेचैनी, चिन्ता, परेशानी, भय—ये एकोनाइट के विशेष लक्षण है।"

(१२) शक्ति तथा प्रकृति—स्नायु-शूल मे टिंचर का एक बूद दिया जाता है, अन्यथा ३ से ३० शक्ति। क्योंकि यह औषधि दीर्घ-गामी नही है इसलिये नवीन रोगो मे इसका वार-वार प्रयोग होता है। पुराने रोगो मे इसका प्रयोग नहीं होता। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

एक्टिया रेसिमोसा या सिमिसिफ्यूगा
(ACTEA RACEMOSA OR CIMICIFUGA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) स्त्री-रोग मे विशेष उपयोगी	लक्षणो मे कमी (Better)
i. हिस्टीरिया	*गर्म कपड़े पहनने से रोग मे कमी
ii. रजोधर्म तथा जरायु के रोग	*खाने से रोग मे कमी
iii. शारीरिक लक्षणों के दबने पर मानसिक लक्षण होना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
iv तीसरे महीने गर्भपात होना	*रजोधर्म के दिनों मे रोग-वृद्धि
(२) गठिया (नमी के कारण शरीर की मासपेशियों, जोडो, सिर, जरायु आदि मे दर्द)	*जितना अधिक रज स्राव हो उतना ही क्लेश का बढ़ना *ठड से रोग बढना

(१) डा० कैन्ट का कहना है कि इस औषधि की परीक्षा बहुत सीमित क्षेत्र मे ही हुई है, परन्तु फिर भी कई रोगो मे यह औषधि कारगर सिद्ध हुई है। इसकी मुख्य उपयोगिता स्त्रियो के रोगो मे पायी जाती है जिनमे से मुख्य हिस्टीरिया तथा गठिया आदि वात-रोग हैं। हम यहा इनका वर्णन करेंगे।

हिस्टीरिया के लक्षण—सोते समय मास-पेशियो का कपन तथा उससे अनिद्रा—ज्यो ही रोगिणी सोने के लिये बिस्तर पर लेटती है, तब जिस तरफ लेटती है उसी तरफ की मास-पेशियो मे कपन होने लगता है। अगर वह पीठ के बल लेट जाती है, तो पीठ की मास-पेशियो में कपन शुरू हो जाता है, कन्धो

मे कपन शुरू हो जाता है। दायें, बायें, सीधे—किसी तरफ लेटने मे उसी तरफ कपन का होना उसे बेचैन कर देता है और वह सो नही सकती। कभी कपन, कभी सुन्नभाव, कभी दर्द—ठीक उस तरफ जिधर वह लेटती है—यह एक विलक्षण-लक्षण (Peculiar Symptom) है जो इस औषधि मे पाया जाता है।

रजोधर्म के दिनों मे लक्षणों मे वृद्धि—रजो-धर्म के विषय मे रोगिणी से पूछना चाहिये कि उसके लक्षण रजोधर्म से पहले बढते है, रजोधर्म के दिनो मे बढते हैं, या रजोधर्म के बाद बढते हैं। प्राय रजोधर्म हो जाने से स्त्रियो की तकलीफें घट जाती है, यह स्वाभाविक है। परन्तु ऐक्टिया रेसिमोसा का विशेष लक्षण यह है कि जब रजोधर्म हो रहा होता है, उस समय रोगिणी की तकलीफें बढ़ जाती हैं, और जितना ही अधिक रुधिर जारी होता है उतनी ही उसकी तकलीफें बढती है। रजोधर्म के दिनो मे स्त्री मे उदासीनता, रुआई, अविश्वास, मास-पेशियो का कपन, सुन्नभाव—जिधर लेटती है उधर की ही मास-पेशिया फडकने लगती हैं, बेचैनी से वह बिस्तर पर उठ बैठती है, सो नही सकती—ये सब उपद्रव रजोधर्म के दिनो मे प्रकट होते है, और रजोधर्म के निकल जाने पर ये लक्षण भी जाते रहते है। लैकेसिस और जिकम मे ठीक इससे उल्टा होता है। इनमे रजो-धर्म के होने से स्त्री के सब उपद्रव शान्त हो जाते हैं, न होने पर बने रहते हैं।

शारीरिक-लक्षणों के दबने पर मानसिक-लक्षणो का प्रकट होना तथा मानसिक-लक्षणो के दबने पर शारीरिक-लक्षणों का प्रकट होना (Metastasis)—कभी-कभी रोगी के शारीरिक-लक्षणो को तेज दवाओ से दबा दिया जाता है, परन्तु वे दब कर और गहराई मे जाकर मानसिक-लक्षणो को उत्पन्न कर देते हैं। उदाहरणार्थ, अगर गठिये को दबा दिया जाय, तो रोगी का मानसिक-असन्तुलन हो जाता है, कभी-कभी गठिया भी ठीक हो जाता है, मानसिक-सन्तुलन भी बना रहता है, परन्तु दस्त आने लगते हैं, पेट मे दर्द होने लगता है, स्त्रियो मे जरायु से रुधिर आने लगता है। इस प्रकार का स्रावो का प्रवाह रोग को शान्त बनाये रखता है, अगर यह स्राव-प्रवाह रुक जाय, तो रोगी अशान्त-चित्त, मायूस बना रहता है। शारीरिक-लक्षण हट कर मानसिक-लक्षण प्रकट होना या मानसिक-लक्षण हट कर शारीरिक-लक्षण प्रकट होना इस औषधि मे पाया जाता है।

ऐक्टिया रेसिमोसा की रोगिणी एक दिन आकर कहती है कि उसके सारे शरीर मे दर्द होता है, जिस तरफ भी लेटे उस तरफ की मास-पेशिया फडकने लगती हैं, इस कारण वह उठ बैठती है, इसी कारण रात को नींद नही आती, अगली बार आकर अपने शारीरिक-कष्ट की कोई बात नही कहती, सिर्फ इतना कहती है कि जी घबडाया रहता है, कुछ करने को जी नही करता, रो-रोकर अपना दिल हल्का करना चाहती है, कहती है रोने को जी करता है। शारीरिक-लक्षणो के

दब जाने पर मानसिक-लक्षणो का प्रकट हो जाना और मानसिक-लक्षणो के दब जाने पर शारीरिक-लक्षणो का प्रकट होना इस औषधि का विशेष गुण है।

ऐक्टिया रेसिमोसा तथा पल्सेटिला की तुलना—लक्षणो का इस प्रकार एक-दूसरे मे परिवर्तन **ऐक्टिया रेसिमोसा** की तरह **पल्सेटिला** मे भी पाया जाता है, परन्तु **ऐक्टिया** शीत-प्रधान औषधि है, **पल्सेटिला** ऊष्णता-प्रधान औषधि है। **पल्सेटिला** मे रोग अपना स्थान बदलता है, रूप नही बदलता। अगर घुटने मे दर्द है तो वह दर्द दूसरे घुटने मे, बाँह मे या अन्य कही जा सकता है, परन्तु दर्द दर्द ही बना रहेगा, कोई और रूप धारण नही करेगा। **ऐक्टिया रेसिमोसा** मे दर्द दबकर मानसिक रूप धारण कर लेता है—उदासी, निराशा, रोना, जीवन से उपरामता आदि। इस दृष्टि से **ऐक्टिया रेसिमोसा** की **एब्रोटेनम** से तुलना की जा सकती है, परन्तु उसमे एक शारीरिक-लक्षण दब कर दूसरा शारीरिक-लक्षण—बिल्कुल नया लक्षण—प्रकट हो जाता है, मानसिक-लक्षण नही। उदाहरणार्थ, **एब्रोटेनम** मे दस्त दब कर गठिया हो जायगा, बवासीर हो जायगी, कर्णमूल दब कर पोते बढ जायेंगे। **ऐक्टिया रेसिमोसा** का **एब्रोटेनम** की अपेक्षा मन पर, स्नायु-मडल पर अधिक प्रभाव है।

ऐक्टिया रेसिमोसा और इग्नेशिया की तुलना—लक्षणो की परिवर्तनशीलता **इग्नेशिया** मे भी पायी जाती है। **इग्नेशिया** भी **ऐक्टिया** की तरह शीत-प्रधान है, परन्तु भेद यह है कि **इग्नेशिया** की बीमारी अधिकत दु ख के कारण होती है। किसी का पति मर गया, किसी की स्त्री मर गई, कोई अतृप्त प्रेम से व्याकुल है। इस प्रकार के दु ख-जनित रोगो मे **इग्नेशिया** व्यवहृत होती है।

तीसरे महीने गर्भपात हो जाना तथा प्रसव सहज होना—डा० क्लार्क कहते हैं कि अगर तीसरे महीने गर्भपात हो जाता हो, तो ऐसी दशा मे प्रसव के एक या दो मास पूर्व से अगर गर्भवती स्त्री को **ऐक्टिया रेसिमोसा** की ३x की मात्रा प्रति ३ घटे सेवन कराई जाय, तो गर्भपात नही होता। **सैबाइना** भी तीसरे महीने के गर्भपात को रोकता है। पाचवें या सातवें महीने गर्भपात होता हो, तो **सीपिया** ३० की प्रति चार घटे के बाद मात्रा सेवन कराई जाय तो गर्भपात नही होता। जिन स्त्रियो को स्वभावत गर्भपात हो जाता है उन्हें **वाइबरनम** के मदर टिंचर के ४—५ बूद प्रतिदिन देने चाहियें। डा० कैंट का कथन है कि यद्यपि अनेक बार **ऐक्टिया रेसिमोसा** के देने से प्रसव मे आसानी हो जाती है, तो भी इसे रुटीन की तरह देना होम्योपैथी नहीं है। रोगी के अन्य लक्षणो को भी ध्यान में रखना चाहिये। यह ठीक है कि प्रसव के अन्तिम दिनो मे इसे देने से प्रसव-पीडा मे न्यूनता आती है।

ऐक्टिया रेसिमोसा तथा कॉलोफ़ाइलम—जैसे डा० क्लार्क ने **ऐक्टिया रेसिमोसा** के विषय मे लिखा है कि प्रसव के कुछ दिन पहले इसे देने से प्रसव आसानी

से ही जाता है, वैसे डा० डगलस बोरलैंड का कहना है कि प्रसव के एक मास पूर्व से कॉन्लोफाइलम की निम्न-शक्ति की एक मात्रा प्रतिदिन देने से प्रसव मे कोई पीडा नही होती और बच्चा आसानी से हो जाता है।

(२) **गठिया**—इसका रोगी शीत-प्रधान होता है, सर्द और नम हवा से उसके शरीर मे गठिये के रोग की दशा उत्पन्न हो जाती है, केवल मास-पेशियो और जोडो मे ही दर्द नही होता, सारे शरीर मे दर्द होने लगता है, स्नायु-मार्ग मे, नसो मे दर्द होता है। यकृत् और जरायु मे भी नम-मौसम के शीत से दर्द होता है, सारे शरीर मे इस शीत से दर्द होता है, परन्तु सिर मे वह ठडी हवा चाहता है। रोगी शीत-प्रधान है—यह तो रोगी का 'व्यापक' (General) रूप है, परन्तु सिर ठडक चाहता है—यह रोगी का 'एकागी' (Particular) रूप है। यह हम पहले ही कह चुके हैं कि जब रोगी के शारीरिक-कष्ट—गठिये का दर्द आदि—दब जाते हैं तब उसके मानसिक-कष्ट—हतोत्साह, निराशा, रुआई—आदि प्रकट होने लगते हैं, और जब उसके मानसिक-कष्ट प्रकट होते हैं तब उसके शारीरिक-कष्ट दब जाते हैं। इस दृष्टि से इसे 'मूर्छा तथा वात-ग्रस्त प्रकृति' (Hysterio-rheumatic constitution) का रोगी कह सकते हैं।

(३) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i प्रसव के बाद ठड लग जाने से पागलपन या डिलीरियम।

ii प्रसव के बाद जरायु के नियमित सकोचन के न होने से मैले-पानी (Lochia) या नारवेल (Placenta) के न निकलने पर इसे दिया जाता है।

iii जरायु में दर्द (Uterine neuralgia) जो कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर जाता है, इसके लिये यह महौषध है। यदि यह दर्द दाईं तरफ से बाईं तरफ जाय, तो **लाइकोपोडियम** और अगर बाईं तरफ से दाहिनी तरफ जाय, तो **इपिकाक** या **लैकेसिस** उपयोगी है।

iv रजोधर्म की खराबी के कारण शरीर मे बिजली के शौक (धक्के) के समान स्नायु-शूल (Neuralgia) को यह ठीक करता है।

v जरायु से सबद्ध सिर-दर्द। **ऐक्टिया** का सिर-दर्द आख से शुरू होकर सिर की चोटी या उसके ठीक पीछे सिर की गुद्दी तक फैल जाता है, **स्पाइजेलिया** का सिर-दर्द सिर के पीछे की बाईं तरफ से शुरू होकर, सिर के ऊपर चोटी से होता हुआ बाईं आख पर आ टिकता है। **ऐक्टिया रेसिमोसा** का सिर-दर्द दिन की अपेक्षा रात को अधिक होता है, इसके विपरीत **स्पाइजेलिया** का सिर-दर्द दिन को अधिक होता है, सूर्योदय से प्रारभ होता है और सूर्यास्त तक बना रहता है। प्रतिदिन ठीक एक ही समय बाईं आख के आस-पास दर्द हो तो **सिड्रन** उपयोगी है।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—डा० कैन्ट कहते हैं कि यह औषधि ३०,

२००, १००० तथा इससे भी ऊची शक्ति मे अच्छा काम करती है। औषधि 'सर्द' —Chilly— प्रकृति के लिये है।

एसक्यूलस (AESCULUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मल-द्वार-शिराओ मे रक्त-सचय, (बवासीर तथा गले, पेट, फेफडे, आख आदि की शिराओ मे रक्त-संचय से उनमे फूला-फूलापन अनुभव करना—Fullness)	लक्षणो मे कमी (Better) *बवासीर का खून निकलने से *ठंड से रोग मे कमी
(२) कमर-दर्द—कमर के नीचे की हड्डी (त्रिकास्थि) मे दर्द जिसे चिनका पड जाना कहते हैं	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *प्रात काल रोग बढ़ना *ठंडी हवा मे सास लेने से *शौच या पेशाब के बाद
(३) दर्द का स्थान परिवर्तन करना	*हिलने-डुलने तथा घूमने से

(१) मल-द्वार की शिराओ (Veins) मे रक्त-संचय (बवासीर)—हमारे शरीर मे दो प्रकार की रक्त-वाहिनी नाडिया हैं—'धमनिया' (Arteries) तथा 'शिराएँ' (Veins)। धमनियो मे शुद्ध-रक्त वहता है, शिराओ मे अशुद्ध-रक्त—नीला रक्त—वहता है, जो पहले हृदय मे इकट्ठा होता है, वहा से शुद्ध होने के लिये फेफडो मे जाकर फिर हृदय मे लौटता है। फेफडो मे से ऑक्सीजन लेकर वह शुद्ध, अर्थात् लाल रग का होकर फिर हृदय मे आ जाता है, और वहा से धमनियो द्वारा पुन शरीर मे सचार करता है। जब शरीर की मासपेशिया ढीली पड जाती हैं, तब शिराओ मे भी शिथिलता आ जाती है, और जहा शिराओ का समूह अधिक तौर से होता है, वहा अशुद्ध-रक्त ले जाने वाली इन शिराओ (Veins) मे अशुद्ध-रक्त इकट्ठा हो जाता है। अशुद्ध-रक्त के एक स्थान पर इसी सचय को 'शिरा-रक्त सचय' (Venous stasis) या 'शिरा-रक्त-शोथ' (Varicose Veins) कहते हैं। इसी 'शिरा-रक्त-शोथ' से ववासीर की उत्पत्ति होती है।

ववासीर दो प्रकार की होती है—वादी बवासीर और खूनी बवासीर, यह प्रायः बादी मे अधिक उपयोगी है—ववासीर मे कभी खून आता है, कभी नही आता। एसक्यूलस प्राय वादी ववासीर मे, जिसमे खून नही आता, अधिक उपयोगी है, परन्तु खूनी बवासीर मे भी यह लाभ पहुँचाती है। इस दवा का कार्य-क्षेत्र बहुत विस्तृत नही है, परन्तु बवासीर तथा जहा-जहा शिराओ मे रक्त-सचय

की शिकायत हो, वहा-वहा इसका कार्य निस्सन्दिग्ध है। क्योंकि **एसक्यूलस** का प्रभाव 'शिराओ' (Veins) पर होता है इसलिये जहा-जहा लाल-नीले (Purple) रग का रुधिर दीखे, ववासीर के मस्सो मे, घाव मे, कही भी, वहा-वहा यह उपयोगी औषधि है।

खूनी ववासीर मे **कोलिनसोनिया** उत्कृष्ट दवा है। **कोलिनसोनिया** से लाभ होने के वाद जो-कुछ शेष रहे, उसे **एसक्यूलस** ठीक कर देता है। इसी प्रकार **नक्स वोमिका** तथा **सलफ़र** से जव रोग मे कमी आ जाय, और ववासीर मे पूरा लाभ न हो, तव **एसक्यूलस** वचे हुए रोग को समाप्त कर देता है।

ववासीर के विषय मे विचार करते हुए **एलो, ब्रोमियम** तथा **म्यूरियेटिक एसिड** को भी ध्यान मे रखना चाहिये। इनका वर्णन हमने एलो पर लिखते हुए किया है।

रक्त-संचय के कारण किसी अग मे भारी-भारीपन (Sense of fullness) अनुभव करना—इस औषधि का विशेष लक्षण यह है कि शिराओ के रक्त-सचय के कारण रोगी किसी भी अंग मे भारी-भारीपन, फूलापन (Fullness) अनुभव करता है। ववासीर मे क्योकि गुदा की शिराओ मे नीला रक्त सचित हो जाता है, इसलिये वहा पर रोगी को भारीपन अनुभव होता है, हल्कापन अनुभव नही होता। मल-द्वार मे भारीपन अनुभव करना इस औषधि का विशेष लक्षण है।

मलद्वार मे तिनके-से ठुंसे अनुभव होना—मलद्वार का स्थान नीचे की ओर है, इसलिये जव वहा की शिराओ मे अशुद्ध-रक्त सचित हो जाता है, ऊपर की तरफ नही लौटता, तव रोगी को ऐसा अनुभव होता है जैसे मल-द्वार मे तिनके-से ठुसे हुए हो। इस औषधि का केन्द्र-स्थान गुदा प्रदेश है, और जिन व्यक्तियो की रुधिर-प्रणालिकाएँ अधिक फूली रहती हैं (Plethoric individuals) उनमे इस प्रकार के अनुभव विशेष तौर पर पाये जाते हैं।

एसक्यूलस तथा नाइट्रिक एसिड की तुलना—इस औषधि मे गुदा मे तिनके चुभते-से अनुभव होते हैं, **नाइट्रिक एसिड** मे ऐसा अनुभव होता है कि शौच करते समय गुदा मे कही हड्डी का टुकडा चुभ रहा है। इन दोनो मे भेद यह है कि **एस-क्यूलस** मे तो शौच करने के कुछ घटे के वाद चुभन का दर्द प्रारभ होता है, **नाइ-ट्रिक एसिड** मे शौच करते समय और शौच करने के कई घटे वाद तक यह चुभन वनी रहती है। **नाइट्रिक एसिड** मे खूनी ववासीर होती है, **एसक्यूलस** मे नीले रग के वाहर निकले हुए वडे मस्से होते हैं जिनमे चाकू से काटने जैसा दर्द होता है और इसमे रो ी न खडा रह सकता है, न लेट सकता है, न वैठ सकता है, वैठ सकता है, तो केवल घुटनो के वल।

मुख, गले, पेट, फेफडे, आख आदि की शिराओं मे रक्त-संचय से उनमें फूला-फूलापन अनुभव करना—जैसे गुदा की शिराओ मे रक्त-सचय से फूलापन

अनुभव होता है, वैसे मुख की या गले की शिराओ मे भी रक्त-सचय के कारण फूलापन अनुभव होता है। इसी प्रकार का अनुभव पेट मे, हृदय मे, फेफडो मे भी 'फूलापन' (Fullness) प्रतीत होने पर **एसक्यूलस** उपयोगी औषधि है। गले को देखने से गला नीली शिराओ से भरा दीखता है। आँखो मे भी शिराओ की सूजन से, उनमे रक्त-सचय से जो कष्ट उत्पन्न हो जाता है उसके लिये यह उत्तम है।

(२) **कमर के नीचे की त्रिकास्थि (Sacrum) मे दर्द जिसे चिनका पडना कहते हैं**—इस औषधि की मुख्य क्रिया गुदा-प्रदेश तथा पीठ के नीचे के स्थान मे जिसे त्रिकास्थि (Sacrum) कहते हैं वहा पर दिखलाई देती है। त्रिकास्थि का स्थान रीढ की अन्तिम हड्डी (Coccyx) के ठीक ऊपर है। कमर के नीचे इस हड्डी मे दर्द होना जो चलने-फिरने, हिलने-डोलने तथा झुकने से बढ जाय इस औषधि का विशिष्ट लक्षण है। पीठ मे चिनका पड जाने पर यह औषधि उपयुक्त है। पीठ मे दर्द के कारण रोगी सब काम-धंधे छोड बैठता है। कमर दर्द की यह अत्युत्तम औषधि है।

कमर के नीचे के हिस्से के दर्द मे एसक्यूलस तथा एगैरिकस की तुलना—कमर के नीचे के हिस्से मे (In sacral region) दर्द इन दोनो औषधियो मे है, परन्तु **एगैरिकस** मे कमर-दर्द बैठी हुई हालत मे होता है, चलते-फिरते रहने से चला जाता है, **एसक्यूलस** मे यह दर्द बैठी हुई हालत से उठने या झुकने से या चलने-फिरने से या हरकत करने से होता है। रोगी एक तरह का लगडापन (Lameness) अनुभव करता है, यह अनुभव कूल्हे या टाग तक जाता है। **एसक्यूलस** के कमर-दर्द का वर्णन करते हुए कहा जाता है lameness in the lower back which gives out when walking

(३) **दर्द का स्थान परिवर्तन करना**—इस औषधि मे दर्द स्थान परिवर्तन करती रहती है, कभी इधर, कभी उधर। कभी-कभी ये दर्द स्नायु के मार्ग पर होती हैं। **पल्सेटिला** तथा **कैली कार्ब** मे भी इसप्रकार की स्थान परिवर्तन करनेवाली दर्द पायी जाती है। **पल्सेटिला** तथा **एसक्यूलस** दोनो ऊष्णता-प्रधान औषधिया हैं, दोनो ठड को पसन्द करती हैं, दोनो मे दर्द स्थान-परिवर्तन करता रहता है, ऊष्णता-प्रधान होने पर भी दोनो दर्द के स्थान मे गर्मी को पसन्द करती हैं। इसी-प्रकार **सिकेल** भी ऊष्णता-प्रधान रोगी है, ठड को पसन्द करता है, परन्तु दर्द वाले स्थान पर गर्मी चाहता है। **कैम्फर** का रोगी भी दर्द की हालत मे कमरा बन्द चाहता है, परन्तु दर्द हटते ही कपडे उतार फेंकता है और कमरे के दरवाजे तथा खिडकिया खोल देना चाहता है। रोगी का ऊष्णता-प्रधान होने के कारण ठड चाहना 'व्यापक' (General) लक्षण है, और दर्द के स्थान पर गर्मी चाहना 'एकागी' (Particular) लक्षण है।

एसक्यूलस मे गुदा के लक्षणो की प्रधानता होती है, **पल्सेटिला** मे पेट के लक्षणो की प्रधानती होती है, **पल्सेटिला** की स्त्री मोटी होती है, **सिकेल** की स्त्री पतली-दुवली, झुरियो वाली होती है। **सिकेल** का रोगी ठड चाहता है, **कैम्फर** का रोगी भी ठड चाहता है, परन्तु भेद यह है कि **कैम्फर** का रोगी जव कपडे उतार फेंकता है तव उसे फिर ठड लगने लगती है, और जव कपडे से अपने को ढक लेता है तव एकदम गर्मी का दौर होने लगता है।

(४) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

1 ठडी हवा मे सास लेते समय हवा का नाक मे लगना (जुकाम)—डा० नैश कहते है कि ऐसे जुकाम मे जो **आर्सनिक** के लक्षणो जैसा हो, जिसमे पतला, पनीला, जलनवाला जुकाम हो और ठडी हवा मे सास लेने से जो नाक मे लगता हो (Sensitive to inhaled cold air)—ऐसे जुकाम को यह ठीक करतीहै।

11 प्रदर मे जव कमर कमजोर अनुभव हो और चलने मे टागें थकी-थकी महसूस हो, थोडी दूर भी चलना भारी प्रतीत हो, ऐसे प्रदर को यह ठीक करतीहै।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३० (औषधि 'गर्म'—Hot—है)

इथूजा (AETHUSA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) बच्चे का दूध पीकर उल्टी कर के झट सो जाना	लक्षणो मे कमी (Better) *खुली हवा मे रोग मे कमी *मिलनेवालों के बीच कमी
(२) कब्ज के साथ सब्ज और पीले दस्त	
(३) उक्त रोग की चिकित्सा न होने पर रोग का हैजे मे वदल जाना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *प्रात. ३ से ४ के वीच वृद्धि *सायकाल रोग मे वृद्धि *गर्मी, या ग्रीष्म ऋतु मे वृद्धि *दूध पीने के वाद वृद्धि *कय, दस्त और ऐंठन के वाद लक्षणों मे वृद्धि *बच्चे के दात निकलते समय *वार-वार खाने से रोग का बढ़ना
(४) परीक्षा के समय की थकावट, ध्यान केन्द्रित न कर सकना	
(५) ऐंठन (Convulsions)	
(६) अन्य लक्षण—ज्वर मे गर्मी लगने पर भी प्यास नहीं होती, गर्दन के चारो तरफ ग्रन्थियों की माला-सी उभर आती है, तेज कय, तेज अकडन, तेज दर्द, सब मे तेजी	

(१) **बच्चे का दूध पीकर उल्टी करके एकदम सो जाना**—यह औषधि बच्चो की मित्र है और उनके अनेक रोगो मे उनकी सहायता करती है। बच्चा

ज्यो ही दूध पीता है, पीकर झट-से सब एकदम उलटी कर देता है। अगर कुछ देर वह दूध को पेट मे रख भी लेता है, तो कुछ देर वाद फटे हुए दूध की तरह, दही के समान जमे हुए थक्के की उलटी कर देता है, इसका कुछ नीला-सा रग होता है। उल्टी करने मे उसे जो कमज़ोरी और थकावट (Weakness and exhaustion) हो जाती है, उससे वह एक तरह की निद्रा मे सो जाता है, परन्तु थोडी देर वाद जाग कर भूख के मारे रोने-चिल्लाने लगता है। मा उसे फिर दूध पिला देती है, वह फिर पहले की तरह उल्टी कर देता है, और अगर कुछ देर दूध पेट मे रहा तो दही की-सी पहले जैसी उल्टी कर देता है। ऐसा प्राय दो कारणो से होता है—या तो वच्चे के पेट मे कुछ खरावी होती है, या जव उसके दात निकल रहे होते हैं तव ऐसा होता है। वच्चे का दूध को न पचा सकना इथूज़ा का लक्षण है।

दूध हजम न कर सकने मे इथूज़ा तथा कैल्केरिया कार्ब मे तुलना—इथूज़ा की तरह **कैल्केरिया कार्ब** का वच्चा भी दूध पीकर जमे हुए दही की तरह उल्टी कर देता है, परन्तु इनमे भेद यह है कि इथूज़ा का बच्चा तो उल्टी करने के वाद फिर दूध पीने लगता है, **कैल्केरिया** का वच्चा उल्टी करने के वाद दूध पीना नही चाहता। इसके अतिरिक्त **कैल्केरिया** के वच्चे के सिर पर पसीना आता है, उसके शरीर तथा वमन से खट्टी वू आती है, इथूज़ा मे ऐसा नही होता।

(२) **कय के साथ कभी-कभी सब्ज और पीले रग के दस्त आते हैं**—ग्रीष्म-ऋतु मे प्राय ऐसी कय के साथ कभी-कभी सब्ज़ और पीले रग के दस्त आते हैं। यह जरुरी नही कि दस्त आयें ही, नही भी आते, परन्तु यह देखा गया है कि बच्चो को कय के साथ सब्ज़ अथवा पीले रग के दस्त भी आ जाते है।

(३) **उक्त रोग की चिकित्सा न होने पर हैज़े के-से लक्षण आ जाते हैं**—जब वच्चे को दूध पीते ही उल्टी आ जाय, उल्टी आने पर थक कर वह निढाल पड कर निदासा हो जाय, और उठने पर फिर दूध के लिये रोने लगे, सब्ज़ पीले रग के दस्त आने लगें, तव उसकी चिकित्सा न करने से उसे हैज़े की-सी शिकायत हो जाती है, वच्चा मरणासन्न हो जाता है। इन शिकायतो मे इथूज़ा वच्चे का परम मित्र है।

(४) **परीक्षा के समय की थकावट, ध्यान केन्द्रित न कर सकना** (Examination funk)—डा० क्लार्क ने इथूज़ा के लक्षणो को अपनी डिक्शनरी मे लिखते हुए लिखा है "वह कुछ पढ नही सकता, मानसिक-कार्य नहीं कर सकता, किसी विचार पर जम नही सकता, मस्तिष्क साफ नही रहता।" प्राय विद्यार्थी परीक्षा के समय ऐसी मानसिक दशा अनुभव करते हैं जव मन मे और-कुछ समा नही सकता, कितना भी विद्यार्थी प्रयत्न करे मन कुछ ग्रहण नही कर सकता। उस समय मन की इस थकावट को इथूज़ा दूर कर देता है। डा०

क्लार्क परीक्षा के समय विद्यार्थियो को जो ध्यान केन्द्रित न कर सकने की शिकायत किया करते थे यही दिया करते थे।

इथूजा, अर्जेन्टम नाइट्रिकम तथा जेलसीमियम की ध्यान केन्द्रित न कर सकने मे तुलना—मन की इसप्रकार की थकावट मे तीन दवाओ की तरफ ध्यान जाता है। **इथूजा** मे तो पढते-पढते दिमाग थक जाता है, आगे काम नही करता, जैसा परीक्षा से पहले हुआ करता है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मे घवराहट, चिन्ता, परीक्षा मे फेल हो जाने की आशका उत्पन्न हो जाती है। साधारण-से कारण के उपस्थित होने पर दस्त आ जाता है, अपनी असमर्थता की पूर्व-कल्पना के भय (Anticipatory fear) से घवराहट होने लगती है। **जेलसीमियम** मे भी **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** का यह लक्षण रहता है। **इथूजा** मस्तिष्क की थकावट को सूचित करता है, मस्तिष्क की काम करने मे असमर्थता का द्योतक है, **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मानसिक तनाव, घवराहट, आशका का द्योतक है। इसके अतिरिक्त **इथूजा** मे पेट की शिकायत होती है, उल्टी आती है, **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मे पेट फूल जाता है, उसमे हवा भरी होती है, हवा भरी होने के कारण बदहज़मी होती है, ऐसा लगता है कि पेट फूट जायगा। **इथूजा** तथा **अर्जेन्टम** दोनो मे दस्त आ जाते हैं, हरा आव आता है। **अर्जेन्टम** मीठे का शौकीन होता है, परन्तु मीठा उसे माफिक नही आता, मीठे से उसकी शिकायतें वढ जाती हैं।

डा० क्लार्क इसे मूर्खों की औषधि (Medicine for fools) कहते हैं। वे लिखते हैं कि एक विद्यार्थी जो परीक्षा मे बैठ रहा था शिकयत करने लगा कि उसका ध्यान विल्कुल नही लगता, मन टिकने मे असमर्थ हो गया है। उसे **इथूजा** दिया गया और वह परीक्षा मे पूर्णतया सफल रहा। अपने मन की असमर्थता के कारण उसने पढना-लिखना ही छोड दिया था, परन्तु **इथूजा** ने उसकी मानसिक दशा को बदल दिया। जिन विद्यार्थियो का ध्यान पढने मे नही लगता उनका **इथूजा** परम मित्र है। डा० क्लार्क अपने पाउडरो को 'फूल पिल्स' कहा करते थे। मस्तिष्क की थकावट और परीक्षा-भय को दूर करने के लिये **पिकरिक एसिड** भी उपयोगी है।

(५) **ऐंठन मे**—वच्चो की ऐंठन मे भी **इथजा** वहुत लाभ पहुँचाता है। ऐंठन के समय वच्चा मुट्ठी वाध लेता है। उसकी आखें नीचे की तरफ फिरी रहती हैं, चेहरा लाल हो जाता है, पुतलिया फैल जाती हैं, मुह से झाग निकलती है।

(६) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i डा० एलन लिखते हैं कि इस औषधि का विशेष लक्षण यह है कि ज्वर मे प्यास विल्कुल नही होती यद्यपि गर्मी पर्याप्त लगती है।

ii गर्दन के चारोतरफ ग्रथियो (Glands) की माला-सी उभर आती है।

iii तेज़ कय, तेज़ अकडन, तेज़ दर्द—सव शिकायतो मे तेज़ी (Violence)

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—है)

एगैरिकस (AGARICUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मासपेशियो, अगो का फडकना	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) मांसपेशियों का थरथराना, सोने पर थरथराना बन्द हो जाना	*शारीरिक-श्रम से लक्षणों में कमी
(३) शरीर की त्वचा पर चींटियो के चलने-जैसा अनुभव होना	*धीरे-धीरे चलने-फिरने से लक्षणो मे कमी
(४) वृद्धावस्था या अति-मैथुन से शारीरिक शिथिलता आजाना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) शीत से त्वचा का सूज जाना	*सर्दी से, ठंडी हवा से वृद्धि
(६) चुम्बन की अति तीव्र-इच्छा	*मानसिक-श्रम से वृद्धि
(७) मेरु-दण्ड के रोग	*मैथुन से लक्षणों मे वृद्धि
(८) जरायु का बाहर निकल पडने का-सा अनुभव होना	*भोजन के बाद वृद्धि
	*आधी-तूफ़ान से पहले वृद्धि
(९) रोग के लक्षणो का तिरछा-भाव	*मासिक-धर्म के दिनों मे लक्षणों में वृद्धि
(१०) क्षय-रोग की प्रारभिक अवस्था	

(१) **मासपेशियो तथा अगों का फडकना** (Jerking and Twitching)—मासपेशियो तथा अगो का फडकना इस औषधि का मुख्य लक्षण है। मासपेशिया फडकती है, आख फडकती है, अगो मे कपन होता है। यह कपन अगर बढ जाय, तो ताडव-रोग (Chorea) के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसे कपन की औषधि (Jerky medicine) कहा जाता है।

(२) **मासपेशियों का थरथराना और सोने पर थरथराना बन्द हो जाना**—मास-पेशियो अथवा अगो के फडकने, थरथराने या कपन मे विशेष बात यह होती है कि जब तक रोगी जागता रहता है तभी तक यह कपन जारी रहता है, उसके सोते ही यह कपन बन्द हो जाता है।

(३) **शरीर की त्वचा पर चींटियो के चलने-जैसा अनुभव**—सारे शरीर मे ऐसा अनुभव होता है जैसे शरीर पर चीटिया चल रही हैं। यह अनुभव केवल त्वचा पर ही सीमित नही रहता। त्वचा के भीतर रोगी के मास पर भी चीटियो के चलने-जैसा अनुभव होता है। शरीर का कोई भाग इस प्रकार के अनुभव से बचा नहीं रहता। त्वचा या अन्य भागो पर कभी ठडी, कभी गर्म सूई बेंधने का-सा अनुभव होता है। शरीर के जिस अग मे रुधिर की गति शिथिल होती है—कान, नाक, हाथ, अगुलिया, अगूठे आदि—उनमे चुभन-सी होती है, जलन-सी

होती है। ऐसी चुभन तथा जलन मानो ये भाग ठड से जम-मे गये हो। इस लक्षण के होने पर किसी भी रोग मे यह औषधि लाभ पहुँचाती है क्योकि यह इस औषधि का सर्वांगीण अथवा व्यापक लक्षण है। अगो मे ठडी-सुई की-सी चुभन मे **एगेरिकस** तथा गर्म-सुई की-सी चुभन मे आर्सेनिक औषधि है।

(४) **वृद्धावस्था या अति-मैथुन से शारीरिक-शिथिलता तथा मेरु-दण्ड (Spinal cord) के रोग**—वृद्धावस्था मे मनुष्य के रुधिर की गति धीमी पड जाती है, शरीर मे झुर्रिया पड जाती है, सिर के वाल झडने लगते है। वृद्धावस्था के अतिरिक्त युवक लोग भी जब अति-मैथुन करने लगते हैं तब उनका स्वास्थ्य भी गिर जाता है, वे निस्तेज हो जाते हैं। वृद्धावस्था मे रक्तहीनता के कारण और युवावस्था मे अति-मैथुन के कारण या अन्य किसी कारण से रोगी मे मेरु-दण्ड (Spinal cord) सबधी उपद्रव होने लगते हैं। ये उपद्रव हैं—मास-पेशियो का फडकना, कमर-दर्द, पीठ का कडा पड जाना, मेरु-दण्ड का अकड जाना आदि। पैरो मे चलने की जान नही रहती, चक्कर आता है, सिर भारी हो जाता है, उत्साह जाता रहता है, काम करने को जी नही करता। युवा व्यक्तियो मे जब अति-मैथुन से उक्त-लक्षण प्रकट होने लगते है, तब **एगेरिकस** की कुछ बूदें मस्तिष्क के स्नायुओ को शान्त कर देती है। स्नायु-प्रधान स्त्रिया मैथुन के उपरान्त हिस्टीरिया-ग्रस्त हो जाती है, वेहोश हो जाती हैं। उनके लिये भी यह औषधि लाभकारी है। यह स्मरण रखना चाहिये कि केवल वुढापा आ जाने से **एगेरिकस** नही दिया जाता। होम्योपैथी मे कोई औषधि केवल एक लक्षण पर नही दी जाती, लक्षण-समष्टि देखकर ही औषधि का निर्णय किया जाता है।

(५) **शीत से त्वचा का सूज जाना (Chilblain)**—वरफ से जव त्वचा सूज जाती है, उसमे लाल दाग पड जाते हैं, इस कारण त्वचा मे वेहद खुजली तथा जलन होती है—ऐसी अवस्था मे **एगेरिकस** अच्छा काम करती है।

(६) **चुम्बन की अति-तीव्र इच्छा**—स्त्री तथा पुरुष मे जव वैषयिक इच्छा तीव्र हो जाती है, जिस-किसी को चूमने की इच्छा रहती है, आलिंगन की प्रवल इच्छा, मैथुन के वाद अत्यन्त शक्तिहीनता, मैथुन के वाद मेरु-दण्ड के रोगो की प्रवलता, मेरु-दण्ड मे जलन, अगो की शिथिलता—ऐसी हालत मे यह औषधि उपयुक्त है।

(७) **मेरु-दण्ड (Spinal cord) के रोग**—इस औषधि मे मेरु-दण्ड के अनेक रोग आ जाते हैं। उदाहरणार्थ, सारे मेरु-दण्ड का कडा पड जाना, ऐसा अनुभव होना कि अगर मैं झुकूगा तो पीठ टूट जायगी, मेरु-दण्ड मे जलन, पीठ की मासपेशियो का थिरथिराना, मेरु-दण्ड मे थिरथिराहट, मेरु-दण्ड मे भिन्न-भिन्न प्रकार की पीडा, पीठ मे दर्द जो कभी ऊपर कभी नीचे को जाता है। स्त्रियो मे कमर के नीचे दर्द होता है। अगो का फडकना, थिरथिराना आदि मेरु-दण्ड के रोग के ही लक्षण हैं।

(८) **जरायु का बाहर निकल पड़ने का-सा अनुभव** (Prolapsus-uteri)—प्राय स्त्रियो को शिकायत हुआ करती है जिसमे वे अनुभव करती हैं कि जरायु बाहर निकल-सा पड रहा है। वे टागे सिकोड कर बैठती हैं। इस लक्षण को सुनते ही होम्योपैथ **सीपिया, पल्सेटिला, लिलियम** या **म्यूरेक्स** देने की सोचते हैं, परन्तु डा० कैन्ट का कहना है कि अगर उक्त लक्षण मे मेरु-दण्ड के लक्षण मौजूद हो, तो **एगैरिकस** देना चाहिये। अगर जरायु के बाहर निकल पडने का लक्षण वृद्धा स्त्री मे पाया जाय, और उसके साथ यह भी पता चले कि उसकी गर्दन कापती है, सोने पर उसका कपन बन्द हो जाता है, वह शीत-प्रधान है, यह अनुभव करती है कि उसके शरीर मे गर्म या ठडी सूई बेधने का-सा अनुभव है—अर्थात् जरायु बाहर निकलने के अनुभव के साथ **एगैरिकस** के अन्य लक्षणो की मौजूदगी मे **सीपिया** आदि न देकर इस औषधि को देना चाहिये।

(९) **रोग के लक्षणो का तिरछे भाव से प्रकट होना** (Diagonal symptoms)—इस औषधि मे विलक्षण (Peculiar) लक्षण यह है कि रोग के लक्षण एक ही समय मे तिरछे भाव से प्रकट होते हैं। उदाहरणार्थ, गठिये का दर्द दायें हाथ मे और बायें पैर मे एक ही समय मे प्रकट होगा, या बायें हाथ और दाये पैर मे। इसी प्रकार अन्य कोई रोग भी तिरछे भाव से प्रकट हो सकता है—रोग एक ही होना चाहिये।

(१०) **क्षय-रोग की प्रारभिक अवस्था** (Incipient pthisis)—डा० हैरिंग लिखते हैं कि इस औषधि के रोगी को छाती मे बोझ अनुभव होता है। खासी के दौर (Convulsive cough) पडते हैं और घबराहट भरा पसीना आता है। हर बार खासने के बाद तेज छीकें आती है, खासी और छीकें इस प्रकार लगातार आती हैं कि कह नही सकते कि रोगी खास रहा है या छीके मार रहा है। डा० केन्ट लिखते हैं कि **एगैरिकस** छाती के रोगो के लिये महान् औषधि है। इससे क्षय-रोग भी ठीक हुआ है। रोगी को छाती का कष्ट होता है, खासी-जुकाम, रात को पसीने आते हैं, स्नायु-सबधी रोग रोगी की पृष्ठ-भूमि मे होते हैं। तेज़ खासी आती है और हर बार खासी के बाद छीकें आती हैं। खासी के दौरो के साथ शाम को पसीने आते हैं, नब्ज़ तेज चलती है, खासी मे पस-सरीखा कफ निकलता है, रोगी की प्रात काल तबीयत गिरी-गिरी होती है। इन लक्षणो के होने पर यह सोचना असगत नही है कि यह क्षय-रोग की प्रारम्भिक अवस्था है। इस हालत मे यह औषधि लाभ करती है।

(११) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

1 रीढ की हड्डी के रोग के विशेष रूप मे आक्रान्त होने के कारण रोगी चलने-फिरने मे बार-बार ठोकर खाकर गिर पडता है, हाथ से बर्तन बार-बार गिर पडता है। बर्तन का हाथ से बार-बार गिर पडना **एपिस** मे भी पाया जाता है,

परन्तु डा० केन्ट लिखते हैं कि दोनों औषधियों में भेद यह है कि एगैरिकस तो आग के पास बैठे रहना चाहता है, एपिस आग के सेक से परे भागता है।

ii रीढ की हड्डी को दबाने से हंसी आना इसका अद्भुत (Peculiar) लक्षण है।

iii चलते समय पैर की एडी मे असहनीय पीड़ा होती है, जैसे किसी ने काट खाया हो।

iv बोलना देर मे सीखने पर नेट्रम म्यूर दिया जाता है, चलना देर मे सीखने पर कैल्केरिया कार्ब दिया जाता है, परन्तु बोलना और चलना दोनों देर मे सीखने पर एगैरिकस दिया जाता है।

v. इसका एक अद्भुत लक्षण यह है कि पेशाब करते हुए ऐसा लगता है कि मूत्र ठडा है, जबकि मूत्र बिन्दु-बिन्दु निकल रहा होता है तब रोगी प्रत्येक ठडे मूत्र-बिन्दु को गिन सकता है।

vi गोनोरिया के पुराने रोगियो मे जिनके मूत्राशय मे मूत्र करते हुए देर तक खुजलाहटभरी सुरसुराहट बनी रहती है, और मूत्र का अन्तिम बूंद निकलने मे बहुत देर लगती है—इस लक्षण मे दो ही औषधिया हैं—पैट्रोलियम तथा एगैरिकस।

vii रोगी घडी के लटकन की तरह आखें इधर-उधर घुमाता है। पढ नही सकता। अक्षर सामने से हटते जाते हैं। आख के सामने काली मक्खियां, काले दाग, जाला दिखाई पडता है।

(१२) शक्ति तथा प्रकृति—३, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

एगनस कैस्टस (AGNUS CASTUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) नपुंसकता—जननेन्द्रिय के दुरुपयोग से उसमे शिथिलता आना	लक्षणो मे कमी (Better) × × ×
(२) जवानी मे ही बुढ़ापा-सा लगना	
(३) सफेद प्रदर (Leucorrhea)	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) प्रसूता को दूध न आना	*विषय-भोग से वृद्धि

(१) नपुंसकता—जननेन्द्रिय के दुरुपयोग से उसमे शिथिलता आना—इस युग मे नव-युवक तथा नव-युवतिया जिस प्रकार बालपन मे ही कुप्रवृत्तियो के शिकार हो जाते हैं, हस्त-मैथुन, गुदा-मैथुन, पशु-मैथुन आदि घृणित आदतो को, जिनका नाम लेते भी शर्म आती है, सीख जाते हैं, उनके परिणामस्वरूप विवाहो-

परान्त वे अपने को नपुसक पाते हैं। विवाहित-व्यक्ति भी अगर इन्द्रिय-वासना मे डूब जाते हैं, तो वे भी कुछ देर बाद नपुसकता के शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोगो का शरीर क्षीण होने लगता है, स्मरण-शक्ति साथ नही देती, किसी बात को एक बार सुन कर समझ नही पाते। अगर वे विद्यार्थी हैं, तो पढने मे जी नही लगता, ज़िन्दगी से बेज़ार हो जाते हैं, पढना-लिखना ही छोड बैठते हैं। ऐसो के लिये यह औषधि लाभप्रद है। स्त्री मे भी ऐसे कुकर्मो से भोग की इच्छा बिल्कुल मारी जाती है—इसे भी यह औषधि दूर करती है।

डा० हौलकौम्ब ने एक स्त्री के विषय मे लिखा है कि उसकी भोग-शक्ति बिल्कुल नष्ट हो गई थी जिसके लिये वह परेशान थी। उसे १x की १० बूद एक मास तक तीन बार दी गई, वह बिल्कुल स्वस्थ हो गई और उसके शरीर पर विवाह से पहले की-सी रगत आ गई।

(नपुंसकता को दूर करने की कुछ औषधिया)

एगनस कॅस्टस—इसमे भोग की इच्छा ही मारी जाती है। **एगनस** के बाद **कॅलेडियम** और **सिलेनियम** लाभ पहुँचाते हैं।

कॅलेडियम—इसमे विषय-भोग की इच्छा रहती है, इन्द्रिय मे शक्ति नही रहती।

कोनायम तथा फॉसफ़ोरस—इनमे इन्द्रिय-दमन के कारण नपुसकता आ जाती है। स्त्री मे भोग-इच्छा न रहने पर **ओनोसमोडियम** लाभप्रद है।

लाइकोपोडियम तथा सलफ़र—इनमे जननेन्द्रिय शीतल, शिथिल तथा छोटी पड जाती है। **योहिमबीनम** भी नपुसकता को दूर करता है।

थूजा—इसमे गोनोरिया के कारण नपुसकता आ जाती है।

(२) **जवानी मे ही बुढ़ापा-सा लगना**—वीर्य-क्षय तथा जननेन्द्रिय-सबधी कुकर्मों से जवानी मे ही बूढ़ा-सा लगने लगना, जीवन से हताश तथा निराश हो जाना, आत्म-ग्लानि, आत्म-हत्या का विचार, स्मृति का नाश आदि लक्षणो को यह औषधि दूर करती है। मनुष्य इतना भुलक्कड हो जाता है कि दुकान पर सौदा खरीद कर वही भूल आता है, परन्तु यह नही समझना चाहिये कि जो व्यक्ति इस प्रकार सौदा भूल आता है वह इसी रोग का शिकार है। यह तो दृष्टात के तौर पर एक लक्षण का उदाहरण है। कहने का अभिप्राय इतना ही है कि वीर्य-क्षय के उपसर्गों में यह औषधि प्रधान औषधि है।

(३) **सफ़ेद प्रदर**—स्त्रियो मे प्रदर अनेक कारणों से होता है, परन्तु जब अधिक विषय-भोग से योनि शिथिल हो जाय, तब अण्ड के समान सफेद प्रदर की शिकायत हो जाती है। इसके सूखने पर कपडे पर पीला दाग पड जाता है।

(४) **प्रसूता को दूध न आना**—जब प्रसव के बाद प्रसूता को दूध नही उतरता तब इस औषधि से दूध आने लगता है, कम उतरता हो तो बढ जाता है।

(५) **शक्ति**—१, ६, ३०, २००

एलेन्थस ग्लैंडुलोसा (AILANTHUS GLANDULOSA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) स्कारलेटीना सरीखे गले के रोगों मे तथा दाने न उभरने के रोगों मे	लक्षणों में कमी (Better) *गर्म पेय लेने पर रोग में कमी
(२) मीजल्स (छोटी चेचक) या डिफ्थीरिया मे	लक्षणों मे वृद्धि (Worse) *दाने न उभरने पर रोग की वृद्धि
(३) टासिल की अन्य कुछ औषधियां	

(१) स्कारलेटीना सरीखे गले के रोगों में तथा दाने न उभरने की बीमारियों मे—स्कारलेटीना फैलने वाला रोग है, संक्रामक रोग। स्कारलेटीना मे नारंगी के रंग के जैसे दाने त्वचा पर उभर आते हैं, ज्वर भी होता है जो बहुत अधिक भी हो जाता है। रोगी तन्द्रा मे रहता है, डिलीरियम भी हो जाता है। गला सूज जाता है, और अन्दर से काला और नीला दीखता है। टांसिल बहुत बढ जाते हैं, उनमे से बदबूदार पतला रस निकलता है।

स्कारलेट-ज्वर तीन तरह का होता है। किसी मौसम में यह बहुत हल्का होता है। दाने आसानी से निकल आते हैं, ज्वर भी अधिक नहीं होता। अच्छी देख-भाल करने से, गर्म कमरे मे रोगी को रखने से और बिना औषधि के यह स्वयं अपना समय निकाल कर ठीक हो जाता है। त्वचा लाल, कोमल और चमकदार होती है। रोग का यह प्रकार भयंकर रूप धारण नहीं करता। किसी दूसरी मौसम मे पहली प्रकार का स्कारलेट-ज्वर न होकर अधिक कष्टकर रूप धारण करता है। इसमे कष्ट का केन्द्र गला होता है। गला अन्दर से बहुत सूज जाता है, चमकदार लाली लिये हुए, दर्द करता हुआ। दाने बहुत कम निकलते हैं, मेरु-दण्ड के लक्षण प्रकट होने लगते हैं, कमर और गर्दन मे दर्द होता है। फिर, तीसरा प्रकार ऐसा है जिसमे गला भीतर से भयंकर रूप मे सूज जाता है, रोग द्वारा रुधिर को विषाक्त कर देने के लक्षण प्रकट होने लगते हैं, टांसिल सूज जाते हैं, त्वचा फूल जाती है, दुर्गन्ध आने लगती है और दाने बहुत थोड़े या न के बराबर होते हैं। अगर इस तीसरे प्रकार के स्कारलेट-ज्वर का ठीक उपचार न हो सके तो रोगी मर जाता है। यह रोग की अत्यन्त भयंकर अवस्था है। रोग के प्रथम प्रकार को 'Scarlatina simplex' कहते है, क्योंकि यह साधारण है, दूसरे प्रकार को 'Scarlatina anginosa' कहते है, क्योंकि यह विशेषकर गले पर आक्रमण करता है, तीसरे प्रकार को 'Scarlatina maligna' कहते हैं, क्योंकि यह अत्यन्त भयकर है। एक ही परिवार मे एक बच्चे को प्रथम, दूसरे को द्वितीय और तीसरे को तृतीय प्रकार का यह ज्वर हो सकता है। अगर

त्वचा पर स्कारलेटीना के दाने न दिखते हो, तो त्वचा को अगुली से दबा कर देखना चाहिये। अगर दबाने के बाद अगुली हटाने पर त्वचा सफेद बनी रहे, और रुधिर उस स्थान को भरने मे बहुत देर लगाये, तो समझना चाहिये कि यह तीसरे प्रकार का भयकर स्कारलेटीना है, और इसमे **एलेन्थस** का प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है। त्वचा पर दाने न उभरना, गले मे भयकर रूप से टासिल का सूज जाना, उसका रग नीला पड जाना, रोग का डिफथीरिया जैसा रूप धारण कर लेना, रोगी का अत्यन्त शिथिल हो जाना—ये लक्षण हैं इस औषधि के, भले ही यह स्कारलेटीना हो या कुछ और हो।

रोगी के पास यह सोच कर नही जाना चाहिये कि उसे स्कारलेटीना है। रोग के लक्षणो को देखना चाहिये। हो सकता है कि रोगी के दाने **एकोनाइट** के हो, परन्तु **एकोनाइट** मे इतना अधिक सडना नही होता इसलिये हम सोच सकते हैं कि ये दाने **बैलेडोना** के हो, परन्तु **बैलेडोना** मे दाने चमकदार और चिकने होते है, इसलिये हम सोच सकते हैं कि ये दाने **एलेन्थस** के हो। **एलेन्थस** का प्रयोग उस हालत मे किया जाता है जब दाने न उभर कर गले मे भयकर टासिल, मस्तिष्क मे डिलीरियम, अत्यधिक ज्वर आदि उत्पन्न कर इस रोग की तीसरी अवस्था को उत्पन्न कर देते हैं।

(२) **मीज़ल्स (छोटी चेचक) या डिफ्थीरिया में**—डा० ह्यूजेज़ का कहना है कि छोटी चेचक मे जब रोग विगड जाता है, दाने निकलते नहीं या निकल कर एकदम दब जाते हैं या नीले-नीले रग के होते हैं, तब **एलेन्थस** अच्छा काम करता है। डिफथीरिया तथा अन्य गला पडने की बीमारियो मे भी इसका उपयोग है। मुख्य तौर पर उन बीमारियो मे जिनमे दाने निकलने मे देर लगे, दाने न निकलें, निकल कर दब जायें, रोगी तन्द्रा मे पडा रहे, डिलीरियम मे आ जाय, बेचैन हो, दाने दब जाने के कारण लुढकता-पुढकता चले, चकराये, जी कच्चा हो, उल्टी करे—इन सब लक्षणो मे इस औषधि पर ध्यान देना उचित है।

(३) **एलेन्थस के सदृश गले पर आक्रमण पर इससे अन्य कुछ औषधियों की तुलना**—जैसे **एलेन्थस** का गले पर आक्रमण होता है वैसे अन्य भी कुछ औषधिया हैं जिनका इस प्रकरण मे तुलनात्मक अध्ययन करना उपयोगी होगा। वे हैं —

(टासिल दूर करने की मुख्य-मुख्य औषधिया)

एपिस—इस मे गले की बीमारी मे बहुत दर्द नही होता, न ही अधिक असुविधा होती है। इसका प्रभाव दायी तरफ होता है और गले के दायी तरफ के टासिलो मे भूरे रग के जख्म दिखाई देते हैं जिनमे से गदला रस निकलता है। **एपिस** का विशेष लक्षण उसका प्यासहीन होना है। पेशाब दर्द से आता है, थोडा आता है, गला घुटता-सा अनुभव होता है, बुखार तेज़ होता है।

लाइकोपोडियम—[illegible] टाभिज [illegible] जाय तब भी [illegible] कि लाइकोपोडियम का [illegible]

सेकेलिस—[illegible] लाइकोपोडियम [illegible] तरफ से [illegible] बढ जाते है। [illegible]

कारबोलिक एसिड—[illegible] दर्द नही होता, परन्तु [illegible]

क्रोटेलस—[illegible] गैंग्रीन हो जाता है, [illegible]

नाइट्रिक एसिड—[illegible]

फाइटोलेक्का—[illegible] मे काला [illegible] के भी गले मे [illegible]

(४) शक्ति तथा प्रकृति—[illegible], ३,६,३० ([illegible]—Chilly—[illegible])

एलियम सीपा—प्याज, (ALLIUM SEPA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) शरीर के अगो की आन्तरिक-झिल्ली का नवीन प्रदाह—जुकाम, नाक और आख मे से चिरमिराता पानी बहना	[illegible] मे कमी (Better) *ठंडे कमरे मे रोग मे कमी *खुली हवा मे (पल्स की तरह) रोग मे कमी
(२) जुकाम अथवा बन्द मासिक के कारण सिर-दर्द	
(३) ठंड से पाव भीगने, कच्ची साग-सब्जी-सलाद खाने से पेट-दर्द	
(४) कान का दर्द	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *बन्द, गरम कमरे मे वृद्धि *मुख्य तौर पर सायंकाल रोग में वृद्धि
(५) लम्बा, डोरे की तरह जानेवाला शियाटिका की तरह का स्नायविक दर्द	
(६) किसी अग के काटने के बाद नसों मे दर्द	

(१) शरीर के अगों की आन्तरिक-झिल्ली का नवीन-प्रदाह (Acute Catarrhal inflammation of mucous membranes or coryza),

जुकाम, नाक और आँख से चिरमिराता पानी वहना—एलियम सीपा प्याज को कहते है। यह हम सव लोगो का अनुमव है कि जव कच्चा प्याज़ काटा जाता है, तव उसके रस के लगने से नाक तथा आख से जुकाम की तरह का पानी वहने लगता है। होम्योपैथी के मत के अनुसार जो औषधि जिन लक्षणो को स्वस्थ मनुष्य मे उत्पन्न करती है वही रोग मे उन लक्षणो के विद्यमान होने पर सूक्ष्म मात्रा मे—शक्तिकृत कर के- —देने मे उन्ही लक्षणो को दूर करती है। **एलियम सीपा** इसका सव को समझ मे आ जाने वाला दृष्टान्त है।

नाक से पतला, और जिस स्थान पर वहे उस पर लगना इसका मुख्य-लक्षण है—इसके जुकाम का मुख्य-लक्षण यह है कि नाक का पानी होठो पर जहाँ वहता है वहा लगता है, जलन पैदा करता है, उस स्थान को लाल वना देता है। इसमे आख से भी पानी निकलता है, परन्तु नाक का पानी लगता है, आख से निकलने वाला पानी गाल पर लगता नही, खाल को छील नही देता। जुकाम मे इसकी **युफ्रेशिया** से तुलना की जाती है। **सीपा** के जुकाम मे मूछ के वाल तक जलन के साथ वहनेवाले नज़ले के पानी मे खाये जाते हैं।

सीपा का जुकाम नाक पर लगता और आँख पर नहीं लगता, युफ्रेशिया का जुकाम नाक पर नहीं लगता आख पर लगता है—सीपा और **युफ्रेशिया** इन दोनो के जुकाम मे आख तथा नाक दोनो से पानी वहता है, परन्तु दोनो मे एक-दूसरे से उल्टी प्रक्रिया होती है। **सीपा** के जुकाम का पानी नाक पर चिरमिराता है, आख का पानी आख को नही चिरमिराता, **युफ्रेशिया** के जुकाम का पानी आख को चिरमिराता है, नाक को नही।

जुकाम वाईं नाक से शुरू होकर दाई तरफ जाता है—**सीपा** का जुकाम वाई नाक की तरफ से शुरु होता है। उस तरफ चिरमिरानेवाला पानी वहता है, नाक भर जाती है, और २४ घटे के भीतर ही यह हालत दायी तरफ भी हो जाती है। ऐसा क्यो होता है—कहा नही जा सकता, परन्तु डा० कैन्ट कहते हैं कि **सीपा** के जुकाम मे ऐसा पाया जाता है।

(२) **जुकाम के कारण सिर-दर्द**—इसकी प्रकृति के विषय मे हमने लिखा है कि इसका रोगी खुली हवा पसन्द करता है, ठड पसन्द करता है, बन्द कमरे मे उसकी शिकायतें वढ जाती हैं, सायकाल भी उसकी शिकायतो मे वृद्धि होती है। इस प्रकृति के कारण जव रोगी को **सीपा** के जुकाम के साथ सिर-दर्द होता है, तव उस सिर-दर्द मे भी रोगी ठडी हवा पसन्द करता है, कमरे के वाहर ठडक मे घूमना चाहता है, और गर्म कमरे मे आते ही उसका सिर-दर्द फिर से शुरू हो जाता है। **युफ्रेशिया** और **पल्सेटिला** मे भी गर्म कमरे मे आने से तकलीफ वढ जाती है, परन्तु **युफ्रेशिया** के जुकाम मे पनीला जुकाम और आख मे चिरमिराहट होती है, **पल्सेटिला** के जुकाम मे पीला, गाढा जुकाम होता है।

मासिक-धर्म शुरु होने पर सिर-दर्द जाता रहता है, बन्द होने पर शुरु हो जाता है—स्त्रियो मे सिर-दर्द का रजोधर्म शुरु होने पर बन्द हो जाना और रजो-धर्म बन्द होने पर सिर-दर्द का शुरु हो जाना **सीपा** का लक्षण है। **लैकेसिस** और **जिकम** मे भी यह लक्षण पाया जाता है। **लैकेसिस** का इस लक्षण के अतिरिक्त मुख्य-लक्षण सोने के बाद तकलीफ का बढ जाना आदि है, और **जिकम** का मुख्य-लक्षण स्नायु-रोग से, मेरु-दण्ड के रोगो से पीडित होना है। वैसे **लैकेसिस** तथा **जिकम मेटैलिकम** मे रजोधर्म शुरु होने पर सिर-दर्द या अन्य दर्द हट जाते हैं। सिर्फ इस एक लक्षण पर औषधि का निर्णय कर देना उचित नही है। होम्योपैथी मे रोगी के अधिक-से-अधिक लक्षणो का औषधि के अधिक-से-अधिक लक्षणो के साथ मिलान करना ही औषधि के चुनने का उचित प्रकार है।

(३) **ठडे पानी से भीगने, अधिक खाने, कच्ची साग-सब्जी-सलाद खाने से पेट-दर्द**—पावो के भीग जाने से कभी-कभी ठड लग जाने पर पेट-दर्द हो जाता है, अधिक खाने से भी पेट-दर्द हो जाता है, खीरा तथा अन्य कच्ची साग-सब्ज़ी खाने से पेट-दर्द हो जाता है। अगर बैठे रहने से यह दर्द बढ और घूमने-फिरने से घटे, तो इस लक्षण मे **सीपा** उत्तम औषधि है। इस दर्द मे बच्चा दोहरा हो जाता है। पेट-दर्द मे प्राय सर्व-साधारण लोग भी कच्चे प्याज़ का इस्तेमाल करते हैं जिससे पेट की हवा शान्त हो जाती है।

(४) **कान का दर्द**—जो लोग घर मे होम्योपैथी की दवाइयो का बक्सा रखते हैं उसमे कान के दर्द के लिये तीन दवाइयो का होना आवश्यक है। वे हैं—**पल्सेटिला, कैमोमिला** तथा **एलियम सीपा**। **पल्सेटिला** तो कर्ण-शूल के लिये प्रसिद्ध दवा है। इसका कान के साथ विशेष सबध है। जब बच्चा दयनीय भाव से कान के दर्द से कराह रहा हो, तो ऐसे कोमल-स्वभाव के बच्चो के कान के दर्द मे **पल्सेटिला** अद्भुत काम करता है। जो बच्चे चिडचिड हो, जो-कुछ उन्हें दिया जाय उसे दे मारें, नर्स के मुह को भी चपतिया दें, उनके लिये कान के दर्द मे **कैमोमिला** उपयुक्त है। अगर **सीपा** के जुकाम की वजह से कान का दर्द हो, तो **एलियम सीपा** इस दर्द को शान्त कर देगा। घरो मे भी प्राय कान के दर्द मे प्याज़ गर्म कर के बाध देते हैं।

(५) **लम्बा, डोरे की तरह जानेवाला शियाटिका आदि की तरह का स्नायविक दर्द**—चेहरे मे, सिर मे, गर्दन मे, छाती मे कभी-कभी एक स्नायु (नस) मे दर्द शुरु हो जाता है, जो डोरे की तरह की लम्बी स्नायु के सारे भाग मे प्रतीत होता है। शरीर के किसी भाग मे भी ऐसा दर्द हो सकता है। **शियाटिका** मे ऐसा दर्द पाया जाता है। बाह मे एक धागे की सीध के तौर पर कभी-कभी दर्द होता है।

(६) **किसी अग के काटने के बाद नसों मे दर्द** (Traumatic neuritis)—अगर हाथ, पाव या शरीर का कोई अग कारण-विशेष से काट देना

पडे, तो कभी-कभी किसी नस मे भयकर शूल होता है, असहनीय वेदना। उसे यह शान्त कर देता है।

(७) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

i अगर रोगी को कच्चा प्याज़ खाने की तीव्र इच्छा हो, दूसरा कोई पौष्टिक आहार न ले सके, तो यह भी इसका एक लक्षण है।

ii ऐसी खासी जिसमे रोगी खासते-खासते गला पकड लेता है—महसूस होता है कि गला अन्दर से पका पडा (Catarrhal laryngitis) है।

iii जूते की या अन्य किसी रगड से पैरो मे, खासकर पैर की एडी मे स्पर्श असहिष्णुता (Soreness) का अनुभव करना।

iv **सीपा** और **एकोनाइट** मे भेद करना आवश्यक है। **सीपा** का स्थान **एकोनाइट** नही ले सकता। **एकोनाइट** मे बच्चा सूकी ठड मे बाहर गया था, और ठड लगने पर मध्य-रात्रि मे ही बुखार और खासी के कारण उठ बैठता है और गले (Larynx—श्वासनाली के ऊपर के हिस्से) को पकडता है, **सीपा** मे सूकी ठड लगने का प्रश्न नही होता, उसमे जुकाम प्रधान होता है, किन्तु उसमे भी बच्चा खासता-खासता गले को इसलिये पकडता है क्योकि वह पका-सा अनुभव होता है, दर्द करता है।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—यह **एकोनाइट** की तरह थोडी देर काम करने वाली 'स्वल्प-कालिक' (Short-acting) औषधि है। मूल अर्क, ३, ६, ३०, (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

ऐलो—घी-क्वार, (ALOE)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) खाने या पीने के तुरत बाद शौच का वेग धारण न कर सकना
(२) गुदा-प्रदेश मे बोझ अनुभव करने के कारण उधर ध्यान अटके रहना
(३) अपान-वायु या मूत्र के साथ शौच निकल पडना
(४) कठिन-मल का स्वय निकल पडना
(५) गाढ़ी आव का निकल पड़ना—(Colitis), तथा बवासीर
(६) डिसेन्ट्री मे पेट मे गड़गड़ाहट होना
(७) बीयर पीने से डायरिया होना—डायरिया मे डनहम का अनुभव
(८) यह जिगर के रोग की मुख्य दवा है
(९) एलो, नक्स, सलफर की तुलना

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*खुली हवा से रोग मे कमी
*ठंड पसन्द करना
*पाखाने के बाद अच्छा अनुभव करना

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*खाने-पीने के बाद रोग मे वृद्धि
*गर्मी से रोग मे वृद्धि
*गर्म मौसम मे रोग मे वृद्धि
*नम मौसम मे रोग मे वृद्धि
*प्रात काल २ बजे से ९ बजे तक रोग मे वृद्धि
*सवेरे बिस्तर से उठते ही वृद्धि

(१) **खाना खाने या पानी पीने के तुरत बाद शौच का वेग धारण न कर सकना**—गुदा-प्रदेश मे ऐसी मास-पेशिया होती हैं जिन्हें सकोचक-मासपेशी (Sphincter ani) कहते हैं। सकोचक-मासपेशी का काम मल को बाहर निकलने से रोकना है। ऐलो के रोगी के गुदा की सकोचक-मासपेशी शिथिल पड जाती है और वह खाना खाते ही, पानी पीते ही शौचालय को भागता है। शौच का वेग धारण नही कर सकता। प्राय देखा गया है कि शौचालय तक पहुँचने से पहले ही शौच निकल पडता है और उसके कपडे खराब हो जाते हैं।

(२) **गुदा-प्रदेश मे बोझ अनुभव करने के कारण उधर ध्यान अटके रहना**—क्योंकि गुदा की सकोचक-मासपेशी शिथिल हो जाती है इसलिये उस प्रदेश मे ज़रा-सा भी मल इकट्ठा होने पर रोगी का उधर ही ध्यान अटका रहता है क्योंकि उसे डर रहता है कि कही मल अपने-आप बाहर न निकल पडे।

(३) **अपान-वायु या मूत्र के साथ शौच निकल पड़ना**—रोगी के पेट से जब अपान-वायु का अपसरण होता है, या जब वह पेशाब करने जाता है, तब पेट से हवा निकलने के साथ, या पेशाब करते हुए, शौच भी निकल पडता है। इस सब का कारण गुदा की सकोचक-मासपेशी की शिथिलता है।

(४) **कठिन मल का अनायास, स्वय निकल पडना**—कभी-कभी बच्चे को

पता न रहने पर भी कठिन मल—लेंड के समान—अनायास विस्तर मे निकल पडता है। डा० नैश ने एक बालक का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वे उसकी कब्ज़ के लिये चिकित्सा कर रहे थे, परन्तु अनीमा से भी उमे बहुत थोडा-सा ही मल निकलता था। एक दिन उन्होने देखा कि बच्चे के विस्तर पर शौच का एक लेंड पडा हुआ है। माता से पूछने पर पता चला कि उसे प्राय ऐसा होता है, पता नही कब यह निकल पडता है। उस बच्चे को २०० शक्ति का **ऐलो** दिया गया और उसका कब्ज़ का रोग ठीक हो गया।

(५) **गाढ़ी आव का निकल पडना** (Colitis), **तथा बवासीर**—इसका रोगी जब शौच जाता है, तो कभी-कभी शौच से पहले एक प्यालाभर जेली के समान गाढी आव निकल पडती है। यह आव आत के निचले हिस्से मे जमा होती रहती है और या तो शौच इस आव से लिपटा रहता है, या सिर्फ़ आव ही निकलती है। आव निकलने के बाद गुदा मे जलन होती है।

बवासीर—गुदा-प्रदेश मे भारीपन का अनुभव होना ऐलो के हर रोग मे पाया जाता है। यह भारीपन शौच के एकत्रित हो जाने से हो सकता है, गुदा-प्रदेश मे आव के इकट्ठा हो जाने से हो सकता है, या बवासीर से भी हो सकता है। ऐलो मे बवासीर के मस्से आव से सने रहते हैं क्योकि गुदा-प्रदेश मे एकत्रित आव सकोचक-पेशियो की शिथिलता के कारण बाहर रिसती रहती है, और इन मस्सों को भिगोती रहती है। इस बवासीर मे खुजली बहुत मचती है, इन मस्सो मे स्पर्श-असहिष्णुता (Soreness) होती है, और ठडे पानी से मस्सो को धोने से रोगी को चैन पडता है। ऐलो की प्रकृति मे हमने लिखा ही है कि **ऐलो** का रोगी ठड पसन्द करता है।

बवासीर के सिलसिले मे **ऐलो** की तुलना **ब्रोमियम** और **म्यूरियेटिक एसिड** से की जा सकती है। भेद यह है कि **ब्रोमियम** के मस्सो पर मुख का सेलाइवा लगाने से आराम मिलता है, और **म्यूरियेटिक एसिड** की बवासीर मे ठडे की जगह गरम पानी से आराम मिलता है जब कि **ऐलो** मे ठडे पानी से आराम मिलता है।

(बवासीर के रोग मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

नक्स वोमिका और सलफ़र—प्रात **सलफ़र** ३० और सूर्यास्त के समय सोने से ३ घटे पहले **नक्स** ३० देने से प्राय बवासीर का रोग दूर हो जाता है। मेहनत न करना, बैठे रहना, घी तथा चटपटे पदार्थ खाना—इससे बवासीर हो, तो **नक्स** ज्यादा फायदा करता है, पुरानी बवासीर (खून रहे या न रहे) मे **सलफ़र** ज्यादा फायदा करता है।

एकोनाइट तथा हैमेमेलिस—बवासीर मे केवल खून ही निकलने के लक्षण मे **एकोनाइट** अथवा **हैमेमेलिस** भी दिया जाता है।

एसक्यूलस—प्राय बादी बवासीर मे जहा अशुद्ध-रक्त द्वारा शिरा-शोथ (Veinous congestion) से मस्से बन जायें वहा यह उपयोगी है।

कोलिनसोनिया—एसक्यूलस की तरह इसमे भी ऐसा अनुभव होता है कि गुदा मे तिनके चुभ रहे हैं, परन्तु एसक्यूलस प्राय बादी और कोलिनसोनिया खूनी बवासीर मे उपयोगी है। एसक्यूलस मे कब्ज उतना नही रहता, कोलिनसोनिया मे बवासीर के साथ कब्ज जरूरी है। इसमे कब्ज इतना होता है कि डा० नैश ने एक रोगी का कब्ज़ जो दो सप्ताह मे एक बार पाखाना जाता था इससे दूर कर दिया। इस कब्ज से ही बवासीर हो जाती है।

म्यूरियेटिक एसिड—इसमे मस्से नीले रग के होते हैं, और उनमे इतनी स्पर्श-असहिष्णुता (Sensitiveness to touch) होती है कि बिस्तर की चादर का स्पर्श भी सहन नही होता। गरम पानी मे धोने से आराम मिलता है। ऐलो मे ठडे पानी से धोने से आराम मिलता है।

आर्सनिक—भारी जलन, ऐसा मालूम होना जैसे बवासीर के मस्सो मे से गर्म सूई निकल रही है। मस्से बाहर निकलना और सेक देने से आराम होना।

रेटनहिया—पाखाना फिरने के बाद समूचे मल-द्वार मे असह्य जलन, यहातक कि ढीला पाखाना होने पर भी जलन होती है, मस्से बाहर आ जाते है।

उक्त लक्षणो के साथ औषधि के अन्य लक्षणो को भी मिलाकर देखने का प्रयत्न करना चाहिये, तभी सम-लक्षण वाली दवा सामने आती है। केवल एक ही लक्षण पर भरोसा करना ठीक नही।

(६) **डिसेन्ट्री में पेट मे गडगडाहट का शब्द होना**—अगर डिसेन्ट्री मे यह लक्षण उपस्थित हो कि पेट मे गडगडाहट के साथ ऐसा शब्द हो जैसे बोतल मे से पानी गडगड कर के बह रहा है, तब यह **ऐलो** का विशेष-लक्षण (Characteristic symptom) है। दस्तो के साथ अगर गडगडाहट न रहे, तो **ऐलो** कदाचित् ही व्यवहार मे आता है। **पोडोफाइलम** मे भी गडगडाहट है, परन्तु उसके दस्त मध्याह्न से पूर्व बन्द हो जाते हैं।

(७) **बीयर पीने से डायरिया होना—ऐलो के डायरिया के संबंध मे डा० क्लार्क का अनुभव**—जो लोग बीयर पीने के आदी होते हैं, उन्हें प्राय डायरिया हो जाता है। ऐसे व्यक्तियो को जो जब भी बीयर पीयें, परिणामस्वरूप, डायरिया हो जाय, ऐलो बहुत लाभ पहुँचाता है। कभी-कभी ऐलो लाभ न पहुचाये तो **कैली बाईक्रोम** इस अवस्था मे उपयोगी सिद्ध होता है।

डायरिया मे डा० क्लार्क का एलो के विषय मे अनुभव—एक डायरिया के रोगी को जिसे **कैलकेरिया, नक्स, ब्रायोनिया, आर्सनिक** आदि दिया गया था कोई लाभ न हुआ। उसके लक्षणो को लेते हुए पता चला कि उसे जब दस्त आता था तब पेट मे बडे जोर से गडगडाहट होती थी। दस्त का वेग इतना प्रबल होता था

कि सवेरे ३ वजे गाढ निद्रा से उसे उठ बैठना पडता था। ३ बजे से ९ बजे तक उसे ४–५ पतले, गड़गडाहट के साथ दस्त आ जाते थे। दिन या रात के किसी अन्य समय दस्त नही आते थे। जब दस्त की हाजत होती थी तब उसे एकदम शौचालय मे भागना पडता था। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि वह दस्त को रोक ही नही सकता। गुदा की मासपेशी मे उसे ऐसी शिथिलता अनुभव होती थी कि शौच को रोकना असमव प्रतीत होता था। उसे १० वजे ऐलो २०० की एक मात्रा दी गई और वह ठीक हो गया। औषधि देने का समय वह होता है जब रोग का वेग शान्त हो जाय। क्योकि ९ वजे के बाद उसे दस्त नही आते थे इसलिये १० बजे औषधि दी गई।

इसी प्रकार डा० डनहम ने सिर-दर्द के एक रोगी का वर्णन किया है। केवल सिर-दर्द के लक्षण पर किसी औषधि का निर्वाचन नही किया जा सकता। वह ७० वर्ष का व्यक्ति था। उसे सिर के अग्रभाग मे धीमा-धीमा सिर-दर्द होता रहता था जिससे वह काम-काज के सर्वथा अयोग्य हो गया था। हनीमैन तथा बुनिंघासन ने ऐसे समय मे रोगी की पहले की हिस्ट्री लेने का परामर्श दिया है। जब रोगी का पूर्व-इतिहास पूछा गया, तो पता चला कि ग्रीष्म-ऋतु मे उसे प्राय डायरिया हो जाता है, जो रात को २ बजे शुरु होता है और उसका वेग इतना प्रबल होता है कि उसे दौड कर शौचालय की शरण लेनी पडती है क्योकि उसे डर रहता है कि कही बीच मे ही मल न निकल जाय। इसे भी ऐलो देने से सिर-दर्द ठीक हो गया। डा० डनहम का कहना है कि पुराने रोगो मे उपचार का ठीक तरीका यह है कि रोगी को भिन्न-भिन्न समयो मे जो कठिन रोग हो चुके हो, या भिन्न-भिन्न अगो मे उनका प्रकाश होता रहता हो, भले ही उनका वर्तमान-रोग से कोई सबध न हो, उन सब को सामने रखकर वर्तमान-रोग का उपचार करने से लाभ होता है।

(८) **यह जिगर के रोग की भी मुख्य दवा है**—डा० कैन्ट कहते हैं कि **ऐलो** जिगर के रोग की मुख्य औषधि है। यह औषधि दीर्घ-कालिक या गहराई मे जानेवाली नही है, इतनी गहराई मे जानेवाली जितनी सलफर है, परन्तु लिवर के रोगो मे यह प्राय रोग की तीव्रता को कम कर देती है, परन्तु उसके बाद इसकी अनुपूरक औषधि **सलफर, कैली बाईक्रोम** या **सीपिया** देने से रोग जड-मूल से चला जाता है। **ऐलो, सलफर** की तरह तो गहरी नही है, परन्तु **एकोनाइट** और **बेलेडोना** की तरह विल्कुल अल्पकालिक (Short-acting) भी नही है। यह दोनो के बीच की दवा है।

(९) **ऐलो और नक्स की तुलना**—**नक्स** मे शौच जाने की वार-वार इच्छा होती है क्योकि आते शौच को एक वार मे नही निकाल सकती, ऐलो मे इसके विपरीत आतें शौच को रोक नही सकती इसलिये वह अपने-आप निकल

पडता है। नक्स मे गुदा की सकोचक-मासपेशी उत्तेजित रहती है, इसलिये बार-बार थोडा-थोडा शौच आता है, ऐलो मे यह मासपेशी शिथिल रहती है इस-लिये शौच को रोकना कठिन हो जाता है।

ऐलो और सलफर की तुलना—ऐलो तथा सलफर मे गहरा सबंध है। दोनो मे प्रात बिस्तर से उठते ही शौच के लिये भागना पडता है, दोनो मे पैर जलते हैं, दोनो मे त्वचा मे गर्मी (Heat of the surface of the body) पायी जाती है। इनमे भेद यह है कि ऐलो का रोगी खाना खाने के बाद झट शौचा-लय को दौडता है, सलफर का रोगी सोने से उठते ही शौचालय को दौडता है।

(१०) **यह ऊष्ण-प्रकृति की औषधि है**—गर्मी मे रोग का बढना तथा ठड से घटना इस औषधि का प्रकृतिगत लक्षण है जो इसके सब रोगो मे पाया जाता है। रोगी ठडे कमरे मे रहना चाहता है, गर्मी और गर्म लपटे अनुभव करता है, उसकी त्वचा गर्म और खुश्क होती है, बिस्तर मे रात को कपडा उतार फेंकना चाहता है। सिर गर्म महसूस होता है, वहा ठडक चाहता है।

(११) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

जिस रोग मे औषधि की अधिक मात्रा देने मे औषधि के लक्षण रोग मे घुल-मिल गये हो, समझ न पडे कि ये लक्षण औषधि के हैं या रोग के, वहा ऐलो से उपचार करने से लक्षण स्पष्ट हो जाते है। नक्स और सल्फ़र भी इस दिशा मे उपयुक्त हैं।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—गुदा-प्रदेश के रोग मे ३ शक्ति की कुछ मात्रा देकर इन्तिजार करना चाहिये। अन्य रोगो मे ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

एलूमेन—फिटकरी, (ALUMEN)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मलद्वार मे लकवे-की-सी कमजोरी (२) मूत्राशय मे पक्षाघात की-सी कमज़ोरी	लक्षणो मे कमी (Better) *सिर-दर्द मे गर्मी से कमी
(३) शोथग्रस्त त्वचा, जिह्वा, गुह्य-द्वार, जरायु या फोड़े का कडा पड़ जाने की तरफ़ रुझान (कैंसर) (४) टांसिल, स्तन आदि ग्रन्थियो का कडा पड जाना (५) वृद्ध पुरुषों की खासी	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *ठंड से रोग मे वृद्धि (सिर दर्द को छोड कर क्योंकि सिर-दर्द गर्मी से कम हो जाती है) *निद्रा मे रोग का बढ़ जाना *दाईं तरफ लेटने से रोग मे वृद्धि

(१) **मल-द्वार मे लकवे की-सी कमजोरी (दस्त के लिये भी ज़ोर लगाना, सख्त कब्ज़)**—इस औषधि मे मल-द्वार में ऐसी कमजोरी होती है मानो पक्षाघात (Paralysis), लकवा हो गया हो। गुदा की क्रियाशीलता समाप्त हो जाने के कारण, मल गुदा मे चिपट जाता है। कोलन में से मल निकलता ही नही। जो मल निकलता है वह अत्यन्त कठोर, सूखा हुआ, पत्थर की तरह गाठोवाला होता है। मल सप्ताह में एक वार या दो वार निकलता है।

(२) **मूत्राशय मे लकवे, पक्षाघात की-सी कमज़ोरी**—जैसे मल-द्वार शिथिल पड जाता है, वैसे मूत्राशय मे भी भयकर शिथिलता आ जाती है। मूत्र बडी कठिनाई से निकलता है। पेशाव कर लेने के वाद भी मूत्राशय अधभरा ही रह जाता है। पहले तो मूत्र का प्रवाह शुरू होने मे ही वहुत देर लग जाती है, और जव मूत्र आना प्रारम्भ होता है, तो मूत्र मूत्र-नली से नीचे सीधी एक धार मे गिरता है, वेग से जैसा आगे की तरफ गिरना चाहिये वैसा नही गिरता। इस का कारण मूत्राशय की प्रणाली का पक्षाघात अर्थात् लकवे की-सी अवस्था का होना है जिस से मूत्राशय मूत्र के वेग को आगे की तरफ नही धकेल पाता।

(३) **शोथग्रस्त त्वचा, जिह्वा, गुह्य-द्वार, जरायु या फोडे का कडा पड जाने की तरफ़ रुझान जिससे कैंसर बनता है**—इस औषधि मे त्वचा के कडा पड जाने (Induration) की प्रवृत्ति है। जहा त्वचा में शोथ होगी वहा वह कडी पड जायगी। जिन औषधियो मे भी त्वचा के कडा पड जाने की प्रवृत्ति पायी जाती है, वहा कम-अधिक रूप में कैंसर हो जाया करता है क्योंकि कैंसर का मुख्य आधार कड़ेपन की प्रवृत्ति है। जब ज़ख्म कडा पडने लगे तो समझना चाहिये कि वह कैंसर में परिणत हो सकता है। यह कडापन वढता-वढता कैंसर वन जाता है।

ऐसे ज़ख्म त्वचा पर कही भी हो सकते है, जिह्वा पर, गुह्य-द्वार मे, जरायु में हो सकते हैं। इनका शुरु में ही उपचार **एलूमेन** द्वारा होने मे रोगी कैंसर से वच जाता हैं।

(४) **टासिल, स्तन आदि ग्रन्थियो का कड़ा पड जाना**—जैसे त्वचा में या जिह्वा आदि मे कडापन आ जाता है, वैसे शरीर की ग्रन्थियो मे—टासिल, स्तन आदि मे—भी ये ग्रन्थिया गोली की तरह कडी पड जाती हैं। यह प्रवृत्ति टासिलो में विशेष रूप से पायी जाती है। जिन लोगो की ठड सीधी टासिल में वैठ जाती है, उसे कडा कर देती है, उनके रोग को **एलूमेन** ठीक कर देता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि टासिल के कडा होने की प्रवृत्ति जैसे **एलूमेन** मे पायी जाती है, वैसी ही यह प्रवृत्ति **बैराइटा कार्ब** में भी पायी जाती है। कडे टासिल मे **बैराइटा कार्ब** भी उत्तम औषधि है।

(५) **वृद्ध पुरुषो की खांसी**—जिन वृद्धो की छाती मे कफ वैठ जाता है, कठिनाई से निकलता है, लम्वी-लम्वी तार से निकलता है, उसे यह ठीक कर देता है। यह लक्षण **एन्टिम टार्ट** मे भी है।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० या इस से भी ऊची (यह दीर्घ-कालिक एण्टी-सोरिक दवा है। औषधि 'सर्द'—Chilly— प्रकृति के लिये है)

एलूमिना—एलूमीनियम-धातु, (ALUMINA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) एलूमेन और एलूमिना का संबध	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) एलूमिना के मानसिक लक्षण—मानसिक शिथिलता, जडता, निर्णय-शक्ति का अभाव, हर बात मे देरी का अनुभव	*सायकाल लक्षणो मे कमी *खुली हवा से लक्षणो मे कमी *हल्के चलने-फिरने से कमी *ठडे पानी के स्नान से कमी
(३) चाकू या खून देखकर दूसरे को या अपने को मारने का ख्याल आना	*नम हवा से रोग मे कमी *(इस औषधि के अन्त मे
(४) प्रात काल उठने के बाद उदासी—चित्त-वृत्ति का बदलते रहना	हमने इसका चित्रण करते हुए लिख दिया है कि रोगी
(५) स्नायु-सस्थान के लक्षण, मेरुदण्ड में जलन आदि के कारण शिथिलता	शीत-प्रधान होता हुआ भी ठडी हवा चाहता है।)
(६) मूत्राशय तथा मलाशय की शिथिलता	
(७) बुढापे मे चक्कर आना (Vertigo)	
(८) बच्चा सो कर घबराया उठता है	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(९) नाक तथा गले मे कटार (जुकाम)	*गर्मी मे रोग बढना
(१०) खुजली होने के बाद फोडे-फुन्सी होते हैं, पहले नहीं होते	*गर्म, बन्द कमरे मे रोग मे वृद्धि
(११) बेहद खुश्की, मुख, हाथो पर मकडी के जाले का-सा अनुभव; बाल झडना	*आलू खाने से रोग मे वृद्धि *बातचीत करने से रोग मे वृद्धि
(१२) गायको आदि मे आवाज का बैठना	*खुश्क ऋतु मे रोग मे वृद्धि
(१३) स्त्रियों मे पानी की तरह टागों तक बह जाने वाला प्रदर	*प्रात काल उठने के बाद वृद्धि *बैठे रहने से रोग मे वृद्धि
(१४) मासिक-धर्म बन्द होने की आयु मे	*रजोधर्म के बाद रोग मे वृद्धि
(१५) गर्भवती स्त्री तथा शिशु का कब्ज	*समय-समय पर (Periodically) रोग का बढना-घटना
(१६) स्त्रियों का गोनोरिया	

(१) **एलूमेन और एलूमिना का सबध**—फिटकरी को **एलूमेन** कहते है, और **एलूमिना** एक धातु है जिसके वर्तन बनते हैं जो एलूमीनियम के वर्तन कहलाते हैं। डा० केन्ट का कथन है कि यद्यपि ये दो पृथक् तत्व है, तो भी इनकी प्रकृति मे बहुत-कुछ समानता है। **एलूमेन** के शारीरिक-लक्षणो का परीक्षण हुआ है, **एलूमिना** के शारीरिक तथा मानसिक दोनो लक्षणो का पता लगाया गया

है, परन्तु क्योंकि दोनों पदार्थों का आधार एलूमीनियम ही है इसलिये एलूमेन भी उन मानसिक-लक्षणों को ठीक कर देता है जो मानसिक-लक्षण एलूमिना में पाये जाते हैं। इससे पहले कि हम **एलूमिना** के शारीरिक तथा मानसिक लक्षणों की चर्चा करें एलूमीनियम के बर्तनों में खाना पकाने के संबंध में कुछ लिख देना प्रकरण संगत प्रतीत होता है क्योंकि इस पर होम्यो-जगत् में विशेष चर्चा रही है।

एलूमीनियम के बर्तनों में खाना पकाने से हानि—एम० भट्टाचार्य एण्ड क० द्वारा प्रकाशित 'पारिवारिक भेषज-तत्व' में लिखा है 'एलूमीनियम धातु की परीक्षा करने पर, इस धातु के बने बर्तन व्यवहार करने पर ज्यादा खट्टा या क्षार द्रव्य के उसमें मिलने से बुरे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। हम लोगों की, खासकर कलकत्ता-वासियों की कब्जियत इसका विशेष परिचायक है'। डा० टायलर अपनी पुस्तक 'होम्योपैथिक ड्रग पिक्चर्स' में लिखती हैं "कुछ वर्ष हुए एक रूसी डाक्टरनी ने अपने साढ़े तीन वर्ष के कुत्ते को जो रोग में पीडित था पशु-डाक्टरों को दिखाया। वे उसके रोग का कोई निदान न कर सके। वह डाक्टरनी अपने कुत्ते का भोजन एलूमीनियम के बर्तन में पकाती थी। कुत्ते को लगातार उल्टी आती थी। छः मास में कुत्ते की बुरी हालत हो गई और वह पानी तक न पचा सकता था। इतने में डाक से उसे एक इश्तिहार मिला जिसमें एलूमीनियम से कुत्तों के विषग्रस्त होने का वर्णन था। कुत्ते के मालिक ने एलूमीनियम के बर्तन में भोजन बनाना छोडकर दूसरे बर्तन में भोजन बनाना शुरु कर दिया और कुत्ता ठीक हो गया। इससे प्रतीत होता है कि कुत्ते पर एलूमीनियम की सूक्ष्म-शक्ति का प्रभाव हो रहा था, और वह इस धातु को 'प्रूव' (Prove) कर रहा था"। यह ठीक है कि सब पर इस प्रकार का प्रभाव नहीं होता। इसका यही कारण है कि कई लोग किसी वस्तु से प्रभावित होते हैं, कई नहीं होते, परन्तु यह आम विचार है कि एलूमीनियम के बर्तन में भोजन बनाने से इस धातु का प्रभाव भोजन में आ जाता है, और इस से ही कई रोगियों को उल्टी, कब्ज आदि की शिकायत हो जाती है। अपने देश में तांबे के बर्तन में पानी रखने की प्रथा है—इसका भी होम्योपैथिक रूपमें स्वास्थ्यकर महत्व है।

(२) **एलूमिना के मानसिक-लक्षण—मानसिक शिथिलता, जड़ता, निर्णय-शक्ति का अभाव**—एलूमेन की तरह **एलूमिना** में भी शिथिलता पायी जाती है, यह इसका व्यापक-लक्षण है। यह शिथिलता शारीरिक-स्तर पर ही नहीं, मानसिक-स्तर पर भी प्रकट होती है। रोगी के मन, बुद्धि को **एलूमिना** मानो जकड लेता है, और उसे भ्रम में डाले रखता है। रोगी किसी प्रकार का निर्णय लेने में असमर्थ हो जाता है। उसकी निर्णय-शक्ति बेढाल हो जाती है। जिन चीजों को वह पहले वास्तविक रूप में जानता था, वे अब उसे अवास्तविक जचने लगती हैं। जब वह कुछ कहता है, तो उसे ऐसा प्रतीत होता है कि कोई दूसरा

कह रहा है, जब वह कुछ देखता है, तो उसे ऐसा प्रतीत होता है कि कोई दूसरा देख रहा है, या जब वह अपने को दूसरे के रूप में परिवर्तित कर लेता है तब समझता है कि वह कह या देख रहा है। यह मन की गडबडाहट है, विचारो की गडबडाहट। उसे अपने व्यक्तित्व के विषय में सन्देह हो जाता है, उसे यह निश्चय नही रहता कि वह कौन था, ऐसा लगता है कि वह वह नही है जो वह था। लिखने-पढने में गलतिया करता है, गलत शब्दो का प्रयोग करता है, मन मानो शिथिल और खडित हो जाता है।

समय बहुत धीरे बीतता मालूम देता है—एलूमिना के मन की एक दूसरी अवस्था यह है कि उसे समय बहुत धीरे बीतता लगता है। वह समझता है कि चीज़ें जिस तेज़ी से होनी चाहिये उस तेज़ी से नही हो रही, सब कार्यों मे देर हो रही है, जिस काम मे आध घटा लगना चाहिये उसमे दिन भर लग रहा है।

(३) **चाकू या खून को देखकर दूसरे को या अपनेको मारने का ख्याल—** इस औषधि का मन पर इतना अधिक प्रभाव है कि रोगी अगर चाकू को देखता है या खून देखता है, तो उसके भीतर दूसरे का या अपना ही खून करने की भावना प्रबल हो उठती है, वह आत्महत्या करना चाहता है।

(४) **प्रात काल उठने के बाद उदासी—चित्त-वृत्ति का बदलते रहना—** इस औषधि का रोगी प्रात काल सोकर उठने के बाद उदास होता है, रोता है। वैसे वह रोता-धोता ही रहता है। अपनी परिस्थिति से दूर भाग जाना चाहता है, भयभीत रहता है, समझता है कि जिन परिस्थितियों से घिरा है उनसे हटने पर उसका दु ख दूर होगा। साधारणतया भयभीतपना उसमे भरा रहता है। जब अपनी मानसिक-दशा को सोचने लगता है तब डरता है कि कही पागल न हो जाय। जब वह सोचता है कि उसे अपना नाम तक भूल जाता है, मन गडबडाया रहता है, तब वह सोचने लगता है कि अब वह सचमुच पागल हो गया है। प्रात काल सोकर उठने के बाद उसमे ऐसे विचार आते-जाते रहते हैं, परन्तु चित्त-वृत्ति बदलती रहती है। कभी निराशा की मनोवृत्ति से निकल कर वह आशाभरी, शान्त मनोवृत्ति मे आ जाता है, इसके बाद फिर उसी निराशा के गर्त मे जा गिरता है। इस औषधि की प्रकृति मे समय-समय पर रोग का बढना-घटना है।

(५) **स्नायु-सस्थान** (Nervous system) **के लक्षण, मेरुदण्ड** (Spine) **के जलन आदि लक्षणो के कारण शिथिलता—**जो स्नायु (Nerves) मेरु-दण्ड मे निकलते हैं उन पर इस औषधि की विशेष क्रिया है। मेरु-दण्ड के स्नायु ही शरीर की मांस-पेशियों की क्रियाशीलता के कारण हैं। उनमे शिथिलता आने से भोजन-नली मे, निगलने मे कठिनाई अनुभव होती है, हाथ उठाने-हिलाने मे कठिनाई होती है, शरीर का कोई-सा भी अग अर्धांग से पीडित हो जाता है, टागो मे, मल-द्वार, मूत्र-द्वार मे शिथिलता, जडता, अर्धांगता अनुभव

होती है। पहले-पहल इन अगो की क्रियाशीलता नष्ट होती है, फिर अन्त मे पूरा अर्धांग हो जाता है। पाव मे काटा लगे, कोई चूटी मारे तो एकदम अनुभव नही होता। वाह्य-अनुभव, चेतना तक, धीरे-धीरे पहुचते है।

| मेरु-दण्ड मे जलन (Burning of Spi1 c) होती है, पीठ में दर्द होती है। रोगी कहता है 'पीठ मे ऐसी दर्द होती है मानो मेरु-दण्ड के नीचे की कशेरुका (Vertebra) में गर्म लोहा घुसेड दिया गया हो।' मेरु-दण्ड के प्रदाह (Myelitis—Inflammation of Spinal cord) मे जव पीठ की मास-पेशियों में ऐठन (Spasm) अनुभव हो, और मेरु-दण्ड की उपझिल्ली (Membrane) का शोथ हो, वहा **एलूमिना** आश्चर्य-जनक कार्य करता है। माईलाइटिस में प्राय यह अनुभव होता है कि अगो में यहा वा वहा कही पट्टी वधी है, इस रोग मे जव मेरु-दण्ड का उत्तेजन (Irritation) होता है, तव ऐसी अनुभूति प्राय होती है कि शरीर के चारो तरफ कस कर रस्सी वधी है। हम आगे जिन शारीरिक-लक्षणो का ज़िक्र करेंगे उनका आधार मुख्यत मेरु-दण्ड की स्नायुओ की उत्तेजना (Irritation of spinal cord) के कारण अगो का शिथिल होना, शक्तिहीन होना है।

(६) **मूत्राशय की शिथिलता**—स्त्री या पुरुप को देर तक पेशाव के लिये वैठे रहना पडता है, पेशाव उतरता ही नही, देर मे उतरता है, धीरे-धीरे निकलता है, रोगी कहता है कि पेशाव जल्दी नही उतरता। कभी-कभी धार की जगह वूद-वूद पेशाव निकलता है, कभी-कभी भरा ही रहता है और अपने-आप, अनजाने वूद-वूद टपकता है। यह इस अग की शिथिलता के कारण ही है जो इस औपधि का व्यापक-लक्षण है। इसका विलक्षण (Peculiar) लक्षण यह है कि पेशाव करने के लिये मलाशय अर्थात् गुदा पर ज़ोर लगाना पडता है।

मलाशय की शिथिलता—मलाशय इतना शिथिल हो जाता है कि भरा रहने पर भी मल नही निकलता, मल कठोर न होकर तरल भी क्यो न हो, वह निकलता ही नही। जव गुदा-द्वार में इस प्रकार की जडता, शिथिलता हो कि दस्त भी न निकले, ऐसी कब्ज़ हो, तव यह औषधि उत्तम कार्य करती है। अगर ऊपर लिखे गये मानसिक-लक्षण मौजूद हो, तव कठोर-मल और कठिन कब्ज़ होने पर भी इस औषधि से वडा लाभ होता है। रोगी को अनुभव होता है कि मल-द्वार मल से भरा है, तव भी ज़ोर लगाने पर भी मल नही निकलता। रोगी को पेट की मास-पेशियो से ज़ोर लगा कर मल को निकालना पडता है, परन्तु गुदा-द्वार की मास-पेशिया मल को धकेलने में कोई सहायता नही देती। पतले मल को भी निकलने में ज़ोर लगाना पडना इस औपधि का प्रधान लक्षण है। कठिनाई से मल निकालने पर प्रोस्टेट ग्लैंड का स्राव निकल पडता है क्योकि मल के लिये ज़ोर लगाने पर इस ग्रन्थि पर ज़ोर पडता है।

परन्तु इस आधार पर ही एलूमिना दे देना कि पतला मल भी ज़ोर लगाने से ही निकलता है होम्योपैथी नहीं है। होम्योपैथी में एक ही लक्षण पर दवा नहीं दी जाती, रोगी की लक्षण-समष्टि पर ध्यान दिया जाता है। उदाहरणार्थ, पतले मल के लिये भी ज़ोर लगाना पडना **नक्स मौस्केटा** और **चायना** में भी है, परन्तु इन सब दवाओ में प्रत्येक दवा का अपना व्यक्तित्व सामने आ जाना चाहिये।

अगर रोगी आकर कहे कि उसे पतले मल के लिये भी ज़ोर लगाना पडता है, परन्तु साथ ही कहे कि उस की प्रकृति ऐसी है कि वह जगा नही रह सकता, पढने लगता है तो झट सो जाता है, मानो सदा सोया-ही-सोया करता है, देर तक खडा रहना पडे तो ग़श खा जाता है, बन्द कमरे मे परेशान हो जाता है, परन्तु खुली ठडी हवा मे जाये तो भी परेशान हो जाता है, तो ऐसे रोगी के लिये **एलूमिना** नहीं, **नक्स मौस्केटा** देने से उस की कब्ज़ की शिकायत दूर होगी।

अथवा, अगर रोगी कहे कि उसे पतले मल के लिये ज़ोर लगाना पडता है, परन्तु उसका पेट मानो हवा से भरा रहता है, चेहरा खून के अभाव से पीला पडा हुआ है, कमज़ोर है, ऊपर से डकारे आती हैं, नीचे से हवा खारिज होती रहती है, जितनी हवा ऊपर-नीचे से निकलती है, उतनी उसकी परेशानी भी बढती जाती है तो ऐसे रोगी की कब्ज़ न **एलूमिना** से ठीक होगी, न **नक्स मौस्केटा** से, उसकी **कब्ज़ चायना** से ठीक होगी।

इसप्रकार हम देखते हैं कि होम्योपैथ के लिये औषधिया बोलने लगती हैं, चित्रवत् उसकी आखो के सामने आ खडी होती हैं। इसीको औषधि-चित्रण कहते हैं।

(७) **शिथिलता, कमजोरी तथा बुढ़ापे में चक्कर आना**—यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि **एलूमिना** के रोगो का उद्भव स्नायु-मडल या मेरु-दड की विकृति से होता है, उसी के कारण इस औषधि का व्यापक-लक्षण जडता, शिथिलता, अधींगता है। यही कारण है कि यह चक्करो (Vertigo) की भी दवा है। रोगी को लगता है कि चीज़ें लगातार घूम रही हैं, स्पाइन के रोगो में आख बन्द करने पर चक्कर आता है, वृद्ध-व्यक्तियो को शिथिलता के कारण चक्कर आ जाता है। चलने मे व्यक्ति डिगमिगाता है। इसी कारण पैरो में, हाथो की अगुलियो में सुन्नपना (Numbness) भी आ जाता है। रोग की प्रारंभिक अवस्था में **एलूमिना** इन रोगो को ठीक कर देता है।

(८) **बच्चा सोकर घबराया उठता है**—इसकी प्रकृति में हमने लिखा है कि इसके रोग प्रातःकाल सोकर उठने के बाद बढते हैं। **एलूमिना** के मानसिक-लक्षणों में शिथिलता, जडता के कारण बच्चा प्रातःकाल जब सोकर उठता है तब घबराया हुआ होता है। उसकी शारीरिक तथा मानसिक स्थिति शिथिल होती है। ज्यों-ज्यों दिन बढता है, अगो मे चलने-फिरने से जान आने लगती है, त्यों-

त्यों वह चेतन होने लगता है। सोकर उठने पर तो सब चीजें उसे अपरिचित-सी मालूम देती हैं।

(९) **नाक तथा गले में कटार—जुकाम** (Catarrhal condition)—सब अगो की शिथिलता का असर नाक तथा गले पर भी पडता है। नाक तथा गले की झिल्ली (Membrane) खुश्क हो जाती है। नाक बन्द अनुभव होती है, ज्यादातर बायी नाक। नाक मे वडी, नीली-सी, वदबूदार, सूखी पपड़ी जमा हो जाती है। रोगी हर समय खासता और नाक साफ करता रहता है। नाक से यह अवस्था नाक के पीछे के भाग तक फैल जाती है जहा नासिका के मल के थक्के जमा हो जाते हैं। गले के भीतर देखा जाय, तो हलक मे लसदार वलग़म चिपका रहता है। गले में अत्यन्त खुश्की अनुभव होती है, ऐसा प्रतीत होता है कि गले में खपाच अटका हुआ है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम, नाइट्रिक एसिड** तथा **हिपर** मे भी यह अनुभूति रहती है। यह कटारल हालत भोजन की प्रणाली तक फैल जाती है, और रोगी को निगलने में भी कठिनाई प्रतीत होती है। इस सब का कारण **एलूमिना** का शिथिलता, जडता आदि का वह व्यापक-लक्षण है जो इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण कहा जा सकता है।

ताल मे, गले में ऐसे जख्म हो जाते हैं, जिनमे से पीली-पीली पस-मिश्रित कफ़ निकलती है। रोगी कहता है कि उसका गला पडा हुआ है, पुराना रोग हो गया है। यह औषधि गले की नयी या पुरानी बीमारी को देख कर नही दी जाती, इसलिये नही दी जाती क्योकि सर्दी का असर गले पर पड गया है, परन्तु इस औषधि का प्रयोग ठड लग जाने के कारण गले में रोग पड जाने की प्रवृत्ति को रोकना है। इस दृष्टि से इसकी गणना **साइलीशिया, ग्रैफाइटिस** तथा **सलफ़र** की श्रेणी में है। यह गहरी क्रिया करने वाली, दीर्घकालिक एन्टी-सोरिक दवा है। यह शरीर के तन्तुओं मे ही परिवर्तन कर देती है। इसकी क्रिया धीरे-धीरे होती है, परन्तु गहरी होती है। अगर इस दवा के देने के वाद एकदम रोग ठीक होता हुआ न दीखे, परन्तु रोगी कहे कि रोग न हटने पर भी वह अपने को अच्छा अनुभव कर रहा है, तो दवा मत वदलो। तुमने जुकाम के या पीठ के दर्द के जिन लक्षणो के लिये दवा दी है वे एकदम नही दूर होंगे, परन्तु रोगी की मानसिक-अवस्था वेहतर होती जायगी और कालान्तर मे रोग के लक्षण भी अपने-आप दूर हो जायेंगे।

(१०) **खुजली होने के वाद फोड़े-फुन्सी—पहले नहीं**—फोडे-फुन्सी के दो रूप हैं। कई वार तो त्वचा मे इतनी खुजली होती है कि खुजलाते-खुजलाते त्वचा छिल जाती है और फिर फोडे-फुन्सी हो जाते हैं। कई वार पहले फोडे-फुन्सी होते हैं और उन्हें खुजलाना पडता है। नौसिखिये लोग फोडा-फुन्सी देख कर **हिपर** दे देते हैं, परन्तु यह ठीक नही है। **एलूमिना** में त्वचा सूख जाती है, उस मे दरारें पड जाती हैं, वह सख्त हो जाती है—कारण वही शिथिलता और

जडता—और उसे खुजलाते-खुजलाते त्वचा छिल जाती है और फोडे-फुन्सी हो जाते हैं। अगर खुजली पहले और फोडे-फुन्सी बाद को खुजलाने की वजह से हो, तब **एलूमिना, मेजेरियम, आर्सनिक** आदि देते हैं, अगर फोडा-फुन्सी पहले हो, और बाद को खुजली हो तब **हिपर** देते हैं।

मेजेरियम मे खुजली होती है, एक स्थान पर खुजलाते है, वह दूसरे स्थान पर चली जाती है। इसके चर्म-रोग मे जो फुन्सिया होती हैं, वे झुण्ड-के-झुण्ड के रूप मे होती हैं, इनमे पीला पस भरा रहता है, वे मिलकर एक हो जाती हैं, ऊपर पपडी जम जाती है। बच्चो के सिर पर फुन्सिया हो जाती है जिनके मिल जाने पर उन पर मोटी चमडे की-सी पपडी जम जाती है, इस पपडी के नीचे मवाद भरा रहता है। **आर्सनिक** मे खाल पर मछली के छिलके की तरह की शक्ल हो जाती है, उसमे खाज होती है, और अगर फुन्सिया हो जाये तो उनमे जलन होती है जिन्हें सेकने से आराम मिलता है।

(११) **बेहद खुश्की, मुख तथा हाथो पर मकडी के जाले के लिपटने का-सा अनुभव, बाल झड़ना**—बेहद खुश्की इसका व्यापक-लक्षण है। खुश्क जुकाम का हम जिक्र कर चुके हैं। मुख पर की रुधिर-प्रणालिकाए सूक जाती हैं जिनके कारण ऐसा अनुभव होता है कि मुख पर मकडी का जाला लिपटा है। यह अनुभूति इतनी कष्टप्रद होती है कि रोगी बैठा-बैठा मुख रगडा करता है। हाथो की पीठ पर भी ऐसा ही अनुभव होता है। रोगी मुह पर बार-बार ऐसे हाथ फेरता है जैसे चेहरे पर से कुछ हटा रहा हो।

(१२) **गायको आदि मे आवाज़ का बैठ जाना**—लकवे जैसी शिथिलता इस औषधि का व्यापक-लक्षण है। इसी कारण गला भी बैठ जाता है। गायक थोडी देर ही गा सकता है, फिर गला काम नही देता। धीरे-धीरे यह शिथिलता इतनी बढ जाती है कि बोलना ही बन्द हो जाता है। इस प्रकरण मे **रस टॉक्स** नही भूलना चाहिये। **रस टॉक्स** में गायक जब गाना शुरु करता है तब आवाज़ धीमी होती है, परन्तु ज्यो-ज्यो वह गाता जाता है, गला गर्म होता जाता है, गति से **रस टॉक्स** के व्यक्ति को लाभ पहुचता है, और उसका स्वर गाते-गाते चमक उठता है। परन्तु अगर **रस टॉक्स** का व्यक्ति गला गर्म होने पर फिर ठडी जगह चला जाय, तो गला फौरन बैठ जायगा, अगर गर्म कमरे मे ही रहे तो गला नही बैठेगा। **फ़ॉसफ़ोरस** के गले में जब गायक गाना शुरू करता है, तब उसे गले के कफ को बार-बार साफ करना पडता है, जब कफ साफ हो जाता है तब उसका गला ठीक काम करने लगता है, परन्तु गाते-गाते गला दर्द करने लगता है, इतना दर्द होता है कि आवाज़ निकालने मे चाकू से कटने का-सा दर्द होता है। जबतक आवाज़ के बैठने को ठीक करने के लिये **एलूमिना** का पता नही लगा था तबतक होम्योपैथ गले बैठने पर गायको, व्याख्याताओ को **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** देते थे,

परन्तु उसकी अपेक्षा **एलूमिना** अच्छा काम करता है।

(१३) **स्त्रियों मे पानी की तरह टागों तक बह जानेवाला प्रदर**—स्त्रियो के रोगो मे भी **एलूमिना** की आधारभूत शिथिलता का लक्षण दिखाई देता है। रोगी के जननाग इतने शिथिल हो जाते हैं कि प्रदर का पानी टागो के नीचे तक आ बहता है। यह पानी तीखा, त्वचा को काटता है, पीला होता है। यह अडे की सफेदी जैसा भी हो सकता है, तारोवाला, जाघो और एडियो तक बह जानेवाला। इस प्रदर के साथ रोगी के जननागो मे निम्न-लक्षण प्रकट होते हैं —

i जरायु के मुख पर ज़ख्म
ii सब जननागो में शिथिलता
iii. जननागो की शिथिलता के कारण नीचे को बोझ की अनुभूति
iv सब मासपेशियो मे कमज़ोरी, ढिलाई और शिथिलता

(१४) **मासिक-धर्म बन्द होने की आयु के लक्षणो में उपयोगिता**—जब ४५ वर्ष के आस-पास स्त्री का मासिक-धर्म बन्द होने का समय आ जाता है, रज में न्यूनता, शिथिलता आ जाती है, वह घटने लगता है, रोगिणी अपने को निहायत कमज़ोर अनुभव करने लगती है, और जितना-कितना भी रजोधर्म होता है वह स्त्री को परेशान कर देता है, उस अवस्था मे **एलूमिना** बहुत लाभ करता है।

(१५) **गर्भवती स्त्री तथा शिशु का कब्ज़**—जो स्त्री कब्ज़ की शिकार नही भी होती वह गर्भावस्था में इस रोग से पीडित हो जाती है। उसका मल-द्वार काम नही करता, उसमे मल-निस्सारण की शक्ति नही रहती, पेट की पेशियो पर दबाव डालने पर शौच उतरता है। ऐसे ही, नवजात-शिशु या कुछ महीने का शिशु जब कासता जाता है और शौच नही उतरता, शौच आने पर दीखता है कि वह तो इतना कडा नही था कि न उतरता—ऐसी हालत में यह औषधि लाभप्रद है।

(१६) **स्त्रियों तथा पुरुषों का गोनोरिया**—जब कोई स्त्री गोनोरिया रोग से पीडित हो जाय और **पल्सेटिला** तथा **थूजा** देने पर रोग मे कमी तो आजाय, परन्तु उसका मूल-नाश न हो, रोग बार-बार पलट कर आता रहे और गोनोरिया का स्राव समाप्त होने मे न आये, तब इस महौषध से लाभ होता है। पुरुषो मे भी अगर गोनोरिया अन्य औषधियो से ठीक हो जाय परन्तु फिर भी आता-जाता रहे, तो **एलूमिना** का उपयोग करना चाहिये।

(१७) **इस औषधि का सजीव-चित्रण**—इसकी प्रकृति के रोगी के रुधिर की गति इतनी शिथिल होती है कि सर्दी मे उसके हाथ-पाव ठडे हो जाते हैं, वे खुश्की के कारण फट जाते हैं, पैरो मे बडी-बडी बिवाइया पड जाती हैं, उनसे खून निकलने लगता है। ठड से उसके रोग बढ जाते हैं, नम मौसम में वह अच्छा अनुभव करता है। त्वचा का अत्यन्त खुश्क होना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। रोगी अपने को कपडे से ढके रखना चाहता है, शरीर को गर्म कपडो से ढके

रहता है, परन्तु फिर भी खुली हवा चाहता है। मौसम की ज़रा भी तब्दीली से उसे ठड लग जाती है, ज़ुकाम हो जाता है। कभी-कभी बिस्तर मे लेटते हुए इतनी ठड अनुभव करता है कि दात किटकिटाते हैं, परन्तु कुछ देर बाद बिस्तर मे उसे इतनी खाज उठती है और गर्मी लगती है कि कपडा रखना नही चाहता। ये दोनो विरोधी बातें इसकी प्रकृति में पायी जाती हैं, यही इसका सजीव-चित्रण है।

(१८) शक्ति तथा प्रकृति—३०, २०० (कैंट के अनुसार 'सर्द'—Chilly—के लिये परन्तु बोगर के अनुसार 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

एम्ब्रा ग्रीसिया (AMBRA GRISEA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) जवानी में वृद्धावस्था के-से स्नायविक लक्षण (Nervous symptoms)	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) चक्कर (Vertigo)	***भोजन के बाद रोग मे कमी**
(३) घरेलू विपत्ति के कारण या व्यापार मे हानि के कारण स्नायु-दौर्बल्य तथा निद्रा-नाश	***ठडी हवा, ठडा खाने-पीने से लक्षणों मे कमी**
(४) गाना-बजाना सहन न होना, गाना सुनने से खासी आ जाना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) शरीर के पीडित अग मे शिकायतें	***दूसरों की उपस्थिति से वृद्धि**
	***चिता, व्यावसायिक चिता से**
	***वृद्धावस्था मे लक्षणों मे वृद्धि**
	***प्रातः तथा साय रोग मे वृद्धि**

(१) जवानी मे वृद्धावस्था के-से स्नायविक लक्षण—दुबले-पतले युवक या पतली-दुबली स्त्रिया जो जवानी मे ही बुढापे जैसी अवस्था मे पहुच जाती हैं, ५० वर्ष की आयु हो और ७० वर्ष की लगती हैं, चाहे ऐसे बच्चे हो जो बूढे-से लगने लगें, ऐसो के लिये यह औषधि उत्तम है। उनके अगो मे कमज़ोरी के कारण कपन, चलने मे लडखडाहट, विचार-शक्ति की कमी, सब-कुछ भूल जाना—ये लक्षण दिखाई देते हैं। वे बात करते हुए भूल जाते हैं कि क्या कहा था, प्रश्न करेंगे और उत्तर सुने बिना दूसरा प्रश्न कर डालेंगे। कई नव-युवको मे मन की ऐसी कमज़ोरी आ जाती है, वे पागल तो नही होते, परन्तु मन कमज़ोर हो जाता है।

वृद्ध लोगो मे स्नायु-दौर्बल्य का यह लक्षण पाया जाता है कि एक क्षण में तो वे बिल्कुल हतोत्साह, निराश दीख पडते हैं, फिर कुछ देर बाद, स्वभाव की उग्रता दर्शाते हैं। इस प्रकार के स्नायु-दौर्बल्य मे वृद्ध-पुरुषो के लिये भी इस दवा से लाभ होता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति सुख-दु ख, शुभ-अशुभ सब बातो के प्रति उदासीन हो जाता है। जिन बातो से दूसरो का दिल टूट जाय उन बातो का उन पर कोई असर नही होता, यह इसलिये नही कि वे मानसिक-दृष्टि

से गीता के निम्सग-योग तक पहुच चुके होते हैं, परन्तु इसलिये क्योंकि उनकी सोच-विचार की मानसिक-शक्ति का ही ह्रास हो गया होता है।

प्रात काल सोकर उठने पर इन लोगो की मानसिक-स्थिति सजग नही होती, वे अपने को स्वप्न की-सी अवस्था में पाते हैं। अगर यह अवस्था वढती जाय, तो सायकाल तक वे पागल-से पाये जाते हैं।

(२) **चक्कर आना (Vertigo)**—समय से पहले ही जिन लोगो मे वृद्धावस्था के लक्षण प्रकट होने लगते है वे चक्करो के भी शिकार हो जाते हैं। यह नही समझना चाहिये कि जिसे चक्कर आये वह वृद्धावस्था की वीमारी का शिकार है। चक्कर तो कई कारणो से आ सकते हैं, परन्तु अगर जवानी मे वृद्धा-वस्था के लक्षण प्रकट होने लगे और चक्कर आने लगें, तो इस औषधि पर भी विचार करना चाहिये। वह अकेला गली में नही निकल सकता। जिस विषय पर विचार कर रहा है, उस पर ध्यान केन्द्रित करने के लिये उसे बार-बार प्रयत्न करना पडता है, अन्यथा विचार का विषय ही सामने नही रहता।

(३) **घरेलू विपत्ति या व्यापार में हानि के कारण स्नायु-दौर्बल्य तथा निद्रा-नाश**—तन्दुरुस्त मजबूत आदमी जिसे व्यापार मे घाटे की चिन्ता एकदम आ घेरे या जिस पर घरेलू विपत्ति आ पडे, परिवार में एक के बाद दूसरे के मरने से जिस के मन पर ऐसा आघात पहुचे कि उसे ससार निस्सार दीखने लगे, जो इन दुर्घटनाओं को देखकर सोचने लगे कि जीने का कुछ लक्ष्य ही उसके सामने नही रहा, दु ख, निराशा से जो विपद्-ग्रस्त होकर जीवन से निराश हो जाय, इन्ही विचारो से जिसकी निद्रा भी नष्ट हो जाय, ऐसे रोगी की यह सहारा है।

एम्ब्रा तथा नैट्रम म्यूर की तुलना—रात को **एम्ब्रा** भी नही सो सकता, **नैट्रम** भी, परन्तु **एम्ब्रा** के सामने भयकर, काल्पनिक शक्लें आती-जाती रहती हैं जिनके कारण वह नही सो सकता, और **नैट्रम** का रोगी भूतकाल की घटनाओ को सोचता रहता है, इस मे उसे नीद नही आती। **एम्ब्रा** की अवस्था व्यापारिक चिताओ, घरेलू दुर्घटनाओ द्वारा मस्तिष्क के कमजोर हो जाने के कारण होती है, इसी कारण से उसे चक्कर भी आता है।

(४) **गाना-बजाना सहन न होना, गाने से खांसी आ जाना**—गाना सुनने से उनके अनेक कष्ट उभर आते हैं। गाने के स्वरो को वह भौतिक, साकार-वस्तु अनुभव करता है, और उसे ऐसी अनुभूति होती है कि वे स्वर उसे जकडे जा रहे हैं। गाना सुनने मे उसे खासी आने लगती है।

(५) **शरीर के पीडित अग मे शिकायतें**—इसमे शरीर के एक अग की शिकायते होती हैं। उदाहरणार्थ, उसे शरीर के उसी अग मे पसीना आता है जो अग पीडित या रोगग्रस्त होता है, दूसरे मे नही। शरीर के एक तरफ ही पसीने का लक्षण पल्सेटिला म भी है, परन्तु पीडित अग मे ही पसीना **एम्ब्रा** मे ही है।

(६) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i. स्त्री-प्रसग करते समय दमे का दौर पडना इसका विलक्षण-लक्षण है।

ii मेरु-दण्ड के प्रदाह (Spinal irritation) से जो लोग रोग-ग्रस्त हैं उनकी स्नायविक-खासी (Nervous cough), डकार आदि में इस से लाभ होता है। यह स्नायु-प्रधान दवा है।

iii अगुली, बाह आदि किसी एक अग का सुन्नपना।

iv दूसरो के बीच मे जाने से रोगी परेशान हो जाता है।

(७) शक्ति—२ या ३ शक्तियो का बार-बार प्रयोग किया जा सकता है। सायकाल इस औषधि को नही देना चाहिये, इससे रोग बढ सकता है। यह व्हेल मछली से निकलता है और नोसोड (Nosode) है।

ऐमोनियम कार्बोनिकम
(AMMONIUM CARBONICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) स्थूल-काय स्त्रियां जिन्हें ऐमोनिया कार्ब सूघने की आदत पड जाती है	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) दमेवाला श्वास-कष्ट, शीत-प्रधान रोगी दमे के कष्ट मे भी ठंडी हवा चाहता है	*दबाने से रोग मे कमी
(३) कफ के कारण श्वास-कष्ट	*पेट पर लेटने से कमी
(४) इन्फलुएनज़ा के बाद की बची खांसी	*पीड़ा-ग्रस्त अंग की तरफ लेटने से रोग मे कमी
(५) ऐमोनिया कार्ब के स्राव तीखे और लगने वाले होते हैं	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(६) रज काल मे जननागों की भीतरी दुखन	*ठंड, नमी या बदली वाले दिन रोग का बढ़ना
(७) मासिक धर्म जल्दी, बहुत अधिक खून, काला खून तथा खून के थक्के होना	*खुली हवा से रोग बढ़ना
(८) रजोधर्म होने से पहले दिन हैजे के-से दस्त	*तीन चार बजे प्रातः बढ़ना
(९) प्रात काल ३ बजे रोग का बढ़ना	*रजोधर्म के दिनों में बढ़ना
(१० लैकेसिस तथा ऐमोनिया कार्ब का संबंध	*स्नान से रोग का बढ़ना
	*सोने के बाद रोग बढ़ना

(१) स्थूल-काल स्त्रिया जिन्हें ऐमोनिया कार्ब सूंघने की आदत पड़ जाती है—एलोपैथ उन रोगियो को जिन्हें हृदय के रोग के कारण श्वास-कष्ट प्रतीत होता है, सूघने के लिये **क्रूड ऐमोनिया कार्ब** दिया करते हैं। प्राय स्त्रिया **ऐमोनिया कार्ब** की बोतल पास रखती हैं और श्वास-कष्ट मे इसे सूघा करती हैं।

अत्यन्त कमज़ोरी, कठिन श्वास, ऐसा लगता है कि हृदय काम नही करेगा। रोगी हृदय की धड़कन से विस्तर पर लेटा रहता है और ज़रा-भी हिलने-जुलने मे उसे सांस लेने मे कष्ट होता है। अस्ल में उसे और-कुछ नही, केवल कमजोरी होती है, किसी दवा से लाभ होता प्रतीत नही होता। औषधियो की प्रतिक्रिया होती नही दीख पडती। ऐसे रोगियो को प्राय आराम करने को कहा जाता है। डा० केन्ट ने ऐसी एक रोगिणी का ज़िक्र किया है जो कभी एक विशेषज्ञ के पास, कभी दूसरे विशेषज्ञ के पास टक्करें खाती रही। उसे शक्तिकृत **ऐमोनिया कार्ब** की एक मात्रा ने ही स्वस्थ कर दिया।

डा० गुएरेन्सी लिखते हैं कि यह औषधि उन स्त्रियो के लिये वहुत उपयोगी है जो कफ़ प्रकृति की होती हैं, स्थूल-काय, कमज़ोर, ज़रा-सी देर में वेहोश हो जाने-वाली, जिन्हें अपने को सचेत रखने के लिये ऐमोनिया कार्ब, कैम्फर, कस्तूरी सूघनी पडती है या अलकोहल लेना पडता है।

(२) **दमेवाला श्वास-कष्ट** (Asthmatic dyspnea), **शीत-प्रधान रोगी दमे के कष्ट मे भी ठंडी हवा चाहता है**—इस रोगी के दमे का विलक्षण (Peculiar) लक्षण यह है कि अगर कमरा गर्म हो तो भी इस शीत-प्रधान रोगी का श्वास-कष्ट वढ जाता है, मालूम होता है गला घुट जायगा, मानो हवा के अभाव में रोगी मर जायगा वह शान्ति के लिये ठडी हवा में जाता है। ध्यान रखने की वात यह है कि गर्म हवा मे श्वास-कष्ट वढ जाता है, परन्तु रोगी अपनी प्रकृति से, शारीरिक अनुभूति से तो ठड से डरता है, परन्तु दमे मे गर्मी से डरता है। शरीर की शिकायतें, सिर-दर्द तो ठड से कष्ट पाते हैं, परन्तु श्वास-कष्ट में रोगी ठडी हवा से अपने को अच्छा अनुभव करता है।

(३) **कफ के कारण श्वास-कष्ट**—इस औषधि में कफ के लक्षण वहुत पाये जाते हैं। छाती मे और श्वास-प्रणालियो मे कफ खडकता है। इसी कफ के अटकने के कारण सास लेने मे भारीपन अनुभव होता है। छाती मे इतना कफ भर जाता है कि निकलता ही नही। क्षय-रोग की अन्तिम अवस्था मे जव फेफडे कफ से भर जाते हैं, यह औषधि कष्ट को कुछ कम कर देती है। छाती मे कफ भर जाना **स्टैनम** की तरह का इसमे भी होता है। रोगी इतना कमज़ोर होता है कि ज़ोर से खास ही नही सकता, एन्टिट टार्ट को तरह कफ वाहर निकाल ही नही सकता। रोगी ठड सहन नही कर सकना, ठडी हवा मे घूमना नही चाहता।

(४) **इन्फलुएनजा के वाद वच रहनेवाली खासी**—डा० यूनान ने लिखा है कि उन्हें इन्फलुएनज़ा हो गया और उसके वाद जो वची हुई खासी थी वह किसी दवा से ठीक नही हुई। साधारणत **ब्रायोनिया** से उसे ठीक हो जाना चाहिये था, परन्तु वह भी काम नही करता था। कई रात उन्होंने वेचैनी से काटी। उसके वाद उन्होंने ऐमोनिया कार्ब २०० की एक मात्रा ली जिससे सव रोग एकदम

शान्त हो गया। वे लिखते हैं कि इस अनुभव के बाद इन्फलुएनजा से बची हुई खासी में वे सदा इस औषधि का प्रयोग करते रहे और उन्हें सदा सफलता मिली।

(५) **ऐमोनिया कार्ब के स्राव तीखे और लगनेवाले होते हैं—ऐमोनिया कार्ब** के सब प्रकार के स्राव तीखे होते हैं, लगनेवाले, खाल को छील देनेवाले। नाक से जो पानी वहता है उस से होठ छिल जाते हैं, मुख का सेलाइवा होठ को बीच में से काट डालता है, होठो के दोनो सिरे छिल जाते हैं, कटे-से हो जाते हैं। रोगी होठो की त्वचा को छीलता रहता है, वे सूखे रहते हैं, छिलकेदार। आख के पानी से आखें जलती रहती हैं, मानो छिल रही हो। पाखाना भी त्वचा को लगता है। स्त्री के गुह्याग भी दुखने लगते हैं, मानो पक रहे हो। यह भी वहा के स्राव के लगने के कारण होता है। लगनेवाला प्रदर दु ख देता है। अगर शरीर पर कोई घाव हो जाता है तो उसमे से भी लगनेवाला स्राव बहता है। यह लगना, त्वचा को छील देना (Excoriation) इस औषधि के स्रावो की विशेषता है।

(६) **रज काल मे जननागो की आभ्यन्तरिक दुखन** (Soreness)—स्त्री का सपूर्ण आभ्यन्तरिक जननाग दुखने लगता है, ऐसे लगता है जैसे जननागो के भीतर गहरी दुखन है। यह दुखन बहुत गहरी होती है। इस दुखन का अभिप्राय सिर्फ स्पर्श-असहिष्णुता ही नही है, बिना स्पर्श के भी आन्तरिक-स्रावो से दुखन बनी रहती है। रज काल मे यह आभ्यन्तरिक दुखन बढ जाती है। जबतक रजोधर्म होता रहता है तबतक भीतर के जननाग दुखते रहते हैं।

(७) **मासिक-धर्म जल्दी, बहुत अधिक खून, काला खून, खून के थक्के—** यह तो हम लिख ही चुके हैं कि इस औषधि में लगनेवाला प्रदर, जननागो की दुखन, लगानेवाले स्राव से जननागो की सूजन हो जाती है, साथ-साथ ही मासिक-धर्म बहुत जल्दी हो जाता है, समय से पहले, बहुत अधिक खून जाता है, खून का रग काला होता है, खून के थक्के-के-थक्के जाते हैं, और रुधिर की विशेषता यह है कि वह जमता नही, तरल ही रहता है।

(८) **रजोधर्म होने से पहले दिन हैजे की तरह के दस्त**—इसका विशेष लक्षण यह है कि रजोधर्म होने से पहले दिन हैजे के-से दस्त आते हैं, ऋतु-स्राव के दिनो मे भी दस्त बने रहते हैं। **साइलीशिया** में ऋतु-स्राव से पहले और ऋतु-स्राव के दिनो मे कब्ज़ रहती है।

(९) **प्रात काल ३ बजे रोग का बढना**—वृद्ध-पुरुषो मे प्रात काल ३ बजे खासी आती है, जोर की खासी, खासते-खासते पसीना आ जाता है, साथ ही दम घुटता है।

(१०) **लैकेसिस तथा ऐमोनिया कार्ब का सबध—लैकेसिस** का प्रभाव बाईं तरफ है, **ऐमोनिया कार्ब** का दाईं तरफ। इस भेद के होने पर भी इन दोनों औषधियो का आपस मे सबध है। वह सबध क्या है? (क) दोनो औषधियो

में काले खून का वहना पाया जाता है, खून जो जमता नही । (ख) दोनो औष-धियो मे सोने के वाद लक्षणो का वढना पाया जाता है । इन लक्षणो को सामने रखते हुए दो वातो की तरफ ध्यान देना आवश्यक है

(क) अगर खून वहने और नीद के वाद लक्षणो के वढने को ध्यान मे रखते हुए **लैकेसिस** उच्च-शक्ति का दिया गया है और वह लाभ पहुचा रहा है, तो **ऐमोनिया कार्व** नही देना चाहिये क्योकि यह **लैकेसिस** की क्रिया मे वाधा पहु-चायेगा । इस दृष्टि से यह **लैकेसिस** का विरोधी (Inimical) कहा जाता है ।

(ख) अगर अन्य लक्षणो को ध्यान में रखते हुए **लैकेसिस** न्यून-शक्ति का दिया गया है और उसका प्रभाव विष-सदृश हो रहा है, तो **ऐमोनिया कार्व** देने से 'सम सम शमयति' के सिद्धान्त के अनुसार **लैकेसिस** का प्रभाव जाता रहेगा क्योकि उस समय होम्योपैथिक-दृष्टि से दोनो सदृश (सम—similar) है ।

(११) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

i वालो का झडना इस का प्रधान लक्षण है ।

ii नख पीले पड जाते हैं ।

iii प्रात काल मुख धोते समय नकसीर वहने लगती है—यह विलक्षण (Peculiar) लक्षण है ।

iv स्नान के वाद त्वचा पर लाल धब्बे उभर आते हैं ।

v स्नान के वाद त्वचा पर खून लहरें मारने लगता है, स्नान के वाद धडकन होने लगती है ।

vi. हड्डियो मे दर्द होता है, मानो वे टूट जायेगी । दातो मे, जवडो मे दर्द होता है ।

vii घाव के गलित-घाव (Gangrene) में वदल जाने की आशका मे यह लाभप्रद है ।

viii जव सुनिर्वाचित औषधि से लाभ न हो, और रोगी का कमज़ोरी से हृदय डूवता दीखे, तव **आर्सनिक** या **ऐमोनिया कार्व** रोगी को वचा सकते हैं ।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (यह दीर्घकालिक एन्टी-सोरिक दवा है। औषधि सर्द—Chilly—प्रकृति के लिये है)

ऐमोनियम म्यूरियेटिकम
(AMMONIUM MURIATICUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) खासी या छाती के दर्द मे दोनो कन्धो के बीच ठड का अनुभव होना
(२) कब्ज
(३) मासपेशियो, पुट्ठो तथा जोड़ो मे खिचाव तथा दर्द की अनुभूति
(४) ऋतु-स्राव लेटे-लेटे होता है, खड़े होने पर बन्द हो जाता है
(५) गले की दुखन (Sore-throat)
(६) गर्मी की लहरें तथा ज्वर मे गर्म लहर के साथ पसीना छूटना (Flushes of heat)
(७) ऐमोनिया म्यूर की प्रकृति (Constitution)

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*ठड मे रोग मे कमी होना
*खुली हवा मे रोग में कमी
*तेज चलने से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*प्रात काल (सिर तथा छाती के रोग का बढना)
*दोपहर (पेट के रोग का बढ़ना)
*सायकाल (त्वचा, ज्वर, अगो मे रोग का बढना
*पुरानी मिचकोड (Old sprains)
*कालान्तर (Periodically) मे रोग का बढना

(१) **खांसी या छाती के दर्द मे दोनो कन्धो के बीच ठड का अनुभव**—इस औषधि का बहुमूल्य लक्षण यह है कि दोनो कन्धो के बीच ठड का अनुभव होता है। छाती की दो तकलीफो मे प्राय यह अनुभव हुआ करता है। एक तो खाँसी मे, दूसरा खासी के बिना छाती मे दर्द के होने मे। डा० नैश का कथन है कि जैसे दोनो कन्धो के बीच जलन का अनुभव होना **लाइकोपोडियम** और **फ़ॉसफ़ोरस** में पाया जाता है, वैसे ठड का अनुभव होना **ऐमोनियम म्यूर** मे पाया जाता है। **लैकर्नैन्थिस** का लक्षण यह है कि रोगी अनुभव करता है कि कन्धो के बीच एक वर्फ का टुकडा रखा हुआ है।

(२) **कब्ज**—डा० नैश कहते हैं कि इस औषधि मे अत्यन्त सख्त कब्ज होती है। मल कठोर, खुश्क, टूट-टूट कर गिरता है और कठिनाई मे निकलता है। कभी-कभी **कॉस्टिकम** की तरह मल आव से लिपटा रहता है। **कॉस्टिकम** मे मलद्वार की पक्षाघात की-सी हालत होने के कारण मल कठिनाई से निकलता है। कब्ज़ के विषय मे यह जानना उचित है कि जितने म्यूरेट्स हैं उनमे मल खुश्क और कठोर होता है। उदाहरणार्थ, **ऐमोनिया म्यूर, मैगनेशिया म्यूर, नैट्रम म्यूर**—सब मे कब्ज़ और कठोर मल पाया जाता है। **ऐमोनिया म्यूर** मे मल का रग सदा परिवर्तित होता रहता है। मल का रग बदलते रहना **पल्सेटिला** मे भी पाया

जाता है, परन्तु **ऐमोनिया म्यूर** ठड पसद नही करता, **पल्सेटिला** ठड पसन्द करता है। **कॉस्टिकम** और **ऐमोनिया** में भेद यह है कि **कॉस्टिकम** मे तो नसें वास्तव मे खिच जाती हैं और हाथ-पाव छोटे पड जाते हैं, **ऐमोनिया म्यूर** मे वे खिचती नही, हाथ-पाव भी छोटे नही पडते, परन्तु नसो मे इसप्रकार का खिचाव मालूम पडता है मानो नसें और मासपेशिया छोटी पड गई हैं, छोटी पडी नही होती।

(३) **मासपेशियो, पुट्ठो तथा जोडो में खिचाव तथा दर्द की अनुभूति**—इसका मासपेशियो, पुट्ठो तथा जोडो मे खिचाव तथा दर्द की अनुभूति पर विशेष प्रभाव है। इस लक्षण मे, गठिया तथा पुरानी मिचकोड के दर्द आदि मे यह औषधि अच्छा काम करती है। रोगी को पुट्ठो मे, मास-पेशियो मे और जोडो मे एक प्रकार का तनाव अनुभव होता है। जब मासपेशियो मे खिचाव के कारण उनमे कार्य करने की असमर्थता का अनुभव हो तब इस औषधि को स्मरण करना चाहिये।

(४) **ऋतु-स्राव लेटे-लेटे होता है, खड़े हो जाने पर बन्द हो जाता है**—डा० नैश कहते हैं कि सिर्फ तीन औषधिया हैं जिनमे ऋतु-स्राव सिर्फ रात को लेटने पर होता है, चलने-फिरने पर बन्द हो जाता है। वे औषधिया हैं—**ऐमोनिया म्यूर, बोविस्टा** तथा **मैग कार्ब**। ऋतु-स्राव की औषधियो की तुलना निम्न है

रात को ऋतु-स्राव, दिन को बन्द—**ऐमोनिया म्यूर, बोविस्टा, मैग कार्ब**
दिन को ऋतु-स्राव, लेटने से बन्द— **कैक्टस, कॉस्टिकम, लिलियम**
ऋतु-स्राव सिर्फ लेटने पर, चलने-फिरने से बन्द—**क्रियोज़ोट**

(५) **गले की दुखन** (Sore-throat)—डा० केन्ट का कहना है कि गले की ऐसी दुखन के लिये जिसका कुछ अता-पता न चले, यह बहुत उत्तम औषधि है। खासकर गले की ऐसी हालत जिसमे जलन हो, गले मे चिपचिपा कफ चिपटा रहे, गले मे शोथ हो जाय, थूक निगलने मे कष्ट हो, बार-बार गले मे से कफ खास-खास कर निकालना पडे, गला पड जाय या आवाज़ ही बैठ जाय। ऐसे रोगियो मे भी इस से लाभ होता है जो इसप्रकार की खासी के साथ कमज़ोर पडते जायें, रोज खासते रहे और तपेदिक की तरफ बढते जायें।

(६) **गर्मी की लहरें तथा ज्वर में गर्म लहर के साथ पसीना छूटना**—(Flushes of heat)—रोगी अनुभव करता है कि शरीर की सब नसो मे रुधिर उबल रहा है। शरीर की आभ्यन्तर-झिल्लियो मे जलन, उत्ताप तथा काटने का-सा अनुभव। गर्मी की लहरें आती हैं और पसीने में समाप्त होती हैं। रात के अन्तिम भाग मे बहुत पसीना आता है। ज्वर मे बार-बार गर्मी की लहरें आती हैं और हर गर्म लहर के बाद पसीना छूटता है।

(७) **ऐमोनिया म्यूर की प्रकृति** (Constitution)—**ऐमोनिया म्यूर** का रोगी देह से स्थूल होता है, परन्तु टागें उसकी पतली होती हैं। स्वभाव

से आलसी। ठड तथा खुली हवा को वर्दाश्त नही कर सकता। गर्मी की लहरें आती हैं तो उनके बाद पसीना आ जाता है। मानसिक-लक्षण तो बहुत नही होते, परन्तु किसी-किसी व्यक्ति के प्रति वह घृणा प्रदर्शित करता है। डा० बोरिक 'होम्योपैथिक मैटीरिया मैडिका' मे लिखते हैं कि ऐमोनिया म्यूर के रोगी के रोग के लक्षणो मे वृद्धि की विलक्षणता (Peculiarity) यह है कि उसके भिन्न-भिन्न अगो के रोग बढने का समय भिन्न-भिन्न है। उसके सिर तथा छाती के रोगो के लक्षण प्रात काल बढ जाते हैं, पेट की शिकायतो के लक्षण दोपहर को बढते हैं, त्वचा, ज्वर तथा अन्य अगो के रोगो के लक्षण सायकाल बढते हैं।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६ (इस औषधि की क्रिया दीर्घकालिक—Long-acting—है। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

ऐनाकार्डियम—भिलावा, (ANACARDIUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **स्मरण-शक्ति का एकाएक लोप होना**	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) **रोगी समझता है कि शरीर तथा मन अलग-अलग हैं तथा उसके दो इच्छा-शक्तियां (Two Wills) हैं**	***खाने के बाद रोग मे कमी** ***गर्म पानी से स्नान करने से रोग मे कमी**
(३) **यह अनुभूति कि सब अवास्तविक है**	
(४) **अन्य प्रकार के भ्रम—सब पर सन्देह, कोई पीछा कर रहा है आदि भ्रांतियां**	
(५) **बिना हसी की बात पर हंस देना, हंसी की बात पर सजीदा हो जाना**	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(६) **खानेके बाद पेट-दर्द आदि मे आराम मे ऐनाकार्डियम तथा नक्स की तुलना**	***क्रोध से रोग मे वृद्धि** ***भय से रोग में वृद्धि**
(७) **मानसिक दुर्बलता—परीक्षा से घबराहट**	***ठंड से रोग मे वृद्धि**
(८) **अनिद्रा**	***खुली हवा से रोग में वृद्धि**

(१) **स्मरण-शक्ति का एकाएक लोप हो जाना**—इस औषधि का स्मरण शक्ति पर प्रभाव पडता है। रोगिणी कभी पहिचानती है कि यह उसका बच्चा है, कभी भूल जाती है और अपने बच्चे को पहिचानती नही। डा० गुएरेन्सी का कथन है कि होम्योपैथी के सपूर्ण मैटीरिया मैडिका मे स्मृति-लोप के सबध मे इस औषधि के समान दूसरी शायद ही कोई औषधि हो। जब स्मृति-लोप का लक्षण इतना प्रबल हो तब यह औषधि स्मृति को तो ठीक कर ही देती है, रोगी के अन्य लक्षणो को भी दूर कर देती है। स्मृति-लोप इतना हो जाता है कि वह अपने

वच्चे को ही नही, अपने पति को भी भूल जाती है। कहती है यह वच्चा उसका वच्चा नही, यह पति उसका पति नही।

(२) **रोगी समझता है कि शरीर तथा मन अलग-अलग हैं तथा उसके दो इच्छा-शक्तिया (Two Wills) हैं**—स्वस्थ-मनुष्य को शरीर तथा मन के अलग-अलग होने की अनुभूति नही वनी रहती, परन्तु इस रोगी को हर समय यह ख्याल आता रहता है कि ये दोनो अलग-अलग हैं। शरीर तथा मन के अलग-अलग होने की ही उसे अनुभूति नही होती, उसे यह भी प्रतीत होता है कि उसके भीतर मन के भी दो भाग है, उसकी दो 'इच्छा-शक्तिया' (Wills) हैं। उनमे से एक इच्छा-शक्ति उसे जो-कुछ करने को कहती है, दूसरी उसे करने से रोकती है। वह निश्चय नही कर सकता कि क्या करे। उसके भीतर से उसे एक आवाज़ आती है—यह करो, दूसरी आवाज आती है—यह न करो। उसकी इच्छा है कि दूसरे को मारे, दूसरे के साथ अन्याय करे, परन्तु उसे दूसरी आवाज़ ही अपने भीतर से सुनाई देती है कि ऐसा न करे। क्या करे, क्या न करे, इसका विवाद उसके भीतर चलता रहता है। वैसे तो ऐसा विवाद सव मे चला करता है, भला आदमी अपनी शुभ-इच्छाओ के वल पर वुरी-इच्छाओ को दवा देता है, वुरा आदमी कानून के डर से इन वुरी-इच्छाओ को दवा देता है। परन्तु जव मन इतना वेकावू हो जाय कि वह वुरी इच्छा के चगुल मे ही फस जाय, मन मे विचार-शक्ति ही न रहे, भला क्या है—न यह सोच सके, कानून का डर क्या है—न यह सोच सके, तव रोगी इस औषधि के क्षेत्र मे आ जाता है।

(३) **यह अनुभूति कि सब अवास्तविक है**—रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि जो-कुछ है वह सव अयथार्थ है, अवास्तविक है। वेदान्त की दृष्टि से ऊहापोह करके सैद्धान्तिक-दृष्टि से वह ऐसा नही सोचता, उसे लगता ही ऐसा है कि जो-कुछ दीखता है वह वैसा नही है। पुत्र पुत्र नही है, पति पति नही है।

(४) **अन्य प्रकार के भ्रम—सव पर सन्देह, कोई पीछा कर रहा है आदि भ्रान्तिया**—इस औषधि मे न्यूरेस्थेनिया प्रधान है। रोगी को सव पर सन्देह होता है। चलते हुए वार-वार पीछे देखता है क्योकि उसे शक होता है कि कोई पीछा कर रहा है। लगता है कि एक कन्धे पर शैतान वैठा है, दूसरे पर फरिश्ता।

(५) **विना हंसी की वात पर हस देना, और हंसी की वात पर सजीदा हो जाना**—यह औषधि भ्रमो से इतनी पूर्ण है कि रोगी ऐसी वात पर सजीदा हो उठता है जिस पर सव हस पडें, और जिस पर लोग हसे उस पर सजीदा हो जाता है। उक्त प्रकार के मानसिक लक्षणो मे इस औषधि का उपयोग किया जाता है।

(६) **खाने के बाद सिर-दर्द आदि मे आराम—ऐनाकार्डियम तथा नक्स की तुलना**—अपचन मे प्राय. होम्योपैथ एकदम **नक्स वोमिका** दे देते हैं परन्तु **नक्स** तथा **ऐनाकार्डियम** के अपचन की तुलना कर लेना उचित है।

ऐनाकार्डियम मे पेट जब खाली होता है तब दर्द होता है, खाने से पेट-दर्द हट जाता है, **नक्स** मे जबतक पेट मे खाना रहता है तबतक दर्द होता है। खाना हज्म होने की प्रक्रिया मे २-३ घंटे लगते हैं। **नक्स** तबतक परेशान रहता है, खाना हज्म होने के बाद उसकी तबियत ठीक हो जाती है, **ऐनाकार्डियम** मे खाना हज्म हो जाने के बाद रोगी की तबीयत फिर बिगड जाती है। पाचन-क्रिया के बाद **नक्स** ठीक हो जाता है, **ऐनाकार्डियम** के रोगी के लक्षण तब शुरू हो जाते हैं। दोनो इस बात में एक दूसरे से उल्टे हैं। डा० नैश लिखते है कि उन्होने एक रोगी को जिसका कष्ट पेट के खाली हो जाने पर बढ जाता था **ऐनाकार्डियम** २०० से बिल्कुल ठीक कर दिया। इस लक्षण मे सिर-दर्द मे भी लाभप्रद है।

ऐनाकार्डियम तथा **नक्स** दोनो मे पाखाने की असफल इच्छा (Ineffectual urging) होती है, परन्तु **ऐनाकार्डियम** मे गुदा-प्रदेश की मासपेशियो की पक्षाघात की-सी अवस्था के कारण ऐसा होता है, और **नक्स** मे आतो की अनियमित अग्रगति (Irregular peristaltic movement of bowels) के कारण ऐसा होता है। **ऐनाकार्डियम** मे शौच जाने की इच्छा होती है परन्तु गुदा की मास-पेशियो की अक्रिया के कारण पाखाना नही होता, **नक्स** मे भी शौच जाने की इच्छा होती है परन्तु पाखाना पूरा नही हो पाता, बार-बार थोडा-थोडा होता है। क्योकि **ऐनाकार्डियम** मे शौच नही हो पाता इसलिये आतो मे शौच एकत्रित हो जाने के कारण गुदा-प्रदेश मे डाट लगा-सा अनुभव होता है। इन लक्षणो को ध्यान मे रखते हुए इन दोनो मे भेद कर सकना आसान है।

(७) **मानसिक-दुर्बलता—परीक्षा से घबराहट**—मानसिक-दुर्बलता इस औषधि का चरित्रगत लक्षण है। इस औषधि के मानसिक-लक्षणो के विषय मे हमने जो-कुछ लिखा है उससे स्पष्ट है कि इस औषधि का मन पर विशेष प्रभाव पडता है। इन्ही मानसिक-लक्षणो मे एक लक्षण मानसिक-दुर्बलता (Brain-fag) है। विद्यार्थी मानसिक-दुर्बलता के कारण परीक्षा से भय खाता है। **पिकरिक एसिड** मे भी मानसिक-दुर्बलता का यह लक्षण पाया जाता है। विद्यार्थी देर तक मानसिक-श्रम करने के बाद इतना थक जाता है कि परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होने का उसे भय सताता है। भेद यह है कि **ऐनाकार्डियम** का रोगी ठड को सहन नही कर सकता और **पिकरिक एसिड** का रोगी गर्मी को सहन नही कर सकता। परीक्षा से घबराहट मे निम्न-शक्ति देना ठीक रहता है। **इथूजा** के प्रकरण मे हम पहले लिख आये हैं कि डा० क्लार्क **इथूजा** के पाउडरो को 'फक पिल्स' के नाम से विद्यार्थियो को दिया करते थे।

(८) **अनिद्रा**—रोगी को कई रात अनिद्रा का दौर पडता है। रोगिणी को कुछ दिन तो ठीक नीद आती है, परन्तु फिर नीद न आने का दौर पडता है और कई दिन नीद नही आती। डा० कान्स्टिम ने उक्त लक्षणो मे एक गर्भवती

स्त्री का अनिद्रा का रोग २०० शक्ति की यह औषधि देकर दूर कर दिया था।

(९) शक्ति तथा प्रकृति—६ से २०० शक्ति। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

ऐन्टिमोनियम क्रूडम (ANTIMONIUM CRUDUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) बच्चा अपरिचित व्यक्ति द्वारा छूने या अपनी तरफ ताकने से ही रोने लगता है, युवा का चिड़चिड़ा स्वभाव	लक्षणों में कमी (Better) *खुली हवा में रोग में कमी *गर्म जल में स्नान से रोग में कमी
(२) चांदनी में रोमान्तिक विचार	
(३) जबान पर दूध की तरह का मैला, सफ़ेद लेप	*आराम से रोग में कमी
(४) ग्रीष्म-ऋतु का अतिसार (डायरिया)	लक्षणों में वृद्धि (Worse)
(५) वृद्धावस्था की कब्ज़ियत तथा पतले दस्तों का पर्याय-क्रम—आना-जाना	*अत्यधिक ठंड से रोग बढ़ना *अत्यधिक गर्मी से रोग बढ़ना
(६) बवासीर के मस्सों से आंव आते रहना	*सूर्य या आग की गर्मी से
(७) गठिये का शान्त होकर अन्य रोग में बदल जाना	*शीतल जल में स्नान से *खाने के बाद रोग बढ़ना
(८) तलुओं में गट्टे पड़ने से चलने में दर्द	*खटाई या खट्टी शराब से
(९) त्वचा पर फुन्सियां	*सिर पर पानी डालने से

(१) **बच्चा अपरिचित व्यक्ति द्वारा छूने या अपनी तरफ़ ताकने से ही रोने लगता है, युवा का चिड़चिड़ा स्वभाव**—ये मानसिक-लक्षण बच्चे तथा युवा दोनों में पाये जाते हैं। बच्चा तो इतना चिड़चिड़ा हो जाता है कि अगर कोई अपरिचित व्यक्ति उसकी तरफ देख भी ले तो वह नाराज़गी ज़ाहिर करता है, छूने से तो रो ही देता है। युवा-व्यक्ति का भी स्वभाव उदास, दुःखी रहने का होता है। छोटी-छोटी बात पर दिल को चोट लगती है। युवा-व्यक्ति स्वभाव से चिड़चिड़ा हो जाता है। वह इतना दुःखी रहने लगता है कि जीवन से ही उपराम हो जाता है। आत्म-हत्या करना चाहता है। डा० केन्ट कहते हैं कि इस औषधि में मन की बड़ी खिन्न-दशा उत्पन्न हो जाती है, भयंकर दशा। जीवन के प्रति इच्छा ही नहीं रहती। ऐसे व्यक्ति की जीवनी-शक्ति के केन्द्र में कुछ ऐसी विघटनकारिता उत्पन्न हो जाती है जिसे हटाना कठिन होता है। डा० केन्ट का कहना है कि ऐसे रोगी मेरे पास न आयें—यही मनाया करता हूं। डा० हेरिंग का कहना

है कि इसका विलक्षण-लक्षण (Peculiar symptom) यह है कि रोगी अपने को शूट करके मारना चाहता है। यह विचार उस पर इतना हावी हो जाता है कि इससे छुटकारा पाने के लिये उसे बिस्तर छोड देना पडता है। डा० एलन कहते हैं कि रोगी की डूब कर मरने की इच्छा होती है।

चिडचिडे स्वभाव मे कई अन्य दवायें भी दी जाती है जिनकी **ऐन्टिम क्रूड** से तुलना कर लेना उचित है। वे हैं **ऐन्टिम टार्ट, कैमोमिला, सिना, आयोडियम, सैनिक्यूला** तथा **साइलीशिया**।

(चिडचिडे-स्वभाव की मुख्य-मुख्य औषधिया)

ऐन्टिम टार्ट और चिडचिडा-स्वभाव—**ऐन्टिम** क्रूड मे तो शिकायत का केन्द्र पेट होता है, बदहज़मी होती है, **ऐन्टिम टार्ट** मे शिकायत का केन्द्र फेफडे होते हैं, छाती मे बलग़म की घडघडाहट होती है।

कैमोमिला और चिडचिडा-स्वभाव—**ऐन्टिम क्रूड** मे बच्चा उसकी तरफ ताकने से या उसे छूने से परेशान हो जाता है, परन्तु **कैमोमिला** मे ऐसा नही होता, बच्चे को गोद मे लेकर जल्दी-जल्दी घुमाने से उसे शाति मिलती है, वह रोना-चिल्लाना बन्द कर देता है।

सिना और चिडचिड़ा-स्वभाव—**ऐन्टिम** क्रूड मे बच्चे की ज़बान सफ़ेद, दूध की-सी मैली होती है, **सिना** मे ज़बान बिल्कुल साफ होती है, परन्तु उसके पेट मे कीडे होते हैं, वह नाक को बार-बार खुजलाता है और चिडचिडा होता है।

आयोडियम और चिड़चिडा-स्वभाव—इसमे बच्चा हर समय भूखा रहता है, हर समय कुछ खाने को मागता है, और खाने-पीने पर भी कमज़ोर होता जाता है, हर समय चिल्लाया करता है।

सैनिक्यूला और चिडचिडा-स्वभाव—चिडचिडाहट ज़ाहिर करता हुआ भी अगर पुचकारा जाय, प्यार से उस से बात की जाय, तो बच्चा झट बोलने-हसने लगता है। सोते समय सिर और गर्दन पर पसीना आता है और जाडे मे भी रज़ाई परे फेंक देता है।

साइलीशिया और चिड़चिडा-स्वभाव—इसका सिर और पेट बडा होता है, शरीर सारा कमज़ोर होता है और सिर पर पसीना आता है, सर्दी को बहुत मानता है। इन लक्षणो के साथ चिडचिडाहट जाहिर करता है।

(२) **चादनी मे रोमान्तिक विचार**—**ऐन्टिम क्रूड** के रोगियो मे चाद की रोशनी मे भावोद्रेक हो उठता है। हताश प्रेमियो के चित्त की प्राय ऐसी मानसिक अवस्था हो जाती है। खिडकी से चाद की मीठी-मीठी रोशनी आ रही हो तो उसे देखकर चित्त उद्वेलित हो जाता है, कविता करने को जी करता है। ऐसा रोगी भावाभिभूत होता है। प्रेम का प्रतिफल न मिलने मे निराशा से जो लक्षण

उत्पन्न होते हैं वे नेट्रम म्यूर और ऐसिड फ्रांस मे भी हैं। कभी-कभी चित्त की यह अवस्था उन्माद का रूप भी धारण कर लेती है और रोगी के चित्त-पटल पर चाद की रोशनी का उत्तजक प्रभाव पडता है।

(३) **ज़वान पर दूध की तरह का मैला सफ़ेद लेप**—इस औषधि के विषय मे डा० कैन्ट लिखते हैं कि किसी प्रकार के रोग से भी रोगी क्यो न क्लेश पा रहा हो, उस क्लेश मे पेट का हिस्सा अवश्य होता है। जब भी यह रोगी पेट को खराब कर लेता है, तो उसकी समूची सत्ता क्लेशमय हो जाती है। जिन रोगियो के कष्टो का उद्गम पेट के खराब होने से होता है उन्हें इस औषधि की आवश्यकता होती है। इसकी परख है—ज़बान पर दूध की तरह का मैला तथा मोटा सफेद लेप। इस औषधि का विशेष गुण यह है कि श्लैष्मिक-झिल्ली (Mucous membrane) से सफेद रस वह निकलता है जो विशेष तौर से जिह्वा पर आकर जमा हो जाता है। जिस किसी रोग मे भी इस दवा की आवश्यकता होगी उसमे जीभ पर सफेद लेप अवश्य होगा। बच्चो की पेट की खराबी मे, पेट की खराबी के कारण होने वाले बुखार मे, अपचन के कारण वार-बार उल्टी आने में जीभ का सफेद होना इस औषधि का विशिष्ट-लक्षण (Characteristic symptom) है। जीभ की सफेदी अनेक औषधियो मे है, परन्तु इस औषधि जितनी सफेदी किसी दूसरी मे नही है। अतिभोजन के बाद उल्टी या जी मिचलाना, जो खाया है उसका वैसा ही डकार आना, और फिर जीभ का सफेद लेप—यह सब इस औषधि से जल्दी ठीक हो जाता है।

(४) **ग्रीष्म-ऋतु का अतिसार**—ग्रीष्म-ऋतु मे पेट की खराबी से ऐसे दस्त आने लगते हैं कि पहले ठीक शौच आता है और साथ थोडा-सा पनीला दस्त आ जाता है, फिर थोडी ही देर के वाद दुबारा जाना पडता है, तब कुछ और ठोस शौच और साथ पनीला दस्त आता है। अन्त मे पेट खाली हो जाता है, और मरोड आने लगता है। यह अतिसार डिसेन्ट्री का रूप धारण कर लेता है। यह कुछ ठोस और कुछ द्रव रूप मे आनेवाली टट्टी पेट की खराबी के कारण आती है। इस लक्षण के साथ जीभ की सफेदी की तरफ भी ध्यान दे देना उचित है।

(५) **वृद्धावस्था की कब्ज़ियत तथा पतले दस्तो का पर्याय-क्रम**—वृद्धावस्था मे प्राय पेट की खराबी से पतले दस्त और वाद में कब्ज, फिर दस्त, फिर कब्ज़, इसप्रकार पर्याय-क्रम मे एक-दूसरे के वाद कब्ज और दस्त आते है। यह भी पेट की खराबी मे होता है, और इसमे यह औषधि गुणकारक है।

(६) **ववासीर के मस्सो से आव आते रहना (Mucous piles)**—आववाली ववासीर की यह उत्तम औषधि है। गुदा से निरन्तर आव के निकलते रहने से अन्दर का कपडा खराब हो जाता है जिस से रोगी परेशान रहता है।

(७) **गठिये का शान्त होकर अन्य रोग मे वदल जाना (Gouty**

metastasis)—कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि गठिया एकदम एक रात मे ही शान्त हो जाता है, परन्तु उसके स्थान मे रोगी निरन्तर उल्टी करने लगता है। हाथ-पाव का गठिये का दर्द वदल कर उसके स्थान मे पेट के रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसके वाद जव गठियेवाले पहले लक्षण फिर प्रकट होते हैं तव अपना पहला स्थान वदल देते हैं। ऐसे लक्षणो मे यह औषधि लाभप्रद है।

(८) **पैर के तलुवो मे गट्टे पडने से चलने मे पीड़ा होना**—पैर के तलुवो मे गट्ट (Corns) पड जाते हैं, रोगी के तलुवे असहिष्णु हो जाते हैं। तलुवो की इस असहिष्णुता के 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) के आधार पर कई गठियाग्रस्त रोगी ठीक होते देखे गये हैं। पैर के तलुवो के इन लक्षणो में इसकी निम्न-औषधियो से तुलना की जा सकती है

(पैर के तलुओ के गट्टो में दर्द की मुख्य-मुख्य औषधिया)

बैराइटा कार्ब—पैरो मे पसीना आने के कारण पैर के तलुवो की असहिष्णुता
पल्सेटिला—तलुवे असहिष्णु ही नही पर दर्द भी करते हैं
लाइकोपोडियम—पैर के तलुवे सूज जाते हैं और दर्द करते हैं
लीडम—चलते समय एडी और पैर की अगुलिया दर्द करती हैं
मैडोराइनम—रोगी पैरो से चल ही नही सकता, घुटनो के वल चलता है

(९) **त्वचा पर फुन्सिया**—डा० क्लोटर मुल्लर का कहना है कि त्वचा की फुन्सियो के लिये जो चुमती-सी हैं, खुजली करती हैं और जिन्हे रगडने-घिसने से त्वचा मे कुछ मीठा-मीठा दर्द-सा होने लगता है उसके लिये **ऐन्टिम क्रूड** अद्‌भुत औषधि है।

(१०) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i यह एक विचित्र (Peculiar) लक्षण है कि हूपिग कफ मे वच्चा अगर आग की तरफ देखे तो खासी वढ जाती है, हालाकि आग के सेक से खासी को आराम आना चाहिये।

ii अनेक लक्षण सूर्य के ताप से प्रकट होने लगते है, गर्म अगीठी के सेक से रोग के लक्षण वढ जाते हैं। **व्रायोनिया, ग्लोनांयन, जेल्सीमियम** तथा **नैट्रम कार्व** मे भी ऐसा ही होता है।

iii ठडे पानी से स्नान से भी इसके लक्षण वढ जाते है। डा० नैश लिखते हैं कि अगर रोगी कहे कि जव वह खूव नहाया और खूव तैरा, तव से उसके रोग का श्रीगणेश हुआ, ऐसी हालत मे **ऐन्टिम क्रूड** की तरफ ध्यान जाना उचित है।

iv ठडी हवा से गर्म कमरे मे आने से खासी वढ जाती है। **व्रायोनिया** मे भी ऐसा ही है।

v नकुरे और मुह के किनारे चिटके रहते हैं।

vi नाखून चिटके, खुरखुरे, बदसूरत दीखते हैं, आसानी से टूट जाते हैं।

vii जवानी मे मुटापा आ जाने पर यह दवा लाभ करती है ।

viii प्रेम का बदला न पाने से मानसिक कष्ट अथवा रोग मे यह लाभ-प्रद है ।

ix एक लेखक ने **ऐन्टिम क्रूड** का वर्णन इन शब्दो मे किया है . "Greedy, fat, sentimental, with sore corners to mouth and crippled feet "

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, १२, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly— प्रकृति के लिये है)

ऐन्टिमोनियम टार्ट (ANTIMONIUM TART.)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) फेफड़े मे श्लेष्मा के जमा हो जाने के कारण घड-घड शब्द होना परन्तु उसे निकाल न सकना	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) वमन तथा कमजोरी के कारण निंदासापन होना तथा ठडा पसीना आना (जैसे हैजे आदि मे)	*खासी मे कफ निकलने पर रोगी को आराम महसूस होना
(३) बच्चों का पसली चलना	*बैठने से रोग मे कमी होना
(४) श्वास-रोग मे बिस्तर पर उठकर बैठने से आराम	*खुली हवा से रोग मे कमी होना
(५) मृत्यु-समय की घडघड़ाहट	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(६) ऐन्टिम क्रूड और ऐन्टिम टार्ट की तुलना	*गर्म कमरे मे रोग का बढ़ना
(७) चेचक में यह उपयोगी है	*ठड से रोग का बढ़ना
	*नमी से रोग का बढना
	*लेटने से रोग का बढना

(१) **फेफड़े मे श्लेष्मा के जमा होने से घड-घड शब्द होना परन्तु उसे निकाल न सकना**—फेफड़े मे श्लेष्मा के जमा होने के कारण जब घड-घड शब्द सुनाई देने लगे, कफ भरा हो, परन्तु प्रयत्न करने पर भी वह न निकले, निकले तो अत्यन्त थोडा, बच्चो तथा बूढो के फेफडो की ऐसी अवस्था मे **ऐन्टिम टार्ट** कभी-कभी रोगी को मृत्यु से खीच निकालता है । फेफड़े के हर प्रकार के रोग मे जब छाती मे कफ भरा हो, घड-घड करता हो, चाहे जुकाम हो, ब्रोकाइटिस हो, क्रुप हो, कुक्कर खासी हो, ब्रोको-न्यूमोनिया हो, न्यूमोनिया हो, प्लूरो-न्यूमोनिया हो,

तब यह प्रमुख औषधि का काम करती है। न्यूमोनिया मे खासी का घट जाना उत्तम लक्षण नही है। यह बढती हुई कमज़ोरी को सूचित करता है।

न्यूमोनिया मे ऐन्टिम टार्ट की ब्रायोनिया तथा इपिकाक से तुलना—श्वास-प्रणालिका के शोथ मे, ब्रोकाइटिस, न्यूमोनिया आदि मे शुरु-शुरु मे **ब्रायोनिया**, **इपिकाक** आदि औषधि से काम चल जाता है। सास लेने मे दर्द हो, दर्द की तरफ लेटने से आराम हो, खासी साथ हो, तब **ब्रायोनिया** के लक्षण समझने चाहियें, न्यूमोनिया मे श्लेष्मा के साथ घड-घड शब्द हो और रोगी मे श्लेष्मा को निकालने की ताकत हो, तब **इपिकाक** के लक्षण समझने चाहियें, श्लेष्मा के साथ घड-घड शब्द हो परन्तु रोगी इतना निर्बल हो जाय कि कफ को निकाल न सके, अन्दर ही घड-घड करता रहे, तब **ऐन्टिम टार्ट** के लक्षण समझने चहियें। **ऐन्टिम टार्ट** की अवस्था बाद को आती है जब रोगी अत्यन्त कमज़ोर हो जाता है, कफ को निकाल सकने की ताकत भी नही रहती।

श्लेष्मा न निकाल सकने पर बच्चों मे कैलि सल्फ तथा बूढ़ो मे ऐन्टिम टार्ट—अगर बच्चा सशक्त हो, कमज़ोर न हो गया हो, अगर उसके फेफडो का श्लेष्मा कमज़ोरी के कारण घडघड न करता हो, वह उसे निकाल सकता हो, तब **कैलि सल्फ** उत्तम औषधि है। बूढे लोगो मे जिनका छाती का श्लेष्मा कमज़ोरी के कारण नहीं निकल पाता **ऐन्टिम टार्ट** उपयोगी है क्योकि कमजोरी इसका प्रधान लक्षण है। **एकोनाइट, बेलाडोना, इपिकाक** तथा **ब्रायोनिया** मे रोग प्रबल वेग से आक्रमण करता है, इसलिये एकाएक रोग के वेग से आक्रमण होने पर **ऐन्टिम टार्ट** नही दिया जाता, **ऐन्टिम टार्ट** का रोग धीरे-धीरे, हल्का बुखार, ठडा पसीना, शीत का अनुभव और अत्यत शक्तिहीनता के साथ श्वास नालिका मे श्लेष्मा की घड-घडाहट होना—ऐसा है। यह अवस्था वृद्धावस्था मे विशेष रूप से पायी जाती है।

(२) **वमन तथा कमज़ोरी के कारण निंदासापन होना तथा ठडा पसीना आना (जैसे हैज़े आदि मे)**—एलोपैथी मे **ऐन्टिम टार्ट** वमन की दवा है। यही कारण है कि होम्योपैथी मे अत्यन्त उबकाई तथा वमन मे इसे दिया जाता है परन्तु इस उबकाई तथा वमन के साथ निंदासापन भी होना चाहिये। कमज़ोरी इस दवा का व्यापक-लक्षण है, इसी कमज़ोरी के कारण निंदासापन या निद्रालुभाव उत्पन्न हो जाता है।

उबकाई तथा वमन **इपिकाक** मे भी है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **ऐन्टिम टार्ट** मे वमन हो जाने के बाद रोगी निद्रालु हो जाता है, वमन से उसे आराम मिल जाता है, **इपिकाक** मे कय होजाने के बाद भी जी मिचलाता रहता है, उसे आराम नही मिलता।

हैज़े मे उबकाई, निंदासापन और कमज़ोरी—ये तीनो पायी जाती हैं, इसलिये **ऐन्टिम टार्ट** हैज़े की उत्तम दवा है। हैज़े मे रोगी को वमन के बाद चैन भी

पड जाता है। ऐन्टिम टार्ट मे प्यास का न लगना भी इसका चरित्रगत लक्षण है। हैजे की इस अवस्था मे प्रत्येक वमन के बाद इस औषधि की ३० शक्ति की एक मात्रा देने से रोगी अच्छा हो जायगा।

हैजे मे वेरेट्रम ऐल्बम भी बहुत लाभ करता है। हनीमैन ने जब हैजे के रोगियो को नही देखा था तब इसके लक्षणो को सुन कर उन्होंने सलाह दी थी कि हैजे मे जिसमे कय तथा दस्त आते हो, माथे पर ठंडा पसीना आता हो, शरीर मे ऐंठन होती हो, ऐसी हालत मे वेरेट्रम ऐल्बम विशेष उपकारी होगी। हैजे के लिये उन्होंने तीन दवाओ की ओर संकेत किया था—वेरेट्रम ऐल्बम, कैम्फर और क्यूप्रम। जब कय तथा दस्तो की प्रधानता हो तब वेरेट्रम, जब कय-दस्त के साथ शीतपन की प्रधानता हो तब कैम्फर और जब इसके साथ ऐंठनो की प्रधानता हो तब क्यूप्रम।

न्यूमोनिया मे घडघडाहट के साथ निद्रालुपन—न्यूमोनिया मे पीडित रोगी जब फेफडो मे कफ भर जाने के बाद घडघडाने लगता है, और कमजोरी इतनी हो जाती है कि कफ को बाहर नही धकेल सकता, तब इस घडघडाहट के साथ रोगी मे निद्रालुपन भी आ जाता है। उस समय घडघडाहट और निद्रालुपन—इन दो लक्षणो मे ऐन्टिम टार्ट और ओपियम दोनो औषधियां लक्षित हैं, परन्तु इनमे भेद यह है कि ओपियम मे रोगी अत्यन्त गंभीर निद्रा मे होता है, चेहरा कालिमा लिये हुए लाल, आंखें अधखुली, सांस खर्राटेदार होती है, ऐन्टिम टार्ट मे चेहरा पीला, लालिमारहित, शरीर पर ठंडा पसीना होता है और खर्राटे बहुत ज़ोर से नही निकलते।

(३) **बच्चो की पसली चलना**—बच्चो की पसली चलने मे यह दवा अमृत है। इस रोग मे दवा का व्यापक-लक्षण छाती का घडघड करना तथा निद्रालुपन होना चाहिये। नवजात-शिशु का जब दम घुटना नज़र आये, छाती मे घडघडाहट हो, चेहरा नीला पड गया हो, तब भी यह दवा उपयोगी है।

(४) **श्वास-रोग मे बिस्तर पर उठ कर बैठने से आराम**—सांस की बीमारी मे जब रोगी का दम घुटता हो, फेफडो मे पर्याप्त हवा न पहुँच पाती हो, लेटे रहने से खांसी बढती हो, घडघडाहट हो, श्लेष्मा न निकलता हो, उठ कर बैठने से चैन पडता हो, तब यह दवा देनी चाहिये।

(५) **मृत्यु-समय की घडघडाहट**—मृत्यु निकट आने पर प्राय सांस रुकने लगता है, फेफडो की कफ अन्दर फंसी रहती है, घड-घड शब्द सुनाई पडता है जिसे अंग्रेज़ी मे death rattle कहते हैं। उस समय इस दवा को देने से रोगी की बेचैनी दूर हो जाती है और वह आराम से मरता है।

(६) **ऐन्टिम क्रूड और ऐन्टिम टार्ट की तुलना**—दोनो दवाओ मे बच्चा छूना, बोलना, उसको तरफ ताकना पसन्द नही करता, दोनो दवाओ मे बच्चा

चिडचिडा होता है, दोनो दवाओ मे रोगी खुली हवा पसन्द करता है, बन्द कमरे मे उसका दम घुटता है, जीभ सफेद होती है, परन्तु फिर भी दोनो शीत-प्रधान रोगी हैं, ठडे पानी के स्नान से तकलीफें बढ जाती हैं। इस समानता के बाद इनमे भेद यह है कि **ऐन्टिम क्रूड** मुख्य तौर पर पेट के रोगो मे और **ऐन्टिम टार्ट** श्वास-प्रणालिका के रोगो मे काम आता है।

(७) **चेचक मे उपयोगी**—डा० यूनान ने लिखा है कि जब भी होम्योपैथ किसी रोगी के लक्षण पूछता है तब यह अवश्य पूछता है कि रोगी ने चेचक का टीका कितनी वार लिया है। अगर मालूम पडे कि ऐसा टीका कई वार लिया गया है, तो इस विष का प्रतिशोध करने के लिये **मर्क्यूरियस, थूजा** या **ऐन्टिम टार्ट** दिया जाता है। मामूली चेचक मे यह उपयोगी औषधि है।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण** --

i इस औषधि मे प्यास नही रहती

ii प्रात:काल ३ बजे दम घुटता है, उठ कर बैठने से आराम मिलता है

iii थूक मे खून मिला होता है, और यह थूक बर्तन को चिकट जाता है

iv जैसे **कार्बो वेज** तथा **आर्सेनिक** अन्त समय की दवा हैं, वैसे **ऐन्टिम टार्ट** भी अन्त समय की दवा है, जब रोगी का सास घडघड करने लगता है।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (रोगी नमी मे ठीक नही रहता)

एपिस मेलिफ़िका (APIS MELLIFICA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) किसी अंग मे भी शोथ, सूजन—गुर्दा, आख आदि; शोथ दायीं से बायीं तरफ जाती है	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) शहद की मक्खी के डक मारने जैसा दर्द और जलन	*ठंडी हवा, ठडे पानी से स्नान से रोग का कम होना
(३) प्यास न होना	*कपडा उतार देने से रोगी को अच्छा लगना
(४) मानसिक-आघात से उत्पन्न रोग	
(५) पहले, दूसरे या तीसरे महीने गर्भपात की आशका	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(६) ज्वर मे शीतावस्था मे कपडा उतार फेंकना और शीतावस्था मे प्यास होना	*गर्म कमरे मे रोग मे वृद्धि *आग के सेक से रोग मे वृद्धि *सोने के बाद वृद्धि
(७) ज्वर मे ३ बजे दोपहर जूडी से बुखार	*तीन से छ बजे के बीच वृद्धि

(१) किसी अंग मे शोथ, सूजन—गुर्दा, आख आदि, शोथ दायीं से बायीं तरफ—यह औषधि शहद की मक्खी के डक मे तैयार होती है। इसमे वे लक्षण पाये जाते है जो शहद की मक्खी के काटे मे होते हैं। इस औषधि का पता १८४७ मे चला जब एक १२ वर्ष का बच्चा कई मास से शोथ-रोग से पीड़ित था और एलोपैथी तथा होम्योपैथी दोनो के इलाज से कोई लाभ न हुआ। इस रोगी का इलाज एक होम्योपैथ डा० ई० ई० मारसी कर रहे थे। जब उनके इलाज से कोई फायदा न हुआ तब नर्रागेनसेट फिरदर प्रजाति की एक औरत ने कहा कि इसे शहद की मक्खिया मार कर उसका चूर्ण शहद मे सुबह-शाम दो। ऐसा करने से उस लडके का शोथ-रोग जाता रहा। इसके बाद डा० मारसी ने इस औषधि की परीक्षा होम्योपैथिक प्रणाली—प्रूविंग—मे की, और इस औषधि का होम्योपैथी मे प्रवेश हुआ। शोथ, सूजन इस औषधि का प्रमुख लक्षण है। यह शोथ सपूर्ण शरीर मे भी हो सकती है, शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे भी हो सकती है। सारे चेहरे की शोथ का लक्षण **फॉसफोरस** मे है।

गुर्दे पर प्रभाव—वैसे तो **एपिस** की शोथ सब अगो मे हो सकती है, परन्तु मुख्य तौर पर इसका प्रभाव गुर्दे पर पडता है जिसके कारण शरीर मे जहा-जहा सेल्स हैं वहा-वहा पानी भर जाने के कारण शोथ हो जाती है। उदाहरणार्थ, मुह, जीभ, कनकौआ, आख के पपोटे सब सूज जाते है।

आख मे निचली पलक एपिस मे और ऊपर की पलक कैली कार्ब मे सूजती है—आख की सूजन मे **एपिस** का विशेष लक्षण यह है कि आख के नीचे की पलक सूज कर पानी के थैले जैसी हो जाती है। ऊपर की पलक के सूजने मे **कैली कार्ब** दिया जाता है।

चक्षु-प्रदाह—आख पर **एपिस** के प्रभाव के विषय मे डा० एम० एल० टायलर अपनी पुस्तक 'होम्योपैथिक ड्रग पिक्चर्स' मे लिखती है "एक लडकी ईजिप्ट गई जहा उसे 'चक्षु-प्रदाह' हो गया, आख आ गई। डाक्टरो ने कहा, उसे कुकरे (ट्रैकोमा) की बीमारी है, इसलिये पलको के अन्दर कुकरे छील दिये गये, परन्तु कुछ देर बाद उसे फिर 'चक्षु-प्रदाह' (Ophthalmia) की शिकायत हो गई। वह एक होम्योपैथ के यहा ठहरी हुई थी। उसने आख की टीस मारने के लक्षण पर **एपिस** c m की एक मात्रा दे दी। अगले दिन उसकी आख बिल्कुल ठीक हो गई। क्योकि यह बीमारी ईजिप्ट मे बहुत फैली हुई थी, वह लडकी घर आने पर **एपिस** c m की एक शीशी साथ ले गई और वहा आख की दुखन मे डक जैसी टीस मारने के लक्षणो पर जिस-जिसको भी यह दवा दी वह ठीक हो गया।"

शोथ मे एपिस, आर्सेनिक, एसेटिक एसिड और एपोसाइनम की तुलना—**एपिस** के शोथ मे प्यास बिल्कुल नही रहती, **आर्सेनिक** मे रोगी बार-बार,

थोडा-थोडा पानी पीता है, और पानी की कय हो जाती है। यह कय **एपिस** मे नही है। **ऐपोसाइनम** मे **आर्सेनिक** की तरह पानी और खाना कय हो जाता है, परन्तु उसमे **आर्सेनिक** की बेचैनी और बार-बार प्यास की जगह अधिक प्यास होती है। **ऐसेटिक ऐसिड** मे शोथ के साथ प्यास रहती है, परन्तु आर्सेनिक जैसी बार-बार की प्यास नही, साथ ही शोथ मे दस्त और आव की शिकायत रहती है। इस तुलना को इसप्रकार प्रकट किया जा सकता है

एपिस—प्यास नहीं, कय नहीं, ठडक से आराम, गर्मी से रोग बढता है।

आर्सेनिक—बार-बार प्यास, पानी कय हो जाता है, बेचैनी होती है, गर्म सेक से आराम मिलता है।

ऐसेटिक ऐसिड—प्यास साधारण, दस्त और आव की शिकायत रहती है।

ऐपोसाइनम—प्यास बहुत, पानी और खाना कय हो जाता है।

शोथ दायें से बायें को जाती है—**एपिस** के शोथ की दिशा दायी से बायी तरफ जाने की होती है। अगर मुख पर लाल-लाल फुन्सियो के रूप मे शोथ उभर आये तो वह चेहरे के दायी तरफ शुरु होगा, नाक पर के ऊपर से होकर चेहरे के बायी तरफ चला जायगा। पेट मे शोथ होगी तो दायी तरफ से शुरु होगी, बायी तरफ जायगी। डिम्बकोष का शोथ भी दायी तरफ प्रारभ होगा, जरायु का शोथ भी ऐसे ही दायीं तरफ से चलेगा। जलन, डक मारने की-सी पीडा का प्रारभ दायी तरफ से शुरु होगा। जीभ सूजेगी तो उसका भी दाया भाग बायें की अपेक्षा अधिक सूजेगा।

(२) **शहद की मक्खी के डक मारने जैसा दर्द और जलन**—शहद की मक्खी के काटने से जैसे शोथ हो जाता है, वैसे जहा काटा है वहा काटने का दर्द और जलन भी होती है। जलन मे ठडक से आराम मिलता ही है, इसलिये **एपिस** की शोथ मे रोगी गर्मी सहन नही कर सकता, ठडक चाहता है। **आर्सेनिक** की शोथ और जलन मे रोगी गर्मी पसन्द करता है, **एपिस** की शोथ मे रोगी ठडा पानी लगाना पसन्द करता है।

डक चुभने जैसा दर्द, सूजन, जलन और ठडक से आराम—ये व्यापक लक्षण यदि पित्ती उछलना (Urticaria), चेचक, खसरा (Measles), कारब-कल, कैन्सर, डिम्बकोष की सूजन आदि किसी भी बीमारी मे क्यो न पाये जायें औषधि से इन लक्षणो मे लाभ होगा।

बाहरी त्वचा पर छोटी-छोटी फुन्सिया (Rash)—हम अभी शरीर की आन्तरिक झिल्लियो के प्रदाह के कारण रोगी के बार-बार चीख उठने का जिक्र करेंगे, परन्तु शरीर की बाहरी त्वचा पर भी **एपिस** का प्रभाव है। शरीर पर छोटी-छोटी फुन्सिया हो जाती हैं जिन्हे अग्रेजी मे "रैश" कहते हैं। दीखने को न भी दीखें परन्तु त्वचा पर अगुली फेरने से उन्हें अनुभव किया जा सकता है। शरीर

मे यहा-वहा गाठें पड जाती है, जो कभी प्रकट होती हैं कभी चली जाती हैं। मुख पर की त्वचा पर लाल-लाल पित्ती-सी उभर आती है और कभी-कभी शोथ का उग्र रूप धारण कर लेती है। इन लक्षणो मे एपिस उपयोगी है। त्वचा के शोथ मे जब अगुली से दावाया जाता है तब त्वचा पर दवाने मे गढा पड जाता है।

रह-रह कर रोगी का चीख उठना—मस्तिष्क के रोग मे (मैनेंजाइटिस, इनफेन्टाइल कॉलरा, टाइफॉयड, हाइड्रोसेफेलस) रोगी बेहोशी मे ऐसे चीख उठता है जैसे किसी ने डक मार दिया हो। **एपिस** का जैसे शरीर की त्वचा पर शोथकारक प्रभाव है वैसे अन्त शरीर की झिल्लियो पर जो मस्तिष्क, हृदय, पेट आदि का आवरण करती हैं उन पर भी शोथकारक प्रभाव है और इसीलिये इन अगो के आन्तरिक-शोथ पर रोगी डक मारने का-सा दर्द अनुभव कर चीख उठता है।

(३) **प्यास न होना—एपिस** के शोथ की बीमारी मे प्यास नही लगती। जलन हो और प्यास न लगे—यह एक 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptom) है। शोथ की बीमारी मे प्यास **ऐसेटिक ऐसिड, आर्सेनिक** तथा **ऐपोसाइनम** मे लगती है और प्यास न लगने के कारण इन औषधियो से **एपिस** की पृथक्ता पहचानी जाती है।

(४) **मानसिक-आघात से उत्पन्न रोग**—भय, क्रोध, झुझलाहट, ईर्ष्या, कुसमाचार आदि द्वारा मानसिक-आघात से उत्पन्न रोग मे, विशेषकर इन मनोद्वेगो द्वारा शरीर के दाये भाग के पक्षाघात मे इस औषधि का उपयोग होता है।

युवा का बच्चो की तरह बेमतलब बोलते जाना—गर्भवती स्त्री का गर्भ की अवस्था बढ जाने के बाद बच्चो की तरह बेमतलब निरर्थक बातें बोलते जाना, कभी-कभी कई स्त्रिया या कई रोगी यू ही बेमतलब बडबडाते है, जैसे बच्चे इकले यू ही कुछ-न-कुछ बडबडाया करते है, वैसे निरर्थक बात बोलते जाने मे इस औषधि के विषय मे सोचना चाहिये क्योंकि इसका भी मानसिक-कारण हो सकता है।

(५) **पहले, दूसरे या तीसरे महीने गर्भपात की आशका**—गर्भवती स्त्री के पहले, दूसरे या तीसरे महीने अगर गर्भपात की आशका हो, तो यह औषधि इस खतरे को दूर कर देती है। कभी-कभी दुर्घटनावश या गर्भाशय की कमजोरी के कारण गर्भपात होने की आशका उत्पन्न हो जाती है। कभी ऐसा भी होते देखने मे आया है कि किसी अनाडी द्वारा गर्भपात के लिये अर्गट दे दिया जाता है जिससे गर्भपात की आशका से रोगिणी के प्राण सकट मे पड जाते हैं। यह औषधि ऐसे समयो मे गर्भपात की प्रवृत्ति को रोक देती है।

(६) **ज्वर मे शीतावस्था मे कपडा उतार फेंकना और शीतावस्था मे प्यास लगना**—इस औषधि का 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptom)

यह है कि ज्वर मे शीतावस्था मे जब रोगी को कपडा ढाप लेना सुहाना चाहिये तब सब कपड़े उतार फेंकता है, और शीतावस्था मे जब उसे प्यास नही लगनी चाहिये तब प्यास लगती है, और ताप की तथा स्वेद की अवस्था मे प्यास नही लगती।

(७) **दोपहर ३ बजे जूडी से बुखार आना**—ज्वर के सबंध मे यह भी स्मरण रखने योग्य है कि रोगी को दोपहर ३ बजे सर्दी लगकर बुखार चढता है। इस बुखार मे ज्वर के जिस विलक्षण-लक्षण का हमने अभी उल्लेख किया उसे भी ध्यान मे रखना उचित है। ३ से या ४ से ६ बजे तक ज्वर उग्र रूप धारण करता है। इस समय रोग की वृद्धि होती है।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i गर्मी मे रोग मे वृद्धि और ठंड से रोग को शान्ति इसके हर शोथ मे पायी जाती है।

ii ज्वर मे **एपिस** मे शीतावस्था मे हाथ-पैर गर्म रहते हैं, **बेलाडोना** मे शीतावस्था मे हाथ-पैर ठंडे रहते हैं।

iii नवजात-शिशु के मूत्र रुकने मे **एकोनाइट** की तरह यह भी उपयोगी है।

iv **एपिस** मे मल-द्वार ज़रा-सी हरकत करने से निकल पडता है, चुप पडे रहने पर नही निकलता, **फॉसफोरस** मे मल-द्वार से मल धीरे-धीरे चूता रहता है।

v अगर मधु-मक्खी लट जाय तो उसका प्रतिकार **एपिस** से नही होता, **कार्बोलिक ऐसिड** से होता है। डा० केन्ट लिखते हैं कि जब मधु-मक्खियो के डसने पर रोगी जलन से और दर्द से छटपटा रहा हो, तब **कार्बोलिक ऐसिड** की एक मात्रा से वह कहने लगता है कि उसकी जलती हुई नस-नस मे ठंडक का संचार हो गया। ततैय्ये के काटे पर **आर्निका** का मूल-अर्क लगा देने से सूजन नही होती, दो-तीन घंटे मे दर्द भी जाता रहता है, मधु-मक्खी के काटे पर **अर्टिका** से भी लाभ होता है, मच्छरो के काटे पर **कैन्थरिस** २०० की एक मात्रा दे देने से जलन आदि कष्ट नही होते।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—शोथ-रोग मे निम्न-शक्ति ६ तक, अतिसार और आखो की बीमारी मे ३० तथा ज्वर मे २०० शक्ति। इसकी क्रिया धीरे-धीरे होती है इसलिये दवा जल्दी बदलनी नही चाहिये। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।

ऐपोसाइनम (APOCYNUM)

GENERALS AND PARTICULARS	MODALITIES
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	प्रकृति
(१) शोथ मे सर्दी से शिकायतो का बढ़ना (एपिस तथा ऐपोसाइनम की तुलना)	लक्षणो मे कमी (Better) *गर्मी से रोग मे कमी
(२) रोगी पानी खूब पीता है परन्तु न पेशाब आता है न पसीना और शरीर के कोष्ठ जल-सचय के कारण शोथ से फूलते जाते हैं।	
(३) जलन्धर (Dropsy) रोग मे ब्लैटा ओरियेन्टेलिस एपिस से भी ज्यादा लाभप्रद है	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) बच्चों के सिर मे पानी का सचय (Acute-hydrocephalus)	*ठडी मौसम से रोग में वृद्धि *ठडे पानी से रोग मे वृद्धि
(५) लम्बी लटकनेवाली बीमारी मे शोथ	*कपडा उतारने से रोग मे वृद्धि

(१) **शोथ मे सर्दी से शिकायतो का बढ़ना (एपिस तथा ऐपोसाइनम की तुलना)**—एपिस के विषय मे लिखते हुए हम लिख आये हैं कि शोथ में एपिस तथा **ऐपोसाइनम** की समानता है। इन दोनो मे शोथ के लक्षणो की इतनी समानता है कि अगर 'सर्दी से रोग का बढना'—इस लक्षण को छोड दिया जाय, तो केवल शोथ को देखकर, चिकित्सक पहले **एपिस** देने का यत्न करेगा। परन्तु **एपिस** तथा **ऐपोसाइनम** मे महान् भेद यह है कि **एपिस** का शोथ गर्मी से बढता और ठडक से घटता है, **ऐपोसाइनम** का शोथ ठीक उल्टा गर्मी से घटता और ठडक से बढता है। औषधि का निर्वाचन करते हुए ठडक और गर्मी का कितना महत्व है यह भी इसी से स्पष्ट है। डा० केन्ट का कहना है कि अगर सर्वांगीण तथा व्यापक लक्षणो मे दो औषधिया एक-सी हो, तो देखना होगा कि कौन-सी दवा शीत-प्रधान है, कौन-सी ऊष्णता-प्रधान। सर्वांगीण तथा व्यापक लक्षणो के सामने अन्य सब लक्षण हीन माने जाते है, और अगर सर्वांगीण तथा व्यापक लक्षण एक-समान हो, तो शीत और ऊष्णता के आधार पर औषधि का निर्वाचन होता है। डा० कैन्ट का कहना है The medicines that are similar in generals have to be compared as to heat and cold

(२) **रोगी पानी खूब पीता है परन्तु न पेशाब आता है न पसीना और शरीर के कोष्ठ जल-संचय के कारण शोथ से फूलते जाते हैं**—एपिस का रोगी तो पानी पीता ही नही, परन्तु **ऐपोसाइनम** का रोगी पानी काफी पीता है, फिर

भी उसे पसीना बिल्कुल नही आता, पेशाब भी थोडा ही आता है। उसका शरीर पानी लेता है, निकालता नही। रोगी सोचा करता है कि अगर उसे पसीना आ जाय तो वह ठीक हो जाय, परन्तु पसीना आने का नाम नही लेता। यह सारा पानी जो वह पीता है जाता कहा है? यह पानी उसके शरीर के कोष्ठको मे जमा होता रहता है और इसी मे शोथ हो जाती है। इस शोथ और जल-सचय के साथ रोगी शीत को बर्दाश्त नही कर सकता। यद्यपि यह लक्षण सिर्फ एक लक्षण है, परन्तु क्योकि यह रोगी का सर्वांगीण तथा व्यापक लक्षण है, यह रोगी के 'अहम्'—'मैं'—के विषय मे लक्षण है, 'मेरा' के विषय मे नही, इसलिये इस लक्षण के सामने रोगी के अन्य सब लक्षण फीके पड जाते हैं क्योकि होम्योपैथी मे व्यापक तथा सर्वांगीण (General) का महत्व अन्य सब लक्षणो से अधिक है।

(३) **जलधर-रोग मे ब्लैटा ओरियन्टेलिस एपिस से भी ज्यादा लाभप्रद है**—डा० हेनीज का कथन है कि जलधर (Dropsy) रोग मे जब **एपिस, ऐपोसाइनम,** डिजिटेलिस आदि भी असफल हो जाते हैं, वहा **ब्लैटा ओरियेन्टेलिस** से लाभ होता पाया गया है। **एपिस, आर्सेनिक, एंमेटिक ऐसिड, ऐपोसाइनम** की तुलना हम **एपिस** के प्रकरण मे कर आये हैं। **ब्लैटा ओरियेन्टेलिस** विशेष कर दमे मे दी जाती हैं। इसकी मात्रा २–३ बूद बार-बार देनी होती है।

(४) **बच्चों के सिर मे पानी भर जाना**—शरीर के किसी अग मे भी पानी भर जाना इस औषधि का चरित्रगत लक्षण है, सर्वांगीण, व्यापक-लक्षण। इसी आधार पर 'मस्तिष्कोदक' (हाइड्रोसेफेलस—Hydrocephalus) रोग मे जिसमे बच्चे के सिर मे पानी जमा हो जाता है यह औषधि बडा लाभ करती है।

(५) **लम्बी लटकनेवाली बीमारी मे शोथ**—कई बार बीमारी बहुत लम्बी हो जाती है। बीमारी के लक्षण लटकते रहते हैं, जाने नही पाते। रोगी अत्यन्त निर्बल, क्षीण, रक्तहीन हो जाता है, प्यास बहुत लगती है परन्तु पेशाब बहुत कम आता है, पसीना नही आता, शरीर मे शोथ के लक्षण दीखने लगते हैं। प्राय टाइफॉयड आदि मे जो देर तक ठीक नही होता ये लक्षण प्रकट हो जाते हैं। ऐसी अवस्था मे यह औषधि लाभप्रद है।

(६) **शक्ति**—टिंचर की १० बूद दिन मे तीन बार। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

अर्जेन्टम मेटैलिकम (ARGENTUM MET)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) स्नायु, स्नायु-परिवेष्टन, कुरकुरी हड्डियों, पेशी-बन्धनो पर इसकी क्रिया है	लक्षणो मे कमी (Better) *सिर लपेटने से रोग मे कमी *चलने-फिरने से, गति से रोग मे कमी हो जाना
(२) विद्यार्थियो, विचारको, व्यापारियों की मानसिक थकावट	
(३) (स्वर-लोप) गवैय्यो तथा भाषणकर्ताओं का गला बैठ जाना	
(४) फेफड़े, गले, योनिद्वार, मूत्रद्वार, आख से भूरे रग का स्राव	
(५) सोने पर विजली के धक्के जैसे-से अनुभव से जाग उठना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *बोलने से रोग मे वृद्धि *मानसिक-श्रम से रोग मे वृद्धि *दोपहर को रोग वढना *ठंड तथा नमी से रोग बढ़ना
(६) वहुमूत्र, खुश्क मुख, भरपेट भोजन के वाद फिर भूख, गिट्टो मे सूजन (Diabetes)	
(७) दुर्व्यसनों से नपुसकता तथा स्वप्नदोष	

(१) **स्नायु, स्नायु-परिवेष्ठन, कुरकुरी हड्डियो तथा मांसपेशी-वन्धनो पर इसकी क्रिया है (It acts on nerves, nerve sheaths, cartilages and ligaments)**—स्नायु जिस मार्ग से जाता है उस पर दर्द हुआ करता है। शरीर मे अनेक स्थानों पर कुरकुरी हड्डिया है जिन्हें कार्टिलेज कहते है। इनमे दर्द होता है। जोडो की हड्डियो मे दर्द। इस दृष्टि से जोडो की हड्डियो के गठिये (Arthritic rheumatism) मे यह विशेष लाभप्रद है। कई रोगियो के नाक के भीतर की हड्डी—कार्टिलेज—वढ जाती है जिससे सास लेने मे कष्ट होता है। सर्जन लोग इस हड्डी को काट देते है, परन्तु अर्जेन्टम मेटैलिकम से यह ठीक हो जाती है। जहा-जहा कार्टिलेज वहुत ज्यादा वढ गई हो वहा-वहा इस औषधि का प्रयोग होता है। कमी-कमी आख की पलके ऐसी मोटी हो जाती है कि हड्डी-सी वन जाती हैं। उस रोग मे भी इस औषधि से लाभ होता है।

(२) **विद्यार्थियो, विचारको, व्यापारियों की मानसिक-थकावट**—इस औषधि की विशेषता यह है कि इसका मन के उद्वेगो—प्रेम-द्वेष आदि हृदय के भावों—पर प्रभाव नहीं पडता, परन्तु मानसिक-शक्तियो पर प्रभाव पडता है। उदाहरणार्थ, रोगी की स्मृति-शक्ति तथा विचार-शक्ति का ह्रास विशेष तौर पर पाया जाता है। विद्यार्थियो, विचारको, वहुत पढने-लिखने वालो, व्यापारियों आदि वर्ग जो हर समय दिमाग से काम लेते हैं—इनकी विचार-

शक्ति ऐसे स्तर पर आ गिरती है कि वे ज़रा-सा मानसिक-कार्य करते ही थक जाते हैं, उन्हें चक्कर आने लगता है। जवान आदमी जो चालीस वर्ष का है, मानसिक-दृष्टि से इतना थका लगता है मानो साठ वरस का हो। रुग्ण, दुवले-पतले, थके ए, चिताग्रस्त, जल्दी भूल जानेवाले रोजगारी, विद्यार्थी, पढने-लिखने वाले गो के लिये यह उत्तम है।

(३) (स्वर-लोप) गवय्यो तथा भाषणकर्ताओं का गला बैठ जाना—पर इस औषधि की विशेष क्रिया है। जव गला वैठ जाता है, वोलने से श्वास-का पकी-सी अनुभव होती है, वोलने या गाने से दर्द महसूस होता है, 'कर्ता वोल नही सकता, तव इस औषधि से विशेष लाभ होता है। अगर वह ज़ोर से वोलने का प्रयत्न करे, या विद्यार्थी ज़ोर से पढने लगे, तो इस पके-से गले से खासी आने लगती है। **सेलेनियम** तथा **स्टैनम** मे भी यह लक्षण है।

(४) **फेफड़े, गले, योनिद्वार, मूत्र-द्वार, आख आदि से भूरे रग का स्राव** (Gray secretion)—इस औषधि के लक्षणो मे श्लैष्मिक-झिल्ली के स्थानो से जो स्राव निकलता है उसकी अपनी विशेषता है। वह गाढा, चिकटनेवाला तथा भूरे रग का होता है। छाती से, श्वास-प्रणालिका से, गले से भूरे रग का कफ़ निकलता है, योनि-द्वार से, मूत्र-द्वार से भूरा श्लेष्मा तथा आख से भूरी गीद निकलती है, यहा तक कि ज़ख्मो से भी भूरे रग का पम निकलता है। कभी-कभी अपवाद रूप से यह पीले रग का भी हो सकता है। राजयक्ष्मा-रोग मे या वशानुगत राजयक्ष्मा मे खासने मे भूरे रग का कफ निकला करता है, वहुत ज्यादा खासने से भीतर से कफ छूटता है, वोलने, हसने या गर्म कमरे मे यह कफ बढ जाता है। यह खुश्क कफ जो रोगी को वार-वार खासने से परेशान कर देता है, जिसके पीछे यक्ष्मा की खासी होती है, इस दवा मे ठीक हो जाती है। छाती की यक्ष्मा की इस कमज़ोरी मे **स्टैनम** भी उपयोगी है, परन्तु **स्टैनम** का थूक भूरा न होकर अडे की सफेदी जैसा या पीला-हरा (Like white of an egg or yellowish green) और मीठा होता है। अन्य वातो मे **स्टनम** की **अर्जेंटम मेटैलिकम** से समानता है।

(५) **सीने पर विजली के धक्के जैसे-से अनुभव से जाग उठना**—हनीमैन ने इस औषधि के प्रकरण मे इस वात पर विशेष वल दिया है कि रोगी सोने के लिये जव लेटता है तव ऐसा अनुभव करता है कि उसे सिर से पाव तक विजली का-सा धक्का लगा है। एक वार, दो वार, कभी-कभी सारी रात इसी प्रकार के धक्के लगने के अनुभव से परेशानी मे रात वीत जाती है। अगो मे फडकन, ऐठन होती है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मे भी ऐसा है, परन्तु इस औषधि से भी अनेक रोगी इस लक्षण मे ठीक हुए हैं।

(६) **वहुमूत्र, खुश्क मुख, भरपेट भोजन के बाद फिर भूख लगना, गिट्टो**

मे सूजन (Diabetes)—बहुमूत्र रोग मे जब मुख शुष्क रहता हो, पेशाब बार-बार आता हो, भर पेट भोजन कर लेने के बाद भी रोगी फिर भूखा रहता हो और गिट्टों मे सूजन हो तब यह औषधि लाभदायक सिद्ध होती है।

(७) दुर्व्यसनों से नपुंसकता तथा स्वप्नदोष—हस्त-मैथुन आदि दुर्व्यसनों से रोगी नपुंसक हो जाता है। हस्त-मैथुन के बाद प्रत्येक रात को स्वप्नदोष हो जाता है। इसमे यह दवा लाभ करती है।

(८) रोगी शीत-प्रधान होता है—रोगी सर्दी से बहुत डरता है। गर्म कपड़ा लपेटे रखता है। उसके दर्द गर्म सेक से आराम पाते हैं। सिर पर कपड़ा लपेटने से सिर-दर्द को आराम मिलता है।

(९) इस औषधि के अन्य लक्षण

i इस औषधि का विशेष लक्षण यह है कि दोपहर को ठीक अपने समय पर शिकायतें शुरु होती हैं। दर्द होगा तो दोपहर को ठीक अपने समय पर, सिर-दर्द भी ऐसे ही दोपहर को ठीक अपने समय पर होता है।

ii अधसीसी-दर्द—सिर-दर्द सिर के आधे हिस्से मे होता है, एक तरफ़।

iii इसका एक विशेष लक्षण यह भी है कि पुरुषों मे दायें पोते और स्त्रियों मे बायें डिम्ब-कोश मे कठोरता पायी जाती है।

iv सिर-दर्द धीरे-धीरे शुरू होता है, परन्तु जब अपने शिखर पर होता है तब यकायक एकदम समाप्त हो जाता है। सलफ्यूरिक ऐसिड का सिर-दर्द भी धीरे-धीरे शुरु होता और एकदम हट जाता है। मैग फॉस का सिर-दर्द या कोई-सा दर्द एकाएक आता है, चिर-काल तक बना रहता है, और एकाएक ही चला जाता है। **सलफ्यूरिक ऐसिड** के प्रकरण मे हमने दर्दों के इन लक्षणों को एक-साथ दिया है।

v मृगी का रोगी मृगी के दौर के उतरते ही कूद पड़ता है, जो निकट होते हैं उन्हें मारने लगता है।

(१०) शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

अर्जेन्टम नाइट्रिकम (ARGENTUM NITRICUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सूका हुआ, बुढापे जैसा झुर्रियों-दार क्षीण-शरीर, नीचे का धड दुबला
(२) नीचे से ऊंचे मकानो को और ऊंचाई से नीचे देखने मे डर
(३) किसी बात की इन्तिजार से घबराहट पैदा होना (Anticipatory fear)
(४) कहीं जाने की घबराहट मे दस्त आजाना, मानसिक-श्रम से रोग
(५) मीठा खाने की चाह परन्तु मीठे से पेट खराब हो जाना; हरे, घास सरीखे दस्त आजाना
(६) पेट मे हवा का आधिक्य, अपचन
(७) गले मे फांस की-सी चुभन होना
(८) सीने-पिरोने से आंख पर बोझ पडने से दुखन, आख के रोग, आख आना, कुकरे आदि
(९) दायीं करवट लेटने मे धडकन
(१०) गायको का गला बैठना और गले मे दर्द
(११) पल्सेटिला की तरह यह ऊष्णता-प्रधान रोगी है

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*ठंडी हवा, ठंडे स्नान से रोग मे कमी आना
*खुली हवा से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*घबराहट, इन्तिजार से वृद्धि
*मानसिक-कार्य से रोग मे वृद्धि
*मीठा खाने से रोग मे वृद्धि
*बन्द कमरे मे रोग मे वृद्धि
*भीड, जमघट मे रोग मे वृद्धि
*दायीं करवट लेटने से रोग मे वृद्धि

(१) सूका हुआ, बुढापे जैसा, झुर्रियोदार क्षीण-शरीर, नीचे का धड़ दुबला—इस दवा का रोगी सूका हुआ, दुबला-पतला, जवानी मे बूढे जैसा, क्षीण-शरीर, चेहरे पर झुर्रिया, प्रतिदिन दुबला होता जा रहा होता है। इस रोगी का निचला धड अधिक दुबला हो जाता है। एब्रोटेनम मे भी नीचे के अगो का दुबलापन पाया जाता है, परन्तु इस दवा मे बच्चा मीठा ज्यादा खाता है। सूके के रोग मे अन्य जो दवाइया उपयुक्त हैं उनका हम एब्रोटेनम मे वर्णन कर आये हैं।

(२) **नीचे से ऊंचे मकानो को और ऊचाई से नीचे देखने मे डर**—यह व्यक्ति जब सकडो पर चलता है, तब ऊचे-ऊचे मकानो को देखने मे घबडा जाता है, शरीर कापने लगता है, देह से पसीना छूटने लगता है। इसीप्रकार जब ऊची जगह से नीचे देखता है तब भी घबडाता है। किसी पुल को पार नही कर सकता। ऊची जगह पर बैठे हुए या पुल पार करते हुए सोचने लगता है कि यहाँ से गिर पडना कितना भयानक होगा। कभी-कभी यह विचार उस पर इतना हावी हो जाता है कि वह सचमुच इस ऊचाई से नीचे जा गिरता है। मृत्यु का भय उसे घेरे रहता है। **एकोनाइट** मे भी यह लक्षण है। **एकोनाइट** की तरह यह भी अपनी मृत्यु के समय की भविष्यत् वाणी किया करता है।

(३) **किसी बात की इन्तिजार से घबराहट पैदा होना** (Anticipation)—जब कोई काम करना होता है तो जबतक व्यक्ति काम की इन्तिज़ारी मे रहता है, जबतक काम हो नही जाता, तबतक उसका समय मस्तिष्क की कमज़ोरी के कारण परेशानी मे बीतता है। लडके ने बम्बई से आना है। उसने तार दे दिया कि परसो आ रहा है। अब मा के लिये परसो तक का दिन-रात काटना भारी हो जाता है। उसका जी घबराता रहता है। रात को नीद नही आती। अगर किसी से मिलने जाना है तो जबतक मिल नही लेते तबतक का समय घबराहट मे बीतता है। अगर रेल से यात्रा करनी है तो जबतक रेलगाडी मे बैठ नही जाते तबतक चैन नही पडती। अगर सडक पर किसी से भेट की इन्तिज़ार है, तो जबतक उस आदमी से मुलाकात नही हो जाती तबतक का समय निकालना भारी हो जाता है। घबराहट से पसीना आ जाता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियो को, ज्यो-ज्यो वह निकट आती है, घबराहट बढती जाती है। यह घबराहट (Anticipatory fear) **जेलसीमियम** और लाइको मे भी पायी जाती है।

(४) **कहीं जाने की घबराहट मे दस्त आ जाना**—अगर उसने कही जाना है, किसी शादी-ब्याह मे, सिनेमा देखने, मन्दिर मे पूजा करने, रोज़-मर्रा के बिना किसी अन्य काम को उसे करना है, तो भय और चिन्ता उसे इतना व्याकुल कर देती है कि शौच जाना पडता है। कई लोगो को जब उन्हे व्याख्यान देने जाना होता है तब शौच की हाजत हो जाती है, किसी-किसी को दस्त आ जाता है। ये सब स्नायु-मडल की कमज़ोरी के चिन्ह है। इस औषधि मे मानसिक-श्रम से रोग पाये जाते हैं। उदाहरणर्थ—

मानसिक-श्रम से रोग—मस्तिष्क की इसी कमज़ोरी का परिणाम है कि इस औषधि मे असाधारण मानसिक-श्रम से, या देर तक मानसिक-कार्य करते रहने से कई रोग हो जाते हैं। उन्हें यह दवा दूर कर देती है। मानसिक-श्रम से मन की थकान हो जाती है। व्यापारियो, विद्यार्थियो तथा मानसिक कार्य करने

वालो, सिनेमा के एक्टरो आदि के लिये जिनका मन उत्तेजित रहता है, यह दवा उपयुक्त है। उन्हे सर्वांगीण-थकान, कमज़ोरी, सुन्नपन, पक्षाघात, हृदय की धडकन, कम्पन आदि स्नायविक-रोग हो जाते हैं, पेट मे गैस भर जाती है, खाना हजम नही होता। ऐसे रोगी इस औषधि से, अगर अन्य लक्षण समान हो, तो लाभ उठाते हैं।

(५) **मीठा खाने की चाह परन्तु मीठे से पेट खराब होजाना; हरे, घास सरीखे दस्त आजाना**--इस रोगी को मीठे की अत्यन्त चाह होती है, उसे मीठे का कीडा समझिये, परन्तु मीठा उसे नुक्सान पहुचाता है। वह मीठा चाहता है परन्तु मीठा उसे नही चाहता। मीठा खाने से पेट मे हवा भर जाती है, खट्टी डकारें आने लगती हैं। वह मीठे को पचा नही सकता, दस्त आने लगते है। मीठे का इस रोगी पर इतना खराब प्रभाव है कि माता अगर मिठाई की शौकीन होगी, तो उसके दूध से दूध पीते बच्चे को दस्त आने लगेंगे। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम, मर्क्यूरियस, कैमोमिला,** और **आर्सेनिक** मे घास सरीखे हरे दस्त आते है। डा० कैन्ट लिखते है कि शुरु-शुरु मे जब उन्होने प्रेक्टिस शुरु की, तब वे दूसरो की तरह चालू दवायें दिया करते थे। एक बच्चे को हरे दस्त आते थे, उन्होंने उसे **मर्क, आर्स, कमोमिला** आदि दिया जो घास सरीखे हरे दस्तो मे दिये जाते हैं, परन्तु किसी दवा से दस्त बन्द न हुए। अन्त मे उन्होने मा से पूछा—आप मीठे की शौकीन तो नही ? मा ने कहा—नही, मैं मीठा नही खाती, परन्तु उनके पास बैठे उनके पति बोल उठे मैं जो तुम्हारे लिये रोज एक पौण्ड मिठाई लाता हू वह कौन खा जाता है ? अस्ल मे, बच्चे की मा कसकर मिठाई खाती थी। उसीका असर था कि बच्चे का पेट खराब हो गया था। बच्चे को **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** की कुछ मात्राए दी गई और वह झट ठीक हो गया। जब रोगी कहे कि मीठे से उसे दस्त आ जाते है या कोई बीमारी हो जाती है, तब यह नही समझना चाहिये कि उसका रोग केवल पेट का रोग है। मीठा खाना और उससे अस्वस्थ हो जाना एक 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) है, और रोगी की परीक्षा करते हुए दस्तो की तरफ ध्यान न देकर इस सर्वांगीण, व्यापक-लक्षण पर ध्यान देना चाहिये। जब रोगी कहे कि वह अमुक चीज़ नही खा सकता तो यह भी उसका 'व्यापक-लक्षण' है।

(६) **पेट मे हवा का आधिक्य, अपचन**--पेट मे हवा होना इस औषधि के प्रमुख लक्षणो मे है। पेट मे हवा गडगडाती है जिसे रोगी निकाल नही पाता। जब अन्त मे हवा निकलती है तब बहुतायत मे निकलती है और निकलते हुए पडपडाहट का शब्द होता है। हवा से पेट ऐसे फूल जाता है मानो फट जायगा। हवा के इस लक्षण के कारण रोगी अपचन का शिकार रहता है। **अर्जेन्टम** के रोगी के पेट मे दर्द होता है। पेट मे किसी एक स्थान से उठकर दर्द पेट मे

चारों तरफ जाता है। यह दर्द धीरे-धीरे से उठता है और धीरे-धीरे ही कम हो जाता है। प्राय यह पेट-दर्द आइस क्रीम आदि ठडी वस्तुएँ खाने से हुआ करता है। जब यह दर्द बहुत बढ जाता है तब रोगी लेसदार श्लेष्मा को वमन कर देता है। रोगी को ज़ोर-ज़ोर की डकारें आती हैं। अगर इन लक्षणो पर यह दवा दी जाय, तो पेट की शोथ तथा पेट का अलसर भी ठीक हो जाता है। अगर रोगी मीठा खाता हो, और तब ये उपद्रव उत्पन्न हो, तो **कार्बो वेज, चायना, लाइकोपोडियम** की अपेक्षा इस औषधि से अधिक लाभ होगा। यह समझ रखना चाहिये कि पेट के अफारे तथा वायु मे सिर्फ उक्त तीन दवायें ही उपयोगी नही हैं, **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** पेट मे हवा के आधिक्य तथा अपचन की बीमारी मे लक्षण-समष्टि को देखते हुए किसी से कम नही है।

(७) **गले में फास की-सी चुभन**—इस औषधि मे गले की शोथ के लक्षण के साथ निगलते समय गले मे फास की-सी चुभन का होना पाया जाता है। यह लक्षण **हिपर** तथा **नाइट्रिक ऐसिड** में भी है, अन्तर यह है कि **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** ऊष्णता-प्रधान है, ठडा कमरा, ठडी हवा पसन्द करता है, और निगलने मे भी ठडा पेय चाहता है, **हिपर** गर्म चीज़ पीना चाहता है, गर्म कपडे से अपने को ढके रहता है, ठडक से डरता है, ठडक मे बिस्तर से हाथ बाहर नही निकाल सकता। गले मे ऐसी चुभन होती है जैसे मछली की हड्डी अटकी हो। गले मे फास की-सी चुभन कई दवाइयो मे है परन्तु सब मे प्रधान ये तीनो दवायें हैं। अगर गले मे पुराना अलसर हो, तो **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** बहुत उपयोगी औषधि है। गले की खराश, दर्द, गाढा कफ जिसे बार-बार खखारना पडता है—इसमे है।

(८) **सीने-पिरोने से आख पर बोझ पडने से दुखन, आख के रोग, आंख आना, कुकरे आदि**—स्त्रिया सीने-पिरोने मे आख पर बहुत ज़ोर देती हैं, इस से आख पर बोझ पडता है, दुखन होने लगती है। छोटे-छोटे बारीक अक्षरो को पढने से भी आखें थक जाती हैं। ऐसी अवस्था मे इस औषधि से लाभ होता है। रोगी पढते समय पुस्तक को पास से न देखकर बूढों की तरह दूर से ठीक देख सकता है।

आख की दुखन के विषय मे डा० नैश ने एलन एण्ड नॉरटन का निम्न उद्धरण दिया है "**अर्जेन्टम नाइट्रिकम** का सब से बडा लाभ आख आ जाने मे है, जब आख लाल हो जाती है और उसमे से गीद इकट्ठी होकर निकलने लगती है। हमने अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस और हस्पताल मे इस औषधि की ३० या २०० शक्ति की मात्रा से सभी रोगी ठीक कर दिये। आख की भीतरी सूजन, ज़बर्दस्त लाली, आख से पस का प्रवाह, आख मे धुध का आ जाना—किसी प्रकार के भी आख से कष्ट मे इस दवा से तुरन्त लाभ होता है। इन

रोगियो मे कोई आभ्यतर लक्षण नही थे, सिर्फ आख के लक्षण थे और उन सब मे इसमे लाभ हुआ।"

एलोपैथ आख के कुकरो को सिलवर नाइट्रेट से जला देते हैं, परन्तु इससे रोग ठीक नही होता। ऐसे रोगियो को शक्तिकृत इस दवा की कुछ मात्रायें देने से रोग समूल नष्ट हो जाता है।

छोटे बच्चो की आख आ जाने मे भी इस दवा से लाभ होता है।

आँख आने मे बेलाडोना, पल्सेटिला, रस टॉक्स, मर्क सॉल और युफ्रेशिया से इसकी तुलना—**बेलाडोना** की आख की सुर्खी बहुत स्पष्ट होती है, बिलकुल लाल, **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** की सुर्खी मे आख की सफेदी पर दाने-दाने पाये जाते हैं। **अर्जेन्टम** और **पल्स** दोनो मे आख पर ठडक से आराम मिलता है, दोनो मे आख से गाढा मवाद निकलता है। **अर्जेन्टम** का रोगी पतला-दुबला, **पल्स** का रोगी हृष्ट-पुष्ट होता है। **रस टॉक्स** की आख की सूजन में आखें बन्द रहती हैं, पलको को दबाकर खोलने से गर्म पानी निकलता है, **युफ्रेशिया** मे ऐसी ही आखें होती हैं परन्तु पलको को दबाकर खोलने से गर्म पानी और मवाद दोनो निकलते हैं। **मर्क सॉल** की आख आने मे गर्म सेक से आराम मिलता है।

(९) **बायीं करवट लेटने मे धड़कन**—ऐसी दवायें तो अनेक हैं जिनमे बायी करवट लेटने मे रोगी को कष्ट अनुभव होता है, ऐसा लगता है कि हृदय की धडकन बढ गई है। हृदय बायी तरफ है इसलिये ऐसा होना स्वाभाविक है। **फॉसफोरस** का रोगी बायी तरफ नही लेट सकता, हृदय धक्-धक् करने लगता है। परन्तु ऐसी दवायें इनी-गिनी हैं जिनमे दायी तरफ लेटने से रोगी धडकन अनुभव करे। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मे यह 'विलक्षण-लक्षण' (Strange, rare, peculiar) लक्षण पाया जाता है। यह विलक्षण-लक्षण **एलूमेन, बैडियागा, कैलमिया, कैलि नाइट्रिकम, लिलियम टिग, प्लैटिना** और **स्पंजिया**—इन्ही मे है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** का यह इतना प्रबल लक्षण है कि इसे इस औषधि का 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) कहना उचित है। यह हृदय से सबध रखनेवाला लक्षण है इसलिये इसका बडा महत्व है। रोगी कहता है कि जब वह दाईं करवट लेटता है तब सिर से पैर तक धडकन होने लगती है।

(१०) **गायकों का गला बैठना और गले मे दर्द**—गला बैठ जाना और गायको का इस वजह से गा न सकता **अर्जेन्टम मेटैलिकम** और इस औषधि मे, दोनो मे है, परन्तु इस शिकायत मे **मेटैलिकम** का अधिक प्रयोग किया जाता है।

(११) **पल्सेटिला की तरह ऊष्णता-प्रधान रोगी है**—**अर्जेन्टम मेटैलिकम** शीत-प्रधान और **नाइट्रिकम** ऊष्णता-प्रधान है। यह औषधि **पल्सेटिला** की तरह ठडी हवा पसन्द करती है। ठडा पानी, आइस क्रीम की शौकीन! गर्म कमरे मे दम घुटता है, दरवाजे और खिडकिया खोल देने को जी चाहता है। सभा-

सोसइटी मे जहा भीड-भडक्का हो, सास लेना कठिन हो, वहा यह रोगी नही जा सकता।

(१२) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

i **चक्कर** (Vertigo)—ऊची अट्टालिकाओं को देखने मे चक्कर आ जाता है, रोगी कमजोरी अनुभव करता है, और कापता है। कमजोरी, कापना, चक्कर आदि लक्षण **जेलसीमियम** मे भी पाये जाते हैं, परन्तु अगर सब लक्षण समान हो तो हाल की चक्करो की बीमारी मे **जेलसीमियम** और चक्करो की पुरानी बीमारी मे **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** देना उपयुक्त है।

ii अधसीसी दर्द (Hemicrania)—अधसीमी के दर्द के लिये यह अत्युत्तम औषधि है। रोगी यह अनुभव करता है कि सिर फैल गया है, बहुत ज्यादा बडा हो गया है। सिर को लपेटने से रोगी को आराम मिलता है।

iii रोगी अनुभव करता है कि हर बात मे देरी हो रही है। सब काम जल्दी-जल्दी करना चाहता है। चलने मे चलने की जगह भागा जाता है।

iv दिन-रात मूत्र यू ही निकलता रहता है, **कॉस्टिकम** मे भी यह लक्षण है।

vi सभोग के समय उत्तेजना जाती रहती है। **एगनस, कलेडियम, सिलेनियम** मे भी ये लक्षण हैं।

(१३) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ३०, २०० (शिशु की आख आने मे २०० या १००० शक्ति की मात्रा पानी मे डाल कर आख के ऊपर बाहर से रूई मे भिगो कर लगाने से लाभ होता है जब कि एलोपैथिक सिलवर नाइट्रेट से भी लाभ न होता हो)। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।

आर्निका मौन्टेना (ARNICA MONTANA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) चोट द्वारा शरीर मे कुचले जाने का-सा अनुभव होना (Bruised feeling)	लक्षणो मे कमी (Better) *सिर नीचा करके लेटना
(२) किसी भी पुराने रोग की शुरुआत चोट लगने से होना	*अग फैला कर लेटना लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(३) बिस्तर का कठोर अनुभव होने के कारण करवटें बदलते रहना	*शरीर पर चोट या रगड़ *खाना
(४) टाइफॉयड मे आर्निका के लक्षण	*शारीरिक या मानसिक
(५) गठिया रोग मे आर्निका के लक्षण	आघात
(६) गर्भावस्था तथा प्रसव के बाद आर्निका से लाभ	*शारीरिक-श्रम *मोच
(७) किडनी, ब्लैडर, लिवर, न्यूमोनिया मे आर्निका का उपयोग	*हिलना-डुलना *वृद्धावस्था

(१) चोट द्वारा शरीर मे कुचले जाने का-सा अनुभव (Bruised feeling)—चोट लगने मे सबसे पहले आर्निका की तरफ ध्यान जाता है। चोट के कारण ऐसा अनुभव होता है कि सारा शरीर कुचला गया है, शरीर को हाथ लगाने से ही दर्द होता है। ऐसा अनुभव सारे शरीर मे भी हो सकता है, शरीर के किसी अग मे भी हो सकता है। रोगी किसी को अपना अग छूने नही देता। कुचले जाने या चोट के सबध मे आर्निका के अतिरिक्त निम्न दवाओ का तुलनात्मक विवेचन उपचार के लिये लाभप्रद है

(चोट, घाव तथा क्षति की मुख्य-मुख्य औषधियाँ)

कोनायम—स्तन, अडकोश आदि कठोर ग्रन्थियों के कुचले जाने पर उनमे गाठ पड जाना।

हाइपेरिकम—इसे 'Arnica of nerves' कहा जाता है। सूई, पिन, फाम आदि लगने या पशु एव कीट के दन्त-क्षत से स्नायु (Nerve) को आघात पहुचने तथा उसमे दर्द होने पर।

ऐनाकार्डिप्रम—जब मास-पेशियो के बधको (Tendons) मे कुचलने सरीखा दर्द हो।

सिमफाइटम—हड्डियो पर लगी चोटो पर, टूटी हड्डियो को जोड देता है (कैल्केरिया फॉस), जहा हड्डी टूटी हो उस स्थान पर दर्द, ठूठ मे पीडा दूर करता है। बच्चे की मुट्ठी से मा की आख पर चोट लगे तो ठीक कर देता है।

लीडम—सूआ, कील आदि चुभने पर। **हाइपैरिकम** और **लीडम** लगभग समान हैं।

रस टॉक्स—प्रत्येक मास-पेशी मे कुचलन-का-सा दर्द जो चलना-हिलना शुरु करने के समय पीडा देता है, परन्तु गति शुरु होने पर दर्द दूर हो जाता है। पसीना आते समय भीगने से ऐसा दर्द हो जाता है।

फाइटोलैक्का—सिर से पाव तक स्पर्शासहिष्णुता (Soreness), मास-पेशिया इतनी दर्द करती हैं कि 'आह' निकल पडती है।

बैप्टीशिया—रोगी बिस्तर पर जिस अग की तरफ भी लेटता है, ऐसा लगता है कि पलग उधर ही कठोर है, उधर ही के अग मे कुचलन का-सा दर्द होने लगता है।

रूटा—शरीर का प्रत्येक अग जिस पर उसका बोझ पडता है कुचला-सा अनुभव होता है, शरीर के किसी भाग पर भी बोझ नही डाल सकता—इतना दर्द होता है।

चायना—शरीर की हर मास-पेशी मे, जोडो मे, हड्डियो मे, हड्डियो के परि-वेष्टन मे, मेरु-दड मे, त्रिकास्थि मे, घुटनो मे, जाँघो मे कुचलन सरीखा दर्द होता है।

आर्निका—चोट लगने से दर्द। अन्य औषधियो के दर्द मे चोट लगना ही विशेष कारण नही है, इसमे यह विशेष कारण है।

स्टेफिसैग्रिया—सर्जन के शुद्ध यत्रो से सफाई से काट-छाट या ऑपरेशन के बाद यह घाव को जल्दी ठीक कर देता है।

उक्त औषधियो मे एक-दूसरे से अन्तर को ढूढना होगा। वह कैसे ढूढें ? उदाहरणार्थ, टाइफॉयड ज्वर मे **आर्निका** और **बैप्टीशिया** मे कुचलन की पीडा है, दोनो मे बिस्तर कडा अनुभव होता है, दोनो अर्धस्वप्नावस्था मे होते है, दोनो को ऊघ से जगाना कठिन है, दोनो की जीभ पर काली रेखा होती है। दोनो का भेद कैसे किया जाय ? अगर रोगी बिस्तर पर पासे पलटता है और कहता है कि वह अपने को बटोर रहा है, उसे लगता है कि वह बिखरा पडा है, मूत्र तथा पसीना अत्यन्त बदबूदार है, तब उसे **बैप्टीशिया** देना होगा, अगर मूत्र तथा मल अपने-आप निकल जाते हो, तब **आर्निका** देना होगा। अगर कुचलन की वेदना का केन्द्र गला हो तो **फाइटोलैक्का**, अगर यह पीडा भीग जाने से हुई हो, तो **रस टॉक्स**, अगर हड्डी के परिवेष्टन के आघात से पीडा हो तो **रूटा** देना **आर्निका** और **रस टॉक्स** से बेहतर होगा। डा० नैश का कहना है कि आख पर जोर पडने से सिलाई करनेवाली लडकियो के आख के दर्द को उन्होने **रूटा** से ठीक कर दिया। उनका कथन है कि **रूटा** का अस्थि-परिवेष्टन (Periosteum) के साथ, **कलैंडुला** का चोट लग कर फटने और छितर-बितर हो जानेवाले ज़ख्म के साथ,

स्टैफिसैग्रिया का छुरी या अस्तुरा जैसे तेज औज़ार से हो जानेवाले घाव के साथ, **रस टॉक्स** का मिचकोड के साथ और **आर्निका** का कोमल अगो के कुचले जाने के साथ विशेष सवध है, और इन सवधो को दृष्टि मे रखकर ही दवा का निर्वाचन होना चाहिये। **आर्निका** देने के लिये सिर्फ चोट लग गई है—इतना ही काफी नही है। टूटी हड्डियो (Fracture) को जोडने मे **सिमफ़ाइटम** अद्‌भुत है।

(२) **किसी पुराने रोग की शुरुआत चोट लगने से होना**—अगर कोई पुराना रोग चोट लगने से शुरु हुआ हो, चाहे कितने ही वर्ष चोट लगे क्यो न वीत गये हो, वह रोग आर्निका से दूर हो जायगा। उदाहरणार्थ, चोट लगने के वाद किसी को मृगी, ऐंठन, हृदय की धडकन, नकसीर, गठिया आदि कोई रोग हो गया हो, तो **आर्निका** की तरफ ध्यान देना चाहिये। जिन लोगो के शरीर पर किसी शारीरिक घाव का प्रभाव वना रहे, चाहे वह घाव भी कितना ही साधारण क्यो न हो, उन्हें **आर्निका** से आराम आ जाता है।

(३) **विस्तर का कठोर अनुभव होने के कारण करवटें वदलते रहना**—रोगी के सारे शरीर मे दर्द होता है, ऐसा दर्द जैसा चोट लगने पर होता है। रोगी जिस तरफ भी लेटता है उसे ऐसा अनुभव होता है कि विस्तर वहुत कठोर है, सख्त है, और इस कारण वह मुलायम जगह ढूढने के लिये करवटें वदलता रहता है।

(४) **टाइफॉयड मे आर्निका के लक्षण**—सविराम (Intermittent तथा अविराम (Remittent) ज्वर मे जव टाइफॉयड के-से लक्षण प्रकट होने लगें, जव जीभ चमकदार हो जाये, दातो और होठो पर दुर्गन्धयुक्त मल जमने लगे, जव जी वैठता जाय और सपूर्ण शरीर मे कुचले जाने की-सी पीडा का अनुभव हो, तव **आर्निका** देने से टाइफॉयड की तरफ जाने से रोगी वच जाता है। टाइफॉयड मे **आर्निका** तथा **वैप्टीशिया** के लक्षण एक-से हो जाते हैं, परन्तु दोनो मे अन्तर है। हम अभी लिख आये है कि दोनो मे सपूर्ण शरीर मे कुचले जाने का-सा दर्द होता है, दोनो मे विस्तर कठोर प्रतीत होता है, दोनो मे रोगी वार-वार करवटें वदलता है, परन्तु अन्तर यह है कि **वैप्टीशिया** का रोगी वेहोशी की दशा मे प्रश्न का उत्तर समाप्त करने से पहले ही या सो जाता है, या वेहोश हो जाता है, **आर्निका** का रोगी वेहोशी की दशा मे प्रश्न पूछने पर उसका सही-सही उत्तर दे देता है और फिर सो जाता है। इसके अतिरिक्त **वैप्टीशिया** का रोगी वार-वार करवटे वदलता है और पूछने पर कहता है कि उसके शरीर के भाग इधर-उधर विखरे पडे हैं, उन्हे वह वटोर रहा है, **आर्निका** का रोगी भी करवटें वदलता है परन्तु उसका कारण विस्तर का सख्त होना है। **वैप्टीशिया** के रोगी के मल-मूत्र से अत्यन्त वदबू आती है, **आर्निका** का रोगी अनजाने मलत्याग कर देता

है। इस दृष्टि से आर्निका के अगर लक्षण हों तो यह टाइफायड के लिये एक प्रसिद्ध तथा लाभप्रद औषधि है।

(५) गठिया रोग में आर्निका के लक्षण—आर्निका का गठिया रोग में आधारभूत लक्षण कुचले जाने (Soreness) का अनुभव है। पुराने गठिया में रोगी को जोड़ों में नाजुकपन (Sensitiveness) का अनुभव होता है। वृद्ध दादा जी जोड़ों में दर्द अनुभव करते बैठे हैं कि उनका पोता उनकी तरफ उनसे खेलने को लपकता आता है। वे दूर से ही कहते हैं नन्नू, इधर मत आना, उन्हें डर है कि वह उनके कन्धे पर चढ़कर उनके शरीर को जो पहले से ही गठिया के दर्द से पीड़ित है और दुखा देगा। उन्हें आर्निका की एक मात्रा दे दी जाय, तो वे बड़े मजे से अपने पोते को कन्धे पर चढ़ा कर भागते फिरेंगे। गठिया में कुचले जाने का-सा अनुभव आर्निका दूर कर देता है।

(६) गर्भावस्था तथा प्रसव के बाद आर्निका से लाभ—गर्भावस्था में माता के जरायु तथा कोख में नाजुकपन आ जाता है और गर्भस्थ-भ्रूण के इधर-उधर से हिलने-जुलने से भीतर दर्द-सा अनुभव होने लगता है, रात को नींद नहीं आती। इस दशा में आर्निका की २०० शक्ति की एक मात्रा से दर्द शान्त हो जायगा। इसीप्रकार प्रसव के बाद आर्निका की उच्च-शक्ति की एक मात्रा अवश्य दे देनी चाहिये, इससे प्रसव के समय यन्त्रादि के प्रयोग से सेप्टिक होने का डर नहीं रहता। प्रसव के बाद माता को मूत्र न आने पर भी आर्निका उपयोगी है। नवजात-शिशु को मूत्र न आने पर एकोनाइट से लाभ होता है।

(७) किडनी, ब्लैडर, लिवर, न्यूमोनिया में आर्निका का उपयोग—यद्यपि औषधि की परीक्षा (Proving) से आर्निका से कभी न्यूमोनिया नहीं हुआ, तो भी अगर न्यूमोनिया में भी कुचले जाने का-सा अनुभव हो, तो आर्निका ही औषधि है। यह स्मरण रखना चाहिये कि औषधि की परीक्षाओं में परीक्षा को इस हद तक नहीं पहुंचाया जाता जहां विनाशकारी रोग उत्पन्न ही हो जाय। उदाहरणार्थ, परीक्षण करते हुए इस हद तक नहीं पहुंचते कि टी० बी० हो जाय, अल्सर या कैंसर हो जाय, न्यूमोनिया हो जाय। ये रोग जिस प्रक्रिया में से गुजरते हैं, और इस प्रक्रिया में से गुजरते-गुजरते जिसप्रकार ये घातक रोग हो जाते हैं, अगर प्रूविंग में वही प्रक्रिया पायी जाय, तो समझ लेना चाहिये कि इस प्रूविंग को अगर बीच में ही न रोक दिया जाता तो घातक रोग अवश्य उत्पन्न हो जाता। इसी आधार पर औषधि का गुण समझ लिया जाता है। अगर, गुर्दे, मूत्राशय, यकृत् आदि के रोग में शरीर में शोथ के साथ संपूर्ण शरीर में कुचले जाने की अनुभूति हो, तो आर्निका अवश्य लाभ करेगा। होम्योपैथी में रोग का इलाज नहीं होता, रोगी का इलाज होता है, रोग का नाम भले ही कुछ क्यों न हो। रोग का नाम जानना इलाज में बाधक हो सकता है क्योंकि उस अवस्था में

चिकित्सक इनी-गिनी, रटी-रटाई दवाओ के इर्द-गिर्द ही चक्कर काटता रहता है, और लक्षणो के अनुसार जो औषधि सूचित हो रही हो उसे छोड बैठता है।

(८) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i **आर्निका, रस टॉक्स, कॅलकेरिया का 'त्रिक' का सबध**—चोट मे, आहत होने पर, कुचले जाने के अनुभव पर **आर्निका** ही प्रथम श्रेणी की औषधि है, परन्तु उसके बाद जब कुचले जाने की अनुभूति हट जाती है और मास-पेशियो की शिथिलता की अनुभ्ति मात्र रह जाती है, तब बची हुई कमज़ोरी को **रस टॉक्स,** दूर करता है। अगर तब भी कमज़ोरी दूर न हो, तब **कॅलकेरिया कार्ब** देने की ज़रूरत पडती है, परन्तु ये तीनो दवायें एक ही दिन नही देनी चाहिये। प्रत्येक दवा को पर्याप्त समय देना चाहिये, तब अगर कमज़ोरी दूर न हो तवइ स क्रम को सोचना चाहिये। होम्योपैथी मे इस प्रकार के अनेक 'त्रिक' (Triads) है जिनका वर्णन हमने **कॅली सल्फ** मे किया है।

ii **'विशेष-लक्षण' (Peculiar symptom)**—ज्वर मे देखने मे आता है कि **आर्निका** के रोगी का सिर तथा शरीर का ऊपरी भाग गर्म होता है और हाथ-पैर तथा नीचे के भाग ठडे होते हैं।

iii **अपेन्डिसाइटिस**—अगर चिकित्सक को **ब्रायोनिया, रस टॉक्स, बेला-डोना और आर्निका** का पूरा-पूरा परिचय हो, तब रोगी को सर्जन के पास जाने की ज़रूरत नही पडती। यह अवश्य है कि रोग का बार-बार आक्रमण न होता हो।

iv. **मानसिक लक्षण**—रोगी किसी को अपने पास नही आने देना चाहता जिसके दो कारण हैं। पहला तो यह कि वह किसी से बातचीत नही करना चाहता, और दूसरा यह कि उसका शरीर कुचले जाने के दर्द की अनुभूति से इतना व्याकुल होता है कि किसी के भी छू जाने से डरता है। वह किसी से बात तो इसलिये नही करना चाहता क्योकि वह चिडचिडा होता हैं, दु खी, शोकाकुल, भयभीत, समझता है कि वह किसी भयानक रोग से पीडित है। जो लोग किसी दुर्घटना के शिकार हो चुके हैं, रेल गाडी की दुर्घटना हुई या अन्य कोई शारीरिक या मानसिक आघात पहुचा, वे रात को यकायक मृत्यु के भय से जाग उठते हैं। **ओपियम** मे भी ऐसा मृत्यु-भय है, परन्तु वह भय दिन को भी बना रहता है, **आर्निका** का मृत्यु-भय तो रात को स्वप्न मे ही होता है, दिन को नही। रात को तरह-तरह के डरावने स्वप्न दिखाई देते है—चोर, डाकू, कीचड, कब्र, बिजली की कडक आदि भयावह दृश्य सामने आते हैं।

(९) शक्ति—३, ३०, २००, १०००

आर्सेनिकम ऐल्बम (ARSENICUM ALBUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) बेचैनी, घबराहट, मृत्यु-भय और बेहद कमजोरी	लक्षणों में कमी (Better)
(२) मृत्यु के समय की बेचैनी में आर्सेनिक तथा कार्बो वेज शान्त-मृत्यु लाते हैं या मृत्यु से बचा लेते हैं	*गर्मी से रोग घटना
(३) जलन परन्तु गर्मी से आराम मिलना	*गर्म पेय, गर्म भोजन चाहना
(४) बार-बार, थोड़ी-थोड़ी प्यास लगना	*दमे में सीधा बैठने से कमी
(५) बाह्य-त्वचा, अल्सर तथा गैंग्रीन पर आर्सेनिक का प्रभाव	लक्षणों में वृद्धि (Worse)
(६) श्लैष्मिक झिल्ली पर आर्सेनिक का प्रभाव (आंख, नाक, मुख, गला, पेट, मूत्राशय से जलनेवाला स्राव)	*ठंड, बरफ, ठंडा पेय, ठंडा भोजन नापसन्द होना
(७) 'समयानन्तर' (Periodical) तथा 'पर्याय-क्रम' (Alternate state) के रोग	*मध्याह्न, मध्य-रात्रि, १–२ बजे के बाद रोग का बढ़ना
(८) रात्रिकालीन या दोपहर के बाद रोग का बढ़ना (जैसे, दमा)	*१४ दिन बाद, साल भर बाद रोग का आक्रमण
(९) सफाई-पसन्द-स्वभाव	*अवरुद्ध स्राव या दाने *बरसात का मौसम

(१) बेचैनी, घबराहट, मृत्यु-भय और बेहद कमजोरी (Restless-ness, anguish and prostration)—बेचैनी इसका प्रधान लक्षण है। किसी स्थान पर भी उसे चैन नहीं मिलता, आराम नहीं मिलता। रोगी कभी यहां बैठता है, कभी वहां, कभी एक बिछौने पर लेटता है, कभी दूसरे बिछौने पर, कभी एक कुर्सी पर बैठता है, कभी दूसरी कुर्सी पर। एक जगह टिक कर बैठना, लेटना, रहना तक उसके लिये दूभर हो जाता है। हनीमैन ने लिखा है कि इसप्रकार की बेचैनी किसी दूसरी दवा में नहीं पायी जाती। रोग की शुरुआत में जो बेचैनी होती है, उसमें तो एकोनाइट काम कर जाता है, परन्तु रोग जब बढ़ जाता है, तब की बेचैनी के लिये यह औषधि अधिक उपयुक्त है। उस बेचैनी में रोगी घबरा जाता है, जीवनी-शक्ति में दिनोदिन बढ़ता ह्रास देख कर उसे मृत्यु का भय सताने लगता है। उसे समझ नहीं आता कि क्या करे क्या न करे, किस वैद्य का, हकीम, एलोपैथ, होम्योपैथ का इलाज कराये। दिनोदिन

निर्बलता बढती जाती है, और रोगी इतना कमज़ोर हो जाता है कि पहले तो कभी उठ बैठता था, कभी लेट जाता था, कभी टहल कर शान्ति पाने का प्रयत्न करता था, परन्तु अब कमज़ोरी के कारण चल-फिर भी नही सकता, एकदम निश्चेष्ट पड जाता है। यह निश्चेष्टता बेचैनी और घबराहट दूर हो जाने के कारण नही होती, कमज़ोर हो जाने के कारण होती है। चिकित्सक को रोगी के विषय मे पूछना चाहिये कि उसकी इस निश्चेष्ट-अवस्था से पूर्व क्या उसकी बेचैनी की हालत थी? जब कमज़ोरी बेचैनी का परिणाम हो, तब पूर्व-बेचैनी और वर्तमान कमज़ोरी—इन लक्षणो के आधार पर **आर्सेनिक** ही देना होगा। बच्चो की बेचैनी समझने के लिये देखना होगा कि वह कैसा व्यवहार करता है। अगर कभी वह मा की गोद मे जाता है, कभी नर्स की गोद मे, कभी बिस्तर पर जाने का इशारा करता है, किसी हालत मे उसे चैन नही पडता, तो **आर्सेनिक** ही उसे ठीक करेगा। डा० टायलर ने एक रोगी का उल्लेख किया है जो लडाई के दिनो मे ज़ैपलिन के आक्रमण से इतना घबरा गई थी कि उसे समझ नही पडता था कि कहा जाय? अगर अपने गाव मे जाती है, और वहा भी ज़ैपलिन का आक्रमण हो जाता है, तो क्या करे? इस बेचैनी को **आर्सेनिक** की एक मात्रा ने दूर कर दिया।

बेचैनी मे एकोनाइट और आर्सेनिक की तुलना—एकोनाइट का रोगी बलिष्ठ होता है, तन्दुरुस्त। उस पर एकाएक ही रोग का आक्रमण होता है, लगता है कि मृत्यु के मुख मे जा पडा, उसे भी मौत सामने नाचती दीखती है, परन्तु उसकी जीवनी-शक्ति प्रबल होती है, वह शीघ्र ही दवा के प्रयोग से रोग से छूट जाता है, और पहले जैसा हो जाता है। **आर्सेनिक** का रोगी मौत के मुख से छूट भी गया तो भी स्वास्थ्य लाभ पाने मे उसे देर लगती है। रोग की प्रथमावस्था मे **एकोनाइट** के लक्षण पाये जाते हैं, रोग की भयकर अवस्था मे **आर्सेनिक** के लक्षण पाये जाते हैं, जब रोग खतरनाक नही होता तब **एकोनाइट**, जब खतर-नाक हो जाता है तब **आर्सेनिक** की तरफ ध्यान देना चाहिये, शर्त यह है कि बेचैनी, घबराहट, मृत्यु-भय आदि लक्षण जो दोनो के समान हैं, मौजूद हो। **एकोनाइट** रोगी मे इतना बल रहता है कि बेचैनी मे, घबरा-हट और भय से, इधर उठता, उधर बैठता, बिस्तर मे पलटता रहता है, परन्तु **आर्सेनिक** का रोगी शुरु मे तो बची-खुची ताकत से इधर-उधर उठता-बैठता है, परन्तु अन्त मे इतना शक्तिहीन हो जाता है कि निश्चेष्ट हो पड रहता है। सत्वहीनता (Prostration) इसका मुख्य लक्षण

है। इन दोनो मे भय भी है, और जलन भी, परन्तु **एकोनाइट** का भय सिर्फ नर्वस-टाइप का होता है, जलन भी नर्वस-टाइप की होती है, **आर्सेनिक** का भय तथा उसकी जलन वास्तविक होती है, बीमारी का परिणाम होती है, इसलिये नर्वस-भय और जलन के लिये **एकोनाइट** देना चाहिये, उसमे **आर्सेनिक** देना गलत है।

(२) **मृत्यु-समय की बेचैनी मे आर्सेनिक तथा कार्बो वेज शान्त-मृत्यु लाते हैं या मृत्यु से बचा लेते हैं**—मृत्यु सिर पर आ खडी होने पर सारा शरीर निश्चल हो जाता है, देखते-देखते शरीर पर ठडा, चिपचिपाता पसीना आ जाता है। ऐसा समय हैज़े या किसी भी अन्य रोग मे आ सकता है। उस समय दो ही रास्ते रह जाते हैं—या तो रोगी की शान्ति मे मृत्यु हो जाय, उसे तडपना न पडे, या वह मृत्यु के मुख से खीच लिया जाय। यह काम होम्योपैथी मे दो ही दवाए कर सकती हैं। एक है **आर्सेनिक**, दूसरी है **कार्बो वेज**। ऐसे समय दोनो मे से उपयुक्त दवा की उच्च-शक्ति की एक मात्रा या तो रोगी को मृत्यु के मुख से खीच लेगी, या उसे शान्तिपूर्वक मरने देगी। रोगी के कुटुम्बियो से चिकित्सक को पूछ लेना चाहिये कि वर्तमान हालत से पहले रोगी की क्या दशा थी। अगर रोगी इस हालत मे पहुचने से पहले शरीर पर ठडी हवा नही लगने देना चाहता था, सिर्फ सिर पर ठडी हवा चाहता था, बेचैन था, तब **आर्सेनिक**, और अगर इस हालत मे पहुचने से पहले वह कहता था—हवा करो, हवा करो—ठडा हो जाने पर भी हवा के लिये भूखा था, तो **कार्बो वेज** देने से दोनो मे से एक बात होगी। या तो रोगी पलटा खा जायगा या शान्ति से मरेगा। रोगी जब मृत्यु के मुख मे जा रहा हो, नब्ज़ें छूट रही हो, तब **आर्स** देने के बाद **सलफ़र** देना चाहिये।

(३) **जलन परन्तु गर्मी से आराम मिलना—आर्सेनिक, फासफोरस, सल्फर और सिकेल कौर की तुलना**—ये चार औषधिया जलन के लिये प्रधान औषधिया हैं। डा० नैश का कथन है कि नवीन-रोग की जलन मे **आर्सेनिक** और पुराने रोग की जलन मे **सल्फर** लाभप्रद है। नये तथा पुराने सभी रोगो मे जलन के लक्षण पर **फोसफोरस** की तरफ भी ध्यान जाना चाहिये। **सिकेल कौर** और **आर्सेनिक** दोनो मे जलन और कमज़ोरी पाये जाते है परन्तु इनमे अन्तर यह है कि **सिकेल** अन्दर जलन किन्तु बाहर बर्फ की तरह ठडा होने पर भी अग पर कपडा नही रख सकता और **आर्सेनिक** का रोगी अन्दर की जलन होने पर भी गर्म कपडा ही ओढना चाहता है। **आर्सेनिक** का यह 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptom) है कि जलन होने पर भी गर्मी से उसे आराम मिलता है। फेफडे मे जलन हो तो रोगी सेक चाहेगा, पेट मे जलन हो तो वह गर्म चाय, गर्म दूध पसन्द करेगा, ज़ख्म मे जलन हो तो गर्म पुलटिस लगवायेगा, बवासीर की जलन हो तो गर्म पानी से

धोना चाहेगा। इसमे अपवाद मस्तिष्क की जलन है, उसमे वह ठडे पानी से सिर धोना चाहता है। **आर्सेनिक** का रोगी सारा शरीर कम्बल से लपेटे पडा होगा परन्तु सिर उसका खुला होगा ताकि ठडी हवा उस पर लगती रहे।

रोगी के सर्वांग मे गर्मी से परन्तु एकाग (सिर दर्द) मे ठडक से आराम मिलने के कारण परस्पर विरोधी लक्षण— आर्सेनिक का रोगी शीत-प्रधान (Chilly) होता है, परन्तु शीत-प्रधान होते हुए भी उसे जलन होती है, और जलन मे उसे गर्मी से आराम मिलता है। यह इसका सर्वांगीण, व्यापक-लक्षण है। सिर-दर्द मे उसे ठडक से आराम मिलता है। यह सर्वांग और एकाग का परस्पर-विरोध है। **फासफोरस** भी शीत-प्रधान रोगी है, उसे गर्मी से आराम मिलता है, परन्तु पेट मे वह ठडी चीज चाहता है। यह भी सर्वांग और एकाग का परस्पर-विरोध है। इस प्रकार चिकित्सक को देखना होगा कि अगो के जो 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptoms) है उनका औपधि के उस अग के विशिष्ट-लक्षण से साम्य होना चाहिये, और सपूर्ण व्यक्ति के जो विशिष्ट-लक्षण हैं उनका उस औपधि के सपूर्ण-व्यक्ति पर पाये जाने विशिष्ट-लक्षणो से साम्य होना चाहिये और जिन औपधियो मे सर्वांग और एकाग के लक्षणो मे विरोध है उसे ध्यान मे रखते हुए सर्वांग के लक्षणो —अर्थात् व्यापक-लक्षणो को प्रधानता देनी चाहिये।

जलन के साथ होने वाले दर्द को गर्मी से आराम—यद्यपि मस्तिष्क की गर्मी को ठडे पानी से आराम मिलता है, तो भी खोपडी की जलन, जो वाय के कारण होती है, उसे गर्मी से ही आराम मिलता है। वह खोपटी को कपडे से लपेटे पडा रहता है। जलन के साथ दर्द कही भी हो, अगर उसमे गर्म सेक से आराम मिले, तो **आर्सेनिक** ही दवा है। यह जलन के साथ दर्द सिर मे, आखो मे, नाक मे, गले, पेट, आतें, ववासीर के मस्से, मूत्राशय, गर्भाशय, डिम्ववकोश, जननेन्द्रिय, छाती, स्तन, हृदय-प्रदेश, मेरु-दड, जख्म, त्वचा, कैंसर, कार्वकल कही भी हो सकती है। ऐसा लगता है कि शिराओ मे वहते रुधिर मे आग लगी हुई है। ऐसे लक्षणो मे अगर गर्मी से आराम मिले तो **आर्सेनिक** ही उपयुक्त औपधि है।

(४) **बार-बार, थोडी-थोडी प्यास लगना—**इस औषधि मे प्यास इसका एक खास लक्षण है, परन्तु इस प्यास की एक विशेपता है। रोगी बार-बार पानी पीता है, परन्तु हर वार वहुत थोडा पानी पीता है। प्राय देखा जाता है कि रोग मे एक अवस्था आगे चल कर दूसरी विरोधी अवस्था मे परिणत हो जाती है। उदाहरणार्थ, हमने देखा कि **आर्सेनिक** मे शुरु-शुरु मे वेचैनी होती है, परन्तु आगे चल कर कमजोरी के कारण रोगी शिथिल पड जाता है, एक स्थान को छोड दूसरे स्थान मे जाने की भी ताकत उसमे नही रहती। इसीप्रकार शुरु मे **आर्स** मे प्यास पायी जाती है, थोडा-थोडा पानी पीना, कई वार पीना—परन्तु

आगे चल कर इस औषधि का रोगी प्यासहीन हो जाता है। प्रारम मे प्यास, और रोग के वढ जाने पर प्यासहीनता—यह **आर्सेनिक** का लक्षण है। रोग की जाच करते हुए पूछना चाहिये कि क्या शुरु मे रोगी को वार-वार की, थोड़े-थोड़े पानी की प्यास लगती थी। चिकित्सक को रोग की शुरुआत से अवतक की हालत जानने का प्रयत्न करना चाहिये। अगर रोगी को अव प्यास नही है, अव वह कमजोरी के कारण वेचैन भी नही है, तो भी देखना यह है कि क्या शुरुआत मे उसे प्यास लगती थी, शुरू मे वह वेचैन था ? ऐसी हालत मे **आर्सेनिक** उसकी दवा होगी। **ब्रायोनिया** मे रोगी देर-देर वाद वहुत-सा पानी पीता है, **एकोनाइट** मे वार-वार वहुत-सा पानी पीता है, **आर्स** मे वार-वार, थोडा-थोडा पानी पीता है।

(५) **वाह्य-त्वचा, अल्सर तथा गैंग्रीन पर आर्सेनिक का प्रभाव**—**आर्सेनिक** की त्वचा सूखी, मछली के छिलके के समान होती है, उसमे जलन होती है। फोडे-फुन्सिया आग की तरह जलती हैं। सिफिलिस के अल्सर होते हैं जो वढते चले जाते हैं, फैलते जाते हैं, ठीक नही होते, उनमे से सडी, वदवूदार लेस निकलती रहती है, जलन होती है, सडाँद ऐसी जैसे सडा मास हो। अगर कही शोथ होने के वाद फोडा वन जाय और वह सडने लगे—गैंग्रीन वनने लगे—फिर उसका नाम भले ही कुछ हो, ऐसे सडनेवाले, मवादवाले, जलनवाले फोडे की दवा यही है।

(६) **श्लैष्मिक-झिल्ली** (Mucous membrance) **पर आर्सेनिक का प्रभाव** (**आख, नाक, मुख, पेट, मूत्राशय से जलनेवाला स्राव**)—**आर्सेनिक** के रोगी का स्राव जहा-जहा लगता है, वहा-वहा जलन पैदा कर देता है। उदाहरणार्थ

जुकाम मे जलन—जिसे जुकाम से पानी वहता हो, जहा-जहा होठो पर लगे वहा जलन पैदा कर दे, नाक में भी जलन करे, नाक छिल जाय, गरम पानी से आराम मिले, वहा इसे ही दो।

मुख के छालो मे जलन—जव मुख मे छाले पड जायें, जलें, गरम पानी से लाभ हो, तव वहा इसे दो।

गले मे टासिलों मे शोथ तथा जलन—गले मे जलन और शोथ के साथ गर्म पानी के सेक से आराम मिलने पर अन्य लक्षणो को ध्यान मे रखते हुए यह दवा दो।

पेट मे शोथ तथा जलन (Gastritis)—पेट का अत्यन्त नाजुक होना, एक चम्मच ठंडा पानी पीने से भी उल्टी हो जाना, गर्म पानी से थोडी देर के लिये आराम, भोजन-प्रणालिका की ऐसी सूजन कि जो-कुछ खाया जाय उसकी उल्टी हो जाय, सव मे जलन होना, वाहर से गर्म सेक से आराम मिलना। रोगी इतना वेचैन होता है कि टहलता फिरता है, चैन से वैठ नही सकता और अन्त मे इतना शिथिल और कमजोर हो जाता है कि पट पड जाता है।

मूत्राशय मे शोथ तथा जलन—चिकित्सक को ऐसे रोगी के इलाज के लिये जाना पड सकता है जिसके मूत्राशय मे जबर्दस्त शोथ हो, बार-बार उसे पेशाब के लिए जाना पड रहा हो, मूत्र मे रक्त मिला हो, रक्त के थक्के भी आ रहे हो। मूत्राशय मे कैथीटर डाल कर पता चले कि मूत्राशय रक्त के टुकडो से अटा पडा है, कैथीटर आगे नही जा सकता, कुछ दूर जाता है फिर रुक जाता है। रोगी के विषय मे पूछताछ करने पर पता चले कि शुरु मे बेचैनी थी, घबराहट थी, मृत्यु-भय था, सेक से रोगी को आराम मिलता था, अब बेहद कमजोरी हो गई है। इस रोगी को **आर्सेनिक** इस कारण नही दिया जायगा क्योंकि मूत्राशय मे शोथ है, परन्तु इस कारण दिया जायगा क्योकि यह शोथ बढती हुई गैंग्रीन बन रही है। अगर इस समय उसे यह दवा दी जायगी, तो आगे आनेवाली गैंग्रीन की अवस्था रुक जायगी। उक्त लक्षण अगर अन्य आन्तरिक अगो मे—लिवर, फेफडे, गर्भाशय आदि मे—पाये जायें तब भी आर्सेनिक ही देना होगा।

(७) **समयानन्तर** (Periodicity) **तथा पर्याय-क्रम** (Alternate state) **के रोग**—रोग का समयानन्तर से (Periodically) प्रकट होना इस औषधि का विशिष्ट-लक्षण है। इसीकारण मलेरिया-ज्वर मे यह विशेष उपयोगी है। हर दूसरे दिन, चौथे दिन, सातवें या पन्द्रहवें दिन ज्वर आता है। सिर-दर्द भी हर दूसरे दिन, हर तीसरे, चौथे, सातवें या चौदहवें दिन आता है। रोग जितना पुराना (Chronic) होता है उतना ही उसके आने का व्यवधान लम्बा हो जाता है। अगर रोग नवीन (Acute) है तो रोग का आक्रमण हर तीसरे या चौथे दिन होता है, अगर पुराना है तो सातवे दिन, अगर रोग सोरिक (Psoric) है तो १४वें, १५वें दिन। इस दृष्टि से मलेरिया मे **चायना** की अपेक्षा **आर्सेनिक** अधिक उपयुक्त है।

'समयानन्तर' का सिर-दर्द (Periodical headache)—मलेरिया की तरह आर्सेनिक मे ऐसा सिर-दर्द होता है जो हर दो सप्ताह के बाद आता है। रोगी बेचैन रहता है, घबराता है, नवीन रोग मे पानी बार-बार पीता है, रोग के पुराना हो जाने पर प्यास नही रहती, सिर पर ठडा पानी डालने से आराम आता है, खुली हवा मे घूमना चाहता है, मध्य-रात्रि मे १ या २ बजे यह पीडा शुरु होती है, कभी-कभी दोपहर को १ से ३ बजे से सिर-दर्द शुरु होकर सारी रात रहता है। समयानन्तर आने वाले इस सिर-दर्द मे अन्य लक्षणो को देख कर **आर्सेनिक** देना लाभकारी है।

आर्सेनिक मे रोग का 'पर्याय-क्रम' (Alternate state)—अनेक रोगो मे प्राय देखा जाता है कि अगर मस्तिष्क के लक्षण प्रकट होते हैं, तो शारीरिक-लक्षण चले जाते हैं, और जब शारीरिक-लक्षण प्रकट होते हैं, तब मानसिक-लक्षण चले जाते हैं। यह बात शरीर तथा मन तक ही सीमित नही है,

एक प्रकार के शारीरिक-लक्षण प्रकट होते हैं, दूसरे प्रकार के शारीरिक-लक्षण लुप्त हो जाते हैं। उदाहरणार्थ, एक स्त्री को सिर पर भारी दवाव प्रतीत होता था, वह इस दवाव को दूर करने के लिये सिर पर कुछ बोझ रख लेती थी। जब सिर का दवाव दूर हो जाता था, तब उसे बार-बार पेशाब जाने की हाजत हो जाती थी। यह **एलूमेन** से दूर हो गया। एक रोगी को सिर-दर्द होना था, जब सिर-दर्द हटता था, तब दस्त आने लगते थे। यह **पोडोफाइलम** से दूर हो गया। इसप्रकार दो रोगों के पर्याय-क्रम का अर्थ यह समझना चाहिये कि शरीर में दो रोग एक-साथ हैं, और ऐसी औषधि का निर्वाचन करना चाहिये जो रोग की दोनों अवस्थाओं पर असर कर सके। अगर इन लक्षणों में **आर्सेनिक** के लक्षण मौजूद हों, तो इस औषधि का निर्वाचन होगा, परन्तु लक्षणों के आधार पर ही, अन्य किसी आधार पर नहीं।

(८) **रात्रिकालीन या दोपहर के बाद रोग-वृद्धि (जैसे, दमा)**—आधी रात के बाद या दोपहर को १–२ बजे के बीच रोग का बढ़ जाना इसका चरित्र-गत लक्षण है। विशेष रूप से दमे में यह पाया जाता है, परन्तु बुखार, खांसी, हृदय की धड़कन—किसी भी रोग में मध्य-रात्रि या दोपहर में रोग का बढ़ना **आर्सेनिक** का लक्षण है।

(९) **सफाई-पसन्द-स्वभाव** (Fastidious nature)—रोगी बड़ा सफाई-पसन्द होता है। गन्दगी या अनियमितता को बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर दीवार पर तस्वीर टेढ़ी लटकी है, तो जबतक उसे सीधा नहीं कर लेता तबतक परेशान रहता है। जो लोग हर बात में सफाई पसन्द करते हैं, कहीं भी बेतरतीबपना देख कर परेशान हो जाते हैं, इस बात में सीमा का उल्लंघन कर जाते हैं, उनका लक्षण इस दवा में पाया जाता है। डा० हेरिंग ने ऐसे रोगियों को 'Gold-headed-cane patients'—सोने की मूठ की बेंत हाथ में रखने वाले रोगी कहा है।

(१०) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

1 **हैजे के-से दस्त, डायरिया, डिसेन्ट्री**—जब १८३० में युरोप में हैज़े की बीमारी फैलनेवाली थी, तब इसके लक्षणों को सुनकर हनीमैन ने कहा था कि इस रोग में **कैम्फर, क्यूप्रम और वेरेट्रम** ऐल्बम देना चाहिए। उस समय कैम्फर के प्रयोग से ही हैज़ा ठीक हो गया। परन्तु इन तीनों के अलावा आर्सेनिक भी हैज़े की अप्रतिम दवा है। पानी की तरह पतला दस्त, काला, दुर्गन्धयुक्त, बेचैनी, प्यास, मृत्यु-भय, कमज़ोरी आदि लक्षण होने पर यह उपयोगी है। **आर्सेनिक** के डाय-रिया और डिसेन्ट्री में घबराहट, दुर्गन्धयुक्त मल, बेचैनी और अत्यन्त कमज़ोरी प्रधान लक्षण है। कमज़ोरी इतनी हो जाती है कि मूत्र तथा मल अपने-आप निकल पड़ते हैं। ऐसी स्थिति भी आ जाती है कि रोगी मृत-प्राय हो जाता है, सिर्फ सांस चलता दीखता है। मल लगता हुआ, जलन के साथ निकलता है। डिसेन्ट्री में

ऐंठन होती है, टट्टी जाने की इच्छा बनी रहती है, आतो मे, गुदा मे अत्यन्त बचैनी अनुभव होती है, दर्द इतना होता है कि रोगी मृत्यु के सिवाय कुछ सोच नही सकता, ऐसा दर्द जैसा उसने कभी अनुभव नही किया। या वह टट्टी जाता है, या जब नही जाता तब इधर-उधर बेचैनी मे चक्कर काटता है, कभी बिस्तर पर, कभी कुर्सी पर बैठता है, टिक नही पाता।

ii **रक्तस्राव** (Hemorrhage)—आर्सेनिक रक्त-स्राव की औषधि (Bleeding remedy) है। इसमे भिन्न-भिन्न अगो से 'रक्त-स्राव' होता है। चमकता हुआ, लाल रग का रुधिर। अगर इस रक्त-स्राव का इलाज न हो, तो कुछ देर बाद जिस अग से रक्त-स्राव हो रहा है उसकी ग्रैंग्रीन की, सडे अग की हालत हो जाती है और रुधिर काला, थक्केदार हो जाता है। उल्टी मे और टट्टी मे ऐसा ही रुधिर जाने लगता है। रक्त-स्राव के कष्ट मे से गुज़रते हुए रोगी बेचैनी की हालत मे से गुजरता हुआ अत्यन्त क्षीणता, दुर्बलता की दशा मे पहुच जाता है, इस दुर्बलता मे उसे ठडा पसीना आने लगता है। रक्त-स्राव का ही एक रूप खूनी बवासीर है। इसमे रोगी के मस्सो मे खुजली होती है, जलन होती है और गर्म सूई का-सा छिदता दर्द होता है। गुदा को सेंकने से या गर्म पानी से धोने से शान्ति मिलती है।

iii **ज्वर**—ज्वर मे शीत, ताप और स्वेद—ये तीन अवस्थाए होती हैं। आर्सेनिक के ज्वर मे शीतावस्था मे प्यास नही होती, तापावस्था मे थोडी प्यास होती है, मुह गीलाभर करने की इच्छा होती है, स्वेदावस्था मे खब प्यास लगती है, जितना पसीना आता है उतनी ही प्यास बढ़ती जाती है। अगर समयानन्तर (Periodical) ज्वर हो, मलेरिया हो, तो उक्त-लक्षणो के होते हुए कुनीन की अपेक्षा आर्सेनिक इस ज्वर को जल्दी ठीक कर देता है—ज्वर समयानन्तर से आता हो, दूसरे, चौथे दिन आता हो, मध्य-दिन या मध्य-रात्रि मे बढता हो, तव तो आर्सेनिक निश्चित औषधि है।

iv **किसी स्राव के दबने पर**—प्रदर, कर्ण-स्राव या किसी अन्य स्राव के बाहरी लेप आदि द्वारा दबा दिये जाने पर रोग अपना कोई दूसरा रास्ता ढूढ निकालता है। उदाहरणार्थ, प्रदर का स्राव बन्द कर दिया जाय, तो नाक से पतला या मोटा रुधिरयुक्त स्राव जारी हो सकता है। ऐसी अवस्थाओ मे आर्सेनिक, सल्फ़र तथा कैलकेरिया मे से कोई औषधि लाभप्रद हो सकती है।

v **खांसी आने के बाद श्वास-कष्ट** (Dyspnea after cough)—खासी आने के बाद श्वास-कष्ट होने मे इस औषधि से अवश्य लाभ होता है।

vi **खुश्क खासी, थोडी-थोड़ी देर मे खो-खो करना**—कई बार रोगी को ऐसी खासी हो जाती है जो ठीक होने मे नही आती, रोगी लगातार खो-खो किया करता है, न कफ बनता है, न निकलता है। ऐसी खासी मे इससे लाभ होता है।

VII बदबूदार, लगनेवाले स्राव—आर्सेनिक के स्राव बदबूदार होते हैं। प्रदर से बदबू आती है, अन्य स्रावों से भी बदबू आती है। प्रदर का स्राव टांगों तक बह निकलता है और टांगों को छीलता हुआ लगता है। नाक से बहनेवाला पतला पानी भी नथुनों को और होठों को लगता है, काटता है।

VIII आर्सेनिक शीत-प्रधान है—रोगी शीत-प्रधान होता है, आग के इर्द-गिर्द घूमा करता है। गर्म कपड़े लपेटे रहता है, उन्हें भी काफी नहीं समझता, सर्दी से परेशान रहता है। अंगीठी के सामने बैठा हुआ भी सर्दी से कांपता है। हर समय गर्म कमरे में रहना चाहता है।

(११) आर्सेनिक का सजीव, मूर्त-चित्रण—बेचैनी, निराशा, असह्य कष्ट, मृत्यु भय, घबराहट, ऐसी बेचैनी कि रोगी किसी एक कमरे में टिक कर नहीं रह सकता, एक बिस्तर पर लेट नहीं सकता, कभी यहां बैठता है, कभी वहां। हनीमैन के शब्दों में ऐसी बेचैनी किसी अन्य औषधि में नहीं पायी जाती। रोगी दुर्बल, शीत-प्रधान होता है, जलन होती है जिसे गर्मी से आराम मिलता है। थोड़ा-थोड़ा पानी बार-बार पीता है। सारे शरीर पर ठंडा पसीना, मुर्दे की तरह शरीर से दुर्गन्ध, अन्य सब स्राव भी दुर्गन्धमय। दोपहर और आधी रात को रोग बढ़ जाता है। रोग में पसीने से इतना शक्तिहीन हो जाना मानो बेहोश हो गया हो। हनीमैन के शब्दों में साधारण-से लक्षणों से रोगी इतना निःसत्व, निःसार तथा सामर्थ्यहीन हो जाता है कि आश्चर्य होता है कि इस साधारण-से लक्षण से इसके बल में इतनी क्षीणता कैसे आ गई—यह है मूर्त-रूप आर्सेनिक का जो अगर मृत्यु के समय भी इन लक्षणों को सामने रखकर दिया जाय, तो यह या तो यमदूत से लड़कर रोगी को मृत्यु से बचा लेता है, या उसे सुख से प्राणांत करने देता है। स्वभाव से रोगी सफाई पसन्द, दीवार पर टेढ़ी लगी तस्वीर को भी सीधा कराये बगैर चैन नहीं लेता।

(१२) शक्ति तथा प्रकृति—पेट, आंतों तथा गुर्दे की बीमारियों में निम्न शक्ति दी जानी चाहिये, स्नायु-संबंधी बीमारियों तथा दर्द के रोगों में उच्च-शक्ति लाभ करती है। अगर सिर्फ त्वचा के बाह्य-रोग के लिये औषधि देनी हो, तो २x, ३x विचूर्ण देना चाहिये जिसे दोहराया जा सकता है। अन्यथा दमे में ३० शक्ति और पुरानी बीमारी में २०० शक्ति लाभ करती है। भट्टाचार्य क० के 'पारिवारिक भेषज-तत्व' के अनुसार डा० सरकार १२ शक्ति के विशेष पक्षपाती थे। हनीमैन के अनुसार आर्सेनिक 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) है, अर्थात् अनेक रोगों के लिये उपयुक्त है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

आर्सेनिकम आयोडेटम (ARSENICUM IODATUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) नाक या कान से नीलिमा लिये हुए लगने-काटनेवाला, अत्यधिक पीला-स्राव	लक्षणो मे कमी (Better) *खुली हवा मे रोग मे कमी
(२) यक्ष्मा-रोग की प्रारंभिक-अवस्था मे	
(३) आर्सेनिक के कारण शीत तथा आयोडीन के कारण ऊष्णता-प्रधान प्रकृति	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *खुश्क हवा मे रोग का बढ़ना
(४) हृदय के रोग मे उपयोगी	*बन्द कमरे मे रोग का बढ़ना

(१) **नाक या कान से नीलिमा लिये हुए लगने-काटनेवाला, अत्यधिक पीला-स्राव**—साधारण जुकाम तथा पुराने जुकाम मे इस औषधि का विशेष प्रयोग होता है। इसका स्राव नीला-पीला होता है। थोडा नही, बहुत स्राव होता है। जहा छूता है वहा काटता है, लगता है, पस जैसा होता है। जब जुकाम क्रौनिक हो जाय तब यह दवा काम देती है। डा० हेल 'न्यू रेमेडीज' मे लिखते हैं "कई साल से **आर्स आयोडाइड** मेरी प्रिय औषधि रही है। इसका प्रभाव-क्षेत्र बिल्कुल निश्चित है। इसका स्राव बडा लगनेवाला, काटनेवाला (Irritating, corrosive) होता है। भले ही कोई रोग हो, उसका कोई-सा भी नाम हो, यह स्राव शरीर के किसी भी अग से क्यो न जाता हो, अगर यह स्राव श्लैष्मिक-झिल्ली को, जहा से यह बहता है, काटता है, वहा लगता है, तो यह इस औषधि का निश्चित लक्षण है।" इस प्रकार का स्राव नाक से, कान से, योनि से—कही से भी निकल सकता है, परन्तु अगर इसका काटनेवाला लक्षण मौजूद है तो इससे लाभ होता है। **एरम ट्रिफ** मे भी नाक से काटनेवाला स्राव है।

(२) **यक्ष्मा-रोग की प्रारंभिक-अवस्था**—यक्ष्मा-प्रकृति के रोगियो के लिये इसकी विशेष उपयोगिता है। रोगी को झट-झट ठड लग कर जुकाम हो जाता है, नाक की शिकायत प्राय बनी रहती है। टी० बी० के रोगी की तरह की रक्त-हीनता, पीलापन जो टी० बी० की मरीज़ लडकियो मे पाया जाता है। वज़न कम होता जाता है। बच्चे दिनोदिन कमजोर होते जाते हैं। जो मरीज़ टी० बी० की प्राथमिक-अवस्था मे हो, दोपहर को तापमान बढ जाता हो, पसीना आता हो, शरीर क्षीण होता जाता हो, इन लक्षणो के साथ अतिसार की प्राय शिकायत हो जाती हो, खासी रहती हो, उनके लिये इस औषधि का प्रयोग करना चाहिये। यक्ष्मा का इलाज करने के लिये यह विख्यात है।

(३) **आर्सेनिक के कारण शीत तथा आयोडीन के कारण ऊष्णता प्रधान प्रकृति**—अगर ठड ज्यादा न हो तो रोगी खुली हवा पसन्द करता है, दरवाज़े

तथा खिडकिया खुलवाना चाहता है, बन्द कमरा उसे नही सुहाता, परन्तु ठडे पानी को भी पसन्द नही करता, स्नान करने से उसे ठड लग जाती है। इस औषधि मे आर्सेनिक और आयोडीन का मिश्रण है, इसलिये इसके कई रोगी आर्सेनिक के कारण शीत-प्रधान, और अनेक रोगी आयोडीन के कारण ऊष्णता-प्रधान होते हैं। इसलिये यह दवा सर्द भी है, गर्म भी है, परन्तु मुख्यतौर पर गर्म है।

(४) हृदय के रोग मे उपयोगी—डा० क्लार्क की 'मैटीरिया-मैडिका' मे लिखा है कि एक डाक्टर हृदय के सब रोगो मे निम्न दवा दिया करते थे क्रैटिगस का मदर टिंचर ५ बूद दोनो वक्त के खाने के समय, बीच मे, और खाने के आधे घटे के बाद आर्सेनिक आयोडेटम ३x दो ग्रेन दोनो वक्त के खाने के बाद। इस प्रकार हृदय के सब रोगी ठीक हो जाते थे। डाक्टर ने मरने से पूर्व अपनी पुत्री को यह नुस्खा बतलाया था। अन्य पुस्तको मे भी लिखा है कि क्रैटिगस तथा आर्स आयोडाइड हृदय के अनेक रोगो के लिये लाभप्रद हैं।

(५) शक्ति तथा प्रकृति—अनुभव से यह देखा गया है कि टी० बी० मे उपचार का प्रारभ ४x से शुरु करना चाहिये, और धीरे-धीरे रोगी को २x विचूर्ण ५ ग्रेन दिन मे तीन वार पर ले आना चाहिये। औषधि ताजी बनानी चाहिये और इसे रोशनी से बचाये रखना चाहिये। साधारणतया अन्य रोगो मे २ या ३ शक्ति व्यवहार मे लानी चाहिये। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।

एरम ट्रिफाइलम—शलगम, (ARUM TRIPHYLLUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) लगातार होठ और नाक को कुरेदने और नोचने की इच्छा	लक्षणो मे कमी (Better) *कुछ विशेष नहीं
(२) भयकर, जहरीला, खुश्क या बहता हुआ जुकाम	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *भाषण, गायन से वृद्धि
(३) गला बैठ जाना	*ठडक से वृद्धि *गर्म से ठडक मे आने से वृद्धि

(१) लगातार होठ और नाक को कुरेदने और नोचने की इच्छा—जब किसी भी रोग मे होठ और नाक को लगातार कुरेदने की इच्छा हो, नाक मे अगुली डाल कर, कुरेद-कुरेद कर, नोच-नोच कर रोगी खून तक निकाल डाले और फिर भी कुरेदने की इच्छा शान्त न हो, तब यह औषधि काम आती है। डा० हैरिंग अपनी 'गाईडिंग सिम्पटम्स' मे लिखते हैं "होठ, मुख का खोल तथा नाक आदि की त्वचा छिल जाती है, खून निकलने लगता है, रोगी छिली जगह को भी नोचता रहता है, ऐसा करने से उसे दर्द होता है, बच्चा चीखता भी है, परन्तु नोचने से

नही रुकता। त्वचा की सतह कच्चे मास जैसी लाल हो जाती है। जब किसी भी रोग मे ऐसी हालत हो, रोगी त्वचा को दर्द सहते हुए भी नोचता, छीलता ही चला जाय, तो **एरम** देना उचित है। सभव है कि होठ या नाक मे कुछ ऐसी प्रबल खुजली-सी होती हो कि रोगी उस स्थान को नोचने के विना चैन ही अनुभव न करता हो, होठ से, नाक से खून वहे और वह फिर भी उस स्थान को छीलता जाय—यह 'विशिष्ट-लक्षण' (Characteristic symptom) है जिधर ध्यान देना चाहिये। टाइफॉयड मे ऐसा नोचना पाया जाता है। कभी-कभी रोगी अचेतनावस्था मे नाक मे वार-वार अगुली डालता है और उसे नोचता है—यह लक्षण **हेलेबोरस** का है। सपूर्ण ज्ञान के साथ नाक मे अगुली डालना और नोचना **एरम ट्रिफाइलम** का लक्षण है। डा० नैश का कथन है कि यह लक्षण इतना प्रबल केवल इसी दवा मे पाया जाता है।

(२) **भयकर, जहरीला, खुश्क या वहता जुकाम**—इस औषधि मे भयकर जुकाम पाया जाता है। नाक वन्द हो जाती है, खासकर वायी नाक। रोगी मुख से साम लेने को वाधित हो जाता है। रात को लगातार छीकें आती हैं। अगर जुकाम खुश्क न होकर वहनेवाला हो, तो नाक का पानी त्वचा के जिस भाग पर से वहता है वहा लाल निशान पड जाते है, नाक को अन्दर से और वाहर से रोगी छीलता जाता है। नाक से पानी वहने पर भी नाक वन्द रहती है।

(३) **गला बैठ जाना**—गवैय्ये, व्याख्याता, वकील जव ३–४ घटे वोल कर ठडे स्थान मे जाते हैं, तव हवा के लगने से उनका गला बैठ जाता है। **एरम** उन्हें अपना काम जारी रखने की सामर्थ्य प्रदान करता है, गला खुल जाता है। **रस टॉक्स** का व्यक्ति जव वोलने लगता है, तव उसका गला वैठा होता है, परन्तु ज्यो-ज्यो वह वोलता जाता है, गला खुलता जाता है, आवाज़ स्पष्ट होती जाती है। **रस टॉक्स** की विशेषता ही यह है कि हरकत से उसे लाभ होता है।

(४) **शक्ति**—यह औषधि निम्न-शक्ति मे नहीं देनी चाहिये और न इसे वार-वार देना चाहिये। इससे कुफल होता है। उच्च-शक्ति मे देने से लाभ होता है। २०० शक्ति है।

ऐसाफेटिडा—हींग, (ASAFOETIDA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) फूला हुआ चेहरा, स्थूल, ढीला-ढाला, रक्तनीलिमा युक्त (लाल-नीला) रंग	लक्षणो मे कमी (Better) *खुली हवा मे घूमने से रोगी को आराम पहुँचना
(२) हिस्टीरिया में पेट से गले की तरफ एक गोलक का चढ़ना	
(३) पेट मे ऊर्ध्वगामी वायु तथा बड़े-बड़े डकार	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *रात को रोग बढ़ जाना
(४) आतशकी-मिजाज (Syphilitic miasm)—भिन्न-भिन्न अंगो मे ज़ख्म आदि	*बन्द कमरे मे घबराना *स्रावो के रुक जाने पर
(५) हड्डियों मे रात को दर्द	*गर्म कपड़ा लपेटने पर
(६) बायीं तरफ आक्रमण	*बाई ओर लेटने से वृद्धि

(१) फूला हुआ चेहरा, स्थूल, ढीलाढाला, रक्तनीलिमायुक्त रंग—हमारे शरीर मे दो प्रकार की रक्तवाहिनिया हैं—'धमनी' (Artery) तथा 'शिरा' (Vein), जिन मे से 'धमनी' मे हृदय से शुद्ध-रक्त शरीर मे जाता है, और 'शिरा' मे अशुद्ध-रक्त फेफडो द्वारा शुद्ध होने के लिये हृदय मे लौटता है। शिराओ का काम ढीला हो जाय, तो नीला खून शरीर मे जगह-जगह रुक जाता है जिससे चेहरा फूला हुआ, शरीर ढीला-ढाला और रक्तनीलिमायुक्त रग का हो जाता है। रक्त मे कुछ लालिमा, कुछ नीलिमा मिली-जुली होती है। ऐसे रोगी को मोटा-ताज़ा देखकर सब लोग स्वस्थ समझते हैं, परन्तु शिराओ की शिथिलता के कारण उसका चेहरा फूला हुआ होता है, स्वास्थ्य के कारण नही। ऐसे रोगी के हृदय मे कुछ विकार होता है जिसके कारण उसके शरीर मे 'शिरा-रुधिर-स्थिति' (Venous stasis) पायी जाती है। डा० कैन्ट कहते है कि ऐसे रोगियो का इलाज कठिन होता है, ये 'शिरा-प्रधान-शरीर' (Venous constitution) के रोगी होते हैं और इन्हें कई प्रकार के स्नायवीय रोग हुआ करते हैं जिनमे ऐसाफेटिडा लाभदायक है। इनमे से एक रोग हिस्टीरिया भी है।

(२) हिस्टीरिया मे पेट से गले की तरफ़ एक गोलक का चढ़ना—इस औषधि का प्रधान लक्षण है रोगी के पेट से गले की तरफ एक गोलक का चढना। इसे नीचे उतारने के लिये रोगी बार-बार अन्दर निगलने की कोशिश करता है, परन्तु उसे ऐसा मालूम होता है कि यह गोलक पेट मे से ऊपर चढता चला आ रहा है। इसका कारण यह है कि इस औषधि मे वायु की गति अधोगामिनी होने के स्थान मे अर्ध्वगामिनी हो जाती है। हमारी आतो मे एक विशेष प्रकार की गति

हुआ करती है जिसने भीतर का भोजन या मल आगे-आगे को धकेला जाता है। जैसे गिंडोया अपने शरीर को आगे-आगे धकेलता है, कुछ वैसी ही आतो मे अग्र-गामिनी-गति होती है जिससे मल गुदा-प्रदेश की तरफ बढता है। इस गति को 'अग्र-गति' (Peristalsis) कहते हैं। इस औषधि के रोगी मे 'प्रतिगामी अग्र-गति' (Anti-peristalsis) हो जाती है जिससे वायु आगे की तरफ जाने के बजाय पीछे की तरफ लौटती है, और इसी कारण रोगी हिस्टीरिया से पीडित हो जाता है जिसमे उसे एक गोलक का पेट से गले की तरफ चढने का कष्ट-प्रद अनुभव होता है। इग्नेशिया मे भी ऐसा गोलक गले की तरफ आता प्रतीत होता है। ऐसाफेटिडा मे इस गोलक के अलावा पेट मे वायु भी ऊर्ध्वगामी हो जाती है।

(३) **पेट मे ऊर्ध्वगामी वायु तथा बडे-बडे डकार**—ऐसाफ़ेटिडा का पेट ऊर्ध्वगामी वायु का मूर्त-चित्रण है। ऐसा लगता है कि वायु का निकास नीचे से बिल्कुल बन्द हो गया है। रोगी 'प्रतिगामी अग्र-गति' (Anti-peristalsis) से पीडित हो जाता है। देखनेवाले को समझ नही पडता कि पेट मे से इतनी हवा कैसे ऊपर से निकल रही है। हर सेकेंड बन्दूक की आवाज़ की तरह डकार छूटते है जिन पर रोगी का कोई वस नही होता।

(४) **आतशकी-मिजाज (Syphilitic miasm)—भिन्न-भिन्न अंगों में ज़ख्म आदि**—सिफिलिस के पुराने मरीज़ो के जख्मो मे, आख के गोलक मे स्नायु-शूल, उसकी सफेदी पर ज़ख्म, आइराइटिस, अर्थात् आख के उपतारा मे प्रदाह आदि सिफिलिस से उत्पन्न होनेवाले जख्मो मे यह लाभप्रद है। आतशकी-मिजाज में कान, कान की हड्डी, घुटने के नीचे टाग की हड्डी पर भी ज़ख्मो का आक्रमण हो सकता है। गले मे भी सिफिलिस के घाव हो सकते है, नाक के घाव जिनसे बदबूदार सडादमरा स्राव निकलता है। नाक की हड्डी सड जाती है। अस्थि-वेष्टन (Periosteum) मे दर्द होता है जो धीरे-धीरे हड्डियो पर आक्रमण कर देता है। इन सब मे रोगी से पूछ लेना चाहिये कि उसे कभी आतशक का आक्रमण तो नही हुआ। घुटने के नीचे टाग की टीबिया हड्डी के जख्म मे हनीमैन के कथनानुसार **स्पंजिया** बहुत लाभ करता है, यद्यपि **ऐसाफेटिडा** भी इस आतशकी ज़ख्म मे उपयोगी है।

(५) **हड्डियों मे रात को दर्द**—आतशक के रोगियो की तकलीफे रात को बढ जाया करती हैं। रात को दर्द होता है। इस दवा मे भी आतशकी-मिजाज होने के कारण हड्डियो मे और हड्डियो के परिवेष्टन मे रात को दर्द होता है। दर्द हड्डी के अन्दर से बाहर की तरफ आता है। सिर-दर्द, किसी भी अग मे हड्डी के भीतर से उठनेवाला दर्द—इस औषधि के रोगी मे पाया जाता है।

(६) **बायीं तरफ आक्रमण**—इस औषधि का पेट, हड्डी, या शरीर के किसी अग पर भी प्रभाव हो सकता है, परन्तु इसका आक्रमण शरीर के बायें भाग

पर विशेष होता है। रोग भी तो कोई दायें भाग पर, कोई बायें भाग पर आक्रमण करता है। यही बात होम्योपैथिक दवाइयो मे पायी जाती है। उदाहरणार्थ, हम नीचे बायी, दायी तथा दायें से बायी, बायें से दायी तरफ विशेप रूप से प्रभाव रखनेवाली कुछ औषधियो का विवरण दे रहे है

बायी तरफ के रोग मे औषधिया—अर्जेन्टम नाइट्रिकम, ऐसाफेटिडा, असरम, कैपसिकम, सिना, क्लैमेटिस, क्रोक्कस, यूफोरबियम, ग्रेफाइटिस, क्रियोजोट, लैकेसिस, ओलियेन्डर, फॉसफोरस, सिलेनियम, सीपिया, स्टैनम।

दायी तरफ के रोग मे औषधिया—आर्सेनिक, ऑरम, बैप्टीशिया, बेलाडोना, बोरैक्स, कैन्थरिस, लाइकोपोडियम, पल्सेटिला, रैननक्युलस बल्व, सारसापैरिला, सिकेल कौर, सल्फ्यूरिक ऐसिड।

दायी तरफ से चलकर बायी को जाना—लाइकोपोडियम

बायी तरफ से चलकर दायी को जाना—लैकेसिस

एक तरफ से दूसरी तरफ और फिर पहली तरफ आ जाना—लैक कैनाइनम

(७) शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—है)

ऑरम मेटैलिकम—सोना

(AURUM METALLICUM—GOLD)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) जीवन से निराशा, मरने की या आत्मघात करने की इच्छा	लक्षणो मे कमी (Better) *ठंडी, खुली हवा पसन्द
(२) इस प्रकार की निराशा का कारण गृह-कलह, व्यापार-हानि, शोक आदि हो सकता है	*ठंडे पानी से स्नान पसन्द *गर्म हो जाने से रोग मे कमी
(३) आतशक या पारा-दोष-जनित टीबिया या अन्य हड्डियो का क्षय तथा उनमे दर्द	*घूमने से रोग मे कमी
(४) एक के दो, या वस्तु का सिर्फ नीचे का हिस्सा दीखना, ऊपर का न दीखना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *सूर्यास्त से सूर्योदय तक
(५) पोतो का सूकता जाना या बडे लोगों के पोतो का सख्त हो जाना	*मानसिक क्षोभ से वृद्धि *निराशाजनक घरेलू
(६) शरीर की ग्रन्थियो के शोथ को दूर करता है	मामलो से रोग बढ़ना
(७) ब्लड प्रेशर की औषधि है	*शीत-ऋतु मे रोग की वृद्धि

(१) जीवन से निराशा, मरने की या आत्मघात करने की इच्छा—मनुष्य मे उसके आन्तरिक-जीवन को प्रकट करनेवाले मन तथा हृदय—ये दो अग हैं। मन उसके मानसिक-जीवन को सूचित करता है, हृदय उसके हार्दिक-जीवन को

सूचित करता है। मानसिक-जीवन का अर्थ है—चिंतन, बुद्धि आदि, तथा हार्दिक-जीवन का अर्थ है—उसका जीवन के प्रति प्रेम, उसके जीवन के प्रति भाव आदि। कभी-कभी मनुष्य ऐसी परिस्थितियो मे पड जाता है जबकि मानसिक-शक्ति द्वारा यह जानते हुए भी कि वह जो-कुछ अनुभव कर रहा है वह ठीक नही है, तव भी उसके हार्दिक-भाव इतने बिगड जाते हैं कि वह जीवन के प्रति निराशा की दृष्टि से देखने लगता है, और यह निराशा इस हद तक पहुच जाती है कि उसमे जीने की चाह भी नही रहती, वह मरना चाहता है, कभी-कभी आत्मघात की उत्कट-इच्छा उस पर सवार हो जाती है और अनेक बार ऐसे रोगी आत्मघात कर बैठते हैं। उसकी बुद्धि इतनी विक्षिप्त नही होती जितने उसके हार्दिक-भाव विक्षिप्त हो जाते है, और वह बैठा-बैठा आत्मघात के उपाय सोचा करता है। ऐसी हार्दिक-अवस्था मे जब उसकी जीवन के प्रति चाह ही मिट जाती है तब यह औषधि हृदय के आत्मघात के विचारो को एकदम बदल देती है।

(२) **इस प्रकार की निराशा का कारण गृह-कलह, व्यापार मे हानि, शोक-सन्ताप आदि हो सकता है**—मनुष्य ऐसी विकट-स्थिति मे जब वह जीना ही न चाहे क्योकर पड जाता है? इसका कारण गृह-कलह हो सकता है, ऐसा कलह जिसमे मनुष्य इतना निराश हो जाय कि मरना पसन्द करे, इसका कारण व्यापार मे ऐसी हानि हो सकती है जिसे मनुष्य बर्दाश्त न कर सके और मरने के विचार उस पर हावी हो जायें, इसका कारण पुत्र-वियोग, पति-वियोग, पत्नी-वियोग कुछ भी हो सकता है। उस समय वह निराशा के विचारो मे डूबा रहता है, इकला बैठा उन्ही विचारो मे लीन रहता है। वह सोचता है कि जिस स्थिति मे वह पड गया है उसमे उसके लिये जीवन भार है। छोटी-छोटी बात से वह चिढने लगता है, झट-से गुस्से से भडक उठता है, एकदम उत्तेजित हो जाता है। यह निराशा बढती-बढती पागलपन का रूप धारण कर सकती है। जब रोगी इस हालत मे पहुच जाता है कि इन विचारो की पकड मे इकला बैठा किसी से बोलता तक नही, अगर उसे इस मानसिक-स्थिति से निकालने के लिये कुछ कहा जाय तो एकदम भडक उठता है, तब यह दवा हृदय मे सन्तुलन ला देती है।

ऑरम, नेजा, आर्सेनिक, नक्स, सिमिसिफ्यूगा, इग्नेशिया, लैकेसिस तथा एसिड फॉस मे मरने की इच्छा के सबध मे आपसी तुलना—मरने की इच्छा उक्त सभी औषधियो मे पायी जाती है परन्तु इनमे भेद है। **ऑरम** मे यह इच्छा घरेलू कारणो या आतशक और पारा-दोष-ग्रस्त होने के कारण होती है, **नेजा** मे दिल की बीमारी के कारण होती है, **आर्सेनिक** और **नक्स** मे मरने की इच्छा रहती है परन्तु रोगी मरने से डरता है, किसी के प्रेम से निराशा होने के कारण मरने की इच्छा हो तो **सिमि, इग्ने, लैक, एसिड फॉस** उपयुक्त हैं और अगर किसी गभीर शोक के कारण वियोग के कारण मरने की इच्छा हो तो **कॉस्टिकम, कोलचिकम,**

इग्नेशिया की तरफ ध्यान जाना चाहिये। इन सब के अन्य लक्षणों की तरफ भी विचार करना उचित है।

(३) **आतशक या पारा-दोष-जनित टीबिया, या कान, नाक, तालु आदि अन्य हड्डियों का क्षय तथा उनमें दर्द**—जिन लोगों को आतशक हो जाता है एलोपैथी में उनका इलाज मर्करी से होता है। अन्य रोगों में भी मर्करी दिया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि रोगी को आतशक की बीमारी के अतिरिक्त मर्करी-जनित रोग भी हो जाता है। आतशक तथा मर्करी-जनित-रोग से भी रोगी हताश, निराश, उदास रहने लगता है। आतशक के रोग से, तथा पारे के इलाज से उसे घुटने के नीचे की हड्डी 'टीबिया' में शोथ, दर्द होता है, कान, नाक, तालु की हड्डियां भी सड़ने लगती है। आतशक से जिगर पर भी प्रभाव पड़ता है, हृदय पर आतशकजनित-गठिये का असर होने लगता है। इन रोगों में जोड़ों में दर्द, गठिये का दर्द, जोड़ों की हड्डियों में शोथ, शरीर की ग्रन्थियों में शोथ आदि उत्पन्न हो जाते हैं जिनको **ऑरम** दूर कर देता है।

(४) **एक के दो, या वस्तु का सिर्फ नीचे का हिस्सा दीखना**—इस औषधि का विशिष्ट-लक्षण यह है कि एक वस्तु की जगह दो दिखाई देती हैं। ऐसा तो कई औषधियों में है, ऐसा मोतियाबिन्द में भी होता है। परन्तु वस्तु का सिर्फ नीचे का हिस्सा दीखना, ऊपर का न दीखना इसका विशिष्ट-लक्षण है। **ऐसिड म्यूर** में नीचे या ऊपर का कोई भी हिस्सा दिखाई दे सकता है। सिर्फ बायीं तरफ का हिस्सा दीखना, दायीं तरफ का न दीखना **कैलकेरिया, लिथियम** तथा **लाइकोपोडियम** में पाया जाता है।

(५) **पोतों का सूकता जाना या बड़े लोगों के पोतों का सख्त हो जाना**—इस औषधि का यह भी विशिष्ट-लक्षण है कि बच्चों के अण्डकोश सूकते जाते हैं, या बड़ों के फूल जाते हैं या सख्त हो जाते हैं। बच्चों के सूकने में **आयोडियम** भी औषधि है, परन्तु उसमें खाने की तीव्र-इच्छा बनी रहती है, और सिर्फ पोते ही नहीं सारा शरीर सूकता जाता है।

(६) **शरीर की ग्रन्थियों के शोथ को दूर करता है**—शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न 'ग्रन्थियां' (Glands) हैं। गले में, बाजुओं की कोख में, पेट में, जांघों के जोड़ में, स्त्री के स्तनों में ग्रन्थियां हैं। अण्डकोश तथा डिम्ब-कोश भी तो ग्रन्थियां ही हैं। इस औषधि का इन सब ग्रन्थियों पर आश्चर्यजनक प्रभाव है। इन ग्रन्थियों के शोथ को **ऑरम** दूर करता है। हनीमैन ने एक रोगी को इसी ग्रन्थि-रोग में शक्तिकृत् **ऑरम** दिया परन्तु कुछ लाभ न हुआ। उसके बाद हनीमैन ने **ऑरम** का १५ शक्ति तक 'मर्दन' (Trituration) किया, तब औषधि ने फौरन काम किया। हनीमैन का कथन है कि पहली मात्रा में **ऑरम** बहुत नीची शक्ति का था इसलिये जीवनी-शक्ति के केन्द्रीय-स्तर को नहीं छू

सका था। उच्च-शक्ति मे पहुच कर उसकी शक्ति इतनी बढ गई कि वह जीवनी-शक्ति के केन्द्रीय-स्तर को, जहा से रोग की शुरुआत होती है, छू सका। हनीमैन के कहने का अभिप्राय यह है कि उच्च-शक्ति निम्न-शक्ति की अपेक्षा अधिक कार्यकर होती है।

सुवर्ण आदि ठोस पदार्थ घुल नही सकते, परन्तु हनीमैन ने जिस प्रक्रिया को खोज निकाला उसके अनुसार जब 'मर्दन' से ये ठोस पदार्थ अत्यन्त सूक्ष्म हो जाते हैं, तब अलकोहल मे अपने सूक्ष्मतम परमाणुओ के रूप मे घुल जाते हैं। इसी प्रकार सोना, चादी आदि धातुओ की उच्च-शक्ति की औषधि बनाई जाती है।

(७) **हाई-ब्लड-प्रेशर (High blood pressure)**—रुधिर का एक स्थान पर सचय (Congestion) इस औषधि का विशेष-लक्षण है। इसीलिये हाई-ब्लड-प्रेशर मे **ऑरम** ३० की मात्रा रोग को ठीक कर देती है। हाई-ब्लड-प्रेशर मे **बैराइटा म्यूर ६x, ग्लोनॉयन** और **डिजिटेलिस** भी ध्यान देने योग्य हैं।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

1 **रात मे रोग की वृद्धि**—पारे के सभी रोगो की तरह इसमे तकलीफ शाम को शुरु होकर सारी रात रहती है। दर्द घनघोर होता है, हड्डिया ऐसा दर्द करती हैं मानो टूट जायेंगी, बुखार मे नही परन्तु आशतक के पुराने मरीज़ो मे। हड्डी के परिवेष्टन मे ऐसा दर्द होता है मानो कोई चाकू से छील रहा हो। जोडो मे रात को दर्द होता है। रोगी दर्द के मारे बिस्तर मे टिक नही सकता, बिस्तर छोडकर टहलने लगता है। जो रोगी जन्मभर पारा लेता रहा है, उसका जिगर बढ़ जाता है, जोड सूज जाते हैं, रात को दर्द होता है। ऐसे रोगी के लिये यह लाभप्रद है।

11 **रोगी खुली हवा चाहता है**—रोगी **पल्सेटिला** की तरह खुली हवा चाहता है। अन्तर यह है कि **पल्स** का रोगी कोमल, मृदु स्वभाव का होता है, कहने से बात मान जाता है, **ऑरम** का **पल्स** से उल्टा स्वभाव होता है—चिड-चिडा, क्रोधी। यद्यपि वह खुली हवा पसन्द करता है परन्तु सिर-दर्द मे सिर को लपेट लेना चाहता है, **फॉसफ़ोरस** से उल्टा क्योकि **फॉसफोरस** शरीर को लपेटना और सिर को खुला रखना चाहता है, **आर्सेनिक** की तरह। हमने अभी कहा कि **ऑरम पल्सेटिला** की तरह खुली हवा पसन्द करता है, परन्तु इस बात को ध्यान मे रखना चाहिये कि वह खुली हवा पसन्द करते हुए भी कपडा उघाडना पसन्द नही करता, कपडा लपेटे रखना चाहता है। दमे मे भी **ऑरम** का रोगी खुली हवा चाहता है, गर्मी से उसके दमे मे वृद्धि हो जाती है। ठडे पानी से स्नान करने से उसके बहुत-से लक्षण मिट जाते हैं। जब **ऑरम** का रोगी उत्तेजना से परेशान हो, उसकी धमनिया स्पन्दन कर रही हो, तब वह दरवाज़े और खिडकिया खुलवा देना चाहता है, खुली हवा चाहता है, शरीर का कपडा परे फेंक देना चाहता है,

यद्यपि अन्य अवसरो पर वह कपडे से लिपटा रहना पसन्द करता है। स्त्रियों को मासिक-धर्म के वन्द होने पर जैसी तरेरें आती हैं वैसी तरेरें ऑरम मे भी पायी जाती हैं। इन तरेरो के वाद पसीना आता है, और कभी-कभी सर्दी लगने लगती है। आख के दर्द मे भी रोगी ठडा पानी पसन्द करता है।

(९) शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है परन्तु कई वातो मे 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

बैप्टीशिया (BAPTISIA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) टाइफॉयड के लक्षण—ज्वर के साथ बढ़ती हुई कमजोरी और फिर 'तन्द्रा' (Stupor)	लक्षणो मे कमी (Better) *कुछ विशेष नहीं
(२) शरीर मे कुचले जाने का-सा दर्द अनुभव करना	
(३) टाइफॉयड मे बैप्टीशिया और जेलसीमियम	
(४) रोगी अनुभव करता है कि अपने विखरे हुए अगो को वटोर रहा है	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *नमी, गर्मी से रोग मे वृद्धि
(५) तरल-पदार्थ निगल सकता है, ठोस निगलने से गला घुटता है	*वन्द कमरे मे रोग की वृद्धि *सोने के वाद रोग मे वृद्धि

(१) **टाइफॉयड के लक्षण—ज्वर के साथ बढ़ती हुई कमजोरी और फिर 'तन्द्रा'**—इस औषधि के लक्षण टाइफॉयड से इतने मिलते-जुलते हैं कि यह इसकी मुख्य-औषधि मानी जाती है। डा० नैश लिखते हैं कि रोग की प्रारम्भिक-अवस्था मे घवराहट, शीत का अनुभव, सपूर्ण शरीर मे दर्द—विशेष रूप से सिर, पीठ और हाथ-पैर मे पीडा—होती है। रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि शरीर कूट-कूट कर कुचल दिया गया है। ज्यो-ज्यो रोग वढता जाता है कमजोरी भी वढती जाती है और रोगी 'तन्द्रा' (Stupor) मे पहुच जाता है। डा० कैन्ट लिखते है कि यह अवस्था डिलीरियम का रूप धारण कर लेती है। अगर आप इस रोगी को जगा कर कुछ कहना चाहें, कुछ पूछना चाहे, तो वह आप की ओर ऐसे देखता है मानो शराव के नशे मे हो। प्रश्न का उत्तर देता-देता ही सो जाता है, पूरा उत्तर ही नही दे पाता। शरीर की कुचलन, पीडा आदि के ये लक्षण आर्निका मे भी हैं, परन्तु आर्निका का रोगी प्रश्न का उत्तर देकर फौरन सो जाता है, और बैप्टीशिया का रोगी उत्तर देता-देता सो जाता है। ये लक्षण इन्फ्लुएन्जा, स्कार्लेट फ़ीवर किसी मे भी हो, बैप्टीशिया ही दवा है।

(२) **शरीर मे कुचले जाने का-सा दर्द अनुभव करना**—रोगी शरीर के

जिस भाग मे भी लेटने का प्रयत्न करता है, उसी भाग मे अनुभव करता है कि उसे उस भाग के कुचले जाने का-सा दर्द हो रहा है। **पाइरोजेन** और **आर्निका** मे भी शरीर के कुचले जाने का लक्षण है, परन्तु **आर्निका** मे अनायास मल-मूत्र निकल जाता है, **बैप्टीशिया** मे नही, शरीर के कुचले जाने के लक्षण के साथ अगर रक्त के दूषित होने की अवस्था (Septicemia) हो, तब **पाइरोजेन** उपयुक्त है। टाइफॉयड मे **रस-टॉक्स** के भी लक्षण पाये जाते हैं, **बैप्टीशिया** की तरह रोगी विस्तर पर करवटे वदलता रहता है, परन्तु **रस टॉक्स** मे जीभ के अग्रभाग पर त्रिभुजाकार लाल चिह्न रहता है और रोगी का मल धुले हुए मास के पानी जैसा पतला होता है, ये लक्षण **बैप्टीशिया** मे नही हैं। इसके अतिरिक्त **बैप्टीशिया** के रोगी का मल अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त होता है, यह लक्षण **रस टॉक्स** मे नही है। **बैप्टीशिया** का डायरिया अत्यन्त दुर्गन्धवाला होता है।

(३) **टाइफॉयड मे बैप्टीशिया और जेलसीमियम**—टाइफॉयड की प्रारभिक अवस्था **जेलसीमियम** जैसी होती है। रोगी चुपचाप ऊघाई मे पडा रहता है, इस अवस्था मे ज्वर इतना प्रचड नहीं होता, पतले दस्त भी इस अवस्था मे नही आते, परन्तु प्रथमावस्था के वाद की अवस्था मे जव 'ऊघाई' (Drowziness) 'तन्द्रा' (stupor) मे वदल जाती है, जव ज्वर अधिक होने लगता है, पतले दस्त आने लगते हैं, तव **बैप्टीशिया** की अवस्था आ जाती है। वैसे टाइफॉयड की हर अवस्था मे शुरु से अन्त तक **बैप्टीशिया** इसकी मियाद को कम कर देता है।

(४) **रोगी अनुभव करता है कि अपने बिखरे हुए अगो को बटोर रहा है**—रोगी विस्तर मे करवटें वदलता रहता है, और पूछने पर कहता है कि उसके अग विखरे पडे हैं, वह उन्हें वटोर रहा है। इसका विशिष्ट-लक्षण यह भी है कि रोगी अनुभव करता है कि उसके तीन शरीर हैं जिन सव को वह ढापने का प्रयत्न करता है। एक अग दूसरे अग से वहस किया करता है।

(५) **तरल-पदार्थ निगल सकता है, ठोस से गला घुटता है**—पानी, दूध आदि सरलता से पी लेता है, ठोस नही ले सकता, गला घुटता है। **इग्नेशिया** मे ठोस आसानी से भीतर ले जाता है, तरल नही ले जा सकता। **इग्नेशिया** का यह लक्षण **बैप्टीशिया** से उल्टा है।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—मूल-अर्क से २०० तक। **बैप्टीशिया** और **जेलसीमियम** दोनो अल्पकालिक (short-acting) औषधिया हैं। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।

बैराइटा कार्बोनिका (BARYTA CARBONICA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) शारीरिक तथा मानसिक विकास का अभाव (Dwarfishness)
(२) शारीरिक तथा मानसिक दुर्बलता मे बैराइटा, कैलकेरिया कार्ब तथा साइलीशिया की तुलना
(३) ग्रन्थियो का वढ जाना, टासिल का सूजना
(४) वृद्ध-पुरुषो का वच्चो का-सा आचरण
(५) वृद्ध-पुरुषो की खासी
(६) शीत-प्रधान रोगी (Chilly patient)

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
गर्मी से रोग में कमी
*एकान्त मे रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*सर्दी से लक्षणो मे वृद्धि
*रोग वाली करवट सोने से लक्षणो मे वृद्धि
*स्नान से परहेज

(१) **शारीरिक तथा मानसिक विकास का अभाव (Dwarfishness)**—यह एक दीर्घकालिक तथा गभीर क्रिया करनेवाली औषधि है। शरीर तथा मन की अन्तरतम तह पर प्रभाव डालती है। कई वच्चे वडे चतुर, प्रतिभाशाली होते हैं, यह ठीक उल्टी है। वच्चा हर काम देर से सीखता है। देर से चलना, देर से पढना-लिखना, मानो उसका शारीरिक तथा मानसिक विकास रुका हुआ है। लडकिया १८–१९ साल की हो जाने पर भी वच्चो का-सा व्यवहार करती हैं, गुडियो से खेलती हैं। विवाह हो जाने पर भी घर-गृहस्थी के काम को समझ नही पाती। शारीरिक तथा मानसिक विकास की वह प्रक्रिया जो व्यक्ति को पुरुष अथवा स्त्री वनाती है, वह इन रोगियो के लिये रुकी-सी रहती है। शारीरिक-विकास ही नही, मानसिक-विकास भी रुका रहता है। कभी-कभी शरीर का एक अग वढना रुक जाता है, दूसरे अग विकसित होते रहते हैं।

(२) **शारीरिक तथा मानसिक दुर्वलता मे वैराइटा, कैलकेरिया कार्व तथा साइलीशिया की तुलना**—कैलकेरिया कार्व मे भी वच्चे का शारीरिक तथा मानसिक विकास रुका रहता है। दोनो सूके की वीमारी मे काम आती हैं। **कैल्केरिया** का वच्चा देखने मे मोटा-ताज़ा, थुलथुल होता है, वहुत जल्दी वढ जाता है, सिर और पेट वडे, गर्दन और पैर पतले होते हैं, वैराइटा मे वच्चा थुलथुल न होकर सव अगो मे सूकता जाता है। पेट मे गिल्टिया नज़र आती हैं। भूख-भूख चिल्लाता है परन्तु खाने से इन्कार करता है। **साइलीशिया** मे भी वच्चा सूकता जाता है। **वैराइटा** तथा **साइलीशिया** दोनो मे पाव से वदवूदार पसीना निकलता है, शरीर की अपेक्षा सिर वडा होता है, दोनो शीत-प्रधान हैं, परन्तु **कैलकेरिया** तथा **साइलीशिया** दोनो मे सिर पर पसीना वहुत ज्यादा आता है,

बैराइटा मे नही। इसके अतिरिक्त **साइलीशिया** मे **बैराइटा** की तरह मानसिक बौनापन नही होता। सूके के रोग के विषय मे हमने **एब्रोटेनम** मे सूके की बीमारी मे अन्य औषधियो की आपसी तुलना की है।

(३) **ग्रन्थियो का बढ़ जाना, टासिल का सूजना**—इस रोगी की 'ग्रन्थिया' (Glands) बढ जाती हैं, सख्त हो जाती हैं, गले, जाघ, पेट मे गिल्टिया पड़ जाती है। गिल्टिया बढ जाये और मास-पेशिया सूक जायें—शरीर बौना और मन गावदी—यह मूर्त-चित्रण है इस रोगी का जिसे **बैराइटा कार्ब** ठीक कर देता है। गले पर, अर्थात् टासिल पर इस औषधि का विशेष प्रभाव है। जरा-सी सर्दी लगने मे टासिल बढ जाता है, कभी-कभी पक जाता है।

टांसिल मे बैराइटा, बेलाडोना, हिपर तथा कैमोमिला की तुलना—**बेलाडोना** और **हिपर** मे टासिल का आक्रमण यकायक होता है, वेग से होता है, जिस रात सर्दी लगी उसी रात टासिल सूज जाता है और पक भी जल्दी ही जाता है, परन्तु **बैराइटा** मे एक रात की सर्दी मे उसी दिन टासिल नही सूजता, इसे कुछ दिन लग जाते हैं, पकता भी एकदम नही, धीरे-धीरे पकता है। **कैमोमिला** के टासिल की सूजन मे कान मे भी दर्द होता है, गर्मी पहुचाने से आराम मिलता है, रोगी बडा चिडचिडा हो जाता है। दर्द इस वेग से आता है कि चिकित्सक इसे **बेलाडोना** का दर्द समझ सकता है।

(४) **वृद्ध-पुरुषो का बच्चों का-सा आचरण**—वृद्ध-पुरुष बच्चो का-सा आचरण करने लगते हैं, स्मृति-शक्ति लुप्त हो जाती है, चलतेहुए डगमगाते हैं, बच्चो का-सा स्वभाव हो जाता है। **बैराइटा कार्ब** का चरित्रगत-लक्षण यह है कि रोगी का सर्वांगीण विकास रुक जाता है—चाहे बच्चे का हो युवा का हो, वृद्ध का हो। जब यह देखा जाय कि सत्तर वर्ष का व्यक्ति बच्चे की तरह आचरण कर रहा है, तब समझना चाहिये कि उसका विकास रुक गया है, उसे **बैराइटा** लाभ करेगा।

(५) **वृद्ध-पुरुषो की खासी**—बुढापे मे कई लोगो को ऐसी खासी घेर लेती है जो उनका पीछा ही नही छोडती। छाती मे घडघडाहट हुआ करती है। इस प्रकार की खासी के लिये कुछ इनी-गिनी औषधिया है जिनमे **बैराइटा** एक है। इसके अतिरिक्त **सेनेगा, ऐमोनियम कार्ब** और **बैराइटा** म्यूर भी इस प्रकार की खासी के लिये उपयोगी हैं।

जब किसी ७०–८० वर्ष के वृद्ध को हर समय छाती मे खासी की घडघडाहट हो जो गर्मी के दिनो मे ठीक रहे, सर्दी के दिनो मे इस प्रकार की खासी से परेशान हो जाय, और इसके सिवाय दूसरा कोई लक्षण न हो, तो **ऐमोनियम कार्ब** बहुत श्रेष्ठ दवा है।

(६) **शीत-प्रधान रोगी** (Chilly patient)—होम्योपैथी मे यह

जानना आवश्यक है कि रोगी शीत-प्रधान है या ऊष्णता-प्रधान, उसे सर्दी अधिक सताती है या गर्मी। आयुर्वेद मे इसे प्रकृति कहते हैं। कई लोग कफ-प्रकृति के होते हैं, कई वात-प्रकृति के—ये दोनो 'शीत-प्रधान' (Chilly patients) हैं। शीत-प्रधान रोगी के लिये शीत-प्रधान औषधि का ही निर्वाचन करना होता है, ऊष्णता-प्रधान रोगी के लिये ऊष्ण-औषधि का निर्वाचन करना होता है क्योंकि होम्योपैथी का सिद्धान्त 'सम सम शमयति' का है। एलोपैथी, आयुर्वेद तथा यूनानी मे ठडे मिजाज के रोगी को गर्म दवा दी जायगी, गर्म मिजाज के रोगी को ठंडी दवा दी जायगी। होम्योपैथी मे इससे उल्टा है—क्यो उल्टा है इसका विवरण हम पुस्तक की भूमिका मे दे चुके है। जैसे आयुर्वेद मे यह जानना आवश्यक है कि रोगी वात-पित्त-कफ मे से किस प्रकृति का है, वैसे होम्योपैथी मे भी यह जानना आवश्यक है कि रोगी शीत-प्रधान है या ऊष्णता-प्रधान है। औषधि का निर्वाचन करते हुए यह मूल-सिद्धान्त है। इसीलिये होम्योपैथ रोगी से बड़ी बारीकियो से पूछा करते है कि तुम्हें ठड पसन्द है या गर्मी पसन्द है, तुम कमरे मे आते ही खिडकी-दरवाजे खोल देना चाहते हो या उन्हे वन्द कर देना चाहते हो। हमने यथासभव प्रत्येक औषधि के विषय मे औषधि की 'प्रकृति' (Modality) के नीचे यह देने का यत्न किया है कि रोगी की शिकायतें ठड से बढती है या गर्मी से बढती है। यह जानकर कि रोगी किस प्रकृति का है, होम्योपैथ को औषधि का निर्वाचन करने मे सहायता मिलती है। अगर किसी रोग मे दो औषधियो के सब लक्षण मिलते हो, परन्तु एक औषधि शीत-प्रधान हो और दूसरी ऊष्णता-प्रधान हो, तो औषधि का निर्वाचन करते हुए चिकित्सक को शीत-प्रधान रोगी के लिये शीत-प्रधान औषधि का निर्वाचन करना होगा, ऊष्णता-प्रधान रोगी के लिये ऊष्णता-प्रधान औषधि का निर्वाचन करना होगा। जैसे आयुर्वेद मे वात-पित्त-कफ प्रकृति को निदान तथा चिकित्सा मे मुख्य माना गया है, वैसे होम्योपैथी मे भी सर्दी-गर्मी को मुख्य माना गया है, फर्क यह है कि आयुर्वेद मे प्रकृति के तीन भाग किये गये है—वात, पित्त, कफ, और होम्योपैथी मे 'प्रकृति' (Modality) के दो भाग किये गये हैं—सर्दी और गर्मी। सर्दी का भेद करते हुए 'खुश्क-सर्दी' (Dry cold) तथा 'नमीदार-सर्दी' (Wet cold)—ये दो भाग भी किये जाते है क्योंकि कई रोगियो पर नमी का प्रभाव विशेष होता है—वर्षा-ऋतु का।

बैराइटा कार्ब शीत-प्रधान औषधि है। रोगी ठडक सहन नही कर सकता। शरीर को ढके रखना चाहता है। कमरे के खिडकी-दरवाजे वन्द रखना पसन्द करता है। इतना ध्यान देने की वात है कि यद्यपि उसकी अन्य सव शिकायतें ठड लगने से बढ जाती है, उसका सिर-दर्द ठड से घटता है, सिर पर गर्मी लगने से तकलीफ होती है। सपूर्ण शरीर तथा सिर का एक-दूसरे से विपरीतभाव अन्य भी अनेक औषधियो मे पाया जाता है। उदाहरणार्थ, **फॉसफोरस, आर्सेनिक** भी शीत-

प्रधान औषधिया हैं, शरीर को शीत ज्यादा सताता है, परन्तु सिर पर वे ठडक ही पसन्द करती हैं। औषधियो के इस प्रकार के भेद जानने से ठीक दवा का चुनाव करना आसान हो जाता है।

(७) शक्ति तथा प्रकृति—३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

बेलाडोना (BELLADONNA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) शोथ तथा ज्वर मे भयकर उत्ताप, रक्तिमा तथा बेहद जलन (Heat, redness, burning in Inflammation and fever)
(२) रक्त-सचय की अधिकता (Congestion) तथा सिर दर्द, प्रलाप, पागलपन
(३) दर्द एकदम आता है और एकदम ही चला जाता है
(४) रोग का प्रचड तथा एकाएक रूप मे आना
(५) प्रकाश, शोर, स्पर्श सहन न कर सकना
(६) मूत्राशय की उत्तेजितावस्था (Irritation of the bladder)
(७) असहिष्णु-जरायु से रक्तस्राव (Hemorrhage from sore uterus)
(८) हिलने-डुलने, शीत, स्पर्शादि से रोग-वृद्धि
(९) दाईं तरफ प्रभाव करनेवाली औषधि है
(१०) दोपहर ३ बजे से रात तक रोग-वृद्धि

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*हल्का ओढ़ना पसन्द
*बिस्तर मे विश्राम पसन्द
*गर्म घर मे सोना पसन्द

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*छूने से, गन्ध से, शब्द से
*वायु के झोंके से वृद्धि
*हिलने-डोलने से वृद्धि
*दिन के ३ बजे से रात तक
*सूर्य की गर्मी से रोग-वृद्धि
*बाल कटवाने से रोग-वृद्धि

(१) शोथ तथा ज्वर मे भयंकर उत्ताप, रक्तिमा तथा बेहद जलन (Violent heat, redness and intense burning in Inflammation and fever)—डा० कैन्ट कहते हैं कि बेलाडोना के शोथ मे उत्ताप, रक्तिमा तथा बेहद जलन इसके विशिष्ट लक्षण हैं। इन तीनों की स्थिति निम्न है

भयंकर उत्ताप (Violent heat)—फेफडे, मस्तिष्क, जिगर, अतडिया अथवा किसी अन्य अग मे शोथ हो तो भयकर उत्ताप मौजूद होता है। इस रोगी की त्वचा पर अगर हाथ रखा जाय, तो एकदम हटा लेना पडता है क्योंकि त्वचा मे भयकर गर्मी होती है। इतनी भयकर गर्मी कि हाथ हटा लेने के बाद भी कुछ

समय तक गर्मी की याद बनी रहती है। रोगी के किसी अग मे भी शोथ क्यो न हो, उसे छूने से भयकर उत्ताप का अनुभव होता है।

टाइफॉयड के उत्ताप मे बेलाडोना न दे—डा० कैन्ट कहते हैं कि टाइफॉयड मे अगर इस प्रकार का उत्ताप मौजूद भी हो, तो भी उसमे **बेलाडोना** कभी नहीं देना चाहिये। इसका कारण यह है कि औषधि की गति तथा रोग की गति मे सम-रसता होना आवश्यक है। **बेलाडोना** की शिकायतें यकायक, एकदम, बडे वेग से आती हैं और यकायक ही चली भी जाती हैं। टाइफॉयड यकायक नहीं आता, धीरे-धीरे आता है और धीरे-धीरे जाता है। बेल की गति और टाइफॉयड की गति मे सम-रसता नही है, इसलिये इसमे **बेलाडोना** देने से रोग बढ सकता है, घट नहीं सकता। **बेलाडोना** उसी ज्वर मे देना उचित है जिसमे ज्वर यकायक आये, धीमी गति से न आये। **बेलाडोना** मे ताप होता है, बेहद ताप, भयकर ताप।

रक्तिमा (Redness)—बेल के शोथ मे दूसरा मुख्य-लक्षण रक्तिमा है। अग के जिस स्थान पर शोथ हुआ है, वह बेहद लाल दिखाई देता है। लालिमा के बाद इसका रग हल्का पड सकता है, कुछ काला पड सकता है, ऐसा भी हो सकता है कि विशेष रूप से पहचाना न जाय, परन्तु शुरु मे चमकीला लाल होता है। शरीर की गाठो मे शोथ होगी तो वह भी लाल रग की, गला पकेगा तो लाल रग जैसा, ऐसा जैसे अगारा हो, फिर उसका रग फीका पड सकता है, परन्तु शुरु मे देखते ही लाल रग होता है।

बेहद जलन (Intense burning)—बेल के शोथ मे तीसरा मुख्य-लक्षण बेहद जलन है। शोथ मे, ज्वर मे, रक्त-सचय मे, टासिल मे बेहद जलन होती है। इतना ही नही कि यह जलन हाथ से छूने से अनुभव की जाय, रोगी को अपने-आप भी जलन महसूस होती है। उदरशोथ (Gastritis) मे पेट मे जलन होती है। इस प्रकार उत्ताप, रक्तिमा तथा जलन—ये तीनो इस औषधि मे मुख्य स्थान रखते हैं।

उत्ताप, रक्तिमा तथा जलन के लक्षणो मे सूजन, आख दुखना, डिसेन्ट्री, बवासीर तथा गठिया के रोग—यह हम कह चुके है कि **बेलाडोना** में तीन लक्षण आधारभूत हैं उत्ताप, रक्तिमा तथा जलन। इन तीन को ध्यान मे रखते हुए यह बात आसानी से समझ आ जाती है कि शोथ, आख दुखना, डिसेन्ट्री तथा बवासीर मे इसकी कितनी उपयोगिता है। इनके अलावा जहा भी ये तीन लक्षण हों, वहीं **बेलाडोना** उपयोगी है।

सूजन जिसमे उत्ताप, रक्तिमा और जलन हो—अगर किसी अग मे सूजन हो जाय, सूजन के स्थान को छुआ तक न जा सके—स्मरण रहे कि स्पर्श के लिये असहिष्णुता इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है—दर्द हो, ऐसा अनुभव हो कि सूजन का स्थान फूट पडेगा, इसके साथ उस स्थान मे गर्मी, लाली और जलन हो,

तो **बेलाडोना** औषधि है। सूजन के विषय मे स्मरण रखना चाहिये कि अगर सूजन के बाद सूजन पकने लगे तब **बेलाडोना** लाभ नही कर सकता, पकने से पहले की अवस्था तक ही इसकी सीमा है।

आंख दुखना जिसमे उत्ताप, रक्तिमा और जलन हो—आख मे गर्मी, रक्तिमा और जलन जो **बेलाडोना** के लक्षण हैं, उनके मौजूद होने पर यह इसे ठीक कर देता है। आख से पानी आना, रोशनी मे आख न खोल सकना, आख में गर्मी, लाली और जलन के बाद कभी-कभी आख मे 'टीर' (Squint) रह जाता है। उसे यह औषधि ठीक कर देती है।

डिसेन्ट्री जिसमे उत्ताप, रक्तिमा और जलन हो—रोगी बार-बार ज़ोर लगाता है, मुह तपने लगता है, चेहरा लाल हो जाता है, सिर और चेहरे पर जलन शुरु हो जाती है, हाथ-पैर ठडे और सिर गर्म, बहुत जोर लगाने पर भी बहुत थोडा मल—ऐसी डिसेन्ट्री मे **बेलाडोना** लाभ-प्रद है।

बवासीर जिसमे उत्ताप, रक्तिमा और जलन हो—ऐसी बवासीर जिसमे सख्त दर्द हो, मस्से बेहद लाल हो, सूज रहे हो, छूए न जा सकें, जलन हो, रोगी टागें पसार कर ही लेट सके—ऐसी बवासीर मे **बेलाडोना** लाभ करेगा।

गठिया जिसमे उत्ताप, रक्तिमा और जलन हो—डा० कैन्ट लिखते हैं "गठिये मे जब सब या कुछ जोड सूज जाते हैं, तब इन जोडो मे उत्ताप, लाली और जलन होती है। ऐसे गठिये मे उत्ताप, रक्तिमा और जलन मौजूद रहते है। इसके साथ रोगी स्वय 'असहिष्णु' (Sensitive) होता है और जोडो को किसी को छूने नही देता। ज़रा-सा छू जाने से उसे दर्द होता है। वह बिस्तर पर बिना हिले-जुले पडा रहना चाहता है। जोडो मे दर्द के साथ तेज़ बुखार मे वह शान्त पडा रहता है। **बेल** का रोगी शीत को बर्दाश्त नही कर सकता, कपडे से लिपटा रहता है, हवा के झोंके से परेशान हो जाता है, गर्मी से उसे राहत मिलती है।"

(२) **रक्त-संचय की अधिकता (Congestion) तथा सिर-दर्द**—अभी हमने उत्ताप, रक्तिमा तथा जलन का उल्लेख किया। उत्ताप, रक्तिमा तथा जलन क्यो होते हैं? इसका कारण रुधिर का किसी जगह एकत्रित हो जाना है। **बेलाडोना** इस प्रकार रुधिर के किसी अग-विशेष मे सचित हो जाने पर औषधियो का राजा है। यह रक्त-सचय कही भी हो सकता है—सिर मे, छाती मे, जरायु मे, जोडो मे, त्वचा पर—शरीर के किसी भी अग पर यह सचय हो सकता है। इस प्रकार के रुधिर-सचय मे विशेष लक्षण यह है कि यह बडे वेग से आता है और एकदम आता है। हम अभी देखेंगे कि लक्षणो का वेग से आना और एकदम जाना **बेलाडोना** का चरित्रगत-लक्षण है। **बेलाडोना** के रोग वेग से आते हैं और एकदम जाते हैं, इसके रोगो की गतिया मन्द वेग से नही चलती। बिजली के-से वेग से आना **बेलाडोना** की विशेषता है। बच्चा जब सोया था तब बिल्कुल ठीक था,

परन्तु मध्य-रात्रि मे ही एकदम उसे दौरा पड गया, हाथ-पैर ऐंठने लगे, पेट मे दर्द उठ खडा हुआ—ये सब एकदम और वेग से आनेवाले रक्त-सचय के लक्षण इस औषधि के हैं। इन्ही लक्षणों के कारण हाई-ब्लड प्रेशर की भी यह उत्कृष्ट दवा है।

रक्त-सचय से सिर-दर्द—रक्त की गति जब सिर की तरफ चली जाती है तब सिर-दर्द होने लगता है। **बेलाडोना** मे भयकर सिर-दर्द होता है। ऐसा दर्द मानो सिर मे कुछ छुरे चल रहे हो। **बेल** का रोगी हरकत को बर्दाश्त नहीं कर सकता, स्पर्श को सहन नही कर सकता, रोशनी और हवा को भी नही सह सकता। बच्चा बिस्तर पर पडा सिर-दर्द से चीखता है, तकिये पर सिर इधर-उधर पटकता है यद्यपि सिर का हिलना सिर-दर्द को और बढाता है। यह सिर-दर्द सिर मे रक्त-सचय के कारण होता है। जब ज्वर तेज़ हो तब ऐसा सिर-दर्द हुआ करता है। रोगी अनुभव करता है कि रुधिर सिर की तरफ दौड रहा है। **बेल** के सिर-दर्द मे सिर गरम होता है और हाथ-पैर ठडे होते है, आखें लाल, कनपटियो की रगो मे टपकन होती है, लेटने से सिर-दर्द बढ़ता है, रोगी पगडी से या किसी चीज़ से सिर को कस कर बाधता है, तब उसे आराम मालूम देता है।

रक्त के सिर की तरफ दौर से प्रलाप—**बेल** मे रक्त का सिर की तरफ दौर इतना ज़बर्दस्त होता है कि रोगी को प्रबल प्रलाप तथा बेहोशी की-सी अवस्था हो जाती है। यद्यपि उसे नीद आ रही होती है तो भी वह सो नही सकता। वह सिर को तकिये पर इधर-उधर डोलता रहता है। कभी-कभी वह प्रगाढ निद्रा मे जा पहुँचता है जिसमे उसे घबराहट-भरे स्वप्न आते हैं। वह देखता है हत्याएँ, डाकू, आगज़नी। वह प्रलाप भी करने लगता है—उसे भूत-प्रेत, राक्षस, काले कुत्ते, भिन्न-भिन्न प्रकार के कीडे-मकौडे दिखाई देने लगते हैं। यह सब रक्त का सिर की तरफ दौर होने का परिणाम है।

पागलपन—जब रक्त का सिर की तरफ दौर बहुत अधिक हो जाता है, तब **बेलाडोना** मे पागलपन की अवस्था आ जाती है। वह अपना भोजन मगवाता है, परन्तु खाने के बजाय चम्मच को काटने लगता है, तश्तरी को चबाता है, कुत्ते की तरह नाक चढाता और भौंकता है। वह अपना गला घोटने का प्रयत्न करता है, और दूसरो को कहता है कि वे उसकी हत्या कर दें। हाय-हाय करना—इस औषधि की विशेषता है। ठीक हालत मे हो या न हो, वह हाय-हाय किया करता है। बहुत बोलता है। बोल-चाल मे और काम करने मे बहुत तेज़ी आ जाती है। जल्द-जल्द कुछ बडबडाता जाता है जिसका कुछ अर्थ नही होता। उसे ऐसे काल्पनिक भयकर दृश्य दिखाई देते हैं जिनसे जान बचाने के लिये वह भाग या छिप जाना चाहता है। उसका पागलपन उत्कट उन्माद का रूप धारण कर लेता है जिसमे वह तोड-फोड, मार-काट, गाली-गलौज करता है। दूसरो

पर थूकता है, दात पीसता, किटकिटाता है। डा० नैश न पागलपन की तीन दवाओ पर विशेष वल दिया है—**बेलाडोना, हायोसाइमस** तथा **स्ट्रैमोनियम** । इनकी तुलना निम्न प्रकार है

पागलपन मे बेलाडोना, हायोसाइमस तथा स्ट्रैमोनियम की तुलना—इन तीनो को मस्तिष्क के रोगो की औपधि कहा जा सकता है। **बेलाडोना** मे उन्माद की प्रचडता प्रधान है, **हायोसाइमस** मे प्रचडता नही होती, निरर्थक गुनगुनाना प्रवान होता है, प्रचडता तो कभी-कभी ही आती है। **बेल** का चेहरा लाल, **हायोसाइमस** का चेहरा पीला और बैठा हुआ होता है। **हायो** कमजोर होता है, और कमज़ोरी वढती जाती है। इस कमजोरी के कारण उसके उन्माद मे प्रचडता देर तक नही रह सकती। **हायो** की शुरुआत प्रचडता से हो सकती है परन्तु कमज़ोरी वढने के साथ वह हटती जाती है। **स्ट्रैमोनियम** मे उन्माद की प्रचडता पहली दोनो औषधियो से अधिक है। वह चिल्ला-चिल्ला कर गाता, ठहाके मार कर हसता, चिल्लाता, प्रार्थना करने लगता, गालिया वकने लगता—वडा बकवादी हो जाता है। उन्माद की प्रचडता मे **स्ट्रैमोनियम** तीनो से अधिक, फिर **बेलाडोना**, और सब से कम **हायोसाइमस** है। **स्ट्रैमो** अपने को भिन्न-भिन्न शक्लो मे डाल लेता है—कभी गेंद की तरह गोल लेट जाता है, कभी विस्तर की लम्बाई की तरफ, कभी चौडाई की तरफ, और भिन्न-भिन्न स्थितियो मे लेटता रहता है। प्रचडता के अतिरिक्त अन्य लक्षणो को भी निर्वाचन के समय ध्यान मे रखना चाहिये। उदाहरणार्थ, **बेलाडोना** प्रकाश को सहन नही कर सकता, **स्ट्रैमोनियम** अन्धेरे को नही सहन कर सकता। **बेल** अन्धेरा चाहता है, **स्ट्रैमोनियम** प्रकाश।

(३) **दर्द एकदम आता है और एकदम ही चला जाता है**—लक्षणो का वडे वेग से आना, और एकदम आना **बेल** का चरित्रगत-लक्षण है। इसी लक्षण का रूप तव स्पष्ट हो जाता है जव हम देखते हैं कि कोई भी दर्द एकदम आये और एकदम ही चला जाय, तो वह **बेल** से ठीक हो जाता है। सर्दी लगी, एकदम दर्द शुरु हुआ, बीमारी ने अपना जितना समय लगाना था लगाया, और दर्द जैसे एकदम आया था वैसे एकदम शान्त हो गया। कभी-कभी यह दर्द कुछ मिनट रहकर ही चला जाता है। **स्टैनम** मे दर्द मीठा-मीठा शुरु होता है, धीरे-धीरे वढता जाता है, उच्च-शिखर पर जाकर फिर धीरे-धीरे शान्त होता है। **मैग्नेशिया फॉस** का सिर-दर्द एकाएक आता है, चिरकाल तक वना रहता है और एकाएक ही जाता है। **सल्फ्यूरिक ऐसिड** मे धीरे-धीरे शुरु होता है पर एकदम जाता है।

(४) **रोग का प्रचड तथा एकाएक रूप मे आना** (Ailment coming in violent form and suddenly)—**बेलाडोना** के इन दो लक्षणो को भूला नही जा सकता। रोग वडे वेग से, प्रचड रूप मे आक्रमण करता है, और यह आक्रमण यकायक होता है। 'प्रचडता' और 'एकाएकपना' इस औषधि के मूल में पाया

जाता है। किसी प्रकार का दर्द हो, प्रचंड सिर-दर्द, धमनियों का प्रचंड-स्पन्दन, प्रचंड-डिलीरियम, प्रचंड-पागलपन, प्रचंड-ऐंठन। रोग की प्रचंडता और एकाएक-पने में एकोनाइट तथा बेलाडोना का सादृश्य है, इसलिये इनकी तुलना कर लेना आवश्यक है।

बेलाडोना और एकोनाइट की तुलना—ये दोनों औषधियां हृष्ट-पुष्ट शरीर के लोगों के लिये उपयोगी हैं। हृष्ट-पुष्ट स्वस्थ बच्चा या एक तगड़ा नौजवान यह समझ कर कि उसे सर्दी क्या कर लेगी, ठंड में कम कपड़े पहन कर निकलता है और रात में ही या सवेरे तक शीत के किसी रोग से आक्रान्त हो जाता है। रोग का आक्रमण एकदम होता है और जोर में होता है। दोनों इस बात में समान हैं, परन्तु **बेलाडोना** में मस्तिष्क में तूफान उठता है, बुखार के साथ असह्य सिर-दर्द हो जाता है, **एकोनाइट** में रुधिर की गति में तूफान उठता है, छाती या हृदय में दर्द हो जाता है, न्यूमोनिया, खासी, जुकाम हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो **बेल** में 'मस्तिष्क में उथल-पुथल' (Turmoil in brain), **एकोनाइट** में 'रुधिर-प्रवाह में उथल-पुथल' (Turmoil in circulation) होती है—ठीक ऐसे जैसे **कैमोमिला** में 'स्वभाव में उथल-पुथल' (Turmoil in temper) होती है। **एकोनाइट** तथा **बेलाडोना** की निम्न तुलना ध्यान देने योग्य है

एकोनाइट	बेलाडोना
१ बलिष्ठ रोगी शरीर पर खुश्क ठंडी हवा से बीमार हो जाता है	१ बलिष्ठ रोगी सिर पर ठंडी हवा से बीमार हो जाता है
२ स्वभाव से रोगी खुली हवा पसन्द करता है	२ स्वभाव से रोगी खुली हवा पसन्द नहीं करता, उससे कष्ट होता है
३ गर्म बन्द कमरे में रोग बढ़ता है, शरीर खुला रखना चाहता है	३ गर्म बन्द कमरे में रोगी को आराम मिलता है, शरीर ढकना चाहता है
४ शाम और रात को तकलीफ असह्य हो जाती है	४ दोपहर तीन बजे के बाद, रात और आधी रात के बाद रोग बढ़ता है
५ उठकर बैठने से रोगी को कष्ट होता है, लेटे रहना पसन्द करता है	५ खड़ा होने या बैठने से रोगी को अच्छा महसूस होता है
६ थोड़ा-थोड़ा, ज्यादा पानी पीता है	६ थोड़ा-थोड़ा पानी पीता है
७ छाती, श्वास-नालिका या हृदय के रोगों की प्रधानता रहती है	७ मस्तिष्क के रोग प्रधान, बाल कटवाने से ही ठंड लगना
८ खुश्क और गर्म त्वचा होने पर भी पसीना नहीं आता	८ गर्म त्वचा होती है, परन्तु ढके अंग पर पसीना आता है।

प्रायः चिकित्सक लोग **एकोनाइट** और **बेलाडोना** दोनों को एक-दूसरे के

वाद दिया करते है। यह प्रक्रिया ठीक नही है। दोनो के लक्षणो का विवेचन कर के एक ही दवा देना होम्योपैथिक सिद्धान्त है।

(५) प्रकाश, शोर, स्पर्श आदि सहन नहीं कर सकता (Oversensitiveness or Hyperesthesia)—इस रोगी की पाचो इन्द्रियो मे अत्यन्त अनुभूति उत्पन्न हो जाती है। रोगी आखो से रोशनी, कानो से शब्द, जीभ से स्वाद, नाक से गध, त्वचा से स्पर्श की अनुभूति साधारण व्यक्तियो की अपेक्षा अधिक करने लगता है, वह रोशनी, शब्द, गन्ध, स्पर्श आदि को सहन नही कर सकता। उसका स्नायु-मडल उत्तेजित रहता है। स्नायु-मडल की उत्तेजना **बेलाडोना** का मुख्य-लक्षण है। **ओपियम** इससे ठीक उल्टा है। उसमे 'सहिष्णुता' (Sensitivity) रहती ही नही। **बेलाडोना** के रोगी मे मस्तिष्क मे जितना रुधिर सचित होगा उतनी असहिष्णुता बढ जायगी। स्पर्श की असहिष्णुता उसमे इतनी होती है कि सिर के बालो मे कघी तक नही फेर सकता, सिर के बालो को छूने तक नही देता। इस प्रकार की असहिष्णुता अन्य औषधियो मे भी पायी जाती है। उदाहरणार्थ, **हिपर** का रोगी दर्द को इतना अनुभव करता है कि बेहोश हो जाता है, **नाइट्रिक ऐसिड** का रोगी सडक पर चलती गाडियो की आवाज को सहन नही कर सकता, उससे उसकी तकलीफें बढ जाती हैं, **कॉफिया** का रोगी तीन मजिल ऊपर के मकान पर भी किसी के चलने की आवाज सुन लेता है तो उससे परेशान हो जाता है यद्यपि अन्य किसी को वह आवाज नही सुन पडती, **नक्स वोमिका** के रोगी की शरीर की पीडा लोगो के पैरो की आहट मे बढ जाती है।

(६) मूत्राशय की उत्तेजितावस्था (Irritation of the bladder)—**कैंथेरिया** मैडिका मे **बेल** के अतिरिक्त दूसरी कोई औषधि ऐसी नही है जो मूत्राशय तथा मूत्र-नाली की उत्तेजितावस्था को शान्त कर सके। पेशाब करने की इच्छा लगातार बनी रहती है। इस औषधि मे स्पर्शादि को सहन न कर सकने का जो लक्षण है, उसी का यह परिणाम है। पेशाब बूद-बूद कर टपकता है और सारी मूत्र-नाली मे दाह उत्पन्न करता है। सारा मूत्र-सस्थान उत्तेजित अवस्था मे पाया जाता है। मूत्राशय मे शोथ होती है। मूत्राशय मे रक्त-सचय और उसके उत्तेजितावस्था होने के कारण उस स्थान को छुआ तक नही जा सकता। मानसिक-अवस्था भी चिडचिडी हो जाती है। यह अवस्था मूत्राशय मे मरोड पडने की-सी है। मूत्र मे रुधिर आता है, कभी-कभी शुद्ध खून। ऐसी अवस्था भी पायी जाती है कि मूत्राशय भरा हुआ है परन्तु मूत्र नही निकल रहा। शिकायत का केन्द्र-स्थल मूत्राशय की ग्रीवा है जहा मूत्राशय मे थोडा-सा भी मूत्र इकट्ठा होने पर पेशाब जाने की हाजत होती है, परन्तु दर्द होता है मूत्र नही निकलता।

(७) असहिष्णु-जरायु से रक्तस्राव (Hemorrhage from sore uterus)—हम देख चुके हैं कि **बेल** मे 'असहिष्णुता' (Soreness) होती है,

अंग को छूने से ही दर्द होता है। जरायु में भी असहिष्णुता हो जाती है और उसमें से थक्कों के साथ चमकता रुधिर निकलता है। असहिष्णुता, चमकता रुधिर और थक्के—रुधिर के टुकड़े-टुकड़े। बेल का जरायु में रक्तस्राव में यह मुख्य-लक्षण है। जरायु रुधिर के थक्कों से अट जाता है, और फिर उस अटकाव को दूर करने के लिये जरायु में से इस प्रकार संकोचन की लहर उठती है जैसे प्रजनन के दर्द के समय होती है। तब रुधिर स्राव हो जाता है, फिर प्रजनन के दर्द के समान लहर आती है, और रुधिर जारी हो जाता है। क्योंकि जरायु असहिष्णु तथा नाज़ुक (Sensitive) हो जाता है इसलिये वह अन्दर एकत्रित रुधिर के थक्कों के स्पर्श को बर्दाश्त नहीं कर सकता और प्रजनन के दर्द के समान भीतर से लहरें उठती है। अगर गर्भपात के-से इस प्रकार के लक्षण उपस्थित हो जायें, या किसी भी समय इस प्रकार के लक्षण उत्पन्न हो, तो यह गर्भपात को ही नहीं रोक देगा, गर्भ के बिना भी अगर इस प्रकार का जरायु में रक्तस्राव होने लगे, तो उसे भी रोक देगा। गर्भावस्था में रक्तस्राव हो जाने पर यह औषधि ब्रह्मास्त्र का काम करती है।

(८) हिलने-डुलने से, शीत से, स्पर्श आदि से रोग-वृद्धि (Chilly patient, aggravated by motion, sensitiveness and soreness)—वैसे तो प्रत्येक औषधि की 'प्रकृति' का निर्देश करते हुए हम लिखते जा रहे हैं कि वह औषधि शीत-प्रधान है, या ऊष्णता-प्रधान है, हिलने-डुलने से रोग-वृद्धि होती है या विश्राम से रोग-वृद्धि होती है, परन्तु फिर भी किसी-किसी औषधि के विषय में हम उसके व्यापक-लक्षणों का वर्णन करते हुए भी उसकी प्रकृति पर प्रकाश डालते जाते हैं। इसका कारण यही है कि शीत में वृद्धि, हिलने-डुलने से वृद्धि आदि का अर्थ ठीक तरह से समझ में आ जाय। हर औषधि के विषय में इन प्रकृतियों के विषय में वही बात बार-बार दोहराने से पुस्तक के कलेवर की ही वृद्धि होगी और कुछ लाभ नहीं होगा, इसलिये शीत से वृद्धि या ह्रास का क्या अभिप्राय है यही स्पष्ट करने के लिये कहीं-कहीं इस बात को दोहरा दिया गया है। बेलाडोना में रोगी सर्दी से डरता है, वह शीत-प्रधान होता है, जिस्म को कपड़े से लपेटे रखता है, कमरा बन्द कर लेता है, दरवाज़े-खिड़कियां खुली नहीं रखता, हवा के झोंके से भी बचना चाहता है, सिर के बाल कटवा लेता है तो ठंड से उसे खांसी-जुकाम हो जाता है। ठंड से रोगी हो जाने पर भी उसके रोग में जलन प्रधान है—यह 'विलक्षण-लक्षण' है। सर्दी के अलावा वह हिलने-डुलने से भी परहेज़ करता है। विश्राम से, चैन से पड़े रहने में ही उसे ठीक लगता है। उसे रोशनी बर्दाश्त नहीं होती, कहीं सूजन हो, तो ज़रा-सा भी छू जाने से चीख उठता है, हाथ नहीं लगने देता, उसे स्पर्शासहिष्णु कहा जा सकता है। रोगी चिकित्सक को कहता है 'डाक्टर साहब, बिस्तर को मत छू देना, मेरा सारा शरीर कांप उठेगा।' इस लक्षण में, भले ही कुछ रोग हो, बेलाडोना सारा नक्शा ही बदल

देगा। **ब्रायोनिया** मे भी रोगी हिलना-डुलना नही चाहता, पडा रहना चाहता है, **बेल** मे हिलने-डुलने और छूने से कभी-कभी रोगी को दौरा पड जाता है, हिलने-डुलने से दर्द बढ जाता है। ये सब 'सर्वांगीण' या 'व्यापक-लक्षण' (General symptoms) हैं, और चिकित्सक जब भी औषधि का निर्वाचन करने लगे, तब उसके लिये अन्य छोटे-मोटे लक्षणो की अपेक्षा ये 'व्यापक-लक्षण' ही सब से अधिक महत्व के हैं क्योंकि रोगी के अन्तरतम मे, उसकी जीवनी-शक्ति मे रोग का प्रवेश होने पर ये 'व्यापक-लक्षण' ही रोग के मुख्यतम सूचक होते हैं। इनको पकड लिया तो रोग की जड पकडी जाती है।

(९) **दाईं तरफ प्रभाव करनेवाली औषधि**—यह औषधि अनेक रोगो मे दायी तरफ प्रभाव करती है। उदाहरणार्थ, स्त्री का दाया डिम्ब-कोश बायें की अपेक्षा ज्यादा दर्द करता है, गले का दाया हिस्सा, शरीर का दाया हिस्सा रोग से प्रभावित होता है, बाया इतना नही।

(१०) **दोपहर ३ बजे से रात तक रोग-वृद्धि**—बेल का ज्वर आदि रोग दोपहर ३ बजे प्रारम्भ होता है। रात को रोग बढ जाता है। दोपहर ३ बजे से शुरु होकर रात के ३ बजे तक रोग रहता है। मध्य-रात्रि मे रोग चरम सीमा पर होता है। तापमान १०४–१०५ तक जाकर सवेरे तक नार्मल हो जाता है।

(११) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

I **जरायु का योनि-द्वार से निकल पड़ने का-सा अनुभव** (Bearing down sensation)—स्त्री अनुभव करती है कि उसके जरायु आदि अग योनिद्वार से निकल पडेंगे। **बेल** मे लेटने से यह प्रतीति बढ जाती है, खडे होने पर आराम मिलता है। **पल्सेटिला** मे भी यह लक्षण है, और उसमे भी लेटने से रोग की वृद्धि होती है। भेद यह है कि **बेल** शीत-प्रधान है, **पल्स** ऊष्णता-प्रधान है। यह अनुभव **सीपिया** और **लिलियम टिग** मे भी है, परन्तु इनमे खडे होने पर रोग बढता है, रोगिणी बैठना या लेटना पसन्द करती है, अन्दर के अगो को रोके रखने के लिये एक टाग को दूसरी पर दबाकर चढा लेती है, जो **बेल** मे नही है।

II **सूखी खासी का रात को दौर पडना** (Paroxysmal cough)—**बेल** की खासी विलक्षण होती है। ज़ोर से लगातार खासते-खासते जब थोडा-सा कफ निकलता है, तब रोगी को थोडी देर के लिये चैन पडता है, परन्तु इस चैन के समय श्वास-प्रणाली मे खुश्की लगातार बढती जाती है, फिर उसमे खुजलाहट शुरु हो जाती है, उसके बाद फिर खासी का ऐसा दौर पडता है मानो श्वास-प्रणालिका के सब भाग इसमे हिस्सा ले रहे है, गला रुधने लगता है, कभी-कभी उल्टी आ जाती है, तब जाकर थोडा-सा कफ फिर निकलता है, और अब फिर चैन पड जाता है। इस प्रकार के खासी के दौर पडते रहते हैं। इस सारी प्रक्रिया

मे रोगी श्वास-प्रणालिका मे खुश्की अनुभव करता है। यह सूखी खासी के दौर हैं जो प्राय रात को पडा करते हैं।

111 ऐंठन (Convulsions)—ऐंठन बेलाडोना का चरित्रगत-लक्षण है। बच्चो के ऐंठन मे यह उपयोगी है। शरीर के किसी भी अग मे ऐंठन हो सकती है। मस्तिष्क मे रुधिर-सचय या उसके उत्तेजित होने पर ऐंठन हो जाया करती है। हृष्ट-पुष्ट बच्चो को सर्दी लग कर भी ऐंठन पड जाती है। ऐंठन का



डा० सैम्युअल हनीमैन
(१७५५-१८४३)

नाम सुनते ही बेलाडोना दे देना यथार्थ चिकित्सा नही है। क्यूप्रम भी ऐंठन के लिये प्रसिद्ध दवा है। क्यूप्रम मे हाथ-पैरो मे ऐंठन मुख्य है। बेलाडोना की ऐंठन मे चेहरा और आख लाल हो जाती हैं, सिर आग की तरह गरम हो जाता है, बुखार तेज और कनपटियो मे टपकन होती है। रोगी शरीर को कभी आगे, कभी पीछे की ओर झुकाता है।

IV **पथरी मे अग-सकोच** (Spasm of gall-stone)—ऐंठन और अग-सकोच मे वहुत अधिक भेद नही है, अग-सकोच एक अग का दौरा पडना है, और ऐंठन एक अग अथवा सारे शरीर का दौरा पडना है। कभी-कभी छोटा-सा पथरी का टुकडा 'पित्त-प्रणाली' (gall-duct) या 'मूत्र-प्रणाली' (Urinary duct) मे से गुजरता हुआ वहा रडक पैदा कर देता है जिससे उस प्रणाली मे ऐंठन या सकोच उत्पन्न हो जाता है। इस अग-सकोच के कारण जो दर्द होता है उस से रोगी छटपटाता है। **बेलाडोना** की एक मात्रा इस सकोच को दूर कर देगी और पथरी का टुकडा पित्त-प्रणालिका या मूत्र-प्रणालिका से वाहर आ जायगा।

V **अपेंडिसाइटिस**—पेट के दाहिनी ओर नीचे के भाग मे जहा छोटी आत और बडी आत मिलती हैं उस स्थान मे अत्यन्त पीडा होना, ज़रा छू जाने, कपडे तक लग जाने से भी असह्य-पीडा का अनुभव होना अपेंडिसाइटिस का लक्षण है। इसमे अगर **बेल** के अन्य लक्षण मिलें तो इस से फायदा होगा।

VI **हाइड्रोफोबिया तथा स्कारलेट फीवर मे हनीमैन के कथनानुसार स्पेसिफिक है**—हनीमैन ने लिखा है कि **बेलाडोना** मे **हाइड्रोफोबिया** के अनेक लक्षण हैं। उदाहरणार्थ, जल से भय, काटने की प्रवृत्ति, गले मे ऐसी ऐंठन कि निगला न जा सके, पागलपन, कुत्ते से भय आदि इसमे पाये जाते हैं, इसलिये उक्त रोग मे यह अद्वितीय है। इसी प्रकार स्कारलेट फीवर के भी सब लक्षण इसमे पाये जाते है। जहा स्कारलेट फीवर फैल रहा हो वहा इस औषधि को स्वस्थ व्यक्तियो को देने से रोग नही होता।

VII **प्लुरिसी**—फेफडे के आवरण के शोथ को प्लुरिसी कहते हैं। इसमे अत्यन्त दर्द होता है। **बेल और ब्रायोनिया** दोनो इस रोग मे दिये जाते है, दोनो का आक्रमण मुख्य तौर पर दायीं तरफ होता है। परन्तु **ब्रायोनिया** पीडित भाग की तरफ लेटने से आराम अनुभव करता है, **बेल** इससे उल्टा है, वह पीड़ित भाग की तरफ नही लेट सकता।

VIII **त्वचा पर दाने** (Rash)—त्वचा पर दानो के लिये **बेलाडोना, एपिस, एरम ट्रिफि** तीनो दी जा सकती हैं। **बेल** मे त्वचा के दाने उत्ताप, रक्तिमा और जलन पैदा करते हैं, **बेल** के दाने चमकते हैं, उभरे न होकर त्वचा के साथ मिले होते है, रोगी गरमी पसन्द करता है, प्यास लगती है, थोडा-थोडा और वार-वार पानी पीता है। **एपिस** मे दाने उभरे होते हैं, रोगी ठडक पसन्द करता है, कपडा परे फेंक देता है, प्यास विल्कुल नही लगती। **एरम ट्रिफि** मे छोटे-छोटे दाने होते हैं, लगातार चुभन पैदा करते हैं, पेशाव कम हो जाता है, अगुली, अगूठे, नाक, होठ मे खुजली मचती है।

IX **मस्तिष्क मे रक्त-सचय तथा सन-स्ट्रोक**—इसमें बेल और ग्लोनॉयन प्रसिद्ध हैं, दोनो मे भयकर सिर-दर्द होता है, दर्द की लहरें उठती हैं, टपकन

होती है, परन्तु भेद यह है कि **ग्लोनॉयन** सिर पर कोई गरम वस्तु सहन नहीं कर सकता, ठडक से उसे आराम पहुचता है, **बेलाडोना** ठडक को सहन नहीं कर सकता, यहा तक कि **बेलाडोना** का रोगी अगर बाल कटवा ले, तो उसकी तकलीफ बढ जाती है, वह सिर पर ठडक बर्दाश्त नहीं करता।

x **ढके स्थान पर पसीना**—बेल मे ढके स्थान पर पसीना आता है, **थूजा** का विचित्र लक्षण यह है कि उसमे बिना ढके स्थान पर पसीना आता है, ढके पर नहीं।

(१२) **स्मरण करने के लिये 'Birds'-शब्द को याद रखें—बेल** के लक्षण 'B-i-r-d-s' मे आ जाते हैं। B=Burning, I=Inflammation, R=Redness; D=Delirium, S=Spasm

(१३) **शक्ति**—हनीमैन के अनुसार यह 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) औषधि है। इसका असर थोडी देर रहता है, यह 'अल्पकालिक' (Short-acting) है, अत दोहराई जा सकती है। बार-बार के आक्रमण मे उपयुक्त नहीं है। **बेलाडोना** के रोगी जिन्हें रोग का बार-बार आक्रमण होता हो उन्हें **कैलकेरिया कार्ब** दिया जाना उचित है। **बेलाडोना** की पूरक औषधि **कैलकेरिया** है। **बैलेडोना** को ३, ६, ३०, २०० शक्ति मे दिया जाता है। औषधि 'सर्द'—Chilly —प्रकृति के लिये है।

बेल्लिस पेरैन्निस—(BELLIS PERENNIS)

(१) **गर्म-सर्द हो जाना**—इस औषधि की तरफ सब से पहले डा० बर्नेट ने ध्यान खीचा। इसका सबसे बडा लक्षण है 'गर्म हालत मे ठडक लग जाना'। जो लोग मेहनत-मजदूरी करते है, खेतो मे काम करते हैं, वे काम करते हुए तप जाते है, इसी हालत मे वे ठडा पानी पी लेते हैं, या ठडे पानी से स्नान कर लेते हैं। इस प्रकार जो-कोई भी शिकायत हो जाय—पेट दर्द, दस्त आदि—उसके लिये **बेल्लिस** महौषध है, दूसरी कोई इसका मुकाबिला नहीं कर सकती—ऐसा डा० बर्नेट का कहना है। गर्म पेट को या गर्म त्वचा को एकदम ठडे पानी या ठड का स्पर्श—इस से कोई भी रोग हो। डा० बर्नेट एक ३०वर्ष की स्त्री का जिक्र करते हुए लिखते है कि जब वह १२ वर्ष की थी, गर्मी का मौसम था, उसका जिस्म काम से थका हुआ था, वह ठडे पानी के एक नाले मे जा कूदी। तब से उसके जिस्म पर माता के-से दाने उभर आये, जो किसी दवा से ठीक नहीं हुए। अन्त मे डा० बर्नेट ने उसे यह दवा ३x दिन मे तीन बार दी और वह बिल्कुल ठीक हो गई। उन्होने गर्म-सर्द हो जाने के लक्षणो मे इस दवा के बड गीत गाये है।

(२) **आर्निका की तरह कुचले जाने की अनुभूति—आर्निका** की तरह मास-पेशियो के कुचले जाने का-सा अनुभव इसमे होता है। यह कुचले जाने का

अनुभव उपरालु मास-पेशियो का नही, अपितु मास-पेशियो के अन्तरतम मे ऐसा अनुभव होना इसका लक्षण है।

(३) **वेरीकोज़ वेन्ज** (Varicose veins)—गर्भावस्था के अन्तिम दिनो मे **वेरीकोज़ वेन्ज़** का शोथ हो जाया करता है। नितम्व-प्रदेश मे असहिष्णुता हो जाती है और चलना-फिरना कठिन हो जाता है। इस औषधि से असहिष्णुता दूर हो जाती है और चलना-फिरना आसान हो जाता है।

(४) **शक्ति**—मूल अर्क, ३x, ६, ३०

बेनज़ोइक ऐसिड (BENZOIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **मूत्र मे घोडे के पेशाव की-सी गध आना**	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) **गठिया या वात-रोग** (Gout or Rheumatism)	* **गर्मी से रोग मे कमी**
(३) **बच्चे का सोते हुए पेशाव कर देना**	* **अधिक मात्रा मे मूत्र आने से रोग मे कमी**
(४) **प्रगाढ-निद्रा तथा उन्निद्रता का एक-दूसरे के बाद आना**	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) **गठिये का स्थानान्तरण**	* **सर्दी, खुली हवा से बढना**
(६) **सफेद रग का मल**	* **वदलते मौसम से रोग वढना**

(१) **मूत्र मे घोडे के पेशाव की-सी गध**—रोगी का पेशाव इतना वदबूदार होता है कि पेशाव करते समय तो वदबू आती ही है, परन्तु उसके वाद भी वहुत देर तक वनी रहती है। पेशाव मे इस प्रकार की उग्र-गन्ध—अमोनिया सदृश गन्ध—के होने पर गठिया, ज्वर के साथ टासिल, शोथ, पतले दस्त, सिर-दर्द तथा अन्य अनेक शिकायते इससे ठीक हो जाती हैं। **नाइट्रिक ऐसिड** तथा **सीपिया** मे भी ऐसी वदबू आती है। तीनो के इस भेद का जिक्र हमने **नाइट्रिक ऐसिड** मे किया है।

(२) **गठिया या वात-रोग, वात-रोग का स्थानान्तरण**—गठिये का रोग, जोडो मे दर्द, 'वात-प्रकृति' (Rheumatic constitution) इस औपधि मे पायी जाती है। जव पेशाव खुल कर आता है तव गठिये का दर्द कम हो जाता है, जव पेशाव कम आता है तव दर्द वढ जाता है। रोगी इन दो दशाओ मे आता-जाता रहता है—अधिक पेशाव कम दर्द, और कम पेशाव अधिक दर्द। यह दर्द जोडो मे, पीठ मे—कही भी हो सकता है। अस्ल मे, पेशाव अधिक होने से जव यूरिक एसिड निकल जाता है तव दर्द कम हो जाता है, जव यूरिक एसिड शरीर मे जमा हो जाता है तव दर्द वढ जाता है।

(३) **वच्चे का सोते हुए पेशाव कर देना**—इस औपधि मे अनेक वार

वच्चे का रात को विस्तर भिगो देना वन्द हो जाता है। वच्चे का पेशाव अत्यन्त वदवूदार होता है। वच्चा स्वय सारा-का-सारा पेशाव की-सी गन्ध से ओत-प्रोत होता है।

(४) **प्रगाढ़-निद्रा तथा उन्निद्रता का एक-दूसरे के वाद आना**—प्रगाढ-निद्रा तथा उन्निद्रता का पर्याय-क्रम से आना इस औषधि का एक विशेष-लक्षण है। रोगी कई दिन तक प्रगाढ-निद्रा मे सोता है, वाद को उन्निद्र-रोग से पीडित हो जाता है। इस मानसिक-अवस्था के साथ भी मूत्र का विशेष सवध होता है। थोडे मे कहा जाय, तो इस औषधि के रोगो का केन्द्र मूत्र-प्रणाली —गुर्दे हैं। मूत्र मे यूरिक एसिड को कम कर देने के कारण ही इस औषधि का गठिया रोग पर विशेष प्रभाव है।

(५) **गठिये का स्थानान्तरण (Metastasis)**—गठिया शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे स्थान वदलता रहता है। कभी पेट, कभी दूसरे अग। जव हाथ-पैर मे गठिये का दर्द ठीक हो जाय, परन्तु उसकी जगह हृदय मे या किसी और अग मे यह दर्द होने लगे, तव वेनजोइक ऐसिड की तरफ ध्यान देना उचित है।

(६) **सफेद रग का मल**—सफेद रग का मल इस औषधि का विशिष्ट-लक्षण है। अगर गठिये का रोग न भी हो, परन्तु मल का रग सफेद हो, तो किसी भी रोग मे इस औषधि से लाभ होगा।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६ (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

बरबेरिस वलगैरिस (BERBERIS VULGARIS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **दर्द का किसी केन्द्र-स्थल से चारो तरफ फैलना**	लक्षणो मे कमी (Better)
	× × ×
(२) गुर्दे का दर्द (Renal colic)	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(३) पित्त-पथरी का दर्द (Gall-stone colic)	* **पेशाव करते समय वृद्धि**
	* **थकावट से रोग का बढ़ना**
(४) गठिये का चलता-फिरता दर्द	* **हरकत से रोग का बढ़ना**
(५) कमर का दर्द	* **वैठने के वाद उठने से बढ़ना**

(१) **दर्द का किसी केन्द्र-स्थल से चारो तरफ फैलना**—यह इसका मुख्य लक्षण है जो इसी दवा मे पाया जाता है। पथरी हो, गठिया हो—पथरी मे दर्द गुर्दे से, विशेषकर वाये गुर्दे मे उठ कर मूत्राशय, मूत्र-नली आदि सव जगह फैल जायगा, गठिये मे किसी एक जोड मे दर्द ठहरा होगा परन्तु वहा से चारो तरफ

फैल रहा होगा। **बरबेरिस** पथरी तथा गठिये की दवा इसी लक्षण पर है क्योंकि पथरी मे गुर्दे से दर्द चारो तरफ फैल जाता है। गठिये मे यह दवा ऐसे गठिये के लिये है जिसमे दर्द किसी एक जोड पर ठहरा हुआ वहा से चारो तरफ फैल रहा होता है। **बरबेरिस** के दर्द की विशेषता यह है कि यह दर्द किसी एक दिशा मे नही जाता, चारो तरफ फैलता है।

(२) **गुर्दे का दर्द** (Renal colic)—गुर्दे मे छोटी-छोटी पथरिया बन जाती हैं और उनमे से कोई छोटी-सी पथरी, गुर्दे से मूत्राशय तक मूत्र ले जाने वाली प्रणालिका से होती हुई, मूत्राशय की तरफ चल देती है। इस प्रणालिका मे से गुजरती हुई वह बेहद दर्द पैदा कर देती है। उस समय गुर्दे से दर्द उठ कर चारो तरफ फैल जाता है। दर्द एक ओर गुर्दे की तरफ और दूसरी ओर मूत्राशय, मूत्र-नली की तरफ जाता है, अण्डकोश तक पहुच सकता है। ऐसी अवस्था मे **बरबेरिस** आश्चर्यजनक तौर पर पथरी को निकाल कर दर्द को शान्त कर देता है। इस दर्द का लक्षण है पथरी के केन्द्र-स्थल से उठकर दर्द का चारो तरफ फैल जाना। गुर्दे के दर्द मे **सारसापैरिला** भी उत्तम औषधि है।

(३) **पित्त-पथरी का दर्द** (Gall-stone colic) — पित्त-पथरी मे भी यही लक्षण होने पर **बरबेरिस** इस दर्द का शमन कर देता है। यह दर्द भी पीठ मे किसी एक स्थल को केन्द्र बना कर उठता है और चारो तरफ फैल जाता है।

(४) **गठिये का चलता-फिरता दर्द**—गठिये मे **बैनजोइक ऐसिड** तथा **बरबेरिस** मे बहुत समानता है। दोनो मे यूरिक-ऐसिड अगुलियो की गाठो मे बैठ जाता है, परन्तु शिकायत सारे शरीर मे चक्कर काट रही होती है। स्नायु-रज्जुओ मे दर्द घूमा करती है। अगुलियो तथा अगूठो मे बैठे-बैठे यकायक दर्द हुआ करती है। गठिये के रोग मे गुर्दे, जिगर और हृदय पर भी कुछ-न-कुछ असर पहुच जाया करता है। जहा तक गुर्दे का सबध है, गठिये की शिकायत मे कभी पेशाब ज्यादा आने लगता है, कभी कम हो जाता है, हल्का पेशाब, भारी रगदार पेशाब। ऐसी अवस्था **बैनजोइक ऐसिड** तथा **बरबेरिस** दोनो मे पायी जाती है।

जहा तक **बरबेरिस** का प्रश्न है इसमे शरीर के किसी भी हिस्से मे काटने का-सा दर्द हो सकता है, परन्तु यह दर्द स्थान बदलता रहता है। जब **बरबेरिस** का रोगी बैठने लगेगा तब कमर के दर्द के मारे कहेगा —'ओह'! कुछ देर बाद कहेगा घुटने मे दर्द हो रहा है, फिर अगूठे मे, फिर सिर मे—कभी दर्द यहा, कभी वहा, सारे शरीर मे दर्द भ्रमण किया करता है। इस अवस्था के देर तक चलते रहने पर यूरिक ऐसिड के तलछट अगुलियो मे बैठ जाते हैं और रोगी की अगुलिया छूने से भी दर्द किया करती हैं। जब रोग अग-विशेष मे बैठ जाता है, तब इस रोग की औषधि का निर्वाचन **लीडम, सलफर, एसक्युलस** तथा **लाइकोपोडियम** मे से करना होगा क्योंकि **बरबेरिस** की हालत मे तो दर्द घूमा करता है, किसी

अग-विशेष मे ठहर नही जाता। चलता-फिरता दर्द इस औषधि की विशेषता है।

(५) **कमर का दर्द**—कमर का दर्द इस औषधि की विशेषता है। बैठी हुई हालत से उठने पर उसे विशेष दर्द होता है। रोगी को ऐसा लगता है कि कमर अकड गई है, सुन्न हो गई है। **रस टॉक्स** मे भी यह लक्षण है।

(६) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

1 **सिर मे सुन्नपन**—इसका एक विलक्षण-लक्षण यह है कि रोगी अनुभव करता है कि सिर बडा हो गया है। हर समय सिर पर ऐसे हाथ फेरता है मानो सिर पर से टोपी उतार रहा हो। सिर पर टोपी नही होती, परन्तु उसे ऐसे लगता है जैसे सिर पर टोपी चढी हो। कई रोगी कहा करते हैं कि उन्हें सिर मे सुन्नपन अनुभव होता है। सुन्नपन हो या सिर पर टोपी ओढने का अनुभव हो—ये लक्षण **बरबेरिस** के हैं।

11 **गुर्दे मे वुलवुला उठना**—गुर्दे के स्थान मे वुलवुला-सा उठने के समान वजवजाहट अनुभव करना भी इसका एक विशिष्ट-लक्षण है।

111 **फिस्चुला के ऑपरेशन के वाद रोग होना**—कभी-कभी मल-द्वार के फिस्चुला के ऑपरेशन के वाद गुर्दे, जिगर या हृदय के रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। अगर इस समय चलते-फिरते दर्द उत्पन्न हो जायें, तो भले ही किसी अग का रोग हो **बरबेरिस** से ठीक हो जायगा।

1V **आख से दर्द का भिन्न दिशाओ मे जाना**—कभी-कभी आख पर भी गठिये का दर्द आक्रमण कर देता है। आख से दर्द भिन्न-भिन्न दिशाओ को जाता है। जैसा हम पहले लिख चुके हैं **बरबेरिस** के दर्द की यह विशेषता है कि यह दर्द किसी एक दिशा की तरफ नही जाता, चारो तरफ फैलता है।

(७) **शक्ति**—मूल-अर्क, ३, ६, ३०

बोरेक्स—सोहागा, (BORAX)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) किसी भी रोग मे ऊचे स्थान से नीचे की ओर गति से भयलगना	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) बच्चे का सोते-सोते साधारण-से कारण से चौंक उठना	* ११ बजे दोपहर या शाम को ठड मे रोग मे कमी
(३) बालो का उलझ कर चिपक जाना	* दावने से आराम महसूस होना
(४) पलको के बालो का अन्दर की ओर मुड जाना (परबाल)	
(५) युवा-स्त्रियो की नाक की चमकदार लाली	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(६) मुह आ जाना	नीचे की ओर गति से भय लगना
(७) बच्चे का पेशाब करने से पहले चीख़ उठना	* अचानक आवाज़ से चौंक जाना
(८) श्वेत-प्रदर का गर्म पानी की धार की तरह बहना	* शीत, या नमी से वृद्धि
(९) झिल्ली के कारण मासिक-धर्म का कष्ट	* ऋतु-स्राव होने के बाद रोग मे वृद्धि
(१०) बाझपन	

(१) **किसी भी स्थान से नीचे की ओर गति से भय**—यह औषधि विशेषकर बच्चो के काम की है। जब माता शिशु को गोद से पालने मे डालने लगती है, तो नीचे के गति के कारण वह भय से जाग उठता है, माता को दोनो हाथो से पकड लेता है, चिल्लाता है। झूले मे झुलाने से, जीने पर से उतरते हुए, पहाड से नीचे आते हुए डर जाना इस औषधि का मुख्य-लक्षण है। यह लक्षण अगर मुख्य रूप से दिखाई दे, तो अतिसार आदि बच्चे के रोग तथा अगर यह लक्षण वयस्क-व्यक्ति मे पाया जाय, तो गठिया, स्त्री के मासिक-धर्म के कष्ट आदि रोग इस औषधि से दूर हो जाते हैं।

(२) **बच्चे का सोते-सोते साधारण-से कारण से चौक उठना**—बच्चा बहुत अधिक स्नायविक होता है, ज़रा-से मे चौंक उठता है, किसी के खासने, छीकने, कागज़ की कडकडाहट, दियासलाई की रगड की आवाज़ से सोते-सोते चौक उठता है, और पलग को ज़ोर से पकड लेता है। वैसे तो सब बच्चो मे ये लक्षण कुछ-न-कुछ पाये जाते हैं, परन्तु अगर ये लक्षण बहुत बढे-चढे हो, ऐसे हो जिनकी तरफ माता का विशेष ध्यान जाता हो, तब **बोरैक्स** देने से उसके दूसरे रोग चले जायेंगे। होम्योपैथी मे मानसिक-लक्षणो का अन्य लक्षणो के मुकाबिले मे प्रथम स्थान है।

(३) **बालो का उलझकर चिपक जाना**—इसका एक विशेष-लक्षण यह है कि वालक के वाल चिपक जाते हैं, जटा-सी वन जाते हैं, कघी करना कठिन हो जाता है, वालो के अगले नोक एक-दूसरे से उलझ कर लट वध जाती है। इनको काट दिया जाय, तो फिर जो नये वाल निकलते हैं वे भी इसी प्रकार उलझते हैं।

(४) **पलको के बालो का अन्दर की ओर मुड जाना (परवाल)**—जैसे सिर के वाल उलझते है, वैसे आखो की पलको के वाल भी उलझ कर पलको के अन्दर की ओर मुड जाते हैं जिसे 'परवाल' कहा जाता है। परवाल की **बोरैक्स** उत्तम औषधि है।

(५) **युवा-स्त्रियो की नाक की चमकदार लाली**—अगर युवा स्त्रियो मे नाक का अगला भाग लाली से चमकता हो, तो उसके अन्य रोगो को दूर करने के लिये यह एक विशेष लक्षण है।

(६) **मुंह आ जाना**—मुह आ जाने पर सोहागे का प्रयोग घरेलू दवाई के तौर पर सव जगह किया जाता है। वच्चो के मुह आ जाने की यह उत्तम औषधि है। मुह के अन्दर, होठो मे, जीभ मे, गाल के भीतरी भाग मे छाले पड जाते हैं। मुह आ-जाने-सरीखे छाले गले के भीतर, पेट मे, यहा तक कि मल-द्वार तक पहुच जाते है। इन सव मे **बोरैक्स** लाभप्रद है। मुह के छाले **मर्क्यूरियस** मे भी होते है, परन्तु उसमे मुह से लार वहुत वहती है, **बोरैक्स** मे नही। **ब्रायोनिया** मे भी मुह मे घाव रहता है, परन्तु उसका कारण खुश्की है। **ब्रायोनिया** मे वच्चा इस खुश्क घाव के दर्द के कारण स्तन-पान नही कर पाता, परन्तु कुछ घूट पी लेने के वाद जव मुख तर हो जाता है तव गटागट पीने लगता है। **एरम** के घाव मे मुह सूजा रहता है, शिशु के नाक के वाहर पपडिया जम जाती हैं, जिन्हें वह खून निकलने पर भी नोचता रहता है।

(७) **बच्चे का पेशाव करने से पहले चीख उठना**—वच्चे को जव मुह आ जाता है, भीतर के अगो मे छाले पड जाते हैं, तव श्लैष्मिक-झिल्ली की इस शोथ की अवस्था मे पेशाव भी जलन के साथ आने लगता है। वच्चे को जव पेशाव की हाजत होती है, तव यह स्मरण करके कि पेशाव जलन के साथ आयगा, वह चीख उठता है। उसकी माता को उसके चीखने से पता चल जाता है कि वह पेशाव जायगा। इस लक्षण मे **बोरैक्स** पेशाव की जलन को दूर कर देता है।

(८) **श्वेत-प्रदर का गर्म पानी की धार की तरह बहना**—श्वेत-प्रदर मे **बोरैक्स** उत्तम-औषधि है। अडे की सफ़ेदी की तरह का गाढा प्रदर होता है। रोगिणी अनुभव करती है कि गर्म पानी की धार वह निकली है।

(९) **झिल्ली के कारण मासिक-धर्म का कष्ट** (Dysmenorrhea)—मासिक-धर्म मे श्लैष्मिक-झिल्ली के कुछ टुकडे निकलते हैं। क्योकि यह झिल्ली रुधिर के प्रवाह को रोकती है इसलिये इसे वाहर धकेलने के लिये भीतर के

अगो से प्रसव-पीडा के समान दर्द उठता है, ऐसा अनुभव होता है कि भग मे से जरायु बाहर निकल पडेगा। जबतक झिल्ली के ये टुकडे बाहर नही निकल जाते तबतक प्रसव-पीडा के सदृश अन्दर से दर्द उठता रहता है। ऐसे रोगी ऊपर से नीचे की गति से घबराया करते हैं। इस कृच्छ्र-मासिक-धर्म के सबध मे, जिसका कारण उपरोक्त श्लैष्मिक-झिल्ली है, औषधि-निर्वाचन के लिये मुख्य-लक्षण रोगिणी का ऊपर से नीचे की गति से डरना, घबराना है। वह झूला नही झूल सकती, ऊपर से नीचे आने की गति से बचा करती है। जब उक्त प्रकार का कृच्छ्र मासिक-धर्म हो, जिसमे रुधिर का मार्ग श्लैष्मिक-झिल्ली अवरुद्ध कर रही हो, और ऊपर से नीचे आने की गति मे भय विद्यमान हो, तब मुख्य-औषधि **बोरेक्स** ही है।

(१०) **बांझपन**—अभी हमने जिस झिल्ली का वर्णन किया इसी के कारण प्राय बाझपन हुआ करता है। **बोरेक्स** झिल्ली के इस कष्ट को दूर कर के गर्भ न ठहरने के रोग को दूर कर देता है। कई चिकित्सक बाझपन मे नियमपूर्वक **बोरेक्स** दिया करते हैं, परन्तु लक्षणानुसार औषधि देना ही उचित है, रोग के नाम के आधार पर औषधि देना होम्योपैथी का सिद्धान्त नही है।

(११) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

I **ग्यारह बजे तक घबराहट**—इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण यह है कि घबराहट ११ बजे दोपहर तक रहती है, उसके बाद घबराहट समाप्त हो जाती है।

II **मुंह पर मकडी का जाला-सा**—एक और विलक्षण-लक्षण यह है कि रोगी अपने मुह पर मकडी का जाला-सा लिपटा अनुभव करता है, और बार-बार उसे हटाने के लिये चेहरे पर हाथ फेरा करता है।

III **नीचे की गति से चक्कर**—रोगी जब नीचे जाने की, झुकने की, लिफ्ट मे नीचे जाने की कोई गति करता है तो चक्कर आ जाता है।

IV **मानसिक-कार्य के साथ जी मतलाना**—रोगी जब किसी प्रकार का भी मानसिक-कार्य करता है, तो कुछ देर मानसिक-कार्य—लिखना, पढना आदि—करने पर उसका जी मतलाने लगता है। वह लेट जाता है, आराम करता है, तबीयत ठीक हो जाती है। इसके बाद वह फिर मानसिक-कार्य मे जुट जाता है। इस बार फिर जी मतलाने लगता है। अगर इस लक्षण के साथ **बोरेक्स** के अन्य लक्षण—नीचे की गति से घबराहट आदि—मिले, तो यही औषधि है।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—१, ३, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

ब्रायोनिया (BRYONIA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) जुकाम, खासी, ज्वर आदि रोगो मे ब्रायोनिया का गति धीमी, एकोनाइट तथा बेलाडोना की जोरो से और एकाएक होती है—(Pace of the remedy) (२) हरकत से रोग की वृद्धि और विश्राम से रोग मे कमी (३) जिस तरफ दर्द हो उस तरफ लेटे रहने से आराम (जैसे, प्लुरिसी मे) (४) श्लैष्मिक-झिल्ली का खुश्क होना और इसलिये देर-देर मे, बार-बार अधिक मात्रा मे पानी पीना	लक्षणो मे कमी (Better) *दर्द वाली जगह को दबाने से रोग मे कमी होना *ठडी हवा से आरम *आराम से रोग मे कमी *गठिये मे सूजन पर गर्म सेक से और हरकत से रोगी को आराम मिलना
(५) रजोधर्म बन्द होने पर नाक या मुह से खून गिरना या ऐसा होने से सिर-दर्द होना (६) सूर्योदय के साथ सिर-दर्द शुरु होना, सूर्यास्त के साथ बन्द हो जाना (७) क्रोध आदि मानसिक-लक्षणो से रोग (८) गठिये मे गर्मी और हरकत से आराम	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *हरकत से रोग बढ जाना *गर्मी से सर्दी मे जाने से रोग *खाने के बाद रोग मे वृद्धि *झुझलाहट, क्रोध से वृद्धि *स्राव के दब जाने से रोग

(१) जुकाम, खासी, ज्वर आदि रोगों मे ब्रायोनिया की गति धीमी, एकोनाइट तथा बेलाडोना की तेज, जोरो की, और एकाएक होती है (Pace of the remedy)—प्राय लोग जुकाम, खासी, ज्वर आदि रोगो मे एकोनाइट या बेलाडोना दे देने है, और समझते है कि उन्होने ठीक दवा दी। परन्तु चिकित्सक को समझना चाहिये कि जैसे रोग के आने और जाने की गति होती है, वैसे ही औपधि के लक्षणो मे भी रोग के आने और जाने की गति होती है। इस गति को ध्यान मे रख कर ही औपधि का निर्वाचन करना चाहिये, अन्यथा कुछ लक्षण दूर हो सकते है, रोग दूर नही हो सकता। उदाहरणार्थ, एकोनाइट का रोगी हृष्ट-पुष्ट होना है, ठड मे जाने से उसे वडी ज़ोर का जुकाम, खासी या बुखार चढ जाता है। शाम को सैर को निकला और आधी रात को ही तेज़ बुखार चढ गया। बेलाडोना मे भी ऐमा ही पाया जाता है, परन्तु उसमे सिर-दर्द आदि मस्तिष्क के लक्षण विशेप होते है। ब्रायोनिया मे ऐसा नही होता। रोगी ठड खा गया, तो उसके लक्षण धीरे-धीरे प्रकट होगे। पहले दिन कुछ छीके आयेगी, दूसरे दिन

नाक बहने लगेगा, तीसरे दिन बुखार चढ जायगा। बुखार, जैसे धीरे-धीरे आया वैसे धीरे-धीरे ही जायगा। इसीलिये टाइफॉयड मे एकोनाइट या बेलाडोना नही दिया जाता, उसके लक्षण **ब्रायोनिया** से मिलते है। औषधि देते हुए औषधि की गति और प्रकृति को समझ लेना जरूरी है। रोग के लक्षणो और औषधि की गति तथा प्रकृति के लक्षणो मे साम्य होना जरूरी है, तभी औषधि लाभ करेगी। रोग दो तरह के हो सकते हैं—स्थायी तथा अस्थायी। स्थायी-रोग मे स्थायी-प्रकृति की औषधि ही लाभ करेगी, अस्थायी-रोग मे अस्थायी-प्रकृति की औषधि लाभ करेगी। **एकोनाइट** और **बेलाडोना** के रोग तेजी से और एकाएक आते हैं, और एकाएक ही चले जाते हैं। ऐसे रोगो मे ही ये दवायें लाभप्रद हैं। **ब्रायोनिया, पल्सेटिला** के रोग शनै शनै आते हैं, और कुछ दिन टिकते हैं। इसलिये शनै शनै आनेवाले और कुछ दिन टिकनेवाले रोगो मे इन दवाओ की तरफ ध्यान जाना चाहिये। **थूजा, साइलीशिया, सलफर** आदि के रोग स्थायी-प्रकृति के होते हैं, अत चिर-स्थायी रोगो के इलाज के लिये इन औषधियो का प्रयोग करना चाहिये। इसीलिये जब रोग बार-बार अच्छा हो-होकर लौटता है तब समझना चाहिये कि यह स्थायी-रोग है, तब **एकोनाइट** से लाभ नही होगा, तब **सलफर** आदि देना होगा क्योकि **एकोनाइट** की प्रकृति 'अस्थायी' (Acute) है, और **सलफर** की प्रकृति 'स्थायी' (Chronic) है।

(२) **हरकत से रोग की वृद्धि और विश्राम से कमी**—दर्द होने पर हरकत से रोग बढेगा इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है, परन्तु हरकत से रोग बढने का गूढ अर्थ है। अगर रोगी लेटा हुआ है, तो आख खोलने या आवाज़ सुनने तक से रोगी कष्ट अनुभव करता है। डा० मुकर्जी ने अपने 'मैटीरिया मैडिका' मे स्वर्गीय डा० नाग का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उन्होने हैज़े के एक रोगी को, यह देखकर कि आखें खोलने से ही उसे पाखाना होता था, **ब्रायोनिया** देकर ठीक कर दिया। वात-रोग, गठिया, सूजन, गिर जाने से दर्द आदि मे हरकत से रोग की वृद्धि होने पर **ब्रायोनिया** लाभ करता है। इस प्रकार के कष्ट मे **आर्निका** से लाभ न होने पर **ब्रायोनिया** से लाभ हो जाता है।

ब्रायोनिया मे हरकत से रोग की वृद्धि होती है—इस लक्षण को खूब समझ लेना चाहिये। अगर किसी व्यक्ति को ठड लग गई है, रोग धीरे-धीरे बढने लगा है, एक दिन छीकें, दूसरे दिन शरीर मे पीडा, तीसरे दिन बुखार—इस प्रकार रोग धीरे-धीरे बढने लगा है, और वह साथ ही यह भी अनुभव करने लगता है कि वह बिस्तर मे आराम से, शान्तिपूर्वक पडे रहना पसन्द करता है, न्यूमोनिया, प्लुरिसी का दर्द शुरु नही हुआ, परन्तु वह देखता है कि रोग की शुरुआत से पहले ही उसकी तबीयत आराम चाहती है, हिलने-डुलने से उसका रोग बढता है, ऐसी हालत मे **ब्रायोनिया** ही दवा है। दायें फेफडे के न्यूमोनिया मे उक्त-लक्षण होने पर

ब्रायोनिया और बायें फेफड़े के न्यूमोनिया में उक्त-लक्षण होने पर **एकोनाइट** फायदा करता है।

यह तो ठीक है कि **ब्रायोनिया** में हरकत से रोग की वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी **ब्रायोनिया** का रोगी दर्द में इतना परेशान हो जाता है कि चैन में लेट भी नही सकता। वह उठकर घूमना-फिरना नही चाहता, परन्तु दर्द इतना प्रबल होता है कि पड़े रहने में भी उसे चैन नही मिलता। शुरु-शुरु में वह चैन से पड़े रहना चाहता था, परन्तु अब तकलीफ इतनी बढ़ गई है कि न चाहते हुए भी इधर-उधर टहलने लगता है। इस हालत में चिकित्सक **रस टॉक्स** देने की सोच सकता है, परन्तु इस बेचैनी के टहलने में जिसमें रोग की शुरुआत में रोगी टहल नहीं सकता था, जिसमें अब भी दिल तो उसका आराम से लेटने को चाहता है, परन्तु दर्द लेटने नही देता, ऐसी हालत में हिलने-डुलने पर भी **ब्रायोनिया** ही दवा है। रोग का उपचार करते हुए रोग की समष्टि को ध्यान में रखना चाहिये, सामने जो लक्षण आ रहे हैं उनके पीछे छिपे लक्षणों को भी आंख में ओझल नही होने देना चाहिये।

हरकत से दस्त आना परन्तु रात को दस्त न होना—जब तक रोगी रात को लेटा रहता है दस्त नही आता, परन्तु सवेरे बिस्तर से हिलते ही उसे बाथ-रूम में दौड़ना पड़ता है। पेट फूला रहता है, दर्द होता है और टट्टी जाने की एकदम हाजत होती है। बड़ा भारी दस्त आता है, एक बार ही नहीं, कई बार आ जाता है, और जब रोगी टट्टी से निबट लेता है तब शक्तिहीन होकर मृत-समान पड़ा रहता है, थकावट से शरीर पर पसीना आ जाता है। अगर लेटे-लेटे ज़रा भी हरकत करे, तो फिर बाथ-रूम के लिये दौड़ना पड़ता है। जो दस्त दिन में कई बार आयें और रात को जब मनुष्य हरकत नही करता बन्द हो जायें, उन्हें यह दवा ठीक कर देती है। **पैट्रोलियम** में रोगी रात को कितनी भी हरकत क्यों न करे उसे दस्त नही होता, सिर्फ दिन को दस्त होता है, रात को नहीं होता, **ब्रायोनिया** में दिन को दस्त होता है, रात को ज़रा-सी भी हरकत करे तो दस्त की हाजत हो जाती है, अन्यथा रात को दस्त नही होता।

(३) जिस तरफ दर्द हो उस तरफ लेटे रहने से आराम (जैसे, प्लुरिसी)—यह लक्षण हरकत से रोग-वृद्धि के लक्षण का ही दूसरा रूप है। जिधर दर्द हो उधर का हिस्सा दबा रखने से वहां हरकत नही होती इसलिये दर्द की तरफ लेटे रहने से रोगी को आराम मिलता है। प्लुरिसी में जिधर दर्द हो उधर लेटने से आराम मिले तो **ब्रायोनिया** लाभ करेगा। प्लुरिसी में **ब्रायोनिया** इसलिये लाभ करता है क्योंकि फेफड़े के आवरण में जो शोथ हो जाती है, वह सांस लेते हुए जब साथ के आवरण को छूती है, तब इस छूने से दर्द पैदा होता है, परन्तु उस हिस्से को दबाये रखने से यह छूना बन्द हो जाता है, इसलिये कहते हैं कि **ब्रायोनिया** में

जिस तरफ दर्द हो उस तरफ लेटने से आराम मिलता है। अस्ल मे, यह लक्षण 'हरकत से रोग की वृद्धि'—इस लक्षण का ही दूसरा रूप है। जब दर्द का हिस्सा दब जाता है तब हरकत बन्द हो जाती है।

डा० बर्नेट प्रसिद्ध होम्योपैथ हुए हैं। वे पहले एलोपैथ थे। उन्हें होम्योपैथ बनाने का श्रेय **ब्रायोनिया** को है। वे लिखते हैं कि बचपन मे उन्हें बायीं तरफ प्लुरिसी हो गई थी जिससे नीरोग होने पर भी उन्हें फेफड़े मे दर्द बना रहा। सभी तरह के इलाज कराये—एलोपैथी के, जल-चिकित्सा के, भिन्न-भिन्न प्रकार के फलाहार के, भोजन मे अदला-बदली के, परन्तु किसी से रोग ठीक न हुआ। अन्त मे यह देखने के लिये कि होम्योपैथ इसके विषय मे क्या कहते हैं, वे होम्योपैथी पढने लगे। पढते-पढते **ब्रायोनिया** मे उन्हें अपने लक्षण मिलते दिखाई दिये। उन्होंने **ब्रायोनिया** खरीद कर उसका अपने ऊपर प्रयोग किया और जो कष्ट सालों से उन्हें परेशान कर रहा था, जो किसी प्रकार के इलाज से ठीक नही हो रहा था, वह १५ दिन मे **ब्रायोनिया** से ठीक हो गया। वे अपनी पुस्तक 'फ़िफटी रीज़न्स फॉर बिइंग ए होम्योपैथ' मे लिखते हैं कि यह अनेक कारणो मे से एक कारण है जिसने उन्हें एलोपैथ से होम्योपैथ बना दिया।

इस प्रकरण मे **ब्रायोनिया** के सबध मे एक और दिलचस्प घटना का उल्लेख करना अप्रासगिक न होगा। हनीमैन ने अपने उपचार के तरीके के कुछ ही उदाहरण प्रकाशित किये थे क्योंकि उन्हें यह भय था कि उनके अनुयायी उनकी औषधियो को लक्षणो की छान-बीन करने के स्थान मे जैसा उन्होंने किया वैसा अनुकरण करने लगेंगे, रोग के लक्षणो के आधार पर दवा देने की जगह रोग के नाम के ऊपर दवा देने लगेंगे जो होम्योपैथी के आधारभूत सिद्धान्त के खिलाफ है। फिर भी उन्होंने अपनी चिकित्सा-पद्धति के कुछ उदाहरण दिये हैं जिनमे से एक का सबध **ब्रायोनिया** से है। उनके 'लेस्सेर राइटिंग्स' मे लिखा है

"एक धोबिन, ४० वर्ष की आयु, १ सितम्बर १८१५ को इलाज कराने आयी। पिछले तीन सप्ताह मे वह अपना काम-काज करने मे असमर्थ थी। ज़रा-सी भी हरकत से, पाव उठा कर रखने मे, और अगर गल्ती से पाव ऊंची-नीची जगह पर रखा जाय, तो उसे पेट मे गोली लगने का-सा दर्द होता था। जब वह आराम से लेट जाती थी, तो कही दर्द नही होता था। प्रातःकाल ३ बजे के बाद सो नही सकती थी। भोजन के लिये रुचि थी, परन्तु थोडा-सा भोजन करने के बाद तबीयत गिर जाती थी, तब मुह मे पानी आने लगता था। खाने के बाद खाली डकार आते थे। जब भी दर्द बढ जाता था तो शरीर पर पसीना आ जाता था। स्वभाव मे क्रोधी थी। माहवारी ठीक थी, अन्य सब तरह से स्वस्थ थी।"

हनीमैन लिखते हैं कि क्योंकि ये सब लक्षण **ब्रायोनिया** के थे, उन्होंने उसे इस औषधि के मूल-अर्क का एक बूद दिया और ४८ घटे बाद हालत बतलाने को

कहा। उस समय उनके एक मित्र उनके पास बैठे थे, उनका होम्योपैथी पर अध-कचरा ही विश्वास था। हनीमैन ने अपने मित्र से कहा कि वह धोविन कल तक ठीक हो जायगी। उनके मित्र ने इसमे शका प्रकट की। अगले दिन वे मित्र यह देखने के लिये हनीमैन के यहा पहुचे कि देखें, धोविन का क्या हाल है, परन्तु धोविन नही लौटी। क्योकि वे मित्र होम्योपैथिक-औषधि का प्रभाव जानने के लिये बहुत उत्सुक थे, हनीमैन ने उन्हे अपना रजिस्टर देख कर उसका पता वतलाया और कहा कि उसके गाव जाकर देखो, उसका क्या हाल है। वे सज्जन धोविन की खोज मे उसके गाव पहुचे तो क्या देखते है कि वह दवादव कपडे धोने मे जुटी है। जब उससे पूछा कि वह लौट कर क्यो नही आयी तो उसने कहा कि हम लोगो के पास इतनी फुर्सत कहा है कि 'रोग ठीक हो गया'—इनकी सूचना देने भी जाये। पहले ही कई दिन बेकारी मे गुज़रे थे, काम किये बगैर गुज़र नही। डाक्टर की दवा लेने के अगले दिन ही मेरा दर्द जाता रहा, डाक्टर को मेरा धन्यवाद दे देना।

खश्क न्यूमोनिया के दर्द मे ब्रायोनिया, बेलाडोना तथा कैलि कार्ब की तुलना—इस प्रकार के दर्द मे **ब्रायोनिया** तथा **बेलाडोना** मे अन्तर है। दोनो शोथ की दवायें हैं, परन्तु **बेलाडोना** ज़रा-से दबाव को भी बर्दाश्त नही कर सकता। **बेलाडोना** के शोथ मे टपकन होती है और फोडे के शोथ मे कस कर पट्टी बाधने से उसे कष्ट होता है। ऐसे शोथ मे पट्टी बाधने के स्थान मे **बेलाडोना** की मात्रा मुख मे देने से लाभ होता है। न्युमोनिया से पीडित रोगी अगर दर्द वाले फेफडे की तरफ लेटे तो **ब्रायोनियां**, अगर उधर न लेट सके, बिना दर्द वाले फेफडे की तरफ लेटे तो **बेलाडोना** दवा है। न्यूमोनिया और प्लुरिसी मे सूई चुभते हुए-से दर्द मे **ब्रायोनिया** और **कैलि-कार्ब** दोनो का यह समान लक्षण है, परन्तु दर्द वाली तरफ लेटने से आराम **ब्रायोनिया** का और बिना दर्द वाली तरफ लेटने से आराम **कैलि कार्ब** का लक्षण है। न्यूमोनिया और प्लुरिसी मे दर्द सास अन्दर लेने की हरकत से होता है, **कैलि कार्ब** मे सास लेने की हरकत के बिना दर्द होना है। दोनो दवाओ मे न्यूमोनिया दाये फेफडे मे होता है।

(४) **श्लैष्मिक-झिल्ली का खुश्क होना और इसलिये देर-देर मे, बार-बार अधिक मात्रा मे पानी पीना**—खुश्की के कारण रोगी के होठ सूख जाते है, खुश्की के कारण वे चिटक जाते है, खून तक निकलने लगता है। **एरम ट्रिफि** मे हम देख आये हैं कि होठो और नाक की खुश्की इस कदर बढ जाती है कि रोगी उन्हें नोचता-नोचता खून तक निकाल देता है। नाक मे अगुली घुसेडता जाता है। **ब्रायोनिया** मे इसी खुश्की के कारण उसे प्यास बहुत लगती है। देर-देर मे पानी पीता है परन्तु अधिक मात्रा मे पीता है। **एकोनाइट** मे जल्दी-जल्दी, ज्यादा-ज्यादा, **आर्सेनिक** मे जल्दी-जल्दी थोडा-थोडा, **ब्रायोनिया** मे दिन-रात देर-देर मे ज्यादा-ज्यादा ठडा पानी पीता है। **नक्स मोस्केटा** और **पल्स** मे प्यास नही रहती।

श्लैष्मिक-झिल्ली की खुश्की और कब्ज—श्लैष्मिक-झिल्ली की खुश्की का असर आतो पर भी पडता है। रोगी को कब्ज रहती है। सूका, सख्त, भुना हुआ-सा मल आता है। बहुत दिनो मे टट्टी जाता है। सख्त मल को तर करने के लिये पेट मे श्लेष्मा का नामोनिशान तक नही होता। अगर पेट मे से म्यूकस निकलता भी है तो टट्टी से अलग, टट्टी खुश्क ही रहती है। भयकर कब्ज को यह ठीक कर देता है।

श्लैष्मिक-झिल्ली की खुश्की और खुश्क खासी—श्लैष्मिक-झिल्ली की शुष्कता का असर फेफडो पर भी पडता है। खासते-खासते गला फटने-सा लगता है, परन्तु कफ भीतर से नही निकलता। ठड से गरम कमरे मे जाने से खासी बढने मे **ब्रायोनिया** और गरम कमरे से ठडे कमरे मे जाने मे खासी बढे तो **फॉस-फोरस या रुमेक्स** ठीक हैं। **ब्रायोनिया** की शिकायतें प्राय नाक से शुरु होती हैं। पहले दिन छीके, जुकाम, नाक मे पानी बहना, आखो से पानी, आखो मे और सिर मे दर्द। इसके बाद अगले दिन शिकायत आगे बढती है, तालु मे, गले मे, श्वास-प्रणालिका में तकलीफ बढ जाती है। अगर इस प्रक्रिया को रोक न दिया जाय, तो प्लुरिसी, न्यूमोनिया तक शिकायत पहुच जाती है। इन सब शिकायतो मे रोगी हरकत से दु ख मानता है, आराम सें पडे रहना चाहता है। श्वास-प्रणालिका की शिकायतो—जुकाम, खासी, गला बैंठना, गायको की आवाज का पड जाना, गले मे टेटवे का दर्द आदि—मे इस औषधि पर विचार करना चाहिये।

(५) **रजोधर्म बन्द होने के बाद नाक या मुह से खून गिरना या सिर-दर्द**—यह **ब्रायोनिया** का विश्वसनीय लक्षण है। अगर रोगिणी नाक या मुह से खून निकलने की शिकायत करे, तो उसे यह पूछ लेना चाहिये कि उसका रजोधर्म तो बन्द नही हो गया। मासिक बन्द होने मे भी सिर-दर्द हो जाया करता है। कब्ज होने मे भी सिर-दर्द शुरु हो जाता है।

(६) **सूर्योदय के साथ सिर-दर्द शुरु होना, सूर्यास्त के साथ बन्द हो जाना**—इस सिर-दर्द का लक्षण यह है कि यह सूर्योदय के साथ शुरु होता है, सूर्यास्त के साथ बन्द हो जाता है। इसके साथ **ब्रायोनिया** के अन्य लक्षण भी रह सकते है, यथा हिलने-डुलने से सिर-दर्द का बढना, आख खुलते ही बढना।

सिर-दर्द मे ब्रायोनिया और बेलाडोना की तुलना—सूर्योदय के साथ सबध न होने पर भी **ब्रायोनिया** मे सिर-दर्द हो सकता है। प्रत्येक अस्थायी-रोग मे सिर-दर्द उसके साथ जुडा ही रहता है। इतना सिर-दर्द होता है कि सिर को दबाने मे ही आराम आता है। **ब्रायोनिया** के सिर-दर्द मे रोगी को गर्मी सहन नही होती। हरकत से सिर-दर्द बढता है, आख झपकने तक से सिर मे पीडा होती है। इस सिर-दर्द का कारण सिर मे रक्त-सचय है। **बेलाडोना** मे भी सिर मे रक्त-सचय के कारण सिर-दर्द होता है, परन्तु दोनो मे अन्तर यह है कि **बेलाडोना** का सिर-दर्द

आंधी तूफान की तरह आता है, यकायक आता है, ब्रायोनिया का सिर-दर्द धीरे-धीरे आता है, उसकी चाल मध्यम और धीमी होती है। दोनों औषधियों की यह प्रकृति है—एकदम आना बेलाडोना की, और धीमे-धीमे आना ब्रायोनिया की प्रकृति है।

(७) **क्रोध आदि मानसिक-लक्षणों से रोग की उत्पत्ति—ब्रायोनिया** में अनेक मानसिक-लक्षण हैं। बच्चा क्रोध करता है और जो वस्तु मिल नहीं सकती उसे फौरन चाहता है और दिये जाने पर उसे परे फेंक देता है; तरह-तरह की चीजों के लिये ज़िद करता और दे दी जायें तो लेने से इन्कार करता है, घर में होने पर भी कहता है—घर में जाऊंगा, उसे ऐसा लगता है कि वह घर में नहीं है। बड़ा आदमी अपने रोज़गार की बातें अटपट बका करता है। ये लक्षण मानसिक-रोग में, डिलीरियम आदि में प्रकट होते हैं। क्रोध से उत्पन्न मानसिक-लक्षणों में **स्टैफिसैग्रिया** भी उपयोगी है। अगर रोगी कहे डाक्टर, अगर मेरा किसी से झगड़ा हो जाय, तो मैं इतना उत्तेजित हो जाता हूं कि सिर-दर्द होने लगता है, नींद नहीं आती, तो ऐसे रोगी को **स्टैफिसैग्रिया** ठीक कर देगा।

(८) **गठिये के रोग में गर्मी और हरकत से आराम—ब्रायोनिया** का उपयोग गठिये में भी होता है। **ब्रायोनिया** का रोगी ठंडी हवा पसन्द करता है, ठंडा कपड़ा ओढ़ना चाहता है, परन्तु गठिये के दर्द में अपनी प्रकृति के विरुद्ध उसे गर्मी से आराम मिलता है। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यद्यपि **ब्रायोनिया** में रोगी आराम से लेटे रहना चाहता है, तो भी गठिये के रोग में वह चलने-फिरने से ही ठीक रहता है क्योंकि इस प्रकार उसके दुखते अंगों को गति से गर्मी मिलती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि **ब्रायोनिया** में परस्पर-विरुद्ध प्रकृतियां काम कर रही हैं। वह प्रकृति से ऊष्णता-प्रधान है परन्तु गठिये में उसे गर्मी पसन्द है, यह होते हुए भी उसकी आधारभूत प्रकृति ऊष्णता-प्रधान ही रहती है।

गठिया ठीक होने पर आंख में दर्द—अगर यह देखा जाय कि जिस अंग में गठिये का दर्द था वह तो ठीक हो गया, परन्तु आंख में दर्द शुरू हो गया, आंख लाल हो गई, सूज गई, उसमें से रुधिर आने लगा, तब **ब्रायोनिया** से यह ठीक होगा।

(९) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i **नौ बजे रोग की वृद्धि—ब्रायोनिया** के ज्वर के लक्षण ९ बजे शाम को बढ़ जाते हैं। ९ बजे ज्वर आयेगा या सर्दी लगनी शुरू हो जायगी। **कैमोमिला** के लक्षण ९ बजे प्रातः बढ़ जाते हैं। **बेल** के लक्षण ३ बजे दोपहर बढ़ जाते हैं।

ii **रोगी खुली हवा चाहता है—ब्रायोनिया** का रोगी **एपिस** और **पल्स** की तरह दरवाजे-खिड़कियां खुली रखना पसन्द करता है। बन्द कमरा उसे घुटा-घुटा लगता है। बन्द कमरे में उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं। खुली हवा उसे रुचती है।

iii. **खाने के बाद रोग-वृद्धि**—खाने के बाद रोग बढ जाना इसका व्यापक-लक्षण है। रोगी कहता है कि खाना खाने के बाद तबीयत गिर जाती है।

iv **दांत के दर्द मे दबाने और ठंडे पानी से लाभ**—दात के दर्द मे मुह मे ठडे पानी से लाभ होता है क्योंकि **ब्रायोनिया** ठड पसन्द करने वाली दवा है। जिधर दर्द हो उधर लेटने या दर्द वाली जगह को दबाने से आराम मिलता है। यह भी **ब्रायोनिया** का चरित्रगत-लक्षण है। होम्योपैथी मे रोग तथा औषधि की प्रकृति को जान कर उनका मिलान करने से ही ठीक औषधि का निर्वाचन हो सकता है। ठंडे पानी से और दर्द वाले दात को दबाने से रोग बढना चाहिये था, परन्तु क्योंकि **ब्रायोनिया** मे ठड से और दर्द वाली जगह को दबाने से आराम होना इसका 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) है, इसलिये ऐसी शिकायत मे **ब्रायोनिया** से लाभ होता है।

v **गर्म-शरीर मे शीत से रोग मे वृद्धि**—शरीर गर्म हो जाने पर ठडा पानी पीने, या उसमे स्नान से रोग बढ जाता है। यद्यपि **ब्रायोनिया** के रोगी को ठड पसन्द है, ठडा पानी उसे रुचता है, परन्तु अगर वह गर्मी मे आ रहा है, शरीर गर्म हो रहा है, तब ठडा पानी पीने या ठडे स्नान से उसे गठिये का दर्द बढ जायगा। अगर उसे खासी होगी या सिर-दर्द होता होगा, वह बढ जायगा, या हो जायगा। शरीर के गर्म रहने पर ठडा पानी पीने से जोर का सिर-दर्द हो जायगा। **ब्रायोनिया** की तरह **रस टॉक्स** मे भी गर्म शरीर हो, तो ठडे जल से सिर-दर्द आदि तकलीफें भयकर रूप धारण कर लेंगी। अगर शरीर की गर्मी की हालत मे ठडा पानी पी लिया जायगा, तो पेट की भी शिकायत पैदा हो सकती है जिसमे **ब्रायोनिया** लाभ करेगा। गर्म से ठंडक मे जाने से खासी आदि किसी रोग की वृद्धि **ब्रायोनिया** और **नेट्रम कार्ब** मे पायी जाती है, ठडक से गर्मी मे जाने से खासी आदि किसी रोग की वृद्धि **रूमेक्स** मे पायी जाती है।

vi **दायें फलक मे दर्द**—दायी छाती से पीठ की तरफ दायें कन्धे की फलक मे दर्द हो, तो **ब्रायोनिया** और **चैलीडोनियम** से लाभ होता है। दाये फलक के नीचे के कोने के लिये **चैलीडोनियम** विशेष लाभप्रद है। **कैलि-कार्ब** और **मर्क सौल** मे भी यह लक्षण है—(Canstant pain under the lower and inner angle of right scapula)—अगर ऐसा दर्द बाये कन्धे के नीचे के फलक मे हो, तो **सैंग्विनेरिया** से लाभ होता है।

vii **भोजन के विषय मे नियम**—प्राय चिकित्सक लोग रोगियो को कहा करते हैं—तम्बाकू न खाओ, पान न चबाओ, लहसन-प्याज न खाओ। डा० कैन्ट का कहना है कि क्या खाना क्या न खाना—इस विषय मे एक मोटा नियम ठीक नहीं है। प्रत्येक औषधि का अपना क्षेत्र है जिसमे उसे किसी वस्तु से हानि हो सकती है। उसे ध्यान मे रखते हुए ही—क्या खाना क्या न खाना—इसका आदेश

देना चाहिये। उदाहरणार्थ, ब्रायोनिया के रोगी को साग-भाजी या चिकन-सलाद से नुक्सान होगा, पल्सेटिला के रोगी को घी के या सचील पदार्थ खाने में हानि होगी, लाइकोपोडियम ओयस्टर हज़म नहीं कर सकता। होम्योपैथिक औषधियां पेट में ऐसी दशा उत्पन्न कर देती हैं जो भिन्न-भिन्न भोजनों के लिये अनुपयुक्त होती हैं। कई औषधियों का अम्ल या नीबू के रस के साथ विरोध है। अगर इन बातों को ध्यान में रखकर रोगी को सावधान न किया जायगा, तो औषधि का



डा० जेम्स टायलर केंट
(१८४९-१९१६)

गुण नष्ट हो जायगा। **रस टॉक्स** के रोगी को ठंडे पानी के स्नान से रोक देना चाहिये अन्यथा उसके लक्षण औषधि के बावजूद लौट आयेंगे। **कैलकेरिया** में ठंडे स्नान से औषधि का असर समाप्त हो जायगा। रोगी को बने-बनाये नियम न बतला कर औषधि की प्रकृति के अनुकूल नियम बतलाने चाहियें। सब रोगियों को —क्या करना क्या न करना—इसकी एक ही सूची बना कर दे देना होम्योपैथी नहीं है।

(१०) **ब्रायोनिया का मूर्त-चित्रण**—रोगी को काटने, चुभनेवाला दर्द होता हो, ज़रा-सी भी हरकत से रोग बढ़ जाता हो, बैठना भारी प्रतीत होता हो, दर्द वाली जगह पर दबाव पड़ने से आराम आता हो, देर-देर में, भर-भर गिलास पानी पीता हो, बड़ा चिड़चिड़ा हो, क्रोधी स्वभाव का हो, क्रोधी स्वभाव ही नहीं, शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि में ज़रा-सी भी तंगी से परेशान हो जाता हो, सफेद

जीभ, उन्माद (Delirium) मे घर मे रहते हुए भी घर जाने की वात करता हो, स्वप्न तथा उन्माद मे भी कारोवार की वात करता हो, ठडी हवा पसन्द करता हो, जो रोग आता हो वह आधी की तेजी से न आकर धीमी गति से आता हो, फिर भले ही जुकाम हो, खासी हो, प्लुरिसी हो, न्यूमोनिया हो, मुख्य तौर पर श्वास-प्रणालिका पर आक्रमण होता हो, खुश्की के कारण छाती से वलगम कठिनाई से निकलता हो, तो ऐसे रोगी को **ब्रायोनिया** का मूर्त तथा सजीव रूप समझो।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

कैक्टस ग्रैन्डीफ्लोरस (CACTUS GRANDIFLORUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **हृदय मानो मुट्ठी से जल्दी-जल्दी दवाया और छोडा जारहा है (Angina pectoris—एन्जाइना पैक्टोरिस)**	लक्षणो मे कमी (Better) ***खुली हवा से रोग मे कमी**
(२) **किसी भी अग मे जकडन का अनुभव होना**	
(३) **वात-रोग या गठिया मे जकड़न का अनुभव**	लक्षणो में वृद्धि (Worse) ***दोपहर के समय रोग मे वृद्धि**
(४) **वायीं वाह का सुन्न हो जाना**	***११ बजे प्रातः तथा साय**
(५) **रक्त-संचय के कारण भिन्न-भिन्न अगो से रुधिर जाना (जैसे, ववासीर मे)**	***वायीं करवट लेटने से रोग मे वृद्धि**
(६) **पेट, आतो, हाथो, टागों, सिर में स्पन्दन**	

(१) **हृदय मानो मुट्ठी से जल्दी-जल्दी दवाया और छोडा जा रहा है (एन्जाइना पैक्टोरिस)**—यह हृदय के रोग की प्रधान दवा है। रोगी को ऐसा अनुभव होता है मानो उसका हृदय मुट्ठी मे दवाया हुआ है, और जल्दी-जल्दी उसे दवाया और छोडा जा रहा है। उसे हृदय मे ऐसा दर्द होता है कि वह समझता है कि उसका रोग असाध्य है। उसे डर लगता है कि उसकी मृत्यु हो जायगी। मृत्यु का भय एकोनाइट मे भी है, परन्तु **कैक्टस** मे मृत्यु-भय की तीव्रता **एकोनाइट** जैसी नही है। रोगी उदास रहता है, इकला, चुपचाप वैठा रहता है। किसी से वात नही करता। हृदय के रोग मे रोगी प्राय रोया करता है। **कैक्टस** मे भी रोना है। **एकोनाइट** मे गले और छाती मे रोगी ऐसी जकडन अनुभव करता है मानो घुट कर मर जायगा। यह घुटन **कैक्टस** की घुटन से ज्यादा है।

दिल के इस प्रकार के कष्ट मे निम्न-लक्षणो पर निम्न-औषधिया उपयुक्त हैं—

कैक्टस—मानो मुट्ठी से हृदय को वार-वार जकडा और छोडा जारहा है।

आयोडाइन—मानो दिल को निचोडा (Squeeze) जा रहा है।

लैकेसिस—सोकर उठने पर दिल का सिकोडा (Constriction) जाना और घबराहट दूर करने के लिये कपडा फेक देना।

आर्सेनिक—घूमते-फिरते मालूम होना कि दिल सिकुड (Constriction or oppression) रहा है।

(२) **किसी भी अग मे 'जकडन' (Constriction) का अनुभव होना**—जकडन का अनुभव सिर्फ हृदय तक सीमित नही है। रोगी किसी भी अग मे जकडन अनुभव करे, तो **कैक्टस** ही दवा है। रोगी अनुभव करता है कि उसकी छाती लोहे की जजीर से जकडी हुई है, सिर पर इस प्रकार का दवाव अनुभव करता है कि मानो सिर पर भारी बोझ से सिर जकडा पडा है। यह जकडन हृदय और छाती के अलावा मूत्राशय, गुदा, जरायु, योनि आदि किसी अग मे भी हो सकती है। हृदय मे जकडन का अनुभव, सिर मे सिर के कस कर बधे होने का अनुभव, छाती मे बोझ जिसमे सास लेना कठिन हो, गले मे जकडनभरी ऐंठन, जरायु मे ऐसी जकडन कि मैथुन न हो सके, मस्तिष्क मे ऐसा अनुभव होना कि कपडे से जोर से लपेटा हुआ है—ये हैं भिन्न-भिन्न अगो के जकडन के अनुभव जिनमे **कैक्टस** उपयोगी हैं।

(३) **वात-रोग या गठिये मे 'जकडन' (Constriction) का अनुभव**—वात-रोग मे रोगी जोड मे ऐसे अनुभव करता है मानो पट्टी से जोड जकडा हुआ है, बधा पडा है। इस प्रकार के अनुभव मे जकडन, दवाव का-सा महसूस होता है। इस जकडन मे दर्द की अनुभूति होती है। कल्पना करो कि जिस जोड मे वात-शोथ है उसे पट्टी से लगातार जोर-जोर से कसकर बाधा जा रहा है। तब जैसी अनुभूति होती है वैसी जोडो मे 'जकडन' (Constriction) महसूस होती है।

(४) **बायीं बाह का सुन्न हो जाना**—हृदय के रोग मे बायी बाह मे ऐंठन और सुन्नपना हो जाता है। जो लोग गठिया या हिस्टीरिया के रोगी होते है उनमे भी बायी बाह मे ये लक्षण पाये जाते हैं। **कैक्टस** मे भी हाथ का सुन्नपना या कीडिया-सी चलना मौजूद है इसलिये यह इस रोग की भी दवा है।

(५) **रक्त-सचय के कारण भिन्न-भिन्न अगो से रुधिर जाना (बवासीर)**—हृदय के रोग मे रक्त का सचार विघटित हो जाता है इसलिये किन्ही अगो मे रक्त का सचय अधिक हो जाता है। परिणामस्वरूप अधिक रक्त-सचय के कारण भिन्न-भिन्न अगो से रुधिर बहने लगता है। सिर मे रुधिर का सचय इतना हो जाता है कि नकसीर फूटती है, खासते हुए गले से खून आता है, छाती से खून आता है। यह खून रक्त-सचय के कारण होता है, जरायु से रुधिर आता है, मूत्राशय से और मूत्र मे रुधिर आने लगता है। यह रक्त-स्राव टी० बी० के कारण नही होता।

बवासीर मे मस्से खून से भर कर वडे हो जाते हैं इसलिये **कैक्टस खूनी बवासीर** की भी दवा है।

(६) **पेट, आतों, हाथो, टागो, सिर मे स्पन्दन**—शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे—पेट मे, आतो मे, हाथो मे, टागो मे, सिर मे हृदय की नाडी का स्पन्दन अनुभव करना इस औषधि का विचित्र-लक्षण है।

(७) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

I **ग्यारह बजे रोग-वृद्धि**—ग्यारह वजे प्रात या साय रोगी को लक्षण सताते हैं। छाती पर बोझ की शिकायत होगी तो ११ वजे सवेरे या ११ बजे शाम, ज्वर आयेगा तो ११ वजे सुवह या शाम या सुवह और शाम ठड सताने लगेगी।

II **मूत्रावरोध**—मूत्राशय मे ऐसी 'सिकुडन' (Constriction) होती है कि मूत्र नहीं निकलता, रुका रहता है। इस औषधि मे रुधिर के थक्के आसानी से वन जाते है। शरीर मे रुधिर का जो सचार होता है वह इतना जल्दी थक्को मे जम जाता है कि रुधिर-प्रवाह को रोक देता है। मूत्राशय मे अगर रुधिर-स्राव हो जाय, तो उसके थक्के जम कर मूत्र-मार्ग को रोक देते है, रोगी का मूत्र रुक जाता है।

III **मासिक-धर्म का कष्ट**—मासिक-धर्म के समय तन्दुरुस्त, हृष्ट-पुष्ट स्त्री का जरायु-मार्ग इन रुधिर के थक्को से रुक जाता है और इन्हे वाहर धकेलने के लिये जरायु मे ऐंठन पैदा होती है, जो प्रजनन के समय के कष्ट के समान होती है। रोगिणी दर्द के मारे चिल्लाने लगती है और जवतक रुधिर के ये जमे थक्के निकल नही जाते तवतक उसे चैन नहीं पडता। अगर यह अवस्था गठिये के रोगी मे पायी जाय तव तो हर हालत मे **कैक्टस** ही इस शिकायत को दूर करेगा।

यह स्मरण रखना चाहिये कि **कैक्टस** मुख्य तौर पर हृदय की औषधि है और इसीलिये रुधिर से सबध रखने वाले रोगो मे लक्षणानुसार इसका प्रयोग होता है।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

कैलेडियम (CALADIUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) अत्यन्त भुलक्कडपना
(२) रति-क्रिया की उत्कट इच्छा किन्तु नपुसकता
(३) स्त्री-जननाग मे असह्य खुजली
(४) मीठा पसीना; पसीने के वाद अच्छा लगना
(५) धूम्रपान की इच्छा को दूर करता है

(१) **अत्यन्त भुलक्कडपना**—रोगी अत्यन्त भुलक्कड होता है। जो काम कर चुका हो उस पर फिर सोचने लगता है कि किया या नही, दरवाजा वन्द कर

चुका है किन्तु लौट कर फिर ख्याल आता है कि बन्द किया या नही और फिर जाकर दरवाज़े की कुडी को हाथ लगाकर इतमिनान करता है। जिस चीज़ का निश्चय करना हो उसे बार-बार जाकर, देखकर, हाथ लगाकर निश्चय करता है और वापस लौटने पर फिर अनिश्चित-का-अनिश्चित बना रहता है। यह तो तब है, जब जो-कुछ उसने स्वय किया है उसके विषय मे मन मे अनिश्चय ही बना रहता है। **कैलेडियम** से इस प्रकार की मन की अनिश्चित-अवस्था, मुलक्कडपना दूर हो जाता है। यह अवस्था गवादीपन या पागलपन तक पहुँच सकती है। ऐसी हालत आ जाने पर रोगी सारे दिन बैठा-बैठा यही सोचा करता है कि जो काम वह कर चुका है या हो जाने चाहिये थे, वे उसने, किये या नही किये, वे हुए या नही हुए। मन की इस प्रकार की दुर्बलता इसमे आ जाती है। जितना ही वह किसी विषय पर मन केन्द्रित करना चाहता है उतना ही मन उस पर केन्द्रित नही हो पाता।

(२) **रति-क्रिया की उत्कट इच्छा किन्तु नपुंसकता**—मन की इस प्रकार की दुर्बलता प्राय व्यभिचारियो मे, हस्त-मैथुन करनेवालो मे पायी जाती है। **कैलेडियम** के रोगी का मन अत्यन्त विषयासक्त होता है। उसमे स्त्री-प्रसग की उत्कट इच्छा होती है, परन्तु मैथुन के प्रति असमर्थता होती है। स्त्री का आलिगन करता है, परन्तु उत्तेजना नही हो पाती। ऐसे दुर्व्यसनी लोग सडक के किनारे खडे हुए आती-जाती ललनाओ की ओर ताका करते हैं, उनका वीर्य रिसता रहता है। ऐसे रोगियो का इलाज न करना ही ठीक है क्योकि जबतक वे स्वय इस रोग से मुक्त न होना चाहें उन्हें कोई ठीक नही कर सकता। यह तो इच्छा-शक्ति को सुधारने का प्रश्न है। ऐसे दुर्व्यसनी, व्यभिचारी-विचारो से ग्रस्त रात भर उलटा-पलटा करते हैं। पुरुषो की जननेन्द्रिय की शिथिलता को **कैलेडियम, पिकरिक ऐसिड** तथा **सिलेनियम** दूर करते है। अर्ध-निद्रित अवस्था मे उत्तेजना होती है, परन्तु जाग खुलते ही इन्द्रिय शिथल हो जाती है। **थूजा** भी इसे ठीक कर देता है।

(३) **स्त्री-जननाग मे असह्य खुजली**—इस औषधि का एक विशेष-लक्षण स्त्री के जननागो की खुजली है। प्राय गर्भावस्था मे ऐसा होता है। इतनी खुजली मचती है कि वह सो नही सकती। इस खुजली के कारण उसकी काम-चेष्टा बढ जाती है, वह शरीर तथा मन से कमजोर हो जाती है।

(४) **मीठा पसीना**—रोगी को मीठा पसीना आता है। यहातक कि मक्खिया उस मिठास के लिये उसकी तरफ खिच आती हैं। पसीना आने से रोगी को आराम मिलता है।

(५) **धूम्रपान की इच्छा को दूर करता है**—डा० कैन्ट लिखते है कि **लीडम** विस्की के प्रति तथा **कैलेडियम** धूम्रपान की इच्छा के प्रति अरुचि पैदा कर देता है, तम्बाकू खाने की आदत को भी छुडा देता है। **धूम्र-पान से रोग बढता है।**

(६) **शक्ति**—६, ३०, २००

कैलकेरिया आर्सेनिका (CALCAREA ARSENICA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) यह गहरी तथा दीर्घकालिक औषधि है	लक्षणों में कमी (Better)
(२) हृदय से उठने वाले ऑरा के बाद मृगी का दौर	*गर्मी से रोग में कमी
(३) जिधर लेटता है सिर-दर्द उससे दूसरी तरफ चली जाती है	लक्षणों में वृद्धि (Worse) *सर्दी से रोग का बढ़ना

(१) **यह गहरी तथा दीर्घकालिक औषधि है**—यह औषधि कैलकेरिया तथा आर्सेनिक के मेल से बनी है। उक्त दोनों औषधियों की क्रिया गहरी और देर तक रहनेवाली होती है, इसलिये इसकी क्रिया भी गहरी और दीर्घकालिक है। इस प्रकृति का होने के कारण यह गहरी बीमारी को दूर करती है। इन गहरी बीमारियों में एक प्रकार की मृगी तथा एक विशेष प्रकार का सिर-दर्द है।

(२) **हृदय से उठने वाले ऑरा के बाद मृगी का दौर**—इस औषधि ने मृगी के पुराने रोगियों को, जो किसी औषधि से ठीक नहीं होते थे, रोग-मुक्त किया है। इस मृगी का लक्षण यह है कि दौर पड़ने से पहले रोगी अनुभव करता है कि हृदय में ऑरा उठ रहा है। ऑरा एक प्रकार का संवेदन है जो मृगी का रोगी अनुभव करता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि मृगी का दौर पड़ने के समय हृदय से वायु की-सी एक लहर उठ रही है। इस लहर के उठने के बाद दौर पड़ जाता है। इसे यह औषधि ठीक कर देती है।

(३) **रोगी जिधर लेटता है सिर-दर्द उससे दूसरी तरफ चला जाता है**—इस औषधि का एक 'विलक्षण-लक्षण' यह है कि सिर-दर्द में रोगी जिस तरफ लेटता है, दर्द उससे दूसरी तरफ चला जाता है।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, १२, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

कैलकेरिया कार्बोनिका (CALCAREA CARB)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) थुलथुलपना; स्थूलता परन्तु दुर्बलता, थोड़े-से श्रम से हाप जाना; अस्थियो का असम-विकास	लक्षणो में कमी (Better) *गर्म हवा से अच्छा लगना
(२) बड़ा सिर, बडा पेट परन्तु पतली गर्दन और पतली टागें	
(३) ठंडा शरीर परन्तु सिर पर बेहद पसीना आना, ठडे पाव	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) शरीर तथा स्रावो से खट्टी बू आना	ठड, ठडी हवा से रोग बढना
(५) शारीरिक की तरह मानसिक दुर्बलता	*शारीरिक-परिश्रम से बढना
(६) मासिक-धर्म जल्दी, अधिक, और देर तक	*मानसिक-परिश्रम से बढ़ना
(७) शीत-प्रधान शरीर तथा आराम पसन्द	*चढ़ाई मे ऊपर चढने से बढना
(८) बच्चो के दात निकलते समय के रोग	*दांतो के निकलने मे कष्ट
(९) रोगी की कण्ठमाला की प्रकृति	*दूध माफिक न आना

(१) **थुलथुलपना, स्थूलता परन्तु दुर्बलता, थोडे-से श्रम से हाप जाना, अस्थियों का असम-विकास**—बच्चा जब दात निकाल रहा होता है तभी उसे देखकर पहचाना जा सकता है कि बडा होकर उसके शरीर की रचना कैसी होगी। अगर उसका शरीर भोजन-तत्वो से लाइम का समीकरण नही कर रहा, तो उसकी हड्डियो का विकास ठीक नही हो पाता। हड्डियो की रचना को देख कर कहा जा सकता है कि उनका नियमित विकास नही हो रहा। किसी अग मे हड्डिया पतली, टेढी दिखाई देती हैं, किसी मे स्थूल दिखाई देती हैं। हड्डिया कोमल और धीरे-धीरे बढती हैं। टागें पतली, मेरु-दण्ड टेढा, कमजोर हड्डिया—ऐसी हालत होती है उस बच्चे की जिसके विकास मे लाइम नही रच पाता। एलोपैथिक चिकित्सक ऐसे बच्चो को लाइम-वाटर देते हैं, परन्तु अधिक लाइम-वाटर देने से बच्चे का शरीर लाइम को नही रचा सकता। उसकी जीवनी-शक्ति मे कोई निर्बलता होती है जिसे दूर किये बिना बच्चे का विकास लाइम-वाटर देने पर भी रुका रहता है। इस बात को ध्यान मे रखना चाहिये कि अगर किसी बच्चे को लाइम-वाटर देकर पाला गया है, तो सिर्फ इतनी ही बात **कैलकेरिया** देने के लिये पर्याप्त कारण नही है। **कैलकेरिया** तभी दिया जाना चाहिये जब इसके लक्षण विद्यमान हो, वे लक्षण लाइम-वाटर दिये जाने या बिना दिये जाने दोनो हालात मे हो सकते हैं। **कैलकेरिया** का बच्चा टागें पतली और टेढी होने के साथ शरीर से स्थूल होता जाता

है, मोटा होता जाता है, और चलने-फिरने मे उसे तकलीफ होती है। ऐसे थुलथुले वच्चे को जहा वैठा दिया जाय वहीं मट्टी के माधो की तरह वैठा रहता है, अन्य वच्चो की तरह दौड-धूप नही करता, चपलता नही दिखलाता। उसके दात देर से निकलते हैं, किसी-किसी के निकलते ही नही। वडा होने पर यह हर समय अपने को थका-थका अनुभव करता है, जरा-से परिश्रम से हाफने लगता है। इस प्रकार के स्थूल, थुलथुल, कमजोर, अस्थियो के टेढे-मेढे व्यक्ति के लिये, चाहे वह वच्चा हो, चाहे वचपन से इन लक्षणो को लेकर युवा हो गया हो, **कैलकेरिया** ठीक कर देता है और उसकी शरीर की रचना को वदल देता है। आजकल लडके-लडकिया पतला होने का वडा प्रयत्न करती हैं, इसमे वे सुन्दरता देखती हैं, मोटापे मे रोग भी घर करने लगते हैं, उन रोगो से भी वे वचना चाहती हैं, परन्तु अगर उनके शरीर की रचना **कैलकेरिया** की है, तो शक्तिकृत **कैलकेरिया** देने से उनकी मनोकामना पूरी हो सकती है। अगर **कैलकेरिया**-शरीर की माता को गर्भावस्था मे यह औषधि दी जाय, तो वच्चा सुघड पैदा होगा।

(२) **वडा सिर, वडा पेट परन्तु पतली गर्दन और पतली टागें**—ऊपर जो-कुछ कहा गया है उससे स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति के विकास मे अस्थियो का और मास-पेशियो का सम-विकास नही होगा उसकी क्या शक्ल होगी। **कैलकेरिया** के वालक या युवा का मूर्त-चित्रण होगा—वडा सिर, वडा पेट और पतली गर्दन। इतने वडे सिर, वडे पेट, पतली गर्दन और पतली टाग से अगर वालक या युवा चलने-फिरने में दिक्कत महसूस करे तो क्या आश्चर्य ?

(३) **ठंडा शरीर परन्तु सिर पर बेहद पसीना आना, ठडे पाव**—इस रोगी की विशेषता यह है कि उसे अत्यन्त सर्दी लगती है, शरीर ठडा रहता है, परन्तु सोते समय पसीने से उसका तकिया तर-ब-तर हो जाता है। सोते मे पसीना आना तो इसका विशेष-लक्षण है ही, साथ ही **कैलकेरिया** का विलक्षण-लक्षण यह है कि ठडे कमरे मे भी उसे पसीना आता है, ठड मे तो पसीना नही आना चाहिये परन्तु ठड मे भी उसे पसीना आता है—यह अद्भुत वात है। पाव उसके इतने ठडे होते हैं मानो वर्फ के मौज़े पहने हो। डा० एलिस वारकर अपनी पुस्तक 'मिरेकल्स ऑफ हीलिंग' मे लिखते हैं कि 'पैर इतने ठडे मानो ठडे मौज़ें पहने हुए हों'—इस लक्षण पर डा० स्किनर ने एक रोगी को जिसमे यह लक्षण वडा प्रवल था **कैलकेरिया कार्ब** दिया, तो उसके पेट के कीडे निकल गये। इसका यह अर्थ नही कि **कैलकेरिया** कीडो को निकालने की दवा है। इसका इतना ही अर्थ है कि अगर लक्षण किसी औषधि के हो, तो उससे वही बीमारी नही ठीक होगी जिसके लिये औषधि दी गई है, शरीर की जीवनी-शक्ति मे सुधार होगा और जिन रोगो का हमे पता भी नही, जीवनी-शक्ति के स्वस्थ होने के कारण वे भी ठीक हो जायेंगे। **कैलकेरिया कार्ब** के शरीर मे ठड यहा-वहा भिन्न-भिन्न अगो मे महसूस होती है।

कभी सिर ठडा, कभी पाव ठडे, **कभी पेट मे ठडक**, कभी जाघो मे, कभी खोपडी पर—ठडक भी कैसी, बर्फ की-सी ठडक। डा० कैन्ट कहते हैं कि **कैलकेरिया** मे भिन्न-भिन्न जगहो पर ठडक महसूस होती है और भिन्न-भिन्न अगो मे पसीना आता है। **कैलकेरिया** का रोगी जब बिस्तर मे आता है, तो पैर बर्फ-के-से ठडे होते हैं, परन्तु कुछ देर बाद ही पैर जलने लगते है। कई चिकित्सक इस लक्षण पर **सलफर** दे देते हैं, परन्तु **सलफर** का रोगी स्वभाव से ऐसा ठडा नही होता जैसा **कैलकेरिया** का रोगी होता है। जैसे **कैलकेरिया** मे टुकडो-टुकडो मे ठडक महसूस होती है वैसे **सलफर** मे टुकडो-टुकडो मे, शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे गर्मी महसूस होती है।

कैलकेरिया के उक्त लक्षणो को विशद रूप देने के लिये डा० टायलर ने अपनी पुस्तक 'होम्योपैथिक ड्रग पिकचर्स' मे इस का निम्न शब्द-चित्रण दिया है

Fatness without fitness,	स्थूलता किन्तु स्वास्थ्य नही,
Sweating without heat,	स्वेद बहुत किन्तु गर्मी नही,
Bones without strength,	अस्थिया बडी किन्तु बल नही,
Tissues of plus quantity	मासपेशियो की मात्रा घनी
minus quality, More	किन्तु उनमे कुछ गुण नही,
flabby bulk, with weak-	केवल थुलथुलपना और साथ
ness and weariness	दुर्बलता और महा-थकान।

(४) **शरीर तथा स्रावो से खट्टी बू आना—कैलकेरिया** के व्यक्ति के शरीर से खट्टी बू आती है। उसका पसीना खट्टा, कय तथा दस्त मे खट्टी बू आती है। कई बार किसी मोटे थुलथुले व्यक्ति को देखकर जो चारो तरफ पसीने से खट्टी गध बहा रहा हो, यह समझ सकना कठिन नही होता कि उसका शरीर **कैलकेरिया** चाहता' है।

(५) **शारीरिक की तरह मानसिक दुर्बलता**—जिस प्रकार उसका शरीर दुर्बल होता है, उसी प्रकार उसका मन भी दुर्बल होता है। देर तक मानसिक-श्रम नही कर सकता। शारीरिक-श्रम मे जैसे वह झट-से थक जाता है, पसीने से तर-ब-तर हो जाता है, वैसे ही मानसिक-श्रम से भी झट थक जाता है और उसे पसीना आने लगता है। मानसिक-उद्वेगो (Emotions) मे शीघ्र उद्वेलित हो उठता है। दीर्घ चिन्ता, व्यापारिक कार्यों मे अत्यन्त व्यस्त रहने तथा मानसिक-उत्तेजना मे जो रोग हो जाते हैं उनमे यह औषधि लाभप्रद है, परन्तु **कैलकेरिया** का चरित्रगत-लक्षण ध्यान मे रखना चाहिये। मानसिक-लक्षणो के सबध मे उसके निम्न-लक्षणो पर ध्यान देना चाहिये—

१ **रोगी समझता है कि उसका मानसिक ह्रास हो रहा है**—रोगी को विश्वास हो जाता है कि उसका मानसिक ह्रास हो रहा है, सोचता है, कि वह

पागलपन की तरफ बढ रहा है, समझता है कि लोग भी ऐसा ही ख्याल कर रहे है। उसे विचार आता है कि लोग उसकी तरफ इसी सन्देह से देख रहे हैं, वह भी उनकी तरफ इसी सन्देह से देखता है और सोचता है कि वे कह क्यो नही देते कि उन्हें उसमे पागल होने के लक्षण दीखने लगे हैं। यह विचार हर समय उसके मन मे रहता है और दिन-रात इसी विचार मे डूबे रहने के कारण वह सो भी नही सकता।

ii **छोटे-छोटे विचार उसे नहीं छोडते—कैलकेरिया** के रोगी के मन को छोटे-छोटे विचार जकडे रहते हैं। उसका मन छोटी-छोटी वातो से इतना जकड जाता है कि उनसे किसी प्रकार छुटकारा नही पा सकता। उसके मित्र कहते हैं 'क्या छोटी-सी वात है, छोडो भी इसे'—परन्तु वह छोडे कैसे, उसके लिये तो वह वडी वात वन गई है। वह वडा मारी दार्शनिक हो सकता है, परन्तु उसका सव दर्शन ताक मे धरा रह जाता है, उसका मानसिक-स्तर ही बिगड चुका होता है। वह बुद्धि के स्थान मे मनोभावो से काम ले रहा होता है। वहुत कोशिश करके अगर वह अपने मन को उन छोटे-छोटे विचारो से जुदा कर के सोने की तैयारी करने लगता है, आखें बन्द करता है, तो भी आखें वन्द नही हो पाती, वह एकदम उत्तेजित अवस्था मे आ जाता है और ये विचार उसे इतना परेशान कर देते हैं कि वह सो नही सकता।

iii **ऐसा अनुभव करता है कि उठकर दौडता और चिल्लाता फिरे**—जिन लोगो का मस्तिष्क उत्तेजना की अति तक पहुच चुका होता है, जो गृहस्थी मे मृत्यु आदि किसी दुखद घटना से अत्यन्त पीडित होते हैं—माता का वच्चा, पति की पत्नी, युवती कन्या का प्रेमी उनके हाथ से काल द्वारा छीन लिया गया होता है—उनका हृदय टूक-टूक हुआ होता है, मन उत्तेजना की सीमा पर पहुचा होता है। इस प्रकार की उत्तेजना व्यापारिक-चिंताओ से भी हो जाती है। रोगी घर मे आगे-पीछे चलता-फिरता है, उसे शान्ति नही मिलती। मन मे आता है कि खिडकी मे से कूद कर प्राण दे दे। यह एक प्रकार की हिस्टीरिया की अवस्था है जिसे **कैलकेरिया** ठीक कर देता है।

iv **सब काम-काज छोड बैठना—कैलकेरिया** का रोगी अपनी मानसिक-अवस्था के कारण, जिसका दुर्बलता प्रधान अग है, अपना सव काम-धधा छोड कर घर बैठ जाता है। कितना ही चमकता व्यापार क्यो न हो, उसे अपने काम मे रुचि नही रहती, घर जा बैठना और कुछ न करना—यही उसे सूझ पडता है। वह अपने काम-धंधे का मुह तक नही देखना चाहता।

v **जीवन के प्रति उदासीन हो जाता है**—जीवन के प्रति उदासीनता भी **कैलकेरिया** का एक मानसिक-लक्षण है। ८–९ वर्ष की छोटी बच्ची दुखी रहती है, शोकाकुल है, इस नही, उस दुनिया की वात करने लगती है, अगर

बायबल पढती है, कुरान या रामायण-महाभारत पढती है, तो दिन भर उसी में रत रहती है। छोटे बच्चों के लिये यह चित्त की विचित्र अवस्था है, परन्तु **कैल-केरिया** इसे दूर कर देता है। चित्त की इस उदासी, शोकातुरता को **आर्सेनिक** तथा **लैकेसिस** भी दूर करते हैं। बच्चे ही नही, वृद्ध लोग भी जीवन के प्रति उदास, निराश, हतोत्साह हो जाते है, जीवन से घृणा करने लगते हैं, जीवन से तग आ जाते हैं। **ऑरम** मे भी यह लक्षण है। **कैलकेरिया** मे भी यह लक्षण पाया जाता है। मनुष्य मे 'बुद्धि' (Intelligence) तथा 'उद्वेग' (Will or Emotion) —ये दो मानसिक-तत्व हैं। जब 'उद्वेग' मे रोग आ जाता है, तब व्यक्ति अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति, जीवन के प्रति उदास हो जाता है, इनसे घृणा करने लगता है, मृत्यु पसन्द करता है। यह **ऑरम** का लक्षण है जिसमे 'उद्वेग' (Will or Emotion) मे विकार आ जाता है। जब उसकी 'बुद्धि' (Intelligence) तथा 'उद्वेग' (Will or Emotion)—इन दोनो मे उदासीनता आ जाती है, तब यह लक्षण **कैलकेरिया** का है।

(६) **मासिक-धर्म जल्दी, अधिक, और देर तक होता है**—इस औषधि के मासिक-धर्म के विषय मे तीन बातो को ध्यान मे रखना चाहिये। **कैलकेरिया** मे (i) यह समय से बहुत पहले होता है, (ii) बहुत अधिक खून जाता है, और (iii) बहुत देर तक जारी रहता हैं। प्राय हर तीसरे सप्ताह शुरु हो जाता है, रुधिर की मात्रा बहुत अधिक होती है, और समाप्त होते हुए भी लगभग एक सप्ताह ले लेता है। परन्तु मासिक-धर्म मे इन लक्षणो के साथ **कैलकेरिया** के अन्य लक्षणों का होना भी ज़रूरी है। रोगी की जिस शारीरिक-रचना का हमने वर्णन किया है, उसे ध्यान मे रखना उचित है। हनीमैन ने लिखा है कि अगर मासिक ठीक समय पर या कुछ देर में होता हो, फिर चाहे कितना ही ज्यादा क्यो न हो **कैलकेरिया** नही देना चाहिये।

(७) **शीत-प्रधान शरीर तथा आराम पसन्द**—**कैलकेरिया** का रोगी शीत-प्रधान होता है। ठडी हवा उसे माफिक नही आती। आंधी-तूफान, सर्दी का मौसम उसके रोग को बढा देता है। वह शरीर को गर्म रखना चाहता है, कपडे लपेट कर रहता है, दरवाज़े-खिडकिया बन्द रखता है। उसके शरीर को छूआ जाय, तो वह ठडा लगता है, उसके पैर ठडे रहते हैं। ठडापन और कमज़ोरी उसका चरित्रगत-लक्षण है। शीत-प्रधान होने के साथ वह आराम-पसन्द भी होता है। शारीरिक-मेहनत नहीं कर सकता। देखने को वह मोटा-ताज़ा दीखता है, मास चढा हुआ, थुलथुल, लाल फूला हुआ चेहरा, परन्तु ज़रा-सी मेहनत से, सीढियो पर चढने से हाफ जाता है। अगर थोडा-सा भी परिश्रम करना पडे, तो सिर-दर्द, बुखार हो जाता है। ज्यादा चलना, मेहनत करना, बोझ उठाना उसके लिये

रोग का आमन्त्रण देना है। शरीर से अत्यन्त स्थूल होता हुआ भी परिश्रम के लिये अत्यन्त निर्बल, शरीर की मास-पेशिया कसी हुई न होकर लटकती हुई-सी।

(८) **बच्चों के दात निकलते समय के रोग** (कय, दस्त, खासी)—**कैलकेरिया** का मूर्त-चित्रण करते हुए बच्चे की शिकायतो को नही भुलाया जा सकता। दात निकलते ममय वच्चा भारी कष्ट मे से गुजरता है। दात निकलते समय मुख्य तौर पर उसे तीन शिकायतें हो जाती हैं वह दूध हजम नही कर सकता, जो पीता है उसकी जमे हुए दही की तरह कय कर देता है, उसमे से खट्टी बू आती है। दूसरी शिकायत यह है कि उसे दस्त आने लगते हैं, वे भी फटे हुए दूध की तरह होते हैं और उनमें भी खट्टी बू आती है। दात निकलते समय तीसरी शिकायत खामी की होती है जिसका सवव भी दातो की खुरखुराहट से होता है। इन तीनो शिकायतो मे अगर वच्चे को सोते ममय सिर पर पसीना आता हो, तकिया पसीने से तर हो जाता हो, तो **कैलकेरिया** से सब रोग ठीक हो जायेंगे। इनके अलावा **कैलकेरिया** के वच्चे की खोपडी की हड्डी की सीवन खुली रहती है, खोपडी पिल-पिली महसूस होती है, चल-फिर नही सकता। हनीमैन का कथन है कि अगर वच्चे का **कैलकेरिया** का शरीर है, तो उसे जवतक रोग दूर न हो यह औषधि विना हानि के वार-वार दी जा सकती है, परन्तु वयस्क लोगो मे इस औषधि की एक मात्रा के वाद दूमरी मात्रा किमी उचित औषधि के वीच मे दिये विना वहुत सोच-समझ कर दी जानी चाहिये क्योकि इससे लाभ के स्थान मे हानि हो सकती है।

(९) **रोगी की कण्ठमाला की प्रकृति** (Scrofulous or glandular-diathesis)—**कैलकेरिया** के रोगी की गर्दन के चारो ओर गिल्टिया फूली होती हैं। शरीर के अन्य स्थानो मे भी गिल्टिया फूल जाती हैं। गिल्टियो पर आक्रमण करना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। पेट की गिल्टिया सख्त हो जाती हैं। इन ग्रन्थियो का होना टी० वी० का लक्षण है। कभी-कभी इन गिल्टियो का आकार मुर्गी के अडे जितना मोटा हो जाता है। किसी भी अग मे गिल्टियो का होना **कैलकेरिया** के अन्य मामान्य लक्षणो के होने पर इसी औषधि के प्रयोग को सूचित करता है।

(१०) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

1 **कैंसर**—डा० कैन्ट का कहना है कि अगर रोगी की शारीरिक-रचना **कैलकेरिया** की है, तो कैंसर मे अगर रोगी सवा साल जी सकता होगा, तो **कैल-केरिया** देने मे वह पाच साल तक चलता रहेगा। ऐसे रोग मे इससे अधिक कुछ आशा नहीं की जा सकती।

11 **गहरे घाव**—अगर शरीर मे कही गहरा घाव हो, गर्दन मे हो, जाघ मे हो, पेट मे हो, और **कैलकेरिया** की शारीरिक-रचना हो, तो वह घाव पस पड जाने

पर भी **कैलकेरिया** से सूख जायगा और ठीक हो जायगा। शर्त यही है कि 'शारीरिक-रचना' (Constitution) **कैलकेरिया** की होनी चाहिये। कभी-कभी हथौड़े आदि की चोट लगने से हड्डियों के परिवेष्टन मे सूजन आ जाती है, पस भी पड़ जाती है, परन्तु **कैलकेरिया** की शारीरिक-रचना होने पर सर्जन के नश्तर के बगैर इस औषधि से घाव ठीक हो जाता है, पस सूख जाती है।

III **मासार्बुद (Polypus)**—नाक, कान, मल-द्वार, जीभ की जड़, भग, मूत्राशय आदि मे मांस के पिंड—ट्यूमर—को यह दूर कर देता है, परन्तु शारीरिक-रचना को ध्यान मे रखना आवश्यक है।

IV **अंडा खाने की रुचि और दूध से अरुचि**—अंडा खाने की प्रबल-इच्छा होती है, दूध माफिक नही पड़ता। बच्चो मे दूध बिना पचे दस्त मे निकल जाता है।

V **स्तन पीने से या मानसिक-उत्तेजना से रजोधर्म जारी हो जाना**—**कैलकेरिया** का एक विचित्र-लक्षण यह है कि जब बच्चा मां का स्तन-पान करने लगता है, तब रजो-धर्म जारी हो जाता है। जरा भी मानसिक-उत्तेजना से रज स्राव जारी होने लगता है।

V **गठिया या वात-रोग**—ठंड लगने से जोड़ो का दर्द हो जाना इस औषधि मे पाया जाता है। पांव ठंडे रहते है, ऐसे मानो गीली जुराब पहनी हुई हो। सोते समय शरीर के अन्य अंगो की अपेक्षा पैरो पर अधिक गर्म कपड़ा डालना पड़ता है। जब पैर गर्म हो जाते है, तब उनमे जलन होने लगती है और रोगी उन्हें बिस्तर से बाहर निकालने लगता है।

VI **खांसी**—खांसी मे गले मे पंख होने की-सी अनुभूति होती है।

VII **कैलकेरिया तथा पल्सेटिला की तुलना**—कल्पना करो कि एक रोगी के ५–६ लक्षण, जिन्हे लक्षणो की कुंजी कहा जा सकता है, **कैलकेरिया** के है, परन्तु ५–६ ऐसे ही लक्षण उस रोगी मे **पल्सेटिला** के है, तो उनमे से किस औषधि का चुनाव होगा? अगर वह रोगी ठंड पसन्द करता है, गर्मी से घबराता है, खुली हवा चाहता है, तब **कैलकेरिया** के कितने ही कुंजी कहे जानेवाले लक्षण क्यो न हो, उसे **कैलकेरिया** से लाभ नही होगा क्योंकि **कैलकेरिया** तो ठंड से घबराता है, गर्मी पसन्द करता है। ऐसी अवस्था मे अनेक 'विशेष-लक्षणो' (Particulars) के समान होने पर भी 'व्यापक-लक्षण' (Generals) के आधार पर ही औषधि का निर्वाचन होगा। क्योंकि 'व्यापक-लक्षण' मे रोगी खुली हवा पसन्द कर रहा है, ठंड चाह रहा है, इसलिये इस रोगी को जिसके अनेक 'विशेष-लक्षण' **कैलकेरिया** के है, **पल्सेटिला** देने से ही लाभ होगा। जैसा हम भूमिका मे कह चुके हैं, 'व्यापक-लक्षण' (General symptoms) की तुलना मे 'विशेष-लक्षण' (Particular symptoms) का कोई महत्व नही।

VIII **बेलाडोना का क्रौनिक कैलकेरिया है**—जब बेलाडोना मे लाभ हो पर वह स्थिर न होता हो, तब **कैलकेरिया** दिया जाता है।

IX **सलफ़र, कैलकेरिया, लाइको की त्रिक-शृ खला**—डा० कैंट अपने मैंटीरिया मैडिका मे लिखते है कि कई दवाइया त्रिको मे चक्कर काटती हैं। इनमे सब से प्रसिद्ध त्रिक-शृ खला **सलफर, कैलकेरिया** तथा **लाइको** की है। डा० नैश कहते हैं कि मानव-समाज मे अधिकाश लोग इस त्रिक मे आ जाते हैं। कई **सलफर** प्रकृति के, कई **कैलकेरिया** प्रकृति के, और कई **लाइकोपोडियम** प्रकृति के होते है। आयुर्वेद की दृष्टि से मानव-समाज को पित्त, कफ तथा वात—इन तीन प्रकृतियो मे बाटा गया है। **सलफ़र** को पित्त-प्रकृति कहा जा सकता है, **कैलकेरिया** को कफ-प्रकृति कहा जा सकता है, **लाइकोपोडियम** को वात-प्रकृति कहा जा सकता है। प्राय देखा जाता है कि **सलफ़र** देने के बाद रोगी **कैलकेरिया** के लक्षण प्रकट करने लगता है, **कैलकेरिया** के बाद **लाइकोपोडियम** के लक्षण प्रकट करने लगता है। अगर रोगी के लक्षण इस प्रकार प्रकट हो, तब तो यह त्रिक उसे अत्यन्त लाभप्रद होगा। हनीमैन का कथन था कि **सलफर** के बाद **कैलकेरिया** दिया जा सकता है, **कैलकेरिया** के बाद **सलफ़र** नही देना चाहिये। होम्योपैथी मे ऐसी अनेक त्रिक-शृ खलाएँ (Series) हैं जिनका उल्लेख हमने **कैलि सल्फ** मे किया है।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—यह 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) दवा है, दीर्घकालिक है। ६, १२, ३०, २०० शक्ति साधारण तौर पर दी जाती है। हनीमैन का कथन है कि **कैलकेरिया** को **सलफर** तथा **नाइट्रिक ऐसिड** से पहले नहीं, बाद को देना चाहिये। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

कैलकेरिया फ्लोरिका (CALCAREA FLUORICA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) **गिल्टियो की गाठो को दूर करती है** (बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दृष्टि से प्रयोग)
(२) **ट्यूमर को ठीक करती है** (बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दृष्टि से प्रयोग)
(३) **मोतिया को ठीक करती है** (बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक प्रयोग)
(४) **टासिल, एडेनॉयड, हड्डी के बढने, गलने-सडने आदि को ठीक करती है**

(१) **गिल्टियो की गाठो को दूर करती है**—इस औषधि का विशेष-गुण यह है कि जहा-कही भी सख्ती होगी, कडापन होगा, गाठ बन जायगी, हड्डी उभर आयेगी—चाहे वह मासपेशी मे हो या अन्य कही भी हो, उसे आश्चर्यजनक तौर पर घोल देगी। स्त्रियो के स्तनो मे ग्रन्थिया पड जाती हैं, उन्हे ठीक कर देती है।

बायोकैमिक-दृष्टि से ३x, ६x, १२x मे तथा होम्योपैथिक-दृष्टि से ३०, २०० आदि शक्तिकृत मात्रा मे औषधि दी जाती है।

(२) **ट्यूमर को ठीक करती है**—यही कारण है कि अगर कही ट्यूमर हो, तो उसे भी यह दूर कर देगी। बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दोनो दृष्टियो से ट्यूमर मे इस औषधि का प्रयोग होता है। जब साइलीशिया से लाभ नही होता तब इससे लाभ हो जाता है।

(३) **मोतियाबिन्द को ठीक करती है**—मोतियाबिन्द (कैटरैक्ट) मे भीतर का लैन्स अपारदर्शी हो जाता है। यह भी एक तरह का लेन्स का कडा पड जाना है। अनेक बार इस औषधि से मोतियाबिन्द दूर हो जाता है। मोतिये मे भी इसका बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दोनो दृष्टियो से प्रयोग होता है।



डा० अर्नेस्ट ए० फैरिंगटन
(१८४७-१८८५)

(४) **टासिल, एडोनॉयड, हड्डी बढने, गलने-सड़ने आदि को ठीक करता है**—जब टासिल सख्त पड जायें, एडोनॉयड हो जाये, तब सख्ती को दूर करने की अपनी प्रकृति के कारण इन रोगो मे भी यह लाभकारी है। यह देखा गया है कि जब बैराइटा कार्ब टासिल और एडोनॉयड को ठीक नही कर पाता, तब यह औषधि काम कर दिखाती है। दातो मे अगर एनैमल की कमी हो तब यह दातो पर एनैमल चढा देती है। हड्डी के कई रोगो को यह ठीक करती है। बायोकैमिस्ट्री मे तो इसका प्रयोग होता ही है, होम्योपैथी मे भी इसका कम प्रयोग नही होता।

इसकी होम्योपैथिक-दृष्टि से 'परीक्षा' (Proving) डा० जे० वी० मैल ने १८७४ मे अपने तथा दूसरो पर की थी। ग्लैंड्स आदि के वढ जाने पर जैसे इससे लाभ होता है, वैसे किसी स्थान की हड्डी के वढ़ जाने या उसके गलने-सडने लगने पर भी इसका वायोकैमिस्ट तथा होम्योपैथ दोनो प्रयोग करते हैं। डा० फैरिंगटन लिखते हैं कि एक स्त्री जिसके नीचे के जवडे की हड्डी सड गई थी, अन्य किसी औषधि से ठीक न होने पर कैलकेरिया फ्लोर ६x के कुछ दिन लगातार लेते रहने से ठीक हो गई। डा० वेजलेहोफ्ट ने अस्थि-शोथ के एक रोगी को कैलकेरिया फ्लोर C M. की एक मात्रा से ठीक कर दिया। यह प्रयोग वायोकैमिक न होकर होम्योपैथिक था।

(५) **शक्ति तथा प्रकृति**—यह शुस्लर के १२ लवणो मे से एक है। वायोकैमिक-दृष्टि से उक्त-लक्षणो मे यह ३x, ६x, १२x मे दी जाती है। होम्योपैथिक मात्रा ३०, २०० आदि मे दी जाती है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

कैलकेरिया फ़ॉसफ़ोरिका (CALCAREA PHOS)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) वच्चो के सम-विकास की औषधि (वच्चो की सजीविनी-बूटी)
(२) कैलकेरिया कार्ब तथा कैलकेरिया फॉस की तुलना
(३) वढ़ती आयु के वच्चो की टाग आदि मे दर्द
(४) वच्चो को ऐंठन (Convulsions in Children)
(५) दु ख, दुखद-समाचार तथा निराश-प्रेम से रोग
(६) प्रथम मासिक-धर्म का सर्दी खा जाने से रुक जाना

(१) **वच्चो के सम-विकास की औषधि (वच्चो की सजीविनी)**—इस औषधि मे कैलसियम और फॉसफोरस का सम्मिश्रण है। दोषपूर्ण शारीरिक-विकास के लिये यह महौषध है। इसका वच्चो के लिये विशेष उपयोग होता है। जिन वच्चो के गिल्टिया वनने लगती हैं, दात ठीक समय पर नही निकलते, जिनकी अस्थियो का सम-विकास नही होता, रिकेट के शिकार है, अच्छा खाते-पीते हैं परन्तु भोजन शरीर को नही लगता, कद नही वढता, पेट बढ जाता है, सिर की खोपडी की हड्डिया पिलपिली रहती हैं मानो ज़रा-सी चोट से भुरभुरा जायेगी, हड्डिया जुड नही पाती, गर्दन इतनी पतली कि सिर को थमा नही पाती—ऐसे वच्चो के लिये यह औषधि सजीविनी-बूटी का काम करती है। उनके शरीर के अणुओ मे नव-शक्ति का सचार कर उन्हे स्वास्थ्य प्रदान करती हैं। अगर वच्चे की वढती के साथ शरीर का विकास भी नही होता, तो इस औषधि को स्मरण करना होगा। मानसिक-दृष्टि से भी वच्चे का विकास रुका रहता है। यह वच्चा

मोटा, थुलथुला, भारी भरकम, स्थूल तथा मांसल न होकर पतला-मुकटा होता है। उसकी छाती की हड्डियों को भी गिना जा सकता है।

(२) **कैलकेरिया कार्ब तथा कैलकेरिया फॉस की तुलना**—ऊपर हमने इस औषधि के जो लक्षण दिये हैं वे कैलकेरिया कार्ब में लगभग मिलते-जुलते हैं, इसलिये इन दोनों का भेद समझ लेना जरूरी है। कैलकेरिया फॉस बायोकैमिक औषधि है। यह शुस्लर की १२ टिश्यु रेमेडीज में से एक है। होम्योपैथ और बायोकैमिस्ट अपने-अपने सिद्धान्त के अनुसार इसका प्रयोग करते हैं। बायोकैमिस्ट्री के अनुसार कैलकेरिया फॉस की शरीर में कमी के कारण ऊपर कहे गये रक्तहीनता तथा कमजोरी के लक्षण प्रकट होते हैं, और इसलिये वे ३x, ६x और १२x में इसका प्रयोग करते हैं। होम्योपैथ इसका प्रयोग अपनी दृष्टि से करते हैं। इस औषधि की 'परीक्षा' (Proving) डा० कौन्स्टेन्टाइन हैरिंग ने की थी। हनीमैन ने कैलकेरिया कार्ब की प्रसिद्धि की, शुस्लर ने कैलकेरिया फॉस की प्रसिद्धि की, और डा० हैरिंग ने कैलकेरिया फॉस की अपने ऊपर होम्योपैथिक-परीक्षा की। इन दोनों औषधियों का तुलनात्मक विवेचन निम्न है

कैलकेरिया कार्ब—सुन्दर, मोटे, थुलथुले, मांसल बच्चे जिनकी सिर की तथा अन्य अंगों की अस्थियों का विकास क्षीण तथा अनियमित होता है। बालक के सिर पर बेहद पसीना आता है। यह बालक रिकेट की बीमारी और दांतों के निकलने में देर का शिकार होता है।

कैलकेरिया फॉस—पतला, दुबला, अच्छा खाते-पीते हुए भी क्षीण-शरीर, इतना पतला कि छाती की हड्डियां भी गिनी जा सकें, इसके साथ सिर की तथा अन्य अंगों की अस्थियों का विकास क्षीण तथा अनियमित होता है। बालक के सिर पर उतना पसीना नहीं आता जितना कैलकेरिया कार्ब के रोगी के सिर पर। यह बालक भी रिकेट की बीमारी और दांतों के निकलने में देर का शिकार होता है।

(३) **बढ़ती हुई आयु के बच्चों की टांग आदि में दर्द**—बच्चे जब आयु में बढ़ने लगते हैं तब प्रायः उनकी टांग या किसी अन्य अस्थि में दर्द हुआ करता है। इसे यह शान्त करता है।

(४) **बच्चों को ऐंठन (Convulsions)**—बच्चों को अगर ऐंठन पड़ने लगें, तब इस से लाभ होता है, परन्तु औषधि ऐंठन शान्त हो चुकने के बाद देनी चाहिये।

(५) **दुःख, दुखद समाचार या निराश-प्रेम से रोग**—किसी दुःख या दुखद समाचार के कारण या प्रेम में निराशा के कारण कोई रोग उत्पन्न हो जाय, तब भी इस औषधि को स्मरण रखना चाहिये।

(६) **प्रथम मासिक-धर्म का सर्दी लग जाने के कारण रुक जाना**—युवतियों का कैलकेरिया फॉस से अधिक अच्छा कोई मित्र नहीं है। जब नवयुवती यौवन में

पदार्पण करने लगती है, तव अगर उसका मासिक-धर्म ठीक समय पर शुरु नही होता, तो इस औषधि से सब ठीक हो जाता है। कई लडकिया प्रथम मासिक-धर्म मे ठड खा जाती हैं जिससे उन्हे रज काल मे पीडा हुआ करती है। अगर इस हालत को ठीक समय पर न सुधार लिया जाय, तो कष्ट उम्र भर चिपटा रहता है। इस औषधि से यह कष्ट शुरु मे ही ठीक हो जाता है। कई माताए दो-तीन ऐसे वच्चे जन चुकी होती हैं जिनका शरीर **कैलकेरिया फॉस** का शरीर होता है। अगर ऐसी माता को गर्भ-काल मे **कैलकेरिया फॉस** दिया जाय, तो उसके अगले वच्चे इन रोगो से मुक्त रहते हैं।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—वायोकैमिक १ से ३ ट्रिच्यूरेशन, होम्योपैथिक उच्च-शक्ति अधिक लाभप्रद है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

केलकेरिया सल्फ़्यूरिका (CALCAREA SULPHURICA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **शरीर मे कहीं भी पस बन जाना**	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) **जहा कैलकेरिया और सलफर दोनो के लक्षण मिलते हों वहां यह दी जाती है**	*ठडे पानी मे स्नान से कमी
	*खुली हवा से रोग मे कमी
(३) **कैलकेरिया सल्फ और हिपर सल्फ की एक-दूसरे के साथ तुलना**	*फोडे-फुन्सी पर सेक से कमी
	*शरीर पर कपडा न चाहना
(४) **डा० नैशका ब्राइट्स डिजीज मे अनुभव**	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) **डा० कैन्ट का वायोकैमिक औषधियो के विषय मे अनुभव—उच्च-शक्ति लाभप्रद**	*स्पर्श न सह सकना
	*नमीदार ठंडी हवा से वृद्धि

(१) **शरीर मे कहीं भी पस बन जाना**—शरीर के किसी भाग मे भी पस वन जाना इस औषधि का मुख्य निर्देशक-लक्षण है। जो घाव फूट जाय, उसमे से लगातार पीला पस निकलता रहे, उसके भरने मे देर लगे, तव इस औषधि से लाभ होगा। इस दृष्टि से इसके लक्षण डा० कैन्ट के अनुसार **पाइरोजेन** से मिलते-जुलते हैं। डा० क्लार्क का कहना है कि जव पस अपना मार्ग वनाकर निकलने लगे तव इसका क्षेत्र आता है।

(१) **जहा कैलकेरिया और सलफर दोनो** के लक्षण मिलते हो—यह औषधि **कैलकेरिया** तथा **सलफर** के मिलने से वनी है, इसलिये जहा **कैलकेरिया** तथा **सलफर** दोनो के लक्षण मिले-जुले पाये जाये, और चिकित्सक निर्णय न कर सके कि दोनो मे से कौन-सी औषधि निर्दिष्ट है, वहा इसका प्रयोग किया जाता है। **कैलकेरिया सल्फ** शुस्लर की १२ टिश्यू रेमेडीज़ मे से एक है, परन्तु डा० क्लार्क के अनुसार शुस्लर ने आगे चलकर इसे अपनी १२ दवाइयो मे से इस आधार पर

निकाल दिया था कि शरीर के टिश्यू मे यह क्षार नही पाया जाता। इसलिये जिन रोगो मे वह कैलकेरिया सल्फ देते थे उनमे साइलीशिया तथा नैट्रम फॉस देने लगे। परन्तु होम्योपैथी मे इस औषधि का अपना स्थान है, और जैसा ऊपर कहा गया है, जब पस सूकने मे न आता हो, तब शक्तिकृत कैलकेरिया सल्फ लाभ करता है।

(३) **कैलकेरिया सल्फ और हिपर सल्फ की तुलना**—यह औषधि हिपर सल्फ से बहुत मिलती-जुलती है। कैलकेरिया सल्फ और हिपर सल्फ दोनो भिन्न-भिन्न प्रकार के कैलकेरिया के सल्फर के साथ मिलाने से बने है, इसलिये इनकी क्रिया लगभग समान है। भेद यह है कि फोडा पका कर फोडने मे जिस प्रकार हिपर सल्फ उपयोगी है, उस प्रकार कैलकेरिया सल्फ नही, किन्तु फोडा जब फूट जाता है, तब उसमे पस की अधिकता और पस रोकने के लिये जिस प्रकार कैलकेरिया सल्फ उपयोगी है उस प्रकार हिपर सल्फ नही। इसलिये हिपर मे जब फोडा फूट जाय, उसके बाद कैलकेरिया सल्फ लाभ करता है। ट्युबर्कुलर फोडो मे भी कैलकेरिया सल्फ लाभ देता है। दोनो स्पर्श तथा हवा को सहन नही करते, परन्तु हिपर खुश्क, ठडी हवा को बर्दाश्त नही करता, नमीदार हवा चाहता है, कैलकेरिया सल्फ भी खुश्क, ठडी हवा बर्दाश्त नही करता, परन्तु नमीदार हवा भी नही चाहता। हिपर के पाव मे ठडा पसीना आता है, कैलकेरिया सल्फ के पाव सल्फर की तरह जलते है। हिपर यद्यपि अपने घाव पर स्पर्श की असहनशीलता के कारण पावो पर कपडा बर्दाश्त नही कर सकता, तो भी शरीर को ढके रखना चाहता है, परन्तु कैलकेरिया सल्फ तो कैम्फर की तरह शरीर पर कपडा बर्दाश्त ही नही कर सकता, उसे उतार फेकता है। हिपर के दर्द भी नाइट्रिक ऐसिड की तरह फास की तरह चुभनेवाले दर्द होते है, कैलकेरिया सल्फ मे ऐसा कुछ नही है।

(४) **डा० नैश का ब्राइट्स डिजीज मे अनुभव**—डा० नैश लिखते हैं कि उनके पास एक रोगी को लाया गया जिसके गुर्दे के प्रदेश मे दिन-रात दर्द रहता था। उसके पेशाब मे पस की बहुत-सी मात्रा निकली और यह पस कई दिन तक जारी रहा। डाक्टरो ने निर्णय दिया कि यह ब्राइट्स डिजीज है। डा० नैश ने पस निकलने के लक्षण पर उसे कैलकेरिया सल्फ दिया और रोगी को लाभ हुआ। अगर शरीर के किसी भाग मे से पस बहता हो, पीला, थक्केदार, ठीक न होता हो—चाहे वह प्रदर हो, मूत्राशय हो, तब इस औषधि से अवश्य लाभ होगा।

(५) **डा० कैन्ट का बायोकैमिक औषधियो के विषय मे अनुभव—उच्च-शक्ति लाभप्रद है**—डा० कैन्ट का कथन है कि देर तक वे बायोकैमिक का १२ शक्ति मे प्रयोग करते रहे, फिर ३० शक्ति मे और बाद को २०० शक्ति मे प्रयोग करते रहे। उनके कथन है कि ये औषधया २०० शक्ति से ऊपर भी अच्छा काम

करती हैं। उनका यह भी कथन है कि यत्नपूर्वक चुनी हुई दवाएँ, अगर उनका क्षेत्र गहरा नही है, तो वे थोडी देर ही काम करती हैं। रोग को जड से निर्मूल करने के लिये गहरा तथा दीर्घकालिक कार्य करनेवाली औषधियो का प्रयोग करना चाहिए। ऐसी औषधिया ऐन्टी-सोरिक, ऐन्टी-साइकोटिक तथा ऐन्टी-सिफि-लिटिक हैं। चिकित्सक को रोग को देखकर यह निर्णय करना होता है कि इन तीनो प्रकार मे से किस औषधि का निर्वाचन करे। प्राय अनेक रोगी सोरा-दोष से पीडित होते हैं इसलिये ऐन्टी-सोरिक दवाओ का अधिक प्रयोग करना पडता है। **सलफर, सोरिनम, ट्यूबर्क्युलीनम** आदि ऐन्टी-सोरिक ही दवायें हैं। **कैलकेरिया सल्फ** की भी इन्ही ऐन्टी-सोरिक दवाओ मे गणना है।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३x, ६x, १२x, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

कैम्फोरा—कपूर, (CAMPHORA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **हैज़े की प्रथम-अवस्था मे**	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) **त्वचा की अत्यन्त शीतावस्था, परन्तु रोगी कपडा ओढ़ना पसन्द नहीं करता**	***स्राव खुल कर जाने से कमी** ***गर्मी से रोगी को अच्छा लगना**
(३) **त्वचा की शीतावस्था मे साथ ही गर्मी के दौर पडते हैं**	
(४) **रजोरोध के समय ठडा शरीर परन्तु फिर भी कपडा सहन न कर सकना**	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) ***ठडी हवा मे रोग का बढ़ना**
(५) **मूत्र की जलन मे कैम्फर और कैन्थरिस**	***हरकत से रोग का बढना**
(६) **जीवनी-शक्ति की पतनावस्था**	***रात को रोग का बढ जाना**

(१) **हैज़े की प्रथम-अवस्था मे**—१८३१ मे, जब हनीमैन ७६ वर्ष के थे, युरोप मे हैज़े का प्रकोप हुआ। तबतक हनीमैन के सामने हैज़े का कोई मरीज़ नही आया था। रोग के लक्षणो के आधार पर उन्होंने कहा कि इस रोग के लक्षण तीन औषधियो मे पाये जाते हैं—**कैम्फर, क्यूप्रम** तथा **वेरेट्रम ऐल्बम**। उनका कथन था कि हैज़े के लक्षण जब पहले-पहल प्रकट हो—कय-दस्त आदि—तब सबसे प्रथम औषधि **कैम्फर** है। इसका प्रभाव बहुत क्षणिक होता है, इसलिये शुरु-शुरु मे हर पाच मिनट के अन्तर से स्पिरिट ऑफ कैम्फर की कुछ बूद तबतक देते रहना चाहिये जबतक शरीर मे गर्मी न आ जाय। कैम्फर के अतिरिक्त हैज़े की अन्य दो दवाएँ हैं **क्यूप्रम** और **वेरेट्रम ऐल्बम**। तीनो के लक्षण निम्न है

हैज़े मे कैम्फ़र—उक्त तीनो दवाओ मे से सबसे अधिक शीत **कैम्फर** के रोगी

को लगता है। वह इतना ठडा होता है मानो मरा पडा है। क्यूप्रम और वेरेट्रम मे रोगी शरीर को ढकना पसन्द करता है, कैम्फर का रोगी, यद्यपि उसका शरीर ठडा होता है, तो भी शरीर पर कपडा बर्दाश्त नही कर सकता, उसे उतार फेंकता है। वह ठडा शरीर होने पर भी दरवाज़े-खिडकिया खुली रखना चाहता है। परन्तु इस स्थल पर एक बात ध्यान रखने की है। कैम्फर के रोगी को बीच-बीच मे ऐंठन (Convulsions) होती हैं जिनके कारण उसे दर्द होता है। जब ये ऐंठनें होती हैं तब वह कपडा ओढना चाहता है, दरवाजे-खिडकिया तब बन्द करवाना चाहता है। कैम्फर मे ज्वर नही आता। दर्द मे तो वह कपडा ओढना चाहता है, परन्तु कय और दस्त मे शरीर ठडा पड जाने पर भी कपडा नही चाहता, ठडी हवा चाहता है। कैम्फर मे प्राय खुश्क हैज़ा भी होता है, शरीर ठडा, बरफ के समान, रग नीला पड जाता है, न कय न दस्त, अगर कय या दस्त आयें भी तो बहुत थोडे। कैम्फर का विशिष्ट-लक्षण यह है कि वह ठडा, नीला, खुश्क पड जाता है, और त्वचा की इस ठडक मे भी कपडा नहीं ले सकता।

हैज़े मे क्यूप्रम—रोगी कैम्फर मे 'शीत-प्रधान' होता है, क्यूप्रम के हैज़े मे रोगी 'ऐंठन-प्रधान' (Spasmodic case) होता है। हैज़े के अन्य लक्षण तो इसमे होते हैं, परन्तु सब मे प्रधान-लक्षण, जिसके सामने सब लक्षण पीछे पड जाते हैं, इसकी 'ऐंठन' है। रोगी इन ऐंठनो से चिल्लाने लगता है। ऐंठनो की प्रधानता होने पर क्यूप्रम देना चाहिये।

हैजे मे वेरेट्रम ऐल्बम—शरीर के स्रावो की प्रधानता का लक्षण **वेरेट्रम** मे है। बडे-बडे दस्त, भारी पसीना, भारी कय। इस रोगी को गर्म बोतल, गर्म पानी रुचिकर होता है। सक्षेप मे, शीत तथा खुश्की की प्रधानता मे **कैम्फर**, ऐंठनो की प्रधानता मे **क्यूप्रम**, और पसीना, कय, दस्त की प्रधानता मे **वेरेट्रम** देना उचित है। इन तीन दवाओ को लेकर कोई भी व्यक्ति हैज़े के क्षेत्र मे निडर जा सकता है। **क्यूप्रम** हैज़े के लिये 'प्रतिरोधक' (Prophylactic against cholera) भी है।

अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि हैज़े के रोग मे ऐलोपैथिक इलाज की अपेक्षा होम्योपैथिक इलाज अधिक सफल हुआ है।

(२) **त्वचा की अत्यन्त शीत-अवस्था, परन्तु रोगी कपडा ओढना पसन्द नहीं करता**—इस औषधि का एक अद्भुत-लक्षण यह है कि सारा शरीर बर्फ की तरह ठडा होता है, परन्तु फिर भी रोगी किसी प्रकार का कपडा शरीर पर बर्दाश्त नही कर सकता, कपडा उतार फेंकता है। विचित्र बात यह है कि कमरा ठडा भी हो, त्वचा भी ठडी हो, तो भी वह बदन को ढक नही सकता। किसी बीमारी मे भी यह लक्षण पाया जाय, कैम्फर रोग को दूर कर देगा।

(३) **त्वचा की शीतावस्था मे साथ ही गर्मी के दौर पडते हैं**—कैम्फर का

रोगी त्वचा की शीत-अवस्था होने पर भी कपडा परे फेंक देता है, परन्तु जव इस प्रकार उसका शरीर ठडा हो रहा होता है, तो साथ ही उसे गर्मी का दौर भी पड जाता है, और इससे पहले कि वह दरवाज़े और खिडकिया खोलने को कहे, वह इस गर्मी के दौर के कारण उन्हें वन्द कर देने और शरीर पर कपडा ओढाने को कहने लगता है। यह अवस्था भी शीघ्र समाप्त हो जाती है और फिर वह शीत-अवस्था मे आ जाता है। **कैम्फर** की शीत-अवस्था की तरह **सिकेल कोर** मे भी शीत-अवस्था पायी जाती है, उसकी त्वचा भी ठडी हो जाती, वह भी **कैम्फर** की तरह कपडा उतार फेंकता है, सर्द-त्वचा पर कपडा न ओढना अद्भुत-लक्षण ही तो है, परन्तु उसमे **कैम्फर** की तरह वीच-वीच मे गर्मी के दौर नही पडते।

हनीमैन का कथन है कि **कैम्फर** की क्रिया को समझना वडी उलझन मे डाल देता है। प्रत्येक औषधि की 'प्राथमिक-क्रिया' (Primary action) होती है और वाद को उससे उल्टी प्रतिकारी-क्रिया होती है जिसे 'प्रतिक्रिया' (Secondary action or Reaction) कहा जाता है। यह प्रतिक्रिया जीवनी-शक्ति द्वारा होती है और प्राथमिक-क्रिया से उल्टी होती है। यही कारण है कि प्रत्येक औषधि के प्राथमिक तथा प्रतिक्रियात्मक दो परस्पर-विरुद्ध परिणाम देखे जाते हैं। **कैम्फर** मे 'प्राथमिक-क्रिया' (Primary action) तथा 'प्रतिक्रिया' (Secondary action) इतनी जल्दी-जल्दी होते हैं कि वे परस्पर मिल जाते हैं, उन्हें अलग-अलग समझना कठिन हो जाता है। 'प्राथमिक-क्रिया' तो वाहर से आती है, औषधि से आती है, 'प्रतिक्रिया' भीतर से आती है, जीवनी-शक्ति से आती है। जव ये दोनो जल्दी-जल्दी होने लगते है, तव समझ नही आता कि कौन-सा लक्षण 'प्राथमिक-क्रिया' का, औषधि का है, कौन-सा 'प्रतिक्रिया' का, जीवनी-शक्ति का है। यही कारण है कि **कैम्फर** मे ठड भी मालूम होती है, गर्मी भी मालूम होती है, ठड लगते-लगते गर्मी लगने लगती है, गर्मी लगते-लगते ठड लगने लगती है। यह समझना कठिन हो जाता है कि कौन-सी क्रिया **कैम्फर** की है, कौन-सी जीवनी-शक्ति की। **कैम्फर** मे ऐसी उलझन इसीलिये होती है क्योंकि इसमे 'प्राथमिक-क्रिया' और 'प्रतिक्रिया' झट-झट होती है, जल्दी-जल्दी होती है, और इसीलिये हनीमैन का कथन है कि हैज़ा आदि रोग मे पाच-पाच मिनट वाद औषधि देते रहना चाहिये। हमने जो कहा कि **कैम्फर** मे त्वचा की शीतावस्था के साथ ही गर्मी के दौर पडते हैं इसका यही अर्थ है कि इस औषधि मे 'प्राथमिक-क्रिया' और 'प्रतिक्रिया' इतनी जल्दी-जल्दी होती है कि आपस मे घुल-मिल जाने के कारण चिकित्सक को उलझन मे डाल देती है।

(४) **रजोरोध के समय ठडा शरीर परन्तु फिर भी कपड़ा सहन न करना**—स्त्रियो को जव मासिक-धर्म वन्द होने लगता है, तव उन्हें गर्मी की तरेरें आया करती हैं। इन तरेगे के साथ मुह पर पसीना आ जाता है। वन्द कमरे मे

उन्हें कष्ट होता है, कमरा खुला, हवादार पसन्द करती है। उन्हें जब शरीर ठंडा अनुभव हो, तब शरीर को गर्म करने के लिये वे कपड़ा नहीं ओढ़ सकतीं। ऐसी अवस्था में यह औषधि लाभप्रद है।

(५) **मूत्र की जलन में कैम्फर और कैन्थरिस**—दोनों औषधियों में रोगी कमोड पर बैठते हुए पेशाब के लिये जोर लगाता है, पर उतरता नहीं। मूत्राशय के मुख में ऐंठन होती है, परन्तु मूत्राशय की असमर्थता के कारण मूत्र नहीं आता। बूंद-बूंद मूत्र उतरता है, उसमें रुधिर का सम्मिश्रण होता है। इस अवस्था में लक्षणानुसार इन दोनों में से किसी औषधि को चुनना होगा।

(६) **जीवनी-शक्ति की पतनावस्था**—जब जीवनी-शक्ति की पतनावस्था आ जाती है, शरीर बिल्कुल ठंडा पड़ जाता है, मनुष्य मरणासन्न हो जाता है, नाड़ी अत्यन्त धीमी और हल्की पड़ जाती है, शरीर का तापमान अत्यन्त नीचे चला जाता है, लो ब्लड प्रेशर हो जाता है, तब कैम्फर १x की पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद तीन मात्राएं देने से रोगी सुधर जाता है। ऐसी अवस्था प्राय: ऑपरेशन के बाद या हैज़े की हालत में हो जाया करती है और इस अवस्था में मृत्यु के मुख से रोगी को निकाल लाने में यह औषधि नाम पा चुकी है।

(७) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i जुकाम, इन्फ्लुएन्ज़ा में लाभप्रद है।

ii ठंडे, चिपचिपे, कमजोर करनेवाले पसीने में लाभ देती है।

iii हृदय में छाती के ऊपर के हिस्से में घबराहट और कठिन सांस में लाभ करती है।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—स्पिरिट ऑफ़ कैम्फर को सूंघना या टिंचर के १ से ५ बूंद बार-बार लेने से लाभ होता है। इसे चीनी, बताशे में लेना ठीक रहता है। ३० आदि उच्च शक्ति भी लाभ करती है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

कैनेबिस इंडिका—भांग, (CANNABIS INDICA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) देश तथा काल का अतिरंजित दीखना	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) मानसिक-भ्रम जीवन पर छा जाता है	*ठंडक, खुली हवा, आराम
(३) रोगी वाक्य समाप्त नहीं कर सकता है	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) खोपडी की हड्डी एक बार खुलती और एक बार बन्द होती मालूम देती है	*प्रातःकाल रोग मे वृद्धि *तम्बाकू, शराब से वृद्धि
(५) सुजाक की प्रथमावस्था मे लाभदायक है	*पेशाब करने के समय कष्ट

(१) **देश तथा काल का अतिरंजित दीखना**—कैनेबिस इंडिका भांग का नाम है। इस देश मे भांग का नशा करनेवालो की कमी नही है। इसका मन पर असीम प्रभाव है। रोगी को समीप की चीज़ मीलो दूर दीखती है, हाल ही का किया हुआ कार्य न-जाने कब का किया हुआ प्रतीत होता है। मकान मे बैठा होगा तो कहेगा आसमान पर बैठा हू, अभी भोजन खाकर चुका होगा तो कहेगा भोजन किये महीनो हो गये। एक गज़ एक मील और एक मिनट एक दिन महसूस करता है। देश तथा काल के विषय मे उसकी धारणा अतिरंजित तथा भ्रममूलक हो जाती है।

(२) **मानसिक-भ्रम जीवन पर छा जाता है**—देश और काल के विषय मे तो उसका भ्रम विशेष रूप से होता है, परन्तु इसके अतिरिक्त भी उसका सारा जीवन भ्रम से छा जाता है। वह अपने को राजा, मसीहा या कोई महापुरुष समझता है। वह बाकायदा सोच नही सकता। कभी कहता है मैं मर गया हू, मुझे लोग जलाने के लिये ले जा रहे हैं, कभी कहता है मैं उड रहा हू। एक लडकी जो मोटर चलाना तक नही जानती थी, मोटर को देखकर अपने साथियो से कहती थी कि यह मोटर मेरी है, आओ तुम्हें सैर करा लाऊ। बाज़ार मे जाती थी, तो उसे प्रतीत होता था कि गैंडा उसका पीछा कर रहा है। वह इस औषधि से ठीक हो गई। उसे अपने हाथ-पैर अत्यन्त लम्बे प्रतीत होते हैं, अपनी खूबसूरती पर मोहित रहती है। अपनी चेतना को दो रूपो मे देखने लगती है। अपने विषय मे कहती है कि मैं अपने को आसमान मे उडते, ऐंजिन की तरह चलते देख रही हू। चित्त की प्रकृति ऐसी हो जाती है कि हसने का ख्याल आ जाय तो हसती रहती है, रोने का ख्याल आ जाय तो रोती रहती है। जो विचार उसे पकड ले वह उसे छोडता नही।

(३) **रोगी वाक्य समाप्त नहीं कर सकता**—डा० नैश एक स्त्री का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि उसे जलोदर था, हृदय की बीमारी भी थी। जब यह ठीक हुआ तो उसका बोलना बन्द हो गया। वह एक वाक्य शुरु करती थी, परन्तु आधा वाक्य कह कर भूल जाती थी कि वह क्या कहना चाहती थी। इस असमर्थता

के कारण वह चिल्लाने लगती थी। उसे इस औषधि को लगातार कई दिन तक दिया गया, वह ठीक हो गई।

(४) **खोपडी की हड्डी एक बार खुलती और एक बार बन्द होती मालूम होती है**—रोगी को ऐसा महसूस होता है कि उसकी खोपडी की हड्डी एक बार खुलती है, एक बार बन्द हो जाती है। इस अनुभव के बाद सिर के दाई तरफ़ दर्द होने लगता है।

(५) **सुजाक की प्रथम-अवस्था मे लाभदायक है**—इस औषधि से सुज़ाक के रोगी को लाभ होता है। सुज़ाक मे जब लिंग अपने-आप उत्तेजित हो जाय, और रोगी को अत्यन्त दर्द हो, तो इससे फायदा होता है। सुज़ाक की प्रथमावस्था मे रोगी का इलाज इससे या **कैनेबिस सैटाइवा** से शुरु किया जाता है। पेशाब मे पीला पस आता है, पेशाब करने के बाद बूद-बूद टपकता है। पेशाब करने से पूर्व, करते समय, और पेशाब कर चुकने पर मूत्र-प्रणालिका मे जलन होती है। गुर्दे मे भी हल्का-हल्का दर्द होता है। इन लक्षणो मे इससे लाभ होता है।

(६) **शक्ति**—मूल अर्क, ६, ३०, २००

कैनेबिस सैटाइवा—गांजा, (CANNABIS SATIVA)

भाग, गाजा, चरस और हशीश—ये चार नशे के पदार्थ एक ही प्रकार के पौधे से बनते हैं। भाग का पौधा भारत तथा अरब मे होता है। पौधे की पत्तियो से भाग बनती है, पौधे के फूलो से गाजा बनता है, पौधे का गोद-सरीखा जो रस चूता है उससे चरस बनता है। चरस के साथ अफीम आदि अन्य नशे के पदार्थ मिलाने मे हशीश बनता है।

कैनेबिस सैटाइवा के भी प्राय वे ही लक्षण हैं जो **कैनेबिस इडिका** के हैं। **कैनेबिस इडिका** भारत मे होता है, **सैटाइवा** युरोप तथा अमरीका मे होती है। दोनो के लक्षण प्राय एक-से हैं। उसी प्रकार का मानसिक-भ्रम, उसी प्रकार का खोपडी का खुलना और बन्द होना, उसी प्रकार का सुजाक पर असर इस मे भी पाया जाता है। सुजाक पर इस औषधि का **इडिका** की अपेक्षा कुछ ज्यादा प्रभाव है। इसका मुख्य-लक्षण यह है कि मूत्र-प्रणाली अत्यन्त स्पर्शासहिष्णु हो जाती है, कपडे का स्पर्श भी सहन नही कर सकती, रोगी स्वस्थ मनुष्य की तरह नही चल सकता। क्योकि मूत्र-नाली की शोथ मूत्राशय तक पहुच चुकी होती है, इसलिये टागें चौडी करके चलता है, बार-बार पेशाब जाने की हाजत होती है, पेशाब मे खून जाता है। इसीलिये गोनोरिया (सुज़ाक) के इलाज के लिये यह सर्वोत्कृष्ट औषधि है, खासकर शोथ की अवस्था मे जो सुज़ाक की प्रथम अवस्था है। इन्द्रिय सूज जाती है, उसमे से मोटा, पीला स्राव जाता है, पेशाब जाना कठिन हो जाता है। ऐसे सुज़ाक का इलाज इसी दवा

से शुरु किया जाता है जबतक कि कोई अन्य-औषधि स्पष्ट तौर पर निर्दिष्ट न हो।

कैन्थरिस (CANTHARIS)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मूत्र-मार्ग की शोथ तथा जलन (जलन मे रस टॉक्स, एपिस, आर्सेनिक की कैन्थरिस से तुलना)
(२) अन्य रोगो के साथ मूत्र-मार्ग की जलन
(३) जननेन्द्रिय-सबधी निर्लज्जता की बातें करना
(४) जहरीले कीटो के जलन के विष की औषधि है, आग से जलने की औषधि
(५) कैन्थरिस तुरत प्रभाव करता है
(६) हनीमैन का स्पेसिफिक औषधियों के विषय मे मत

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*गर्मी से रोग मे कमी
*मलने से रोग मे कमी
*लेटने से आराम आना

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*पेशाब करते समय कष्ट
*ठडा पानी पीने से वृद्धि
*जल का कल-कल शब्द सुनने से रोग मे वृद्धि
*छूने से रोग मे वृद्धि

(१) मूत्र-मार्ग की शोथ तथा जलन (रस टॉक्स, एपिस, आर्सेनिक की कैन्थरिस से तुलना)—इस औषधि का सबसे प्रधान लक्षण मूत्र-मार्ग की जलन है। दूसरी कोई औषधि ऐसी नही है, जो मूत्र-सस्थान मे इतने उग्र रूप मे और इतनी जल्दी जलन उत्पन्न कर दे, और इसीलिये इतनी जल्दी ऐसे रोग को शान्त कर दे। मूत्राशय और प्रजनन के अग जलने लगते हैं, उनमे सूजन आ जाती है, और व्यक्ति सेक्स-सबधी विचारों से परेशान रहता है। मूत्र-सस्थान की इसी जलन के कारण मूत्राशय मे दर्द होता है, बार-बार पेशाब आता है और मूत्राशय मे असहनीय मरोड होते हैं। मूत्राशय की गर्दन मे काटनेवाला दर्द होता है, मूत्र जाने के पहले, बीच मे, और अन्त मे मूत्र-प्रणाली मे काटनेवाला दर्द होता है, मूत्र बूद-बूद करके आता है। इस औषधि का सपूर्ण बल मूत्र-सस्थान के ऊपर है। इस जलन मे **रस टॉक्स, एपिस** तथा **आर्सेनिक** से इस औषधि की तुलना कर लेना उचित है

जलन मे कैन्थरिस तथा रस टॉक्स की तुलना—**रस टॉक्स** प्राय सुर्खवादा (Erysipelas—त्वचा तथा त्वचा के नीचे के तन्तुओ का शोथ जिस मे ज्वर आ जाता है) मे दिया जाता है। इस मे चेहरा, नाक आदि सूज जाते हैं, जलन होती है। अगर रोग उग्र रूप धारण कर ले, तो **कैन्थरिस** ज्यादा उपयुक्त है।

रस टॉक्स मे छाले पड जाते हैं, उनमे जलन होती है, परन्तु अगर सुर्खबादा तेज़ी से बढने लगे, त्वचा का रग काला पडने लगे, छालो को छूने से वे आग की तरह जलने लगें, तब कैन्थरिस देना ठीक रहता है। **कैन्थरिस, रस टॉक्स** से अधिक उग्र है, और इसमे रोग तेज़ी से बढता है।

जलन मे कैन्थरिस तथा एपिस की तुलना—सुर्खबादा की जलन मे **एपिस** भी दी जा सकती है, एपिस मे भी मूत्राशय मे जलन होती है, परन्तु **एपिस** मे जलन की अपेक्षा शोथ अधिक होता है, कैन्थरिस मे जलन अधिक होती है। **एपिस** मे रोगी इतना बेचैन, परेशान नही होता, कैन्थरिस मे तो वह अत्यन्त उद्विग्न, परेशान, दु खी होता है, और कभी-कभी चिल्लाने लगता है, एक जगह टिक नही सकता, क्योकि मनुष्य आराम से एक जगह तब बैठ सकता है जब बेचैनी न हो।

जलन मे कैन्थरिस तथा आर्सेनिक की तुलना—इन दोनो की जलन, इनके मानसिक-लक्षण एक-से है, परन्तु **आर्सेनिक** मे जलन के साथ प्यास बहुत होती है। रोगी थोडी-थोडी देर मे थोडा-थोडा पानी पीता है।

(२) अन्य रोगों के साथ मूत्र-मार्ग की जलन—मूत्र-मार्ग की जलन **कैन्थरिस** का 'व्यापक-लक्षण' है, इसलिये जिस किसी अन्य रोग के साथ यह लक्षण पाया जाय उसमे इस औषधि से आराम होता है। इस सिलसिले मे डा० नैश का अनुभव उल्लेख योग्य है। एक स्त्री देर से ब्रोकाइटिस से पीडित थी। उसका श्लेष्मा इतना अधिक निकलता था, और उस श्लेष्मा की शक्ल इस प्रकार तारदार और लेसदार थी कि उसे देखकर **कैलि बाईक्रोम** देने की ही सूझती थी, परन्तु इससे उसे कुछ लाभ न हुआ। एक दिन उस स्त्री ने कहा कि उसे पेशाब बडा लग कर आता है, जलन के साथ आता है। इस लक्षण पर उसे **कैन्थरिस** दिया गया और ब्रोकाइटिस ठीक हो गया।

(३) जननेन्द्रिय-सम्बन्धी निर्लज्जता की बातें करना—मूत्र-मार्ग की जलन का एक स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि रोगी सेक्स सबधी विचारो से परेशान होने लगता है। **हायोसाइमस, फॉसफोरस** और **सिकेल** मे जैसे सेक्स के विचार व्यक्ति को परेशान करते है, **कैन्थरिस** के रोगी को भी वैसे ही विचार परेशान करते हैं। इसका कारण मूत्र-सस्थान की जलन ही है। कभी-कभी रोगी प्रेम के गन्दे गीत गाने लगता है, और जननेन्द्रिय-सबधी ऐसी बातें बकने लगता है जैसी स्वस्थ व्यक्ति कभी अपने मुह मे नही निकालता। इस सब का कारण मूत्र-सस्थान की गडबड है। जब किसी लडकी को ठड लगने से मासिक-धर्म की गडबड हो जाती है, अगर उसकी माता ने पहले से सावधानीपूर्वक उसे शरीर के इन परिवर्तनो के विषय मे सचेत नही कर दिया, तो कभी-कभी मन की ऐसी विक्षिप्त अवस्था हो जाती है जो इस दवा से दूर हो जाती है।

(४) **जहरीले कीटो के जलन के विष तथा आग से जलने की औषधि**—कभी-कभी कोई जहरीला कीडा काट जाता है जिसका विप त्वचा पर अत्यन्त जलन पैदा करता है। यह जलन **कैन्थरिस** से एकदम दूर हो जाती है। इसके अतिरिक्त आग की जलन को दूर करने की यह अचूक दवा है। डा० हैरिंग का कहना था कि अगर कोई होम्योपैथी के सिद्धान्त की सत्यता को जानना चाहे तो उसके लिये **कैन्थरिस** वडा अच्छा सुबूत है। एलोपैथी मे **कैन्थरिस** छाले डालने के लिये त्वचा पर लगाया जाता है। सिर के बाल बढाने के लिये जो तेल बनाये जाते हैं उनमे किसी-न-किसी रूप मे **कैन्थरिस** अवश्य डाला जाता है ताकि वह खोपडी की त्वचा को उत्तेजित करे। डा० हेरिंग का कहना है कि अगर कोई होम्योपैथिक **कैन्थरिस** का प्रभाव जानना चाहे, तो पहले शुद्ध गर्म जल मे **कैन्थरिस** डाल कर रख ले, और फिर अपनी अगुलिया जला कर उस जल मे डुवो दे। वह देखेगा की एक-दो मिनट मे ही जलन दूर हो जायगी और छाले भी नहीं पडेंगे। **कैन्थरिस** के बाहर के प्रयोग के साथ भीतर भी ३० या २०० शक्ति की कुछ मात्राएँ दे देनी चाहियें। जलन मे **अर्टिका उरेन्स** का भी अध्ययन करना चाहिये।

(५) **कैन्थरिस तुरत प्रभाव करता है**—त्वचा पर **कैन्थरिस** डाला जाय, तो एकदम छाले पड जाते हैं। छालो का एकदम पडना सिद्ध करता है कि यह औषधि अपना प्रभाव एकदम डालती है। जो औषधि एकदम कुप्रभाव डालती है वह शरीर को स्वस्थ करने मे भी एकदम प्रभावशाली होती है, न विगाडने मे देर लगाती है, न सुधारने मे देर लगाती है। होम्योपैथिक औषधियोंके विषय मे यह जानना आवश्यक है कि उनकी गति धीमी है या तीव्र है। रोगो की भी गति धीमी या तीव्र हुआ करती है। जैसा हम पहले लिख आयें हैं, **एकोनाइट, बेलाडोना** तीव्र-गति की औषधिया हैं, सर्दी लगी और रात तक बुखार आ गया। इस प्रकार के तीव्र-गति से आने वाले बुखार मे तीव्र-गति वाला **एकोनाइट** काम देगा। **ब्रायोनिया** धीमी गति से आता है, सर्दी लगी तो पहले दिन दो-चार छीकें आयेगी, अगले दिन जुकाम होगा, फिर बुखार होगा। इसीलिये **ब्रायोनिया** धीमी गति से आने वाले टाइफॉयड मे काम आता है। औषधि की गति और रोग की गति मे समता देखकर उपचार करना आवश्यक है।

(६) **हनीमैन का स्पेसिफिक औषधियो के विषय मे मत**—हनीमैन के कथनानुसार होम्योपैथी मे कोई स्पेसिफिक औषधि नही है। व्यक्ति की जो 'देह की प्रकृति की औषधि' (Constitutional drug) है, वही उसकी स्पेसिफिक औषधि होती है। वह उसके एक रोग को नही, उसके शरीर के सव रोगो को दूर कर देती है। फिर भी कई औषधियो का कार्य-क्षेत्र सीमित है, इसलिये वे उन रोगो के लिये स्पेसिफिक कही जा सकती हैं। उदाहरणार्थ, मूत्राशय के

शोथ मे कैन्थरिस स्कारलेट फीवर मे बेलाडोना, डिसेन्ट्री मे मर्क कोर और हृदय की एनजाइना पेक्टोरिस मे लैट्रोडेक्टस स्पेसिफिक कही जा सकती हैं।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—बाहरी प्रयोग मे मूल-अर्क, १x, २x, ३x तथा भीतरी प्रयोग मे ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

कैपसिकम—लाल मिर्च, (CAPSICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मोटा, थुलथुला शरीर और नाक-गाल आदि की नोक पर लालिमा	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) घर जाने की उत्कट अभिलाषा	*गर्मी से रोग मे कमी
(३) पुराने जुकाम मे किसी भी औषधि का काम न कर सकना	दिन के समय रोग मे कमी
(४) मिर्च की तरह जलन	
(५) यह सलफर आदि की तरह धातुगत (Constitutional) दवा है	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
	*ठडी, खुली हवा से रोग बढना
(६) आत्मघात का निरन्तर विचार	*शरीर पर कपडा न होने से वृद्धि
(७) ज्वर मे दोनो कन्धो के बीच ठड शुरु होकर जिस्म मे फैलती है	*खाने और पीने से रोग बढ़ना
	*आधी रात के बाद रोग मे वृद्धि

(१) **मोटा, थुलथुला शरीर और नाक-गाल आदि की नोक पर लालिमा**—डा० कैन्ट का कहना है कि जिन पदार्थों को हम स्वाद के लिये निरन्तर लिया करते है, कई पीढियो बाद वे हमारे शरीर मे ऐसे लक्षण उत्पन्न कर देगे कि उन लक्षणो को दूर करने के लिये इन्ही पदार्थों की शक्तिकृत मात्राएँ औषधि का काम करेगी क्योकि इन पदार्थों से उत्पन्न होने वाले रोगो के लक्षण शरीर मे रोग के रूप मे प्रकट होने वाले लक्षणो के समान होगे। इन्ही पदार्थों मे एक पदार्थ लाल मिर्च—**कैपसिकम** है। इसका रोगी **कैलकेरिया कार्ब** की तरह मोटा, थुलथुला होता है। लाल मिर्च का रग लाल होता है, ध्यान से देखने पर इस रोगी की भी नाक की नोक, गाल के उभार लाल होते हैं और चेहरे पर रुधिर की बारीक रक्त-वाहिनिया (Capillaries) फैली पडी दीखा करती है। इस रोगी का शरीर सुस्ती से भरा होता है, कोई दवा काम नही करती, सारे जिस्म का कार्य धीमा चलता है। इस प्रकार के शरीर (Constitution) मे किसी भी रोग पर **कैपसिकम** दिया जा सकता है। यह जीवनी-शक्ति को क्रियाशील बना देगा और सुस्त पड रही शारीरिक-शक्तिया जाग उठेंगी। **कैपसिकम** के विषय मे यह डा० कैन्ट का सजीव तथा मूर्त-चित्रण है।

(२) **घर जाने की उत्कट अभिलाषा**—बच्चो को जब घर से बाहर किसी बोर्डिंग हाउस मे दाखिल कर दिया जाता है तब उनका जी नही लगता, वे निरन्तर रोया करते हैं, खेलने के स्थान मे एक कोने मे जा बैठते और मा-बाप को याद किया करते है। इस प्रकार के बच्चो को **कैपसिकम** की एक-दो मात्रा देने के बाद वे सब-कुछ भूल जाते हैं और अन्य बच्चो के साथ खेलने लगते हैं।

(३) **पुराने जुकाम मे किसी भी औषधि का काम न कर सकना—कैपसिकम** की शारीरिक-रचना मे धीमापन अन्तर्निहित है। ऐसे रोगी मिलते हैं जिन्हें पुराना जुकाम सताता रहता है, किसी दवा से लाभ नही होता, अच्छी-से-अच्छी दवा चुन कर दी जाय, परन्तु जीवनी-शक्ति प्रतिक्रिया करती ही नही। इतने में चिकित्सक की रोगी के चेहरे पर नज़र पडती है, वह देखता है कि रोगी के नाक की नोक लाल है, ठडी है, चेहरे पर रक्तशिराएँ चमक रही हैं, रोगी मोटा, थुलथुला है, शरीर मे सत्व नही। पूछने पर पता चलता है कि पाठशाला मे कुछ पढ-लिख नही सकता, अगर शारीरिक या मानसिक श्रम करता है, तो पसीना छूटने लगता है, सर्दी बर्दाश्त नही कर सकता, सर्दी मे मानो जम जाता है। इन लक्षणो को देखकर उसकी जीवनी-शक्ति को चेतन बनाने के लिये **कैपसिकम** देने पर या तो वह ठीक ही हो जाता है, या कुछ देर बाद साइलीशिया या **कैलि बाईक्रोम** आदि औषधि, जो पहले काम नही करती थी, अब देने पर काम करने लगती हैं और रोगी ठीक हो जाता है। शरीरगत जो लक्षण हमने अभी कहे है, वैसे लक्षणो के होने पर, अगर जीवनी-शक्ति सुस्त पडी हो, तो **कैपसिकम** जीवनी-शक्ति को चुस्त कर देता है, और क्योकि रोग से लड कर उसे औषधि के सहारे परे फेंक देना जीवनी-शक्ति का ही काम है इसलिये ऐसे रोगियो की जीवनी-शक्ति को उभारना ही चिकित्सक का काम होता है जिसे **कैपसिकम** बखूबी करता है।

(४) **मिर्च की तरह जलन**—मिर्च में लाली और जलन ये दो बातें मुख्य हैं। लाली के विषय मे हमने अभी लिखा ही है। **कैपसिकम** मे जलन भी है। श्लैष्मिक-झिल्ली मे जहा भी जलन का लक्षण पाया जाय, वहा इस औषधि की तरफ ध्यान जाना जरूरी है। जलन ऐसी होती है जैसे मिर्च लग रही हो, इसप्रकार की जलन कही भी हो सकती है—जीभ, मुह के भीतर, पेट, आतें, मूत्रद्वार, मल-द्वार, छाती, फेफडे, त्वचा, बवासीर—कही भी नगी श्लैष्मिक-झिल्ली पर मिर्ची के लगने जैसी जलन हो, तो इस औषधि का प्रयोग करना चाहिये।

(५) **यह सलफर आदि की तरह धातुगत (Constitutional) दवा है**—कई रोगी ऐसे आते हैं जिन्हें सर्दी लग जाती है, परन्तु उनका रोग 'नवीन-रोगो' (Actue) पर असर करने वाली दवाओ से शान्त हो जाता है। **एकोनाइट, ब्रायोनिया, हिपर** आदि औषधिया ठड से उत्पन्न होने वाले उस रोग से निबट

लेती हैं। परन्तु कभी-कभी यह नवीन-रोग 'पुराना' (Chronic) हो जाता है जुकाम **एकोनाइट** आदि से ठीक होकर वार-वार लौट आता है। इसका अर्थ यह है कि जीवनी-शक्ति अपने पूर्ण-वेग से जगी नही है, उसकी तरफ से प्रतिक्रिया धीमी है, मध्यम है, ऐसी हालत में **सलफर, फॉसफोरस, लाइकोपोडियम** आदि गहन क्रिया करने वाली औषधियो का प्रयोग करना पडता है। ठड से होने वाले रोगो का हठधर्मी होकर वैठ जाना, रोगी को न छोडना, गठिया आदि पुराने रोगो को जड-मूल से नष्ट करने के लिये 'धातुगत-औषधि' (Constitutional remedy) की आवश्यकता होती है। इसी श्रेणी मे **कैपसिकम** की गणना है।

(६) **आत्मघात का निरन्तर विचार**—आत्मघात सवधी लक्षणो पर विचार करते हुए चिकित्सक को दो वातो मे भेद करना सीखना होगा। एक तो है आत्मघात-सम्बन्धी-विचार, दूसरा है आत्मघात-सवधी-आवेग। 'विचार' (Thought) पर मनुष्य नियन्त्रण करता रहता है, 'आवेग' (Impulse) पर काबू पाना कठिन होता है। आत्मघात-सवधी-विचार मे व्यक्ति आत्मघात की वात सोचा करता है परन्तु आत्मघात करना नही चाहता, वे विचार उस पर हावी होने का प्रयत्न करते हैं परन्तु वह उन विचारो से लडा करता है, उन्हें परे फेंकने का प्रयत्न किया करता है, वे 'विचार' होते हैं, 'आवेग' नही। **कैपसिकम** मे आत्मघान का 'विचार' आता है, **ऑरम मैटेलिकम** मे आत्मघात का 'आवेग' आता है।

(७) **ज्वर मे दोनो कन्धो के वीच ठड शुरु होकर जिस्म मे फैलती है**—**कैपसिकम** के ज्वर का विशिष्ट-लक्षण यह है कि इसमे दोनो कन्धो के वीच मे ठड लगनी शुरु होती है, और वहाँ से जिस्म मे फैल जाती है। ज्वर मे जाडा चढने से पहले प्यास लगती है परन्तु पानी पीते ही शरीर मे कपकपी फैल जाती है।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

1 **खासने पर दूरवर्ती स्थानो मे दर्द**—इसका एक अद्भुत-लक्षण यह है कि खासने पर टागो मे, घुटने मे, मूत्राशय मे या अन्य किसी दूरवर्ती अग मे दर्द का अनुभव होता है।

11 **मुंह मे छाले पड जाना**—मुंह मे ऐसे छाले पड जाना जो भीतर जलन पैदा करते हों—इसमे पाया जाता है।

111 **कानो के पीछे की शोथ** (Mastoiditis)—कान के पीछे की हड्डी का प्रदाह भी इसमे है।

1V **सिर-दर्द**—मानो खोपडी फूट पडेगी, जरा-सी हरकत से भयकर सिर-दर्द। इसलिये रोगी चलता-फिरता नही, खासी को भी रोकता है क्योकि

खासने से भी सिर-दर्द बढता है, सिर को पकड कर बैठे रहता है ताकि वह हिल न पाये ।

(९) शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

कार्बो एनीमैलिस—जान्तव कोयला, (CARBO ANI)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) ग्रन्थियों का कडापन—प्लेग, कैंसर, ट्यूमर आदि
(२) ग्रन्थि-शोथ मे कार्बो एनीमैलिस तथा बेलाडोना की तुलना
(३) मासिक-धर्म तथा प्रदर में मरने के समान कमज़ोरी
(४) ज़रा-सा बोझ उठाने से पैर मे मोच आ जाना
(५) त्वचा पर तांबे के-से रंग की फुन्सिया

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*गर्म कमरे मे अच्छा लगना
*हाथ से दबाने पर आराम

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*ठडी हवा से रोग का बढ़ना
*हजामत के बाद परेशानी
*रजो-धर्म के बाद परेशानी

(१) **ग्रन्थियों का कड़ापन—प्लेग, कैंसर, ट्यूमर आदि**—यह एक गहन क्रिया करने वाली औषधि है। इसकी शिकायतें रोग को लेकर चुपके-चुपके आती हैं, धीरे-धीरे बढती हैं, और जब प्रकट मे आती हैं तब घातक रूप धारण कर लेती है। शरीर की ग्रन्थियो पर इसका विशेष प्रभाव है। डा० यूनान लिखते हैं कि जिन दिनो लडन मे प्लेग का प्रचड प्रकोप हुआ और प्रत्येक घर मे मृत्यु ने अपना अड्डा जमा लिया, तब मोचियो के घरो मे प्लेग ने आक्रमण नही किया। इसका कारण यह था कि मोची लोग अपने घरो के सामने चमडा जलाया करते थे। **कार्बो एनीमैलिस** जानवर के चमडे के कोयले को कहते हैं। क्योंकि वे जानवर का चमडा जलाते थे इसलिये उसके धूए का उन पर होम्योपैथिक प्रभाव रहता था और वे प्लेग के आक्रमण के शिकार नहीं हुए।

कार्बो एनिमैलिस का प्रभाव ग्रन्थियो को कडा कर देना है और इसलिये शरीर मे जिन अगो मे भी ग्रन्थियो मे कडापन पाया जाय यह उसे दूर करता है। बग़ल, जाघ, सीने आदि मे गिल्टियो के सूज जाने और उनके कडा पड जाने मे यह औषधि उपयोगी है। सुज़ाक और आतशक की गिल्टिया जब कडी पड जाती हैं तब भी इस औषधि मे लाभ होता है। जब कोई गिल्टी चीरी जाती है और उसके चारो तरफ कडापन आ जाता है तब भी इसका उपयोग किया जाता है।

कैसर और ट्यूमर मे भी क्योकि गिल्टियो का कडापन होता है इसलिये उन्हें भी यह ठीक करता है। स्त्रियो के स्तन के कैसर मे स्तन की गिल्टिया सूज जाती हैं, गर्भाशय के कैसर मे गर्भाशय का मुख अत्यन्त कडा पड जाता है, दर्द होता है, खून भी जाता है। इन सब गिल्टियो के कडेपन मे **कार्वो एनीमैलिस** को स्मरण करना चाहिये। १८४१ मे डा० हार्टग ने आस्ट्रिया के फील्ड मार्शल कौंट रैडेटस्की के आख के ट्यूमर को **कार्वो एनीमैलिस** ३० के प्रयोग से ठीक कर दिया था जब कि उनके आख के ट्यूमर को डाक्टरो ने असाध्य घोषित कर दिया था। **कार्वो एनीमैलिस** की ग्रन्थि कडी पड जाती है, पकती नही। इस क्षेत्र मे इसकी **बेलाडोना** से तुलना की जाती है।

(२) ग्रन्थि-शोथ मे कार्वो एनीमैलिस तथा बेलाडोना की तुलना—**बेलाडोना** मे भी सब ग्रन्थिया सूज जाती है, छूने से गर्म लगती है, स्पर्श नही किया जा सकता। पहले चमकदार लाली दिखाई देती है, फिर नीला-सा रग आ जाता है और अगर इलाज न किया जाय तो ज़ख्म फूट जाता है, पस पड जाती है। परन्तु **कार्वो एनीमैलिस** मे ऐसा नही होता। ग्रन्थि का शोथ धीरे-धीरे होता है, उसकी चाल भी धीमी होती है और वह पकने के स्थान मे कडेपन पर आकर रुक जाती है। पके तो पस निकल जाने और सूक जाने पर ठीक हो जाय, परन्तु यह ठीक नही होती, पकने की जगह कडी पड जाती है। स्त्रियो मे मग सूज कर कडा पड जाता है। अन्य प्रकार के ज़ख्म भी ठीक होने के स्थान पर कडे पड जाते है। इस औषधि की विशेषता ही यह है कि रोग का आक्रमण ग्रन्थियो पर होता है और ग्रन्थिया पकने के बजाय कडी पड जाती है, और कडेपन पर आकर वही रुक जाती हैं।

(३) मासिक-धर्म तथा प्रदर मे मरने के समान कमज़ोरी—स्त्रियो को मासिक-धर्म बहुत जल्दी होता है, बहुत देर तक रहता है, और बहुत ज्यादा खून जाता है। इस औषधि की रोगिणी प्रत्येक मासिक-धर्म के समय इतनी कमज़ोर हो जाती है कि मरने के समान हो जाती है। जितना रुधिर जाता है उससे कमज़ोर हो जाना तो स्वाभाविक है, परन्तु खून जाने की तुलना मे कमज़ोरी आशातीत हो जाती है। प्रदर मे भी आशातीत कमज़ोरी हो जाती है।

(४) जरा-सा बोझ उठाने से पैर मे मोच आ जाना—थोडा-सा भी बोझ उठाने मे मोच पड जाती है, बहुत कमज़ोरी अनुभव होती है और पैर के गिट्टे चलते हुए मुड जाते हैं। जोड कमज़ोर होते हैं। रीढ के अन्त वाली हड्डी पर ज़ोर पडने से उसमे दर्द होता है।

(५) त्वचा पर तांबे के रंग की-सी फुन्सिया—चेहरे और शरीर पर तांबे के रग की-सी बेशुमार फुन्सिया हो जाती हैं जिन्हें यह दूर कर देता है।

(६) शक्ति तथा प्रकृति—३ विचूर्ण, ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।)

कार्बो वेज—वानस्पतिक कोयला, (CARBO VEG)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) पेट के ऊपरी भाग मे वायु का प्रकोप—कार्बो, चायना, लाइको की तुलना—पुराना अजीर्ण रोग, खट्टी तथा खाली डकारें आना	लक्षणो मे कमी (Better) *ठडी हवा; पखे की हवा *डकार आने से कमी *पाव ऊचे कर के लेटना
(२) किसी कठिन रोग के पश्चात् उपयोगी	
(३) सिर्फ गर्म हालत से जुकाम, अथवा गर्म से एल्दम ठडक मे आने से होने वाले रोग—(जैसे, जुकाम, सिर-दर्द आदि)	
(४) हवा की लगातार इच्छा (न्यूमोनिया, दमा, हैजा आदि)	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) जलन, ठडक तथा पसीना—भीतर जलन बाहर ठडक (जैसे, हैजा आदि मे)	*गर्मी से रोगी को परेशानी *रुधिरादि स्राव जाने से रोग का बढ जाना
(६) शरीर तथा मन की शिथिलता (रुधिर का रिसते रहना, विषैला फोडा, सडने वाला जख्म, वैरीकोज वेन्ज, थकान आदि)	*वृद्धावस्था की कमजोरी *गरिष्ट भोजन से पेट मे वायु का बढ़ जाना
(७) यह मृत-सजीवनी दवा कही जाती है	

(१) **पेट के ऊपरी भाग मे वायु का प्रकोप**—यह औषधि वानस्पतिक कोयला है। हनीमैन का कथन है कि पहले कोयले को औषधि-शक्ति-हीन माना जाता था, परन्तु कुछ काल के बाद श्री लोविट्स को पता चला कि इसमे कुछ रासायनिक-तत्व हैं जिनसे यह बदबू को समाप्त कर देता है। इसी गुण के आधार पर ऐलोपैथ इसे दुर्गन्धयुक्त फोडो पर महीन करके छिडकने लगे, मुख की बदबू हटाने के लिये इसके मजन की सिफारिश करने लगे और क्योकि यह गैस को अपने मे समा लेता है इसलिये पेट मे वायु की शिकायत होने पर शुद्ध कोयला खाने को देने लगे। कोयला कितना भी खाया जाय वह नुक्सान नही पहुचाता। परन्तु हनीमैन का कथन था कि स्थूल कोयले का यह असर चिर-स्थायी नही है। मुह की बदबू यह हटायेगा परन्तु कुछ देर बाद बदबू आ जायेगी, फोडे की बदबू मे जबतक यह लगा रहेगा तभी तक हटेगी, पेट की गैस मे भी यह इलाज नही है। हनीमैन का कथन है कि स्थूल कोयला वह काम नही कर सकता जो शक्ति-कृत कोयला कर सकता है। **कार्बो वेज** पेट की गैस को भी रोकता है, विषैले, सडनेवाले जख्म—गैंग्रीन—को भी ठीक करता है। पेट की वायु के शमन मे

होम्योपैथी मे तीन औषधियां मुख्य हैं—वे हैं **कार्बो वेज, चायना** तथा **लाइको**।

कार्बो वेज, चायना तथा लाइकोपोडियम की तुलना—डा० नैश का कथन है कि पेट मे गैस की शिकायत मे **कार्बो वेज** ऊपरी भाग पर, **चायना** संपूर्ण पेट मे गैस भर जाने पर, और **लाइको** पेट के निचले भाग मे गैस होने पर विशेष प्रभाव-शाली है। वायु के पेट मे प्रकोप के विषय मे विचार करते हुए इस लक्षण पर भी ध्यान रखना चाहिये कि इस औषधि मे पेट मे कैद-हुई-हवा (Incarcerated wind) का लक्षण भी है। आंतो मे कभी एक जगह, कभी दूसरी जगह हवा इकट्ठी हो जाती है, देखने वालो को लगता है कि कोई ट्यूमर है, परन्तु यह हवा जब निकल जाती है तब वह वायु से उभरी हुई जगह भी ठीक हो जाती है।

पुराना अजीर्ण रोग, खट्टी तथा खाली डकारें आना—पुराने अजीर्ण रोग मे यह लाभकारी है। रोगी को खट्टी डकारें आती रहती हैं, पेट का ऊपर का हिस्सा फूला रहता है, हवा पसलियो के नीचे अटकती है, चुभन पैदा करती है, खट्टी के साथ खाली डकारें भी आती हैं। डकार आने के साथ बदबूदार हवा भी खारिज होती है। डकार तथा हवा के निकास से रोगी को चैन पडता है। पेट इस कदर फूल जाता है कि धोती या साडी ढीली करनी पडती है। **कार्बो वेज** मे डकार से आराम मिलता है, परन्तु **चायना** और **लाइको** मे डकार से आराम नही मिलता। **लाइको** के अजीर्ण रोग मे पेट मे खुदबुद-खुदबुद हुआ करता है जैसे देगची चूल्हे पर चढी हो। **चायना** के अजीर्ण मे पेट ढोल की तरह फूल जाता है और रोगी जो-कुछ खाता है सब गैस बन जाता है।

(२) **किसी कठिन रोग के पश्चात्**—डा० हेनरी गुएरेन्सी लिखते हैं कि अगर कोई रोग किसी पुराने कठिन रोग के बाद से चला आता हो, तब **कार्बो वेज** को स्मरण करना चाहिये। इस प्रकार किसी पुराने रोग के बाद किसी भी रोग के चले आने का अभिप्राय यह है कि जीवनी-शक्ति की कमजोरी दूर नहीं हुई, और यद्यपि पुराना रोग ठीक हो गया प्रतीत होता है, तो भी जीवनी-शक्ति अभी अपने स्वस्थ रूप मे नही आयी। उदाहरणार्थ, अगर कोई कहे कि जब से बचपन मे कुकुर खांसी हुई तब से दमा चला आ रहा है, जब से सालो हुए शराब के दौर मे भाग लिया तब से अजीर्ण रोग से पीडित हूं, जब से सामर्थ्य से ज्यादा परिश्रम किया तब से तबीयत गिरी-गिरी रहती है, जब से चोट लगी तब मे चोट तो ठीक हो गई किन्तु मौजूदा शिकायत की शुरुआत हो गई, ऐसी हालत मे चिकित्सक को **कार्बो वेज** देने की सोचनी चाहिये। बहुत संभव है कि इस समय रोगी मे जो लक्षण मौजूद हो वे **कार्बो वेज** मे पाये जाते हो क्योंकि इस रोग का मुख्य कारण जीवनी-शक्ति का अस्वस्थ, ह्रासमय होना है, और इस शक्ति के ह्रासमय होने से ही रोग पीछा नही छोड़ता।

डा० टायलर लिखती है कि 'किसी कठिन रोग के पश्चात् किसी अन्य रोग के शरीर पर जम जाने' के लक्षण पर हमने **कार्बो वेज** उन रोगो मे देना शुरु किया जो किसी पिछली बीमारी के समय से चले आ रहे थे, परन्तु इससे कुछ लाभ न होता देखकर इस विचार को छोड दिया। परन्तु इसके वाद हमने देखा कि अगर किसी रोग के इतिहास के पीछे यह लक्षण मौजूद है कि वह किसी अन्य रोग के समय से या पिछली किसी दुर्घटना से चला आ रहा है, और साथ ही 'मैटीरिया मैडिका' की छान-वीन करने से इस समय के रोग के लक्षण **कार्बो वेज** मे पाये जाते हैं, तो यह औषधि अवश्य लाभ करती है। गुएरेन्सी का अभिप्राय भी यह नही था कि विना सोचे-समझे सिर्फ यह देखकर कि वर्तमान रोग पिछले किसी कठिन रोग के वाद से चला आ रहा है आँख मूद कर **कार्बो वेज** दे दो। पुराना इतिहास तो सिर्फ **कार्बो वेज** की तरफ ध्यान खीचने मे सहायक है। ऐसे इतिहास मे यह देख लेना जरूरी है कि इस समय भी इस औषधि के लक्षण मौजूद है या नही। मुख्यत तो मौजूद होंगे, अगर इस समय **कार्बो वेज** के लक्षण मौजूद न हो, तो पिछले इतिहास के होते हुए भी इससे लाभ नहीं होगा।

(३) **सिर्फ गर्म हालत से जुकाम; या गर्म से एकदम ठंड मे आने से होने वाले जुकाम, खासी, सिर दर्द आदि**—यह औषधि जुकाम-खासी-सिरदर्द आदि के लिए मुख्य-औषधि है। रोगी जुकाम से पीडित रहा करता है। **कार्बो वेज** की जुकाम्-खासी-सिरदर्द कैसे शुरु होती है। रोगी गर्म कमरे मे गया है, यह सोच कर कि कुछ देर ही उसने गर्म कमरे मे रहना है, वह कोट को डाले रहता है। शीघ्र ही उसे गर्मी महसूस होने लगती है, और फिर भी यह सोचकर कि अभी तो वाहर जा रहा हू—वह गर्म कोट को उतारता नही। इस प्रकार इस गर्मी का उस पर असर हो जाता है और वह छीकें मारने लगता है, जुकाम हो जाता है। नाक से पनीला पानी वहने लगता है और दिन-रात वह छीका करता है। यह तो हुआ गर्मी से जुकाम हो जाना। औषधियो का जुकाम शुरु होने का अपना-अपना ढंग है। **कार्बो वेज** का जुकाम नाक से शुरु होता है, फिर गले की तरफ जाता है, फिर श्वास-नलिका की तरफ जाता है और अन्त मे छाती मे पहुचता है। **फॉसफोरस** की ठड-लगने से बीमारी पहले ही छाती मे या श्वास-नलिका मे अपना असर करती है।

जवतक **कार्बो वेज** के रोगी का नाक वहता रहता है, तवतक उसे आराम रहता है, परन्तु यदि गर्मी से हो जानेवाले इस जुकाम मे वह ठड मे चला जाय, तो जुकाम एकदम वद हो जाता है और सिर-दर्द शुरु हो जाता है। वहते जुकाम मे ठड लग जाने से, नम हवा मे या अन्य किसी प्रकार से जुकाम का स्राव रुक जाने से सिर के पीछे के भाग मे दर्द, आँख के ऊपर दर्द, सारे सिर मे दर्द, **हथौडो के लगने के समान दर्द होने लगता है।** पहले जो जुकाम गर्मी के कारण हुआ था

उसमे **कार्बो वेज** उपयुक्त दवा थी, अब जुकाम के रुक जाने पर **कार्बो वेज** के अतिरिक्त **कैलि बाईक्रोम, कैलि आयोडाइड, सीपिया** के लक्षण हो सकते हैं ।

(४) **हवा की लगातार इच्छा (न्यूमोनिया, दमा, हैजा आदि)**—यह औषधि गर्म-मिजाज़ (Hot) की है, यद्यपि **कार्बो एनीमैलिस** ठडे मिजाज़ (Chilly) की है। गर्म-मिजाज़ की होने के कारण रोगी को ठडी और पखे की हवा की ज़रूरत रहती है। कोई भी रोग क्यो न हो—बुखार, न्यूमोनिया, दमा, हैज़ा—अगर रोगी कहे—हवा करो, हवा करो—तो **कार्बो वेज** को नही भुलाया जा सकता। अगर रोगी कहे कि मुह के सामने पखे की हवा करो तो **कार्बो वेज,** और अगर कहे कि मुह से दूर पखे को रखकर हवा करो तो **लैकेसिस** औषधि है। **कार्बो वेज** मे जीवनी-शक्ति अत्यन्त शिथिल हो जाती है इसलिये रोगी को हवा की बेहद इच्छा होती है। अगर न्यूमोनिया मे रोगी इतना निर्बल हो जाय कि कफ जमा हो जाय, और **ऐन्टिम टार्ट** से भी कफ न निकले, तो समझना चाहिये कि जीवनी-शक्ति की शिथिलता के कारण कफ नही निकल रहा। उस हालत मे अगर रोगी हवा के लिये भी बेताब हो, तो **कार्बो वेज** देने से लाभ होगा। दमे का रोगी सास की कठिनाई से परेशान होता है। उसकी छाती मे इतनी कमज़ोरी होती है कि वह महसूस करता है कि अगला सास शायद ही ले सके। रोगी के हाथ-पैर ठडे होते हैं, मृत्यु की छाया उसके चेहरे पर दीख रही होती है, छाती से साय-साय की आवाज़ आ रही होती है, सीटी-सी बज रही होती है, रोगी हाथ पर मुह रखे सास लेने के लिये व्याकुल होता है और कम्बल मे लिपटा खिडकी के सामने हवा के लिये बैठा होता है और कहता है 'पखा झलो'—पखे की हवा मे बैठा रहता है। ऐसे मे **कार्बो वेज** दिया जाता है। न्यूमोनिया और दमे की तरह हैज़े मे भी **कार्बो वेज** के लक्षण आ जाते है जब रोगी हवा के लिये व्याकुल हो जाता है। हैज़े के लक्षणो मे **कैम्फ़र, क्यूप्रम** और **विरेट्रम एल्बम** का ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं, परन्तु **कार्बो वेज** भी इसमे कम उपयोगी नही है। हैज़े मे जब रोगी चरम अवस्था मे पहुच जाय, हाथ-पैरो मे ऐंठन तक नही रहती, रोगी का शरीर बिलकुल बर्फ के समान ठडा पड गया हो, शरीर से ठडा पसीना आने लगे, सास ठडी, शरीर के सब अग ठडे—यहा तक कि शरीर नीला पडने लगे, रोगी मुर्दे की तरह पड जाय, तब भी ठडी हवा से चैन मिले किन्तु कह कुछ भी न सके—ऐसी हालत मे **कार्बो वेज** रोगी को मृत्यु के मुख से खीच ले आये तो कोई आश्चर्य नही।

(५) **जलन, ठडक तथा पसीना—भीतर जलन बाहर ठंडा (जैसे, हैजा आदि मे)**—इस औषधि का विशेष-लक्षण यह है कि भीतर से रोगी गर्मी तथा जलन अनुभव करता है, परन्तु बाहर त्वचा पर वह शीत अनुभव करता है। **कैम्फ़र** मे हमने देखा था कि भीतर-बाहर दोनो स्थानो से रोगी ठडक अनुभव करता है

परन्तु कपडा नही ओढ सकता। जलन **कार्बो वेज** का व्यापक-लक्षण है—शिराओ (Veins) मे जलन, बारीक-रक्त-वाहिनियो (Capillaries) मे जलन, सिर मे जलन, त्वचा मे जलन, शोथ में जलन, सब जगह जलन क्योकि **कार्बो वेज** लकडी का अगारा ही तो है। परन्तु इस भीतरी जलन के साथ जीवनी-शक्ति की शिथिलता के कारण हाथ-पैर ठडे, खुश्क या चिपचिपे, घुटने ठडे, नाक ठडी, कान ठडे, जीभ ठडी। क्योकि शिथिलावस्था मे हृदय का कार्य भी शिथिल पड जाता है इसलिये रक्त-सचार के शिथिल हो जाने से सारा शरीर ठडा हो जाता है। यह शरीर की पतनावस्था है। इस समय भीतर से गर्मी अनुभव कर रहे, बाहर से ठडे हो रहे शरीर को ठडी हवा की जरूरत पडा करती है। इस प्रकार की अवस्था प्राय हैजे आदि साघातिक रोग मे दीख पडती है जब यह औषधि लाभ करती है :

(६) **शरीर तथा मन की शिथिलता (रुधिर का रिसते रहना, विषैला फोडा, सडनेवाला ज़ख्म, गैंग्रीन, वैरीकोज़ वेन्ज, थकान आदि)**—शिथिलता इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। प्रत्येक लक्षण के आधार मे शिथिलता, कमज़ोरी, असमर्थता बैठी होती है। इस शिथिलता का प्रभाव रुधिर पर जब पडता है तब हाथ-पैर फूले दिखाई देते है क्योकि रुधिर की गति ही धीमी पड जाती है, रक्त-शिराएँ उभर आती है, रक्त-सचार अपनी स्वाभाविक-गति से नही होता, वैरीकोज़ वेन्ज़ का रोग हो जाता है, रक्त का सचार सुचारु-रूप से चले इसके लिये टागें ऊपर करके लेटना या सोना पडता है। रक्त-सचार की शिथिलता के कारण अग सूकने लगते हैं, झुरियाने लगते हैं, अगो मे सुन्नपन आने लगती है। अगर वह दायी तरफ लेटता है तो दाया हाथ सुन्न हो जाता है, अगर बायी तरफ लेटता है तो बाया हाथ सुन्न हो जाता है। रक्त-सचार इतना शिथिल हो जाता है कि अगर किसी अग पर दबाव पडे, तो उस जगह का रक्त-सचार रुक जाता है। रक्त-सचार की इस शिथिलता के कारण विषैले फोडे, सडने वाले फोडे, गैंग्रीन आदि हो जाते हैं जो रक्त के स्वास्थ्यकर सचार के अभाव के कारण ठीक होने मे नहीं आते, जहा से रुधिर बहता है वह रक्त-सचार की शिथिलता के कारण रिसता ही रहता है।

रुधिर का नाक, जरायु, फेफडे, मूत्राशय आदि से रिसते रहना—रुधिर का बहते रहना इस औषधि का एक लक्षण है। नाक से हफ्तो प्रतिदिन नकसीर बहा करती है। जहा शोथ हुई वहा से रुधिर रिसा करता है। जरायु से, फेफडो से, मूत्राशय से रुधिर चलता रहता है, रुधिर की कय भी होती है। यह रुधिर का प्रवाह वेगवान् प्रवाह नही होता जैसा **एकोनाइट, बेलाडोना, इपिकाक, हैमेमेलिस** या **सिकेल** मे होता है। इन औषधियो मे तो रुधिर वेग से बहता है, **कार्बो वेज** मे वेग से बहने के स्थान मे वह रिसता है, बारीक रक्त-वाहिनियो द्वारा धीमे-धीमे

रिसा करता है। रोगिणी का ऋतु-स्राव के समय जो रुधिर चलना शुरु होता है वह रिसता रहता है और उसका ऋतु-काल लम्बा हो जाता है। एक ऋतु-काल से दूसरे ऋतु-काल तक रुधिर रिसता जाता है। बच्चा जनने के बाद रुधिर बन्द हो जाना चाहिये, परन्तु क्योंकि इस औषधि में रुधिर-वाहिनियां शिथिल पड जाती हैं, इसलिये रुधिर बन्द होने के स्थान में चलता रहता है, धीरे-धीरे रिसता रहता है। ऋतु-काल, प्रजनन आदि की इन शिकायतों को, तथा इन शिकायतों से उत्पन्न होनेवाली कमज़ोरी को **कार्बो वेज** दूर कर देता है। कभी-कभी जनने के बाद प्लेसेन्टा नहीं निकलता और धीरे-धीरे रुधिर रिसने लगता है, जरायु में वेग से रुधिर का प्रवाह छोड़कर प्लेसेन्टा को बाहर धकेल देने की शक्ति नहीं होती। अगर इस हालत में रुधिर धीरे-धीरे रिस रहा हो, तो **कार्बो वेज** की कुछ मात्राएँ उसे बाहर धकेल देंगी और चिकित्सक को शल्य-क्रिया करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अगर जच्चा अत्यंत कमज़ोर हो जाय, पेट में हवा भरती रहे, उसकी शिराएं फूल जायें, तो **कार्बो वेज** की कुछ मात्राएं देने से वह प्रजनन के कष्ट को बर्दाश्त करने की सामर्थ्य पा जाती है, परन्तु इस औषधि का तभी प्रयोग करना चाहिये अगर लक्षण मौजूद हों। हृष्ट-पुष्ट, ताकतवर-स्त्री को जो इस कष्ट को आसानी से बर्दाश्त कर सकती है, इस दवा के देने की जरूरत नहीं क्योंकि यह तो कमज़ोर स्त्री के लक्षणों पर ही दी जाती है। बच्चे को दूध पिलाने में भी अगर माता को दूध पिलाने में अत्यन्त कमज़ोरी, शिथिलता अनुभव हो, तो उसे **कार्बो वेज** दिया जा सकता है।

विषैला फोड़ा, सड़नेवाला ज़ख्म, गैंग्रीन—क्योंकि रक्त-वाहिनियां शिथिल पड जाती हैं इसलिये जब भी कभी कोई चोट लगती है, तब वह ठीक होने के स्थान में सड़ने लगती है। फोड़े ठीक नहीं होते, उनमें से हल्का-हल्का रुधिर रिसा करता है, वे विषैले हो जाते हैं, और जब फोड़े ठीक न होकर विषैला रूप धारण कर लेते हैं, तब गैंग्रीन बन जाती है। जब भी कोई रोग शिथिलता की अवस्था में आ जाता है, ठीक होने में नहीं आता, तब जीवनी-शक्ति को सचेष्ट करने का काम **कार्बो वेज** करता है।

वेरीकोज वेन्ज—रुधिर की शिथिलता के कारण हृदय की तरफ जाने वाला नीलिमायुक्त अशुद्ध-रक्त बहुत धीमी चाल से जाता है, इसलिये शिराओं में यह रक्त एकत्रित हो जाता है और शिराएँ फूल जाती हैं। इस रक्त के वेग को बढ़ाने के लिये रोगी को अपनी टांगें ऊपर करके लेटना या सोना पड़ता है। रक्त की इस शिथिलता को **कार्बो वेज** दूर कर देता है क्योंकि इसका काम रक्त-संचार की कमज़ोरी को दूर करना है।

शारीरिक तथा मानसिक थकान—शारीरिक-थकान तो इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है ही क्योंकि शिथिलता इसके हर रोग में पायी जाती है।

शारीरिक-शिथिलता के समान रोगी मानसिक-स्तर पर भी शिथिल होता है। विचार मे शिथिल, सुस्त, शारीरिक अथवा मानसिक कार्य के लिये अपने को तत्पर नही पाता।

(७) **यह दवा मृत-सजीवनी कही जाती है**—इस औषधि को होम्योपैथ मृत-सजीवनी कहते हैं। यह मुर्दो मे जान फूक देती है। इसका यह मतलव नही कि मुर्दा इस से जी उठता है, इसका यही अभिप्राय है कि जव रोगी ठडा पड जाता है, नब्ज भी कठिनाई से मिलती है, शरीर पर ठडे पसीने आने लगते हैं, चेहरे पर मृत्यु खेलने लगती है, अगर रोगी वच सकता है तव इस औषधि से रोगी के प्राण लौट आते हैं। **कार्वो वेज** जैसी कमज़ोरी अन्य किसी औषधि मे नही है, और इसलिये मरणासन्न-व्यक्ति की कमजोर हालत मे यह मृत-सजीवनी का काम करती है। उस समय २०० या उच्च-शक्ति की मात्रा देने से रोगी के जी उठने की आशा हो सकती है।

(८) **इस औषधि के अन्य-लक्षण**—

I **ज्वर की शीतावस्था मे प्यास, ऊष्णावस्था मे प्यास का अभाव**—यह एक विचित्र-लक्षण (Peculiar symptom) है क्योकि शीत मे प्यास नही होनी चाहिये, गर्मी की हालत मे प्यास होनी चाहिये। सर्दी मे प्यास और गर्मी मे प्यास का न होना किसी प्रकार समझ मे नही आ सकता, परन्तु ऐसे विलक्षण-लक्षण कई औषधियो मे दीख पडते हैं। जव ऐसा कोई विलक्षण-लक्षण दीखे, तव वह चिकित्सा के लिये वहुत अधिक महत्व का होता है क्योकि वह लक्षण रोग का न होकर रोगी का होता है, उसके समूचे अस्तित्व का होता है। होम्योपैथी का काम रोग का नही रोगी का इलाज करना है, रोगी ठीक हो गया तो रोग अपने-आप चला जाता है।

II **तपेदिक की अन्तिम अवस्था**—तपेदिक की अन्तिम अवस्था मे जव रोगी सूक कर काटा हो जाता है, खासी से परेशान रहता है, रात को पसीने से तर हो जाता है, साधारण खाना खाने पर भी पतले दस्त आते हैं, तव इस औषधि से रोगी को कुछ वल मिलता है, और रोग आगे वढने के स्थान मे टिक जाता है।

III **वृद्धावस्था की कमजोरी**—युवको को जव वृद्धावस्था के लक्षण सताने लगते है या वृद्ध व्यक्ति जव कमज़ोर होने लगते हैं, हाथ-पैर ठडे रहते हैं, नसें फूलने लगती है, तव यह लाभप्रद है। रोगी वृद्ध हो या युवा, जव उसके चेहरे की चमक चली जाती है, जव वह काम करने की जगह लेटे रहना चाहता है, इकला पडे रहना पसन्द करता है, दिन के काम से इतना थक जाता है कि किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक श्रम उसे भारी लगता है, तव इस औषधि से लाभ होता है।

(९) **कार्बोवेज का सजीव, मूर्त-चित्रण**—डा० कैन्ट ने इस औषधि का मूर्त-चित्रण निम्न शब्दों में किया है "**कार्बो वेज** का मरीज़ कॉफी, खट्टे, मीठे तथा नमकीन पदार्थों का शौकीन होता है। जो चीजें आसानी में पच जायें और हितकारी हों, उनसे उसे नफरत होती है। अगर मैंने **कार्बो वेज** की शारीरिक-रचना का निर्माण करना हो तो मैं उसके पेट से प्रारंभ करूंगा। इस रोगी की नीली-नीली शिराए उभरी रहती—Varicose veins—हैं, हृदय का अशुद्ध रुधिर लाने का भाग कमजोर होता है, भिन्न-भिन्न अंगों में भारीपन, रक्त-संचय, पेट में वायु का भरना, उदर तथा आंतों की विकृति, सिर और मन की शिकायतें—संपूर्ण शारीरिक तथा मानसिक गठन में सुस्ती, जडता—ये सब जो **कार्बो वेज** के चिन्ह हैं—उन्हें पैदा करने के लिए मैं उसे घी, चर्बी के पदार्थ, मिठाइयां, चटनी-आचार-मुरब्बे और जो-कुछ भी हज्म नहीं हो सकता वह भरपेट खिलाऊंगा, खूब शराब पीने को दूंगा। इस सब से **कार्बो वेज** का मरीज़ तय्यार हो जायगा। रोगी सालों अपचन के पदार्थ खाता-खाता जब शरीर से टूट जायेगा, तब मेरे पास आकर चिल्लायेगा—डाक्टर, ओह डाक्टर! मेरा पेट, बस मेरा पेट, मेरे पेट को ठीक कर दो, मेरे पेट में जलन है, हवा भरी रहती है, डकार आते रहते हैं, हवा निकलती है तो बदबू से कमरा भर जाता है।" यह है डा० कैन्ट का **कार्बो वेज** के विषय में मूर्त-चित्रण। इस में इतना और बढाने की जरूरत है कि उक्त-लक्षणों के साथ रोगी अत्यन्त बलहीन, क्षीण दीखता हो, हवा के लिये तरसता हो, भीतर जलन और बाहर त्वचा पर ठंडक महसूस करता हो।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—यह गहरी तथा दीर्घकालिक प्रभाव करने वाली औषधि है—Deep acting and long acting—मात्रा की शक्ति, ६,३०,२०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

कारडुअस मेरियेनस (CARDUUS MARIANUS)

लिवर की औषधि—डा० कैन्ट लिखते हैं कि अगर होम्योपैथ किसी औषधि के विषय में कह सके कि यह औषधि अमुक रोग की दवा है, तो वे इस औषधि के विषय में कहने को तय्यार हैं कि यह लिवर के रोगों की दवा है। इस औषधि का केन्द्र-बिन्दु जिगर है। रोगी को नियमित या अनियमित समय पर पित्त की उल्टियां होती हैं। डा० कैन्ट का कथन है कि उन्होंने अनेक ऐसे रोगियों को इस दवा से ठीक किया है जिनको ऐसा सिर-दर्द होता था जिसका अन्त पित्त की उल्टी में होता था, जो कैलोमेल लेने के आदी थे, जिनके अंगों में जिगर की खराबी से पानी पड गया था। पीलिया में भी इस औषधि से लाभ होता है। इसका सबसे मुख्य-

लक्षण यह है कि जब रोगी वायीं करवट लेटता है तब पेट की दायीं तरफ दर्द होता है। इस औषधि से पित्त का स्वस्थ निर्माण होता है और पित्ताश्मरी (Gall-stones) बनना बन्द हो जाता है। अनेक बार पित्ताश्मरी के बार-बार दर्द के दौर को भी रोक देता है। इसका एक लक्षण यह भी है कि पीठ मे दायें अस्थि-फलक के नीचे दर्द होता है। दायी तरफ के अस्थि-फलक के नीचे के दर्द का लक्षण **चेलीडोनियम** तथा **एस्कुलस** मे भी है। इस दर्द का कारण भी यकृत् (जिगर) का दोष होता है। डा० नैश लिखते हैं कि बायें अस्थिफलक के नीचे का दर्द **चैनोपोडियम ग्लाउसाई** या **संग्विनेरिया** से दूर हो जाता है।

कॉलोफ़ाइलम (CAULOPHYLLUM)

(१) **प्रसव से एक मास पूर्व लेने से सहज-प्रसव**—प्रसव की दृष्टि से यह औषधि स्त्री का अत्यन्त मित्र है। डा० डगलस बोरलैंड 'होम्योपैथी फॉर मदर एण्ड इनफेंट' मे लिखते हैं "होम्योपैथ-चिकित्सको का यह अनुभव है कि उनकी मरीज़ा प्रसव-वेदना से बची रहती है। होम्योपैथी मे एक औषधि है '**कॉलोफाइलम**' जिसका काम प्रसव-कार्य को इस प्रकार नियन्त्रित कर देना है कि प्रसव के समय कोई कष्ट नही होता।" प्रसव से एक मास पूर्व अगर प्रतिदिन **कॉलोफाइलम** ६ या ३० की एक मात्रा ले ली जाय, तो प्रसव के समय किसी प्रकार का कष्ट नही होगा। इस औषधि का विशेष-प्रभाव जरायु पर है।

(२) **यह झूठी प्रसव-पीडा को रोकती है**—प्रसव के अन्तिम मास मे कभी-कभी झूठी प्रसव-पीडा हुआ करती है। इस झूठी प्रसव-पीडा के समय यह औषधि इस प्रकार की पीडा को शान्त कर देती है। यह औषधि हर शक्ति मे काम करती है—३० या २००—कोई भी शक्ति दी जा सकती है।

(३) **गर्भकाल में गर्भपात को रोकती है**—इस औषधि का प्रसव-काल मे सबसे अधिक प्रयोग है। अगर प्रसव-काल मे रुधिर जाने लगे या गर्भ-पात का भय खडा हो जाय, तो इस औषधि के प्रयोग से यह शका दूर हो जाती है।

(४) **प्रसव-काल में ठीक समय पर प्रसव मे सहायक है**—जहा यह गर्भपात को रोकती है, वहा आश्चर्य यह है कि प्रसव-काल मे प्रसव मे देरी होने को भी रोकती है, और ठीक समय पर बिना पीडा के प्रसव कराने मे सहायक है। जब प्रसव-काल के समय जरायु का मुख सकुचित होकर प्रसव मे देरी करने लगता है, तब इस औषधि से प्रसव-पीडा जल्दी होने लगती है, और यह जरायु के कार्य को नियमित कर के प्रसव को ठीक ढग पर करा देती है। सक्षेप

मे, यही कहा जा सकता है कि इस औषधि का कार्य प्रसव के कार्य को नियन्त्रित कर देना है। जब प्रसव नहीं होना चाहिये, समय से पहले होने लगे, तब इसे रोक देती है; और जब होना चाहिए परन्तु देरी होने लगे, तब प्रसव मे सहायता कर देती है। लोग कहा करते हैं . चित्त भी मेरी, पट्ट भी मेरी, ठीक इसी तरह गर्भपात को भी यह रोकती है, प्रसव होने मे विलम्ब को भी यह रोकती है।

(५) स्त्रियो के अंगुलियों आदि छोटे जोड़ों मे दर्द—स्त्रियो के वात-रोग मे जब छोटे जोड़ो मे दर्द बैठ जाता है, गठिया-रोग मे जब दर्द फिरा करता है, हर मिनट स्थान बदलता रहता है, अगुलियो के जोड सख्त पड जाते हैं, तब पल्सेटिला की तरह यह जोड़ो के दर्द मे आराम करती है।

(६) छोटी बच्चियो का प्रदर—डा० फैरिंगटन लिखते है कि छोटी बच्चियो के प्रदर मे जब स्राव अधिक होता हो, बच्ची कमजोर होती जाती हो, तब यह औषधि लाभप्रद है।

(७) शक्ति—६, ३०, २००

कॉस्टिकम (CAUSTICUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) बेहद कमजोरी—गला, जीभ, चेहरा, आंख, मलाशय, मूत्राशय, जरायु तथा हाथ-पैर आदि का पक्षाघात
(२) सायंकाल मानसिक लक्षणो का बढना
(३) दुःख, शोक, भय, रात्रि-जागरण आदि से उत्पन्न रोग
(४) स्पर्श न सह सकना (Soreness)
(५) गठिये में पुट्ठों और नसो का छोटा पड़ जाना और ठडी हवा मे आराम
(६) खासी मे ठंडे पानी के घूट से आराम तथा कूल्हे के जोड मे दर्द
(७) मोतियाबिन्द ठीक करता है
(८) मस्से ठीक करता है
(९) मासिक-धर्म दिन को ही होता है

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*ठडा पानी पीने से आराम
*बिस्तर की गर्मी से आराम
*हल्की हरकत से आराम
*गठिये मे नमीदार हवा से रोगी को आराम

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*खुश्क, ठडी हवा से वृद्धि
*त्वचा-रोग के दब जाने से रोग उत्पन्न हो जाना
*सायंकाल रोग मे वृद्धि

(१) बेहद कमजोरी—गला, जीभ, चेहरा, आख, मलाशय, मूत्राशय, जरायु, हाथ-पैर आदि का पक्षाघात—इस औषधि की स्पाइनल कोर्ड (मेरु-

दण्ड) पर विशेष क्रिया है, और क्योकि वही से ज्ञान-ततु भि I-भिन्न अंगो मे जाते हैं इसलिये मेरु-दड के ज्ञान-ततुओ पर ठड आदि के कारण, अथवा चिरस्थायी दु ख, शोक, भय, प्रसन्नता, क्रोध, खिजलाहट आदि के कारण जिन्हें रोगी सह नही सकता उसके भिन्न-भिन्न अगो मे से किसी भी अग का पक्षाघात हो जाता है। पक्षाघात किसी एक अग का होता है। ठड लगने या भय आदि से जब शुरु-शुरु मे किसी अग मे यह रोग होता है तब **एकोनाइट** से ठीक हो जाता है, परन्तु जब **एकोनाइट** काम नही करता, तब **कॉस्टिकम** देने की जरूरत पड जाती है। **कॉस्टिकम** मे रोग का प्रारभ बेहद कमजोरी से शुरु होता है। हाथ-पैर या शरीर के अग कापने लगते है, रोगी मानो बलहीनता मे डूबता जाता है। **जेलसीमियम** मे भी पक्षाघात मे यह कापना पाया जाता है। रोग धीमी चाल से आता है, मास-पेशियो की शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है, गले मे पक्षाघात, भोजन-प्रणालिका मे पक्षाघात, डिफथीरिया के बाद इन अगो मे पक्षाघात, आख की पलक का पक्षाघात (डा० नैश के कथनानुसार आख की पलक के पक्षाघात मे **सीपिया, कॉस्टिकम** तथा **जेलसीमियम** का त्रिक है), मलाशय, मूत्राशय, जरायु का पक्षाघात, हाथ-पैर का शक्तिहीन हो जाना, बेहद सुस्ती, थकान, अगो का भारीपन—ये सब पक्षाघात की तरफ धीरे-धीरे बढने के लक्षण हैं जिनमे **कॉस्टिकम** का प्रयोग लाभप्रद है। **कॉस्टिकम** का पक्षाघात प्राय दाई तरफ होता है। बाईं तरफ के पक्षाघात मे **लैकेसिस** की तरफ ध्यान जाना चाहिए।

एक-एक अग का पक्षाघात—पक्षाघात इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। शरीर के किसी एक अग पर इस रोग का आक्रमण होता है। उदाहरणार्थ, अगर ठडी, खुश्क हवा मे लम्बा सफर करने निकले और हवा के झोके आते जाये, तो किसी एक अग पर इस हवा का असर पड़ जाता है और वह अग सुन्न हो जाता है, काम नही करता। ठड से चेहरा टेढा हो जायगा, आवाज़ बैठ जायेगी (Aphonia), भोजन निगलने की मास-पेशिया काम नही करेंगी, जीभ लडखडाने लगेगी, आख की पलक झपकना बन्द कर देगी, पेशाब नही उतरेगा, शरीर भारी हो जायगा। इन सब लक्षणो पर **कॉस्टिकम** से अनेक रोगी झट-से ठीक होते देखे जाते हैं।

मलाशय से अपने-आप मल निकल जाना या कब्ज़ हो जाना तथा गुदा-भ्रंश—मलाशय पर पक्षाघात का असर दो तरह का हो सकता है। क्योकि मलाशय काम नही करता इसलिये या तो **एलो** की तरह मल अपने-आप बाहर निकल पडेगा, या मल निकलेगा ही नही, कब्ज़ हो जायगी। दोनो अवस्थाए पक्षाघात का परिणाम हैं। मलाशय के पक्षाघात मे इस औषधि का विशेष-लक्षण यह है कि रोगी खडे होकर ही टट्टी कर सकता है। गुदा

के पक्षाघात से मलद्वार 'गुदा-भ्रंश' (Prolapsus recti) भी हो जाता है।

मूत्राशय से अपने-आप मूत्र निकल जाना या पेशाब बन्द हो जाना—इसी प्रकार मूत्राशय के पक्षाघात का यह स्वाभाविक परिणाम है कि या तो मूत्र अपने-आप बहता रहता है या निकल जाता है क्योंकि उसे रोक रखनेवाली पेशियां काम नहीं करतीं, या कोशिश करने पर भी पेशाब नहीं होता। ये दोनों अवस्थाएं भी पक्षाघात का ही परिणाम हैं।

बच्चों का पहली नींद में पेशाब निकल जाना—कई बच्चे सोते हुए पेशाब कर दिया करते हैं, या जागते हुए भी अनजान पेशाब हो जाता है। अगर इस प्रकार पेशाब पहली नींद में ही कर दे, तो कॉस्टिकम से ठीक हो जायगा। कभी देखा जाता है कि बच्चे को पता ही नहीं चलता कि उसने पेशाब कर दिया है। जब वह हाथ लगाकर देखता है कि उसका कपड़ा भीग गया है तब वह समझता है कि पेशाब अपने-आप निकल गया।

(२) **सायंकाल मानसिक-लक्षणों का बढ़ जाना और घबराहट के साथ चेहरा लाल तथा बार-बार पाखाने की हाजत होना**—इस औषधि में मेलन्को-लिया—चित्त की उदासी आदि लक्षण पाये जाते हैं। रोगी हर समय उदास रहता है। चित्त की यह अवस्था उस समय बढ़ जाती है जब दिन का उजाला सिमटने लगता है, सायंकाल की अंधेरी उतर कर आ जाती है। रोगी उस समय डरा हुआ, घबराया हुआ रहता है। उसके मन की शान्तावस्था में बाधा पड़ जाती है और उसे कहीं शान्ति नहीं दीख पड़ती। उसे ऐसा लगता है कि कोई महान् संकट टूट पड़नेवाला है। उसकी आत्मा से आवाज निकलती है कि उसने कोई अपराध किया है। इस घबराहट में उसे बार-बार पाखाने की हाजत होती है। घबराहट में चेहरा लाल हो जाना और उस समय बार-बार पाखाने की हाजत होना कॉस्टिकम का विशेष-लक्षण है। रोगी का मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है और स्वभाव संदेहशील तथा दूसरों के दोष ढूंढनेवाला हो जाता है। ऐसे मानसिक-स्वभाव में इसका परस्पर-विरोधी लक्षण यह है कि इस चिड़चिड़ेपन के साथ उसके स्वभाव में दूसरों के दुःख के प्रति असीम समवेदना पाई जाती है। चिड़चिड़ा होना और दूसरों के प्रति सहानुभूति प्रकट करना एक अद्भुत-लक्षण है।

(३) **दुःख, शोक, भय, रात्रि-जागरण आदि से उत्पन्न रोग**—यह औषधि विशेषकर उन मानसिक रोगों के लिए अत्यन्त उपयोगी है जो दीर्घकालीन दुःख, शोक आदि से उत्पन्न होते हैं। कई दिनों तक रात्रि-जागरण से जो रोग हो जाते हैं उनके लिये भी यह लाभप्रद है। इस दृष्टि से इसकी तुलना ऑरम मेट, इग्नेशिया, कौक्युलस, लैकेसिस, नेट्रम म्यूर, ऐसिड फॉस तथा स्टैफिसैग्रिया

से की जा सकती है। इन रोगो की उत्पत्ति भी तो जीवमी-शक्ति के निम्न-स्तर पर पहुच जाने के कारण मानसिक-पक्षाघात की-सी ही समझनी चाहिये। इन रोगो पर जब रोगी सोचने लगता है तब उसकी तबीयत और विगड जाती है।

भय या त्वचा-रोग दब जाने से मृगी, तांडव, ऐंठन होना (Hysteria, Chorea and Convulsions)—कभी-कभी मृगी, ताडव तथा अकडन का रोग व्यक्ति के भीतर किसी भय के बैठ जाने से पैदा हो जाता है। भय के कारण इस प्रकार के रोगो को **कॉस्टिकम** दूर कर देता है। भय के अतिरिक्त किसी त्वचा के रोग को लेप आदि से दवा देने से भी इस प्रकार के मानसिक-लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। यौवन-काल मे किसी लडकी को मासिक-धर्म की गडवडी से भी ऐसे लक्षण हो सकते हैं। भय के मन मे गुप्त-रूप से वैठ जाने, दानो के दव जाने या मासिक के अनियमित होने से अगर मृगी, ताडव या अकडन हो, और रोगी अनजाने अपने हाथ-पैर हिलाता रहे, या सोते हुए हाथो या पैरो को झटके देता रहे, तो यह औषधि उपयोगी है।

मस्तिष्क के पक्षाघात के कारण पागलपन—प्रचड पागलपन के लिये तो **बेलाडोना** आदि दवाए हैं, परन्तु जब रोग पुराना पड जाता है और मस्तिष्क के पक्षाघात के कारण रोग ठीक होने मे नही आता, रोगी सदा चुपचाप बैठा रहता है, किसी से बात नही करता, अपने दिल मे निराश रहता है, तव पक्षाघात के कारण उत्पन्न यह पागलपन इस दवा से ठीक हो जाता है।

(४) **स्पर्श न सह सकना (स्पर्शासहिष्णुता**—Soreness)—स्पर्शासहिष्णुता इसका चरित्रगत-लक्षण है। जैसे कच्चे फोडे को छुआ जाय तो दर्द होता है, वैसा दर्द इस औषधि मे भिन्न-भिन्न स्थानो पर पाया जाता है। खासते हुए छाती मे फोडे का-सा दर्द होता है, गले मे फोडे का-सा दर्द, पेट की शोथ मे फोडे का-सा दर्द, दस्त आते हो तो धोती या साडी के स्पर्श को भी आतें नही सह सकती, इन्हें ढीला करना पडता है, मलद्वार मे भी लाली दिखाई देती है जहा छूने से दर्द होता है—स्पर्श के प्रति इस तरह की असहिष्णुता **कॉस्टिकम** का व्यापक-लक्षण है। यह स्पर्श को दर्द के कारण सह न सकना **आर्निका** की तरह का नही है। **आर्निका** मे कुचले जाने का-सा दर्द होता है, वह दर्द मास-पेशियो (Muscles) मे होता है। यह दर्द **रस टॉक्स** के दर्द के समान भी नही है। **रस टॉक्स** का दर्द मोच खाये दर्द के समान होता है, और मास-पेशियो के 'बन्धनो' तथा मास-पेशियो के 'आवरणो' (Sheaths) मे होता है। **कॉस्टिकम** का स्पर्श न सह सकने का दर्द 'श्लैष्मिक-स्तरो' (Mucous

surfaces) मे होता है, मानो वहा अधपके फोडे का-सा दर्द हो रहा हो। गले के भीतर, छाती मे, पेट के भीतर, गुदा-प्रदेश मे—इन श्लैष्मिक-स्थानो मे **कॉस्टिकम** का दर्द होता है जिसकी प्रकृति स्पर्शासहिष्णुता की है।

(५) **गठिये के रोग मे पुट्ठो और नसो का छोटा पड जाना और ठंडी हवा मे आराम होना**—गठिये के इलाज मे रोगी प्राय मालिश आदि कराते हैं, नाना प्रकार के तेलो का इस्तेमाल करते हैं, डाक्टरी इलाज मे छाले आदि डलवाते हैं। इन सब के परिणामस्वरूप जोड और अग विकृत हो जाते हैं, पुट्ठे और नसें छोटी पड जाती है, वाह या पैर सीधा नही किया जा सकता, सीधा करने से वे अकड जाते हैं, ये कष्ट सर्दी से वढ जाते हैं, रोगी का मन घवराया रहता है, उसे भय सताने लगता है कि कोई असह्य-कष्ट आने वाला है। रोग का मुख्यतौर पर आक्रमण जवडे पर होता है। गठिये मे **कॉस्टिकम** का विशेष-लक्षण यह है कि रोगी ठड या नम हवा मे ठीक रहता है। जव-जव भी नम या सर्द मौसम आती है गठिया (Arthritis) ग़ायव हो जाता है। साधारण तौर पर गठिये का रोग ठड से या नम हवा से वढना चाहिये, परन्तु **कॉस्टिकम** मे उल्टा पाया जाता है। **लीडम** मे तो गठिये का रोगी पैर को या गठिया-ग्रस्त अग को वर्फ के पानी मे रखता है, तव उसे चैन पडती है।

(६) **खासी मे ठडे पानी के घूट से आराम तथा कूल्हें के जोड़ मे दर्द**—खासी सूकी आती है, सारा शरीर हिल जाता है, रोगी कफ को वाहर निकालने का यत्न करता है, निकाल नही पाता, वह इसे अन्दर ही निगल जाता है। खासते हुए गले मे, छाती मे अधपके फोडे के समान दर्द होता है। अगर इस खासी मे ठडे पानी का घूट पीने से आराम पडे, तो **कॉस्टिकम** ही दवा है। इस कफ मे लेटने से खासी वढती है, और अद्भुत-लक्षण यह है कि खासते हुए कूल्हे के जोड मे दर्द होता है। इस औषधि मे अनेक रोग—ठडे पानी से आराम—इस 'विलक्षण-लक्षण' के आधार पर ही ठीक हो जाते हैं।

(७) **मोतिया-विन्द ठीक करता है**—इस औषधि मे व्यक्ति रोशनी को सह नही सकता। आख के आगे काले भुनगे-से उडते दीखते हैं। मोतियाविंद की यह अत्युत्तम औषधि है। देखने मे ऐसे लगता है कि रोगी धुध मे से देख रहा हो, आख के सामने एक पर्दा-सा आ जाता है डाक्टर ई० ई० केस अपनी 'सम क्लिनिकल एक्सपीरियेन्सेज़' मे **कॉस्टिकम** के मोतियाविंद पर प्रभाव के विषय मे लिखते हैं कि एक स्त्री जिसे मोतियाविंद था, और वायी आख मे तो वहुत वढ चुका था, **कॉस्टिकम** से विल्कुल ठीक हो गई। पहले उन्होंने उसे १००० शक्ति की एक ही दिन मे चार मात्राए दी। चार मास के वाद देखने से पता चला कि दृष्टि मे वहुत सुधार हुआ। तव उन्होने ४०,०००

शक्ति की एक ही दिन मे चार मात्राए दी । साल भर बाद दायी आख बिल्कुल ठीक हो गई, बायी आख मे रोग का कुछ अवशेष बच रहा । तब उन्होने रोगिणी को १ लाख की एक मात्रा दी और कुछ मास मे बायी आख का मोतियाबिंद भी जाता रहा ।

(८) **मस्से ठीक करता है**—इस औषधि मे सारे शरीर पर मस्से पैदा करने की शक्ति है । शरीर पर, आख की पलको पर, चेहरे पर, नाक पर यह मस्से पैदा करती है, इसलिये मस्सो को यह दूर भी करती है । डा० टायलर मस्सो के विषय मे अपना अनुभव लिखते हुए कहती है कि उनके फार्म मे बछडो के मुख, नाक और कानो पर जब मस्से निकलने लगे, तब उनके पिता ने निम्न-शक्ति का **कॉस्टिकम** पानी मे घोल कर उन्हें पिला दिया जिससे सबके मस्से झड गये । **थूजा** भी मस्सो की औषधि है, परन्तु **थूजा** के मस्से ज्यादातर गुदा-द्वार और जननागो पर होते हैं ।

(९) **मासिक-धर्म दिन को ही होता है**—मासिक-धर्म सिर्फ दिन को होता है, लेटने से बन्द हो जाता है, रात को नही होता—यह इसका विचित्र-लक्षण है । **कैक्टस** तथा **लिलियम** मे भी ऐसा ही होता है । **मैगनेशिया कार्ब, अमोनिया म्यूर** और **बोविस्टा** मे मासिक सिर्फ रात को लेटने से होता है, चलने-फिरने से बन्द हो जाता है, **क्रियोजोट** मे भी चलने-फिरने से मासिक-धर्म बन्द हो जाता है ।

(१०) **इस औषधि के अन्य-लक्षण**—

I **रोगी आग से जलने के बाद ठीक नहीं हुआ हो**—अगर रोगी कहे कि जब से वह आग से जला है तब से वह ठीक नही हुआ, तब इस दवा की तरफ ध्यान जाना चाहिए ।

II **पुराना घाव बार-बार फूटे**—अगर पुराना घाव ठीक हो-होकर बार-बार फूटे तब यह लाभप्रद है ।

III **मोतियाबिंद**—मोतियाबिंद मे कुछ दिन प्रतिदिन ३० शक्ति की एक मात्रा देने से लाभ हुआ है ।

IV **अगर कोई दवा लाभ देना बन्द कर दे**—अगर यह देखा जाय कि रोगी दवा देने से कुछ देर ठीक रहता है, फिर वही हालत हो जाती, तो **सोरिनम**, तथा **सलफर** की तरह **कॉस्टिकम** को भी ध्यान मे रखना उचित है ।

V **प्रात. गला बंठना**—अगर प्रात काल आवाज़ बन्द रहे तो **कॉस्टिकम**, अगर सायकाल आवाज बन्द हो तो **कार्बो वेज** और **फॉसफोरस** को ध्यान मे रखना चाहिए ।

(११) **कॉस्टिकम का सजीव-चित्रण**—**कॉस्टिकम** का रोगी जकडी मास-पेशियो का, कमज़ोर, ऐंठन आदि रोगो से पीडित, श्वास-प्रणालिका तथा

मूत्रमार्ग के रोगो का शिकार होता है। रोगी को किसी एक अग का पक्षाघात होता है। बहुधा पक्षाघात शरीर के दायें भाग मे होता है। रोगी सर्दी से ज्यादा दु ख मानता है। सर्दी लगने से चेहरा, गला, जीभ आदि कोई अग पक्षाघात से पीडित हो जाता है। आख की पलक लटक जाती है। रोगी के खासते हुए उसका मूत्र निकल जाता है। खासने पर ठडे पानी का घूट पीने से खासी शान्त हो जाती है। बैठे हुए नही, परन्तु खडे होकर ही मल-त्याग कर सकता है। बच्चो की पहली नीद मे अनजाने पेशाब हो जाता है। शोक, दु ख, भय, रात्रि-जागरण से अनेक उपद्रव उठ खडे होते हैं। इसी कारण रोगी को मृगी, ताडव या ऐंठन पड जाती है। रोगी छाती, गले, पेट, मलमार्ग के श्लैष्मिक-स्थानो मे अधपके फोडे का-सा दर्द अनुभव करता है। त्वचा के रोग, या दाने निकलने के रोग मे दाने दब जाने से मानसिक विकार, पागलपन तक हो सकता है। खुश्क, ठडी हवा से रोग बढता है यद्यपि खासी को कुछ देर के लिये ठडे पानी से आराम मिलता है।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—शक्ति ३ से ३०, पुराने रोगो मे उच्च-शक्ति सप्ताह मे एक या दो बार। **फॉसफोरस** को **कॉस्टिकम** से पहले या बाद को नही दिया जाता। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिए है। डा० कैन्ट के अनुसार **कॉस्टिकम, कौलोसिन्थ** तथा **स्टैफिसैग्रिया** या **कौलोसिन्थ, कॉस्टिकम** तथा **स्टैफिसैग्रिया** का त्रिक है, जो एक-दूसरे के बाद लक्षणानुसार दिये जाते हैं। डा० कैन्ट के अनेक त्रिको का वर्णन हमने **कैलि सल्फ** मे दिया है।

सिएनोथस (CEANOTHUS)

(१) **पेट मे बाईं तरफ तिल्ली (स्प्लीन) मे दर्द**—होम्योपैथी मे कई औषधिया ऐसी हैं जिनका किसी विशेष अग पर विशेष-प्रभाव है। उन्ही मे से **सिएनोथस** है। इस का तिल्ली पर विशेष-प्रभाव है। भारत मे सब-कोई जानते हैं कि मलेरिया के निरन्तर-आक्रमण से तिल्ली बढ जाया करती थी। डा० बर्नेट का कथन था कि इस औषधि से बढी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है। उन्होने अपनी पुस्तक 'डिजीज़ेज़ ऑफ दी स्प्लीन एण्ड देयर रेमेडीज़' मे इस औषधि पर विशेष बल दिया है। तिल्ली बढ जाने से पेट के बाईं तरफ के नीचे के हिस्से मे दर्द होता है। यह दर्द उपरालु न होकर अन्दर गहराई मे हुआ करता है। इसका कारण तिल्ली का बढ जाना है। कभी-कभी निदान करने वाले बाईं तरफ होने के कारण इस दर्द को हृदय-शूल समझ लेते हैं। डा० बर्नेट ने तिल्ली बढने के अनेक रोगी, जिन्हें डाक्टरो ने हृदय-शूल के रोगी घोषित कर दिया था, इस औषधि से आश्चर्यजनक तौर पर ठीक किये। बाईं तरफ के दर्द के सम्बन्ध मे निम्न-औषधिया लाभप्रद हैं

1 गले के दोनो तरफ की हड्डियो—कटास्थि—(कौलर-बोन)—मे से

बाईं तरफ की हड्डी के नीचे के दर्द मे **माइटंस कम्यूनिस**—३ शक्ति। यह दर्द टी० वी० मे पीछे बायें स्कन्ध-फलक (shoulder blade) तक जाता है।

ii. कॉलर-बोन के कुछ नीचे बाईं तरफ दर्द हो तो **सुम्बुल** का यह क्षेत्र है।

iii इसमे भी कुछ नीचे बाईं तरफ दर्द हो, तो **फ्लोरिक ऐसिड** का क्षेत्र है। इस मे छाती मे भारीपन महसूस होता है, सास लेने मे कठिनाई होती है।

iv. यह दर्द अगर बाईं तरफ होता हुआ भी अधिकतर दाईं तरफ़ हो तो **ऑरम** का क्षेत्र है।

v स्त्री की बाईं छाती के ठीक नीचे दर्द होता हो, तो **सिमिसिफ्यूगा** का क्षेत्र है।

vi तिल्ली मे बाईं तरफ, पेट के निम्नस्तर मे दर्द होता हो तो **सिएनोथस**। तिल्ली के दर्द मे जिन अन्य औषधियो की तरफ ध्यान देना आवश्यक है, वे हैं: **चायना, चैलीडोनियम, बरबेरिस, चिनिनम सल्फ** तथा **कोनायम**। अगर रोग की लक्षण-समष्टि मे पेट के नीचे बाईं तरफ का दर्द—तिल्ली का दर्द—रोग का आवश्यक अग हो, तो उक्त औषधियो मे से कोई-एक रोग को दूर कर देगी, परन्तु डा० बर्नेट की विशेष-आस्था **सिएनोथस** पर है। जैसे **सिएनोथस** का विशेष प्रभाव तिल्ली पर है, वैसे **चैलीडोनियम** का विशेष प्रभाव जिगर पर है।

(२) **शक्ति**—१C

सिड्रन (CEDRON)

(१) **नियत समय पर रोग का प्रकट होना**—अगर कोई रोग घडी के अनुसार ठीक नियत समय पर प्रकट होता है, समय टालता नही, तो वह **सिड्रन** से शान्त हो जायगा। ऐसा रोग किसी प्रकार का भी स्नायु-शूल हो सकता है, सविराम ज्वर हो सकता है, मृगी, रज स्राव तथा प्रदर से सबध रखने वाले रोग हो सकते हैं, मलेरिया-ज्वर हो सकता है। इस प्रकार रोग का नियत समय पर प्रकट होना **अरेनिया** मे भी पाया जाता है, परन्तु **अरेनिया** गर्मी मे ठीक रहता है, सर्दी या बरसात मे रोग प्रकट होता है, **सिड्रन** का रोग सब ऋतुओ मे होता है। इसके अतिरिक्त **अरेनिया** मे ज्वर तो ठीक घडी के समय पर आएगा, परन्तु शीत की अधिकता होगी। उत्ताप कहने भर को होगा, **सिड्रन** मे शीत के बाद उत्ताप की भी तेज़ी होती है। **सिड्रन** का बुखार दलदल वाली नीची जगहो पर ज्यादा पाया जाता है। रोगी गर्म पानी मागता है।

(२) **एक दिन छोड़कर ११ बजे सिर-दर्द होना**—प्रतिदिन ११ बजे सिर-दर्द होना **नैट्रम म्यूर** का लक्षण है, एक दिन छोडकर ११ बजे सिर-दर्द होना **सिड्रन** का लक्षण है। खासकर यह सिर-दर्द बाई आख के ऊपर की नसों मे होता है।

(३) **सभोग के बाद तांडव (कोरिया) या स्नायु-शूल का आक्रमण**—स्त्री को सभोग के बाद अगर ताडव का आक्रमण होता हो, तो इस औषधि से दूर हो जायगा। पुरुष को भी अगर सभोग के बाद स्नायु-शूल होता हो, तो यह औषधि लाभप्रद है।

(४) **रजोधर्म के ५-६ दिन पूर्व प्रदर-स्राव**—स्त्रियो के सबध मे रजोधर्म से ५-६ दिन पहले प्रदर-स्राव का होना भी इसका लक्षण है।

(५) शक्ति—६, ३०

कैमोमिला (CHAMOMILLA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) **मानसिक-लक्षण**—क्रोध, चिड-चिड़ापन (बच्चा गोद मे रहना चाहता है)	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) **दर्द**—जरूरत से ज्यादा अनुभव करना	***गोद मे लेने से चैन पडना**
(३) **बच्चो की दात निकलने के समय की शिकायतें (कान का दर्द, पेट का दर्द, ऐंठन, हरे घास के-से दस्त)**	***न गर्म, न सर्द मौसम में अच्छा अनुभव करना**
	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
	***क्रोध से लक्षणो का बढ़ना**
	***ठंडी हवा से लक्षणों का बढ़ना**
	***दांत निकलते समय परेशानी**
	***रात को कष्ट का बढ़ जाना**

(१) **मानसिक-लक्षण—क्रोध, चिड़चिडापन**—यह औषधि बच्चो के दात निकलने के समय की शिकायतो के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है, परन्तु मुख्य तौर पर इसके लक्षण मानसिक है। दात निकलने के समय भी जो लक्षण प्रकट होते हैं हैं उनके आधार मे दात काटने के कारण जो खिजाहट, दर्द, परेशानी आदि होती है वही उन लक्षणो को उत्पन्न करती है। इसे क्रोधकी मुख्य दवा कहा जा सकता है। क्रोध के आवेश से जो रोग उत्पन्न हो सकते हैं, वे इसके क्षेत्र मे हैं। क्रोध और चिडचिडेपन मे कोई ज्यादा अन्तर नही है। क्रोधी व्यक्ति हर बात मे चिडचिडा हो जाता है, और जब कोई चिडचिडाता हो तो उसे टोकने से उसे क्रोध आ जाता है। हम **बेलाडोना** पर लिखते हुए पहले ही लिख चुके हैं कि **एकोनाइट मे रक्त-सचार मे** तूफान (Turmoil in circulation) आ जाता है,

बेलाडोना मे मस्तिष्क मे तूफान (Turmoil in brain) आ जाता है, और कैमोमिला में स्वभाव मे तूफान (Turmoil in temper) आ जाता है। डा० क्लार्क ने इन तीनों दवाओ को 'Nursery A B.C. drugs' कहा है। A का अर्थ एकोनाइट, B का अर्थ बेलाडोना और C का अर्थ कैमोमिला। बच्चो के रोगो मे इन तीन दवाओ का अधिक प्रयोग होता है।


डा० जॉन एच० क्लार्क
(१८६३—१९३१)

बच्चों मे कैमोमिला के मानसिक-लक्षण—बच्चा जो चीज मागता है फेंक देता है, गोद मे ही रहना चाहता है—कैमोमिला के बच्चो को पहचानना कठिन नही है। वह खुद तो बोल नही सकता, परन्तु अपनी चेष्टाओ से साफ बोल रहा होता है कि उसे कितना क्रोध आ रहा है, कितनी चिडचिडाहट है। वह कभी इस चीज की तरफ हाथ बढाता है, कभी उस चीज की तरफ, और जब उसे वह चीज पकडा दी जाती है तब उसे दे पटकता है, लगातार चिल्लाया करता है। दात निकलने की पीडा और खीझ के कारण उसके भीतर जो खिजाहट पैदा हो रही होती है, उसी से उसकी यह परेशानी होती है। उसे स्वय नही मालूम होता कि वह क्या चाहता है परन्तु होम्योपैथ को पता होता है कि उसे क्या चाहिये। उसे कैमोमिला की ३० शक्ति की एक मात्रा की जरूरत होती है। इस मीठी गोली के मुह मे जाते ही ५ मिनट मे वह शान्त हो जाता है।

बच्चे के मा-बाप जबतक उसे गोद मे लिये रहते हैं तबतक वह चुप रहता है, अन्यथा चिल्लाता रहता है। ज्यो ही मा उसे गोद से उतार कर पालने में डालती है, त्यो ही वह फिर-से चिल्लपो मचाने लगता है। गोद मे सें उतारने से चिल्लाने लगना इस औषधि का विशेष-लक्षण है। अगर बच्चे के लिये नर्स रखी गई है, तो उस बेचारी को हर समय उसे गोद मे लटकाये रखना पडता है। कभी-कभी ऐसी हालत भी आ जाती है कि मा की गोद से वह बाप की गोद मे जाने को हाथ फैलाता है, बाप ले ले तो नर्स की तरफ हाथ बढाता है, उसकी गोद मे जाकर भी उसे शान्ति नही मिलती, तब फिर मा-बाप की तरफ उनके पास जाने को देखता है।

युवा या युवती मे कैमोमिला के मानसिक-लक्षण—क्रोध तथा चिडचिडापन—यही नही कि बच्चे के मानसिक-लक्षणों पर इस औषधि का प्रभाव

है, युवा तथा युवती भी जब क्रोध या चिड़चिड़ेपन के शिकार हों तब इस औषधि से चमत्कार हो जाता है। क्रोध की अन्य औषधियां हैं एकोनाइट, ब्रायोनिया, कौलोसिन्थ, इग्नेशिया, लाइकोपोडियम, नक्स वोमिका तथा स्टैफिसैग्रिया। लक्षणानुसार इन्हें देने से आवेश में आये हुए मनुष्य का क्रोध शान्त हो जाता है।

कैमोमिला की रोगिन-स्त्री एकदम उबल उठती है, गुस्सा करने लगती है, गाली बकने लगती है। यह नहीं कि वह अनुभव नहीं करती कि वह आपे से बाहर हो गई है, वह महसूस करती है कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, परन्तु वह अपने स्वभाव को रोक नहीं सकती, फिर बार-बार वैसा ही करती है। अपने निकटतम सम्बन्धियों, मित्रों तक को चिड़चिड़ाहट भरे उत्तर देती है। एक चिकित्सक का कहना है कि जब पति तथा पत्नी एक-दूसरे से झगड़ते रहा करें, झट-से क्रोधपूर्ण तथा चिड़चिड़ाहटभरा उत्तर देने के आदी हो जायें, तो उन्हें समझाने की अपेक्षा कैमोमिला देना ज्यादा सफल हो सकता है।

इन्फ्लुएन्ज़ा, दमा आदि में चिड़चिड़ापन—डा० टॉयलर लिखती हैं कि एक रोगी इन्फ्लुएन्ज़ा से पीड़ित था। उसे ठीक होने में देर लग रही थी। वह एकदम इतना चिड़चिड़ा हो गया कि हद से बाहर। **कैमोमिला** से उसका चिड़चिड़ापन ही नहीं दूर हो गया, उसका ज्वर भी उतर गया। इसी प्रकार उन्होंने दमे के एक रोगी का जिक्र किया है। रोगी को दमा था, परन्तु वह बेहद चिड़चिड़ा हो रहा था। **कैमोमिला** से उसकी चिड़चिड़ाहट दूर हो गई। हनीमैन का कथन है कि जो रोगी अपने कष्ट को सहनशीलता से बर्दाश्त कर रहा हो, उसे न तो **एकोनाइट** देना चाहिए, न **कैमोमिला**। सहनशीलता इन दोनों औषधियों से दूर रहती है। जिस रोग में **कैमोमिला** निर्दिष्ट होगा, उसमें कुछ ही मिनटों में यह अपना प्रभाव दिखा देगा। इसके अतिरिक्त यह भी स्मरण रखने की बात है कि **कैमोमिला** में रोग कुछ भी हो, अगर रोगी की मानसिक दशा पुकार-पुकार कर **कैमोमिला** कहती है, तो वह रोग इस दवा से दूर हो जायगा। मुख्यतः, यह औषधि मन की औषधि है, जहां से सब रोगों की उत्पत्ति होती है। यह देखा गया है कि व्यक्ति क्रोध में इतना चिड़चिड़ा हो जाता है कि इसी से उसे पीलिया हो जाता है, माता क्रोध में बच्चे को दूध पिलाती है, तो वह दूध जहरीला हो जाता है। हनीमैन लिखते हैं कि कभी-कभी व्यक्ति को झुंझलाहट में इतना क्रोध आ जाता है कि उसे पित्त-ज्वर हो जाता है, चेहरा गर्म, बेहद प्यास, मुंह कड़वा, जी मचलाना, बेचैनी आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। अगर क्रोध के कारण ये लक्षण उत्पन्न हों, तो **कैमोमिला** से सारा क्रोध कुछ ही देर में शांत हो जाता है। क्रोध ही नहीं, अगर किसी रोग के साथ चिड़चिड़ापन चिपटा हुआ हो, तब भी इस से आराम होता है। एक रोगी गठिये से पीड़ित था, सो नहीं सकता था, रात को उठ कर घूमा करता था, इतना चिड़चिड़ा और बदमिजाज कि हद से

वाहर। उसे **कैमोमिला २००** की एक मात्रा ने नीद भी दी, और सब तरह से वह अपने को बेहतर अनुभव करने लगा।

(२) **दर्द—जरूरत से ज्यादा अनुभव करना**—दर्द शान्त करने के लिये यह औपधि प्रसिद्ध है। रोगी थोडे से भी दर्द मे तिल का ताड वना देता है, ज़रा-सा काटा चुभा कि आसमान सिर पर उठा लेता है। दर्द मे कराहता है, कहता है 'ओह! मैं सहन नही कर सकता।' दाढ निकालने के वाद एक रोगी दर्द के मारे पैर पटक रहा था, चैन से नहीं बैठता था। रोगी प्राय दर्द मे झुझलाने लगता है। ऐसे दर्द मे अगर उसे **कैमोमिला २००** की एक मात्रा दे दी जाय, तो वह अपना सब कष्ट भूल जाता है और उसकी दर्द-विषयक शिकायतें जाती रहती हैं।

दर्द के साथ या दर्द के पीछे सुन्नपन—इसके दर्द का एक विशेष-लक्षण यह है कि या तो दर्द के साथ, या दर्द के वाद, जिस अग मे दर्द होता है उसमे सुन्नपन आ जाता है। डा० नैश एक रोगी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि अपने प्रारम्भिक दिनो मे एक मरीज़ से वास्ता पडा जिसके वायें कन्धे मे गठिये का दर्द था। उसे **एकोनाइट, ब्रायोनिया, रस टॉक्स** दिया गया परन्तु कुछ लाभ न हुआ। अन्त मे, एक अनुभवी होम्योपैथ ने इस दर्द को **कैमोमिला** से ठीक कर दिया। जव डा० नैश ने इन होम्योपैथ से पूछा कि उन्होने किस लक्षण पर **कैमोमिला** दिया, तो उन्होंने उत्तर दिया—'दर्द के साथ सुन्नपन'। इस रोगी मे दर्द के वाद अग सुन्न हो जाता था। इस औपधि से वह भी ठीक हो गया।

(३) **वच्चो की दात निकलते समय की शिकायतें—कान का दर्द, पेट का दर्द, ऐंठन, हरे पालक के साग के-से दस्त तथा नींद न आना**—जैसा हमने पहले कहा, **कैमोमिला** दात के दर्द के समय की शिकायतो को दूर करने के लिये घर-घर प्रसिद्ध हो चुका है। नि सदेह इस अवस्था की शिकायतो के लिये यह अमृत-तुल्य है, परन्तु इन शिकायतो के साथ वच्चे का चिडचिडा होना लाज़मी है। हनीमैन के इस कथन को भुलाया नही जा सकता कि शान्त, अनुद्विग्न वच्चे की शिकायतो मे **एकोनाइट** या यह औपधि निर्दिप्ट नही है।

दांत का दर्द—दात के दर्द मे इसका विलक्षण-लक्षण यह है कि यद्यपि रोगी ठड से भय खाता है, गर्मी पसन्द करता है, तो भी दात के दर्द मे ठडी चीज़ मुह मे रखने या ठडा पानी मुह मे लेने से दात का दर्द शात हो जाता है।

कान का दर्द—दात निकलते समय वच्चो को कान का दर्द भी हुआ करता है। कान के दर्द मे वच्चा अपनी छोटी-सी मुट्ठी को कान के पास ले जाता है, चिल्लाता है। वच्चे की आवाज़ से ही माता पहिचान लेती है कि वह तीव्र कर्ण-शूल से दुखी हो रहा है।

पेट का दर्द—वच्चे को पेट तथा आतो के फूल जाने से दर्द होता है। वह दोहरा हो-होकर लोटने लगता है, रोता है, चिल्लाता है, गोद मे रहना चाहता

है, झुंझलाया रहता है। कभी इस चीज़ को लेना चाहता है, कभी उसको, परन्तु जो भी चीज़ उसके हाथ में दी जाय, उसे फेंक देता है। यह **कैमोमिला** का उदर-शूल है, जो दांत के निकलने या उसके बिना भी हो सकता है।

ऐंठन (Convulsions)—दांत निकलते समय बच्चे को ऐंठन भी होने लगती है। बच्चा अकड़ जाता है, आंखें घुमाने लगता है, चेहरा विकृत हो जाता है, मांस-पेशियां फड़कने लगती हैं, वह हाथ-पैर पटकता है, अंगूठा मोड़ लेता है, शरीर पीछे की तरफ अकड़ाता है। जिन बच्चों को दांत निकलते समय तीव्र-वेदना सहनी पड़ती है उनकी ऐंठन का यह रूप है जिसे यह औषधि शांत कर देती है।

हरे पालक के साग के-से दस्त—गोद के बच्चे को इस समय हरे, पतले, लेसदार और प्रायः कतरे हुए पालक के साग की तरह के दस्त आते हैं।

नींद न आना—बच्चे के पेट में हवा भर जाने से दर्द हो, तो उसे नींद नहीं आती। नींद में चौंक कर उठ जाता है। इस प्रकार नींद न आने पर **कैमो-मिला** देना चाहिये। कभी-कभी बच्चा रात को उठकर खेलने लगता है, कोशिश किये भी सोता नहीं, बिल्कुल जागरूक हो जाता है। ऐसी हालत मस्तिष्क के किसी आगन्तुक रोग की सूचक होती है और यह दांतों की वजह से भी हो सकता है। इस समय **सिप्रीपीडियम** के मूल-अर्क के ४-५ बूंद गर्म पानी में देने से लाभ होता है, या निम्न-शक्ति **कैमो** की मात्रा दी जा सकती है।

(४) इस औषधि के अन्य लक्षण—

(i) **गर्मी से दांत का दर्द बढ़ना**—रोगी स्वभाव से ठंडे मिजाज़ का होता है इसलिए ठंड पसन्द नहीं करता। यह तो उसका 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) है, परन्तु 'विशिष्ट-लक्षण' (Particular symptom) यह है कि दांत के दर्द में ठंडे पानी से आराम आता है। यह बात सिर्फ दांत के दर्द के विषय में ही ठीक है क्योंकि कान के दर्द में तो गर्मी से ही उसे आराम मिलता है।

(ii) **पैरों की जलन**—पैरों की जलन के लक्षण को सुनते ही कई लोग **सलफर** देने की जल्दी करते हैं, परन्तु **कैमोमिला** के मरीज के भी पैरों में जलन होती है।

(iii) **युवा-व्यक्ति का गठिये का दर्द**—यह समझना कि **कैमोमिला** सिर्फ बच्चों के दर्द में काम आता है, गलत है। युवा-व्यक्ति के दर्द, विशेषतः गठिये के दर्द में भी यह वैसे ही काम करता है जैसे बच्चे के दर्द को शान्त करने में। दर्द इतना होता है कि रोगी शान्त नहीं बैठ सकता, इधर-से-उधर फिरता है, बिस्तर में भी दर्द के कारण करवटें बदलता रहता है। **कॉफ़िया** और **कैमोमिला** को होम्योपैथी की अफीम कहा जाता है।

iv. **नौ बजे रोग की वृद्धि**—ज्वर मे प्रात नौ बजे रोग बढ जाता है, दर्द भी नौ बजे बढता है, परन्तु दर्द प्राय नौ बजे शाम को बढता है।

v. **एक गाल लाल दूसरा पीला**—बच्चे मे यह लक्षण पाया जाय तो उसकी जो भी शिकायत होगी इस औषधि मे दूर होगी।

(५) **कैमोमिला का सजीव-चित्रण**—रोगी मे मानसिक-लक्षण प्रधान होते हैं, प्राय मानसिक-लक्षण ही प्रधान होते हैं। बच्चे, पुरुष-स्त्री—सब मे इसके लक्षण पाए जाते हैं। रोगी बडा क्रोधी और चिडचिडा होता है, साधारण-सी पीडा को असह्य कहता है। बच्चा चिडचिडाता रहता है, कभी एक और कभी दूसरी चीज़ के लिए हाथ बढाता है, दिए जाने पर पटक देता है। गोद मे ही रहना चाहता है। एक गाल लाल, दूसरा पीला दिखाई देता है। दात किट-किटाता है, कान के दर्द मे कान पर हाथ रखता है, पेट मे दर्द होता है। हरे दस्त होते हैं, सोते-सोते चौंक पडता है। डा० टायलर लिखती हैं कि इसका नाम अगर 'cannot bear it' रख दिया जाय तो ठीक होगा क्योकि इसका रोगी न अपने को सह सकता है, न दूसरे को सह सकता है, न दर्द को सह सकता है, न किसी चीज़ के दिये जाने को सह सकता है, और न, न दिए जाने को सह सकता है—यह है मूर्त तथा सजीव चित्रण कैमोमिला का।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

चेलिडोनियम (CHELIDONIUM)

(१) **दाहिने स्कन्ध-फलक के निचले अश मे लगातार दर्द**—जैसे **सियोनोथस** तिल्ली की दवा है, वैसे यह जिगर की बीमारी की दवा है। इसका असर बहुत गहरा नही होता, परन्तु जिगर पर इसका विशेष प्रभाव है, और इसका मुख्य-लक्षण है पीठ के पीछे दाहिने कन्धे की तरफ जो अस्थि-फलक है, उसके नीचे लगातार दर्द होते रहना। यह दर्द जिगर की बीमारी के कारण होता है। दर्द हल्का भी हो सकता है, तेज़ भी। इस लक्षण के साथ पीलिया, खासी, अतिसार, न्यूमोनिया, रजोधर्म, थकावट आदि की कोई भी शिकायत हो सकती है, परन्तु अगर किसी भी शिकायत के साथ उक्त-लक्षण मौजूद हो, तो यह औषधि लाभ करेगी। हो सकता है कि रोगी का मुख का स्वाद कडवा हो, जीभ बिल्कुल पीली हो, आख की सफेदी मे पीलिमा आ जाय, चेहरा, हाथ, त्वचा पीली पड जायें, मल सफेद या पीला हो, मूत्र पीला हो, भूख न रहे, जी मतलाये, पित्त की उल्टी हो। ऐसी हालत मे अगर दाहिने कन्धे के अस्थि-फलक के निचले हिस्से मे दर्द न भी हो, तो भी जिगर की बीमारी होने के कारण **चेलिडोनियम** फायदा

करेगा क्योंकि कार्डुअस की तरह यह भी मुख्य तौर पर जिगर की बीमारी की ही दवा है। अगर रोग पुराना हो गया, तो लाइको लाभप्रद रहता है।

कभी-कभी दाहिने अस्थि-फलक के निचले अंश में दर्द होने के बजाय बायें अस्थि-फलक के निचले अंश में भी वैसा ही दर्द हो जाता है। ऐसे दर्द में औग्जैलिक ऐसिड लाभ करता है। डा० नैश का अनुभव है कि चेलिडोनियम के स्थान में चेनोपोडियम ग्लाउसाई लाभ करता है। एक दवा चेनोपोडियम ऐनथेलमिनिकम भी है, परन्तु इन दोनों चेनोडियम में ग्लाउसाई वाला चेनोपोडियम ही बायें कन्धे की फलकास्थि के निम्न-भाग के दर्द को ठीक करता है, दूसरा ऐनथेलमिनिकम वाला चेनोपोडियम तो चेलिडोनियम की तरह दायीं तरफ के दर्द पर ही प्रभाव करता है। डा० नैश ने अपने अनुभव में लिखा है कि चेनोपोडियम ग्लाउ से उन्होंने बाएँ कन्धे का इस प्रकार का कई साल पुराना दर्द ठीक किया था। इस बाईं तरफ के दर्द में सैंगिवनेरिया भी लाभप्रद है। हां, दायीं तरफ के दर्द में चेलिडोनियम ही लाभ करता है, यह औषधि मुख्यत शरीर के दायें हिस्से पर ही प्रभाव करती है।

(२) **चेलिडोनियम और लाइकोपोडियम**—ये दोनों दायीं तरफ की औषधियां हैं। अनेक लक्षणों में इनकी समानता पायी जाती है। चेलिडोनियम स्वल्पकालिक दवा है, इसका असर उतना गहरा नहीं होता। अगर इस औषधि से जिगर का रोग ठीक न हो, तब लाइको देने की जरूरत पड जाती है। वह गहराई में जाने वाली दवा है। जिगर के रोग को दूर करके जिस काम को चेलिडोनियम अधूरा छोड देती है, उसे लाइको पूरा कर देती है। लाइको की तरह इस औषधि का रोगी तेज-गर्म चीज पीना या खाना चाहता है।

(३) **पित्त-पथरी का दर्द (Gall-stone colic)**—पित्ताशय से पित्त की पथरी छोटी-सी प्रणालिका में जब फंस जाती है, तो रोगी को असीम पीडा होती है। चेलिडोनियम इस प्रणालिका को खोल देती है और पित्त-पथरी बिना दर्द के आगे निकल जाती है।

(४) **दायीं तरफ का न्यूमोनिया**—यह औषधि दायीं तरफ प्रभाव करती है। दाईं आंख, दायां फेफडा, दाईं टांग, दाईं जांघ, न्यूमोनिया में भी इसका दायें फेफडे पर प्रभाव दीखता है। बच्चों के रोगों की पुस्तकों में न्यूमोनिया का जिक्र आता है, वहां यह भी लिखा होता है कि चेलिडोनियम का न्यूमोनिया की औषधियों में विशेष स्थान है। डा० केन्ट का कहना है कि न्यूमोनिया में इसका श्री-गणेश दायें फेफडे से होता है, दायीं तरफ दर्द शुरु होता है, तब कुछ बायें हिस्से की तरफ चला जाता है। लाइको का भी तो दायें से बायें जाने का लक्षण है। इस न्यूमोनिया का जिगर की विकृति से कुछ-न-कुछ संबंध होता है। न्यूमोनिया में भी दायें स्कन्ध-फलक के निचले हिस्से में दर्द हो सकता है।

(५) **आख के रोगों के लिये**—श्रीमती टायलर के अनुसार डा० कलपेपर लिखते हैं कि ग्रीक-भाषा मे 'चेलिडोन' का अर्थ है—'चिडिया'। वे लोग कहते थे कि यदि चिडिया के वच्चे की आख चली जाय, तो **चेलिडोनियम** से उसके मा-वाप उसकी नयी आख वना सकते है। तभी 'चेलिडोन' से 'चेलिडोनियम'-शब्द वना है। कलपेपर का कहना है कि इसकी मरहम से आख का हर रोग दूर हो जाता है, मोतिया तक।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—मूल-अर्क (रोगी ठडा पानी नही पी सकता। उवलता-सा गर्म पेय हो तभी पेट मे ठहरता है। रोगी 'सर्द'—Chilly—है। **ऐनाकार्डियम, पेट्रोलियम, ग्रैफाइटिस** की तरह खाली पेट नही रह सकता)

चिनिनम आर्सेनिकम (CHININUM ARS)

(१) **थकावट तथा कमजोरी दूर करने की दवा**—यह दवा कुनीन और आर्सेनिक से वनती है। कुनीन से वनने के कारण कई लोग इसका उच्चारण 'चिनिनम' की जगह 'किनिनम' भी करते हैं। थकावट तथा कमजोरी इसका विशेष-लक्षण है। वैसे तो होम्योपैथी मे टॉनिक नाम की कोई चीज नही है। व्यक्ति की जो 'धातुगत-औषधि' (Constitutional drug) हो, वही उसके लिये टॉनिक का काम करती है क्योकि वह व्यक्ति के एक रोग को ही नही दूर करती, वह उसकी जीवनी-शक्ति को जगाती है। टॉनिक का काम भी जीवनी-शक्ति का जागरण ही है। परन्तु थकावट तथा कमजोरी के लक्षणो मे **चिनिनम आर्स** का प्रयोग टॉनिक की तरह से भी किया जाता है। डिफथीरिया, मलेरिया, स्नायु-शूल आदि रोगो मे जव रोग लम्वा हो जाता है, रोगी शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ नही करता, तव इस औषधि से लाभ होता है। डा० वर्नेट अपनी पुस्तक 'क्युरेविलिटी ऑफ ट्यूमर्स वाई मैडिसिन' मे एक रोगी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि **नक्स वोमिका** १x तथा **कैलकेरिया हाइपोफोसफोरोसा** ३ x को लक्षणानुसार 'alround pick-me-up' के तौर से उन्होने दिया। हम **चायना** के प्रकरण मे देखेंगे कि वह भी एक विशेष प्रकार की कमजोरी को दूर करता है।

(२) **दमे के समय-समय पर दौर**—दमे के दौर जो समय-समय पर पडते हैं, जिन से रोगी नितान्त असमर्थ तथा वलहीन हो जाता है, उनमे इस औषधि से लाभ होता है।

(३) **अनिद्रा**—स्नायु-सम्वन्धी कारणो से नीद न आती हो, तो ६ शक्ति की **चिनिनम** से लाभ होता है। यह अनिद्रा विशेषकर मध्य-रात्रि से पूर्व होती है।

(४) **शक्ति**—३, ६, ३०, २००

चायना या सिनकोना (CHINA OR CINCHONA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) होम्योपैथी का आविष्कार सिनकोना से हुआ	लक्षणों में कमी (Better) *जोर से दबाने से रोगी को आराम *गर्मी से आराम अनुभव करना
(२) स्राव जाने के कारण अत्यधिक दुर्बलता—रक्तस्राव, प्रदर, अतिसार, वीर्यपात आदि से उत्पन्न होने वाली दुर्बलता को दूर करता है	
(३) सविराम-ज्वर (intermittent fever)	
(४) ज्वर में चायना, युपेटोरियम, आर्स, कैपसिकम, साइमेक्स की तुलना	लक्षणों में वृद्धि (Worse)
(५) सम्पूर्ण पेट में वायु भर जाना, डकार से आराम न होना	*किसी रस के स्राव से रोग में वृद्धि *रक्त तथा रस के क्षय से वृद्धि
(६) स्पर्श न सह सकना, परन्तु जोर से दबाने से सह सकना	*थोड़े से स्पर्श को न सह सकना *ठंड को न सह सकना
(७) किसी विचार से छुटकारा न पा सकना	*दूध तथा फलों से रोग होना *कुछ दिन छोड़ कर रोग होना

(१) होम्योपैथी का आविष्कार सिनकोना से हुआ—हनीमैन ने होम्योपैथी का आविष्कार कैसे किया इसके विषय में वे लिखते हैं "मैंने पहले-पहल १७९० में अपने ऊपर सिनकोना की छाल का यह देखने के लिये परीक्षण किया कि इसका सविराम-ज्वर (Intermittent fever) से क्या संबंध है। इस परीक्षण से मेरी आंखों के सामने उस उष:काल का प्रकाश हुआ जिसका तेज उत्तरोत्तर बढ़ता गया, बढ़ते-बढ़ते वह दिन आ गया जब चिकित्सा-जगत् में एक नवीन चिकित्सा-प्रणाली का जन्म हुआ। अपने ऊपर परीक्षणों से स्पष्ट हो गया कि औषधि स्वस्थ-व्यक्ति के ऊपर रोग के जो लक्षण उत्पन्न करती है, रोग में उन्हीं लक्षणों के प्रकट होने पर वही औषधि उन लक्षणों को समाप्त कर उस रोग का उन्मूलन कर देती है।" सविराम-ज्वर का अर्थ है—'मलेरिया'-जैसा बुखार।

सिनकोना और कुनीन में इतना ही भेद है कि सिनकोना एक छाल का नाम है, इसे **चायना** भी कहते हैं, और कुनीन सिनकोना की छाल से बनती है। कुनीन को **चिनिनम सल्फ** कहते हैं जिसका वर्णन आगे किया जायगा। हनीमैन ने सिनकोना की छाल से परीक्षण किये थे। क्वाथ को उन्होंने बार-बार लिया और उससे उनके शरीर में मलेरिया के-से, सविराम-ज्वर के-से लक्षण उत्पन्न हो

गये । क्योंकि सिनकोना मलेरिया को दूर भी करती है, और स्वस्थ-शरीर मे इसे लेने से हनीमैन मे मलेरिया के-से लक्षण उत्पन्न हो गये, इससे उन्हें सूझा कि सभवत सिनकोना मलेरिया को इसलिए दूर करती है क्योकि शरीर मे यह मलेरिया जैसी बीमारी उत्पन्न कर देती है। इसी विचार से होम्योपैथी की नीव पडी और उन्होंने अपने ऊपर, अपने मित्रो पर, अपने बच्चो पर ऐलोपैथी के 'मैटीरिया मैडिका' की औषधियो के परीक्षण करने शुरु किये, और जो सिद्धात सिनकोना द्वारा उन्हें सूझा था उसे उन्होने अन्य औषधियो द्वारा परीक्षणो पर भी सत्य पाया । इस प्रकार होम्योपैथी का आविष्कार **सिनकोना** से हुआ ।

(२) **स्राव जाने के कारण अत्यधिक दुर्बलता—रक्तस्राव, प्रदर, अतिसार, वीर्यपात आदि से उत्पन्न होने वाली दुर्बलता को दूर करता है**—हनीमैन ने अपने काल मे देखा कि **सिनकोना** का दो रोगो मे उपयोग किया जाता था। एक रोग था निर्बलता को दूर करना, दूसरा था सविराम-ज्वर को दूर करना । वे इस परिणाम पर पहुचे कि इन दोनो दिशाओ मे इसका प्रयोग इसीलिये सफल होता है क्योकि स्वास्थ्य मे इसके लेने से दुर्बलता भी आ जाती है, सविराम-ज्वर-जैसा ज्वर भी आ जाता है। ज्वर के विषय मे हम आगे चल कर लिखेंगे । दुर्बलता के लिये होम्योपैथिक **सिनकोना (चायना)** अमोघ औषधि है । परन्तु कैसी दुर्बलता ? हनीमैन ने सिनकोना का दुर्बलता के विषय मे जो क्षेत्र तय किया वह निश्चित था। उनका कहना था कि जो रक्तहीनता **फैरम** दूर कर सकेगा वह **सिनकोना (चायना)** नही दूर कर सकेगा, जो स्नायु-सबधी कमजोरी **ऐसिड फॉस** दूर कर सकेगा वह **सिनकोना** नही दूर करेगा । **सिनकोना** का कमजोरी दूर करने का कौन-सा क्षेत्र है ? जब शरीर से रक्त-स्राव बेहद हो गया हो, प्राणद-स्रावो का बहाव हुआ हो, वीर्य-स्राव से दुर्बलता आ गई हो, ऐसी निर्बलता को **सिनकोना** दूर करता है । इस प्रकार की निर्बलता मे इसे 'Pick-me-up' कहा जा सकता है । इसी प्रकार **नक्स वोमिका** १ x तथा **कैलकेरिया हाईपोफौस** ३ x भी 'Pick-me-up' माने जाते हैं यद्यपि होम्योपैथी मे इस प्रकार के टॉनिको को स्थान नही है । इन्फ्लुएन्जा के बाद जब रोगी बेहद कमजोरी अनुभव करता है, सर्दी सहन नही कर सकता, सोचने लगता है कि अब शायद ठडे कपडे पहनने के दिन ही नही आयेंगे, गर्म कपडो से ही जीवन चलाना पडेगा, तब **चायना** २०० की एक मात्रा सारा नक्शा बदल देती है। इफ्लुएन्ज़ा मे अगर रोगी कमजोरी के साथ-साथ थकान, भारीपन अनुभव करे, शरीर मे कपन हो, तो **जेलसीमियम** से लाभ होता है । दुर्बलता दूर करने मे **आर्निका** का भी कम महत्व नही है । रोगी शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम से थक जाता है, हृदय पर भी बोझ पडता है, अधिक काम करने से, डाक्टर, वकील, अध्यापक—किसी भी पेशे का व्यक्ति क्यो न हो, अगर रोगी परिश्रम

(Strain) से थका-थका रहता है, तो आर्निका शारीरिक ही नहीं मानसिक थकान को भी दूर कर सकता है।

रक्तस्राव तथा उस से होनेवाली दुर्बलता—इस रोगी को रक्तस्राव बहुधा हुआ करता है। किसी भी अंग से रक्तस्राव हो सकता है। नाक से नकसीर फूट सकती है, गले से, किसी भी अंग से। स्त्रियों में जरायु से रक्तस्राव होता है। रक्तस्राव होते-होते इसके बीच में किसी-किसी को ऐंठन पड़ जाती है। ऐसी हालत में सिनकोना (चायना) रक्तस्राव को ही नहीं बन्द कर देगा, रक्तस्राव से होनेवाली कमज़ोरी को भी नहीं होने देगा। सिकेल में भी रक्तस्राव के लक्षण हैं, बच्चा जनने के समय रक्तस्राव दोनों औषधियों में है, परन्तु चायना शीत-प्रधान है, जच्चा की हालत में ठंड लग जाय तो उसे ऐंठन पड़ जाती है, सिकेल ऊष्ण-प्रधान है, रोगिन कपड़े को परे फेंक देती है, ठंड चाहती है। प्रदर की निर्बलता को भी सिनकोना दूर करता है।

अतिसार से होनेवाली दुर्बलता, अतिसार में दर्द नहीं होता—सिनकोना का अतिसार पनीला, पीला होता है। अपच भोजन निकल जाता है। जो बात अन्य औषधियों में नहीं पायी जाती वह यह है कि दस्त दर्द रहित होते हैं। दस्तों की इस कमज़ोरी को यह दूर करता है।

वीर्यपात द्वारा होनेवाली दुर्बलता—शरीर की जो भी प्राणप्रद ग्रन्थियां हैं उनसे स्राव के बहुत अधिक निकल जाने की कमजोरी को यह दवा दूर कर देती है। वीर्य तो शरीर का सार ही है। इसके जाने से जो कमज़ोरी होती है उसका इलाज **चायना** है। नवयुवक जो हस्त-मैथुन आदि कुकर्मों से क्षीण-काय हो जाते हैं उनकी कमज़ोरी को यह दूर करता है।

(३) **सविराम-ज्वर (Intermittent fever)**—हमने कहा था कि हनीमैन ने अपने काल में देखा कि **चायना** का दो बातों में उपयोग किया जाता था 'निर्बलता' तथा 'ज्वर'। निर्बलता के विषय में हम लिख चुके। ऐलोपैथ तो हर प्रकार के मलेरिया में कुनीन दे देते हैं, परन्तु हनीमैन का कथन है कि मलेरिया-ज्वर भी सब एक-से नहीं होते, इसलिये कुनीन से कई रोगी अच्छे हो जाते हैं, कई लटकते रहते हैं। **चायना** अपने ढंग के सविराम-ज्वर में ही काम देता है, हर प्रकार के सविराम-ज्वर में नहीं। **चायना** के ज्वर के क्या लक्षण हैं?

चायना के बुखार में प्यास का लक्षण विशेष ध्यान देने के योग्य है। जाड़ा लगने के बहुत पहले रोगी को प्यास लगने लगती है, और ज्यों-ही जाड़ा लगने लगता है प्यास जाती रहती है। जाड़े से पहले प्यास का लगना शुरु होना इतना मुख्य-लक्षण है कि इस प्यास के शुरु होते ही रोगी समझ जाता है कि जाड़ा-बुखार आने वाला है, अगर यह लक्षण न हो, तो **चायना** औषधि नहीं है। जाड़े में प्यास चली जाती है, परन्तु उत्ताप की अवस्था आने पर फिर प्यास लौट

आती है। जब उत्ताप पूर्ण-रूप मे चढ जाता है तब प्यास फिर खत्म हो जाती है। इसके बाद पसीने की अवस्था आती है। पसीने के पूरे काल मे ज़बर्दस्त प्यास रहती है। शीत मे और उत्ताप मे प्यास का हट जाना, और शीत से पहले प्यास का लगना, पसीने के पूरे काल मे प्यास—ये इसके ज्वर के विशेष-लक्षण हैं।

चायना का पत्येक ज्वर दो-तीन घटे पहले आता है, रात को बुखार नही होता, हर सातवें या चौदहवें दिन आता है। बुखार सदा दो-तीन घटे पहले आना शुभ लक्षण नही है, अगर वह अपना समय टालकर दो-तीन घटे देर मे आये तो यह शुभ लक्षण है।

(४) ज्वर मे चायना, युपेटोरियम, आर्स, कैंपसिकम, साइमेक्स की तुलना— शीत या पूर्ण-उत्ताप की अवस्था मे प्यास का होना **चायना** न देने का लक्षण है। प्यास शीत से पहले लगती है, शीत मे नही। जब **चायना** के रोगी को जिसे तीसरे, सातवें, चौदहवें दिन ज्वर आता हो, तब प्यास के लक्षण पर ही वह समझ जाता है कि ज्वर आने वाला है। **युपेटोरियम** का रोगी प्यासा होते हुए भी पानी लेने से इन्कार कर देता है क्योंकि पानी के हरेक घूट से उसकी सर्दी बहुत बढ जाती है। **आर्सेनिक** के ज्वर मे रोगी प्यासा होता है, परन्तु पानी पीना नही चाहता क्योंकि पानी पीने से उसे उल्टी आ जाती है, फिर भी उसकी प्यास इतनी ज़बर्दस्त होती है कि न चाहते हुए भी पीता जाता है। **कैंपसिकम** मे सर्दी पीठ से शुरु होती है, सर्दी प्यास के साथ शुरु होती है, परन्तु पानी पीने से रोगी ठड के मारे कॉपने लगता है, और इसके साथ पीठ मे तथा अग मे पीडा होने लगती है। **साइमेक्स** मे पानी पीने से रोगी के सब लक्षण बढने लगते हैं, खासी, सिर-दर्द आदि बढ जाते हैं। **चायना** के सबध मे यह स्मरण रखना चाहिये कि ज्वर मे शीत के प्रारभ होते ही प्यास जाती रहती है, शीतावस्था के आने से बहुत पहले प्यास का आगमन होता है। उत्ताप की अवस्था मे रोगी बार-बार कपडा हटाने का प्रयत्न करता है परन्तु कपडा हटाते ही उसे सर्दी सताने लगती है, इसलिये फिर कपडा ओढ लेता है। ज्वर मे कपडा ओढने और उतारने के **चायना** के लक्षण **नक्स वोमिका** के सदृश हैं।

(५) संपूर्ण पेट मे वायु भर जाना, डकार से आराम न होना—रोगी का पेट तबूरा बना रहता है, लगातार डकार आते हैं परन्तु आराम नही आता, पेट भरा-का-भरा महसूस होता है। **कार्बो वेज** और **लाइको** मे भी पेट मे वायु का प्रकोप रहता है, **कार्बो** मे डकार से कुछ आराम आता है, **लाइको** मे कभी आराम आता है, कभी नही भी आता। जब पेट मे वायु अटक जाय और ऐसा मालूम पडे कि पेट मे हवा अवरुद्ध (Incarcerated flatus) है, पेट की मशीन ही रूठ गई है, तब **चायना** २०० की एक मात्रा वायु को निकाल फेंकेगी। **कार्बो वेज** भी ऐसी हालत मे काम कर देता है।

स्पर्श न सह सकना—सारा स्नायु-मडल अत्यन्त अनुभूतिमय (Sensitive) हो जाता है। पीडा का स्थान छूते ही रोगी कराह उठता है, छूने नही देता। फोडे को हल्के-हल्के दवाते चले जायें, तो रोगी इस दवाव को सहने लगता है, यहाँ तक कि जव दवाव ज़ोर का हो जाता है, तव भी रोगी उस दवाव को सह लेता है, उसे कुछ आराम-सा लगता है। जो दात दर्द कर रहा होता है उसे दवाये चले जायें, तो उस दवाव से भी आराम मिलता है। दवाने से आराम मिलना इस औषधि का विशिष्ट-लक्षण है। स्नायु-मडल की अनुभूतिमयता (Sensitiveness) वालो मे भी प्रकट होती है। अगर वालो को हवा लगे तव भी वालो मे दर्द महसूस होता है। कही भी नसो मे अगर दवाने से दर्द को आराम हो, तो **सिनकोना (चायना)** उपयोगी है।

ऐसे दर्द जो ज़रा-से स्पर्श से, ज़रा-से छेडने से जाग्रत हो जायें, और फिर वढते चले जाये, यहाँ तक कि तीव्र रूप धारण कर लें, **चायना** से ठीक हो जाते हैं। स्पर्श-द्वेष इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है।

(७) **किसी विचार से छुटकारा न पा सकना**—इस रोगी के दिमाग मे कुछ विचार ऐसे जम जाते हैं कि वह उनसे छुटकारा ही नही पा सकता। वे-वुनियाद विचार ऐसी जड पकड लेता है कि हटाये नही हटता। अधिकतर उसके दिमाग मे यह वैठ जाता है कि उसके शत्रु उसके पीछे पडे हुए है। वह जहाँ कही भी जाता है, जो-कुछ भी करता है, यही समझता रहता है कि उसके शत्रु उसके हर कार्य मे वाधा डाल रहे हैं। ये विचार उसके मन पर ऐसे हावी हो जाते हैं कि वह विस्तर से कूद पडता है, और कभी-कभी इन काल्पनिक शत्रुओ से छुट-कारा पाने के लिये आत्मघात तक कर वैठता है। विचारो से छुटकारा न पा सकने के रोग मे **नेट्रम म्यूर** भी उपयोगी है।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

1. **सामयिकता** (Periodicity)—यह समझना गलत है कि वारी के मलेरिया-ज्वर पर ही इसका प्रभाव है। अगर कोई रोग हर दूसरे-तीसरे दिन आता है, तो **चायना** को स्मरण करना चाहिये। सामयिकता इसका विशेष लक्षण है।

11 **जिगर का पुराना रोग**—जिगर के पुराने रोग मे यह सर्वोत्तम औषधि है। पेट के दाई तरफ के निचले भाग मे दर्द होता है, कभी-कभी पसलियो के नीचे भीतर के हिस्से मे कडा, वढा हुआ, स्पर्श-द्वेषी जिगर पाया भी जाता है। रोगी की त्वचा पीली हो जाती है। मल का रग सफेद होता है क्योकि जिगर पित्त का पूरा प्रवाह नही कर रहा होता।

111 **कीडो की उल्टी के स्वप्न**—अगर रोगी को वार-वार ऐसे स्वप्न आयें कि उल्टी मे जीवित-कृमि निकल रहे हैं तो यह इसका विशिष्ट-लक्षण है।

(९) **चायना का सजीव, मूर्त चित्रण**—शरीर से रक्त, वीर्य या किसी प्रकार का तरल पदार्थ निकल जाने से पीले चेहरेवाला, वीर्यहीन, रक्तहीन व्यक्ति जिसकी आखे धस गई हो, कमजोर हो गया हो, कमजोरी से पसीना आ जाता हो, शोथ आदि रोग के स्थान को छूने से उसे कष्ट होता हो, बालो को हवा छू जाय तब भी घबराता हो, दूध-फल आदि खाने मे पेट फूल जाता हो, पेट तम्बूरे की तरह फूला रहता हो, डकारे मारता हो, परन्तु डकारो से भी आराम न आता हो, जिसकी शिकायतें एक दिन बाद, दो दिन बाद आती रहती हो, जिगर के पुराने रोग मे पीडित हो, पतले दस्त आते हो परन्तु दस्तो के साथ दर्द न होता हो, कमजोरी और रक्तशून्यता चेहरे पर लिखी हो, कमजोरी से कानो मे भनभनाहट होती हो, सर्दी न सहन कर सकता हो, मलेरिया जैसे ज्वर से देरतक पीडित रहा हो—ऐसा होता है **चायना** का रोगी ।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—कमजोरी मे ६ या १२ शक्ति का **चायना** तबतक दोहराना चाहिये जबतक कमजोरी के लक्षण दूर न हो फिर बन्द कर देना चाहिये । वैसे अन्य औषधियो की तरह ३०, २०० शक्ति व्यवहार मे आती है । औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है ।

चिनिनम सल्फ्यूरिकम (CHININUM SULPH)

(१) **यह कुनीन का दूसरा नाम है**—यह औषधि शुद्ध कुनीन है । ऐलोपैथ हर किस्म के मलेरिया मे कुनीन दे देते हैं, परन्तु कुनीन का अपने ढग का ज्वर होता है जिसमे यह औषधि उच्च-शक्ति मे कुनीन के दोषो को उत्पन्न किये बग़ैर ज्वर को शात कर देती है । कुनीन की थोडी मात्रा के सेवन से अगर मलेरिया नही उतरता, तो ऐलोपैथ डाक्टर लोग इस मात्रा को बढा देते हैं, यहा तक कि बुखार उतरने के स्थान मे दब जाता है और अन्य लक्षण उत्पन्न हो जाते है । कान बहरे हो जाते हैं, भूख लगनी बन्द हो जाती है, शरीर मे क्षीणता, दुर्बलता आ जाती है, रक्ताणु घट जाते हैं, फिर डाक्टर लोग टॉनिक देने लगते हैं, और ज्यो पेटेंट औषधियो का चक्कर चलता है, वह कही समाप्त नही होता । **चायना** और **चिनिनम सल्फ** (कुनीन)—ये दोनो उच्च-शक्ति मे देने मे बुखार को दूर करते हैं । इनके लक्षण बहुत-कुछ समान है, परन्तु इनमे भेद भी है ।

(२) **चायना तथा चिनिनम सल्फ (कुनीन) मे भेद**—इन दोनो मे समानता तो यह है कि दोनो मे कमजोरी होती है, दोनो मे बुखार एक निश्चित समय पर आता है, किसी प्रकार का स्नायु-शूल हो तो वह भी नियत समय पर होता है, दोनो के ज्वर मे शीत, उत्ताप, पसीना—ये तीनो अवस्थाए होती हैं, दोनो में जिगर या तिल्ली का शोथ हो सकता है, ज्वर का आक्रमण पिछले आक्रमण से कुछ पहले हो सकता है, परन्तु इन दोनो मे मुख्य तौर पर ज्वर के आने के समय

और प्यास के सबध मे भेद है जिसे निम्न-प्रकार प्रकट किया जा सकता है

	चायना	चिनिनम सल्फ
समय	ज्वर अथवा कोई भी बीमारी ठीक एक दिन, दो दिन, सात या पन्द्रह दिन के अन्तर से बढती है। रात के समय बुखार नही आता	सवेरे १० या ११ बजे और तीसरे पहर ३ बजे से रात के १० बजे तक एक दिन का अन्तर देकर, दो घंटे आगे बढकर ज्वर आता है। १० या ३ बजे दोपहर ठड लगनी शुरु होती है।
प्यास	शीतावस्था मे प्यास नही होती परतु शीत लगने से बहुत पहले प्यास लगती है, शीतावस्था मे नही रहती, पूर्ण-उत्ताप मे भी प्यास नही रहती, स्वेद की अवस्था मे भारी प्यास रहती है।	शीतावस्था मे प्यास होती है, उत्ताप की अवस्था मे भी प्यास रहती है, स्वेद की अवस्था मे भी प्यास रहती है। ज्वर की तीनो अवस्थाओ मे प्यास रहती है।

(३) **शक्ति**—१C, ३C, ६, ३०, २००

सिक्यूटा वाइरोसा (CICUTA VIROSA)

ऐंठन (Convulsions)—मृगी, हिस्टीरिया, फुन्सिया दब जाने से मानसिक रोग जो ऐंठन का रूप ले लेते हैं, बच्चो के दात निकलते समय ऐंठन—ये सब सिक्यूटा के लक्षण हैं। **क्यूप्रम** भी ऐंठन की औषधि है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि इसमे ऐंठन पहले अगुलियो मे शुरू होनी है, फिर हाथो मे फैल जाती है, फिर छाती मे, फिर सारे शरीर मे, **सिक्यूटा** मे ऐंठन सिर, आख, गले से शुरु होकर पीठ मे नीचे होती हुई हाथ-पाव की तरफ फैलती है। **क्यूप्रम** मे नीचे से ऊपर की तरफ, **सिक्यूटा** मे ऊपर से नीचे की तरफ ऐंठन की गति है। **सिकेल** मे ऐठन चेहरे से शुरु होती है। ऐठन का लक्षण **नक्स वोमिका** मे भी है, परन्तु सिक्यूटा एक दौर और दूसरे दौर के बीच मृदु, कोमल स्वभाव प्रदर्शित करती है। नक्स की रोगिन दोनो के बीच चिडचिडी रहती है।

(२) **रोगी को कुछ स्मरण नहीं रहता**—इस औषधि का अद्भुत लक्षण यह है कि रोगिन को जो-कुछ पूछा जाता है उसका सही-सही उत्तर देती है, परन्तु बाद को उसे कुछ याद नही रहता कि क्या हुआ और उसने क्या उत्तर दिया। **सिक्यूटा, नेट्रम म्यूर** और **नक्स मौस्केटा** मे भी यह लक्षण है, परन्तु **नेट्रम म्यूर** घर का सब काम-काज करती है, ठीक ऐसे जैसे पूर्ण स्वस्थ हो, परन्तु

अगले दिन उसे किसी बात का स्मरण नहीं रहता, नक्स मोस्केटा की रोगिन भी काम-काज में व्यस्त रहती है परन्तु उसका मन सर्वथा शून्य होता है। सिक्यूटा का रोगी कोयला आदि अभक्ष्य-पदार्थ खाता है क्योंकि उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहता कि क्या खाने की वस्तु है, क्या नहीं है। वह बच्चों की तरह नाचता है, गाता है, चिल्लाता है, शोर मचाता है क्योंकि उसे अपने-आप का यथार्थ ज्ञान नहीं रहता। वृद्ध पुरुष बच्चों की तरह बरतने लगता है। गुड़ियों से खेलता है, अपने मित्रों और परिचित व्यक्तियों को भी नहीं पहचानता, उन्हें अजनबी की तरह देखता है, उन्हें देखते हुए आश्चर्य करने लगता है कि क्या वे वही व्यक्ति हैं जिन्हें वह कभी जानता था। अपने विषय में भी वह सब-कुछ भूल जाता है, उसे याद नहीं रहता कि उसकी क्या आयु है। स्त्री को जब दौरा पड़ता है, तो उसमें से निकलने के बाद वह बच्चों का-सा बरतने लगती है। ऐसे कई दृष्टांत हैं जिनमें बचपन में सिर पर चोट लगने से व्यक्ति भी अपग हो गया, बाइस-तेईस वर्ष की आयु तक बच्चा ही बना रहा। उन्हें सिक्यूटा २०० की मात्रा देने से उसका मस्तिष्क ठीक होने लगा। डा० टायलर ने ऐसी एक लड़की का ज़िक्र किया है जो बचपन में साढ़े तीन वर्ष की आयु तक बिल्कुल ठीक थी, परन्तु सिर पर चोट लगने से उसके मस्तिष्क का विकास रुक गया, वह सब-कुछ भूल गई। उसे सिक्यूटा २०० की मात्रा महीनों बाद तीन-चार देने पर उसका मानसिक-विकास होने लगा।

(३) **एग्ज़ीमा जैसे फोड़े-फुन्सी**—यह औषधि इस प्रकार के फोड़े-फुन्सी-एग्ज़ीमा को भी ठीक कर देती है, जो एक-साथ छोटे-छोटे उभर कर मिल जाकर एक पीली पपड़ी-सी बना देते हैं। डा० नैश ने एक रोगी का ज़िक्र किया है जिसके सिर पर इस प्रकार का एग्ज़ीमा था। उसका सारा सिर इस एग्ज़ीमा से ऐसा भर गया था जैसे सिर पर टोपी रखी हो। उसने अनेक लेप इस्तेमाल किये थे परतु किसीसे ठीक नहीं हुआ। सिक्यूटा की २०० शक्ति की एक मात्रा से वह बिल्कुल ठीक हो गया। खोपड़ी और दाढ़ी के बालों के अन्दर फुन्सियों को भी यह औषधि ठीक कर देती है।

(४) **शक्ति**—६, ३०, २००

सिना (CINA)

(१) **पेट में कीड़ों की दवा**—यह मुख्य तौर पर बच्चों की दवा है। इसे प्राय कृमि-धातु के बच्चों के लिये प्रयुक्त किया जाता है। ये कृमि गोल और गिंडोये जैसे (Round worms) होते हैं। डा० केन्ट का कहना है कि यह औषधि चिलूणों (Thread worms) के लिए नहीं है। चिलूणे वे छोटे-छोटे कृमि हैं जो बच्चों के मल-द्वार से बाहर आते-जाते रहते हैं, और गुदा-प्रदेश में सुर्खी

और चिरमिराहट पैदा करते हैं। उनका कहना है कि इसे कृमि की औषधि समझ कर ही दे देना उपयुक्त कारण नही है। इस औषधि को देने के मुख्य-कारण दो होने चाहियें एक तो बच्चे का नाक की खुजली के कारण नाक मे बार-बार अगुली घुसेडते रहना, यहा तक कि कभी-कभी खुजलाते-खुजलाते खून तक निकाल डालना, सोते हुए दात किटकिटाना या सोते हुए चौंक उठना, अगो का थरथराना, फुदकना; और दूसरा, कैमोमिला की तरह चिडचिडा होना। अपने मानसिक स्वभाव के कारण बच्चा नर्स को लात मार देता है, हर समय गोद मे रहना चाहता है, झूले मे झुलाया जाना चाहता है, कभी यह और वह वस्तु चाहता है, परन्तु जब दी जाय तब लेने से इन्कार कर देता है। डा० नैश लिखते हैं कि वे टाइफॉयड के एक बच्चे का इलाज कर रहे थे, टाइफॉयड के लिये पुस्तको मे जितनी दवाए लिखी गई है वे सब दी गई, परन्तु रोगी अच्छा नही हो रहा था। लक्षण उसके सिना के थे, परन्तु यह औषधि कही टाइफॉयड के लिये किसी पुस्तक मे निर्दिष्ट नही थी। अत मे, लक्षणो के आधार पर उन्होंने सिना की ही कुछ मात्राए दी और वह ठीक हो गया। इससे यह बात और पुष्ट हो गई कि होम्योपैथी मे चिकित्सक को रोग के नाम से चिकित्सा न करके लक्षणो के आधार पर चिकित्सा करनी चाहिए। डा० नैश का कथन है कि यह औषधि २०० शक्ति मे अच्छा काम करती है।

(२) **सिना तथा कैमोमिला की तुलना**—**सिना** और **कैमोमिला** के स्वभाव मे बहुत-कुछ समानता पायी जाती है, परतु इन दोनो मे अतर है। **सिना** का बच्चा सदा भूख-भूख चिल्लाता है। खाने के बाद फिर भूखा, उसकी भूख कभी सतुष्ट नही होती। यह बात **कैमोमिला** मे नही है। **सिना** के बच्चे की दोनो गालो का रग कभी गर्म-लाल होगा, मालूम पडेगा बडा स्वस्थ है, कभी फीका, रोगग्रस्त होगा, मालूम पडेगा कब-का रोगी है, कभी एक-साथ लाल-पीला होगा—गाल लाल परन्तु मुख तथा नाक के आस-पास फीकापन। यह **सिना** का मूर्त-रूप है। अगर चेहरा एक गाल मे लाल-गर्म हो और दूसरी गाल मे फीका और ठडा हो, तो यह **कैमोमिला** का लक्षण है। इन लक्षणो के साथ नाक का खुजलाना, सोते हुए दात किटकिटाना और अगो का थरथराना अलग लक्षण हैं जो **कैमोमिला** मे नही हैं। **सिना** के बच्चे के पेशाब को रखा जाय, तो कुछ देर के बाद उसका रग दूधिया हो जाता है, **कैमोमिला** का पेशाब पीला रहता है।

(३) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

1 **बिस्तर मे पेशाब**—कृमि की खुजलाहट की वजह से यह बच्चा रात को बिस्तर मे पेशाब कर देता है। बिना कृमियो के भी पेशाब कर देने को यह ठीक कर देता है।

ii **अगों का थरथराना और ऐंठन**—(Twitchings and convul-

sions)—कृमि की वजह से सोते समय इस बच्चे के अग थरथराते हैं, ऐठन हो जाती है। **सिना** द्वारा कृमि मर नही जाते, परतु शरीर का विकास इस प्रकार का होने लगता है कि उसमे कृमि पनप नही पाते। कुछ कृमियो के नाश से और कृमि पैदा हो सकते हैं, परन्तु शरीर का 'धातु-क्रम' (Constitution) बदल देने से कृमियो का उत्पन्न होना रुक जाता है।

iii **गिडोये-जैसे कृमि**—बच्चो के पेट मे तीन प्रकार के कृमि होते है चिलूणे (Thread worms), गिडोये जैसे गोल-गोल कृमि (Round worms) और टेप जैसे लम्बे कृमि (Tape worms) इनमे से गिडोये जैसे कृमियो के लिये **सिना** काम करता है, अन्य कृमियो के लिये नही। चिलूणे वे छोटे-छोटे कृमि हैं जो मल-द्वार से बाहर आते-जाते रहते हैं, और बच्चे के गुदा प्रदेश मे खुजलाहट पैदा करते हैं। इसका इलाज यह है कि बच्चे के गुदा-प्रदेश मे वैज़लीन अथवा ओलिव ऑयल लगा दिया जाय। ये चिलूणे कुछ खाने के लिए और अपने वश की वृद्धि के लिए बाहर आते हैं। वैज़लीन के कारण वे अपना काम नही कर पाते और धीरे-धीरे नष्ट हो जाते हैं। टेप-कृमि बहुत ही लम्बे होते हैं। ये प्राय मासाहारियो के पेट मे पाये जाते हैं। इनको नष्ट करने का दूसरा ही उपाय है। इन कृमियो को बडे कद्दू का बीज खाने का बडा शौक होता है। बच्चे को भूखा रख कर घटे-घटे बाद बडे कद्दू की छिलके रहित गिरी तीन-चार बार खिला दी जाती है। ये टेप-वर्म उसी गिरी को बडे शौक से खाते हैं और बेहोश हो जाते हैं। या तो ये स्वय निकल जाते हैं या कैस्टर ऑयल देने से ये निकल जाते हैं। जब ये निकल रहे हो तब एक बात का ध्यान रखना चाहिये। कृमि जब निकले तब उसे सारे-का-सारा निकलने देना चाहिये, नही तो वह बीच मे टूट जाता है, और बचा हुआ हिस्सा बढ़ कर फिर पूरा कृमि बन जाता है।

चिलूणे और गोल-कृमि (Thread-worms and round-worms) के लिये **चेलोन** उत्तम औषधि है। इस औषधि के मूल-अर्क के ४-५ बूंद देने से ये दोनो प्रकार के कृमि नष्ट हो जाते हैं। कई चिकित्सक बच्चो के पेट के कृमियो के लिये इसी औषधि का प्रयोग करते हैं और उनका कहना है कि इससे उन्हें बहुत सफलता मिलती है।

(४) **शक्ति**—३०, २००

सिस्टस (CISTUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) पुराने जुकाम मे जब नाक खाली होने से तकलीफ हो	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) भिन्न-भिन्न अंगो मे ठडक लगना	*गर्मी से रोग मे कमी
(३) घी, मास, नमक से अरुचि, पनीर से विशेष रुचि	*श्लेष्मा निकलने से रोग मे कमी
(४) शीत से रोग-वृद्धि तथा गर्मी से आराम	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) कण्ठमालाग्रस्त धातु (Scrofulous diathesis)	*ठडी हवा से रोग मे वृद्धि
	*मानसिक-उत्तेजना से रोग-वृद्धि
(६) अगुलियो का एग्जीमा	*शाम को रोग का बढ जाना

(१) **पुराने जुकाम मे जब नाक खाली होने से तकलीफ हो**—यह औषधि नये जुकाम मे उतनी लाभप्रद नही है जितनी पुराने जुकाम मे, परन्तु नये जुकाम मे भी अगर लक्षण मिलें तो लाभ करती है। जुकाम मे जब नाक गाढे, पीले श्लेष्मा से भर जाती है और मिनकने पर इसे बाहर निकाल दिया जाता है, तब कभी-कभी नाक के खाली होने पर उसमे चिरमिराहट होने लगती है। रोगी कहते हैं कि नाक खाली होने पर चिरमिराहट (Irritation) होती है, कई कहते हैं नाक मे ठड लगने लगती है, कई कहते हैं कि हल्के अधपके फोडे का-सा दर्द होने लगता है, कई कहते हैं कि जलन होने लगती है। जब नाक फिर श्लेष्मा से भर जाती है तब आराम पडता है। आर्सेनिक, ऐन्टिम क्रूड तथा एस्क्यूलस मे नाक भरी होने पर उसमे जलन होती है, सिस्टस मे नाक खाली होने पर उसमे जलन होने लगती है या कष्ट बढता है। खाली नाक मे जब रोगी सास लेता है तो उसे कष्ट होता है। रोगी को यह कष्ट ठडी हवा के सास लेने से होता है, वह गर्म हवा लेना चाहता है।

(२) **भिन्न-भिन्न अगो मे ठड अनुभव होना**—रोगी भिन्न-भिन्न स्थानो मे ठड अनुभव करता है। ठड इस औषधि का मुख्य-लक्षण है। मस्तक मे ठड का अनुभव, जीभ मे, गले मे, श्वास-नलिका मे सास ठडा अनुभव हो, पेट मे, छाती मे, अगुलियो मे, पैरो मे—शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे ठड के अनुभव करने पर इस औषधि को ध्यान मे रखना चाहिये।

(३) **घी, मास, नमक से अरुचि परन्तु पनीर से विशेष रुचि**—पुराने जुकाम मे अगर पनीर के लिये रोगी मे बेहद इच्छा हो, तो यह औषधि चमत्कारी प्रभाव करती है। रोगी को घी, मास तथा नमक के लिये रुचि नही होती। डा०

टायलर ने एक लड़की का उल्लेख किया है जिसे सदा जुकाम सताया करता था। उसे पनीर खाने की प्रबल इच्छा रहती थी। **सिस्टस** ६ की मात्रा दिन मे ३ बार देने से कुछ दिन मे ही उसका रोग ठीक हो गया। अगर औषधि का निर्वाचन बिल्कुल ठीक हुआ है, तो वह हर शक्ति मे अपना अमिट प्रभाव दिखलाती है।

(४) **शीत से रोग-वृद्धि तथा ऊष्णता से आराम**—जैसा हम अभी लिख चुके हैं, रोगी को शीत मे अत्यन्त कष्ट होता है, उसे गर्मी से आराम मिलता है। नाक की सर्दी मे वह स्टोव के पास जाकर गर्म हवा अन्दर लेना चाहता है। रोगी को छूआ जाय, तो त्वचा इतनी ठंडी नही महसूस होती जितना वह भीतर से ठंडक अनुभव किया करता है।

(५) **कण्ठमालाग्रस्त-धातु का रोगी** (Patient of scrofulous diathesis)—कंठमालाग्रस्त-धातु का शरीर **कैलकेरिया कार्ब** की तरह **सिस्टस** मे भी पाया जाता है। शरीर की गिल्टिया दोनो औषधियो मे बढ जाती हैं। दोनो को सर्दी सताती है। दोनो मे क्षय-रोग की सम्भावना होती है। दोनों मे परिश्रम से थकान हो जाती है, सास भारी आने लगता है, पसीना आदि सब दोनो औषधियो मे एक-से हैं। कंठमाला-ग्रस्त रोगी के लिये औषधि का निर्वाचन करते हुए इन दोनो औषधियो को ध्यान मे रखना चाहिये। डा० कैन्ट एक रोगी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि उसके उक्त लक्षणो मे **कैलकेरिया** ठीक नही बैठता था, **सिस्टस** ने उसे ठीक कर दिया।

(६) **अंगुलियों का एग्जीमा**—सर्दी से हाथ की अंगुलियां फट जाती हैं, ठंडे पानी से हाथ धोने से अंगुलियो मे छिलकेदार ज़ख्म हो जाते हैं, खून तक निकलने लगता है। इन शिकायतो मे इस औषधि से लाभ होता है।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—यह औषधि दीर्घ-क्रिया करने वाली है। सोरा-दोष से दूषित, कंठमालाग्रस्त-धातु के शरीर मे लाभप्रद है। शक्ति ३०, २०० (औषधि 'सर्द' —Chilly—प्रकृति के लिये है)

क्लेमैटिस इरैक्टा (CLEMATIS ERECTA)

(१) **प्रमेह (सुजाक) की उत्कृष्ट-औषधि**—सोरा-धातु (Psoric constitution) के रोगी की यह दवा है। इसका काम 'तन्तुओं' (Tissues) मे प्रविष्ट होकर उनका शोथ कर देना है, इसलिये यह औषधि प्रमेह (गोनोरिया) के उन रोगियो के लिये हितकर है जिनका रोग ऐलोपैथी के इलाज से ठीक न होकर लम्बा पड गया हो। जब प्रमेह मे मूत्रनली का शोथ बढता चला जाय, और मूत्र-नली फोड़े की तरह कडी पड जाय, दबाने से दर्द हो, और इस नली के कडी पडते-पडते ऐसी स्थिति आ जाय कि नली का छेद बन्द-सा हो जाय, तब

इस दवा के देने से पुराना बन्द-छेद आश्चर्यजनक रूप मे खुल जायगा और बन्द हो गया, सूक गया प्रमेह का स्राव फिर जारी हो जायगा, और दो-तीन महीने मे प्रमेह का रोग भी चला जायगा।

(२) **मूत्र-नली के बन्द हो जाने से मूत्राशय खाली नहीं हो पाता**—प्रमेह मे जब मूत्र-नली का 'अवरोध' या 'सकोचन' (Stricture) हो जाता है, तब मूत्राशय मे भरा सारा-का-सारा पेशाब निकल नही पाता। रोगी पेशाब करने जाता है, उसे प्रतीत होता है कि अभी कुछ और बाकी है, परन्तु मूत्र-नली के संकोचन से वह निकलता नही, धीरे-धीरे बूद-बूद टपका करता है। मूत्र प्रारम्भ होते समय भयकर जलन होती है, पेशाब करते समय मूत्र-नली के सकुचित हो जाने के कारण उसमे रुका पेशाब जलन करता रहता है, पेशाब कर चुकने के बाद भी जलन जारी रहती है। मूत्र-नली मे गाढी पस निकलती है। प्रमेह की प्रथम अवस्था मे जब शोथ अपने शिखर पर होती है, तब इस औषधि का समय नही होता, इस औषधि का प्रयोग उन रोगियो मे ही होता है जो देर से लम्बे चले आते हैं, जिनमे रोगी प्रमेह के रोग से मुक्त नही हुआ होता, परन्तु उस बेचारे का रोग दबा दिया गया होता है।

(३) **अंडकोश का शोथ (प्राय. दायीं तरफ़ का)**—प्रमेह से अडकोश का शोथ हो जाता है। जब प्रमेह के रोग को अनुपयुक्त उपचार से दबा दिया जाता है तब अडकोश सूज जाता है, सूज कर पत्थर जैसा कडा हो जाता है। इस समय उसमे दर्द भी हुआ करता है। दर्द की अवस्था मे **पल्सेटिला** से दर्द शान्त हो जाता है और अवरुद्ध हुआ प्रमेह का स्राव जारी हो जाता है। उस समय **क्लेमेटिस** अवशिष्ट-रोग को ठीक कर देता है। अडकोश मे प्राय दायी तरफ इस औषधि का प्रभाव है। अण्डकोश की थैली का भी प्राय दाई तरफ का हिस्सा सूजता है।

(४) **एग्ज़ीमा**—इसका एग्ज़ीमा भी विचित्र है। अमावस्या के बाद एग्ज़ीमा मे से रस रिसता रहता है और पूर्णिमा के बाद वह खुश्क हो जाता है। एग्ज़ीमा मे खुजली मचती है, उसमे से रस निकलता है, ठडे पानी से धोने से रोग बढता है, बिस्तर की गर्मी से भी रोग मे वृद्धि होती है।

(५) **इकले रहने से डरना परन्तु दूसरे के साथ से भी घबराना**—इस औषधि का विचित्र मानसिक-लक्षण यह है कि रोगी इकला रहने से भय खाता है, परन्तु अगर कोई साथ रख दिया जाय तब भी किसी के साथ से घबराता है।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—(३, ६, ३०, २००) डा० नैश का कहना है कि मूत्र-नली के 'अवरोध' (Stricture) की प्रारम्भिक-अवस्था मे जब मूत्र का रुक-रुक कर आना शुरु हुआ हो किन्तु पूरा अवरोध न हुआ हो, अवरोध बन ही रहा हो, तब उच्च-शक्ति की मात्रा देने से अवरोध (सकोचन—Stricture) नही होने पाता। औषधि 'सर्द' —Chilly—प्रकृति के लिये है।

कौक्युलस इंडिकस (COCCULUS INDICUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मस्तिष्क तथा मेरुमज्जा पर प्रभाव से पक्षाघात, चिडचिडाहट, घबराहट तथा निद्राहीनता, क्रोध, शोक-जनित रोग	लक्षणो मे कमी (Better) *बैठने मे रोग मे कमी *बन्द कमरे मे रोग मे कमी
(२) बाह्य-सवेदन के प्रति प्रतिक्रिया मे देर लगना, बात को देर मे समझना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(३) हाथ-पैर का कापना, लडखडाना (४) जोडो का कड़ा पड जाना (५) गाड़ी मे चढ़ने या नीचे देखने से चक्कर (६) निद्राहीनता तथा शोक आदि से रजोधर्म जल्दी, अधिक और देर तक होना या अन्य उपद्रव	*किश्ती, मोटर, रेलगाडी, हवाई जहाज, समुद्री जहाज मे चढने से रोगी को चक्कर या उल्टी आजाना *सवारी पर चढने से रोग मे वृद्धि
(७) सिर या अन्य अगों मे खाली-खाली लगना	*अनिद्रा से रोग मे वृद्धि *ठड, खुली हवा से रोग मे वृद्धि
(८) भोजन के नाम से गला घुटने लगता है	*रजोधर्म के समय रोग मे वृद्धि

(१) मस्तिष्क तथा मेरु-मज्जा पर प्रभाव से पक्षाघात, चिडचिडाहट, घबराहट, निद्राहीनता, क्रोध, शोक-जनित रोग (Ailments from Combination of paralysis, vexation, anxiety, prolonged loss of sleep, anger and grief)—डा० फैरिंगटन का कथन है कि इस औषधि का प्रभाव मस्तिष्क तथा मेरु-मज्जा पर पडता है जिससे शरीर के प्रत्येक अग मे शिथिलता उत्पन्न हो जाती है। इसी कारण मेरु-दड के रोगों मे जब पक्षाघात हो जाता है तब इस औषधि से लाभ होता है। पक्षाघात मे, खासकर रोग की प्रारम्भिक-अवस्था मे इसका उपयोग होता है। जब मेरु-दड के नीचे के हिस्से (Lumbar region) पर असर पड जाता है, पीठ मे इतनी कमजोरी महसूस होती है मानो पक्षाघात हो गया हो, चलते हुए पीठ सीधी नही हो सकती, टागें तथा नीचे का हिस्सा शक्तिहीन हो जाता है, चलते हुए घुटने समल नही पाते, पाव के तलवे सोये-से प्रतीत होते हैं, जाघें दर्द करती है मानो उन्हें किसी ने चोट पहुँचायी हो, पहले एक हाथ सुन्न होता है, फिर दूसरा सुन्न हो जाता है, कभी-कभी सारा हाथ सो जाता है, फूला हुआ-सा लगता है—ये सब लक्षण मेरु-दड की शिथिलता के कारण प्रकट होते हैं और **कौक्युलस** इन्हें दूर कर देता है।

मस्तिष्क तथा मेरु-दड पर इस प्रकार का शिथिलता का प्रभाव करने वाले

अनेक कारण हैं जिनमे से चिडचिडापन, घबराहट, निद्राहीनता, क्रोध, दु ख आदि मानसिक-प्रभाव मुख्य हैं। इनके प्रभाव से कभी किसी एक अग का, कभी सारे शरीर का पक्षाघात हो जाया करता है और कभी-कभी उन्निद्रता सताने लगती है। उदाहरणार्थ, जब पत्नी अपने रोगी पति की सेवा मे दिन-रात लगी रहती है, पुत्री अपने रोग-ग्रस्त पिता की देख-रेख मे दिन-रात एक कर देती है, तो वे चिता से, घबराहट से, सो न सकने से थक जाते और शक्तिहीन हो जाते हैं। वे अधिक चिता और श्रम बर्दाश्त नही कर सकते, उनकी टागें लडखडाने लगती हैं, पीठ कमज़ोर पड जाती है, और जब सोने का समय आता है तब नीद नही आती। इस प्रकार के कारणो से जब रोग आता है तब यह औषधि काम करती है। नर्सों को जिनका यह धधा ही है उन्हें रोगी की सेवा-शुश्रूषा करने से ऐसा रोग नही आ घेरता क्योंकि वे निर्लेप-भाव से सेवा करती हैं, रोगी मरे या जीये, इस से उन्हें कोई सरोकार नही होता, परन्तु जब कोई अपने निकट के सबधी की सेवा मे लगा होता है तब उसे सारी चिता, घबराहट घेरे रहती है। जिस कार्य मे अपना अन्तरतम घुल-मिल जाय और व्यक्ति उसमे से अपने को अलग न कर सके, सारी चिन्ता उसके सिर पर सवार हो जाय, तब थकान, शक्तिहीनता, उन्निद्रता का सामना करना पडता है और रोगी की सेवा करने वाला स्वय रोगी पड जाता है। ऐसी अवस्था मे **कौक्युलस** काम करता है।

निद्राहीनता—इस औषधि की निद्राहीनता पर हमने अभी लिखा, परन्तु इस पर कुछ अधिक बल देने की आवश्यकता है। रोगी की देर तक सेवा करने से जो निद्राहीनता से उपद्रव खडे हो जाते हैं—उन्निद्रता, शक्तिहीनता, पक्षाघात, ऐंठन आदि—यह औषधि सिर्फ उस निद्राहीनता के उपद्रवो को ही शान्त नही करती, जब रात-रात भर जाग कर पहरा देना पडता है, या जब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर रात भर जागता रहता है, तब जो शिकायतें पैदा हो जाती हैं, उन्हें भी इसी औषधि की आवश्यकता होती है।

(२) **प्रतिक्रिया मे देर लगना, बात को देर मे समझना**—इस औषधि का स्नायु-मडल पर पक्षाघातपरक प्रभाव होता ही है, यह हमने देखा। इसीका एक रूप यह है कि रोगी के मस्तिष्क-केन्द्र मे बाहर के सवेदन पहुचने मे कुछ देर लगती है। अगर रोगी को आप च्यूटी भरें, तो वह एकदम उसे अनुभव नही करता। नीरोग-व्यक्ति को च्यूटी भरी जाय तो वह झट 'ओह' कह उठता है, परन्तु इस औषधि का रोगी च्यूटी भरने के कुछ देर बाद 'ओह' कहेगा। अगर उससे कुछ प्रश्न पूछा जाय, तो उसका उत्तर भी वह विलम्ब से देगा क्योंकि प्रश्न उसके मस्तिष्क-केन्द्र मे पहुचता ही देर मे है। पहले बाह्य-सवेदन के प्रति प्रतिक्रिया मे यह धीमापन दिखलाई देता है, फिर देखने वाले को यह अनुभव होने लगता है कि पक्षाघात का-सा असर रोगी पर हो रहा है, अन्त मे यह अवस्था

वढते-वढते पक्षाघात की ही हो जाती है। रोगी का मन पटल शून्य-समान दीखता है, एक सप्ताह गुजर जाय परन्तु उसे यह एक क्षण के समान प्रतीत होता है, वह अपने मनोभाव को प्रकट करने के लिये शब्द ढूढा करता है, परन्तु शब्द सामने नही आते। मन की इस प्रकार की शिथिल गति हो जाती है। बात को समझने मे ही उसे देर लगती है।

(३) **हाथ-पैर का कापना, लडखडाना** (Loco-motor ataxia)—पक्षाघात का हाथ-पैर पर भी प्रभाव पडता है। रोगी किसी वस्तु को पकडता है तो ठीक-से पकड नही पाता, हाथ कापने लगता है, जो-कुछ पकडा है नीचे गिर पडता है। अगो का एक-दूसरे मे समन्वय इस औषधि मे विगड जाता है। पैरो मे लडखडाना दीखने लगता है। हाथ-पैर सुन्न हो जाते हैं। यह सुन्नपना मस्तिष्क तथा मेरु-दण्ड के ज्ञानवाहक-तन्तुओ की शिथिलता के कारण होता है। अगुलिया भी सुन्न हो जाती हैं।

(४) **जोडों का कडा पड़ जाना**—पक्षाघात की छाया जोडो पर भी पडती है। रोगी हाथ-पैर को सीधा करके बैठे तो उन्हें आसानी से मोड नही सकता, मोडने पर दर्द होता है, अग को हाथ के सहारे मोडना पडता है। जो लोग शोक, क्रोध, चिंता से ग्रस्त रहे हैं वे पीठ के वल लेटे रहते हैं, उठते हुए वडी कठिनता से अगो को सभाल कर उठ सकते हैं क्योकि उनके अग अकड जाते हैं, कडे पड जाते हैं। जव चिकित्सक उनके किसी अग को हिलाता है, खुली वाह को वाह के जोड पर से वन्द करता है तो रोगी चिल्ला पडता है, परन्तु उसके वाद उसे आराम महसूस होता है, और वह उठकर चल-फिर सकता है। यह 'पक्षाघातपरक-अकडन' (Paralytic stiffness) है। रोगी पैर फैला कर कुर्सी पर वैठा है, वह उन्हें अन्दर को मोड नही सकता, मोडना हो तो हाथ से पैर को पकड कर मोडना पडता है। यह विचित्र-लक्षण है जो अन्य किसी औषधि मे नही पाया जाता।

(५) **निद्राहीनता, या गाडी मे चढने या नीचे देखने से चक्कर आ जाना**—पहरेदारो को निद्रा कम आने मे घुमेरी आ जाती है, रोगी रेल-गाडी पर चढ कर जाता है, मोटर पर, लारी पर, परन्तु गाडी की गति को वह सहन नही कर सकता, उसे गाडी की हरकत से सिर-दर्द होने लगता है, जी मतलाने लगता है, चक्कर (Vertigo) आ जाता है। वोलने से, आख हिलाने से, गाडी में चढने मे, हर प्रकार की हरकत से सिर चकराने लगता है। चलती गाडी मे से वह नीचे देख नही सकता, किश्ती से वहते पानी को, ऊचाई से नीचे देखने मे उसे चक्कर आ जाता है और चक्कर के साथ जी मतलाने लगता है। सिर चकराने (Giddiness) की यह महौषधि है। डा० जे गैलावरडिन एक नौकरानी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि तीन साल से उसे चक्कर आते

थे, परन्तु कोई डाक्टर उसे ठीक नहीं कर सका। वह जहां भी जाती उसे यही कहा जाता कि इसका कोई इलाज नहीं है। उसे मजाक से डाक्टर लोग 'मिस-गिटिनेस' कहने लगे। अन्त में डा० गैलावर्डिन ने उसे कौक्युलस ३ से ठीक कर दिया। एक साल बाद फिर उसे शिकायत हुई तो कौक्युलस ६ से वह सदा के लिये उस रोग से मुक्त हो गई।

(६) **निद्राहीनता तथा शोक आदि के कारण रजोधर्म जल्दी, अधिक और देर तक होना या अन्य उपद्रव**—जिन स्त्रियों को घर में किसी की बीमारी के कारण या अन्य किसी कारण से देर तक निद्राहीनता भोगनी पड़ती है, या जिनका शरीर दु:ख, शोक तथा चिन्ता से क्षीण हो जाता है, उन्हें या तो रजोधर्म जल्दी, अधिक और देर तक होने लगता है, या ऐसी अवस्थाओं में रजोधर्म हफ्तों और महीनों तक रुक जाता है, या रजोधर्म का स्थान प्रदर ले लेता है। ये सब मस्तिष्क तथा मेरु-दण्ड के स्नायु-ततुओं की मानसिक-प्रभाव के कारण होनेवाली विकृतियां हैं। रजोधर्म के दिनों में इतनी दुर्बलता हो जाती है कि स्त्री खड़ी नहीं हो सकती, बोलने में भी कमजोरी लगती है।

(७) **सिर या अन्य अंगों में खाली-खाली महसूस होना**—इस औषधि का सामान्य तथा व्यापक-लक्षण स्नायविक कमजोरी, शिथिलता है। सिर पर भी इसका प्रभाव दिखलाई देता है। रोगी को अपना सिर खाली-खाली लगता है। सिर का खालीपन कमजोरी का ही दूसरा नाम है। यह खालीपन सिर तक ही सीमित नहीं रहता। पेट, आंतों, छाती, हृदय—शरीर के हर भीतरी भाग में यह खालीपन महसूस हो सकता है।

(८) **भोजन के नाम से गला घुटने लगता है**—'मैटीरिया मेडिका' में दो औषधियां हैं जिनमें भोजन की गंध से, यहां तक कि भोजन का नाम लेते ही रोगी का गला घुटने लगता है। वह भोजन की गंध बर्दाश्त नहीं कर सकता। कमरे में, रसोई घर में से भोजन की गंध आते ही रोगी का जी मतलाने लगता है। ये दो औषधियां हैं **कौलचिकम** तथा **कौक्युलस**।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

कौक्कस कैक्टाई (COCCUS CACTI)

(१) **हूपिंग-कफ (चिपचिपा लसदार बलगम जो डोरे की तरह लम्बा खिंच जाय**—यह औषधि हूपिंग-कफ में काम आती है। श्वास-नलिका (Larynx) में खुरखुराहट होती है। रोगी इस खुरखुराहट से २.३० बजे जाग उठता है। बहुत अधिक मात्रा में चिपचिपा, लसदार बलगम जो डोरी की तरह लम्बा खिंच जाय, निकलता है। खांसते-खांसते उल्टी तक हो जाती है। बहुधा चिकि-

रसक गाढा, डोरे-सरीखा, लसदार बलगम देखकर **कैलि बाईक्रोम** दिया करते हैं, परन्तु इस प्रकार के बलगम मे **कौक्कस** कम नही है। **कैलि बाईक्रोम** का बलगम पीला होता है, ऐलब्यूमिन की तरह साफ नही होता, इस औषधि का बलगम साफ होता है, ऐलब्यूमिन की तरह का लम्बा तार दोनो मे खिचता है।

(हूपिंग-कफ की मुख्य-मुख्य औषधिया)

हूप-खासी एक सक्रामक, फैलनेवाली खासी है जिसमे रोगी ऐठ जाता है। इस मे निम्न औषधिया लाभ-प्रद हैं

i. **कौक्कस कैक्टाई**—रात अढाई बजे या सवेरे इसका कष्टप्रद समय है। दूसरे समय भी दौरा पड सकता है, परन्तु दौरे पडने का अधिकतर यह समय है। खासी मे मुख से डोरे-सरीखे तार निकलते हैं। इसके बलगम का रग ऐलब्यूमिन जैसा साफ होता है।

ii. **इपिकाक**—हूपिंग-कफ की प्रथम-अवस्था मे जब बलगम उपस्थित नही होता, दौरा पडने से पहले गले मे 'सकोच' (Spasm) पडता है, खासी के समय बच्चा ऐंठ और अकड जाता है, नाक तथा मुह से खून निकलता है और उल्टी आ जाती है, ऐसे क्रूप मे **इपिकाक** अत्युत्तम है।

iii **ऐन्टिम टार्ट**—जब छाती मे बलगम इकट्ठा होकर छाती और गले मे घडघट शब्द करने लगता है, और रोगी खासी का दौर समाप्त होने के बाद निदासा हो जाता है, तब **ऐन्टिम टार्ट** उपयोगी है।

iv **क्यूप्रम**—उस हूपिंग-कफ मे जब केवल गले मे ही 'सकोच' (Spasm) नही पडता, परन्तु जब सारा शरीर ऐंठ जाता है। दौर पडने मे बच्चा अचेत हो जाता है, सास भी रुक-सा जाता है।

v **ड्रौसरा**—मध्य-रात्रि के बाद दौरा शिखर पर पहुच जाता है, गले की घुटन और उल्टी प्रमुख रूप धारण कर लेती है।

vi **हायोसाइमस**—कफ इतनी जोर का नही होता परन्तु लगातार होता रहता है। लेटने पर खासी चलती रहती है, उठ कर बैठ जाने से खासी रुक जाती है। यह खासी प्राय गले की काक-जिन्हा (Uvula) के सूजने तथा उसके श्वास-नलिका को स्पर्श करने से उठा करती है।

vii **सलफर**—हूपिंग-कफ के दो दौर एक-दूसरे के बाद एक-साथ पडते हैं, उसके बाद रोगी को कुछ देर आराम रहता है।

(२) **रक्त के मोटे थक्के जरायु का मार्ग अवरुद्ध रखते हैं**—जरायु मे रक्त के मोटे-मोटे थक्के भरे होते हैं, जो निकलने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रयत्न मे रोगी को प्रजनन का-सा कष्ट, दर्द होता है। जब वे एक बार निकल जाते हैं तब फिर बनने लगते हैं। इन थक्को के बनने-निकलने के कारण रोगी को पेशाब

जाने की हाजत बनी रहती है परन्तु पेशाब उतरता नहीं है। कौक्कस से इन लक्षणों में लाभ होता है।

(३) **रोगी शीत-प्रधान होता है, परन्तु ठंड के कारण जुकाम आदि लग जाने पर ठंड को ही पसन्द करता है**—रोगी शीत-प्रधान होता है और ठंड लगने से ही उसे रोग आ घेरता है, परन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि रोगी के स्वभाव और उसके रोग के स्वभाव में भेद भी हो सकता है। दोनों परस्पर-विरुद्ध-स्वभाव के भी हो सकते हैं। कौक्कस का रोगी, जो स्वयं शीत-प्रधान है क्योंकि ठंड लगने से उसे रोग आसानी से पकड़ लेता है, वह ठंड लगने से जुकाम आदि हो जाने के बाद गर्म कमरे में रहना पसन्द नहीं करता, उसे ठंडी हवा ही पसन्द होती है। यह परस्पर-विरुद्ध बात लगती है, परन्तु इन विरोधों को ध्यान में रखना चिकित्सक का कर्तव्य है। अगर इस रोगी को ठंड लगने से खांसी हो गई, तो यद्यपि रोगी शीत-प्रकृति का है, तब भी उसकी खांसी गर्म कमरे में, गर्म बिस्तर में, गर्म चाय आदि पीने से बढ़ जाती है। अगर वह ठंडी वस्तुएं खाये-पीये, ठंडे कमरे में रहे, तो उसे आराम मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि जब एक बार रोग प्रारंभ हो गया तब वह उल्टे कदम चलने लगता है, हुआ तो ठंड लगकर लेकिन आराम भी अब उसे ठंड से ही प्रतीत होता है।

(४) **ठंड से लाभ और ठंड से हानि (इन दोनों विरोधी गुणों का समाधान)**—ऊपर हमने जो-कुछ लिखा उससे एक समस्या पैदा हो गई। समस्या यह है कि यह कैसे हो सकता है कि किसी रोग में ठंड से लाभ भी हो, ठंड से हानि भी हो? डा० कैन्ट लिखते हैं कि उन्होंने अपनी रिपर्टरी में अनेक औषधियों को 'ठंड से लाभ' (Better by cold) और 'ठंड से हानि' (Worse by cold) —इन दोनों शीर्षकों में दिया है और चिकित्सक लोग उनसे पूछा करते हैं कि यह परस्पर-विरुद्ध बात कैसे हो सकती है। इसका उत्तर देते हुए उन्होंने लिखा है कि अनेक होम्योपैथिक औषधियों में यह विलक्षणता पायी जाती है कि रोगी स्वयं किसी एक प्रकृति का होता है, परन्तु उसके अंग रोगी की प्रकृति से उल्टी प्रकृति के होते हैं। उदाहरणार्थ, **फॉसफोरस** शीत-प्रकृति का रोगी है, परन्तु उसका पेट तथा सिर ऊष्ण-प्रकृति के होते हैं इसीलिये **फ्रॉसफोरस** का रोगी सारे शरीर में तो सर्दी अनुभव करता है, कपड़ा लपेटे रहता है, परन्तु पेट में वह बर्फ का-सा ठंडा पानी पीना चाहता है, सिर पर ठंडी हवा पसन्द करता है। यही कारण है कि कैन्ट की रिपर्टरी में एक औषधि 'शीत-प्रधान' (Chilly)-शीर्षक में भी पायी जाती है, 'ऊष्ण-प्रधान' (Hot)-शीर्षक में भी पायी जाती है। इस दृष्टि से जब हम कहते हैं कि **फॉसफोरस** शीत-प्रधान है, तब हमारा अभिप्राय यह होता है कि इसका रोगी छाती पर ठंडक बर्दाश्त नहीं कर सकता, शरीर को कपड़े से ढांप कर रखना चाहता है और जब हम कहते हैं कि वह ऊष्ण-

प्रधान है तब हमारा अभिप्राय यह होता है कि पेट मे तथा सिर पर वह गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकता, उन्हें वह ठडा रखना चाहता है। इसी दृष्टि से कोक्कस का रोगी शीत-प्रधान होता है, परन्तु खासी-जुकाम हो जाने पर ठड को ही पसन्द करता है।

(५) शक्ति तथा प्रकृति—३, ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है, परन्तु खासी-जुकाम मे उसे शीत ही पसन्द है)

कॉफ़िया क्रूडा (COFFEA CRUDA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मानसिक उत्तेजना, सब इन्द्रियो की उत्तेजित अवस्था तथा निद्रा-नाश	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) हर्ष से नींद न आना	*मुह मे ठडे पानी से लाभ
(३) शोर-गुल और हरकत से दर्द बढ जाना	*गर्मी से रोग। को लाभ होना
(४) दात के दर्द मे मुख मे ठडे पानी से आराम	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) सिर मे कील चुभने-जैसा दर्द	*अचानक मानसिक-उत्तेजना
(६) अधिक कॉफी पीने से होने वाले रोग का प्रतीकार	*अचानक अति-हर्ष से वृद्धि
	*शोर-गुल, हरकत से वृद्धि
	*ठंड से रोग मे वृद्धि

(१) मानसिक-उत्तेजना, सब इन्द्रियो की उत्तेजित अवस्था तथा निद्रा-नाश—कॉफी पीनेवाले जानते हैं कि इससे मानसिक-चेतनता जाग जाती है। इसके रोगी की विचार-शक्ति बडी तीव्र हो जाती है। जो-कुछ करना हो झट करने को दौडता है, विचार करने लगता है तो उसमे इतना खो जाता है कि सोचता ही रहता है। विचारो का प्रवाह उसे घेरे रहता है। अगर वह व्यापारी है तो व्यापार की योजनाए बनाता चला जाता है, यहाँ तक कि इन विचारो मे वह नीद को भी खो बैठता है। उसका मानस उत्तेजित रहता है। उसके विचार-जगत् को जब चिंतन की लहरें आप्लावित करने लगती है, तब उसके लिये उनसे छुटकारा पाना कठिन हो जाता है। उसकी हर इन्द्रिय उत्तेजित हो उठती है। दूर-दूर की आवाज़े उसे सुनाई देने लगती हैं। रात को कही दूर घटा बज रहा हो, कुत्ते भूक रहे हो, सब उसे सुनाई पडता है। मानसिक-उत्तेजना के सब विकार इस औषधि मे पाये जाते हैं। ज़रा-से शोर से उसकी तकलीफे बढ जाती है। दरवाजे का खुलना, घटी का बजना, बच्चो का दौडना-घूमना, उनके पैरो की आहट—जिन आवाज़ो की तरफ स्वस्थ-व्यक्ति का ध्यान तक नही जाता, वे उसे परेशान कर देती हैं। सारे 'मैटीरिया मैडिका' मे दूसरी कोई औषधि ऐसी नही

है जिसमे आवाज़ को सुनने से तकलीफ वढ जाती हो। इस रोगी का दर्द आवाज़ से वढ जाता है। **नक्स वोमिका** मे यह लक्षण है, परन्तु आवाज़ से हाथ-पैर मे भी दर्द का वढ जाना—कान की इन्द्रिय का इतना उत्तेजित होना कि शब्द को भी वर्दाश्त न कर सके **कॉफिया** मे ही पाया जाता है।

रोगी शोर-गुल को ही सहन न कर सकता हो, ऐसी वात नही है। वह छूने तक को सहन नही कर सकता। डा० कैन्ट एक स्त्री का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि वे उसे जव देखने गये, तव उसकी टाग विस्तर से वाहर निकली हुई थी और एक तरफ से आग-जैसी लाल हो रही थी। उन्होंने उसे छूने के लिये हाथ वढाया ही था कि वह चिल्ला उठी उसे छूना मत, मैं स्वय इस टाग को नही छू सकती। इस प्रकार के लक्षण मौजूद हो, तो **कॉफ़िया** से तत्काल लाभ होता है।

(२) **हर्ष से नींद न आना**—कई लोगो को कॉफी पीने से नीद नही आती। होम्योपैथिक शक्तिकृत **कॉफ़िया** की २०० शक्ति की एक मात्रा उत्तेजित मन को शान्त कर स्वाभाविक निद्रा प्रदान करती है। इस औषधि का उपयोग तव किया जाता है जव मानसिक-उत्तेजना के कारण, और खासकर किसी हर्ष-दायक समाचार के कारण मन इतना उत्तेजित हो जाय कि नीद ही न आये। किसी को लाटरी का रुपया एकदम मिल जाने से नीद नही आती। ऐसे समयो मे **कॉफिया** आश्चर्यजनक असर पैदा करती है और पासे पलटता हुआ रोगी शान्त निद्रा मे सो जाता है। परन्तु इसी अवस्था मे यह उपयोगी है, हर प्रकार के उन्निद्र रोग मे नही। इसका काम मानसिक-उत्तेजना को शान्त कर देना है। सिर्फ नीद न आती हो, तव इसका कोई उपयोग नही है। अशुभ-समाचार से नीद न आने मे **जेलसीमियम** दवा है।

(३) **शोर-गुल और हरकत से दर्द बढ़ना**—जैसा हमने ऊपर कहा, इस औषधि का अद्भुत लक्षण यह है कि शोर-गुल से दर्द वढ जाता है। रोगी की सुनने की शक्ति अन्य शारीरिक-इन्द्रियो की तरह इतनी तीव्र हो जाती है कि शब्द सुनने से ही दर्द होने लगता है। चेहरे का दर्द, दात का दर्द, सिर-दर्द, टागो मे दर्द—कही भी दर्द हो, शोर-गुल से दद का बढ जाना इसका विशेष लक्षण है। डा० हेरिंग ज्वर के साथ दर्द मे **एकोनाइट** और **कॉफिया** पर्याय-क्रम से, एक-दूसरे के वाद दिया करते थे। जव **एकोनाइट** के ज्वर के लक्षण और **कॉफ़िया** के स्नायविक-उत्तेजना, असहनशीलता के लक्षण मौजूद हो, तव इन दोनो का एक-दूसरे के वाद देना लाभदायक सिद्ध होता है यद्यपि अगर एक ही औषधि से सव लक्षण ठीक हो जायें तव दोनो के देने की कोई आवश्यकता नही। शोर-गुल के अतिरिक्त हरकत से भी **कॉफिया** का दर्द बढ जाता है।

किसी जगह भी दर्द हो—अगर शरीर के किसी भाग मे भी दर्द हो, और

किसी दूसरी औषधि के लक्षण स्पष्ट न दीख रहे हो, तब इस औषधि की २०० शक्ति की एक मात्रा देने से लाभ होता है क्योंकि मानसिक-उत्तेजना के कारण दर्द की तीव्रानुभूति को यह शान्त कर देता है। कॉफिया का दर्द हरकत से बढता है, ठडी हवा को नही सह सकता।

(४) **दात के दर्द मे मुख मे ठंडे पानी से आराम**—इस औषधि का रोगी 'शीत-प्रधान' (Chilly) होता है, परन्तु इसका अद्भुत-लक्षण यह है कि दात के दर्द मे, जबडे के दर्द मे बर्फ के समान ठडे पानी को मुख मे रखने से आराम मिलता है। ठड लगने से भी जब दात का दर्द शुरु हो जाय, या मानसिक-उत्तेजना से, हर्ष-समाचार से दात का दर्द उठ खडा हो, तब भी ठडे पानी को मुख मे रखने से लाभ होता है। यद्यपि रोगी स्वभाव से शीत-प्रकृति का होता है, तो भी गर्म चाय नही पी सकता। हम पहले भी कई बार लिख चुके हैं कि अनेक औषधियो मे रोगी के 'व्यापक-लक्षण' (Generals) उसके 'अग-विशेष' (Particulars) के लक्षणो के विपरीत होते है। **कॉफिया** का रोगी शीत-प्रधान है, परन्तु उसका मुख का दर्द ठडा पानी ही मागता है। इन दोनो के विरोध को देखते हुए हमे उसके 'व्यापक-लक्षण' (General) को ही ध्यान मे रखना होगा, यह नही देखना होगा कि क्योंकि वह दात के दर्द मे ठडा पानी चाहता है इस लिये उसे गर्म रोगी समझा जाय। होम्योपैथिक-सिद्धान्त के अनुसार गर्म रोगी को गर्म दवा दी जाती है, ठडे रोगी को ठडी दवा दी जाती है क्योकि इस शास्त्र का सिद्धान्त 'सम सम शमयति' का है। **कॉफिया** का रोगी मिजाज़ का ठडा रोगी है, इसलिये दात-दर्द मे ठडा पानी चाहने पर भी उसके 'व्यापक-लक्षण' (Generals) के आधार पर उसे ठडी दवा ही देनी होगी।

यहाँ फिर हम उस बात को दोहराना चाहते हैं जो इन पृष्ठो मे पहले भी लिखी जा चुकी है। रिपर्टरी मे कई औषधियो के विषय मे एक जगह लिखा होता है **'रोग की ठड से वृद्धि'** (Better from cold) दूसरी जगह लिखा होता है **'रोग की ठड से कमी'** (Worse from cold), इन दोनो परस्पर-विरोधी बातो का यह अर्थ होता है कि इन मे से एक लक्षण औषधि का 'व्यापक-लक्षण' (General) है, दूसरा उसका 'अग-विशेष' (Particular) का लक्षण है, इसलिये चिकित्सक को इन विरोधो को देखते हुए इस भ्रम मे नही पडना चाहिये कि एक औषधि मे दो परस्पर-विरोधी लक्षण कैसे हो सकते हैं। उसे 'मैटीरिया मैडिका' के आधार पर यह देखने का प्रयत्न करना चाहिये कि इन मे से कौन-सा लक्षण 'व्यापक-लक्षण' है, कौन-सा 'अग-विशेष' का है। इन दोनो को सामने रखते हुए 'व्यापक-लक्षण' के आधार पर ही दवा का निर्वाचन करना चाहिये।

मुह मे ठडा पानी रखने से **कॉफिया** का दर्द स्थायी तौर पर मिट जाता

है। **कैमोमिला** मे भी यह लक्षण है, परन्तु उसमे ठडे पानी से कुछ देर ही दर्द कम होता है, फिर शुरु हो जाता है। **कैमोमिला** मे मुख मे गर्म पानी रखने से दर्द बढ जाता है।

(५) **सिर मे कील चुभने का-सा दर्द**—सिर की कनपटी या खोपडी के ऊपर की हड्डी पर ऐसा दर्द होता है मानो कील चुभ रही है। **इग्नेशिया** तथा **थूजा** मे भी ऐसा दर्द है जिसमे सिर मे कील की-सी चुभन होती है।

(६) **अधिक कॉफी पीने से होने वाले रोग का प्रतीकार**—अधिक कॉफी पीने से अगर उन्निद्र-रोग हो जाय, तब **कॉफिया** काम नही करेगा, तब इस रोग तथा कॉफी से होने वाले अन्य रोगो के लिये **नक्स वोमिका, इग्नेशिया** तथा **कैमोमिला** लाभदायक हैं। आजकल लोग कॉफी वहुत पीते हैं इसलिये यह जानना आवश्यक है।

(७) **शक्ति**—३, ६, २०० (२०० शक्ति ज्यादा लाभ करती है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

कोलचिकम (COLCHICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) रसोई की गन्ध से उवकाई आने लगती है	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) पेट के अफारे मे यह जानवरो को भी ठीक कर देती है	*गर्मी से रोग का कम हो जाना *दोहरा होने से रोग का कम हो जाना
(३) पेट मे जलन के साथ वर्फ की-सी ठंडक मालूम होना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) पेचिश (डिसेन्ट्री) मे ऐसी ऐंठन मानो आंतों से झिल्ली खुरच कर निकल रही हो	*रसोई की गन्ध से रोग-वृद्धि *ठड से, नमी से रोग मे वृद्धि
(५) गठिये का एक जोड से दूसरे जोड मे फिरना	*हरकत से, स्पर्श से रोग-वृद्धि
(६) भिन्न-भिन्न अगों मे शोथ तथा जल-सचय	*मनोवेग से रोग मे वृद्धि
(७) ठड तथा हरकत से रोग मे वृद्धि	*साय से प्रात रोग मे वृद्धि

(१) **रसोई की गन्ध से उवकाई आने लगती है**—इस औषधि का सबसे मुख्य-लक्षण यह है कि रोगी भोजन की गध को, खासकर मछली, अडे, चर्बी मिले मास आदि पकने की गध को बिलकुल ही बर्दाश्त नही कर सकता, गध आने से ही उसे उवकाई आने लगती है, जी मतलाने लगता है। गध के प्रति उसकी इतनी असहनशीलता होती है कि जो गध दूसरो को प्रतीत भी नही होता वह उसे परेशान कर देता है। रसोई-घर कितनी ही दूर क्यो न हो, उसे गध आ ही जाती है। गध से उसकी परेशानी को देखकर घर के लोग रसोई

के दरवाजे वन्द किये रखते हैं। रसोई की गध से उवकाई आना—इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है, यह इसका 'व्यापक-लक्षण' (General) है। कोई भी रोग क्यो न हो—गर्भावस्था हो, बुखार हो, पेचिश हो, गठिया हो, दस्त आते हो, अगर रोगी को भोजन की महक से उवकाई आती हो, तो **कोलचिकम** लाभ करेगा। इस प्रकरण मे डा० नैश का अनुभव देना प्रकरण-सगत होगा। एक ७५ वर्ष की स्त्री को यकायक पेट की शिकायत हो गई, वडी मात्रा मे पेट से खून की उल्टिया आने लगीं, उसके वाद खून के दस्त आने लगे। खून के निकलने की सव दवाइया उन्होंने दे डाली—**एकोनाइट, मर्क्यूरियस, नक्स वोमिका, इपिकाक, हैमेमेलिस, सलफर**—परन्तु किसी से कुछ लाभ न हुआ। वह स्त्री पकते भोजन की गन्ध को वर्दाश्त नही कर सकती थी। रसोई-घर उसके स्थान से तीन कमरे दूर पर रक्खी गई थी क्योकि उसके गन्ध से उसे उवकाई आती थी। अन्त मे, इस लक्षण पर डा० नैश ने उसे **कोलचिकम** २०० की मात्रा हर दस्त आने के वाद देना शुरु किया और वह स्त्री भली-चगी हो गई। इसी प्रकार ज्वर पर डा० हाउले के अनुभव का डा० एलन ने वर्णन किया है—जो इस औषधि के इस पहलू पर प्रकाश डालता है। एक रोगी को प्रतिदिन १० वजे प्रात बुखार चढता था, सख्त प्यास लगती थी, सर्दी लगकर सिर-दर्द हो जाता था। दस वजे ज्वर आने के लक्षण पर उसे **नैट्रम म्यूर** २०० दिया गया, परन्तु कुछ लाभ नही हुआ। **नैट्रम म्यूर** का दस वजे ज्वर चढना विशिष्ट-लक्षण है और इस लक्षण पर प्राय चिकित्सक लोग इस औषधि को दिया करते हैं। अन्त मे, डा० हाउले ने यह देखकर कि रोगी भोजन की गन्ध नही वर्दाश्त कर सकता, भोजन के नाम से ही उसे उवकाई आने लगती है, **कोलचिकम** २ m दवा की एक मात्रा दी। इसके देने के वाद न बुखार रहा, न सर्दी के आक्रमण हुए। इन दृष्टातो को देने का अभिप्राय यही है कि चिकित्सक को रोग के नाम के आधार पर औषधि न देकर लक्षणो के आधार पर चिकित्सा करनी चाहिये। उक्त-लक्षणो के आधार पर दवा देने से गठिया, ज्वर, रुधिर आना, पेचिश—कोई भी रोग क्यो न हो, शात हो जाता है। होम्योपैथी मे विलक्षण, अद्भुत-लक्षण के आधार पर दवा देने से ज्यादा सफलता मिलती है।

(२) **पेट के अफारे मे यह जानवरो को भी ठीक कर देती है**—पेट के अफारे मे यह मौहषध है। डा० कैन्ट लिखते है कि आदमियो के ही क्या, जानवरों को जव पेट का अफारा हो जाता है और मालूम पडता है कि अव इसका पेट फट जायगा, ढोल की तरह फूल जाता है, तव **कोलचिकम** से गाय, घोडे तक का अफारा दूर हो जाता है, आदमी का तो कहना ही क्या है? डा० फिशर लिखते हैं कि १८७० मे उन्होंने डा० हेरिंग का एक व्याख्यान सुना जिसमे उन्होंने कहा

कि अगर जानवर का किसी प्रकार के घास के खाने से पेट फूल जाय, तो **कोल-चिकम** देने से तुरत लाभ होगा। यह सुनकर डा० फिशर ने अपने एक किसान भाई को **कोलचिकम** ३ x की दो ड्राम की एक शीशी भेज दी और लिखा कि जानवर के पेट फूलने की हालत में यह दवा दे देना। इस दवा के मिलने के बाद इस किसान भाई के अपने जानवर ही ठीक नहीं होने लगे, आस-पास के किसान भी इस दवा को मांगने लगे, और उससे उनके जानवर भी ठीक होने लगे।

(३) **पेट में जलन के साथ बर्फ की-सी ठंडक महसूस होना**—इस औषधि में दो लक्षण एक-दूसरे से विरुद्ध पाये जाते हैं। एक तरफ तो पेट में तेज़ जलन होती है, और दूसरी तरफ पेट में बर्फ के समान ठंडक की अनुभूति होती है। 'अजीर्ण-रोग' में जब रोगी को पेट में जलन होती हो, या ठंडक महसूस होती हो, या दोनों—जलन और ठंडक एक-साथ—दोनों महसूस होते हों, तब **कार्बो वेज, चायना** और **लाइको** की अपेक्षा इस औषधि से शीघ्र लाभ होता है। अगर इन लक्षणों के साथ पेट में अफारा पड़ गया हो, पेट ढोल की तरह तम्बूरा बन गया हो, तब यही औषधि उपयुक्त रहती है।

(४) **पेचिश (डिसेन्ट्री) में ऐसी ऐंठन मानो आंतों से झिल्ली खुरच कर निकल रही हो**—पेचिश में मल सफेद होता है या उसमें खून मिला हुआ होता है। देखने से ऐसा लगता है मानो आंतों में से खड-खड झिल्ली खुरच कर निकाली गई है। इस मल में मरोड, ऐंठन होती है। खुरचने के-से अनुभव में दर्द तो होता ही है। ये सब लक्षण **कैन्थरिस** तथा **कोलोसिन्थ** में भी पाये जाते हैं, परन्तु इनमें भेद यह है कि **कैन्थरिस** में पेशाब की जलन का लक्षण भी मिला रहता है, और **कोलोसिन्थ** में रोगी पेट के दर्द के मारे दोहरा हुआ जाता है। अगर पेचिश में पेट फूलने का लक्षण भी साथ मिला हो, तो **मर्क्यूरियस** की अपेक्षा **कोलचिकम** अधिक उपयुक्त रहती है।

(५) **गठिये का एक जोड से दूसरे जोड में फिरना**—ऐलोपैथी में गठिये के लिये यह औषधि महामंत्र है। होम्योपैथी में 'गठिया-धातु' (Rheumatic diathesis) के व्यक्ति के लिये इस औषधि का प्रयोग होता है, परन्तु शक्ति-कृत औषधि का ही प्रयोग होता है। गठिये में इसके लक्षण हैं गठिये का दर्द एक जोड से दूसरे जोड को चला जाता है, एक तरफ से दूसरी तरफ चला जाता है, नीचे से ऊपर या ऊपर से नीचे चला जाता है, इस गठिये के साथ सूजन भी हो सकती है, बिना सूजन भी रोग हो सकता है, कभी यहां, कभी वहां। **लीडम** भी गठिये की दवा है, परन्तु **कोलचिकम** और **लीडम** में भेद है।

कोलचिकम तथा लीडम की गठिये में तुलना—इस औषधि में गठिये के रोगी को गर्मी से आराम मिलता है, **लीडम** में यद्यपि रोगी अपनी प्रकृति से

शीत-प्रधान होता है, तो भी उसके गठिये के रोग को ठड से आराम मिलता है। डा० कैन्ट ने **लीडम** के प्रकरण मे एक रोगी का उल्लेख किया है जिसके पैर गठिये से सूजे पडे थे, परन्तु टब मे बर्फ के टुकडे डालकर वह अपने पैर उसमे लटकाये बैठा रहता था। उसकी स्त्री ने बतलाया कि उसे इसी प्रकार आराम आता है। उसे **लीडम** दिया गया और न तो उसे बर्फ के-से ठडे पानी मे पैर रखने की आवश्यकता रही, न उसके पैरो मे गठिये की सूजन रही।

(६) **भिन्न-भिन्न अगो मे शोथ तथा जल-सचय**—शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे जल-सचय इस औषधि की खासियत है। अगर हाथ-पैर मे शोथ होती है, तो अगुली से दबाने पर गढे पड जाते हैं। पेट मे जल-सचय हो जाता है, जलोदर, जहा-जहा आन्तरिक-आवरणो मे जल-सचय हो सकता है, वहा-वहा जल-सचय के कारण शोथ हो जाता है। जो शोथ गठिया-धातु के हो, गठिया हो और शोथ हो, वहा **एपिस** और **आर्सेनिक** से लाभ न होने पर इससे लाभ होता है।

(७) **ठड तथा हरकत से रोग मे वृद्धि**—इसका रोगी शीत-प्रधान होता है, ठडी-नम हवा से रोग बढ जाता है, वर्षा से बढ जाता है। बहुत अधिक गर्मी से भी रोग बढता है। इस औषधि मे गर्मी का गठिया भी होता है। मूत्र के स्थूल-अश के न निकलने से, मूत्र के स्थूल-अश के जोडो मे बैठ जाने से गठिया होता है। गर्मी मे मूत्र के ये स्थूल-कण निकलने बन्द हो जाते हैं और गठिये के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। हरकत से रोग मे वृद्धि होती है। **कोलचिकम** इस अवस्था को ठीक कर देता है।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

I दु ख, शोक और दूसरो के कुकर्मो को देखकर रोगी को जो दु ख होता है उससे उत्पन्न रोगो मे यह हितकर है।

II इसका रोगी गठिया-धातु (Gouty diathesis) का होता है, प्राय शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है, इसके लक्षण प्राय वृद्ध-पुरुषो मे पाये जाते हैं।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—chilly—प्रकृति के लिये है)

कोलिनसोनिया कैनेडेनसिस (COLLINSONIA CAN)

(१) **बवासीर मे मल-द्वार मे तिनके ठुसे-हुए-सा अनुभव करना**—यह औषधि मुख्य तौर पर बवासीर के लिये प्रयुक्त होती है। रोगी को ऐसा अनुभव होता है जैसे गुदा-प्रदेश मे छोटे-छोटे तिनके या लकडिया ठुसी हुई हैं। **एस्क्यूलस** मे भी बवासीर का यह लक्षण है, परन्तु इन दोनो मे निम्न भेद है

एसक्यूलस की बवासीर	कोलिनसोनिया की बवासीर
* गुदा-प्रदेश मे तिनके ठुसे हुए हैं	*गुदा-प्रदेश में तिनके ठुसे हुए हैं
* गुदा-प्रदेश मे भारीपन रहता है	*गुदा-प्रदेश मे भारीपन नहीं रहता
* बवासीर मे रुधिर नहीं बहता है यद्यपि भारीपन रहता है (बादी बवासीर)	*बवासीर मे रुधिर बहता है *(खूनी बवासीर)
* मस्सों मे दर्द, स्पर्शासहिष्णुता और पीठ मे दर्द होता हो	*एसक्यूलस के मस्से तथा पीठ के लक्षण इसमे नहीं होते
* शायद ही कभी कब्ज होती हो	*सख्त कब्ज होती है

(२) सप्ताह, दो-सप्ताह में एक बार पाखाना (कब्ज)—कोलिनसोनिया मे सख्त कब्ज होती है। डा० नैश ने एक रोगी का उल्लेख किया है जिसे ऐलोपैथिक दस्तावर दवाइयों ने भी दो सप्ताह मे एक बार दस्त आता था। कोलिनसोनिया से एक मास मे वह बिल्कुल ठीक हो गया। शायद इस कब्ज के कारण ही रोगी को खूनी बवासीर की शिकायत हो जाती है, शुष्क-मल से मस्से छिल जाते है और खून बहने लगता है। कोलिनसोनिया के बाद बवासीर का जो रोग शेष रहे उसे एसक्यूलस ठीक कर देता है।

(३) बवासीर और कब्ज के कारण पेट-दर्द—डा० नैश ने लिखा है कि एक रोगी जिसे बवासीर थी, और सख्त कब्ज था, उसके पेट मे कठिन दर्द को कोलिनसोनिया ने ठीक कर दिया।

(४) बवासीर और कब्ज मे जरायु का बाहर निकल पडना—जिन स्त्रियो का जरायु बिल्कुल बाहर निकल पड़ता है, अगर उन्हे बवासीर और कब्ज भी हो, तो उनके रोगो को कोलिनसोनिया ठीक कर देता है, उनका बवासीर, कब्ज और जरायु का बाहर निकल पडना सब ठीक हो जाते हैं।

(५) गर्भाशय और गुदा-प्रदेश का बाहर निकल पडना—जिन स्त्रियो का गर्भाशय और गुदा-प्रदेश दोनो बाहर निकल पडते हैं, उनके लिये तो यह अत्यन्त उपयोगी है। यह सब-कुछ प्राय कब्ज मे पाखाने के लिये जोर लगाने के कारण हुआ करता है।

(६) बवासीर के रुधिर के बन्द हो जाने पर हृदय मे कठिन पीडा—इसका एक लक्षण यह है कि अगर उस व्यक्ति का जिसका बवासीर या अन्य किसी स्थान का रुधिर नियमित रूप मे निकला करता है बन्द हो जाय, तो उसे हृदय मे पीडा होनी शुरु हो जाती है, अगर रुधिर जारी हो जाय तो हृदय की पीडा बन्द हो जाती है। ऐसी हालत मे यह औषधि लाभ करती है।

(७) शक्ति—३, ६, ३०, २००

कोलोसिन्थिस (COLOCYNTHIS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) पेट, डिम्ब-कोश, डिसेन्ट्री आदि का दर्द जिसमे दोहरा होने तथा कडी वस्तु से दवाने से आराम मिले	लक्षणो मे कमी (Better) *जोर से दवाने से आराम *गर्मी मे रोगी को आराम *पाखाने के बाद रोगी को आराम *पेट से हवा निकलने पर रोगी को आराम
(२) घृणामिश्रित-क्रोध से दर्द आदि रोग उत्पन्न होना	
(३) शियाटिका का दर्द जिसमे दवाने से आराम मिले (बाईं तरफ)	
(४) चेहरे का दर्द (कोलोसिन्थ, वेल और मैग फॉस की तुलना)	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *दु ख, क्रोध से रोग मे वृद्धि *विना दर्द की तरफ लेटने पर *वाईं तरफ रोग का प्रकोप
(५) चक्कर आना जिसमे बाईं तरफ गिरने का डर हो	

(१) **पेट, डिम्ब-कोश, डिसेन्ट्री आदि का दर्द जिसमे दोहरा होने तथा कडी वस्तु से दवाने से आराम मिले**—यह पेट के दर्द की सर्वोत्तम औषधि है। पेट मे इतना दर्द होता है कि रोगी दोहरा हो जाता है। दोहरा होने से पेट पर जो दवाव पडता है, उससे उसे आराम मिलता है। पेट-दर्द मे दोहरा हो जाना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। वह दोहरा हो जाता है, या किसी कडी वस्तु मे पेट को दवाता है। कुर्सी, टेवल या जो-कोई भी कडी चीज़ पास हो, उससे पेट को दवाने लगता है। आतो मे रुकी हुई पेट की हवा फसी (Incarcerated flatus) होती है जिससे दर्द होता है। हवा से गुड-गुड शब्द होता है। नाभि-प्रदेश से दर्द उठकर ऊपर सारे पेट मे फैल जाता है। पाखाना आ जाने से फौरन आराम आ जाता है, परन्तु कुछ देर वाद फिर दर्द शुरु हो जाता है, जो अगली वार पाखाना आने तक वना रहता है। यह क्रम लगातार चलता है। जिन पर इस औषधि की परीक्षा हुई है उनका कहना है कि आतो मे दर्द ऐसा होता है मानो पत्थरो के वीच आतो को मसला जा रहा हो, मानो आतें फूट जायेंगी। रोगी सीधा होकर नही खडा हो सकता, हाथ से पेट को दवाकर खडा होता है। ऐसे दर्द मे कोलोसिन्थ से तत्काल, चमत्कारपूर्ण लाभ होता है। यह दर्द मुख्यतौर पर 'स्नायविक' (Neuralgic) होता है। इसके साथ रोगी को कय तथा दस्त भी आ जाता है। यह कय तथा दस्त पेट या आतो की किसी खराबी का परिणाम न होकर दर्द का ही परिणाम होता है।

डिम्ब-कोश का दर्द जब पेट दबाने से आराम मिले—कभी-कभी स्त्रियों के 'डिम्ब-कोश' (Ovary) में भी ऐसा दर्द होता है जिससे दोहरा होने से रोगी को आराम मिलता है। डिम्ब-कोश के ऐसे दर्द में **कोलोसिन्थ** को स्मरण करना चाहिये। यह समझना भूल है कि यह औषधि सिर्फ पेट-दर्द में ही काम आती है। जिस किसी रोग में रोगी को दोहरा होने से, या पेट को किसी कड़ी वस्तु से दबाने से आराम मिले उसी रोग में यह औषधि उपयुक्त है।

डिसेन्ट्री में जब पेट को दबाने से आराम मिले—डिसेन्ट्री में जब **एकोनाइट, मर्क, नक्स** से लाभ न हो, और दर्द या ऐंठन बड़ी आंतों से ऊपर जाकर छोटी आंतों में पहुंच जाय, और पेट दबाने से रोगी को चैन पड़े, तब इस औषधि से लाभ होता है। डिसेन्ट्री में इन लक्षणों के होने पर **कोलोसिन्थ** को नहीं भूलना चाहिये।

पेट-दर्द में यही एकमात्र दवा नहीं है। इस कष्ट में अन्य भी अनेक औषधियां हैं जिनके लक्षण हम नीचे दे रहे हैं .

(पेट-दर्द की मुख्य-मुख्य औषधियां)

एलू—इसका दर्द भी आंतों में रुकी हुई, फंसी हुई हवा के कारण होता है, पखाना होने के बाद **कोलोसिन्थ** की तरह दर्द चला जाता है, परन्तु रोगी पसीने से तर-ब-तर और अत्यन्त शक्तिहीन हो जाता है।

बेलाडोना—इसके पेट-दर्द में भी पेट को जोर से दबाने से आराम मिलता है, परन्तु इस दर्द की विशेषता यह है कि यह एकदम आता है और एकदम ही चला भी जाता है।

कार्बोलिक ऐसिड—इसका दर्द भी **बेलाडोना** की तरह एकदम आता है, कुछ देर रह कर एकदम ही चला जाता है। दूध पीते बच्चों और बूढ़ों में इस औषधि के विशेष लक्षण पाये जाते हैं।

कैमोमिला—हम अभी देखेंगे कि क्रोध आदि मानसिक कारणों से **कोलोसिन्थ** का पेट-दर्द, या डिम्ब-कोश का दर्द हो जाता है, **कैमोमिला** में भी क्रोध से दर्द हो जाता है। **कैमोमिला** में पेट-दर्द में दोहरा हो जाना नहीं पाया जाता। अगर बच्चे का पेट फूलने से दर्द हो, बच्चा पेट-दर्द से हाथ-पैर पटकता हो, दांत निकल रहे हों, स्वभाव से चिड़चिड़ाहट दिखलाता हो, तो **कैमोमिला** देना चाहिये।

चायना—रोगी के पेट-दर्द में दोहरा हो जाने का लक्षण **चायना** में भी है, परन्तु इसमें पेट का अफारा, फल आदि खाने से पेट-दर्द का होना, इस कारण बदहज़मी होना, या जी मतलाना आदि पाया जाता है।

कोलचिकम—इसके पेट-दर्द में पेट में बर्फ का-सा ठंडापन महसूस होता है।

क्यूप्रम—इसके पेट-दर्द मे ऐंठन होती है, ऐसा अनुभव होता है कि पेट पीछे मेरु-दंड की तरफ खिच रहा है। ठडा पानी पीने से दर्द मे आराम पडता है। आत के कुछ हिस्से के अगली आत मे फस जाने पर (Intussusception of the bowel) इससे विशेष लाभ होता है।

डायोस्कोरिया—यह औषधि **कोलोसिन्थ** से उल्टी है। **कोलोसिन्थ** मे पेट के बल झुकने से पेट-दर्द मे आराम आता है, इसमे पीठ की तरफ झुकने से, टेढे होने या सीधे खडे होने पर आराम आता है।

मैगनेशिया फॉस—इसमे **कोलोसिन्थ** के-से ही लक्षण हैं। पेट मे बडा सख्त दर्द होता है, रोगी चिल्लाने लगता है, दोहरा होने से दर्द मे आराम मिलता है, हाथ से दबाने से भी रोगी को ठीक लगता है। मुख्य तौर पर गर्म बोतल द्वारा पेट पर सेक से पेट-दर्द ठीक होता है, जो **कोलोसिन्थ** मे नही है। अगर **कोलोसिन्थ** और **कैमोमिला** मे पेट-दर्द ठीक न हो, तो **मैग फॉस** इस दर्द को ठीक कर देता है।

स्टैनम—इसमे भी दर्द मे पेट को दबाने से आराम मिलता है। बच्चे को मा अपने कन्धे पर उसका पेट दबाकर थामे रहे, तो वह ठीक अनुभव करता है। जरा-सी भी हरकत से रोगी चिल्लाने लगता है, दायी तरफ लेटने से रोग मे वृद्धि होती है।

(२) **घृणामिश्रत-क्रोध से दर्द आदि रोग उत्पन्न होना**—प्राय घरो मे स्त्री-पुरुष के पारस्परिक-वैमनस्य से झगडे उठ खडे होते हैं। एक-दूसरे के चरित्र पर सन्देह होने लगता है, इन झगडो मे क्रोध तो होता ही है, घृणा भी होती है। इनके परिणामस्वरूप पेट, सिर, कमर, डिम्ब-कोश आदि मे स्नायु-शूल हो जाता है। स्त्री-पुरुष मे ही नही, घर-गृहस्थी के काम मे नौकर-चाकरो से लडाई हो जाती है। नौकर ने बेशकीमती ग़लीचे पर स्याही उडेल दी, इस पर गृहिणी ने जो नौकर को डाटना शुरु किया कि बेचारी को सिर का या कमर का दर्द होने लगा। इस प्रकार के घृणामिश्रित-क्रोध से, या सिर्फ क्रोध से, मन उद्विग्न हो जाय, तो उसका परिणाम एक नही, अनेक रूप धारण कर सकता है। पेट का दर्द, क्रोध से ऋतुस्राव रुक जाय तब दर्द, मुख-मडल, नेत्रो तथा आतो मे स्नायु-शूल—इस प्रकार के अनेक दर्द क्रोध से हो जाते हैं जिनमे **कोलोसिन्थ** अचूक काम करता है।

(३) **शियाटिका का दर्द जिसमे दबाने से आराम मिले (बाईं तरफ)**—शियाटिका के लिये चिकित्सक लोग आम तौर पर **कोलोसिन्थ** दिया करते हैं, परन्तु यह होम्योपैथी नही है। यह औषधि शियाटिका को तभी आराम करती है जब जोर से दबाने से दर्द को आराम हो, क्योंकि दबाने से आराम आना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। इसके अतिरिक्त गर्म सेक से आराम,

पडे रहने से रोग का बढ जाना, हरकत से घटना—ये लक्षण भी आवश्यक हैं। कोलोसिन्थ का दर्द बडी नसो मे होता है। कोलोसिन्थ का शरीर के बायें भाग पर विशेष प्रभाव है। यद्यपि दायें पैर के शियाटिका मे भी यह असर करता है।

बाह का दर्द जिसमे दबाने से आराम मिले—यह औषधि केवल जाघ के शियाटिका के दर्द मे ही उपयोगी नही है, बाँह के दर्द मे भी अगर दबाने से और सेक से आराम हो, तो यह उसे ठीक कर देती है। इसका चरित्रगत-लक्षण—दबाने से आराम, गर्म सेक मे आराम—इन लक्षणो के आधार पर जर्मन डाक्टर स्टाफर ने एक स्त्री के बाई कोहनी के दर्द को, जो कोहनी से अगुलियो तक फैल जाता था, इस औषधि की उच्च-मात्रा से ठीक कर दिया। कोलोसिन्थ के दर्द प्राय विस्तर पर लेटने पर, सभवत उसकी गर्मी के कारण, ठीक हो जाते है।

(शियाटिका के दर्द को दूर करने की मुख्य-मुख्य औषधिया)

I **कोलोसिन्थ**—प्राय बाईं टाग का दर्द जाघ मे नीचे पैर तक फैलता है, दबाने और सेकने से या विस्तर की गर्मी से आराम मिलता है।

II **कैलि कार्ब**—घुटने तक दाईं जाघ मे दर्द, आराम से दर्द बढना, दर्द वाली टाग की तरफ लेटने से भी दर्द बढता है।

III **वेलेरियन**—डा० नैश ने एक गर्भवती स्त्री का तीव्र शियाटिका का रोग इससे इन लक्षणो पर ठीक कर दिया कि रोगिणी जब तक लेटी रहती थी या पैर को स्टूल पर रख कर बैठती थी तब दर्द नही होता था, खडे होने या फर्श पर पैर रखने से दर्द शुरु हो जाता था।

IV **ब्रायोनिया**—दर्द का हरकत से बढना और दर्द वाली टाग की तरफ लेटने से दर्द घटना इसका मुख्य लक्षण है।

V **मैग फॉस**—गर्म सेक से आराम इसमे विशेष रूप से पाया जाता है।

VI **फाइटोलैक्का**—शियाटिका का दर्द जाघ के बाहर की तरफ से नीचे तक फैलता है।

VII **नेफेलियम**—शियाटिका (गृध्रसी) की यह उत्तम औषधि है। तेज-दर्द के साथ रोगवाली जगह का सुन्न हो जाना या एक बार दर्द और दूसरी बार सुन्न हो जाना इसका विशेष लक्षण है।

VIII **आर्सेनिक**—शियाटिका का दर्द मध्य-रात्रि को बढता है।

IX **रूटा**—पीठ से उठकर कूल्हे से होता हुआ जाघो मे चला जाता है।

(४) **चेहरे का दर्द–(कोलोसिन्थ, बेलाडोना, मैग फॉस की तुलना)**—चेहरे के दर्द मे तीन औषधियों को ध्यान मे रखना उचित है। वे हैं—कोलो-

सिन्थ, बेलाडोना और मैग फास। **बेलाडोना** दाई तरफ की दवा है, **कोलोसिन्थ** बाई तरफ की दवा है; **बेलाडोना** का दर्द ठंड से होता है, **कोलोसिन्थ** का दर्द क्रोध से होता है, **बेलाडोना** का दर्द तीव्र होता है, चेहरा लाल हो जाता है, सिर गर्म, किसी को छूने नही देता, **कोलोसिन्थ** का दर्द लहरो मे आता है, सेक से, दवाने मे चैन पडता है, आराम करने से दर्द वढ जाता है और प्राय मानसिक-उत्तेजना या चिडचिडेपन मे प्रारम होता है। **मैग फॉस** का दर्द थोडी देर का होता है, विजली की तरह नस के मार्ग पर चलता है, गर्म सेक और दवाव से इसे भी आराम मिलता है।

(५) **चक्कर आना जिसमे बाई तरफ गिरने का डर हो**—यह औषधि, जैसा पहले लिखा जा चुका है, शरीर के बायें भाग पर विशेष प्रभाव रखती है। वह चक्कर जिसमे रोगी यह अनुभव करे कि वह बायी तरफ गिर रहा है, इस औषधि के अन्तर्गत है। एक व्यक्ति जो चक्कर की वीमारी से कई वर्ष पीडित रहा था, हर तरह से स्वस्थ था परन्तु बाई तरफ मुड कर नही देख सकता था क्योकि बाई तरफ सिर फेरते ही उसे चक्कर आ जाता था, इस औषधि से ठीक हो गया।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है। डा० केन्ट के अनुसार **कॉस्टिकम, कोलोसिन्थ, स्टैफिसैग्रिया**—यह एक शृखला का त्रिक है, **कोलोसिन्थ, कॉस्टिकम, स्टैफिसैग्रिया**—यह दूसरी शृखला का त्रिक है जो लक्षणानुसार एक-दूसरे के वाद दिये जाते हैं। डा० केन्ट की उल्लिखित 'त्रिको की शृखला'—Series of trios—का एक-साथ उल्लेख हमने **कैली सल्फ** मे किया है)

कोनायम मैक्युलेटम (CONIUM MACULATUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) पैर की तरफ से पक्षाघात का ऊपर की तरफ चढना (मस्तिष्क मे सुन्नपन)

(२) किसी भी तरफ सिर फेरने से चक्कर आ जाना

(३) कामोत्तेजना न होना

(४) नेत्र-रोग न होने पर भी रोशनी को न सह सकना

(५) सोते हुए पसीना आना, जागते ही पसीना रुक जाना

(६) स्तन आदि किसी ग्रन्थि का कड़ा पड जाना (जैसे, कैंसर, ट्यूमर)

(७) पेशाब रुक-रुक कर आना (प्रोस्टेट-ग्लैंड के रोग के कारण ऐसा होना)

(८) रात को श्वास-नलिका के एक खास स्थान से खांसी उठना

(९) गले मे गोले की तरह के एक पदार्थ का उठना (Globus hysterious)

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*उपवास से अच्छा लगना
*अन्धकार मे अच्छा लगना
*हाथ-पैर दवाने से आराम
*हाथ-पैर लटकाने से आराम

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*सर्दी से रोग बढना
*जबर्दस्ती के सयम से वृद्धि
*विषय-विलास से वृद्धि
*वृद्धावस्था के रोग
*चलायमान वस्तु को देखने से रोग मे वृद्धि
*सिर को दायें या बायें फेरने से रोगी को चक्कर आ जाना

(१) **पैर की तरफ से पक्षाघात का ऊपर की तरफ चढ़ना (मस्तिष्क मे सुन्नपन)**—**कोनायम** वह विष है जिसका प्याला ग्रीस के दार्शनिक सुकरात को मृत्यु-दड देने पर पीने के लिये दिया गया था। सुकरात ने जब इस विष को पिया, तो पहले उसके पाँव सुन्न हो गये, धीरे-धीरे यह सुन्नपन पक्षाघात के रूप मे परिणत हो गया। ज्यो-ज्यो विष का असर होता गया त्यो-त्यो उसका शरीर नीचे से ऊपर सुन्न होता गया। इस अर्से मे उसकी बुद्धि ठीक काम करती रही। इस औषधि मे पक्षाघात नीचे से ऊपर की तरफ जाता है। पहले नीचे के अग काम करना छोड देते हैं, फिर क्रमश नीचे से ऊपर की ओर पक्षाघात बढता चला जाता है। इसमे मस्तिष्क मे सुन्नपन पाया जाता है।

(२) **किसी भी तरफ सिर फेरने से चक्कर आ जाना**—इसका प्रमुख-लक्षण सिर चकराना है, ऐसा चक्कर जो इधर या उधर सिर फेरने से फौरन आ जाता है। **कोलोसिन्थ** का चक्कर तो सिर को बायी तरफ फेरने से आता है, परन्तु

इस औषधि का चक्कर सीधे मुह आगे की तरफ चलने से तो नही आता, परन्तु इधर-या-उधर सिर फेरने से आ जाता है। बिस्तर मे लेटे-लेटे भी अगर दाये पलटें या बायें पलटे, तब चक्कर आ जाता है। कई रोगी कह देते हैं कि बिस्तर मे लेटने से चक्कर आ जाता है परन्तु अस्ल मे, उनका अभिप्राय होता है कि जब बिस्तर मे लेटे होते हैं तब पासा पलटने से, चाहे दायें पलटे चाहे बायें पलटे, चक्कर आ जाता है। वृद्ध लोगो के चक्कर मे भी यह उपयोगी है। किसी भी रोग मे यह लक्षण पाया जाय, तो **कोनायम** से लाभ होता है। डा० टैलबोट ने अपने लेख 'कोनायम एण्ड कैटरेक्ट' मे एक स्त्री का जिक्र किया है जिसे डाक्टर ने मोतियाबिन्द घोषित किया था और कहा था कि दो मास मे आख ऑपरेशन के योग्य हो जायगी। वह तभी एक होम्योपैथ का इलाज कराने लगी। कैटरेक्ट के साथ उसका मुख्य-लक्षण यह था कि एक वस्तु से दूसरी वस्तु पर ध्यान ले जाते समय जब वह सिर फेरती थी, तो उसे चक्कर आ जाता था। शरीर मे थकान और कमज़ोरी रहती थी। लक्षण **कोनायम** के थे, सो **कोनायम** ३ शक्ति की प्रतिदिन चार मात्राए लेने को दी गईं। एक सप्ताह के बाद उसने कहा कि अगो की कमज़ोरी तो बिल्कुल हट गई है, साथ ही आँख मे भी फरक है, अब आँख को एक वस्तु से दूसरी पर ले जाते हुए सिर कम चकराता है। दस सप्ताह तक यह इलाज जारी रखने के बाद उसका मोतियाबिन्द दूर हो गया। कहने का अभिप्राय यह है कि **कोनायम** के सिर चकराने के लक्षण पर चक्कर ही नही ठीक हो गया, आख का रोग भी जाता रहा। इसी प्रकार का एक उदाहरण डा० नैश ने दिया है। उनके पास एक रोगी आया जिसे हाथ-पैर की पेशियो की कमज़ोरी (Locomotor ataxia) थी। वह सीधे मुह चल सकता था, इधर-उधर देखता तो उसे चक्कर आ जाता था। वह अपनी स्त्री को आगे-आगे चलने को कहता था ताकि उसकी सीध मे वह चलता जाय, और उसे इधर-उधर न देखना पडे। उसे चार सप्ताह के भीतर समय-समय पर **कोनायम** दिया जाता रहा, और सालभर मे उसका लोकोमोटर एटैक्सिया ठीक हो गया। इस औषधि देने का निर्देशक-लक्षण—किसी तरफ भी सिर फेरने से चक्कर आ जाना—यह था।

(३) **कामोत्तेजना न होना**—इस औषधि का शरीर की ग्रन्थियो पर विशेष प्रभाव है। जननेन्द्रिय का भी क्योंकि अण्डकोशो से सम्बन्ध है, इसलिये इसका जननेन्द्रिय पर प्रभाव असन्दिग्ध है। इसके अतिरिक्त हम यह देख ही चुके हैं कि इसका पक्षाघात से भी सम्बन्ध है। स्नायु का सुन्न हो जाना, उसका दुर्बल हो जाना, अन्त मे पक्षाघात मे परिणत हो जाता है। इस दुर्बलता का अण्डकोशो की ग्रान्थियो पर प्रभाव पडने के कारण रोगी मे जननेन्द्रिय की दुर्बलता पायी जाती है। यद्यपि रोगी का चित्त चचल होता है, काम-लालसा प्रबल होती

है, तो भी जननागो की शिथिलता के कारण वह कामना को पूर्ण नही कर सकता। स्त्री का ध्यान करते ही उसका वीर्य स्खलित हो जाता है। उत्तेजना अपर्याप्त होती है, कुछ देर ही रहती है, और अपनी असमर्थता को देखकर रोगी दुखित हुआ करता है। इससे उसका चित्त खिन्न रहता है। उसे कुछ अच्छा नही लगता, वह चुप बैठा रहता है। हस्त-मैथुन की इसे लत पड जाती है।

जबर्दस्ती किये सयम का बुरा फल—कभी-कभी पुरुष या स्त्री मन मे से काम की जड उखाड देने के स्थान मे मन मे तो कामाचार के विचार ही रखते रहते हैं, परन्तु जबर्दस्ती सयम का व्रत ले बैठते हैं। कई विधुरो तथा विधवाओ को जिन्हें सहवास का अभ्यास पड गया है, परिस्थितिवश सयम करना पडता है। शुद्ध-सयम से आत्म-शान्ति होनी चाहिये, परन्तु जबर्दस्ती या परिस्थितिवश अपने को बाध लेने से मनुष्य का स्वभाव चिडचिडा हो जाता है, सुस्ती, कार्य मे अनिच्छा तथा नपुसकता आ जाती है। उस अवस्था को **कोनायम** दूर कर देता है और व्यक्ति स्वस्थ-मनुष्य की तरह व्यवहार करने लगता है। अगर उक्त लक्षणो मे सिर का चक्कर भी साथ हो, तब तो इस औषधि के निर्वाचन मे कोई सन्देह नही रहता।

(४) **नेत्र-रोग न होने पर भी रोशनी को न सह सकना**—जो लोग कृत्रिम-प्रकाश मे, बिजली की रोशनी मे पढा करते है, उन्हे नेत्र के किसी रोग के न होने पर भी दिन की रोशनी मे कष्ट प्रतीत होता है। रात को आँख मे दर्द होने लगता है, आँख के दबाने से आराम मिलता है। अन्धेरे कमरे मे अच्छा लगता है। प्राय विद्यार्थी रात को कृत्रिम-प्रकाश मे पढा करते हैं, उन्हें ऐसी तकलीफ हो जाया करती है। इस कष्ट को यह औषधि दूर कर देती है। डा० ऐलन इसी कारण इसे विद्यार्थियो की औषधि का नाम देते थे।

(५) **सोते हुए पसीना आना, जागते ही रुक जाना**—इसका एक 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptom) यह है कि रोगी को आँख मीचते ही पसीना आने लगता है, सोया नही कि पसीना आना शुरु हुआ और आख खुलते ही पसीना बन्द हो जाता है। यह लक्षण अन्य किसी दवा मे नही पाया जाता। डा० लिप्पे ने एक ८० वर्ष के वृद्ध को एक पासे के पक्षाघात की बीमारी मे इसी लक्षण के आधार पर ठीक कर दिया था। कई दर्द भी इस लक्षण से दूर हुए हैं। इस लक्षण के ज्वर मे भी यह औषधि गुण करती है। इसके विरुद्ध जागते ही पसीना आना शुरु हो जाना **सैम्बूकस** का लक्षण है।

(६) **स्तन आदि किसी ग्रन्थि का कडा पड जाना (जैसे कैंसर, ट्यूमर)**—इस औषधि का ग्रन्थियो पर विशेष प्रभाव है, इसलिये अगर शरीर मे कोई ग्रन्थि सूज जाय, कडी पड जाय, तो इस औषधि की तरफ ध्यान जाना चाहिये। इसका स्त्री के स्तनो के कडा होने पर विशेष प्रभाव है, स्तनो के कडेपन को यह दूर

कर देती है। अगर हर वार रज स्राव के समय दाहिना स्तन सूज जाय, कडा पड़ जाय, उसमे दर्द हो, तो **कोनायम** लाभप्रद है, वाया स्तन सूज जाय, तो **साइलीशिया** उपयोगी है। स्तन के कैंसर और ट्यूमर को भी इससे लाभ होता है। स्तन के अतिरिक्त, जरायु या पेट के कैंसर या ट्यूमर (Cancer or Tumor) मे भी इस औषधि को भुलाया नही जा सकता। कभी-कभी चोट लग जाने के कारण स्तन, जरायु या पेट का कैंसर या ट्यूमर हो जाता है। ये स्थान पत्थर की तरह कडे पड जाते हैं, दर्द भी होता है। शरीर के किसी भाग की ग्रन्थि का पत्थर की तरह कडा पड जाना इसका लक्षण है। डा० ड्यूई के अनुसार ट्यूमर आदि मे **कोनायम** ३० देना लाभकर है। स्तन-ग्रन्थि-शोथ मे इसके वाद **सोरिनम** अच्छा काम करता है।

(७) **पेशाब रुक-रुक कर आना (प्रोस्टेट-ग्लैंड)**—यह रोग भी ग्रन्थि से सबन्ध रखता है। प्रोस्टेट-ग्रन्थि के बढ जाने से रोगी को पेशाव रुक-रुक कर आता है। आते-आते रुक जाता है, फिर आने लगता है। अगर प्रोस्टेट-ग्लैंड के कारण न भी हो, परन्तु अगर मूत्र करने मे रुक-रुक कर आने का लक्षण हो, तो **कोनायम** देना चाहिये। पेशाव रुक-रुक कर आने मे **क्लैमेटिस** के विषय मे हम पहले लिख आये हैं। **क्लैमेटिस** मे सुज़ाक के कारण मूत्र-नली वन्द हो जाती है, उसका 'सकोचन' (Stricture) हो जाता है जिसे **क्लैमेटिस** दूर करता है।

(८) **रात को श्वास-नलिका के एक खास स्थान से खासी उठना**—इस औषधि मे दिन को खासी नही आती, रात को खासी उठती है, वह भी श्वास-नलिका के ऊपर के एक खास स्थान पर लगातार खराश होने लगती है, उसीसे खासी प्रारम होती है। बूढो को यह बहुत परेशान करती है। श्लेष्मा वाहर निकलता नही, अन्दर ही निगल जाना पडता है। रात मे लेटने से खासी होती है, रोगी को उठ जाना पडता है। **हायोसाइमस** मे भी रात को लेटने से खासी शुरु हो जाती है और रोगी उठ बैठता है, परन्तु **हायोसाइमस** मे 'काक-जिव्हा' (Uvula) के बढ जाने और लेटने पर उसके तालु को छूने से खराश पैदा होने से खासी शुरु होती है, **कोनायम** मे यह बात नही है। **हिपर** मे भी खासी है परन्तु वह कभी खुश्क नही होती, कफ ढीला होता है, कम होता है, हल्का बुखार भी हो जाता है। **बेलाडोना** की खासी मे श्वास-नलिका मे दर्द होता है, साथ बुखार होता है। **लैकेसिस** मे श्वास-नलिका पर ज़रा-सा भी दवाव पडे तो खासी उठने लगती है क्योकि यह औषधि स्पर्श को वर्दाश्त नही कर सकती। **लैकेसिस** का रोगी गले मे गुलुवन्द नही लपेट सकता, टाई तक नही वाध सकता क्योकि इससे उसका गला रुधने लगता है।

(९) **गले मे गोले की तरह के एक पदार्थ का उठना**—हिस्टीरियाग्रस्त स्त्रियो मे, अपने रोग की परेशानी से, गोले की तरह का एक पदार्थ पेट मे से

उठकर गले मे आकर अटकता है, उसे रोगिणी निगलने की कोशिश कर नीचे उतारने का यत्न करती है, वह उतर कर फिर ऊपर आ उठना है। यह गोला उठना (Globus hystericus) इस औषधि के अतिरिक्त **इग्नेशिया, ऐसाफेटिडा** और **वेलेरियन** मे भी पाया जाता है। जव किसी स्त्री को अपने शरीर की ग्रन्थियो का कडापन देखकर मायूसी होने लगती है, स्वास्थ्य की दृष्टि से भविष्य अन्धकारमय दीखने लगता है, तब इस प्रकार का गोला उठा करता है। स्त्री रोना चाहती है पर रोने को रोकने का प्रयत्न करती है, तव जैसे रोने को रोकने पर गला अवरुद्ध-सा हो जाता है, वैसा अनुभव इस गोले के गले मे आकर अटकने तथा उसे निगलने का होता है। **कोनायम** मे इसका मुख्य-कारण रोगी की अपने रोग के विषय मे—कैंसर, ट्यूमर, स्तनो का कडा पड जाना आदि देखकर—चिन्ता और निराशा है। **इग्नेशिया** मे इस गोले के पेट से ऊपर चढने का कारण कोई दु ख, घर के किसी प्रिय की मृत्यु, प्रेमी का विछोह आदि होता है। **ऐसाफेटिडा** मे यह गोला पेट के अफारे का परिणाम होता है। सख्त सिर-दर्द और सामान्य कारण से मूर्छा होने के साथ गोला उठे, तो **वेलेरियन** लाभ करता है।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

क्रोटेलस होरिडस (CROTALUS HORIDUS)

(१) **सापो के प्रमुख चार विष**—होम्योपैथी मे डा० हेरिंग ने **लैकेसिस, क्रोटेलस** तथा **नेजा** नामक सापो के विषो का तथा डा० मूर ने **इलैप्स कोरोल्लिनस** नामक साप के विप का स्वस्थ व्यक्तियो पर परीक्षण करके उनके लक्षणो का सग्रह किया, जो अनेक रोगो को नष्ट करने मे काम आ रहे हैं। हम अन्य विषो का उनके प्रकरण मे वर्णन करेंगे, यहाँ प्रकरणसगत **क्रोटेलस** का वर्णन किया जा रहा है। इससे पहले कि हम इस विष का वर्णन करें यह कह देना उचित है कि हनीमैन का कहना था कि कोई भी विष होम्योपैथिक तीसरी शक्ति के बाद विष नही रहता, उसका विनाशकारी-तत्व समाप्त हो जाता है, जीवनप्रद अश बच रहता है। तीसरी शक्ति का अर्थ है—१ बूद विष का १०० बूद अलकोहल मे आलोडन, फिर उसमे से १ बूद का १०० बूद अलकोहल मे आलोडन, और फिर उसमे से १ बूद का १०० बूद अलकोहल मे आलोडन—केवल मिलाना नही, मिला कर उसे ज़ोर-ज़ोर से झटके देना। इसके बाद उस विष की जो भी शक्ति बनेगी उसमे विष का विनाशकारी अश नही रहता, स्वास्थ्यप्रद-प्रभाव ही रह जाता है।

(२) **सब अगों से रक्तस्राव तथा रोग की तीव्र-गति**—इसका सबसे प्रमुख लक्षण है—'सब अगो से रक्तस्राव'। इसका रोगी 'रक्तस्रावी-धातु'

(Hemorrhagic constitution) का होता है। कान, आख, नाक, फेफड़े, आतें, जरायु—जहाँ-जहाँ भी श्लैष्मिक-झिल्ली है सब जगह से रक्तस्राव होता है, या हो सकता है। शरीर के सब मुख-मार्गों से रक्त का बहना! हम पहले भी कह चुके हैं कि औषधि का निर्वाचन करते हुए इस बात को नही भूलना चाहिये कि रोग की गति और औषधि की गति मे समता होना आवश्यक है। कई रोग आंधी की चाल से आते हैं, कई धीमी गति से आते हैं। **एकोनाइट** का रोग यकायक आता है, इसलिये ठड लगते ही रात मे खासी से परेशान हो जाना इसका लक्षण है, **ब्रायोनिया** का रोग धीमी गति से आता है, इसलिये टाइफॉयड मे इसकी लक्षणो के मिल जाने पर उपयोगिता है। **क्रोटेलस** मे रोग की गति असाधारण तौर पर तीव्र होती है, थोडी ही देर मे रोग दुर्गंधित अवस्था मे पहुच जाता है, इसीलिये गैंग्रीन तथा कार्बंकल आदि विषैले, दुर्गंधयुक्त फोडो मे इसकी महान् उपयोगिता है। इन फोडो का खून विषैला होता है। टाइफॉयड, स्कारलेट फीवर, डिफथीरिया आदि मे जब काला, सडा हुआ, दुर्गंधयुक्त रुधिर बहने लगता है, तब **क्रोटेलस** देने का समय होता है।

(३) **विषैले जख्म, गैंग्रीन, कार्बंकल**—विषैले ज़ख्म (Septic conditions), गैंग्रीन तथा कार्बंकल मे, विषैले दानो मे जब खून नीला पड जाता है, जब ऐसा फोडा हो जाता है जो फोडे के केन्द्र मे, गुधे हुए आटे जैसा पिलपिला होता है, उसके चारो तरफ कई इच तक ऐसा शोथ होता है जिसे अगुली से दबाने से उसमे गढे के-से निशान पड जाते हैं, जिसमे से ऐसा गाढा काला खून बहता है जो जमता ही नही—ऐसे विषैले फोडो मे यह लाभ करता है। वे कार्बंकल जो गर्दन या पीठ पर होते हैं, शुरु-शुरु मे वे एक छोटे पस के दाने के रूप मे प्रारंभ होते हैं, चारो तरफ की त्वचा को दबाने से उनमे अगुली की दाब से गढे के निशान पड जाते हैं—ऐसे विषैले फोडो के लिये **क्रोटेलस, आर्सेनिक, एन्थ्रासिन, लैकेसिस, सिकेल, गन पाउडर**, आदि मे से लक्षणानुसार किसी औषधि का निर्वाचन करना होगा। डा० कैनन उपचेर का अनुभव है कि अगर **गन पाउडर** दिया जाये, तो उससे दो दिन पहले **हिपर सल्फ** २०० की एक मात्रा देकर **गन पाउडर** ३x की कुछ दिन तक लगातार दिन मे ३ मात्राए देनी चाहिये।

डा० टायलर लिखती हैं कि उनके विद्यार्थी-काल के दिनो मे एक सर्जन जो पढा रहे थे पढाते-पढाते रुक गये, रग पीला पड गया और बेहोश होते-होते बचे। उन्होंने कहा कि अभी वे एक ऑपरेशन करके आये हैं जिसमे उनके हाथ मे नश्तर चुभ गया था। उन्हें **क्रोटेलस** दिया गया और अगले दिन उन्होंने कहला भेजा कि उनकी तबियत ठीक हो रही है, १५ दिन बाद वे फिर पढ़ाने लगे। उन सर्जन के एक दूसरे साथी को भी इसी तरह ऑपरेशन में नश्तर लग गया था, जख्म

विषैला (Septic) हो गया था, उन बेचारो का प्राणात ही हो गया। बहुत समव है कि अगर उन्हे भी **क्रोटेलस** दिया जाता तो वे बच जाते।

(४) **पेट का अलसर**—पेट मे दर्द और उसके साथ रोगी को ऐसा अनुभव होता है मानो उसके पेट मे या आतो मे वर्फ का टुकडा पडा है। पेट कुछ रख नही सकता, खून की उल्टिया होने लगती है। पेट के ऐसे अलसर इस दवा से ठीक हुए हैं।

(५) **त्वचा का पीलापन**—इस औषधि मे त्वचा का पीलापन एकदम आ जाता है, आश्चर्यजनक वेग से। आखें पीली हो जाती है, शरीर पीला पड जाता है। डा० नैश का कहना है कि इस औषधि मे त्वचा का पीला पड जाना वहुत समवत रुधिर के अधिक स्राव के कारण अथवा रुधिर की सडांद से होता है, जिगर की खरावी से शायद नही होता।

(६) **नींद के वाद तकलीफों का बढ जाना**—साप के विषो से जितनी दवाए वनी हैं, सब मे यह लक्षण समान है कि रोगी के कष्ट सोकर उठने के वाद वढे हुए रहते हैं। सोता भी वह तकलीफ को लेकर है, जागता भी तकलीफ मे है। अगर सोते समय उसे दर्द है, तो जागने पर दर्द घटने के स्थान मे वढा हुआ ही होता है। जितना लम्बा सोता है उतनी ही तकलीफ वढी हुई होती है। इसीलिये रोगी सोने से डरता है। **लैकेसिस** मे भी ये लक्षण मौजूद हैं। **लैकेसिस** की 'परीक्षा' (Proving) ३० शक्ति की मात्रा लेकर हुई थी, इसलिये उसके लक्षणो के विषय मे वहुत ज्यादा अनुभव हो चुका है, अन्य विषो की परीक्षा निम्न-शक्ति की मात्रा लेकर हुई है, इसीलिये उनके अनुभव अभी इतने विशद नही हुए जितने होने चाहियें। **क्रोटेलस** मे भी नींद के वाद कष्ट वढ जाता है।

(७) **रोगी वातूनी होता है**—इस रोगी की **लैकेसिस** के रोगी से तुलना की जाय, तो वातूनीपन तो दोनो मे पाया जाता है, परन्तु **लैकेसिस** मे 'उत्कट-उत्तेजना' (Wild Excitement) है, **क्रोटेलस** मे 'मदहोशपना' (Intoxication) पाया जाता है। **लैकेसिस** का रोगी किसी को वात करने नही देता, स्वय वात किये जाता है। अगर कोई वात छेडे तो झट कहता है हा, मैं जानता हू, और सम्वद्ध-असम्वद्ध कोई किस्सा छेडकर बोलता चला जाता है, **क्रोटेलस** का रोगी भी वात करने का शौकीन है, परन्तु उत्तेजित-व्यक्ति की तरह वात न करके मदहोश-व्यक्ति की तरह लडखडाती आवाज़ मे वात करता है।

(८) **रुधिर काला तथा जमनेवाला होता है**—इस औषधि मे जिन अग से भी रुधिर वहे, चाहे जरायु मे, फेफडे से, नाक-कान से, जहा से भी वहे, वह काले रग का होता है और जमता नही।

(९) **क्रोटेलस तथा लैकेसिस की तुलना**—अन्य सब वातें जो लिखी गई हैं उनमे अधिकाश मे दोनो की समानता है, परन्तु **क्रोटेलस** का प्रभाव

शरीर के दायी तरफ और **लैकेसिस** का प्रभाव शरीर के बायी तरफ होता है।

(१०) **ब्लैक-वाटर-फीवर के लिये स्पेसिफिक**—होम्योपैथी मे स्पेसिफिक औषधि कोई नही है। जो औषधि व्यक्ति के लिये 'धातु-गत' (Constitutional) हो, वही उसके हर रोग के लिये स्पेसिफिक होती है। वह उसकी कमजोरी को भी दूर करेगी, अन्य सब रोगो को भी एक-साथ दूर करेगी। परन्तु कई-कई औषधिया ऐसी है, जो अमुक-अमुक रोग का ऐसा नमूना पेश कर देती हैं कि उन्हें उस रोग के लिये अगर स्पेसिफिक कह भी दिया जाय, तो कोई अत्युक्ति नही होगी। इसका यह अभिप्राय नही कि वे अन्य रोगो के लिये उपयुक्त नही हैं, इसका इतना ही अर्थ है कि उस रोगी के लिये वे रामवाण का काम करती हैं। इसी दृष्टि से ब्लैक-वाटर-फीवर के लिये **क्रोटेलस** स्पेसिफिक है। इसमे क्या होता है? इस ज्वर मे सारा शरीर पीला पड जाता है, मल मे काला खून आता है, पेशाब भी खून-सरीखे काले रग का होता है, अन्त मे खासी मे काला खून आने लगता है जिससे रोगी की मृत्यु हो जाती है। इसी तरह की स्पेसिफिक औषधियो मे निम्न की भी गणना की जा सकती हैं, परन्तु फिर भी हम दोहरा देना चाहते है कि होम्योपैथी मे किसी रोग का कोई स्पेसिफिक नही है

(कुछ स्पेसिफिक औषधिया)

i	**क्रोटेलस**—ब्लैक-वाटर-फीवर	x	**रस टॉक्स, रूटा**—कमर का दर्द
ii	**वेलाडोना**—स्कारलेट फीवर	xi	**आयोडाइड, स्पजिया**—गलगड
iii	**आर्सेनिक**—टोमेन पायजनिंग	xii	**स्टैफिसैग्रिया**—दात खुरना
iv	**मर्क कौर**—डिसेन्ट्री (खूनी)	xiii	**स्पजिया और हिपर**—क्रुप खासी
v	**लैट्रोडेक्टस**—एन्जाइना पैक्टोरिस	xiv	**ड्रौसरा**—हूपिंग-खासी
vi	**कोका**—थकावट	xv	**परटुस्सिन**—हूपिंग-कफ
vii	**कॉफिया**—दात का दर्द	xvi	**थूजा**—मस्से
viii	**सीपिया**—रिश्तेदारो से विराग	xvii	**एकोनाइट**—बैचेनी का तेज बुखार
ix	**ऑग्जेलिक ऐसिड**—अतिसार	xviii	**मेजेरियम**—सिर की पपडी के नीचे पस

(११) **शक्ति**—३, ६, ३०, २००

क्रोटन टिगलियम—जमाल गोटा,
(CROTON TIGLIUM)
GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) दर्द होने के बाद फट-फट शब्द के साथ पीले दस्त आना
(२) जरा भी खाने या पीने के बाद शौच की हाजत होना—इस लक्षण पर अन्य औषधियो के साथ तुलना
(३) पुराना एग्ज़ीमा, अण्डकोश का एग्ज़ीमा, इंद्रिय तथा योनि मे खुजली
(४) मध्यरात्रि मे दमे की-सी खासी का दौर पडना
(५) बच्चा जिस स्तन को पीये उसी स्तन के पीछे की कन्धे की हड्डी मे दर्द होना

(१) दर्द होने के बाद फट-फट शब्द के साथ पीले दस्त आना—इस औषधि को आयुर्वेद तथा ऐलोपैथी मे दस्त लाने के लिये दिया जाता है। यह ज़बर्दस्त दस्तावर दवा है। होम्योपैथी का सिद्धात क्योकि यह है कि स्वस्थ व्यक्ति मे औषधि जो लक्षण उत्पन्न करती है, अगर रोग मे वे लक्षण पाये जायें, तो वही औषधि अपने शक्तिकृत रूप मे उन्ही लक्षणो को दूर कर देती है, इसीलिये होम्योपैथी मे यह दवा दस्तो को रोकने के लिये दी जाती है।

होम्योपैथी के इस सिद्धान्त का कि 'सम सम शमयति' इस औषधि से अच्छा दूसरा सबूत क्या हो सकता है। इस दवा से दस्त रुक जाते हैं। दस्त रुकने का यह मतलब नही कि हर प्रकार के दस्त इससे रुक जाते हैं। इसके दस्तो का अपना स्वरूप है जिन पर यह औषधि उपयोगी है। वह स्वरूप क्या है? इस औषधि से जो दस्त ठीक होते हैं, उनमे निम्न लक्षण होने चाहियें—

i पहले पेट मे दर्द के साथ कलकल शब्द हो, जैसे आत मे पानी भरा हो।
ii पीला, पनीला दस्त आये।
iii सारा दस्त बन्दूक की गोली की तरह सर्राटे से निकल जाय।
iv ज़रा भी खाने या पीने के बाद दस्त की हालत हो जाय।
v दस्त मे फट-फट का-सा शब्द हो।

(२) खाने-पीने के बाद शौच की हाजत होना—इस लक्षण पर अन्य औषधियो के साथ तुलना—इस औषधि मे ज़रा भी खाने या पीने के बाद शौच की हाजत हो जाती है। यह लक्षण अन्य भी अनेक औषधियो मे है। उनकी तुलना हम आगे दे रहे हैं।

(खाने-पीने के झट बाद पाखाने की हाजत की मुख्य-मुख्य औषधिया)

i **एलू**—खाने या पीने के वाद हाजत हो जाती है, टट्टी अपने-आप, अनजाने निकल जाती है, पेट मे गुड-गुड शब्द होता है। इन लक्षणो के साथ मल-द्वार मे भारीपन रहता है, जो इसका निर्देशक-लक्षण है।

ii **अर्जेन्टम नाइट्रिकम**—खाने या पीने के वाद हाजत, परन्तु इसका निर्देशक-लक्षण है—रोग का कारण। रोग का कारण या होता है मिठाई अधिक खाना या 'स्नयविक-उत्तेजना' (Nervous excitement)

iii **आर्सेनिक**—खाने या पीने के वाद हाजत, परन्तु इसका निर्देशक-लक्षण है—अत्यन्त निर्बलता, वेचैनी और थोडे-थोडे पानी के लिए वेहद प्यास।

iv. **चायना**—रात को रोग का वढना, दस्त मे अपच हुए भोजन का निकलना, और पेट का फूल जाना।

v. **फ़ेरम मेट**—रात को रोग का वढना, दस्त मे अपच हुए भोजन का निकलना, चेहरे का स्वल्प-प्रयास से झट-से लाल हो जाना, दर्द न होना, गुदा-प्रदेश का निकल पडना, रोग का पुराना होना।

vi **नक्स वोमिका**—शराव आदि से डायरिया या डिसेन्ट्री, व्यसन-विलास, व्यभिचार आदि से रोग होना, तेज़ दवाओ का प्रयोग, पाखाना साफ न होकर बार-बार जाना, भोजन के वाद उघाई आना, नीद से ताज़ा अनुभव न करना।

vii **पोडोफाइलम**—खाने या पीने के बाद हाजत, पाखाने का अत्यन्त बदबूदार होना, सुवह ६ से १२ बजे दोपहर तक रोग का वढना, शौच के समय या वाद को मल-द्वार का वाहर निकल पडना, पावो तथा जाघो मे ऐंठन का होना।

viii **पल्सेटिला**—पनीला, भूरे और कभी-कभी पीले रग का दस्त जिसमे अपच-भोजन के टुकडे तैर रहे हो, दस्त वेग से निकले। दस्त हो चुकने के वाद भी दर्द वना रहता है। मरोड रहता है, पीठ मे ठडक का अनुभव होता है, दस्त के वाद गुदा-प्रदेश मे जलन होती है।

(३) पुराना एग्ज़ीमा, अडकोश का एग्ज़ीमा, इद्रिय तथा योनि मे खुजली—जमाल गोटे को घिस कर अगर त्वचा पर मला जाय, तो खुजली होने लगती है, त्वचा मे जलन होने लगती है, छाले पड जाते हैं। इन लक्षणो के आधार पर त्वचा के एग्ज़ीमा मे शक्तिकृत **क्रोटन** वहुत लाभप्रद है। छोटे वच्चो के सिर पर छोटे दाने उभर आते हैं, उनमे पस पड कर सिर पर दूधिया पपडी जम जाती है। कुछ देर वाद यह पपडी सूक जाती है, इसके टुकडे झडने लगते हैं, नीचे से लाल खाल निकल आती है जिसे छूने से दर्द होता है। जब सारी पपडी उतर जाती है, एक जगह साफ हो जाती है तो सिर पर दूसरी जगह ऐसी ही

फुन्सिया उभरने लगती हैं। इस प्रकार यह पुराना एग्ज़ीमा चलता रहता है। ये दाने केवल सिर पर ही नहीं, आखो के आस-पास कनपटियो पर, चेहरे पर, सिर के ऊपर—सब जगह हो सकते हैं। इस प्रकार की दूधिया-पपडी के लक्षण—जो दानो के रूप मे प्रकट होते हैं, पपडी बन जाती है, झड जाती है, फिर दाने बनने लगते हैं—**सीपिया** मे भी पाये जाते हैं, उसमे भी पपडी उतरने के बाद त्वचा लाल-हो जाती तथा छूने से दर्द होता है। इस प्रकार के बच्चो के सिर के एग्ज़ीमा मे **क्रोटन** तथा **सीपिया** दोनो मे भेद करना कठिन हो जाता है। बच्चो की 'दूधिया-पपडी' (Crusta lactea) में **सीपिया** ही बहुधा निर्दिष्ट-औषधि होती है, परन्तु अगर इस पपडी के साथ बच्चे का डायरिया भी हो, तो **क्रोटन** ही देना उचित है।

अण्डकोश का एग्ज़ीमा—इस एग्ज़ीमा का विशिष्ट-लक्षण (Peculiar symptom) यह है कि यद्यपि खुजली बडी तेज़ होती है, और रोगी इस भयकर खुजली मे खुजलाना चाहता है, परन्तु त्वचा छूने से इस कदर चिरमिराती है कि रोगी खुजली नही कर सकता। इस औषधि का विशेष-लक्षण अण्डकोश की खुजली भी है। अण्डकोश सूज जाता है, उसे छूआ तक नही जा सकता, इस खुजली से रोगी चैन से सो भी नही सकता। पुरुष की जननेन्द्रिय तथा स्त्री की योनि मे भी बेहद खुजलाहट मचती है। अण्डकोश की खुजली इस औषधि का विशेष-लक्षण है। डा० चैरेट लिखते हैं कि जब उन्होंने पहले-पहल होम्योपैथी का अध्ययन किया, तब उनकी इच्छा हुई कि वे अपने एक कैमिस्ट मित्र पर इस विज्ञान का प्रयोग करके देखें। उसे आठ महीने से हाथ, बाह तथा अण्डकोश का एग्ज़ीमा था जिसमे इतनी खुजली उठती थी कि उसे न दिन को चैन था, न रात को। वह सब विशेषज्ञो का इलाज करके थक गया था। जब डा० चैरेट ने उसे कहा कि वे उसका होम्योपैथी का इलाज करना चाहते हैं तब वह बोला हा करो, तुम्हारी मीठी गोलियो से देखें क्या होता है। डा० चैरेट ने जब एग्ज़ीमा के लिए 'मैटीरिया मैडिका' खोला, तो इस रोग मे ५३ दवाओ के नाम लिखे देख कर वे भौचक्के रह गये, उन्हें सूझ न पडा क्या दवा दें। उन्होंने रोगी को **क्लैमेटिस, कैन्थरिस, रस टॉक्स, सलफर, मर्क**—सब दवायें दे डाली, परन्तु किसी से लाभ न हुआ। अन्त मे उन्होने एक अनुभवी होम्योपैथ डा० फैर्व से सलाह ली, तो उन्होने 'अण्डकोश के एग्ज़ीमा'—इस लक्षण के आधार पर रोगी को **क्रोटन** दिया जिससे वह शीघ्र ही ठीक हो गया। डा० चैरेट लिखते हैं कि इस अनुभव के बाद एक दिन वे रेल गाडी मे सफर कर रहे थे। उसमे एक दूसरा यात्री भी था। जब उसे पता चला कि मैं डाक्टर हू तब वह मुझ से बडी घुलघुलकर बातें करने लगा। अन्त मे, उसने बडी दीनता से उनके कानमे कहा 'डाक्टर, मैं अण्डकोश के एग्ज़ीमा से बडा परेशान रहता हू, इसे

कोई विशेषज्ञ ठीक नही कर सका।' जब गाडी थमी, डा० चैरेट ने अपने पते के कागज़ पर **क्रोटन** ६ लिख कर उस यात्री को दे दिया। तीन सप्ताह बाद उस यात्री का पत्र आया कि इस औषधि से उसका अडकोश का एग्ज़ीमा, जिसे कोई ठीक नही कर सका था, जाता रहा।

(४) **मध्य-रात्रि मे दमे की-सी खासी का दौर पडना**—इस औषधि मे दमे से मिलती-जुलती खासी के लक्षण हैं। मध्य-रात्रि मे रोगी इस खासी से गाढी नीद मे से जाग उठता है। तेज़ खासी के साथ दम भी घुटता है, गला रुधता है, रोगी लेट नही सकता, बैठ जाता है, बिस्तर मे तकिये के सहारे टिका रहता या आराम-कुर्सी पर पीठ का सहारा लेकर बैठा रहता है। खासी इतनी उग्र होती है कि निकट के सम्बन्धी शक करने लगते हैं कि कही टी० बी० का रोग तो नही आ रहा। श्वास-प्रणालिका मे बैचेनी महसूस होती है, जरा-सी भी हवा अन्दर जाते ही खासी शुरु हो जाती है। रोगी गहरा सास नही ले सकता। कुछ दिन यह हालत रहकर रोगी के शरीर पर कही दाने निकल आते हैं, ये दाने सूज जाते हैं, लाल हो जाते हैं, फिर सूख कर झड जाते हैं, और इस बीच खासी को भी आराम रहता है, परन्तु ज्यो ही दाने समाप्त होते हैं, त्यो ही वही दमे की-सी खासी का दौर पडने लगता है। अगर यह हालत देर तक चलती रहे, तो रोग पुराना हो जाता है। इस प्रकार की दमे की-सी खासी, जिसमे खासते-खासते दम भी चढने लगे, मध्य-रात्रि को दौर पडे, रोगी लेट न सके, आराम-कुर्सी पर ही आधा लेटे-लेटे बैठा रहे, इस औषधि से ठीक हो जाती है। इसमे भी **क्रोटन** का चरित्रगत-लक्षण—त्वचा का रोग—आधार मे काम कर रहा होता है क्योकि इस खासी का दानो के दब जाने से सबध है, वे दाने जो **क्रोटन** के एग्ज़ीमा जैसे होते हैं।

(५) **बच्चा जिस स्तन को पीये उसी स्तन के पीछे की कन्धे की हड्डी मे दर्द होना**—एक अन्य लक्षण, जिसे कई जगह आजमाया जा चुका है, यह है कि बच्चा माता के जिस स्तन को पीता है उसी स्तन के पीछे—अस्थि-फलक—की हड्डी मे दर्द शुरु हो जाता है। कई रोगी कहते हैं कि ऐसा अनुभव होता है जैसे रस्सी से पीछे कन्धे की ओर खीच पड रही है। डा० कैन्ट कहते हैं कि एक स्त्री जिसे यह दर्द कई दिन से था इस औषधि से ठीक हो गई। इससे यह भी पता चलता है कि **क्रोटन** कई दिन के, इस प्रकार के पुराने दर्द को भी ठीक कर देता है। डा० चौधरी अपनी 'मैटीरिया मैडिका' मे लिखते हैं कि एक नवयुवती को बडा तेज़ स्नायवीय-दर्द था, जो किसी दवा से ठीक नही होता था। यह दर्द बायी आख की पुतली से ठीक उसके पीछे के सिर के हिस्से तक फैलता था। 'बच्चा जिस स्तन को पीता है उसी स्तन के पीछे की कन्धे की हड्डी के दर्द' के

लक्षण से यह लक्षण इतना मिलता-जुलता था कि डाक्टर का क्रोटन देने को जी चाहा। इससे यह दर्द ठीक भी हो गया। यह दर्द स्तन से तो नही शुरु होता था, परन्तु शरीर के जिस अग मे होता था ठीक उसके पीछे तक जाता था— इसी लक्षण को स्तन के लक्षण से मिलता-जुलता देखकर इस औषधि का चुनाव किया गया था जो सफल सिद्ध हुआ।

(६) शक्ति—६, ३०

क्यूप्रम मेटैलिकम—तांबा, (CUPRUM METALLICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) ऍठन मे अगूठे को अगुलियों से जोर से बन्द करना और इस प्रकार सारे शरीर मे 'अकडन' पड जाना	लक्षणो मे कमी (Better) *खासी मे ठंडे पानी के घूट से खासी मे फायदा
(२) ऍठन वाली हूपिंग-कफ (Convulsive whooping cough) जिसमे ठडे पानी के घूट से आराम पहुंचे	
(३) ऍठन सहित कठिन-श्वास (Convulsive dyspnea)	
(४) वृद्धावस्था के विवाह मे संभोग के समय ऍठन	
(५) ऍठन सहित मासिक-धर्म	
(६) युवतियो मे मासिक-धर्म के दिनों मे ठडे पानी से स्नान के कारण ऍठन पड़ना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(७) मृगी (Epilepsy)	*ठंडी हवा से रोग मे वृद्धि
(८) दाने या स्राव जाने से ऍठन (क्यूप्रम, जिकम और ब्रायोनिया मे भी यह लक्षण है)	*दाने दब जाने से रोग होना *पैर का पसीना दब जाने से किसी रोग का होना
(९) हैजे मे ऍठन होना	*निद्रानाश से रोग बढना
(१०) मानसिक-श्रम या निद्रानाश से शारीरिक तथा मानसिक असमर्थता	*क्रोधादि मनोभावों से रोग होना

(१) ऍठन मे अगूठे को अंगुलियो से जोर से बन्द करना और इस प्रकार सारे शरीर मे 'अकडन' (Spasm) पड जाना—यह मुख्य तौर पर ऍठन-अकडन-मृगी की औषधि है। इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है। किसी भी रोग के साथ ऍठन होने पर इस औषधि की तरफ ध्यान जाना उचित है। यह ऍठन साधारण

अंग-कपन, थरकन के रूप मे हो सकती है, मास-पेशियो के फडकने के रूप मे किसी एक मास-पेशी के थरकने से लेकर सारे शरीर की ऐंठन और अकडन भी इसके क्षेत्र मे है।

यह ऐंठन शुरु कहा से होती है ? इसकी शुरुआत होती है 'अगुलियो से'। अगुलिया अगूठे को कस कर वाघ लेती हैं, हाथ की मुट्ठी जोर से वघ जाती है। सवसे पहला प्रभाव अगूठो पर पडता है। अगूठे हथेली की तरफ मुड जाते हैं, और उन पर अगुलिया जोर से जा अकडती है। हाथ की अगुलिया और पैर के अगूठो से ऐंठन शुरु होकर सारे शरीर मे फैल जाती है, रोगी अत्यन्त शक्तिहीन हो जाता है, उसके अग फडकने लगते हैं। ऐंठन मे रोगी हाथ और पैर की अगुलियो को अन्दर की ओर सिकोड लेता है। ऐंठन मे इसकी तुलना **सिकेल** के साथ की जाती है। **क्यूप्रम** मे अगुलिया अन्दर की ओर और **सिकेल** मे अगुलिया अलग-अलग फैली रहती हैं।

(ऐंठन के रोग की मुख्य-मुख्य औषधिया)

i **बेलाडोना**—इसकी ऐंठन मे चेहरा और आखें लाल हो जाती हैं, सिर गर्म हो जाता है, तेज़ बुखार होता है और कनपटियो मे तपकन होती है।

ii **ग्लोनॉयन**—इसमे **सिकेल** की तरह अगुलियां अलग-अलग फैल जाती हैं, सिर मे खून जमा हो जाता है।

iii **हायोसाइमस**—इसमे ऐंठन पहले एक हाथ मे होती है, फिर दूसरे हाथ मे चली जाती है, इस प्रकार ऐंठन चलती रहती है। हाथ कापता है, टेढा पड जाता है। मुह से झाग निकलती है।

iv **इग्नेशिया**—इसमे वच्चा माता-पिता, अध्यापक की डाट से डर कर ऐंठ जाता है। कभी-कभी वच्चो के दात निकलते समय ऐंठन होती है। इनके लिये यह उपयोगी है।

v **सिक्यूटा**—इसकी ऐंठन मे रोगी का सिर तथा गर्दन पीठ की तरफ धनुष की तरह ऐंठ जाते हैं।

(२) **ऐंठनवाली हूपिंग-कफ जिसमे ठडे पानी के घूट से आराम पहुचे**—'कुत्ता-खासी' को हूपिंग-कफ कहते हैं। खासते-खासते वच्चा ऐंठ जाता है और उसका सास रुक-सा जाता है। ऐंठनवाली इस खासी का वर्णन करते हुए डा० कैन्ट लिखते हैं कि जिस वच्चे को यह खासी होती है उसकी मा चिकित्सक को आकर कहती है कि खासते-खासते वच्चे का मुख नीला पड जाता है, नाखूनो का रग वदल जाता है, आखे ऊपर को चढ जाती हैं, वच्चे का सास रुक जाता है, और ऐसा लगता है कि अव इसका सास लौट कर नही आयेगा, परन्तु सास की क्रिया मे एक ज़वर्दस्त खीच पडती है, छोटे-छोटे सॉस लेकर वच्चा मरता-

मरता जी उठता है। यह मूर्त रूप है ऐंठनवाली कुत्ता-खासी का जिसमे यह दवा उपयुक्त है। आश्चर्य की बात यह है कि इस खासी मे ठडे पानी का घूट रोगी को आराम पहुचाता है।

(३) **ऐंठनसहित कठिन-श्वास**—श्वास-नलिका मे जब श्वास-कष्ट होता है, दम घुटता है, तब श्वास-नलिका की ऐंठन होती है, छाती मे घडघडाहट होती है। दम जितना घुटता जायगा उतना ही अगुलियो से हाथ का अंगूठा ज़ोर से भिचता जायगा। इस प्रकार के कठिन-श्वास मे जिसमे हाथो की ऐंठन मौजूद हो, **क्यूप्रम** लाभ करता है।

(४) **वृद्धावस्था के विवाह मे संभोग के समय ऐंठन**—वृद्धावस्था मे, या जो लोग समय से पूर्व बूढे हो जाते हैं, उन्हें रात मे बिस्तर पर पडने पर अगुलियो और पैर के तलुओ मे ऐंठन होने लगती है। वृद्ध लोगो के एक अन्य रोग को भी **क्यूप्रम** दूर करता है। जब कोई देर तक शादी न करके वृद्धावस्था मे शादी करता है, तब सभोग के समय उसे ऐंठन होने लगती है, पैर के तलवे और टागें ऐंठने लगती हैं। ऐसे युवक जो कुकर्मों से वृद्ध-समान हो गये हैं, या शराब पीने तथा रात्रि-जागरण के कारण कमज़ोर हो गये है, उन्हें भी ये ऐंठन पडने लगती है जिसे यह औषधि दूर कर देती है।

(५) **ऐंठनसहित मासिक-धर्म**—जिन युवतियो का मासिक-धर्म अगुलियो मे ऐंठन से शुरु होता है, और अगुलियो से शुरु होकर यह ऐंठन सारे शरीर मे फैल जाती है, उनके कष्टप्रद मासिक-धर्म को यह ठीक कर देता है। यहा पर भी इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण—'अगुलियों मे ऐंठन का शुरु होना'—है। जिस रोग मे भी अगुलियो से ऐंठन शुरु हो, उसे यह दवा देनी चाहिये।

(६) **युवतियों मे मासिक-धर्म के दिनों मे ठंडे पानी से स्नान करने के कारण ऐंठन पडना**—कई लडकिया, यौवन के आगमन पर, मासिक-धर्म के दिनो मे ठडे पानी से स्नान कर लेती हैं। उनकी माता इन बातो के विषय मे उन्हें जानकारी नही देती। इसका परिणाम यह होता है कि मासिक-धर्म होने के समय स्नान से ठंड लगने के कारण रुधिर का प्रवाह रुक जाता है और 'ऐंठन' (Convulsions) पडने लगती है। इस प्रकार की ऐंठन या अकडन **क्यूप्रम** का ही लक्षण है।

(७) मृगी (Epilepsy)—जो मृगी छाती के निचले भाग से या अगुलियो की भीचन से प्रारभ होकर सारे शरीर मे या सब मास-पेशियो मे फैल जाय, वहा पर भी यही औषधि लाभप्रद है। यहा पर भी **क्यूप्रम** का चरित्रगत-लक्षण ही आधार मे बैठा होता है।

(८) **दाने या स्राव दब जाने से ऐंठन (क्यूप्रम, जिकम और ब्रायोनिया मे भी यह लक्षण है)**—दाने दब जाने से डायरिया हो जाता है। कई चिकित्सक

दानो पर ऐसा लेप कर देते हैं कि दाने आराम होने की जगह दव जाते हैं। अगर ऐसी हालत मे डायरिया हो जाय, तो वह तो दानो के ज़हर को वाहर निकालने का प्रकृति का उपाय है। अगर दाने दवकर डायरिया हो जाय, और फिर उस डायरिया को भी दवा दिया जाय, तव ऐंठन पड जाती है। यह **क्यूप्रम** का क्षेत्र है। दानो की तरह प्रदर आदि स्रावो को भी तेज़ दवा से कई चिकित्सक रोक देते हैं। तव भी ऐंठन का दौरा पड जाता है। शरीर से जो स्राव निकलते हैं उन्हें ठीक करने के स्थान पर तेज़ दवा से दवा देने से अनेक भीषण-लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। प्राय ऐंठन पडने लगती है। ऐसे लक्षणो के होने पर इस दवा को स्मरण करना चाहिये। जव दाने दव जाते हैं तव इस से दाने वाहर निकल आते हैं। इस शिकायत मे **जिकम** और **ब्रायोनिया** भी उपयोगी हैं।

(९) **हैज़े मे ऐंठन होना—(हैज़े की प्रतिरोधक** (Prophylactic against cholera)—हम **कैम्फर** के प्रकरण मे लिख आये हैं कि हनीमैन ने हैज़े के रोगी नहीं देखे थे, परन्तु जव यह रोग १८३१ मे युरोप मे फैलने लगा, तव समाचार-पत्रो मे इसके लक्षणो को पढकर उन्होंने कहा कि इस रोग की तीन मे से कोई एक औषधि है। वे तीन हैं—**कैम्फर, क्यूप्रम** तथा **विरेट्रम एल्वम**। आगे चलकर अनुभव से भी सिद्ध हुआ कि इस रोग का इन तीनो मे से किसी एक औषधि से सफल उपचार हो जाता है। डा० डनहम ने इन तीनो की तुलना करते हुए लिखा है कि हैज़े मे अगर शक्तिहीनता, निस्सारता (Collapse) प्रधान हो तो **कैम्फर** का लक्षण है ; अगर दस्त और कय (Evacuation and vomitting) प्रधान हो तो **विरेट्रम एल्वम** का लक्षण है, अगर ऐंठन (Cramps) प्रधान हो तो **क्यूप्रम** का लक्षण है। **क्यूप्रम** को हैज़े के दिनो मे 'प्रतिरोधक' (Prophylactic) के तौर पर काम मे लाया जाता है। इसे लेकर हैज़ाग्रस्त क्षेत्र मे वे-रोक-टोक जाया जा सकता है। हैज़े की इन तीनो औषधियो की विशेष तुलना हमने **कैम्फर** पर लिखते हुए की है, वहा देखने से इनका एक-दूसरे से भेद स्पष्ट हो जायेगा।

(१०) **मानसिक-श्रम या निद्रानाश से शारीरिक तथा मानसिक असमर्थता**—डा० फैरिंगटन का कथन है कि अगर मानसिक-श्रम से, या वहुत अधिक जागने से किसी को मानसिक या शारीरिक रोग उत्पन्न हो जाय, रोगी अपने को बेहद कमजोर अनुभव करने लगे, तो **कौक्युलस** तथा **नक्स वोमिका** की तरह **क्यूप्रम** भी लाभदायक है।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

साईक्लेमेन (CYCLAMEN)

(१) **रजोधर्म में पल्सेटिला से तुलना**—इस औषधि का विशेष उपयोग स्त्रियो की रजोधर्म की खराबियो मे होता है। इसके रोगी का शरीर **पल्सेटिला** जैसा कफ-प्रकृति (Phlegmatic) का होता है। दोनो दवाओ मे अपने काम के प्रति उत्साह नही होता, तबीयत गिरी रहती है, दु ख, निराशा चित्त पर छाये रहती है। दोनो मे रजोधर्म समय से बहुत पहले होता है, ज्यादा होता है, रजोधर्म मे झिल्ली मिला हुआ काला खून निकलता है। दोनो रज रोध-कष्ट (Dysmenorrhea) की दवाए हैं। रज के जारी होने मे दर्द होता है, दोनो मे रोगिणी रक्तहीन और पीली पड जाती है। परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **पल्सेटिला** में प्यास नही रहती और रोगिणी खुली हवा पसन्द करती है, **साईक्लेमेन** मे प्यास लगती है और रोगिणी खुली हवा पसन्द नही करती।

(२) **रोगिणी कर्तव्य-कर्म से च्युत हो जाने के कारण दु'खी रहती है**—इस औषधि का मानसिक-लक्षण यह है कि रोगिणी समझती है कि उसने अपने कर्तव्य को नही निभाया, कोई पाप किया है, उसे अन्तरात्मा धिक्कारती रहती है। रोने से जी हल्का हो जाता है, एकान्त पसन्द करती है। उस पर एक अजीब भूत सवार रहता है, वह समझती है कि उसे सबने छोड दिया है, सब उसे सताने के लिये उसका पीछा कर रहे हैं।

(३) **आख के सामने धुध, भुनगे आना**—आख के अनेक रोगो के लिये यह उत्तम है। आख के सामने भिन्न-भिन्न रग दिखाई देने लगते है, कभी पीला, कभी हरा, कभी स्फुलिग, कभी धुआँ, कभी प्रकाशमान वस्तु के चारो तरफ गोला-सा, काले धब्बे, आख के सामने पर्दा, धुध, भुनगे, एक चीज का दो दिखाई देना, आख मे जलन, खुजली—ये सब आख के लक्षण इस दवा मे हैं।

(४) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i यह गर्भावस्था की हिचकी को दूर करती है

ii एडी के नीचे जलन और दर्द को दूर करती है

(५) **शक्ति**—३ शक्ति

सिप्रिपीडियम (CYPRIPEDIUM)

(१) **उन्निद्रता**—उन्निद्र-रोग के सबध मे तीन औषधियो को ध्यान मे रखना चाहिये—वे हैं, **सिप्रिपीडियम, स्कुटेलेरिया** तथा **कॉफिया**। इन तीनो के लक्षण निम्न हैं

1 **सिप्रिपीडियम**—हर्ष-दायक समाचार से जब मस्तिष्क मे विचारो की भीड उमडने के कारण नीद नही आती, या जब छोटे बच्चे रात को उठकर एक-

दम खेलने लगते हैं, हँसते हैं, तब यह औषधि लाभप्रद होती है। अगर यह हालत लगातार प्रति रात्रि को होने लगे, तो समझ लेना चाहियें कि इसका परिणाम ऐंठन-अकड़न आदि हो सकता है। ठीक समय पर इस दवा को देने से भविष्य मे आनेवाले रोग को रोका जा सकता है।

ii **स्कुटेलेरिया**—एक स्कूल की मुख्याध्यापिका को उन्निद्र-रोग हो गया। सिर मे दर्द रहता था, मस्तिष्क अत्यन्त थका हुआ था, शक्ति से बाहर काम करने के कारण स्नायु-मडल अत्यन्त शिथिल हो गया था। **पिकरिक ऐसिड** तथा **ऐसिड फॉस** ने कुछ काम नही दिया। डा० हेल का कहना है कि उसे आध-आध घटे वाद **स्कुटेलेरिया** के दस-दस बूद दिये गये, तो उसका सिर-दर्द तथा उन्निद्र-रोग ठीक हो गया।

iii **कॉफिया**—इसके रोगी का स्नायु-मडल अत्युत्कट-उत्तेजना का शिकार होता है। वहुत अधिक खुशी से या एकदम आश्चर्यमयी घटना से नीद न आये, तो यह लाभप्रद है।

(२) **शक्ति**—**सिप्रिपीडियम** की टिंचर से लेकर ६ शक्ति तक दी जा सकती है, कॉफिया की २०० शक्ति अच्छी रहती है।

डिजिटेलिस (DIGITALIS)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) नाडी का अत्यन्त मन्द पड जाना
(२) तीसरा, पाचवा, सातवां स्पन्दन छोडकर नाडी का चलना
(३) मन्द-नाडी के साथ पेट मे कलेजा बैठने का-सा अनुभव होना
(४) शोकातुरता के कारण हृदय का धडकना
(५) हृदय-रोग के कारण पीलिया की बीमारी मे इसका प्रयोग
(६) हृदय-रोग के कारण श्वास मे कठिनाई की बीमारी मे डिजिटेलिस का प्रयोग
(७) हृदयकी मन्द-गति के कारण सोते हुए श्वास रुक-सा जाना

(१) **नाडी का अत्यन्त मन्द पड जाना**—हृदय एक मास-पेशी है। इसके दो काम हैं। एक काम है—रुधिर को जो शरीर मे चक्कर काट कर और फेफडो से शुद्ध होकर हृदय की तरफ आ रहा है उसे लेना, दूसरा काम है—रुधिर को शरीर के पोषण के लिये धमनियो द्वारा शरीर को देना। इस दोहरे काम के लिये हृदय गति कर रहा है। यह गति हृदय के उक्त दोनो कामो को दृष्टि मे रखते हुए दो तरह की होती है। जब हृदय सिकुडता है तब इसमे से रुधिर धमनी मे चला जाता है, जब यह फैलता है तब फेफडो द्वारा शुद्ध किया हुआ रुधिर फेफडो से हृदय मे आ जाता है। हृदय के सिकडने को 'सिस्टोल'

(Systole) कहते हैं, 'सिस्टोल'-गति द्वारा हृदय से रुधिर बाहर धमनियों द्वारा शरीर में पहुँचने के लिये जाता है, हृदय के फैलने को 'डायस्टोल' (Diastole) कहते हैं, 'डायस्टोल'-गति से फेफड़ों में शुद्ध हुआ रुधिर हृदय में आ इकट्ठा होता है। ऐलोपैथिक मत के अनुसार डिजिटेलिस का प्रभाव हृदय के 'संकोचन' (Systole) तथा 'विमोचन' (Diastole) की गति को बल देकर हृदय की मांस-पेशी को बल देना है। उनके मत से डिजिटेलिस हृदय को टोन देता है—हृदय का टौनिक है।

होम्योपैथिक-मत के अनुसार टौनिक नाम की कोई चीज़ नहीं है। संपूर्ण-शरीर को जो वस्तु स्वस्थ कर दे वही टौनिक है, और प्रत्येक व्यक्ति के शरीर की रचना पर भिन्न-भिन्न औषधियों का भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। किसी व्यक्ति की 'धातुगत-औषधि' (Constitutional drug) फ़ॉसफोरस हो सकती है, किसी की सलफर, किसी की कैलकेरिया कार्ब। जिस व्यक्ति की जो 'धातुगत-औषधि' होगी उसके लिये वही टौनिक होगी, दूसरी औषधि नहीं।

डिजिटेलिस का मुख्य-लक्षण अत्यन्त धीमी नाड़ी का होना है। कभी-कभी नाड़ी ४८ स्पन्दन तक चली जाती है। अत्यन्त धीमी का यह अर्थ नहीं है कि जिस समय चिकित्सक रोगी का निरीक्षण कर रहा है उसी समय नाड़ी अत्यन्त धीमी हो। इस समय नाड़ी बिजली की तरह तेज़ हो सकती है, परन्तु रोग की प्रारंभिक अवस्था में नाड़ी की क्या हालत थी——यह जानना आवश्यक है। डिजिटेलिस के रोगी की नाड़ी शुरु-शुरु में, जब वह बीमार पड़ा, अत्यन्त मन्द हो जाती है। अगर रोगी इस समय बेचैन है, घबराया हुआ है, उसे भयंकर स्वप्न आते हैं, नाड़ी छूटती-सी अनुभव होती है, तब तो इसका यह अर्थ है कि रोग बहुत आगे बढ़ चुका है, परन्तु इस अवस्था में भी डा० कैन्ट के अनुसार डिजिटेलिस देने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि रोगी की शुरु में क्या हालत थी। क्या उस की नाड़ी शुरु में ४८ या इसके आस-पास चल रही थी? अगर ऐसा है, तो यह रोगी डिजिटेलिस का रोगी है, परन्तु अगर शुरु में नाड़ी तेज़ थी, तब यह रोगी इस दवा का नहीं है—ऐसा समझना चाहिये। इस औषधि की नाड़ी शुरु से ही मन्द होती है, और कई दिन तक मन्द रहती है, अन्त में प्रतिक्रिया के रूप में हृदय अनियमित चाल से चलने लगता है। ऐलोपैथ लोग डिजिटेलिस तब देते हैं जब नाड़ी बहुत तेज़ चलने लगे ताकि उसे धीमा किया जा सके, होम्योपैथ डिजिटेलिस तब देते हैं जब नाड़ी अत्यन्त मन्द गति से चल रही हो। ऐलोपैथी में इस औषधि के कुछ बूंद अत्यन्त तेज़ गति से चल रहे हृदय को शान्त करने के लिये दिये जाते हैं, होम्योपैथी में जब हृदय की अत्यन्त मन्द गति हो, तब इसका प्रयोग किया जाता है। अगर हृदय की तीव्र-गति है, तब भी इसके प्रयोग के लिये यह जान लेना आवश्यक है कि शुरु-शुरु में हृदय की अत्यन्त मन्द गति थी

या नही ? इसीलिये हमने कहा कि इसका मुख्य-लक्षण नाडी का अत्यन्त धीमा होना है ।

(२) **तीसरा, पाचवा, सातवा स्पन्दन छोड़कर नाडी का चलना**—जब नाडी धीमी चलती है, तब तो इस औषधि का क्षेत्र है ही, परन्तु जब कभी तेज़ कभी धीमी चले, तब बीच-बीच मे अनियमित चलने लगती है—तीसरा, पाचवा, सातवा स्पन्दन छोड देती है। इस अनियमित-स्पन्दन की हालत मे भी इस औषधि को स्मरण रखना चाहिये ।

(३) **मन्द-नाड़ी के साथ पेट मे कलेजा बैठने का-सा अनुभव**—इस रोगी की नाडी की गति इतनी मन्द पड जाती है कि कभी-कभी ४० स्पन्दन तक चली जाती है। रोगी को पेट मे कलेजा बैठने का-सा अनुभव होता है। ऐसा अनुभव होता है कि बस अब गये, तब गये। खाने से भी पेट मे आराम नही मिलता। बेचैनी, बेहोशी-सी, असमर्थता, अत्यन्त क्षीणता, बलहीनता का अनुभव पेट तथा तल-पेट मे होता है ।

(४) **शोकातुरता के कारण हृदय का धड़कना**—किसी शोक का रोगी के हृदय पर ऐसा प्रभाव पडता है कि हृदय धक्-धक् करने लगता है। रोगी अनुभव करता है कि हृदय की गति समाप्त हो गई है, हृदय ठहर गया है, हृदय मे फड-फडाहट होती है । ज़रा-से भी परिश्रम से हृदय पर ज़ोर पडता अनुभव होता है । हरकत से हृदय की धडकन और घबराहट बढ जाती है। रोगी की नाडी ४० तक पहुच जाती है, और अगर वह करवट भी बदलता है तो नाडी फडफडाने लगती है, उसकी गति तेज़ हो जाती है, सारे शरीर मे नाडी की थिरकन अनुभव होने लगती है।

(५) **हृदय-रोग के कारण पीलिया की बीमारी मे डिजिटेलिस का प्रयोग**—पीलिया रोग के दो कारण हो सकते है एक तो जिगर की (Hepatic) तथा दूसरी हृदय की (Cardiac) बीमारी। जब हृदय-रोग के कारण मतली और कय होने लगे, रोगी का सारा शरीर पीला पडने लगे, आख की श्वेतिमा सोने जैसे रग के समान पीली पड जाय, नाखून तक पीले हो जायें, मल रग रहित हो जाय, मूत्र बीयर के रग का-सा हो जाय, नाडी की गति अत्यन्त मन्द पड जाय, ४०-३० तक चली जाय, तब समझ लेना चाहिये कि रोग हृदय की मन्द-गति के कारण है, और तब **डिजिटेलिस** लाभप्रद होगा ।

(६) **हृदय-रोग के कारण श्वास मे कठिनाई की बीमारी मे डिजिटेलिस**—हृदय की कमजोरी के कारण रोगी चलते-फिरते, ऊचाई पर चढते समय हाँफने लगता है, सास लेने मे तकलीफ होती है। डा० नैश एक ऐसे रोगी का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि एक दिन एक हट्टा-कट्टा, तगडा आदमी सडक पार कर इनके आफिस की तरफ आ रहा था। वह चलते हुए डगमगा रहा था। उन्होंने

समझा कि वह शराव पिये हुए है, परन्तु निकट से देखने पर पता चला कि उसका चेहरा, होठ नीले पड गये थे। उसे सहारा देकर इन्होने कमरे के अन्दर ला विठाया। कुछ मिनट तक तो वेचारा बैठा हाफता रहा, उसके मुह से आवाज तक नही निकली। उसकी नाडी वडी अनियमित चल रही थी, वीच-वीच मे एक स्पन्दन गायव हो जाता था। कुछ देर दम लेने के वाद वह कहने लगा कि कई वार उसे इस प्रकार की श्वास की कठिनाई हो जाती है, वह चलते-चलते रास्ते मे दम लेने के लिये वैठ जाता है। डा० नैश ने उसकी नाडी की मन्द गति को देखकर **डिजिटेलिस** २ शक्ति की कुछ वूदे पानी मे डालकर पिलायी। कुछ दिन वाद क्या देखते है कि वह फावडा लेकर अपने घर के सामने की वर्फ साफ कर रहा था। डाक्टर नैश को देखकर कहने लगा उस दवा लेने के वाद से उसके सास के दौर खत्म हो गये और हृदय की जो वीमारी थी वह भी जाती रही।

(७) **हृदय की मन्द गति के कारण सोते हुए श्वास रुक जाने की कठिनाई**—हृदय की वीमारी मे सास लेने मे कठिनाई होने लगती है। रोगी हर समय गहरा सास लेने का प्रयत्न करता है। जव वह सोने लगता है तव उसे ऐसा प्रतीत होता है कि सास रुक गया। वह गहरा सास भर कर उठ बैठता है। **लैकेसिस, फॉसफोरस** और **कार्बो वेज** मे भी ऐसा लक्षण है। रोगी स्वप्न मे देखता है कि वह नीचे गिर रहा है। निद्रा के समय मस्तिष्क मे रक्त का सचार कम होता है, और अगर हृदय कमजोर हो, नाडी मन्द हो, तो सिर मे पर्याप्त रुधिर न पहुचने के कारण रोगी सोते-से चौक उठता है, भयानक स्वप्न आते हैं, अगो का स्फुरण होता है। जागते हुए भी शरीर मे विजली का शौक लगता-सा अनुभव होता है, वेहोशी आती है, कमजोरी हो जाती है।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i रोगी इतना दुर्वल होता है कि जरा-सा भी हिलने-डोलने से ऐसा लगता है कि हृदय की क्रिया वन्द हो जायगी। **जेलसीमियम** का रोगी अगर हिले-डुले नही, तो उसे लगता है कि हृदय की क्रिया वन्द हो जायगी।

ii डा० कैन्ट कहते हैं कि प्रोस्टेट ग्लैंड की यह अमूल्य औषधि है। उनका कहना है कि अगर **डिजिटेलिस** का उन्हें ज्ञान न होता, तो वे नही जानते कि प्रोस्टेट के रोगियो का इलाज वे कैसे कर सकते।

iii हृदय की दुर्वलता के कारण खासी मे यह औषधि उपयोगी है।

iv हृदय-रोग के कारण पाव आदि की शोथ मे भी यह लाभप्रद है।

v **डिजेटेलीन** स्वप्नदोष की एक वहुत वढिया दवा है। **डिजेटेलीन** डिजिटेलिस का ही एक क्षार है।

(९) **शक्ति**—मूल अर्क, ३, ३०, २००

डायोस्कोरिया (DIOSCORIA)

(१) **दर्द मे पीछे की तरफ झुकने से आराम**—यह पेट-दर्द की प्रधान दवा है। कोलोसिन्थ मे पेट-दर्द हो, तो आगे की तरफ झुकने से आराम मिलता है, डायस्कोरिया मे पीछे की तरफ झुकने से आराम मिलता है। दर्द नाभि-प्रदेश मे शुरु होता है और शरीर के किसी भी भाग तक चला जाता है, हाथ-पैर तक भी फैल जाता है। इस दर्द का विशेष-लक्षण यह है कि शुरु तो यह कही होता है, परन्तु जहा से चला वहा शान्त होकर शरीर के किसी अन्य भाग मे प्रकट हो जाता है, हाथ की अगुलियो या पैर के अगूठो मे भी प्रकट हो सकता है। गुर्दे का दर्द या कोई भी शूल हो, उक्त लक्षण रहने पर यह लाभ करता है।

(२) **यकृत् से चलकर दर्द दायें स्तन की तरफ चढ़ जाता है**—इसका एक प्रकार का दर्द यकृत् (जिगर) से उठता है और दायें स्तन की तरफ ऊपर चढ जाता है।

(३) **स्वप्नदोष**—अगर एक रात मे कई वार वीर्यनाश हो, और प्रात काल घुटनो मे कमजोरी प्रतीत हो, तो इस से लाभ होता है। रोगी रात भर स्त्रियों का स्वप्न देखता है। **स्टैफिसैग्रिया** भी इस रोग के लिये उत्तम है।

(४) **शक्ति**—६, ३०, २००

ड्रौसरा (DROSERA)

(१) **कुत्ता-खांसी**—(Whooping cough)—हनीमैन का कथन था कि कुत्ता-खासी की यह मुख्य दवा है। रोगी भौ-भौ करके खासता है, तारदार श्लेष्मा निकलता है। हनीमैन का कथन था कि कुत्ता-खासी मे ३० शक्ति की एक मात्रा देने से सात-आठ दिन मे रोग चला जाता है। उनका यह भी कहना था कि इस औषधि की दूसरी मात्रा नहीं देनी चाहिये क्योकि इतना ही नही कि दूसरी मात्रा पहली मात्रा के असर को दूर कर देती है, अपितु रोगी को हानि भी पहुचाती है। इस खासी का विशेष-प्रभाव श्वास-नलिका के ऊपरी भाग (Larynx) पर होता है, वही सरसराहट होती है, ज्यो रोगी सोने के लिये बिस्तर पर सिर रखता है कि खासी शुरु हो जाती है, ठडी वस्तुओ के खाने-पीने से यह खासी बढ जाती है।

(२) **व्याख्याताओं का स्वरभग** (Sore-throat)—उपदेशको, व्याख्याताओ, गायको का गला बोलते-बोलते दुखने लगता है, गले मे खराश होने लगती है, गला बैठ जाता है, आवाज फट जाती है, बोलने मे बहुत जोर लगाना पडता है। ऐसी हालत मे यह लाभप्रद है।

(३) **क्षय रोग (टी० बी०)**—डा० टॉयलर का कथन है कि इस बात को तो सब जानते हैं कि इस औषधि का कुत्ता-खासी मे प्रयोग किया जाता है, परन्तु क्षय-रोग के लिये भी यह अत्युत्तम औषधि है इसकी तरफ चिकित्सको का ध्यान कम गया है। श्वास-नलिका की खुरखुराने वाली खासी क्षय-रोग की सबसे बडी परेशानी होती है। डा० टॉयलर का कथन है कि जब उन्होंने अनुभव से देखा कि हड्डी, जोड और ग्लैड के क्षय-रोग की चिकित्सा मे यह औषधि कितनी सफल है, तब उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इस उद्देश्य से जब उन्होंने हनीमैन के 'मैटीरिया-मैडिका-प्यूरा' को पढा, तब उनकी आखे खुल गईं क्योकि उसमे उन्होने इस औषधि के विषय मे लिखते हुए जोडो, कन्धे की हड्डी, गिट्टे की हड्डी तथा अन्य अस्थियो पर इसके प्रभाव को मोटे अक्षरो मे लिखा है। जिन रोगियो के जीवन-इतिहास मे वशानुगत क्षय-रोग के लक्षण मौजूद हों, उन्हें ड्रौसरा रोग-मुक्त कर देता है। इसके अतिरिक्त क्षय-रोग के अन्य लक्षण—पुराना लगातार रहनेवाला नज़ला, गले मे लगातार खराश का बने रहना, फेफडो तथा श्वास-नलिका का कफ से भरे रहना—ये जहा मौजूद हो, वहा यह औषधि विशेष प्रभाव दिखलाती है।

(४) **दीर्घ-कालीन निद्रा-नाश तथा नींद से जागने के बाद भारी पसीना**—ये दोनो भी इस औषधि के क्षय-रोग या अन्य किसी रोग मे पाये गये लक्षण हैं।

(५) **शक्ति**—३०, २०० (कुत्ता-खासी मे मात्रा दोहरानी नहीं चाहिये)

डलकेमारा (DULCAMARA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) नमीदार या बरसाती मौसम मे ठड लगने से रोग
(२) डलकेमारा तथा एकोनाइट मे भेद
(३) गर्मी के बाद बरसात आने पर उत्पन्न होने वाले रोग
(४) पानी से भीग जाने से उत्पन्न होने वाले रोग
(५) पसीना आते हुए ठड लग जाना
(६) गर्म-सर्द हो जाने से होने वाले रोगों के उदाहरण—पहाड़ पर गर्म-सर्द हो जाना, बर्फ मे काम करनेवाले, धोबी लोग, ग्रीष्म ऋतु के बाद बरसात आने पर डायरिया, बरसाती हवाओं से खांसी-जुकाम हो जाना

(१) **नमीदार या बरसाती मौसम में ठड लगने के कारण रोग**—इस औषधि मे 'प्रकृति' (Modality) ही औषधि-निर्वाचन का मुख्य साधन है। बरसाती मौसम मे एकायक ठड लग जाने से जुकाम, खासी, चर्म-रोग, वात-रोग, ज्वर, दमा—कोई भी रोग हो जाय, तो इस औषधि से लाभ होता है। इसका

सबसे बडा लक्षण है 'नमीदार हवा से ठड लगना' । नमीदार हवा से ठड लगने
पर दस्त आने लगें, नमीदार हवा से ठड लगने पर पेशाव की तकलीफ हो जाय,
नमीदार हवा से ठड लगने पर नाक, गले, छाती, त्वचा—कही भी कोई शिकायत
हो जाय, तो **डलकेमारा** ही औषधि है । नम, बरसाती हवा से रोग की वृद्धि
में **रस टॉक्स, कॉस्टिकम** तथा **नेट्रम सल्फ** की तरफ भी ध्यान जाना चाहिये ।

(२) **डलकेमारा तथा एकोनाइट मे भेद**—इन दोनो दवाओ मे ठड
लगने से रोग होता है, परन्तु इनमे भेद यह है कि **डलकेमारा** मे तर, नमीदार,
बरसाती ठडी हवा से रोग उत्पन्न होता है, **एकोनाइट** मे सूखी ठडी हवा के
लगने से रोग—जुकाम, खासी, दस्त आदि—होता है। **एकोनाइट** तो ठडी
ऋतु आ जाने पर रोग के लिये लाभप्रद है, **डलकेमारा** ऋतु-परिवर्तन मे लाभ-
प्रद है—गर्मी के दिन और ठडी रातें, गर्म-सर्द हो जानेवाले रोग मे लाभप्रद है ।

(३) **गर्मी के बाद बरसात आने पर उत्पन्न होनेवाले रोग**—गर्मी की
मौसम मे शरीर गर्म होता है, उसके वाद बरसात आ जाती है। जब गर्म हवा
एकायक तर हो जाती है, तव उस तरावट मे ठड भी रहती है। उस ठडक से
कोई भी रोग क्यो न हो—जुकाम, खासी, अगो मे दर्द, ज्वर—वह इस औषधि
से ठीक हो जायगा ।

(४) **पानी से भीग जाने से पैदा होने वाले रोग**—वरसात मे भीग जाने
से, बरसाती ठडी हवा के लगने से गर्दन अकड जाय, जवडा टेढा हो जाय, पीठ
मे दर्द हो जाय, वरसाती हवा से दमा उठ खडा हो, तो इसे स्मरण करना चाहिये ।

(५) **पसीना आते हुए ठंड लग जाना**—पसीना आ रहा हो और व्यक्ति
ठड मे चला जाय, तव भी लगभग वैसी ही स्थिति उत्पन्न हो जाती है जैसी
बरसाती ठड लगने से होती है। ऐसी अवस्था के रोगो मे भी **डलकेमारा** लाभ
करता है। वीमारी का कुछ भी नाम क्यो न हो, अगर गर्मी के वाद नमीदार
ठड से रोग पैदा हो—जोडो मे दर्द, गर्दन अकड जाना, पीठ का दर्द, अगो का
पक्षाघात, गला पडना—इन सव मे इसी औषधि से उपचार करना उचित है।
रस टॉक्स मे भी गर्म-सर्द होने से ये लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं ।

(६) **गर्म-सर्द हो जाने से होनेवाले रोगो के उदाहरण**—ऊपर जो-कुछ
कहा गया है उसका अधारभूत सिद्धान्त यह है कि शरीर गर्म हो और उसे नमी-
दार ठड लग जाय तो रोग हो जाता है, और उस अवस्था मे **डलकेमारा** लाभ
करता है। इस वात को और अधिक स्पष्ट करने के लिये इस रोग की अवस्थाओ
के हम कुछ दृष्टात दे रहे हैं—

1 **गर्मी के दिनों मे पहाड जाने पर गर्म-सर्द हो जाने से रोग**—जब गर्मी
की मौसम मे हम पहाडो पर **जाते हैं**, तब क्योकि दिन मे सूर्य का ताप तीव्र होता
है, हम बच्चे को घुमाने **के लिये बाहर** नही ले जाते। शाम को सैर के लिये

निकालते हैं जब ठडी हवा का झोका हड्डियों तक को कपा देता है। यह डलकेमारा की ठड है। दिन को गर्मी के कारण हम बच्चे को बाहर नहीं ले गये, वह मकान मे रहा, उसका शरीर गर्म हो गया, जब शाम को बाहर ले गये और ठडी बरसाती हवा का झोका खाकर वह बीमार पड गया। ऐसी अवस्थाओं मे उत्पन्न होने वाले रोगो के लिये इस औषधि का प्रयोग करना उचित है। इसी प्रकार युवा-व्यक्ति जब गर्म कोट पहने हुए गर्मी अनुभव करता है, और ठण्ड मे एकदम कोट उतार देता है, तब उसे खासी-जुकाम पकड लेता है। गर्म हो और यकायक सर्दी खा जाय—तब डलकेमारा औषधि है।

ii **बर्फ मे काम करने वालों या धोबियों के गर्म-सर्द हो जाने से रोग**—इसी प्रकार जो लोग अपने निजी व्यापार के लिये बर्फ को इधर-उधर ले जाते हैं, कभी बर्फीले कमरे मे जाते हैं, कभी उसमे बाहर आते हैं, या धोबी लोग जो हर समय ठडे पानी मे खडे रहते हैं, उन्हें अपने निजी काम-धधे के कारण ऐसी परिस्थिति मे रहना होता है जिस मे गर्म-सर्द होने की हर समय सभावना बनी रहती है, धोबी तो कपडे पीटता-पीटता गर्म भी हो जाता है, ठडे पानी मे खडा-खडा ठडा भी हो जाता है, यह स्थिति डलकेमारा के रोगो के लिये अत्यन्त अनुकूल है। इस प्रकार के जीवन से अगर खासी-जुकाम हो जाय, जोडो मे दर्द हो जाय, गठिये का आक्रमण हो जाय, तो यह औषधि उपयुक्त है। जो लोग बर्फ का धधा करते हैं उन्हें हर समय गर्म मकान से ठडे मकान मे जाना पडता है, बाहर आने पर उन्हें पसीना आता है, बर्फखाने मे जाने पर उनका पसीना दब जाता है। ये लोग इसी दवा के मरीज होते हैं। इन्हें बुखार आ सकता है, हड्डियो मे दर्द बैठ सकता है, शरीर की मास-पेशियो मे दर्द हो सकता है, मास-पेशियो मे कपन हो सकता है।

iii **ग्रीष्मान्त मे गर्म-सर्द हो जाने से डायरिया**—गर्मी के दिन जब समाप्त होने लगते हैं, बरसात के दिन आने लगते हैं, हवा मे ठडक आ जाती है, दिन गर्म और रातें ठडी होती है, तब बच्चो को प्राय गर्म-सर्द हो जाने से डायरिया हो जाता है। इस डायरिया की यह सर्वोत्तम औषधि है। जब बच्चो को कभी किसी और कभी किसी रग के दस्त आयें, दस्तो मे अपच-भोजन निकले, तब पल्सेटिला अत्युत्तम है, परन्तु अगर इन दस्तो का कारण बच्चे का गर्म-सर्द हो जाना हो, तब डलकेमारा ही औषधि है।

iv **बरसाती हवाओं के आने पर जुकाम-खासी**—गर्मी के बाद जब ठडी रातें आने लगती है, बरसात की ठडी हवाए चलने लगती हैं, तब डलकेमारा की 'धातुगत-अवस्थाएँ' (Constitutional states) प्रकट होने लगती हैं और तब व्यक्ति के जुकाम-खासी, जोडो मे दर्द आदि धातुगत-लक्षण प्रकट हो जाते हैं जिनके लिये यह अत्युत्तम औषधि है।

डलकेमारा, नक्स वोमिका और एलियम सीपा के जुकाम मे भेद—जुकाम मे **डलकेमारा** का जुकाम खुली, ठडी हवा मे वढ जाता है, गर्म हवा मे, गर्म स्थान मे उसे आराम मिलता है; **नक्स** का रोगी यद्यपि शीत-प्रधान होता है और गर्मी पसन्द करता है, परन्तु जुकाम मे वह खुली, ठडी हवा पसन्द करता है, वन्द कमरे में, रात को, गर्म विस्तर मे उस की तकलीफ़ बढ जाती है। **डलकेमारा** का रोगी अगर ठडे कमरे मे जायगा, तो उसे नाक की हड्डी मे दर्द शुरु हो जाएगा, छीकें आने लगेगी और नाक से पानी वहने लगेगा, **नक्स** के रोगी को जुकाम की हालत मे ठडे कमरे मे जाने से आराम मिलेगा। **सीपा** भी **नक्स** की तरह है, ये दोनो वन्द कमरे मे परेशान हो जाते हैं, खुली, ठडी हवा पसन्द करते हैं, वन्द कमरे मे आते ही छीकने लगते हैं। इस दृष्टि से जहा तक जुकाम का सवध है, **डलकेमारा** से **नक्स** और **सीपा**—इन दोनो के लक्षण विरुद्ध हैं।

V **बरसाती हवा से एग्ज़ीमा, पित्त उछलना** (Urticaria)—बरसाती ठड लगने से अगर चर्म-रोग हो जाय, एग्ज़ीमा वहने लगे, पित्त उछल आये, तो **डलकेमारा** उपयोगी है।

VI **बरसाती हवा से गठिया**—वरसात की ठडी हवा से गठिये का रोग हो जाय या उभर आये, तो इस औषधि की तरफ़ ध्यान जाना चाहिये।

VII **सीलन से बुख़ार आ जाना**—कई वार सीलन वाले कमरे मे सोने से भी खासी, जुकाम, ज्वर आदि आ जाता है। गीले विछौने मे सोने से भी रोग घर पकडता है। इन सव अवस्थाओ मे **डलकेमारा** उपयोगी है। सीलन का असर वरसाती हवा सरीखा ही तो है।

VIII **बरसाती हवा से सिर-दर्द, आख आ जाना, मूत्राशय का शोथ, कमर-दर्द**—ठडी नम हवा मे सिर-दर्द, पसीना आते-आते कपडे उतार फेंकने से ठड लग जाने के कारण सिर-दर्द, जुकाम होना या आख आ जाना, मूत्राशय मे वरसाती ठड का बैठ जाना, वरसात मे कमर-दर्द हो जाना—ये सव **डलकेमारा** से ठीक हो जाते हैं। चिकित्सक के लिये ध्यान रखने की वात यह है कि रोग की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है। अगर गर्म हालत से ठड लगने के कारण रोग उत्पन्न हुआ है तव **डलकेमारा** से ठीक हो जायगा।

(७) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

I **सिर का दाद**—सिर के वालो मे दाद को यह ठीक करता है।

II **घुटने के नीचे की टांग की हड्डी का दर्द** (Pain in shin-bone)—रात को घुटने के नीचे की टाग की हड्डी मे दर्द को यह दूर कर देता है। दर्द के कारण रोगी रात को उठकर टहलने लगता है, उसे दर्द इतना सताता है कि वह चैन से लेट नही सकता। यह दर्द आतशक का दर्द नही होता। आतशक

के हड्डी के दर्द मे **ऑरम** तथा **ऐसाफेटिडा** की तरफ ध्यान जाना चाहिये।

iii. **ठड लगते ही पेशाब को जाना इससे ठीक हो जाता है।**

iv **ठंडी ज्गह पर जाते ही पाखाना आ जाने मे यह लाभकारी है।**

v **त्वचा के फोड़े-फुन्सी**—त्वचा पर भिन्न-भिन्न प्रकार के फोडे-फुन्सी हो जाते हैं। सूखे, गीले, दानेदार, पसदार, एग्ज़ीमा—ये सब सिर पर, गालो पर, शरीर के किसी भी भाग पर हो जाते हैं। सिर पर दूधिया पपडी जमने की यह प्रभावशाली दवा है। अगर नमीदार सर्दी से दाने छिप जायें और कोई कष्ट उठ खडा हो, तो इससे लाभ होता है। ऐसे फोडे जो वढते जाते और परिमाण मे फैलते जाते हैं परन्तु ठीक होने मे नही आते, वढते-वढते जिनमे से पीली मवाद निकलने लगती है और फोडे के ठीक होने के आसार दीखने मे नही आते, फोडा वढता ही जाता है, तव **डलकेमारा** तथा **आर्सेनिक**—इन दो मे से किसी औषधि की तरफ ध्यान देना होगा।

vi **सर्दी की खांसी**—ऐसी खाँसी जो गर्मियो मे नही रहती, सर्दियो मे आ जाती है, खुश्क, परेशान करनेवाली खासी। नम, ठडी हवा मे यह आती है, गर्मी मे चली जाती है। **सोरिनम** तथा **आर्सेनिक** मे भी ऐसी खासी पायी जाती है।

शक्ति तथा प्रकृति—३, ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

इक्वीसेटम (EQUISETUM)

(१) **मूत्राशय पर विशेष प्रभाव**—इस औषधि की मूत्राशय पर विशेष क्रिया है। पेशाव करने की वार-वार हाजत होती है, इतनी कि रुका नही जा सकता। मूत्राशय मे ऐसा दर्द होता है जैसे पूरा भरा हुआ हो, परन्तु मूत्र निकलने के वाद भी मूत्राशय भरा-का-भरा प्रतीत होता है, और मूत्राशय का दर्द भी वना ही रहता है। मूत्र करने के वाद सख्त दर्द होता है। मूत्र करते समय भी मूत्र-प्रणाली मे काटता हुआ जलन सहित दर्द होता है। गोनोरिया के लिये, मूत्राशय से रुधिर निकलने पर इसका सफल प्रयोग किया जाता है। मूत्राशय का सारा प्रदेश छूने से दर्द करता है, यह दर्द अण्डकोश तक अनुभव होता है। वृद्धा स्त्रियो के अपने-आप पेशाव निकल जाने मे भी यह औषधि लाभ करती है, इसके प्रयोग से मूत्राशय पर नियन्त्रण हो जाता है। वच्चो के भी दिन या रात को अपने-आप पेशाव निकलते रहने पर यह लाभ करती है। **कैन्थरिस** से लाभ न होने पर इसके प्रयोग से लाभ होता है। मूत्र-प्रणाली की जलन **इक्वीसेटम** तथा **कैन्थरिस** दोनो मे है।

(२) **शक्ति**—२, ६, ३०

यूपेटोरियम परफोलियेटम
(EUPATORIUM PERFOLIATUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सारे शरीर मे हडतोड दर्द
(२) इन्फ्लुएंजा मे हड्डियो मे दर्द
(३) ज्वर मे समय (७ से ९ के भीतर प्रात: काल ज्वर आना)
(४) ज्वर मे शीतावस्था से पहले प्यास
(५) ज्वर मे शीत का प्रारभ पीठ से होना
(६) ज्वर उतर जाने पर औषधि देनी चाहिये
(७) यूपेटोरियम से लाभ न हो तो नेट्रम म्यूर या सीपिया दो
(८) ज्वर मे यूपेटोरियम तथा नक्स वोमिका की तुलना
(९) औषधि वात-प्रकृति (Gouty nature) के लिये है
(१०) गठिया कोई रोग नहीं है, शरीर की एक प्रकृति है

(१) **सारे शरीर मे हडतोड-दर्द**—इस औषधि का नाम 'वोन-सेट' भी है क्योंकि मलेरिया, डेंगू बुखार और इफ्लुएंज़ा जैसे ज्वरो मे जव प्रत्येक अग तथा मासपेशी दर्द करने लगती है और हर हड्डी और हर जोड, खासकर हाथ की कलई, ऐसा दर्द करने लगती है मानो हड्डिया चूर-चूर हो गई हो, तव हड्डियो मे वैठ रहे इस दर्द को यह दवा दूर कर देती है, हड्डियो को आराम दे देती है, इसीलिये इसे 'वोन-सेट कहते हैं। जिस ज्वर मे हड्डिया दर्द करने लगें उस ज्वर मे यह औषधि रामवाण का काम करती है।

(२) **इंफ्लुएंज़ा मे हड्डियो मे दर्द**—इफ्लुएंज़ा मे जव रोगी अनुभव करे कि हड्डिया दर्द के मारे टूटी जा रही हैं, छीकें आयें, जुकाम हो, सिर मे ऐसा दर्द हो मानो फूटा पड रहा है, हरकत से तकलीफ वढे, ठड से रोगी परेशान हो, शरीर को ढकना चाहे, इन लक्षणो मे **यूपेटोरियम** और **ब्रायोनिया** मे से किसी दवा का चुनाव करना पडता है।

यूपेटोरियम तथा ब्रायोनिया मे भेद—दोनो औषधिया एक-सी हैं, परन्तु **यूपेटोरियम** मे हड्डियो का दर्द विशेष रूप से पाया जाता है। इस औषधि का 'हड्डियो मे दर्द'—यह इतना विशेष लक्षण है कि अगर यह लक्षण न हो, तो इस औषधि को देना गलती होगा। **ब्रायोनिया** मे हड्डियो का दर्द तो होता है, परन्तु उसका यह मुख्य-लक्षण नहीं है। इसके अतिरिक्त **ब्रायोनिया** मे खूव पसीना आता है, **यूपेटोरियम** मे या तो पसीना आता ही नहीं, या वहुत थोडा आता है। तीसरा भेद यह है कि **ब्रायोनिया** मे रोगी वेचैन नहीं होता, आराम से पडे रहना चाहता है, हरकत पसन्द नहीं करता, **यूपेटोरियम** मे आराम पसन्द होने पर भी वह वेचैन होता है। **रस टॉक्स** तथा **यूपेटो** मे भेद को भी समझ लेना चाहिये।

यूपेटोरियम तथा रस टॉक्स मे भेद—दोनो औषधियो मे शरीर के अगो मे दर्द होता है, परन्तु **रस टॉक्स** मे रोगी हरकत करना पसन्द करता है, आराम से नही पडे रह सकता, करवटे वदलता रहता है, **यूपेटोरियम** मे आराम से पडे रहने मे रोगी परेशान नही होता, उसे **ब्रायोनिया** की तरह आराम पसन्द है। हड्डियो मे 'हडतोड-दर्द' और 'पसीना न आना' **यूपेटोरियम** के विशिष्ट-लक्षण हैं।

(३) **ज्वर मे समय (७ से ९ के भीतर प्रात. काल)**—इसके ज्वर के समय की विशेषता यह है कि ज्वर अक्सर सुवह ७ से ९ वजे के भीतर आता है या एक दिन सवेरे ९ वजे और दूसरे दिन दोपहर १२ वजे।

(४) **ज्वर मे शीतावस्था से पहले प्यास**—ज्वर मे पहली अवस्था शीत की अवस्था होती है। **यूपेटोरियम** के ज्वर मे शीत-अवस्था आने से काफी पहले बेहद प्यास लगनी शुरु हो जाती है, साथ ही हड्डियो मे दर्द होना शुरु हो जाता है। इस प्यास और हड्डियो के दर्द को देखकर रोगी समझ जाता है कि ज्वर आने वाला है। **कैपसिकम, चायना और नेट्रम म्यूर** मे भी शीत-अवस्था आने से पहले प्यास लगनी शुरु हो जाती है, परन्तु इनमे हड्डियो का दर्द नही होता। **नेट्रम म्यूर** का 'सविराम-ज्वर' (Intermittent fever)—मलेरिया—१० या ११ वजे आता है, **चायना** का 'सविराम-ज्वर' ज्वर के हर आक्रमण से अगला आक्रमण २-३ घटे पहले होता है, हर ७ वें या १४ वें दिन होता है, रात को कभी नही होता, **कैपसिकम** का ज्वर ५ से ६ वजे के अन्दर शाम को होता है; **यूपेटोरियम** का ज्वर प्रात ७ से ९ वजे आता है या एक दिन सवेरे ९ वजे और दूसरे दिन १२ वजे दोपहर। ज्वर मे शीतावस्था से पहले प्यास के लक्षण समान होने पर इन तीनो के समय के लक्षणो पर ध्यान देना होगा।

(५) **ज्वर मे शीत का प्रारभ पीठ से होना**—इस औषधि के ज्वर मे शीत-अवस्था का प्रारभ पीठ से होता है, और पीठ से शीत ऊपर मेरु-दड मे चढता अनुभव होता है।

(६) **ज्वर उतर जाने पर औषधि देनी चाहिये ताकि अगला आक्रमण न हो**—ज्वर मे औषधि देने का उचित समय वह है जब ज्वर उतर गया हो। इस समय ज्वर-निवारण के लिये जीवनी-शक्ति की प्रतिक्रिया प्रारभ हो रही होती है, उस समय अगर औषधि दे दी जाय, तो जीवनी-शक्ति को रोग का मुकाबिला करने के लिये वल मिल जाता है। रोग के आक्रमण के समय औषधि देने से जीवनी-शक्ति को उतना वल नही मिल पाता। प्राय देखा जाता है कि रोग के अपने शिखर पर होने के समय अगर दवा दी जाय, तो रोग वढ जाता है, अगर ज्वर के वेग के निकल जाने तक प्रतीक्षा कर ली जाय, तो औषधि का पूरा लाभ मिल जाता है। इस समय औषधि देने का परिणाम यह होता है कि अगला आक्रमण या तो रुक ही जाता है, या हल्का होता है, और अगर आक्रमण जल्दी

आ जाय, तो समझ लेना चाहिये कि इसके बाद ज्वर का कोई आक्रमण नही होगा। प्राय देखा जाता है कि 'सविराम-ज्वर'—मलेरिया—मे जब आक्रमण के बाद दवा दी जाय, तो अगला आक्रमण २४ घटे के बीच ही आ जाता है। इससे चिकित्सक को घबराना नही चाहिये, इन्तिजार करनी चाहिये, और इन्तिजार करने के बाद यह स्पष्ट हो जायगा कि दवा ने ज्वर के चक्र को तोड दिया है।

(७) **यूपेटोरियम से मलेरिया का जड से उन्मूलन न हो तो नेट्रम म्यूर या सीपिया दो**—अगर यूपेटोरियम देने के बाद भी मलेरिया या सविराम-ज्वर का जड से उन्मूलन न हो, तो समझना होगा कि उस रोगी के रोग की जड गहरी है। ऐसी हालत मे **नेट्रम म्यूर** या **सीपिया** रोग के बचे-खुचे अश को दूर कर देंगे क्योकि ये दोनो दवायें **यूपेटोरियम** के बहुत ही निकट की है।

(८) **ज्वर मे यूपेटोरियम तथा नक्स वोमिका की तुलना**—इन दोनो की ज्वर में बहुत समानता है। दोनो ठडी हवा को सहन नही कर सकते, दोनो में हड्डियो में ऐसा दर्द होता है मानो टूट जायेंगी, दोनो गर्म कमरा पसन्द करते है, कपडा ओढने से दोनो सुख मानते है, कपडे का छोर हट जाने से दोनो ठडक महसूस करते है। इन सब बातो मे दोनो मे समानता है। भेद यह है कि **यूपेटोरियम** का रोगी उदास, दुखी होता है, मरने की बात करता है, **नक्स** का रोगी स्वभाव से चिडचिडा होता है, उदासी के स्थान मे चिडचिडापन उसका स्वाभाविक-लक्षण होता है।

(९) **वात-प्रकृति या गठिये का शरीर** (Gouty nature)—यह औषधि स्वभाव से वात-प्रकृति की है, रोगी का गठिये का स्वभाव होता है। गठिये के लिये यह बडी उपयुक्त दवा है। अगुली या कोहनी के जोडो मे गाठें पड जाती है, अगूठे की गाठो मे सूजन हो जाती है। गठिया-ग्रस्त ये वात-प्रकृति के रोगी गाठो मे सर्दी खा जाते हैं, हड्डिया दर्द करने लगती हैं, रोगी कहता है कि उसे ठड सताती है—वह 'शीत-प्रधान' (Chilly) होता है।

गठिया-प्रकृति के कारण सिर-दर्द—गठिया-प्रकृति के रोगियो को सिर की गुद्दी मे भयकर दर्द हुआ करता है। इनके जोडो मे दर्द होता है। इसके सिर-दर्द को 'आरथ्रिटिक हेडएक' कहते हैं—अर्थात्, जोडो मे गठिये की दर्द वाली सिर-दर्द। इस सिर-दर्द के साथ जोडो का दर्द भी होता है। इस प्रकार के दर्द मे यह औषधि लाभ करती है।

जोड़ो के दर्द और सिर-दर्द का पर्याय-क्रम से होना—अथवा, यह दर्द ऐसा रूप भी धारण कर लेता है कि जब जोडो मे दर्द होता है तब सिर-दर्द नही रहता, जब सिर-दर्द होता है तब जोडो का दर्द नही रहता, या सिर-दर्द जितना बढता है जोडो का दर्द उतना ही घटता है, या जोडो का दर्द जितना बढता है सिर-दर्द उतना ही घटता है।

तीसरे या सातवें दिन मतली या उल्टी के साथ सिर-दर्द—अथवा, यह सिर-दर्द ऐसा रूप भी धारण कर लेता है कि हर तीसरे या सातवें दिन उठता है, सिर-दर्द के साथ मतली आती है, पित्त की उल्टी भी आ जाती है, भोजन की गध से जी मितलाने लगता है। इन लक्षणो के साथ गठिया-प्रकृति होनी चाहिये।

(१०) **गठिया कोई रोग नहीं है, शरीर की एक प्रकृति है**—डा० कैन्ट का कहना है कि वे गठिये को रोग-विशेष नही मानते। कई व्यक्तियो के शरीर की प्रकृति गठिये की होती है, उस प्रकृति का अन्त मे परिणाम गठिया हो जाता है। जोडो मे कडे हो जाने की प्रकृति, पेशाब मे गठिया रोग पैदा करने वाले तत्वो का आधिक्य—ये गठिया-प्रकृति के लक्षण हैं, इन लक्षणो को दूर कर दिया जाय, तो गठिया अपने-आप नही होता। इन लक्षणो के लिये **यूपेटोरियम** उत्तम औषधि है।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०,२०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

(भिन्न-भिन्न ज्वरो की मुख्य-मुख्य औषधिया)

ज्वर को मुख्य तौर पर तीन भागो मे बाटा जा सकता है—(१) साधारण-ज्वर (Simple fever) जो सर्दी लग जाने से, धूप मे घूमने से, पानी मे भीग जाने से, ज्यादा खा लेने से, कब्ज से, अधिक परिश्रम करने से, या भय आदि से हो जाता है, (२) सविराम-ज्वर (Intermittent or Malarious fever) जो छूट कर फिर आ जाता है, (३) अविराम-ज्वर (Remittent or Continued or Typhoid type fever) जो टाइफॉयड की तरह चढता-ढलता रहता है, बिल्कुल नही उतरता। अन्य भी अनेक प्रकार के ज्वर हैं, परन्तु हम यहा इन मुख्य-ज्वरो की ही चर्चा करेंगे।

साधारण-ज्वर (Simple Fevers)

कैम्फर—सर्दी की पहली अवस्था मे जब ऐसा प्रतीत हो कि सर्दी लग गई है, बुखार या जुकाम होगा, नाक से पानी बहने लगे, थोडी-सी हरारत हो। पानी मे १ बूद दो-तीन बार लें।

इपिकाक—डा० ज्हार का कथन है कि अगर किसी अन्य औषधि के स्पष्ट लक्षण न हो, तो वे बुखार मे **इपिकाक** ३० की प्रति तीन घंटे मात्रा देते रहे हैं जिस से उन्हें बहुत सफलता मिली है। 'अनियमित-ज्वर' (Irregular fever cases) मे इससे इलाज प्रारभ करना चाहिये।

एकोनाइट—सर्दी से शरीर का ताप बढे, खुश्क गर्मी के साथ प्यास हो, और अगर हरारत **कैम्फर** से दूर न हो। भय से बुखार हो जाने पर यह सर्व-

श्रेष्ठ है। सर्दी से बुखार के अतिरिक्त जुकाम, खासी भी हो जाती है। उसके लिये 'जुकाम', 'इन्फ्लुएन्जा' तथा 'खासी' के लिये जिन मुख्य-मुख्य औषधियो का हमने उल्लेख किया है वहाँ देखें।

बेलाडोना—सर्दी लगने से एकाएक तेज बुखार हो जाना, आखें लाल, जोर का सिर-दर्द, शरीर मे बेहद जलन, बुखार के साथ प्यास न होना।

ग्लोनॉयन—गर्मी या लू लगने से बुखार हो जाना, भयकर सिर-दर्द होना।

फेरम फॉस—विशेष-लक्षण न मिलें तो बायोकैमिक ६x देने से लाभ होता है।

रस टॉक्स—पानी मे भीग जाने से बुखार हो, तो रस टॉक्स अथवा डलकेमारा लाभ करते है। डा० डनहम कहते हैं कि जिस बुखार मे जाडा लगने के कई घटे पहले कष्ट देने वाली सूखी खासी उठे, जब तक जाडा चढे तब तक बनी रहे, उसमे रस टॉक्स से बहुत लाभ होता है।

ऐन्टिम क्रूड या पल्स—ज्यादा या भारी पदार्थ खा लेने पर इन से लाभ होता है। पल्स मे प्यास नही होती।

नक्स-वोमिका—अगर कब्ज के कारण बुखार हो, तो नक्स से लाभ होता है। रोगी शीत-प्रधान होता है, परन्तु शीत और ताप एक-दूसरे के बाद आते-जाते रहते हैं। चायना की तरह बुखार का अगला आक्रमण पहले आक्रमण से २-३ घटे पहले (Anticipatory) होता है।

लुएटिकम—जब किसी बच्चे का बुखार न टूटे और पता चले कि उसकी माता को ३-४ गर्भपात हो चुके हैं, उसकी जरायु की ग्रीवा मे अल्सर है, सख्त प्रदर-स्राव की रोगिन है, लाइको की तरह ४-८ के बीच बुखार बढता है, तब इस नोसोड की १M या १०M की दो-तीन मात्रा देने से लाभ होता है।

सविराम-ज्वर—मलेरिया—आदि (Intermittent Fevers)

सविराम-ज्वर मे शीत, ताप, पसीना, प्यास, समय—इन पाच बातो पर विशेष ध्यान दिया जाता है। चिनिनम सल्फ, चायना, आर्स, इपिकाक, सिड्रन, नक्स—ये छ नये मलेरिया मे, और नैट्रम म्यूर, कार्वो वेज, सल्फर—ये तीन पुराने मलेरिया मे श्रेष्ठ औषधिया हैं।

चिनिनम सल्फ १x या ३x—यह कुनीन का ही नाम है। हनीमैन न सिनकोना की छाल के क्वाथ से अपने ऊपर 'परीक्षा-सिद्धि' (Proving) की थी। उनके स्वस्थ-शरीर पर इसके सेवन से मलेरिया के-से लक्षण प्रकट हो गये थे इसी से होम्योपैथी का आविष्कार हुआ। क्योकि स्वस्थ-शरीर पर कुनीन से मलेरिया के-से लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, इसीलिये कुनीन मलेरिया-ज्वर को दूर करती है। इस दृष्टि से ऐलोपैथी मे मलेरिया के लिये कुनीन का प्रयोग होम्योपैथिक-प्रयोग ही समझना चाहिये। होम्योपैथी मे भी मलेरिया के लिये

यही मुख्य औषधि है। डा० फैरिंगटन 'लेस्सर राइटिंग्स विद थेराप्यूटिक हिंट्स' मे लिखते हैं कि ऐलोपैथी मे मलेरिया के लिये कुनीन का प्रयोग होम्योपैथी के 'सम: सम शमयति' के सिद्धान्त को पुष्ट करता है। होम्योपैथ को मलेरिया के लिये शक्तिकृत कुनीन—**चिनिनम सल्फ**—का प्रयोग करते हुए यह नही सोचना चाहिये कि क्योंकि ऐलोपैथ इसका प्रयोग करते है इसलिये होम्योपैथ क्यो इसका प्रयोग करे। मलेरिया मे जब शीत, ताप, पसीना—ये तीनो अवस्थाए स्पष्ट दीख पड़ें, तब इसके होम्योपैथिक-प्रयोग से लाभ होता है। भेद इतना ही है कि मलेरिया मे ऐलोपैथ इसका भारी मात्रा मे प्रयोग करते हैं, होम्योपैथ सूक्ष्म तथा शक्तिकृत मात्रा मे। डा० फैरिंगटन के अनुसार होम्योपैथी मे भी मलेरिया के लक्षणो मे यह मुख्य-औषधि है।

चायना—इसमे भी जाडा, ताप, पसीना तीनो अवस्थाए स्पष्ट होती हैं। जाडा चढने से पहले प्यास, जाडा और ताप चढ जाने पर प्यास न रहना, पसीने की हालत मे तेज़ प्यास, कमज़ोर बना देने वाला पसीना। **चायना** का बुखार रात को नही आता। बुखार का अगला आक्रमण **नक्स** की तरह पहले आक्रमण से २-३ घटे पहले आता है। सातवें, चौदहवे दिन बुखार आ सकता है।

आर्सेनिक—जाडा या ऊष्णावस्था पूरी तरह से विकसित न होना, या कोई एक अवस्था का ज्यादा होना, या किसी एक अवस्था की कमी होना, पसीना बिल्कुल न होना, शीतावस्था मे प्यास न होना, तापावस्था मे थोडा-थोडा, घूट-घूट पीना, पसीने की अवस्था मे अत्यन्त प्यास, रात के १२ बजे बुखार का बढ जाना—ये इसके ज्वर के मुख्य लक्षण हैं।

इपिकाक—बुखार के जब विशेष-लक्षण प्रकट न हो, तब इसे देना चाहिये। जर्मनी के प्रसिद्ध डाक्टर ज्हार मलेरिया-ज्वर मे सब से पहले इसी को दिया करते थे। जाडा लगने से पहले या जाडे और ताप की अवस्था मे मतली इसका मुख्य-लक्षण है।

सिड्रन—अगर घडी की सूई के अनुसार ठीक समय पर बुखार चढे।

नेट्रम म्यूर २०० शक्ति—१०-११ बजे बुखार आये, होठो पर पानी के छाले पडें। यह पुराने मलेरिया-ज्वर की प्रसिद्ध दवा है। ४ से ८ बजे बुखार बढे तो लाइको उत्तम है। ज्यादा कुनीन से बुखार दवा देने पर उसके मूल-नाश न होने पर **नेट्रम म्यूर** लाभप्रद है।

कार्बो वेज—यह भी पुराने मलेरिया को दूर करता है। शीतावस्था मे रोगी का शरीर बर्फ जैसा ठडा हो जाता है।

सलफर—अन्य किसी दवा से लाभ न हो, तो यह नये तथा पुराने मलेरिया मे लाभ करता है।

नक्स वोमिका—जाडा, ताप पसीना—इन तीनो अवस्थाओ मे रोगी कपडा

ओढे पडा रहता है। शरीर का कोई-सा भी हिस्सा उघाडने से सर्दी मे काप उठता है। कपडा ओढे रखना भी नही चाहता परन्तु ओढे वगैर रहा भी नही जाता। शरीर आग की तरह जल रहा होता है परन्तु वह कपडा हटा नही सकता, हटाते ही ठिठरन होने लगती है।

अविराम-ज्वर—टाइफॉयड—आदि (Remittent Fevers)

पाइरोजेन—डा० यिंगलिंग ने डा० स्वॉन का उद्धरण देते हुए लिखा है कि टाइफ़ॉयड मे क्लोरोमाइसिटिन से भी लाभ न होने पर इससे लाभ होता है।

बैप्टीशिया—किसी-किसी का मत है कि रोग के प्रारम्भ से अन्त तक इसका निम्न-शक्ति मे प्रयोग करने से रोगी ठीक हो जाता है, किसी दूसरी दवा की जरूरत नही पडती।

ब्रायोनिया—जब टाइफॉयड मे कब्ज प्रधान हो, तेज प्यास हो, रोगी पानी बहुत पीता हो, चुपचाप पड़े रहना चाहता हो, तब यह उपयोगी है।

रस टॉक्स—अगर टाइफॉयड का प्रारंभ पतले दस्तो से हुआ हो, रोगी बेचैन हो, इधर-उधर करवटें बदलने से उसे चैन पडता हो, तब यह लाभप्रद है।

टाइफॉयडीनम २००—रोग के प्रारंभ होने का सन्देह होते ही इसकी २०० शक्ति की एक-दो मात्रा देने से अन्त तक रोग नही बिगडने पाता।

युफ्रेशिया–आईब्राइट, (EUPHRASIA—EYEBRIGHT)

इस औषधि का नाम 'आई-ब्राइट' भी है, जिसका अर्थ है चमकीली आख। यह नाम महत्वपूर्ण है क्योकि इसकी मुख्य-क्रिया आखो पर ही होती है। इस औषधि के कार्य-क्षेत्र निम्न है

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) आख के रोग मे—आंख से दाह करनेवाला आंसू का स्राव और नाक से दाह न करने वाला स्राव बहता है (सीपा से उल्टा)

(२) नाक के रोग जुकाम आदि मे—नाक से दाह न करनेवाले स्राव के साथ आख से दाह करनेवाला स्राव

(३) खासी दिन को तंग करती है, रात को नहीं

(४) जुकाम तथा खांसी मे युफ्रेशिया, आर्सेनिक, सीपा तथा मर्क की तुलना

(५) मासिक-धर्म एक घंटे तक ही रहता है

(६) छोटी चेचक (Measles) मे उपयोगी है

(७) मोतियाबिन्द (Cataract) मे उपयोगी है

(१) आखो के रोग मे—आख से दाह करने वाला आसू का स्राव और नाक से दाह न करनेवाला स्राव बहता है—इस औषधि का मुख्य-प्रभाव

आखो पर है। आखो से वहुत अधिक मात्रा मे दाह करने वाला, पनीला स्राव वहता है। इसके साथ जुकाम हो भी सकता है, नही भी हो सकता। अगर इसके साथ जुकाम रहता है, तो नाक से जो स्राव वहता है वह दाह करने वाला नही होता। आख मे काटने वाला ऐसा दर्द होता है, जो सिर तक पहुचे, आखो मे ऐसा अनुभव मानो रेत का कण हो या आख मे धूल जा पडी हो। आख की खुश्की, जलन, कटने का-सा अनुभव। आख की खुजली जिसमे आख को जोर से मलने को जी चाहे और मलते-मलते वहुत अधिक मात्रा मे पानी निकले। आख का सूजना, आख की पुनली का प्रदाह, आखो का जाला, आख पर चोट लगने से कोर्निया का अपारदर्शक हो जाना, आख आ जाना, लाल हो जाना, कुकरे पड जाना आदि आख के हर रोग मे, जिसमे आख से दाह करनेवाले आसू निकलें, यह उपयोगी है।

(२) **नाक के रोग मे—नाक से दाह न करने वाले स्राव के साथ आख से दाह करने वाला स्राव बहता है**—जैसे यह औषधि आँख के रोग के लिये उपयोगी है, वैसे जुकाम के लिये भी उपयोगी है। छीके आती हैं, नाक से बहुत अधिक मात्रा मे पानी बहता है। इस जुकाम मे नाक से दाह न करनेवाला और आख से दाह करनेवाला स्राव वहता है। यह जुकाम रात को विस्तर मे लेटने के वाद रोगी को वहुत कष्ट देता है। कुछ दिन रहने के वाद यह जुकाम आगे श्वास-नालिका की तरफ वढ जाता है, और श्वास-नालिका के ऊपरी भाग से खासी आने लगती है।

(३) **खासी दिन को तग करती है, रात को नहीं**—इसकी खासी की यह विशेषता है कि यह दिन को ही आती है, रात को नही। दिन को कभी सूखी, परन्तु प्राय तर होती है। खासी प्राय रात को अधिक आया करती है, परन्तु इसकी खासी रात को न आकर दिन को आती है, इसलिये यह लक्षण 'अद्भुत-लक्षण' (Peculıar symptom) है।

(४) **जुकाम तथा खांसी मे युफ्रेशिया, आर्सेनिक, सीपा तथा मर्क की तुलना**—जवतक होम्योपैथी मे **सीपा** (प्याज़) का पता नही चला था, तव-तक आख तथा नाक दोनो से पानी वहने के लक्षण मे **युफ्रेशिया** ही दिया जाता था, परन्तु दोनो औषधियो की तुलना करते हुए यह पता चला कि **युफ्रेशिया** मे आख से जलनवाला और नाक से विना-जलनवाला पानी वहता है। **सीपा** मे इससे उल्टा, अर्थात् नाक मे जलनवाला और आख से विना-जलनवाला पानी वहता है। **युफ्रेशिया** का प्रभाव आख पर है, **सीपा** का प्रभाव नाक पर है। आर्सेनिक मे नाक से वहनेवाला, जलनवाला पानी निकले, तो सेक से आराम मिलता है, मर्क सॉल मे आख से वहुत कीचड आता है, परन्तु **युफ्रेशिया** का कीचड **मर्क** से वहुत गाढा होता है। होता दोनो मे गाढा ही है।

(५) मासिक-धर्म एक घंटे तक ही रहता है—इस औषधि का एक विलक्षण-लक्षण यह है कि मासिक-धर्म केवल एक घंटे तक रहता है, या देर मे होता है, थोड़ा होता है, थोड़ी ही देर रहता है, या केवल एक दिन रहकर समाप्त हो जाता है।

(६) छोटी-चेचक (Measles)—छोटी-चेचक मे पल्सेटिला के समान यह गुणकारी है। यद्यपि छोटी चेचक मे पल्सेटिला का ज्यादा उपयोग होता है, तो भी इस रोग मे युफ्रेशिया भी आश्चर्यजनक गुण करता है।

(७) मोतियाबिन्द (Cataract)—डा० डनहम का कथन है कि युफ्रेशिया से मोतियाबिन्द के कई रोगी ठीक हुए हैं।

(८) शक्ति—मूल अर्क का बाहरी प्रयोग, भीतर के लिये ३, ६, ३०, २००।

फेरम मेटैलिकम—लोहा, (FERRUM MET)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) रक्त की कमी के साथ झूठी रक्तिमा (Anemia with Plethora) (२) शरीर के जीवनप्रद-रसों की हानि से रोग होना (३) गर्भावस्था मे बिना मतली के भोजन को जैसे-का-तैसा वमन कर देना (४) कभी अत्यन्त भूख, कभी भूख न होना (५) बच्चो मे मूत्र का टपकते रहना (६) बहते पानी को देखकर चक्कर आना (७) रजोधर्म के शुरु होने पर बीच मे २-३ दिन छोडकर रुधिर चलना (८) शीत-प्रधानता तथा विश्राम से रोग-वृद्धि की प्रकृति	लक्षणो मे कमी (Better) *धीरे-धीरे घूमने से आराम *गर्मी के दिनों मे आराम लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *विश्राम से रोग-वृद्धि *नीचे की ओर जाने से वृद्धि *तेज हरकत से रोग-वृद्धि *मध्य-रात्रि मे रोग-वृद्धि *बहते पानी को देखने से वृद्धि

(१) रक्त की कमी के साथ झूठी रक्तिमा (Anemia with Plethora)—रक्त की कमी के कारण रोगी का चेहरा फीका या पीला पड जाता है। चेहरे के इस प्रकार फीके या पीला पड जाने के दो कारण हो सकते हैं या तो रोगी पौष्टिक-पदार्थों का शरीर मे समीकरण न कर सकता हो, भोजन उसे लगता न हो, या रक्त-स्राव के कारण अथवा शुद्ध हवा, प्रकाश तथा पौष्टिक-

भोजन न मिलने के कारण उसके रुधिर मे कोई कमी आ गई हो। सिर्फ इन दो लक्षणो के आधार पर **फ़ेरम** देना होम्योपैथी के सिद्धान्त के विरुद्ध है। अगर होम्योपैथी के सिद्धान्त के आधार पर इस दवा को देना हो, तो इसे तब देना चाहियें जब रक्त की कमी के साथ रक्त का भिन्न-भिन्न अगो मे वितरण ठीक न हो। उदाहरणार्थ, रोगी के गाल सुर्ख हो, गालो की लाली उसके उत्तम स्वास्थ्य का प्रतीक है, परन्तु इस नकली लाली के बावजूद उसके होठो के आस-पास फीकापन और पीलापन हो, अथवा उसका पीला और कान्तिहीन चेहरा ज़रा-सी उत्तेजना मे गुलाबी हो उठे। साधारणतौर पर चेहरा फीका रहता हो, परन्तु कोई मित्र आ जाय, गर्म कमरे मे प्रवेश होने पर, किसी से दुत्कारे जाने पर, शारीरिक या मानसिक परिस्थिति मे ज़रा-से भी परिवर्तन आने पर उस फीके चेहरे पर क्षण भर के लिये लाली दौड जाय। वह कमज़ोर होता है, क्षीण-काय, उसका हृदय धडकता है, सास चढ जाता है, ज़रा-से परिश्रम से हापने लगता है, किसी काम को कर नही पाता, आराम से पडा रहना चाहता है, परन्तु क्योकि गालो पर कमी उक्त परिस्थितियो मे लाली दौड जाती है इसलिये उसे कोई कमज़ोर कहने को तैयार नही होता। यह झूठी लाली है जिसके लिये **फेरम** उपयुक्त औषधि है। ऐलोपैथ तो इस कमज़ोरी को देखकर ही फेरम दे देते हैं, होम्योपैथी में ऐसा नही है, इसमे उक्त लक्षणो पर ही यह दवा दी जाती है।

नव-यौवन के समय लडकियो की रक्तहीनता—इस औषधि का उन लडकियो पर आश्चर्यजनक प्रभाव होता है जिनका यौवन आ जाने पर भी मासिक रज स्राव नही हो पाता, परन्तु इसके स्थान मे एक तरह की खासी होने लगती है और चेहरे पर पीलापन दिखलाई देता है। नवयौवन-काल मे यह रक्तहीनता, पीलापन और खासी इतनी आम तौर पर पाई जाती है कि प्रत्येक माता इससे परिचित होती है, और इस बात से डरती रहती है कि कही उसकी लडकी को यौवन-काल में यह रोग न सताने लगे। चिकित्सको को ऐसी रोगिणी लडकियो का इलाज करने का आम मौका पडता है। कभी-कभी यौवन के प्रथम मासिक-धर्म मे बहुत परिमाण मे रज स्राव होता है, उसके बाद बेहद कमज़ोरी हो जाती है, और यह क्रम कई साल तक ऐसें ही चलता है, तब जाकर नियमपूर्वक ठीक-से मासिक होने लगता है। ऐसी हालत मे ऐलोपैथ तो रोगिणी को बाकायदा लोह के कुछ-न-कुछ मिक्सचर पिलाते रहते हैं, वैद्य लोग लौह-भस्म देते हैं, परन्तु इनको जितना लौह दिया जाता है उतनी ही उनकी तबीयत बिगडती है। ऐसी हालत मे शक्तिकृत **फेरम मेटैलिकम** लाभ देता है, परन्तु यह तभी लाभ देता है जब इसका मुख्य लक्षण मौजूद हो। इसका मुख्य लक्षण है 'अत्यन्त निर्बलता के साथ झूठी रक्तिमा का चेहरा'—(Flushed face with general weakness)—अर्थात्, कमज़ोरी के साथ चेहरे पर झूठी लाली।

(२) **शरीर के जीवनप्रद-रसो की हानि से रोग**—इस औषधि का एक मुख्य-लक्षण यह है कि जब शरीर से जीवनप्रद-रस निकल जाते हैं, देर तक रुधिर-स्राव हो जाता है, तब शरीर इतना क्षीण हो जाता है कि दुर्बलता हटाये नहीं हटती, शरीर स्वस्थ नही हो पाता, खाया-पीया शरीर को नही लगता, उसका शरीर मे सात्मीकरण नही होता। देखने को तो रोगी स्वस्थ लगता है, गालो मे गुलाब की-सी लाली भी दिखाई देती है, परन्तु अन्दर से वह अपने को खोखला अनुभव करता है। जीवनप्रद-रसो के, वीर्य, रुधिर आदि के अत्यधिक निकल जाने से अगर झूठी रक्तिमा के साथ दुर्बलता अनुभव होने लगे, तो **फेरम मेटैलिकम** से लाभ होगा। जीवनप्रद-रसो के निकल जाने से निर्बलता का लक्षण **चायना** मे भी पाया जाता है।

(३) **गर्भावस्था मे बिना मतली के भोजन को जैसे-का-तैसा वमन कर देना**—इस औषधि मे कय तो होती है, परन्तु कय से पहले मतली नही होती। यह 'अद्भुत-लक्षण' है। साधारणतौर पर कय से पहले जी मतलाता है, परन्तु इसमे भोजन खाने पर बिना-जी-मतलाये सारा भोजन जैसे-का-तैसा निकल जाता है। रोगी भर पेट खा लेता है, और बाहर जा कर उल्टी कर देता है, और फिर खाने के लिये आ बैठता है। ऐसा लगता है जैसे पेट मे पाचन-रस बिल्कुल नही है, पेट चमडे की एक थैली है, उसमे भरा और उलट दिया। यह अवस्था गर्भा-वस्था मे प्राय देखी जाती है, परन्तु गर्भावस्था के बिना भी अगर कही यह लक्षण पाया जाय, तो इस औषधि की तरफ ध्यान जाना चाहिये। इसमे मतली नही होती, कय होने से पहले चेहरे पर रक्तिमा झलकने लगती है। जिस आसानी से रोगी खाता है, उसी आसानी से खाये हुए को उलट भी देता है।

(४) **कभी अत्यन्त भूख और कभी भूख का न लगना**—क्योकि रोगी के रक्त-वितरण मे असन्तुलन (Imbalance in the circulation of blood) हो जाता है, इसलिये कही रक्त का 'अतिसचार' और कही रक्त का 'अभाव' पाया जाता है। इसका पेट पर जब प्रभाव पडता है तब रोगी कभी भूख से व्याकुल हो जाता है, साधारण से दुगुना खा जाता है, कभी उसे भूख ही बिल्कुल नहीं लगती। जब भूख लगती है तब दुगुना खा जाने पर भी भूख नही मिटती, जब पेट शिथिल हो जाता है तब कुछ भी खाया नही जाता। पेट सदा बिगडा रहता है। यह हम पहले ही कह चुके हैं कि मतली हुए बिना पेट मे से सब निकल जाना इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण (Peculiar symptom) है।

(५) **बच्चो मे मूत्र का टपकते रहना**—रुधिर के असमान-वितरण का मूत्राशय पर भी प्रभाव पडता है। बच्चा जबतक खेलता रहता है उसके मूत्रा-शय मे से मूत्र बूद-बूद टपकता रहता है और उसका कच्छा भीग जाता है। जब

वह आराम से लेट जाता है तव हालत कुछ सुधरती है। उसका मूत्राशय इतना ढीला और थका रहता है कि मूत्र को रोक नहीं सकता, ज्यों ही वह आधा भरता है कि मूत्र निकलने लगता है। रुधिर के असमान-वितरण के कारण प्रत्येक अग मे शिथिलता का होना उस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है।

(६) **बहते पानी को देखकर चक्कर आ जाना**—बहते पानी को देखकर रोगी को अपने को सभालना पडता है, नही तो चक्कर आ जाता है। अगर रोगी पानी के पुल पर से गुजर रहा है, तो नीचे नही देख सकता। **लाइको** मे भी यह लक्षण है। ऊचाई से नीचे उतरते समय भी व्यक्ति को चक्कर आ जाता है। यह लक्षण **बोरैक्स** तथा **सैनीक्यूला** मे भी पाया जाता है।

(७) **रजोधर्म के शुरु होने पर बीच मे २-३ दिन छोड कर रुधिर चलना**—रुधिर के असमान-वितरण का रजोधर्म पर प्रभाव पडता है। समय से बहुत पहले, बहुत अधिक और बहुत देर तक रुधिर जारी रहता है, परन्तु रुधिर मे लाली नही होती, पीलिमा, पनीलापन होता है, रोगिणी को इस समय बेहद कमजोरी होती है, और रजोधर्म के शुरु होने पर बीच-बीच मे २-३ दिन छोड कर रुधिर चलता है। इस समय रोगिणी के मुख पर झूठी लालिमा दिखाई देती है।

(८) **शीत-प्रधानता तथा विश्राम से रोग-वृद्धि की प्रकृति**—इस औषधि के विषय मे इसकी प्रकृति पर विशेष ध्यान देना चाहिये। रोगी 'शीत-प्रधान' (Chilly) होता है, गर्मी से उसे राहत मिलती है। शीत-प्रधान होते हुए भी दर्द मे उसे सर्दी ही पसन्द होती है। उदाहरणार्थ, गर्दन, चेहरे, दात आदि के दर्द मे उसे ठड से आराम मिलता है। **कॉफिया** के विषय मे भी हम लिख आये है कि वह भी शीत-प्रधान है, परन्तु उसमे भी दात के दर्द मे मुह मे वर्फ रखने मे आराम मिलता है। शीत-प्रधान होने के साथ-साथ रोगी की तकलीफे विश्राम से वढ जाती हैं। धीरे-धीरे हरकत से, चलने-फिरने से उसे आराम मिलता है। परन्तु यह हरकत धीमी होनी चाहिये, तेज नही, तेज हरकत से उसकी तकलीफ वढ जाती है। धीमी हरकत से आराम का लक्षण अगर हृदय की धडकन मे, दमे मे, सास चढने मे पाया जाय, तो यह एक 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptom) है, और इन रोगो मे इस लक्षण के पाये जाने पर धडकन और दमा भी फेरम से ठीक हो जाता है।

(९) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

१ **दमे या दिल की धडकन मे जब हरकत से आराम मिले**—डा० नैश लिखते हैं कि अगर दमे, हृदय की धडकन या अन्य किसी रोग मे जिसमे साधारण तौर पर हरकत से रोग की वृद्धि होती हो, अगर रोगी को हरकत से आराम मिले, तो यह अद्भुत-लक्षण है, और इसमे **फेरम** से लाभ होगा।

II. **दर्द मे जब हरकत से आराम मिले**—डा० नैश एक स्त्री का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि उसका चेहरा पीला था, बाज़ू मे दर्द था, उसे कई दवायें दी गई , आराम नही हुआ, अन्त मे इस लक्षण पर कि उमे दर्द के समय रात को विस्तर छोडकर कमरे मे आगे-पीछे फिरने से ही आराम आता था, **फेरम मेट** की १००० शक्ति की एक मात्रा दी गई जिससे वह बिल्कुल ठीक हो गई। डा० नैश कहते हैं कि कई लोगो का विचार है कि धातुओ की शक्तिकृत मात्रा से लाभ नही होता, परन्तु उनका अनुभव है कि **फेरम** (लोहा), **स्टैनम** (टीन), **जिंकम** (जिंक) तथा **प्लेटिनम** की उच्च-शक्ति की मात्रा से उन्होंने अनेक रोगियो को ठीक किया है इसलिये यह समझना कि धातुओ की उच्च-शक्ति का रोग को दूर करने मे कोई प्रभाव नही है, भ्रममात्र हैं। ऐसे रोग मे जब हरकत से आराम की आशा तो न की जा सके परन्तु हरकत से आराम मिले, या जब हरकत से आराम होना ही मुख्य-लक्षण हो, तब **फेरम** का प्रयोग लाभप्रद है।

III **ज्वर मे शीतावस्था मे चेहरे पर रक्तिमा**—डा० नैश का कथन है कि ऐसी ओषधिया बहुत थोडी हैं जिनमे ज्वर की शीतावस्था मे चेहरे पर रक्तिमा आ जाये। स्वभावत शीत लगने पर चेहरा पीला पड जाना चाहिये। **फेरम** का अद्भुत-लक्षण यह है कि शीतावस्था मे रोगी के चेहरे पर झूठी लालिमा आ जाती है।

IV **उत्तर की तरफ सिर रख कर सोने से लाभ**—डा० टायलर लिखती हैं कि जिस रोगी को नीद की शिकायत हो वह अगर उत्तर की तरफ सिर करके सोयेगा तो उसे अच्छी नीद आयेगी। इसके कारण का विवेचन करते हुए उनका कहना है कि शरीर मे लोह की प्रभूत मात्रा रहती है। पृथ्वी मे भी उत्तर-दक्षिण दिशा मे भूगर्भ-चुम्बक है। शरीर को भूगर्भ-चुम्बक की दिशा मे रख कर सोने से शरीर मे सचार कर रहे रक्त के लोह के 'अणुओ' (molecules) पर भूगर्भ-चुम्बक का अनुकूल प्रभाव पडता है, वे एक ही दिशा मे बहते है जिससे मस्तिष्क पर शान्तिदायक प्रभाव पडता है। वैसे, प्रचलित विचार भी यह है कि उत्तर की तरफ सिर करके सोना चाहिये। कह नही सकते कि यह कहा तक ठीक है, अनुभव करके देखने की बात है।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—२ x से ६x, ३०, २०० (कमज़ोरी की हालत मे निम्न-शक्ति देनी चाहिये। औषधि सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

फेरम फ़ॉसफ़ोरिकम (FERRUM PHOS.)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) शुस्लर के बायोकैमिस्ट्री के सिद्धात के अनुसार जुकाम, सूजन, ज्वर, दस्त आदि की प्रथमावस्था मे प्रयोग	लक्षणो मे कमी (Better) *धीरे-धीरे हरकत से आराम *खून निकलने से आराम
(२) होम्योपैथिक प्रयोग—आख मे रेत के कण की अनुभूति मे इसका प्रयोग	
(३) होम्योपैथिक प्रयोग—कान मे दर्द, शोथ, पस आदि मे इसका प्रयोग	
(४) होम्योपैथिक प्रयोग—गला पड़ना, सूजना आदि मे इसका प्रयोग	
(५) होम्योपैथिक प्रयोग–छाती, मूत्राशय, गठिया, रक्तहीनता, ज्वर मे प्रयोग	
(६) निम्न-शक्ति से उन्निद्रता, उच्च-शक्ति से निद्रा आती है	
(७) फेरम, एकोनाइट, बेलाडोना, जेलसीमियम तथा ब्रायोनिया की तुलना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *रात (४ से ६ सवेरे) वृद्धि *ठडी हवा से रोग बढ़ना *शोर से रोग मे वृद्धि

[शुस्लर का बायोकैमिस्ट्री का सिद्धान्त]

(१) १८७५ मे जर्मन होम्योपैथ डा० शुस्लर ने 'बायोकैमिस्ट्री' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनका कहना था कि जैसे किसी इमारत को बनाने के लिये मसाले की ज़रूरत होती है, उसी प्रकार शरीर-रूपी इमारत को बनाने के लिये प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट्स, चर्बी, पानी आदि की जरूरत है। शरीर-रूपी इमारत के ये मानो मसाले हैं। परन्तु, मसाला स्वय कुछ नही कर सकता, उसे इमारत मे ठीक जगह पर लगाने के लिये राज-मजदूर की जरूरत होती है। शरीर मे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, चर्बी, पानी आदि को अपने-अपने स्थान पर लगाने के लिये जो राज-मजदूर हैं, वे १२ 'लवण' (Twelve tissue salts) हैं, जो मसाले को अपने स्थान मे पहुँचाते रहते हैं। अगर कोई राज इमारत मे काम करना बन्द कर दे, तो उसकी वजह से इमारत मे जो मसाला लगना था वह बन्द हो जायगा, इसी तरह अगर इन बारहो मे से किसी एक 'लवण' की शरीर

में कमी हो जाय, तो उसकी वजह से शरीर जिस खराक को जज्ब करता था उसे भी लेना बन्द कर देगा, और शरीर मे रोग उत्पन्न हो जायगा। ये १२ 'लवण'



डा० शुस्लर
(१८२१-१८९८)

जिनकी वजह से शरीर प्रोटीन आदि मसालो को आत्मसात् करता है, निम्न हैं

पाच फ़ॉसफेट्स—कैलकेरिया फॉस, फेरम फॉस, कैलि फॉस, मैग्नेशिया फ़ॉस और नैट्रम फॉस।

तीन सलफेट्स—कैलकेरिया सल्फ, कैलि सल्फ और नैट्रम सल्फ।

दो म्यूरेट्स—कैलि म्यूर, नैट्रम म्यूर।

एक फ्लोराइड—कैलकेरिया फ्लोर।

एक सिलिका—साइलीशिया।

शुस्लर का यह भी कहना था कि उक्त औषधिया स्वाभाविक तौर से जिस रूप मे शरीर में हैं, वह वही रूप है जो ३x, ६x मे पहुच कर इन औषधियो का रूप हो जाता है, इसलिये इसी शक्ति मे इन औषधियो को बायोकैमिस्ट्री में दिया जाता है। इस दिशा मे सर्व-प्रथम हनीमैन ने परीक्षण किये थे और कई लवणो के विषय मे अपने अनुभव चिकित्सा-शास्त्र को दिये थे, परन्तु होम्योपैथी मे शुस्लर के इस सिद्धान्त को स्वीकार नही किया जाता कि इन लवणो की कमी से रोग उत्पन्न होता है। शुस्लर का कहना तो यह था कि इन मे से किसी एक लवण की कमी से जो रोग उत्पन्न हो, उसे दूर करने के लिये शरीर में उस

लवण के देने से रोग दूर हो जायगा, परन्तु होम्योपैथी मे तो 'सम समं शमयति' के सिद्धान्त को हो अपनाया जाता है, और इसी आधार पर दवा दी जाती है। होम्योपैथी मे नैट्रम म्यूर, साइलीशिया आदि की स्वस्थ-शरीर पर 'परीक्षा' (Proving) करके इनके लक्षण पता लगाये जा चुके हैं और उन लक्षणो के आधार पर होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार दवा दी जाती है । शक्ति के विषय मे भी अनुभव ने सिद्ध किया है कि इन औषधियो का प्रभाव भी उच्च-शक्ति मे अत्युत्तम होता है । डा० हेरिंग अपने 'गाइडिंग सिम्पटम्स' मे लिखते हैं कि **फेरम फॉस** २०० शक्ति देने से बडे अच्छे परिणाम निकलते देखे गये हैं। डा० टॉयलर लिखती हैं कि 'कृच्छ्र-रज -स्राव' (Dysmenorrhea) मे जब रोगिणी कष्ट से छटपटा रही हो, तब **मैग्नेशिया फॉस** C M. देने से आश्चर्यजनक लाभ होता है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि शुस्लर के अनुयायी **फेरम फॉस** को शोथ की प्रथमावस्था मे प्रयोग करते हैं, वह भी निम्न-शक्ति मे, परन्तु शोथ की हर अवस्था मे, पुराने शोथ मे भी उच्च-शक्ति का **फेरम फॉस** बहुत अच्छा काम करता है । प्राय होम्योपैथ बायोकैमिक औषधियो का उच्च-शक्ति मे प्रयोग अधिक हितकर पाते हैं यद्यपि इनका साधारणतया बायोकैमिक प्रयोग ३X, ६X, १२X मे होता है।

1 **जुकाम तथा सूजन की प्रथमावस्था मे फेरम फॉस का प्रयोग**—शुस्लर का मत है कि शरीर मे 'फेरम'—लौह—का काम 'ऑक्सीजन' को शरीर मे खीच लेने का है । हम जो साँस लेते हैं उससे शुद्ध हवा फेफडो मे प्रविष्ट हो जाती है। इस हवा की ऑक्सीजन हमारे रुधिर मे रहनेवाला 'लोहा' ले लेता है । शरीर के 'कोष्ठको' (Cells) मे जो ऑक्सीजन होती है वह लोहे ने चूसी होती है, रुधिर मे लोहा न हो तो ऑक्सीजन भी कम हो जाय । परन्तु इस ऑक्सीजन को एक 'कोष्ठक' (Cell) से दूसरे 'कोष्ठक' तक ले जाने का काम '**कैलि सल्फ**' का है । 'कोष्ठको' के रक्तकणो का **फेरम फॉस** तो शुद्ध हवा से ऑक्सीजन को खीच लेता है, परन्तु रुधिर-सचार के लिये इतना काफ़ी नही है । एक कोष्ठक का लाभ दूसरे कोष्ठक मे जाने से ही तो पूर्ण-लाभ होगा । इसी काम को '**कैलि सल्फ**' करता है। जब रुधिर मे **फ़ेरम फ़ॉस** की कमी होती है तब शरीर मे ऑक्सीजन कम चूसी जाती है। ऑक्सीजन की कमी से शरीर की रुधिर-प्रणालिकाए ढीली पड जाती है क्योकि उनमे शक्ति कम हो जाती है। इन रुधिर-प्रणालिकाओ के ढीला पड जाने से, जहाँ-जहाँ ये प्रणालिकाएँ ढीली होगी, वहाँ रुधिर इकट्ठा होने लगेगा । रुधिर के एक जगह पर इसी इकट्ठे हो जाने को 'सूजन की प्रथमावस्था' (First stage of inflammation) कहते हैं। **फ़ेरम फॉस** का काम बाहर की हवा मे से शरीर के रक्त-कणो मे ऑक्सीजन को खीच लाकर इस सूजन को दूर कर देना है । इस सूजन से ही जुकाम होता है ।

जव नासिका की झिल्ली मे **फेरम फॉस** की कमी से ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, तब वहा की रक्त-प्रणालिकाए ढीली पड जाती हैं, वहा रक्त-सचय हो जाता है, उसमे से पानी सरने लगता है, इसी को जुकाम कहते हैं, यह नासिका की झिल्ली की शोथ की प्रथमावस्था है जिसमे **फेरम फॉस** उपयोगी है। शरीर मे जब फोड़े आदि के रूप मे सूजन होती है, तब भी यही प्रक्रिया होती है। रक्त के एक स्थान पर सचय को अग्रेजी मे 'हाइपेरीमिया' कहते हैं, इस रक्त-सचय से ही शोथ या सूजन होती है। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि फोडे आदि के रूप मे सूजन के कई रूप हैं। पहले सूजन होती है, फिर उसके वाद सूजन आगे बढती है, तो उसमे से 'सीरम' रिसने लगता है जो एक तरल पदार्थ है। इनमे से पहली हालत मे, अर्थात् सूजन की अवस्था मे '**फेरम फॉस**', और दूसरी हालत मे जव सफेद-सफेद तरल पदार्थ रिसने लगता है, तव '**कॅलि म्यूर**' दिया जाता है। जुकाम मे भी प्रथमावस्था मे **फेरम फॉस**, और नाक से सफेद द्रव के निकलने पर **कॅलि म्यूर** की अवस्था आजाती है। इस दूसरी हालत के वाद तीसरी अवस्था आती है जब जख्म का मवाद पीला पड जाता है, या जुकाम मे पीला स्राव निकलने लगता है। दूसरी अवस्था मे स्राव पनीला होता है, तीसरी अवस्था मे यह गाढा होता है। यह तीसरी अवस्था **कॅल्केरिया सल्फ** की है। इसके वाद भी अगर जख्म वढता जाय, तव **कॅलि फॉस** देने का समय आ जाता है।

ii **ज्वर की प्रथमावस्था मे फ़ेरम फॉस का प्रयोग**—जो वात जुकाम तथा सूजन के विषय मे कही गई है उसे ध्यान मे रखते हुए यह स्पष्ट हो जायगा कि ज्वर की प्रथम-अवस्था भी इसीलिये उत्पन्न होती है क्योकि **फेरम फॉस** की कमी के कारण मस्तिष्क के किसी केन्द्र मे शोथ हो जाती है, इसीलिये ज्वर की भी प्रथम-अवस्था मे **फेरम फॉस** ही दिया जाता है। जब ज्वर मे ऑक्सीजन का सपूर्ण शरीर में सचार नही हो पाता तो वुखार लम्बा हो जाता है। जैसा हम पहले लिख चुके हैं, **कॅलि सल्फ** का काम ऑक्सीजन को एक 'कोष्ठक' से दूसरे 'कोष्ठक' मे पहुचा देना है ताकि ऑक्सीजन का सपूर्ण-शरीर मे सचार हो सके। इसीलिये ज्वर की प्रथम-अवस्था मे तो **फेरम फॉस** दिया जाता है, परन्तु लम्बे वुखार मे '**कॅलि सल्फ**' दिया जाता है।

iii **दस्तो की प्रथमावस्था मे फेरम फ़ॉस का प्रयोग**—यह कहा ही जा चुका है कि **फेरम फॉस** का काम शरीर मे ऑक्सीजन को लेना है। आतो मे कुछ ऐसे तन्तु होते हैं जिनमे **फेरम** होता है, और उसकी ताकत की वजह से ये ततु आतो मे आये भोजन मे से वहुत-सा रस चूस लेते है। अगर इन ततुओ (Villi) मे लोहा न रहे, तो जो रस चूसा जाना चाहिए था वह चूसा नही जाता और मल रस-सहित निकलने लगता है। इसी को दस्त आना कहते है। इसी-लिये दस्तो मे भी **फेरम फॉस** उपयोगी है, खासकर दस्तो की प्रथमावस्था मे।

फिर भी चिकित्सक को यह देखना होगा कि दस्तो का प्रकार, रग आदि **फेरम** के हैं, या **नैट्रम म्यूर** के हैं, या किसी अन्य दवा के हैं

IV **कब्ज मे फेरम फॉस का प्रयोग**—अगर आतो की मास-पेशियो मे लोहा न रहे, तो आतो की जिस गति से मल वाहर धकेला जाता है, जिसे 'पैरिस्टैलटिक मोशन' कहते हैं, वह नही रहती और कब्ज हो जाता है। इस अवस्था मे भी **फेरम फॉस** उपयोगी है।

[फेरम फॉस का होम्योपैथिक उपयोग]

(२) **फेरम फॉस का होम्योपैथिक प्रयोग—आख मे रेत-कण की-सी अनुभूति मे**—वायोकैमिक-दृष्टि से आख की सूजन की प्रथमावस्था मे यह लाभप्रद है ही, आख की लाली मे, आख मे रेत के कण की-सी अनुभूति मे, आख के भीतर करकराहट मे वायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दोनो दृष्टियो से यह लाभ करता है। रोशनी तथा कृत्रिम-प्रकाश मे चुधियाने मे भी उपयोगी है।

(३) **फेरम फॉस का होम्योपैथिक प्रयोग—कान मे दर्द, शोथ तथा पस मे**—वायोकैमिक-दृष्टि से कान के दर्द तथा शोथ की प्रथमावस्था मे यह लाभप्रद है, होम्योपैथिक-दृष्टि से भी कान के दर्द, शोथ, पस, खून निकलने, पस निकल जाने के वाद भी कर्ण-शूल मे आराम के न आने और वार-वार कान के दर्द का दौर पडने मे यह उपयोगी है।

(४) **फेरम फॉस का होम्योपैथिक प्रयोग—गला पड़ना, सूजना आदि मे**—वायोकैमिक-दृष्टि से गायको, व्याख्याताओ का गला पड जाना, वोलते-वोलते गले का पक जाना, दर्द होना आदि लक्षणो की प्रथमावस्था मे इससे लाभ होता है, होम्योपैथिक-दृष्टि से भी इन कष्टो मे यह लाभप्रद है।

(५) **फेरम फॉस का होम्योपैथिक प्रयोग—छाती, मूत्राशय, गठिया, रक्तहीनता, ज्वर मे**—वायोकैमिक-दृष्टि से छाती के शोथ की प्रथमावस्था—न्यूमोनिया—मूत्राशय के शोथ की प्रथमावस्था—गठिये के दर्द की प्रथमावस्था आदि मे यह उपयोगी है, होम्योपैथिक-दृष्टि से भी इन रोगो तथा रक्तहीनता मे यह श्रेष्ठ औषधि है। रक्तहीनता मे **कैलकेरिया फॉस** के वाद यह अच्छा काम करता है। ज्वर मे प्रतिदिन १ वजे सर्दी शुरु हो जाना इसका लक्षण है।

(६) **निम्न-शक्ति से उन्निद्रता, उच्च-शक्ति से निद्रा**—इस औषधि के विषय मे यह ध्यान रखना चाहिए कि अगर इसे निम्न-शक्ति में दिया जायगा, तो निद्रा मे विघ्न पड सकता है। जिस रोगी को नीद न आती हो, उसे निम्न-शक्ति नही देनी चाहिये। अगर मस्तिष्क मे 'रक्त-सचय' (Hyperemia) के कारण नीद न आती हो, तो **उच्च-शक्ति** से नीद आ जायेगी, परन्तु यह नीद लाने वाली दवा नही है, **लक्षणो के अनुसार औषधि का** निर्णय करना होगा।

(७) **फेरम फॉस, एकोनाइट, बेलाडोना, जेलसीमियम तथा ब्रायोनिया की तुलना**—इस औषधि मे **एकोनाइट** और **बेलाडोना** के समान रोग का वेग से आक्रमण नही होता, परन्तु **जेलिसीमियम** के समान रोग मे शिथिलता भी नही होती। एक तरफ **एकोनाइट** और **बेलाडोना** का वेग, तेजी और दूसरी तरफ **जेलसीमियम** की सुस्ती—यह औषधि इन दोनो के बीच की है। यह रोगी **एकोनाइट** और **बेलाडोना** के समान हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा न होकर रक्तहीन होता है, मुह पर कभी-कभी लाली आ जाती है, कमजोर होता है, परन्तु **जेलसीमियम** के रोगी की अपेक्षा अधिक चुस्त होता है, उसके समान इसका मुख इतना मटियाला नही होता। छाती के रोगो मे यह **ब्रायो** और **एको** के बीच की है।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, १२, ३० (निम्न-शक्ति से निद्रा-नाश की सभावना, उच्च-शक्ति से निद्रा, औषधि 'सर्द'—Chilly—है)

फ़्लोरिक ऐसिड (FLUORIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) **सोरा, सिफिलिस तथा गोनोरिया—तीनों दोषो की संशोधक है**
(२) **ऊष्णता, जलन और गर्मी प्रधान है, ठडक से आराम होता है**
(३) **नख, बाल, त्वचा, हड्डी का क्षय**
(४) **भगन्दर, नासूर (Fistula) तथा शिराओ का फूलना (Varicose veins)—इनमे उपयोगी है**
(५) **पेशाब से सिर-दर्द कम हो जाना**
(६) **दुर्व्यसनो, व्यभिचार आदि से स्नायु-मंडल के रोग, परिवार से उपरामता**
(७) **अत्यधिक मानसिक-परिश्रम से स्नायु-मडल के रोग**
(८) **पल्सेटिला, साइलीशिया तथा फ्लोरिक ऐसिड की त्रिक-शृखला है**

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

* **ठडे-स्नान से, खुली हवा मे रोग मे कमी**
* **हरकत से रोग मे कमी**
* **थोडी-सी नींद लेने से रोग मे कमी**

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

* **गर्मी से रोग मे वृद्धि**
* **रात को रोग मे वृद्धि**
* **खट्टे फलों से रोग मे वृद्धि**
* **गर्म चाय, गर्म काफी से रोग मे वृद्धि**
* **अलकोहल लेने से रोग मे वृद्धि**

(१) **सोरा, सिफिलिस तथा गोनोरिया दोष संशोधक है**—इस औषधि का गहरा प्रभाव है। यह सोरा, सिफिलिस और गोनोरिया—इन तीनो 'धातुओं' (Miasms) के दोषो का सशोधन करती है। इसके रोग शरीर पर धीरे-धीरे

परन्तु गहराई मे प्रवेश करके असर करते हैं, इसलिए इस औषधि का प्रभाव भी धीरे-धीरे होता है, परन्तु पूरी गहराई मे यह प्रविष्ट होकर रोग का जड से उन्मूलन कर देती है।

(२) **ऊष्णता, जलन और गर्मी प्रधान है, ठडक से आराम होता है**—यह ऐसिड हाईड्रोजन और क्लोरीन से मिल कर बना है, और इतना तेज़ होता है कि शीशे का भी खा जाता है। इसे रबर की बोतलो मे रखा जाता है क्योकि इसके तेज़ावी-प्रभाव से शीशे की बोतल भी नही बचती। इसी से स्पष्ट है कि यह औषधि कितनी ऊष्णता-प्रधान होनी चाहिए। इसके लक्षणो मे यद्यपि शरीर का तापमान नही बढता, तो भी सायकाल या रात को शरीर से प्रबल ताप निकलता है। त्वचा एकदम गर्म हो जाती है। रोगी गर्मी को सहन नही कर सकता। गर्म वस्तुओ से, शरीर पर वस्त्र ढकने से, गर्म हवा से उसका रोग बढ जाता है, **पल्सेटिला** की तरह गर्म कमरे मे उसका दम घुटता है। वह सिर तथा मुख को ठडे पानी से धोया करता है, ठडे पानी से इस प्रकार शरीर को धोने से उसे आनन्द मिलता है। रात को बिस्तर पर उसके पाव जलते हैं, बिस्तर मे वह ऐसी ठडी जगह की खोज मे रहता है जहा अपने जलते हुए हाथ-पैर को रख सके, खुली हवा से उसे आराम मिलता है। हाथो मे, पैरो के तलुओ मे पसीना आता है, पसीना भी जलन पैदा करता है, उससे पाव मे घाव पैदा हो जाते हैं, अगुलियो के बीच मे इस पसीने से घाव हो जाते हैं। इसके लक्षणो का मुख्य सूत्र है जलन, गर्मी, चरपराहट। आखो से, नाक से चरपराहट का जलनवाला पानी निकलता है, पसीना भी ऐसा ही होता है, बाहर की गर्मी से परेशानी और अन्दर से गर्मी का उभरना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। गर्म चाय, गर्म काफी, गर्म पदार्थ पीने से दस्त आ जाते है। 'रोगी को ठडक से आराम मिलना और गर्मी से उसकी तकलीफो का बढ जाना'—यह इस औषधि का इतना विश्वसनीय लक्षण है कि अन्य लक्षणो मे कितनी ही समानता क्यो न रहे, हाथ, पाव, नाक, कान आदि के सब लक्षणो के मिल जाने पर भी अगर यह व्यापक-लक्षण न मिले, अर्थात् अगर रोगी गर्मी मे आराम माने, तो **फ्लोरिक ऐसिड** कदापि उस रोगी की औषधि नही है, उस हालत मे **साइलीशिया** को ध्यान में रखना होगा क्योकि इन दोनो के लक्षण बहुत-कुछ समान हैं, 'प्रकृति' (Modality) मे भेद है, **फ्लोरिक ऐसिड** 'ऊष्णता-प्रधान' या 'गर्म' (Warm-blooded) है, **साइलीशिया** 'शीत-प्रधान' या 'सर्द' (Chilly) है।

(३) **नख, बाल, त्वचा, हड्डी के क्षय मे उपयोगी है**—स्वस्थ-व्यक्तियो पर 'परीक्षाओ' (Provings) से देखा गया है कि यह औषधि इतनी गहरी क्रिया करती है कि नख, बाल, त्वचा, हड्डी—इन सबको विकृत कर देती है। इसीलिये रोग की इन विकृतियो को यह ठीक भी कर देती है।

नख—नख टेढे-मेढे उगने लगते हैं, नाखून बहुत जल्दी बढते हैं, भद्दे होते हैं और टूट जाते हैं, कही से बहुत मोटे और कही से बहुत पतले होते हैं।

बाल—बाल झडने लगते हैं, उनमे चमक नही रहती, चाद गजी हो जाती है। बाल जहाँ-जहाँ उगते हैं उनके मार्ग मे फोडे-फुन्सी-ज़ख्म हो जाते हैं। शरीर मे गज के जगह-जगह दाग पड जाते हैं।

त्वचा—त्वचा पर इधर-उधर पपडी जम जाती है जो ठीक नही हो पाती।

हड्डी का क्षय—हड्डी का केरीज़ तथा नेक्रोसिस हो जाता है। हड्डी पर इस औषधि का विशेष प्रभाव है। इसका प्रभाव खासकर लम्बी हड्डियो के और कान की हड्डी के नेक्रोसिस पर विशेष पडता है। इन हड्डियो के नेक्रोसिस—क्षय—को यह दूर करता है। चेहरे की हड्डी के अस्वाभाविक तौर पर बढ जाने (Exostosis) पर इससे लाभ होता है। **हेक्ला लावा** इस में विशेष उपयोगी है। शरीर मे जहा त्वचा पतली है, और ठीक उसके नीचे हड्डी है, वहाँ रुधिर का सचार कम होने के कारण नेक्रोसिस हो जाने पर वह ठीक नही होने पाता। उदाहरणार्थ, शरीर के कार्टिलेज, कान की हड्डी, घुटने के नीचे की हड्डी (टीबिया) आदि के क्षय को यह ठीक कर देता है।

(४) **भगन्दर, नासूर (Fistula) तथा शिराओं का फूलना (Varicose veins)**—भगन्दर, दातो का नासूर, आख का नासूर तथा शिराओ के फूलने की यह उत्तम औषधि है। परन्तु इसका निर्वाचन करते हुए इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि रोगी ऊष्ण-प्रकृति का हो, शीत-प्रकृति का न हो। शीत-प्रकृति का होने पर **साइलीशिया** को ध्यान मे रखना होगा।

(५) **पेशाब से सिर-दर्द कम हो जाना**—सिर-दर्द मे इसका एक 'विशेष-लक्षण' (Peculiar symptom) यह है कि सिर-दर्द तब तक बढता जाता है जब तक पेशाब नहीं होता। दूसरे शब्दो मे, जब पेशाब खुल कर आता है तब सिर-दर्द मे कमी हो जाती है।

(६) **दुर्व्यसनो, व्यभिचार आदि से स्नायु-मंडल के रोग, परिवार से उपरामता**—जिन लोगो ने अपने स्नायु-मडल को हस्त-मैथुन या व्यभिचार आदि दुर्व्यसनो से विकृत कर दिया है, उनके स्नायु-मडल की विकृति को यह दूर करता है। ऐसे लोगो के लिये यह विशेष उपयुक्त है जो अनेक स्त्रियो से सहवास के आदी हैं, प्रेमिकाओ के परिवर्तन के अभ्यासी है, एक स्त्री से सन्तुष्ट नही रह सकते, व्यभिचार मे डूब जाते है, अपनी पत्नी के प्रति परायणता नही रख सकते। ऐसे व्यक्ति शहर की गली के एक कोने पर खडे होकर निर्दोष सुन्दरियो को कामुकता की दृष्टि से देखा करते हैं। अन्त मे, उनकी मानसिक-अवस्था शोचनीय हो जाती है। मानसिक अवसाद, निराशा उन्हें आ घेरती है और जीवन के प्रति वे उदास रहने लगने हैं। इन लोगो को अपने परिवार के

लोगो से, अपने बीवी-बच्चो से प्रेम नही रहता, उनके प्रति वे उपराम हो जाते हैं। यह उपरामता की अवस्था उन लोगो मे भी आ जाती है जो घर मे बीवी-बच्चो के साथ रहते हैं, परन्तु उनमे अपने बीवी-बच्चो के प्रति प्रेम की भावना नही रहती, वे घर छोडकर अन्यत्र जाना चाहते हैं। स्वस्थ-व्यक्ति के लिए यह स्वाभाविक है कि वह अपने बीवी-बच्चो के साथ रहने मे खुश रहे, परन्तु घर रहते हुए, निकट के सम्बन्धियो मे रहते हुए उनसे विरक्त हो जाना मन की अस्वाभाविक-अवस्था को सूचित करता है। यह ज़रूरी नही कि यह अवस्था व्यभिचार से ही उत्पन्न हो। शारीरिक-रोग आदि मे, या अन्य कारणो से भी ऐसी उपरामता आ सकती है। रोगिणी कहती है 'डाक्टर, समझ नहीं आता मुझे क्या हो गया है, मुझे अपने पति, अपने बच्चो, अपने सगे-सम्बंधियो के प्रति पहले जैसा प्रेम नही रहा'। व्यभिचार आदि दुर्व्यसनो से, या किसी प्रकार के शारीरिक-रोग से अगर सगे-सम्बंधियो के प्रति मन की ऐसी उपरामता, वैराग्य की अवस्था उत्पन्न हो जाय, तो **पिकरिक ऐसिड, सीपिया** और **फ्लोरिक ऐसिड** ही उपयुक्त दवाएँ हैं। स्त्रियो मे यह मानसिक-अवस्था प्राय गर्भाशय की विकृति के कारण होती है, इसलिये उनके लिये सीपिया, तथा पुरुषो के लिये **फ्लोरिक ऐसिड** अधिक उपयुक्त है।

(७) **अत्यधिक मानसिक-परिश्रम से स्नायु-मंडल के रोग**—दुर्व्यसनो, व्यभिचार आदि से मन की जो विकृति उत्पन्न हो जाती है उसका कारण भी मानसिक-शक्ति का अत्यधिक व्यय है, और मानसिक-शक्ति का यह अत्यधिक व्यय अगर अन्य किसी दिशा मे हो, तब भी मन की वैसी ही दशा हो जाती है। उदाहरणार्थ, जो लोग दिन-रात अपने व्यापार-धधो के सोच-विचार मे लगे रहते हैं, व्यापार को बढाने-चढाने मे मस्तिष्क का शक्ति से अधिक उपयोग करते हैं, जिनका मन मानसिक-कार्य करते-करते थक जाता है, फिर भले ही यह अवस्था दुर्व्यसनो से हो या मानसिक-कार्य की अधिकता से हो, वे उदास रहने लगते हैं, चुप बैठे रहते हैं, कुछ बोलते-चालते नही, काम-धधा छोड बैठते हैं, न किसी के प्रश्न का उत्तर देते हैं—ऐसे लोगो के लिये **फ्लोरिक ऐसिड** उपयुक्त दवा है। ये लक्षण **पल्सेटिला** मे भी हैं।

(८) **पल्सेटिला, साइलीशिया तथा फ्लोरिक ऐसिड की त्रिक-शृंखला**—होम्योपैथी मे कई औषधियो की त्रिक-शृंखला काम मे आती है। 'त्रिक'—अर्थात्, तीन दवाए जो एक-दूसरे के पीछे दी जाती है। एक-दूसरे के पीछे इसलिये नही दी जाती क्योकि ऐसा क्रम रूटीन की तरह चलना चाहिये, वे एक-दूसरे के पीछे इसलिये दी जाती हैं क्योकि एक औषधि देने के बाद दूसरी के लक्षण प्राय प्रकट हो जाते हैं। अगर ऐसा न हो, तो रूटीन के तौर पर रोगी को इस त्रिक-शृंखला मे से गुज़ार देना सिद्धान्त-विरुद्ध है। ऐसी ही एक त्रिक

शृंखला है · पल्सेटिला, साइलीशिया तथा फ्लोरिक ऐसिड की। इस त्रिक-शृंखला (Series of trios) का आधारभूत सिद्धान्त क्या है ?

त्रिक-शृंखला का आधारभूत सिद्धान्त—इन तीनो मे से पल्सेटिला ऊष्णता-प्रधान दवा है, साइलीशिया शीत-प्रधान दवा है, फ्लोरिक-ऐसिड ऊष्णता-प्रधान दवा है। पल्स के वाद साइलीशिया और साइलीशिया के वाद फ्लोरिक क्यो आ जाता है ? इसका कारण यह है कि पल्स देने के वाद जो कि ऊष्णता-प्रधान है, रोगी की गर्मी नष्ट होने लगती है, और गर्मी नष्ट होते-होते रोगी शीत-प्रधान हो जाता है। जब तक उसकी पल्स की प्रकृति थी, तब तक वह कपडा ओढना पसन्द नही करता था, ठडक पसन्द करता था, परन्तु इस औषधि के कई दिन तक लेते रहने के वाद उसकी प्रकृति वदल गई, वह ऊष्णता-प्रधान होने के स्थान पर शीत-प्रधान हो गया, और उसकी प्रकृति पल्स की प्रकृति न रह कर साइलीशिया की प्रकृति हो गई। चिकित्सक को यह देखकर आश्चर्य होगा कि किस प्रकार पल्स देते-देते रोगी साइलीशिया के लक्षण प्रकट करने लगता है। यही कारण है कि पल्स का स्वाभाविक अनुपूरक साइलीशिया है। साइलीशिया मानव-शरीर मे पल्स की अपेक्षा अधिक गहराई मे पहुचता है, यह पल्स का क्रौनिक कहा जाता है, अर्थात् पल्स जिस रोग को नष्ट करता हुआ समूल नष्ट नही कर पाता, उसे साइलीशिया समूल नष्ट कर देता है। इसका यह मतलव नही कि पल्स के वाद दूसरी किसी दवा के लक्षण नही प्रकट होते, इसका इतना ही अर्थ है कि पल्स के वाद प्राय. साइलीशिया के लक्षण प्रकट हुआ करते हैं। इन औषधियो का यह दूसरा दौर है, इसके वाद इस त्रिक-शृंखला का तीसरा दौर शुरु होता है। रोगी ऊष्णता मे शीत-अवस्था मे चला गया, परन्तु जव कुछ देर तक साइलीशिया दिया गया, तव उसकी शीत-प्रधानता नष्ट होने लगी, और वह फिर ऊष्णता-प्रधान होने लगा। साइलीशिया ने रोगी की शीत-प्रकृति को समाप्त कर दिया और यह अपने भीतर गर्मी अनुभव करने लगा। अव वह फिर ओढना फेंकने लगा, ठडी हवा पसन्द करने लगा। अव त्रिक-शृंखला की तीसरी दवा फ्लोरिक ऐसिड का समय आ गया। जिस प्रकार पल्स के वाद साइलीशिया के लक्षण प्रकट होने लगते हैं, उसी प्रकार साइलीशिया के वाद फ्लोरिक ऐसिड के लक्षण स्वभावत प्रकट हो जाते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि ये तीनो दवाए एक त्रिक-शृंखला वनाती हैं, एक-दूसरे के वाद दी जाती हैं। जव किसी रोग मे इन तीनो के अन्य-लक्षण समान मिलें और प्रकृति (गर्मी-सर्दी) मे भेद हो, तव इस 'त्रिक' को स्मरण रखना चाहिये। होम्योपैथी मे इस प्रकार की अनेक त्रिक-शृंखला हैं जिनका उल्लेख हमने कैलि सल्फ मे किया है।

इस सिलसिले मे चिकित्सक को यह जान लेना उचित है कि पल्स का क्षेत्र तब शुरु होता है जव रोग 'नवीन' (Acute) हो, शुरु की हालत हो,

अगर 'पुराना' (Chronic) हो चुका हो, तो भी पुराने रोग की प्रसुप्त अवस्था न होकर प्रकट अवस्था हो और उग्र रूप हो। इस समय **पल्स** देने से रोग की धार, उसकी तीव्रता हल्की पड जायगी, और तब इसकी अनुपूरक औषधि देने का समय होगा। अगर रोग की तेजी मे **साइलीशिया** जैसी गहरी दवा दी जायगी, तो रोगी को अनावश्यक कष्ट होगा। अगर इलाज **पल्स** से शुरु किया जायगा, और रोग जड से नही उखडेगा, तो **पल्स** देने से रोगी इस हालत मे तो पहुच जायगा कि उसे गहराई मे जानेवाली **साइलीशिया** दी जा सके। रोग की कठिन अवस्था मे अगर **पल्स** और **साइलीशिया** के लक्षण मिलते-जुलते हो, तो **पल्स** से इलाज शुरु करना चाहिये, और जब रोगी सीधे रास्ते पर पड निकले, तब लक्षण-समष्टि को देखकर उसकी अनुपूरक **साइलीशिया** का प्रयोग करना चाहिये।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—६,३० (यह औषधि शराबियो के जलधर—Ascites—रोग मे **आर्स** के बाद, कूल्हे—Hip—के रोग मे **कैलि कार्ब** के बाद, दातो की असाधारण अनुभूति—Sensitiveness—मे **कॉफिया** और **स्टैफिसैग्रिया** के बाद, बहुमूत्र रोग मे **ऐसिड फॉस** के बाद, हड्डियो के क्षय के रोग मे **साइलीशिया** और **सिम्फाइटम** के बाद, घेंघा—Goitre—मे **स्पजिया** के बाद अच्छा काम करती है। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

जेलसीमियम (GELSEMIUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) थकावट, सर्वांगीण दुर्बलता, मास-पेशियो की शिथिलता, पलक का गिर पड़ना, पक्षाघात
(२) स्नायविक कंपन, कम्पनशील दवा (Trembling remedy) है
(३) निद्रालुता, जडता तथा सिर मे चक्कर आना
(४) सिर की गुद्दी मे दर्द या वहा से दर्द का उठना
(५) 'स्नायु-प्रधान' (Nervous) होने के कारण किसी बात के होने से पहले उसकी कल्पना (Anticipation) से रोग की उत्पत्ति
(६) भय, खिजाहट, मानसिक-आघात आदि से रोग होना
(७) प्यास-रहित-ज्वर तथा मेरुदंड मे ऊपर-नीचे शीत का चढ़ना-उतरना (इन्फ्लुएन्जा), मलेरिया तथा टाइ-फॉयड ज्वर मे जेलसीमियम के लक्षण
(८) जेलसीमियम, एकोनाइट, बेलाडोना की ज्वर मे पारस्परिक तुलना

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
* खुलकर पेशाब आन से रोगी को अच्छा लगना
* पसीना आने से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
भय, शोक (Shock) आदि से रोग होना या इन से बढना
* किसी भय की पूर्व-कल्पना (Anticipation) से रोग होना या इस से बढ़ना
* मानसिक-उत्तेजना से वृद्धि
* बुरी खबर से रोग मे वृद्धि
* बसन्त या तर हवा से रोग-वृद्धि
* गर्मी से रोगी का परेशान हो जाना
* दोपहर १० बजे रोग बढ़ना

(१) थकावट, सर्वाङ्गीण दुर्बलता, माँसपेशियो की शिथिलता, पलक का गिर पड़ना, पक्षाघात—इस औपधि का होम्योपैथी मे प्रवेश अमरीका के डा० हेल के परीक्षणो का परिणाम है। डा० हेल ने 'मैंटीरिया मैडिका आँफ़ दी न्यू रेमेडीज़' का प्रकाशन किया था और अनेक नवीन दवाओ का अनुसघान किया था। उन्हें उनके मित्र-गण 'फादर ऑफ दि न्यू रेमेडीज' कहा करते थे। डा० क्लार्क अपनी पुस्तक 'डिक्शनरी आफ प्रैक्टिकल मैंटीरिया मैडिका' मे **जेलसी-मियम** के विषय मे लिखते हैं "जे० एच० नानकीवाल ने शेरी-शराव पीने के स्थान, मे गलती से **जेलसीमियम** के मूल-अर्क के दो औंस पी लिये। उसका

शरीर एकदम इतना शिथिल हो गया कि कुछ दूर ही सहारा लेकर चल पाया था कि अगले मिनट उसकी टागे पक्षाघात से लडखडा गईं। वह अपने हाथो के सहारे अपने को खीच कर विस्तर तक गया, परन्तु विस्तर पर भी उसे उठा कर लिटाना पडा। जव तक वह विस्तर मे निश्चल पडा रहा उसे कष्ट महसूस नही हुआ, परन्तु ज़रा-सी भी हरकत से उसे 'जवर्दस्त कपन' (Excessive tremor) का अनुभव हो रहा था। अगले २४ घटो मे उसे उल्टी आ गई, ज्वर १०१५ डिग्री तक चढ गया। हृदय की गति तेज़ हो गई, नाडी कुछ स्पदन छोड कर चलने लगी। आख की सव पेशियो पर औपधि का प्रभाव पडा परन्तु दाई तरफ की मासपेशियो पर प्रभाव सवसे अधिक था। निद्रालुता थी, परन्तु मानसिक-उत्तेजना का अभाव था।"

यह स्पष्ट है कि जो लक्षण **जेलसीमियम** ने स्वस्थ-व्यक्ति पर प्रकट किये, उन्ही लक्षणो के होने पर यह दवा रोग के उन लक्षणो को दूर करती है। इस दृष्टि से इस औपधि का मुख्य-लक्षण थकावट, सर्वांगीण दुर्वलता, भारीपन, मासपेशियो की शिथिलता आदि है। शरीर की समस्त मासपेशिया सुन्न-सी हो जाती हैं, रोगी के लिये हाथ-पैर हिलाना तक भारी हो जाता है। धीरे-धीरे पक्षाघात हो जाता है, परन्तु इसका प्रारम मासपेशियो के सुन्न होने, शरीर के अगो के भारी होने, सदा बनी रहनेवाली थकावट से होता है। जैसा नानकीवाल के ऊपर इस औपधि के प्रभाव मे हमने देखा, इसका शरीर की सब पेशियो पर प्रभाव पडता है। आख के भी ऊपर की पलकें लटक पडती हैं, उन्हें इच्छानुसार रोगी उठा नही सकता, उन्हें हाथ से उठाना पडता है। शरीर के अन्य अगो पर भी इस शिथिलता का प्रभाव पडता है। वाजा वजाते हुए अगुलिया ठीक काम नही करती, रोगी चलते हुए लडखडाता है, जाघो मे भारीपन अनुभव होता है। शरीर के सव अगो मे पक्षाघात-जैसी दुर्वलता आ जाती है। खाना-पीना भोजन-नलिका मे से गुज़र नही सकता, खाया-पीया नाक से वाहर निकल पडता है क्योकि भोजन-नलिका की मासपेशिया काम नही करती। जिव्हा की क्रिया मे वाधा पड जाती है, उसका काम ठीक-से नही हो पाता। यद्यपि शुरु-शुरु मे पक्षाघात अपने प्रकट रूप मे नही दीख पडता, तो भी अगो का एक-दूसरे के साथ समन्वय विगड जाता है, जिस प्रकार रोगी चाहता है उस प्रकार अगो की मासपेशिया काम नही करती। पकड़ना किसी चीज़ को चाहता है, पकडी कोई दूसरी चीज़ जाती है, और जव किसी चीज को पकड पाता है तव हाथ अपने को कमज़ोर पाते हैं।

(२) **स्नायविक-कपन, कंपनशील दवा** (Trembling remedy; Tremor) है—ऊपर जिस नानकीवाल का उदाहरण दिया गया है उसमे हमने देखा कि **जेलसीमियम** के मूल-अर्क लेने के वाद उसके शरीर मे 'कप' (Tre-

mor) शुरू हो गया। इस औषधि में कंपन इतना अधिक होता है कि डा० नैश ने इसे 'कंपन की दवा' (Trembling remedy) का नाम दिया है। चलते समय टांगें कांपती हैं, किसी चीज को उठाते समय हाथ कांपते हैं। कभी-कभी यह कंपन इतना उग्र रूप धारण कर लेता है कि रोगी का शरीर ऐसे कांपता है मानो जाड़े से कांप रहा हो, हालांकि न उसके भीतर न बाहर जाड़ा होता है। यह कंपन बढ़ते-बढ़ते पक्षाघात में परिणत हो सकता है, और आंख की पलकों का गिर पड़ना आदि पक्षाघात, जिनका ऊपर जिक्र किया गया, हो सकते हैं। इस कंपन की विशेष बात यह है कि रोगी को इस बात का ज्ञान रहता है कि उसके अंग उसकी इच्छा के अनुसार काम नहीं कर रहे, उसके 'गति-संचालक स्नायु-सूत्रों' (Motor nerves) पर उसका अधिकार नहीं रहा।

(३) निद्रालुता, जड़ता तथा सिर में चक्कर आना—यह औषधि मुख्य तौर पर स्नायु-प्रधान (Nerve remedy) है, इसलिये इसका प्रभाव मस्तिष्क, मेरुदंड तथा स्नायु-मंडल पर पड़ता है। इसीलिये स्नायु-मंडल की दुर्बलता के कारण पक्षाघात भी हो सकता है। मस्तिष्क पर इसके प्रभाव के कारण मस्तिष्क-संबंधी अन्य विकार भी इसमें पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, रोगी 'निद्रालु' (Drowsy) रहता है, मानसिक-दृष्टि से जड़-समान प्रतीत होता है, ऊंघाई, तन्द्राभाव उस पर सवार रहते हैं, आंखों में नींद भरी रहती है, ज्वर में भी निढाल पड़ा रहता है, चौकस नहीं हो पाता। मस्तिष्क की इसी निद्रालुता के कारण मस्तिष्क के ज्ञान-सूत्रों पर नियंत्रण की कमी से उसे 'चक्कर' (Vertigo) आया करता है। निद्रालुभाव के साथ चक्कर आने में यह एक बढ़िया दवा है। चक्कर सिर की गुद्दी से उठता है, आंख से एक वस्तु के दो दीखते हैं, दृष्टि क्षीण हो जाती है, रोगी नशे में-सा होता है। इसके मुख्य-लक्षणों को याद रखने के लिये तीन 'D' को याद रखना चाहिये। ये तीन 'D' हैं Dullness, Drowziness, Dizziness

(४) सिर की गुद्दी में दर्द या वहां से दर्द उठना—सिर-दर्द सिर के पीछे से आरंभ होता है। ऐसा सिर-दर्द तब होता है जब सिर में रक्त का अधिक संचय हो जाय। यह स्वाभाविक है कि ऐसे सिर-दर्द में रोगी ऊंचे तकिये पर सिर रख कर पड़ा रहे ताकि सिर में रक्त का अधिक संचार न हो। दबाने से रोगी को आराम मिलता है। रोगी को सिर की गुद्दी में धीमा-धीमा दर्द होता है, सिर थका-थका अनुभव होता है। रोगी चुपचाप पड़ा रहना पसन्द करता है। मानसिक-परिश्रम से, या सिर नीचा करने से सिर-दर्द बढ़ जाता है। **जेलसीमियम** के सिर-दर्द की विशेषता यह है कि अधिक परिमाण में पेशाब होने पर इस दर्द में कमी आ जाती है। **फ्लोरिक ऐसिड** में भी अधिक मात्रा में पेशाब होने से सिर-दर्द में कमी हो जाती है, परन्तु **फ्लोरिक** में सिर-दर्द तब

तक बढता जाता है जब तक पेशाब नही हो जाता । **लेक डिफ्लोरेटम** मे सिर-दर्द होने पर अधिक परिमाण मे पेशाब आता है, परन्तु इस मे सिर-दर्द मे कमी नही होती । **जेलसीमियम** मे एक ऐसा भी सिर-दर्द होता है जिसके प्रारम होने से पहले रोगी देख नही सकता । ज्यो ही सिर-दर्द शुरु हो जाता है, त्यो ही उसकी दृष्टि-शक्ति लौट आती है । **संग्विनेरिया, आइरिस वीर, लैक डिफ्लोरेटम** मे सिर-दर्द के साथ मतली और कय रहते हैं, परन्तु **जेलसीमियम** के सिर-दर्द के साथ कय या मतली न रहकर इसके चरित्रगत-लक्षण—'कमज़ोरी', 'थकान' और 'कपन'—रहते हैं । सूर्य की गर्मी से भी इसका सिर-दर्द बढ जाता है । सूर्य की गर्मी से सिर-दर्द **ग्लोनॉयन, लैकेसिस, लाइसिन** और **नैट्रम कार्ब** मे भी बढता है । **नैट्रम म्यूर** मे सिर-दर्द सूर्य के बढने के साथ बढता, और उतरने के साथ उतर जाता है ।

(५) **'स्नायु-प्रधान'** (Nervous) **होने के कारण किसी बात के होने से पहले उसकी कल्पना** (Anticipation) **से रोग**—हम कह चुके हैं कि यह औषधि मुख्य तौर पर स्नायु-मडल पर प्रभाव रखती है, इसलिये इसका प्रभाव मस्तिष्क, मेरु-दड तथा स्नायु-मडल पर पडता है । इसका स्नायु-मडल इतना सुस्त रहता है कि रोगी हर समय थका-थका रहता है, किसी बात मे चित्त नही लगा सकता, अगर कोई बात होने वाली हो, तो उसे सोच-सोच कर, और यह समझ कर कि वह इस स्थिति का मुकाविला कैसे करेगा, परेशान हो जाता है । अगर किसी सभा-सोसाइटी मे जाना है, तो यह सोच कर कि उसके मिलने-जुलने वाले वहाँ आयेंगे—उनसे कैसे मिलेगा—उसे दस्त आ जाता है । कोई वक्ता हो, उसे सभा मे भाषण देना हो, इस कल्पना से ही उसे सभा मे जाने से पहले कई बार पेशाब-टट्टी जाना पडेगा । लडके ने परसो आना है, उसने तार दे दिया, बस रात भर नीद हराम हो गई । थियेटर या मन्दिर जाना है, इतने सोच से जी घबराने लगा । इस प्रकार का—घटना होने से पहले उसकी कल्पना मात्र (Anticipation) से टट्टी या दस्त आ जाना—**अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मे भी पाया जाता है । कही भी जाते समय, बडे आदमियो से मिलते समय की घबराहट मे दस्त आ जाना इन दोनो औषधियो मे पाया जाता है, और इसका कारण स्नायवीय-दुर्बलता है । **जेलसीमियम** मे थकान विशेष रूप से है, **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** मे मीठा खाने की इच्छा विशेष रूप से है ।

(६) **भय, खिजाहट, मानसिक-आघात आदि से रोग**—भय, खिजाहट, मानसिक-आघात आदि से जो रोग हो जाते हैं, उनमे भी यह औषधि उत्तम कार्य करती है । यह लक्षण लगभग वैसा ही है जिसका हम अभी ऊपर वर्णन कर आये हैं । यह लक्षण भी स्नायविक-दुर्बलता के कारण ही प्रकट होता है । घर बैठे किसी सैनिक को तार आ जाता है कि लडाई के लिये तय्यारी करे ।

उसे दस्त आने लगते हैं। अचानक के किसी समाचार से जिस मे भय, खिजाहट या मानसिक-आघात हो, व्यक्ति घबरा कर बेहोश हो सकता है, अगो मे इतनी थकावट अनुभव कर सकता है कि चल-फिर न सके, दिल धडकने लग जाय । यह सब इसलिये होता है कि उस व्यक्ति का स्नायु-मडल एकाएक उत्पन्न हुई इस अप्रत्याशित, अकल्पित परिस्थिति का मुकाबिला नही कर सकता। इस समय **जेलसीमियम, अर्जेन्टम नाइट्रिकम** या **लाइकोपोडियम** विशेष लाभ करते हैं। विद्यार्थियो मे परीक्षा से पहले जो भय (Anticipatory fear) उत्पन्न हो जाता है उसके लिये भी इसका उपयोग हो सकता है।

(७) प्यास-रहित-ज्वर तथा मेरु-दड मे ऊपर-नीचे शीत का चढना-उतरना (इन्फ्लुएन्ज़ा)—इन्फ्लुएन्ज़ा, मलेरिया तथा टाइफॉयड ज्वरो मे इस औषधि की विशेष उपयोगिता पायी जाती है। ज्वर मे प्यास का न होना तथा शीत का मेरु-दड मे तरग की तरह ऊपर-नीचे चढना इसका विशेष लक्षण है। इन दो लक्षणो के अतिरिक्त रोगी का निश्चेष्ट होकर नींद-की-सी खुमारी मे पडे रहना भी इन ज्वरों मे पाया जाता है। जिस इन्फ्लुएन्ज़ा मे रोगी की टांगें भारी हो जाती हैं, उन्हें उठाना तक दूभर हो जाता है, सिर तथा मस्तिष्क मे भारीपन आ जाता है, मेरु-दड मे शीत ऊपर-नीचे लहर मारता है, रोगी नींद-सी मे पडा रहता है, उस मे **जेलसीमियम** ३० की एक मात्रा से बुखार टूट जाता है। कई बार ऐसे रोगी आते हैं जो कहते है कि जब से 'फ्लु' हुआ तब से तबीयत गिरी-गिरी रहती है, जिस्म भारी रहता है, ९९ डिग्री तापमान रहता है, उन्हें **जेल्स** से एकदम लाभ होता है। जब 'फ्लु' फैल जाता है, तब स्वस्थ-व्यक्तियो को **जेल्स** देने से उन पर इस रोग का आक्रमण नही होता, उस अवस्था में यह फ्लु का 'प्रतिरोधक' (Prophylactic against flu) है।

मलेरिया-ज्वर (Intermittent fevers) **मे जेलसीमियम**—ऐसे ज्वर जो कुछ अर्सा छोड कर आते हैं, व्यवधान देकर आते हैं—मलेरिया आदि—उन मे **जेल्स** के लक्षण होने पर यह अत्यन्त उपयोगी है। इन ज्वरो मे इस औषधि के निम्न लक्षण होते हैं· (क) रोगी को 'स्नायविक-ठड' (Nervous chill) लगती है, रीढ की हड्डी से ठड उठ कर गर्दन के नीचे तक जाती है। ठड इतनी ज़ोर की होती है कि रोगी कापता है, चाहता है कि लोग उसे पकडे रखें, इतना जबर्दस्त कपन होता है। (ख) कपन के अतिरिक्त **जेल्स** के मलेरिया-ज्वर मे दूसरा लक्षण प्यास का न होना है। शीत-अवस्था मे तो प्यास लगती ही नहीं, गर्म-अवस्था आने पर भी जलन तो तीव्र हो जाती है, ताप बहुत बढ़ जाता है, परन्तु प्यास तब भी नही लगती। (ग) तीसरा लक्षण यह है कि शीत-अवस्था मे लगातार पेशाब आता रहता है। (घ) चौथा लक्षण यह है कि

रोगी आराम से पड़ा रहना और सोते रहना चाहता है, उसे अत्यन्त थकान, कमजोरी महसूस होती है, कभी-कभी अर्ध-निद्रित अवस्था मे पड़ा रहता है। ज्वर के ये लक्षण प्राय वही हैं जिनका ऊपर हमने इन्फ्लुएन्ज़ा मे वर्णन किया है। अन्त मे, होम्योपैथी मे ज्वर के लक्षण ही महत्व रखते हैं, ज्वर का नाम कुछ महत्व नही रखता। १० वजे प्रात ज्वर का वढ जाना भी इसका एक लक्षण है जो नैट्रम म्यूर मे भी पाया जाता है।

टाइफॉयड (Remittent fever) मे **जेलसीमियम**—कई वार अर्सा छोड कर आने के स्थान मे ज्वर का एक आक्रमण हटता नही कि दूसरा आ जाता है, ज्वर के पहले आक्रमण से दूसरा और तेज होता है, दोपहर को बुखार वढ जाता है। जव **जेल्स** के लक्षणो मे टाइफॉयड की अवस्था आ जाती है, तव शीत की अवस्था तो नही रहती, परन्तु रोगी की जीभ सूखी रहती है, प्यास वहुत कम होती है, मस्तिष्क नशे की-सी हालत मे दीखता है और ज्वर लगातार रहने लगता है। जव ज्वर टाइफॉयड का रूप धारण कर लेता है तव **जेल्स** की **वैप्टीशिया** से तुलना की जाती है। इन दोनो मे समानता यह है कि दोनो मे शरीर में दर्द, दुर्वलता, नीद की-सी अवस्था, तीसरे पहर ज्वर का वढ जाना एक-समान पाये जाते हैं, परन्तु **जेल्स** का रोगी चुपचाप पडा रहता है, **वैप्टीशिया** का रोगी वेचैन रहता है, वेहोशी मे वकता है, उत्तर देते-देते सो जाता है, **जेल्स** के मल-मूत्र मे दुर्गन्ध नही रहती, **वैप्टीशिया** के मल-मूत्र मे दुर्गन्ध रहती है।

(८) **जेलसीमियम, एकोनाइट तथा वेलाडोना की ज्वर मे तुलना**—डा० कैन्ट का कहना है कि **जेल्स** स्वल्पकालिक दवा है, 'नवीन-रोगों' (Acute troubles) के लिये उपयोगी है। जो नवीन-प्रकृति के रोग लटकते जाते हो, और 'पुराने' (Chronic) जैसे लगने लगते हो, उनके लिये भी उपयोगी है, परन्तु 'धातुगत-जीर्ण-रोगों' (Chronic miasmic troubles) के लिये यह उपयोगी नही है। इसका प्रभाव-क्षेत्र विशेष रूप से मस्तिष्क मे रक्त-सचय हो जाना (Hyperemia) है, और मस्तिष्क तथा मेरु-दड के द्वारा इसके लक्षण प्रकट होते हैं। मस्तिष्क के रोगो मे **वेलाडोना** का भी प्रयोग होता है, और **वेला-डोना** की एकोनाइट से समानता है, इसलिये इन **तीनो** की प्रकृति पर विचार कर लेना उचित है।

जव किसी स्थान पर शीत का भयकर-प्रकोप होता हो, तव वहाँ के निवासी ठड खा जाने से एकदम, वहुत ही जल्दी भयकर शीत के शिकार हो जाते हैं। **एकोनाइट** तथा **वेलाडोना** के रोग इस प्रकार वेग से, एकाएक आक्रमण करते है। **जेल्स** की ठड का आक्रमण इस प्रकार एकाएक और वेग से नही होता। रोगी ठड खा जाता है, परन्तु उसका प्रकट रूप **एकोनाइट** तथा **वेलाडोना** मे तो कुछ ही घटे मे हो जाता है, **जेल्स** मे कई दिन वाद प्रकट

होता है। इसलिये **एकोनाइट** शीत-प्रधान प्रदेश की दवा है, **जेल्स** ग्रीष्म-प्रधान प्रदेश की दवा है। मीठी ठड के प्रदेशो मे ठंड लगने से रोग होगा, तो **जेल्स** की प्रकृति का होगा, कडक ठड के प्रदेशो मे ठड लगने मे जुकाम, खाँसी, बुखार, न्यूमोनिया होगा तो **एकोनाइट** या **बेलाडोना** की प्रकृति का होगा। इसका यह अभिप्राय नही कि एकोनाइट मे गर्मी के दिनो के कोई रोग नही होते, गर्मी के दिनो के रोग—डायरिया, डिसेन्ट्री आदि—गर्मी मे भी होते हैं जिन मे एकोनाइट देने से लाभ होता है, परन्तु इसके अन्य लक्षणो की तरफ ध्यान देना होगा।

(९) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

i **विना हरकत के दिल रुकने का डर**—रोगी अनुभव करता है कि अगर वह हिले-जुलेगा नही तो हृदय की गति रुक जायगी। इसलिये वह दिल के रोग मे हिलता-जुलता है। इसके विरुद्ध **डिजिटेलिस** का रोगी अनुभव करता है कि अगर वह हिले-जुलेगा तो हृदय की गति रुक जायगी।

ii **वच्चे को गिरने का डर**—वच्चा विना किसी कारण के गिर जाने के डर से माता को चिपटा रहता है। **वोरेक्स** मे भी गिर जाने का भय रहता है, परन्तु **वोरेक्स** मे जव माता शिशु को नीचे उतारने लगती है तभी उसे भय लगता है, **जेल्स** मे विना कारण के यह भय वना रहता है, वच्चा माँ या नर्स को चिपटा ही रहता है, नीचे पालने मे डालें तो उन्हे छोडता ही नही। किसी भी रोग मे इस लक्षण के होने पर यह दवा दी जा सकती है। यह लक्षण मुख्य तौर पर इन्ही दो दवाओ मे पाया जाता है।

iii **नींद न आना**—मस्तिष्क की थकान से या स्नायविक चिडचिडाहट (Nervous irritation) से नीद न आती हो, सोच-विचार की उलझन से न छूट सकने के कारण नीद न आती हो, तो यह दवा लाभ करती है। ये लक्षण **कॉफिया** मे भी हैं, परन्तु उसमे अधिक तौर पर खुशी से नीद नही आती।

(१०) **जेलसीमियम का सजीव मूर्त-चित्रण**—सपूर्ण शरीर की शिथिलता, हाथ-पैर की थकान, सुस्ती, नींद आते रहना, ऊघते रहना, अर्ध-निद्रित अवस्था में रहना, टाँगो का लडखडाना, शरीर के अगो का काँपना या सारे शरीर का कपन। वाजा वजाते समय अगुलियो का ठीक जगह न पडना, शरीर के अगो का पारस्परिक-समन्वय न होना, किसी एक अग का पक्षाघात, आँख की पलक का भारी पड जाना या झूल पडना, हल्का बुखार, जाडा न रहने पर भी शरीर का काँपना, रोगी का अपनी इच्छानुसार अगो से काम न ले सकना—यह है सजीव तथा मूर्त-चित्रण **जेलसीमियम** का।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३०, २०० (डा० नैश का कथन है कि उनके अनुभव के अनुसार ३० शक्ति से नीचे इस औषधि से कोई लाभ नहीं होता। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

ग्लोनॉयन (GLONOINE)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सिर मे रक्त की अधिकता से सिर-दर्द (Sun-stroke)
(२) सिर मे एकदम अचानक रक्त-सचय
(३) रोगी परिचित स्थान को अपरिचित के समान देखता है
(४) ब्लड प्रेशर (Blood pressure)
(५) ग्लोनॉयन, वेलाडोना, मैलीलोटस की पारस्परिक तुलना
(६) हरकत से दर्द मे वृद्धि
(७) हृदय मे भारीपन और सारे शरीर मे स्पदन
(८) पुराने दर्द मे निम्न-शक्ति से लाभ

(१) **सिर मे रक्त की अधिकता से सिर-दर्द (सन-स्ट्रोक)**—इस औषधि का होम्योपैथी मे प्रवेश हनीमैन के पट्ट-शिष्य कॉन्टन्स्टाइन हेरिंग ने किया था। इस नाम को भी उन्होंने ही गढा। यह ग्लिसरीन, ऑक्सीजन और नाइट्रोजन से बनता है इसलिये ग्लिसरीन का 'ग्ल', ऑक्सीजन का 'ओ' और नाइट्रोजन का 'न' मिला कर उसके आगे 'आइन' लगा दिया गया, जिससे 'ग्लोनॉयन'-शब्द बना। यह सिर-दर्द की महान् औषधि है। लू लगने से या सर्दी से या किसी और कारण से जब सिर मे रक्त की अधिकता हो जाती है, तब यह उत्तम कार्य करती है। इसका सिर-दर्द गर्दन से शुरु होता है जहा रोगी को भारीपन अनुभव होता है, और हृदय के 'स्पन्दन' (Throb) के साथ सिर मे स्पन्दन अनुभव होता है। रोगी को लगता है कि सिर बहुत बडा हो गया है जो उस की छोटी-सी खोपडी मे नही समा रहा। स्पन्दन इतना उग्र होता है कि जिस तकिये पर रोगी ने सिर रखा होता है वह भी स्पन्दन करता दीखता है, सिर के हर स्पन्दन के साथ तकिया हिलता है। 'सन-स्ट्रोक' की यह मुख्य दवा है।

(२) **सिर मे एकदम, अचानक रक्त-सचय**—रोगी को सिर मे रक्त-सचय और रक्त-सचार के दौरे-से पडते है। सिर मे रक्त-सचार ऐसे अवसरो पर होने लगता है जब इसकी बिल्कुल सभावना नही होती। रोगी सडक पर चला जा रहा है, एकदम गर्मी की लहर मस्तिष्क मे चढती अनुभव होती है, चेहरा लाल हो जाता है, एकदम पसीना छूटने लगता है। रोगी चारो तरफ देखता है, किसी को पहचान नहीं पाता, चारो तरफ जो परिचित लोग हैं वे भी अजनबी-से लगते हैं।

(३) **परिचित स्थान को अपरिचित के समान देखता है**—रोगी समझ नहीं पाता कि कहाँ है, जिस सडक पर सालो आता-जाता रहा है, उसे भी नही

पहचान सकता, स्थान की अनुभूति जाती रहती है यद्यपि अन्य सब तरह से वह ठीक होता है। यह इतमिनान करने के लिये कि वह ठीक जगह पर जा रहा है बार-बार चारों तरफ देखता है। जिस स्थान पर वह सालों ४-५ बार आता-जाता रहा है, जिन मकानों को एक ही स्थान पर देखता रहा है, उन्हे पहचान नहीं सकता। सब नया लगता है।

(४) **ब्लड प्रेशर (Blood pressure)**—जब लक्षण मिलते हों, तब **ओपियम तथा ग्लोनॉयन** ब्लड-प्रेशर की उत्तम औषधियां हैं।

(५) **सिर मे रक्त-संचय मे ग्लोनॉयन, बेलाडोना तथा मेलीलोटस की तुलना**—सिर में रक्त-संचय के कारण दर्द या अन्य लक्षण होने पर मुख्य-औषधियां तीन हैं . ग्लोनॉयन, बेलाडोना तथा **मेलीलोटस**। इन मे भेद निम्न है

ग्लोनॉयन	मेलीलोटस	बेलाडोना
i रोगी सिर नंगा रखना चाहता है, सिर पर टोपी नहीं रख सकता	i रोगी सिर ढकना चाहता है, सिर पर टोपी रखना चाहता है	नक्सीर से सिर-दर्द में कमी हो जाती है, चेहरा बहुत तमतमाता और लाल लाल-सा हो जाता है।
ii सिर के बाल कटवाना चाहता है	ii सिर के बाल नहीं कटवा सकता	
iii सिर पीछे करने से दर्द बढ़ता है	iii सिर पीछे करने से दर्द घटता है	
iv आराम से पड़ा रहना चाहता है	iv आराम से पड़े रहने मे दर्द बढ़ता है	

(६) **हरकत से दर्द मे वृद्धि**—ग्लोनॉयन का रोगी घंटों सिर पकड़ कर बैठा रहता है, ज़रा भी हिलता-जुलता नहीं क्योंकि ज़रा भी हिलने से भयंकर सिर-दर्द होता है। आराम से लेटे रहने मे उसे राहत मिलती है।

(७) **हृदय मे भारीपन और सारे शरीर मे स्पन्दन**—इस औषधि की मस्तिष्क तथा हृदय पर विशेष क्रिया है। हृदय-प्रदेश मे भारीपन, धड़कन और सारे शरीर मे, अंगुलियों तक से नाड़ी-स्पन्दन का अनुभव होता है, ऐसा प्रतीत होता है कि धड़कन से छाती फूट पड़ेगी। रोगी हांफने लगता है—धड़कन और हांपना एक-साथ अनुभव होता है।

(८) **पुराने दमे मे निम्न-शक्ति (Chronic asthma)**—डा० डनहम अपनी 'सायन्स ऑफ थेराप्यूटिक्स' मे लिखते है कि पुराने दमे मे उन्होंने इस औषधि को विशेष उपयोगी पाया है। शुरु मे उन्होने ६ शक्ति की मात्रा एक रोगी को दी क्योंकि उनके पास उच्च-शक्ति की मात्रा थी नहीं। उससे रोगी को बड़ा लाभ हुआ। इसके बाद उसी रोगी को उन्होंने २०० शक्ति की **मात्रा** दी, परन्तु उससे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। फिर ६ शक्ति की मात्रा देने

से लाभ हुआ। उनके अनुसार पुराने दमे में निम्न-शक्ति का ग्लोनॉयन अभूतपूर्व लाभ करता है।



शक्ति

डा० कैरोल डनहम
(१८२८-१८७७)

(९) शक्ति तथा प्रकृति—३० (दमे में ६ शक्ति या निम्न-शक्ति लाभ करती। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

ग्रैफ़ाइटिस—काला सीसा, (GRAPHITES)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) स्थूल-काय, शीत-प्रधान, कब्ज़ तथा त्वचा का रोगी, (ग्रैफाइटिस तथा कैलकेरिया कार्ब की तुलना)
(२) त्वचा के एग्ज़ीमा तथा फोड़े-फुन्सी मे शहद के समान चिपचिपा लसदार स्राव निकलना
(३) नख टूटना, त्वचा का जगह-जगह चिटक जाना, अंगुलियो की गाई फटना, जोडो मे फुन्सिया हो जाना
(४) बकरी की मेंगनियो की तरह आव-मिश्रित कब्ज़ के साथ मल आना
(५) स्थूल-काय, चर्म-रोगिणी स्त्रियो का पीला और थोडा रज स्राव, (ग्रैफाइटिस और पल्स की तुलना)
(६) रज स्राव से पहले तथा पीछे दिन-रात जलनयुक्त प्रदर-स्राव होना, (ग्रैफाइटिस की क्रियोज़ोट तथा सीपिया से तुलना)
(७) ड्युडिनल अलसर या दर्म आदि अन्य रोगों मे खाने से रोग कम होना
(८) शोर मे सुन सकना, अन्यथा बहरापन
(९) मुख पर मकडी के जाले का-सा अनुभव करना
(१०) दानो या स्राव के दब जाने से रोग

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
* विश्राम से रोग मे कमी
* ढके रहने से रोग मे कमी
* खुली हवा से रोग मे कमी
* खाने से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
* ठड से, हवा के झोको से वृद्धि
* मासिक-धर्म मे रोग मे वृद्धि
* मासिक के बाद भी वृद्धि
* दानो के दब जाने से रोग
* बिस्तर की गर्मी से वृद्धि
* गर्म पेय से रोग मे वृद्धि
* रात को रोग मे वृद्धि

(१) स्थूल-काय, शीत-प्रधान, कब्ज़ तथा त्वचा का रोगी, (ग्रैफाइटिस तथा कैलकेरिया कार्ब की तुलना)—यह औषधि काले सीसे से बनती है जिस से पेंसिलें बनाई जाती है। इस औषधि पर विचार करते हुए सब से पहले इसके

शरीर की रचना पर ध्यान जाता है। इसका रोगी स्थूल-काय होता है, पीला, रक्तहीन चेहरा, कब्ज का शिकार और त्वचा के भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगो से पीडित। उसे ठड बहुत लगती है। **ग्रैफाइटिस** का वर्णन करते हुए लेखको ने इसे 'Fat, Chilly, Costive'—इन शब्दो से स्मरण किया है। मोटे होने की तरफ रोगी का झुकाव स्पष्ट दीखता है। यह मुटापा स्वस्थ-व्यक्ति का सुगठित शरीर का मुटापा नही होता, परन्तु शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे अस्वस्थ चर्बी का भर जाना है, जो शरीर के पोषण की क्रिया के विगड जाने से हुआ करता है। इस मुटापे की तुलना **कैलकेरिया कार्ब** से की जा सकती है। दोनो मे मुटापा है, दोनो शीत-प्रधान हैं, परन्तु **कैलकेरिया** मे सिर पर पसीना आता है और उसके पैर ठडे रहते हैं, **ग्रैफाइटिस** मे ये लक्षण प्रमुख नहीं होते, उसके रोगी मे त्वचा के रोग विशेष रूप से पाये जाते हैं। यद्यपि रोगी शीत-प्रधान है, तो भी विस्तर की गर्मी तथा गर्म पेय से उसके रोग वढ जाते हैं। रोगी के 'व्यापक-लक्षणो' तथा 'अग-विशेष-लक्षणो' मे इस प्रकार का विरोध कभी-कभी पाया जाता है। मासिक धर्म के सबध मे **ग्रैफ** और **कैलकेरिया** की तुलना यह है कि **ग्रैफ** का मासिक थोडा और देर मे और **कैलकेरिया** का अधिक और जल्दी होता है।

रोगी सर्दी तथा गर्मी दोनो को सहन नहीं करता—हमने अभी कहा कि रोगी शीत-प्रधान है, कपडा ओढना पसन्द करता है, परन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि वह सर्दी भी ज्यादा महसूस करता है, गर्मी भी ज्यादा महसूस करता है। सर्दियो मे सर्दी नही सह सकता, गर्मियो मे गर्मी नही सह सकता। गर्म कमरे मे हो तो खुली हवा चाहता है, विस्तर की गर्मी मे भी रोग मे वृद्धि होती है, ठड से भी रोग की वृद्धि होती है। सिर-दर्द मे वह गर्म कमरा पसन्द नही करता, खुली हवा पसन्द करता है। मेरुदड के रोगो को इस औषधि ने ठीक किया है, परन्तु उस समय यद्यपि रोगी गर्म कपडो से अपने को लपेट लेता है तो भी खुली खिडकी के सामने ठडी हवा मे लेटना पसन्द करता है। खुली हवा के लिये चाह **कार्बो वेज** मे है, प्रत्येक औषधि जिसमे कार्बन है उस मे खुली हवा की चाह भी है। **ग्रैफाइटिस** मे भी कार्बन है, इसलिये इस मे भी खुली हवा के लिये चाह है। खुली हवा की चाह के साथ रोगी झट ठडा पड जाता है। खुली हवा भी चाहना और खुली हवा मिलने से ठडा भी पड जाना—ये दोनो बातें सब कार्बनयुक्त दवाओ मे पायी जाती हैं, और ये दोनो लक्षण जो परस्पर विरुद्ध से दीखते हैं **ग्रैफाइटिस** तथा **कार्बो वेज** दोनो मे मौजूद हैं।

(२) **त्वचा के एग्ज़ीमा तथा फोडे-फुन्सी मे शहद के समान चिपचिपा लसदार स्राव निकलना**—इस औषधि का एग्ज़ीमा शरीर के किसी भाग मे भी हो सकता है। जहा भी यह होगा उसमे से शहद के समान चिपचिपा, लसदार

स्राव निकलेगा। फुन्सियों मे से भी ऐसा स्राव निकल सकता है। इस प्रकार का एग्ज़ीमा या फुन्सिया विशेष रूप से कान पर या कान के पीछे, चेहरे पर, सिर पर प्रजनन के अगो पर, अण्डकोश की थैली पर, आख की पलको पर निकला करती हैं। किसी-किसी रोगी के गुदा-द्वार के चारो तरफ ऐसा एग्जीमा या ऐसी फुन्सिया निकल आती हैं। गुदा-प्रदेश के इस रोग मे यह अत्युत्तम औषधि है। प्राय ऐसा होता है कि बच्चों के सिर पर, कान के चारो तरफ ऐसी फुन्सियाँ भर जाती हैं जिनका चिपचिपा, लसदार, शहद के समान स्राव सारे सिर को भर लेता है। इस औषधि से उन्हे अपूर्व लाभ होगा। इस प्रकार कान के चारो तरफ फुन्सियाँ **पैट्रोलियम** मे भी होती हैं, परन्तु वे सिर्फ सर्दियो मे होती हैं, गर्मियो मे अपने-आप खत्म हो जाती है। बहने वाले एग्ज़ीमा (Weeping eczema) मे यह उत्तम औषधि है।

(३) **नख फूटना, त्वचा का जगह-जगह चिकट जाना, अगुलियो की गाई फटना, जोडो मे फुन्सिया हो जाना**—अगुलियो तथा पाओ के नाखून मोटे हो जाते हैं, बदशक्ल हो जाते हैं, भगुर हो जाते है। जब किसी रोगी के नखो की यह हालत दीख पडे, तो चिकित्सक को इस औषधि को नही भूलना चाहिये। नाखूनो के चिटकने के अतिरिक्त रोगी की त्वचा भी जगह-जगह मे चिटक जाती है। हाथ की चमडी चिटक जाती है, पाव की एडी, नाक के नथुनें चिटक जाते हैं, शौच करते समय गुदा-द्वार के चारो तरफ के एग्जीमा के कारण मल-द्वार चिटक जाता है, जलन होती है, चेपदार स्राव निकलता है, स्त्रियों के स्तन चिटक जाते हैं, योनि के दोनो तरफ जो उभार हैं वे चिटक जाते हैं। त्वचा का कहीं भी चिटक जाना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। नाखूनो का भगुर होना, त्वचा का चिटक जाना और अगुलियो के बीच या जोडो मे गाई पडना और शहद के-से स्राववाली फुन्सिया हो जाना—ये सब लक्षण इस औषधि मे पाये जाते हैं। जोडो के मोड मे फुन्सिया क्यो हो जाती है—यह कौन जाने, परन्तु ऐसा होता है, और इस कष्ट को यह औषधि आश्चर्यमय रूप मे दूर कर देती है, होम्योपैथ के लिये इतना जानना ही पर्याप्त है।

(४) **बकरी की मेगनियो की तरह आव-मिश्रित कब्ज़ के साथ मल**—इस औषधि मे सख्त कब्ज़ पायी जाती है। मल का रूप कठोर होता है, उसमे बकरी की मेगनियो की तरह गाठे पडी होती हैं, मल की गाठें सख्त और गोलियो के रूप मे होती हुई भी आव के मिश्रण के कारण लम्बी लेड-सी बन जाती हैं। मल-त्याग के बाद मल की सख्ती से गुदा-प्रदेश के चिटक जाने के कारण दर्द होता है, जलन होती है। बहुत लम्बा-मल **सलफर** मे भी है, परन्तु लम्बे-मल के साथ मेगनियो का रूप, आव का साथ चिपटा होना, मल-द्वार मे एग्जीमा का होना आदि लक्षणो को देखकर औषधि का निर्वाचन करना होगा। इस प्रकार के

मल से बवासीर भी हो सकती है, मल-द्वार से रुधिर भी निकल सकता है। डा० फेर्वे ने डा० चेरेट का उल्लेख करते हुए लिखा है कि २४ वर्ष की एक लडकी को इतना कब्ज़ था कि १०-१२ दिन मे एक बार जाती थी। उसके पिता ने डा० चेरेट से पूछा कि क्या **नक्स** से लडकी ठीक हो जायगी ? डा० चेरेट ने कहा कि **नक्स** मे तो—'बार-बार जाना परन्तु टट्टी ठीक-से न आना'—यह लक्षण है, परन्तु तुम्हारी लडकी को तो टट्टी आती ही नही। लडकी के मुख पर उभरे हुए दाने थे, जो कब्ज़ के दिनो मे विशेष रूप से उभर आते थे। त्वचा के इन लक्षणो को देखकर **ग्रैफ** १२ की पानी मे एक-एक मात्रा सुवह-शाम १० दिन तक लगातार दी गई और इतनी भयकर कब्ज़ इस से ठीक हो गई। इस के बाद कुछ दिन उसे **ग्रैफाइटिस** ३० दिया गया और कब्ज़ सदा के लिये चला गया। हमने देखा कि इस औषधि मे गुदा-प्रदेश का चिटक जाना (Fissure of the anus) भी एक लक्षण है क्योकि चिटकना तो इस औषधि मे विशेष रूप से ही पाया जाता है। डा० डनहम लिखते हैं कि एक स्त्री जो गर्भवती होने के दो मास बाद गुदा-प्रदेश के चिटकने से पीडित होने लगी उनके पास इलाज के लिये आयी। शौच करते समय तथा शौच जाने के बाद उसे असह्य पीडा होती थी, काटने का-सा दर्द होता था, घटो तडपती रहती थी। गुदा-प्रदेश के कठोर-मल से चिटकने के लक्षण पर उसे **ग्रैफाइटिस** २०० प्रति चार घटे देने से उसका रोग जाता रहा और वह आराम से शौच जाने लगी। त्वचा के रोग के लक्षणो के साथ कब्ज़ होने पर यह उत्तम दवा है।

(५) स्थूल-काय, चर्म-रोगिणी स्त्रियो का थोडा और पीला रज स्राव, (ग्रैफाइटिस और पल्स की तुलना)—स्थूल-काय स्त्री को जब रज स्राव नियमित समय पर नही होता, देर मे होता है, बहुत कम होता है, उसका रग पीला-सा होता है, हल्का होता है, पनीला होता है, तब **ग्रैफाइटिस** और **पल्से-टिला** की तरफ ध्यान जाता है। दोनो ही स्थूल-काय हैं, दोनो मे रज स्राव विलम्ब से और हल्के रग का होता है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **ग्रैफाइटिस** शीत-प्रधान है, **पल्स** ऊष्णता-प्रधान है, **ग्रैफाइटिस** मे भावी अशुभ की आशका रहती है, न-जाने क्या होगा की सोच होती है, **पल्स** मे रोगिणी ज़रा-से मे रो दिया करती है, **ग्रैफाइटिस** मे त्वचा का रोग होता है, **पल्स** मे नही। वैसे स्थूल-काय, कब्ज़, अजीर्ण, रज स्राव का देर मे होना, पनीला होना दोनो मे समान है।

(६) रज स्राव के पहले तथा पीछे दिन-रात जलनयुक्त प्रदर-स्राव होना, (ग्रैफाइटिस, क्रियोजोट, और सीपिया की तुलना)—स्त्री के रज स्राव मे इसका एक लक्षण यह है कि मासिक-धर्म से पहले और बाद को दिन-रात प्रदर-स्राव हुआ करता है। यह स्राव जलन पैदा करता है। प्रदर-स्राव के इस

लक्षण मे अगर रजोधर्म से पहले प्रदर-स्राव हो, तो **सीपिया** और अगर बाद मे हो तो **क्रियोजोट** उत्तम औषधि है, पहले-पीछे दोनो समय और दिन-रात वेगपूर्ण प्रदर-स्राव हो तो **ग्रैफाइटिस** दवा है।

(७) **ड्युडिनल अल्सर या दमे आदि अन्य रोगो मे खाने से रोग कम होना**—डा० टॉयलर लिखती हैं कि पेट या ड्यूडिनम के अल्सर मे यह औषधि विशेष गुणकारी पायी गई है। उनका कहना है कि उन्होंने इस रोग मे इसे अनेक रोगियो पर सफलतापूर्वक आजमाया है। इस रोग मे निम्न-लक्षण पाये जाते है (क) पेट का दर्द खाने या पीने से घट जाता है, (ख) गर्म खाने और गर्म पीने से घटता है, (ग) लेटे रहने से घटता है। इन लक्षणो मे यह औषधि पेट और आतो के कैंसर मे भी उपयोगी है। डा० एन० एम० चौधरी अपने 'ए स्टडी ऑन मैटीरिया मैडिका' मे लिखते हैं कि—'खाने से रोग मे कमी'—के लक्षण मे **ग्रैफाइटिस** को सदा ध्यान मे रखना चाहिए। उन्होंने इस लक्षण के आधार पर कई रोगियो के दमे और पेट के अल्सर को ठीक किया। ये रोगी सदा अपने सिर-हाने रोटी या खाने की कोई चीज रखा करते थे ताकि जब भी दमे का या दर्द का दौर पड़े तो वे कुछ खा लें। 'खाने से रोग की कमी'—**पैट्रोलियम, चेलिडोनियम** तथा **ऐनाकार्डियम** मे भी पायी जाती है, परन्तु इस लक्षण के साथ अन्य लक्षणो को मिलाकर औषधि का चुनाव करना चाहिए।

(८) **शोर मे सुन सकना, अन्यथा बहरापन**—इस औषधि का एक अद्भुत लक्षण यह है कि रोगी रेल की गडगडाहट मे या मशीन की कडकडाहट मे तो धीमी आवाज को भी सुन सकता है, परन्तु शोर न रहने पर उसे सुनाई नही देता। यह विचित्र बहरापन **नाइट्रिक ऐसिड** मे भी है।

(९) **मुख पर मकड़ी के जाले का-सा अनुभव करना**—रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि मुख पर मकड़ी का जाला उलझ रहा हो। वह हर समय मुह पर हाथ फेरा करता है। डा० चौधरी लिखते हैं कि एक रोगी को देखने वे गये, उसे डिलीरियम था। कमरे मे घुसते ही उन्होंने देखा कि रोगी लगातार मुह पर हाथ फेर रहा था। पूछने पर पता चला कि रोगी अपने मुह पर उलझे किसी धागे को हटाने का प्रयत्न करता रहता है। इसी लक्षण पर उसे **ग्रैफाइटिस** दिया गया और वह भला-चगा हो गया।

(१०) **दानो या स्राव के दब जाने से किसी रोग का उत्पन्न हो जाना**—अगर किसी रोग के दाने या शरीर का कोई स्राव दब जाय और उससे कोई रोग उत्पन्न हो जाय, तो इस औषधि की तरफ भी ध्यान जाना चाहिए। डा० नैश लिखते हैं कि तीन साल के एक बच्चे के सिर पर एग्ज़ीमा था। एलोपैथिक-चिकित्सा से वह एग्जीमा दबा दिया गया, परन्तु कुछ दिन बाद उसकी आतो से आव आने लगी। इस पर किसी दवा का कोई असर न हुआ।

डाक्टरो ने घोषित कर दिया कि आतो की टी० बी० है। बच्चे के माता-पिता ने सोचा कि अब होम्योपैथी को आजमा कर देखे, इससे लाभ नहीं होगा तो नुकसान भी तो नही होगा। डा० नैश ने रोगी के इतिहास को देखते हुए कि इसके एग्जीमा के दबने के बाद आव के लक्षण प्रकट हुए हैं उसे ग्रैफाइटिस 6m दिया और कुछ ही दिन मे बच्चा बिल्कुल ठीक हो गया। मेजेरियम मे भी त्वचा के रोग दब जाने से दूसरे रोग उत्पन्न हो जाने का लक्षण है।

(११) **ग्रैफाइटिस का सजीव मूर्त-चित्रण**—जो स्त्री-पुरुष मोटे हो, या मोटे रहे हो, और किन्ही कारणो से अब दुबले हो गये हो, शीत-ऋतु मे सर्दी मे और ग्रीष्म-ऋतु मे गर्मी मे पीडित होते हो परन्तु प्रकृति मे शीत-प्रधान हो, शरीर का मास ढीला-ढाला लटकता हो, कब्ज रहता हो और किसी-न-किसी चर्म-रोग के शिकार रहते हो, शहद का-सा लेसदार स्राव निकलता हो, मन मे भविष्य की अशुभ-चिन्ताओ से बेचैन रहते हो, स्त्रियो मे रजोधर्म देर मे और पनीला होता हो, रजोधर्म से पहले और पीछे दिन-रात प्रदर जारी रहता हो—यह है सजीव तथा मूर्त-चित्रण ग्रैफाइटिस का।

(१२) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i परवाल को ठीक करती है।

ii चमडे जैसी त्वचा हो जाने को ठीक करती है।

iii चेहरे पर लाल-लाल दाग (Red bloches on the face)

iv स्त्रियो मे पल्स का जो उपयोग नवयौवन मे है, उनमे ग्रैफाइटिस का उपयोग यौवनावस्था के बीत जाने पर हुआ करता है।

v पुराने घाव जब फिर से हरे हो जाते हो।

vi डा० एलन के अनुसार युवा स्त्रियो के मोटापे मे कैल्केरिया कार्ब के बाद, चर्म रोग मे सलफर के बाद, और बडे वेग से प्रदर होने के रोग मे सीपिया के बाद ग्रैफाइटिस अच्छा काम करता है।

(१३) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (यह सोरा-दोष-नाशक दवा है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

हैमेमेलिस (HAMAMELIS)

(१) **शिराओ से रक्त-स्राव** (Hemorrhage from venous system)—हमारे शरीर मे दो प्रकार की रक्त-वाहिनियाँ है। एक तो शुद्ध-रुधिर को हृदय से लेकर शरीर के भिन्न-भिन्न भागो मे ले जाती है, इन्हें 'धमिनी' (Artery) कहते है, दूसरी अशुद्ध-रुधिर को फेफडो द्वारा ऑक्सीजन से शुद्ध होने के लिये हृदय मे वापस ले आती है, इन्हे 'शिराए' (Veins) कहते हैं। धमिनी का रुधिर लाल होता है, शिरा का रुधिर नीला-काला होता है। 'धमनी' पर

एकोनाइट का प्रभाव होता है, इसलिये लाल रुधिर के स्राव मे सबसे पहले एकोनाइट की तरफ ध्यान जाता है, 'शिरा' पर हैमेमेलिस का प्रभाव है, इसलिये नीले-काले, थक्के-थक्के वाले रुधिर के स्राव मे हैमेमेलिस दिया जाता है। इसीलिये इसे कई लेखको ने 'शिराओ का एकोनाइट'—'Aconite of veins'—यह नाम दिया है। अगर शरीर के किसी भी स्थान से नीले-काले रुधिर का स्राव हो, तो हैमेमेलिस का प्रयोग करना चाहिये। शिराओ से जब रुधिर निकलता है तब उसमे वेग नही होता, वह बिना वेग के बहता है, उसका रग भी नीला या काला होता है, उसमे जमे हुए रुधिर के थक्के होते है। यह रुधिर नाक से, आख से, कान से, गले मे, पेट से, मूत्राशय मे, गुदा-द्वार से—कही से भी निकल सकता है। इसलिये मुख्य तौर पर यह नकसीर, बवासीर, खूनी डिसेन्ट्री, जरायु से रुधिर जाना तथा शिराओ के फूलने (Varicose veins) मे उपयोगी है।

(२) **नकसीर मे काला रुधिर बहना**—नकसीर मे जब काला रुधिर निकले, काले खून के थक्के निकलें, खून न जमे, तब इस औषधि से लाभ होता है।

(३) **बवासीर मे जब अपने-आप रुधिर बहे**—जब बवासीर मे नीले रग के मस्से बन कर बाहर दीखने लगे, अपने-आप रुधिर बहे, रुधिर मे काले जमे हुए रुधिर के थक्के निकलें, तब यह औषधि बहुत लाभ करती है। रोगी को कमर मे इतना दर्द होता है मानो कमर टूट जायगी।

(४) **खूनी डिसेन्ट्री**—जब नाभि-प्रदेश के आस-पास से अकडन भरा दर्द उठकर डिसेन्ट्री का रोग आक्रमण करता है, तब शौच मे काले खून के थक्को को देखकर इस औषधि का निर्वाचन करना उचित है। काला न होकर अगर शुद्ध लाल खून हो, तब भी यह औषधि फायदा कर जाती है।

(५) **जरायु से काला रुधिर**—जब जरायु से लगातार काला-काला रुधिर बहने लगता है, रोके नही रुकता, तब इस औषधि से खून पर नियन्त्रण हो जाता है। जब हम कहते हैं—काला खून—तब इसका यह मतलब नही है कि लाल खून पर इसका असर नही है। शिराओ के खून पर धमनियो के खून की अपेक्षा इस का प्रभाव अधिक है—इतना ही अभिप्राय है, वैसे रुधिर को नियमित करना इसका मुख्य काम है।

(६) **शिराओ का फूल जाना (Varicose veins)**—गर्भावस्था मे शरीर के नीचे के अगो पर बाझ पडने से शिराए फूल जाती है, और उनका रुधिर इन शिराओ मे सचित होने लगता है। इसी को शिराओ का फूलना कहते हैं। गर्भवती स्त्री शिराओ के इस प्रकार फूल जाने से खडी भी नही हो सकती। शिराओं के फूलने मे फ्लोरिक ऐसिड भी लाभ करता है।

(७) **शरीर मे पीड़ा की अनुभूति** (Soreness)—इस रोग का विशेष लक्षण शरीर मे पीडा की अनुभूति है, ऐसा अनुभव कि शरीर कुचला गया। **आर्निका** मे भी शरीर के कुचले जाने का-सा अनुभव तथा पीडा होती है, परन्तु **हैमेमेलिस** मे रुधिर का बहना आवश्यक-लक्षण है।

(८) **शक्ति**—खून जाने मे १२ औंस पानी मे इस औषधि के ३, ६ या १० बूद टिंचर डालकर एक बडा चम्मच दिन मे दो बार पी लेने से अगर आराम न आये, तो **हैमेमेलिस** की १, ३, ६, १२ आदि शक्ति की मात्रा खाने को देनी चाहिये।

हेलेबोरस नाइगर (HELLEBORUS NIGER)

(१) **बेहोशी, मूर्छा, अचेतनावस्था** (Delirium, stupefaction, unconsciousness)—इस औषधि के रोगी मे थोडा-बहुत मूर्छाभाव या बेहोशी पायी जाती है, कभी पूरी बेहोशी, कभी कुछ-कुछ, परन्तु रोगी चेतन अवस्था मे नही होता, मस्तिष्क की क्रिया मे धीमापन आ जाता है। यह बेहोशी उग्र नही होती। **स्ट्रैमोनियम** और **बेलाडोना** मे डिलीरियम उग्र-अवस्था मे होता है, परन्तु **हेलेबोरस** मे डिलीरियम की शिथिल-अवस्था आ जाती है। उग्र-डिलीरियम मे इसे नही देना चाहिये, उसमे लक्षणानुसार **स्ट्रैमोनियम** या **बेलाडोना** देना चाहिये, परन्तु इसके बाद जब डिलीरियम मध्यम, शिथिल पड जाय, तब इस औषधि का समय आता है। डिलीरियम की प्रथम-अवस्था मे जब वह उग्र होता है, तब **स्ट्रैमोनियम** या **बेलाडोना** देकर, उसकी प्रबलता दूर होने पर, अगर रोगी अचेतनावस्था मे, अज्ञान-भाव से पड़ा रहे, तब इसे दें। प्राय देखा जाता है कि मस्तिष्क के उग्र-रोग कुछ देर प्रबलता दिखा कर शान्त हो जाते है, और फिर देर तक वेग-रहित होकर घिसटते रहते हैं, लम्बे हो जाते है। इस समय रोगी से प्रश्न किया जाय, तो बडे धीरे-धीरे से उत्तर देता है, बेहोशी की हालत बढती-बढती वेदनाशून्यता मे पहुच जाती है, रोगी को कुछ अनुभव ही नही होता। उसकी मास-पेशिया काम नही करती, अगर कुछ करना चाहता भी है तो कर नही सकता, एक प्रकार की पक्षाघात की-सी अवस्था आ जाती है। रोगी न कुछ कहता है, न कुछ करता है। इसे डिलीरियम न कह कर 'मूर्छा' (Stupefaction) कहना ज्यादा उपयुक्त है। रोगी पडा रहता है। चिकित्सक आता है, तो उसकी तरफ टिकटिकी जमाये ताकता रहता है, भौचक्का-सा, मूर्छित-सा, कुछ न सोचता-सा। टाइफॉयड मे ऐसी अवस्था आ जाती है जब रोगी बेहोशी मे पडा-पडा, भौंचक्का-सा, कुछ न समझता-सा पडा रहता है। आस पास क्या हो रहा है—इसका भी उसे ज्ञान नही रहता। जबडो को ऐसे हिलाता है जैसे कुछ चबा रहा हो। बेहोशी मे

बिस्तर को या होठो को कुरेदता रहता है, नाक मे अगुली ठूसता रहता है, सर को तकिये पर इधर-उधर डोलता रहता है, कभी-कभी नीद मे चिल्ला उठता है, चौंक उठता है। हेलेबोरस मे रोगी नाक मे अगुली अनजाने ठूसता है, परन्तु अगर पूरे ज्ञान के साथ, जानता-बूझता ठूसे तो **एरम ट्रिफ** दवा है।

(२) **रह-रह कर चीख उठता है, सिर को तकिये पर इधर-उधर डोलता है**—रोगी रह-रह कर चीख उठता है और सिर को तकिये पर इधर-उधर फेरता है। ऐसी अवस्था मैनिनजाइटिस मे होती है (मस्तिष्क की आवरक झिल्ली के प्रदाह मे), हाइड्रोसेफेलस मे होती है (मस्तिष्क के जलधर या मस्तिष्क मे जल सचित हो जाने मे)—इस प्रकार का चीख उठना **एपिस** मे भी पाया जाता है, परन्तु **एपिस** का प्रयोग रोग की प्रथम-अवस्था मे होता है, जब रोगी इस योग्य होता है कि शरीर का कपडा उतार फेंके। जब रोगी अत्यन्त शिथिल हो जाता है, मानसिक-अवस्था इतनी शिथिल हो जाती है कि शरीर पर ओढन है या नही इसका भी ज्ञान नही रहता, तब **हेलेबोरस** दिया जाता है। इस के अतिरिक्त **एपिस** मे प्यास नही होती, **हेलेबोरस** मे प्यास ज्यादा है।

(३) **एक हाथ और एक पैर बार-बार उठाना-फेंकना**—इसका एक 'विचित्र-लक्षण' यह है कि रोगी एक हाथ और एक पैर बार-बार उठाता-फेंकता है, दूसरा हाथ और पैर निश्चल पडा रहता है। यह क्रिया अपने-आप चला करती है। यह लक्षण **एपोसाइनम** मे भी है। **ब्रायोनिया** मे रोगी बाया हाथ और पैर चलाता है। **जिकम** मे दोनो पैरो को हिलाता रहता है।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—मूल अर्क, १, ३, ६ (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

हिपर सल्फ़्यूरिस (HEPAR SULPHURIS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) ठडी हवा न सह सकना, छूने से दर्द बढना, तथा मानसिक-असहिष्णुता (२) फोडो के लिये सर्जरी का काम करना, (हिपर, साइलीशिया, मर्क की फोडे के फोडने या सुकाने मे तुलना) (३) जुकाम, आंख आना, कान पकना, मूत्राशय का शोथ, दस्त,- –इन मे सडे पनीर की-सी बू वाला मवाद निकलना, खट्टी बू आना, (Catarrhal remedy) (४) गले मे, मूत्राशय मे या कहीं खप्पच की-सी अनुभूति (टासिल, गोनोरिया आदि मे) (५) वोनिनघॉसन की क्रुप-खांसी की दवा (६) त्वचा के रोग—त्वचा के जोडो मे फुन्सियाँ होना (७) आचार, खट्टी चीजें आदि खाने की इच्छा (अजीर्ण-रोग) (८) ज्वर की शीतावस्था मे वदोडे पड जाना	लक्षणो मे कमी (Better) *गर्मी से रोग मे कमी *नम मौसम मे रोग मे कमी *माथे को कपडे से ढकने से रोग मे कमी लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *खुश्क ठडी हवा से वृद्धि *सर्दी लगने से रोग-वृद्धि *फोडे आदि को छूने से वृद्धि *रोग वाली करवट सोने पर रोग मे वृद्धि *पारे के सेवन से हो जाने वाले रोग (पारा-सेवन से रोग वृद्धि)

(१) ठडी हवा न सह सकना, छूने से दर्द बढना; तथा मानसिक-असहिष्णुता—यह औषधि सलफर और कैलकेरिया के मेल से वनी है, इसलिये इसका नाम सल्फ्यूरिस कैलकेरियम है, और इसीलिये जसा हम आगे देखेगे इसमे दोनो के गुण मौजूद हैं। इसका यह अभिप्राय नही कि इसकी अपनी विशेषताए नही है, वे तो है ही, परन्तु उक्त दोनो के गुण भी इसमे आ जाते हैं। कैलकेरिया शीत-प्रधान दवा है, हिपर भी शीत-प्रधान है। सर्दी मे तो हरेक को गर्म कपडे की ज़रूरत पडती हैं, यह रोगी गर्मी मे भी अपने को कपडे से ढके रखता हैं। दूसरे लोग कमरे मे जितनी गर्मी वर्दाश्त कर सकते हैं, उस से कही अधिक गर्मी यह वर्दाश्त कर सकता है। दरवाज़े और खिडकिया वन्द रखता है। अपने ही कमरे की नही, अपने घर के साथ के कमरो के दरवाज़े और खिडकिया वन्द किया करता है। सर्दी वर्दाश्त कर ही नही सकता। सोते हुए कही से भी ठडी हवा न घुस सके, इसका प्रवन्ध कर लेता है। डा० जे० एम० सेल्फरिज 'होम्योपैथिक वर्ल्ड' के ३६वें खड मे लिखते है कि एक स्त्री

जिसके गुर्दों मे शोथ था, सब तरह के इलाज करा कर जब वह हार गई, तब उन्हे बुलाया गया। यह स्त्री गर्म कम्बलो से खूब ढकी हुई थी, परन्तु उसने डाक्टर को कहा कि मुझे ऐसा लगता है जैसे ठडी हवा मेरी टागो मे घुसी जा रही हो, इसलिये मैं इतना कम्बल लपेटे रहती हू। यद्यपि गुर्दों की बीमारी से हिपर का कोई सम्बन्ध नही दीखता था, तो भी सिर्फ इस लक्षण पर उसे हिपर २०० दिया गया, और वह भली-चगी हो गई। ठडी हवा न सह सकना इसका चरित्रगत-लक्षण है।

छूने से दर्द बढना—जैसे रोगी ठडी हवा को नही सह सकता, वैसे छूने को भी नही सह सकता। हर प्रकार की असहनशीलता इसमे पायी जाती है। अगर शरीर मे कही शोथ हो, फोडे हो या त्वचा मे कही फुन्सिया हो, तो रोगी उन्हें छूने नही देता, ठडी हवा का उस पर स्पर्श भी नही होने देता। दूसरे लोग जिस दर्द को साधारण समझ कर उधर ध्यान भी नही देते, उस दर्द मे वह चीखने लगता है, थोडे-से दर्द मे बेहोश हो जाता है—इस हद तक उस मे सहनशीलता का अभाव होता है। शरीर मे कही सूजन हो, कही फोडा-फुन्सी हो, न वह उन्हें छूने देता है, न उस दर्द को सह सकता है, उसे दर्द ऐसे महसूस होता है जैसे सूइया चुभ रही हो, खप्पच उनमे धसे जा रहे हो।

मानसिक-असहिष्णुता—ठड को न सहना, स्पर्श को न सहना, दर्द को न सहना, इतने पर ही बस नही होता। रोगी की मानसिक-अनुभूति भी असहिष्णुतामयी होती है। सामान्य-कारण से बहुत अधिक क्रोध आ जाता है, झगडे के लिये तय्यार रहता है, उत्तेजित हो जाता है। यह चित्त-विकार उसे इस कदर दबोच लेता है कि बिना कारण के अपने मित्र तक को मारने के लिये उतावला हो जाता है। नाई हजामत करते हुए अपने अभिभावक का उस्तरे से गला काटने की सोचने लगता है। अपने को आग से जला डालने के विचार आने लगते हैं। जब ऐसे लक्षण बढने लगते है तब पागलपन का रूप धारण कर लेते हैं। सब जगह आग लगाते फिरना, निर्दोष व्यक्तियो की जान ले लेना इसी मनोवृत्ति का परिणाम है। हिपर इस प्रकार की मनोवृत्ति को बदल देता है।

(२) फोडों के लिये सर्जरी का काम करना, (हिपर, साइलीशिया, मर्क सॉल की फोडे को फोडने या सुकाने मे तुलना)—प्राय समझा जाता है कि होम्योपैथी मे सर्जरी के रोगियो के लिये कोई दवा नही है, परन्तु ऐसी बात नही है। हिपर को होम्योपैथी का लैंसेट या नश्तर कहते है। यह होम्योपैथी का सर्जन है। अनेक फोडे या अनेक रोग जिनका इलाज सिर्फ चीरा-फाडी समझा जाता है हिपर से ठीक हो जाते हैं। जैसे कैलकेरिया का अश होने के कारण हिपर शीत-प्रधान है, वैसे सल्फर के कारण इसका फोडे-फुन्सी पर प्रभाव है।

फोड़ा सुखाने के लिये उच्च-शक्ति, फोड़ने के लिये निम्न शक्ति पर विचार—डा० फैरिंगटन का कथन है कि जब फोड़े में पकना शुरू न हुआ हो, फोड़े में दर्द हो, ऐसा प्रतीत हो कि मवाद पड़ गई है, तब उच्च-शक्ति का हिपर देने से मवाद-पड़ना रुक जायगा, फोड़ा दब जायगा। अगर चिकित्सक समझे कि फोड़े का पकना और फूटना जरूरी है, तो हिपर निम्न-शक्ति देना चाहिये। डा० हेरिंग और डा० जोन्स का भी यही विचार है। परन्तु डा० गलार्ड, डा० नैश इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनका कथन है कि उच्च-शक्ति का हिपर दे देना चाहिये, और अगर प्राकृतिक-प्रवृत्ति के लिये फोड़े का सूख जाना अभिप्रेत होगा, तो फोड़ा अपने-आप सूख जायगा, अगर उसका पकना और फूट जाना अभिप्रेत होगा, तो वह अपने-आप पक जायगा और फूट जायगा। डा० नैश ने एक रोगी का उल्लेख किया है जिसे उन्होंने हिपर C M दिया और फोड़ा सूखने के बजाय पक गया और फूट गया, डा० गलार्ड ने एक रोगी के बगल के एक फोड़े का उल्लेख किया है जिसमें पस पड़ चुकी थी, परन्तु उसे उन्होंने हिपर ६ दिया और फोड़ा पकने और फूटने के स्थान में सूख गया। इससे यह परिणाम निकलता है कि फोड़े के सम्बन्ध में यह देखना चाहिये कि रोगी की सर्दी के प्रति और स्पर्श के प्रति क्या प्रतिक्रिया है, उच्च और निम्न शक्ति का उसे सुखाने या पकाने पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है। फोड़े की प्रकृति फूटने की होगी, तो उच्च-शक्ति के देने पर भी वह फूट जायगा, सूखने की होगी तो निम्न-शक्ति के देने पर भी वह सूख जायगा।

हिपर, साइलीशिया तथा मर्क सॉल की फोड़े के फोड़ने या सुखाने में तुलना—फोड़े पर जैसे हिपर का प्रभाव है, वैसे ही साइलीशिया का प्रभाव है। इन दोनों औषधियों में इतनी समानता है कि इन दोनों में से कौन-सी औषधि दी जाय, यह निर्णय करना कठिन हो जाता है। दोनों में त्वचा गंदी होती है, फोड़े-फुन्सी ठीक होने के बजाय उससे पस रिसते रहते हैं, दोनों में गले में खप्पच चुभने का-सा अनुभव होता है यद्यपि हिपर में यह ज्यादा है, दोनों में जरा-सी भी चोट पक जाती है, दोनों शीत-प्रधान हैं, परन्तु इससे आगे दोनों के लक्षण अलग-अलग हो जाते हैं। हिपर गर्म और नमीदार मौसम में आराम अनुभव करता है, साइलीशिया नमीदार मौसम में परेशान हो जाता है। यद्यपि दोनों में पसीना बेहद पाया जाता है, तो भी **साइलीशिया** के रोगी को रात को सिर पर बेहद पसीना आता है, पांवों पर बदबूदार पसीना आता है, परन्तु **हिपर** के पसीने में खट्टी बू आती है, और इसका पसीना दिन और रात दोनों समय आता है। इन दोनों औषधियों में ग्रन्थियों का शोथ एक-समान है, परन्तु **हिपर** का ग्रन्थि-शोथ एकदम होता है, वेग से होता है, **साइलीशिया** का ग्रन्थि-शोथ धीरे-धीरे होता है और अगर रोगी को **साइलीशिया** न दिया जाय, तो उसे

आराम होने मे वहुत देर लग जाती है। हिपर का मवाद गन्दा, मलाई के-से रग का होता है, साइलीशिया का मवाद पतला, रुधिर मिला हुआ होता है। डा० फैरिंगटन का कथन है कि फोडे मे पहले हिपर देने की अवस्था आती है, वाद को साइलीशिया की। हिपर मे जो स्पर्श के प्रति असहिष्णुता पायी जाती है, वह साइलीशिया मे नही है।

मर्क, हिपर, साइलीशिया—इस क्रम को ध्यान में रखना चाहिये—अगर फोडे के लिये **मर्क** दिया जा चुका है, तो उसके पीछे **साइलीशिया** नही देना चाहिये। जव **मर्क** का प्रभाव चल रहा हो तव **साइलीशिया** का प्रभाव नहीं होता, गडवड हो जाती है। ऐसी हालत मे **मर्क** के वाद **हिपर** देना चाहिये, और **हिपर** के वाद **साइलीशिया** दिया जा सकता है क्योकि **मर्क** के वाद **हिपर** अच्छा काम करता है। जव फोडो मे **मर्क** दिया जाय तव औपधियो का क्रम **मर्क, हिपर, साइलीशिया**—यह होना चाहिये। इस क्रम मे **हिपर** अन्य दोनो औपधियो के वीच 'अन्त-क्रिया' (Intercurrent remedy) करने की औपधि का काम करता है। फोडे मे कव **हिपर** दे और कव **मर्क** दे—यह दुविधा हो सकती है क्योकि दोनो मे पीप पैदा होना और पसीना आना पाया जाता है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **मर्क** का रोग तर-ऋतु मे और गर्मी मे वढता है, **हिपर** का रोग तर-ऋतु मे और गर्मी मे घटता है।

(३) **जुकाम, आख आना, कान पकना, मूत्राशय का शोथ, दस्त—इनमे सड़े पनीर की-सी वू का मवाद निकलना, खट्टी वू आना** (Catarrhal remedy)—जैसे हिपर का फोडे-फुन्सियो पर प्रभाव है, वैसे ही इसका शरीर के भिन्न-भिन्न अगो की श्लैष्मिक-झिल्लियो की शोथ (Inflammation of mucous membranes) पर भी प्रभाव है। इसी कारण यह जुकाम, आख आना, कान पकना, मूत्राशय का जख्म, आतो की शोथ के कारण दस्त आदि को ठीक करता है।

ठडी हवा मे जाने से जुकाम का पुराना हो जाना (Catarrh of the nose)— इस औपधि का प्रकृतिगत-लक्षण ठडी हवा को न सह सकना है। पुराने जुकाम मे, जो हर वार रोगी के ठडी हवा मे जाने से उस पर आक्रमण कर देता है, नाक वन्द हो जाती है, रोगी कहता है कि जव भी मैं ठड मे जाता हू जुकाम नये सिरे से मुझे आ घेरता है, मानो हर ठडे सास से जुकाम आ जाता है, गर्म कमरे मे आने से उसे चैन पडता है, इस प्रकार के जीर्ण जुकाम को यह ठीक कर देता है। ठड लगने से छीकें आने लगती हैं, नाक वहने लगता है, पहले पनीला स्राव निकलता है, अन्त मे गाढा, पीला, वदबूदार हो जाता है। ठड से इस प्रकार वार-वार जुकाम हो जाने के लक्षण मे **ट्युबर्कुलीनम** की तरफ भी ध्यान देना चाहिए।

ठड से आख आना, आख की शोय, आंख से गाढ़ा पस जाना (Catarrh of the eyes)—आख से बदबूदार, गाढा, पस-मिश्रित स्राव जाना, आख का शोथ जिसमे छोटे-छोटे अल्सर हो, आख के भीतर अल्सर, रक्त-मिश्रित पस, आख का लाल हो जाना, पलकें सूज जाना, आख के किनारो का पलट जाना, उनमे ज़ख्म हो जाना आदि इसमे पाया जाता है। अगर आख के रोगो मे **हिपर** के चरित्रगत-लक्षण मौजूद हो, ठड से रोग बढे, खट्टी बू का स्राव निकले—तो यह औषधि उपयुक्त होगी। अगर आख के लक्षण अस्पष्ट भी हो, परन्तु **हिपर** के चरित्रगत-लक्षण मौजूद हो, तो यह औषधि लाभ करेगी क्योकि औषधि के निर्वाचन मे मुख्य बात औषधि के व्यापक-लक्षण हैं, चरित्रगत-लक्षण हैं, एकागी लक्षण नही।

ठड से कान पकना, खट्टा, बदबूदार, पनीर के रंग का-सा मवाद आना (Catarrh of the ears)— ठड से कान के भीतर के भाग मे शोथ हो जाती है, वहा ज़ख्म बन जाता है, कान का पर्दा फट जाता है, कान मे असह्य पीडा होती है, खून मिला स्राव निकलता है। पहले ऐसा लगता है कि कान बन्द हो गया, बाद को कान मे बोझ-सा महसूस होता है, फिर कान का पर्दा फट जाता है, पस निकलती है, गाढा स्राव निकलता है जिसमे पनीर के-से टुकडे होते हैं, सडे हुए पनीर की बू आती है और रोगी से खटास की गन्ध निकलती है। इसमे **हिपर** लाभ करता है।

मूत्राशय का शोथ (Catarrh of the bladder)—जिन रोगियो की शीत-प्रकृति होती है, मूत्राशय मे से गाढा, सफेद, पनीर के-से ढग का स्राव निकलता है, मूत्र-प्रणालिका मे खप्पच की-सी चुभन होती है—स्मरण रहे कि ये सब **हिपर** के चरित्रगत-लक्षण हैं—उनके मूत्राशय की शोथ मे यह औषधि लाभ करती है। मूत्राशय की इस प्रकार की शोथ गोनोरिया मे पायी जाती है। मूत्राशय मे ज़ख्म हो जाते हैं, पेशाब वेग से नही निकलता, मूत्राशय मे मूत्र को वेग से निकालने की शक्ति नही रहती, बहुत हल्की धार निकलती है, या पेशाब बूद-बूद कर के जाता है, और पुरुष मे मूत्र की धार आगे को न जाकर सीधी नीचे गिरती है।

दस्त (Catarrh of the bowels)—इस औषधि मे बच्चो के दस्त मे खट्टी बू आती है, दस्त पतले होते हैं, उनका रग सफेद होता है। खट्टी बू इसका चरित्रगत-लक्षण है। **कैलकेरिया कार्ब, रिउम** तथा **मैग्नेशिया कार्ब** मे भी खट्टी बू का लक्षण है, परन्तु **हिपर** के दस्तो मे खट्टी बू के साथ वे सफ़ेद होते हैं।

(४) गले मे, मूत्राशय मे या कहीं खप्पच की-सी अनुभूति (टांसिल, गोनोरिया)— इस औषधि का एक विशेष-लक्षण यह है कि रोगी को गले

मे, या मूत्राशय में, या मल-द्वार मे या कही भी खप्पच की-सी, गले मे काटा या सुई चुभने की-सी अनुभूति होती है। ऐसा प्राय सिफिलिस के कारण टाँसिलो के रूप मे गले मे, या गोनोरिया के कारण मूत्र-नली मे, या ववासीर के कारण मल-द्वार मे हो सकता है। यह लक्षण अर्जेन्टम नाइट्रिकम तथा नाइट्रिक ऐसिड मे भी पाया जाता है। अर्जेन्टम मे सारे गले मे काटे हो जाते हैं। जैसे व्याख्याताओ, गायको के गले मे पाये जाते हैं, वोलते-वोलते गला पक जाता है, सारे गले मे दर्द होने लगता है। अर्जेन्टम का रोगी मीठा वहुत पसन्द करता है, हिपर का रोगी अचार, चटनी, खटाई पसन्द करता है। नाइट्रिक ऐसिड के रोगी के पेशाव मे घोडे के पेशाव की-सी वू आती है।

(टाँसिल की कुछ मुख्य-मुख्य औपधिया)

एकोनाइट—शुरु-शुरु मे ठड लगने से टासिल का शोथ हो जाना।

वैराइटा कार्ब—अगर एकोनाइट के वाद पता चले कि रोग कुछ वढा हुआ है।

वेलाडोना—टासिल मे तेज वुखार, ज्यादा सूजन, लालिमा, सिर-दर्द।

मर्क विवस—टासिल दायें या वायें किसी भी तरफ हो, वदवूदार साँस, गीली जीभ जिस पर दातो के निशान पड जायें, पसीना आये परन्तु पसीने से आराम न मिले।

मर्क प्रोटो आयोडाइड—मर्क विवस के ही लक्षण परन्तु टासिल दायी तरफ शुरु होता है, जीभ तालु की तरफ गहराई मे गाढे पीले रग की होती है।

लैकेसिस—टासिल वायी तरफ से शुरु होता है, फिर दायी तरफ जा सकता है। नीद के वाद रोगी की तकलीफ वढ जाती है।

लाइकोपोडियम—टासिल दाई तरफ से शुरु होता है, फिर वाई तरफ जा सकता है।

लैक कैनाइनम—टासिल एक दिन दाई तरफ, फिर वाई तरफ आता-जाता रहता है।

फाइटोलैक्का—अगर गले की श्लैष्मिक-झिल्ली मे छाले-से पड जायें।

हिपर सल्फ—जव अन्य सव दवाओ के देने के वाद भी ऐसा पता चले कि टासिल पकेगा, उसमे पस पड जायगी, तव दिया जाता है।

वैसीलीनम—इस रोग मे सप्ताह मे एक वार २०० शक्ति दे देना लाभ करता है।

(५) **वोनिनघॉसन की क्रुप-खासी की दवा**—('क्रुप-खासी' वह खासी है जिस मे सारी श्वास-नलिका—लेरिंग्स तथा ट्रेकिया—की सूजन हो जाती है, सास रुक जाता है, और श्वास-नलिका के भीतर श्लैष्मिक-झिल्ली वन जाती

है) क्रुप-खाँसी मे वोनिनघॉसन के पाउडर प्रसिद्ध है। वे हैं . **एकोनाइट, स्पंजिया, हिपर सल्फ, स्पंजिया, हिपर सल्फ**। अगर बच्चे को खुश्क, ठडी हवा से खासी हो जाय, तो वह उसी दिन पहली नीद टूटने पर ही उठकर खासने लगता है, **स्पंजिया** की खासी आधी रात के बाद, और **हिपर** को खासी सवेरे उठने के वाद होती है। इन तीनो की खासी खुश्क, ठडी हवा से होती है। क्रुप-खासी मे **वोनिनघॉसन** इन तीनो दवाओ की २०० शक्ति की मात्रा दिया करते थे। पहले **एकोनाइट** २०० देते थे, अगर इससे रोग ठीक नही होता था,



डा० वॉन वोनिनघॉसन

(१७८५–१८६४)

तो **स्पंजिया** २०० की मात्रा, अगर तव भी ठीक न हुआ तो **हिपर** २०० की मात्रा देते थे। इन तीन के देने के वाद फिर रोग ठीक न हुआ, तो **स्पजिया** २००, और तव भी ठीक न हो तो **हिपर** २००। इस प्रकार क्रुप-खासी ठीक हो जाती थी। क्योकि वोनिनघॉसन रोगियो को देखने नही जाते थे, अपने ऑफिस मे ही प्रैक्टिस करते थे, इसलिये साधारण तौर पर वे इन पाच पाउडरो को दिया करते थे। उस समय के कैमिस्टो मे ये पाच पाउडर प्रसिद्ध हो गये थे, परन्तु इसका यह मतलव नही कि इन पाचो को दे ही देना चाहिये। अगर **एकोनाइट** २०० से रोग ठीक हो जाय, तव आगे देने की जरूरत नही रहती, यही नियम अगले पाउडरों के विषय मे है। यह क्रम इसलिये बनाया गया है क्योकि क्रुप-खांसी मे शुरु-शुरु मे **हिपर** के लक्षण नही पाये जाते, परन्तु

एकोनाइट अथवा स्पंजिया के बाद इसके लक्षण प्रकट होते हैं, और इसके बाद हिपर ठीक काम करता है।

(६) **त्वचा के रोग—त्वचा के जोड़ो मे फुन्सियां होना**—त्वचा के रोगो मे हिपर का प्रयोग तब किया जाता है जब ज़रा-सी चोट लगे और पस पड जाय। डा० गुएरेन्सी का कथन है कि जहाँ-जहा जोड हैं, बाहों मे, बगल मे, घुटनो के पीछे, वहाँ-वहाँ फोडे-फुन्सी हो जाना इस औषधि की विशेषता है। जननेन्द्रिय, अण्डकोश, जाघो के बीच नमीदार फोडे-फुन्सी मे जब अत्यधिक स्पर्शानुभूति हो, तब इसका प्रयोग करना चाहिये।

(७) **आचार, खट्टी चीजों आदि की इच्छा (अजीर्ण-रोग)**—वैसे तो अजीर्ण-रोग मे इसका प्रयोग बहुत कम होता है, परन्तु एक ऐसा भी अजीर्ण है जिसमे यही काम कर सकता है। जब रोगी को अम्ल चीजो के खाने की उत्कट-इच्छा हो, खट्टी-चीजें, आचार-चटनी के लिये, शराब के लिये वह परेशान रहता हो, खाने के बाद रोगी को ताकत तो आ जाती हो परन्तु पेट भारी हो जाता हो, भोजन-प्रणालिका से खट्टा पानी बार-बार ऊपर को आता हो, कभी-कभी उल्टी भी हो जाती हो, खाने के कुछ घंटे बाद पेट फूल जाता हो, पेट का कपडा ढीला करना पडता हो, इन लक्षणो के साथ कभी कब्ज कभी दस्त आ जाते हों, नर्म मल भी कठिनाई से निकलता हो, तब यह औषधि अजीर्ण (बदहज़मी) को ठीक कर देती है।

(८) **ज्वर की शीतावस्था मे ददोड़े पड जाना**—ज्वर की शीत-अवस्था में शरीर मे ददोडे पड जाते हैं, उनमे खुजली और जलन होती है, और गर्मी की अवस्था आने पर ये ददोडे समाप्त हो जाते हैं। शीत-अवस्था के समाप्त हो जाने पर ददोडे निकल आना एपिस का लक्षण है। एपिस के ज्वर मे रोगी को खट्टा, बदबूदार पसीना आता है।

(९) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

i **सारी रात पसीने से तर हो जाना**—इस औषधि के अनेक रोगो मे सारी रात पसीना आने का लक्षण पाया जाता है। खासने पर, या ज़रा-से परिश्रम से रोगी पसीने से तर हो जाता है।

ii **प्रदर मे बेहद खट्टी बू आना**—रोगिणी को इतना प्रदर-स्राव होता है कि उसे नैपकिन का प्रयोग बार-बार करना पडता है। प्रदर बदबूदार, सडे पनीर की-सी गध का। नैपकिन स्राव से इतना भीग जाता है कि उसे हटा कर धोना पडता है, उसकी बदबू से कमरा भर जाता है। इतनी बदबू आती है कि रोगिणी के कमरे मे घुसते ही कमरा बदबू से भर जाता है और एकदम कहा जा सकता है कि उसे यह रोग है।

iii **शरीर मे से विजातीय-पदार्थ को निकाल देने की शक्ति**—अगर

शरीर मे सूई टूट जाय या गोली आदि कोई विजातीय पदार्थ आ जाय, तो **हिपर** या **साइलीशिया** से वह सहज निकल जाता है। अगर फेफडो मे गोली अटक जाय, तो इन दवाओ को नही देना चाहिये क्योकि जहाँ गोली पडी होती है वहा वह चारो तरफ से तन्तुओ से घिर जाती है, और कोई नुकसान नही पहुचाती। इन दवाओ से उसका घेरा टूट सकता है और गोली निकलती हुई फेफडे को नुक्सान पहुचा सकती है।

iv **नम-मौसम मे दमे मे आराम**—डा० नैश का कहना है कि नम-मौसम मे दमे मे आराम होने मे **हिपर** जैसी दूसरी कोई औपधि नही है। **हिपर** के दमे मे नम-मौसम मे रोगी को आराम रहता है। पुराने दमे मे **हिपर सल्फ** और **नेट्रम सल्फ**—इन दोनो दवाओ से लाभ होता है, परन्तु इनमे भेद यह है कि **हिपर** का दमा खुश्क, ठडी हवा से बढता है, नम हवा से ठीक रहता है, **नेट्रम सल्फ** का दमा **डल्केमारा** की तरह का होता है, **हिपर** से उल्टा, वह खुश्क, ठडी हवा मे ठीक रहता है, नम हवा मे रोग बढ जाता है।

v **हिपर सल्फ, कैलि सल्फ, कैलकेरिया सल्फ की तुलना**—डा० फौस्टर का कथन है कि **कैलि सल्फ** का प्रभाव शरीर की बाहरी त्वचा (Epidermis) पर होता है, **हिपर सल्फ** और **कैलकेरिया सल्फ** का प्रभाव शरीर की अन्दर की त्वचा पर होता है, अन्दर की त्वचा, अर्थात् फोडे-फुन्सी पर। इन दोनो मे भी फोडा खुलने से पहले **हिपर** का क्षेत्र है, फोडा खुल जाने के बाद **कैलकेरिया सल्फ** का क्षेत्र है। **हिपर** फोडे को फोड दे तो **कैलकेरिया सल्फ** उसे भर देगा।

(१०) **हिपर सल्फ का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—रोगी ठड से परेशान होता है, हर अग को कपडे से लपेटे रहता है, दरवाज़े-खिडकिया-झरोखे बन्द कर देता है, इस बात से घबराया रहता है कि सोते समय न-जाने कहा से ठडी हवा आ रही है। फोडे-फुन्सी से त्वचा गन्दी-मैली-अस्वस्थ रहती है। फोडे की ज़रा-सी भी शोथ को बर्दाश्त नही कर सकता, फोडे को कोई छू दे, तो चीख उठता है। थोडी-सी चोट भी पक जाती है। शरीर से पसीना छूटता है, खट्टी बू आती है, भिन्न-भिन्न अगो से बदबूदार सडे पनीर का-सा स्राव निकलता है, और खट्टी बदबू से मकान भर जाता है। सहनशीलता का उसमे अभाव होता है, किसी की बात सह नही सकता। ठड से परेशान परन्तु नम मौसम मे तबीयत ठीक रहती है। खाने मे उसे खट्टी चीज़ो, आचार-चटनी का शौक होता है। ऐसा है सजीव तथा मूर्त-चित्रण **हिपर सल्फ** का।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, २०० या ऊपर। निम्न-शक्ति फोडा फोड देती है, उच्च-शक्ति सुका देती है, डा० नैश इस बात मे सहमत नही हैं। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

हाईड्रैस्टिस (HYDRASTIS)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) पेट मे मीठा-मीठा दर्द और खालीपन, शून्यता महसूस होना (पेट के खालीपन मे हाइड्रैस्टिस, सीपिया तथा इग्नेशिया की पारस्परिक तुलना)
(२) जब कब्ज मे कब्ज के सिवाय दूसरा कोई लक्षण न हो
(३) श्लैष्मिक-झिल्लियो से गाढा पीला तथा सूतदार स्राव—इसमे आख, नाक, कान, जरायु पेट आ जाते हैं
(४) आंख आने पर गाढ़ा पीला, चिपचिपा कीचड आना
(५) नाक से गाढा पीला लसदार जुकाम बहना
(६) कान पकने पर गाढा पीला, चिपचिपा पस आना; प्रदर मे उपयोगी
(७) जिगर, जरायु, छाती आदि का कैंसर जिसमे पीला गाढा लसदार स्राव निकले
(८) चेचक मे उपयोगी

(१) पेट मे मीठा-मीठा दर्द और खालीपन, शून्यता महसूस होना—इस औषधि के लक्षणो का केन्द्र पेट के लक्षण हैं। इसका अद्भुत-लक्षण है—पेट मे खालीपन, शून्यता, पेट का बैठ जाने का-सा लगना, परन्तु इस खालीपन के साथ तो भूख का अनुभव होना चाहिए, विचित्रता यह है कि पेट मे खालीपन लगता है और भोजन से भी अरुचि होती है। इसमे रोगी को असीम निर्बलता होती है। इस खालीपन को 'All gone feeling' कहा जाता है। यह खालीपन तीन दवाओ मे है—हाइड्रैस्टिस, सीपिया तथा इग्नेशिया।

पेट के खालीपन मे हाइड्रैस्टिस, सीपिया तथा इग्नेशिया की तुलना—जब स्त्री के जरायु सबधी रोग मे यह अनुभव होता हो तब **सीपिया**, जब स्नायु-सबधी विकार मे यह अनुभव हो तब **इग्नेशिया**, जब इन कारणो के अलावा ऐसा अनुभव हो तब **हाइड्रैस्टिस** उपयोगी है।

(२) **जब कब्ज मे कब्ज के सिवाय दूसरा कोई लक्षण न हो**— यह औषधि कब्ज मे बहुत उपयोगी है। डा० हेल का कहना है कि पुराने कब्ज के रोग मे इनका विशेष गुण है, और उस रोग मे इसे मूल-अर्क के रूप मे या निम्न-शक्ति मे देना चाहिए। डा० नैश का कहना है कि उन्होंने कठोर कब्ज मे जब एलोपैथिक औषधियो से भी टट्टी नही आती थी, इस औषधि को २०० शक्ति मे दिया है और उससे अभूतपूर्व सफलता मिली है। कब्ज मे जब केवल कब्ज ही एक लक्षण दिखाई देता हो, दूसरा कोई लक्षण न हो, तब इस औषधि से अवश्य लाभ होता है।

(३) **श्लैष्मिक-झिल्लियो से गाढ़ा पीला तथा सूतदार स्राव निकलना**—आख, नाक, कान, गला, पुरुष की जननेन्द्रिय, स्त्री की योनि—इनमे से किसी द्वार से भी गाढा पीला तथा सूतदार स्राव निकले, जो तार के रूप मे जमीन तक लटक जाय, उसमे यह उपयोगी है।

(४) **आंख आने पर गाढ़ा, पीला, चिपचिपा कीचड आना**—जब आख आ जाती है और उसमे से गाढा पीला, चिपचिपा, सूतदार कीचड-सा निकलता है, तब यह लाभकारी है।

(५) **नाक से गाढ़ा पीला, लसदार जुकाम बहना**—जब नाक से गाढा पीला, लसदार श्लेष्मा निकलता है जो सूत की तरह नीचे लटक जाता है, नाक के अन्दर भी घाव हो जाता है, उससे मवाद निकलता है, तब इस औषधि से लाभ होता है। बन्द स्थान मे जुकाम इतना नही बहता, परन्तु खुली हवा मे जुकाम बहने लगता है, बढ जाता है। नाक से जो हवा अन्दर जाती है वह ठडी महसूस होती है।

(६) **कान पकने पर गाढा पीला, चिपचिपा पस आना, प्रदर मे उपयोगी**—जब कान पक जाता है, उसमे से गाढा पीला पस आने लगता है, तब इससे लाभ होता है।

जैसे आख, नाक, कान से गाढा पीला पस आने मे यह लाभदायक है, वैसे गले से, पुरुष की जननेन्द्रिय से, स्त्री की योनि से, प्रदर के रूप मे या अन्य किसी जगह से जब गाढा पीला लेसदार, सूत की तरह का स्राव निकले, तब यह औषधि उपयोगी है। प्रमेह और श्वेत-प्रदर मे इसका बाह्य-प्रयोग कई बार लाभ करता है।

(प्रदर-रोग की मुख्य-मुख्य औषधिया)

ऐलेट्रिस फैरिनोसा—मूल-अर्क, ३ शक्ति। यह प्रदर की उत्तम दवा है। कमज़ोर, रक्तहीन लडकियो के लिए उपयोगी है। इसे 'China of the uterine system'— जरायु की कमज़ोरी के लिये यह औषधि वह काम करती है, जो शरीर की कमज़ोरी के लिए **चायना** करती है।

बोरैक्स— एलब्यूमिन की तरह का अधिक मात्रा का प्रदर।

हाईड्रैस्टिस—इसका प्रदर गाढा, पीला, सूतदार, चिपटनेवाला होता है कमज़ोरी और कब्ज भी साथ होता है।

नैट्रम म्यूर— पनीला सफेद प्रदर। साथ मे पीठ मे दर्द होता है जिसमे किसी कडी वस्तु पर लेटने से आराम लगता है।

पल्सेटिला— गाढ़ा, पीला-नीला, न लगने वाला (Bland) प्रदर।

एलूमिना—पुराना, अमिट प्रदर, रंग पीला। प्राय मासिक के बाद इतना बहता है कि टांगों तक बह जाता है।

सलफर— भिन्न-भिन्न रंगों का पुराना प्रदर। दोपहर को पेट मे खो पड़ती है।

(७) जिगर, जरायु, छाती आदि का कैंसर जिसमे पीला गाढ़ा, लेसदार स्राव निकले— इस औषधि से जिगर, जरायु, छाती आदि अंगो के कैंसर भी ठीक हो गये हैं जिनमे से गाढ़ा पीला, पस जैसा, सूतदार, बदबूदार स्राव निकलता है। इस प्रकार के अल्सर मे भी यह उपयोगी है। अल्सर मे जलन की अनुभूति होती है।

(८) चेचक मे—भीतरी तथा बाह्य प्रयोगमे तकलीफ को घटा देता है।

(९) शक्ति तथा प्रकृति—मूल अर्क, ३, ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिए है)

हायोसाएमस (HYOSCYAMUS)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मस्तिष्क की उत्तेजना (मस्तिष्क की उत्तेजना में बेलाडोना, हायोसाएमस तथा स्ट्रैमोनियम की तुलना)
- i बेल मे तेज प्रलाप (मस्तिष्क में रक्त-सचय) होता है
- ii हायोसाएमस मे तंद्रा, बुदबुदाना होता है
- iii स्ट्रैमोनियम मे नाचना, गाना, हसना, मारना, अट-सट बकना होता है

(२) ऐंठन होना और हट जाना (Clonic convulsions)

(३) काल्पनिक वस्तुओं को देखना

(४) रोगी मे ईर्ष्या होना (Jealousy)

(५) रोगी का शकाशील होना (Suspicious)

(६) रोगी का निर्लज्ज होना (Shamelessness)

(७) रोगी को कामोन्माद होना (Venereal desire)

(८) टाइफॉयड मे हायो० के लक्षण —अचेत परन्तु आँखें खोले रखता है, बिस्तर को अंगुलियो से कुरेदता है, बड़बड़ाता है

(९) लेटने से खांसी बढ़ती है

(१०) अनिद्रा होना

(१) मस्तिष्क की उत्तेजना (मस्तिष्क की उत्तेजना मे बेलाडोना, हायोसाएमस तथा स्ट्रैमोनियम की तुलना)—यह औषधि मस्तिष्क की उत्तेजना मे काम आती है। इसका एक बहुत मजेदार अनुभव डा० डब्लू० एस० मिल्स को हुआ। वे अपने एक रोगी को कुछ बून्द हायोसाएमस डाल कर दे रहे थे। उसे

इसका जायका वहुत बुरा लगा। उसका उत्साह वढाने के लिये डाक्टर मिल्म ने इस औषधि के मूल-अर्क के कुछ चम्मच रोगी के सामने पी लिये। इसका उनके मन पर अजीव प्रभाव हुआ। उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि उनमे कुछ भार नही है, मानो वे हवा मे चल रहे हैं। सिर मे हल्कापन आ गया। इच्छा हुई कि खूब हसें, खूब चिल्लायें। वेहूदगी की वातें और काम करने की प्रवल भावना होने लगी, अपने को कावू रखना कठिन हो गया। यह सोच कर कि उन पर कितनी भारी जिम्मेवारी है, वे अपने पर नियन्त्रण रखने की कोशिश करते रहे, परन्तु एकदम उच्छृखल होने की भावना प्रवल होती गई। जी किया—खूव हसें, चिल्लायें और आनन्द मनाए। शरावी की-सी उच्छृखलता ने घेर लिया। अपने अधीन काम करने वालो के सामने ऐसी वेहूदगी करने से वचने के लिये वे वाथ-रूम मे जा घुसे, और शीशे के सामने खडे होकर तरह-तरह के मुह बनाते रहे। इससे स्पष्ट होता है कि इस औषधि का मस्तिष्क की उत्तेजना पर कितना भारी प्रभाव पडता है। क्योकि स्वस्थ-व्यक्ति पर इसका प्रभाव मस्तिष्क को उत्तेजित कर देना है, मनोविकारो को उभार देना है, इसलिये होम्योपैथिक-दृष्टि से जहाँ ऐसे मनोविकार हो, वहाँ यह उन्हें शान्त कर देता है। इस प्रकार की मानसिक-उत्तेजना मे मुख्य रूप से तीन औषधिया है जिनकी पारस्परिक-तुलना करना उचित है, जिन्हें डा० नैश ने मानसिक-उत्तेजना का 'त्रिक' कहा है। ये तीन हैं **बेलाडोना, हायोसाएमस** तथा **स्ट्रैमोनियम**।

1 **बेलाडोना, हायोसाएमस तथा स्ट्रैमोनियम की मस्तिष्क की उत्तेजना मे तुलना**—ये तीनो औषधियाँ मानमिक-उन्माद (Delirium) मे काम आती हैं, इसलिये इन्हें 'उन्माद का त्रिक' (Trio of delirium remedies) कहा जाता है। इन तीनो के उन्माद का वर्णन नीचे दिया जा रहा है

बेलाडोना का उन्माद (Belladonna delirium)—किसी औषधि का इतना तेज उन्माद नही होता जितना **वेलाडोना** का। इसका मुख्य-रूप मस्तिष्क मे रक्त का सचय हो जाना, दिमाग़ मे खून चढ जाना है। गर्दन की धमनी फडकती है, चेहरा गर्मी से तमतमाता है, लाल हो जाता है, आखें लाल हो जाती हैं। जैसे ही मस्तिष्क मे खून कम हो जाता है, ये लक्षण भी कम हो जाते है। पीला चेहरा होने पर भी इसका उन्माद हो सकता है, परन्तु मुख्य-तौर पर चेहरा लाल और तमतमाता ही रहता है, ऊपर के होठ तक सूज जाते हैं।

हायोसाएमस का उन्माद (Hyoscymus delirium)—इस औषधि का उन्माद इतना तेज नहीं होता जितना **बेलाडोना** का। अगर तेज उन्माद होता भी है, तो कुछ देर वाद ढीला पड जाता है। **बेलाडोना** मे उन्माद की

तेजी प्रधान है, उन्माद की कमी गौण है, हायोसाएमस मे उन्माद की कमी मुख्य है, तेजी गौण है। शुरु-शुरु मे अगर रोगी मे प्रचडता पायी भी जाय, तो धीरे-धीरे वह प्रचडता कम होती जाती है, कमजोरी बढती जाती है, बढते-बढते बेहोशी की-सी हालत आ जाती है। रोगी ऐसी अवस्था मे पहुच जाता है कि ओपियम तथा हायोसाएमस मे भेद करना कठिन हो जाता है। बेलाडोना का चेहरा लाल, हायोसाएमस का पीला, धसा हुआ होता है, बेलाडोना का रोगी बलिष्ट और हायोसाएमस का रोगी कमजोर होता है। हायोसाएमस मे हल्का प्रलाप होता है, रोगी बुदबुदाता है, तन्द्रा मे रहता है।

स्ट्रैमोनियम का उन्माद (Stramonium delirium)—यह भी उत्कट उन्माद की दवा है। रोगी गाता है, हसता है, मुह बनाता है, सीटी बजाता है, चिल्लाता है, कभी दीन-भाव से प्रार्थना करता है, कभी गाली बकने लगता है। इसका प्रधान-लक्षण बकना है, बोलता ही जाता है, बोलता ही जाता है, कविता बनाता है, बिस्तर मे उठ कर भागता है।

ii **बेलाडोना, हायोसाएमस तथा स्ट्रैमोनियम की उन्माद के समय ज्वर मे तुलना**—बेलाडोना मे बहुत बुखार होता है, हायोसाएमस मे या तो बुखार होता ही नहीं, या बहुत कम होता है, स्ट्रैमोनियम इन दोनो के बीच मे है, न बहुत ज्यादा न बहुत कम।

iii **बेलाडोना, हायोसाएमस तथा स्ट्रैमोनियम की उन्माद के समय हिंसात्मकता मे तुलना**—सब से ज्यादा हिंसात्मकता स्ट्रैमोनियम मे पायी जाती है, उसके बाद बेलाडोना मे, और तीनो मे सबसे कम हायोसाएमस मे। इन तीनो औषधियो की पागलपन मे एक-दूसरे के सम्बन्ध मे यह स्थिति है। 'हिंसात्मकता' (Violenoe) की दृष्टि से हायोसाएमस का स्थान तीनो मे नीचे है। हायोसाएमस के पागलपन मे हिंसात्मकता नही है। कभी-कभी रोगी हिंसात्मक-प्रवृत्ति का हो जाता है, परन्तु यह प्रवृत्ति दूसरे पर हमला करने के स्थान मे आत्मघात करने का रूप धारण करती है। रोगी कभी-कभी इकला बैठा अट-सट बकता रहता है, और कभी-कभी इकला बैठा रहता है, कुछ बोलता नही है।

(२) **ऐंठन होना और हट जाना (Clonic convulsions)**—डा० एच० एन० गुएरेन्सी का कथन है कि इस औषधि मे शरीर की हर मास-पेशी मे ऐंठन होती है, आख से लेकर अगूठे तक मे फटकन होती है। चाहे मृगी की ऐंठन हो, चाहे किसी अग की बिना मृगी के फडकन हो, सब प्रकार की ऐंठन मे इस औषधि से लाभ होता है। इसकी ऐंठन इतनी प्रबल नहीं होती जैसी **सिक्यूटा** की होती है। बच्चो को डर से, प्रसूता को बच्चा जनने के समय ऐंठन पडने लगती है। क्योंकि इस औषधि से मस्तिष्क की उत्तेजना होती है

इसीलिये मस्तिष्क की उत्तेजना में ऐंठन भी पड़ जाती है परन्तु वह ऐंठन स्थायी नहीं रहती, हल्के ढंग की ऐंठन-चकटन होती है जिस में इससे लाभ होता है।

(३) काल्पनिक वस्तुओं को देखना—रोगी इकला बैठा-बैठा कुछ बुद-बुदाया करता है। कल्पना करता है कि कोई व्यक्ति उसके पास बैठा है, उनसे वह बातें करता है। कभी-कभी जो लोग मर गये हैं उनसे बतियाता है। अपनी मृत बहन को, मृत पत्नी को पास बैठा कर उनसे बात करने लगता है, ऐसे बात करता है जैसे वे जीवित हों। कल्पना में उन वस्तुओं और व्यक्तियों को देखता है जिनकी कोई सत्ता नहीं होती। अपने सम्बन्ध में भी आधारहीन बातों की कल्पना किया करता है।

(४) रोगी में ईर्ष्या होती है (He is jealous)—रोगी ईर्ष्यालु होता है। डा० टायलर ने एक बच्चे का उल्लेख किया है जो अत्यन्त ईर्ष्यालु था। जिस व्यक्ति से उसकी बहन की सगाई हुई थी उसे देख कर वह जलता था। जब भी वह व्यक्ति घर आता था, तो वह शरारतों पर आमादा हो जाता था, यहां तक कि पैंट में पाखाना कर देता था। हायोसाएमस में यह लक्षण मौजूद है—मानसिक-उत्तेजना में अपने-आप पाखाना हो जाना। उसे हायो-साएमस C M की एक मात्रा दी गई, उसके बाद न उस में ईर्ष्या रही, इस प्रकार पाखाना करना भी उसने छोड़ दिया।

(५) रोगी शंकाशील होता है (He is suspicious)—रोगी किसी पर विश्वास नहीं करता, हर-एक को सन्देह की दृष्टि से देखता है। दवा पीने से भी इन्कार कर देता है, कहता है, उसे मारने के लिये ज़हर दिया जा रहा है। बेटा, बेटी, स्त्री—सब को शंका की दृष्टि से देखता है। इस औषधि के पागलपन में यह इसका चरित्रगत-लक्षण है। कल्पना करता है कि लोग उसके पीछे पड़े हुए हैं, उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं, सब उसके विरुद्ध हो गये हैं, उसके मित्र मित्र नहीं रहे।

(६) रोगी निर्लज्ज हो जाता है (He is shameless)—रोगी नंगा हो जाता है, कपड़े उतार फेंकता है। डा० कैन्ट कहते हैं कि इस निर्लज्जता का कारण यह है कि उसकी त्वचा के ज्ञान-तंतु (Nerves) इतने संवेदनशील (Sensitive) हो जाते हैं कि शरीर कपड़े का स्पर्श सहन नहीं कर सकता, इस-लिये वह कपड़ा उतार फेंकता है, नंगा हो जाता है। उन्माद तथा बेहोशी में वह ऐसा किया करता है, उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता कि वह कपड़ा उतार कर नंगा हो गया है। ऐसा लगता है कि उसे किसी से शर्म नहीं, परन्तु उसे स्वयं इस बात का भान नहीं होता कि वह निर्लज्जता कर रहा है, न उसे इस बात का भान होता है कि वह कुछ असाधारण काम कर रहा है, वह कपड़ा

तो शरीर के ज्ञान-तंतुओ की सवेदन-शीलता के बढ जाने के कारण उतार कर फेंक रहा होता है। ज्वर मे कपडे को न सह सकना इसका विशेष-लक्षण है।

(७) **रोगी को कामोन्माद होता है (He has strong venereal des re)**—रोगी के नगा होने के एक कारण का तो हमने अभी उल्लेख किया, परन्तु यह नगापन कामोन्माद के कारण भी हो सकता है। जो भी कोई उसके कमरे मे आता है उसी को अपने गोपनीय अग खोल कर दिखलाता है। स्त्री हो, पुरुष हो—दोनो मे यह कामोन्माद हो सकता है। यह बात उन्ही लोगो के लिये कही जा रही है जो स्वस्थ अवस्था मे निर्लज्ज न हो, रोग की अवस्था मे ऐसे लक्षण प्रकट होने लगें।

(८) **टाइफॉयड मे हायोसाएमस के लक्षण—अचेत परन्तु आखें खोले रखता है, बिस्तर को अगुलियो से कुरेदता है, बड़बडाता है**—टाइफॉयड मे **हायोसाएमस** के लक्षण प्रकट हुआ करते हैं। रोगी अचेत पडा रहता है, आखें खोले रखता है, चारो तरफ ताकता है, परन्तु कुछ ज्ञान नही होता। हाथ उठा कर ऐसी हरकत करता है मानो कुछ पकड रहा है। बिस्तर को अगुलियो से कुरेदता है, मुह से कुछ बुदबुदाता है, कभी-कभी चुप भी पडा रहता है। प्रश्न किये जाने पर उत्तर देता-देता सो जाता है या अचेत हो जाता है। दातो पर मैल जमा हो जाती है, जैसा टाइफॉयड मे हुआ करता है। खसरा या चेचक मे इस प्रकार के टाइफॉयड के लक्षण मिलने पर इससे असीम लाभ होता है।

(९) **लेटने से खांसी बढना**—रोगी के टेटवे—तालु की जिव्हा—(Uvula) सूज जाती है, इसलिये जब वह लेटता है तब इस टेटवे के तालु मे लगने से खुश्क खासी उठने लगती है। लेटने से खासी का बढना इसका विशेष-लक्षण है। **ड्रौसरा** मे भी यह लक्षण है। उसमे ज्यो ही रोगी का सिर तकिये से लगता है, वह खासना शुरु कर देता है। रोगी का गला देख लेना चाहिये, अगर तालु की जिव्हा (टेटवे) के सूजने के कारण उसके तालु को स्पर्श से खासी उठती हो, तो **हायोसाएमस** लाभ देगा। **फेरम मेट** और **मैंगनम** मे लेटने से खासी अच्छी होती है, बैठने से बढ जाती है।

(१०) **अनिद्रा**—व्यापारी लोगो को व्यवसाय की परेशानियो से जब नीद नहीं आती तब इस से लाभ होता है। प्राय ये परेशानिया कल्पित होती हैं। इस औषधि मे काल्पनिक बातो के कारण रोग हो जाने के लक्षण पर हम पहले लिख आये हैं।

(११) **शक्ति**—३०, २००

हाइपेरिकम (HYPERICUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मासपेशियो तथा उनके सिरो की चोट मे आर्निका, रस टॉक्स, कैलकेरिया कार्ब का प्रयोग (Bruised feeling in muscles and tendons)

(२) स्नायु-ततुओ की चोट मे हाइपेरिकम तथा लीडम (Injury to nerves—Hypericum and Ledum are Arnica of nerves)

(३) हाइपेरिकम का दर्द चोट खाये स्नायु से स्नायु-मार्ग मे जाता है (Shooting pain along nerves)

(४) लीडम का क्षेत्र तभी तक है जब तक स्नायु पर लगी चोट अभी आगे नहीं बढी

(५) लीडम होम्योपैथी की एन्टी-टेटेनस औषधि है

(६) गिरने आदि से मेरु-दड के निचले भाग मे चोट (Injury in coccyx) पर हाइपेरिकम

(७) सर्जरी के ऑपरेशन के बाद स्टैफिसैग्रिया या स्ट्रौन्टियम देना चाहिये

(८) हड्डी पर लगी चोट पर रूटा उपयोगी है

(९) जख्म को सड़ने से रोकने के लिये कलैंडुला दोष-नाशक (Antiseptic) है

(१०) रक्त-विकार के लिये गन-पाउडर 3x उपयोगी है, इस से दो दिन पहले हिपर २०० दे देना चाहिये

शरीर मे चोट मांस-पेशियो तथा मास-पेशियो के सिरो (Muscles and tendons) पर लग सकती है, या स्नायु-ततुओ (Nerves) के कुचले जाने मे लग सकती है। इन सब प्रकार की चोटो के लिये होम्योपैथी मे अलग-अलग दवायें हैं जिनमे से मुख्य-मुख्य का हम वर्णन करेंगे।

(१) मास-पेशियो तथा उनके सिरों की चोट मे आर्निका, रस टॉक्स, कैलकेरिया कार्ब का प्रयोग (Bruised feeling in muscles and tendons)—चोट लगने की शुरु की अवस्था मे जब चोट का प्रहार मास-पेशियो तथा उनके सिरो तक सीमित हो, तब आर्निका दिया जाता है। रोगी को मास-पेशियो के कुचले जाने का-सा अनुभव (Bruised feeling) होता है। इसका प्रभाव-क्षेत्र चोट के शुरु मे है, दर्द हो, कुचले जाने का-सा दर्द हो। इस औषधि के बाद यह कुचले जाने का-सा दर्द ठीक हो जाता है, परन्तु मास-पेशियो पर की चोट का असर फिर भी बना रहता है, उनमें थकान, भारीपन, मोच का-सा अनुभव होता है। **इस समय आर्निका** के बाद **रस टॉक्स** का क्षेत्र

आ जाता है जिससे मासपेशियो की कमज़ोरी दूर हो जाती है। इसके बाद भी मासपेशियो मे पहले-सी दृढता नही आती, दृढता लाने के लिये **कैलकेरिया कार्ब** दिया जाता है। इस प्रकार आर्निका, रस टॉक्स, कैलकेरिया—यह क्रम (Series) है जिसमे से मासपेशियो की चोट खाये हुए रोगी को गुज़ार देने की आवश्यकता पड सकती है। इन तीनो का एक-दूसरे के पीछे मासपेशी की बची-खुची कमज़ोरी को दूर कर देने का सम्बन्ध है। इस प्रकार की त्रिक-शृङ्खलाओ (Series of trios) का वर्णन हमने कैली सल्फ मे किया है।

(२) स्नायु-तंतुओ की चोट मे हाइपेरिकम तथा लीडम (Injury to nerves—Arnica of nerves)—जिस प्रकार मास-पेशियो की चोट मे आर्निका दी जानी चाहिये, उसी प्रकार स्नायु-ततुओ की चोट मे हाइपेरिकम या लीडम दी जानी चाहिये। कई लोग चोट का नाम सुनते ही आर्निका लेकर दौडते है। यह गलत है। **आर्निका** की चोट मास-पेशियो तक सीमित है। स्नायु-ततुओ की चोट मे **हाइपेरिकम** तथा लीडम निर्दिष्ट दवाए हैं। हाइपेरिकम को विशेषत तथा लीडम को साधारणत 'स्नायु-ततुओ का आर्निका' (Arnica of nerves) कहा जा सकता है। हाइपेरिकम तथा लीडम यद्यपि स्नायु-ततुओं की चोट की दवायें हैं, तो भी इन दोनो मे भेद है। वह क्या है?

(३) हाइपेरिकम का दर्द चोट खाये स्नायु से स्नायु-मार्ग मे जाता है (Shooting pain along nerves)—जब हाथ या पैर की अगुलियो मे चोट लग जाती है, वे पिस जाती है या छिद जाती हैं, नाखून पर चोट लग जाती है, जब स्नायु पर हथौडे की चोट पड जाती है, और उस चोट से दर्द उठ कर स्नायु के मार्ग की तरफ जाता है, तब समझ लेना चाहिये कि चोट मे 'स्नायु' (Nerve) पर आघात पहुचा है। कुत्ता-बिल्ली ने दात मार दिया और दर्द के स्थान से स्नायु के मार्ग मे, स्नायु के लम्बे सूत्र मे दर्द होने लगा, तब हाइ-पेरिकम से लाभ होगा, तब आर्निका का विचार नही करना चाहिये।

(४) लीडम का क्षेत्र तभी तक है जब तक स्नायु पर लगी चोट अभी आगे नहीं बढ़ी—इस औषधि का काम 'प्रतिरोधक' (Preventive) है। हाथ की अगुलियो मे चोट लगी, स्नायु छिद गये, कील पर पाव पड गया, सूई चुभ गई, नाखून मे फास लग गई, लोहार के हाथ पर हथौडा पड गया, जूता सीते हुए मोची के हाथ मे सूआ चुभ गया, चूहे-बिल्ली ने काट लिया परन्तु अभी स्नायु-मार्ग से दर्द ऊपर तक नही होने लगा। इस हालत मे लीडम देने से रोग आगे नही बढता। स्नायु पर चोट लगते ही लीडम का प्रयोग करना चाहिये, अगर उस समय प्रयोग नही किया और दर्द स्नायु-मार्ग से ऊपर चढने लगा, तब **हाइपेरिकम** का क्षेत्र आ गया। **लीडम** पहले, **हाइपेरिकम** बाद को, क्षेत्र दोनो का स्नायु पर लगी चोट है।

(५) लीडम होम्योपैथी की एन्टी-टैटेनस औषधि है (Anti-tetanus)—चोट लगने पर अगर उसी समय लीडम नही दिया गया, तो टैटेनस हो सकता है, जबडा बैठ सकता है जिसे लौक-जॉ कहते हैं। घोडे के पाव मे कील चुभ जाय, और चुभे उसके स्नायु-स्थान मे, तो उसे भी टैटेनस हो सकता है। अगर इस समय लीडम दे दिया जाय, तो पशुओ को भी टैटेनस से बचाया जा सकता है। अगर लीडम का क्षेत्र निकल गया, और कील आदि चुभने के बाद जिस स्थान पर स्नायुओ पर चोट पडी है वहा से स्नायु-मार्ग मे दर्द चढने-उतरने लगा, तो **हाइपेरिकम** देना पडता है। चोट लग जाने से जबडा बैठना (Lock-jaw) या धनुष्टकार (Opisthotonos) आदि भयकर तकलीफो का हो जाना **हाइपेरिकम** से बचाया जा सकता है। इन उपद्रवो मे लोग चोट लगी है—यह सुनकर **आर्निका** दे दिया करते हैं, परन्तु उस से कोई लाभ नही होगा। 'लॉक-जॉ' के एक रोगी का उल्लेख क्लार्क की 'डिक्शनरी ऑफ प्रेक्टिकल मेटीरिया मैडिका' मे करते हुए लिखा है कि एक लडके को घर के चूहे ने अंगुली मे काट खाया। कुछ देर बाद लडके का जबडा अकड गया, वह बोल भी नही सकता था, गर्दन भी अकड गई। उसे ५०० शक्ति की **हाइपेरिकम** पानी मे डाल कर पहले हर १५ मिनट बाद दी जाती रही, फिर दो-दो घटे के बाद। अगले दिन तक लडका रोग-मुक्त हो गया। एस्पिरीन और मौरफिया से स्नायु के चोट की दर्द शान्त हो जाती है, परन्तु **हाइपेरिकम** जिस प्रकार चोट खाये हुए स्नायु-मडल को शान्त कर देता है, दर्द दूर कर देता है, उसका कोई मुकाबिला नही है।

(६) गिरने आदि से मेरु-दड के निचले भाग मे चोट (Injury in the coccyx) **के लिये हाइपेरिकम**—कभी-कभी लोग सीढी पर चढते हुए गिर जाते हैं, अन्य किसी अवस्था मे भी गिर सकते हैं। उस समय मेरु-दड के निचले भाग (Coccyx) मे चोट लगने से शरीर मे दर्द होने लगता है। इस समय **हाइपेरिकम** का लक्षण यह है कि चोट के स्थान से दर्द उठ कर शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे होने लगे। ऐसे दर्द मे **आर्निका** या **रस टॉक्स** से लाभ नही होगा। **रस टॉक्स** से लाभ तब होगा जब पीठ का दर्द बैठती हुई हालत से उठने के समय हो। बैठे हुए दर्द नही होता, उठ कर चलने पर दर्द नही होता, बैठी हालत मे से उठते समय दर्द होता है। तब **रस टॉक्स** देना चाहिये, और कुछ दिन बाद **कैलकेरिया कार्ब**।

(७) सर्जरी के ऑपरेशन के बाद स्टैफिसैग्रिया या स्ट्रौन्टियम देना चाहिये—सर्जरी के ऑपरेशन के बाद शुद्ध शल्य-क्रिया की गई हो, सफाई के औज़ारो से काट-छाट की गई हो, तब **स्टैफिसैग्रिया** देने से जख्म जल्दी ठीक हो जाता है, जब सर्जन ने बहुत ज्यादा काट-छाट की हो, रोगी कमजोरी हो गया

हो, खून बहुत बहा हो, तब कई लोग **कार्बो वेज** देने की सोच सकते हैं, परन्तु डा० केन्ट का कहना है कि इस समय सर्जन के लिये **स्ट्रोन्टियम** ही **कार्बो वेज** का काम करता है। **स्ट्रोन्टियम** का काम काट-छाट से रोगी को जो आघात—शॉक—पहुचा है उसका प्रतीकार कर देना है।

(८) **हड्डी पर लगी चोट पर रूटा उपयोगी है**—अगर चोट का असर हड्डी पर, अस्थि-परिवेष्टन (Periosteum) पर हुआ है, तब **रूटा** उपयोगी है।

(९) **ज़ख्म को सडने से रोकने के लिये कैलेंडुला 'विष-दोष-नाशक' (Antiseptic) है**—**कैलेंडुला** गेंदे की पत्तियो से बनती है। जब शरीर का कोई स्थान चोट लगने से छितर-बितर जाता है, तब कैलेंडुला के मूल-अर्क को पानी मे घोल कर उससे धोना चाहिये। घाव सडने नही पाता। इसके साथ शक्तिकृत **कैलेंडुला** भी देना चाहिये। इसे होम्योपैथी का 'एन्टी-सैप्टिक'—'विष-दोष-नाशक'—यह नाम दिया गया है। इसकी मरहम भी बनती है जिसे सडने वाले घाव पर लगाया जाता है। जर्राहो की कृपा से जो घाव सडने लगते हैं उनको यह ठीक कर देता है।

(१०) **रक्त-विकार के लिये गन-पाउडर 3x उपयोगी है, इस से दो दिन पहले हिपर २०० दे देना चाहिये (Gun-powder fot blood poisoning)**—कभी-कभी रक्त मे विकार हो जाता है, जिस से त्वचा पर छोटी-छोटी फुन्सिया हो जाती हैं, रक्त-विकार के कारण कुछ ज़ख्म-से हो जाते हैं, जो ठीक होने मे नही आते, सडने लगते हैं। ऐसी हालत मे कैनन उपचेर के कथनानुसार **हिपर सल्फ** २०० की एक मात्रा देकर दो दिन बाद **गन पाउडर 3x** की चार-चार घटे के बाद एक-एक मात्रा प्रतिदिन देने से ८-१० दिन मे त्वचा साफ हो जाती है। एक स्त्री को टीका लेने के बाद चेहरे पर लाल-लाल दाने (Rash and red pimples) निकल आये थे, जो **गन पाउडर** से ठीक हो गये, एक स्त्री की टाग गिट्टो से घुटनो तक ज़ख्मो से भर गई थी जिनमे से पीप रिसता रहता था। वह बेचारी चल-फिर भी नही सकती थी। वह भी **गन पाउडर** से ठीक हो गई। इन रोगियो का दृष्टात डा० बार्कर ने अपनी पुस्तक 'मिरेकल्स ऑफ हीलिंग' मे दिया है।

शक्ति—मूल-अर्क को पानी के साथ मिलाकर उसका बाहरी प्रयोग करना चाहिये, भीतर ३, ६, ३०, २०० शक्ति की औषधि देनी चाहिये।

इग्नेशिया (IGNATIA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) रंज से रोग, रुदनशीलता तथा चुपचाप एकान्त मे दु ख-सहना, ठंडी आहें भरना —रुदनशीलता मे इसकी पल्स तथा नैट्रम म्यूर से तुलना
(२) पुरुषों के लिये नक्स, स्त्रियों के लिये इग्नेशिया—मानसिक-स्वभाव के सम्बन्ध में दोनों की तुलना
(३) मानसिक-लक्षणों का लगातार बदलना (Remedy of moods)
(४) लक्षणों का परस्पर-विरोधी होना
(५) हिस्टीरिया रोग की औषध—ग्लोबस हिस्टीरिकस (Globus hystericus)
(६) ऐंठन, अकड़न (Convulsions)
(७) सिर मे कील घुस रहा का-सा दर्द उठना और दर्द वाली तरफ लेटने से आराम
(८) खाने पर भी पेट खाली महसूस होना
(९) ज्वर मे शीत-अवस्था मे प्यास लगना

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणों मे कमी (Better)
*गर्मी से रोग मे कमी
*दर्द वाली जगह को दबाने से रोग मे कमी
*ठोस वस्तु आसानी से निगल सकना, द्रव निगलने मे कष्ट होना जो एक विचित्र-लक्षण है

लक्षणों मे वृद्धि (Worse)
*बाहरी हवा से रोग मे वृद्धि
*धूम्रपान से रोग मे वृद्धि
*मानसिक आवेग से वृद्धि
*द्रव-वस्तु निगलने से कष्ट होना (विचित्र-लक्षण है)

(१) रंज से रोग, रुदनशीलता तथा चुपचाप एकान्त मे दु ख सहना, ठंडी आहें भरना—रुदनशीलता मे इसकी पल्सेटिला तथा नैट्रम म्यूर से तुलना—
किसी शोक से या दु ख से अगर मानसिक-रोग उत्पन्न हो जाय, तब यह सर्वोत्तम औषधि है। शोक तथा दु ख मे क्या फर्क है ? किसी पति की पत्नी मर जाय, पत्नी का पति मर जाय, माता-पिता का बच्चा मर जाय, तब शोक होता है, किसी प्रेमी का प्रेमिका से विछोह हो जाय, प्रेमी से मिलना न हो सके, तब दु ख होता है। शोक तथा दु ख दोनों मे रंज होता है, मन पर आघात पहुंचता है, और व्यक्ति एकान्त मे बैठा शोक या दु ख सहा करता है, सब से अपने शोक या दु ख की कहानी कहता नही फिरता, जी मे घुटता है, बैठा-बैठा आंसू बहाया करता है, ठंडी आहें भरता है। इस प्रकार अपने रंज को अपने भीतर समेट कर अन्दर-अन्दर घुटते रहने और ठंडी आहें भरते रहने से रोगी को रात को नींद भी नही आती, छटपटाता है। घरों मे रोज प्राय ऐसे दृष्टांत पाये जाते हैं। लड़की है बड़ी समझदार, परन्तु न-जाने क्यों उसका

एक विवाहित व्यक्ति से प्रेम हो गया है। वह अपने मन को समझाती है, मन को कहती है—अरे मना, यह ठीक नही है, परन्तु मन नही मानता, दिन-रात उसी के प्रेम मे डूबी रहती है। मा के सिवाय किसी से अपना दुखडा नहीं कहती। मा से कहती है मा, मुझे क्या हो गया है, उस व्यक्ति को मैं अपने मन मे से निकाल ही नही सकती। ऐसी रजीदा मानसिक-अवस्थाओ को यह औषधि शान्त कर देती है, रोगी दु ख से छुटकारा पा जाता है, नीद भी आने लगती है। अगर रोग नया है तव तो वहुत जल्द मानसिक-स्थिरता आ जाती है, अगर पुराना हो गया हैं तो **नैट्रम म्यूर** रोग को ठिकाने लगा देता है। दु ख-जनित रोग अगर वहुत पुराना हो जाय, और रोगी अत्यन्त निर्वल हो जाय—Chronic and long lasting effects of grief—तव **ऐसिड फॉस** लाभ करता है। अगर किसी रोगी का स्वभाव आहें भरना हो गया हो, तो उसके आधार मे कोई नया या पुराना दु ख जरूर छिपा होगा, और इनमे से किसी दवा से लाभ होगा।

रुदनशीलता मे इग्नेशिया तथा पल्स की तुलना—ये दोनो औषधिया एक-समान दु खी होती हैं, रुदनशील होती हैं, रजीदा होती हैं, परन्तु **इग्नेशिया** तो अन्दर- अन्दर घुटती रहती है, **पल्स** मे यह बात नही है। **पल्स** अपने दु ख की कहानी सब को कहती फिरती है, और दूसरो की सहानुभूति पाने से उसका दु ख घट जाता है।

रुदनशीलता मे इग्नेशिया तथा नैट्रम म्यूर की तुलना—ये दोनो भी रुदन-शील देविया हैं। **नैट्रम म्यूर** अपने दु ख के कारण दिन-रात रोया करती है, दु ख को भुला नही सकती। स्वभाविक तौर पर लोग उसे दु खी देख कर उसके साथ समवेदना, सहानुभूति प्रकट करने लगते हैं, परन्तु इस सहानुभूति को वह वर्दाश्त नही कर सकती, वह सहानुभूति पाकर क्रुद्ध हो उठती है, उसे सहानु-भूति पाना वुरा लगता है। **इग्नेशिया** हाल के शोक, दु ख मे लाभकारी है, अगर रोग पुराना हो जाय, तो इसके स्थान मे **नैट्रम म्यूर** अथवा **ऐसिड फॉस** लाभकारी होते है। **इग्नेशिया** का क्रौनिक **नैट्रम म्यूर** है।

(२) **पुरुषो के लिये नक्स और स्त्रियो से लिये इग्नेशिया—मानसिक-स्वभाव के सम्बन्ध मे दोनो की तुलना**—हनीमैन का कथन है कि यद्यपि इन दोनो औषधियो मे स्ट्रिकनिया है और दोनो की वानस्पतिक-रचना एक-सी है, तो भी इन दोनो के मानसिक-स्वभाव मे भेद है। डा० क्लार्क का कथन है कि यद्यपि **इग्नेशिया** के वीजो मे **नक्स** (कुचला) के वीजो की अपेक्षा स्ट्रिकनिया की मात्रा ज्यादा होती है, स्ट्रिकनिया ज्यादा होने मे **नक्स** की अपेक्षा **इग्नेशिया** के स्वभाव मे तेजी होनी चाहिये, तो भी **इग्नेशिया** की अपेक्षा **नक्स** का स्व-भाव ज्यादा तेज होना है। इस से सिद्ध होता है कि औषधियो की रचना से

क्या घटक-तत्व है—यह बात महत्व की नही है, महत्व की बात यह है कि औषधि का स्वस्थ-व्यक्ति पर 'परीक्षण' (Proving) से क्या प्रभाव पडता है, क्या लक्षण उत्पन्न होते हैं। स्वस्थ-व्यक्ति पर औषधि जो लक्षण उत्पन्न करती है, किसी भी रोग मे वह औषधि उन लक्षणो को दूर करती है—यही होम्यो-पैथिक सिद्धान्त है।

लक्षणो के आधार पर यह देखा गया है कि स्नायु-प्रधान (Nervous) पुरुषो के रोगो के लिये **नक्स** तथा स्नायु-प्रधान स्त्रियो के रोगो के लिये **इग्नेशिया** उपयुक्त है। परन्तु इन दोनो के मानसिक-लक्षण एक-दूसरे से भिन्न हैं। **नक्स** तेज़ मिजाज़ का है, बडा सावधान और ईर्ष्यालु प्रकृति का है, जोशीला है। उसे रुष्ट करना बहुत सहज है, और रुष्ट होते ही वह फौरन जवाब देता है, देर नही लगाता, बडा बुद्धिमान् होता है। **इग्नेशिया** भी बुद्धि मे कम नही होती, बडी नाज़ुक मिजाज़ होती है, परन्तु **नक्स** से अधिक सहनशील होती है। छोटी-सी बात भी उसके जी को लग जाती है, परन्तु **नक्स** की तरह झट बदला लेने के स्थान मे अपने दु ख या अपमान पर चुपचाप बैठे सोचा करती है। वह एकान्त मे जा बैठती है, रोती है, आहें भरती है, किसी से बोलती नही, और अपने वास्तविक या काल्पनिक दु ख को अपने इष्ट मित्रो से भी छिपाये रखती है।

(३) **मानसिक-लक्षणो का लगातार बदलना** (Remedy of moods)—रोगी अभी हस रहा है तो दूसरे क्षण रोने लगता है, अभी प्रसन्न अभी अप्रसन्न, अभी शान्त बैठा है कुछ देर बाद आग-बबूला हो उठता है, कहा नही जा सकता कि कब उसकी मूड बदल जायगी। लोग उसके पास जाते हुए घब-राते हैं, समझ नही पाते कि उससे कैसे बात की जाय, क्योकि उसकी मानसिक वृत्ति एक-सार नही रहती, हसना-रोना, खुशी-रज, शान्ति-क्रोध इनमे से कौन, कब उसे आ घेरेगा—यह कहा नही जा सकता। दूसरी कोई औषधि ऐसी नही है जिसमे इस प्रकार चित्त-वृत्ति का परिवर्तन होता रहे। ऐसी चित्त-वृत्ति मे यह औषधि लाभ करती है।

(४) **लक्षणों का परस्पर विरोधी होना**—इसमे विलक्षणता यह है कि इसमे परस्पर-विरोधी लक्षण पाये जाते हैं। जो लक्षण एक-दूसरे से मेल नही खाते, वे एक-दूसरे के साथ मिलते दीख पडते हैं। उदाहरणार्थ

1. **सूजन में दबाने से आराम**—चिकित्सक रोगी की सूजन को देखकर समझता है कि उसे छूएगा तो रोगी को दु ख होगा, परन्तु वह आश्चर्य से देखता है कि सूजन को दबाने से रोगी को आराम आता है।

11 **टॉसिल मे ठोस वस्तु के निगलने से आराम**—गले की शोथ या टासिल मे रोगी कहता है कि जब वह ठोस वस्तु निगलता है तब उसे आराम

मिलता है, जब पानी आदि द्रव वस्तु निगलता है तब दु:ख होता है। कितनी विरुद्ध बात है, परन्तु इस मे **इग्नेशिया** लाभ करता है। **वैप्टीशिया** मे द्रव पीने से आराम और ठोस वस्तु खाने से दर्द होता है।

iii **सिर-दर्द मे दर्द वाली तरफ लेटने से आराम**—रोगी को कनपटी में कील चुभने का-सा दर्द होता है और दर्द वाली तरफ लेटने से आराम मिलता है। **कॉफिया** और **थूजा** मे भी सिर-दर्द मे कील की-सी चुभन होती है।

iv **अपच मे गरिष्ठ पदार्थों से आराम**—साधारणत अपच के रोगी को सुपच पदार्थ खाने को दिये जाते हैं, परन्तु इस औषधि का रोगी जब अचानक कुछ अपच पदार्थ खा लेता है—कच्ची गोभी, कच्चा प्याज़—तो उसका पेट ठीक हो जाता है। पेट एक तरह से हिस्टीरिया-ग्रस्त का-सा होता है।

v **खासने से खासी का बढ़ना**—प्राय खासने के वाद खासी का वेग घट जाता है, परन्तु यह रोगी जब खासता है तब खासता ही चला जाता है, खासते-खासते रोगी अकड जाता है। ऐसी अवस्था को यह औषधि दूर कर देती है।

vi **शीतावस्था मे ज्वर मे प्यास**—साधारण तौर पर ज्वर की जो शीतावस्था होती है उसमे सर्दी के कारण प्यास नही लगती। परन्तु इस औषधि के ज्वर मे शीतावस्था मे प्यास लगती है। ज्वर मे यह इसका विचित्र लक्षण है।

vii **खाने से पेट का खालीपन दूर न होना**—खाने से पेट का खालीपन दूर हो जाना चाहिये, परन्तु इसमे खाने पर भी पेट खाली-का-खाली महसूस होता है।

viii **कान मे आवाज़ें आना, शोर-गुल से ठीक होना**—जिन लोगो के कानो मे आवाज़ें आया करती हैं उनमे अगर शोर-गुल से आवाज़ें आना बन्द हो जाय तो यह औषधि उपयुक्त है।

ix **बवासीर मे चलने-फिरने से आराम**— बवासीर मे चलने-फिरने से रगड लगती है और रोगी को कष्ट होना चाहिए, परन्तु इस औषधि मे बवासीर की शिकायत मे रोगी को चलने-फिरने से आराम महसूस होता है।

x **दांत के दर्द मे खाते समय आराम**— दांत के दर्द मे खाने से दर्द बढता है, परन्तु इसमे रोगी जब खा रहा होता है, जब दांतो पर दवाव पड रहा होता है, तब उसे आराम लगता है, जब खा नही रहा होता तब दांतो मे दर्द होता है।

ये सब दृष्टान्त हमने यह स्पष्ट करने के लिए दिये हैं कि **इग्नेशिया** का रोगी विरोधी-लक्षणो का रोगी होता है।

(५) **हिस्टीरिया-रोग की महौषध—ग्लोबस हिस्टीरिकस**—डा० डनहम का कथन है कि कोई औषधि हिस्टीरिया के लक्षणो से इतनी अधिक नही

मिलनी जितनी यह औषधि मिलती है, इसीलिये हिस्टीरिया की यह महौषध है। डा० कैन्ट का कथन है कि हर हिस्टीरिया रोग को यह दूर नही करती, परन्तु ऐसी रोगिणी को यह ठीक कर देती है जो अत्यन्त बुद्धिमती हो, कोमल तथा मृदु स्वभाव की हो, नाजुक हो, परन्तु अत्यन्त भावुक हो, किन्ही कारणो से अत्यन्त उत्तेजित हो जाने से ऐसा व्यवहार करती हो जिने वे स्वय न समझ सकें। वे ऐसे काम करती हैं जिन्हे कर लेने के बाद उन्हें स्वय पश्चात्ताप होता है। जो शुद्ध हिस्टीरिया की रोगिणी होती है वे तो अडमड काम करके पछताने के स्थान पर खुश हुआ करती हैं। डा० क्लार्क का कथन है कि **इग्नेशिया** के विषय मे दो भ्रम दूर कर लेने चाहियें--एक तो यह कि यह औषधि केवल हिस्टीरिया की औषधि है, दूसरा यह कि हिस्टीरिया मे इसके सिवा दूसरी कोई औषधि नही है। इन सब बातो को ध्यान मे रखकर इसका हिस्टीरिया मे प्रयोग करना चाहिए।

रोगिणी के पेट से एक गोला गले मे (Globus hystericus) उठता अनुभव होता है, वह उसे निगलने की कोशिश करती है, परन्तु निगलने के बाद, वह गोला फिर ऊपर गले मे उठता प्रतीत होता है। रोगिणी को यह गोला बहुत परेशान करता है। प्राय यह गोला तब उठा करता है जब रोगिणी को किसी प्रकार का दुख होता है। पेट मे अफारा और सास लेने मे कष्ट होने के साथ अगर यह गोला उठे, तो **ऐसाफेटिडा** औषधि है, अगर तेज़ सिर-दर्द या मूर्छा के साथ यह गोला उठे तो **वेलेरियाना** औषधि है; अगर किसी दुख को अन्दर-ही-अन्दर दबा देने के बाद उठे तो **इग्नेशिया** औषधि है।

(६) **ऐंठन, अकड़न** (Convulsions)—मानसिक-कारणो से ऐंठन, पड जाने पर, डर से शरीर ऐंठ जाने पर इससे लाभ होता है। बच्चो को मार-पीट कर सुला देने पर, उन्हें डरा देने पर, उन्हें ऐंठन पड जाया करती है। किसी भी प्रबल उद्वेग से ऐसी हालत हो जाती है। इन सब मानसिक तथा उद्वेग के कारणो से ऐंठन हो तो इस से लाभ होता है।

(७) **सिर मे कील घुस रहा-सा दर्द उठना और दर्द वाली तरफ लेटने से आराम**—सिर-दर्द के इस लक्षण पर हम पहले भी लिख आये हैं। कनपटी मे ऐसा दर्द होता है मानो वहा कील घुस रहा है। यह लक्षण **कॉफिया** और **थूजा** में भी पाया जाता है। **इग्नेशिया** के रोगी को सिर-दर्द मे दर्दवाली तरफ लेटने से आराम मिलता है।

(८) **खाने पर भी पेट खाली महसूस होना**— खाने से हर-एक का पेट भर गया महसूस होता है। **इग्नेशिया** के रोगी को पेट खाली महसूस हुआ करता है, और खाने के बाद भी यह खालीपन का अनुभव बना रहता है।

(९) **ज्वर मे शीत-अवस्था मे प्यास लगना**— ज्वर मे इसका विचित्र-

लक्षण यह है कि रोगी को शीतावस्था मे प्यास लगती है, उत्ताप की अवस्था मे नही। प्राय मलेरिया मे ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं।

(१०) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i काच निकलना—इस औषधि मे भी नक्स की तरह बार-बार टट्टी जाने की इच्छा होती है, हर बार मल पूरा नही निकलता, परन्तु इसमे मल के लिये जोर लगाने पर काच निकल आती है, और काच निकलने के डर से रोगी जोर लगाते हुए घबराता है।

ii हिचकी—खाने-पीने के बाद और तमाखू की बू से हिचकी आने पर इससे लाभ होता है।

(११) शक्ति तथा प्रकृति—३०, २०० (हनीमैन का कथन है कि इसे प्रात. काल देना चाहिए। सोने से पहले देने से रोगी बेचैन हो जाता है। हनीमैन के अनुसार यह 'अनेक-कार्य-साधक'—Polychrest—औषधि है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

आयोडियम (IODIUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) रोगी हर समय खाता रहता है परन्तु दुबला होता जाता है (सूखा रोग)	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) भूख मे कष्ट बढे, खाने से घटे	*ठड या ठडी हवा से रोग घटना
(३) विश्राम से तकलीफें बढती और हरकत या काम मे लगे रहने से घटती हैं	*हरकत से रोग घटना *खाना खाने से रोग मे कमी
(४) शरीर सूखता जाता है परन्तु गिल्टियाँ बढ़ती जाती हैं, और गिल्टियो मे भी स्तन सूखते जाते हैं	
(५) त्वचा को छीलदेनेवाला स्राव,नाक से,आँख से, पुराने प्रदर का छील देने वाला स्राव	
(६) भूख न लगना (Anorexia)	
(७) आत्म-हत्या या किसी को मार डालने का विचार	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *गर्मी से परेशान होना
(८) भोजन का गैस बन कर दिन-रात डकार आना	*भूखा रहने से परेशान होना *आराम से परेशान रहना

(१) रोगी हर समय खाता रहता है परन्तु दुबला होता जाता है (सूखा रोग)—इस औषधि का मुख्य-लक्षण राक्षसी-भूख है। रोगी हर समय भूख

महसूस करता है। साधारण तौर पर जितना और जितने समय हम लोग खाते हैं, उससे उसकी सन्तुष्टि नही होती। बीच-बीच मे भी वह खाता रहता है, परन्तु विचित्र बात यह है कि इतना और इतनी बार खाने पर भी वह दुबला होता जाता है। मुह पर झुरिया पड जाती हैं। पुष्टिकारक भोजन खाने पर भी बच्चा सूखता जाता है। दिन भर खाने के लिये मांगता है। पेट भर खाने के बाद **नेट्रम म्यूर** की तरह उसे थकावट नही, आराम अनुभव होता है। इसीलिये विशेष रूप से यह सूखे रोग की दवा है। **आयोडियम, नेट्रम म्यूर** और **एब्रोटेनम**—इन तीनो मे शरीर की पोषण-क्रिया इतनी विगड जाती है कि भोजन मिलने पर भी शरीर पर मास नही चढता, और रोगी दुर्बल होता जाता है।

(५) **भूख से तकलीफें बढती और खाने से घटती हैं**—रोगी की चिंता, परेशानी, भय, या जो-कोई भी तकलीफ हो, भूख के समय बढ जाती है। जब पेट खाली हो तब दर्द होने लगता है, उस दर्द को मिटाने के लिये वह खाने को विवश हो जाता है। खाते समय वह अपनी सब तकलीफो को भूल जाता है। तकलीफो को इस प्रकार भूल जाने का मुख्य कारण यह है कि उस समय वह किसी काम मे लगा होता है। जब उसका मन किसी तरफ लग जाय या लगा दिया जाय, तब वह अपने कष्ट को भूल जाता है।

(३) **विश्राम से तकलीफें बढ़ती और हरकत या काम मे लगे रहने से घटती हैं**—रोगी को नयी या पुरानी जो भी कोई शिकायत हो, उसमे उसे शरीर तथा मन मे एक खास तरह की घबराहट, परेशानी बनी रहती है। छोटी-सी भी घबराहट मे एक खास तरह की लहर-सी (Thrill or tremor) शरीर मे दौड जाती है, जो बडी तकलीफदेह होती है। यह तभी होती है जब वह किसी काम मे लगा नही होता, जब काम कर रहा होता है, हरकत कर रहा होता है, तब यह तकलीफ नही महसूस होती, शायद भूला रहता है। जहा उसने आराम से बैठने की कोशिश की, उसी समय यह परेशानी आ सवार होती है, जितना ही वह आराम से, बिना कुछ किये बैठने की कोशिश करता है उतनी ही परेशानी, घबराहट बढती है।

आयोडियम तथा **कैलि आयोडाइड** दोनो आराम से नही बैठ सकते, दोनो को हरकत करनी पडती है, परन्तु इनमे भेद यह है कि **कैलि आयोडाइड** का रोगी पैदल दूर-दूर तक लम्बा सफर करता है और थकता नही, चलने से उसकी घबराहट ही दूर होती है, थकावट नही आती, **आयोडियम** मे रोगी चलता तो है क्योकि हरकत किये बग़ैर उसकी घबराहट दूर नही होती, परन्तु चलते-चलते वह थक जाता है और ज़रा-से परिश्रम से पसीना-पसीना हो जाता है।

यह ऊष्णता-प्रधान है, ठंड चाहता है—इस औषधि का रोगी तथा **आर्सेनिक** का रोगी ये दोनो भी आराम से नही बैठ सकते, दोनो शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम किये बगैर नही रह सकते, यहा तक कि मस्तिष्क के फेल होने की नौबत आ जाती है। अगर इन लोगो को कहा जाय कि अत्यधिक चिंता, अत्यधिक मानसिक-कार्य, अत्यधिक साहित्यिक-कार्य से दिमाग के फेल हो जाने का डर है, तो कहते हैं डाक्टर, हम अगर काम न करें तो मर जायेंगे या पागल हो जायेंगे। काम करने से ही उन्हें राहत मिलती है। परन्तु इन दोनो औषधियो मे भेद है। **आयोडियम** 'ऊष्णता-प्रधान' (Warm blooded) है, **आर्सेनिक** 'शीत-प्रधान' (Chilly) है, पहले को ठड चाहिये, दूसरे को गर्मी चाहिये। अगर रोगी 'ऊष्णता-प्रधान' है तो हम कभी **आर्सेनिक** की तरफ ध्यान नही देंगे, अगर वह शीत-प्रधान है तो कभी **आयोडियम** को विचार मे नही लायेंगे क्योंकि औषधि का निर्वाचन करते हुए 'व्यापक-लक्षण' तथा 'प्रकृति' (Generals and Modalities) को ध्यान मे रखना आवश्यक है।

हरकत से आराम इसका व्यापक-लक्षण है, परन्तु सिर को विश्राम से आराम इसका एकांगी लक्षण है—अभी हमने कहा कि **आयोडियम** के रोगी की तकलीफें हरकत से कम हो जाती हैं, परन्तु सिर-दर्द उसका हरकत से बढ जाता है। रोगी चलता-फिरता है, हरकत करता है क्योंकि इससे उसकी घबराहट दूर होती है, परन्तु हरकत से उसका सिर-दर्द बढ जाता है, सिर की तपकन बढ जाती है। होम्योपैथी का अध्ययन करते हुए 'मैटीरिया मैडिका' द्वारा इस प्रकार के भेद को समझना जरूरी है, क्योंकि इस भेद को समझे बिना 'रिपर्टरी' को नही समझा जा सकता। रिपर्टरी मे **आयोडियम** के लिए 'हरकत से आराम' और 'हरकत से तकलीफ' दोनो मिलेंगे, परन्तु 'मैटीरिया मैडिका' के अध्ययन से ही यह पता लगता है कि **आयोडियम** के विषय मे जब हम कहते हैं—'हरकत से आराम'—तब हम रोगी के 'व्यापक-लक्षण तथा उसकी प्रकृति' (General symptoms of the patient and his modality) का वर्णन कर रहे होते हैं, जब इसी औषधि के विषय मे हम कहते हैं—'हरकत से तकलीफ'—तब हम रोगी के एक अग का, 'रोग-विशेष' (Particulars) का वर्णन कर रहे होते हैं। प्राय औषधियो मे और रोगी मे यह विरोधी-भाव देखने मे आता है। रोगी के सम्पूर्ण-शरीर की प्रतिक्रिया एक तरह की हो सकती है, उसके अग-विशेष की प्रतिक्रिया उसके उल्टी हो सकती है। उदाहरणार्थ, **फॉसफोरस** शीत-प्रधान है, परन्तु रोगी स्वय तो शीत-प्रधान है किन्तु सिर मे और पेट मे वह ठडक चाहता है, बर्फ का पानी पीना चाहता है, **लाइकोपोडियम** शीत-प्रधान है, पेट में वह गर्म चाय ही पसन्द करता है, परन्तु सिर मे वह भी ठड ही चाहता है। इसलिए 'मैटीरिया मैडिका' का अध्ययन करते हुए इस बात पर ध्यान रखना

आवश्यक है कि रोगी का 'व्यापक-लक्षण तथा प्रकृति' (General symptom and modality) क्या है, और इस बात को जानते हुए यह भी जान लेना आवश्यक है कि रोगी के 'व्यापक-लक्षण' तथा उसके किसी 'एक अग के लक्षण' मे विरोध है या नही। अगर विरोध दीख रहा है तब 'व्यापक-लक्षण' के आधार पर ही दवा देनी होगी, 'एकागी-लक्षण' के आधार पर नही।

(४) **शरीर सूखता जाता है, परन्तु गिल्टिया बढती जाती हैं, और गिल्टियो मे भी स्तन सूखते जाते हैं**—शरीर की ग्रथियो का बढ जाना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। जिगर, तिल्ली, डिम्ब-ग्रथिया, अडकोष, गले की ग्रथिया, सब जगह की ग्रथिया बढती जाती हैं, शरीर घटता जाता है, परन्तु स्त्री की छाती की ग्रथिया सूखती जाती हैं। पेट की मेसेन्ट्रिक-गिल्टिया भी बढ जाती हैं। ये सब गिल्टिया गठीली और सख्त हो जाती हैं। प्राय देखा जाता है कि मलेरिया के रोगी कुनीन खाकर सूख जाते हैं, चेहरे पर झुरिया पड जाती हैं, परन्तु उनकी तिल्ली या जिगर बढ जाते है। इस अवस्था मे यह औषधि लाभप्रद है।

बढ़े हुए टासिल—गिल्टियो के गठीली और सख्त होने के प्रकरण मे इस औषधि के टासिलो के प्रभाव पर भी विचार कर लेना आवश्यक है क्योकि यह मुख्य तौर पर ग्रथियो की दवा है, इसलिए इसका टासिलो पर भी प्रभाव है। रोगी भूख-भूख चिल्लाता है, भूख से परेशान रहता है, दुर्बल होता है, मुख पर झुरिया पडी होती हैं—ऐसे रोगी के टासिल इससे ठीक हो जाते हैं। इस रोगी को **पल्सेटिला** की तरह गर्मी बहुत सताती है।

बढे हुए गिल्लड़ (Goitre)—यह भी गले की गिल्टी का बढ जाना ही है। इसके साथ ही यदि रोगी को भूख ज्यादा लगती हो, खाने से जी ठिकाने रहता हो, तो इससे लाभ होता है। काली आखो, काले बालो वालो के लिये **आयोडियम**, और नीली आखो, भूरे बाल वालो के लिये **ब्रोमियम** उपयुक्त हैं। डा० नैश लिखते हैं कि उन्होंने लक्षण मिलने पर गिल्लड़ के कई रोगी **आयोडियम** CM प्रति चार रात एक मात्रा देकर ठीक किये है। उन्होने यह औषधि पूर्णिमा के बाद अमावस्या शुरु होने पर दी। कहते है अमावस्या मे यह औषधि अच्छा काम करती है।

(५) **त्वचा छील देने वाला स्राव, नाक से, आख से तथा पुराने प्रदर का छील देने वाला स्राव**—इस रोगी का स्राव बहुत तेज़ होता है, जहा लगता है वही त्वचा को छील देता है। नाक का स्राव नाक तथा होठो को जहा वह लगता है छील देता है, आख का स्राव आख के कोरो को छील देता है, प्रदर का स्राव इतना लगता है कि जाघो पर जहा-जहा लगता है उसे छील देता है, यहा तक कि नैपकिन मे भी छेद कर देता है। इसके साथ अन्य लक्षणो का

भी मिलान कर लेना चाहिये—रोगी ऊष्णता-प्रधान हो, खाने से आराम मानता हो, हरकत से लक्षणो मे कमी हो ।

जुकाम में आयोडियम 'प्रतिरोधक' (Prophylactic) है—प्रो० डा० ऑगस्ट वीयर लिखते है कि उन्हें कई सालो से खासी सताया करती थी, गर्म कमरे मे सर्जरी का काम करके जव वे बाहर आते थे, तब उन्हें जुकाम का आक्रमण हो जाता था—गर्म-सर्द हो जाने के कारण । जब किसी उपाय से उन्हें लाभ न हुआ, तो उन्होने अपने-आप होम्योपैथी का प्रयोग करके देखना चाहा । उनका ऐलोपैथी का अनुभव था कि जब **आयोडाइन** की अधिक मात्रा रोगी को दी जाती थी, तो उसे श्लैष्मिक-झिल्ली का शोथ, प्रदाह, और जुकाम हो जाया करता था । इस आधार पर उन्होने **आयोडियम मूल-अर्क** का एक बूँद लेकर देखा । एक बूँद लेने से या तो जुकाम होता नही था, या होता-होता रुक जाता था । अपने ऊपर इस अनुभव से उन्हें होम्योपैथी मे विश्वास हो गया और वे जुकाम की मौसम मे प्रतिरोधक के तौर पर **आयोडियम** लेने लगे जिस से उन्हें सफलता मिली ।

(६) **भूख न लगना (Anorexia)**—इस औषधि का लक्षण है राक्षसी भूख लगना और शरीर का क्षीण होते जाना, परन्तु डा० क्लार्क ने भूख न लगने पर भी इसका सफल प्रयोग किया । एक युवती को जिसे मानसिक-आघात पहुँचा था, भूख लगनी बन्द हो गई । वह उपवास द्वारा आत्मघात करने की सोचा करती थी । डा० क्लार्क ने उसे **आयोडियम ३x** के ५ बूँद खाने से आध घटा पहले देने शुरु किये । इससे उसकी भूख इतनी खुल गई कि उसका आत्मघात का विचार जाता रहा ।

(७) **आत्म-हत्या या किसी को मार डालने का विचार**—हम पहले ही कह आये हैं कि रोगी निश्चल नही बैठ सकता, हर समय हरकत किया करता है, चलता-फिरता रहता है, इसी से उसे शान्ति मिलती है । अगर वह इस प्रकार चलता-फिरता न रहे, तो शरीर मे उद्विग्नता, घबराहट पैदा हो जाती है, लहर का-सा कपन उठता है । जितना अधिक स्थिर रहने की कोशिश करता है उतनी ही घबराहट बढ जाती है । कभी-कभी जब वह स्थिर रहने का प्रयत्न करता है, तब इतना उद्विग्न हो उठता है कि वस्तुए फाडने लगता है, आत्मघात करना चाहता है, या किसी दूसरे को मार डालने को सोचता है । स्थिर नही बैठ सकता, इसलिये लगातार चलता-फिरता है, और स्थिर रहने पर इस प्रकार के हिंसात्मक-उद्वेगो का आक्रमण होता है । वह कुछ-न-कुछ करना चाहता है, जल्दी मे कुछ-न-कुछ कर डालने की भावना उस पर हावी हो जाती है । हिपर मे नाई गाहक की हजामत करता हुआ उस्तरे से उसका गला काट डालना चाहता है, **नक्स** मे भी अपने बच्चे को आग मे फेंक देना

चाहती है, जिस पति से प्रेम करती है उसी को मार डालना चाहती है , **नैट्रम सल्फ** मे रोगी कहता है डाक्टर, तुम नही जानते कि मुझे अपने को खत्म न कर देने के लिये अपने पर कितना नियन्त्रण करना पडता है । **आयोडियम** मे मरने-मारने की इच्छा किसी कारण-विशेष से नही होती, क्रोध से या बदला लेने के विचार से इस भावना का उदय नही होता, इस प्रकार का आवेग बिना कारण मन मे आ जाता है । यह 'आवेगात्मक-मानसिक-विक्षेप' (Impulsive insanity) है ।

(८) **भोजन का गैस बन कर दिन-रात डकार आना**—रोगी जो-कुछ खाता है उसकी गैस बन जाती है, पेट मे वायु इकट्ठी हो जाती है, और रोगी सुबह से शाम तक ऊंचे-ऊंचे डकार मारा करता है ।

(९) **आयोडियम का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—दुर्बल, पीला, झुर्रियो वाला चेहरा, गिल्टिया फूली हुई जो सख्त और कठोर होती हैं, भूख-भूख चिल्लाता है, हर समय खाता रहता है, राक्षसी-भूख मे खाने के बावजूद कमजोर होता जाता है, खाने के बाद उसे आराम मालूम होता है, चैन से नही बैठ सकता, हर समय चलता-फिरता है, गर्मी से परेशान और ठड से आराम—यह है सजीव मूर्त रूप **आयोडियम** का ।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है । जुकाम मे प्रतिरोधक के तौर पर इसके टिंचर की एक बूद लेने से जुकाम नही होता । सर्दी से बार-बार जुकाम होने को भी यह दवा मूल-अर्क की एक बूद लेने से उसे रोकती है ।

इपिकाक (IPECAC)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) कय करने के पहले, और बाद मे भी जी की मितली बने रहना (Nausea and Vomiting)	लक्षणो मे कमी (Better) *खुली हवा मे रोग मे कमी
(२) गरिष्ट-भोजन से कय या मितली मे पल्स और इपिकाक की तुलना	
(३) धमनी से चमकीला रक्त-स्राव—जरायु, पेट, आंत, गुर्दे, मूत्र-द्वार, मल-द्वार आदि से चमकीला रक्त-स्राव होना	
(४) श्वास-यन्त्र की पीड़ा, ब्रौंकाइटिस, जुकाम, दमा—ब्रौंकाइटिस मे इपिकाक तथा ऐन्टिम टार्ट की तुलना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) कुकुर-खांसी (Whooping cough)	*गर्मी या तर हवा से बढ़ना
(६) घास के समान हरे रग के दस्त, डिसेन्ट्री का प्रकोप	*आइस क्रीम से रोग बढना *गरिष्ठ भोजन से तकलीफ
(७) मलेरिया ज्वर मे डा० जाह्र इपिकाक का प्रयोग करते थे	*हरकत से रोग बढ़ना *कुनीन का दुरुपयोग

(१) **कय करने के पहले, और बाद मे भी जी की मितली बने रहना (Nausea and Vomiting)**—जी मिचलाने की औषधियो मे इसका प्रमुख स्थान है। कोई भी शिकायत हो, जिसमे जी की मितली पायी जाय, और कय हो जाने के बाद भी मितली बनी रहे, तब भी दूर न हो, शिकायत से पहले भी जी कच्चा हो और कय हो जाने पर भी जी कच्चा रहे, इस प्रकार की लगातार बने रहने वाली मितली मे इपिकाक को ही ध्यान मे रखना होगा।

(२) **गरिष्ट-भोजन से कय या मितली मे पल्स और इपिकाक की तुलना**—इस प्रकार की जी की मितली प्राय पेट की खराबी से हुआ करती है। खाने मे गडबड हुई तो मितली भी शुरु हो गई। ऐसे समय पल्स और इपिकाक—इन दो औषधियो का क्षेत्र आ जाता है। दोनो मे पेट की खराबी से जी मितलाया करता है, दोनों मे पेस्ट्री, आइस क्रीम, पूरी-कचौरी, हलवा, गोश्त आदि गरिष्ट पदार्थों के खाने से पेट खराब होता है। इन दोनो मे भेद यह है कि अगर मितली (Nausea) मे उल्टी (Vomiting) न हो, भोजन पेट मे पडा-पडा जी को खराब कर रहा हो, तब तो पल्सेटिला देना चाहिये, परन्तु

अगर भोजन पेट में से कय द्वारा निकल जाय और फिर भी मितली बनी रहे, तब **इपिकाक** देना चाहिये। इसके अतिरिक्त पल्स में जीभ पर **ऐन्टिम क्रूड** के समान सफेद या पीला, गाढा लेप चढा रहता है, **इपिकाक** में जीभ या तो बिल्कुल साफ होती है या बहुत थोडी मैली होती है। परन्तु जीभ के लक्षण को निर्णायक-लक्षण नहीं समझना चाहिये। **सिना** में जीभ बिल्कुल साफ रहती है, परन्तु उसमें पेट में कृमि होने की वजह से उल्टी आ जाती है, **डिजिटेलिस** में भी जीभ साफ रहती है परन्तु उसमें हृदय-रोग के कारण उल्टी आ जाती है, **टैबेकम** में ज़रा हरकत से उल्टी आ जाती है, **लोबेलिया** में कमज़ोरी और पसीने के साथ उबकाई आती है, **इपिकाक** और **पल्स** में पेट की खराबी से उल्टी आती है। वैसे, उल्टी में प्रमुख-स्थान **इपिकाक** का ही है।

पेट में मिचलाहट के साथ काटने का-सा दर्द जो बायें से दायें को जाये—नाभि से नीचे या ऊपर पेट में ऐसा दर्द होता है जो दायें से बायें को जाता है, रोगी को ऐसा अनुभव होता है जैसे कोई कतरनी से काट रहा है। रोगी हिल नहीं सकता, जिस स्थिति में है उसी में स्थिर हो जाता है, सांस तक रुक जाता है, एक ही हालत में रोगी स्थिर बना रहता है। इस दर्द के साथ बेहद कमज़ोरी और जी की मितलाहट बनी रहती है। **इपिकाक** में जो भी दर्द होगा उसके साथ जी की मितलाहट भी जुडी रहेगी।

खांसी के साथ जी की मितलाहट—इस औषधि में खांसी के साथ भी मितलाहट होती है, खांसते-खांसते कय भी आ जाती है। यह सूकी खांसी होती है, जिसमें रोगी खो-खो करता है, इस में रोगी का दम घुटने लगता है। हम आगे चल कर कुकुर खांसी का ज़िक्र करेंगे, यह खांसी भी वैसी ही होती है, भले ही इसे कुकुर खांसी न कहा जाय।

(३) **धमनी से चमकीला रक्त-स्राव—जरायु, पेट, आंत, गुर्दे, मूत्र-द्वार, मल-द्वार आदि से**—डा० कैन्ट का कथन है कि रक्त-स्राव में इस औषधि का इतना प्रमुख-स्थान है कि इस के बिना वे रक्त-स्राव का इलाज करने में ही असमर्थ रहते। वे लिखते हैं कि रक्त-स्राव से उनका अभिप्राय सब प्रकार के रक्त-स्राव से है। जरायु से रक्त-स्राव, गुर्दों से रक्त-स्राव, अंतडियों से रक्त-स्राव, पेट से रक्त-स्राव, फेफडों से रक्त-स्राव। अगर रक्त-स्राव किसी स्थूल वस्तु के प्रहार आदि के कारण नहीं हो रहा, शारीरिक-रोग के कारण हो रहा है, तो होम्योपैथिक औषधि से अवश्य लाभ होगा। जब जरायु से रुधिर लगातार रिस रहा हो, थोडी-थोडी देर बाद रुधिर का वेग बढ जाता हो जैसे धमनी के रुधिर में होता है, वेग बढने के साथ जरायु से चमकीला, उज्वल रुधिर बहता हो, रोगिणी समझती हो कि इस से वह बेहोश हो जायगी, सांस लेना भारी हो रहा हो, रुधिर की मात्रा इतनी अधिक न हो, परन्तु रुधिर की

मात्रा की अपेक्षा कमज़ोरी, मितलाहट, वेहोशी, पीलापन बहुत अधिक होता जा रहा हो, तब समझ लेना चाहिये कि इपिकाक ही औषधि है। रुधिर जाने मे अन्य भी औषधियां हैं, परन्तु उनका और इसका पारस्परिक भेद है। उदाहरणार्थ, इपिकाक के जरायु से चमकीले, उज्वल, वेग से जाने वाले धमनी के रुधिर के समान एकोनाइट मे भी रुधिर-स्राव है, परन्तु एकोनाइट मे रुधिर-स्राव के साथ मृत्यु का भय रहता है। अगर जच्चा को प्लेसेन्टा के निकल जाने के बाद और किसी कारण-विशेष के न रहने पर भी रक्त-स्राव जारी रहता है, रोगिणी शीत-प्रधान है परन्तु उसे वर्फ के समान ठडे पानी की इच्छा होती है, तो फॉसफोरस से लाभ होगा। अगर रोगिणी ऊष्णता-प्रधान है, कपडे से शरीर को ढकने नही देती, ठडक चाहती है, जरायु मे रुधिर रिसते रहने की उसकी प्रवृत्ति है परन्तु रोगाक्रान्त होने पर भारी मात्रा मे खून बहने लगा है, खून मे थक्के-थक्के हैं या पतला, काला रुधिर है, तब सिकेल के बिना काम नही चलेगा। यह तो हमने जरायु से रक्त-स्राव के बारे मे कहा, परन्तु अन्य स्थानो से रक्त-स्राव मे भी इपिकाक वैसा ही उपयोगी है।

गुर्दों से रक्त-स्राव—जब पेशाव मे रुधिर हो, रुधिर के छोटे-छोटे कण हों, थक्के हो, रुधिर का रग बहुत अधिक लाल हो, वर्तन के नीचे रुधिर बैठ जाय, कमोड के किनारो को रुधिर के आवरण से रेखांकित कर दे, पीठ मे गुर्दों की जगह सख्त दर्द हो, बार-बार पेशाव जाने की हाजत हो, दर्द के हर आक्रमण के साथ लाल रग का पेशाव आता हो, तो इपिकाक इस रुधिर को बन्द कर देगा। अगर रुधिर जाते-जाते रोगी रक्तहीन हो जाय, पीला पड जाय, तो चायना से लाभ होगा। रक्त-स्राव मे इपिकाक के बाद चायना लाभ करता है।

(डा० नैश द्वारा उल्लिखित रक्त-स्राव की मुख्य-मुख्य औषधियां)

एकोनाइट—चमकीला, उज्वल, लाल रग, रक्त-स्राव के साथ मृत्यु-भय और बेचैनी।

आर्निका—मासपेशियो पर चोट लगने से रक्त-स्राव।

बेलाडोना—सिर मे रक्त की अधिकता, गर्म रक्त निकलना, कनपटियो मे दोनो तरफ धमनियो मे तपकन।

कार्बो वेज—सारा शरीर बर्फ के समान ठडा फिर भी रोगी पखे की हवा चाहे, बेहद कमजोर, रोगी मुर्दे की तरह पडा रहता है और रक्त-स्राव होता रहता है।

चायना—बहुत अधिक रक्त-स्राव होने के कारण कमज़ोरी, बेहोशी।

क्रोकस—डोरे की तरह जमा हुआ, थक्के-थक्के वाला, काला-काला रक्त-स्राव।

क्रोटेलस, इलैप्स, सल्फ्यूरिक ऐसिड—शरीर के सब छिद्रों से काले रंग का रक्त-स्राव।

फेरम—रक्त-स्राव के साथ रोगी का चेहरा बहुत लाल या कभी लाल कभी स्याह, रक्त-स्राव कुछ पतला, कुछ जमा हुआ।

हायोसाएमस—रक्त-स्राव के साथ बेसुधी (Stupor), शरीर की मांस-पेशियों की फड़कन।

इपिकाक—बहुत अधिक रक्त-स्राव, चमकीला, ताज़ा खून—इसके साथ उबकाई आती है और सांस भारी चलता है।

लैकेसिस—सड़ा हुआ रक्त-स्राव, मैल भरा-सा।

फॉसफोरस—ज़रा-सी चोट से खून बहने की प्रकृति।

पल्सेटिला—रुक-रुक कर रक्त-स्राव।

सिकेल—कमज़ोर, रोगिन स्त्रियों का जरायु से काला रक्त-स्राव।

सलफर—अन्य औषधि से लाभ न हो तो इसे दें।

(४) **श्वास-यंत्र की पीड़ा, ब्रौंकाइटिस, जुकाम, दमा—ब्रौंकाइटिस में इपिकाक तथा ऐन्टिम टार्ट की तुलना**—बच्चों के 'ब्रौंकाइटिस' (श्वास-नली के शोथ) में **इपिकाक** का महत्वपूर्ण स्थान है, इसलिये इसे डा० कैन्ट ने बच्चों का मित्र कहा है। बच्चों के ब्रौंकाइटिस में प्रायः इसी की आवश्यकता पड़ती है। बच्चों को शुद्ध न्यूमोनिया तो कम ही होता है, प्रायः श्वास-नालिका का शोथ—ब्रौंकाइटिस—हो जाता है, सांस से घड़घड़ की आवाज़ आती है। बच्चा खांसता है, उसका दम घुटता है, और कमरे में दूर से सांस में घड़घड़ की आवाज़ आती है। रोग शुरु होते ही यह अवस्था आ जाती है। घड़घड़ की आवाज़ **ऐन्टिम टार्ट** में भी आती है, परन्तु इनमें भेद यह है कि **इपिकाक** के लक्षण रोग शुरु होते ही दीखने लगते हैं, रोग शुरु होते ही घड़-घड़ाहट और सांय-सांय शुरु हो जाती है, **ऐन्टिम** में यह अवस्था देर में, धीरे-धीरे प्रकट होती है, **इपिकाक** में शुरु में (in the stage of irritation), और **ऐन्टिम** में रोग ढलने पर (in the stage of relaxation), **इपि-काक** में एकदम, **ऐन्टिम** में क्रमशः, जब रोगी कफ को निकालने में असमर्थ हो जाता है तब **ऐन्टिम** में अन्दर अटका हुआ कफ घड़घड़ाता रहता है, मालूम पड़ता है ज़रा-सा ही खांसने से कफ निकल आयेगा, परन्तु ज्यादा **खांसने** पर भी कफ नहीं उठता। **ऐन्टिम** में खांसी कम आती है परन्तु फेफड़े में कफ ज्यादा जमा होता है—रोगी चुपचाप आंखें बन्द कर के पड़ा रहता है, **इपिकाक** में ऐसा नहीं होता, इसका कफ कुछ-कुछ निकलता रहता है।

जुकाम—जुकाम मे भी **इपिकाक** से विशेष लाभ होता है। जब जुकाम के साथ नकसीर फूटने का लक्षण मिला हो, तब इसकी तरफ ध्यान जाना चाहिए। ठड नाक मे बैठ जाती है, रात को नाक बन्द हो जाती है, छीकें आने लगती हैं, गले तक ठड पहुच जाती है, गला भी बैठ जाता है, पक जाने का-सा दर्द करता है, अन्त मे यह ठड छाती तक पहुच जाती है, सास रुकने लगता है, नाक से चमकीला खून निकलता है। इस औषधि का श्वास-यन्त्र तथा रुधिर-स्राव पर विशेष प्रभाव है, इसलिए ऐसे जुकाम मे जिसमे श्वास-यन्त्र का कष्ट हो, जुकाम हो, नाक से खून जाता हो, **इपिकाक** लाभ करता है।

दमा (Ashma)—श्वास-यन्त्र का मुख्य रोग दमा है। इस औषधि का दमे पर विशेष प्रभाव है। डा० मारगरेट टायलर ने अपनी पुस्तिका 'रिपर्टराइजिग' मे हनीमैन का निम्न उद्धरण दिया है "होम्योपैथी केवल दवा की सूक्ष्मतम मात्रा देने का ही नाम नही है, परन्तु यह उस पद्धति का नाम है जिसमे समझा जाता है कि स्वस्थ-व्यक्ति पर दवा जिन लक्षणो को उत्पन्न करती है रोग मे उन्ही लक्षणो को वह दवा दूर करती है। क्योकि स्वस्थ-व्यक्ति पर **स्ट्रिकनीन** पक्षाघात उत्पन्न करती है, इसलिये पक्षाघात को यह दूर करती है, स्वस्थ-व्यक्ति पर **कोलोसिंथ** पेट-दर्द पैदा करती है, इसलिये पेट-दर्द को यह ठीक करती है, क्योकि **ऐन्टीमनी** स्वस्थ-व्यक्ति को रोगी कर देती है इसलिये उसी प्रकार के रोग को यह ठीक कर देती है, क्योकि **इपिकाक** स्वस्थ-व्यक्ति मे दमे के-से लक्षण उत्पन्न कर देती है इसलिये दम को यह ठीक कर देती है, क्योंकि स्वस्थ-व्यक्ति मे रुवर्ब (**रियूम**) दस्त लाती है इसलिये रोगी के दस्तो को यह ठीक कर देती है।"

इपिकाक के स्वस्थ-व्यक्तियो पर जो परीक्षण (Provings) हुए उनमे प्राय सब मे सास का कष्ट पाया गया है। नमी मे यह दमा बढ जाता है, रोगी ठडक मे भी खिडकी खोलकर घटो खुली हवा मे रहना चाहता है, नही तो दम घुटता है। बरसाती हवा से, या हवा के बदलने से दमे के उठ खडे होने मे, या हर बार ठड लग जाने से दमे का आक्रमण होने पर जब गला घुटता हो, थूक मे थोडा-बहुत खून जाता हो, फेफडो मे इतना कफ भर जाता हो कि सास रुक जाने की आशका हो—ऐसी हालत मे यह लाभकारी है। सेलर लोग जो समुद्र पर रहते हैं, वे जब कही भूमि पर उतरते हैं, उन्हें दमे का प्रकोप हो जाता है—उनके लिये रिपर्टरी मे एक ही दवा है—**कैलि ब्रोम**। दमे के पुराने रोगियो के लिये लक्षण मिलने पर **इपिकाक** उत्तम औषधि है।

(५) **कुकुर-खांसी** (Whooping cough)—इस औषधि का श्वास-प्रणालिका पर जो प्रभाव है उसके कारण कुकुर-खासी मे भी यह अच्छा काम करती है। बच्चा खासते-खासते उल्टी कर देता है, कफ मे पतला-पतला झाग

निकलता है, चेहरा पीला या नीला पड़ जाता है, कभी-कभी कफ में रुधिर भी आ जाता है, बच्चा ऐंठ जाता है। खांसी के साथ जी की मितलाहट में हम इसका ऊपर उल्लेख भी कर आये हैं।

(६) घास के समान हरे रंग के दस्त, डिसेन्ट्री का प्रकोप—डा० नैश का कहना है कि गर्मियों में बच्चों को तीन प्रकार के दस्त आ जाया करते हैं

1. खमीर के समान झाग वाले दस्त,

ii घास के समान हरे रंग के दस्त—आँव सहित या पनीले,

iii डिसेन्ट्री वाले दस्त जिनमें थोडा-बहुत रुधिर होता है।

ये दस्त गर्मियों के दिनों में ज्यादा खा जाने या गड़बड़ खाने से आने लगते हैं। अगर इन में इपिकाक २०० की एक मात्रा दे दी जाय, तो कष्ट शीघ्र जाता रहता है। इधर ध्यान न देने से 'कोलन का शोथ'—Colitis—हो जाता है, आव आने लगती है। इन दस्तों में जी मितलाने के लक्षण के होने पर इपिकाक देने में देर नहीं करनी चाहिये।

डिसेन्ट्री या पेचिश का प्रकोप—डा० कैन्ट का कहना है कि जब पेचिश की बीमारी फैल जाती है, इसका प्रकोप हो जाता है, तब यह औषधि उत्तम साबित होती है। रोगी लगभग लगातार कमोड पर बैठा रहता है, थोडी-सी आव आती है या थोडा-सा चमकीला रुधिर आता है, आतों के निचले हिस्से में, बडी आंत के अंतिम गुदा तक के हिस्से—कोलन—में तथा गुदा में शोथ होता है, मरोड बडा ज़बर्दस्त होता है, जलन होती है, मरोड के साथ थोडी-थोडी आव तथा खून जाता है। इस सब के साथ जी की मितलाहट बनी रहती है। पाखाने में ज़ोर लगाते हुए दर्द इतना ज्यादा होता है कि जी मितलाने लगता है, कभी-कभी पित्त की उल्टी भी हो जाती है। कभी-कभी इस प्रकार की पेचिश का इतना प्रकोप हो जाता है कि सारे परिवार पर इसका आक्रमण हो जाता है। अगर पेचिश में मल के साथ सफेद आव का भाग अधिक रहे, तो मर्क सौल, और अगर मल के साथ खून का भाग अधिक रहे, तो मर्क कौर दिया जाता है, अगर पेचिश के साथ जी मितलाये तो इपिकाक दिया जाता है।

(७) मलेरिया-ज्वर में डा० जाह्र इपिकाक का प्रयोग करते थे—डा० नैश डा० जाह्र का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि अगर किसी औषधि-विशेष के लक्षण न हो, तो मलेरिया-ज्वर में शुरु-शुरु में वे इपिकाक का प्रयोग करते थे, इस से उन्हें अनेक दवाओं में से एक के चुनने के झंझट में नहीं पडना पडता था। इपिकाक के ज्वर में प्यास नहीं रहती। कुनीन का अधिक सेवन करने से अगर मलेरिया-ज्वर दब जाय और कोई दूसरे उपद्रव उठ खडे हों, तो इपिकाक के प्रयोग से विशेष लाभ होता है। टाइफॉयड आदि ज्वर के बाद

जब थोडा-थोडा बुखार बना रहता है, हटता ही नही, तब भी यह औषधि इस लटकते बुखार को समाप्त कर देती है।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—३ से २०० शक्ति। हनीमैन का कथन है कि यह अल्पकालिक (Short-acting) औषधि है। अनुभव से देखा गया है कि २०० शक्ति अच्छा काम करती है। इसे बार-बार दोहराया जा सकता है, परन्तु लाभ दीखते ही औषधि को बन्द कर देना चाहिये। यह नियम हर होम्योपैथिक औषधि के विषय मे लागू है। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।

आइरिस वरसिकलर (IRIS VERSICOLOR)

(१) **अन्न-नली से लेकर गुदा तक जलन, वमन और पतले दस्त**—जीभ, गला, पेट, आतें, पैंक्रियास इत्यादि मे जलन इसका मुख्य-लक्षण है। इस जलन के साथ खट्टे पित्त का वमन होता है। यह वमन इतना खट्टा होता है कि अन्न-नली खुरची-सी जाती है। इस प्रकार की वमन और जलन के साथ पतले दस्त आते हैं। पतले दस्त के साथ मल-द्वार मे आग की भाति जलन होती है। पैंक्रियास की बीमारी मे इसे स्मरण रखना चाहिए।

(२) **मितलाहट के साथ सिर-दर्द**—इसमे अत्यन्त खट्टी कय के साथ आँखो के सामने अंधेरा छा जाता है, सिर-दर्द होने लगता है, खासकर दाहिनी कनपटी मे दर्द होता है।

(३) **कय मे पहले खाया हुआ पदार्थ, फिर खट्टा पानी, और अंत मे पीला या हरा पित्त निकलता है**—इसके कय का अपना ही रूप है। पहले खाया हुआ पदार्थ, फिर खट्टा पानी, और अत मे पीला या हरा पित्त निकलता है। जो-कुछ निकलता है वह ठोस सूतदार होता है, जो मुँह से लेकर नीचे तक एक सूत मे बंधा होता है। कय मे बार-बार नाभि-प्रदेश से उछाली का धक्का उठता है।

(४) **शक्ति या प्रकृति**—१, ३, ६ (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

जेलापा (JALAPA)

बच्चा दिन भर खेलता है, रात भर चिल्लाता है। **रियूम तथा सोरिनम** मे भी यह लक्षण है। **रियूम में खट्टी बू रहती है। लाइकोपोडियम मे जेलापा** से उल्टा होता है, बच्चा दिन भर चिल्लाता है, रात भर आराम से सोता है। प्राय पेट की कुछ गडबड के कारण ऐसा होता है। बच्चो के लिए यह हितकर औषधि है। बच्चे को पेट मे दर्द और दस्त आते हैं। ३, ६, १२ शक्ति दी जा सकती है।

कैलि बाईक्रोमिकम (KALI BICHROMICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) किसी भी श्लैष्मिक-झिल्ली से चिपचिपा, पीला, लसदार बलगम निकलना जो खींचने से डोरे की तरह लम्बा खिंच जाय	लक्षणों में कमी (Better)
(२) जीभ, मुंह तथा गले में आतशक के जख्म, गोल छेद वाले जख्म	*गर्मी से रोग में आराम परन्तु शियाटिका में गर्मी से रोग में वृद्धि
(३) छोटे-से स्थान में दर्द होना, भिन्न स्थानों में दर्द का जल्दी-जल्दी स्थान परिवर्तन करना तथा दर्द का एकदम आना एकदम जाना, सिर-दर्द से पहले देख न सकना	*हरकत से रोग में आराम
(४) गठिया और पेचिश, या गठिया और पेट की बीमारी में पर्याय-क्रम	लक्षणों में वृद्धि (Worse)
(५) रोगी के शीत-प्रधान होते हुए भी शियाटिका के दर्द का गर्मी से बढ़ना	*ठंड या नमी से रोग बढ़ना *प्रातः २ से ३ बजे बढ़ना
(६) पित्त-पथरी की प्रकृति को रोक देना	*भोजन के बाद रोग बढ़ना
(७) शीत-प्रधान रोगी तथा स्थूल-काय प्रकृति, २ से ३ प्रात रोग में वृद्धि, खाने के बाद परेशानी	*बीयर पीने से रोग बढ़ना *शियाटिका के दर्द का गर्म सेक से बढ़ना

(१) **किसी भी श्लैष्मिक-झिल्ली (Mucous membrane) से चिपचिपा, पीला, लसदार स्राव निकलना जो खींचने से डोरे की तरह लम्बा खिंच जाय**—इस औषधि का मुख्य-लक्षण यह है कि नाक, मुख, गला, श्वास-प्रणालिका, फेफड़ा, अंतड़िया, मूत्राशय, जननेन्द्रिय, जरायु—कोई भी अंग हो, उसकी श्लैष्मिक-झिल्ली से चिपचिपा, लसदार स्राव निकलता है, जो खींचने से डोर की तरह लम्बा खिंच जाता है। अगर जुकाम हो तो नाक से ऐसा स्राव बहता है जो चिपचिपा, लसदार और डोरे के समान लम्बा निकलता है, अंगुलियों में चिपट जाता है, मुख-गले-श्वास प्रणालिका से ऐसा ही जमा हुआ डोरे की तरह लम्बा लटकने वाला कफ निकलता है, आंतों से आंव, मूत्राशय से, जननेन्द्रिय से ऐसा ही स्राव निकलता है, स्त्री के जरायु से प्रदर का भी ऐसा ही तारदार स्राव होता है। किसी भी अंग से जब ऐसा सूत-सरीखा, चिपचिपा स्राव निकले, तो इस औषधि से लाभ होना ही चाहिये। किसी भी अंग से लम्बे सूत का-सा काला स्राव निकले तो **क्रोकस** दवा है।

जुकाम मे नाक की श्लैष्मिक-झिल्ली से स्राव—नये या पुराने जुकाम मे जब बहुत अधिक मात्रा मे सफेद या पीला, चिपकने वाला, गोद-सरीखा स्राव निकले, नाक मे सूखेपन का भान हो, रात को नाक गाढे पीले स्राव से भर जाने के कारण बन्द हो जाय, स्राव इतना चिपकने वाला हो कि निकाले न निकले, वही चिपट जाय, इसके साथ नाक की जड मे दर्द हो, तब इससे लाभ होता है। इस गाढ़े, पीले स्राव के कारण नाक के भीतर पपडी जम जाती है, उसे निकालने के लिये रोगी बार-बार नाक सिनकता है, इस पपडी के टुकडे नाक को भरे रहते हैं, जोर-जोर से सिनकने के बाद हरे रग के टुकडे जो नाक के ऊपरी भाग मे जमे होते है वे कठिनाई से निकलते हैं। कभी-कभी वे ऊपर से ही मुख के अन्दर सरक जाते हैं। नाक के अन्दर दर्द महसूस होता है, नाक मे ज़ख्म हो जाते हैं, नाक के दोनो हिस्सो के बीच के पर्दे पर ज़ख्म हो जाते हैं, रोगी नाक को कुरेदता रहता है, नाक मे से खून निकलने लगता है। नाक की ऐसी अवस्था प्राय आतशक के रोगियो की हो जाती है। इस औषधि से इस प्रकार का जुकाम ठीक हो जाता है, और अगर इन ज़ख्मो मे आतशक का असर हो, तो वह भी ठीक हो जाता है। मुख्य-लक्षण स्राव की चिपचिपाहट और सूत का-सा लम्बा होना है।

[जुकाम के लिये मुख्य-मुख्य औषधिया]

(शुरु शुरु में)

एकोनाइट—शुरु-शुरु मे सर्दी लगने पर जब गले मे खुश्की-सी हो, कुछ छीकें आयें और जुकाम शुरु होने वाला हो, तब दिया जाता है।

कैम्फर—जब शुरु मे **एकोनाइट** देने से लाभ न हो तब इसके मूल-अर्क की कुछ बून्दें दो।

जेलसीमियम—सर्दी लग कर जुकाम होने के साथ-साथ बुखार हो जाय, थरथराती ठड लगे, शरीर मे दर्द हो, बुखार के साथ प्यास बिल्कुल न हो।

(पनीले जुकाम मे)

एलियम सीपा—अगर तब भी लाभ न हो, नाक तथा आख से पनीला स्राव जारी हो जाय जो आख मे तो न लगे परन्तु नकुरो और होठो पर लगे, भूख बढे, खुली हवा मे आराम हो, तब दे।

युफ्रेशिया—अगर पनीला-स्राव आख मे तो लगे, नाक मे न लगे, तब दे।

आर्सेनिकम एल्बम—पनीला-स्राव जो नकुरो और होठो पर लगे परन्तु खुली हवा मे कष्ट बढे और गर्म कमरे मे आराम मिले, तब दे।

आर्सेनिक आयोडाइड—सीपा के लक्षण हो—पनीला-स्राव, नकुरो और

होठो पर स्राव का लगना, भूख का बढना, खुली हवा मे आराम—सीपा के इन सब लक्षणो के साथ इतना पानी बहे कि रुमाल-पर-रुमाल तर होते जायें, तब दे।

नक्स वोमिका—छीको से शुरु हो, पनीला हो, नकुगे और होठो पर लगे, दिन को नाक वहे, रात को वन्द हो जाय, रोगी शीत-प्रकृति का हो परन्तु जुकाम मे खुली हवा पसन्द करे, तब इस से लाभ होता है।

नेट्रम म्यूर—पनीला, या गाढा, या गाढा-पतला मिला हुआ, नकुरो पर लगने वाला स्राव वहे, रोगी को खुली हवा पसन्द हो, तब इस से लाभ होता है।

(गाढ़े जुकाम मे)

कैलि वाईक्रोम—पुराना जुकाम जब गाढा हो जाय, डोरी की तरह श्लेष्मा निकले, तारदार हो। **हाईड्रेस्टिस** भी गाढे जुकाम मे लाभप्रद है।

पल्सेटिला—गाढा, विना लगने वाला स्राव, कफ का रग पीला, रोगी को खुली हवा पसन्द होती है। गले मे रेशा गिरने मे हाईड्रेस्टिस दिया जाता है।

मर्क सौल—गाढा, लगने वाला स्राव, माथे मे दर्द, जिस हालत मे घर-गृहस्थी मे प्राय बनफशे का काढा दिया जाता है, उस हालत मे लाभप्रद है।

(नाक वन्द हो जाने वाले जुकाम मे)

स्टिक्टा—नाक वन्द हो, वार-वार सिनकना पर श्लेष्मा न निकलना।

नक्स वोमिका—दिन या रात को नाक वन्द रहे तब इस से लाभ होता है।

किसी भी श्लैष्मिक-झिल्ली से जैली की तरह का स्राव—ऊपर जिस प्रकार के स्राव का जिक्र किया गया है, उसके अतिरिक्त शरीर की किसी भी श्लैष्मिक-झिल्ली से जैली की तरह के स्राव के निकलने पर भी इस औषधि से लाभ होता है। ऐसा स्राव नाक से, मुंह के भीतर तालु से, गुदा-प्रदेश से, स्त्री की योनि से—कही से भी निकल सकता है।

श्लेष्मा का पीला रग—श्रीमती टायलर ने इस औषधि के लिये तीन शब्दो का प्रयोग किया है—Stringiness, Spottiness, Yellowness—सूतपना, स्वल्पस्थानपना, पीलापना। स्वल्पस्थानपना, अर्थात् छोटे-से स्थान मे दर्द—इसके विषय मे हम आगे लिखेंगे। यहा श्लेष्मा पर लिखते हुए उसके पीलेपन पर कुछ लिख देना आवश्यक है। इसमे श्लेष्मा का ही पीलापन नही है, आख पीली हो जाती है, थूक पीला आता है, कय पीली होती है, कान-नाक-आख से पीला स्राव आता है। डा० क्लार्क का कहना है कि जिन व्यक्तियो पर इस औषधि का परीक्षण किया गया है उनमे पीली कय विशेष तौर पर पायी गई है। **सिना** तथा **चैलीडोनियम** मे भी पीलापन होता है।

(२) **जीभ, मुंह तथा गले मे आतशक के जख्म, गोल छेद वाले जख्म**—इस औषधि से जिव्हा, मुह, तालु तथा गले के जख्म ठीक हो जाते हैं,

भले ही वे आतशक के ज़ख्म हो। जिव्हा के ज़ख्मो के साथ रोगी को जिव्हा की जडो मे वाल पडे होने का अनुभव होता है। जिव्हा की जड मे वाल पडे होने का-सा अनुभव मुँह मे भी हो सकता है, नाक मे भी। जिन स्वस्थ-व्यक्तियो पर इस औषधि का परीक्षण किया गया, उन्हें मुह मे वाल होने के इस अनुभव से वडी परेशानी होती थी। मुह के जख्म के अतिरिक्त गले मे, टासिलो मे ज़ख्म हो जाते हैं। गले के भीतर ये जख्म इतने फैल जाते हैं कि उनसे तालु ही खाया-सा जाता है। टासिल सूज जाते हैं, सख्त लाल हो जाते हैं, उनमे पीप पड जाती है, गला भी सूज जाता है। गले तथा टासिल की सूजन से दर्द कानो तक पहुचता है। इस प्रकार के ज़ख्मों मे—जो जीभ, मुह, तालु, गले तथा टासिलो मे हों—यह औपधि लाभ करती है।

गोल छेद वाले ज़ख्म—जैसा हमने कहा इस औपधि मे ज़ख्मो का होना आम पाया जाता है। भिन्न-भिन्न स्थानो मे जो ज़ख्म होते हैं वे गहरे होते हैं, और ऐसा लगता है जैसे वडा-सा साफ छेद—पच—कर दिया गया हो, इनके किनारे वडे साफ-सुथरे होते है। डा० नैश लिखते हैं कि एक स्त्री जिस का तालु ज़ख्मो मे खाया जा रहा था, ऐसा लगता था कि आतशक का ज़ख्म है, उसे उन्होंने **कैलि बाईक्रोम** ३० से तीन सप्ताह मे ठीक कर दिया। आतशक के जख्म जो वहुत वढ चुके हो, उन्हें भी यह औपधि ठीक कर देती है। **कैलि बाईक्रोम** का घाव गहरा और ऐसा साफ होता है मानो किसी ने सफाई से गोल छेद काटा हो, **मर्क्यूरियस** का घाव गहरा नही होता, फैला हुआ होता है—यह दोनो मे भेद है।

(३) **छोटे-से स्थान मे दर्द होना, भिन्न-भिन्न स्थानों मे दर्द का जल्दी-जल्दी स्थान-परिवर्तन तथा दर्द का एकदम आना एकदम जाना, सिर-दर्द से पहले देख न सकना**—जव शरीर के किसी स्थान पर एक जगह दर्द हो जो अगूठे से ढाँका जा सके, तव इस औपधि से वहुत लाभ होगा। सिर-दर्द मे भी ऐसा दर्द होता है, एक स्थान-विशेप पर, एक विन्दु पर—इसी को हमने 'स्वल्प-स्थानपना' (Spottiness) कहा है। ऐसा सिर-दर्द **इग्नेशिया** मे भी पाया जाता है। यद्यपि दर्द छोटी-सी जगह पर होता है, तो भी असह्य होता है। **कैलि बाईक्रोम** का इस प्रकार का सिर-दर्द कनपटी के एक तरफ पाया जाता है, परन्तु दर्द मे मुख्य-लक्षण एक विन्दु पर दर्द होना है। दाई छाती पर एक विन्दु पर दर्द होना, कमर मे त्रिकास्थि (Sacrum) मे एक पॉयन्ट पर दर्द होना—एक छोटे-से स्थान पर दर्द होना इसका विशेप-लक्षण है।

भिन्न-भिन्न स्थानो मे दर्द का जल्दी-जल्दी स्थान-परिवर्तन तथा दर्द का एकदम आना, एकदम जाना—गठिये के रोग मे भी दर्द हुआ करता है। इस औपधि का गठिये का दर्द एक जोड से दूसरे जोड मे चला-फिरा करता है। यह

लक्षण **पल्सेटिला** मे भी पाया जाता है। यह दर्द एकदम आता है और एकदम चला भी जाता है। एकदम आना तथा एकदम चले जाना **बेलाडोना** मे भी पाया जाता है। दर्द के इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान मे चलने-फिरने मे मुख्य रूप से औषधिया निम्न हैं :

(चलने-फिरने वाले दर्द मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

कैलि वाईक्रोम—इस औषधि मे दर्द इतनी देर नही ठहरता जितनी देर **पल्सेटिला** मे ठहरता है। **कैलि वाई** मे गठिये के दर्द मे शोथ भी ज्यादा नही होता। गठिये के दर्द मे इसके अन्य दवाओ से भिन्न होने का एक लक्षण यह भी है कि इसमे डिसेन्ट्री तथा गठिया पर्याय-क्रम से आते-जाते हैं, जब डिसेन्ट्री हो जाती है तब गठिया जाता रहता है, जब गठिया आ जाता है तब डिसेन्ट्री जाती रहती है।

कैलि सल्फ और पल्सेटिला—ये दोनो दवाएँ एक-सी हैं। **कैलि वाईक्रोम** शीत-प्रधान (Chilly) है, जब रोगी गर्म विस्तर मे लेटता है तब उसकी तकलीफो मे कमी हो जाती है, **कैलि सल्फ** और **पल्सेटिला** ऊष्णता-प्रधान (Warm-blooded) हैं, गर्मी से घवराते हैं। दर्द दोनो का चलता-फिरता रहता है।

लैक कैनाइनम—इस औषधि मे दर्द पासे वदलता रहता है, एक दिन दाईं तरफ़ तो दूसरे दिन वायी तरफ, फिर दायें, फिर वायें।

सिर-दर्द से पहले रोगी देख नहीं सकता—इस औषधि का सिर-दर्द ठंड लगने से जुकाम हो जाने के कारण होता है। जुकाम होने के वाद तेज़ सिर-दर्द होना शुरु हो जाता है, दर्द माथे पर किसी एक बिन्दु पर टिक जाता है जिसे अगूठे से ढका जा सकता है। सिर-दर्द शुरु होने से पहले रोगी देख नही सकता, सिर-दर्द शुरु होने के वाद दृष्टि ठीक हो जाती है। **साइलीशिया** मे सिर-दर्द शुरु होने के वाद आखो के सामने अन्धेरा आ जाता है।

(४) **गठिया और पेचिश, या गठिया और पेट की बीमारी मे पर्याय-क्रम**—जैसा इसके दर्द के लक्षणो से स्पष्ट हो गया होगा गठिये की यह मुख्य-औषधि है। जोडो मे दर्द होता है, वे सूज जाते हैं, लाल हो जाते हैं, दर्द चलता-फिरता है। गठिये मे इसका विशेष-लक्षण यह है कि जव पेचिश होती है तब गठिया हट जाता है, जब गठिया होता है तब पेचिश हट जाती है। पेचिश प्राय पतझड (शरद् के वाद) और गठिया प्राय बसन्त (ग्रीष्म मे पूर्व) मे होता है। गठिये और पेचिश की तरह गठिये और पेट की बीमारी मे भी प्रर्याय-क्रम रहता है। जब गठिये का आक्रमण होता है तब पेट की शिकायत नहीं रहती, जब पेट की शिकायत रहती है तब गठिये की शिकायत नही रहती।

दर्द तो चलता-फिरता है ही, पेट के रोगो मे भी जब गठिया प्रकट होता है तब पेट का रोग चला जाता है, जब पेट का रोग प्रकट होता है तब गठिया चला जाता है।

(५) **रोगी के शीत-प्रधान होते हुए भी शियाटिका के दर्द का गर्मी से बढ़ना**—रोगी शीत-प्रधान है, शरीर की गर्मी की उसमे कमी होती है, कपडे से लिपटा रहना चाहता है। खासी ठड से बढती और गर्मी से घटती है। उसकी हर शिकायत ठड मे बढ जाती है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि शियाटिका के दर्द मे इस औषधि की विशेषता यह है कि रोगी के शीत-प्रधान होते हुए भी उसका शियाटिका का दर्द गर्म ऋतु मे बढ जाता है। दर्द मे हरकत से, टाग को मरोडने से आराम मिलता है। दर्द कूल्हे से या घुटने से पिंडली तक फैलता है। इस औषधि मे गठिये का दर्द ग्रीष्म-ऋतु मे अधिक होता है—यह इसका 'विशिष्ट-लक्षण' है। शियाटिका के दर्द मे **कैलि कार्ब** भी उत्तम है।

(६) **पित्त-पथरी की प्रकृति को रोक देना**—जिगर की बीमारी मे जब पित्त-पथरी (Gall-stone) बन जाती है, तब इसके प्रयोग से शुद्ध-पित्त बनने लगता है, और पित्त-पथरी बनने की प्रकृति बदल जाती है। अगर रोगी मे पित्त की पथरी बन चुकी होती है तो वह घुल जाती है।

(७) **शीत-प्रधान तथा स्थूल-काय प्रकृति, ३ बजे प्रात. रोग का बढ़ना, खाने के बाद परेशानी**—ऊपर कहा जा चुका है कि इस औषधि का रोगी शीत-प्रधान होता है। इसके अतिरिक्त ध्यान रखने की बात तो यह है कि वह प्रकृति से स्थूल-काय होता है, उसका कोई भी रोग प्रात २ और ३ बजे के बीच बढ जाता है, खाने के बाद उसे परेशानी होने लगती है, २ और ३ बजे के बीच रोग के बढने को विशेष रूप मे ध्यान मे रखने की आवश्यकता है क्योकि इस लक्षण के आधार पर अनेक रोग ठीक हो जाते हैं। अगर कोई रोगी चिकित्सक को कहे कि उसकी खासी, उसका दर्द, उसका गठिया, उसका दमा ३ बजे प्रात काल बढ जाता है, तो **कैलि बाइक्रोम** को हर्गिज़ नही भूलना चाहिए।

(८) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i प्रत्येक दिन निश्चित घटे पर किसी दर्द का होना।

ii अगुलियो मे गठिये का दर्द।

iii **कैलि बाईक्रोम** तथा **नक्स मौस्केटा** मे खाना खाते ही पेट-दर्द शुरु हो जाता है, **नक्स वोमिका** तथा **ऐनाकार्डियम** मे खाने के १-२ घटे बाद भारीपन या पेट दर्द होता है।

iv **डायबेटीज**—अमरीका के प्रसिद्ध होम्योपैथ डा० ज्यार्ज रोयल अप्रैल १९३० के होम्योपैथिक रिकोर्डर मे लिखते हैं कि वे डायबेटीज के मरीज़ थे। एक

होम्योपैथ ने उन्हें कैलि बाइक्रोम ३X की मात्रा एक महीने तक लगातार देकर ठीक कर दिया, तब से वे इस चिकित्सा मे इतनी दिलचस्पी लेने लगे कि स्वय होम्योपैथ बन गये।

(९) शक्ति तथा प्रकृति—३, ३०, २०० (इस औषधि की निम्न-शक्ति की दवा देर तक रखने से खराब हो जाती है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिए है)

कैलि कार्बोनिकम (KALI CARBONICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) सूई चुभता-सा दर्द जो चुपचाप स्थिर लेटे रहने से बढे, खुले हिस्से मे दर्द का चले जाना, प्लुरिसी तथा शियाटिका मे ब्रायोनिया से इसकी तुलना	लक्षणो मे कमी (Better) *गर्मी से रोग मे कमी *दमे मे घुटनो पर कोहनी टेक कर बैठने से आराम
(२) पीठ के दर्द के साथ बेहद कमजोरी और पसीना	*खुली हवा से आराम
(३) आंख की उपरली पलक की सूजन	
(४) दमे या किसी रोग का २ से ४ बजे प्रात बढ़ना, विशेषकर ३ बजे प्रात	
(५) डर का पेट मे धक्का-सा लगना	
(६) स्पर्श सहन न कर सकना	
(७) हाथ तथा पैर की अगुलियो तक धडकन	
(८) हृदय की मन्द-गति के कारण शरीर मे शोथ की प्रवृत्ति	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(९) पुराना जुकाम जिसमे स्राव बन्द होने पर सिर-दर्द, और स्राव बहने पर सिर-दर्द हट जाता है (तपेदिक मे कैलि कार्ब की उपयोगिता)	*२ से ४ बजे (३ बजे) वृद्धि *ठडी हवा, ठडे झोको से *दर्द वाली तरफ लेटने से *स्थिर रहने से वृद्धि

(१) सूई चुभता-सा दर्द जो चुपचाप लेटे रहने से बढ़े, खुले हिस्से की तरफ दर्द का चले जाना, प्लुरिसी तथा शियाटिका मे ब्रायोनिया से इसकी तुलना—सर्दी मे रोगी को शरीर के किसी हिस्से मे भी दर्द हो जाता है। जिस हिस्से मे दर्द होता है उसे अगर ढक लिया जाय, तो उस हिस्से मे चला जाता है जो खुला होता है—यह इसका 'विचित्र-लक्षण' (Peculiar symptom) है।

घूमता-फिरता दर्द जो जिस किसी दिशा मे चल पडता है। ऐसा दर्द होता है जैसे सूई चुभ रही हो, चाकू से अग कट रहा हो।

प्लुरिसी का दर्द—प्लुरिसी मे, न्यूमोनिया मे इस प्रकार का दर्द होता है। इस दर्द की **ब्रायोनिया** से तुलना की जा सकती है। प्लुरिसी तथा न्यूमोनिया मे छाती मे सूई चुभता-सा दर्द होता है, परन्तु **कैलि कार्ब** का दर्द चुपचाप, स्थिर लेटे रहने से वढता है, **ब्रायोनिया** का दर्द चुपचाप पडे रहने से घटता है, **ब्रायोनिया** का दर्द दर्दवाले हिस्से की तरफ लेटने से घटता है, **कैलि कार्ब** का दर्द दर्दवाली तरफ़ लेटने या उस पर दवाव पडने से वढता है, **ब्रायोनिया** का दर्द प्राय गर्मी से वढता है, **कैलि कार्ब** का दर्द सर्दी से वढता है। प्लुरिसी या न्यूमोनिया मे सास लेने पर **ब्रायोनिया** का दर्द वढता है, सास लेना अर्थात् हरकत करना, **कैलि कार्ब** के दर्द मे हरकत हो या न हो, सास न लेते हुए भी रोगी चिल्ला उठता है। इससे स्पष्ट है कि होम्योपैथी मे रोग का नाम ही काफी नही है, रोग पर प्रभाव करने वाली परिस्थिति, रोग की 'प्रकृति' (Modality) पर विचार करना वहुत अधिक आवश्यक है। जिस प्लुरिसी और न्यूमोनिया मे **ब्रायोनिया** लाभ करेगा उसमे **कैलि कार्ब** लाभ नही करेगा, और जिसमे **कैलि कार्ब** लाभ करेगा उसमे **ब्रायोनिया** लाभ नही करेगा क्योकि दोनो की 'प्रकृति' (Modality) भिन्न-भिन्न है। इसके अतिरिक्त दर्द के क्षेत्र मे इन दोनो मे और भी भेद है। **ब्रायोनिया** का दर्द प्राय फेफडे, हृदय आदि शरीर के आन्तरिक-अगो की आवरक-झिल्ली (Serous membrane) मे होता है, **कैलि कार्ब** का दर्द वहा भी हो सकता है, शरीर के अन्य किसी भाग मे भी हो सकता है—यहा तक कि दातो के या रीढ के भीतर के दर्द मे भी लक्षण मिलने पर **कैलि कार्ब** उपयोगी है। **कैलि कार्ब** के प्रभाव का प्रिय-क्षेत्र दाईं छाती का निचला भाग है। यहा से सूई चुभने का-सा दर्द पीठ की तरफ फैल जाता है। अगर दाईं छाती के उपरले भाग से सुई चुभने का-सा दर्द शुरु होकर पीठ की तरफ फैल जाय तो **आर्सेनिक** उपयोगी है।

शियाटिका का दर्द—यह औषधि शियाटिका के दर्द मे भी उपयुक्त है। शियाटिका के दर्द मे इसका लक्षण है कूल्हे से घुटने (Hip to knee) तक जाने वाला दर्द, विशेषत दाईं तरफ का दर्द। डा० क्लार्क 'रुमेटिज्म एन्ड शियाटिका' मे लिखते हैं कि उनकी एक ७३ वर्षीया रोगिणी को इस प्रकार का दर्द था जिसे उन्होंने **कोलोसिन्थ** की कुछ मात्राओ से ठीक किया, परन्तु कुछ दिन वाद रुग्णा ने लिख भेजा कि डाक्टरो ने उसके रोग का निदान जरायु मे कैंसर का होना वतलाया है। लक्षण अव भी वही थे—कूल्हे से घुटने तक का दर्द, इसके साथ जरायु से काला स्राव। डा० क्लार्क ने उसे **कैलि कार्ब** की उच्चतम-शक्ति की एक मात्रा भेज दी जिससे शियाटिका का दर्द ही नहीं, जरायु

का रोग भी जाता रहा। जिस लक्षण पर औषधि दी गई थी वह था—कूल्हे से घुटने तक होने वाला दर्द (Hip to knee pain of sciatica).

(२) **पीठ के दर्द के साथ बेहद कमजोरी और पसीना**—डा० फैरिंगटन का कहना है कि पीठ का दर्द और उसके साथ बेहद कमजोरी और पसीना आ जाने का लक्षण इसके सिवाय अन्य किसी औषधि मे नही है। 'पीठ का दर्द', 'कमजोरी', 'पसीना'—इन तीनो का मेल इसी मे पाया जाता है। रोगी लगातार पीठ की कमजोरी की चर्चा करता है। इस से वह इतना परेशान रहता है कि रास्ते मे चलते-फिरते उसकी इच्छा होती है कि कही लेट कर आराम कर ले, पीठ उसका साथ नही देती। डा० फैरिंगटन लिखते हैं कि एक रोगी जब भोजन खा चुकता था तब उसे पीठ का दर्द शुरु हो जाता था। इस लक्षण पर—मुख्य तौर पर पीठ-दर्द के लक्षण पर—उसे **कैलि कार्ब** दिया गया और उसका अपचन का रोग दूर हो गया। डा० क्लार्क लिखते हैं कि एक स्त्री को पीठ मे गठिये के दर्द पर **कैलि कार्ब** दिया गया और उसका योनि-द्वार का कैंसर ठीक हो गया। इस दृष्टि से 'पीठ का दर्द' के साथ 'कमजोरी' और 'पसीना' इस औषधि का व्यापक-लक्षण है जिसके आधार पर इसे देने से रोगी के अन्य रोग दूर हो जाते हैं। होम्योपैथी मे किसी भी रोग मे औषधि का निर्वाचन करते हुए 'व्यापक-लक्षणो' को प्रधानता दी जाती है। 'व्यापक-लक्षण' के आधार पर दवा दी जाय तो कोई भी रोग क्यो न हो, उसका कुछ भी नाम क्यो न हो, वह दूर हो जाता है।

(३) **आख की उपरली पलक की सूजन**—इसका एक अद्भुत-लक्षण यह है कि किसी भी रोग मे आँख की ऊपरी पलक तथा भौओ के बीच का हिस्सा थैले का-सा सूज जाता है। हनीमैन के पट्टशिष्य डा० बोनिनघॉसन लिखते हैं कि हूपिंग-कफ मे जब उसकी प्रसिद्ध-औषध **ड्रौसरा** से लाभ न हुआ, तब आख के उपरली पलक की सूजन के लक्षण को देख कर **कैलि कार्ब** से लाभ हो गया। खांसी मे भी इस लक्षण के होने पर इससे लाभ होता देखा गया है। **एपिस** मे आँख के नीचे की पलक मे शोथ होता है।

(४) **दमे या किसी रोग का २ से ४ बजे प्रात बढ़ना, विशेषकर ३ बजे प्रात.**—इस औषधि मे रोग की वृद्धि का समय प्रमुख लक्षण है। सब रोग प्रात २ से ४ बजे के बीच बढ जाते हैं। २ बजे सूखी खासी या पेट का दर्द सोने मे जगा देता है, ३ बजे दमे का प्रकोप हो जाता है या हूपिंग कफ जोर मारने लगता है, या किसी और प्रकार का दर्द इस समय रोगी को नीद से उठा देता है, ३ से ४ बजे के बीच दस्त तग करते है। **कैलि कार्ब** के लिये प्रात काल का समय कष्ट का समय होता है, खासकर ३ बजे प्रात काल का समय इस रोगी के लिए अत्यन्त बुरा होता है। सब लक्षण ५ बजे प्रात काल

तक शान्त हो जाते हैं, रोगी प्रात ५ बजे कष्टो के शान्त होने पर सो पाता है। इस औषधि का दमे का रोग नम मौसम मे बढता है।

(५) **डर का पेट मे धक्का-सा लगना**—इस औषधि का एक अद्भुत-लक्षण यह है कि रोगी को बेचैनी पेट मे अनुभव होती है। उसे ऐसे लगता है जैसे डर का पेट पर धक्का लगता है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि एक रोगिणी ने इस अनुभव को उनसे इस प्रकार व्यक्त किया उसने कहा "डाक्टर न-जाने क्या बात है, मुझे डर तो लगता है, परन्तु दूसरो को जैसा डर लगा करता है वह वैसा डर नही है। मुझे डर का धक्का पेट पर लगता है"। उसने कहा कि जब वह भयभीत होती है तो उसका अनुभव उसके पेट पर होता है। "जब मैं दरवाजा जोर से बन्द करती हू तो उसके खटाक-शब्द का असर ठीक पेट पर होता है"। **कैलि कार्ब** का यह 'अद्भुत-लक्षण' (Peculiar symptom) है। उसे जरा-सा छू दें तब भी असर पेट पर ही जाता है।

(६) **स्पर्श सहन न कर सकना**—रोगी जरा-से स्पर्श को भी नही सह सकता। पैर के तलवो को छूते ही सिहर उठता है, चौंक जाता है। हाथ से छूना दूर रहा, पैर के तलवे को चद्दर का स्पर्श भी सहन नही होता, स्पर्श से सारे शरीर मे लहर दौड जाती है। जोर से दबायें तो कुछ नही होता, इससे रोगी चौंकता नही, परन्तु अनजाने जरा-से भी स्पर्श से वह चौंक जाता है। अगर विना वतलाये उसकी नाडी देखने के लिए उसे छू दिया जाय, तो लहरा जाता है—यह उसका व्यापक-लक्षण है, उसकी प्रकृति मे स्पर्श के प्रति असहिष्णुता है। **लैकेसिस** मे भी स्पर्श न सह सकना है, रोगी गले मे कालर नही पहन सकता, गला घुटता-सा लगता है, परन्तु **लैक** गर्म और **कैलि कार्ब** शीत प्रकृति की हैं।

(७) **हाथ तथा पैर की अंगुलियों तक मे धड़कन**—जब पेट खाली होता है तब पेट मे धमनी की फुदकन, हृदय की धडकन महसूस होती है। यह धडकन सारे शरीर मे अनुभव होती है, हाथ और पैर की अगुलियों तक मे। जब हृदय-प्रदेश मे धडकन की परेशानी महसूस नही होती तब भी सारे शरीर मे, हर अग में धडकन महसूस होती है और रोगी इस धडकन की वजह से सो नही सकता।

(८) **हृदय की मन्द-गति के कारण शरीर मे शोथ की प्रवृत्ति**—इस औषधि मे शोथ की प्रवृत्ति है। पावो मे शोथ हो जाती है, अगुलिया सूज जाती हैं, हाथो की पीठ मे शोथ हो जाती है, शोथ को दवाने से गढे पड जाते हैं। यह सव हृदय की मन्द-गति के कारण है। रुधिर के मन्द-सचार के कारण शोथ का हो जाना स्वाभाविक है। आख के पपोटो के शोथ का वर्णन हम कर ही आये हैं। **कैलि कार्ब** का चेहरा रक्त के सचार की कमी के कारण मुरझाया रहता है, फीका रहता है, रोगी को ऊचाई मे चढने मे कष्ट होता है, समतल

भूमि पर चलने पर भी सांस चढ़ जाता है। फेफड़ों की परीक्षा करने से कोई रोग नहीं दिखाई देता, परन्तु हृदय की मन्द-गति के कारण धीरे-धीरे रोगी क्षीण होता जाता है। इस प्रकार जो धीरे-धीरे, लगातार क्षीणता आती जाती है वह उचित समय पर इस औषधि के देने से रुक सकती है, परन्तु इसका आगमन इतना धीमा होता है कि जब रोगी असाध्य हो जाता है, तब चिकित्सक सोचने लगता है कि अगर उसे कैलि कार्ब दे दिया जाता तो रोगी बच जाता। शरीर में बढ़ती हुई शोथ की प्रवृत्ति को देखकर इस औषधि को ठीक समय पर स्मरण कर लेना उचित है।

(९) पुराना जुकाम जिसमें स्राव बन्द होने पर सिर-दर्द हो जाता, और स्राव बहने पर सिर-दर्द हट जाता है (तपेदिक में कैलि कार्ब की उपयोगिता)—जिन लोगों को पुराने जुकाम की शिकायत होती है उन्हें प्रातः नाक में स्राव शुरु होता है और नाक गाढ़े पीले म्यूकस से भर जाती है। प्रातःकाल नाक में भरी सूखी पपड़ियां निकालने की कोशिश करता है, परन्तु वे नाक से निकलने के बजाय निगली जाती है। जहां से पपड़ियां छूटती हैं वहां से खून निकलने लगता है। रोगी का नाक गर्म कमरे में बन्द हो जाता है, खुली हवा में बहने लगता है। जब नाक से स्राव का बहना रुक जाता है तब सिर-दर्द शुरु हो जाता है, और जब स्राव खुलकर बहने लगता है तब सिर-दर्द हट जाता है।

तपेदिक में कैलि कार्ब की उपयोगिता—डा० हनीमैन का कथन है कि तपेदिक के सब प्रकार के रोगों में यह उत्कृष्ट औषधि है, विशेषकर उन रोगियों में जिन्हें प्लुरिसी के बाद तपेदिक का रोग हो जाता है और छाती में सुई बेधने की-सी टीस उठा करती है। इसका थूक गोल-गोल होता है, ३ बजे प्रातः रोग बढ़ता है, पांव के तलवे स्पर्श नहीं सह सकते, गला बैठ जाता है, पलकों पर सूजन आ जाती है, छाती तो **स्टैनम** की तरह कमज़ोर होती ही है।

(१०) इस औषधि के विषय में अन्य जानने योग्य बातें तथा लक्षण—

1 **शारीरिक रचना, मोटापा तथा शीत-प्रधान प्रकृति** (Constitution, Obesity and Chilliness)—इस औषधि के व्यक्ति की शरीर की प्रवृत्ति मुटापे की तरफ होती है। मांसपेशियां ढीली-ढाली होती हैं। त्वचा दूध की-सी सफेद, रक्तहीन होती है। एनीमिया का शरीर होता है, और शरीर में शोथ की प्रवृत्ति होती है। एनीमिया के कारण वह 'शीत-प्रधान' (Chilly) होता है, हर समय ठंड लगती है। साधारण तौर पर चेहरा पीला होता है, परन्तु खांसने आदि के समय झूठी लाली मुंह पर झलकने लगती है। सर्दी से बचने के लिये दरवाज़े-खिड़की बन्द किया करता है। वृद्ध व्यक्तियों के रोगों में उपयुक्त है।

11 **मानसिक रचना; रोगी एकान्त से डरता है**—रोगी बड़ा वहमी होता है, बेहद चिड़चिड़ा, परिवार के लोगों से भी लड़ता है। इकला नहीं रह सकता,

जब इकला होता है तब उसे तरह-तरह के भय सताते हैं। भविष्य की चिन्ता करता है। भूत-प्रेत से डरता है। अगर इकला रहना पड़े तो सो नही सकता, सोता है तो भयानक सपने देखता है। उसके दिल मे वहम उठता है 'अगर कही मकान को आग लग गई, अगर यह हो गया या वह हो गया तो क्या होगा।'

iii **सभोग के बाद सब तकलीफों का बढ़ जाना**— डा० कैन्ट लिखते हैं कि **कैलि कार्ब** के रोगी की शारीरिक तथा मानसिक दुर्बलता का तथा इसका प्रमाण कि वह क्षीण होता जा रहा है यह है कि सभोग के बाद उसकी परेशानी के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। अगर मनुष्य स्वाभाविक-सभोग करे, तो उसका परिणाम बेहद कमज़ोरी, परेशानी नही होना चाहिए, परन्तु अगर सभोग के बाद लगातार आखो की रोशनी कम होती दीखे, कपकपी आये, स्नायविक-शिथिलता उत्पन्न हो जाय, नीद न आये, दो तीन दिन तक व्यक्ति कपन अनुभव करे, तो इस औषधि के लक्षण समझने चाहियें। ऐसी अवस्था पुरुष तथा स्त्री दोनो मे हो सकती है।

iv **हर समय जननागो की तरफ़ ध्यान**—जननागो के मिथ्या-आचरण के कारण रोगी का ध्यान हर समय उनकी तरफ जाता रहता है। प्राय चिकित्सक जननागो की शिथिलता पर झट-से **फॉसफोरस** दे दिया करते हैं, परन्तु डा० कैन्ट कहते हैं कि नपुसकता मे या जननागो की शिथिलता मे इतना ही नही कि इस औषधि से कोई लाभ नही होगा, अपितु उसकी शिथिलता और अधिक बढ जायगी। जो लोग हर समय थके-मादे रहते हैं, बेहद कमज़ोर और बिस्तर मे जा लेटना चाहते हैं, उन्हें **फॉसफोरस** से लाभ नही होगा, **कैलि कार्ब** से लाभ होगा।

v **जरायु का रक्त-स्राव** (Uterine hemorrhage)—स्त्रियो का यह मित्र है। जिन स्त्रियो को लगातार रक्त-स्राव होता रहता है, पीली, मोम-की-सी शक्ल हो जाती है, या गर्भपात के बाद और सब प्रकार के शल्य-क्रिया के इलाज के बाद भी रक्त रिसता रहता है, या मासिक-धर्म के रज स्राव के बाद जब काफी और देर तक रक्त-स्राव हो चुकना है उसके बाद भी अगले मासिक तक रक्त रिसता रहता है और अगले मासिक मे भी काफी रक्त-स्राव होता है—इस प्रकार के रिसते रहने वाले रक्त-स्राव मे यह उपयोगी है।

vi **गर्भावस्था मे वमन**— गर्भावस्था मे **इपिकाक** से वमन थोडी देर के लिए शान्त होती है, उसका असली इलाज तो 'देह के स्वभाव की 'औषधि' (Constitutional drug) ही है। इस प्रकार की स्थिर लाभ करने वाली दवायें हैं **सलफर, सीपिया, कैलि कार्ब** तथा **आर्सेनिक**। अगर केवल पेट की खराबी से गर्भिणी को उल्टी आ रही है, तब तो **इपिकाक** काफी है, परन्तु अगर उसे पेट की खराबी से नही अपितु बिना किसी विशेष लक्षण के दिन-रात

उल्टी आती है, जो मिचलाया करता है, तब सिमफोरिकारपस से लाभ होता है। इससे भी इपिकाक की तरह सामयिक ही लाभ होता है, परन्तु स्थिर लाभ के लिये गहराई में जानेवाली कैलि कार्ब, सलफर, सीपिया, आर्सेनिक में से लक्षणानुसार किसी दवा का निर्वाचन करना होगा।

VII. **सन्तानोत्पत्ति के समय प्रजनन-संबंधी पीड़ा**—सन्तानोत्पत्ति के समय प्रजनन-संबंधी-पीड़ाएं (Labour pains) नियमित रूप से होनी चाहियें। उनके नियमित न होने से गर्भवती को कष्ट होता है। इस दशा में **कैलि कार्ब** तथा अन्य औषधियां उपयोगी हैं जिन में से कुछ निम्न हैं—

(प्रजनन-संबंधी पीड़ा को नियमित करनेवाली मुख्य-मुख्य औषधियां)

कैलि कार्ब—पीठ में ऐसा दर्द होता है मानो टूट जायेगी। जरायु कमज़ोर होता है, और पीड़ा हल्की होती है। पीड़ा पीठ तक सीमित रहती है और उत्पादन के केन्द्र-स्थल तक नहीं पहुंचती। ठंड लगती है। पीठ की कमज़ोरी इसका चरित्रगत-लक्षण है।

जेलसीमियम—दर्द पीठ में आता है और जरायु की तरफ जाता प्रतीत होता है, परन्तु फिर झट-से पीठ की तरफ चला जाता है। पीठ से जरायु तक जाकर फिर पीठ की तरफ लौट आना इसका विशिष्ट-लक्षण है।

ऐक्टिया रेसिमोसा—कभी-कभी दर्द इतना तेज़ होता है कि उससे जरायु का संकोच होकर बच्चा निकल आने के बजाय जरायु का संकोच और रुक जाता है। जब जरायु का संकोच इस पीड़ा से रुक जाय, स्त्री पीड़ा से चिल्लाये और कहे कि दर्द जरायु पर केन्द्रित न होकर पेट के दोनों तरफ से हो रहा है, तब इस औषधि से लाभ होता है।

पल्सेटिला—जब जरायु का मुख खुला हो और यह प्रतीत हो कि आसानी से प्रसव हो जायगा, परन्तु फिर भी जरायु शिथिल हो, क्रिया-रहित हो, प्रसव न हो रहा हो, तब यह औषधि ५ मिनट में जरायु में गति उत्पन्न कर प्रसव कर देगी।

VIII **माहवारी को खोल देती है**—माहवारी के एक सप्ताह पहले तबीयत खराब होने लगती है, कमर में दर्द होने लगता है जो माहवारी के दिनों में भी बना रहता है। हनीमैन का कथन है कि माहवारी जो **नेट्रम म्यूर** से खुल जानी चाहिये उस से न खुले तो इस से खुल जाती है।

IX मुंह धोते समय सुबह नाक से खून आना।

X बार-बार जुकाम हो जाने को ठीक करती है।

XI खसरे के बाद की खासी को ठीक करती है।

XII वार-वार पेट का दर्द जो पहले कौलोसिन्थ से ठीक हो जाय, फिर ठीक न हो।

XIII हनीमैन का कथन है कि फेफडो के ज़ख्म इस एण्टीसोरिक दवा के विना ठीक नही हो सकते।

(११) शक्ति तथा प्रकृति—यह दीर्घगामी तथा गूढ-क्रिया करने वाली औषधि है। शक्ति ३०, परन्तु इस औषधि को दोहराना वहुत सोच-समझ कर चाहिये। डा० कैन्ट लिखते है कि गठिये के रोग मे, टी० वी० मे उपयुक्त होते हुए भी इस औषधि को न देना ही ठीक है क्योकि 'यह देह के स्वभाव की औषधि' (Constitutional drug) है, और रोगी को आज से २० साल पहले जो दवा दी जानी चाहिये थी वह अगर अव दी जायगी तो लाभ होने के वजाय नुकसान होगा क्योकि इस अर्से मे रोग शरीर मे इतना बैठ चुका होगा कि वह इस औषधि के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया करने मे असमर्थ हो चुका होगा। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है।

कैलि आयोडाइड (KALI IODIDE)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) किसी भी अग से गाढा, हरा या पीले-हरे रग का स्राव
(२) न्यूमोनिया के वाद की खासी या क्षय-रोग की खासी
(३) सिफिलिस मे शीत-प्रधान रोगी का हिपर से तथा ऊष्णता-प्रधान रोगी का कैलि आयोडाइड से इलाज करे
(४) ऊष्णता-प्रधान रोगी को चलने-फिरने से गठिये मे आराम। (रस टॉक्स से तुलना)
(५) त्वचा के विस्तृत भाग मे स्पर्श के प्रति असहिष्णुता
(६) पित्त उछलना
(७) कान मे सांय-सांय शब्द सुनाई देना (Tinnitus)

(१) किसी भी अग से गाढा, हरा या पीले-हरे रग का स्राव—आख, नाक, कान मे गाढ़ा, हरे या हरे-पीले रग का स्राव वहे, प्रदर के स्राव का रग हरा या हरा-पीला हो, तो इस औषधि की तरफ ध्यान देना चाहिये।

(२) न्यूमोनिया के वाद की खासी या क्षय-रोग की खासी—ऐसी खासी जिस मे गाढ़ा-हरा, नमकीन थूक अधिक परिमाण मे निकले, मानो छाती के ठीक बीच से निकल रहा है, दर्द छाती के मध्य से चल कर पीछे कधो के बीच तक पहुचे, थकावट के साथ रात को पसीना आये, ऐसा प्रतीत हो कि क्षय-रोग आने ही वाला है, ऐसी हालत मे कैलि आयोडाइड, सैंग्विनेरिया और स्टैनम ये तीन औषधिया हैं। कैलि आयोडाइड का थूक वहुत होता है, गाढा होता है,

हरा होता है, नमकीन होता है, **सैंग्विनेरिया** का थूक भी बहुत, गाढ़ा, परन्तु उसके साँस और थूक से रोगी को भी बदबू आती है, इतना हरा भी नहीं होता, **स्टैनम** का थूक बहुत, गाढ़ा, हरा होता है, परन्तु उसका स्वाद मीठा होता है। क्षय मे इन तीन औषधियों के उक्त लक्षणो को ध्यान मे रखना चाहिये।

(३) सिफिलिस मे शीत-प्रधान रोगी का हिपर से तथा ऊष्णता-प्रधान रोगी का कैलि आयोडाइड से इलाज करे—सिफिलिस के रोगी जिनका एलोपैथी के ढंग से पारे द्वारा इलाज हुआ है उनको रोग के दबा दिये जाने के कारण अनेक रोग हो जाते हैं। अगर रोगी शीत-प्रधान हो, सर्दी मे परेशान रहता हो, तो हिपर से, और अगर ऊष्णता-प्रधान हो, गर्मी से परेशान रहता हो, तो कैलि आयोडाइड से उसका इलाज शुरु करना चाहिये। हिपर शीत-प्रधान है, कैलि आयोडाइड ऊष्णता-प्रधान है।

(४) ऊष्णता-प्रधान रोगी का चलने-फिरने से गठिये मे आराम अनुभव करना (रस टॉक्स से तुलना)—गठिये मे अगर चलने-फिरने से आराम अनुभव करे, तो प्राय इसी लक्षण के आधार पर कई लोग **रस टॉक्स** दे देते हैं, परन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि **रस टॉक्स** 'शीत-प्रधान' है, अंगीठी के सामने बैठे रहता है, **कैलि आयोडाइड** 'ऊष्णता-प्रधान' है, गर्मी पसन्द नहीं करता। इसलिये अगर गठिये मे रोगी चलने-फिरने से आराम अनुभव करे, परन्तु गर्म मिजाज़ का हो, तो उसे **रस टॉक्स** से नहीं, **कैलि आयोडाइड** से लाभ होगा।

(५) त्वचा के विस्तृत-भाग मे स्पर्श के प्रति असहिष्णुता (General sense of diffused sensitiveness)—डा० क्लार्क लिखते हैं कि एक रोगी को आख के ऊपर दर्द बैठ गया था। उसे जब दर्द का दौर पडता था, तब वह माथे के किसी हिस्से को भी छूने नहीं देता था। जहाँ दर्द था वहीं स्पर्श के प्रति असहिष्णुता नहीं थी, सारे माथे को वह किसी जगह भी स्पर्श नहीं करने देता था। **कैलि आयोडाइड** से वह ठीक हो गया। त्वचा के विस्तृत भाग मे स्पर्श के प्रति असहिष्णुता फल जाना इसका चरित्रगत-लक्षण है।

(६) पित्त उछलना—जिन्हें बार-बार पित्त उछलती है, वे अगर ऊष्णता-प्रधान हो तो इस दवा से लाभ हो सकता है।

(७) कान मे सांय-साय शब्द सुनाई देना (Tinnitus)—अगर रोगी के शरीर मे आतशक का बीज हो, तो कान मे तरह-तरह के शब्द सुनाई देने लगते हैं जिनकी बाह्य-सत्ता नहीं होती। इस दवा से लाभ होता है।

डा० चौधरी अपने 'मैटीरिया मैडिका' मे लिखते हैं कि कान की साय-साय मे **कैलि आयोडाइड** का चमत्कारी प्रभाव होता है। एक सरकारी कर्मचारी उनके पास इस रोग के इलाज के लिये आया जो कान की साय-साय से अत्यन्त व्याकुल था। उसे **बेलाडोना, कॉस्टिकम, चायना, ग्रैफाइटिस** मे से किसी

से लाभ नही हुआ। उसे आतशक हो चुकी थी—इस लक्षण पर **कैलि आयोडाइड** से उसका रोग जाता रहा। डा० कूपर लिखते हैं कि **कैलि आयोडाइड** ३० की एक मात्रा देने से कानो मे शब्द होने (Noises in the ears) के अनेक रोगियो को उन्होंने ठीक कर दिया। मात्रा ३० या २०० की दी जा सकती है, परन्तु उसे अपना प्रभाव दिखाने के लिये समय मिलना चाहिये। डा० मूर लिखते हैं कि कानो मे शब्द सुनाई देने (Tinnitus) का रोग इतना कष्ट-साध्य है कि उन्होने अनेक औषधियो से सफलता पाने की असफल चेष्टा की परन्तु अन्त मे **थियोसिनेमाइन** १X से उन्होंने इस रोग के पुराने रोगियो को भी ठीक कर दिया।

चबाते हुए कानो मे शब्द हो, तो **कैलि सल्फ** और **नाइट्रिक ऐसिड** लाभ करते हैं, महावारी होने से पहले कानो मे शब्द होने लगे, तो **क्रियोजोट** से लाभ होता है, माहवारी के दिनो मे कानो मे शब्द हो, तो **फैरम, पेट्रोलियम** या **विरैट्रम** की तरफ ध्यान जाना चाहिये, अगर रात को कानो मे बजबजाहट होने लगे, तो **डलकेमारा** उपयोगी है, अगर रोगी को अपनी आवाज़ ही दुवारा गूज कर सुनाई दे, तो **कॉस्टिकम, लाइकोपोडियम, फॉसफोरस** तथा **सीपिया** के लक्षण है।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

कैलि म्यूरियेटिकम (KALI MURIATICUM)

(१) **बायोकैमिक प्रयोग (सफेद रंग का स्राव)**—यह औषधि शुस्लर के १२ लवणो मे एक है। इससे पहले हम शुस्लर के **कैलकेरिया फॉस, कैलकेरिया सल्फ** और **फैरम फॉस** का वर्णन यथा-स्थान कर आये हैं। बायोकैमिस्ट इसका प्रयोग इस आधार पर करते हैं कि अगर शरीर मे इस लवण की कमी हो जाय तो जुकाम, सूजन आदि रोग हो जाते हैं। यह लवण उस कमी को ३x, ६x, १२x की मात्रा देने से दूर कर देता है। होम्योपैथ इसका प्रयोग अपने 'सम सम शमयति' के नियम के आधार पर करते हैं। वे ३० , २०० आदि शक्ति मे इसका व्यवहार करते है । परन्तु होम्योपैथ बायोकैमिक औषधियो का प्रयोग कभी-कभी बायोकैमिक-दृष्टि से भी करते हैं।

शरीर की श्लैष्मिक-झिल्लियो मे जहा-जहा भी सफेद स्राव दिखलाई देता है वह फ़ाइब्रिन से बनता है । फाइब्रिन रुधिर मे जमनेवाले नाइट्रोजन-युक्त प्रोटीन को कहते है। शुस्लर का कहना है कि अगर शरीर मे **कैलि म्यूर** की कमी हो जाय, तो यह फाइब्रिन बाहर निकल पडती है। जीभ पर फ़ाइब्रिन जीभ के सफेद लेप के रूप मे प्रकट होती है, नाक, मुंह, कान तथा फोडे आदि मे यह फ़ाइब्रिन सफेद चिकटे थूक या पस या स्राव के रूप मे दिखलाई देती है। यह

स्राव फाइब्रिन का होता है और सफेद तो होता ही है, साथ ही जम जाने के स्वभाव के कारण आसानी से छूटता नहीं, चिपट जाता है। इसलिये जो स्राव कहीं भी चिपटने वाला हो, सफेद हो, वहां कैलि म्यूर काम देता है। अगर थूक में झाग ज्यादा हो, तब तो फैरम फॉस दिया जायेगा, क्योंकि थूक में झाग होने का मतलब यह होगा कि उसमें फाइब्रिन नहीं है, हवा है, और हवा को अर्थात् ऑक्सीजन को रुधिर में खींच लेने का काम फैरम फॉस का है। इस प्रकरण में यह भी ध्यान रखने की बात है कि सूजन की प्रथम-अवस्था में तो फैरम फॉस दिया जाता है, परन्तु द्वितीय-अवस्था में कैलि म्यूर दिया जाता है। इसका कारण यही है कि सूजन की द्वितीय-अवस्था में सूजन में से फाइब्रिन बाहर निकलने लगता है। फोड़े आदि में कैलि म्यूर के बाद जब गाढ़ी पस निकलने लगे, तब कैलि सल्फ देते हैं, और जब पस सूख जाय तब फोड़े को भरने के लिये साइलीशिया दिया जाता है। फाइब्रिन का सफेद स्राव न्यूमोनिया के समय छोटे-छोटे सफेद-सफेद थूक के थक्कों के रूप में दिखलाई देता है, उस समय इन्हीं थक्कों की अटक के कारण फेफड़ों में घर्र-घर्र की आवाज आती है। क्रूप और डिफथीरिया में भी इसी प्रकार का स्राव होता है। जुकाम में जब सूत का-सा चिपटने वाला स्राव निकलता है, खांसी में भी जब ऐसा सफेद और चिपटने वाला कफ निकलता है, तब कैलि म्यूर ही लाभप्रद होता है। कभी-कभी शरीर में कैलि म्यूर की कमी होने के कारण, फाइब्रिन शरीर की त्वचा के ऊपर आ जाती है जिसमें सफेदी होती है, ऐसी सफेदी जैसी मुंह के छालों में नजर आती है या जैसी गोनोरिया या प्रदर में दीखती है। बायोकैमिस्ट इन सब अवस्थाओं में इसी औषधि का प्रयोग करते हैं, मुख्य लक्षण है—सफेद लेप या स्राव जो चिपटने वाला हो, जिसे खींचने से तार बंध जाय, जिसमें फाइब्रिन हो।

(२) **होम्योपैथिक प्रयोग (सफेद रंग का स्राव)**—होम्योपैथिक-दृष्टि से भी इसका प्रयोग सफेद और चिपटने वाले स्राव में किया जाता है। मुंह के सफेद छाले, फोड़े का सफेद पस इसके क्षेत्र में हैं। कान की नली, जिसे युस्टेकियन-ट्यूब कहते हैं, उस पर इसकी विशेष क्रिया है। युस्टेकियन-ट्यूब का प्रदाह, उसकी सूजन, कान में भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्द इस औषधि के प्रभाव-क्षेत्र में हैं। इस नली की सूजन से अगर बहरापन हो जाय, तो उसमें भी यह दी जाती है, परन्तु हर जगह इसके निर्वाचन का प्रधान लक्षण सफेद चिपटने वाला स्राव है। अपचन, अजीर्ण-रोग में भी इसे दिया जाता है, परन्तु जीभ सफेद होनी चाहिये।

(३) **शक्ति तथा प्रकृति**—बायोकैमिक रूप में ६X, १२X, होम्योपैथिक रूप में ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

कैलि फॉसफोरिकम (KALI PHOSPHOP ICUM)

[कैलि फांस का बायोकैमिक उपयोग—स्नायु-सस्थान]

स्नायु-सस्थान की निर्बलता (Weakness of Nervous system)—शुस्लर के १२ लवणो मे यह भी एक लवण है। शुस्लर का कहना है कि यह मस्तिष्क के कोष्ठको का घटक है। इसकी कमी के कारण मस्तिष्क-सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। निराशा, नीद न आना, चिन्ता, भय, रोने की इच्छा, स्कूल के वच्चो मे घर जाने की आकाक्षा, शक्कीपन, स्मृति-शक्ति की कमी तथा अन्य मानसिक-व्याधियो मे यह लाभप्रद है। ज्ञान-तन्तुओ मे **कैलि फॉस** की कमी के कारण उनमे निर्बलता आ जाती है, इस निर्बलता से हृदय की नाडी भी निर्बल हो जाती है। इस आती हुई निर्बलता की प्रतिक्रिया के रूप मे पहले तो बडी तेज़ी आती है, किन्तु पीछे नाडी शिथिल हो जाती है। इसीप्रकार ज्ञान-ततुओ मे **कैलि फॉस** की कमी के कारण पहले दर्द अनुभव होता है, बाद को अर्धांग आ जाता है। पहले दर्द इसलिए होता है क्योकि अर्धांग जैसी अवस्था मे जाने से पहले ज्ञान-ततु अपनी स्वाभाविक-प्रतिक्रिया करते हैं ताकि अर्धांग की अवस्था न आये, परन्तु क्योकि ज्ञान-ततु निर्वल होते हैं, उनमे **कैलि फॉस** की कमी होती है, इसलिये पीछे जाकर अर्धांग हो जाता है। यही कारण है कि रोगी को दर्द भी होता है, और दर्द की विरोधी वस्तु अर्धांग भी। **कैलि फॉस** की कमी के कारण शरीर की माम-पेशियां ढीली हो जाती है। कभी-कभी इतनी ढीली कि अर्धांग होने का भय रहता है, कभी-कभी हो भी जाता है। ऐसे समय यह औषधि लाभप्रद साबित होती है।

कभी-कभी ज्ञान-ततु को **कैलि फॉस** न मिलने के कारण यह सूज जाता है। परिणामस्वरूप उस ज्ञान-ततु का शरीर मे जहा प्रभाव होता है, वहाँ रोग दिखलाई देता है। उदाहरणार्थ, सिर मे कही-कही गंज का गोल निशान दिखलाई पडता है। इसका क्या कारण है? शुस्लर का कथन है कि इसका कारण यह है कि उस स्थान के ज्ञान-ततुओ मे **कैलि फॉस** की कमी आ गई है, और वे उस स्थान मे उचित मात्रा मे रुधिर का सचार नही कर रहे। इस प्रकार के गज मे यह औषधि लाभ देगी। कभी-कभी पेट मे गोल-अलसर हो जाते हैं। यह भी इसलिए होता है क्योकि इस स्थान तक रुधिर लाने वाली नाडियो के ज्ञान-ततुओ मे **कैलि फॉस** की कमी है, इस कमी के कारण ज्ञान-ततु सूक गये हैं, ऐसे व्रण इस लवण से ठीक हो जाते हैं। अगर शरीर के किसी स्थान मे मास-पेशियाँ धीरे-धीरे सूकती जा रही हो, तो इसका कारण **कैलि फॉस** की कमी होता है। टाइफॉयड मे रोगी से वदबू आने लगती है। कई फोडे सड कर बदबू देने लगते हैं। कारबकल आदि मे सडाद पैदा हो जाती

है। कई लोगों के दाँतों से बदबू आने लगती है। इस सब बदबू का कारण यह है कि इन स्थानों के ज्ञान-तंतुओं में कैलि फॉस की कमी के कारण ये सूक जाते हैं, काम नहीं करते, इन तक रुधिर का पूरा संचार नहीं हो पाता, रुधिर न पहुंचने से ये स्थान गलने-सड़ने लगते हैं। ऐसी अवस्था में कैलि-फॉस ज्ञान-तंतुओं को सड़ने से बचा लेगा और बदबू देने वाले अंगों में रुधिर का पूरा संचार होने के कारण सड़ाद नहीं पैदा होगी। बायोकैमिस्ट इस औषधि का ३x, ६x, १२x में प्रयोग करते हैं।

[कैलि फॉस का होम्योपैथिक उपयोग]

(१) **स्नायु-सम्बन्धी रोग (Nervous diseases)**—होम्योपैथ इस औषधि का बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दोनों दृष्टियों से उपयोग करते हैं। बायोकैमिक-दृष्टि से तो ३x, ६x, १२x में ही प्रयोग होता है, परन्तु होम्योपैथिक दृष्टि से डा० कैन्ट लिखते हैं कि उच्च-शक्ति, और उच्चतम शक्ति से उत्तम परिणाम दिखाई दिये हैं। उच्च-शक्ति में लक्षणानुसार इसका प्रयोग करते हुए एक ही मात्रा देनी चाहिये, उसे दोहराना नहीं चाहिये। होम्योपैथिक-दृष्टि से इस औषधि का स्वस्थ-व्यक्तियों पर परीक्षण (Proving) बहुत कम हुआ है। आयोवा विश्वविद्यालय के डा० ज्योर्ज रॉयल तथा उनके छात्रों ने इस औषधि के परीक्षण किये हैं, परन्तु उन्हें विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। इस औषधि पर जो-कुछ ज्ञान है वह अनुभव के आधार पर ही आश्रित है।

(२) **रोगी शीत-प्रधान होता है**—रोगी शीत-प्रधान होता है, उसके दर्द आदि में भी शीत से वृद्धि होती है। वह ठंडी हवा नहीं पसन्द करता। ठंडी हवा लगने से वह रुग्ण हो जाता है। ठंड, ठंडी हवा, ठंडी हवा का झोंका उसके रोग को बढ़ा देता है।

(३) **प्रातः, सायं और रात्रि को तथा विश्राम से रोग-वृद्धि**—रोगी का रोग प्रातःकाल, सायंकाल और रात को बढ़ जाता है। उसकी अधिकांश शिकायतें आराम के समय बढ़ती है। धीरे-धीरे चलने-फिरने से उसे राहत मिलती है।

(४) **एकांगी रोग**—रोगी के लक्षणों का शरीर के एक हिस्से पर ज्यादा प्रभाव दिखलाई देता है। कमज़ोरी बढ़ते-बढ़ते शरीर के एक हिस्से में पक्षाघात हो जाता है।

(५) **स्नायु-सम्बन्धी रोग**—रोगी स्नायविक-प्रकृति (Nervous temperament) का होता है। जो लोग नाजुकमिजाज के, स्नायु-प्रधान होते है,

छोटी-सी वात से परेशान हो जाते हैं, या जिनको देर तक दु ख और बेचैनी मे से गुज़रना पडा होता है, देर तक मानसिक-कार्य मे लगे रहने के कारण जिनका स्नायु-मस्थान थक चुका होता है, उनके लिये यह औषधि उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति दुर्व्यसनो के शिकार होते है, व्यभिचार, दुराचार से जिनका स्नायु-सस्थान छिन्न-भिन्न हो जाता है, उनके लिये भी यह लाभप्रद है। बुरे, दु खद समाचारो से जो रोग उत्पन्न हो जाते हैं, रोगी बैठा-बैठा दु ख की वात सोचा करता है, सोचते-सोचते हृदय धडकने लगता है, अन्य भी कई स्नायविक-उपद्रव उठ खडे होते है—इन सब मे **कैलि फॉस** की उच्च-शक्ति की एक मात्रा देना लाभकारी है। मानसिक-कार्य, स्नायविक-शिथिलता, दीर्घकालीन चिन्ता, भीषण दु ख, दुश्चरित्रता आदि मे इस औषधि की आवश्यकता पडती है।

भय—रोगी को सायकाल भय सताता है। वह भीड मे जाने से डरता है, मृत्यु का भय उस पर सवार रहता है, वीमारी का भय, लोगो का भय, एकात का भय, वह इकला रहने से डरता है। वह आसानी से डर जाता है और इस डरने के कारण उसके अनेक मानसिक-रोग उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसी अवस्था मे **कैलि फॉस** से लाभ होता है।

दु ख तथा चिरस्थायी-शोकातुरता—दु ख तथा चिरस्थायी शोकातुरता से जो लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, उनमे यह लाभप्रद सावित हुआ है।

जलन (Burning)—पीठ के नीचे के हिस्से मे जलन होना इसका एक लक्षण। पैरो मे जलन, पैर के तलवो और पैर की अगुलियो मे भी जलन पायी जाती है।

निद्रा—प्रगाढ निद्रा, बेचैनी करने वाले या प्रेम-सम्बन्धी स्वप्न। ऊपर से नीचे गिरने का भयजनक-स्वप्न। नगा हो जाने के स्वप्न, सोती हालत मे शरीर मे गर्मी उत्पन्न हो जाना, शाम को खाने के बाद नीद का एकदम आवेग, मध्य-रात्रि के वीच नीद न आना, मानसिक-कार्य से, मानसिक उत्तेजना से, झुझलाहट के बाद नीद न आना; नीद अनुभव करना परन्तु नीद न आना, भय अनुभव करते हुए नीद से जल्दी उठ पडना, नीद मे चलना आदि लक्षणो मे इस औषधि का प्रयोग होता है।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २००, १०००, नीद के लिये अनेक चिकित्सक **कलि फॉस** २००X तथा **एकोनाइट** ३० या २०० पर्याय-क्रम से दिया करते हैं। (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है, उच्च-शक्ति से लाभ होता है)

है। कई लोगों के दाँतों से बदबू आने लगती है। इस सब बदबू का कारण यह है कि इन स्थानों के ज्ञान-तंतुओं में कैलि फॉस की कमी के कारण वे सूक जाते हैं, काम नहीं करते, इन तक रुधिर का पूरा संचार नहीं हो पाता, रुधिर न पहुंचने से ये स्थान गलने-सड़ने लगते हैं। ऐसी अवस्था में कैलि-फॉस ज्ञान-तंतुओं को सड़ने से बचा लेगा और बदबू देने वाले अंगों में रुधिर का पूरा संचार होने के कारण सड़ांद नहीं पैदा होगी। बायोकैमिस्ट इस औषधि का ३x, ६x, १२x में प्रयोग करते हैं।

[कैलि फॉस का होम्योपैथिक उपयोग]

(१) **स्नायु-सम्बन्धी रोग (Nervous diseases)**—होम्योपैथ इस औषधि का बायोकैमिक तथा होम्योपैथिक दोनों दृष्टियों से उपयोग करते हैं। बायोकैमिक-दृष्टि से तो ३x, ६x, १२x में ही प्रयोग होता है, परन्तु होम्योपैथिक दृष्टि से डा० कैन्ट लिखते हैं कि उच्च-शक्ति, और उच्चतम शक्ति से उत्तम परिणाम दिखाई दिये हैं। उच्च-शक्ति में लक्षणानुसार इसका प्रयोग करते हुए एक ही मात्रा देनी चाहिये, उसे दोहराना नहीं चाहिये। होम्योपैथिक-दृष्टि से इस औषधि का स्वस्थ-व्यक्तियों पर परीक्षण (Proving) बहुत कम हुआ है। आयोवा विश्वविद्यालय के डा० ज्योर्ज रॉयल तथा उनके छात्रों ने इस औषधि के परीक्षण किये हैं, परन्तु उन्हें विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। इस औषधि पर जो-कुछ ज्ञान है वह अनुभव के आधार पर ही आश्रित है।

(२) **रोगी शीत-प्रधान होता है**—रोगी शीत-प्रधान होता है, उसके दर्द आदि में भी शीत से वृद्धि होती है। वह ठंडी हवा नहीं पसन्द करता। ठंडी हवा लगने से वह रुग्ण हो जाता है। ठंड, ठंडी हवा, ठंडी हवा का झोंका उसके रोग को बढ़ा देता है।

(३) **प्रातः, सायं और रात्रि को तथा विश्राम से रोग-वृद्धि**—रोगी का रोग प्रातःकाल, सायंकाल और रात को बढ़ जाता है। उसकी अधिकांश शिकायतें आराम के समय बढ़ती हैं। धीरे-धीरे चलने-फिरने से उसे राहत मिलती है।

(४) **एकांगी रोग**—रोगी के लक्षणों का शरीर के एक हिस्से पर ज्यादा प्रभाव दिखलाई देता है। कमजोरी बढ़ते-बढ़ते शरीर के एक हिस्से में पक्षाघात हो जाता है।

(५) **स्नायु-सम्बन्धी रोग**—रोगी स्नायविक-प्रकृति (Nervous temperament) का होता है। जो लोग नाजुकमिजाज के, स्नायु-प्रधान होते हैं,

छोटी-सी वात से परेशान हो जाते हैं, या जिनको देर तक दु ख और बेचैनी मे से गुजरना पडा होता है, देर तक मानसिक-कार्य मे लगे रहने के कारण जिनका स्नायु-सस्थान थक चुका होता है, उनके लिये यह औषधि उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति दुर्व्यसनो के शिकार होते है, व्यभिचार, दुराचार से जिनका स्नायु-सस्थान छिन्न-भिन्न हो जाता है, उनके लिये भी यह लाभप्रद है। वुरे, दु खद समाचारो से जो रोग उत्पन्न हो जाते हैं, रोगी वैठा-वैठा दु ख की वात सोचा करता है, सोचते-सोचते हृदय धडकने लगता है, अन्य भी कई स्नायविक-उपद्रव उठ खडे होते हैं—इन सव मे **कैलि फॉस** की उच्च-शक्ति की एक मात्रा देना लाभकारी है । मानसिक-कार्य, स्नायविक-शिथिलता, दीर्घकालीन चिन्ता, भीषण दु ख, दुश्चरित्रता आदि मे इस औषधि की आवश्यकता पडती है ।

भय—रोगी को सायकाल भय सताता है। वह भीड मे जाने से डरता है, मृत्यु का भय उस पर सवार रहता है, वीमारी का भय, लोगो का भय, एकात का भय, वह इकला रहने से डरता है । वह आसानी से डर जाता है और इस डरने के कारण उसके अनेक मानसिक-रोग उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसी अवस्था मे **कैलि फॉस** से लाभ होता है ।

दु ख तथा चिरस्थायी-शोकातुरता—दु ख तथा चिरस्थायी शोकातुरता से जो लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, उनमे यह लाभप्रद सावित हुआ है।

जलन (Burning)—पीठ के नीचे के हिस्से मे जलन होना इसका एक लक्षण। पैरो मे जलन, पैर के तलवो और पैर की अगुलियो मे भी जलन पायी जाती है।

निद्रा—प्रगाढ निद्रा, वेचैनी करने वाले या प्रेम-सम्बन्धी स्वप्न। ऊपर से नीचे गिरने का भयजनक-स्वप्न। नगा हो जाने के स्वप्न, सोती हालत मे शरीर मे गर्मी उत्पन्न हो जाना, शाम को खाने के वाद नीद का एकदम आवेग, मध्य-रात्रि के वीच नीद न आना, मानसिक-कार्य से, मानसिक उत्तेजना से, झु झलाहट के वाद नीद न आना; नीद अनुभव करना परन्तु नींद न आना, भय अनुभव करते हुए नीद से जल्दी उठ पडना, नीद मे चलना आदि लक्षणो मे इस औषधि का प्रयोग होता है ।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २००, १०००, नीद के लिये अनेक चिकित्सक **कलि फॉस** २००X तथा **एकोनाइट** ३० या २०० पर्याय-क्रम से दिया करते हैं। (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है, उच्च-शक्ति से लाभ होता है)

कैलि सल्फ़्यूरिकम (KALI SULPHURICUM)

[कैलि सल्फ का वायोकैमिक उपयोग]

(१) **खुली हवा चाहना तथा पीले रंग का स्राव**—यह भी शुस्लर के १२ लवणो मे से एक है। हम पहले लिख आये है कि फैरम फॉस का काम ऑक्सीजन को वाहर की वायु मे शरीर के 'कोष्ठको' (Cells) मे खीच लेना है। इस खीच लेने के बाद इस ऑक्सीजन को शरीर के सब कोष्ठकों तक दूर-दूर पहुचा देना कैलि सल्फ का काम है। जब शरीर मे इसकी कमी होगी तब ऑक्सीजन शरीर के दूर-दूर तक के कोष्ठको मे नही पहुच सकेगा। इसका परिणाम यह होगा कि ऑक्सीजन की कमी के कारण जो रोग हो सकते हैं वे सब हो जायेंगे। जब शरीर मे ऑक्सीजन की कमी हो तब रोगी बन्द कमरे मे नही रह सकता, खुली हवा चाहेगा, क्योंकि खुली हवा मे उसे ऑक्सीजन लेने को मिलेगी, वन्द जगह पर वह घुटा-घुटा-सा अनुभव करेगा, दरवाजे बन्द हो तो उन्हें खोलना चाहेगा। इसके अतिरिक्त शाम को उसकी तबीयत गिरेगी क्योंकि शाम को वायु-मडल मे ऑक्सीजन की कमी होने लगती है। गर्मी उसे अच्छी नही लगती, ठडी हवा मे जिसमे ऑक्सीजन भरी हो उसकी तबीयत हरी हो जाती है। होम्योपैथी मे पल्सेटिला के भी ऐसे ही लक्षण है, अत जो काम होम्योपैथी मे पल्स करता है वही बायोकैमिस्ट्री मे कैलि सल्फ करता है। डा० क्लार्क का कथन है कि शुस्लर का कैलि सल्फ होम्योपैथी का पल्सेटिला है। प्राय कहा जाता है कि प्रत्येक वनस्पति का अनैन्द्रिक-जगत् (Inorganic world) मे कोई-न-कोई 'तत्सम' (Analogue) होता है। 'ऐनैलौग' का अर्थ है—उसी के समान गुणोवाला, परन्तु रचना मे भिन्न—इसी को हमने 'तत्सम' कहा है, अर्थात् उसी के समान। पल्सेटिला वानस्पतिक है, इसका अनैन्द्रिक तत्सम कैलि सल्फ है, अर्थात् इन दोनो के गुण समान हैं। कैलि सल्फ मे पल्सेटिला के सबध मे दो बातें स्मरण रखने योग्य है। यह पल्सेटिला का 'तत्सम'—Analogue—है, और पल्स का 'क्रौनिक' (Chronic) भी है, अर्थात्, जब रोग पल्सेटिला से ठीक होते-होते रुक जाय, तब कैलि सल्फ से ठीक हो जाता है। परन्तु यह भी स्मरण रखना चाहिये कि इस सारे विवरण मे हम वायोकैमिस्ट्री और होम्योपैथी को मिला रहे है।

(२) **कैलि सल्फ का मुख्य काम ऑक्सीजन को शरीर मे सब जगह पहुचाना है**—ऑक्सीजन की कमी के कारण शरीर मे भारीपन और थकावट होने लगती है, सिर मे चक्कर आने लगते हैं। दिल धडकने लगता है, सिर मे और जिस्म मे दर्द होने लगता है, चित्त उदास रहता है, चिन्ता बनी रहती है। ऑक्सीजन ही तो गर्मी पैदा करता है, यह न हो तो शरीर ठड महसूस करता

है, ऑक्सीजन कम हो जाने और कार्बन बढ जाने से जितनी शिकायतें पैदा हो सकती हैं वे सब कैलि सल्फ की कमी से होने लगती है, और इस औषधि को देने से दूर हो जाती हैं।

शरीर की बाहर की और भीतर की त्वचा पर—अर्थात्, एपिडरमिस और एपिथीलियम पर—भी ऑक्सीजन की पूरी मात्रा न मिलने के कारण कैलि सल्फ अपना प्रभाव डालता है। बाहर की त्वचा—'एपिडरमिस'—पर तो यह असर होता है कि त्वचा के छिछडे उतरने लगते है। इसलिये जिस-जिस बीमारी मे छिछडे उतरे उनमे कैलि सल्फ दिया जाता है। खसरे (Measles) में जब छिछडे उतरने लगें, चेचक (Small-pox) मे जब छिछडे उतरने लगें, या अन्य किसी बीमारी मे जब छिछडे उतरने लगें, तब समझ लेना चाहिये कि शरीर मे ऑक्सीजन की कमी हो गई है, और कैलि सल्फ देने का समय आ गया है। इसी प्रकार भीतरी-त्वचा—'एपिथीलियम'—मे यह अवस्था तब होती है जब पीली पस, पीला स्राव निकलता है। फोडे-फुन्सी मे से जब पीली पस निकले, गोनोरिया मे जब पीला स्राव हो, सर्दी जुकाम मे जब पीलापन थूक मे प्रकट हो, तब कैलि सल्फ का क्षेत्र होता है। आंखो मे पीली गीद, कान से पीला स्राव, पेट की खराबी मे जीभ का पीला रग—इन सब मे पीले रग को देखकर इसी दवा को देना चाहिये। ऐसे समय कैलि सल्फ शरीर के ततुओं मे ऑक्सीजन का प्रवेश बढा देता है, और नये 'कोष्ठक' (Cells) बनने लगते है पुराने शीघ्र ही झड जाते हैं, या फोडा-फुन्सी हो तो पस के द्वारा बाहर निकल जाते हैं। शरीर के स्रावो का रग तथा उनकी विशेषता देख कर दवा देनी चाहिये और स्मरण रखना चाहिये कि किस दवा का कैसा स्राव और कैसा रग होता है।

(बायोकैमिक-औषधियो के स्राव का रग-रूप)

नैट्रम म्यूर—पानी का-सा स्राव।

फैरम फॉस—स्राव मे झाग-सी मिली होती है।

कैलि म्यूर—स्राव मे फाइब्रिन होती है, अर्थात् सफेदी चिकनापन होता है, आसानी से नही उतरता, चिपटता है, धागे-से होते हैं।

कैल्केरिया फॉस—स्राव मे एलब्युमिन होता है।

नैट्रम सल्फ—स्राव पानी की तरह पतला, पीला या नीला होता है।

कैलि सल्फ—स्राव गाढा होता है, पीला होता है।

कैलि फॉस—स्राव बहुत बदबूदार होता है।

साइलीशिया—स्राव बदबूदार होने के साथ गाढा होता है।

नैट्रम फॉस—स्राव गाढा और पीला या मलाई का-सा होता है।

कैल्केरिया सल्फ—स्राव मे खून मिला होता है।

टाइफॉयड ज्वर में, या किसी भी ज्वर में, जो फैरम फॉस देने पर भी टूटता न हो, सायंकाल बढ़ जाता हो, कैलि सल्फ लाभ पहुंचाता है। इसका कारण यही है कि शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा शरीर के तन्तुओं में दूर-दूर तक नहीं पहुँचती—इसलिये बुखार नहीं टूटता। कैलि सल्फ ऑक्सीजन को सब जगह पहुँचाकर बुखार को तोड़ देता है।

(३) पीला पस—कैलि सल्फ फोड़े-फुन्सी के शोथ की तीसरी अवस्था में प्रयुक्त होता है क्योंकि इसी अवस्था में फोड़े-फुन्सी का पस पक कर पीला हो जाता है।

[कैलि सल्फ का होम्योपैथिक उपयोग]

यद्यपि इसका भी स्वस्थ-व्यक्तियों पर होम्योपैथिक-दृष्टि से परीक्षण (Proving) नहीं हुआ, तो भी रोगियों पर अनुभव के आधार (Clinical experience) पर इसे होम्योपैथिक दवा के तौर पर भी दिया जाता है। डा० नैश ने लिखा है कि वे इसकी ३० शक्ति दिया करते हैं।

(१) कैलि सल्फ के कुछ लक्षण—

i श्लैष्मिक-झिल्लियों से पनीला, पीला या नीला स्राव (आंख, कान, नाक, प्रदर आदि सब स्रावों में)

ii ज्वर के लक्षणों का सायंकाल बढ़ना

iii रोगी का खुली हवा को चाहना

iv गठिया या वात-रोग में दर्द का भिन्न-भिन्न अंगों में चलना-फिरना

v गर्म कमरे में रोग बढ़ जाना

vi कफ का घड़घड़ करना तथा उसका पीला होना

डा० कैन्ट का कहना है कि अगर इस औषधि का लक्षणों के आधार पर सावधानी से प्रयोग किया जाय, तो इसके गहरे और चिरस्थायी प्रभाव को देख-कर चिकित्सक आश्चर्यचकित हो जायगा।

(२) यह पल्सेटिला की पूरक-औषधि (Complementary to Puls) है—यह हम पहले ही लिख आये हैं कि कैलि सल्फ और पल्स के लक्षण एक-समान हैं। जहां अन्य लक्षणों में इनकी समानता है, वहां दोनों 'ऊष्णता-प्रधान' (Warm) हैं। जब तक रोगी ऊष्णता-प्रधान रहता है, तब तक पल्स के द्वारा जारी किये हुए रोग-नाशक प्रभाव को कैलि सल्फ पूरा कर देता है क्योंकि यह पल्स की अपेक्षा गहराई में जाने वाली, देर तक प्रभाव रखने वाली दवा है। परन्तु कभी-कभी रोगी पर पल्स का प्रभाव यह होता है कि वह ऊष्णता-प्रधान से शीत-प्रधान हो जाता है। पल्स उसकी प्रकृति को बदल देता है। ऐसी अवस्था में अगर पल्स का रोगी पहले ऊष्णता-प्रधान था, अब पल्स के प्रयोग से

शीत-प्रधान हो गया है, तब उसका अनुपूरक **कैलि सल्फ** न होकर **साइलीशिया** हो जायगा, जो शीत-प्रधान है। ऐसी अवस्था मे कुछ देर रोगी शीत-प्रधान अवस्था मे रहकर **साइलीशिया** द्वारा अपनी शीत-प्रधानता खोकर फिर ऊष्णता-प्रधान हो जाता है, और तब फिर **कैलि सल्फ** का क्षेत्र आ जाता है जो ऊष्णता-प्रधान है। अगर रोगी इस त्रिक—तीन औषधियो—के चक्र मे से उक्त प्रकार गुज़रे तो पहले **पल्स**, फिर **साइलीशिया**, फिर **कैलि सल्फ** दिया जायगा। एक औषधि रोगी को दूसरी औषधि की तरफ ले जाती है, दूसरी उसे तीसरी की तरफ ले जाती है। जरूरी नही कि यह तीन का क्रम जरूर ही चले, परन्तु इसके चल सकने की समावना रहती है। इस प्रकार औषधियो का एक-दूसरे मे जा पहुँचना प्राय होम्योपैथिक दवाओ मे पाया जाना है जिनमे से डा० कैन्ट लिखित 'कुछ त्रिको की शृखला' (Series of trios) निम्न है

(डा० कैन्ट द्वारा प्रतिपादित भिन्न-भिन्न औषधियो की त्रिक-शृखला)

पल्सेटिला	**पल्सेटिला**	**सल्फर**	**सल्फर**
साइलीशिया	**साइलीशिया**	**सारसापैरिला**	**कैलकेरिया कार्ब**
कैलि सल्फ	**फ्लोरिक ऐसिड**	**सीपिया**	**लाइकोपोडियम**
सल्फर	**मर्क्यूरियस**	**आर्निका**	**कोलोसिन्थ**
आर्सेनिक	**हिपर सल्फ**	**रस टॉक्स**	**कॉस्टिकम**
सल्फर	**साइलीशिया**	**कैलकेरिया कार्ब**	**स्टैफिसैग्रिया**
कॉस्टिकम	**एकोनाइट**	**एकोनाइट**	
कोलोसिन्थ	**हिपर सल्फ**	**पल्सेटिला**	
स्टैफिसैग्रिया	**स्पजिया**	**साइलीशिया**	

(३) **कैलि सल्फ और पल्सेटिला मे भेद**—इन दोनो मे समानता के साथ मानसिक-दृष्टि से भिन्नता भी है। **पल्स** नरम स्वभाव का, दूसरे की बात आसानी से मान जाने वाला होता है, **कैलि सल्फ** आसानी से गुस्से मे आ जाता है, हठी होता है और शीघ्र उत्तेजित हो जाता है। दोनो मे कार्य करने के प्रति उदासीनता पाई जाती है, दोनो किसी से मिलना-जुलना पसन्द नही करते, दोनो शीघ्र रो देते है, परन्तु **पल्स** मे **कैलि सल्फ** जैसी मानसिक-उत्तेजना तथा गुस्सा नही है।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—बायोकैमिक ३x, ६x, १२x, होम्योपैथिक ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

कैलमिया लैटिफोलिया (KALMIA LATIFOLIA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) वात-रोग (Rheumatism) का दर्द चलता-फिरता, ऊपर से नीचे की तरफ, और कभी-कभी नीचे से ऊपर की तरफ जाता है

(२) दर्द बर्छी भोंकता-सा हुआ टीस मारता है

(३) दर्द हरकत से बढता है

(४) सिर-दर्द सूर्य चढने के साथ आता, उसके डूबने साथ चला जाता है

(५) 'स्नायु-शूल' (Neuralgia)—एकाएक आता है, एकाएक चला जाता है

(६) 'स्नायु-शूल मे कैलमिया तथा स्पाइजेलिया की तुलना

(७) वात-रोग से उत्पन्न होने वाले वात-रोगी के हृदय के रोग मे उपयोगी है

(८) आतशक से उत्पन्न होने वाले वात-रोगी के हृदय के रोग मे

(९) आतशक के बाह्य-लेपो से दब कर हृदय-रोग उत्पन्न कर देने पर उपयोगी है

(१०) रात को होने वाले हड्डियों के दर्द मे उपयोगी है

इस औषधि का प्रभाव-क्षेत्र मुख्यतौर पर निम्न तीन रोगो पर है 'वात-रोग' (Rheumatism) ,'स्नायु-शूल' (Neuralgia) तथा वात-रोग से उत्पन्न होने वाले अथवा आतशक से उत्पन्न होने वाले वात-रोगी के 'हृदय के रोग' (Cardiac troubles of Rheumatic or Syphilitic origin).

(१) **'वात-रोग' (Rheumatism) का दर्द चलता-फिरता, ऊपर से नीचे की तरफ, और कभी-कभी नीचे से ऊपर की तरफ जाता है**—यह मुख्यत वात-रोग (Rheumatism) की औषधि है। इसका दर्द चलता-फिरता है, और ऊपर से नीचे की तरफ फैलता है—ऊपर से बाह मे नीचे की तरफ, टागो मे ऊपर से उठकर नीचे पैर की तरफ, कन्धो से बाह की अगुलियों की तरफ, कूल्हे से पाव की अगुलियो की तरफ। दर्द का प्रभाव मास-पेशियो के सिरो (Tendons), जोडो तथा स्नायु के मार्ग पर होता है। कभी-कभी यह दर्द नीचे से ऊपर की तरफ भी जाता है। **कैक्टस** का दर्द भी ऊपर से नीचे की तरफ फैलता है। **लीडम** का दर्द इससे उल्टा है। वह नीचे से शुरु होकर ऊपर को चढता है। जहा तक दर्द के चलते-फिरते रहने का सबध है यह ध्यान मे रखना चाहिये कि **पल्सेटिला, लैक कैनाइनम** और **कैलि बाईक्रोम** का दर्द भी चलता-फिरता है।

(२) **दर्द बर्छी भोंकता-सा हुआ टीस मारता है**—यह दर्द बडा सख्त होता है। ऐसा लगता है मानो किसी ने बर्छी भोक दी। दर्द मे टीस उठती है। दर्द एकाएक स्थान बदल देता है, एक जोड से दूसरे जोड पर चला जाता है।

(३) दर्द हरकत से बढता है—इस औषधि के वात-रोग का दर्द हरकत से वढता है।

(४) सिर-दर्द सूर्य चढ़ने के साथ आता, उसके डूबने के साथ चला जाता है—इसमे सख्त सिर-दर्द होता है । गर्दन की गुद्दी से या सिर के पीछे के भाग से शुरु होकर सिर के ऊपरी भाग तक फैल जाता है । माथे पर भी दर्द होता है। एक या दोनो आखो के ऊपर दर्द होता है जो गर्मी और हरकत से वढता है। दोपहर को दर्द सिर पर होता है। जब तक रोगी आराम से लेटा रहता है, कोई हरकत नही करता, तब तक मानसिक-कार्य कर सकता है, वैठने पर भी मानसिक-कार्य के लिए असमर्थ हो जाता है । ज़रा-सी हरकत भी उसे बर्दाश्त नही होती । हाथ के हिलाने तक से उसे चक्कर आ जाता है।

(५) 'स्नायु-शूल' (Neuralgia) का एकाएक आना और एकाएक चले जाना—नसो के दर्द मे यह उत्तम औषधि है। आख, चेहरे का नसें दर्द करती हैं। स्नायु-शूल एकाएक शुरु होता है और एकाएक समाप्त हो जाता है। दर्द बिजली की तरह आता-जाता है। बात करते-करते रोगी कहता है—ओह! दर्द आ गया, थोडी देर बाद कहता है—दर्द चला गया। जब स्नायु-मार्ग पर दर्द चलता है, ऊपर से नीचे जाता है, हरकत से दर्द वढता है, तब ऐसे शियाटिका के दर्द मे भी **कैलमिया** लाभ करता है।

(६) स्नायु-शूल मे कैलमिया तथा स्पाइजेलिया की तुलना—स्नायु-शूल मे ये दोनो औषधिया बहुत समान हैं। दोनो मे आख की हरकत मे दर्द बढ जाता है, दोनो हृदय की वात-व्याधि-जनित (Heart trouble of Rheumatic origin) दर्द मे उपयोगी हैं, परन्तु **कैलमिया** का दाये भाग और **स्पाइजेलिया** का बायें भाग पर प्रभाव है, **कैलमिया** का रोगी आख मे दर्द के साथ खिचाव (Stiffness) अनुभव करता है, **स्पाइजेलिया** का रोगी आख मे दर्द के साथ यह अनुभव करता है कि आख का गोलक छोटा है, आख उस गोलक से बहुत बडी है, उसमे समा नही रही।

(७) वात-रोग से उत्पन्न होनेवाले हृदय के रोग मे (Cardiac trouble of Rheumatic origin)—जिनको 'वात-रोग' होता है, उन्हें कभी-कभी उसके साथ हृदय का रोग भी हो जाता है। वात-रोगियो के हृदय के रोग मे हृदय की धडकन होने लगती है, और यह धडकन बायी तरफ लेटने मे ज्यादा अनुभव होती है, चित्त लेटने पर या उठकर बैठने पर कम हो जाती है। आगे झुकने से बढ जाती है। अगर वात-रोग से पीडित व्यक्ति मे हृदय-सबधी उक्त-लक्षण पाये जायें, तो **कैलमिया** से हृदय का रोग भी जाता रहेगा।

(८) आतशक (सिफिलिस) से उत्पन्न होने वाले वात-रोगी के हृदय के रोग मे—कभी-कभी ऐसा भी होता है कि वात-रोगी को जो हृदय का रोग

हो जाता है उसके मूल मे आतशक होता है। इस वात-रोगी को हृदय मे टीस मारता हुआ, चुभने वाला दर्द होता है, छाती मे दर्द महसूस होता है, नाडी अपने स्पन्दन मे बीच-बीच मे एक स्पन्दन छोड जाती है। रोगी का धमनी-सस्थान या शिरा-सस्थान (Arterial or Venous system) या हृदय के वॉल्व रोग से आक्रान्त हो जाते है। किसी तरह की तेज हरकत से, जीने पर चढने-उतरने से दिल मे धडकन और घबराहट पैदा हो जाती है, रोगी हाफने लगता है, सास तेज चलने लगता है। हृदय की धडकन और हापना, अर्थात् सास तेज चलना (Cardiac dyspnea)—इन दो के साथ रोगी का वात-रोग (Rheumatism) से पीडित होना और रोग के मूल मे आतशक होना—इस अवस्था मे **कैलमिया** रोग की जड तक पहुँच कर उसे ठीक कर देता है। इन लक्षणो को ध्यान मे रखते हुए चिकित्सक का ध्यान उन लक्षणो की तरफ भी जाना चाहिये जो रोगी की वात-प्रकृति को प्रकट करते है। वे लक्षण है दर्द का चलना-फिरना, ऊपर से नीचे की तरफ जाना, कन्धो से अगुलियो की तरफ जाना, कूल्हे से पैर की तरफ या मेरु-दड मे ऊपर से नीचे की तरफ जाना। अगर रोगी गोनोरिया से पीडित रहा हो, और उक्त-लक्षण पाये जाये, तब भी **कैलमिया** उपयुक्त औषधि है।

(९) **आतशक के वाह्य-लेपो से दवकर हृदय-रोग को उत्पन्न कर देने पर**—कभी-कभी पारे आदि द्वारा आतशक का रोग दबा दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप रोग त्वचा पर से दबकर हृदय मे जा केन्द्रित होता है। रोगी को धडकन शुरु हो जाती है, रोगी हापने लगता है, उसे सास चढ जाता है। यह औषधि गहराई मे जाती है, दीर्घकालीन है, इसका असर देर तक रहता है। इस प्रकार की शिकायत को **कैलमिया** दूर कर देता है।

(१०) **रात को होने वाले हड्डियो के दर्द**—यह सब-कोई जानते हैं कि आतशक का दर्द रात को बढ जाता है। यह औषधि सोरा, साइकोसिस तथा सिफिलिस तीनो के दोषो को दूर करती है। इन तीनो मे से किसी भी 'धातुगत-दोष' (Miasm) को दूर करने के लिये इस औषधि का उपयोग किया जा सकता है। इस औषधि के रोगी को रात को हड्डियो मे दर्द के दौर पडते हैं, घुटने के नीचे की हड्डी—शिन बोन—के आवरण मे ऐसा दर्द होता है मानो आवरण को छील दिया गया हो। हड्डियो का दर्द रात के पहले हिस्से मे होता है। सिफिलिस मानव का ऐसा शत्रु है जो रात को अपना प्रभाव दिखलाता है। गोनोरिया मे रोगी के कष्ट सूर्य के उदय होने के साथ शुरु होते हैं, अस्त होने के साथ अस्त हो जाते हैं, सिफिलिस मे रोग सूर्य के अस्त होने के साथ शुरु होते हैं, उदय होने के साथ अस्त हो जाते हैं।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—('निम्न-शक्ति, 'सर्द'—Chilly—प्रकृति)

क्रियोज़ोटम (KREOSOTUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	प्रकृति
(१) तीखे, बदबूदार स्राव (Excoriating, Putrid, Fetid discharges)	लक्षणो मे कमी (Better) *गर्मी से रोग मे कमी
(२) सारे शरीर मे तपकन	*गर्म भोजन से रोग मे कमी
(३) ज़रा-सी चोट से बहुत ज्यादा खून जाना	
(४) दातों के निकलते ही उनका क्षय शुरु होना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(५) बच्चे का पहली नींद मे विस्तर मे पेशाव कर देना	*शीत से रोग में वृद्धि *वाहरी हवा से रोग मे वृद्धि
(६) रजो-धर्म का लेटने से होना, बैठने या टहलने से रुक जाना, रुक-रुक कर होना	*दांत निकलने पर वृद्धि *६ साय से ६ प्रात वृद्धि

(१) तीखे, बदबूदार स्राव (Excoriating, Putrid, Fetid discharges)—इस औषधि का स्राव तीखा, काटने वाला, जलन पैदा करने वाला होता है। आख से आँसू निकलते हैं तो तीखे और जलन पैदा करते हैं, आखो की कोरो को जलन द्वारा काट देते है, जहा-जहा आसू लगते हैं, वहा-वहा जख्म की-सी लाली आ जाती है, वे स्थान दुखने लगते हैं। मुँह से जो लार निकलती है वह होठो को जला देती है, होठो के दोनो हिस्से जलते रहते हैं, कट-से जाते हैं। प्रदर का स्राव योनि-मार्ग को काट देता है, उसमे जलन होती है, वह स्राव से लाल हो जाता है, जला करता है, कभी-कभी इस जलन से सूज भी जाता है, जलन तो हर समय होती रहती है। मैथुन के समय योनि जलती है, खून तक निकल आता है। मैथुन के दवाव के कारण रक्त-स्राव होने लगता है, जलन होती है, पुरुष को भी इस स्राव के सपर्क से इन्द्रिय मे जलन होने लगती है। पेशाव जलन से आता है। स्राव के तीखेपन से हर अग मे जलन इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। तीखेपन के साथ स्राव वदवूदार होता है। **सोरिनम** मे भी अत्यन्त वदवू का लक्षण पाया जाता है।

जलने के साथ बदबूदार स्राव का आना—जलन के अतिरिक्त स्राव से वेहद सड़ाद और वदवू आती है। डा० टायलर लिखती हैं कि उनके अस्पताल मे एक स्त्री लाई गई जिसे ब्रौंकाइटिस था। उसके साँस तथा थूक से इतनी वदवू आती थी कि दूसरे रोगियो से अलग रखे जाने पर भी उससे वदवू दूर-दूर तक फैलती थी। उसे **क्रियोजोट** २०० की दो-तीन मात्राएँ देने से सारी स्थिति वदल गई। वदवू दूर हो गई और रोगिणी ने शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर लिया।

(२) **सारे शरीर मे तपकन**—छोटी-सी भी उत्तेजित करने वाली घटना से रोगी इतना उद्विग्न हो उठता है कि सारे शरीर मे तपकन होने लगती है, यहा नक कि अगुलियो के सिरे तक तपकने लगते हैं। प्रत्येक उद्वेग से रोगी को आँसू आ जाते है, और उद्वेगात्मक सगीत से आखो मे जो आसू आते हैं, वे ढलते हुए गालो पर चरपराहट पैदा करते हैं, दिल मे धडकन होने लगती है, जो अँगुलियो तक महसूस होती है।

(३) **जरा-सी चोट से बहुत ज्यादा खून निकलना**—शरीर मे कही भी पिन, सूई, काटा चुभने से चमकदार, लाल खून एकदम निकलने लगता है। श्लैष्मिक-झिल्ली के किसी स्थान को जोर से दवाया जाय, तो वहा से स्राव निकलने लगता है। गले के शोथ मे चम्मच से जीभ को दवायें तो उसका स्राव रिस पडता है, रुधिर के कुछ कतरे भी निकल आते हैं। जुकाम मे नाक से खून टपक आता है। आख आ जाने पर आखो की लाली के साथ अगर सूजन हो जाय, तो आख से खून आ जाता है। अगुली मे सूई चुभने से एक ही कतरा नही निकलेगा, कई कतरे वह पडेंगे। आख, नाक, योनि, जरायु, गुर्दे आदि सव अगो से आसानी से खून निकल पडना, मैथुन से भी रुधिर आ जाना, ट्यूमर मे से आसानी से रुधिर वह पडना इस औषधि मे पाया जाता है।

(४) **दाँतो के निकलते ही उनका क्षय शुरु होना**—इसे दात और मसूडो की सर्वोत्तम दवा कहा जाना चाहिये। वच्चो के दातो मे कीडे लग जाते हैं, मसूडे फूल जाते हैं, दातो मे दर्द होता है, दात नीले, पीले, काले हो जाते हैं, उनमे केरीज़ हो जाता है। वच्चो के दात निकलते ही उनका क्षय होना शुरु हो जाता है। दातो से खून जाने लगता है—इन सव उपद्रवो मे यह अनुपम औषधि है। **स्टैफिसैग्रिया** मे दात काले पड जाते हैं, उन पर काली रेखाए दीखती हैं, कितना ही मजन करे काली रेखाएँ मिटती नही। दाँत भी टुकडे-टुकडे होकर टूटने लगते हैं। दातो की जडें खुरने लगें तो **मेजेरियम** तथा **थूजा** से लाभ होता है। **मेजेरियम** मे दातो का क्षय एकदम शुरु होता है, दातो का इनैमल पहले खुरदरा हो जाता है, फिर उतर जाता है। **थूजा** के भी दात जड से सडते हैं, वाकी भाग ठीक दिखाई देता है। **क्रियोजोट** के दात निकलते साथ ही सडने लगते हैं।

(५) **वच्चे का पहली नींद मे विस्तर मे पेशाब कर देना**—पेशाव निकल जाने की हालत मे, यह महौषध है। जो वच्चे नीद मे पेशाव कर देते हैं उनके लिये इसे प्रथम कोटि की औषधि समझना चाहिये। वच्चे के लिये ही नही, **क्रियोजोट** का रोगी पेशाव के लिये वाथरूम की तरफ लपकता है और वीच मे ही उसका पेशाव निकल जाता है। वच्चे को स्वप्न आता है कि वह किसी अच्छी जगह

पेशाव करने गया है, परन्तु वेचारा उठकर देखता है कि उसने अपना विस्तर ही गीला कर दिया है। इस प्रकार की शिकायत मे इससे लाभ होता है।

(६) **रजोधर्म का लेटने से होना, बैठने या टहलने से रुक जाना और रुक-रुक कर होना**—इसका एक अद्भुत लक्षण यह है कि रजोधर्म लेटने से तो होता है, परन्तु अगर स्त्री उठ बैठे, या टहलने लगे, तो रुक जाता है। रजोधर्म रुक-रुक कर होता है, कभी विल्कुल रुक जाता है, कभी फिर होने लगता है। **सल्फ़र** मे भी यह लक्षण पाया जाता है।

(७) **इस औषध के रजोधर्म-सबधी अन्य लक्षण**—

1 **रजोधर्म से पहले और होते समय सिर-दर्द**—रजोधर्म शुरु होने से पहले और रजोधर्म होते समय तेज़ सिर-दर्द होता है। **सीपिया** मे भी यह लक्षण है।

11 **जल्दी, अधिक, देर तक, दुर्गन्ध वाला**—रजोधर्म वहुत जल्दी, बहुत अधिक, बहुत देर तक होता है। मासिक-रुधिर वहुत ज्यादा दुर्गन्ध-युक्त होता है।

111 **क्रियोज़ोट तथा सीपिया की तुलना**—दुर्गन्धयुक्त मासिक-स्राव मे **क्रियोज़ोट** और **सीपिया** की तुलना करना आवश्यक है। दोनो मे मासिक दुर्गन्ध-युक्त होता है, परन्तु **सीपिया** का रक्त-स्राव थोडा, **क्रियोज़ोट** का अधिक, **सीपिया** का रक्त-स्राव हरकत से अधिक, चुपचाप रहने से कम होता है, **क्रियोज़ोट** का रक्त-स्राव हरकत से कम, चुपचाप रहने से अधिक होता है। लेटने से रक्त-स्राव का होना—इस औषधि के इस लक्षण को हम पहले ही लिख चुके हैं।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

लैक कैनाइनम—कुतिया का दूध
(LAC CANINUM)
GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) भुलक्कडपन तथा अनमनापन (Forgetfulness and absent-mindedness)
(२) स्पर्श-कातरता (General hyperaesthesia)
(३) अपने को आसमान मे चलता या आसमान मे लटकता हुआ अनुभव करना
(४) रोगी के चित्त-विक्षेप को दूसरे नहीं जान पाते
(५) दर्द का एक तरफ से दूसरी तरफ जाकर फिर पहली तरफ लौट आना
(६) मासिक-धर्म के साथ गला दुखना और उसके बन्द होने के साथ दुखना बन्द हो जाना
(७) मासिक-धर्म से पूर्व और उन दिनो मे स्तनो की सूजन और दर्द (Mastitis)
(८) मां का दूध सुकाने के लिये है

(१) **भुलक्कडपन तथा अनमनापन** (Forgetfulness and absent-mindedness)—मानसिक-लक्षणो की दृष्टि से रोगी भुलक्कड और अनमना होता है। बाज़ार मे खरीदारी करता है, परन्तु सामान वही भूल जाता है। मन को केन्द्रित नहीं कर सकता। भुलक्कडपन तथा मन को केन्द्रित न करने आदि की दृष्टि से इसकी निम्न औषधियो से तुलना की जा सकती है

(भुलक्कडपन की मुख्य-मुख्य औषधिया)

ऐसिड फॉस—अधिक स्त्री-प्रसग करने से मन कही नही टिकता।

ऐनाकार्डियम—अधिक मानसिक कार्य करने से व्यक्ति भुलक्कड हो जाता है। प्रात काल भुलक्कडपन अधिक दिखाई देता है।

बैराइटा कार्ब—वृद्धावस्था मे जब सब इन्द्रिया शिथिल हो जाती हैं।

कैनेबिस इडिका—रोगी इतना भुलक्कड हो जाता है कि बोलते-बोलते भूल जाता है कि मुझे क्या कहना था।

ग्लोनॉयन—इतना भुलक्कड हो जाता है कि जिस जगह बरसो से रह रहा है वहा के गली-मोहल्ले, अपने घर का नबर आदि सब भूल जाता है।

मेडोराइनम—अपना नाम भी भूल जाता है।

थूजा, कैलि बाईक्रोम—नींद से उठने पर भुलक्कड होता है और ज्यो-ज्यो समय बीतता है स्मृति लौटने लगती है।

(२) **स्पर्श-कातरता** (General hyperaesthesia)—त्वचा मे स्पर्श कातरता उत्पन्न हो जाती है। रोगी कई दिन तक हाथ की अगुलियो को

फैलाकर पडा रहता है और एक अगुली को दूसरी से नही छूने देता। अगर उन्हें कोई छू दे तो चीख उठता है। स्पर्श से इतनी घबराहट दो दवाओ मे ही है—इसमे और **लैकेसिस** मे। पेट से चादर छूना भी रोगी वर्दाश्त नही करता। इन दोनो मे यह लक्षण है। **लैकेसिस** मे स्पर्श कातरता गले के प्रति विशेष रूप मे पायी जाती है। **लैकेसिस** का रोगी गले मे टाई या मफलर नही बाध सकता।

(३) **अपने को आसमान मे चलता या आसमान मे लटकता अनुभव करना**—इसके मानसिक-लक्षणो मे एक विचित्र-लक्षण यह है कि रोगी जब चलता है तब ऐसा अनुभव करता है जैसे ज़मीन पर न चल रहा हो, आसमान मे चल रहा हो, जब लेटता है तब ऐसा अनुभव करता है मानो बिस्तर पर न लेटकर आसमान मे लटक रहा हो। यह लक्षण भी इसमे और **लैकेसिस** दोनों मे हैं।

(४) **रोगी के चित्त-विक्षेप को दूसरे नहीं जान पाते**— रोगी का चित्त किसी बात पर जमता नही, सब-कुछ भूला-सा रहता है। खयाल करता है कि वह जो-कुछ कहता है ठीक नही है, सब झूठ है। खयाल करता है कि नाक उसकी नही है, घर की सामग्री उसकी नही है। चित्त चिन्ताओ से ग्रस्त रहता है। रोगिणी दिन भर घर के सब काम करती रहती है, उसके चित्त मे जो उलट-पुलट होता रहता है उसे कोई जान नही पाता। हा, अगर वह स्वय किसी से दिल खोले तभी उसे उसके चित्त-विक्षेप का पता चलता है।

(५) **दर्द का एक तरफ से दूसरी तरफ जाकर पहली तरफ लौट आना**—इसका प्रमुख और विचित्र-लक्षण यह है कि कोई भी शिकायत क्यो न हो, वह पहले एक तरफ प्रकट होती है, फिर दूसरी तरफ, उसके बाद फिर पहली तरफ आ जाती है। उदाहरणार्थ, वात-रोग मे अगर पहले दायें गिट्टे मे दर्द हो, फिर बायें मे, उसके बाद फिर दायें गिट्टे मे आ जाय, और इस प्रकार पासे बदलता रहे, तो यह इसी औषधि का लक्षण है। यही बात सिर-दर्द के विषय मे कही जा सकती है। पहले दायें भाग मे, फिर बाये भाग मे, उसके बाद फिर पहले वाले भाग मे दर्द आ जाता है। स्नायु-शूल भी इसी प्रकार अदला-बदली करता है। डिम्ब-ग्रन्थियो के शोथ या दर्द मे भी अगर यह अदला-बदली दिखाई दे, तो इसी औषधि की तरफ ध्यान देना उचित है। गला पडने पर अगर ये लक्षण दिखाई दें, तो **लैक कैनाइनम** ही दिया जाता है। कभी-कभी चिकित्सक यह देखकर कि टासिल दाये से बाये चला गया है **लाइकोपोडियम** दे देते हैं, परन्तु अगर उससे लाभ न हो, और टासिल का शोथ फिर अपनी पुरानी जगह पर लौट आये, तो इसी औषधि से लाभ होगा। **पल्सेटिला** मे भी दर्द जगह बदला करता है, परन्तु उसमे दर्द कभी जोड मे, कभी कन्धे मे, कभी घुटने मे—इस प्रकार वह जगह बदलता है, **लैक कैनाइनम** मे तो पासा ही बदल देता है, और पासा

बदलते हुए अगर दायी तरफ बाह मे था, बायी तरफ भी बाह मे ही दर्द जाता है, और फिर लौटकर दायी बाह मे आ जाता है। डा० नैश का कहना है कि इन लक्षणो पर वात-रोग को उन्होने इस औषधि की C M की एक मात्रा देकर ठीक कर दिया।

(६) **मासिक-धर्म के साथ गला दुखना और उसके बन्द होने के साथ दुखना बन्द हो जाना**— इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण यह है कि स्त्री के मासिक-धर्म शुरु होने के साथ गला दुखना शुरु हो जाता है, और मासिक-धर्म के बन्द होने के साथ गले का दुखना भी बन्द हो जाता है।

(७) **मसिक-धर्म से पूर्व और उन दिनो मे स्तनो की सूजन और दर्द** (Mastitis)—मासिक-धर्म के सबध मे एक दूसरा लक्षण यह है कि रजोधर्म से पहले और उसके दिनो मे स्तनो की गिल्टिया सूज जाती हैं, उनमे दर्द होता है, उनसे कपडे का भी स्पर्श सहन नही होता, चलते समय या सीढो से उतरते समय स्तनो को मजबूती मे पकडे रहना पडता है ताकि उन पर कपडे तक का धक्का न लगे। अगर इस समय मासिक-स्राव लगातार आने के स्थान पर रह-रह कर आये, तव तो इसी औषधि का प्रयोग करना उचित है।

(८) **दूध सुकाने के लिए उपयोगी**—जव किसी स्त्री का बच्चा मर जाता है, और स्तन का दूध सुकाना होता है, तब **लैक कैनाइनम** दिया जाता है। स्तन का दूध बढाना हो तो **लैक डिल्फोरेटम** दिया जाता है। दूध सुकाने-बढाने मे ये दोनो एक-दूसरे से विपरीत हैं।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० या ऊंची (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।)

लैक डिफ़्लोरेटम—सैपरेटा, (LAC DEFLORATUM)

(१) **रोगी शीत-प्रधान होता है, हरकत से तकलीफ बढ़ती है, दूध का पीना सहन नहीं कर सकता**—दूध मे से मलाई निकाल देने को **लैक डिफ्लोरेटम (सैपरेटा)** कहते हैं। इस औषधि का व्यक्ति दूध पीने से बीमार पड जाता है। दूध उसके लिये जहर है। जो लोग दूध पीने से बीमार पड जाया करते हैं वे प्रकृति से शीत-प्रधान हुआ करते हैं, रक्तहीन होते हैं, गर्म कमरे मे बैठने पर भी उन्हें ठड सताती है। जहा दूसरे लोगो को गर्मी महसूस होती है वहा उन्हे ठडक महसूस होती है। इस औषधि के रोगी की तकलीफें हरकत से बढती हैं, आराम से उसे चैन पडता है। अगर उक्त लक्षणो पर ऐसे रोगी को जिसे दूध विष-सा लगता हो, इस औषधि की उच्च-मात्रा दे दी जाय, तो उसका दूध को सहन न कर सकना खत्म हो जाता है, और वह बडे आनन्द से दूध का मजा लेने लगता है। जो बच्चे दूध से नफरत किया करते हैं उनके लिये यह औषधि मित्र-समान है।

कई बच्चे दूध से बीमार पड जाते हैं, परन्तु मलाई को बडे शौक से खाते हैं—उन्हें भी अगर यह औषधि दी जाय, तो उनकी दूध के प्रति रुचि बढ जाती है।

(२) **यह स्त्रियो का दूध बढ़ाता है**—जिन स्त्रियो को भरपूर दूध नही उतरता उनका दूध बढाने के लिये यह उत्कृष्ट दवा है। दूध सुकाने के लिये **लैक कैनाइनम** उपयुक्त है।

(३) **सख्त कब्ज़ को दूर करता है**—बहुत पुरानी कब्ज़ इससे दूर हो जाती है। जब अनीमा और दस्तावर दवाए भी बेकार हो जाती है, तब यह औषधि कब्ज़ को दूर कर देती है। डा० हैनरी ऐलन लिखते हैं कि एक रोगिणी जो १५ वर्ष से कब्ज़ की शिकार थी, प्रतिदिन १०-१५ पिचकारी लेती



डा० हैनरी एलन
(१८३६–१९०९)

थी, जो कई बार ४-५ सप्ताह तक पाखाना नही जाती थी, इस दवा से ठीक हो गई। टट्टी सख्त आती है, ऐसा लगता है कि गुदा-द्वार को लकवा मार गया है, पाखाना आते-आते अन्दर चला जाता है, ऐसी हालत मे **साइलीशिया** से फायदा होना चाहिये, उससे भी फायदा न हो तो इस औषधि से लाभ होता है।

(४) **बहुमूत्र रोग (Diabetes) दूर करता है**—मूत्र-ग्रन्थियो पर इसका विशेष प्रभाव है। बहुमूत्र-रोग की यह अनुपम औषधि है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि इस औषधि ने अनेक बहुमूत्र के रोगी ठीक किये हैं। इसमे

आश्चर्य की भी कोई बात नही क्योंकि यह औषधि कमजोरी, रक्तहीनता, अत्यन्त प्यास, अधिक परिमाण मे पानी जैसा मूत्र आना, गाढा मूत्र आदि लक्षणो को ठीक कर देती है, और जिस प्रकार के रोगियो को यह ठीक करती है उनका स्वरूप बहुमूत्र रोगी का-सा ही होता है। रोगी वडा थका-थका रहता है, परिश्रम नही कर सकता, वेचैन रहता है, निद्रा न मिले तो निद्रा-नाश को सहन नही कर सकता, थोडी दूर चलकर ही थक जाता है। पूछ-ताछ करने पर पता चलेगा कि दूध पीने से भी उसे नफरत है।

(५) **ठडे पानी मे हाथ रखने या दूध पीने से माहवारी वन्द हो जाती है**—इसका एक विचित्र-लक्षण यह है। रोगिणी ठडे पानी मे हाथ रख दे तो माहवारी वन्द हो जाती है, शीत-प्रधान जो ठहरी। इसके अतिरिक्त माहवारी के सम्वन्ध मे दूसरा विचित्र-लक्षण यह है कि एक गिलास दूध पीते ही दूसरी माहवारी के समय तक मासिक-धर्म फौरन वन्द हो जाता है। होम्योपैथी मे इस प्रकार के विचित्र-लक्षणो का औषधि-निर्वाचन मे वडा महत्व है।

(६) **सिर-दर्द मे पेशाव अधिक आता है**—इसका सिर-दर्द के सम्वन्ध मे विचित्र-लक्षण यह है कि जव सिर-दर्द होता है तव पेशाव वहुत आता है। **जेलसीमियम** मे भी सिर-दर्द के समय पेशाव अधिक आता है, परन्तु **जेल्स** मे पेशाव आने के साथ सिर-दर्द कम हो जाता है, इस औषधि मे ऐसा नही है।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

लैकेसिस—सांप का विष, (LACHESIS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) रोग का बाईं तरफ से दाईं तरफ जाना	लक्षणो मे कमी (Better)
(२) शुरु नींद मे और नीद टूटने पर रोग का बढ जाना	*खुली हवा से आराम होना *स्राव वहने से चैन पडना
(३) स्पर्श सहन न कर सकना—गर्दन पर कॉलर, कमर पर कपड़ा न सह सकना	*ठडे पानी से आराम मानना
(४) ज्यादा रक्त-स्राव, त्वचा या फुन्सियो का बैंगनी या नीला होना	
(५) रोगी का बातूनी, ईर्ष्यालु, सन्देह-शील होना तथा आत्म-भर्त्सना करना	
(६) चिरस्थायी दु ख शोक, भय, झु झलाहट, ईर्ष्या, भग्न-प्रेम से उत्पन्न रोग	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(७) रजोधर्म से निवृत्त होने के समय के रोग	*नींद के समय और नींद के बाद लक्षणो मे वृद्धि
(८) स्राव जारी होने से रोग घटना	
(९) दर्द की लहरें उठना (शोथ, सिर-दर्द, बवासीर, भगदर आदि मे हथौडे की-सी चोट अनुभव करना)	*गर्मी से लक्षणों का बढना *कमर तथा गले मे स्पर्श को न सह सकना
(१०) ऊष्णता-प्रधान होना, ठडक से गर्मी मे जाने से बीमार होना	*स्रावो के दब जाने से किसी रोग का होना

(१) रोग का बाईं तरफ से दाहिनी तरफ जाना—यह साप का विष है। इसका सर्व-प्रधान लक्षण यह है कि रोग का आक्रमण बाईं तरफ होता है, और बायें मे दाईं तरफ जाता है। पक्षाघात शरीर के बायें हिस्से मे शुरु होता है और धीरे-धीरे दायें हिस्से की तरफ बढता है। इसका विशेष-प्रभाव स्त्री की डिम्ब-ग्रन्थि (Ovary) पर पडता है। पहले बाईं डिम्ब-ग्रन्थि प्रभावित होती है, उसमे दर्द, शोथ, आदि कोई रोग उत्पन्न होता है, उसके बाद दाईं ग्रन्थि प्रभावित हो जाती है। गले की शोथ हो, तो उसका प्रभाव पहले बाईं तरफ होगा, और धीरे-धीरे वह दाईं तरफ बढेगा। डिफथीरिया का गले मे आक्रमण भी पहले बाईं तरफ ही होगा। सिर-दर्द मे भी सिर के बायें हिस्से की तरफ दर्द होगा। आँख का दर्द होगा, तो बाईं तरफ से शुरु होगा और वहा से दाईं तरफ बढेगा। अगर सिर की गुद्दी मे दर्द होगा, तो भी दायें की अपेक्षा बाया हिस्सा ही अधिक प्रभावित होगा। क्रोटेलस भी सर्प-विष है, परन्तु

उसका प्रभाव दायीं तरफ होता है, जैसे लाइकोपोडियम का प्रभाव दायीं तरफ होता है।

(२) शुरु नींद में और नींद टूटने पर रोग का बढ़ना—रोगी जब जागता रहता है, तब उसके रोग के लक्षण दबे रहते है, हो सकता है कि उस समय उसे उनका कुछ भी अनुभव न हो, परन्तु जब नींद आ जाती है, तब रोग के लक्षण जागने लगते है। निद्रा जितनी लम्बी होती जाती है उतना ही ये लक्षण भी बढ़ते जाते हैं। चुनाचे, लम्बी नींद के साथ रोगी के सब लक्षण प्रबल हो जाते है। जब रोगी जागता है, तब अपने रोग के लक्षणों के विकट रूप धारण कर लेने के कारण परेशान हो जाता है, सोचता है, सोया ही क्यों था। देर तक



डा० कोनस्टेंटाइन हेरिंग
(१८००–१८८०)

सोने के बाद जब वह उठता है, तो भयकर सिर-दर्द, हृदय की धड़कन, मायूसी से अपने को घिरा पाता है, नख से शिख तक उसे निराशा-ही-निराशा धर पकडती है। उसका शरीर कष्ट से आक्रान्त हो जाता है, उसे जीवन में कहीं उजाला दिखाई नहीं देता। जीवन अन्धकारमय, मेघाच्छन्न, कष्टों से भरा प्रतीत होता है, और पागलपन के विचार मन पर आक्रमण करने लगते हैं। खासी, दर्द, दमा, अकड़न—कोई भी रोग हो, सोने के बाद बढ़ जाता है।

लैकेसिस दक्षिणी अमरीका के एक साप का विष है। इसकी परीक्षा डा० कौनस्टेंटाइन हेरिंग ने की थी। वे जीवित सापो को हाथ से पकड लेते थे। वे मरते-मरते बचे। साप के विष से वे बेहोश हो गये और डिलीरियम की नीद मे अनाप-सनाप बकते रहे। जब वे ठीक हुए, तो उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा कि बेहोशी मे वे क्या करते रहे, क्या बोलते रहे। वह सब लिख लिया गया। इस औषधि का स्वस्थ-व्यक्ति पर यह सबसे पहला परीक्षण—'औषधि-सिद्धि' (Proving)—था। इस औषधि के लिये होम्योपैथी डा० हेरिंग की चिर-ऋणी रहेगी।

नीद मे, और नीद टूटने पर तो रोग बढता ही है, रोगी जब सोने लगता है, सोते ही कभी-कभी दम घुटता-सा है, दिल धडकता है, और रोगी बिस्तर से उछलकर उठ खडा होता है। सोना शुरु करते ही रोग भी शुरु होने लगता है, अगर रोगी सो जाय, तो नीद के साथ रोग भीतर-ही-भीतर बढता जाता है, और सोकर उठने के बाद रोगी के सब कष्ट उग्र रूप धारण कर प्रकट हो जाते हैं। रोगी सोने से ही डरने लगता है।

कई ऐसी शिकायतें पाई जाती है जिनका कोई डॉक्टर निदान नही कर पाता। ऐसी शिकायतो मे रोगी को कह दिया जाता है—'तुम्हारी शिकायत सिर्फ नर्वस है'—और बेचारा रोगी समझने लगता है कि उसका रोग असाध्य है। होम्योपैथी मे इस प्रकार के निदान की कोई आवश्यकता नही, चिकित्सक को केवल लक्षणो से मतलब होता है, रोग के नाम से नही। ऐसी हालत मे प्राय रोग का नाम घड लेना इलाज मे सहायक होने के स्थान मे बाधक हो जाता है। डा० जे० टी० ड्यू 'मन्थली होम्योपैथिक रिव्यू' के ४६ वें खड मे लिखते हैं कि एक ४३ वर्ष का विवाहित व्यक्ति उनके पास इलाज कराने आया। उसे कई साल से गले का रोग था, वह द्रव पदार्थ निगल नहीं सकता था, ठोस पदार्थ के निगलने मे तो उसे बेहद कष्ट होता था। उसका अद्भुत-लक्षण यह था कि रात को सोते समय वह चौंक कर जाग उठता था, कभी-कभी बिस्तर छोड देता था क्योंकि उसे गला घुटता हुआ अनुभव होता था। यह अनुभव मध्य-रात्रि तक होता था, उसके बाद नही। सोते समय नीद मे कष्ट के लक्षण पर उसे **लैकेसिस** दिया गया और सालो का रोग जो 'नर्वस' के नाम से चलता चला आ रहा था, ठीक हो गया। जैसा हम अभी देखेंगे, गले का घुटना भी इस औषधि का एक व्यापक-लक्षण है। उक्त रोगी मे सोते समय रोग का बढना—गले का घुटना—इन दोनो लक्षणो के मिल जाने से औषधि का चुनाव अत्यन्त सरल हो गया।

(३) **स्पर्श सहन न कर सकना—गर्दन पर कॉलर, कमर पर कपडा न सहना**—इस औषधि का एक मुख्य-लक्षण स्पर्श न सह सकना है। रोगी गर्दन पर

कॉलर या नेक टाई नही लगा सकता, कुर्ते का बटन सदा खुला रखता है। यदि पूछा जाय कि वह ऐसा क्यो करता है, तो कहता है कि कॉलर, नेक टाई लगाने से गला घुटना-सा लगता है, ऐसा लगता है कि गले को किसी ने पकड लिया। डा०हेरिंग जिन्होने इस औषधि को अपने ऊपर 'सिद्ध' (Provc) किया था, वे उमर भर कॉलर नही लगा सके। रोगी को ऐसा लगता है कि कुर्ते का गले पर का बटन बन्द करेगा तो सास रुक जायगा। साधारण तौर पर देखने से समझ नही आता कि गले का कष्ट उसे इतना क्यो सताना चाहिये। जैसे आर्सेनिक मे शक्ति-हीनता असाधारण होती है, वैसे लैकेसिस मे गले का कष्ट असाधारण होता है। गला खुला रहना चाहिये, अगर वहाँ बन्द लगा, तो रोगी को खाँसी आने लगती है। गर्म चाय नही पी सकता क्योकि गर्मी से उसका रोग बढ जाता है। गले मे कुछ अटकता-सा प्रतीत हुआ करता है।

(४) **ज्यादा रक्त-स्राव, त्वचा या फुन्सियो का बैंगनी या नीला होना**—जितने भी सर्प-विष है सबका रुधिर पर विशेष प्रभाव होता है। रुधिर विश्रृंख-लित (Decomposed) हो जाता है, पनीला हो जाता है, पनीला होने से रक्त-स्राव की प्रवृत्ति (Hemorrhagic tendency हो जाती है। **लैकेसिस** रक्त-स्राव की औषधि है। नाक से, जरायु से या किसी अन्य द्वार से बडी मात्रा मे खून निकलता है। मासिक-धर्म मे बहुत ज्यादा या बहुत देर तक खून जाता है। यही हाल नकसीर का है। खून पनीला हो जाने के कारण जल्दी नही जमता। पनीला होने के कारण ही छोटे-से घाव से बहुत ज्यादा खून निकलता है। **क्रियोजोट** तथा **फॉसफोरस** की तरह ज़रा-से काटे के लगने से एक बूद की जगह ढेरो खून निकल पडता है।

खून का रग बैंगनी या नीला होता है। साप काटने से भी तो रोगी नीला पड जाया करता है। अगर शरीर मे कही शोथ, फोडा-फुन्सी हो, तो उसका रग भी बैंगनी या नीला होता है। जिस जगह चोट लगे वह स्थान नीला पड जाता है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि अगर कोई हृदय का रोगी मिले, जिसका चेहरा फूल रहा हो, नीला पड गया हो, उसे **लैकेसिस** दो, वह ठीक हो जायगा। मुँह का घाव, सिफलिस, कार्बंकल, डिफ्थीरिया, सडा हुआ व्रण—इनमे घाव का रग बैंगनी और नीला होने पर **लैकेसिस** का प्रयोग करना चाहिये।

(५) **रोगी का बातूनी, ईर्ष्यालु, सन्देहशील होना तथा आत्म-भर्त्सना करना**—रोगी बडा बातूनी होता है। लगातार बोलता जाता है। एक विषय को शुरु करता है, बीच मे छोडकर दूसरे विषय पर बोलने लगता है। वाक्यो को अधूरा छोड देता है, समझता है कि बाकी हिस्सा तुम समझ गये होगे—इतनी जल्दी मे बोलता जाता है। बडी लच्छेदार भाषा का प्रयोग करता है, परन्तु किसी वाक्य को पूरा नही करता। ऐसी हालत टाइफॉयड, डिफ्थीरिया

या बच्चा जनने के समय के डिलीरियम मे हो जाया करती है, कभी-कभी पागलपन मे भी ऐसी अवस्था होती है। रोगी ईर्ष्यालु तथा सन्देहशील होता है। पत्नी अपने पति का दूसरी किसी स्त्री से बोलना पसन्द नही करती। ईर्ष्या से भरी रहती है। उसे अपने पति, बच्चो पर सन्देह रहता है। डाक्टर पर भी सन्देह करती है। समझती है कि डाक्टर औषधि मे विष मिलाकर उसे मारना चाहता है, उसके सगे-सम्बन्धी उसे मारने का षडयन्त्र रच रहे है। अगर रोगी कही जा रहा है, तो मुड-मुडकर पीछे देखता है कि कही कोई पीछा तो नही कर रहा। लडकी सोचती है कि उसकी सहेलिया जब आपस मे खुसफुस करती हैं, तब उसी के विषय मे बात कर रही होती हैं, और उसे नुकसान पहुचाना चाहती है। रोगी पर एक प्रकार का धार्मिक-पागलपन सवार हो जाता है। इस प्रकार का पागलपन पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो मे अधिक पाया जाता है। समझती है कि कोई दैवी-शक्ति उसका सचालन कर रही है। उसे इस दैवी-शक्ति से आदेश आते सुनाई देते हैं। यह शक्ति उसे कहती है 'तू चोरी कर, हत्या कर, तूने अमुक पाप किये हैं उन्हे स्वीकार कर।' बेचारी, इन आदेशो के अनुसार आत्म-भर्त्सना करने लगती है, जो पाप उसने नही भी किये, उन्हे भी—उसने किये हैं—ऐसा स्वीकार करने लगती है। अपने मित्रो से कहती है कि उसने अमुक-अमुक पाप, भ्रष्टाचार किये हैं जो वास्तव मे उसने किये नही होते।

(६) **चिरस्थाई दुख, शोक, भय, झुझलाहट, ईर्ष्या, भग्न-प्रेम से उत्पन्न रोग**—खासकर नव-युवतियो मे तथा उन लडकियो मे जिन्हे प्रेम मे निराशा का सामना करना पडा है, जो रात-रात भर अपने दुख या शोक से सन्तप्त रहने और उसी पर सोचते रहने के कारण सो नही पाती, जिनकी आशाओ और उमगो पर तुषारपात हो जाने के कारण वे मानसिक तथा हृदय के रोगो से पीडित हो रही हैं, हर समय चिरस्थाई दुख, शोक, झुझलाहट, ईर्ष्या, भग्न-प्रेम से चित्त डावाडोल रहता है, निराशा, हतोत्साह मे डूबी रहती हैं, जीवन मे कुछ अच्छा नही लगता, हृदय की धडकन, हृदय मे पीडा होती है, सास लेने मे कष्ट प्रतीत होता है, सदा आत्म-घात पर सोचा करती हैं और अन्त मे चित्त की ऐसी अवस्था आ जाती है जब वह न कुछ सोच सकती है, न कुछ कर सकती है, हर वस्तु से उदासीन हो जाती है—इन मानसिक अवस्थाओ मे यह औषधि प्रभावशाली काम करती है।

(७) **रजोधर्म से निवृत्त होने के समय के रोग**—रजोधर्म की निवृत्ति के समय स्त्रियो को अनेक कष्ट होने लगते है। ऐसी अवस्था प्रौढावस्था के बाद आती है। गर्मी की लहर आती है, तरेरें आती-जाती हैं। सिर की तरफ एकदम रुधिर का सचार होता है, सिर गर्म और पाव ठडे हो जाते हैं, हृदय मे

धडकन होती है, दिल पर दवाव अनुभव होता है। रोगिणी अभी खुश थी, अभी निराशा की-सी अवस्था आ जाती है। सदा के लिये रजोधर्म के समाप्त होने के समय कभी-कभी रक्त-स्राव भी होने लगता है, बवासीर, गर्मी की झलें, पसीना आदि लक्षणो मे इस औषधि को ध्यान मे रखना चाहिये।

(८) **स्राव जारी होने से रोग घटना**—इस औषधि का रक्त-सचार-प्रणाली पर विशेष प्रभाव है, इसलिये स्राव बन्द होने के कारण अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनकी तरफ हमने अभी ऊपर ध्यान खींचा है। वे उपद्रव इसीलिये होते हैं क्योकि स्राव बन्द हो गया। इसका यही अर्थ है कि स्राव जारी होने से रोग घट जाते है। **लैकेसिस** का यह व्यापक-लक्षण है कि स्राव बन्द होने से रोग बढता, और स्राव जारी होने से रोग घटता है। मासिक-धर्म न होने से दर्द शुरु हो जाता है, मासिक-धर्म जारी होने मे जाता रहता है। मासिक-धर्म के दर्द मासिक जारी होने से पहले रहते है, वाद को भी रहते है, परन्तु जब मासिक चल रहा होता है तब दर्द नही रहता। इसी कारण प्रौढावस्था के रजोलोप मे यह औषधि गुण करती है।

(९) **दर्द की लहरें उठना (सिर दर्द, शोथ, बवासीर, भगदर आदि मे हथौडे की-सी चोट)**—सिर-दर्द के विषय मे रोगी कहता है कि गर्दन या सिर के पीछे से दर्द की लहर-सी उठकर सिर पर चढ आती है, जैसे नदी की तरग उठती है वैसे दर्द की लहर उठती है। दर्द की इन लहरो का हृदय के स्पन्दन के साथ सबध नही होता। रुधिर की गति के साथ इन लहरो का बिल्कुल भी सबध न हो—ऐसा भी होता है। चलते-फिरते रोगी को अनुभव होता है कि दर्द की लहर उठी, वह आराम से बैठ जाता है, तब यह लहर लहर न रह कर सिर्फ दर्द का रूप धारण कर लेती है। यह दर्द फिर किसी भी समय दर्द की लहर मे परिणत हो जाता है और रोगी को इतना परेशान कर देता है कि वह छटपटाने लगता है।

कभी-कभी यह दर्द की लहर रुग्ण स्थान पर हथौडे की-सी चोट की तरह लगती है। दर्द की लहरें इस औषधि का चरित्रगत-व्यापक-लक्षण है। सिर-दर्द का तो वर्णन हमने अभी किया। यह दर्द की लहर, जहा भी शोथ हो, वहा हथौडे की-सी मार करती है। फोडे पर नाडी का ज़ोरदार स्पन्दन महसूस होता है, अगर डिम्ब-ग्रन्थि मे शोथ है तो रोगी को वहा हर स्पन्दन की चोट लगती है, फोडा सूज रहा हो, तो वहा स्पन्दन की चोट लगती है। हृदय से उठी नाडी की प्रत्येक हरकत सीधी सूजन की जगह पर चोट मारती-सी लगती है। **लैकेसिस** से अनेक बवासीर, भगदर आदि के रोगी तब ठीक हुए हैं जब रोगी को ऐसा अनुभव होता था कि नाडी का हर स्पन्दन बवासीर के मस्सो या भगदर की नली मे प्रहार कर रहा था।

(१०) **ऊष्णता-प्रधान रोगी, ठडक से गर्मी मे जाने से बीमार होना**--रोगी ऊष्णता-प्रधान होता है। सूजन पर गर्म पानी सहन नही कर सकता। सूजन के स्थान पर गर्म सेक या गर्म पानी डालने से बेचैन हो जाता है, मानसिक-लक्षण प्रबल हो जाते हैं। ठडे स्नान से गर्म स्थान पर जाने से उसके लक्षण बढ जाते है। गर्म पानी से वह स्नान नही कर सकता। इससे उसे धडकन होने लगती है। गर्म पानी से नहाने से उसे ऐसे लगता है मानो सिर फूट जायगा, सारे शरीर मे नसो मे धमधम होने लगती है। कई बार लडकिया गर्म पानी के स्नान से बेहोश हो जाती है। रोगी को ठड लग रही हो, परन्तु तब भी अगर वह गर्म कमरे मे जाता है, तो गर्मी सहन नही कर सकता। गले के सबध मे तो हम पहले लिख ही चुके हैं। गर्म पानी, या गर्म चाय वह नही पी सकता। गले का स्पर्श तो वह सहन कर ही नही सकता—यह पहले लिखा जा चुका है। **लैकेसिस** का नया रोगी, अर्थात् जिसके नवीन-रोग मे इसके लक्षण हों, वह गर्म पानी पीयेगा तो गला रुध जायगा या उल्टी कर देगा, अलबत्त इस औषधि के लक्षणोवाला पुराना-रोगी (Chronic case) अगर ठडा पानी पीयेगा तब उसका गला रुधेगा और जी मतलायेगा। इस भेद को सामने रख लेना चाहिये। गले के शोथ या डिफ्थीरिया मे शोथ या प्रदाह **लैकेसिस** तथा **सैबेडिला** दोनो मे बाई तरफ से शुरु होता है, परन्तु **लैकेसिस** मे रोगी ठंडा पानी चाहता है, गर्म मे उसका रोग बढता है, **सैबेडिला** मे इस से उल्टा होता है, वह गर्म पानी चाहता है, ठडे पानी से उसका रोग बढता है।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (यह बहुत गहरी क्रिया करने वाली औषधि है। क्योंकि यह घातक-विष है इसलिये निम्न-शक्ति मे इसका प्रयोग नही करना चाहिये। बहुत निम्न-शक्ति मे तो यह मिलती ही नही। इसका बार-बार प्रयोग भी उचित नही है। निम्न-शक्ति तथा बार-बार के प्रयोग से रोगी मे ऐसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं जो उम्र भर उसका पीछा न छोडें। डा० हेरिंग जिन्होने इस औषधि की अपने ऊपर सिद्धि की थी वे उम्र भर गले का कॉलर नही लगा सके थे। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

लॉरोसिरेसस (LAUROCERASUS)

(१) **प्रतिक्रिया का अभाव** (Lack of reaction)—जब रोगी बीमारी की झपेट मे होता है तब औषधि की सहायता से वह बीमारी के खिलाफ प्रतिक्रिया करता है, बीमारी का मुकाबिला करने की उसमे शक्ति उत्पन्न हो जाती है, और वह रोग-मुक्त होने लगता है। परन्तु अगर लक्षणो के अनुसार अच्छी-से-अच्छी औषधि देने पर भी रोगी मे रोग के साथ लड़ने के

लिये प्रतिक्रिया उत्पन्न न हो, रोगी गिरता ही चला जाय, तो इस औषधि को प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिये दिया जाता है। प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिये निम्न-लक्षणो पर निम्न-औषधिया प्रयोग मे लाई जाती है

(प्रतिक्रिया के अभाव मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

लॉरोसिरेसस—जब प्रतिक्रिया की शक्ति न रहे, जीवनी-शक्ति अत्यन्त निर्बल पड जाय, रोगी फेफडे या दिल की बीमारी से इतना कमज़ोर हो जाय कि शरीर मे गर्मी बिल्कुल न रहे, रोगी को कपडो से लपेटा जाय, अगीठी के पास रखा जाय, परन्तु शरीर गर्म न हो पाये। हृदय तथा सास की बीमारी मे चुनी हुई दवा से लाभ न हो, शरीर नीला पड जाय तब यह लाभ करती है।

कैपसिकम—थुलमुल मासपेशि के रोगियो मे प्रतिक्रिया का अभाव ।

ओपियम—ऐसे रोगियो मे प्रतिक्रिया का अभाव जो अर्ध-निद्रित अवस्था मे पहुच जाये, जिन्हें दर्द ही महसूस न होता हो ।

वैलेरियन तथा एम्ब्रा ग्रीसिया—स्नायु-प्रधान रोगियो मे प्रतिक्रिया का अभाव जब कि ठीक-से चुनी हुई दवा लाभ न करे।

कार्बो वेज—रोगी मरणासन्न प्रतीत हो, घुटनो तक ठडा हो जाय, परिस्थिति के प्रति सर्वथा उदासीन हो जाय।

सलफर तथा सोरिनम—जब सोरा-विष (Psoric taint) के कारण रोगी प्रतिक्रिया न कर रहा हो ।

मर्क्यूरियस—जब उपदश अर्थात् आतशक के विष (Syphilitic taint) के कारण प्रतिक्रिया न हो रही हो।

(२) **हृदय के रोग के कारण खासी का दौर पडना**—हृदय के रोग के कारण अगर खासी का दौर पडता हो, तो इस औषधि से आश्चर्यजनक लाभ होता है ।

(३) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

लीडम (LEDUM)

शरीर के बडे जोडो तथा मास-पेशियो मे दर्द को 'वात-रोग' (Rheumatism) और छोटे जोडो मे दर्द को 'गठिया' (Gout) कहते है। इसमे जोडो मे सूजन और कभी-कभी बुखार हो जाता है। यह कठिन रोग है।

(१) **वात-रोगी या गठिये का रोगी** (Rheumatism or Gout)—इसमे वात या गठिये का रोग नीचे के अग से शुरु होता है और ऊपर फैलता है। कैल्मिया मे इस से उल्टा है। उसका वात-रोग ऊपर के अग से चलता है और नीचे फैलता है। लीडम के वात-रोग मे जोड सूज जाते हैं, गर्म महसूस होते हैं.

परन्तु लाल नही होते। जोडो मे गाठें (Nodosities) पड जाती हैं। जिस अग मे वात-रोग हो वह पतला पड जाता है। इसका वात-दर्द तिरछा (Cross-wise) चलता है, अर्थात् दायें कन्धे से दर्द चलेगा तो वायें कूल्हे के जोड मे चला जायेगा या वायी कोनही मे चला जायेगा, वाये कन्धे से चलेगा तो दाँयें कूल्हे के जोड मे या दाई कोहनी मे चला जायगा। घुटनो तक सूजन आ जाती है, टखने सूज जाते है। पाव के तलवो पर वोझ पडने से चला नही जाता।

लीडम के वात-रोग की विशेषता यह है कि रोगी पाव खुले रखना चाहता है, कभी-कभी वर्फ-समान ठडे पानी मे पाव रखना चाहता है। साधारणतौर पर वात-दर्द मे गर्मी से आराम मिलना चाहिये, परन्तु डा० कैन्ट लिखते हैं कि उन्होने एक रुमेटिज्म के रोगी को टव मे पाव रख कर वर्फ डालते देखा। यह अद्भुत-लक्षण **लीडम** का है, और उसे इस दवा से एकदम लाभ हो गया।

(वात-रोग तथा गठिये के रोग की अन्य मुख्य-मुख्य औषधिया)

लीडम—रोग नीचे से ऊपर फैलता है, रोगी को ठड से आराम मिलता है, रात को, या विस्तर की गर्मी से रोग वढ जाता है।

कैलमिया—रोग ऊपर से नीचे को जाता है।

कॉलोफाइलम—स्त्रियो की अगुलियो के जोडो मे दर्द, शाम को वढ जाता है।

ऐक्टिया रेसिमोसा—छोटे-छोटे जोडो के दर्द जो चलने-फिरने से वढ जायें।

मर्क्यूरियस—इसमे पसीना वहुत आता है, **लीडम** को पसीना नही आता, **मर्क** शीत-प्रधान है, **लीडम** ऊष्णता-प्रधान है।

ऐन्टिम क्रूड—अन्य औषधियो की तरह इसमे भी जोडो मे सूजन है, परन्तु इसमे एडी मे दर्द होता है।

साइलीशिया—यह रोगी शीत-प्रधान होता है और गर्मी पसन्द करता है।

आर्टिका युरेन्स—डा० वर्नेट कहते हैं कि गठिये मे इसके मूल-अर्क की ५ वूद गर्म पानी मे चार-चार घटे के वाद देने से यूरिक ऐसिड निकल कर गठिया ठीक हो जाता है।

(२) **लीडम होम्योपैथी की ऐन्टी-टिटेनस औषधि है**—हम **हाइपेरिकम** पर लिखते हुए लिख आये हैं कि अगर चोट लगने पर उसी समय लीडम नही दिया गया, तो टिटेनस हो सकता है, अगर उसी समय दे दिया जाय तो टिटेनस नही होगा। घोडे को कील चुभ जाय, तो उसे भी यह दवा देने से टिटे-नस नही होगा। स्नायु पर चोट का असर पहुँचते ही लीडम का क्षेत्र है, अगर चोट लगने के वाद दर्द स्नायु-मार्ग से चढने लगा तब हाइपेरिकम का क्षेत्र है। कील लगने, फांस चुभने पर अगर उससे कोई 'स्नायु' (Nerve) प्रभावित हो

गई, तो टिटेनस हो सकता है, और उस समय लीडम 'प्रतिरोधक' (Preventive) का काम करता है। आर्निका हाइपेरिकम, स्टैफिसैग्रिया तथा अन्य चोट की औषधियों की तुलना नीचे दी जा रही है

(चोट लगने पर मुख्य-मुख्य औषधियां)

लीडम—कील, सूई, फांस आदि से छिद कर स्नायुओं तक चोट पहुंच जाना (Punctured wounds), चूहे का काटा, ततैये का काटा।

आर्निका—मांसपेशियों पर कुचल जाने की-सी चोट (Bruised muscles) आर्निका जब अपना काम कर चुके तब लीडम देने से स्नायुओं पर जो चोट पहुंची है वह ठीक हो जाती है। चोट से त्वचा के नीला पड़ जाने पर आर्निका दी जाती है।

हाइपेरिकम—अंगुलि आदि के स्नायु-तंतुओं की चोट (Nerve injury), स्नायु-तंतुओं की चोट के शुरु में लीडम, और चोट के बाद दर्द स्नायु-मार्ग से चल पड़ने पर हाइपेरिकम दी जाती है।

रूटा—अस्थियों के आवरण (Periosteum) पर चोट पहुंचे तब दी जाती है।

स्टैफिसैग्रिया—ऑपरेशन आदि में सफाई के साथ होने वाले ज़ख्मों को यह ठीक करती है।

सिम्फाइटम—आंख की पुतली पर चोट लगने पर।

कैलेन्डुला—यह गेंदे के पत्तों से बनता है। इसे होम्योपैथी का एण्टी-सैप्टिक कहते हैं। घाव को सड़ने से रोकता है। घाव होने पर इसके लोशन से धो देने पर पीव नहीं पड़ती। १ हिस्सा टिंचर ४-५ हिस्से पानी में मिला कर लोशन बन जाता है। इन सबका वर्णन आर्निका तथा हाइपेरिकम में भी दिया गया है।

(३) **विस्की पीने की इच्छा को रोक देता है**—यह औषधि विस्की पीने की उत्कट-इच्छा को रोक देती है। तम्बाकू पीने की इच्छा को कैलेडियम रोक देती है।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ३० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

लिलियम टिग्रिनम (LILIUM TIGRINUM)

(१) **यह अनुभव करना कि जरायु तथा भीतर के सब अंग योनि-द्वार से निकल पड़ेंगे**—यह स्त्रियों की औषधि है और इसकी सब तकलीफें जरायु तथा डिम्बकोश पर निर्भर हैं। रोगिणी अनुभव करती है कि उसके आभ्यन्तरिक

सब अग—जरायु, डिम्बकोश, पेट, आतें—सभी-कुछ योनिद्वार से बाहर निकले पड रहे हैं। योनिद्वार को या तो कपडे से बाधे रखना पडता है या वहा हाथ रख कर उसे समालना पडता है। यह लक्षण **सीपिया** मे भी है, परन्तु दोनो मे भेद है।

(२) **लिलियम तथा सीपिया की योनि-मार्ग पर दबाव के अनुभव की तुलना**—ऐसे लक्षणो मे इन दोनो औषधियो मे निर्वाचन करने मे कठिनाई होती है। यह स्मरण रखना चाहिये कि **लिलियम** मे इन लक्षणो से कष्ट तथा परेशानी **सीपिया** से ज्यादा होती है, परन्तु इन दोनो मे से **सीपिया** की रोगिणी पुरानी बीमारी की मरीज़ होती है। **सीपिया** का शरीर अत्यन्त क्षीण होता है, **लिलियम** मे मूत्राशय का प्रदाह रहता है, वार-बार जाना पड़ता है, प्रदाह को देखते हुए **कैन्थरिस** के लक्षण मालूम पडते हैं, परन्तु अगर मूत्राशय की इन जलन के लक्षणो के साथ जरायु के योनि-द्वार से निकल पडने का अनुभव हो तो **लिलियम** उपयुक्त है।

लिलियम	सीपिया
***प्रजनन की तरह का दबाव**	***प्रजनन की तरह का दबाव**
***भीतरी अंग योनि-द्वार से निकले जा रहे हैं अनुभव करना**	***भीतरी अग योनि-द्वार से निकले जा रहे हैं अनुभव करना**
***बड़े-बडे दस्त आना (डायरिया)**	***दस्तो का अभाव**
***ऊष्णता-प्रधान (Hot)**	***शीत-प्रधान (Chilly)**

(३) **योनि-द्वार पर दबाव के साथ हृदय को लोहे के शिकंजे से जकड़े होने का अनुभव**—योनि-द्वार मे से भीतर के अगो के निकल पडने के-से अनुभव के साथ रोगिणी को ऐसा अनुभव होता है कि उसका हृदय लोहे के शिकजे से जकडा गया है। हृदय मे तीखा दर्द होता है और दिल फडकता-सा प्रतीत होता है। हृदय के शिकजे से कसे जाने का-सा अनुभव **कैक्टस** के-से अनुभव के समान होता है, परन्तु **लिलियम** मे योनि-द्वार का उपरोक्त लक्षण मिला रहता है।

(४) **रोगिणी उदास रहती तथा झट रो देती है**—इसके मानसिक-लक्षण **पल्सेटिला** जैसे होते हैं। रोगिणी उदास रहती है, झट रो देती है। **पल्सेटिला** की तरह ही खुली हवा पसन्द करती है, ठडा कमरा चाहती है। सिर-दर्द तथा अन्य अनेक शिकायतो मे रोगिणी को ठडक से आराम मिलता है।

(५) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (उच्च-शक्ति अच्छा काम करती है। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

लाइकोपोडियम (LYCOPODIUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मानसिक-लक्षण—अपनी योग्यता पर सन्देह, लोभी, कंजूस, लड़ाकूपन (नक्स से तुलना)
(२) शाम के ४ से ८ तक रोग का बढ़ना
(३) दाहिनी तरफ का रोग, या रोग का दाहिने से बायें को जाना, या क्षीणता का ऊपर से नीचे को आना
(४) पेट मे अफारा (कार्बो वेज-लाइको-चायना की तुलना)
(५) अजीर्ण-रोग—बेहद भूख किन्तु दो कौर के बाद उठ जाता है (अजीर्ण मे लाइको तथा नक्स की तुलना)
(६) पेशाब में बालू की तरह का लाल चूरा—मूत्राशय की पथरी, सिर-दर्द; गठिया
(७) नपुंसकता की औषधि
(८) दाहिनी तरफ का हर्निया
(९) न्यूमोनिया के बाद से रोगी कभी अच्छा नहीं हुआ
(१०) रोगी शीत-प्रधान होता है

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणों मे कमी (Better)
*गर्म पेय, गर्म भोजन पसन्द करना
*हरकत से रोगी को आराम
*डकार आने से आराम
*सिर खुला रखने से आराम

लक्षणों मे वृद्धि (Worse)
*४ से ८ शाम तक रोग-वृद्धि
*दाहिनी ओर रोग होना
*सर्दी से रोग बढ़ना क्योंकि औषधि शीत-प्रधान है
*ठंडा खाने-पीने से रोग-वृद्धि

(१) मानसिक-लक्षण— अपनी योग्यता पर सन्देह, लोभी, कंजूस, लड़ाकूपन (नक्स से तुलना)—मानसिक-लक्षणों मे लाइको और नक्स मे इतनी समानता है कि चिकित्सक को यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि किस औषधि को दे। दोनों तीव्र-बुद्धि हैं, शरीर से कमजोर, शरीर के विकास और मानसिक-विकास में अन्तर पाया जाता है, शारीरिक-विकास पिछड़ा हुआ और मानसिक-विकास आगे बढ़ा हुआ। कमज़ोर पतले-दुबले व्यक्ति जो पहली नजर मे देखने वाले पर कुछ प्रभाव नहीं छोड़ते, परन्तु कुछ देर तक उनसे बात-चीत करने पर पता चलता है कि इस दुबले-पतले शरीर मे किसी बुद्धिमान् आत्मा का निवास है। बड़े नाज़ुक (Sensitive) होते हैं। ज़रा-सी बात पर पारा चढ़ जाता है। धैर्यहीन, असन्तुष्ट, किसी पर विश्वास न करने वाले। यहां तक मानसिक-लक्षणों में दोनों में समानता है। परन्तु इनमें भेद भी हैं। नक्स का

गुस्सा, उसकी चिडचिडाहट, वदमजगी तव जाहिर होती है जव कोई दूसरा उसके नजदीक झगडने जाय, **लाइको** तो खुद लोगो से झगडा मोल लिया करता है। **लाइको** का मरीज दूसरे पर हावी होना चाहता है, हर वात मे नुक्स निकाला करता है, तेज मिजाज का होता है, कोई उसकी वात को काटे तो सह नही सकता। डा० एलन ने उसकी ऐसे व्यक्ति से तुलना की है जो डडा लिये यह सोचा करता है कि किस पर वह प्रहार कर सकता है। इसके अतिरिक्त **नक्स** के रोग प्रात काल वढते हैं, **लाइको** के सायकाल ४ वजे के वाद, **नक्स** भरपेट खाना खा लेता है, वाद को उसकी पेट की तकलीफ शुरु होती है, **लाइको** तो दो-चार कौर खाकर आगे खा ही नही सकता, दो-चार कौर के वाद ही पेट भारी लगने लगता है। **लाइको** लोभी, कजूस, लालची, और लडाकू होता है।

अपनी योग्यता पर सदेह—इसके रोगी मे प्राय देखा जाता है कि व्यक्ति को अपनी योग्यता मे सदेह होता है। उदाहरणार्थ, वकील को जज के सामने अपना केस पेश करने मे यह सन्देह बना रहता है कि वह अपना केस सफलतापूर्वक रख सकेगा या नही, नेता को जनता के समक्ष भाषण करने मे यही सन्देह बना रहता है कि उसका भाषण सफल होगा या नही। यद्यपि ये दिन-प्रतिदिन केस लडते तथा भाषण करते हैं, तो भी इन्हें अपनी योग्यता पर सन्देह बना ही रहता है। जब ये भाषण करते हैं तब बडी सफलता से अपना कार्य निबाहते हैं, परन्तु शुरु-शुरु में यह डर सताता रहता है कि कही भाषण करते हुए अटक न जायें, अपनी युक्तियो को भूल न जायें। अपनी योग्यता मे इस प्रकार का सन्देह, अपनी कार्य-क्षमता मे आत्म-विश्वास का अभाव **साइलीशिया** मे भी पाया जाता है। इस प्रकार का आत्म-विश्वास का अभाव इन दो औषधियो मे सबसे अधिक है। इस लक्षण को दूसरे शब्दो मे 'घटना होने से पहले चिन्ता' (Anticipatory fear) कहा जा सकता है। यह लक्षण **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** तथा **जेलसीमियम** मे भी है।

एकान्त से डरना भी, और एकान्त चाहना भी—रोगी उन्ही के पास रहना चाहता है जो सदा उसके साथ रहे हैं, अपरिचितो से वह दूर रहना चाहता है। एक छोटे-से कमरे मे एकान्त रहना वह पसन्द करता है, परन्तु यह भी चाहता है कि उसके पास एक दूसरा भी कमरा हो जिसमे कोई उसका जान-पहचान का व्यक्ति रहे। इस दृष्टि से **लाइको** एकान्त चाहता भी है, और निपट एकान्त से डरता भी है।

झट रो देता है—जव कभी कोई मित्र मिलता है, तो उसकी आखो मे आँसू आ जाते हैं। अगर कोई मित्र कुछ भेंट दे, तो धन्यवाद देने के साथ-साथ उसके आँसू टपक पड़ते हैं। वह इतना स्नायु-प्रधान होता है कि जरा-सी खुशी के मुकाम पर रो देता है, अत्यत भावुक होता है।

अन्धकारमय पागलपन का दृष्टिकोण— उसके चित्त में अजीब तरह के बुरे-बुरे विचार आते रहते हैं। अगर जगत् का नाश हो जाय, अगर घर के सब लोग मर जायें, अगर मकान को आग लग जाय, भविष्य के विषय में इस तरह के विचारों को सोचते-सोचते पागलपन आ जाता है।

(२) **शाम को ४ से ८ तक रोग का बढ़ना**—इसके रोग के बढ़ने का समय निश्चित है। इसकी शिकायतें शाम को ४ से ८ तक बढ़ा करती हैं। नये तथा पुराने रोगों में प्राय उनके बढ़ने का यही समय होता है। रोगी कहता है कि बुखार ४ बजे आता है, ८ बजे तक रहकर हट जाता है। मलेरिया हो या कोई भी बुखार हो, अगर उसका यह समय निश्चित है, तो इस औषधि से अवश्य लाभ होगा। मलेरिया, टाइफॉयड, गठिये का दर्द, वात-रोग के बुखार, न्यूमोनिया, दमा आदि कोई रोग भी क्यों न हो, अगर ४ बजे तबीयत गिर जाती है, ४ से ८ बजे रोग के बढ़ने का समय है, तो इस औषधि को भुलाया नहीं जा सकता। लाइको से अपचन के ऐसे अनेक रोगी ठीक हुए है जिनमें पेट में जलन ३ बजे दोपहर शुरु हुई और शाम ७ बजे पित्त की उल्टी के बाद जलन दूर हो गई।

(३) **दाहिनी तरफ का रोग, या रोग का दाहिने से बायें जाना; या क्षीणता का ऊपर से नीचे आना**—कोई भी रोग जो शरीर के दाहिने हिस्से पर आक्रमण करे, या दाहिने पर आक्रमण करके बायी तरफ जाय, तो इसकी तरफ ध्यान जाना चाहिये। टांसिल का शोथ जो पहले गले के दाहिने हिस्से पर आक्रमण करता है इसके द्वारा शुरु में ही सभल जाता है। **लाइकोपोडियम, लैकेसिस, लैक कैनाइनम, फाइटोलैका** में से लक्षणानुसार किसी भी औषधि से टांसिल को एकदम रोका जा सकता है। पेट, डिम्बकोश, जरायु—इनके दर्द में अगर पीड़ा दाहिने से शुरु होती हो, या दाहिने से शुरु होकर बायी तरफ जाती हो, फुन्सियां दायी तरफ से बायी तरफ जायें, शियाटिका का दर्द दायी तरफ से बायी तरफ जाय, कोई भी शिकायत जो दायी तरफ से शुरु होती, दायी तरफ ही रह जाती, या दायी से बायी तरफ बढ़ती है—उसमें इस औषधि का कार्य-क्षेत्र है।

क्षीणता का ऊपर से नीचे आना—अगर रोगी का नीचे का भाग सही-सलामत हो, ऊपर का भाग क्षीण हो जाय, गर्दन से क्षीणता शुरु हो, या यह क्षीणता सिर से छाती की तरफ चले, तो यह इस औषधि का लक्षण है। नीचे से शुरु होकर दुबलापन ऊपर की तरफ बढ़े तो **ऐब्रोटेनम** दवा है। सूके के रोग में मुख्य-मुख्य औषधियों का वर्णन हम ऐब्रोटेनम में कर आये हैं।

(४) **पेट में अफारा (कार्बो वेज, लाइको, चायना की तुलना)**—पेट के अफारे या पेट में हवा बनने के संबध में तीन औषधियां मुख्य हैं—**कार्बो वेज, लाइको, चायना**। यह गैस की औषधियों का 'त्रिक' है। **कार्बो वेज** में पेट के ऊपर के हिस्से में हवा भर जाती है, नाभि से उपरला भाग भरा रहता है, रोगी

ऊपर से डकारा करता है। **लाइको** मे पेट का निचला हिस्सा वायु से भरा रहता है, आतो मे भोजन पडा सडा करता है, हर समय गुडगुड होती है, नीचे के पेट मे हवा फिरती रहती है। **लाइको** का रोगी कहता है कि मैं जो-कुछ खाता हू सब हवा बन जाता प्रतीत होता है। हवा की गुडगुडाहट विशेषतौर पर बडी आत के उस हिस्से मे पायी जाती है जो तिल्ली की तरफ है, अर्थात् पेट के बायीं तरफ। हवा उठती तो दायी तरफ से ही है, परन्तु निकल न सकने के कारण बायी तरफ अटक जाती है। दायी तरफ उठने के कारण बाईं तरफ होते हुए भी पेट मे ऐसी गैस **लाइको** का ही लक्षण है। **चायना** की हवा सारे पेट मे भरी रहती है, रोगी यह नही कहता कि हवा ऊपर है या नीचे, वह कहता है कि सारा पेट हवा से भरा पडा है।

(५) **अजीर्ण-रोग—बेहद भूखा परन्तु दो कौर खाने के बाद उठ जाता है (अजीर्ण मे लाइको तथा नक्स की तुलना)**—डा० चौधरी अपनी 'मैटीरिया मैडिका' मे लिखते हैं 'मैं साहसपूर्वक कह सकता हू कि अपचन या अजीर्ण रोग के ५० प्रतिशत रोगी **लाइको** से ठीक हो सकते है।' हम पहले ही कह चुके है कि **लाइको** तथा **नक्स** एक-दूसरे के अत्यन्त निकट हैं। अजीर्ण-रोग मे भी दोनो औषधियो मे भोजन के उपरान्त बेचैनी होने का लक्षण है, परन्तु **लाइको** मे रोगी बेहद भूखा होता है किन्तु दो कौर खाने के बाद ही पेट की बेचैनी शुरु हो जाती है, पेट भरा-भरा लगता है। इस प्रकार का लक्षण कि रोगी भूखा तो बैठे किन्तु दो कौर खाने के बाद भूख न रहे, उत्कट रूप मे अन्य किसी औषधि मे नही पाया जाता। **नक्स** का रोगी भर पेट खा लेता है, परन्तु उसकी बेचैनी तब शुरु होती है जब पाचन-क्रिया शुरु हो चुकी होती है, **लाइको** के रोगी की बेचैनी तो पाचन-क्रिया के शुरु होने के पहले ही शुरु हो जाती है।

(६) **पेशाब मे बालू की तरह का लाल चूरा—मूत्राशय की पथरी, सिर-दर्द, गठिया**—पेशाब मे बालू की तरह का लाल चूरा इस औषधि का बडा मुख्य लक्षण है। जिन रोगियो के पेशाब मे इस प्रकार का लाल चूरा प्रचुर मात्रा मे पाया जाय, उनके हर-किसी रोग मे यह औषधि लाभकारी है। लाल चूरे का मतलब सिर्फ लाली नही, अपितु बालू की तरह के लाल ठोस कण हैं, जो पेशाब को किसी बर्तन मे रख देने से नीचे बैठ जाते हैं। अगर शुरु-शुरु मे **लाइको** से इसका इलाज न किया जाय, तो गुर्दे मे पथरी पैदा हो जाती है, जो अत्यन्त दर्द पैदा करती है। अगर यह दर्द गुर्दे के दाहिनी तरफ हो, तब तो **लाइको** निश्चित औषधि है। बायें गुर्दे के दर्द के लिये **बरबेरिस** दवा है। **सार्सापैरिला** में पेशाब के नीचे सफेद-चूरा जमता है, लाल नही। बच्चो तथा बडो मे भी पेशाब मे **लाइको** का लाल चूरा पाया जाता है, इसके साथ कमर मे दर्द होता है, और यह द॰ पेशाब करने से जाता रहता है। इन लक्षणो के होने पर

लाइको की तरह और दूसरी कोई औषधि इतना लाभ नही करती और इन लक्षणो मे **लाइको** पथरी को गला कर निकाल देती है।

पेशाब मे लाल चूरा हो तो सिर-दर्द चला जाय—रोगी के सिर-दर्द का पेशाब के लाल चूरे के साथ विशेष सबध पाया जाता है, जब तक पेशाब मे लाल चूरा निकलता रहता है, तब तक रोगी सिर-दर्द से मुक्त रहता है, जब यह लाल चूरा निकलना बन्द हो जाता है तब सिर-दर्द भी शुरु हो जाता है। यह लाल चूरा यूरिक ऐसिड होता है जो शरीर के भीतर होने से सिर-द ं का कारण बना रहता है।

पेशाब में लाल चूरा हो तो गठिया रोग चला जाय—जो लोग गठिये के शिकार होते हैं उनमे जब पेशाब मे लाल चूरा आता रह ा है, तब जैसे सिर-दर्द नही रहता वैसे गठिये का दर्द भी नही रहता, जब ल ल चूरा आना बन्द हो जाता है तब सिर-दर्द और गठिये का दर्द भी आ जाता है। पेशाब मे लाल चूरे का सिर के दर्द और गठिये के दर्द—इन दोनो के साथ सबध है। लाल चूरा होगा तो न सिर-दर्द होगा, न गठिये का दर्द होगा ; लाल चूरा नही होगा तो या सिर-दर्द होगा या गठिये का दर्द होगा, या दोनो होगे। इस लाल चूरे का यूरिया से सबध है और इसलिये लाल चूरे के रूप मे जब यूरिया निकलना बन्द हो जाता है तब यही यूरिया सिर-दर्द या गठिये का दर्द पैदा कर देता है।

खा लेने पर सिर-दर्द चला जाय—इस औषधि के रोगी का सिर-दर्द खाना खा लेने से घंट जाता है। निश्चित समय पर भोजन न मिले तो सिर-दर्द शुरु हो जाता है। **फॉसफोरस** और **सोरिनम** मे भी समय पर भोजन न खाने से सिर-दर्द शुरु हो जाता है, परन्तु **फॉसफोरस** और **सोरिनम** मे सिर-दर्द शुरु होने से पहले पेट मे भूख की घबराहट पैदा होती है, जो भोजन करने पर भी नही जाती। **कैक्टस** मे ठीक समय पर भोजन न करने से सिर-दर्द हो जाता है, और भोजन कर लेने के बाद और बढ जाता है।

जुकाम के पुराने मरीज को ठड लगने से दोबारा जुकाम होने पर सिर-दर्द—जो रोगी सदा जुकाम के शिकार रहते हैं, गाढा, पीले रग का स्राव सिनका करते हैं, अगर उन्हें ठड लग कर नया जुकाम हो जाय, और गाढे की जगह पतला पानी आने लगे, तो उन्हें तब तक सिर-दर्द होता रहता है जब तक उनका जुकाम फिर गाढा नही हो जाता। उनके जुकाम के फिर से गाढ़ा हो जाने पर सिर-दर्द जाता रहता है। ऐसे रोगियो के सिर-दर्द मे **लाइकोपोडियम** लाभ करता है।

(७) **नपुसकता की औषधि**—नपुसकता दूर करने की मुख्य औषधियो मे यह एक है। जो लोग बहुत थके-मादे रहते हैं, जिनके शरीर मे जीवनी-शक्ति की कमी है, जननाग कमजोर हैं, उन्हें **फॉसफोरस** की अपेक्षा **लाइको** की आवश्यकता

होती है। जिन नवयुवको ने दुराचरण, व्यभिचार, हस्त-मैथुन आदि दुष्कर्मों से अपने को क्षीण कर लिया है, जननेन्द्रिय मे उत्तेजना नही होती, उनका यह परम मित्र है। डा० नैश लिखते हैं कि वृद्ध लोग जो दुबारा विवाह कर अपनी नव यौवना पत्नी को सन्तुष्ट नही कर सकते उनको इस औषधि की उच्च-शक्ति की एक मात्रा उनके कष्ट दूर कर देती है।

(८) **दाहिनी तरफ का हर्निया**—बायी तरफ के हर्निया मे **नक्स वोमिका** तथा दाहिनी तरफ के हर्निया मे **लाइको** दिया जाता है।

(९) **न्यूमोनिया के बाद से रोगी कभी अच्छा नहीं हुआ**—ब्रोंकाइटिस या न्यूमोनिया के बाद कई रोगी अपने को ठीक हुआ नही पाते। ब्रोंकाइटिस या न्यूमोनिया का ठीक-से इलाज न होने के कारण या अधूरा इलाज होने के कारण रोगी को क्षय हो जाता है। ऐसे रोगियो के लिये यह उत्कृष्ट दवा है। इसके अतिरिक्त न्यूमोनिया मे इसका उपयोग किया जाता है। न्यूमोनिया में रोगी तीन अवस्थाओ मे से गुज़रता है। पहली अवस्था वह है जिसमे फेफडो मे शोथ हो जाता है, जिसे 'शोथावस्था' (Congestive stage) कहा जाता है। इसके बाद दुसरी अवस्था आ जाती है, जिसमे फेफडो से कफ निकल कर फेफडों में जमने लगता है, इसमे फेफडे मे कफ भरा हुआ होता है, जिसे कफ की 'स्थूलावस्था' (Stage of hepatization) कहते हैं। इसके बाद तीसरी अवस्था आती है जब कफ ढल जाता है, इसे 'परिपाकावस्था' (Stage of resolution) कहते हैं। तीसरी अवस्था मे पहुच कर या तो कफ़ घुल जाने से रोगी अच्छे हो जाते हैं या कफ के न घुलने से मर जाते हैं क्योकि उस अवस्था मे जाकर न तो कफ निकलता ही है, न अन्दर घुलकर समाप्त ही होता है। उस समय रोगी का सास भारी हो जाता है, सास लेने मे कष्ट होता है, ऐसा लगता है कि सारा फेफडा कफ मे घुला पडा है, कितना ही भर-भर कर कफ़ क्यो न निकले, रोगी को किसी तरह चैन नही पडता, सास जल्दी-जल्दी, थोडा-थोडा चलता है, और दोनो नकुरे तकलीफ से सास लेने की चेष्टा से हिलते हैं। इसी को होम्योपैथिक पुस्तको मे 'नकुरो का पखे की तरह हिलना' (Fan-like motion of alae nasi) लिखा है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि अगर न्यूमोनिया का रोगी इस अवस्था मे पहुच जाय, तो लाइको अपना चमत्कार दिखलाता है। यह वह अवस्था है जब छाती मे घडघड होती है, नाक के नकुरे पखे की तरह हिलते दीखते हैं और छाती मे कफ निकालने की शक्ति नही होती।

(१०) **रोगी शीत-प्रधान होता है**—रोगी शीत-प्रधान होता है, उसमे जीवनी-शक्ति की कमी होती है, जीवन के लिये जिस गर्मी की जरूरत है वह उसमे नहीं होती। समूचा शरीर ठड तथा ठडी हवा को नही चाहता। रोगी गर्म खाना और गर्म पीना चाहता है। उसके दर्द गर्मी से शान्त होते हैं। इस मे

एक अपवाद है। उसके सिर तथा मेरु-दंड के लक्षण गर्मी से बढ़ जाते हैं, बिस्तर की गर्मी को सिर के लक्षण में वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। सिर-दर्द गर्मी से और हरकत से बढ़ जाता है। सूजन के स्थान, गले की सोथ, पेट का दर्द—ये सब गर्मी चाहते हैं, सिर्फ सिर के लक्षणों में रोगी को ठंड की जरूरत पड़ती है। लाइको शीत-प्रधान है, परन्तु केन्ट की रिपर्टरी में इस औषधि को आयोडियम, पल्स, लैकेसिस, नेट्रम म्यूर तथा सल्फर आदि गर्म-औषधियों के साथ गिनाया गया है। इसका समाधान यही है कि रोगी अपने रूप में तो शीत-प्रधान ही है, परन्तु उसके सिर तथा मेरु-दंड के लक्षण ठंड पसन्द करते हैं। वैसे, यह रोगी गर्म भोजन, गर्म पीना पसन्द करता है, गर्म बिस्तर में उसे आराम मिलता है।

(११) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i कब्ज मे नक्स से तुलना—हम जान ही चुके हैं कि लाइको और नक्स बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं। कब्ज मे भी ये मिलते हैं। दोनों मे कब्ज की जबर्दस्त शिकायत रहती है। लाइको का रोगी कई दिन तक पाखाना नही जाता यद्यपि मल-द्वार भारी और भरा रहता है। टट्टी की ख्वाहिश नही होती, मल-द्वार क्रियाहीन होता है। दोनों मे बार-बार जाना और एक बार मे पूरा मल न आना पाया जाता है, परन्तु नक्स मे आँतों की मल को आगे धकेलने की शक्ति (Peristaltic action) की कमी के कारण बार-बार जाना पड़ता है, लाइको में मल-द्वार के सकुचित होने या उसकी क्रियाशीलता के अभाव (Inactivity) के कारण ऐसा होता है। देखना यह है कि क्या रोगी ऐसा अनुभव करता है कि मल-द्वार तो भरा पड़ा है परन्तु टट्टी नही उतरती ? तब लाइको उपयोगी होगा।

ii खांसी—हलक मे पर लगने की-सी सरसराहट प्रतीत होती है। सूखी खासी आती है। गले मे धुआं-सा उठकर खासी आती है।

iii बच्चा दिनभर रोता रातभर सोता है—इसका एक लक्षण यह है कि बच्चा दिनभर तो रोता रहता है, रातभर चैन से सोता है। जेलापा और सोरिनम मे बच्चा दिनभर सोता और रातभर रोता है।

iv योनि की खुश्की—यह स्त्रियों की योनि की खुश्की को दूर करता है जिसके कारण सगम मे कष्ट होता है। योनि मे से हवा निकलना इसका विचित्र-लक्षण है।

v दुबली लडकिया—जो लडकिया १६-१७ वर्ष की हो जाने पर भी नही बढती, रजस्वला नही होती, जिनकी छाती दबी रहती है, शरीर पुष्ट नही हो पाता, वे इस औषधि से पुष्ट होने लगती है।

vi. पसीना न आना—अगर रोगी को पसीना न आता हो तो इस औषधि को ध्यान मे रखना चाहिये।

vii. कन्धों के बीच जलन—इस प्रकार की जलन फॉस मे भी है।

viii. **सोते हुए बिस्तर मे पेशाब कर देना**—जिन बच्चो को दिन को तो पेशाब ठीक आता है, परन्तु रात को पेशाब की मात्रा बढ जाती है, बिस्तर मे पेशाब कर देते हैं, उसके लिये उपयोगी है।

ix **फ्लू के बाद**—फ्लू के आक्रमण के बाद दिमागी काम करने वालो की दिमागी कमज़ोरी को **लाइको** दूर कर देता है और वे फिर-से काम करने लगते हैं। स्नायु-प्रधान रोगियो को फ्लू के बाद दिमाग़ी कमज़ोरी के लिये **स्कुटेलेरिया** लाभप्रद ह। बहुत लम्बी बीमारी हो जाय तो **चायना** उपयुक्त है।

(१२) **लाइकोपोडियम का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—पतला-दुबला पीला चेहरा, पिचके हुए गाल, चेहरे पर जवानी मे भी बुढापा लिखा हुआ, अपनी उम्र से ज्यादा बूढा, अगर बच्चा है तो बडा सिर और ठिगना, रुग्ण शरीर, ऊपर से नीचे की तरफ क्षीण होता हुआ, शरीर के क्षीण होते हुए भी बुद्धि मे तेज़, लडने पर आमादा, किसी की बात न सहने वाला, ज़रा-सी बात पर तिनक जाने वाला, बदहज़मी का शिकार, मीठे का प्रेमी, गर्म भोजन और गर्म चाय का इच्छुक, पेट मे अफारा, शाम को ४ से ८ बजे की शिकायतो को लेकर आने-वाला—यह है सजीव मूर्त-चित्रण **लाइकोपोडियम** का।

(१३) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०,२०० तथा ऊपर। हनीमैन का कथन है कि यह औषधि एन्टी-सोरिक, एन्टी साइकोटिक तथा एन्टी-सिफिलिटिक है। इसका असर ४० से ५० दिन तक रहता है। इस औषधि को दोहराना हो, तो किसी दूसरी एन्टी-सोरिक औषधि को देने के बाद दोहराना चाहिये, परन्तु पहली मात्रा का जो प्रभाव होता है दूसरी मात्रा का उतना गहरा प्रभाव नही होता। डा० कैन्ट लिखते हैं कि किसी पुराने रोग की चिकित्सा का प्रारभ **लाइको** से नही करना चाहिये। अच्छा यह है कि पहले कोई अन्य एन्टी-सोरिक दवा दी जाय, और उसके बाद इसे दिया जाय। यह औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है। डा० कैन्ट के अनुसार **सल्फर, कैलकेरिया, लाइकोपोडियम** का 'त्रिक' है जो एक-दूसरे के पीछे लक्षणानुसार दिये जाते हैं। इस त्रिको को हमने एक-साथ **कैलि सल्फ** मे दिया है।

मैग्नेशिया कार्बोनिका (MAGNESIA CARBONICA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) बच्चों के हरे, पतले, लेई-के-से दस्त और उनके साथ अपच का दूध निकलना
(२) बच्चे को दस्त आने से पहले पेट मे दर्द जिसमे सामने झुकने से आराम मिले
(३) बच्चे से खट्टी बू आना
(४) स्नायु-शूल, बायें चेहरे का दर्द, दांत का दर्द, दर्द मे चलने-फिरने से आराम
(५) मासिक आने से पहले जुकाम हो जाना
(६) रात को लेटने से ही रज स्राव होता है, खड़े होने पर बन्द हो जाता है
(७) बच्चे को दूध हज्म नहीं होता
(८) वंशानुगत क्षय-रोग के बच्चे को लाभ करता है
(९) इस औषधि के रोगो मे खुश्की पायी जाती है
(१०) जीवनी-शक्ति के ह्रास (Lack of vitality) मे लाभदायक है

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
* हरकत से आराम पाना
* घूमने-फिरने से आराम
* खुली हवा मे अच्छा लगना

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
* रात को रोग का बढ़ना
* विश्राम से परेशान होना
* ठंड से रोग मे वृद्धि
* बच्चे या युवा को दूध पीने की इच्छा का न होना

(१) **बच्चों के हरे, पतले लेई-के-से दस्त और उनके साथ अपच का दूध निकलना**—यह औषधि बच्चो के हरे, पतले दस्तो की और ऐसे हरे पतले दस्तो की जिनके साथ अपच का दूध निकले, बढ़िया दवा है। दस्तो का रंग हरा होता है, साथ उनमे झाग होते हैं, मल मे सफेद चिकनी चर्बी के-से टुकड़े तैरते हैं। उनकी ऐसी शक्ल होती है जैसी काई-लगे तालाब के पानी की होती है।

(२) **बच्चे को दस्त आने से पहले पेट मे दर्द होता है जिसमे सामने झुकने से आराम मिलता है**—दस्त आने से पहले बच्चे को इतना पेट-दर्द होता है कि वह आराम पाने के लिये सामने की तरफ झुक पड़ता है। यह लक्षण **कोलोसिन्थ** मे भी है, परन्तु इस लक्षण के साथ **मैग्नेशिया कार्ब** का अपना लक्षण यह है कि उसके शरीर से तथा मल से बेहद खट्टी बू आती है। यह खट्टी बू **रिउम** मे भी है परन्तु **रिउम** की खट्टी बू **मैग्नेशिया कार्ब** से भी अधिक है। दस्त आने से पहले पेट-दर्द, दस्त का हरा रंग **कैमोमिला** मे भी है, परन्तु **कैमोमिला** का मल पानी की तरह और **मैग्नेशिया कार्ब** का मल लेई की तरह लसदार होता

है। **मक्यूंरियस** का मल हरा और लेई की तरह का होता है। परन्तु **मक्यूंरियस** मे मल-त्याग के समय बच्चा बहुत काखता है। निम्न-प्रकार इन चारो दवाओ की एक-दूसरे से पृथकता को समझना चाहिये—

(बच्चो के दस्तो में मुख्य-मुख्य औषधिया)

मैग कार्ब—दस्तो के अन्य लक्षणो के साथ **हरापन** मुख्य है।

कोलोसिन्थ—दस्तो के अन्य लक्षणो के साथ पेट को **दबाने से आराम** आना मुख्य है।

रिउम—दस्तो के अन्य लक्षणो के साथ **खट्टी बू** मुख्य है।

कैमोमिला—दस्तो के अन्य लक्षणो के साथ दस्त का **पनीलापन** मुख्य है।

मक्यूंरियस—दस्तों के अन्य लक्षणो के साथ **कांखना** मुख्य है।

इथूजा—बच्चा दूध नही हज़म कर सकता, दूध पीते ही उल्टी कर देता है, पतला, **हरा दस्त** आता है, अत्यन्त कमज़ोर हो जाता है परन्तु **आर्स** की तरह **बेचैन** नही होता। इसमे **हरापन मुख्य** है।

(३) **खट्टी बू आना**—बच्चे को कितना ही नहलाया जाय, उसमे **हिपर** की तरह की खट्टी वास आती है, बच्चा बहुत मैला लगता है। यह सिर्फ बच्चो की दवा नही है, बडों को भी दी जाती है। रोगी को गले तक पेट से खट्टा पानी आता है, इस खट्टेपन से जी मतलाता है। शरीर से और मल से खट्टी बू छूटती है। डा० चौधरी का तो कहना यह है कि अगर रोगी मे तीव्र खट्टेपने की बू न हो, तो यह औषधि निर्दिष्ट नही है।

(४) **स्नायु-शूल, बायें चेहरे का दर्द, दांत का दर्द; दर्द मे चलने-फिरने से आराम**—जितने मैग्नेशिया हैं उनका स्नायु-शूल पर विशेष प्रभाव है। स्नायु के मार्ग मे दर्द होना इसका स्वभाव है। दर्द ऐसा भयकर होता है कि रोगी स्थिर नही बैठ सकता। वह चलता-फिरता रहता है, चलने-फिरने से उसे आराम मिलता है। यह तेज़ दर्द किसी भी अग मे हो सकता है, परन्तु अगर इस दर्द मे चलने-फिरने से रोगी को चैन पडे, तो इस औषधि पर विचार करना होगा।

चेहरे के बाये हिस्से मे दर्द इसकी विशेषता है। रात को चेहरे के बायी तरफ इतना दर्द होता है कि रोगी बिस्तर छोडकर चलता-फिरता है। ज्योही वह शान्त होकर बैठता है त्योही उसे दर्द घर पकडता है। दात का दर्द तो रोगी को विशेष सताता है। दातो की जडें इतनी नाजुक हो जाती हैं कि उनमे भयकर दर्द होता है। मासिक-धर्म से पहले और मासिक होते समय स्त्री को दात मे दर्द होता है। गर्भावस्था मे रोगिणी को दांतों में और चेहरे के बायी तरफ़ दर्द होता है। रोगी के दात इतने नाजुक होते हैं कि दन्त-चिकित्सक उन्हें

छू तक नही सकता। गर्भावस्था मे अगर दात का दर्द हो तो **मैग्नेशिया कार्ब** तथा **चायना** उत्तम औषधिया हैं। **मैग्नेशिया कार्ब** का प्रभाव दात की जडो पर और **ऐन्टिक क्रूड** का प्रभाव दात की डेन्टाइन पर अधिक है।

(५) **मासिक आने से पहले जुकाम हो जाता है**—मासिक-धर्म होने से पहले रोगिणी को जुकाम हो जाता है। मासिक से कुछ दिन पहले उसकी तबीयत गिर जाती है। जुकाम हो जाने के लक्षण को देखकर वह स्वय कहती है 'मैं जानती हू कि मेरा मासिक-धर्म का समय निकट आ गया है क्योंकि मुझे सिर मे ठड लग रही है, जुकाम होने वाला है।' रोगिणी को प्रतिमास रज स्राव होने से पहले जुकाम हो जाता है।

(६) **रात को लेटने से रज· स्राव होता है, खडे होने पर बन्द हो जाता है**—इसका एक विचित्र-लक्षण यह है कि रज स्राव केवल रात को जब वह बिस्तर पर लेटती है तब होता है। चलते-फिरते रहने से रज स्राव रुक जाता है। **ऐमोनिया म्यूर** और **बोविस्टा** मे भी मासिक रात को लेटने मे होता है, चलने-फिरने से बन्द हो जाता है। इसके विपरीत **कैक्टस, कॉस्टिकम, लिलियम** मे ऋतु-स्राव दिन को होता है, लेटने से बन्द हो जाता है। क्रियोजोट मे ऋतु-स्राव सिर्फ लेटने पर होता है, चलने-फिरने से बन्द हो जाता है—चाहे दिन हो, चाहे रात हो।

(७) **दूध हजम नहीं होता**—रोगी दूध हजम नही कर सकता, **मैग्नेशिया म्यूर** मे भी ऐसा ही है।

(८) **वशगत क्षय-रोग के बच्चो को लाभ करता है**—टी० बी० के रोगी माता-पिता के बच्चो के लिये यह औषधि विशेष उपयोगी है। ये बच्चे खुश्क खासी के मरीज़ हुआ करते हैं। टी० बी० के शिकार माता-पिता की यह सतान साल-दर-साल खासते-खासते अपना जीवन-यापन किया करती है। खासी बहुत ज्यादा नही बढती परन्तु पीछा भी नही छोडती, थोडी-बहुत बनी ही रहती है। अन्त मे कोई ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है जब देर तक मुह छिपाये पडा हुआ क्षय-रोग उभर आता है, और रोगी स्पष्ट-रूप मे क्षय-ग्रस्त हो जाता है। ठीक समय पर इस दवा के प्रयोग से रोगी क्षय की तरफ बढने से रुक जाता है।

(९) **इस औषधि के रोगो मे खुश्की पायी जाती है**—शरीर के हर भाग मे खुश्की इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। त्वचा मे खुश्की, श्लैष्मिक-सस्थानो मे खुश्की, खुश्क जुकाम, खुश्की के कारण नाक से मल ही नहीं निकलता। पुराना ज़ख्म सूक जायगा, उसमे से मवाद नही निकलेगा, परन्तु ज़ख्म बना रहेगा। नाक सूक जाती है, आखें इतनी सूक जाती हैं कि पलकें आपस मे

उलझ जाती हैं, उन्हें एक-दूसरे से अलग करना कठिन हो जाता है। त्वचा सूक जाती है, जलन होती है।

(१०) **जीवनी-शक्ति के ह्रास (Lack of Vitality) मे लाभदायक है**—यह औषधि सब आयु के लोगो तथा स्त्री एव पुरुष दोनो के लिए उपयोगी है। जीवन की अत्यधिक चिंताओ, ज़िम्मेवारियो, परेशानियो से जो छिन्न-भिन्न हो गये हैं, मासपेशिया जिनकी ढीली पड गयी हैं, जिनके शरीर मे सजगता, टोन नही रहा, जीवन की सफलता, उत्साह, क्रियाशीलता जो अन्तरतम से फूटा करती हैं, वह जिनकी सूक गई हैं, जिनका जीवन छिछडे-सा हो गया है, जो चिन्ताकुल-जीवन को वर्दाश्त नही कर सकते—ऐसे लोग होते हैं जिन्हें **मैग्नेशिया कार्ब** लाभ पहुचाता है। उक्त लक्षणो मे यह टॉनिक का काम करता है। अगर रोगी बच्चा है, तो वह ठिगना, रोगी-सा होता है जिसके शरीर की पाचन-क्रिया दोषपूर्ण है, वह पनप नही पाता। अगर स्त्री है, तो सदा शोकाकुल, निराश तथा दु खी रहती है। उसके कापते हुए हाथ, किसी काम मे मन न लगना, चक्कर आना सिद्ध करते हैं कि उसकी जीवनी-शक्ति का प्रवाह सूकता जा रहा है। रोगी शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से अत्यन्त नाजुक हो जाता है, कुछ सहन नही कर सकता। ज़रा-से शोर से परेशान हो जाता है, ज़रा-सी ठडी हवा के झोंके से उसे अत्यन्त कष्ट होता है। ऐसो मे यह औषधि जीवनी-शक्ति फूक देती है।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति** ३, ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

मैग्नेशिया म्यूरियेटिका

(MAGNESIA MURIATICA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) जिगर के रोग की मुख्य औषधि (Liver Remedy)
(२) भेड की मेंगनियों का-सा क़ब्ज़ वाला पाखाना
(३) बच्चो को दूध न पचना
(४) हर छटे हफ्ते सिर-दर्द होना
(५) रोगी रात को बिस्तर पर आख बन्दकर लेटने से बेचैन हो जाता है
(६) समुद्र के किनारे या नमक से दमे आदि तकलीफो का बढ जाना

(१) **जिगर के रोग की औषधि (Liver remedy)**—इसका विशेष प्रभाव जिगर पर पडता है। आखें पीली पड जाती हैं, त्वचा पीली पड जाती है, जिगर के दाहिनी तरफ़ का हिस्सा दुखता है, दायी तरफ़ लेटने से दर्द होता है, टट्टी मे पीला रग नहीं रहता, हल्के रग की होती है, जीभ पर दाँतो के

निशान पड जाते हैं। दांतों पर निशान **मर्क्यूरियस** मे भी पडते हैं, परन्तु दोनों के मल मे भेद है। **मैग्नेशिया म्यूर** का मल भेड की मेंगनियों के समान होता है, **मर्क** मे ऐसा मल नहीं होता। **मर्क** जिगर के हाल ही के रोगों मे इस्तेमाल होता है, **मैग्नेशिया म्यूर** जिगर की पुरानी मर्ज़ मे काम देता है। प्राय चिकित्सक हर प्रकार के रोग मे **फॉसफोरस** और **सल्फर** की तरफ भागते हैं, परन्तु स्नायु-प्रधान रोगियों के लिए जो जिगर के रोग से पीडित हो **मैग्नेशिया म्यूरियेटिका** उत्तम औषधि है।

भेड की मेंगनियों का-सा कब्ज़वाला पाखाना—यह औषधि कब्ज़ की बढिया दवा है। **मैग्नेशिया कार्ब** दस्तों के लिये, और **मैग्नेशिया म्यूर** कब्ज़ के लिये प्रसिद्ध हैं। इसका कब्ज़ विशेष प्रकार का होता है। पाखाना सख्त होता है, भेड की मेंगनियों के समान, गुदा के बाहर आते ही किनारे से टूट-टूट कर गिर पडता है, इतना सख्त होता है कि पेट की मासपेशियों पर दबाव डालकर ही पाखाना निकलता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि जितने म्यूरेट्स हैं सब मे पाखाना खुश्क और टूट-टूट कर गिरने का लक्षण मौजूद है। **नेट्रम म्यूर** और **ऐमोनिया म्यूर** मे भी ऐसी कब्ज़ है।

बच्चों को दूध न पचना—दांत निकलते समय बच्चों को प्राय दूध नहीं पचा करता। दूध से पेट मे दर्द होता है और बिना पचे ही वह निकल जाता है। बच्चे मे मीठे के प्रति उत्कट चाह होती है। **मैग्नेशिया कार्ब** और **इथूजा** मे भी दांत निकलते समय दूध न पचने के लक्षण हैं, परन्तु **मैग कार्ब** मे दस्त आते हैं, **मैग म्यूर** मे कब्ज़ होती है, और **इथूजा** मे दूध दही की तरह फूटा हुआ निकलता है। **कैलकेरिया कार्ब** मे भी बच्चा दूध पीकर उल्टी कर देता है, परन्तु **इथूजा** का विचित्र-लक्षण यह है कि बच्चा उल्टी करने के बाद फिर तुरत दूध पीने लगता है, **कैलकेरिया** मे ऐसा नहीं होता। **इथूजा** का बच्चा या तो दूध पीते ही उसे उगल देता है, या कुछ देर रखकर दही की तरह का दूध उलट देता है, और उल्टी करते ही थकान के कारण सो जाता है।

(४) **हर छटे हफ्ते सिर-दर्द होना**—हर छटे हफ्ते माथे और आंखों के इर्द-गिर्द सिर-दर्द होना इसका विशेष-लक्षण है। इस सिर-दर्द में कपडा लपेटने से, गर्मी से आराम मिलता है, ठंडक से दर्द बढता है, हरकत से भी बढता है।

(५) **रोगी रात को बिस्तर पर आंख बन्द कर लेटने से बेचैन हो जाता है, सो नहीं सकता**—यह रोगी अत्यन्त बेचैन रहता है। बडी मुश्किल से उसे शान्त रखा जा सकता है। अगर उसे जबर्दस्ती शान्त रखने का प्रयत्न किया जाय, तो और अधिक बेचैन हो जाता है। बेचैनी उसका प्रमुख रूप है। सारे शरीर मे बेचैनी भरी पडी होती है, टिककर बैठ नहीं सकता, हरकत करता

रहता है। किसी समय भी यह बेचैनी प्रकट हो सकती है, परन्तु रात को विस्तर पर लेटते समय जब वह आँखें बन्द करता है, तब तो इतना बेचैन हो जाता है कि कपड़ा उतार फेंकता है, गहरा सास लेता है, और इस बेचैनी से सो नही सकता। आँखें मूदते ही बेचैनी आ घेरती है। आँख मूदते ही किसी लक्षण का प्रकट होना—यह बात होम्योपैथी मे ही समझ मे आती है, और होम्योपैथी मे ही ऐसे लक्षण का इलाज है। **कोनायम** मे आखें बन्द करते ही पसीना आने लगता है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि गोनोरिया के एक रोगी ने उनसे कहा कि सोने के लिये आँखें मीचते ही उसे पसीना आने लगता है। इस लक्षण पर **कोनायम** देने से उसका पसीना ही दूर नही हुआ, गोनोरिया भी ठीक हो गया।

(६) **समुद्र के किनारे या नमक से दमा आदि तकलीफो का बढ़ना**—समुद्र के किनारे पर जाने से, नमक खाने से, नमकीन जल के स्नान से, समुद्र की नमकीन हवा मे सास लेने से दमा आदि रोग उठ खडे हो, तो इससे लाभ होता है। अगर समुद्र के किनारे रहने से पित्ती (Urticaria) उछल आये और दूसरा कोई लक्षण न हो, तो **आर्सेनिक** लाभ करता है; **मैग्नेशिया म्यूर** की शिकायत समुद्र मे जाने से होती है, समुद्र से दूर रहने पर नही, **ब्रोमियम** की शिकायत समुद्र मे रहने से नही, समुद्र से दूर जाने पर होती है। नाविक लोग जब तक समुद्र पर रहते हैं दमा तंग नही करता, जब किनारे आ जाते है तब दमा तग करता है। उन्हे **ब्रोमियम** से लाभ होता है। **मेडोराइनम** मे समुद्र-तट से रोगी की दमा आदि शिकायतें दूर हो जाती हैं।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

मैग्नेशिया फॉसफ़ोरिका
(MAGNESIA PHOSPHORICA)
[मैग्नेशिया फॉस का बायोकैमिक उपयोग]

स्नायु-शूल जिसमें गर्मी से तथा दबाने से आराम मिले—यह शुस्लर के १२ लवणो मे से एक है। बायोकैमिस्ट लोग नर्व-सबधी बीमारियो मे **मैग फ़ॉस** और **कैलि फ़ॉस** दिया करते हैं, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **मैग-फॉस** मे इस लवण की कमी के कारण 'नर्व' तन जाता है, उत्तेजित (Irritated) हो जाता है, **कैलि फ़ॉस** मे उसकी कमी के कारण नर्व म्लान (Depressed) हो जाता है। **कैलि फ़ॉस** तो नर्व का भोजन है अत **कैलि फॉस** की शिकायतें नर्व को पूरी खुराक न मिलने के कारण होती हैं, **मैग फ़ॉस** की शिकायतो मे नर्व की उत्तेजना प्रधान कारण होता है। उत्तेजना मिलने पर नर्व मे दर्द पैदा हो जाता है इसलिये जितने काटने वाले, गडते-से तीखे दर्द होते हैं, भले ही वे शरीर मे कहीं

भी हो, सब की दवा **मैग फॉस** है। कभी-कभी ऐसा महसूस होता है कि शरीर में कहीं खेंचन पड रही है, ऐसा दर्द होता है कि शरीर निचुडता-सा जान पडता है, कभी घूमता-फिरता दर्द होता है—ये सब दर्द 'नर्व' की उत्तेजना से होते हैं, और इन सबका इलाज यही दवा है। 'नर्व' का स्वभाव है कि ज़रा-सा छू दो, तो उत्तेजित हो जाती है, लेकिन पकडकर दवा दो तो शान्त हो जाती है, इसलिये **मैग फॉस** मे भी हल्के दवाव से तो छू जाने का-सा काम होता है, दर्द बढता है, परन्तु ज़ोर से दवा देने से दर्द को आराम पड जाता है। 'नर्व' को ठड लगने से भी दर्द बढा करता है, अत **मैग फॉस** मे ठडक से दर्द को आराम नहीं होता, गर्मी से आराम मिलता है। इस लिहाज़ से **फैरम फॉस** के दर्द मे और **मैग फॉस** के दर्द मे भेद यह है कि **फैरम फॉस** का दर्द तो ठडक से आराम मानता है, **मैग-फॉस** का दर्द सेक से आराम मानता है। सिर-दर्द, दात के दर्द, अगो मे दर्द मे सेक से आराम हो तो यही दवा दी जाती है। पेट के दर्द मे रोगी अगर आगे को दबाव के लिये झुके और सेक से आराम हो तो इसी दवा से लाभ होगा। क्योंकि नर्व को ज़ोर-से दवा देने से और सेक से नर्व की उत्तेजना शान्त हो जाती है, इसलिये पेट दर्द के उक्त लक्षणों मे इस औषधि से लाभ होता है। कभी-कभी पेट-दर्द के साथ रोगी को पनीले दस्त आ जाते हैं। पनीले दस्त आने का कारण भी यही है कि आतो मे **मैग फॉस** की कमी के कारण वे उत्तेजित हो जाती हैं, मरोड से आँतों का पानी निकल पडता है, और पनीला दस्त, आव या खून आने लगता है। अगर दर्द के साथ आतो मे उक्त-लक्षण प्रगट हो, तो यह दवा लाभ करती है।

क्योंकि **मैग फॉस** नर्व की उत्तेजना (Irritation) को ठीक करता है, इसलिये यह दवा सिर्फ दर्द को ही नहीं, नर्व की दूसरी बीमारियों को भी ठीक करती है। कई तरह की अकडनें नर्व की उत्तेजना से पैदा होती हैं, अत जवडा अकड जाना, हिचकी, पिंडलियो मे अकडन आदि भी इससे ठीक हो जाते हैं। हूपिंग-कफ मे भी नर्व उत्तेजित हो जाती हैं जिसमे यह दवा फायदा करती है। प्रसूता को जब बच्चा होता है तब मूत्र-स्थान निकट होने के कारण कभी-कभी नर्व इतनी उत्तेजित हो जाती है कि पेशाब रुक जाता है। उस समय नर्व की उत्तेजना को **मैग फॉस** दूर कर देता है। होम्योपैथ ऐसी हालत मे **कॉस्टिकम** देते हैं परन्तु यह औषधि भी वही काम करती है और पेशाव आ जाता है। मासिक-धर्म का दर्द भी नर्व की उत्तेजना से होता है। अगर इस दर्द मे सेकने से आराम हो तो **मैग फॉस** से ठीक हो जायगा।

कभी-कभी **मैग फॉस** से पूरा काम नहीं चलता, तब इसकी क्रिया को पूरा करने के लिये **कैलकेरिया फॉस** देना पडता है। इसलिये कहा जाता है कि **मैग फॉस** का क्रौनिक **कैलकेरिया फॉस** है। असल मे, इसका कारण यह है कि

कैलकेरिया फॉस का प्रभाव शरीर मे नये-नये कोष्ठको को उत्पन्न करना है। अगर शरीर मे कैलकेरिया फॉस की कमी हो जाय, तो नये 'कोष्ठक' (Cells) बनने वन्द हो जाते हैं, शरीर निर्बल हो जाता है। जब कोई औषधि काम करना वन्द कर दे, तो अधिक समावना यही होती है कि शरीर मे नवीन-कोष्ठको का तेजी से निर्माण नही हो रहा। ऐसी अवस्था मे कैलकेरिया फ़ॉस देने से नवीन-कोष्ठक वनने लगते हैं और रोगी के चगा होने मे जो बाधा थी वह दूर हो जाती है। बायोकैमिस्ट चिकित्सक ३X, ६X, १२X त्रिचूर्ण का प्रयोग करते हैं। गर्म पानी के साथ दवा लेने से जल्दी लाभ होता। चार-चार, पाँच-पाँच गोली गर्म पानी के साथ दिन मे तीन-चार बार दी जाती हैं, आराम पडने पर दवा वन्द कर दी जाती है।

[मैग्नेशिया फॉस का होम्योपैथिक उपयोग]

1 **हर प्रकार के स्नायु-शूल मे जिस मे सेक से तथा दवाने से आराम मिले**—बायोकैमिस्ट्री की तरह होम्योपैथी मे भी इस औषधि का प्रयोग स्नायु के शूल मे होता है। शुस्लर तो हर प्रकार के दर्द मे, स्नायु की अकडन मे, स्नायुओ के ताडव (Chorea) मे इसका प्रयोग करते थे, परन्तु होम्योपैथ 'सम सम शमयति' के आधार पर ही इसका प्रयोग करते हैं, वे यह नही मानते कि इस लवण की कमी से जो रोग होते हैं उन्हें इस लवण द्वारा पूरा करके इन रोगों का उपचार किया जाता है। मैग्नेशिया फॉस देने के अन्य लक्षण निम्न हैं

11 **गर्मी से दर्द को आराम**—यह औषधि उस दर्द मे दी जाती है जिसमे दर्द को गर्मी से, सेक से आराम पहुचे। अगर रोगी को ठड लगे, या वह ठडी जगह पर जाये, तो उसे दर्द मे महान् कष्ट होता है। देर तक ठड लगने पर दर्द हो जाता है। चेहरे पर ठड लगे तो चेहरा दर्द करने लगता है, और गर्म सेक से आराम मिलता है। दर्द मे गर्म सेक से आराम आर्सेनिक मे भी पाया जाता है, परन्तु आर्सेनिक मे उस दर्द को आराम पहुचता है जो जलनवाला दर्द (Burning pain) हो। जो दर्द जलनवाले न हो उनमे उत्कृष्ट-औषधि **मैग-फॉस** ही है।

111 **कृच्छ्र-रजोधर्म (Dysmenorrhea) मे अगर सेक से आराम पहुचे**—कष्टपूर्वक रजोधर्म मे जब दर्द मे गर्म सेक से रोगी को आराम पहुचे, तब यह सर्वोत्तम औषधि है। डा० टायलर का कहना है कि उनके अस्पताल मे अनेक रोगिणो को जिन्हें कृच्छ्र-रजोधर्म था मैग फॉस C M की मात्रा देने से आशातीत लाभ हुआ। डा० नैश का कथन है कि कष्टप्रद-रजोधर्म में यह औषधि पल्सेटिला, कॉलोफाइलम, सिमिसिफ्यूगा या अन्य किसी भी औषधि

से अधिक प्रभावशाली साबित हुई है। डा० नैश ने भी इसका ५५M शक्ति में प्रयोग किया और उसे निम्न-शक्ति की अपेक्षा अधिक सफल पाया।

IV **देर तक काम करने से ऐंठन हो जाना**—डा० कैन्ट लिखते हैं कि जब हाथों का बहुत अधिक उपयोग करने से उनमें ऐंठन होने लगे, उनमें अकड़न (Cramps) पड़ने लगे, तब इस औषधि से लाभ होता है। उदाहरणार्थ, लिखते-लिखते अंगुलियां ऐंठ जायें, कारीगर के हाथ काम करते-करते अकड़ने लगें, पियानो बजाने वाले की अंगुलियां मरोड़ खा जायें—किसी भी काम करने वाले के सीमा से अधिक काम करने पर ऐंठन पड़े, तो यह औषधि लाभ करती है।

V **सिर-दर्द, चेहरे का दर्द, आंखों के ऊपर या नीचे दर्द जिसे सेक या दबाने से आराम हो**—अगर सिर-दर्द में सेक से या दबाने से आराम पहुंचे, अगर चेहरे के दर्द में या आंखों के ऊपर तथा नीचे के हिस्से में सेक या दबाने से आराम हो, तब भी इसी दवा से लाभ होगा। वात-रोग (Rheumatism) में सेक से और विश्राम में लाभ होने पर, हरकत से दर्द के बढ़ जाने पर भी यही औषधि उपयुक्त है।

VI **पेट में केन्द्र से उठकर फैलने वाला दर्द जिसे सेक से और दबाने से आराम हो**—कभी-कभी पेट में ऐसा दर्द उठता है जिसमें रोगी दर्द के मारे दोहरा हो जाता है। यह दर्द एक केन्द्र से उठकर पेट में चारों तरफ फैल जाता है। इसमें प्रायः कोलोसिन्थ दिया जाता है परन्तु इन दोनों औषधियों में भेद यह है कि कोलोसिन्थ का दर्द किसी सख्त वस्तु के द्वारा पेट को दबाने से ठीक होता है, उसमें गर्म सेक से दर्द के शान्त होने का लक्षण नहीं है, मैग फॉस में दबाने से दर्द के शान्त होने का लक्षण तो है ही, परन्तु साथ ही गर्म सेक से दर्द के शान्त होने का लक्षण भी है।

(दर्द की मुख्य-मुख्य औषधियां)

एकोनाइट—ठंड लगने, ठंडी हवा से दर्द, रात को बढ़ जाता है, घबराहट।

ऐमोनिया म्यूर—बैठने पर ज्यादा, चलने-फिरने पर कम, लेटने पर गायब। सियाटिका में उपयोगी है। रोगी ऐसे चलता है मानो मांसपेशी छोटी हो गई हो, लंगड़ाता-सा।

ऐक्टिया रेसिमोसा—जरायु या डिम्ब-कोश के रोग के कारण स्त्री के किसी अंग में दर्द।

एपिस—चलता-फिरता दर्द जिसे ठंडी हवा या ठंडे सेक से आराम हो।

आर्सेनिक—जलनवाला, मध्य-रात्रि में बढ़ने वाला दर्द।

कैक्टस—भोजन न खाने पर दर्द, समय छोड़ कर (Periodicity) आने वाला दर्द।

कैपसिकम—गर्म या ठडी, किसी भी तरह के हवा के झोंके से बढने वाला दर्द

सिड्रन—आख के ऊपर के हिस्से मे दर्द; समय छोडकर आने वाला, मैथुन के वाद बढने वाला, रजोधर्म के दिनो मे बढने वाला; वायी करवट लेटने पर बढने वाला।

कैमोमिला—अत्यधिक चिडचिडेपन से दर्द, क्रोध से भडक उठने वाला, दर्द से माथे और चेहरे पर पसीना आने लगे ऐसा दर्द।

चायना—समय छोडकर आने वाला (Periodicity); रक्तहीन व्यक्तियो का सिर-दर्द; चेहरे मे आखो के नीचे दोनो तरफ के हिस्सो मे होने वाला दर्द।

चिननम आर्स—वायें-स्तन प्रदेश मे होने वाला दर्द।

इग्नेशिया—पेट से गोला (Globus hystericus) उठने के साथ होने वाला दर्द, सिर मे ऐसा दर्द मानो कील ठोकी जा रही है।

जेलसीमियम—मेरु-दड के गले के पास से उठकर माथे और आख के गोलको में आ जाने वाला दर्द।

कैलि बाईक्रोम—चलता-फिरता दर्द।

मैग फॉस—चलता-फिरता दर्द जिसे सेक और दवाने से आराम हो।

नेट्रम म्यूर—सूर्योदय से सूर्यास्त तक का सिर-दर्द या कोई-सा ऐसा दर्द।

प्लम्बम—गुदा-प्रदेश मे दर्द।

पल्सेटिला—अनियमित तथा दौरे-जैसा (Erratic and paroxysmal) दर्द जो प्राय वायी तरफ होता है, दर्द के साथ ठडक (Chilliness) महसूस करना।

रोडोडेन्ड्रन—अडकोश का दर्द।

स्पाइजेलिया—सूर्योदय के साथ दर्द शुरु होता है, दोपहर को तीव्रतम हो जाता है, दर्द वायी आख के ऊपर टिक जाता है, शाम को शात हो जाता है, दर्द के साथ पित्त की उल्टी आती है। **सैंग्विनेरिया** से उल्टा।

सैंग्विनेरिया—सिर की गुद्दी से दर्द शुरु होकर ऊपर चढता है और दायीं आख के ऊपर आ टिकता है। **स्पाइजेरिया** से उल्टा।

स्टैफिसैग्रिया—कन्धो के और हाथ के जोडो का दर्द।

थूजा—जो रोगी गोनोरिया रोग से जो पीडित रहे हो उनका दर्द, नम-मौसम में रोग का बढना।

vii **शक्ति तथा प्रकृति**—उच्च-शक्ति २००, १००० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

मैंगेनम (MANGANUM)

(१) **रक्तशून्य, पीले चेहरे की क्षय-रोगिणी-जैसी लड़कियां**—मुख्य तौर से यह औषधि उन लडकियो के लिये लाभप्रद है जो रक्तशून्य, पीले चेहरे की दीखती हैं, जिनका शरीर पनपने के वजाय क्षय-रोग की आशकाओ को सूचित करता है। उनके जीवन का इतिहास पूछा जाय, तो पता चलेगा कि १८-२० वर्ष की आयु तक उन्हें रज स्राव नही हुआ। उनकी छाती सिकुडी होती है, पेट में दर्द रहता है, परीक्षा करने से पेट मे छोटी-छोटी चने-जैसी गिल्टिया प्रतीत होती हैं। शाम को हल्का ज्वर आ जाता है, खून नही वनता, भूख नही लगती। ऐसा लगता है कि रोगिणी क्षय-रोग से जल्दी या देर मे ग्रस्त हो जायगी। ऐसी अवस्था मे यह औषधि लाभप्रद है।

(२) **शरीर का हड्डियो तक दुखना**—इस रोगी का सर्व-प्रधान लक्षण यह है कि उसके शरीर का प्रत्येक भाग छूने से दर्द करता है। प्रत्येक अग वडा नाजुक होता है, दर्द करता है, ठीक ऐसे जैसे आर्निका मे शरीर की मास-पेशिया दर्द किया करती है। इन दोनो मे भेद यह है कि मैंगेनम का मास-पेशियो का ही दर्द नही, वहुत गहरा दर्द होता है, ऐसा लगता है मानो हड्डियो के परिवेष्टन तक दर्द पहुच गया है। घुटने के नीचे की हड्डी के परिवेष्टन मे विशेष तौर से दर्द हुआ करता है। शरीर के सव अगो मे धीमा दर्द (Soreness) होता है। चलते हुए हड्डियो मे दर्द होता है। **आर्निका** से तो एक या दो दिन के लिये ही फायदा होता है, यह औषधि वहुत गहराई मे जाती है और इसका प्रभाव देर तक होता है।

(३) **लेटने से सव तकलीफो मे आराम आ जाता है**—रोगी का मन भय, घवराहट और परेशानी से वेचैन होता है। उसे घवराहट होती है कि न-जाने क्या होगा। व्यापार की या किसी तरह की चिंता या परेशानी हो सकती है, रोगी वेचैन और घवडाया हुआ रहता है, मकान मे इधर-उधर चक्कर लगाता है, और जितना ही चक्कर लगाता है उतनी ही उसकी परेशानी और वेचैनी वढती जाती है। इस औषधि का विचित्र-लक्षण इस वात मे है कि वह इस वेचैनी और परेशानी से निकलता कैसे है। वह हार कर विस्तर पर लेट जाता है, और क्षण भर मे सारी वेचैनी काफूर हो जाती है। यह कैसी विलक्षण वात है। यह इस औषधि का अनहोना व्यापक-लक्षण है। इस लक्षण मे औषधि का स्वरूप चित्रित हो जाता है। अभी उसका सारा जीवन उत्तेजना से खिन्न था, लेटते ही चैन पड जाता है। रोगी सोचने लगता है मुझे पहले यह क्यो नही सूझा। लेटने के वाद अव वह विल्कुल परेशान नही। वह उठता है, और फिर परेशानी उस पर सवार हो जाती है। **रस टॉक्स** मे चलने-फिरने से रोगी

की परेशानी दूर होती है, **आर्सेनिक** इतना परेशान होता है कि कभी इस कुर्सी पर कभी उस पर बैठता है, कभी इस चारपाई पर कभी उस चारपाई पर, आराम से बैठ ही नही सकता क्योकि जब भी आराम से बैठने की सोचता है तभी परेशानी उसे बेचैन कर देती है, परन्तु **मैंगेनम** मे बैठने या लेटने से परेशानी जाती रहती है। जब तक चलता-फिरता है परेशान रहता है, जब आराम से लेट जाता है तब शान्त हो जाता है, कितना विचित्र-लक्षण है परन्तु ऐसे विचित्र लक्षणो को ढूढ निकालने से ही चिकित्सक चमत्कारपूर्ण चिकित्सा कर सकता है।

(४) **खासी लेटने से नहीं आती, चलने-फिरने से आती है**—जैसा अभी कहा गया, इस औषधि का विचित्र-लक्षण यह है कि लेट जाने से रोग काफूर हो जाता है, यह बात बेचैनी और परेशानी तक ही सीमित नही, खासी मे भी इसका विचित्र-लक्षण यह है कि जब तक रोगी चलता-फिरता रहता है तब तक खासी भी बनी रहती है, जब लेट जाता है तब खासी बन्द हो जाती है। प्राय खासी लेटने से बढा करती है, परन्तु इस औषधि मे लेटने से यह घट जाती है। **युफ्रेशिया** मे भी लेटने से खासी घट जाती है, परन्तु उसकी खासी का प्रारम्भ जुकाम से होता है। स्नायु-प्रधान लडकियो को लेटने से खासी हुआ करती है, जो **हायोसाइमस** से ठीक हो जाती है। **हायोसाइमस** मे प्राय 'युव्युला'—तालु मे लटकती जीभ-सी—सूज जाती है और लेटने से 'युव्युला' के तालु मे छूने से खासी आने लगती है।

(खासी की मुख्य-मुख्य औषधिया)

खासी को समझने के लिये यह समझना आवश्यक है कि मुख से फेफडो तक जो श्वास-प्रणाली है उसके भिन्न-भिन्न स्थानो की शोथ से खासी होती है, और प्रत्येक स्थान पर प्रभाव करने वाली भिन्न-भिन्न औषधिया हैं। मुख मे तालु का हिस्सा 'फैरिंग्स' (Pharynx)—'गल-कोष'—कहलाता है, उसके बाद श्वास-प्रणालिका शुरु होती है जो फेफडे की तरफ जाती है। उसका उपरला हिस्सा 'लेरिंग्स' (Larynx)—'स्वर-यन्त्र'—कहलाता है जो गले के रूप मे बाहर दीखता है, इस के बाद श्वास-प्रणालिका का जो हिस्सा आता है वह 'ट्रैकिया' (Trachea)—'श्वास-नली'—कहलाता है। 'श्वास-नली' आगे चल कर दो शाखाओ मे विभक्त हो जाती है जिन्हें 'ब्रौंकाई' (Bronchi)—'वायु-नली'—कहते हैं। इन मे से एक 'वायु-नली' दायें फेफडे मे और दूसरी बायें फेफडे मे चली जाती है। फेफडो मे जाकर ये दोनो वायु-नलिया 'श्वसोपनलियो' (Bronchial tubes) मे विभक्त हो जाती हैं जो फेफडो मे फैल जाती हैं। इस प्रकार गले और श्वास-प्रणालिका का क्रम यो चलता है फैरिंग्स,

लेरिंग्स, ट्रैकिया, ब्रोंकाई, ब्रोंकाइल-ट्यूब्स । जब तालु का शोथ होता है तब फैरिंजाइटिस (तालु-शोथ), जब लेरिंग्स तथा ट्रैकिया का शोथ होता है तब लेरिंजाइटिस (स्वर-यन्त्र-शोथ), जब ब्रोंकाई का शोथ होता है तब ब्रोंकाइटिस (वायु-नली-शोथ) और जब ब्रोंकाइल-ट्यूब्स या फेफड़े का शोथ होता है तब न्यूमोनिया कहलाता है ।

(खुश्क खासी)

एकोनाइट—इस मे श्वास-प्रणालिका (Wind-pipe) मे शोथ होती है जिसमे लेरिंग्स तथा ट्रैकिया दोनो शामिल हैं । यह खुश्क खासी होती है, गला रुंधता-सा प्रतीत होता है । बच्चा खासते हुए गले को पकड़ता है । क्रुप-खासी, जिसमे लेरिंग्स और ट्रैकिया का शोथ होता है, **एकोनाइट** के प्रभाव के अन्तर्गत है । शुरु-शुरु मे सर्दी लगने पर खुश्क खासी, थोडी-थोडी खेंच के साथ—(Short, dry, irritating, spasmodic, coming by fits and starts).

सलफर—ऊपर कहे गये **एकोनाइट** के लक्षणो मे जब खासी पुरानी हो जाय, या जब ज्यादा कफ आने लगे तब भी उपयोगी है ।

बेलाडोना—गले मे खुश्क खासी, गला दुखने लगे, खासते-खासते चेहरा लाल और गर्म हो जाय, शाम को बिस्तर मे लेटने से बढ जाय ।

फॉसफोरस—दिन रात लगातार खुश्क खासी, थूक बहुत कम, गला और छाती पक जाने का-सा दर्द, गहरा सास लेने से खासी उठ खडी हो ।

इग्नेशिया—खुश्क खासी मे रोगी जितना खासे उतना ही खासी छिडे ।

ब्रायोनिया—खुश्क खासी, जरा भी बोलने से खासी छिड जाय, ठडे से गर्म या गर्म से ठडे कमरे मे आने से खासी छिड जाय, खासने से छाती तथा सिर मे दर्द हो, रात को बिस्तर मे लेटा न जा सके, रोगी उठ बैठे ।

हायोसाइमस—खुश्क खासी, गले मे लगातार खुरखुरी (Irritation) बनी रहने से खासी आती रहे, बहुत थोडा खून निकले, लेटने पर बढ जाय, बैठने से आराम पडे । 'गल-जिन्हा' (Uvula) के तालु मे स्पर्श से खासी उठे । 'श्वास-यत्र' (Larynx) मे एक 'सूके-से केन्द्र' (Dry spot) से खासी उठती है ।

कैलकेरिया कार्ब—खो-खो वाली खुश्क खासी (Hacking cough) मानो गले मे धूल-सी (Dust) अटकी हो, खाने के बाद खासी आने लगे ।

आर्निका—थोडी देर की खुसखुसी खुश्क खासी ।

कैमोमिला—बच्चो की दात निकलते समय की सूकी खासी । गले मे खुजलाहट (Titillation) की खासी जिसमे **कैमोमिला** तथा **मर्क** उपयोगी हैं ।

एलूमिना—'स्वर-यत्र' (Larynx) की खुजलाहट से खुश्क, खो-खो की खासी ।

ऐमोनिया म्यूर—इसकी खासी 'स्वर-यंत्र' से उठती है। 'स्वर-यत्र' मे लगातार खुरखुराहट होती है, सफेद कफ निकलता है। सारे गले मे (लैरिंग्स) तथा ट्रैकिया मे खासी का प्रकोप **एकोनाइट** मे पाया जाता है। सिर्फ 'स्वर-यत्र' (लेरिंग्स) मे खासी का प्रकोप **एमोनिया म्यूर** मे पाया जाता है। दोनो औषधियो मे खासी मुख्यत खुश्क ही होती है। **जिकम** मे भी **एमोनिया म्यूर** जैसी खासी है।

(तर खांसी)

ऐन्टिम टार्ट—दमे मे या गले मे गाढे कफ के भरे होने से घडघड-शब्द।

ऐमोनिया कार्ब—दमे की प्रकृति के वृद्ध-व्यक्तियो की खासी मे वहुत कफ आना।

इपिकाक—पुरानी खासी जिसमे छाती मे कफ भरा हो, कठिनाई से निकले।

हिपर सल्फ—पुरानी खासी, दमे की प्रकृति, खासते-खासते गला रुध जाना, कफ निकलने मे कठिनाई होना।

कैलि बाईक्रोम—खासने मे कठिनाई से डोरे-जैसा तारदार कफ का निकलना।

स्टैनम—छाती मे कफ भर जाय, जो आसानी से निकले।

नैट्रम म्यूर—साफ पानी की तरह, या झागदार कफ, 'स्वर-यत्र' का एक सूका-सा केन्द्र जहा से खासी छिड़ती है।

कैलि सल्फ तथा पल्स—पीले रग का ढीला कफ निकलता है।

ड्रौसरा—खासते-खासते कय हो जाना, कुत्ता-खासी।

मर्क तथा नक्स—गले को बार-बार साफ करना पडे (Scraping in the throat)

रस टॉक्स—गले से खासी उठती है। भीग जाने से होती है। तर होती है।

(५) **रोगी के सब कष्ट कान मे केन्द्रित हो जाते हैं**—शरीर के ऊपरी हिस्से के सब दर्दों का केन्द्र-स्थान कान हो जाता है। गले मे कष्ट हो तो वह कान तक टीस मारता है, दांतो का दर्द हो तो वह भी कान की तरफ जाता है, आँखो के दर्द का केन्द्र भी कान ही होता है। कान के शोथ से होने वाले बहरेपन मे, युस्टेकियन ट्यूब के शोथ तथा उसमे टीस पडने मे, निगलते समय कान मे शब्द होने मे इस औषधि से लाभ होता है।

(६) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

मेडोराइनम या गोनोरिनम
(MEDORRINUM OR GONORRHINUM)

(१) **गोनोरिया के दब जाने से उत्पन्न होने वाले रोग**—सवा सौ साल से अधिक हुआ जब अमरीका के डा० स्वैन ने इस औषधि की रोगों का उपचार करने में उपयोगिता पर होम्योपैथों का ध्यान आकर्षित किया था। अमरीका के अनेक डाक्टरों ने इस विष की अपने ऊपर 'परीक्षा-सिद्धि' (Proving) की। अधिकतर परीक्षण ५C शक्ति में किये गये थे। यह औषधि गोनोरिया का विष है इसलिये इसे **गोनोरिनम** भी कहते हैं। गोनोरिया की तरह सिफिलिस के विष की भी 'परीक्षा-सिद्धि' की गई है। इन विषों को नोसोड्स (Nosodes) कहा जाता है जिनका एक ही स्थान में वर्णन हमने पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में किया है। डा० बर्नेट, जिन्हें रोगियों को लक्षणानुसार नोसोड्स देने का विशेष अनुभव था, लिखते हैं कि घृणिततम पदार्थ को अगर होम्योपैथी के नियमों के अनुसार शक्तिकृत किया जाय, तो यही नहीं कि वह दोष-हीन हो जाता है अपितु सोने के समान मूल्यवान् हो जाता है। ऐसी ही मूल्यवान् औषधियां गोनोरिया के विष से बनी **मेडोराइनम** तथा सिफिलिस के विष से बनी **सिफिलीनम** हैं।

जिसे गोनोरिया हो वह एलोपैथिक इलाज करा कर समझता है कि रोग ठीक हो गया। असल में, रोग ठीक नहीं होता, दब जाता है, और गोनोरिया दब कर 'वात-रोग' (Rheumatism) को उत्पन्न कर देता है। वात-रोग से पीडित अनेक रोगी अपने जीवन-काल में गोनोरिया के शिकार रह चुके होते हैं। जब ये लोग विवाह करते हैं, तब उनकी स्त्री को जो विवाह से पहले बिल्कुल ठीक थी अनेक रोग हो जाते हैं। यह नहीं कि ऐसे व्यक्ति की पत्नी को गोनोरिया ही हो जाय, वह तो दब चुका होता है, परन्तु जो विष रुधिर में प्रसुप्त हो गया है वह पुरुष में वात-व्याधि तथा पुरुष के सगम से स्त्री में डिम्ब-ग्रंथियों में दर्द, मासिक-धर्म की गड़बड़ी, रति-क्रिया के प्रति उदासीनता, चेहरे का पीलापन, स्नायु-रोग आदि उत्पन्न कर देता है। ऐसे पुरुष-स्त्री की सन्तान में भी अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं। बच्चा सूकने लगता है, दमे का शिकार हो जाता है, नाक बहती रहती है, आंख के पपोटे सूजे रहते हैं, सिर में दाद, चेहरा बौनो-सरीखा होता है। इन सब रोगों में जिनका आधार पुरुष का गोनोरिया से पीडित होना है, या जिन रोगों में वंशानुगत गोनोरिया का विष काम कर रहा होता है, यह औषधि जादू का काम करती है। परन्तु यह समझना भूल है कि क्योंकि रोग की जड़ में गोनोरिया का विष है, और क्योंकि रोगी के इस विष को **मेडोराइनम** सफलता से दूर कर रहा है, इसलिये रोगी को गोनोरिया हुआ ही है। तो फिर क्या स्थिति है ?

(२) गोनोरिया न होने पर भी इसका विष रोगी की प्रकृति मे, उसके रुधिर मे हो सकता है—हनीमैन का कहना है कि मानव-समाज सदियो
से चला आ रहा है। आदि-पूर्वज को क्या रोग था—इसे कौन जानता है।
माता-पिता के रज-वीर्य से वशपरपरा द्वारा न-जाने कौन-कौन-सी प्रकृति हमे
विरासत मे प्राप्त होती है। तीन आधारभूत विष जो माता-पिता के रुधिर मे
वश-परपरा से हमे प्राप्त हो सकते हैं, वे हैं—सोरा (Psora), साइकोसिस
(Sychosis) तथा सिफिलिस (Syphilis)। 'सोरा' वडा विस्तृत शब्द
है, और यहा इसकी व्याख्या करने का स्थान भी नही है। 'साइकोसिस' गोनो-
रिया के विष से उत्पन्न होने वाली प्रकृति (Dyscaria) को कहते हैं;
'सिफिलिस' का अर्थ भी उपदश के विष से उत्पन्न होने वाली प्रकृति है। हनीमैन
का कथन था कि सुनिर्वाचित औषधि देने पर भी अगर रोग ठीक नही होता,
तो इसके तीन कारण हो सकते हैं। या तो रोगी 'सोरा'-दोष से पीडित है,
या 'साइकोसस'-दोष से पीडित है, या 'सिफिलिस'-दोष से पीडित है। इन
दोषो को दूर करने के लिये एन्टी-सोरिक (Anti-psoric), एन्टी-साइकोटिक
(Anti-sychotic) तथा एन्टी-सफिलिटिक (Anti-syphilitic) औषधिया
देनी पडती हैं। ये या तो उस विष को दूर कर रोगी को ठीक कर देती हैं,
या इनके द्वारा स्वस्थ होने मे वाधा डालने वाली रुकावट दूर हो जाती है,
और सुनिर्वाचित-औषधि अपना काम ठीक-से करने लगती है। हनीमैन ने
सोरा-दोष को दूर करने वाली औषधियो मे **थूजा** तथा **नाइट्रिक ऐसिड** को
एव सिफ़िलिस-दोष को दूर करने वाली औषधियो मे **मर्क्यूरियस सौल** को
मुख्यता दी थी। उनके वाद, डा० स्वैन के परीक्षणो से गोनोरिया विष के
दोषो तथा गोनोरिया-रोग के उपद्रवो को दूर करने के लिये **मेडोराइनम** को भी
विशेष उपयोगी पाया गया है।

(३) समुद्र-तट पर दमा, वात-रोग, ड्युडिनम के अल्सर, सिर की खुजली आदि में लाभ—इस औषधि का एक प्रमुख-लक्षण यह है कि रोगी
को समुद्र-तट की हवा से लाभ होता है। समुद्र-तट पर रोग मे लाभ विशेष तौर
पर दमे के रोग मे पाया गया है। रोगी जब समुद्र-तट पर रहने लगता है तब
उसका दमा ठीक हो जाता है। इसके विपरीत **ब्रोमियम** मे नाविक लोग जब
तक समुद्र के बीच मे नौका या जहाज पर रहते हैं, तब तक तो उन्हें दमा नही
सताता, परन्तु समुद्र-तट पर आने से दमा सताने लगता है। **ब्रोमियम** की तरह
मैग्नेशिया म्यूर मे भी समुद्र-तट पर रहने से दमे की शिकायत होती है, समुद्र-
तट से दूर रहने पर नही।

'वात-रोग' (Rheumatism) प्राय गोनोरिया के दव जाने से हुआ
करता है। अनेक वात-रोगी जो इस कष्ट से पीडित रहते हैं गोनोरिया के

शिकार हो चुके होते हैं। बिना गोनोरिया के भी शरीर मे साइकोसिस-दोष के वंशानुगत होने से वात-रोग होता है। अगर वात-रोग मे समुद्र-तट की हवा से लाभ हो, तो **मेडोराइनम** अमोघ-औषधि है। डा० टायलर लिखती हैं कि एक ६० वर्ष का वात-रोगी जो मृत्यु से भय के लक्षण की शिकायत करता था, इकला नही रह सकता था, जब समुद्र-तट पर रहने गया तब उसका वात-रोग दूर हो गया। उसे **मेडोराइनम** ३० की एक मात्रा देने से उसका मृत्यु का भय तथा वात-रोग शीघ्र जाता रहा।

एक अन्य ३८ वर्ष की स्त्री का उल्लेख करते हुए वे लिखती हैं कि उसे ड्यूडीनम का अलसर था, खाने के दो घंटे बाद पेट मे दर्द उठता था, पेट फूलता था, वह ८ साल से रोग पीडित थी। उसकी पेट की शिकायतें समुद्र-तट पर रहने से कम हो जाती थी। उसे **मेडोरोइनम** C M दिया गया जिससे सब लक्षण जाते रहे।

एक पतली-दुबली स्त्री जिसके सिर मे सदा खुजली मचती थी, बाल झडते थे, समुद्र-तट पर उसे लाभ होता था। उसे **मेडोराइनम** १० M. दिया गया और उसकी सब शिकायतें दूर हो गई, बाल झडने भी बन्द हो गये।

(४) **गोनोरिया-दोष की माता-पिता की सन्तान के रोग**—जो बच्चे गोनोरिया-दोष के माता-पिता से उत्पन्न होते हैं, उन्हें स्वयं तो गोनोरिया नही होता, परन्तु 'साइकोसिस' के कारण उन्हें अनेक रोग हो जाते हैं, वे सूकने लगते हैं, दमा हो जाता है, नाक बहा करती है, आखें सूजी रहती हैं, सिर दाद से भरा रहता है, बढ नही पाते। माता-पिता से चिकित्सक को पूछ लेना चाहिये कि उनके घराने मे गोनोरिया तो नही रहा। रहने पर इस औषधि से ये सब रोग जड-मूल से उखड जाते हैं।

(५) **गोनोरिया-दोष से दूषित पति से पत्नी के रोग**—गोनोरिया-दोष से या साइकोसिस से पति द्वारा पत्नी को अनेक रोग हो जाते हैं। विवाह से पहले वह स्वस्थ थी, विवाह के बाद उसे डिम्ब-ग्रन्थियो मे दर्द होने लगा, मासिक मे गडबडी आ गई, जरायु-संबंधी अनेक शिकायतें होने लगी। ऐसी हालत मे भी चिकित्सक को पति को एकान्त मे बुलाकर पूछ लेना चाहिये कि उसे गोनोरिया तो कभी नही हुआ। साइकोसिस के दोष से ये शिकायतें हो सकती हैं। इन सबको **मेडोराइनम** दूर कर देता है।

(६) **सोराइनम, मेडोराइनम (समुद्र तट पर ठीक), सिफिलीनम (पहाड़ पर ठीक) की तुलना**—सोरा-दोष मे **सल्फर** और **सोरिनम**, साइकोसिस-दोष मे **मेडोराइनम, थूजा,** और **नाइट्रिक ऐसिड** तथा **सिफिलिस**-दोष मे **सिफिलीनम, मर्क सौल** लाभ करते हैं। **मेडोराइनम** की तकलीफें दिन को, और **सिफिली-**

नम की तकलीफें रात को परेशान करती हैं। **मेडोराइनम** का रोगी समुद्र-तट पर, और **सिफिलीनम** का रोगी पहाड पर ठीक रहता है।

इस औषधि के अन्य लक्षण—

i. बच्चा तकिये पर मुह नीचा करके, या औंधे मुह घुटनो के बल या पेट पर सोता है।

ii. रोगी के पैरो के तलुवे नाजुक होते हैं, दर्द करते हैं, कई रोगी तो इस दर्द के कारण घुटनो के बल चलते हैं।

iii गोनोरिया के कारण वात-रोग (Rheumatisim) मे यह अत्युत्तम दवा है।

iv मेरु-दड के ऊपरी भाग मे बहुत गर्मी महसूस होती है।

v. **सल्फर** की तरह पैर जलते हैं और **जिकम** की तरह पैर टिकते नही, हिलते रहते हैं।

vi किसी भी रोग के लक्षण दिन को प्रकट होते हैं, रात को गायब हो जाते हैं—यह विचित्र-लक्षण है।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—डा० कैंट लिखते हैं कि इस औषधि का निम्न-शक्ति मे कभी प्रयोग नही करना चाहिये। गोनोरिया के रोगी को देर-देर बाद १० M शक्ति की मात्रा देना उचित है। रोगी नमी मे ठीक नही रहता परन्तु समुद्री-हवा मे ठीक रहता है।

मैफाइटिस (MEPHITIS)

डॉ० फैरिंगटन लिखते है कि इस औषधि का 'नर्वस सिस्टम' पर प्रबल प्रभाव है। यह औषधि निम्न-शक्ति (१ से ३ शक्ति) में ली जाती है, स्वल्प-कालिक है, इसलिये दोहराई जाती है। नर्वस सिस्टम की 'शक्तिहीनता' (Exhaustion) के लिये अनुपम औषधि है। डा० फैरिंगटन लिखते हैं 'It tones up the nervous system and relieves exhaustion'

इसका-मुख्य क्षेत्र 'कुत्ता खासी' (Whooping Cough) है। डॉ० फैरिंगटन का अनुभव यह है कि इस औषधि के देने से ऐसा लगता है कि खासी बढ गई, परन्तु असल में यह खासी के समय को कम कर देती है। डॉ बोरिक लिखते हैं कि इस औषधि की कुत्ता-खासी इस जोर की होती है मानो प्राण निकल जायेंगे। इस औषधि का प्रधान-क्षेत्र श्वास-नली है। खासी के दौर दिन को उतने नही जितने रात को उठते हैं। दमे में भी इसकी तरफ ध्यान दिया जा सकता है। इसकी तुलना **ड्रोसरा** तथा **स्टिक्टा** से की जा सकती है।

रोगी बर्फ के समान ठडे पानी से स्नान करना चाहता है।

मर्क्यूरियस—पारे का योग, (MERCURIUS)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सिफिलिस या उपदश रोग की मुख्य-औषधि

(२) मुख मे केन्द्रित होने वाले रोग—फूले हुए खून रिसते मसूडे तथा दात का दर्द; मुंह से लार बहना, मुख के तर होने पर भी बेहद प्यास होना, फूली, पिलपिली जीभ, मुख से बेहद बदबू परन्तु मल-मूत्र-रज-प्रदर मे बदबू नहीं आती, बच्चों के मुंहा

(३) पेचिश (डिसेन्ट्री) मे मल और आव आने के बाद भी मरोड़ बने रहना (नक्स से तुलना)

(४) शरीर मे थरथराने की ठंड चढ़ना (Creeping chilliness)—जुकाम, ब्रौंकाटिस, न्यूमोनिया, बुखार मे थरथराने के साथ गर्मी का पर्याय-क्रम से आना-जाना

(५) ज़ख्म बनने तथा पस पड़ने की प्रवृत्ति, फोडे को पकाना या सुकाना, ठंडा फोड़ा

(६) गिल्टियों का सूजना (मम्प्स)

(७) बिस्तर मे, या रात को कष्ट का बढ़ना

(८) बेहद पसीना आना, विशेषत रात को, पसीने से कष्ट न घटना

(९) दाहिनी तरफ़ लेटने से रोग बढ़ना

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*न अधिक गर्मी हो न अधिक ठंड हो (मध्य तापमान मे रोगी अच्छा अनुभव करता है)

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*रात को रोग का बढ़ना

*पसीने से रोगी की परेशानी

*दाहिनी तरफ लेटने से वृद्धि

*पाखाने से पहले और बाद मरोड़ से रोगी को परेशानी

*बिस्तर मे रोगी को परेशानी

*अधिक गर्मी, अधिक ठंड से रोगी का परेशान हो जाना

(१) **सिफिलिस या उपदश रोग की मुख्य-औषधि**—हम अभी **मेडोराइनम** पर लिखते हुए स्पष्ट कर आये हैं कि हनीमैन का कथन था कि मानव-समाज के रोगो के आधार मे तीन विष हैं जो भिन्न-भिन्न रोग उत्पन्न होने का कारण हैं। वे हैं सोरा, साइकोसिस तथा सिफिलिस। सल्फर मुख्य तौर पर सोरा-दोप-नाशक है, **थूजा, नाइट्रिक ऐसिड** तथा **मेडोराइनम** मुख्य तौर पर साइकोसिस-दोष-नाशक हैं, **मर्क** मुख्य तौर पर सिफिलिस-दोष-नाशक है।

मोटे तौर पर 'सोरा' का स्वरूप त्वचा की खुजली तथा त्वचा के रोग हैं; 'साइकोसिस' का रूप गोनोरिया या सुज़ाक के विष का शरीर मे सचार है, 'सिफिलिस' का रूप उपदश या आतशक से पीडित होना है। परन्तु हनीमैन का कहना था कि त्वचा के स्थूल-रोग का होना या गोनोरिया या सिफिलिस का स्पष्ट रूप से होना ही सोरा, साइकोसिस या सिफिलिस नही है। इनका होना तो स्पष्ट रोग है ही, परन्तु इनके स्थूल रूप मे न होने पर भी व्यक्ति इन रोगो से अव्यक्त-रूप मे पीडित हो सकता है। अव्यक्त-रूप मे वह कब पीडित होता है? जब या तो इन रोगो को तेज़ दवाओ से दवा दिया जाय, या इनका विष वशानुगत रूप मे व्यक्ति के शरीर मे माता-पिता से चला आये। इस दृष्टि से सोरा-साइकोसिस-सिफिलिस को शरीर की अवस्था या धातु कहा जा सकता है। ये विष दब कर जीवनी-शक्ति पर ऐसे हावी हो जाते हैं कि वह इनसे अपना पीछा तब तक नही छुडा सकती जब तक एण्टी-सोरिक, एण्टी-साइकोटिक तथा एण्टी-सिफ़िलिटिक औषधियो का प्रयोग करके शरीर की इस धातुगत-अवस्था (Constitutional state) को न बदल दिया जाये। सिफिलिस की धातुगत अवस्था को लक्षण मिलने पर **मर्क सौल** से बदला जा सकता है। अन्य औषधियो की अपेक्षा इसमे सिफिलिस के-से लक्षण सब से अधिक हैं। सिफिलिस से आक्रान्त व्यक्ति को इस औषधि से लाभ होता है। सिफिलिस का दोष माता-पिता से वशानुगत रूप मे घराने मे चला आता हो, तब भी इस से लाभ होता है। हम अभी आगे चलकर देखेंगे कि सिफिलिस के रोगियों में जो लक्षण पाये जाते हैं, वे लक्षण **मर्क्यूरियम** मे पाये जाते हैं, और उन लक्षणो के किसी भी रोग मे मिलने पर यह औषधि लाभ करती है। सिफिलिस के अनेक रोगी इससे ठीक हुए है।

यहा यह स्पष्ट कर देना उचित है कि **'मर्क्यूरियस'**-शब्द का प्रयोग होम्योपैथिक पुस्तको मे **मर्क्यूरियस-सौल्यूबिलिस** के लिये ही किया जाता है। **मर्क सौल** और **मर्क विवस** दो औषधिया हैं, परन्तु दोनो के गुण इतने समान हैं कि इन दोनो मे से किसी का प्रयोग हो सकता है यद्यपि कइयो का कहना है कि **मर्क सौल** स्त्रियो के लिये और **मर्क विवस** पुरुषो के लिये उपयुक्त है। अधिकतर **मर्क सौल** का ही प्रयोग होता है।

(२) **मुख मे केन्द्रित होने वाले रोग—फूले हुए खून-रिसते मसूडे तथा दात का दर्द, मुह से लार बहना, मुख के तर होने पर भी प्यास होना, फूली पिल-पिली जीभ, मुख से बेहद बदबू परन्तु मल-मूत्र-रज-प्रदर मे बदबू नहीं आती, बच्चो के मुहा**—डा० नैश का कहना है कि जैसे **ऐन्टिम क्रूड** के मुख्य लक्षणों का केन्द्र मुख है—जीभ पर दूध का-सा गहरा लेप आदि—वैसे **मर्क** के प्रभाव का भी मुख्य केन्द्र मुख ही है। सिफिलिस के रोगी के मुख मे जो लक्षण पाये जाते हैं

वे सब इस औषधि के मुख के लक्षणो मे मिलते हैं। मुख के जितने लक्षण इस औषधि मे है उतने लक्षण मुख के सबध मे अन्य किसी औषधि मे नही पाये जाते। उदाहरणार्थ—

1 **फूले हुए खून-रिसते मसूडे तथा दांत का दर्द**—इस औषधि के रोगी के मसूडे फूल जाते हैं, उनमे से खून रिसा करता है, पस पड़ जाती है, और इस पस के कारण मुख से बेहद बदबू आती है। मसूडे दातो को छोड देते हैं, ऊपर एक लाल-नीली रेखा देखने मे आती है। दात-दर्द की यह अमोघ दवा है। दात का दर्द तीखा होता है और चेहरे तथा कानो तक पहुचता है। दात का दर्द बिस्तर की गर्मी से और ठड दोनो से बढ जाता है क्योकि **मर्क सौल** गर्मी और सर्दी दोनो को बर्दाश्त नही कर सकता। इस औषधि मे दात की जड तो ठीक रहती है, परन्तु सिरे टूटने, गलने-सडने लगते हैं क्योकि वे बाहर रहते हैं और मुह की सडाद के सपर्क मे आते रहते हैं। **मेजेरियम** मे इससे उल्टा है। उसमे जडें सड जाती हैं, बाहर का हिस्सा ठीक रहता है। दात और मसूडे की तकलीफ मे **मर्क सौल** से लाभ होता है।

11 **मुख से लार बहना, मुख के तर होने पर भी बेहद प्यास होना**—रोगी के मुख से बदबूदार लार बहती है, सैलाइवा बहता है, मुख खुश्क न होकर लार की वजह से तर रहता है, परन्तु अद्‌भुत-लक्षण यह है कि मुख के तर होते हुए भी रोगी को बेहद प्यास लगा करती है, वह खूब पानी पीता है। सैलाइवा की वजह से थूका करता है।

111 **फूली, पिलपिली जीभ**—रोगी की जीभ फूल जाती है, मुह जीभ से भरा महसूस होता है, जीभ के फूल जाने से वह मुह को भर लेती है, उस पर दातो के निशान पड जाते हैं, जीभ तर रहती है, उसमे से लार बहती है। **पल्स** मे जीभ सूकी रहने पर भी प्यास नही लगती। गुएरेन्सी का कथन है कि अगर जीभ खुश्क हो तो **मर्क** का क्षेत्र नही है।

1V **मुख से बेहद बदबू परन्तु मल-मूत्र-रज-प्रदर से बदबू नहीं आती**—डा० टायलर लिखती हैं कि **मर्क सौल** के रोगी से बेहद बदबू आती है, कमरा बदबू से भर जाता है, परन्तु अद्‌भुत-लक्षण यह है कि यद्यपि मुख से तो इतनी बू आती है, तो भी रोगी के मल से, मूत्र से, उसके रज स्राव से तथा प्रदर-स्राव से बदबू नही आती। हा, **मर्क कौर** के मल से बदबू आती है। रोगी से दूर से बदबू आने लगती है। किसी अन्य औषधि मे इतनी तीव्र बदबू का लक्षण नही है। डा० नैश लिखते हैं कि मुख की इस बदबू के लक्षण पर उन्होंने अनेक रोगियो के टासिल इस लक्षण पर ठीक कर दिये कि उनके मुख से बदबू आती थी, टासिल सूज गये थे और उनमे पस पडने ही वाला था।

V **बच्चों के मुहाँ** (Apthae)—दूध पीते बच्चो का मुह आ जाता है,

गालो के अन्दर सफेद-सफेद घाव हो जाते हैं। मुहाँ मे इसके अलावा **बोरैक्स, ब्रायोनिया** तथा **एरम** लाभ देते हैं। **मर्क सौल** मे मुहा के साथ लार वहती है, **बोरैक्स** मे नहीं। **ब्रायोनिया** मे छाले मुह की खुश्की से होते हैं, बच्चा जव कुछ घूट दूध पीकर मुह तर कर लेता है तब गटागट पीता चला जाता है। **एरम** मे मुह के घाव से मुह सूज जाता है, शिशु के नाक के वाहर पपडियाँ जम जाती है जिन्हें वह खून निकलने पर भी नोचता रहता है।

(३) **पेचिश (डिसेन्ट्री) मे मल और आव आने के बाद भी मरोड बने रहना (नक्स से तुलना)**—इस औषधि का मुह से लेकर ऐलीमेंटरी-कैनाल के सपूर्ण हिस्से पर प्रभाव पडता है। इसी प्रभाव के कारण पेचिश मे इसका विशेष महत्व है। पेचिश मे इसका मुख्य-लक्षण मल के साथ आव तथा खून का आना है। मल आने के वाद भी मरोड वना रहता है। रोगी मल निकलने के वाद भी ज़ोर लगाता रहता है, यद्यपि और मल नही आता तो भी ऐसा मालूम होता है कि वस नही होगा—'कभी वस न होने' के लक्षण को होम्योपैथिक पुस्तको मे 'Never-get-gone-feeling' का नाम दिया गया है। **मर्क कौर** मे भी यह लक्षण है, परन्तु दानो मे भेद यह है कि अगर मल के साथ आव का भाग अधिक हो, खून का भाग कम हो, तव **मर्क सौल** अधिक लाभ करता है, अगर मल के साथ खून का भाग अधिक हो, आव का भाग कम हो, तब **मर्क कौर** अधिक लाभ करता है। पेचिश मे **नक्स वोमिका** और **रस टॉक्स** भी दिये जाते हैं, परन्तु उनमे **मर्क सौल** से उल्टा लक्षण है। **मर्क सौल** मे तो मल आने के वाद भी मरोड वना रहता है, **नक्स** और **रस टॉक्स** मे मल आने के वाद रोगी को शान्ति पड जाती है, मरोड नही रहता, फिर भले ही दुवारा जाना पडे। **नक्स** मे वार-वार तो जाना पडता है, टट्टी पूरी नही आ जाती, परन्तु **नक्स** तथा **रस टॉक्स** दोनो मे एक वार जाने के वाद उस समय मरोड नही रहता। **मर्क** और **सल्फर** मे रोगी कमोड पर वैठा रहता है, जोर लगाता रहता है। **मर्क** मे—Never-get-gone-feeling—है, **नक्स** मे—Sensation as if not finished, frequent desire for stool—रहती है। **मर्क** कमोड से उठता ही नही, **नक्स** वार-वार कमोड की शरण जाता है।

(४) **शरीर में थरथराने की ठड चढ़ना** (Creeping chilliness) **—जुकाम, ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया, बुखार मे थरथराने के साथ गर्मी का पर्याय-क्रम से आना-जाना**—डा० नैश लिखते हैं कि रोगी को एक विशेष प्रकार की ठड लगकर जुकाम,काइ ब्रोंटिस, न्यूमोनिया या बुखार का आक्रमण होता है। इस ठड मे शरीर का कपन (Shaking) होने के स्थान मे शरीर मे थरथराहट चढती है जिसे उन्होंने 'Creeping chilliness' का नाम दिया है। जव रोगी को इस प्रकार की थरथराहट महसूस हो, तव समझ लेना चाहिये कि शरीर

मे ठड वैठ गई है, और अगर इसी समय **मर्क सौल** से उसे रोक न दिया गया, तो जुकाम हो सकता है, गला दु ख सकता हैं, ब्रौंकाइटिस हो सकता है, और इसका परिणाम न्यूमोनिया तक हो सकता है। अगर इस थरथराहट के शुरु होते ही **मर्क सौल** की एक मात्रा दे दी जाय, तो रोग की शुरुआत ही रुक सकती है। यह थरथराहट प्राय सायकाल प्रारभ होती है और रात मे वढ जाती है। अगर इस थरथराहट के वाद रोगी को वुखार चढ जाय, तो सर्दी और गर्मी का पर्याय-क्रम से अनुभव होता है। पहले सर्दी लगेगी, फिर गर्मी की झलक आयेगी, फिर सर्दी और फिर गर्मी। शरीर के एक-एक अग मे प्राय ऐसा अनुभव होता है। सर्दी लगने पर शरीर का कापना **जेलसीमियम** और **नक्स** दोनो मे भी पाया जाता है, परन्तु **जेल्स** मे सर्दी के जवर्दस्त आक्रमण होते हैं और अग शिथिल तथा भारी हो जाते हैं, **नक्स** मे हर हरकत से रोगी को ठड लगती है, वह आग के पास वैठे रहना चाहता है, जरा हटते ही उसे ठड सताती है। सर्दी और गर्मी की झलक का पर्याय-क्रम से आना-जाना **आर्सेनिक** मे भी पाया जाता है, परन्तु **आर्सेनिक** मे थोडी-थोडी और वार-वार, **मर्क** मे ज्यादा और कम वार प्यास लगती रहती है।

(५) **जख्म वनने तथा पस पड़ने की प्रवृत्ति, फोडे को पकाना या सुकाना, ठडा फोडा**—सिफिलिस मे जैसे अल्सर वनने की प्रवृत्ति पायी जाती है, वैसे इस औषधि मे भी अल्सर वनने की प्रवृत्ति है। हर जगह ज़ख्म पाये जाते हैं—नाक, मुंह, गले तथा भिन्न-भिन्न अगो मे। हम अभी आगे चलकर देखेंगे कि **मर्क** की शिकायतें रात को वढ जाती हैं, इसके दर्द रात को रोगी को परेशान करते हैं। सिफिलिस के अस्थि-परिवेष्टन-शोथ (Periosteal inflammations) भी रात को वढ जाते हैं। इसीलिये सिफिलिस के ज़ख्मो को जो रात को दर्द करें **मर्क** ठीक कर देता है। ज़ख्म वनने की प्रवृत्ति के साथ ज़ख्म मे पस पडने की प्रवृत्ति भी इस औषधि मे पायी जाती है। पस पडने से पहले ज़ख्म मे सूजन आती है। सूजन का **मर्क** के साथ विशेष सवध है। फोडा वनने मे पहले सूजन होती है, फोडा लाल-लाल होता है, वुखार भी आ जाता है। यह फोडे की प्रथम अवस्था है। इसमे **वेलाडोना** काम आता है जो मुख्य तौर पर सूजन की अवस्था की दवा है। सूजन के वाद फोडा पकने लगता है, या वह सूक जाता है, या उसमे पस पड जाती है। फोडे मे जितनी पस पडेगी उतना ही **मर्क** का क्षेत्र अधिक समझना चाहिये। पस पडने पर भी थरथराहट हो सकती है। यह थरथराहट (Chilliness) मर्क का चरित्रगत लक्षण है।

पस पड जाने पर मर्क का प्रयोग होता है—जव फोडे मे सूजन वढना समाप्त होकर पूरी सूजन आ जाने के वाद उसमे पस पडनी शुरु हो जाती है,

तब मर्क का प्रयोग करना चाहिये। **मर्क** पस वनने को नही रोकता, रोकने के वजाय पस वनने मे सहायता देता है, इसलिये इसका प्रयोग तव करना चाहिये जब पस वनना शुरु हो जाय। **मर्क** से पहले और वेल के वाद जव पस वनना अभी शुरु ही हुआ हो, तव **हिपर सल्फ** का क्षेत्र है। इस समय उच्च-शक्ति का **हिपर** या तो पस को सुका देगा या फोडे को पका देगा। अगर जीवनी-शक्ति फोडे को सुका सकती होगी, सो सुका देगी, अगर सुका नही सकती होगी, तो पका देगी। जव फोडे मे पस पड जाय, तव **मर्क** का क्षेत्र है। जव **मर्क** अपना काम कर चुके, फोडे मे पस पड जाय, और ठीक होने मे देर लगे, तव **साइलीशिया** फोडे मे मे पस निकाल कर उसे ठीक होने मे सहायता देता है। इस दृष्टि से **बेल–हिपर–मर्क–साइलीशिया**—इस क्रम से लक्षणानुसार औपधि दी जाती है। इन सवको देना आवश्यक नही है, परन्तु क्रम निम्न-प्रकार ही है

बेलाडोना—जव फोडे मे सूजन हो, वुखार हो, अभी पस न पडी हो।

हिपर—जव फोडे मे पस पडने के आसार प्रकट होने लगे।

मर्क—जव फोडे मे पस पड जाय।

साइलीशिया—जव पस पडने के वाद उसके ठीक होने मे देर लगे।

हिपर के प्रकरण मे हम कह चुके हैं कि **मर्क्यूरियस** के पीछे **साइलीशिया** नही देना चाहिये। इसका कारण यह है कि **मर्क** का काम फोडे को पकाना होता है, जितनी पस वननी है वह वन जाय—यह **मर्क** का काम होता है। **साइलीशिया** का काम तो पस निकल जाने के वाद घाव को भरना होता है। अगर जव **मर्क** पस को वना रहा है, तव **साइलीशिया** दे दिया जाय, तो परस्पर-विरुद्ध प्रक्रियाए शुरु हो सकती हैं—**मर्क** तो पस को वना रहा है, और **साइलीशिया** घाव को भर रहा है। इसीलिये कहा जाता है कि **मर्क** के पीछे तत्काल **साइलीशिया** नही देना चाहिये। अगर **मर्क** का काम समाप्त हो जाय, फोडे मे पस पूरी वन चुके और **हिपर** से या किसी और वजह से पस निकल जाय और घाव भरने मे देर हो रही हो, तव **मर्क** के वाद घाव को भरने के लिये **साइलीशिया** देने मे हानि नही है। **सीपिया** के प्रकरण मे डा० नैश लिखते हैं कि वे दवाओ के परस्पर-विरुद्ध (Incompatibility) होने के सिद्धान्त को नही मानते। अगर लक्षण मिलते पाये जायें, तो वे **मर्क** के वाद **साइलीशिया**, **एपिस** के वाद **रस टॉक्स** और **फ़ासफोरस** के वाद **कॉस्टिकम** जिन्हे परस्पर-विरुद्ध (Incompatibles) कहा जाता है देने मे नहीं चूकेंगे। असली सिद्धान्त लक्षणों के मेल खाने का है।

ठंडा फोड़ा—कई फोडे ऐसे होते हैं जिनमे वार-वार सूजन हो जाती है, परन्तु फोडे मे गर्मी नही होती। किसी जोड मे फोडा हो जाता है, रोगी सिर से पाँव तक पसीने से तर हो जाता है, रात को तकलीफ वढ़ जाती है, रोगी को

कंपन होता है, वह दुबला होता जाता है, फोड़ें में गर्मी नहीं होती परन्तु फोड़ा बढ़ता जाता है, वह ठीक होने में नहीं आता, उसमें से पस जारी रहती है, परन्तु ऐसा लगता है कि वह स्थान मृत-प्राय है, उसके स्वस्थ होने के लक्षण नहीं उत्पन्न होते। ऐसे ठंडे फोड़े में मर्क गर्मी उत्पन्न कर देगा, रोगी को पसीना आना बन्द हो जायगा, और फोड़े के ठीक होने के लक्षण शुरु हो जायेंगे।

(६) गिल्टियों का सूजना (मम्प्स)—इस औषधि का गिल्टियों पर विशेष प्रभाव है। कानों के पास की गिल्टिया (Parotids) सूज जाती है, जीभ के नीचे की गिल्टिया (sub-linguals) सूज जाती है, गर्दन के नीचे की, बगल की, जांघों की गिल्टिया सूज जाती हैं, स्तन सूज जाते हैं, जिगर सूज जाता है। ये गिल्टिया सूजकर सख्त हो जाती है, जीभ के नीचे की गिल्टियों के सूजने से ही मुख से लार बहा करती है, जांघ की गिल्टियों के सूजने और पकने से उनमें मवाद भी पड़ सकता है, जांघ में गिल्टी के सूजने से बाघी (Bubo) हो जाती है। कान के नीचे की गिल्टी की सूजन से 'कर्ण-मूल-शोथ' हो जाता है जिसे 'मम्प्स' (Mumps) कहते हैं। मम्प्स में मर्क सौल को रुटीन औषधि के तौर से दिया जाता है क्योंकि इस रोग में कान के नीचे की गिल्टी का शोथ होता है।

(७) बिस्तर में या रात को कष्ट का बढ़ना—इस औषधि की 'प्रकृति' (Modality) के लक्षण बहुत मुख्य हैं। इन मुख्य-लक्षणों में भी रात को रोग का बढ़ जाना सर्व-प्रधान है। रोगी जब बिस्तर में लेटता है और बिस्तर की गर्मी बढ़ती है, तो उसका रोग भी उग्र रूप धारण कर लेता है। रोगी बिस्तर से ही घबराने लगता है। दांत का दर्द हो, वात-रोग (रुमेटिज्म) हो, कर्ण-मूल-शोथ (मम्प्स) हो, टांसिल हो, डिसेन्ट्री हो, बिस्तर की गर्मी से रात में रोग बढ़ जाता है। रात को रोग बढ़ जाना इसका इतना प्रधान लक्षण है कि अगर किसी रोग में रात को रोग के बढ़ने का लक्षण न हो, तो मर्क का क्षेत्र नहीं समझना चाहिये। रात को कष्ट का बढ़ना अनेक औषधियों में है, परन्तु रात को बिस्तर की गर्मी से रोग का बढ़ना कम पाया जाता है। डा० नैश लिखते हैं कि बिस्तर की गर्मी में रोग के बढ़ने के लक्षण पर उन्होंने कई रोगियों के त्वचा के रोग ठीक किये हैं। आर्सेनिक के रोगी को बिस्तर की गर्मी से तो आराम मिलता है, परन्तु क्योंकि वह कहीं टिक नहीं सकता इसलिये बिस्तर में पड़े रहने से उसे तकलीफ होती है। डा० एलन ने बड़े सुन्दर शब्दों में मर्क और आर्स के भेद को स्पष्ट करते हुए लिखा है 'Merc is worse by heat of bed but is better for rest in bed, whereas Ars is better for heat of bed but is worse for rest in bed' इस प्रकरण में ध्यान देने की बात यह है कि मर्क के रोगी का कष्ट बिस्तर की गर्मी से बढ़ जाता है, बिस्तर की गर्मी के अतिरिक्त रात को उसका रोग बढ़ आता है। रोगी की

हड्डियो का दर्द, हड्डियो मे भी खासकर उन स्थानो का दर्द जहाँ हड्डी पर मास की हल्की परत है, जोडो का दर्द, रात को, विशेष रूप से विस्तर की गर्मी से बढ जाता है। सिफिलिस के दर्दो की तरह **मर्क** का दर्द रात को बढ जाता, दिन को घट जाता है।

(८) **बेहद पसीना आना ; विशेषतः रात को , पसीने से कष्ट न घटना**—बेहद पसीना आना भी इस औषधि की 'प्रकृति' का एक अग है। रोगी को बेहद पसीना आता है, नीद मे भी आता है, परन्तु पसीने से आराम नही आता। पसीना वदबूदार होता है क्योकि वदबू तो **मर्क** की प्रकृति मे ही है। जब पसीना आ रहा होता है तब कष्ट भी शिखर पर होता है, जितना पसीना अधिक होता है उतना ही कष्ट भी वढता है। **टीलिया** में भी पसीने से रोग मे वृद्धि होती है। **सैम्बूकस** मे भी पसीना वहुत होता है, परन्तु **सैम्बूकस** का पसीना नीद टूटने पर आता है, इतना वदबूदार भी नही होता। **कैली बाईक्रोम** मे पसीना तब आता है जब रोगी शान्त होकर बैठा होता है। **कॉस्टिकम** मे रोगी को वन्द कमरे मे इतना पसीना नही आता जितना खुली जगह पर आता है। **कोनायम** मे आखें बन्द करते ही पसीना आने लगता है, नीद टूटने पर वन्द हो जाता है। **हायोसाइमस, ग्रेफाइटिस, म्यूरेक्स** तथा **विरेट्रम** मे माहवारी के दिनो मे पसीना वढ जाता है, **आर्सेनिक, नेट्रम म्यूर** तथा **सोरिनम** मे पसीना आ जाने से रोग के लक्षण कम हो जाते हैं। होम्योपैथी मे इस प्रकार औषधियो का भेद समझा जाता है।

(९) **दाहिनी तरफ लेटने से रोग बढ़ना**—डा० एलन लिखते हैं कि दाहिनी तरफ लेटने से रोगी परेशान हो जाता है, यह लक्षण कम दवाओ मे मिलता है, यह लक्षण इस औषधि मे है। डा० नैश ने भी लिखा है कि **मर्क** का रोगी दाहिनी तरफ नही लेट सकता। **मर्क** का प्रभाव जिगर पर है—यह हम गिल्टियो की सूजन के सबध मे लिख आये हैं। जिगर दाहिनी तरफ है, इसलिये जिगर की वीमारी मे रोगी के लिये दाहिनी तरफ लेटना कठिन हो जाता है। दाहिनी तरफ लेटने से खासी भी वढ जाती है। फेफडे, पेट आदि की शिकायत भी दाहिनी तरफ लेटने से वढ जाती है। **फॉस** वाई तरफ नही लेट सकता।

(१०) **इस औषधि के अन्य-लक्षण**—

1 **रोगी पारे की तरह ठड गर्मी दोनो से प्रभावित होता है**—यह औषधि पारे से वनी है। पारा सर्दी से गिर जाता है, गर्मी से चढ जाता है। ठीक इसी तरह इस औषधि का रोगी न अधिक सर्दी वर्दाश्त कर सकता है, न अधिक गर्मी। हाल के रोगो मे जव रोगी को विस्तर की शरण लेनी पडती है, तव उसकी शिकायते विस्तर की गर्मी से उसे परेशान कर देती हैं। वह कुछ देर कपडा ओढे पडा रहता है, परन्तु गर्मी के मारे कपडा परे फेंक देता है। जव कपडे के विना पडा रहता है, तव उसे ठड सताने लगती है और वह अपने को ढक

लेता है। यह बात दर्द मे, बुखार में, फोड़ो में—हर किसी शिकायत मे पायी जाती है।

ii सिर बंध जाने वाला जुकाम—सिर मे, आंख मे, जुकाम में, दर्द ऐसा प्रतीत हो जैसे कि सिर बंधा हुआ है, जैसे कि सिर पर हैट पड़ा हुआ है। जिस प्रकार के जुकाम मे हकीम लोग जुशादा देते है, उसमे मर्क सोल २०० अच्छा काम करता है। यह अवस्था तब आती है जब जुकाम गाढ़ा, पीला हो, बिगड़ गया हो, बहुत दिनों तक उसका सिलसिला जारी रहे। इस प्रकार के जुकाम से हो जाने वाले सिर-दर्द को यह ठीक कर देता है।

iii. माहवारी के स्थान पर स्तन में दूध—माहवारी के समय रज स्राव न होकर स्तन मे दूध आ जाना इसका विचित्र-लक्षण है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि एक १६ वर्ष के बालक के स्तन मे दूध आ जाने के लक्षण पर उन्होंने इस औषधि से उसे ठीक कर दिया था।

iv सिफिलिटिक तथा रूमैटिक रोगियो के आंख, कान, नाक के रोग—इस औषधि का सिफिलिस तथा गोनोरिया के रोगियो पर विशेष प्रभाव है। गोनोरिया के दब जाने मे या वंशानुगत विष मे रूमेटिज्म (वात-रोग) और गाउट (गठिया) हुआ करते हैं। सिफिलिस तथा गोनोरिया के विष के कारण आंख, कान, नाक के भी रोग हुआ करते हैं। इनसे मवाद आया करता है—गाढ़ा, पीला, नीला, लगातार बना रहने वाला, बदबूदार। इस प्रकार के मवादी रोगियो से उनका अपने तथा वंश का इतिहास पूछ लेना चाहिये। अगर आंख, कान, नाक, के जीर्ण—पुराने रोगो—मे सिफिलिस या साइकोसिस का बीज हो, तो इस औषधि से रोग ठीक हो जायगा क्योकि यह इन दोनो विषो को दूर कर देती है। परन्तु अगर जुकाम आदि सोरा-दोष के कारण हुए हैं, तब मर्क के लक्षणो के होते हुए भी इससे लाभ नही होगा। ऐसी हालत मे अगर बिस्तर की गर्मी से जुकाम बढ़ता दीखे, तो कैलि आयोडाइड एक ही रात मे ठीक कर देगा। मर्क के विषय में डा० कैन्ट लिखते हैं कि इसे बार-बार नही देना चाहिये, ज्यादा-से-ज्यादा सर्दियो मे दो बार।

v. सुजाक तथा आतशक—सुजाक मे सब्ज रंग की पस, रात्रि मे रोग की वृद्धि, जननेन्द्रिय के अग्रभाग का चमड़ा न खुलना तथा आतशक (सिफ़िलिस) मे इन्द्रिय के सुपारे पर गहरा घाव (शंकर) हो जाने पर और उसकी सूजन मे मर्क अत्युत्तम काम करता है।

vi सिर में पपड़ी के नीचे पस—प्राय बच्चो के सिर के बाल गुच्छेदार होकर पपड़ी मे उलझ जाते हैं, पपड़ी जम जाती है, उसके नीचे पस जमा हो जाता है, सर की हड्डी सूज कर गांठ-सी पड़ जाती है, छूने से पस तथा खून निकलने लगता है। इसमे इससे तथा मेजेरियम से लाभ होता है।

vii. **मारना या मरना चाहता है**—रोगी को कभी-कभी किसी को, अपने पति तक को मारने का उद्वेग उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी वह आत्म-हत्या करना चाहता है। अन्य लक्षण होने पर **मर्क** से लाभ होगा।

(१०) **मर्क्यूरियस का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—मुंह से बेहद बदबू, लार टपकना, आंख-नाक-कान में से किसी में से बदबूदार मवाद, बिस्तर की गर्मी से और रात के समय रोग का बढ़ जाना, बेहद पसीना आना, फोड़े-फुन्सी की भरमार, ज्वर में शरीर का थरथराना, जीभ फूली हुई जिस पर दांतों के निशान पड़े हुए हों, मुंह तर होने पर भी प्यासा, सुजाक या आतशक का स्वयं रोगी या इस रोग का वंशधर—ऐसा है मूर्त-रूप **मर्क्यूरियस** का।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०,२०० (डा० नैश का कथन है कि निम्न-शक्ति में यह पस को जल्दी बना देता है, उच्च-शक्ति में पस को खत्म कर देता है। टासिल में उन्होंने ऐसा ही पाया है। प्रकृति की दृष्टि से यह औषधि 'सर्द' तथा 'गर्म'—Chilly and Hot—दोनों प्रकृतियों के लिये है)

मर्क्यूरियस कोरोसिवस (MERCURIUS COR.)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) **पेचिश में ऐंठन और मल के साथ आंव की अपेक्षा खून ज्यादा आना**
(२) **मर्क सोल की अपेक्षा मर्क कोर ज्यादा तीव्र रोग की औषधि है**
(३) **मलद्वार तथा मूत्रद्वार की एकसाथ या एक-दूसरे के बाद ऐंठन होना**
(४) **सुजाक की दूसरी अवस्था में**
(५) **आतशक के विष के कारण आंख की जलन, सुर्खी, पानी निकलना आदि आंख के रोग तथा अन्य जख्म**
(६) **अगर तीव्रता और वेग से गले का शोथ हो और वह दुःसे**
(७) **एलब्यूमिनोरिया**

(१) पेचिश (डिसेन्ट्री) में **ऐंठन और मल के साथ आंव की अपेक्षा खून ज्यादा आना**—पेचिश के लिये हम **मर्क सोल** का जिक्र कर आये हैं। पेचिश में ऐंठन सर्व-प्रधान लक्षण है। ऐंठन के साथ अगर मल में रक्त की अपेक्षा आंव अधिक हो तब **मर्क सोल**, और अगर ऐंठन के साथ मल में आंव की अपेक्षा रक्त अधिक हो तब **मर्क कोर** उपयुक्त है। विकट पेचिश में इसी का प्रयोग होता है। मल-त्याग करने पर भी बेहद ऐंठन बनी रहती है। मल में बदबू आती है, खून के साथ श्लैष्मिक-झिल्ली के टुकड़े भी पाये जाते हैं। कभी-कभी निरा **खून** भी आता है, परन्तु ऐंठन होना जरूरी है। इस का रोगी पर आक्रमण **मर्क सोल** की अपेक्षा ज्यादा तेज होता है, ज्यादा प्रबल। मल से पहले, मल करते समय, मल-त्याग के बाद ऐंठन बनी रहती है।

(२) मर्क सोल की अपेक्षा मर्क कौर ज्यादा शोथ रोग की औषधि है—जैसा अभी कहा गया, मर्क कौर तथा मर्क सोल में मुख्य भेद रोग की उग्रता का है। मर्क कौर का आक्रमण तेज होता है, उदाहरणार्थ, यहाँ तक कि मल-द्वार में ऐंठन के साथ मूत्र-द्वार की भी ऐंठन होती है। मर्क सोल का आक्रमण साधारण, मर्क कौर का आक्रमण प्रबल होता है। इस भिन्नता और प्रबलता को देख कर ही दोनों औषधियों में से किसी एक का चुनाव करना होता है।

डा० केन्ट लिखते हैं कि जिन रोगों में मर्क सोल से सफलता होने वाली हो उनमें अगर तीव्रता नहीं है तब वो मर्क सोल देंगे, अगर उनमें तीव्रता है और रोग का रूप साधारण से अधिक है, उग्र रूप है, और यह मर्क सोल से ठीक नहीं हुआ तब वे मर्क कौर देंगे।

(३) मल-द्वार और मूत्र-द्वार दोनों की एक-साथ या एक-दूसरे के बाद ऐंठन—इस औषधि के तेज होने का प्रमाण यह है कि इस में मल-द्वार और मूत्र-द्वार में या तो एक-साथ ऐंठन होती है, या पहले में शुरू होकर दूसरे में भी होने लगती है। मूत्र-द्वार की ऐंठन में इसकी कैंथरिस, कैपसिकम तथा नक्स से तुलना की जा सकती है।

(४) सुजाक (प्रमेह) की दूसरी अवस्था में उपयोगी है—सुजाक की दूसरी अवस्था में जब मूत्र-नली में जलन और ऐंठन होने लगती है, जब उसमें से सब्ज रंग का मवाद जाने लगता है, रात में रोग बढ़ जाता है, जननेन्द्रिय की अगली खाल बन्द हो जाती या सिकुड़ जाती है, तब यह औषधि लाभ करती है।

(५) आतशक के विष के कारण आंख की जलन, सुर्खी, पानी निकलना आदि आंख के रोग तथा अन्य जख्म—आंख के अनेक रोगों के लिये यह औषधि विशेष उपयोगी है। इन रोगों का उद्भव शरीर में प्रकट या अप्रकट रूप में आतशक के विष के कारण होता है। आंख में दर्द, जलन, पानी निकलना, आंख में जख्म हो जाना आदि उपद्रव इस औषधि में मर्क सोल की अपेक्षा तेज होते हैं। मर्क कौर का जख्म किसी भी स्थान में एक ही रात में इतना बड़ा हो जाता और फैल जाता है कि उसकी आशा नहीं की जा सकती थी।

(६) अगर तीव्रता और वेग से गले की शोथ हो और तीव्रता और वेग से वह दुखे—हम ऊपर कह चुके हैं कि इस औषधि के रोगों में तीव्रता और वेग पाया जाता है। अगर गले की शोथ हो, वह दुखने लगे, तो रोग का आक्रमण बड़े वेग से होता है, जल्दी ही सारा गला पकड़ा जाता है, गले की गिल्टियां एक-दम सूज जाती हैं, बेहद प्यास लगती है। मुंह तर रहने पर भी प्यास लगना तो मर्करी का चरित्रगत-लक्षण है ही।

(७) एलब्यूमिनोरिया—अगर मूत्र में एलब्यूमिन ज्यादा आने लगे तो मर्क सोल की अपेक्षा मर्क कौर अधिक उपयोगी साबित होता है। यह ऊपर

कहा ही जा चुका है कि इस औषधि मे मूत्राशय की ऐंठन है। मूत्राशय की ऐंठन, हो, मूत्र मे जलन हो, मूत्र मे एलब्यूमिन हो, और साथ ही अगर रोगी गठिया-रोग से पीडित हो, तब यह औषधि अवश्य लाभ करती है।

(८) शक्ति—६, ३०, २०० या उच्च-शक्ति।

मेज़ेरियम (MEZEREUM)

(१) त्वचा पर ऐसी फुन्सिया जो सूक कर पपडी बन जाती हैं और जिनके नीचे पस जमा हो जाती है—त्वचा के किसी भाग पर फुन्सिया हो जाती हैं, जो फैलकर एक पपडी-सी बन जाती हैं, इनके नीचे पस जमा हो जाती है। इस पपडी के नीचे सफेद शहद जैसा पस इकट्ठा हो जाता है।

(२) सिर पर पपडी जमना जिसके नीचे पस हो, इसमे यह स्पेसिफिक है, त्वचा के रोग के दब जाने से उत्पन्न रोग—कई बच्चो के सिर पर मोटी चमडे-सरीखी पपडी जम जाती है जिसके नीचे सफेद, शहद-सरीखा मवाद जमा हो जाता है। इस पपडी मे बच्चे के बाल चिपक जाते हैं और बच्चा बहुत गन्दा प्रतीत होता है। इन फुन्सियो पर की पपडी चॉक जैसी सफेद होती है जिसके नीचे कीटाणु जमा होते हैं। कभी-कभी यह पपडी सारे सिर को भर लेती है और सिर पर टोपी-सी लगती है जिसके नीचे पस भरी होती है, उस पर सिर के बाल चिपके होते हैं। इसे अग्रेजी मे केरिओन (Kerion) कहते हैं। सिर की पपडी के नीचे मवाद का लक्षण ग्रैफाटिस मे भी होता है। डा० टायलर का कथन है कि इस रोग मे **मेज़ेरियम** स्पेसिफिक का काम करता है। यद्यपि होम्योपैथी मे स्पेसिफिक नाम की कोई चीज़ नही, तो भी कई ऐसे रोग हैं जिनमे सब रोगियो मे लक्षण एक-से होते हैं। हनीमैन का कथन था कि कीटाणुओं के रोगो मे जिनमे रोग का कारण सबमे एक-समान हो, लक्षण एक ही हो, रोग की प्रगति भी एक-समान हो, उनमे होम्योपैथी के स्पेसिफिक को ढूढना चाहिये। उक्त रोग मे **मेज़ेरियम** स्पेसिफिक ही समझना चाहिये।

इस प्रकरण मे डा० डनहम के अनुभव का उल्लेख करना असगत न होगा जिससे स्पष्ट होता है कि त्वचा का रोग दब कर अनेक प्रकार के नये रोगो को उत्पन्न कर देता है और इस प्रकार के रोगो मे **मेज़ेरियम** लाभप्रद है। एक रोगी ४ वर्ष की अवस्था से बहरा था। बडे होने पर, उसके बहरेपन के कारण, कोई उसे नौकरी नही देता था। वह अपने बहरेपन से इतना दुखी था कि घरवालो से भी जुदा-जुदा रहता था, किसी से मिलता-जुलता नहीं था। डा० डनहम के पास वह इलाज के लिये गया। उसके ऐसे कोई लक्षण नही थे जिनके आधार पर दवा को चुना जा सकता। हनीमैन का कथन है कि जब रोगी के लक्षण स्पष्ट न मालूम पडे तब उसके इतिहास को जानने का प्रयत्न करना

चाहिये। इस इतिहास मे रोग का कारण छिपा हो सकता है जिसके आधार पर दवा कर निर्वाचन किया जा सके। जब इस रोगी का इतिहास पूछा गया तब पता चला कि बचपन मे उसके सिर मे फुन्सिया होती थीं, पपडी जम जाती थी, उसके नीचे मवाद भरा रहता था, एलोपैथिक इलाज से उसके सिर पर तारकोल की टोपी चढाई गई। जब तारकोल ने खोपडी के बालो को जकड लिया तब ज़ोर से उसे उतारा गया। इससे सिर की सारी पपडी निकल आयी। उसके बाद सिर पर सिलवर नाइट्रेट लगा दिया गया। इसी से सिर का मवाद तो चला गया, परन्तु बालक तब से निपट बहरा हो गया। सिर की मवाद भरी पपडी के इस इतिहास के आधार पर डा० डनहम ने उसे **मेज़ेरियम ३०** की एक मात्रा दी। इस एक मात्रा का प्रभाव यह हुआ कि २१ दिन बाद उसे थोडा-थोडा सुनाई पडने लगा। फिर ६ दिन बाद इस औषधि की ३० शक्ति की दूसरी मात्रा दी गई, फिर कई महीने के बाद तीसरी मात्रा। अन्त मे रोगी बिल्कुल ठीक हो गया। इससे स्पष्ट है कि कितने ही साल क्यो न बीत जायें, रोग की शुरुआत मे रोगी को जो दवा दी जानी चाहिये थी, उसके देने से, सालो बाद भी रोगी ठीक हो जाता है। इस रोगी को ४ वर्ष की अवस्था मे जब सिर पर पपडी जमने और उसमे मवाद पडने की शिकायत हुई थी तब **मेज़ेरियम** दिया जाना चाहिये था, वह नही दिया गया, तेज़ दवाओ से उसका रोग दबा दिया गया, परन्तु सालो बाद **मेज़ेरियम** से ही उसका नया रोग दूर हो गया। अस्ल मे, दब जाने पर रोग जो नया रूप धारण करता है, वह रग-रूप मे भिन्न होने पर भी पुराने रोग का ही नया रूप होता है, इसलिये इस नये रूप मे भी उसे वही दवा ठीक करती है जो शुरु-शुरु के रोग को दूर करती। फोडे-फुन्सी त्वचा के रोग दबने पर अनेक रोग खडे हो जाते हैं, दिमाग़ तक पर उनका असर हो जाता है, उनमे यह दवा लाभप्रद है।

(३) एग्ज़ीमा—ऐसा एग्ज़ीमा जो जमी हुई पपडी-सरीखा हो, जिसके नीचे मवाद जमा हो जाय, वह कही भी हो, उसमे **मेज़ेरियम** लाभ करता है।

(४) त्वचा मे स्नायविक खुजली (Nervous feeling of itching)—कभी-कभी किसी प्रकार की फुन्सी आदि के न होने पर भी रोगी को त्वचा मे ज़बर्दस्त खुजली होने लगती है। रोगी बिस्तर मे गया नही, या गर्म कमरे मे पहुचा नही कि उसे खुजली शुरु हो जाती है। वह एक जगह खुजलाता है, खुजली दूसरी जगह होने लगती है। जितना खुजलाता है उतना खुजली बढती जाती है। खुजलाते-खुजलाते त्वचा लाल और नर्म पड जाती है। यह स्नायविक खुजली होती है। जहाँ खुजलाता है वहाँ लाल चकत्ते पड जाते हैं। इस औषधि का त्वचा पर विशेष प्रभाव है। इसीलिये यह खुजली तथा ऊपर जिन फुन्सियों का वर्णन किया गया हैं उनमे यह औषधि उपयोगी है।

(५) **घुटने के नीचे की हड्डी टीबिया मे दर्द**—इस औषधि का जैसे त्वचा पर प्रभाव है वैसे हड्डियो के दर्द पर भी प्रभाव है, घुटने के नीचे की हड्डी 'टीबिया' के दर्द पर इसका विशेष प्रभाव है।

(६) **दांतों का एकदम क्षय**—इसके दात निकलते ही सडने लगते हैं। पहले दातो का इनेमल खुरदरा हो जाता है, फिर उतर जाता है। दातो की जड सडने लगती है। दातो के रोग मे **स्टैफिसैग्रिया, क्रियोज़ोट** तथा **थूजा** पर भी ध्यान देना चाहिये।

(७) **शक्ति**—६, ३०, २००

मिलेफ़ोलियम (MILLEFOLIUM)

(१) **कहीं से भी चमकीला, लाल, दर्द रहित रुधिर-स्राव**—यह रक्त-स्राव की औषधि है। इसके रक्त-स्राव की विशेषता यह है कि रक्त चमकीला, लाल और दर्द-रहित होता है। चमकीला लाल हो और दर्द-रहित हो—इन दो लक्षणो के होने पर किसी भी रक्त-स्राव मे यह उपयोगी है। मुख से, नाक से, फेफडो से, पेट से, मूत्राशय से, मल-द्वार से, जरायु से अगर चमकीला, और दर्द से रहित खून निकले, तो इससे लाभ होगा। **एकोनाइट** मे भी ऐसा रक्त-स्राव होता है, परन्तु उसमे घवराहट होती है, इसके रक्त-स्राव मे घवराहट नही होती। अगर बवासीर मे खून जाता हो—खूनी बवासीर हो—या क्षय-रोग मे इस प्रकार का रक्त-स्राव हो, तो इस औषधि से लाभ होगा। कभी-कभी माहवारी वन्द होने पर फेफडो से रक्त आने लगता है। ऐसे रक्त-स्राव मे भी यह फायदा करती है। खासी मे रोगी को खून आता है। खासी मे ४ बजे प्रतिदिन दोपहर को खून आने के लक्षण मे यह लाभप्रद है। यह देख लेना चाहिये कि खून चमकीला हो, लाल हो, और खून आने मे किसी प्रकार का दर्द न हो।

(२) **रक्त-स्राव की 'प्रतिरोधक'** (*Preventive for hemorrhage*)—जो रोगी रक्त-स्राव की प्रकृति का हो, उसे दात निकलवाने से पहले **लैकेसिस** या **मिलेफोलियम** की एक मात्रा दे देनी चाहिए। कई ऐसे रोगी होते हैं जिनका रक्त वहना शुरु होने पर वन्द नही होता। उनके रक्त-स्राव के लिये यह 'प्रतिरोधक' का काम करती है। जो स्त्री रक्त-स्राव की प्रकृति की हो, उसे वच्चा जनने से पहले इस औषधि की मात्रा दे देनी चाहिये, अथवा उसका रक्त जारी होने पर वन्द होना कठिन हो जायगा। गिर पडने से रक्त-स्राव होने लगे, और **आर्निका** से लाभ न हो, तो इस औषधि को देना चाहिये।

(३) **शक्ति**—मूल अर्क, १, ३, ६, ३० (मूल-अर्क तथा निम्न-शक्ति लाभप्रद है)

मौस्कस—कस्तूरी, (MOSCHUS)

(१) **हिस्टीरिया की अमोघ-औषधि**—जो लडकिया मा-बाप की बहुत लाडली होती है, जिनकी हर इच्छा को पूरा किया जाता है, जिन्हे आज्ञापालन जैसी किसी सीख का ज्ञान ही नही होता, उन्हें अपनी इच्छा को मनवाने की ऐसी आदत होती है कि स्वार्थपन और हठ-धर्मिता उनके चरित्र का अग बन जाती है। जब वे बचपन से १८ वर्ष की आयु तक देखती आ रही होती हैं कि उनकी हर इच्छा को पूरा किया जाता रहा है, तब वे **मौस्कस, ऐसाफ़ेटिडा, इग्नेशिया,** तथा **वेलेरियन** के रोगो की सहज शिकार होने लगती हैं। उनमे अनेक असली तथा काल्पनिक मानसिक-लक्षण प्रकट होने लगते है। वे अपनी इच्छाओं को पूरा कराने के लिए ऐसे-ऐसे मानसिक-लक्षण दिखलाने लगती हैं कि अपनी इच्छाओ को पूरा करा कर ही हटती है। कितना ही वे कहें कि उनके लक्षण असली हैं, परन्तु उन पर विश्वास नही किया जा सकता। वे अपने बनावटी लक्षणो को दिखाकर इतनी देर तक अपनी इच्छाओं को पूरा कराती रही हैं कि यह समझना कठिन हो जाता है कि वे जो-कुछ कह रही हैं उसमे कितना सच है और कितना बनावटी है। चिकित्सक के लिये ये लडकिया एक समस्या बन जाती हैं क्योकि उसे औषधि का निश्चय करते हुए यह निर्णय करना होता है कि कहा तक रोगिणी की शिकायतें बनावटी न होकर यथार्थ हैं।

हिस्टीरिया की यथार्थ शिकायतें हैं पेट से गोल गेंद का-सा उठना (Globus hystericus), त्वचा का स्पर्श न सह सकना—स्पर्श-असहिष्णुता—(Hyperesthesia), मास-पेशियो की कपन (Quivering of Muscles), अनिद्रा, हृदय की धडकन, मन की उत्तेजित अवस्था, बेहोशी, मूर्च्छा, सपूर्ण शरीर का कापना, सारे शरीर मे भयकर पीडा, सिर की तरफ खून का दौर, हाथ-पैर मे अकडन, सारे शरीर की अकडन आदि। रोगिणी कभी हसती है, कभी रोती है। हिस्टीरिया के लक्षणो मे यह औषधि लाभप्रद है।

(२) **हिस्टीरिया के शारीरिक-लक्षणो का आधार मानसिक-विकृति है**—ऊपर हिस्टीरिया के जिन शारीरिक-लक्षणो का वर्णन किया गया है, उनका आधार कोई मानसिक-विकार होता है। हिस्टीरिया मे रोगी शरीर से जो भिन्न-भिन्न सवेदन (Sensations) अनुभव करता है, और शरीर जिस प्रकार की असाधारण क्रियायें (Abnormal functions) करता है, उनके आधार मे कोई-न-कोई मानसिक-कारण होता है। उदाहरणार्थ, हिस्टीरिया-रोगी की अगर एक गाल लाल और ठडी है, दूसरी पीली और गर्म है, तो समझ लेना चाहिये कि उसके मन का कोई विकार इस शारीरिक-विकृति का कारण है क्योकि लाल गाल को ठडा न होकर गर्म और पीली गाल को गर्म न होकर ठडा होना

चाहिये था । शारीरिक-विकृतियो को देखकर यह कल्पना कर लेना उचित ही है
कि रोगी के मन मे कोई विकार है। मानसिक-विकार के ठीक होने से शारीरिक-
विकार अपने-आप जाता रहता है।

(३) **हिस्टीरिया की मूर्च्छा अर्थात् बेहोशी के आते समय ठड, थरथराहट और कपन अनुभव करना**—इस औषधि का निर्देशक-लक्षण रोगी का बार-बार बेहोश, मूर्च्छित हो जाना है । वेहोशी के लिये यह मुख्य दवा है। अगर रोगी बेहोशी के आक्रमण या मृगी के दौर पडने के शुरु मे ठड महसूस करने लगता है, थरथराने और कापने लगता है, तो समझ लेना चाहिये कि इस औषधि से लाभ होगा । दौर पडने मे पहले और दौर के दौरान मे इस प्रकार की ठड और कपन बना रहता है । गला रुध जाता है, छाती मे ऐंठन पड जाती है । रोगी के गले को रुधते देखकर आस-पास के लोग समझने लगते हैं कि वह मर जायेगा, बचेगा नही । रोगी भी 'मरा-मरा' चिल्लाता है ।

(वेहोशी मे मुख्य-मुख्य उपयोगी औषधिया)

एकोनाइट—अगर कोई डर से वेहोश हो जाय ।

ओपियम—यह भी डर से वेहोश होने पर दी जाती है ।

पल्सेटिला—जब बन्द कमरे मे हवा न होने से वेहोशी हो ।

सल्फर—११ बजे दोपहर खाना न मिलने से वेहोशी, खाना मिलने से ठीक ।

फॉसफोरस—११ बजे दोपहर खाना न मिलने से वेहोश, खाना मिलने पर ठीक (सल्फर की तरह) ।

मैग्नेशिया म्यूर—भोजन के लिये बैठने पर मुंह मे झाग आते रहने के साथ बेहोशी (सल्फर और फॉस का उल्टा) ।

एलूमिना—अगर देर तक खडे रहना पडे, बैठे रहने पर ठीक ।

कोनायम, पोडो, सल्फर—टट्टी जाने के बाद वेहोशी ।

म्यूरेक्स, लाइको, थूजा—महीना भर ठीक, परन्तु महावारी आने से पहले वेहोशी ।

एसाफेटिडा—वीर्यपात के बाद बेहोशी ।

एगैरिकस—मथुन के बाद वेहोशी ।

सीपिया—ज्वर मे शीतावस्था के बाद या परिश्रम के बाद वेहोशी ।

(४) **ऊचाई से गिरने और सिर मे कील गड़ जाने का-सा अनुभव**—रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि वह किसी ऊची जगह से नीचे गिर रहा है, यह अनुभव होता है कि सिर की गुद्दी मे कील गडा जा रहा है ।

(५) **शक्ति**—१, ३, ६ या उच्च-शक्ति

म्यूरियेटिक ऐसिड (MURIATIC ACID)

(१) **टाइफॉयड की उत्कृष्ट औषधि**—फैरिंगटन का कथन है कि ऐसिड दो प्रकार के हैं, 'खनिज' (Mineral acids) तथा 'वानस्पतिक' (Vegetable acids)। इन दोनो मे कमजोरी तथा शक्तिहीनता पायी जाती है। 'खनिज'-ऐसिड मे कमज़ोरी के साथ उत्तेजना (Irritability) भी होती है, 'वानस्पतिक'-ऐसिड मे उत्तेजना के विना सिर्फ कमज़ोरी पायी जाती है। ध्यान देने की वात यह है कि सब ऐसिडो मे अत्यन्त कमज़ोरी के लक्षण होते हैं। यही कारण है कि यह औषधि टाइफॉयड की उत्कृष्ट दवा है। रोगी इतना कमज़ोर होता है कि विस्तर मे भी अपने को सम्भाल नही सकता, नीचे की ओर खिसकता जाता है, उसे विस्तर मे वार-वार समालना पडता है। उसका निचला जवडा लटक जाता है। मुह मे छाले पड जाते हैं, जीभ सूक कर पहले से तिहाई हो जाती है, चमडे जैसी लगती है। रोगी बेहोश पडा रहता है, वीच-वीच मे कराहता है। अनजाने मल-मूत्र निकल जाता है। स्पर्श के प्रति उत्तेजना अनुभव करता है, स्पर्श से विगड जाता है, उत्तेजित हो जाता है। क्योकि यह 'खनिज'-ऐसिड है, इसलिये यह उत्तेजना इसकी प्रकृति मे है। ऐसी अवस्था टाइफॉयड मे होती है।

इस प्रकार की कमज़ोरी **आर्सेनिक** और **ऐसिड फॉस** मे भी पायी जाती है। **आर्सेनिक** मे कमज़ोरी के साथ बेचैनी और घवराहट भी रहती है, **ऐसिड फॉस** मे पहले मानसिक कमज़ोरी आती है, फिर शारीरिक, **म्यूरियेटिक ऐसिड** मे पहले शारीरिक कमज़ोरी आती है, जबडा लटक जाता है, रोगी बिस्तर मे बार-बार नीचे की तरफ खिसक जाता है, फिर मानसिक कमज़ोरी आ जाती है। इन लक्षणों मे ये तीनो टाइफॉयड मे लक्षणानुसार दी जा सकती हैं। अन्य किसी रोग मे ये लक्षण हो, तव भी ये दी जाती हैं।

(२) **बवासीर की उत्कृष्ट औषधि**—डा० गुएरेंसी के कथनानुसार यह ववासीर की प्रधान दवाओ में से एक है। ऐलो के प्रकरण मे हम इस औषधि के ववासीर को ठीक करने के प्रभाव पर लिख आये हैं। ववासीर के मस्से सूज जाते हैं, नीले पड जाते हैं, छूआ नही जा सकना, छूने से वेहद दर्द होता है, चादर छू जाय तव भी रोगी चिल्ला उठता है। ठडे पानी से दर्द वढ जाता है, गरम पानी से आराम मिलता है। इसके विपरीत ऐलो मे ठडे पानी से आराम मिलता है।

(३) **कांच बाहर निकल पडना**—वच्चो का गुदा-प्रदेश इतना कमज़ोर हो जाता है कि गुदा से हवा निकलते समय या पेशाव करते हुए काच निकल पडती है। इस रोग मे यह लाभ करता है।

(४) **शक्ति**—६, ३०, २००

नेजा—कोब्रा का विष, (NAJA)

किन्हीं विशेष-लक्षणों के न होने पर हृदय के रोग मे—नेजा कोब्रा के विष का नाम है। विषो मे **क्रोटेलस** और **लैकेसिस** का विशेष प्रयोग होता है, **इलैप्स** और **नेजा** का कम। **क्रोटेलस** और **लैकेसिस** के विषय मे हम इनके प्रकरण मे इन के लक्षणो के सबध मे लिख आये हैं। **इलैप्स** के लक्षणो मे दो लक्षण मुख्य हैं एक है बच्चो का नाक बन्द हो जाना, दूसरा है किसी अग से काला खून बहना। जब जरायु से लगातार काला खून बहता है, रोगिणी समझती है कि भीतर कोई अग फट गया है, तब प्राय जरायु का कैंसर होता है और उसमे **इलैप्स** लाभ करता है। **नेजा** के सब लक्षण **लैकेसिस** की तरह के हैं। इसका बायें अग पर प्रभाव है, नीद के बाद रोग बढ जाता है, रोगी गले मे कॉलर नही पहन सकता, गले मे कोई वस्तु लपेटी जाय तो गला घुटता-सा लगता है, नम मौसम मे रोग बढ जाता है, परन्तु इसकी एक विशेषता यह है कि रोगी की सारी परेशानी उसके हृदय मे केन्द्रित होती है, वही आकर जम जाती है। स्कूली लडके-लडकियो मे जिनमे कोई विशेष सूचक-लक्षण न मिले, और रोगी कहे कि उसका दिल घबराता है, तो **नेजा** ही देना चाहिये। **नेजा** के लक्षण विशेष रूप से 'स्नायु-प्रधान' (Nervous) होते हैं। **लैकेसिस** और **क्रोटेलस** की तरह **नेजा** रक्त-स्राव की औषधि नही है, इसका प्रधान-क्षेत्र हृदय का स्नायविक-रोग है। रोगी आत्म-हत्या करना चाहता है। ६ से ३० शक्ति दी जाती है।

(हृदय के रोग की भिन्न-भिन्न औषधिया)

एकोनाइट—खुश्क, ठडी हवा से यकायक तथा तेज हृत्पीडा जिसमे बेचैनी, परेशानी तथा मृत्यु का भय हो।

बेलाडोना—हृदय की सूजन जिसमे रुधिर का सिर मे सचय हो जाय, सिर गर्म हो, सिर-दर्द हो, चेहरा लाल हो जाय, फूल जाय, गर्दन की नसें फडकती दीखें, आँखें सुर्ख हो जायें।

कोलिनसोनिया—बवासीर की वजह से हृदय धकडने लगे।

डिजिटेलिस—रोगी अनुभव करे कि अगर वह हिले-डुलेगा तो हृदय चलना बन्द हो जायगा। **जेलसीमियम** से उल्टा। नाडी बहुत धीमी, बेहोशी-की-सी हाल्त, अत्यन्त कमज़ोरी, पेट मे बैठता-सा (Sinking sensation at the stomach) अनुभव। आखें, होठ, जीभ, नाखून नीले पड जायें। रात को सास घुटता-सा महसूस हो। पेशाब रुक जाय।

जेलसीमियम—रोगी अनुभव करे कि अगर वह हिले-डुलेगा नही तो हृदय चलना बन्द हो जायगा। **डिजिटेलिस** से उल्टा। नाडी अति मन्द।

ग्लोनॉयन—रोगी अनुभव करे कि हृदय तथा सिर की तरफ रुधिर दौड़ रहा है। ज़बर्दस्त धडकन।

कैलमिया—गठिया या वात-रोग के कारण हृदय-रोग। हृदय तेज़ी से धडकता है, धडकता दीखता है, धडकने की आवाज़ होती है। इस रोगी मे वात-रोग होना आवश्यक है।

लैकेसिस—तरुण या जीर्ण हृदय-रोग जिसमे सास घुटता-सा प्रतीत हो और छाती मे 'जकडन' (Constriction) की अनुभूति हो।

नेजा—हृदय-रोग के कारण खुश्क, सताने वाली खासी, सास घुटता-सा, हृदय-प्रदेश मे घबराहट, वात-रोग के कारण ज्वर, सूजन, मन्द तथा अनियमित नाडी।

स्पाइजेलिया—वात-रोग के कारण हृदय का रोग, हृदय मे अत्यन्त दर्द, तेज़ धडकन, सारी छाती हिलती दीखती है, धडकन बिना स्टैथोस्कोप के भी सुनाई पडती है।

स्पजिया—ऐंजाइना पेक्टोरिस जो रात को भयकर, ज़ोरदार खासी के साथ आक्रमण करे, साथ बडी घबराहट हो। ऐंजाइना पैक्टोरिस के लिये **लैट्रोडेक्टस** ६ शक्ति अत्युत्तम है।

नैट्रम आर्सेनिकम

(NATRUM ARSENICUM)

(१) **ज़ुकाम मे सिर-दर्द के साथ नाक की जड मे दर्द और गले मे नज़ले का गिरना**—यह नज़ले की प्रधान दवा है। इसमे सिर-दर्द होता है, नाक से पनीला स्राव बहता है और नाक बन्द हो जाती है, नाक के भीतर गाढा पीला स्राव गले की तरफ गिरता है। नाक की जड मे दर्द इसका मुख्य-लक्षण है। गले के भीतर पनीला स्राव भी गिरा करता है। नाक मे सूखी पपडिया जम जाती हैं जिनके छीलने से नाक ज़ख्मीली हो जाती है।

(२) **गले मे घोर लाल और बैंगनी रंग की सूजन**—जैसी डिफ्थीरिया मे गले मे घोर लाल और बैंगनी रग की सूजन हो जाती है, कमज़ोरी हो जाती है, गले मे वैसी सूजन हो जाने पर यह उपयोगी है। इस सूजन मे दर्द नही होता। **एपिस** मे भी यह लक्षण है, परन्तु इस औषधि के निर्वाचन मे मुख्य-लक्षण नाक की जड मे दर्द होना है।

(३) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

नैट्रम कार्बोनिकम
(NATRUM CARBONICUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) मस्तिष्क की थकावट, मानसिक कार्य न कर सकना	लक्षणो मे कमी (Better) *भोजन के बाद रोग मे कमी
(२) परिवार के लोगो से उदासीनता	*मलने और घसने पर कमी
(३) सगीत से शोकातुर होना	लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
(४) सूर्य की गर्मी, गैस की रोशनी से सिर-दर्द	*धूप से, ठड से रोग मे वृद्धि
(५) पुराना नज़ला जिसमे रेशा गले मे गिरे	*गैस के प्रकाश से वृद्धि
(६) बन्ध्यात्व	*मानसिक-श्रम से रोग मे वृद्धि
(७) बच्चो के टखनो की कमजोरी और मोच आ जाना	*सगीत से रोग मे वृद्धि *दूध माफिक न पड़ना

(१) **मस्तिष्क की थकावट, मानसिक कार्य न कर सकना**—रोगी थोडे से भी मानमिक-परिश्रम से पस्त हो जाता है। सोच-विचार नही सकता, मानसिक-कार्य नही कर सकता, अगर मानसिक-कार्य करना पड जाय, तों थक जाता है, सिर-दर्द होने लगता है, चक्कर आने लगता है। अगर इस औषधि का सिर्फ यही लक्षण होता, तो भी यह औषधि वहुमूल्य होती क्योकि चिकित्सक को ऐसे अनेक रोगियो से आये-दिन वास्ता पडता रहता है जिनका दिमाग़ हर समय थका रहता है। डा० नैश का कथन है कि वे ऐसी शिकायतो मे इस औषधि की ३० शक्ति का प्रयोग सफल पाते रहे है। मस्तिष्क की थकावट मे **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** भी उपयोगी है। **अर्जेन्टम नाइट्रिकम** व्यापारियो, विद्यार्थियो तथा मानसिक कार्य करनेवालो, सिनेमा के एक्टरो आदि के लिए जिनका मन उत्तेजित रहता है, उपयुक्त है।

(२) **परिवार के लोगों से उदासीनता**—इस औषधि का एक लक्षण यह भी है कि रोगी को परिवार के लोगो, मित्रो आदि से उदासीनता हो जाती है। वह मानव-समाज से पृथक् रहना चाहता है। समाज के लोगो से मेल-जोल वनाये रखने की इच्छा नही रहती। उसे अपने मे और घर-बार के या दुनियाँ के अन्य लोगों मे ऐसी खाई दिखलाई देती है कि उमे पाटना समव नही जान पडता। किन्हीं खास-खास लोगो की तो वह शक्ल भी नही देखना चाहता। परिवार के लोगों के प्रति इस प्रकार की उदासीनता **सीपिया** मे भी पायी जाती है।

(३) **सगीत से शोकातुर होना**—उदासीनता इतनी उग्र हो जाती है कि सगीत सुनने से उसे रोना आता है, दु ख होता है, भय लगता है, आत्म-घात

करने की भावना जागृत होती है। सगीत से इतना चित्त खिन्न हो जाता है कि धार्मिक-पागलपन सवार हो जाता है। जितने नैट्रम (सोडियम) हैं, सब मे इस प्रकार की खिन्न मनोवृत्ति पायी जाती है, परन्तु **नैट्रम कार्ब** मे ऐसी खिन्न-चित्त-वृत्ति मुख्य तौर पर है।

(४) **सूर्य की गर्मी और गैस की रोशनी से सिर-दर्द**—जिन लोगो को सूर्य की गर्मी से सिर-दर्द हो जाता है, उन्हे **नैट्रम कार्ब** से लाभ होता है। अगर गैस की रोशनी से सिर-दर्द होने लगे, तब इस से लाभ होता है। सूर्य की गर्मी से सिर-दर्द **ग्लोनॉयन, लैकेसिस** तथा **लाइसीन** मे भी पाया जाता है। पहली दो का वर्णन तो हम यथा-स्थान कर आये हैं, **लाइसीन** का वर्णन नही किया। यह औषधि पागल कुत्ते की लार से शक्तिकृत की गई है। डा० हेरिंग ने इसकी परीक्षा-सिद्धि (Proving) की थी। **लाइसीन** का सिर-दर्द बहते पानी की आवाज़ या चमकीली रोशनी से बढ जाता है।

(५) **पुराना-नज़ला जिसमे रेशा गले मे गिरे**—कई लोगो का नज़ला बहुत पुराना हो जाता है, नाक के नज़ले का रेशा नाक के पिछले भाग से होता हुआ गले मे गिरता रहता है, रोगी ज़ोर से खासा करता है, गाढा श्लेष्मा गले से निकलता है, और जितना निकलता है उतना ही फिर नाक के ज़रिये गले मे जाकर इकट्ठा हो जाता है।

(६) **ठंडे स्थान से गर्म स्थान मे जाने से खांसी आदि मे वृद्धि**—इस प्रकरण मे यह लिख देना आवश्यक है कि **नैट्रम कार्ब** तथा **ब्रायोनिया** मे ठडे स्थान से गर्म स्थान मे जाने से खासी-ज़ुकाम आदि का रोग हो जाता है या बढ जाता है। **रुमैक्स** मे इससे उल्टा है। उसमे गर्म स्थान से ठडे स्थान मे जाने से खासी-ज़ुकाम आदि रोग बढ जाता है।

(७) **वन्ध्यात्व**—कई स्त्रिया स्नायु-प्रधान (Nervous) होती हैं, हाथो मे कोहनियो तक और पैरो मे घुटनो तक ठडी रहती हैं। वे अपनी शारीरिक-अवस्था के कारण गर्भवती नही हो पाती, उनके योनि-द्वार को सकुचित करने वाली मासपेशी इतनी ढीली और शिथिल होती है कि पुरुष का वीर्य अन्दर रहने के बजाय बाहर बह जाता है। उनके वन्ध्यात्व का यही कारण है। इस प्रकार की स्नायु-प्रधान, शिथिलाग स्त्रियो के वन्ध्यात्व को **नैट्रम कार्ब** दूर कर देता है।

(८) **बच्चो के टखनों की कमज़ोरी और मोच आ जाना**—चलते हुए घुटने के पीछे के खोल मे दर्द, घुटने के घुमाव मे बोझ या दर्द, कमज़ोरी की वजह से बच्चो के टखनो मे मोच आ जाना, चलने के समय पैर टेढे हो जाना—ये इसके लक्षण हैं।

(९) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है, रोगी दूध नहीं पचा सकता)

नैट्रम म्यूरियेटिकम—नमक, (NATRUM MUR)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) हिस्टीरिया के-से लक्षण, कभी रोना, कभी हसना	लक्षणो मे कमी (Better) *खुली हवा से रोग मे कमी *ठडे पानी से स्नान से कमी *बायीं करवट लेटने से रोग मे कमी
(२) मन का विवश हो जाना, किसी विचार को न छोड सकना, शोक, भय, क्रोध के दुष्परिणाम	
(३) सहानुभूति से रोगी का क्रुद्ध हो उठना	
(४) पुष्टिकारक भोजन खाने पर भी दुबला होते जाना	
(५) लड़कियों की रक्त-क्षीणता (Chlorosis and Anemia)	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *समुद्र-तट या समुद्री नमकीन हवा से रोग का बढ़ जाना *१०-११ बजे प्रात काल रोग का बढ़ जाना *सूर्य की गर्मी से रोग मे वृद्धि *सहानुभूति से रोग में वृद्धि
(६) सूर्योदय के साथ सिर-दर्द होना, और सूर्यास्त के साथ सिर-दर्द समाप्त हो जाना	
(७) सविराम-ज्वर (मलेरिया) मे १० बजे प्रात ज्वर आना	
(८) छींकों के साथ बहने वाला कच्चे अडे की सफेदी जैसा जुकाम	
(९) नमक के लिये विशेष चाह होना	

[नैट्रम म्यूर का होम्योपैथिक उपयोग]

(१) हिस्टीरिया के-से लक्षण, कभी रोना कभी हसना—यद्यपि यह रोज-मर्रा का शक्तिकृत नामक है, तो भी यह अत्यन्त गहन-क्रिया करने वाली औषधि है। इसका गहरा और देरपा असर होता है। शक्तिकृत होकर यह नमक जीवन के स्रोत पर प्रहार करता है। इस औषधि की रोगिणी मे हिस्टीरिया के-से लक्षण पाये जाते हैं—कभी रोना, कभी हंसना, ऐसी बात पर हसना जिसमे हसने की कोई बात नही है। हसने का देर तक दौर-सा पड जाना, और बाद को रोने लगना, उदास हो जाना, खुशी का नामोनिशान तक न रहना।

(२) मन का विवश हो जाना, किसी विचार को छोड न सकना, शोक, भय, क्रोध के दुष्परिणाम—रोगिणी का मन उसके काबू नही रहता, वह विवश हो जाती है, जो विचार उसे पकड लेता है, ऐसा जकडता है कि वह लाख किये छूटता ही नही। उदाहरणार्थ, अविवाहिता लडकी किसी विवाहित व्यक्ति के प्रेम मे फस जाती है। वह जानती है कि यह भावना मूर्खतापूर्ण है, परन्तु उसी के प्रेम

मे रात भर नीद नही आती। कोई लडकी अपने ड्राइवर के प्रेम मे फस जाती है, जानती है कि यह अनुचित कार्य है परन्तु अपने को विवश पाती है। प्रेम ही नही, कोई भी विचार पकड ले, छुडाये न छूटे, तो इस औषधि की एक मात्रा सारी विचारधारा को वदल देती है और रोगी का जब उस विचार से पीछा छूट जाता है, तब वह आश्चर्य करने लगता है कि उसे हो क्या गया था। इस रोगी का मन कमज़ोर हो जाता है—इसीलिये इस प्रकार की बातें होती हैं।

शोक, भय, क्रोध के दुष्परिणाम—रोगी किसी बात से भी मन को दु खी करने लगता है, बिना बात के दु खी होता है। पुरानी बातो को उखाडने लगता है, उन्ही को याद करके दु खी होता है। कितनी ही सान्त्वना दी जाय, दु.खजनक घटनाओ को स्मृति-पथ मे ताज़ा करता है और दु ख मनाता रहता है मानो उसे इस प्रकार के रज मनाने मे भी कोई सुख मिलता हो। छोटी-छोटी बातो को लेकर उन्हें बडा बनाकर हाय-हाय किया करता है। क्रोध के मारे आग-बबूला हो जाता है। शोक, भय, क्रोध आदि उद्वेगो को मन-ही-मन दबा रखने से जब कोई मानसिक-रोग उत्पन्न हो जाय, तब इस औषधि को स्मरण करना चाहिये। उदाहरणार्थ, घरो मे सास-बहू का वर्ताव अच्छा न हो, तो बहू अन्दर-ही-अन्दर घुन की तरह गलती-सडती, घुटती रहती है। उसे इस घुटन से दु ख-मिश्रित क्रोध तथा सास या पति से भय के कारण क्षय रोग हो सकता है, हिस्टीरिया हो सकता है। इस प्रकार के शोक, भय, क्रोध से जो रोग उत्पन्न हो जाते हैं, उनमे नवीन रोगो मे **इग्नेशिया** और पुराने रोगो मे **नेट्रम म्यूर** उपयुक्त औषधि है। **नेट्रम म्यूर** को इसीलिये **इग्नेशिया** का क्रौनिक कहा जाता है। अगर रोग गहरा हो, तो शुरु मे ही **नेट्रम म्यूर** दे देना उचित है।

(३) **सहानुभूति से रोगी का क्रुद्ध हो उठना**—इस रोगिणी का मन अत्यन्त चिडचिडा (Irritable) होता है। ज़रा-ज़रा-सी बात पर उत्तेजित हो उठती है, रोने लगती है। रोते रहना और उदास, खिन्न, दु खी हो जाना—ये दोनो इसके चरित्रगत लक्षण हैं। उसे पता नही कि वह क्यो रोती रहती है, एकान्त मे जा बैठती है और आँसू बहाया करती है। लोग यह समझते हैं कि उसके दु:ख मे उसके साथ सहानुभूति दर्शायेंगे तो उसका दु ख कम होगा, परन्तु नही, सहानुभूति उसे और चिडा देती है। यही कारण है कि वह एकान्त ढूढा करती है, इकली बैठी रोया करती है, चुप रहती है, गुमसुम। यह लक्षण **सीपिया** मे भी है। इसके विपरीत **पल्सेटिला** भी रोती है, परन्तु वह अपना दु:ख प्रकट करती रहती है क्योकि वह सहानुभूति चाहती है। **नेट्रम म्यूर** और **पल्स** दोनों रोती रहती हैं, परन्तु **पल्स** सहानुभूति चाहती है, **नेट्रम म्यूर** और **सीपिया** नही। **सीपिया** सर्द-प्रकृति की है, **नेट्रम म्यूर** तथा **पल्स** गर्म-प्रकृति की हैं :

(४) **पुष्टिकारक भोजन खाने पर भी दुबला होते जाना**—दुवला होने और शरीर पर से मास के क्षीण हो जाने मे इस का अन्य मुख्य-औषधियो मे अपना ही स्थान है। बच्चा अच्छा खाता-पीता है, और फिर भी उसके शरीर पर खाया-पीया लगता नही, वह दुवला होता जाता है। यह दुवलापन भी अजीव किस्म का होता है। गले की हड्डिया चमकने लगती हैं, गला सिकुड जाता है, अत्यन्त पतला, नीचे के अग—धड आदि मोटे वने रहते हैं। बच्चा ऊपर से सूकना शुरु करता है, यह सूकना ऊपर से नीचे को जाता है। इतनी भूख और इतना दुवलापन—यह देखकर आश्चर्य होता है। खाने के वाद रोगी थक जाता है, निद्रालु हो जाता है, पेट मे भारीपन महसूस होता है, पेट और जिगर मे वेचैनी लगती है, और ज्यो-ज्यो भोजन पचता जाता है रोगी को आराम मिलता है।

दुवला होने मे जो मुख्य-मुख्य औपधिया हैं उनकी गणना हम **एब्रोटेनम** मे कर आये हैं और उनके लक्षण भी वहा दिये गये हैं।

(५) **लड़कियो की रक्तक्षीणता** (Chlorosis and Anemia)—जैसे बच्चो के या युवको के दुवलेपन मे यह औषधि उपयोगी है, वैसे ही लड-कियो की रक्तक्षीणता मे इसका उपयोग है। लडकी का रग पीला पड जाता है। माहवारी दो-तीन महीने मे एक वार होती है। रज स्राव जव होता है तव या तो वहुत अधिक होता है, या पनीला होता है, और थोडा होता है। अगुली मे चाकू लग जाय, तो खून क्या, पानी जैसा रुधिर निकलता है। मासिक-धर्म क्या, प्रदर का-सा स्राव जाता है। यह भयकर रक्तक्षीणता—अनीमिया—की हालत है। **नैट्रम म्यूर** देने से रोगी का जीवन-स्रोत सुधर जाता है, और फीके रग की लडकी पर लालिमा छा जाती है। परन्तु स्वास्थ्य मे यह परिवर्तन जल्दी नही आता, इसे समय लगता है क्योकि यह औपधि जहा जीवनी-शक्ति के गहरे स्रोत पर पहुचती है वहा इसे अपने प्रभाव को जाहिर करने मे समय लगता है।

होम्योपैथी मे औषधि का चुनाव करते हुए सिर्फ लक्षणो को ही नही देखना होता, लक्षणो के साथ औपधि की चाल को भी देखना होता है। औपधि की चाल और रोग की चाल मे समता होना आवश्यक है। औपधि और रोग की चाल से हमारा क्या मतलव है? उदाहरणार्थ, **एकोनाइट** और **वेलाडोना** की चाल यकायक होती है, इनमे देर का काम नही। जो रोग यकायक होगे, तेजी से, वेग से होगे, उन्ही मे **एकोनाइट** और **बेलाडोना** कारगर होगे। अगर वुखार धीरे-धीरे आया, तेजी से और जोर से न आया, जैसा टाइफॉयड मे होता है, तव **एकोनाइट** या **बेलाडोना** काम नही देगे, भले ही लक्षण क्यो न मिलते हो। **बायोनिया** और **रस टॉक्स** की चाल धीमी होती है, यकायक नहीं होती, इसलिये टाइफ़ॉयड मे **बायोनिया** और **रस टॉक्स** काम देते हैं। इस सव को ध्यान मे

रखते हुए यह ध्यान रखना चाहिये कि नैट्रम म्यूर का असर धीरे-धीरे होता है, बहुत समय लग जाता है, इसलिये रक्तक्षीणता भी उस हालत में जब रोग धीरे-धीरे आया हो, यह औषधि उपयुक्त है।

रज स्राव की रक्तक्षीणता से कमजोरी कैल्कि कार्ब और पल्स में भी पायी जाती है। वीर्य-क्षय से कमजोरी चायना और ऐसिड फॉस में पायी जाती है।

(६) सूर्योदय के साथ सिर-दर्द होना और सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाना—सिर-दर्द में इस औषधि का स्थान किसी अन्य औषधि से कम नहीं है। विशेषतौर पर रक्त-क्षीण (Anemic) लड़कियों के सिर-दर्द में यह अत्यन्त उपयोगी है। रोगी अनुभव करता है कि सैकड़ों हथौड़ों की उसके सिर पर चोट पड़ रही है। कभी-कभी यह सिर-दर्द प्रातः १०-११ बजे शुरू होती है, ३ बजे सूर्य ढलने तक बनी रहती है, तब समाप्त हो जाती है। सिर-दर्द सामयिक (Periodical) होती है—प्रतिदिन, प्रति तीसरे या प्रति चौथे दिन। सिर-दर्द वेग से आता है, समय छोड़-छोड़ कर इसका दौर पड़ता है। इतना तीव्र होता है कि चिकित्सक बेलाडोना देने की सोचता है, परन्तु अगर रोगी का चेहरा पीला हो, वह रक्त-क्षीण हो, तो नैट्रम म्यूर से ही लाभ होगा। अगर चेहरा लाल हो, जल रहा हो, आंखें निकली पड़ रही हों, दर्द के साथ टपकन (Throbbing) हो, तब तो मेलिलोटस, बेलाडोना, नक्स वोमिका की तरफ ध्यान जायगा। नैट्रम म्यूर का सिर-दर्द प्रायः माहवारी के बाद होता है, शायद इसलिये क्योंकि खून जाने से रोगिणी रक्त-क्षीण हो जाती है। इस प्रकार की रक्तक्षीणता के कारण होनेवाले सिर-दर्द में चायना भी दिया जा सकता है। स्कूल में पढ़ने वाली छात्राओं के सिर-दर्द में नैट्रम म्यूर या कैलकेरिया फॉस उत्तम है। बहुत पढ़ने के बाद होनेवाले सिर-दर्द में अर्जेन्टम नाइट्रिकम या रूटा की तरफ ध्यान जाना चाहिये।

क्या नैट्रम म्यूर का रोगी 'सर्द' या 'गर्म' प्रकृति का है (Is he Chilly or Warm)—अभी हमने कहा कि नैट्रम म्यूर के रोगी का सिर-दर्द सूर्य के चढ़ने के साथ बढ़ता और घटने के साथ घटता है। इस औषधि की प्रकृति को देखते हुए इसका क्या अर्थ है? इसका यही अर्थ तो हो सकता है कि क्योंकि सूर्य की गर्मी से इसका सिर-दर्द बढ़ता है इसलिये यह औषधि 'गर्म'—Hot—है। डा० कैन्ट अपनी 'मैटीरिया मैडिका' के पृ० ७३० पर लिखते हैं—"Both Natrum Carb and Natrum Mur have the general nervous tension of Natrum, but one is a chilly patient, the other is warm-blooded"—इसका यही अर्थ है कि नैट्रम कार्ब 'शीत-प्रधान' (Chilly) है, नैट्रम म्यूर 'ऊष्णता-प्रधान' (Warm) है। परन्तु कैंट की रिपर्टरी में नैट्रम म्यूर की गणना 'शीत-प्रधान' (Chilly) औषधियों में भी की गई है। इस विरोध

का कारण यह है कि यद्यपि 'व्यापक-लक्षणो' (Generals) की दृष्टि से यह औषधि ऊष्ण-प्रकृति की है, तो भी 'एकागी-लक्षणो' (Particulars) की दृष्टि से यह औषधि शीत-प्रकृति की हो सकती है। रोगी ऊष्ण-प्रकृति का है इसलिये सिर-दर्द मे ठड पसन्द करता है, बन्द कमरे मे रोग बढ जाता है, खुली हवा चाहता है। डा० वीलर अपनी पुस्तक 'इन्ट्रोडक्शन टु दि प्रैक्टिस एण्ड प्रिन्सिपल्स ऑफ़ होम्योपैथी' मे लिखते हैं "The circulation being poor Natrum Mur patients are chilly and lack vital warmth, but also they greatly need air and resent close rooms and overmuch external heat of any kind". डा० बर्नेट अपनी पुस्तक 'गाउट एन्ड इट्स क्युर' मे लिखते हैं "मैं नैट्रम म्यूर का गठिये मे बहुतायत से प्रयोग करता हू। जब रोगी ने कुनीन का अधिक इस्तेमाल किया हो, 'शीत-प्रकृति' (Chilly) का हो, समुद्री हवा से गठिये का रोग उभर आता हो, तब नैट्रम म्यूर ६ शक्ति विचूर्ण को प्रति तीन घटे बाद देने से दो दिन मे गठिया शान्त हो जाता है।" यह उदाहरण भी हमने सिर्फ यही बतलाने के लिये दिया है कि नैट्रम-म्यूर का 'व्यापक-लक्षण' तो 'ऊष्णता-प्रधान' होना ही है, कैन्ट ने इसे जो 'ऊष्णता-प्रधान' लिखा है, वह इसका 'व्यापक-लक्षण' है, परन्तु किन्ही 'एकागी-लक्षणो' मे यह 'शीत-प्रधान' भी हो सकता है। इस प्रकार के 'व्यापक' तथा 'एकागी' लक्षणो मे पारस्परिक-विरोध की चर्चा हमने कौक्कस कैक्टाई मे भी की है।

(७) सविराम-ज्वर (मलेरिया) में १० बजे प्रात ज्वर आना—प्राय सभी होम्योपैथिक-चिकित्सक जानते हैं कि ज्वर मे इस औषधि का महत्वपूर्ण स्थान है। मलेरिया बुखार मे, जब ज्वर जड से नही गया परन्तु कुनीन से दवा दिया गया है, तब इसकी विशेष उपयोगिता है। ऐसे ज्वर मे रोगी को सवेरे **१०-११ बजे** के बीच मे ठड लगने लगती है। ठड लगने के समय के लक्षण को देखकर अनेक रोगियो को औषधि दी जाती है। उदाहरणार्थ—

नैट्रम म्यूर—१०-११ बजे के बीच ठड लगना शुरु होता है
युपेटोरियम पर्फ—७ बजे प्रात ठड लगने लगती है
एपिस—३ बजे दोपहर ठंड लगने लगती है
लाइकोपोडियम—४ बजे शाम ठड लगने लगती है
आर्सेनिक—दोपहर या रात १ बजे से २ बजे के बीच ठड लगने लगती है

इसमे सन्देह नहीं कि सविराम-ज्वर (मलेरिया) मे, और खास कर क्रौनिक मलेरिया में, रोग को दूर करने में सर्वोच्च स्थान **नैट्रम म्यूर** का है। इस औषधि से सविराम-ज्वर के जितने रोगी ठीक हुए हैं उतने अन्य किसी औषधि से नही। दूसरी औषधि जो इस क्षेत्र मे **नैट्रम म्यूर** के आस-पास पहुँचती है, **आर्सेनिक** है। **नैट्रम म्यूर** के ज्वर मे जो स्पष्ट लक्षण होते हैं, वे निम्न हैं

i ज्वर का १०-११ बजे के बीच प्रात ठंड लगने से आक्रमण शुरु होना।
ii ठड पावो तथा हाथो की अगुलियो से शुरु होती है।
iii ठड बहुत जबर्दस्त लगने लगती है।
iv. ठड, गर्मी, पसीना—इन तीनो हालात मे असहनीय सिर-दर्द होता है।
v तीनो हालात मे जबर्दस्त प्यास होती है—ठड मे भी प्यास लगती है।

(८) **छींकों के साथ बहने वाला कच्चे अडे की सफेदी-जैसा जुकाम**—यह जुकाम, बहनेवाला, ऐसा जैसे कच्चे अडे की सफेदी का होता है ' शुरु-शुरु मे लगातार तेज छीकें आती हैं , या यह पनीला होता है, या ग । सफेद । साधारण तौर पर तो यह पनीला ही होता है, परन्तु कई नजले के क्रौनिक रोगियो का स्राव गाढा सफेद होता है । डा० बोरिक 'मैटीरिया मैडिका' मे लिखते हैं कि अगर जुकाम छीको के साथ शुरु हो, तो इस औषधि की ३० शक्ति की एक मात्रा देने से वह रुक जाता है।

(९) **नमक के लिये विशेष चाह होना**—रोगी को नमकीन वस्तुए खाने की विशेष चाह होती है। हर वस्तु मे नमक चाहता है। घर के लोग जानते हैं कि उसे नमक अधिक चाहिये। **कॉस्टिकम और कैलकेरिया** मे भी नमक के लिये अस्वाभाविक-इच्छा होती है । **नेट्रम** का रोगी समुद्र तट पर या समुद्री हवा मे जिसमे नमक अधिक होता है अच्छा नही अनुभव करता। उसके रोग का कारण अधिक नमक खाना होता है इसलिये जब समुद्र-तट पर उसे हवा मे अधिक नमक मिलने लगता है तब उसकी तबीयत खराब हो जाती है। डा० बर्नेट लिखते हैं कि एक रोगी को 'स्नायु-शूल' (Neuralgia) था। जब स्नायु-शूल की सब दवाए देकर वे हार गये, तब उन्होंने उसे समुद्र-तट पर जाकर रहने की सलाह दी। समुद्र-तट की हवा से उसका रोग और बढ गया। इस से डा० बर्नेट इस नतीजे पर पहुँचे कि समुद्री हवा ने, जिसमे नमक होता है, नमक के कारण उसे नुक्सान पहुँचाया। जो वस्तु जो रोग उत्पन्न करती है, शक्तिकृत होकर वही उसे ठीक भी कर देती है—इस नियम के आधार पर उन्होंने उसे **नेट्रम** म्यूर ६ शक्ति का दिया और वह झट ठीक हो गया । पल्स के रोगी को नमक का स्वाद अनुभव ही नही होता ।

(१०) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—
i मुह का निचला होठ बीच मे फट जाता है, खुश्की रहती है।
ii कोई दूसरा सामने हो तो रोगी पेशाब नही कर सकता।
iii जीभ पर बाल होने का अनुभव होता है।
iv जीभ पर नक्शा-सा बना होता है।
v. प्यास बहुत होती है।
vi गले मे फास चुभती-सी लगती है।

vii हिचकी को ठीक कर देता है। डा० वर्नेट लिखते हैं कि उन्होने इस औषधि से एक रोगी की १० साल पुरानी हिचकी दूर कर दी।

viii ज्वर मे होठ पर पानी के छाले उभर आते हैं।

(११) **नैट्रम म्यूर का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—दुबला-पतला, कमजोर, रक्त-शून्य, पीला चेहरा, फीका बदन, शोकातुर, रोने वाला परन्तु सहानुभूति दर्शाने पर बिगड जाने वाला, नमकीन चीजो मे रुचि, सर्द प्रकृति का परन्तु खुली हवा चाहनेवाला, सिर-दर्द तथा कब्ज का रोगी, पुराने नज़ले की शिकायत—यह है सजीव तथा मूर्त-चित्रण **नैट्रम म्यूर** का।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**–१२, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है, परन्तु किन्ही-किन्ही लक्षणो मे 'शीत'—Chilly—भी है)

[नैट्रम म्यूर का बायोकैमिक उपयोग]

नैट्रम म्यूर का होम्योपैथिक वर्णन हम ऊपर कर आये हैं, अब इसका वायोकैमिक वर्णन करेंगे। **नैट्रम म्यूर** नमक को कहते हैं। बायोकैमिस्ट्री के प्रवर्तक शुस्लर का कहना है कि **नैट्रम म्यूर** जब शरीर के 'कोष्ठको' मे पहुँचता है, तब नमक के कारण उसमे तरी आती है। नमक का काम पानी को खीचना है—यह सब-कोई जानते हैं। इस प्रकार जब शरीर के 'कोष्ठको' (Cells) मे तरी आती है, तब 'कोष्ठक' बढने लगते हैं, एक 'कोष्ठक' के अनेक 'कोष्ठक' हो जाते हैं। अगर शरीर मे **नैट्रम म्यूर** (नमक) न हो, तो कोष्ठको मे पानी नहीं जायगा, उन्हें तर नही करेगा, परन्तु शरीर मे जहा है वही इकट्ठा होने लगेगा, जलाधिक्य हो जायगा। जैसे शरीर मे **फेरम फॉस** की कमी के कारण भिन्न-भिन्न स्थानो मे रुधिर इकट्ठा हो जाता है, उन स्थानो मे रुधिर के इकट्ठे होने से कभी-कभी रुधिर-स्राव भी होने लगता है, उसी प्रकार **नैट्रम म्यूर** की कमी के कारण शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे जल इकट्ठा हो जाता है, 'कोष्ठको' मे नहीं पहुँचता। इसी से जलोदर (Dropsy) आदि रोग हो जाते हैं, मस्तिष्क मे भी जल-सचित हो जाता है जिसे हाइड्रोसेफेलस (Hydrocephalus) कहते हैं। ऐसे रोगियो का चेहरा पीला-सा हो जाता है, फूला-फूला-सा रहता है। **नैट्रम म्यूर** की कमी के कारण रोगी के जिस्म मे 'कोष्ठक' पानी को जज्ब नही करते, इसीलिये इधर-उधर पानी भरने लगता है, ज्ञान-तन्तुओ मे थकावट बनी रहती है, रोगी निद्रा-की-सी अवस्था मे पडा रहता है। पानी क्योकि जज्ब नहीं होता इसीलिए आखो से पानी बहने लगता है। रुलाई जल्दी-जल्दी आती है, और ज़रा-सी बात पर रोगी की आखो से झरना-सा फूट पड़ता है। जुकाम मे पानी की धार नाक से बहने लगती है, दात मे दर्द हो तो दर्द के साथ दातों से खूब लार बहती है। रोगी को पनीले दस्त आते हैं। इन

पनीले दस्तो का कारण यह है कि स्वस्थ अवस्था मे आतो की झिल्ली का काम शरीर मे विद्यमान **नैट्रम म्यूर** की सहायता मे पाये हुए पानी को वीना पोर्टा मे डाल देना है, परन्तु जव **नैट्रम म्यूर** की शरीर मे कमी हो जाय, तब यह पानी वीना पोर्टा मे न जाकर आतो के रास्ते ही वाहर निकलने लगता है और इसी को पनीले दस्त कहते हैं। अगर म्यूकस-सेलो मे **नैट्रम म्यूर** की कमी हो जाय, तो पानी के साथ-साथ दस्तो मे आँव भी आने लगती है।

शरीर की त्वचा के भीतर अगर **नैट्रम म्यूर** की कमी हो जाय, तव चमडी पर शुद्ध पानी के छाले पड जाते हैं जिनमे सिर्फ पानी नजर आता है। ये छाले इसलिये पडते हैं क्योकि कोष्ठको मे नमक की कमी के कारण पानी का शरीर मे सम-विभाजन नही होता और वह शरीर से वाहर निकलने लगता है। इस प्रकार के छाले हो जाने पर **नैट्रम म्यूर** अच्छी दवा है। **कैलि म्यूर** के फोडे-फुन्सियो मे शुद्ध पानी नही, परन्तु फाइव्रीन के कारण सफेदी होती है, अत इन दोनो मे भेद करना आसान है। जैसे **नैट्रम म्यूर** मे त्वचा पर छाले पडते हैं वैसे आखो मे भी पानी का छाला पड जाया करता है, उसमे इस औषधि से लाभ होता है।

यह भी हो सकता है कि शरीर मे एक तरफ तो तरी ज्यादा हो, दूसरी तरफ़ खुश्की हो। यह इसीलिए होता है क्योकि **नैट्रम म्यूर** की किसी अग मे अधिकता के कारण उस तरफ पानी खिच जाता है, दूसरी तरफ अपने-आप खुश्की हो जाती है। उदाहरणार्थ, यह हो सकता है कि **नैट्रम म्यूर** की कमी के कारण पेट की कटार हो जाय, पेट मे पानी तथा श्लेष्मा की उल्टी आने लगे और इस पानी के खिच जाने से आतो मे खुश्की आ जाय, कब्ज हो जाय। ऐसा वहुधा पाया भी जाता है। इसीलिये **नैट्रम म्यूर** जहा अधिक तरी की दवा है, वहा अधिक खुश्की की भी दवा है। खुश्की के कारण रोगी की जीभ फटी-सी रहती है।

नैट्रम म्यूर के वीमार को नमकीन चीज़ो की वहुत इच्छा रहती है, वह हर समय नमकीन चीजें खाना चाहता है। यह इसलिये होता है क्योंकि उसमे नमक की कमी हो जाती है, और प्रकृति उस कमी को पूरा करना चाहती है। परन्तु अधिक मात्रा मे नमक खाने से वह कमी पूरी नही हो सकती क्योकि शरीर मे सूक्ष्म रूप मे जाने से ही वह कमी पूरी हो सकती है। उसमे वह नमक कम है—**नैट्रम म्यूर** का सूक्ष्म रूप—जिसकी मदद से वह गेंहूँ, चना, दाल आदि वस्तुओ में मौजूद नमक को अपने शरीर मे रचा सके। इस कमी को तभी पूरा किया जा सकता है अगर सूक्ष्म रूप के नमक का सेवन किया जाय जैसा वायोकैमिस्ट्री के **नैट्रम म्यूर** का होता है। ऐसे लोगो का मुख भी अक्सर नमकीन-सा रहता है क्योकि जो नमक जज्ब होना चाहिये था वह जज्ब न होकर रिसता-

सा रहता है। इनके स्राव मे भी नमकीनपन होता है, इनके ज़ख्म भी काट करते हैं क्योकि उनमे भी नमक होता है जो ज़ख्म मे लगता है। **नैट्रम म्यूर** का मुख नमकीन-सा रहता है।

नैट्रम म्यूर का रोगी ठड ज़्यादा महसूस करता है क्योकि उसके जिस्म का पानी शरीर मे जज्ब न होकर भिन्न-भिन्न अगो मे भर जाता है। इसी ठड लगने के लक्षण पर इस औषधि का मलेरिया मे सफल प्रयोग होता है। रोगी के हाथ-पैर ठडे रहते हैं, रीढ की हड्डी के साथ-साथ ठड का अनुभव होता है।

यह शुस्लर के १२ लक्षणो मे से एक है। बायोकैमिस्ट लोग इसका ३X, ६X मे प्रयोग करते हैं। होम्योपैथी मे भी इसके प्राय वे ही लक्षण हैं जो बायोकैमिस्ट्री मे कहे जाते हैं। होम्योपैथ इसका उच्च-शक्ति मे—३०, २००, १००० मे—सफलतापूर्वक प्रयोग करते हैं। होम्योपैथी मे इसका बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

नैट्रम फ़ॉसफ़ोरिकम (NATRUM PHOSPHORICUM)

[नैट्रम फॉस का बायोकैमिक उपयोग]

मनुष्य जो भोजन करता है, उस से पेट मे कई ऐसिड पैदा हो जाते हैं, जिनमे से एक लैक्टिक ऐसिड है। अगर यह पेट मे ही पडा रहे और इसे बाहर निकाल फेंकने की कोई तदवीर न हो, तो वहा पडा-पडा ऐसिडिटी पैदा करे, खट्टे डकार आने लगें, खट्टी उछाली आये तथा ऐसिडिटी के अन्य उपद्रव उठ खडे हो जायें। **नैट्रम फॉस** का काम इस लैक्टिक ऐसिड के साथ सपर्क मे आकर लैक्टिक ऐसिड को तोड देना और इसे 'कार्बोनिक ऐसिड' और 'पानी' मे विभक्त कर देना है। लैक्टिक ऐसिड को इस प्रकार तोडकर **नैट्रम फॉस** कारबोनिक ऐसिड को फेफडो मे ले जाता है, और वहा से इसे सास द्वारा बाहर फेंक देता है। पानी पेशाव के रास्ते निकल जाता है। अगर शरीर मे **नैट्रम फॉस** की कमी हो जाय तो लैक्टि ऐसिड बाहर न निकल कर पेट मे पडा रहे, और पेट मे ऐसिडिटी उत्पन्न हो जाय। ऐसिडिटी का परिणाम खट्टे डकार, खट्टी कय होती है, कय मे पनीर की तरह का कुछ पदार्थ पेट से निकलता है। ऐसिडिटी—अम्ल की अधिकता—के कारण पीले-नीले दस्त आने लगते हैं, पेट मे दर्द होने लगता है। बच्चो को जब दूध या मीठा अधिक दिया जाता है, तब उनके पेट मे भी लैक्टिक ऐसिड की मात्रा अधिक हो जाती है, और उनका हाज़मा विगड जाता है, उनसे खट्टेपन की बू आने लगती है। ऐसी अवस्था मे **नैट्रम फॉस** लाभ करता है। **नैट्रम फॉस** से पेट के कीडे भी निकल जाते हैं।

लैक्टिक ऐसिड की तरह यूरिक ऐसिड भी शरीर मे पैदा होता रहता है। वह या तो गर्मी से हल होता है, या **नैट्रम फॉस** से। अगर **नैट्रम फॉस** की

शरीर मे कमी हो, तो यूरिक ऐसिड हल होने के बजाय जोड़ो मे बैठने लगता है जिससे गठिये की शिकायत हो जाती है। गठिया तथा वात-रोग मे यह लवण बहुत उपयोगी है। नैट्रम फॉस वात-रोग (Rheumatism) और पेट के खट्टे की मुख्य दवा है।

घी आदि चर्बी के पदार्थों को भी नैट्रम फॉस ही पचाता है। जिन्हें घी आदि गरिष्ठ पदार्थ खाने से अपचन हो जाय, उन्हें इसी लवण का प्रयोग करना चाहिये। इसके सेवन से व्यक्ति घी आदि मे बने पदार्थों को खाकर पचा सकेगा।

हम ऊपर कह आये हैं कि नैट्रम फॉस का काम लैक्टिक ऐसिड को तोड़ देना है। अगर नैट्रम फॉस की शरीर मे कमी हो जाय, तो हम जो खाते-पीते हैं उससे लैक्टिक ऐसिड बनता रहता है। हम जो दूध पीते हैं उससे शुगर का खमीरा बनकर लैक्टिक ऐसिड बनने का क्रम जारी रहता है। यह लैक्टिक ऐसिड जहां पेट मे ऐसिडिटी पैदा करता है, वहां साथ ही शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों में पहुंचता भी रहता है। जहां-जहां लिम्फैटिक ग्लैण्ड्स हैं, वहां लैक्टिक ऐसिड पहुंच कर लिम्फ मे विद्यमान ऐल्ब्यूमिन को जमा देता है। नैट्रम फॉस की कमी से जब लिम्फैटिक ग्लैड्स की ऐल्ब्यूमिन जम जाती है, तब ये ग्लैण्ड्स सूज जाते हैं। ग्लैण्ड्स की यही सूजन तपेदिक की प्रथम अवस्था है। इस अवस्था मे अगर नैट्रम फॉस दे दिया जाय, तो वह लैक्टिक ऐसिड को शरीर मे नही रहने देगा और इसलिए ग्लैड्स—ग्रंथिया—नही सूजेंगे। तपेदिक की प्रथम-अवस्था मे जब ग्रंथि-शोथ प्रारम्भ होने लगे तो नैट्रम फॉस देना चाहिये, द्वितीय अवस्था मे मैग्नेशिया फॉस।

हम कैलकेरिया सल्फ के प्रकरण मे लिख आये हैं कि इसका काम पस को सुखा देना है। पहले तो शुस्लर ने अपने १२ लवणो मे इसे स्थान दिया था, परन्तु आगे चल कर वे व्रणो की पस को सुखाने के लिये नैट्रम फॉस या साइलीशिया से काम लेने लगे और कैलकेरिया सल्फ को अपने लवणो मे से निकाल कर लवणो की सख्या १२ की जगह ११ कर दी। हम यहा इस बात का उल्लेख इसलिये कर रहे हैं क्योकि नैट्रम फॉस का काम फोड़ो की पस को सुखाना भी है। नैट्रम फॉस और साइलीशिया का पस को सुखाने मे जो आपसी सबध है, उसे देख कर बायोकैमिस्ट्री की पुस्तको मे साइलीशिया को नैट्रम फॉस का क्रौनिक कहा गया है, इसे शोथ मे दिया जाता है।

[नैट्रम फॉस का होम्योपैथिक उपयोग]

जिस प्रकार यह लवण बायोकैमिस्ट्री मे प्रयुक्त होता है उसी प्रकार शक्तिकृत रूप मे होम्योपैथी मे भी प्रयुक्त होता है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि बीस वर्ष से वे इसका अनेक रोगियो पर सफलतापूर्वक उपयोग करते रहे हैं। इसके उपयोग के लिये मुख्य-रोग निम्न हैं—

1 पुरानी बदहजमी—ऐसिडिटी—(Chronic dyspepsia—

Acidity)—इस औषधि का प्रमुख लक्षण ऐसिडिटी है, खट्टापन। रोगी के हर-एक अग पर इसका प्रभाव पडता है। प्रात काल उठने पर रोगी का मुख खट्टा-खट्टा होता है और यह खट्टापन दिन भर बना रहता है। रोगी को खट्टे डकार आते रहते हैं, खट्टी उल्टी आती है, ऐसिडिटी, के कारण सिर-दर्द होता है, चक्कर आते हैं।

ii **खट्टी गंध**—ऐसिडिटी की जब और जहा अधिकता हो, तब **नैट्रम-फॉस** पर ही ध्यान जाना उचित है। प्रदर मे पनीला, मलाई का-सा सफेद स्राव निकलता है, खुजली होती है। इस स्राव से भी खट्टी बू आती है, रोगिणी इससे बडी परेशान रहती है।

iii **बच्चों के हरे, खट्टी बू के दस्त**—बच्चो को हरे-हरे, खट्टी बू वाले दस्त आते हैं जिसका कारण ऐसिडिटी का बढ जाना है। ऐसिडिटी इस औषधि का 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) है।

iv **स्नायविक चिड़चिड़ापन** (Nerves in a fret)—डा० कैन्ट लिखते हैं कि जिन लोगो के स्नायु मानसिक-कार्य, दुश्चरित्रता, व्यभिचार आदि दुष्कर्मो के कारण चिडचिडाते रहते हैं, जिनके लक्षण प्रात काल, सायकाल, रात्रि तथा मध्य-रात्रि मे बढ जाते हैं, उनके स्नायु-रोग को यह दूर कर देती है। मैथुन के बाद जिन लोगो को स्नायु-मडल के रोग सताते हैं उनके लिये यह विशेष लाभप्रद है। इस औषधि को 'स्नायु-औषधि' (Nerve remedy) कहा जा सकता है।

v **मेरु-दंड की उत्तेजना**—मेरु-दड मे जलन, खासकर कमर के नीचे के हिस्से मे जलन इस औषधि मे पायी जाती है।

शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है। रोगी घी, चर्बी, ठंडा भोजन, खट्टी चीजें नही खा सकता)

नैट्रम सलफ्यूरिकम (NATRUM SULPHURICUM)

[नैट्रम सल्फ का बायोकैमिक उपयोग]

शरीर मे जो ऐलब्यूमिन है उसमे सल्फर होता है जिसका शरीर मे सलफ्यूरिक ऐसिड बनता रहता है। अगर यह सलफ्यूरिक ऐसिड अपनी ऐसिड की हालत मे ही बना रहे, तो शरीर के सब तन्तुओ को खा जाये, नष्ट कर दे। इसलिये शरीर की रक्षा के लिये इस सलफ्यूरिक ऐसिड को तोडना आवश्यक है।

यह सलफ्यूरिक ऐसिड जब शरीर मे विद्यमान सोडियम कार्बोनेट से मिलता है तब टूट कर सोडियम सल्फेट, कार्बोनिक ऐसिड तथा जल—इन तीन हिस्सो मे बंट जाता है। इन तीनो में से कार्बोनिक ऐसिड तो फेफडो

के जरिये, श्वास द्वारा बाहर निकल जाता है, मूत्र आदि द्वारा जल बाहर निकल जाता है, शेष सोडियम सल्फेट रह जाता है। इसी सोडियम सल्फ़ेट को **नैट्रम सल्फ** कहते हैं। **नैट्रम सल्फ** का वायोकैमिक-दृष्टि से क्या काम है ?

हम पहले **नैट्रम म्यूर** का वर्णन कर आये हैं। **नैट्रम सल्फ** भी **नैट्रम म्यूर** की श्रेणी का है क्योकि दोनो लवण 'नैट्रम' हैं—नैट्रम, अर्थात् सोडियम। एक ही श्रेणी के होते हुए भी इन दोनो का कार्य एक-दूसरे से विरोधी है। दोनो पानी को खीचते हैं, परन्तु **नैट्रम म्यूर** का कार्य तो शरीर के 'कोष्ठको' (Cells) मे पानी को खीच कर कोष्ठको की वृद्धि करना है, और **नैट्रम सल्फ** का काम, जैसा हमने अभी देखा, सलफ्यूरिक ऐसिड को तोड कर एक तरफ **नैट्रम सल्फ** की वृद्धि करते जाना, और साथ-साथ सलफ्यूरिक ऐसिड का पानी खीच कर उसे बाहर निकालते जाना है। **नैट्रम म्यूर** द्वारा जल शरीर के काम आ जाता है, उससे शरीर के 'कोष्ठको' की वृद्धि होती है; **नैट्रम सल्फ** द्वारा सलफ्यूरिक ऐसिड को तोडकर जो जल वनता है वह अवाछनीय होता है, उसे शरीर से निकाल देना है। **नैट्रम सल्फ** की शरीर में कमी हो तो वह नही निकलता, कोष्ठको और ततुओ के वीच जो स्थान है, उसमे जमा होने लगता है। उदाहरणार्थ, जिगर के वढने का अर्थ यह नही है कि जिगर के 'कोष्ठक' (Cells) वढ गये, उसका यह अर्थ है कि जिगर के पित्त (Bile) उत्पन्न करने वाले कोष्ठको और ततुओ (Cells and Tissues) मे जो स्थान है उसमे वाहर निकल जाने की अपेक्षा जल वहा इकट्ठा हो गया जिससे जिगर वढ गया। इसका वायोकैमिक इलाज **नैट्रम सल्फ** है। अगर शरीर मे **नैट्रम सल्फ** की कमी हो जाय, तो जिगर पर दो प्रकार का प्रभाव पडेगा। पहला प्रभाव तो यह होगा कि कोष्ठको के रिक्त-स्थान मे पानी भर जाने के कारण जिगर बडा मालूम होने लगेगा, दूसरा प्रभाव यह होगा कि इन कोष्ठको पर पानी के दवाव पडने से इस दबाव के कारण जिगर के कोष्टकों मे से पित्त ज्यादा निकलेगा। जव जिगर के कोष्ठको मे से पित्त ज्यादा निकलेगा, तव पीले-पीले दस्त आने शुरु हो जायेंगे, और कुछ देर बाद जब कोष्ठको मे पित्त की कमी हो जायेगी तब सफेद दस्त आने लगेंगे। इसी तरह जिगर की जगह अगर तिल्ली के 'अन्त -कोष्ठीय-तन्तुओ' (Inter-cellular tissues) मे **नैट्रम सल्फ** की कमी हो जाय, तो तिल्ली के तन्तुओ की वीच की जगह मे पानी भरने लगेगा, तिल्ली वढ जायेगी। इसलिये जहा जिगर बढने मे **नैट्रम सल्फ** दिया जाता है वहा तिल्ली बढने मे भी यही लवण दिया जायगा। मोटी वात यह है कि **नैट्रम म्यूर** की कमी से कोष्ठकों (Cells) की बढती पानी जज्ब न होने से रुक जाती है, **नैट्रम सल्फ** की कमी से कोष्ठको के बीच के स्थान मे पानी भर जाने से 'अन्त कोष्ठीय वृद्धि' (Inter-cellular growth) हो जाती है, शरीर को **नैट्रम म्यूर** पूरा मिलेगा तो कोष्ठको की वृद्धि ठीक

होगी, **नैट्रम सल्फ** पूरा मिलेगा तो अन्त -कोष्ठीय जल-सचय न होने के कारण अस्वाभाविक 'अन्त कोष्ठीय-वृद्धि' नही होगी। **नैट्रम म्यूर** शरीर मे पानी को जज्व करता है, **नैट्रम सल्फ** शरीर के अवाछनीय पानी को वाहर फेंकता है। **नैट्रम म्यूर** कम हो तो शरीर का पानी जज्व होने के बजाय फिकने लगेगा, **नैट्रम सल्फ** कम हो जाय तो शरीर का गन्दा पानी शरीर मे से निकल जाने के वजाय शरीर मे जमा होने लगेगा। शरीर के कोष्ठको की वृद्धि दो तरह से रुक सकती है। या तो यह हो सकता है कि शरीर के कोष्ठको को तरी नही मिल रही। उस हालत मे जिगर आदि बढते नही, शरीर मे सूखापन आ जाता है, और **नैट्रम म्यूर** देने से वह अवस्था सुधर जाती है। या, यह हो सकता है कि शरीर के 'अन्तः-कोष्ठीय-तन्तुओं' (Inter-cellular-tissues) मे गन्दा पानी जमा होने लगता है और उसके दवाव से कोष्ठक पिचके रहते हैं, वढ नहीं पाते। उस हालत मे पानी जमा हो जाने के कारण शरीर मे मोटापन आ जाता है, जिगर वढ जाता है, तिल्ली वढ जाती है या पेट मे पानी भर कर जलोदर हो जाता है। ऐसी हालत मे **नैट्रम सल्फ** दिया जाता है। **नैट्रम म्यूर** मे पानी वहता है, **नैट्रम सल्फ़** मे अवाछनीय पानी शरीर मे जमा होने लगता है। पानी जमा होने का यह मतलब नही है कि **नैट्रम सल्फ** मे पनीले दस्त या वहुमूत्र रोग नही हो सकता। अभी कहा जा चुका है कि जव 'अन्त -कोष्टीय-तन्तुओ' (Inter-cellular-tissues) मे जल रुक जाता है, तव उस पानी के दवाव से जिगर के कोष्ठक पिचक जाते हैं, और वे इस दवावके कारण पित्त का स्राव अधिक करने लगते हैं। वह पित्त आतों मे उत्तेजना पैदा करके दस्त ले आता है। परन्तु इन दस्तो के आने पर भी जिगर के 'अन्त -कोष्ठीय-ततुओं' मे अवाछनीय पानी भरा रहता है। इस प्रकार जिगर मे जल-सचय के कारण उसके वढ जाने, पीले दस्त आने मे यह अत्युत्तम दवा है। कभी-कभी शरीर के सफेद कोष्ठको (White blood corpuscles) का जल **नैट्रम सल्फ** की कमी के कारण किसी जगह इकट्ठा हो जाता है। जल के दूसरी जगह जाकर इकट्ठा हो जाने के कारण ये कोष्ठक मर जाते हैं। शरीर मे सफेदी नज़र आने लगती है जिसे ल्यूकीमिया कहते हैं। अगर ल्यूकीमिया मे शरीर के किसी स्थान पर जल सचित हो जाय, तो यह उत्तम दवा है।

शुस्लर का कथन है कि **नैट्रम सल्फ** का मूत्र-प्रणाली (Urinary canal), पित्त-प्रणाली (Biliary duct), पैंक्रियाटिक-प्रणाली (Pancreatic duct), आतो के एपीथीलियल सेल्स तथा नर्व्स पर उत्तेजक प्रभाव होता है।

मूत्र-प्रणाली के जो एपीथीलियल सेल्स होते हैं उनमे **नैट्रम सल्फ़** होता है **जिसके कारण** शरीर का अनावश्यक तथा अवाछनीय जल मूत्र के रूप में वाहर **निकल जाता** है। अगर मत्र-प्रणाली मे **नैट्रम सल्फ की** कमी हो, तो मूत्र जमा

होने लगेगा, और क्योंकि नर्व्स को भी यही लवण उत्तेजित करता है इसलिये इसकी कमी के कारण मूत्राशय की नर्व्स काम नहीं करेंगी और पेशाब बूंद-बूंद स्वयं टपकेगा। अगर 'ज्ञान-तंतुओं' (Sensory nerves) में **नैट्रम सल्फ** की कमी होगी तो पेशाब बूंद-बूंद आयेगा, अगर 'क्रिया-तंतुओं' (Motor nerves) में इस लवण की कमी होगी तो पेशाब आयेगा ही नहीं, रुक जायगा।

जैसे मूत्र-प्रणाली के ऐपीथीलियल सेल्स तथा नर्व्स पर इस लवण का प्रभाव है, वैसे ही पित्त-प्रणाली पर भी इसका प्रभाव है। इस प्रभाव का कारण हम पहले ही लिख आये हैं। इसका कारण 'अन्तः-कोष्ठीय-तंतुओं' (Inter-cellular tissues) में जल का संचित हो जाना है। इस जल-संचय से पित्त-प्रणाली के कोष्ठकों पर दबाव पड़ता है और वे अधिक पित्त निकालने लगते हैं, कुछ देर अधिक पित्त निकल जाने से पित्त निकलना बन्द भी हो जाता है। अधिक पित्त निकलने से पित्त-पथरी हो जाती है। इस अवस्था में **नैट्रम सल्फ** लाभ करता है।

पैंक्रियास का काम शूगर तथा अन्य कार्बो हाइड्रेट्स को हज़म करना है। पैंक्रियास शूगर को हज़म करने का काम **नैट्रम सल्फ** की सहायता से करता है। अगर **नैट्रम सल्फ** कम हो जाय, तो पैंक्रियास का काम ढीला पड़ जाता है, शूगर हज़म होनी बन्द हो जाती है। इसी को 'बहुमूत्र-रोग' (Diabetes) कहते हैं। इसमें भी **नैट्रम सल्फ** लाभ करता है।

इसीप्रकार अगर **नैट्रम सल्फ** आंतों को उत्तेजित न करे, तो कब्ज़ हो जाती, पेट में हवा भर जाती है। कब्ज़ तथा पेट की हवा में भी यह उपयुक्त है।

नैट्रम सल्फ की कमी के कारण शरीर के 'अन्तः-कोष्ठीय-तंतुओं' (Inter-cellular-tissues) में से जब अनावश्यक जल बाहर नहीं निकलता, तब वह अन्दर इकट्ठा होने लगता है, इसी से जलोदर (Dropsy), सिर में जल-संचय (Hydrocephalus), अंडकोषों में जल-संचय (Hydrocele) आदि रोग होने लगते हैं जिन्हें यह लवण दूर कर देता है। शरीर में जब अधिक जल होगा तब जल के कारण जो बीमारियां होती हैं वे भी होने लगेंगी। इन्फ्लुएनज़ा नमी की बीमारी है इसलिये **नैट्रम सल्फ** इन्फ्लुएनज़ा की बढ़िया दवा है।

शरीर में पानी बढ़ जाने से यह तो स्पष्ट है कि इस लवण का रोगी सर्दी अनुभव करेगा, इसलिये सर्दी लगकर चढ़ने वाले बुखारों में इसका अच्छा इस्तेमाल होता है। पित्त के बुखार में, पित्त की कय में, पित्त के दस्तों में इसका प्रयोग होता है। शरीर में कहीं पानी का संचय हो जाय, पानी की वजह से शरीर फूल जाय, शरीर में तर फुन्सियां हों जिनमें पीला-पीला या नीला-नीला पानी भरा हो, जुकाम में पीला या नीला मवाद निकले—इस सब में **नैट्रम सल्फ** लाभदायक है। बच्चों के जिगर बढ़ने की यह उत्तम दवा है। जिन लोगों को सील में, पानी के नजदीक, बरसात में शिकायत हो जाती है, उन्हें यह लाभ

करता है। ऐसे लोगो का शरीर 'जल-सचीय-शरीर' (Hydrogenoid Constitution) कहलाता है क्योकि उनके शरीर मे जल की मात्रा अधिक होती है। ये लोग सब्जियाँ खाने से बीमार हो जाते हैं, वायु-मडल मे नमी को बर्दाश्त नही कर सकते।

[नैट्रम सल्फ का होम्योपैथिक उपयोग]

(१) **रोगी तर हवा सहन नहीं कर सकता, परन्तु सूकी हवा मे अच्छा रहता है**—इस औषधि का सर्व-प्रधान लक्षण इसकी 'प्रकृति' (Modality) है। रोगी तर हवा, समुद्री हवा, नम मौसम, आसमान मे बादल, बरसात आदि को सहन नही कर सकता। थोडी-सी भी तर हवा लगने से वह बीमार हो जाता है। पानी से पैदा होने वाले खरबूजे, तरबूज, ककडी आदि फल भी नही खा सकता। इनके खाने से उसका पेट बिगड जाता है, दस्त आने लगते है। सूखी हवा मे वह ठीक रहता है। कोई भी रोग क्यो न हो, अगर रोगी की ऐसी प्रकृति ऐसी है कि वह तर हवा को सहन नही कर सकता तो इसकी तरफ ध्यान जाना चाहिये। सीलन वाले घरो मे रहने से होने वाले रोगो के लिये इस औषधि से लाभ होता है।

(२) **प्रात २ से ३ या ४ से ५ दमे या किसी अन्य रोग का बढ़ना**—इसके रोगों मे समय का भी प्रभाव है। प्रात काल २ से ३ या ४ से ५ के समय रोग बढ जाता है। उदाहरणार्थ, अगर दमे का रोगी तर हवा को न सह सकता हो, खुश्क हवा मे आराम अनुभव करता हो, और उसका रोग सवेरे २ से ३ या ४ से ५ के समय बढ जाता हो, तो यह दवा लाभ करेगी। दस्तो मे भी यह लक्षण होने पर लाभ होता है।

(३) **दमा शुरु होने के साथ दस्त आने लगना**—डा० गुएरेन्सी लिखते हैं कि उन्होने एक स्त्री का दमा **नैट्रम सल्फ** से इस लक्षण पर ठीक कर दिया कि रोगिणी को दमे के आक्रमण होने के साथ ही दस्त भी आने लगते थे। दमे के रोगी के सबन्ध मे यह जान लेना आवश्यक है कि क्या रोगी का दमा नम मौसम मे बढ जाता है, क्या २ से ३ या ४ से ५ बजे प्रात काल बढ जाता है, क्या दमा शुरु होने के साथ ही दस्त भी आने लगते हैं। इन लक्षणो मे से किसी के, या सबके एक-साथ होने पर इस औषधि की तरफ ध्यान देना होगा।

(४) **नया या पुराना डायरिया**—डायरिया की भी यह उत्तम औषधि है। **सल्फर** का रोगी उठने से पहले ही टट्टी के लिये भाग पडता है, **थूजा** का रोगी एक कप चाय पीते ही रुक नही सकता; **नैट्रम सल्फ** और **ब्रायोनिया** का रोगी उठ कर जब कुछ चल-फिर लेता है तब उसे टट्टी जाने की हाजत होती है, यह हाजत एकदम आती है और पेट में गडगड शब्द होता है।

(५) **सिर-दर्द के समय मुह में लार आना**—डा० बलज़ार लिखने हैं कि एक लडकी को जिसे सिर-दर्द के साथ मुह मे लार भर जाती थी सिर्फ इस

लक्षण पर उन्होंने नैट्रम सल्फ से ठीक कर दिया। वह सिर-दर्द मे लार को बराबर थूकती रहती थी।

(६) **स्राव गाढ़ा, पीला या पीला-नीला होता है**—आंख, कान, पेट, फोड़ा, डिसैन्ट्री, गोनोरिया, प्रदर, दमा आदि सब रोगो मे स्राव गाढा होता है, पीला या पीला-नीला होता है। यह लक्षण पल्स जैसा है, परन्तु औषधि का निर्वाचन करते हुए नम मौसम तथा २-३ या ४-५ बजे लक्षणो के बढ जाने को ध्यान मे रखकर निश्चय करना होगा।

(७) **खासी मे ब्रायोनिया और नैट्रम सल्फ की तुलना**—दोनो मे खासी से छाती दुखने लगती है परन्तु **ब्रायोनिया** मे खासी सूकी होती है, **नैट्रम सल्फ** मे तर होती है।

(८) **खासी, दमा, न्यूमोनिया तथा तपेदिक में कैलि कार्ब और नैट्रम सल्फ की तुलना**—खासी, दमा, न्यूमोनिया, तपेदिक मे जो दर्द होता है वह **कैलि कार्ब** मे दाहिनी तरफ के फेफडे के नीचे के हिस्से मे होता है, **नैट्रम सल्फ** मे बायी तरफ के फेफडे के नीचे के हिस्से मे होता है।

(९) **सिर पर चोट के दुष्परिणाम**—डा० कैन्ट लिखते हैं कि सिर पर की चोट पर जब दर्द होने लगे, तब आर्निका से लाभ होता है, परन्तु अगर सिर पर की चोट के बाद मानसिक-लक्षण उत्पन्न हो जायें—स्मृति-नाश, अगो का फडकना, मृगी आदि—तब **नैट्रम फॉस** से लाभ होता है। अगर कोई रोगी चिकित्सक के आफिस मे आये, एकदम खडा हो जाये, कुछ देर तक खडा-खडा भ्रान्त-सा होने लगे, पसीना आ जाये, और ठीक होने पर कहे कि डाक्टर जब से मुझे सिर पर चोट लगी है तब से ऐसा होने लगा है, तो **नैट्रम सल्फ** से लाभ होगा।

(१०) **खुश्क से तर हवा होने पर या वसन्त-ऋतु मे होने वाले रोग**—खुश्क ऋतु से तर हवा की मौसम आ जाने पर अनेक रोग हो जाते हैं। वसन्त मे त्वचा के रोग प्रकट हो जाते हैं। हाथ-पैर की अगुलियो मे गलन दीखती है। गठिया सताने लगता है। इन सब अवस्थाओ मे इस से लाभ होता है।

(११) **पित्त-पथरी का दर्द**—इस औषधि का जिगर पर विशेष प्रभाव है। जिगर के दर्द मे रोगी दाहिनी तरफ नही लेट सकता। इस के द्वारा जिगर स्वस्थ-पित्त का निर्माण करने लगता है, और अगर पित्त की पथरी (Biliary calculi) बन भी गई होती है, तो उसे घोल देता है। इसे जिगर के रोगो की दवा (Liver remedy) कहा जाता है।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (रोगी के लक्षण रस टॉक्स तथा डलकेमारा की तरह तर हवा मे बढ जाते है, यह उसकी प्रकृति है)

नाइट्रिक ऐसिड (NITRIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) किसी अग मे खप्पच चुभने का-सा दर्द (Splincter-like pain)
(२) स्रावो का अगो को छीलते जाना (Corrosive discharges)
(३) त्वचा और श्लैष्मिक-झिल्ली की मिली हुई जगह का चटख जाना
(४) पेशाब मे से घोडे के पेशाव की-सी तेज वू आना और पेशाव का ठडा महसूस होना, पाखाने तथा पसीने से बदबू आना
(५) कब्ज या दस्त से पाखाने के बाद घटो चीसें पडना
(६) सिफिलिस तथा गोनोरिया मे उपयोगी
(७) गाडी की सवारी से तकलीफो का कम हो जाना, सवारी से बहरापन न रहना
(८) घी-चर्बी तथा नमक के लिये उत्कट-इच्छा (Craving for fat and salt)
(९) हठधर्मी स्वभाव, माफी मागने पर भी अपनी वात पर अडे रहना

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*सवारी से रोग के लक्षणो का कम हो जाना
(कौक्युलस का उल्टा)

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*शाम और रात को रोग-वृद्धि
*तापमान मे परिवतन से वृद्धि
*मौसम मे परिवर्तन से वृद्धि
*पसीना आने पर वृद्धि
*जागने पर रोग-वृद्धि
*जाडे मे ठड से रोग-वृद्धि

(१) किसी अग मे खप्पच चुभने का-सा दर्द (Splincter-like pain)—डा० क्लार्क का कहना है कि इस औषधि का एक मुख्य-लक्षण खप्पच चुभने या छिदने का-सा दर्द हो। शरीर के किसी भी भाग मे यह चुभन हो सकती है। उदाहरणार्थ, डिफ्थीरिया (गल-क्षत), गले की पीडा, ववासीर, न्यूमोनिया, ब्रौंकाइटिस, दस्त, पेचिश, सिफिलिस के फोडे, जाघो की गिल्टियो की सूजन, गोनोरिया, नाखून का अन्दर की तरफ मुडना, कान का रोग, भगन्दर, मस्से आदि किसी भी रोग मे अगर सुई या खप्पच चुभने जैसा दर्द हो, तो यह औषधि लाभ करती है। जिस अग मे रोग हो उसको छूने से ही चुभन होती है। गले मे निगलने से, गुदा मे मे मल निकलने से, मूत्राशय मे से पेशाब के आने से चुभन।

(२) स्रावो का अगों को छीलते जाना (Corrosive discharges)—शरीर के सव स्राव तेज होते हैं जिस अग को छूते हैं उसे छील-सा देते हैं। जुकाम हो जाय, तो नाक के दोनों नथुने नाक के स्राव से छिल जाते हैं, सूज जाते

हैं। कान पक जाय, तो कान के तेज़, काटने वाले स्राव से वे लाल हो जाते हैं। स्त्रियो के प्रदर मे स्राव इतना तेज़, काटने और छीलने वाला होता है कि अगो को ऐसा महसूस होता है मानो तेज़ाव लग गया हो। इसी प्रकार पेशाब, पाखाना, रज स्राव आदि मे स्राव तेज़ाव-सा तेज़ लगता है।

(३) **त्वचा और श्लैष्मिक-झिल्ली की मिली हुई जगह का चटख आना**—शरीर के जिस अग मे भी त्वचा और श्लैष्मिक-झिल्ली मिलती हैं, उस जगह पर अपना प्रभाव दिखलाना इस औषधि को विशेष प्रिय है। उदाहरणार्थ, मु ह के कोने, नाक, आख, मूत्र-प्रणाली, गुदा-प्रदेश, योनि-द्वार आदि जिन स्थानो पर त्वचा और श्लैष्मिक-झिल्ली मिलती है, वे स्थान चटख जाते हैं। इनके चटखने का कारण उन स्थानो से निकलने वाला तेज़ स्राव होता है। चटखने से इन स्थानो मे घाव हो जाते हैं।

गुदा-प्रदेश मे चटखने से घाव, पीडा और ववासीर के मस्से—गुदा-प्रदेश पर इस औषधि के समान अन्य किसी औषधि का इतना प्रभाव नही है। पाखाना इतना तेज, काटने और छीलनेवाला होता है कि वहा दरारें पड जाती हैं, वह स्थान चटख जाता है, वहा घाव हो जाते हैं, मस्से बाहर निकल आते हैं, वे भी चटखते है, खून निकलता है, मस्से अत्यन्त दर्द करते हैं, छूए नही जा सकते। इसका विशेष-लक्षण यह है कि नर्म पाखाना भी वडी दर्द के साथ आता है क्योकि गुदा-प्रदेश चटखा रहता है, और वहा से जव छील देने वाला पाखाने का स्राव आता है, तो भले ही वह पतला ही क्यो न हो, रोगी को तडपा देता है। रोगी पाखाना जाने के घटा-दो-घटा वाद तक आराम से नही बैठ सकता, भयकर पीडा से इधर-उधर चक्कर लगाया करता है। इस प्रकार की ववासीर मे यह अमोघ-औषधि है।

डिसेन्ट्री मे नाइट्रिक ऐसिड, नक्स और मर्क सोल की तुलना—डिसेन्ट्री मे पीडा तो इन तीनो औषधियो मे पायी जाती है, परन्तु **नक्स** मे रोगी पाखाना जाने के वाद आराम अनुभव करता है, **मर्क** मे हर समय—पाखाने के पहले, बीच में, और अत मे—मरोड वना रहता है, **नाइट्रिक ऐसिड** मे गुदा-प्रदेश की चटखन पर तेज़ स्राव के लगने से पीडा एक-दो घटे वनी रहती है।

(४) **पेशाव मे घोड़े के पेशाब की-सी बू आना और पेशाव का ठडा महसूस होना, पाखाने तथा पसीने से वदबू आना**—इस औषधि के पेशाव मे घोडे के पेशाव की-सी बू आती है। पेशाव थोडा आता है, बार-बार आता है, काले-भूरे रग का होता है, वदबूदार। किसी भी रोग मे इस लक्षण के होने पर यह देना उचित है। **बेनजोइक ऐसिड** तथा **सीपिया** मे भी घोडे के पेशाव की-सी बू आती रहती है। **सीपिया** मे वदबू के साथ पेशाव का रग लालिमा और खटास लिये होता है। उसका रग लाल होता है और बदबू के साथ पेशाब मे खट्टी

बू आती है। **नाइट्रिक ऐसिड** मे पेशाब मे से घोडे के पेशाब की-सी बू तो आती ही है, परन्तु पेशाव काटता हुआ निकलता है, और एक विचित्र-लक्षण यह है कि जब पेशाव निकलता है तब बिल्कुल ठडा महसूस होता है। पेशाब की बदबू के अतिरिक्त रोगी के पाखाने तथा पसीने से भी बदबू आती है।

(५) **कब्ज या दस्त से पाखाने के बाद घटों चीसें पड़ना**—यह तो हम लिख ही चुके हैं कि रोगी को पाखाने के वाद घटो चीसें पडती हैं, गुदा-प्रदेश मे चटखे हुए स्थानो पर लगने वाले पाखाने से, चाहे वह कब्ज़ से आये चाहे दस्तो के रूप मे, इतना दर्द होता है कि रोगी आराम से नही बैठ सकता, फ़र्श पर टहला करता है। हनीमैन ने लिखा है कि **नाइट्रिक ऐसिड** उन लोगो के लिये अधिक उपयुक्त है जिन्हें दस्त आया करते हैं, परन्तु क्लार्क ने लिखा है कि उन्होने इस औषधि का प्रयोग कब्ज़ दूर करने मे बहुत सफलतापूर्वक किया है। क्लार्क का कहना है कि रोगी मे औषधि के किसी लक्षण का न होना यह सूचित नही करता कि वह औषधि उस रोग के लिये उपयुक्त नही है। किसी लक्षण का होना तो 'होने का लक्षण' (Positive symptom) है, इस पर तो दवा का चुनाव होना ही चाहिये, परन्तु किसी लक्षण का न होना 'न होने का लक्षण' (Negative symptom) नही है, इस पर दवा को यू ही नही छोडा जा सकता। उदाहरणार्थ, रिपर्टरी मे **सीपिया** का लक्षण—'झुकने से रोग का बढना'—लिखा है, यह लक्षण किसी अन्य औषधि मे नही है। झुकने से रोगी को चक्कर आ जाता है, यह 'होने का लक्षण' (Positive symptom) है, अगर किसी रोगी मे यह लक्षण पाया जाय तो **सीपिया** ही औषधि है, परन्तु अगर किसी रोगी मे **सीपिया** के अन्य लक्षण पाये जायें और यह लक्षण न पाया जाये, तो 'न होने के लक्षण' (Negative symptom) के कारण सीपिया को दवा के रूप मे छोडा नही जा सकता। इसीलिये यद्यपि **नाइट्रिक ऐसिड** दस्तो के बीमारो के लिये उत्तम औषधि है, तो भी अगर कब्ज़ मे इसके दूसरे लक्षण मिल जायें, तो कब्ज मे भी **नाइट्रिक ऐसिड** औषधि होगी। उदाहरणार्थ, अगर कब्ज़ के रोगी मे घी-चर्बी और नमक की चीजो के लिये तीव्र-इच्छा (Craving) हो, जो कि इस औषधि का 'प्रकृतिगत-लक्षण' (Modality) है, तो दस्त न आने पर भी रोगी की प्रकृति के कारण **नाइट्रिक ऐसिड** कब्ज़ को दूर कर देगा।

(६) **सिफिलिस तथा गोनोरिया के लिये उपयोगी**—सिफिलिस की प्राथमिक तथा द्वितीय दोनो अवस्थाओ के लिये यह उपयोगी है, विशेष तौर पर द्वितीय-अवस्था के लिये जब रान को हड्डियो मे दर्द होने लगता है, खास कर यह दर्द सिर में और लम्बी हड्डियो तथा इन हड्डियो के आवरण पर विशेष तौर से होता है। सिफिलिस के उन रूमो मे भी यह उपयोगी है जो टेढ़े-मेढे

होते हैं, चौडाई मे ज्यादा फैलते हैं, गहराई मे कम जाते हैं, और जिनकी सतह कच्चे मास की-सी होती है।

गोनोरिया मे यह अत्यन्त प्रभावशाली दवा है। हनीमैन ने गोनोरिया मे **थूजा** तथा **नाइट्रिक ऐसिड** पर विशेष वल दिया है। लक्षणानुसार इनमे से एक औषधि पहले देकर जव वह अपना प्रभाव समाप्त कर ले, तव दूसरी देने से रोग ममूल नष्ट हो जाता है। ये दोनो एक-दूसरे से आगे-पीछे अनुपूरक के तौरपर दी जा सकती हैं। एक दवा जिस काम को शुरु करती है, दूसरी उसे पूरा कर देनी है। इसी प्रकार **रस टॉक्स** और **ब्रायोनिया** भी एक-दूसरे का कार्य पूरा करती हैं, परन्तु पहले उसी दवा को देना चाहिये जिसके लक्षण मौजूद हो। उस औषधि को देने के वाद रोगी दूसरी दवा के लक्षणो को प्रकट करने लगेगा। न प्रकट करे, तव दूसरी दवा देना उपयोगी नही है। गोनोरिया मे रोगी का स्राव पीला, खून मिला हुआ या नीला होता है। अगर गोनोरिया के कारण मूत्र-नली मे रुकावट का घाव (Stricture) पड जाय, या प्रोस्टेट का शोथ हो जाय, तव भी **नाइट्रिक ऐसिड** से लाभ होता है। जिन लोगो के रुधिर मे 'गोनोरिया का विष' (Sycosis) होता है, और इस विष के कारण या तो उनका कोई रोग ठीक नही होता या इससे ठीक होने मे रुकावट पडती है, तव इसकी २०० शक्ति की एक मात्रा दे देना लाभकारी होता है।

प्राय सिफ्लिस और गोनोरिया के रोगियो को ऐलोपैथी, वैद्यक तथा हकीमी में भिन्न-भिन्न रूपो मे पारा दिया जाता है। पारे के देने से जो उपद्रव खडे हो जाते हैं उन्हे दूर करने के लिये सर्व-प्रधान **हिपर सल्फ** और उसके वाद **नाइट्रिक ऐसिड** का स्थान है।

(७) **गाडी की सवारी से तकलीफ़ो का कम हो जाना, सवारी से बहरापन न रहना**—इस औषधि से अनेक ऐसे रोग दूर हो जाते हैं जिनमे गाडी की सवारी से रोगी की तकलीफ कम हो जाती है। उदाहरणार्थ, जव तक गाडी चलती रहती है तव तक रोगी को वहरेपन मे आराम अनुभव होता है। **ग्रैफाइटिस** मे भी गाडी की सवारी से वहरेपन मे कमी महसूस होती है, परन्तु **नाइट्रिक ऐसिड** मे सिर-दर्द, वहरापन, ववासीर की पीडा आदि हर वात मे गाडी की सवारी से रोग मे कमी दीखती है। जव तक वह गाडी मे सवार रहता है तव तक उसकी मानसिक-दशा भी ठीक रहती है।

(८) **घी-चर्वी तथा नमक के लिए उत्कट-इच्छा** (Craving for fat and salt)—इस रोगी को घी के पदार्थ, चर्वी के पदार्थ तथा नमक या नमकीन चीजो के लिये उत्कट इच्छा होती है। **सल्फ़र** को भी घी तथा नमक खाने की चाह होती है। **आर्सेनिक, हिपर, नक्स, सीपिया** को घी या चर्वी के पदार्थ खाने को इच्छा होती है, परन्तु नमक **की तीव्र** इच्छा नहीं होती। **नैट्रम म्यूर**

के रोगी को नमक या नमकीन पदार्थ खाने की तीव्र इच्छा होती है।

(९) **हठधर्मी स्वभाव, माफी मांगने पर भी अपनी बात पर अड़े रहना**—इस औषधि के मानसिक-लक्षण हैं उदासी, अनुत्साह, किसी काम मे चित्त न लगना, उपेक्षा, चिडचिड़ापन, निराशा, दुख। इन सब के साथ रोगी बडा हठधर्मी होता है, बदमिजाज, अपनी बात की काट नही सह सकता, प्रतिहिंसाशील, निर्दयी, और क्षमा मागने पर भी अपनी बात पर अडा रहता है, क्षमा नही करता अनेक बातो की चिन्ता किया करता है—अपने स्वास्थ्य की चिंता, अपने भविष्य की चिंता, ऐसी बातो की चिंता जिनका उसके साथ कोई सरोकार भी नही है। उसके चित्त की इस अवस्था का कारण निरन्तर नींद का अभाव या अपने किमी निकट सबधी या मित्र की मृत्यु आदि हुआ करता है। 'उपेक्षा' (Indifference) मे **नाइट्रिक ऐसिड** और **सीपिया** मे एक-सी मनोवृत्ति पायी जाती है, परन्तु **सीपिया** घी तो पसन्द करता है, नमक की उसे विशेष चाह नही होती, **नाइट्रिक** मे होती है।

(१०) **नाइट्रिक ऐसिड का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—रोगी साधारण तौर पर पतला-दुबला होता है, स्नायु-प्रधान। ठड झट लग जाती है, प्राय दस्त आते रहते हैं। शरीर तथा मन कमजोर होते हैं, कमजोरी से शरीर कापता है, मन चिडचिडा होता है। जरा-से श्रम से रोगी थक जाता है, कई बार तो बिस्तर की ही शरण मे पडा रहता है। सर्दी से घबराता है, सर्दी से सब लक्षण बढ़ जाते हैं। गले या अन्य किसी स्थान मे खप्पच की-सी अनुभूति होती है। उदास, खिन्न तथा चित्त मे हर बात के प्रति उपेक्षा, परन्तु चिडचिडापन ऐसा कि कोई क्षमा मागे तब भी अकडने वाला और क्षमा करके भी न भूलनेवाला। आतशक या सुजाक के रोगो से पीडित या इन विषो का शरीर मे कुछ अश मे विद्यमान होना। घी के पदार्थ तथा नमक के प्रति विशेष रुचि। यह है सजीव, मूर्त-चित्रण **नाइट्रिक ऐसिड** का।

(११) **इस औषधि के विषय मे अन्य ज्ञातव्य लक्षण**—

i **गुदा मे मस्से** (Condylomata in anus)

ii **बुखार मे प्यास न होना**—बुखार मे सर्दी, गर्मी, पसीना इन तीनो हालात मे प्यास न रहने पर इस औषधि को भी ध्यान मे लाना चाहिये।

iii **उच्च-शक्ति न दें**—इस औषधि के रोगी प्राय उच्च-शक्ति की औषधि सहन नही कर सकते, अत उन्हें उच्च-शक्ति नही दी जानी चाहिये। उनको जो भी उच्च-शक्ति की औषधि दी जायगी उसी के लक्षण उनमे प्रकट होने लगेंगे।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

नक्स मौस्केटा—जायफल, (NUX MOSCHATA)

(१) **स्नायु-संस्थान के शारीरिक रोग—लड़खड़ाना**—डा० केन्ट लिखते हैं कि यह औषधि मुख्य औषधियो मे नही है, हम प्राय 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrests) औषधियो से अपना काम चलाया करते हैं, परन्तु जहा इस औषधि के लक्षण हो, वहा इसी से काम चलता है। इस औषधि का स्नायु-सस्थान (Nervous system) पर विशेष प्रभाव है, इसलिये स्नायविक रोगो मे इसका उपयोग होता है। स्नायु-सस्थान के रोग शारीरिक तथा मानसिक हो सकते हैं। शारीरिक रोगो मे हाथ-पैर का ठीक-से न चलना (Loco-motor ataxia), लडखडाना, कापना, थकावट, सुस्ती आदि लक्षण ऐसे हैं जो इस औषधि के अधिकार-क्षेत्र मे आते हैं। ये शारीरिक कमजोरी के रोग आर्सेनिक की-सी कमजोरी को नही सूचित करते। आर्सेनिक मे तो शारीरिक कमजोरी से रोगी इतना पस्त हो जाता है कि उसमे वल ही नही रहता। **नक्स मौस्केटा** का रोगी स्नायु-शक्ति (Nervous force) की हीनता के कारण अपने को दुर्बल अनुभव करता है, थका रहता है, इस थकावट से उस पर सुस्ती चढी रहती है, लेटा रहता है। कभी-कभी इस स्नायविक-दुर्बलता से उसे वेहोशी के दौर पड जाते हैं।

(२) **स्नायु-संस्थान के मानसिक रोग—मृगी, स्मृति-लोप, रोगी जो कर रहा है उसे छोड़ आगा-पीछा भूल जाता है**—मानसिक-दृष्टि से रोगी जो-कुछ कर रहा होता है उसे तो किये जाता है, परन्तु उसे किसी वात का आगा-पीछा याद नही रहता। दिन भर रोगी अपने पुत्र से वात करता रहे, परन्तु उसे इतना भी स्मरण नही रहता। भूत-काल की किसी घटना को वह याद नही कर सकता, जो-कुछ वह कर रहा है उसे वह जानता है, परन्तु थोडी देर बाद ही उस सव किये को वह भूल जाता है। एक तरह से वह वर्तमान-काल मे जीता है, भूत-काल से उसका नाता टूट जाता है, वह अपने काम को किये जाता है, परन्तु जी ऐसे रहा होता है मानो किसी स्वप्न मे जिन्दगी बिता रहा हो। अपने मित्रो तक को भूल जाता है। ऐसी मानसिक-अवस्था प्राय हिस्टीरिया रोग-ग्रस्त पुरुष-स्त्रियो की हुआ करती है। इस औषधि के निर्वाचन मे रोगी की मानसिक-अवस्था चिकित्सक के लिये निर्देशन का काम करती है।

(३) **रोगी तन्द्रा मे रहता है, उसे जगाये रखना कठिन होता है**—रोगी हर किसी समय सोने के लिये तैयार रहता है। उसे जगाये रखने के लिये बड़ा प्रयत्न करना पडता है। समय-कुसमय, जिस किसी भी समय वह झट सो जाता है, बहुत प्रयत्न करने पर भी वह नीद का दमन नहीं कर सकता। उस पर नीद की खुमारी चढी रहती है, मानो नशे मे हो। 'तन्द्रा' (Drowziness) की यह हालत

ओपियम में भी है, परन्तु **ओपियम** मे 'तन्द्रा' (Drowziness) की जगह 'बेहोशी' (Coma) होती है, रोगी ज़ोर-ज़ोर से खुर्राटें भरता है, मल-मूत्र अपने-आप निकल जाता है, इन्द्रिया शुरु मे तो बेहद तीव्र होती हैं, परन्तु पीछे जाकर कुठित हो जाती हैं, **ओपियम** की ये अवस्थाए **नक्स मौस्केटा** मे नही होती।

(४) **कभी रोना, कभी हसना जैसी हिस्टीरिया की-सी मानसिक-अवस्या**—रोगी क्षण भर पहले हसता था, खेलता था, क्षणभर बाद रोने बैठ जाता है, या अभी रोता था, कुछ देर बाद हसने लगता है। इस प्रकार की मनोवृत्ति हिस्टीरिया मे होती है, और इसीलिये हिस्टीरिया मे लक्षणानुसार इसका उपयोग होता है। **इग्नेशिया** मे भी ऐसा होता है।

(५) **ज़रा-सी बात पर बेहोशी** (Fainting fits)—किसी ज़रा-सी बात से रोगी को मूर्च्छा का दौर पड जाता है। खून देख लेना, देर तक खडे रहना, तेज़ गन्ध, कोई उद्वेगात्मक घटना, किसी भी बात से रोगी को मूर्च्छा आ जाती है।

(६) **मुख सूके होने पर भी प्यास न होना**—रोगी का हर अग सूका होता है। त्वचा सूकी, आखें सूकी, नाक, होठ, गला सब सूका रहता है। जीभ इतनी सूक जाती है कि तालु मे चिपक जाती है, परन्तु इस सारे सूकेपन मे अद्भुत-लक्षण यह है कि रोगी को प्यास नही लगती। जीभ इतनी सूकी होती है कि उसमे से लार न निकलने के कारण भोजन गले के नीचे नही उतरता। **एपिस, पल्स, लैकेसिस** मे भी प्यास नही है।

(७) **जो-कुछ खाता है उसका गैस बन जाता है, बदहज़मी** (Dyspepsia)—बदहज़मी मे यह अत्युत्तम औषधि है। रोगी को गैस की शिकायत रहती है। जो-कुछ खाता है सब गैस बन जाता है। पेट गैस से इतना फूल जाता है कि गैस का दिल और फेफडो पर दबाव पडने से रोगी को दिल की धडकन और श्वास-कष्ट होने लगता है। **नक्स मौस्केटा** मे खाना खाते ही पेट-दर्द हो जाता है, **नक्स वोमिका** मे खाने के बाद पेट भारी हो जाता है या हल्का दर्द शुरु हो जाता है, खाना हज़्म होने तक बना रहता है, **एनाकार्डियम** मे पेट खाली होने पर पेट-दर्द शुरु हो जाता है, खाना खा लेने पर पेट-दर्द ठीक हो जाता है।

(८) **पसीना न आना**—इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण यह है कि उसे पसीना नहीं आता।

(९) **शक्ति तया प्रकृति**—६, ३०,२०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)



नक्स वोमिका—कुचला, (NUX VOMICA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मानसिक लक्षण—रोगी उद्यमी, कार्य-शील, झगडालू, चिड़चिडा, कपटी, प्रतिहिंसाशील होता है (नक्स तथा लाइको की तुलना)

(२) शारीरिक-कार्य न करने परन्तु मानसिक कार्य करने वालों के चिडचिडाहट आदि रोग, विद्यार्थी, वकील, व्यापारी, नेता आदि के रोग

(३) डाक्टरी, वैद्यक, हकीमी दवाओ के वाद के रोगो में कुछ दिन नक्स देना चाहिये

(४) स्नायु-मण्डल का तनाव (Tension in all the nerves), नक्स तथा सल्फर का सबंध

(५) जुकाम—पनीला-स्राव होने पर भी नाक वन्द होना और खुले मे आराम, इन्फ्लुएन्ज़ा मे प्रमुख औषधि (हनीमैन की सम्मति)

(६) पेट की शिकायतें—खाने के एक-दो घटे के बाद तक के लिये पेट भारी हो जाना

(७) कब्ज़—कई वार पाखाने जाना, पूरा साफ नहीं हुआ—ऐसा महसूस करना, आतों की प्रतिगामी-गति (Reversed peristaltic action) से कय हो जाना

(८) पेचिश या दस्त—मल-त्याग के वाद कुछ समय के लिए मरोड हट जाना, पेचिश मे नक्स, मर्क सौल तथा मर्क कौर की तुलना

(९) वादी ववासीर मे दिन को सल्फर और रात को नक्स देना लाभदायक है

(१०) खाने के वाद नींद के लिये विवश होना और ३ बजे प्रात· जग जाना

(११) ज्वर का हर बार समय से पहले आना (Anticipatory fever)

(१२) माहवारी का समय से पहले आना, पहली समाप्त नहीं होती कि दूसरी आ जाती है

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*सिर लपटने से रोगी को आराम
*गर्म दूध अच्छा लगना
*विश्राम से रोग मे कमी
*सायं काल रोग कम हो जाना
*तर हवा से आराम
*उत्तेजक, नशीले, चटपटे खाने की विशेष रुचि
*गरिष्ट-भोजन पचा सकने के कारण ज्यादा खा जाने का स्वभाव

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*ठड, ठडी या खुली हवा से रोग बढ़ जाना
*कपडा उघाडने से वृद्धि
*प्रात काल रोग-वृद्धि
*भोजन के बाद रोग-वृद्धि
*क्रोध आदि से रोग-वृद्धि
*नशीले पदार्थो से वृद्धि
*पूरी नींद न आने से वृद्धि
*अधिक खा जाने से रोग-वृद्धि
*बैठे रहने की आदत से रोग हो जाना
*मानसिक-भय से रोग
*अति-व्यसन से रोग

मानसिक लक्षण—रोगी उद्यमी, कार्य-शील, झगडालू, चिडचिड़ा, कपटी, प्रतिहिंसा-शील होता है (नक्स तथा लाइको की तुलना)—इस औषधि को 'अनेक-कार्य-साधक औषधियों का राजा' (King of Polychrest remedies) कहा जाता है। इसके मानसिक-लक्षण बहुत मुख्य है। अगर मानसिक-लक्षणों के आधार पर विश्व के नागरिकों का विभाजन किया जाय, तो दो-तिहाई लोग इस औषधि के क्षेत्र मे आ जायेंगे। इस औषधि की प्रकृति का व्यक्ति अत्यन्त उद्यमी और कार्यशील होता है। जिस काम को हाथ मे लेता है उसमे जी-जान से जुट जाता है। किसी काम को धीरे-धीरे सहज-भाव से करना उसकी प्रकृति मे नही है। जो करना होता है झट कर डालता है, इन्तिज़ार नही करता। चिट्ठी लिखता है, तो उसी समय डाकखाने मे डालकर दम लेता है। यही कारण है कि इस प्रकृति के लोग सब धधों मे दूसरो से आगे दिखलाई देते है। वे उच्च-कोटि के वैज्ञानिक, सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर, वकीलो मे शिरोमणि, व्यापार मे सबसे आगे, राजनीति मे अग्रणी, नये-नये प्रगतिशील कार्यो मे पहल करने वाले होते हैं। क्योंकि वे अपनी बात दूसरो से मनवाने और दूसरो पर शासन करने के आदी होते है, इसलिये उनकी बात को कोई न माने तो जल्दी चिड जाते हैं, अपने विरोधी को सहन नही कर सकते। यही कारण है कि वे कपटी तथा प्रतिहिंसा-शील भी हो जाते हैं। चिडचिडापन कैमोमिला मे भी पाया जाता है, परन्तु बद-हजमी के रोगी इस **नक्स** के सामने **कैमोमिला** भी शान्तिमय प्रतीत होता है। **नक्स** का स्वभाव अत्यन्त झगडालू, चिडचिडा होता है। वह अपने रास्ते मे किसी रुकावट को बर्दाश्त नही कर सकता। आदमी की रुकावट तो क्या, अगर उसके रास्ते मे कुर्सी आ जाती है तो झुझलाहट मे लात मारकर उसे परे फेंक देता है, अगर कपडा उतारते हुए बटन उलझ जाय, तो इतना झुझला जाता है कि बटन को तोड डालता है। नक्स-प्रकृति का व्यक्ति बडा नाजुक-मिजाज़ (Oversensitive) होता है। ऊची आवाज़, तेज़ रोशनी, हवा का तेज़ झोका—किसी चीज़ को बर्दाश्त नही कर सकता। अपने भोजन मे भी यह नही खा सकता, वह नही खा सकता—इस प्रकार के मीन-मेख निकाला करता है।

नक्स के विषय मे हनीमैन ने लिखा है "Nux is chiefly successful with persons of an ardent character, of an irritable, impatient temperament, disposed to anger, spite and deception"

नक्स तथा लाइको की तुलना—झगडालूपन, बदमिजाज़ी, प्रतिहिंसा की दृष्टि से **नक्स** तथा **लाइको** एक-समान हैं, परन्तु इनमे भेद यह है कि **नक्स** की बदमिजाज़ी तब प्रकट होती है जब कोई उससे जा भिडे, परन्तु **लाइको** तो दूसरो से लडाई मोल लेता फिरता है, अपने आस-पास के लोगो से उनके बिना

छेडे उनसे छेडखानी करता है। वह हर समय दूसरो के दोष देखा करता है, उन पर रोब जमाता है, किसी की बात को सहन नही कर सकता। डा० ऐलन का कथन है कि लाइको उस व्यक्ति के समान है जो हाथ मे डडा लिये इस तलाश मे फिरा करता है कि किस पर उसका प्रहार करे। लाइको का स्वभाव **नक्स** से भी तेज़ होता है, और **नक्स** का **कैमोमिला** से तेज़ होता है।

हमने **नक्स** के मानसिक-लक्षणो के सबध मे लिखते हुए जो कहा कि ऐसे लक्षण वकीलो, डॉक्टरो, व्यापारियो, राजनीतिक नेताओ मे पाये जाते हैं, इसका यह अभिप्राय नही कि इन लोगो के बीमार पडने पर **नक्स** ही दिया जाना चाहिये। कहने का अभिप्राय इतना ही है कि इन लोगो के रोग प्राय ऐसे होते है जिन मे **नक्स** के लक्षण प्रकट होते हैं, और उन लक्षणो के प्रकट होने पर इसे देना पडता है।

(२) **शारीरिक-कार्य न करने परन्तु मानसिक-कार्य करने वालो के चिड़चिडाहट आदि रोग, विद्यार्थी, वकील, व्यापारी, नेता आदि के रोग**—जो लोग शारीरिक-कार्य नही करते, हर समय बैठे रहते हैं, पढा करते हैं, मकान से बाहर नही निकलते, मेहनत-परिश्रम नही करते, उन्हे धीरे-धीरे कई रोग आ घेरते हैं। उनका मस्तिष्क ही काम करता है, वे अपने मानसिक-कार्य मे इतने व्यस्त रहते हैं कि शरीर को बिल्कुल भूल जाते हैं। उनका शरीर टूट जाता है, नीद ठीक-से नही आती, भूख नही लगती, कब्ज़ रहने लगता है। डा० कैन्ट इस प्रकार के लोगो मे से नक्स-प्रकृति के व्यापारी का चित्र खीचते हुए लिखते हैं—"व्यापारी अपनी मेज़ के पास बैठा-बैठा काम करता रहता है, काम करते-करते नितान्त थक जाता है। उसे ढेरो पत्र आते हैं, उसने बीसियो काम सहेड रखे होते हैं, उसे हज़ारो छोटी-छोटी बातो की चिन्ता करनी पडती है। उसका मन एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी बात पर उडा फिरता है। हर बात की चिंता करते-करते वह परेशान हो जाता है। बडे काम उसे इतना नही सताते जितना ये छोटे-छोटे अनगिनत काम उसे परेशान करते रहते हैं। वह इन छोटे-छोटे कामो की बारीकियो को स्मरण रखने का प्रयत्न करता है। घर आकर सोते समय भी ये छोटी-छोटी बातें उसका पीछा नही छोडती। वह सोता नही, इन्ही व्यापारिक बारीकियो मे उलझा रहता है। उसका मन थक जाता है, मस्तिष्क काम नही करता। अब जब ये छोटी-छोटी बातें उसके सामने आती हैं तब वह कागज फाडने लगता है, सब-कुछ उठा रखता है, घर लौट आता है, चिडचिडा हो जाता है, और व्यापार की उलझन अपने बीवी-बच्चों पर निकालता है। इस प्रकार की मानसिक-चिडचिडाहट व्यापारियो की ही नही, उन सब की हो सकती है जो शरीर को भूलकर मानसिक-कार्य मे ही जुटे रहते हैं। ऐसी अवस्था मे **नक्स** लाभ करता है।"

(३) **डाक्टरी, वैद्यक, हकीमी दवाओं के बाद रोगों मे कुछ दिन नक्स देना चाहिये**—जिस प्रकार के रोगियों का हमने ऊपर वर्णन किया वे बदहज़मी, कमज़ोरी, निद्रा-नाश, स्नायु-मडल की शिकायतो के मरीज़ होकर डाक्टरी, वैद्यक, हकीमी इलाज कराते हैं। उन्हें तरह-तरह के टॉनिक दिये जाते हैं, शराब पीने को कहा जाता है ताकि शरीर तथा मन मे शक्ति का सचार हो। ऐसे रोगी जब होम्योपैथ के पास आते हैं, तब कहते हैं कि वैद्य जी ने भस्म दी थी, हकीम जी ने कुश्ता दिया था, डॉक्टर ने एक टॉनिक दिया था, परन्तु कुछ लाभ नही हुआ। डा० कैन्ट का कहना है कि ऐसी हालत में रोगी को कुछ दिन **नक्स** पर रखना चाहिये। इस से टॉनिक आदि का अगर कोई दोष शरीर मे आया होगा, तो उसका प्रतीकार हो जायगा, या रोगी इसी से ठीक होने लगेगा, या अन्य जो होम्योपैथिक दवा देनी चाहिये उसके लक्षण स्पष्ट होने लगेंगे। **नक्स** का प्रभाव बहुत दिन तक नही रहता, एक से सात दिन तक इसका प्रभाव रह सकता है, इसलिये इसे दोहरा देते हैं, यद्यपि बहुत देर तक नही।

(४) **स्नायु-मंडल का तनाव** (Tension in all nerves); **नक्स तथा सल्फ़र का संबंध**—आजकल के युग मे लोग चाय, कॉफी, शराब तथा अन्य उत्तेजक पदार्थों का सेवन लगातार किया करते हैं। सिनेमा, थियेटर, दिन-रात के नाच-घर मे समय बिताते हैं, रातो जागते हैं। इस सबका अन्त स्नायु-मडल के तनाव के रूप मे होता है। दुराचार, व्यभिचार बढता जा रहा है, और इसका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। इन लोगो का स्नायु-सस्थान छिन्न-भिन्न हो जाता है। दिन-रात व्यभिचार आदि मे पडे रहने के कारण शारीरिक तथा मानसिक थकावट, तनाव, चिडचिडाहट को दूर करने लिये ये लोग चाय, कॉफी, शराब का सहारा लेते हैं। इनका शरीर तथा मन टूट जाता है, चिड़चिडापन आ घेरता है, थकावट होती है, ज़रा-से मे पसीना आता है, ठडी हवा, शोर, रोशनी को वे बर्दाश्त नही कर सकते। इन लोगो को चाय, कॉफी, शराब की ज़रूरत नही होती, **नक्स** की ज़रूरत होती है जो स्नायु-मडल के तनाव को दूर कर देता है।

नक्स तथा **सल्फर** का एक-दूसरे से सबध है। **सल्फर** के शरीर की गहराई मे जानेवाले प्रभाव को यह दूर नही करता, परन्तु **नक्स** उसके 'अतिरजित' प्रभाव (Over-action) को दूर कर देता है। **नक्स** के लिये **सल्फर** 'अनुपूरक' (Complementary) औषधि है, इसलिये **नक्स** के बाद **सल्फर** दिया जाता है।

(५) **जुकाम—पनीला स्राव होने पर भी नाक बन्द होना और खुले मे आराम, इन्फ्लुएन्ज़ा की प्रमुख औषधि (हनीमैन की सम्मति)**—यद्यपि **नक्स** शीत-प्रधान—सर्द—Chilly—दवा है, और इसलिए **नक्स** का रोगी भी शीत-प्रधान ही होता है, तो भी मामूली जुकाम मे रोगी गर्म कमरे में परेशान रहता है,

खुली हवा में उसे आराम मिलता है। जुकाम की शुरुआत में प्रायः नक्स देने की प्रथा है। जब जुकाम की शुरुआत हो, उसकी प्रथमावस्था हो, नाक से पानी वाला पनीला स्राव बहने पर भी नाक खुश्क और बन्द मालूम हो, बार-बार छींके आयें, तब यही दवा दी जाती है। प्रायः जुकाम की शुरुआत होती भी ऐसे ही है। सवेरे नाक बहता रहता है, शाम और रात को नाक बन्द हो जाता है, गर्म कमरे में परेशानी होती है, खुले में आराम मिलता है। इस जुकाम के साथ प्रायः सिर-दर्द हुआ करता है, चेहरा गर्म रहता है, ठंड महसूस होती है। नाक में जख्म हो जाते हैं। रात को नाक बन्द होने से सांस रुकता है। रात को नाक का मवाद से भरे रहना, बन्द रहना और दिन को पनीला स्राव बहना इसका लक्षण है। रोगी के शीत-प्रधान होने पर भी जुकाम में खुली हवा चाहना परस्पर-विरोधी मालूम पड़ता है, परन्तु जैसा हम पहले कह चुके हैं, अनेक बार व्यापक-लक्षण और एकांगी लक्षण परस्पर-विरोधी हो सकते हैं।

इन्फ्लुएन्जा में हनीमैन की सम्मति—हनीमैन के अनुसार इन्फ्लुएन्जा में **नक्स** वोमिका प्रमुख-औषधि है। **कैम्फर** की 'परीक्षा' (Proving) के प्रसंग में वे लिखते हैं—"जब इन्फ्लुएन्जा का मरामरक प्रकोप हो, तब रोग के प्रारम्भ होने के समय **कैम्फर** उपयोगी है, परन्तु इसकी उपयोगिता रोग के वेग को कम कर देने के रूप में ही है, रोग को एकदम काट देने में नहीं है। इसे पानी में डाल कर बार-बार देने से रोग घातक सिद्ध नहीं होता और रोगी निश्चित समय में रोग से छूट जाता है। परन्तु शक्तिकृत **नक्स वोमिका** की एक मात्रा देने से कुछ ही घंटों में रोग नष्ट हो जाता है।" डा० बूनान लिखते हैं कि इन्फ्लुन्जा के लिये अगर कोई 'प्रतिरोधक' (Prophylactic) औषधि है, तो वह **नक्स वोमिका** ही है। इस दृष्टि से इस रोग में इस औषधि ने बड़ा नाम पाया है। इन्फ्लुएन्जा में कुछ अन्य भी उपयोगी औषधियां हैं जिनमें से कुछ मुख्य-मुख्य निम्न हैं—

(इन्फ्लुएन्जा में मुख्य-मुख्य औषधियां)

जेलसीमियम—डा० टैम्पलटन लिखते हैं कि १०० रोगियों में से ३६ प्रतिशत जेल्स से ठीक हुए हैं। 'फ्लु' के लक्षणों में अगर सारा शरीर दुखता हो, सिर-दर्द, खांसी-जुकाम हो, अत्यन्त कमजोरी हो, रोगी नींद की-सी हालत में पड़ा रहे और साथ प्यास बिल्कुल न हो, तब इस औषधि का मुख्य क्षेत्र है। ठंड लगने पर जैसे पहले-पहल एकोनाइट की तरफ ध्यान जाता है, वैसे 'फ्लु' होने पर पहले-पहल जेल्स या नक्स पर ध्यान दिया जाता है।

नक्स वोमिका—जब इन्फ्लुएन्जा संक्रामक रूप से फैल रहा हो, तब **नक्स** २०० की एक मात्रा दे देनी चाहिये, वह 'प्रतिरोधक' का काम करेगी। रोग का आक्रमण होते ही इसके प्रयोग से लाभ होता है। अगर 'फ्लु' में ठंड मह-

सूस हो, कितनी भी गर्मी पहुचायी जाय ठड न जाती हो, पैर हिलाते ही शरीर मे ठड की कपकपी दौड जाती हो, कपडा ओढ़ने पर गर्मी आती हो, रोगी उसे उतारना चाहता हो, परन्तु कपडा उतारते ही शरीर थरथरा जाता हो—ऐसी हालत मे खासी, जुकाम, शरीर-दर्द आदि 'फ्लु' के अन्य लक्षण होने पर इसे दो।

यूपॅटोरियम—इसमे रोगी को हड्डियो मे दर्द होता है, रोगी वेचैन होता है और हिलने-डोलने से उसे आराम अनुभव होता है। त्वचा गर्म होती है परन्तु पसीना या तो आता नही, या बहुत थोडा आता है। इस औषधि मे रोग का मुख्य केन्द्र-स्थल हड्डियो मे दर्द है, श्वास-प्रणालिका उतना नही। आखो के डेलो तक मे उनके विना हिलाये भी उनमे रोगी को दर्द होता है।

ब्रायोनिया—इसमे भी रोगी को हड्डियो मे दर्द होता है, परन्तु रोगी आराम से पडे रहना चाहता है, हिलना-डोलना नही चाहता, उससे उसका दर्द वढ़ जाता है, **जेल्स** का रोगी नीद मे होने के कारण हिलना नही चाहता, **ब्रायोनिया** का हिलने से शरीर दुखता है। रोगी को पसीना वहुत आता है, आसानी से आता है। इस औषधि मे रोग का मुख्य केन्द्र-स्थल श्वास-प्रणालिका होती है। जैसे **जेल्स** मे प्यास का न होना है, वैसे उससे उल्टा इसमे भारी प्यास का होना है। **ब्रायोनिया** के रोगी मे खासने से सिर तथा पसलिया तक दुखने लगती हैं।

ऐमोनिया कार्ब—इन्फ्लुएन्जा के वाद जव रोगी की खासी वची रहे, जाने का नाम न ले, तव इस औषधि की २०० शक्ति की एक मात्रा से यह खासी चली जाती है। डा० यूनान ने लिखा है कि यह उनका निजी अनुभव है।

आर्सेनिक—यह औषधि **नक्स** की तरह इन्फ्लुएन्ज़ा के शुरु मे उपयोगी है। या जब रोग का आक्रमण धीमा पड जाय, तरुण-लक्षण (Acute symptoms) चले जायें, परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के उपद्रव वने रहें—भिन्न-भिन्न प्रकार के दर्द, ज्वर कभी चढ जाय, कभी उतर जाय या न उतरे—ऐसी अवस्था मे **आर्सेनिक** २०० की एक-दो मात्रा से ये बचे-खुचे लक्षण वैसे ही चले जाते हैं जैसे **ऐमोनिया कार्ब** २०० की मात्रा से इन्फ्लुएन्ज़ा के वाद की वची-खुची खासी चली जाती है। 'फ्लु' के अन्य लक्षणो के साथ अगर थोडी-थोडी प्यास के साथ हिलने-जुलने से आराम पहुचे तो रस, अगर इस प्यास के साथ चेहरा लाल, तमतमा जाय तो वेल, और अगर प्यास के साथ रोगी को मानसिक वेचैनी हो जिसके कारण वह कही न टिक सके तो आर्स उपयोगी है। 'फ्लु' में प्यास के साथ आर्स की वेचैनी शारीरिक न होकर मानसिक होती है।

रस टॉक्स—अगर 'फ्लु' होने मे पहले रोगी पानी से भीगा हो। आखो के डेलो को इधर-उधर हिलाने से **जेल्स, ब्रायो, रस**—इन तीनो मे दर्द होता है,

परन्तु अगर शरीर की हरकत से आराम हो तो **रस** देना चाहिये। **रस** मे भी रोगी आर्स की तरह थोडा-थोडा और बार-बार पानी पीता है। **रस** और **आर्स** बहुत कुछ समान हैं, परन्तु रस की बेचैनी शारीरिक होती है, **आर्स** की मानसिक। **रस** हिलता-जुलता है जिससे शरीर को आराम मिलता है, **आर्स** कहीं टिकता नही जिसका कारण उसकी मानसिक बेचैनी है।

(६) **पेट की शिकायतें—खाने के एक-दो घंटे के बाद तक के लिये पेट भारी हो जाना**—पाचन-सस्थान पर इसका प्रभाव किसी कदर कम नही है। जैसे जुकाम के लिये इसे रुटीन की तरह दिया जाता है, वैसे कई चिकित्सक भूख न होने पर इसे रुटीन की तरह दिया करते हैं। लक्षण न होने पर भूख बढाने के लिये देने का परिणाम भूख बढना तो हो सकता है, परन्तु इससे रोगी को लाभ के स्थान मे हानि हो जाने की अधिक सभावना है। **नक्स वोमिका** मे तकलीफ खाने के २-३ घटे बाद तक रहकर जब तक कि खायी हुई वस्तु अच्छी तरह से हजम नही हो जाती तब तक बनी रहती है, **ऐनाकार्डियम** मे खाने के एक-दो घटे के बाद जब पेट खाली हो जाता है तब पेट मे दर्द शुरु हो जाता है, खाने से दर्द हट जाता है, **नक्स मौस्केटा** तथा **कैलि ब्रोमियम** मे खाना खाते ही पेट मे दर्द शुरु हो जाता है। **नक्स** का रोगी बदहजमी का पुराना रोगी होता है। पतला-दुबला, झुर्रिया मुख पर, कमर झुकी हुई। समय से पहले बूढा लगने वाला, मिर्च-मसाले, चटपटी चीजें चाहने वाला, कडवी चीजें पसन्द करता है। घी की चीजें पसन्द करने वाली औषधियो मे यह एक है, एलकोहल-बीयर चाहता है, भूख लगने पर भी गोश्त, तबाकू को न चाहे—यह भी हो सकता है। टॉनिको के पीछे भागा करता है। खाने के बाद या एक-दो घटे बाद पेट भारी हो जाना या फूल जाना, पत्थर की तरह कडा हो जाना, पेट का हवा से इस कदर भर जाना कि हवा मेट के डायाफार्म को ऊपर की तरफ दबाने लगे जिससे दिल पर दबाव पडकर उसमे धडकन होने लगे। भोजन करने के बाद तुरन्त खायी हुई वस्तु का कय कर देना **नक्स** का लक्षण है, कई घटो बाद खायी हुई वस्तु का कय कर देना **क्रियोजोट** का लक्षण है।

(७) **पेट तथा आतो की गति का आगे जाने के स्थान मे पीछे को जाना, इस 'प्रतिगामी-गति' के कारण उल्टी तथा कब्ज, कब्ज मे कई बार पाखाने जाना, पूरा साफ नहीं हुआ ऐसा महसूस करना** (Reversed peristaltic action resulting in retching and straining at stools, passes little which relieves)—पेट तथा आतो की स्वाभाविक-क्रिया के अनुसार पेट का भोजन और आतो का पाखाना आगे-आगे धकेला जाना चाहिये। पेट तथा आतो की इस क्रिया को 'पैरिस्टैलटिक एकशन' कहते है, **नक्स** के रोगी मे यह गति अनियमित हो जाती है। पेट का खाना आगे धकेले जाने के बजाय पीछे को लौटने

की कोशिश करता है जिससे उल्टी आ जाती है। 'स्वाभाविक-गति' खाने को आगे, और **नक्स** के रोगी की पेट की गति उस खाने को पीछे धकेलती है। पेट की इस अनियमित गति से उबकाई आती है। इन दो गतियो के विरोध के कारण रोगी बार-बार उल्टी की कोशिश करता है, आती भी है, नही भी आती, अन्त मे ज़ोर लगाकर उसे उल्टी करनी पडती है। इस प्रकार की अवस्था को 'उबकाई' (Retching) कहा जा सकता है, 'उल्टी' (Vomiting) नहीं। यह उबकाई उल्टी की असफल-क्रिया (Ineffectual desire for vomiting) कही जा सकती है, उल्टी मे **इपिकाक** औषधि है। पेशाब मे भी रोगी को इसी प्रकार कोशिश (Strain) करनी पडती है। मूत्राशय भरा होता है, परन्तु उसकी 'प्रतिगामी-गति' (Anti-peristaltic movement) के कारण पेशाब निकलता नही। आतो मे इस 'प्रतिगामी-गति', अर्थात् उल्टी-गति का परिणाम यह होता है कि रोगी को ज़ोर लगाकर टट्टी आती है, परन्तु एक बार मे पूरी नही आती, उसे बार-बार पाखाने जाना पडता है। हर बार थोडी-सी टट्टी आती है, उस थोडी-सी आने से उसे कुछ आराम मिलता है, परन्तु कुछ देर बाद उसे फिर जाना पडता है। **नक्स** की कब्ज़ का मुख्य-लक्षण यह है कि रोगी कई बार पाखाने जाता है, महसूस करता है कि पूरा साफ नही हुआ, जब जाता है तब कुछ देर के लिये पेट हल्का हो जाता है, परन्तु उसे फिर जाना पडता है। कब्ज़ मे **नक्स** की **एलूमिना, ब्रायोनिया** तथा **ओपियम** से तुलना की जाती है। **नक्स** की कब्ज़ का कारण आतो की 'अनियमित-क्रिया' (Want of peristalsis) है, **एलूमिना** मे कब्ज़ का कारण गुदा की 'क्रिया-शून्यता' (Inactivity of the rectum) है, **ब्रायोनिया** मे कब्ज़ का कारण आतो से 'स्राव न निकलना' (Want of secretion) है, और **ओपियम** मे कब्ज़ का कारण आतो की 'शिथिलता' (Partial paralysis) है।

(८) **पेचिश या दस्त—मल-त्याग के बाद कुछ समय के लिये मरोड़ हट जाना, पेचिश मे नक्स, मर्क सोल तथा मर्क कौर की तुलना**—पेचिश मे मरोड हुआ करता है। **नक्स** की पेचिश या दस्तो मे रोगी ज़ोर लगाता है, मरोड हो तो भी वह ज़ोर लगाता है, कोशिश करने पर बहुत थोडा मल निकलता है, जितना भी थोडा-बहुत निकलता है उससे उसे राहत मिलती है। **नक्स, मर्क सौल,** और **मर्क कौर**—इन तीनो की पेचिश मे मरोड होता है। **नक्स** मे टट्टी आने के बाद मरोड जाता रहता है, रोगी को आराम मिलता है, **मर्क सौल** मे पाखाने से पहले, बीच मे, और पाखाना आने के बाद भी 'मरोड' (Tenesmus) बना रहता है, उसे आराम नहीं मिलता, **मर्क कौर** मे भी **मर्क सौल** जैसी ही हालत होती है, परन्तु भेद यह है कि **मर्क कौर** मे पाखाने के साथ पेशाब की हाजत (Urge) बनी रहती है। **मर्क सौल** का मरोड केवल आतो तक सीमित रहता है,

मर्क कौर का मरोड़ आता और मूत्राशय दोनों को दुःखी रखता है। इसके अतिरिक्त मर्क सोल की पेचिश मे खून कम आव अधिक होती है, मर्क कौर की पेचिश मे खून ज्यादा आव कम होती है।

(९) **बादी बवासीर मे दिन को सल्फर रात को नक्स देना**—डा० टायलर लिखती हैं कि उन्हे उनके होम्योपैथिक-अस्पताल की नर्सों ने बतलाया कि पुराने होम्योपैथ बवासीर का चीर-फाड़ से इलाज करने के बजाय निम्न-शक्ति की सल्फर और नक्स वोमिका देकर इस रोग को ठीक कर दिया करते थे। बादी बवासीर के लिये कुछ दिनो तक ३० शक्ति मे इन दोनो को देकर देख लेना ठीक रहता है। प्रातः काल १० बजे से पहले सल्फर और सोने से दो घंटे पहले **नक्स** देकर देखना चाहिये।

(१०) **खाने के बाद नींद के लिये विवश होना और तीन बजे प्रातः जग जाना**—रोगी खाने के बाद निंदासा हो जाता है। शाम को कुर्सी मे बैठे-बैठे या पढ़ते-पढ़ते सोने के समय से पहले सोने लगता है, जल्दी सो जाता है, और रात को ३ बजे सवेरे नींद खुल जाती है, फिर सो नहीं सकता। उस समय दिन भर के काम उसे घेर लेते हैं, सोच-विचार मे देर तक पड़ा रहता है, अन्त मे थक कर फिर सो जाता है, देर तक सोता रहता है, जब उठता है तब थका होता है। टूटी-फूटी नींद आती है। थोड़ी-सी भी नींद मे अच्छा अनुभव करता है, अगर कच्ची नींद मे उठा दिया जाय, तो तबीयत ठीक नहीं रहती। पल्स नींद के लक्षणो मे **नक्स** से उल्टा है। उसे देर मे नींद आती है, **नक्स** को सोने के समय से पहले नींद आ जाती है।

(११) **ज्वर का हर बार समय से पहले आना (Anticipatory fever)**—ज्वर के संबंध मे इसका मुख्य-लक्षण यह है कि ज्वर आने का जो समय रहता है, उससे अगला आक्रमण कुछ घंटे पहले होता है। ज्वर की तीन अवस्थाएं होती है—सर्दी; गर्मी, पसीना। नक्स के ज्वर मे शीतावस्था मे प्यास नहीं रहती, गर्मी की अवस्था मे बेहद प्यास होती है, पसीने की अवस्था मे भी प्यास नहीं रहती। **नक्स** शीत-प्रधान है। इसका शीत (Chilliness) आता-जाना रहता है, और आने-जाने के रूप से तीनो अवस्थाओं मे शीत बना रहता है। जरा कपड़ा हटने से रोगी को जाड़ा लगने लगता है।

(१२) **माहवारी का समय से पहले आना, पहली समाप्त नहीं होती कि दूसरी आ जाती है**—माहवारी समय से पहले होने लगती है, पहली समाप्त नहीं होती कि दूसरी का समय आ जाता है। रक्त-स्राव भी बहुत ज्यादा होता है, बहुत दिनो तक रहता है।

(मासिक-धर्म की गडबडी में कुछ मुख्य-मुख्य औषधियाँ)

प्राय मासिक की गडबडी मे **पल्स** तथा **सीपिया** मुख्य दवाएं हैं। **पल्स** स्त्रिया काले रग पर, **सीपिया** गोरे रग पर होती हैं, **पल्स** मोटी तथा 'ऊष्णता-प्रधान'—Hot—तथा **सीपिया** पतली एव 'शीत-प्रधान'—Chilly—होती हैं।

स्त्रियो के मासिक-धर्म की गडबडी के मुख्य पाच प्रकार हैं—(१) 'रज रोघ'—मासिक प्रारम होकर वन्द हो जाना (Amenorrhea), (२) 'देर मे रज स्राव' होना (Delayed menses), (३) 'अति-रज'—मासिक मे वहुत ज्यादा खून जाना (Menorrhagia), (४) 'ऋतु-शूल'—मासिक मे ज्यादा दर्द होना (Dysmenorrhea), (५) 'अन्त ऋतु-स्राव'—दो मासिको के वीच मे जरायु से रुघिर जाना (Metrorrhagia)। मासिक-धर्म की इन पांचो प्रकार की गडवडी की मुख्य-मुख्य औषधिया निम्न हैं—

(१) रज रोघ (AMENORRHEA)

पल्सेटिला—दर्द, थोडा, अनियमित, रुक-रुक कर होना, दिन को ज्यादा, पहली माहवारी मे देर, खुली हवा पसन्द, कोमल, मृदु स्वभाव। **पल्स** तथा **सल्फर** रज रोघ की खास दवाएं हैं।

साइक्लेमेन—रज रोघ मे शोकाकुल, हतोत्साह, घुमेरी, खुली हवा नापसन्द।

सल्फर—अगली वार के मासिक आने के समय उसका न होना, ११ बजे जी वैठने का-सा अनुमव होना (Sinking sensation)।

नेट्रम म्यूर—रज रोघ के साथ सोकर उठने पर सिर-दर्द, ठड लगना, हतोत्साह, कब्ज।

कैलि कार्ब—अगर **नेट्रम म्यूर** के लक्षणो पर उससे लाम न हो तव दो।

एकोनाइट—एक वार रज स्राव होकर एकाएक सर्दी लगकर या डर से ऋतु वन्द हो जाना।

ब्रायोनिया—रज स्राव के वदले नाक से खून जाना।

ग्रेफाइटिस—वहुत देर मे, वहुत थोडा, वहुत दर्द, मासिक का पीला रग, सख्त कब्ज।

(२) देर में रज स्राव (DELAYED MENSTRUATION

पल्सेटिला तथा सल्फर—ये दोनो इसकी भी मुख्य दवाएं हैं।

कैलकेरिया फॉस—काला खून, कभी-कभी पहले लाल फिर काला, **सख्त** दर्द के साथ रज स्राव होना।

सेनेशियो—पहली वार रज स्राव होकर ठडे स्नान आदि से या अन्य कारण से माहवारी वन्द हो जाना, वन्द होने से फेफडे आदि से रुघिर जाना,

लडकी का पीला पड जाना, मासिक बन्द होने से खो-खो की-सी खासी (Hacking cough) हो जाना। मूल-अर्क लाभ करता है।

(३) अति-रज (MENORRHAGIA)

हाइड्रैस्टिस—डा० वार्फोड का कहना है कि हाइड्रैस्टिस १X इसमे बहुत लाभ करता है।

हैमेमेलिस तथा चायना—इनको पर्याय-क्रम, अर्थात् एक-दूसरे का बाद देने से यह रोग अच्छा हो जाता है।

नक्स वोमिका—समय से कुछ दिन पहले हो, खून की मात्रा अधिक, कई दिन तक चले, पहला समाप्त नही होता कि दूसरे का समय आ जाता है। इस अवस्था मे ज्हार ने **नक्स** की वहुत तारीफ की है।

कैलकेरिया कार्ब—यह **नक्स** की तरह ही है, परन्तु दोनो का स्वभाव तथा शरीर की रचना भिन्न-भिन्न है। **नक्स** पतली-दुवली, **कैलकेरिया** थुलथुल होती है। दोनो शीत-प्रधान हैं।

चायना—अति रज, काले-काले टुकडे निकलें।

कैमोमिला—अगर मानसिक-विक्षोभ के कारण मासिक ज्यादा हो।

इपिकाक—मितली के साथ या विना मितली के अति-रज-स्राव, चमकीला लाल खून।

मैग कार्ब—अति-रज लेकिन रात को स्राव का वढ जाना।

फेरम मेट—रज स्राव का वहुत वढ जाना।

(४) ऋतु-शूल (DYSMENORRHEA

मैग फॉस—ऋतु-शूल मे अगर गर्म सेक से आराम हो तो ३X या ६X विचूर्ण गर्म पानी के साथ दस-दस मिनट वाद दो। दर्द दूर करने की यह वढिया दवा है।

जैन्थोक्साइलम—इसकी १X या ३X मात्रा देने से ८० फी सदी रोगी ठीक हो जाते हैं।

वाइवरनम ओप्युलस—इस दर्द मे मूल-अर्क या ३X वहुत अच्छी दवा है। दर्द एकाएक पैदा होकर ८-१० घटे रहता है। जरायु से दर्द उठकर समूचे पेट में फैल जाता है।

बेलाडोना—चाहे ज्यादा खून जाय या कम, परन्तु दर्द बहुत होता है। मासिक होने से पहले थकावट, भूख न होना, मासिक के दिनो मे छाती पर रात के पसीने आना, कभी-कभी ठड की फुरहरी; लाल परन्तु बहुत गर्म खून।

कैक्टस—दर्द के मारे रोगिणी चिल्लाती है, अत्यन्त कमजोरी।

सोपिया—जव ऋतु-धर्म कम जाने के कारण दर्द हो।

(५) दो मासिको के बीच मे जरायु से रुधिर (METRORRHAGIA)

इग्नेशिया—हर दसवें या पन्द्रहवें दिन रज स्राव, प्रभूत, काला, थक्केदार रुधिर।

इपिकाक—डा० ज्हार का कहना है कि अगर कोई अन्य औषधि निर्दिष्ट न हो और जरायु से रुधिर बहुत जाने लगे, तो वे सदा इपिकाक से लाभ उठाते रहे हैं।

सिकेल कौर—अगर इपिकाक से लाभ न हो तो सिकेल से लाभ होता है।

चायना—अगर सिकेल से भी लाभ न हो तो चायना उपयोगी है। अगर रोगिणी रुधिर-स्राव से अत्यन्त निर्बल हो गई हो तो **चायना** का तुरत प्रयोग करना चाहिये। डा० ज्हार का अनुभव है कि **इपिकाक, सिकेल, चायना**—इन तीन मे से किसी-न-किसी से यह रोग पकडा जाता है।

(१३) इस औषधि के अन्य लक्षण—

I **गुदा तथा मूत्राशय पर दर्द का दबाव**—नवयुवतियो तथा वृद्धाओं की उन दर्दों मे यह उपयोगी है जिनका दर्द बढता हुआ उनके गुदा-प्रदेश तथा मूत्राशय पर दबाव डालता है।

II **प्रसव के समय जच्चा को अपर्याप्त दर्द के कारण बार-बार टट्टी या पेशाब जाना**—अगर जच्चा को प्रसव के समय जो दर्द होना चाहिये वह पर्याप्त न हो, और रोगिणी को भीतरी दवाव के कारण बार-बार टट्टी या पेशाव की हाजत हो, तो इस औषधि से लाभ होता है।

III. **अगर गुर्दे की पथरी या पित्ताशय की पित्त-पथरी का दर्द गुदा की तरफ चले और टट्टी जाने की हाजत हो**—प्राय गुर्दे से पथरी मूत्र-नली मे आकर अटक जाती है, और दर्द हुआ करता है। इसी प्रकार पित्ताशय की पथरी के पित्त-नली मे अटक जाने से दर्द पैदा होता है। अगर इस दर्द की चाल के गुदा-प्रदेश की तरफ़ जाने से रोगी मे वार-वार टट्टी जाने की हाजत पैदा हो, तो **नक्स** से लाभ होता है। यह औषधि उस प्रणाली को जिसमे पथरी अटक कर दर्द पैदा करती है फैला देती है और पथरी निकल जाती है। इसके वाद, यह औषधि शरीर की पथरी वनने की प्रवृत्ति को भी रोक देती है।

IV **अति-भोजन से दमा**—जिन लोगो को भरपेट खाने के वाद दमे का आक्रमण हो जाता है, उनके लिये भी इसका उपयोग होता है। वहुत ज्यादा पेट भर जाने से गैस का रुख ऊपर को हो जाता है, और रोगी को सास मे कष्ट होता है।

V **सविराम-ज्वर के शीत, गर्मी तथा पसीना—इन तीनों हालतों में ठंड महसूस होना**—मलेरिया या सविराम-ज्वर (Malaria or intermittent fever) मे **नक्स** अत्यन्त उपयोगी औषधि है। तीसरे दिन आने वाले ज्वर में

जब ज्वर का आक्रमण प्रात काल हो, इसकी तरफ विशेष-ध्यान जाना चाहिये। इस ज्वर का मुख्य-लक्षण शीत, गर्मी तथा पसीना—इन तीनो अवस्थाओ मे 'शीत' (Chilliness) का अनुभव करना है। गर्मी की अवस्था मे भी जब कि वह अन्दर-बाहर से तप रहा होता है, तब भी जरा-सा भी कपडा उघड जाने पर रोगी ठड अनुभव करने लगता है। वह अपने को इस गर्मी मे ढक भी नही सकता, उघडा भी नही रह सकता।

vi **कमर दर्द**—कमर दर्द मे रोगी लेटे हुए पासा नही पलट सकता। उठ कर बैठता है, तब पासा पलटता है।

(१४) **नक्स वोमिका का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—इस औषधि का व्यक्ति पतला-दुबला, चिडचिडा, स्नायु-प्रधान, मेलेंखोलिया के स्वभाववाला, हर बात मे चुस्त, चौकन्ना, बडा सावधान, प्रखर-बुद्धि, विद्वेशी, कार्य-पटु, उत्साही, जोशीला, घर बैठे रहनेवाला, चलने-फिरने से कतराने वाला, मानसिक-कार्य मे लगा हुआ, सर्दी से परेशान, थका-मादा, टॉनिक, शराब से थकावट को दूर करना चाहता है, मिर्च-मसाले, तथा दूध-घी-चर्बी के पदार्थों का प्रेमी, बदहज़मी का शिकार—यह है सजीव मूर्त-चित्रण **नक्स वोमिका** का।

(१५) **शक्ति तथा प्रकृति**—१२, ३०, २०० या ऊपर। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है। हनीमैन ने लिखा है कि **नक्स** को, जहा तक सभव हो, प्रात काल नही देना चाहिये। कई चिकित्सक **नक्स** को सोते समय देते हैं, परन्तु हनीमैन के कथनानुसार इसे सोने से कुछ घटे पहले देना चाहिये, तब इसका प्रभाव मृदु होता है। इसके अतिरिक्त **नक्स** तथा अन्य होम्योपैथिक औषधियो के विषय मे हनीमैन का आदेश है कि औषधि लेने के बाद किसी प्रकार का मानसिक-कार्य—पढ़ना-लिखना, वाद-विवाद, ध्यान आदि—नही करना चाहिये। हनीमैन के कथनानुसार प्रात काल **नक्स** लेने से रोग के लक्षण दिन को बढ सकते हैं।

ओपियम—अफ़ीम, (OPIUM)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) सुनिर्वाचित-औषधि का फल न होना (२) कठिन रोग होने पर भी दर्द आदि तकलीफ अनुभव न करना—उदाहरणार्थ, जख्म, ज्वर, मूत्ररोग आदि मे (३) अगो मे पक्षाघात की-सी शिथिलता (४) गहरी नींद में खर्राटे का शब्द करना (५) भय से उत्पन्न रोग—भयोत्पादक-दृश्य का सामने बने रहना, भय से वस्त, मृगी आदि होना (६) कब्ज तथा दस्त, निद्रा तथा निद्रा-नाश —औषधि की प्राथमिक (Primary तथा द्वितीयक (Secondary) क्रिया का विवेचन (७) बिस्तर को अधिक गर्म अनुभव करना	लक्षणो मे कमी (Better) *ठड से रोगी को अच्छा लगना *लगातार चलने से आराम लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *भय, प्रसन्नता से रोग-वृद्धि *उद्वेग से रोग का बढ़ना *गर्मी से रोग का बढ़ना *अलकोहल से रोग-वृद्धि *स्रावों के दबने से रोग मे वृद्धि *नींद मे तथा नींद के बाद वृद्धि *पसीना आने से परेशानी

(१) **सुनिर्वाचित-औषधि का फल न होना**—प्राय कहा जाता है कि अगर सुनिर्वाचित-औषधि का फल न मिले, तो **सल्फर** का प्रयोग करना चाहिये, परन्तु कई अवमरो मे **सल्फर** के स्थान मे **ओपियम** अधिक उपयुक्त औषधि होती है। **सल्फर** तव दी जानी चाहिये जव सुनिर्वाचित-औषधि किसी सोरा-दोष के कारण निष्फल हो रही हो। सोरा-दोष को ध्यान मे रखते हुए **सल्फर** के अन्य लक्षण भी होने चाहियें। मोरा-दोष मे **सल्फर** देने पर भी अगर सुनिर्वाचित-औषधि लाभ न करे, तो **सोरिनम** का प्रयोग करना चाहिये, परन्तु अगर कोई विशेष-लक्षण न हो, सिर्फ जीवनी-शक्ति प्रतिक्रिया (No vital re-action) न कर रही हो, तव **ओपियम** देना चाहिये। इस दिशा मे **कार्बो वेज, लॉरोसिरेसस, ट्युबरक्युलीनम, वेलेरियन** को भी ध्यान मे रखना होता है। **सल्फर** मे रोगी एक स्थान मे खडा नही रह सकता, खुजली या खुजली का लेपो से दव जाने का इतिहास होता है, शिकायतें बार-वार होती हैं, रोगी को प्रात उठते ही टट्टी की तेज हाजत होती है, **कार्बो वेज** मे पेट मे गैस की शिकायत रहती है, **लॉरोसिरेसस** मे रोगी दिल या फेफडे की बीमारी से इतना शक्ति-हीन हो जाता है कि शरीर मे गर्मी बिल्कुल नहीं रहती, उसे कपडे से लपेट कर रखना पडता है, **ट्युबरक्युलीनम** मे रोगी के वश मे क्षय-रोग रहता है,

वेलेरियन मे हिस्टीरिया, स्नायु-रोग आदि के कारण उपयुक्त दवा के प्रति जीवनी-शक्ति प्रतिक्रिया नही करती।

(२) **कठिन रोग होने पर भी दर्द आदि तकलीफ अनुभव न करना—जख्म, ज्वर, मूत्ररोध आदि मे**—इस औषधि का विलक्षण-लक्षण यह है कि रोगी को कितनी भी तकलीफ क्यो न हो, वह कहता है कि उसे कोई कष्ट नहीं है। होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार यह बात आसानी से समझ मे आ जाती है। होम्योपैथी का सिद्धान्त यह है कि स्वस्थ-व्यक्ति मे औषधि जो लक्षण उत्पन्न करती है किसी भी रोग मे उन लक्षणो को वह औषधि दूर कर देती है। अफीम स्वस्थ-व्यक्ति मे सुन्नभाव पैदा कर देती है। व्यक्ति को कुछ भी अनुभव नहीं होता। उसकी सवदेनशीलता मारी जाती है। इसलिये जिस रोग मे भी संवेदन शीलता न रहे, उसमे **ओपियम** से लाभ होता है, शर्त यह है कि सवेदनशीलता का ह्रास **ओपियम** से ही न हुआ हो। उदाहरणार्थ, अगर डिफ्थीरिया मे, कार्बंकल मे, फोडो मे जिनमे स्वाभाविक तौर पर दर्द होना चाहिये किसी प्रकार का दर्द न हो, न्यूमोनिया, टाइफॉयड आदि बीमारियो मे रोगी को कुछ भी अनुभूति न हो, तो **ओपियम** से लाभ होगा। बालक को १०५ डिग्री का ज्वर हो, और वह दूसरे बच्चो के साथ खेलता फिरे, रोगी को ८-१० दिन से मूत्र न आया हो, इस बात से तो परेशान हो कि इतने दिनो से पेशाब नही हुआ, परन्तु उसे कष्ट किसी प्रकार का न हो, तब इस औषधि की २०० शक्ति की एक मात्रा से लाभ होता देखा गया है। मूत्र रुक जाने मे यह प्रमुख औषधि है। ज्वर मे, बच्चा जनने के बाद अगर मूत्र न आये, तो इससे लाभ होता है।

रोगी शान्त-मुद्रा मे पड़ा रहता है—कठिन-रोग मे भी तकलीफ न होने का एक रूप यह भी है कि **ओपियम** का रोगी बिल्कुल शान्त-मुद्रा मे पडा रहता है, चाहता है कि उसे वैसे ही पड़े रहने दिया जाय, कोई न छेडे। रुग्णा कहती है कि उसे कुछ नही है जब कि उसे १०५-१०६ डिग्री का बुखार होता है। गर्मी से वह तप रही होती है, पसीने से तर, परन्तु अगर पूछें—तबीयत कैसी है, तो कहती है, बिल्कुल ठीक हू, प्रसन्न हू, उसे किसी प्रकार का दर्द या कष्ट महसूस नही होता। नर्स कहती है कि रुग्णा को कई दिन से न टट्टी आयी है, न पेशाब आया है, परन्तु रुग्णा को कोई कष्ट नही। ऐसी हालत मे **ओपियम** काम करता है।

कभी-कभी यह शान्त-मुद्रा 'मूर्च्छा' (Coma) मे पायी जाती है। उस हालत मे रोगी की पुतली मानो एक-टक केन्द्रित दिखाई देती है। मूर्च्छा मे पुतली का एक-टक होना **ओपियम** का विशिष्ट-लक्षण है। इस लक्षण को याद रखने के लिये **'P-P-P'** को याद रखना चाहिये। **P-P-P** का अर्थ है—Pin-Point-Pupil—अर्थात्, पिन जैसे एक बिन्दु पर टिकी हुई नज़र।

(३) **अंगों में पक्षाघात की-सी शिथिलता**—रोगी के भिन्न-भिन्न अंगों मे पक्षाघात की-सी शिथिलता आ जाती है। पेट की आतें काम नही करती, टट्टी नहीं आती, गुदा मे सख्त, गोल-गोल, काले लेंड भरे रहते हैं जिन्हें गुदा मे से चम्मच या अगुली से ही निकाला जा सकता है। रोगी मल को निकालने के लिये जोर लगा ही नहीं सकता, गुदा-प्रदेश क्रिया-हीन हो जाता है। मूत्राशय में भी मूत्र निकालने की शक्ति नही रहती, मूत्र रुक जाता है। रोगी पानी पीता है तो गले के नीचे नहीं उतर सकता, पानी नाक से निकल जाता है।

(४) **गहरी नींद में खर्राटे का शब्द करना**—रोगी गहरी नीद मे नाक से जोर-जोर के खर्राटे भरता है, यह इस औषधि का विशेष-लक्षण है। इस लक्षण मे न्यूमोनिया तथा मस्तिष्क की नाडी के फट जाने के कारण पक्षाघात (Cerebral apoplexy) तक को **ओपियम** से लाभ होता है। एक वार गहरी नींद में पड जाने पर उसे जगा सकना कठिन हो जाता है। मस्तिष्क की नस फट जाने पर जो दिमाग़ मे रक्त-स्राव हो जाता है उसमे रोगी चेतनाशून्य, वेहोश-सा हो जाता है, सास वडे-वडे खर्राटो से आता है, जवडा गिर जाता है, आखें सिकुड जाती हैं, गरम पसीना आता है, प्रत्येक सास के साथ गालें फूलकर सास बाहर निकलता है। यह **ओपियम** की पूरी तस्वीर है। डा० नश लिखते है कि इस गहरी नींद की हालत मे रोगी पर रोशनी, स्पर्श, शोर-गुल या किसी वाह्य-वस्तु का प्रभाव नही पडता, इस समय होम्योपैथिक **ओपियम** का ही प्रभाव हो सकता है।

(५) **भय से उत्पन्न रोग—भयोत्पादक दृश्य का सामने बने रहना—भय से दस्त, मृगी आदि होना**—भय से उत्पन्न होनेवाले रोगो मे इससे लाभ होता है। उदाहरणार्थ, किसी के ऊपर अचानक कुत्ता झपट पडा, उसे भय के मारे ऐंठन होने लगी, मृगी का दौर पडने लगा, दस्त आने लगे। कई दिन, कई हफ्ते बीत जाने पर यह रोगी भय से छुटकारा पाता है। इसकी शिकायतें तव तक बनी रहती हैं जव तक रोगी के सामने भय उत्पन्न करने वाला दृश्य वना रहता है। एक गर्भवती स्त्री के सामने भय उत्पन्न करने वाली कोई घटना घटी, उसे गर्भपात की समावना पैदा हो गई। हर समय उसके सामने भय उत्पन्न करने वाली परिस्थिति वनी रहती है इसलिये उसका रोग भी वना रहता है। इस समय **ओपियम** लाभ करेगा। **एकोनाइट** मे भी भय से रोग उत्पन्न होता है, परन्तु **एकोनाइट** का भय वना नही रहता, **ओपियम** का भय घटना बीत जाने पर भी कई दिन तक वना रहता है। इसी प्रकार कई लोगो को तव से मृगी का दौर पडने लगता है जव से उनके जीवन मे कोई भयकारक घटना घटती है, उन्हें वह घटना भूलती ही नहीं, भय वना रहता है इसलिये मृगी का दौर भी पडता रहता है। कई स्त्रियो की इस भय की घटना के कारण माहवारी रुक

जाती है। **ओपियम** मे स्मरण रखने की बात यह है कि रोग का प्रारभ भय के कारण हुआ हो और भय की घटना बीत जाने के बाद भी रोगी के सामने वह घटना बार-बार आती रहती हो।

डा० ऐलन का कहना है कि **एकोनाइट** तथा **ओपियम** वानस्पतिक-दृष्टि से एक ही वर्ग के हैं, सभवत दोनो मे भय के लक्षण होने का यही कारण है।

(६) **कब्ज तथा दस्त, निद्रा तथा निद्रा-नाश—औषधि की प्राथमिक (Primary) तथा द्वितीयक (Secondary) क्रिया का विवेचन**—यह औषधि कब्ज के लिये भी है, दस्तो के लिये भी है, नीद लाने के लिये भी है, नीद उडाने मे लिये भी है, इस औषधि से मस्तिष्क जड (Dull) भी हो जाता है, मस्तिष्क तेज भी हो जाता है। ये सब परस्पर-विरोधी लक्षण इस दवा मे पाये जाते हैं। जब कब्ज होती है तब कई दिन तक टट्टी नही आती, गुदा सख्त मल से भरा रहता है, भय, अचानक-हर्ष आदि उद्वेगो से दस्त आने लगते हैं, दस्त अपने-आप निकल जाते हैं, काले और बदबूदार होते हैं। रोगी नीद मे पडा रहता है, कभी-कभी नीद पलको पर धरी होती है परन्तु नीद नही आती, रोगी की सब इन्द्रिया उत्तेजित रहती हैं, उसे मुर्गे की आवाज, सडक पर गाडियो की गडगडाहट, दरवाजे का खुलना-बन्द होना, घडी की टिक-टिक—सब सुनाई देता है, जो शब्द या गन्ध दूसरो को पता भी न चलें, वे सब उसे अनुभव होते हैं, जहा तक मस्तिष्क का सम्बन्ध है वह जड भी पडा रहता है। यह परस्पर-विरोध है।

प्राथमिक तथा द्वितीयक प्रभाव—एक ही औषधि मे दो परस्पर-विरुद्ध लक्षण क्यो पाये जाते हैं? **ओपियम** के रोगी मे कब्ज और दस्त, निद्रा और निद्रा-नाश, जडता और चौकन्नापन—इन विरोधी-लक्षणो का क्या कारण है, और किस लक्षण पर, कब यह दवा देनी चाहिये?

होम्योपैथी में किसी औषधि के लक्षणो को जानने के लिये स्वस्थ-व्यक्ति पर उस औषधि को देकर देखा जाता है कि उसमे वह किन लक्षणो को उत्पन्न करती है। ये लक्षण जिस रोग मे दीखें उसमे वह दवा दी जाती है और रोगी के उन लक्षणो को वह दूर कर देती है। यह होम्योपैथी का सिद्धान्त है।

ओपियम के विषय मे यह देखा गया है कि जब स्वस्थ-व्यक्ति को यह दवा दी जाती है तब परस्पर-विरुद्ध लक्षणो को उत्पन्न करती है। अगर किसी 'औषधि-परीक्षक' (Prover) मे यह पहले कब्ज करती है, तो बाद को उसी मे यह दस्त ले आती है, अगर किसी मे पहले दस्त लाती है तो पीछे कब्ज कर देती है। इसी प्रकार अगर पहले किसी को नीद लाती है, तो पीछे उसे उन्निद्र कर देती है, अगर पहले उन्निद्र करती है तो पीछे उसे नीद लाती है, अगर पहले उसे जड कर देती है तो पीछे चुस्त कर देती है, अगर पहले चुस्त करती है तो पीछे जड कर देती है। एक ही औषधि मे ये दो परस्पर-विरोधी गुण क्यो

पाये जाते हैं ? डा० केन्ट और डा० नैश का कथन है कि इन दोनो मे से पहला 'प्राथमिक' (Primary) गुण है, और दूसरा 'द्वितीयक' (Secondary) गुण है। इस 'प्राथमिक' तथा द्वितीयक' का क्या मतलव है ?

'प्राथमिक-गुण' (Primary action) तो औषधि का अपना गुण होता है, 'द्वितीयक-गुण' (Secondary action) जिसे हम भ्रमवश औषधि का गुण कहते हैं, वास्तव मे औषधि का गुण नही होता, वह जीवनी-शक्ति की औषधि के प्राथमिक-गुण के प्रति प्रतिक्रिया (Reaction of vital-force against the drug-action) होती है। उदाहरणार्थ, **ओपियम** ने 'औषधि-परीक्षक' (Prover) मे कब्ज़ उत्पन्न किया। क्योकि जीवनी-शक्ति रोग का मुकाविला किया करती है इसलिये औषधि के इस प्रभाव का जीवनी-शक्ति मुकाविला करने के लिये इससे उल्टी प्रक्रिया करने लगती है। जीवनी-शक्ति तो मनुष्य को स्वस्थ करना चाहती है, इसलिये किसी भी रोग का, चाहे वह औषधि से उत्पन्न किया गया हो, चाहे रोग रूप मे ही आया हो, जीवनी-शक्ति मुकाविला करते हुए रोग से उल्टी प्रक्रिया उत्पन्न कर देती है। अगर **ओपियम** ने कब्ज़ पैदा किया था, तो जीवनी-शक्ति दस्त उत्पन्न कर देती है ताकि व्यक्ति कब्ज़ और दस्त के अति के छोरो मे आगे-पीछे होता हुआ वीच मे आ टिके। जैसे घडी का पैंडुलम एक तरफ जाकर दूसरी तरफ लौटता है, और इस प्रकार आगे-पीछे होता हुआ वीच मे ठीक अपने स्थान पर आ टिकता है, इसी तरह जीवनी-शक्ति की प्रतिक्रिया औषधि से उत्पन्न होने वाले रोग से ठीक उल्टी होती है ताकि अन्त मे व्यक्ति स्वास्थ्य के केन्द्र मे आकर टिक जाय। अगर जीवनी-शक्ति औषधि से उत्पन्न होने वाले रोग के समान 'अति' की प्रक्रिया न करे, तो रोग प्रवल रूप धारण कर जाय। इससे स्पष्ट है कि 'औषधि-परीक्षक' (Prover) जव औषधि की अपने ऊपर परीक्षा करता है, तव उस पर पहला प्रभाव औषधि का होता है, जिसे हमने 'प्राथमिक-प्रभाव' (Primary action) कहा, दूसरा प्रभाव पहले प्रभाव से उल्टा जीवनी-शक्ति का होता है, जो औषधि के रोग उत्पन्न करने वाले प्रभाव को मिटाने के लिये होता है, जिसे हमने 'द्वितीयक-प्रभाव' (Secondary action) कहा।

डा० नैश लिखते हैं कि **ओपियम और कॉफिया को निद्रा और अनिद्रा, पोडोफाइलम** को दस्तो और कब्ज़ दोनो के लिये दिया जाता है। क्यो ? इसका कारण यही है कि प्रत्येक औषधि देने के वाद रोगी पर प्राथमिक और द्वितीयक ये दोनो प्रभाव होते हैं। 'प्राथमिक-प्रभाव' तो औषधि का अपना होता है, द्वितीयक-प्रभाव औषधि का नही होता, जीवनी-शक्ति का होता है। उघाई **ओपियम** का और दस्त **पोडो** का 'प्राथमिक-प्रभाव' (Primary action) है, मानसिक-उत्तेजना **कॉफिया** का 'प्राथमिक-प्रभाव' है। औषधि के अपने ऊपर इस

आक्रमण के विरुद्ध जीवनी-शक्ति लडाई छेड देती है। जीवनी-शक्ति की लडाई का रूप औषधि द्वारा उत्पन्न लक्षणो से उल्टे लक्षण उत्पन्न कर देना है। औषधि ने उघाई पैदा की, तो जीवनी-शक्ति निद्रा-हीनता उत्पन्न कर देती है, औषधि ने कब्ज पैदा की, तो जीवनी-शक्ति दस्त पैदा कर देती है। यही कारण है कि औषधि-परीक्षको मे हमे एक-दूसरे से उल्टे लक्षण दिखलाई देते हैं। इन लक्षणो को देखकर यह समझना भूल है कि ये लक्षण औषधि ने उत्पन्न किये हैं। इनमे से एक प्रकार के लक्षण औषधि के हैं, उससे उल्टे लक्षण जीवनी-शक्ति ने पैदा किये हैं। इस दृष्टि से इन विरोधी-लक्षणों को औषधि के ही 'प्राथमिक' तथा 'द्वितीयक' लक्षण कहना भूल है। **ओपियम** के कब्ज आदि लक्षण औषधि के अपने हैं, दस्त आदि उल्टे लक्षण जीवनी-शक्ति की प्रतिक्रिया के परिणाम हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि औषधियो के परस्पर-विरुद्ध लक्षण क्यो दिखलाई देते हैं।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि औषधि का निर्वाचन करते हुए किस प्रकार निश्चय किया जाय कि कौन-से लक्षण पर औषधि दी जाय? क्या उघाई मे **ओपियम** दिया जाय, या नीद न आने मे, क्या दस्तो मे **पोडोफाइलम** दिया जाय, या कब्ज मे, क्या उत्तेजना मे **कॉफिया** दिया जाय, या उत्तेजना-हीन अवस्था मे?

इसका उत्तर देते हुए डा० कैन्ट लिखते हैं कि जब स्वस्थ व्यक्ति पर **ओपियम** के लक्षणो मे हम यह देखते हैं कि औषधि का प्रभाव निंदासापन लाता है, उसके बाद जीवनी-शक्ति का प्रभाव अपने-आप निद्राहीनता ले आता है, तब रोग मे भी हमे यही देखकर औषधि का चुनाव करना होगा। अगर कोई रोगी उन्निद्र है, उसे नीद नही आती, परन्तु नीद न आने से पहली दशा मे वह ऊघता ही रहता था, तब उसके लक्षण **ओपियम** से मिल गये। इसी प्रकार अगर कोई रोगी पहले कब्ज का शिकार था, अब उसे दस्त आने लगे, तब भी उसके लक्षण **ओपियम** से मिल गये क्योकि उसमे भी पहले कब्ज और फिर जीवनी-शक्ति की प्रतिक्रिया के रूप मे दस्त आने लगते हैं। अगर रोगी को पहले दस्त आते थे, बाद को कब्ज हो गई, या पहले कब्ज थी बाद को दस्त आने लगे, दोनो हालात मे **ओपियम** इसलिये दिया जायगा क्योकि रोगी मे इसका गति-क्रम वही है जो स्वस्थ-व्यक्ति पर **ओपियम** के परीक्षण मे पाया गया है।

ऊपर जो-कुछ कहा गया है उसके अतिरिक्त अगर कब्ज, दस्त आदि के साथ **ओपियम** के अन्य लक्षण हो, रोगी रोग होने पर भी रोग अनुभव न करता हो, नीद मे रहता हो, भय बराबर बना रहता हो, तो इन लक्षणो के आधार पर किसी भी रोग मे **ओपियम** दिया जा सकता है। इसीलिये डा० क्लार्क का कहना है कि हमे इस पचडे मे पडने की आवश्यकता नही कि औषधि का

है या 'द्वितीयक' (Secondary) है। हमे
प्रभाव 'प्राथमिक' (Primary) है या 'द्वितीयक' (Secondary) है। हमे
लक्षण देखकर दवा दे देनी चाहिये। क्योकि होम्योपैथक पुस्तको मे औषधि के
'प्राथमिक' तथा 'द्वितीयक' प्रभाव पर काफी वाद-विवाद पाया जाता है इसलिये
हमने भी इस विषय कर डा० कैन्ट और डा० नैश की विचारधारा को यहा
स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

(७) **विस्तर को अधिक गर्म अनुभव करना**—रोगी विस्तर को बहुत
गर्म अनुभव करता है, विस्तर मे ठड की जगह को तलाशता रहता है। कपडा
नही ओढता।

(८) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २००, (औषधि 'गर्म'—Hot—
प्रकृति के लिये है)

औग्ज़ैलिक ऐसिड (OXALIC ACID)

(१) **भिन्न-भिन्न प्रकार का दर्द**—डा० कैन्ट का कहना है कि इस
औषधि के समान शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे दर्द के लिये कोई दूसरी दवा
नही है। भयकर दर्द होता है, काटने वाला, गोली के लगने की तरह का। निम्न
दर्दों मे इस औषधि की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये—

1 **एन्जाइना पेक्टोरिस (Angina pectoris)**—यह औषधि हृदय के
अनेक-रोगो को ठीक कर देती है जिनमे हम लोग प्राय अन्य असफल औषधियो
का प्रयोग किया करते हैं। 'एन्जाइना पेक्टोरिस' मे निम्न-लक्षण हो तो इससे
विशेष लाभ होता है।

बायें फेफड़े के नीचे के हिस्से का दर्द—'एन्जाइना पेक्टोरिस' मे अगर
वायें फेफडे के नीचे के हिस्से मे दर्द हो, तो इससे लाभ होता है। शरीर के
सपूर्ण वायें हिस्से मे इसका वायें फेफडे के नीचे के हिस्से पर विशेष प्रभाव
पडता है। यह उस स्थल को खास तौर पर चुनती है। वायें फेफडे के नीचे के
भाग मे काटता हुआ दर्द इस औषधि का विशेष-लक्षण है। यह दर्द इतना तेज
होता है कि रोगी का कुछ क्षणो के लिये सास तक रुक जाता है।

ii **कमर के नीचे के हिस्से (Lumbar region) से दर्द टागों तक
फैल जाता है**—इस औषधि का मेरु-दड (Spine) पर भी विशेष प्रभाव
पडता है। इसी प्रभाव के कारण कमर के नीचे के हिस्से से दर्द चल कर दोनो
गुर्दों के ऊपर से होता हुआ टागो तक फैल जाता है। सारी पीठ मे दर्द होता है।
हाथ और पांव सुन्न पड जाते हैं। कन्धे से अगुलियो तक सुन्नपन आ जाता है।

iii **वक्षास्थि (Sternum) से दर्द चल कर बायें कन्धे की तरफ जाता
है**—काटता हुआ दर्द वक्षास्थि से उठता है और वायें कन्धे और वाजू की तरफ
जाता है। स्कन्ध-फलक (Scapula) के नीचे के बिन्दु पर दर्द होता है।

कन्धो के बीच से दर्द उठकर कमर के नीचे तक जाता है। कमर के नीचे से जाघो तक दर्द हो सकता है। इस दर्द का विशेष-लक्षण यह है कि हरकत से रोगी को आराम पहुचता है। जिस स्थिति मे वह बैठा होता है उसे बदलने से उसे राहत मिलती है। यह लक्षण विशेष इसलिये है क्योंकि प्राय दर्द मे रोगी को बिना हिले-जुले पड़े रहने से आराम मिला करता है। दायें कन्धे के अस्थि-फलक (Scapula) के नीचे के बिन्दु पर दर्द मे चेलिडोनियम लाभ करता है, अगर रोग पुराना हो जाय तो लाइको लाभप्रद रहता है—चेलिडोनियम तथा लाइको दोनो औषधियाँ दायें भाग पर असर करती हैं।

(२) **औषधि बायीं तरफ प्रभाव करती है**—यह औषधि मुख्य तौर पर शरीर के बायें हिस्से पर प्रभाव करती है।

(३) **खट्टी चीज तथा मीठा खाने से रोग बढ़ता है**—खट्टे फल, खट्टा सेब, खट्टे अगूर, टमाटर आदि खाने से रोग बढता है। मीठा खाने से भी रोग मे वृद्धि होती है। स्टार्च का भोजन अनुकूल नही पडता।

(४) **दर्द आदि लक्षणो पर सोचते ही लक्षण बढ़ जाते हैं**—रोगी ज्यो ही अपने दर्द के विषय मे सोचता है, दर्द लौट आता है। यह बात दर्दों के विषय मे ही नही घटती, अगर पेशाब की सोचता है तो पेशाब रोक नही सकता, भाग कर जाना पडता है, अगर पाखाने की सोचता है तो पाखाने को रोक नही सकता, पाखाना जाना ही पडता है। ऐसे लक्षण महत्व के होते हैं।

(५) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

पेट्रोलियम (PETROLEUM)

(१) एग्जीमा तथा छोटी-छोटी फुन्सियों मे से पतला, पानी जैसा स्राव निकलना
(२) एग्जीमा आदि सर्दी मे होते हैं, गर्मी मे हट जाते हैं
(३) पेचिश या दस्त दिन को आते हैं, रात को नहीं आते
(४) खासी रात को आती है, दिन को नहीं आती
(५) सिर की गुद्दी मे दर्द होता है
(६) शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे ठडक अनुभव करना
(७) खाने से पेट का दर्द ठीक हो जाना
(८) पाँव की ऐडी मे दर्द
(९) समुद्र-यात्रा मे जी मतलाना
(१०) पुरुष तथा स्त्री के जननागो मे फोडे-फुन्सी

(१) **एग्जीमा तथा छोटी-छोटी फुन्सियों मे से पतला, पानी जैसा स्राव निकलना**—यह दवा एग्जीमा और छोटी-छोटी फुन्सियो मे विशेष लाभ करती है। ये एग्जीमा तथा फुन्सिया शरीर के किसी भाग मे ही हो सकती हैं। विशेष

तौर पर ये खोपडी पर, कानो के पीछे, अडकोशो की थैली, गुदा, हाथ, पैर, अगुली आदि पर होती हैं । हाथ फट जाता है, पैरो मे बिवाइया पड जाती हैं, त्वचा जगह-जगह फटी दिखलाई देती है । इस प्रकार के एग्ज़ीमा मे, फुन्सियो तथा अगो के फट जाने पर ग्रैफाइटिस दिया जाता है, परन्तु इन दोनो के स्राव मे भेद है । पैट्रोलियम का स्राव पतला, पनीला होता है, ग्रैफाइटिस का स्राव चिप-चिपा, शहद के समान होता है । चर्म-रोग, अगुलिया खुरखुरी और चिटकी हुई —यह पैट्रोलियम का घातुगत (Constitutional) रूप है ।

(२) **एग्ज़ीमा आदि सर्दी मे होते हैं, गर्मी मे हट जाते हैं**—इस औषधि का मुख्य सूचक-लक्षण यह है कि एग्ज़ीमा आदि त्वचा के रोग सर्दियो मे प्रकट होते हैं, गर्मियो में चले जाते हैं। दूसरी कोई औषधि ऐसी नही है जिसमे यह बात विशेष रूप से पायी जाती हो । सर्दिया आते ही रोगी के हाथ-पैर फट जाते हैं । उनमे से खून निकलने लगता है, एग्ज़ीमा प्रकट हो जाता है, और गर्मिया आते ही यह सब ठीक हो जाता है । डा० नैश लिखते हैं कि एक रोगी जिसके हाथ सर्दियो मे एग्ज़ीमा से भर जाते थे अतिसार—दस्तो—से पीडित था । सर्दियों मे एग्ज़ीमा प्रकट होने के लक्षण पर उसे पैट्रोलियम २०० देने से उसका अतिसार रोग और त्वचा का रोग दोनो जाते रहे ।

(३) **पेचिश या दस्त दिन को आते हैं, रात को नहीं**—इसका एक विशेष लक्षण यह है कि रोगी को पेचिश या दस्तो की शिकायत मे टट्टी जाने की हाजत दिन को तो होती है, रात को नही होती। रात को रोगी आराम से सोता है ।

(४) **खासी रात को आती है, दिन को नहीं**—खासी के सबध मे उल्टी बात है । रोगी रात को खासा करता है, दिन को खासी नही उठती, दिन को वह आराम से रहता है ।

(५) **सिर की गुद्दी मे दर्द**—रोगी को सिर की गुद्दी मे दर्द होता है, सिर के पीछे का भाग सीसे की तरह भारी मालूम होता है। यह दर्द सिर के ऊपर के भाग से चढता हुआ आखो तक फैल जाता है ।

(३) **शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे ठडक अनुभव करना**—रोगी शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानो मे ठडक अनुभव करता है । यह इस औषधि का अद्भुत-लक्षण है । किसी को पेट मे ठडक अनुभव होती है, किसी को आँतो मे, किसी को पीठ के दोनो फलको के बीच मे, किसी को हृदय मे ऐसा लगता है मानो हृदय ठंडा हो । स्त्रिया को जरायु मे ठडक अनुभव होती है ।

(७) **खाने से पेट का दर्द ठीक हो जाना**—इस औषधि मे **चेलिडोनियम** तथा **ऐनाकार्डियम** की तरह खाने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है । गर्भवती स्त्री को खाली पेट होने पर जब पेट का दर्द होता है, तब इसे दूर करने के लिये वह लगातार खाया करती है । ऐसे लक्षण मे इससे लाभ होता है ।

(८) **पाँव की ऐंडी मे दर्द**—रोगी के पाव के ऐंडी मे दर्द होता है, वह चल-फिर नही सकता।

(९) **समुद्र-यात्रा मे जी मतलाना**—समुद्र-यात्रा के समय या गाडी आदि पर चढते हुए चक्कर आने पर यह अत्युत्तम औषधि है। इस लक्षण मे यह कौक्युलस के समान है।

(१०) **पुरुष तथा स्त्री के जननागो मे फोडे-फुन्सी**—पुरुष तथा स्त्री के जननागो पर फोडे-फुन्सी हो जाने मे **पैट्रोलियम** तथा **रस टॉक्स** दोनो लाभ करते हैं, परन्तु **पैट्रोलियम** के फोडे-फुन्सी छोटे होते हैं, **रस टॉक्स** के बडे।

(११) **शक्ति**—३, ६, ३०, २००

फॉसफोरस (PHOSPHORUS)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) स्नायु-सस्थान (Nervous system) पर के रोगो की प्रमुख-औषधि (लक्षणो का यकायक होना—एकदम नि सत्व होजाना, बेहोशी, एकदम पसीना आ जाना आदि)	**लक्षणो मे कमी (Better)**
(२) जीवनी-शक्ति का निम्नतम-स्तर पर पहुच जाना (शोक, चिता, मानसिक-कार्य मे अति, व्यभिचार आदि का दुष्परिणाम)	*खाने से रोगी को आराम
(३) स्नायु-रोग मे भिन्न-भिन्न अगो मे जलन, जलन मे सलफर, आर्सेनिक से तुलना	*नींद से रोगी को आराम
(४) उपेक्षा (Indifference), उपेक्षा मे नैट्रम म्यूर तथा सीपिया से तुलना	*मालिश से रोगी को आराम
(५) सहज-स्राव (Bleeding remedy)	*पेट के लक्षणो मे ठंडे भोजन से रोगी को अच्छा लगना
(६) सारी पाक-स्थली का खाली-खाली अनुभव करना और रात को भी उठकर खाना	*नमकीन और घी के पदार्थ पसन्द करना
(७) शीत-प्रधान होने पर भी पेट तथा सिर मे ठड पसन्द करना	**लक्षणो मे वृद्धि (Worse)**
(८) कब्ज मे कुत्ते के मल जैसा, और दस्तो मे मल-द्वार मानो खुल गया जैसा	*ठडी हवा से रोग-वृद्धि
(९) गर्म कमरे से ठड मे जाने से खांसी, गला पकना या बैठ जाना	*वायु-मडल मे एकदम परिवर्तन से रोग-वृद्धि
(१०) न्यूमोनिया तथा टी० बी० मे उपयोगी	*मानसिक श्रम से रोग-वृद्धि
	*मानसिक-थकावट से वृद्धि
	*मानसिक उद्वेग से रोग-वृद्धि
	*बाईं करवट लेटने से वृद्धि

(१) स्नायु-सस्थान (Nervous system) **के रोगी की प्रमुख औषधि (लक्षणों का यकायक होना—नि सत्वता, बेहोशी, पसीना)**—स्नायु-सस्थान पर प्रभाव करने वाली इसके बराबर दूसरी कोई औषधि नही है। स्नायु-सस्थान का केन्द्र मस्तिष्क तथा मेरु-दंड (Spinal cord) हैं। इन पर जब रोग आक्रमण करता है तब यकायक लक्षण (Sudden symptoms) प्रकट होते हैं। रोगी एकदम नि सत्व, शिथिल, सत्वहीन, बलहीन हो जाता है, कापने लगता है, अग सुन्न पड़ जाते हैं, पक्षाघात हो जाता है, बेहोशी आ जाती है, एकदम पसीना आने लगता है। ये सब मस्तिष्क अथवा स्नायु-सस्थान पर रोग के आक्रमण के लक्षण हैं, और इन लक्षणो के होने पर **फॉसफोरस** का ध्यान मे रखना उचित है।

(२) जीवनी-शक्ति का निम्न-स्तर पर पहुच जाना (शोक, चिंता, मानसिक कार्य मे अति, व्यभिचार आदि का दुष्परिणाम)—इस प्रकार मस्तिष्क तथा मेरु-दण्ड पर रोग का आक्रमण तब होता है जब जीवनी-शक्ति अपने निम्न-तम स्तर पर पहुच जाती है। निम्न-तम स्तर पर पहुचने के अनेक कारण हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, दु ख, शोक, चिन्ता, दिन-रात मानसिक-कार्य मे लगे रहने से उसमे अति कर देना या व्यभिचार आदि कुकर्मों मे जीवनी-शक्ति का ह्रास कर देना आदि ऐसे कारण हैं जिनसे जीवनी-शक्ति निम्नतम-स्तर मे पहुंच जाती है और यकायक शक्तिहीनता, कपन, अगो का सुन्न पड जाना, एकदम पसीना आना आदि लक्षण प्रकट होने लगते हैं। **फॉसफोरस** का इस अवस्था पर विशेष स्वास्थ्यप्रद प्रभाव है। इससे स्नायुओ का पोषण होने लगता है, उनका क्षीण होना रुक जाता है। इसलिये इसे 'स्नायु की औषधि' (Nerve remedy) कहा जाता है। जीवनी-शक्ति के निम्न-स्तर पर होने की दशा में कोई छोटा-सा भी कारण शारीरिक तथा मानसिक क्षीणता को उत्पन्न कर सकता है और ज़रा-से ही मानसिक-आघात से मनुष्य ढह सकता है।

(३) स्नायु-रोग मे भिन्न-भिन्न अगों मे जलन, जलन मे सलफर और आर्सेनिक से तुलना—जीवनी-शक्ति के निम्नतम-स्तर पर पहुचने का प्रथम-प्रकाश शरीर के भिन्न-भिन्न अंगो मे जलन के रूप मे प्रकट होता है। यह जलन विशेष तौर पर त्वचा मे होती है। रोगी खासकर प्रात काल इस जलन से बेचैन रहता है, घबराया रहता है, चिंताकुल रहता है, टिक कर बैठ नहीं सकता, लगातार हरकत करता रहता है, कभी यहा बैठता है, कभी वहा, न कही चैन से खडा रह सकता है, न कही चैन से बैठ सकता है, कही टिक नही सकता, इसे अंग्रेजी मे —Figetty— कहते हैं। **जिकम** मे भी न टिकने का लक्षण है, परन्तु न टिक सकने की बेचैनी उसके पैरो तक सीमित रहती है, वह पैर हिलाता रहता है, परन्तु **फॉसफ़ोरस** नो समस्त शरीर से बेचैन रहता है, बेचैनी सिर्फ पैरो मे ही सीमित नही रहती।

फॉसफोरस की जलन विशेष तौर पर रीढ की हड्डी मे पायी जाती है। रीढ की हड्डी के भिन्न-भिन्न स्थानो मे रोगी को जलन अनुभव होती है, खास करके दोनो फलको के बीच के स्थान पर। लाइको मे भी फलको के बीच के स्थान पर जलन पायी जाती है। लाइको मे कन्धो के बीच मे जलन ऐसी अनुभव होती है जैसे राई का प्लास्तर लगा हो। रीढ की हड्डी के अलावा पीठ मे भी जलन नीचे से ऊपर को जाती है। इस जलन का लक्षण—'Feeling of intense heat running up the back'—इन शब्दो मे प्रकट किया गया है। इस प्रकार की जलन इसमे अन्य किसी औषधि की अपेक्षा अधिक है। मेरु-दड (Spinal cord) के रोगो मे फॉसफोरस का अन्य औषधियो की अपेक्षा प्रमुख स्थान है।

जलन मे फॉसफोरस की सलफर तथा आर्सेनिक से तुलना—जलन मे मुख्य तौर पर तीन औषधियो की तरफ ध्यान दिया जाता है। वे हैं—सलफर, आर्सेनिक तथा फॉसफोरस। जलन के पुराने रोगो मे सलफर और नवीन रोगो मे आर्सेनिक उपयोगी है। इसका यह अभिप्राय नही कि आर्सेनिक जलन के पुराने रोगो मे लाभ नही करता। अगर घाव बहुत पुराना हो जाय, सडने लगे, जलन करता हो, तो पुराना होने पर भी उसमे आर्सेनिक लाभ करेगा। फॉसफोरस की जलन इतनी ही तीव्र होती है जैसी सलफर या आर्सेनिक की, परन्तु भेद यह है कि आर्सेनिक की जलन मे सेक से रोगी को आराम पहुचता है, जो बात सलफर और फॉसफोरस मे नही है। फॉसफोरस की जलन सिर्फ स्नायविक (Nervous and subjective) हो सकती है। जहाँ कही भी तीव्र जलन का लक्षण हो, वहा फॉसफोरस को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिये। सिकेल कौर मे भी जलन है, परन्तु उसकी जलन आर्सेनिक से उल्टी होती है। आर्सेनिक तो गर्मी पसन्द करता है, परन्तु सिकेल गर्मी को बर्दाश्त नही कर सकता, कपडा तक अपने पर नही रख सकता। सलफर की जलन प्राय पाव के तलुवो मे अनुभव होती है, विस्तर मे जाते ही रोगी के पाव के तलुवे जलने लगते है, वह विस्तर मे पाव रखने के लिये ठडी जगह ढूढा करता है या विस्तर से पाव बाहर निकाल लेता है, फॉसफोरस की जलन विशेष तौर से हथेलियो मे होती है। जैसे सलफर का रोगी पावो को नही ढक सकता, वैसे फॉसफोरस का रोगी हाथो को नही ढक सकता। जलन हाथो से शुरु होकर शरीर के अन्य स्थानो पर, चेहरे तक भी फैल जाती है।

(४) उपेक्षा-वृत्ति (Indifference), उपेक्षा मे नैट्रम म्यूर तथा सीपिया से तुलना—इस औषधि मे 'उपेक्षा' (Indifference) विशेष रूप मे पायी जाती है। किसी बात मे रुचि नही रहती, रोगी कोई काम नही करना चाहता। उपेक्षा की दृष्टि से इसकी नैट्रम म्यूर तथा सीपिया से तुलना की जानी चाहिये।

सगे-सबंधियो, मित्रो के प्रति उपेक्षा इन तीनो मे है, परन्तु **फॉसफोरस** और **सीपिया** मे **नैट्रम म्यूर** की अपेक्षा यह उपेक्षा अधिक है। जीवन की हर बात के प्रति उदासीनता एव घर के लोगो के प्रति उपेक्षा के लक्षण होने पर इन तीनों मे निम्न प्रकार भेद किया जा सकता है—

सहानुभूति पसन्द करता है	**फॉसफोरस**	X	X
सहानुभूति पसन्द नहीं करता	X	**नैट्रम म्यूर**	**सीपिया**
दूसरो का साथ चाहता है	**फॉसफोरस**	X	X
इकला रहना चाहता है	X	**नैट्रम म्यूर**	**सीपिया**
नमक के लिये विशेष रुचि है	**फॉसफोरस**	**नैट्रम म्यूर**	X
घी के पदार्थो से घृणा करता है	X	**नैट्रम म्यूर**	**सीपिया**
सर्द—Chilly—है	**फॉसफोरस**	X	**सीपिया**
गर्म—Warm—है	X	**नैट्रम म्यूर**	X
तूफ़ान-आधी-अधड़ से रोग बढ़ता है	**फॉसफोरस**	X	**सीपिया**

'उपेक्षा' अथवा किसी भी काम मे रुचि का अभाव—यह इन तीनो मे पाया जाता है, परन्तु अपने सगे-सबधियो, यहा तक कि अपने बच्चो के प्रति भी प्रेम का अभाव विशेष रुप से **सीपिया** और **फॉस** मे पाया जाता है। **फॉस** दूसरो की सहानुभूति चाहता है, दूसरो के साथ रहना चाहता है, इकला रहने से डरता है, इकला रहना नही चाहता, **नैट्रम म्यूर** और **सीपिया** सहानुभूति पसन्द नही करते, इकले रहना पसन्द करते हैं। **फॉस** और **सीपिया** दोनो सर्द हैं, **नैट्रम म्यूर** गर्म है। **फॉस** और **नैट्रम म्यूर** दोनो नमकीन चीज़ो के बहुत शौकीन हैं, **सीपिया** नमक की शौकीन नही है। **फॉस** घी के पदार्थों का शौकीन है, **नैट्रम म्यूर** और **सीपिया** घी के पदार्थो से घृणा करते हैं। **फॉस** और **सीपिया** 'सर्द'—Chilly—प्रकृति की हैं, **नैट्रम म्यूर** 'गर्म'—Hot—प्रकृति की है।

(५) **सहज-स्राव** (Bleeding remedy)—इस औषधि के रोगी को रक्त-स्राव झट-से होने लगता है। ज़रा-सी चोट से खून निकलने लगता है, जमता नही। किसी-किसी रोगी के लिये रक्त-स्राव की यह प्रकृति अत्यन्त खतरनाक होती है। उसका रक्त बहता ही जाता है, इसी से उसकी मृत्यु तक हो सकती है। फॉसफोरस-प्रकृति की स्त्री को रक्त-स्राव तो होना ही चाहिये, अगर माहवारी का रक्त-स्राव नही होता, तो किसी और जगह से खून बह निकलेगा। नाक मे, फेफडो से, किसी भी स्थान से रक्त बह-निकलना इसका चरित्रगत-लक्षण है। जहा से स्वाभाविक तौर पर रक्त निकलना चाहिये वहा से न निकलेगा, तो दूसरी जगह से—Vicarious bleeding—निकलेगा।

(६) **सारी पाक-स्थली का खाली-खाली अनुभव करना और रात को भी उठकर खाना**—रोगी अनुभव करता है कि उसकी सम्पूर्ण पाक-स्थली

खाली हो गई है, उसमें कुछ नहीं रहा। रोगी बिना खाये नहीं रह सकता, रात को भी उठकर खाता है। भूख को क्षण भर के लिये भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। अभी खाया है, परन्तु खाने के बाद फिर भूख को अनुभव करता है। खाने से उसका कष्ट मिटता है, परन्तु खाने के बाद फिर भूख का अनुभव होता है। इस प्रकार भूख का अनुभव होना आयोडाइन, चेलिडोनियम, पेट्रोलियम तथा ऐनाकार्डियम में पाया जाता है। परन्तु भूख अनुभव होने के अतिरिक्त रोगी को पेट का खाली-खाली होने का अनुभव होना भी फॉसफोरस का लक्षण है। पेट के खाली-खाली होने का लक्षण इग्नेशिया, हाइड्रैस्टिस, कैलि कार्ब, सीपिया तथा स्टैनम में भी पाया जाता है, परन्तु फॉसफोरस में पेट का खालीपन ऊपर-नीचे सारे पेट में होता है, पेट (Stomach) में ही नहीं, बल्कि 'पाक-स्थली' (Abdomen) में पाया जाता है। इग्नेशिया में पेट के खालीपन के साथ रोगिणी गहरी सांस छोड़ती है, हाइड्रैस्टिस में खाने के बाद भी यह खालीपन, शून्यता बनी रहती है, और खाद्य ही खाने की वस्तु से घृणा होती, और सदा कब्ज रहता है, कैलि कार्ब में पेट अन्दर धसता-सा मालूम होता है, खाने से भी यह शून्यता नहीं मिटती, सीपिया में पेट की शून्यता 'मानो पेट में कुछ भी नहीं' खाने से कम हो जाती है, स्टैनम में पेट के खालीपन के साथ छाती की कमजोरी पायी जाती है। पेट के खाली-खाली होने का अनुभव फॉसफोरस में सब से ज्यादा पाया जाता है।

(७) रोगी के शीत-प्रधान होने पर भी पेट तथा सिर में ठंड पसन्द करना— रोगी स्वभाव से शीत-प्रधान होता है, ठंड से उसके रोग बढ़ जाते हैं, गर्मी पसन्द करता है, यह उसका 'व्यापक-लक्षण' है। परन्तु कभी-कभी 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) तथा 'अंग-विशेष के लक्षण' (Particular symptom) में विरोध भी होता है। फॉसफोरस का रोगी अपने 'व्यापक-लक्षण' में तो शीत-प्रधान है, परन्तु पेट तथा सिर के रोगों में उसे ठंडक पसन्द होती है। वह आइस-क्रीम खाना पसन्द करता है, बर्फ का पानी पीना चाहता है, परन्तु पेट में ठंडे पानी पीने के साथ इसका लक्षण यह है कि पेट में जब वह पानी गर्म हो जाता है, तब उल्टी हो जाती है। अगर रोगी शीत-प्रधान हो, परन्तु ठंडा पानी पीये और ठंडा पानी पीने के बाद जब वह पेट में गर्म हो जाय तब उल्टी हो जाय, तो फॉसफोरस से अवश्य लाभ होगा। पेट के दर्द में अगर ठंडी चीजें खाने से आराम हो, गर्म खाने से तकलीफ बढ़े, तो पेट में कैंसर होने की संभावना होती है। ऐसे लक्षण में फॉस लाभ करता है।

(८) कब्ज में कुत्ते के मल-जैसा, और दस्तों में मल-द्वार मानो खुल गया जैसा लगना— कब्ज में मल खुश्क, लम्बा, कुत्ते के मल-जैसा, चिमडा और बहुत कांखने से निकलता है। अगर रोगी को दस्त आये तो ऐसे लगता है मानो पानी का नलका धड़ाके से खुल गया और नल के पानी की तरह बहने लगा। अगर

ऐसा नहीं होता, तो मल अपने-आप गुदा-प्रदेश से रिसा करता है। हनीमैन ने लिखा है कि यह औषधि उन रोगियो को बहुत लाभ पहुँचाती है, जो पतली टट्टी या अतिसार (दस्तो) के पुराने मरीज़ होते हैं।

(६) गर्म कमरे से ठडे स्थान मे जाने से खासी, गला पकना या बैठ जाना—गर्म कमरे से ठडी हवा मे जाने से खासी उठने लगे तो फॉस, और ठडक से गर्म कमरे मे जाने से खासी आये तो **ब्रायोनिया** औषधि है। गला पक जाता है, दुखने लगता है, बोला नही जाता। गायको तथा व्याख्याताओ के गला बैठ जाने और दुखने मे **फॉस** लाभप्रद है।

(१०) न्यूमोनिया तथा टी० बी० मे उपयोगी—न्यूमोनिया मे रोगी बायीं करवट नहीं लेट सकता—हम **लाइकोपोडियम** के प्रकरण मे लिख आये हैं कि न्यूमोनिया मे तीन अवस्थाए होती हैं—पहली अवस्था 'शोथावस्था' (Congestive stage) की होती है जिसमे फेफडे मे शोथ हो जाती है, दूसरी अवस्था 'स्थूलावस्था' (Hepatization) की है जिसमे फेफडा कफ से भर जाता और कडा पड जाता है, तीसरी अवस्था 'विपाकावस्था' (Stage of Resolution) की है जिसमे अगर कफ घुल गया तो रोगी अच्छा हो जाता है, न घुला तो कफ न निकल सकने के कारण मर जाता है। तीसरी अवस्था मे रोगी सास के लिये छटपटाता है और उसके नथुने पखे की तरह सास लेने के लिये चलते हैं। इस अवस्था मे **लाइको** चमत्कारी लाभ करता है। **फॉसफोरस** मे न्यूमोनिया का आक्रमण प्राय दाहिने फेफडे के निचले आधे हिस्से (Lower half of the right lung) पर होता है। रोगी को छाती पर बडा बोझ महसूस होता है, बायी करवट नही लेट सकता। पहली तथा दूसरी अवस्थाओ मे **फॉस** रोगी को लाभ करता है।

टी० बी० मे बहुत नीची तथा बहुत ऊची शक्ति नहीं देनी चाहिये—डा० कैन्ट का कहना है कि टी० वी० की जब शुरुआत हो, तब फॉस उपयोगी औषधि है। रोगी की सिकुडी-हुई छाती होती है, पतला-दुबला शरीर, जीवनी-शक्ति-शून्य। हर बार जब ठड लगती है, वह छाती मे बैठ जाती है। हर बार की ठड के बाद छाती मे घड़घडाहट होती है, कफ भीतर चिपका होता है, खासते-खासते जिस्म कापने लगता है। रोगी छाती और गर्दन से सूख जाता है। कमज़ोरी जब बढती जाती है, तो यह खासी क्षय-रोग का रूप धारण कर लेती है, तेज़ बुखार होने लगता है, रात को पसीना आता है, दोपहर को बुखार चढ़ता है, और मध्य-रात्रि तक बना रहता है। ऐसी अवस्था मे **फॉसफोरस** की उच्च-शक्ति की एक खुराक देने से बुखार घट जायगा और रोगी मृत्यु-समय तक आराम से रहेगा। डा० कैन्ट कहते हैं कि क्षय-रोग (तपेदिक) में जब **फॉसफोरस** की उच्च-शक्ति की एक मात्रा देने से बुखार घट जाय, तब **फॉसफोरस** की

उच्च-शक्ति की दूसरी मात्रा का प्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने में पहली मात्रा का असर जाता रहेगा और रोगी को फिर बुखार चढ़ जायगा। उनके कथनानुसार तपेदिक के रोगियों को यह औषधि तब दी जानी चाहिये थी जब वे अभी ठीक होने की हालत में थे। अगर देना ही ठीक जंचे, तो ३० शक्ति की मात्रा देकर देख लेना चाहिये, इसमें कोई आपत्ति नहीं। ३० शक्ति की मात्रा से यदि लाभ होता दीखे, तब उच्च-शक्ति की मात्रा दी जा सकती है, परन्तु जो रोगी तपेदिक के पूरे कब्जे में आ चुके हैं, उन्हें ३० या २०० से ऊपर की शक्ति की फॉसफोरस देना खतरनाक है, खासकर जब रोगी तपेदिक की अन्तिम अवस्था में हो। जो फॉसफोरस के रोगी हैं उन्हें अति निम्न-शक्ति (३, ६) की यह औषधि देना भी विष के समान है। इस संबंध में डा० कैन्ट के सल्फर, फॉस तथा साइलीशिया के विषय में विचार हमने सल्फर के प्रकरण में दिये हैं।

(११) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i पपोटे सूजना—ऊपर के पपोटों के सूजने में कैलि कार्ब, नीचे के पपोटों के सूजने में एपिस तथा आंखों के ऊपर-नीचे और चेहरे के सूजने में फॉस उपयोगी है।

ii नींद के बाद आराम—थोड़ी सी नींद के बाद रोगी को आराम मिलता है। लैकेसिस में नींद के बाद रोग के लक्षण बढ़ जाते हैं।

iii वृद्ध-पुरुषों के चक्कर—मस्तिष्क के रोग से चक्कर आने तथा वृद्ध-पुरुषों के अनेक प्रकार के चक्करों में यह महौषधि है। दूसरी कोई औषधि चक्कर के इतने लक्षणों पर नहीं घटती।

iv रोगी नंगा हो जाता है—कभी-कभी रोगी प्रेमावेश में आकर अपने को नंगा कर लेता है। निर्लज्ज होकर अपने अंगों का प्रदर्शन करता है। हायोसाइमस में भी यह लक्षण है।

v पुराने जुकाम में खून आना—रोगी का जुकाम पुराना हो जाता है। उसके रुमाल में जुकाम का खून लगा रहता है।

vi नींद देर में और टूट-टूट कर आती है—रोगी को नींद देर में, और टूट-टूट कर आती है। प्रेम के स्वप्न आते हैं।

(१२) फॉसफोरस का सजीव मूर्त-चित्रण—स्नायु-प्रधान, तपेदिक के रोगी जैसा, लम्बा, पतला, चिपटी छाती, जन्म से कमजोर, हड्डियां ऐसी जैसे जल्दी बढ़ गयी हों, जरा-से शारीरिक या मानसिक श्रम से पस्त हो जाने वाला। किसी बात में मन नहीं लगता। चाहता है कि कोई शरीर को दबाता रहे, मालिश कर दे। रक्तहीन लड़के या लड़कियां। सर्दी बर्दाश्त नहीं होती। नमकीन चीजें पसन्द होती हैं। ऐसा है मूर्त-रूप फॉसफोरस का।

(१३) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

फ़ॉसफ़ोरिक ऐसिड (PHOSPHORIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) शोक, दुःख, भग्न-प्रेम, कुटुम्बी की मृत्यु का आघात, रोगी की चिंतापूर्वक देर तक सेवा करने तथा व्यापार की झंझटो और चिंताओं से उत्पन्न रोग, ऐसिड फॉस, इग्नेशिया और नेट्रम म्यूर की तुलना	लक्षणो मे कमी (Better) *गर्मी से रोग मे कमी *नींद की झपकी से आराम
(२) हस्त-मैथुन, स्त्री-प्रसग, स्वप्न-दोष, इन्द्रिय-चालन आदि से रोग	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *वीर्य आदि स्रावो के निकलने से रोग मे वृद्धि
(३) पहले मानसिक-कमजोरी, फिर शारीरिक-कमजोरी आती है	*अति-मैथुन से लक्षणो मे वृद्धि *शोक, दुःख मानसिक-आघात से परेशानी मे वृद्धि
(४) टाइफॉयड में मानसिक तथा शारीरिक कमजोरी	*प्रेम मे निराशा से उत्पन्न रोग
(५) दस्त आने पर भी कमजोरी न होना	*ठड या ठडी हवा से वृद्धि
(६) डायबिटीज (बहुमूत्र-रोग)	*घर जाने की उदासी से परेशानी

(१) शोक, दुःख, भग्न-प्रेम, कुटुम्बी की मृत्यु का आघात, रोगी की चिन्तापूर्वक देर तक सेवा करने तथा व्यापार की झंझटो और चिंताओ से उत्पन्न रोग, ऐसिड फॉस, इग्नेशिया और नेट्रम म्यूर की तुलना—रोगी किसी मानसिक-आघात से पीडित होता है। किसी प्रकार का शोक या दुःख उसके हृदय मे बैठ चुका होता है। हो सकता है, लडकी किसी प्रेमी के वियोग मे परेशान हो, उसके प्रेमी ने उसे दगा दिया हो, उसे प्रेम का आघात पहुचा हो, हो सकता है किसी कुटुम्बी की अचानक मृत्यु हो गई हो और वह उसके मर जाने के सदमे को न सह सका हो, अन्दर-ही-अन्दर शोक-मग्न रहता हो। कई बार पत्नी को अपने रोगी पति की सेवा मे दिन-रात एक कर देना पड रहा हो, उसकी चिन्ता मे वह घुली जा रही हो, व्यापारी अपने व्यापार की परेशानियो से घिरा रहता हो, छोटे बच्चे को बोर्डिंग हाउस मे डालने से वह घर जाने के लिये व्याकुल रहता हो—इन सब कारणो से कई मानसिक-रोग उठ खडे होते हैं। रोगी को रात को, या सवेरे के समय, पसीना आने लगे, रात को नीद ही न आये, या किसी बात मे चित्त ही न लगे, मन दुःखी और व्याकुल रहने लगे, रोगी हतोत्साह हो जाय—ऐसे हालात मे **ऐसिड फॉस** लाभप्रद है।

ऐसिड [illegible] **नेट्रम म्यूर की तुलना**—शोक, दुःख आदि

में इग्नेशिया, नैट्रम म्यूर और ऐसिड फॉस की तुलना की जा सकती है। चित्त पर 'हतोत्साह' (Depression) उत्पन्न करने वाले कई कारण हो सकते हैं। दुःख, शोक, मित्र या कुटुम्बी की मृत्यु, प्रेमी का विछोह, रुपये-पैसे का डूब जाना, नौकरी का हाथ से चला जाना इत्यादि कारणों से मानसिक-आघात पहुंच सकता है। इन स्थितियों में अगर आघात बहुत गहरा है और इग्नेशिया से लाभ नहीं होता, तो ऐसिड फॉस से लाभ होगा क्योंकि ऐसिड फॉस का प्रभाव इग्नेशिया से गहरा है। इग्नेशिया के विषय में हम लिख आये हैं कि इस का क्रौनिक नैट्रम म्यूर है। इग्नेशिया तथा ऐसिड फॉस दोनों 'सर्द'—Chilly—हैं; नैट्रम म्यूर 'गर्म'—Warm—है। दुःख, शोक आदि से उत्पन्न हुआ रोग अगर बहुत पुराना हो जाय, तो ऐसिड फॉस या नैट्रम की तरफ ध्यान जाना चाहिये।

(२) **हस्त-मैथुन, स्त्री-प्रसंग, स्वप्न-दोष, इन्द्रिय-चलन आदि से उत्पन्न रोग**—इन कारणों से भी कभी-कभी कोई मानसिक रोग उत्पन्न हो जाता है। दिल धड़कने लगता है, स्नायु-मंडल दुर्बल हो जाता है। रोगी हताश रहता है, दुःखी रहता है, उदास रहता है, वीर्य-स्राव के कारण नपुंसक हो जाता है। ऐसी अवस्थाओं में भी यह औषधि लाभप्रद सिद्ध होती है। इन्हें सिर के ऊपर, सिर की गुद्दी में भारीपन महसूस होता है, थकावट महसूस होती है, रोगी बिस्तर पर पड़ा रहना चाहता है।

(३) **पहले मानसिक कमजोरी, फिर शारीरिक कमजोरी आती है**—डा० कैन्ट लिखते हैं कि इस औषधि की गति मस्तिष्क से मांस-पेशियों की तरफ जाती है। इसका मतलब यह है कि रोगी का पहले मस्तिष्क दुर्बल होता है, तबतक शरीर भला-चंगा रहता है, परन्तु धीरे-धीरे मानसिक-कमज़ोरी जब बढ़ जाती है, तब आगे चलकर शरीर में भी कमज़ोरी आने लगती है। **म्यूरियेटिक ऐसिड** में इससे उल्टा होता है। **म्यूरियेटिक ऐसिड** में पहले शारीरिक-कमज़ोरी शुरू होती है, मन बिल्कुल स्वस्थ रहता है, और जब शारीरिक-कमज़ोरी चरम सीमा पर पहुंच जाती है, तब मानसिक-कमज़ोरी भी आ जाती है। **ऐसिड फॉस** के रोगी के बिल्कुल कमज़ोर हो जाने पर भी शरीर पर उसका कोई प्रभाव नहीं दीखता। वह शरीर में व्यायाम भी करता है, सब शारीरिक-श्रम किये जाता है, परन्तु जहां तक मन का संबंध है, मानसिक-कार्य नहीं कर सकता। वह अखबार नहीं पढ़ सकता, अपने घरवालों के नाम भूल जाता है, व्यापारी को अपने कारिन्दों तक के नाम याद नहीं रहते। अंकों का जोड़ नहीं कर सकता, उसका मन अत्यन्त शिथिल हो जाता है।

(४) **टाइफॉयड से मानसिक तथा शारीरिक कमज़ोरी**—इस औषधि की कमज़ोरी की अवस्था टाइफॉयड-ज्वर में स्पष्ट सामने आती है। रोगी इतना बलहीन हो जाता है कि सिर्फ देखता जाता है, कुछ बोलता नहीं। मन बिल्कुल

थका रहता है। अगर कुछ प्रश्न किया जाय तो बहुत धीरे-धीरे बोलता है, या बोलता भी नही, प्रश्न करने वाले की तरफ सिर्फ ताकता रहता है। उस मे सोचने तथा बोलने की शक्ति ही नही रहती। अगर बहुत पूछा जाय, तो कहता है—डाक्टर, मुझ से बात मत करो, मुझे इकला पडा रहने दो। वह मानसिक तथा शारीरिक दृष्टि से इतना पस्त होता है कि बोलना-चालना उसे नही भाता।

(५) **दस्त आने पर भी कमज़ोरी न होना**—इसका एक विचित्र-लक्षण यह है कि उक्त प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक कमज़ोरी होने पर भी रोगी को दस्तो की बीमारी मे किसी प्रकार की कमज़ोरी अनुभव नही होती। बच्चे को बडे-बडे पनीले दस्त आते हैं, इतने बडे कि लगोट सारा तर हो जाता है, दस्त लगोट से बाहर फैल जाता है, परन्तु बच्चा रोने या घबराने के स्थान मे हसता है, मानो कुछ हुआ ही नही। मा कहती है—इतने भारी दस्त आ रहे हैं और बच्चा समझता है कि कुछ हुआ ही नही। ऐसे दस्तो मे, चाहे वे बच्चे को आयें चाहे बडे को, **ऐसिड फॉस** लाभ करता है। कई रोगी ऐसे होते हैं जो जब तक दस्त आते रहते हैं, तब तक वे अपने को नीरोग पाते हैं, दस्तो के रुकते ही उन्हें कमज़ोरी, पस्त हो जाने, मस्तिष्क की थकावट और तपेदिक के-से लक्षण होने लगते हैं। जो लोग कहें कि जबतक दस्त न आते रहें तबतक वे अपने को चगा नही महसूस करते, उनके लिये **ऐसिड फॉस** परम-उत्तम औषधि है। इसके दस्त सफेदी लिये हुए, सफेद मैले पेंट की तरह के या पनीले पीले होते हैं, बदबूरहित और भारी-भारी दस्त। **पोडोफाइलम** के दस्त पीले होते हैं, **ग्रेटिओला** के हरे होते हैं। **चायना** मे **ऐसिड फॉस** की तरह वेदना-रहित, पीला या सफेद दस्त आता है, परन्तु **चायना** के दस्त मे रोगी अत्यन्त कमज़ोर हो जाता है, **ऐसिड फॉस** में कमज़ोर नही होता।

(६) **डायबिटीज़**—डायबिटीज़ (बहुमूत्र-रोग) मे **ऐसिड फॉस** उत्तम औषधि है। मूत्र का रग पानी-जैसा या पानी मिला दूध जैसा होता है। बहुत अधिक आता है, रात को बार-बार पेशाब जाना पडता है। मूत्र मे फॉसफेट अधिक मात्रा मे पाये जाते हैं। मूत्र रखने से तलछट मे सफेदी बैठ जाती है।

(७) **इस औषधि के अन्य लक्षण**—

i **शोक को दूर करता है**—शोकाकुल को प्रसन्न बना देता है।

ii **नर्व की दवा है**—डा० ह्यूजेज़ का कहना है कि रक्तहीन के लिये जो काम आयर्न (लोह) करता है, स्नायु-मडल की कमज़ोरी के लिये वही काम **ऐसिड फॉस** करता है।

iii **जल्दी बढना**—डा० नैश लिखते है कि **कैलकेरिया कार्ब** का रोगी बहुत मोटा होता है, **ऐसिड फॉस** का रोगी बहुत जल्दी लम्बा हो जाता है।

iv स्वप्नदोष—स्वप्नदोष की यह उत्तम दवा है। डा० ज्हार के कथनानुसार स्वप्नदोष मे १८ शक्ति विशेष सफल पायी गई है।

v नींद से लाभ—फॉस, सीपिया और ऐसिड फॉस के रोगी के लक्षण नीद आने से घट जाते हैं।

vi स्नायु-मडल की कमजोरी—चायना की कमज़ोरी शरीर के स्रावो के निकलने से, और ऐसिड फॉस की कमज़ोरी स्नायु-मडल (Nervous system) की कमज़ोरी से होती है।

vii बाल झडना—बाल झडना इसका विशेष लक्षण है।

viii अगुलियो मे खुजली—अगुलियो के बीच या जोडो के बीच खुजली इससे दूर होती है।

ix लडकियो का सिर-दर्द—स्कूल जाने वाली लडकियो के सिर-दर्द को यह दूर करता है। नैट्रम म्यूर मे भी यह लक्षण है।

(८) शक्ति तथा प्रकृति—१, ३०, २०० (डा० ज्हार के कथनानुसार स्वप्नदोष मे १८ शक्ति लाभप्रद है। औषधि 'सर्द'–Chilly–प्रकृति के लिये है)

फ़ाइटोलैक्का (PHYTOLACCA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) ग्लैंड्स की दवा (A glandular remedy)—स्तनो का अथवा टासिलो का पक जाना
(२) स्तनो की सूजन और उनके पुराने घावो का फिर फूट पडना
(३) टॉसिल का पक जाना
(४) पारे के दोष से 'गठिया' (Gout) तथा 'वात-रोग' (Rheumatism) की दवा
(५) सारे शरीर मे दर्द (जब रस टॉक्स और ब्रायोनिया से लाभ न हो)
(६) शियाटिका का दर्द (अग के बाहर से नीचे को दर्द जाता है)
(७) कैलि हाइड्रायोडाइड का वानस्पतिक अनुपूरक फाइटो है।
(८) रासायनिक औषधियो की वानस्पतिक अनुपरक औषधियो (Analogues) की सूची

(१) ग्लैंड्स की दवा (A glandular remedy)—स्तनों का अथवा टासिलों का पक जाना—इस औषधि का ग्लैंड्स पर विशेष प्रभाव है। 'मैटीरिया मैडिका' की किसी अन्य औषधि का स्त्री के स्तनो के शोथ पर इतना प्रभाव नही जितना इसका है। रोगिणी को ठड लगी नही कि स्तन सूज जाते हैं, उनमे गाठें पड जाती हैं, स्तन दुखने लगते हैं। अगर बच्चे को दूध पिलाती स्त्री के किसी भी कष्ट से स्तन सूज जायें, या उनमे दर्द होने लगे, तो उसे फाइटोलैक्का देना चाहिये। अगर माता कहे कि उसे दूध नही उतरता, अगर उतरता भी है तो बच्चे

के लिये बहुत थोडा होता है, गाढा होता है, अस्वास्थ्यकर होता है, झट सूक जाता है, उसके धागे-से बन जाते हैं, सूत जैसा लटकता है, तब अन्य किसी औषधि के लक्षण न होने पर **फाइटोलैक्का** उसकी धातुगत-औषधि (Constitutional drug) होगी। स्तनो से ऐसे पनीले रक्त मिले स्राव जो किसी भी औषधि से पाच साल मे भी ठीक न हुए इस औषधि से ठीक हो गये। स्तन इतने दुखने लगते हैं कि जब माता बच्चे को दूध पिलाने बैठती है तब उसे ऐंठन (Spasm) पड़ जाती है। दर्द होने लगता है जो पीठ से नीचे तक फैल जाता है, सारे शरीर में भी फैल जाता है। बच्चा स्तन को मुह लगाता है और स्तन से दर्द उठकर सारे शरीर मे फैल जाता है। स्तन बडे सख्त होते हैं, गाठ पड जाती हैं, सूज जाते हैं। स्तनो में ट्यूमर बनने को यह दवा रोक देती है। **कोनायम, कैलकेरिया फ्लोर** और **साइलीशिया** मे भी स्तनों मे गाठें पड जाती हैं।

(२) **स्तनों की सूजन और उनमे पुराने घावों का फिर फूट पड़ना** जिन स्त्रियो के स्तनो के सूज जाने पर उनमे सख्त फोडा-सा बनकर रह जाता है, न पकता है न आराम होने मे आता है, पक कर उसमे नासूर पड जाता है, घाव का मुह खुला रहता है, उसमे से मवाद निकला करता है, सूक जाता है तो पुराने घाव का स्थान बना रहता है, उनके घाव का इलाज ऐलोपैथी मे पुलटिस लगाना या अन्त मे नश्तर लगाना है। जब इस स्त्री को दुबारा बच्चा होने लगता है तब ये घाव फिर ताज़ा हो जाते हैं, और पुराने घाव फिर सूज जाते हैं, ये घाव दूध की ग्रन्थियो को नष्ट करने लगते है, दर्द टपक मारने लगता है, दूध मे खून आने लगता है। इस प्रकार की स्तनो की सख्त गाठो की सूजन तथा स्तन चिटकने में **ग्रैफाइटिस** प्रचलित औषधि है, परन्तु **फाइटोलैक्का** उससे भी उत्तम है। स्तनो की सूजन मे अन्य औषधिया भी दी जाती हैं। उदाहरणार्थ, अगर स्तन पत्थर की तरह भारी हो, ज़रा-सी हरकत से दर्द होने लगे, हरकत से बचने के लिये स्त्री उन्हे हाथ से सभाले रखे, तो **ब्रायोनिया**, अगर तेज़ बुखार हो, और सूजे हुए स्तन से चारो तरफ़ लाली फैल रही हो, तो **बैलेडोना**, अगर स्तन का पक जाना ज़रूरी दीखे और रोगी को सेक से आराम पहुचे, तो **हिपर** या **साइलीशिया** दिया जाना चाहिये।

(३) **टांसिलों का पक जाना**—टासिला के पक जाने के लक्षण मे यह अमूल्य औषधि है। गले के टौंसिल सूज जाते हैं। पहले वे तेज लाल रग के होते हैं, फिर उन पर सफेद निशान पडने लगते हैं जो आगे चलकर मिल जाते हैं और डिफ्थीरिया की-सी शक्ल धारण कर लेते हैं। इन टासिलो से एक या दोनो कानो मे टीस पडती है। टासिल की ग्रन्थिया सूज जाती हैं, सख्त हो जाती हैं, गला दर्द करने लगता है और कान के पास तथा जबडे के नीचे ग्लैंड्स सूज जाते है। गले मे टासिलो की सूजन के साथ गाढा, लसदार श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है, रोगी

गर्म पानी नही पी सकता । इस औषधि के ग्लैड्स पर प्रभाव के कारण ही स्तनो तथा गले की ग्रन्थियो के शोथ मे यह लाभ करता है ।

(४) पारे के दोष से गठिया तथा वात-रोग की दवा (Mercurial Gouty and Rheumatic pains)—इस औषधि का शरीर के ततुओ, हड्डी पर की झिल्ली—अस्थि-परिवेष्टन (Periosteum)—मासपेशियो के आवरणो पर विशेष प्रभाव है । इसीलिये वात-रोग की भी यह उत्तम दवा है । दर्द बिजली की तरह टीस मारता है, एक स्थान पर होता है, झट दूसरे स्थान पर चला जाता है । रात के समय इस वात-रोग मे वृद्धि होती है । अगर रोगी के वात-रोग के पीछे सिफिलिस का विष छिपा हो, तो भी यह लाभ करती है । प्राय सिफिलिस मे पारे से इलाज किया जाता है । रोगी की हड्डियो आदि पर पारा मला जाता है जिससे पारे का दोष शरीर मे जा बैठता है । परिणाम यह होता है कि रोगी को रात को हड्डियो मे दर्द होने लगता है, मासपेशिया दुखती हैं, खासकर जोडो मे और हड्डियो मे जहा पतली त्वचा है वहा दर्द होने लगता है, मुह से लार टपकती है । ऐसे वात-रोग मे यह लाभ करती है ।

(५) सारे शरीर मे दर्द (जब रस टॉक्स और ब्रायोनिया से लाभ न हो)—रोगी का सारा शरीर दुखता है । रोगी जब भी हिलता है, हरकत करता है, तब सम्पूर्ण शरीर मे टीसें पडती हैं । सिर तथा पीठ का दर्द बेहद होता है, परन्तु दर्द सिर्फ पीठ या सिर तक ही सीमित नही रहता, शरीर के प्रत्येक भाग मे पीडा होती है । रोगी सोचता है कि उसे हिलना-जुलना चाहिये, हरकत करनी चाहिये । इस लक्षण को देखकर **रस टॉक्स** का ख्याल आता है, परन्तु जब भी वह हिलता है, उसका सारा शरीर दर्द करने लगता है । इस लक्षण को देखकर **ब्रायोनिया** का ख्याल आता है । परन्तु इन दोनो दवाओ से लाभ नही होता । डा० एलन का कहना है कि **फाइटोलैक्का** उक्त दोनो दवाओ के बीच की औषधि है, इसलिये जब **ब्रायोनिया** लाभ न करे तो इस औषधि से लाभ होता है । **फाइटोलैक्का** सिर से पैर तक हर अग मे पीडा अनुभव करता है, मुश्किल से हिल-जुल सकता है, हिलने पर कराह उठता है ।

(६) शियाटिका का दर्द अग के बाहर से नीचे को जाता है—हमे यह नही भूलना चाहिए कि पीडा के लक्षण पर **शियाटिका** के दर्द को भी यह दूर कर देता है । शियाटिका के दर्द मे यह सफल दवाओ मे से एक है । इस रोग मे इसका मुख्य लक्षण यह है कि दर्द जाघ के बाहर की तरफ से नीचे को जाता है । अग के बाहर की तरफ से दर्द के नीचे को जाने के लक्षण मे इससे लाभ होता है ।

(७) कैलि हाइड्रायोडाइड इसका रासायनिक अनुपूरक (Chemical analogue) है—डा० हैरिंग कहते हैं कि प्रत्येक 'रासायनिक' (Chemical)

औषधि का उसी के गुणो वाला वनस्पति के जगत् मे 'वानस्पतिक' अनुपूरक (Vegetable analogue) पाया जाता है। 'अनुपूरक' (Analogue) का अर्थ है—'जो चीज क्रिया मे दूसरे के गुणो के अनुकूल हो, परन्तु उसकी रचना (Structure) उससे भिन्न हो।' ऐसे निम्न-अनुपूरको का उल्लेख डा० हैरिंग ने किया है—

रासायनिक औषधि (Chemical drug)	उसका वानस्पतिक अनुपूरक (Vegetable analogue)
कैली हाइड्रायोडाइड	फाइटोलैक्का
सल्फर	एलो
फॉसफोरस	एलियम सीपा
मैग्नेशिया कार्ब	कैमोमिला
फैरम मेटेलिकम	चायना
कैलकेरिया कार्ब	बेलाडोना
क्यूप्रम	इपिकाक
एल्मिना	ब्रायोनिया
कैलि सल्फ	पल्सेटिला
मर्क्यूरियस	मेजेरियम, पोडोफाइलम
प्लैटिना	वेलेरियाना

(८) शक्ति तथा प्रकृति— ३,३० (नम मौसम मे रोग बढता है)

पिकरिक ऐसिड (PICRIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मस्तिष्क की थकावट मे मेरु-दड की जलन (Burning of spine in Brain-fag)

(२) सर्वांगीण थकावट (पिकरिक और ऐसिड फॉस की तुलना)

(३) स्कूल मे पढ़ने वाले युवको, अध्यापको, मानसिक-कार्य करने वालों की मानसिक-थकावट मे उपयोगी

(४) विश्राम से और इसीलिये रात को रोगी लाभ अनुभव करता है, दिन को परेशान रहता है

(५) दु ख आदि उद्वेगो से सिर-दर्द

(६) थकावट, पस्त होना आदि लक्षणो मे अन्य औषधियो से तुलना

(७) औषधि ऊष्णता-प्रधान (Hot) है इसलिये रोगी ठड पसन्द करता है

मस्तिष्क की थकावट मे मेरु-दड की जलन (Burning of spine in brain-fag)—मस्तिष्क की थकावट की यह अमोघ औषधि है।

इसका मुख्य-लक्षण यह है कि थोडा-सा भी अध्ययन करने से मेरु-दंड में जलन होने लगती है। **आर्सेनिक, फॉसफोरस, लाइकोपोडियम, जिंकम** मे भी मेरु-दड की जलन पायी जाती है। **आर्स** की जलन मे जलनेवाले स्थान मे गर्म सेक से रोगी को आराम मिलता है, **लाइको** की जलन कन्धो के दोनो फलको के बीच होती है, **फॉस** और **कैलि बाई** की जलन भी दोनो कन्धो के बीच होती है, परन्तु **फॉस** मे मालिश से आराम मिलता है, **पिकरिक**-की ही ऐसी जलन है जिसमे मानसिक-श्रम से मेरु-दड मे जलन होने लगती है। **पिकरिक ऐसिड** का मुख्य लक्षण पढने-लिखने, मानसिक-श्रम से रीढ मे जलन का होना है। **थेरीडियन** मे कमर के नीचे (Lumbar region) के स्थान मे जलन होती है, रोगी स्पर्श और शोर को नही सहन कर सकता। **पिकरिक ऐसिड, जिंकम मेटेलिकम** तथा **फॉसफोरस** मे भी कभी-कभी कमर के नीचे जलन होती है।

(२) **सर्वांगीण थकावट** (Tired feeling all over the body)—जब कोई व्यक्ति अपने को हर दृष्टि से थका हुआ, शक्तिहीन, पस्त पाये, सर्वांगीण कमज़ोर, नि स्वत्व, और यह थकावट दिनोदिन वढती जाय, यह भी सभव है कि इस वढती हुई थकावट का अन्त पक्षाघात मे हो जाय, थोडा-सा भी शारीरिक या मानसिक श्रम करने मे अगर वह अपने को असमर्थ पाये, तो इस औषधि को स्मरण करना चाहिये। डा० नैश लिखते हैं कि एक वृद्ध पुरुष जो सालभर पहले सर्वथा स्वस्थ था, अनुभव करने लगा कि उसकी दिमाग़ी ताकत क्षीण होती जा रही थी, उनसे इलाज कराने आया। वह अनुभव करता था कि उसके सिर के पिछले भाग मे हर समय भारीपन रहता है, वह कोई मानसिक-कार्य नही कर सकता था, सोच-विचार करना भी उसके लिये भारी था, उसे उन्होने **पिकरिक ऐसिड** ६ शक्ति का चूर्ण दिया और वह जल्दी ही ठीक हो गया।

मस्तिष्क की थकावट मे हमे **जेलसीमियम, फॉसफोरस, फॉसफोरिक ऐसिड, पिकरिक ऐसिड, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, सलफर, एलूमिना,** तथा **साइलीशिया** की एक-साथ तुलना करनी चाहिये क्योकि इन सब औषधियों का मस्तिष्क, मेरु-दड तथा सपूर्ण स्नायु-मडल पर प्रभाव है। **पिकरिक ऐसिड** तथा **फॉसफोरिक ऐसिड** वहुत मिलते-जुलते हैं, इन मे से किसी एक का निर्णय कर सकना कठिन हो जाता है। इनकी तुलना निम्न है

पिकरिक ऐसिड	**फॉसफोरिक ऐसिड**
* जननांगो की उत्तेजना (Irritation)	* जननागो की कमज़ोरी (Weakness)
* रोगी जल्दी-जल्दी थक जाता है (Tired feeling)	* रोगी कमजोरी अनुभव करता है (Debilitated feeling)

पिकरिक ऐसिड	फॉसफोरिक ऐसिड
* पीठ तथा अंगों में भारीपन होना (Heaviness)	* अंगों के संचालन में धीमापन होना (Slowness)
* दिमाग में थकावट (Brain tired)	* मन में थकावट (Weakness of mind)
* ठंड से आराम (Better from cold air)	* गर्मी से आराम (Better from warmth)

(३) **स्कूल में पढ़ने वाले युवकों, अध्यापकों, मानसिक-कार्य करने वालों के लिए दिमाग़ी थकावट मे उपयोगी—** जब बच्चे पढ़ना-लिखना शुरु करते हैं, तब जो बच्चे थोड़े-से भी मानसिक-प्रयास से थक जाते हैं, सिर मे दर्द होने लगता है, जब भी पढ़ना शुरु करते हैं सिर-दर्द लौट आता है, उनके लिये यह उपयोगी है। स्कूल में पढ़ाई शुरु करते ही सिर में दर्द होने लगता है। मानसिक-श्रम से सिर मे चक्कर आ जाता है। विद्यार्थियो, अध्यापकों, दिमागी काम करने वालों के लिये अगर उन्हे मानसिक-श्रम से सिर-दर्द होने लगे, थकावट आजाय, काम न किया जा सके, तो यह उपयोगी है। व्यापारियों के लिये जिन पर कार्य का अत्यन्त भार रहता है, यह लाभप्रद-औषधि है। जिन विद्यार्थियो का पढ़ने मे ध्यान केन्द्रित नहीं होता उन्हें डा० क्लार्क इयूजा के पाउडर दिया करते थे जिन्हें वे 'फंक पिल्स' कहते थे, इनसे विद्यार्थियो का ध्यान केन्द्रित हो जाता था।

(४) **ठंड से तथा विश्राम से और इसीलिये रात को रोगी लाभ अनुभव करता है, दिन को परेशान रहता है—**यह गर्म (Warm) औषधि है, इसलिए रोगी दिन की गर्मी को बर्दाश्त नहीं कर सकता, ठंड पसन्द करता है, ठंडी हवा, ठंडे पानी से स्नान करना उसे रुचता है। दिन को काम करने की उस मे शक्ति नहीं रहती, रात को जब वह बिस्तर पर पड़ जाता है तब उसे आराम मिलता है, सोने से उसका रोग शांत होता है। वह इतना थका रहता है कि दिनभर ऊंघता रहता है। इस ऊंघाई का नतीजा यह होता है कि रात को नींद नहीं आती। कमज़ोरी की वजह से दिन को भी लेटा रहना ही पसन्द करता है।

(५) **दुःख आदि उद्वेगों से सिर-दर्द—**दुःख आदि उद्वेगों से हतोत्साह हो जाना और इस प्रकार सिर-दर्द रहना—इसमें भी यह उत्तम औषधि है।

(६) **थकावट, पस्त होना आदि लक्षणों मे अन्य औषधियों से तुलना—** जब मनुष्य अत्यन्त शक्तिहीन, पस्त (Prostrated) हो जाता है—भले ही वह शारीरिक कमज़ोरी हो या मानसिक—तब निम्न-औषधियो पर ध्यान देना उचित है। इनके लक्षणों को हम आगे दे रहे हैं—

(कमजोरी मे मुख्य-मुख्य औषधियाँ)

अर्जेन्टम नाइट्रिकम—व्यापारी, विद्यार्थी, एक्टर आदि को मानसिक-कार्य से थकान आ जाती है। सर्वांगीण थकान, कमजोरी, सुन्नपन, कंपन, पेट मे गैस आदि लक्षण उत्पन्न हो जाने मे उपयोगी है।

आर्सेनिक—इसकी कमजोरी शारीरिक कमजोरी होती है, पिकरिक की कमजोरी से बहुत ज्यादा। रोगी सचमुच सकट की स्थिति मे होता है।

कैलकेरिया कार्ब—इसकी कमजोरी मैथुन के बाद अनुभव होती है। स्त्री-सग के बाद अगो मे शिथिलता, हाथ-पैर मे कपकपी, थकावट, सिर-दर्द आदि होने लगता है। इस प्रकार की नि सत्वता प्राय प्रात काल अधिक अनुभव होती है।

चायना—रोगी मे रक्त का अभाव हो जाता है। बहुत अधिक खून जाने, बहुत अधिक पसीना आने, दस्त आने से कमजोरी मे यह लाभप्रद है। वीर्य-क्षय से होने वाली कमजोरी मे भी इससे लाभ होता है। जीवन-प्रद किसी भी स्राव के निकल जाने पर इसे स्मरण करना चाहिये। चायना और फेरम फॉस दोनो क्रमश 3x देने से कमजोरी दूर हो जाती है।

कोनायम—हस्त-मैथुन आदि घृणित आदतो से होने वाली कमजोरी मे इससे लाभ होता है।

जेलसीमियम—मास-पेशियो की शिथिलता, सब अगो मे भारीपन, थकावट, स्नायविक कपन, निद्रालुता, जडता, सिर मे चक्कर आना आदि लक्षणो मे दी जाती है।

नैट्रम कार्ब— सूर्य की गर्मी से थकावट आ जाने पर उपयोगी है।

पिकरिक ऐसिड—क्रमश होने वाली स्नायविक-क्षीणता (Enervation) मे जो थकावट के रूप मे शुरु होती है और जिसका अन्त पक्षाघात मे हो सकता है। शरीर के कई अग सुन्न होने लगते है, अगो मे बोझ, भारीपन महसूस होता है, रोगी लेटे रहना चाहता है, जरा-सी हरकत या परिश्रम को सहन नही कर सकता। निद्रा-नाश, मानसिक-श्रम या चिन्ता से ऐसी हालत पैदा हो जाती है। रोगी मे नितान्त उपेक्षा उत्पन्न हो जाती है, किसी काम को करने को जी नही चाहता।

पिकरिक ऐसिड मे कमर के नीचे मेरु-दण्ड (Lumbar spine) पर हाथ लगाने से गर्मी महसूस होती है, कमर-दर्द भी होता है।

फॉसफोरस—कमजोरी (Weakness) के साथ रोगी मे चिडचिडाहट (Irritability) भी पाई जाती है। रोगी प्रत्येक बाह्य-सवेदन (External impression) से चिढ उठता है। शोर-गुल, रोशनी, उग्र-गध—किसी चीज को बर्दाश्त नही कर सकता।

फॉसफोरिक ऐसिड—ऊपर जितनी औषधियो का हमने ज़िक्र किया उनमे से **पिकरिक ऐसिड, फॉसफोरस** तथा **फॉसफोरिक ऐसिड**—ये तीनो एक-सी हैं। इन तीनो मे थकावट, कमज़ोरी, कपन, जलन और जननेद्रियो पर प्रभाव पाया जाता है। इन तीनो मे **फॉसफोरिक ऐसिड** मे सब से अधिक कमज़ोरी पायी जाती है। रोगी इतना कमज़ोर, शिथिल, उपेक्षावान हो जाता है जितना अन्य किसी औषधि मे नही होता।

सेलेनियम—अत्यधिक विषय-भोग करने से कमज़ोरी। रोगी की 'मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि' (Prostate gland) का स्राव टपकता रहता है, नीद मे वीर्य-स्राव हो जाता है।

सलफर—भूख से शक्तिहीनता जो खाने से चली जाती है, ऐसी कमज़ोरी मे उपयोगी है।

नक्स तथा हाइपोफॉस—डा० बर्नेट 'क्यूरेबिलिटि ऑफ ट्यूमस बाई मैडिसिन' मे लिखते हैं कि **नक्स वोमिका** १x तथा **कैलकेरिया हाइपोफॉस** ३x लक्षणानुसार कमज़ोरी दूर करने वाली—'all round pick-me up' हैं।

शक्ति तथा प्रकृति—६,३० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

प्लैटिनम या प्लैटिना (PLATINUM OR PLATINA)

(१) **मानसिक-दृष्टि से अपने को सबसे बड़ा समझना**—यह हिस्टीरिया-ग्रस्त उन रोगियो की दवा है जो अपने को दूसरो से बडा समझते हैं। स्त्री घमड मे अपने को इतना बडा समझती है कि दूसरो को तुच्छ, अत्यन्त छोटा समझने लगती है। रानी की तरह गर्दन तान कर चलती है मानो उसके चारो तरफ के लोग तुच्छ, घृणित जीव हो। उन पर नज़र उठा कर देखना भी अपनी शान के खिलाफ समझती है। उन्हे अपनी स्थिति से बहुत नीचे-का प्राणी ख्याल करती हैं, मानो उसके सामने सब कीडे-मकौडे हो। अपने रिश्तेदारो को अपने वश से बहुत हीन समझती है।

(२) **शारीरिक-दृष्टि से भी अपने को सब से बडा समझती है**—इस मानसिक-विक्षेप का असर यहा तक होता है कि वह दूसरो को शारीरिक-दृष्टि से भी अपने से बहुत छोटा देखती है। उसे ऐसा लगता है कि उसका शरीर बहुत बडा है, उसके शरीर के मुकाबिले मे दूसरो का शरीर उसे बहुत छोटा दिखलाई देता है। दूसरो की तुच्छता, क्षुद्रता, छोटेपन को देखकर उनके प्रति उसके मुख पर घृणा का भाव झलकता है। छोटे-छोटे मामलो मे जिनमे गभीरता का कोई स्थान नही होता वह गभीर-मुद्रा धारण कर लेती है, और ज़रा-ज़रा-सी बात पर चिढने लगती है, मुह फुला लेती है।

(३) **कभी दुःखी कभी प्रसन्न—परिवर्तित मानसिक-मुद्रा मे रहती है**—

उसकी मानसिक-मुद्रा बदलती रहती है। कभी वह दुःखी दिखलाई देती है, कभी प्रसन्न। इस प्रकार मानसिक-मुद्रा का परिवर्तन इग्नेशिया, क्रोकस, नक्स मोस्केटा, पल्स तथा एकोनाइट में भी पाया जाता है। ये सब हिस्टीरिया-ग्रस्त रोगी के लक्षण हैं।

(४) **जीवन से घृणा परन्तु मृत्यु से भय**—यह इस औषधि का प्रमुख लक्षण है। उसे डर लगा रहता है कि कुछ अनहोनी बात न हो जाय, ऐसा न हो कि उसका पति जो रोज लौट आया करता है आज न लौटे। वह जीवन से घृणा करती है, चिड़चिड़ा स्वभाव होता है, डर लगता है, परन्तु मरने से भी डरती है।

उक्त प्रकार की अवस्था डर जाने, रंज, गुस्सा, अहंकार, विषय-वासना आदि से उत्पन्न हो सकती है।

(५) **दर्द धीरे-धीरे बढ़ता और धीरे-धीरे घटता है**—इसका दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है, और उच्च-शिखर पर आ जाने के बाद धीरे-धीरे घटता है, और दर्द का स्थान सुन्न पड़ जाता है। स्टैनम के दर्द में भी यही लक्षण हैं, परन्तु स्टैनम में छाती की अत्यधिक कमजोरी होती है, जो प्लैटिनम में नहीं है। बेलाडोना और मैग फॉस में दर्द एकाएक शुरू होता है और एकाएक ही समाप्त हो जाता है। सलफ्यूरिक एसिड में दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है, परन्तु एकाएक हट जाता है।

(६) **शारीरिक तथा मानसिक लक्षणों का पर्याय-क्रम (Physical and mental symptoms alternate)**—इस औषधि का एक विशेष-लक्षण यह है कि जब शारीरिक-लक्षण प्रकट होते हैं, तब मानसिक-लक्षण नहीं रहते, जब मानसिक-लक्षण प्रकट होते हैं, तब शारीरिक-लक्षण नहीं रहते। डा० नैश ने एक पागलपन के रोगी का उल्लेख किया है जिसके मानसिक-लक्षण तथा रीढ़ की हड्डी—मेरु-दंड—में दर्द के लक्षण एक-दूसरे के बाद आते-जाते रहते थे। जब मानसिक-लक्षण प्रकट होते थे तब स्पाइन का दर्द गायब हो जाता था, जब स्पाइन का दर्द प्रकट होता था तब मानसिक-लक्षण नहीं रहते थे। वह इस औषधि से ठीक हो गया।

(७) **गुदा-प्रदेश में टट्टी चिकनी मिट्टी की तरह चिपक जाती है**—मल गुदा-प्रदेश में चिकनी मिट्टी की तरह चिपट जाता है। कब्ज में जब नक्स-वोमिका से भी फल नहीं मिलता तब यह उसे दूर कर देता है।

(८) **अप्राकृतिक मैथुन की प्रवृत्ति**—जिन लोगों में अप्राकृतिक-मैथुन की घृणित प्रवृत्ति पायी जाती है उनकी इस प्रवृत्ति को यह रोक देता है।

(९) **रजोधर्म समय से पहले, देर तक रहने वाला, स्याह रंग का होता है**—माहवारी अपने नियमित समय से बहुत पहले होती है, देर तक रहती है,

और खून का रंग स्याह, जमा हुआ और बदबूदार होता है। बच्चेदानी मे दर्द होता है, खुजली होती है, और ऐसा लगता है कि मानो लटक रही है ।

(१०) **स्त्रियो मे अत्यन्त काम की प्रवृत्ति** (Nymphomania)—स्त्रियो मे, विशेषकर कुमारियो मे अत्युत्कट काम-भावना इस औषधि मे पायी जाती है। सेक्स की चेतना का समय से पहले जाग उठना इसका निर्देशक-लक्षण है। जननेन्द्रिय इतनी सवेदनशील होती है कि चिकित्सक परीक्षा करने के लिये भी उसे छू नही सकता, छूते ही उसे ऐंठन पड जाती है। ऐसी स्त्रिया मैथुन से बेहोश हो जाती है। ऐसी स्त्रियो के बाझपन को **प्लैटिनम** दूर देता है।

(काम-प्रवृत्ति के इलाज की मुख्य-मुख्य औषधियां)

प्लैटिनम—नवयुवतिया जिनके गुप्ताग तथा काम-वासना समय से पहले जाग उठते हैं, जिन्हें काम-चेष्टाए आ घेरती हैं, और बुरी आदतो की लत पड जाती है उनके लिए यह उपयोगी है। गर्भवती स्त्रियो को सगम की **प्रबल इच्छा** होने पर यह लाभप्रद है। गुप्ताग इतने नाजुक होते हैं कि चिकित्सक उनको छूकर परीक्षा नही कर सकता।

एस्टेरियस—विषय-तृष्णा इतनी जबर्दस्त होती है कि मैथुन से भी दूर नही होती। स्त्री तथा पुरुष दोनो के लिये उपयोगी है।

एपिस—विधवाओ की अत्यधिक विषय-भोग की इच्छा ।

कॉफिया—जननागो मे विषय-भोग की खुजली, जननागो का नाजुक (Sensitive) होना।

ग्रैटिओला तथा प्लैटिनम—गर्भवती स्त्रियो की विषय-भोग की इच्छा।

हायोसाएमस—रोगी की विषय-भोग की इतनी उत्कट इच्छा होती है कि गुप्तागो को खोलकर दिखलाता है।

कैलि फॉस—अविवाहिता लडकियो मे प्रत्येक माहवारी के बाद विषय-कामना की उत्तेजना।

लिलियम टिग—डिम्ब-ग्रन्थि की शिकायतो के साथ विषय-वासना का होना।

म्यूरेक्स— विषय-भोग की प्रबल इच्छा की दृष्टि से इसके मुकाबिले मे दूसरी दवा नही है। रोगी अपने को वश मे नही रख सकता। विषय-भोग की इच्छा उसे पागल-सी कर देती है।

औरिगेनम— विषय-भोग की इच्छा से बाधित होकर रोगी हस्त-मैथुन करने लगता है।

फॉसफोरस— बाधित-सयम के कारण विधवाओ की काम-प्रवृत्ति। रोगी **हायोसाएमस** की तरह गुप्तागो को खोलकर दिखलाता है।

(११) शक्ति तथा प्रकृति-- ६,३० (रोगी ठंडी हवा में घूमना पसन्द करता है)

प्लम्बम मेटैलिकम—सीसा,

(PLUMBUM METALLICUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) पेट-दर्द के समय रोगी अनुभव करता है कि उसके पेट की पेशी को किसी ने पीछे पीठ की ओर खींच रखा है (In abdominal colic one feels as if a string is pulling the abdomen towards the spine)

(२) धीरे-धीरे होने वाला पक्षाघात (First paresis of parts and finally paralysis of whole)

(३) त्वचा की शिथिलता या संवेदन-शीलता का ह्रास (Sluggishness, Lack of sensation)

(४) कलाई गिर पड़ती है (Wrist drop)

(५) आंतों की शिथिलता (कब्ज)

(६) मूत्र-द्वार की शिथिलता (मूत्र रुक जाना)

(७) मन की शिथिलता (सोच न सकना)

(८) शिथिल मन से भी रोगी का सोचते रहना और नींद खो बैठना

(९) रोगी अपना रोग बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहता है—बहाना बनाता है

(१०) दांतों के साथ मसूड़ों पर नीली लकीर का पड़ जाना

(११) मन के क्षीण होने के साथ तन का भी क्षीण होते जाना (Emaciation)

जो लोग पेन्टिंग का या छापेखाना में कम्पोजिंग का काम करते हैं, उन्हें दिन-रात सीसे के संपर्क में आना पड़ता है। पेन्ट में सीसा होता है, और टाइप तो सीसे का ही होता है। नये पेन्ट हुए मकान में सोने से अनेक व्यक्तियों को पेट-दर्द होने लगता है जिसे 'सीसे का दर्द' (Lead Colic) कहा जा सकता है। कम्पोजीटरों को इसी प्रकार का पेट-दर्द तथा अंगों का पक्षाघात (Palsy of lead workers) पाया जाता है। नये पेंट हुए मकान में पेंट का क्या सूक्ष्म तत्व है जो मनुष्य को रुग्ण कर देता है, या सीसे के टाइप में क्या सूक्ष्म-तत्व है जो कम्पोज़ीटरों को पक्षाघात की तरफ ले जाता है? इसका उत्तर सिवाय इसके क्या हो सकता है कि सीसे के सूक्ष्म-अणु जो माइक्रोस्कोप से भी नहीं देखे जा सकते, व्यक्ति की जीवनी-शक्ति पर आक्रमण करते हैं, और पेट-दर्द या पक्षाघात की-सी अवस्था उत्पन्न कर देते हैं। होम्योपैथी की दृष्टि से वे सीसे की 'परीक्षा-

सिद्धि' (Proving) के शिकार हो रहे होते हैं। किसी रोग मे इस प्रकार के लक्षणो के उत्पन्न हो जाने पर **प्लम्बम** लाभदायक सिद्ध होता है।

(१) **पेट-दर्द के साथ रोगी अनुभव करता है कि उसके पेट की पेशी को किसी ने पीछे पीठ की ओर खींच रखा है** (In abdominal colic one feels as if a string is pulling the abdomen towards the spine)—पेट-दर्द ऐसा होता है मानो पेट को कोई पीछे से रीढ की हड्डी की तरफ रस्सी से खीच रहा है। यह खिचाव या तो सिर्फ अनुभूति के रूप मे होता है, या तो पेट सचमुच पीछे की ओर पिचक जाता है और पीठ के साथ लग जाता है। दर्द से रोगी बेचैन हो जाता है। दर्द अगर नीचे की तरफ फैलता है तो पावो मे ऐंठन होती है, ऊपर की ओर फैलता है तो बेहोशी आ जाती है। रोगी अपने शरीर को लम्बा फैलाने की कोशिश करता है, परन्तु किसी करवट उसे चैन नही मिलता। इस दर्द के साथ प्राय कब्ज रहती है। पेट-दर्द मे इसका मुख्य-लक्षण **दर्द के साथ पेट का पीठ के साथ सट जाना** है। पेट का दर्द **बेलाडोना, कौलोसिन्थ, क्यूप्रम, मैग फॉस** और **डायोस्कोरिया** मे भी है, परन्तु इनका भेद निम्न है

बेलाडोना का पेट-दर्द—यह चलता-फिरता पेट-दर्द है जो **यकायक** आता और **यकायक चला जाता** है। रोगी ऐसा अनुभव करता है मानो पेट मे कील घुसेडी जा रही है। थोडे भी स्पर्श से दर्द बढ जाता है, रोगी पेट-दर्द के स्थान को छूने नही देता, परन्तु जोर से दबाने से आराम आता है।

कौलोसिन्थ का पेट-दर्द—यह पेट-दर्द प्लम्बम के दर्द जैसा है, जो कि नाभि-प्रदेश के केन्द्रीय-स्थान से उठता है, वहा से उठकर सारे पेट मे तथा छाती तक फैल जाता है। रोगी ऐसा अनुभव करता है मानो उसकी आते पत्थरो के दो पाटो मे पिसी जा रही हैं। रोगी दर्द से दोहरा हुआ जाता है। **दोहरा होने से पेट** जब दबता है तो उसे आराम आता है। अगर रोगी किसी सख्त वस्तु के साथ पेट को दबाता है तो पेट-दर्द हल्का पड जाता है।

क्यूप्रम का पेट-दर्द—इस मे पेट मे भयकर ऐंठन पडती है। आँतो के एक **अंश के दूसरे अंश मे घुस जाने** (Intussusception) पर जो भयकर पेट-दर्द होता है, जिसमे रोगी की चीखें निकल जाती हैं, उल्टी होने लगती है, उसमे यह औषधि आश्चर्य-जनक कार्य करती है।

मैग फ़ॉस का पेट-दर्द—इसका दर्द सेक से, टागो को सिकोड कर लेटने से, दबाने से ठीक होता है, परन्तु विशेष-लक्षण सेक से दर्द का कम होना है।

पेट-दर्द मे प्लम्बम और प्लैटिनम की तुलना—पेट-दर्द मे नाभि-प्रदेश मे पीठ की तरफ रस्सी से खिचे जाने का अनुभव **प्लैटिनम** मे भी पाया जाता है। पेंटरों के पेट-दर्द मे दोनो दवाओं के लक्षण मिलते है, परन्तु इनके मानसिक-

लक्षण एक-दूसरे से भिन्न हैं। प्लम्बम का रोगी उपेक्षा-वृत्ति (Indifference) का, शोकातुर (Melancholy) होता है, प्लैटिनम का घमंडी, उद्धत तथा अपने को सब से बड़ा समझता है।

(२) धीरे-धीरे होनेवाला पक्षाघात (First paresis and then paralysis of parts, and finally of the whole)—यह पक्षाघात धीरे-धीरे बढ़ता है। त्वचा की, आंतों की, मूत्राशय की, मन की शिथिलता बढ़ती जाती है, पहले भिन्न-भिन्न अंगों का, और अन्त में संपूर्ण-शरीर का पक्षाघात हो जाता है।

(३) त्वचा की शिथिलता या संवेदन-शीलता का ह्रास (Sluggishness)—रोगी की त्वचा की संवेदनशीलता धीरे-धीरे कम होती जाती है। उदाहरणार्थ, साधारण तौर पर अगर किसी व्यक्ति को चूंटी मारी जाय, तो वह झट प्रतिक्रिया करता है, परन्तु प्लम्बम के रोगी को चूंटी मारी जाय, तो थोड़ी देर बाद वह कहता है ओह! इससे स्पष्ट है कि उसकी संवेदनशीलता शिथिल पड़ती जा रही है। अंगुलियां सुन्न पड़ने लगती हैं, हथेली और पांव के तलवे सुन्न होने लगते हैं, त्वचा में भी सुन्नपन आने लगता है। शरीर के अन्य सब अंगों का काम धीमा पड़ने लगता है। स्नायु-संस्थान पहले जैसी सजगता से काम नहीं करता। मांस-पेशियां भी अपने काम में ढीली पड़ जाती हैं। इस प्रकार शुरु में 'हलका-पक्षाघात' (Paresis) दिखलाई देता है, किसी-किसी अंग में सुन्नपन आने लगता है, और अन्त में 'पूर्ण-पक्षाघात' (paralysis) हो जाता है।

(४) कलाई गिर पड़ती है (Wrist drop)—इसका भी त्वचा की शिथिलता से ही संबंध है। रोगी की वे मांसपेशियां जिन की शक्ति से हाथ या पांव को इच्छानुसार घुमाया-फिराया जा सकता है—जिन्हें अंग्रेजी में 'एक्सटेंसर मसल्स' कहते हैं—शिथिल पड़ जाते हैं, और हाथ की मांसपेशी की शिथिलता के कारण रोगी की कलाई गिर पड़ती है। वह हारमोनियम तथा पियानो नहीं बजा सकता, कलम हाथ में ले कर लिख नहीं सकता, अंगुलियों का इच्छानुसार संचालन नहीं कर सकता। जब मांसपेशी से अधिक काम लिया जाता है तब भी थक जाने के कारण वह काम नहीं कर सकता, थकी हुई हालत में भीग जाने से भी मांसपेशियां जवाब दे देती हैं। ऐसी हालत में **रस टॉक्स** लाभ करता है, परन्तु **रस टॉक्स** दीर्घगामी औषधि नहीं है, हाल के और हल्के रोगों में इसका उपयोग किया जाता है, गहरे तथा क्रौनिक लक्षणों में **प्लम्बम** से ही लाभ होता है।

(५) **आंतों की शिथिलता (कब्ज)**—इस औषधि की चरित्रगत-शिथिलता का प्रभाव आंतों पर भी पड़ता है जिससे आंतें शिथिल हो जाती हैं, मल को बाहर नहीं धकेल सकतीं। आंतों में मल सूख जाता है, मल की गांठें

पड जाती हैं, वह भेड की मेगनी की तरह का हो जाता है। **ओपियम** में भी ऐसा गठीला मल पाया जाता है। **ओपियम** के रोगी को उंघाई रहती है, **प्लम्बम** मे स्नायविक-शिथिलता रहती है। अगर **प्लैटिना** के लक्षणो पर कब्ज़ मे लाभ न हो, तो **प्लम्बम** से लाभ होता है। अगर गुदा मे खुश्क मल बहुता-सा इकट्ठा हो जाय, और गुदा की माँस-पेशियो की शिथिलता के कारण वह न निकले, तो **प्लम्बम** से मल आ जाता है। सख्त कब्ज की यह उत्तम औषधि है।

(६) **मूत्र-द्वार की शिथिलता (पेशाब रुक जाना)**—शिथिलता का मूत्र-द्वार पर प्रभाव पडने पर रोगी का पेशाब रुक जाता है। डा० कैन्ट एक स्त्री रोगिणी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि वह दो दिन तक बेहोशी मे पडी रही और इस अर्से मे उसका पेशाब रुका रहा। **प्लम्बम** की उच्च-शक्ति की एक मात्रा से वह होश मे भी आ गयी और उसे पेशाब भी आने लगा।

(७) **मन की शिथिलता (सोच न सकना)**—इस औषधि की चहुमुखी शिथिलता का प्रभाव मन पर भी पडे बिना नही रहता। रोगी का मन शिथिल हो जाता है। कुछ भी याद नही रहता। बात समझ मे नही आती। जो-कुछ कहना चाहता है उसे कहने के लिये शब्द याद नही आते। मन की गति अति धीमी हो जाती है। रोगी से बात करते हुए जब वह देर तक उत्तर नहीं देता, तो लोग समझते है कि वह उत्तर सोच रहा है, परन्तु उसका तो मन ही शिथिल पडा होता है इसलिये वह उत्तर दे ही नही पाता।

(८) **शिथिल मन से भी रोगी सोचता रहता है और नींद खो बैठता है**—यद्यपि उसका मन अत्यन्त शिथिल हो जाता है, तो भी उसका मन भीतर से किसी सोच-विचार मे पडा रहता है और नीद नही आती। सोचने के निरन्तर प्रयत्न से वह उन्निद्र हो जाता है। मन काम नहीं करता, तो भी रोगी भिन्न-भिन्न कल्पनाओ और उद्वेगो से घिरा रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि उन्निद्र-अवस्था (Insomnia) से रोगी मूर्छा (Coma) मे जा पहुंचता है।

(९) **रोगी अपना रोग बहुत बढा-चढ़ा कर कहता है—बहाना बनाता है**—डा० कैन्ट लिखते है कि एक स्त्री ने आत्मघात करने के लिये एसिटेट ऑफ लेड खा लिया। वह आत्मघात तो नही कर सकी, परन्तु उसमे अजीब हिस्टीरिया के लक्षण प्रकट होने लगे। जब कोई उसकी तरफ नही देख रहा होता था तब वह ठीक रहती थी, परन्तु जब कोई उसकी तरफ ध्यान देता था, अगर किसी के कदमो की आहट भी उसे सुनाई पड जाती थी, तो वह बहाना बना कर पलग पर पड जाती थी मानो कब-की बीमार हो। जब वह देखती थी कि कोई उसे देख नहीं रहा, तब उठकर शीशे के सामने खडी होकर देखती थी कि वह कितनी

खूबसूरत है। अगर रोगी अपने लक्षणों को बहाना बना कर बढ़ाता-चढ़ाता रहे, तो इस औषधि से लाभ होगा।

(१०) दांतों के साथ मसूड़ों पर नीली लकीर पड़ जाना—इस औषधि का एक आजमाया हुआ लक्षण यह है कि दांतों पर मसूड़ों के साथ-साथ लम्बाई के रुख में एक लम्बी नीली लकीर पड़ जाती है।

(११) मन के क्षीण होने के साथ तन का भी क्षीण होते जाना (Emaciation)—यह तो हम कह ही चुके हैं कि सर्वांगीण शिथिलता इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। मन की शिथिलता के साथ शरीर इतना क्षीण हो जाता है कि हड्डियों का ढांचा मात्र रह जाता है, त्वचा सूख जाती है, उसमें झुर्रियां पड़ जाती हैं। इस प्रकार के शरीर के सूक जाने के विषय में अन्य औषधियों की चर्चा हम एब्रोटेनम में कर आये हैं।

(१२) शक्ति तथा प्रकृति—३, ३०, २००

पोडोफाइलम (PODOPHYLLUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) गड़गड़ाहट के साथ दस्त अधिक परिमाण में होते हैं

(२) दस्त में बदबू आती है, दर्द नहीं होता

(३) दस्त प्रातःकाल आरंभ होकर दोपहर तक बन्द हो जाता या घट जाता है

(४) दस्त तथा कब्ज का पर्याय-क्रम (Alternate diarrhea with constipation)

(५) दस्तों तथा सिर-दर्द का पर्याय-क्रम (Alternate diarrhea with headache)

(६) सिर-दर्द का जिगर की बीमारी में पर्याय-क्रम (Headache alternating with liver troubles)

(७) गुदा-द्वार या जरायु का बाहर निकल पड़ना

(८) ज्वर ७ बजे प्रातः आता है

(९) दाहिनी तरफ का रोग

(१) गड़गड़ाहट के साथ दस्त अधिक परिमाण में होते हैं—इस औषधि के दस्त अधिक परिमाण में होते हैं, बहुत बड़े-बड़े पनीले दस्त आते हैं, रोगी को समझ नहीं आता कि इतने भारी दस्त कहां से आ रहे हैं। दस्त इतना भारी होता है कि प्रत्येक दस्त के बाद रोगी समझता है कि सब पानी बह गया और अब उसके अन्दर कुछ नहीं रहा, परन्तु उसके बाद फिर गड़गड़ाहट के साथ दूसरा दस्त आ जाता है। दस्त आने के पहले गड़गड़ होना और फिर बहुत भारी बदबूदार बिना दर्द के दस्त होना—इस औषधि का लक्षण है। दस्त का

रग हरा या पीला होता है, खून मिला भी हो मकता है। दात निकलने समय वच्चो के दस्तो मे भी लाभ करता है।

(२) दस्त मे बदबू आती है, दर्द नहीं होता—यह जो भारी दस्त आता है इसमे बेहद वदबू होती है। अगर दस्त मे वदबू न हो, तो समझ लेना चाहिये कि इस औषधि का क्षेत्र नही है। इस दस्त मे दर्द भी नही होता। दस्त ऐसे निकलता है जैसे नल मे से पानी एकदम वह पडा हो।

(३) दस्त प्रात काल आरभ होकर दोपहर तक बन्द हो जाता या घट जाता है—इस के दस्तो की विशेषता यह है कि सवेरे शुरु हो जाता है, दिन के दस वजे तक वढ़ता रहता है, फिर घट जाना है, या शाम तक स्वाभाविक पाखाना आ जाता है। रोगी समझता है कि अव ठीक हो गया परन्तु अगले दिन सवेरे से फिर वैसे ही दस्त शुरु हो जाते है। सवेरे ४-५ वजे से पाखाना जाने की हाजत **सल्फर** मे भी है, उसके दस्त भी दोपहर तक घट जाते हैं। दस्तो मे **पोडो** और **सल्फर** का लक्षण प्रात काल रोग का वढ जाना है।

(४) दस्त तथा कब्ज का पर्याय-क्रम (Alternate diarrhea with constipation)—रोगी को ठड लगी, मानसिक उत्तेजना हुई, शक्ति से अधिक काम लिया, कच्चे फल खा गया, गरिष्ठ भोजन किया, या किसी भी कारण से दस्त आने लगे, दस्तो के वाद उसे कब्ज हो गई और हफ्तो वह कब्ज का शिकार रहा। टट्टी नहीं आती, टट्टी के सिर्फ कुछ ढेले मुश्किल से निकलने है। इसप्रकार दस्त और दस्तो के वाद कब्ज—यह **पोडोफाइलम** का लक्षण है। कभी दस्त, कभी कब्ज, इनका एक-दूसरे के वाद आते-जाते रहना इस औषधि मे पाया जाता है।

(५) दस्तो तथा सिर-दर्द का पर्याय-क्रम (Alternate diarrhea with headache)—रोगी को सिर-दर्द होता है, परन्तु सिर-दर्द, समय-समय पर आनेवाला सिर-दर्द, किसी तरह का भी सिर-दर्द हो, अगर उसके वाद दस्त आने लगें और सिर-दर्द जाता रहे, दस्त वन्द होने के वाद फिर सिर-दर्द शुरु हो जाय, तो यह भी इसी औषधि का लक्षण है। प्राय देखा जाता है कि **पोडोफाइलम** के दस्तो मे जव इस औषधि की उच्च-शक्ति की मात्रा दी जाती है तब दस्त बन्द हो जाते हैं, और सिर-दर्द शुरु हो जाता है। इसका यही अभिप्राय है कि औषधि ने एकदम प्रभाव कर दिया है, दस्तो को रोक दिया है, और सिर-दर्द शुरु हो गया है। परन्तु ऐसी अवस्था मे औषधि वदलना ठीक नही क्योकि कुछ देर वाद जैसे दस्त चले गये, वैसे सिर-दर्द भी अपने-आप चला जायगा।

(६) सिर-दर्द का जिगर की वीमारी से पर्याय-क्रम (Headache alternating with liver troubles)—जैसे दस्तो और सिर-दर्द के पर्याय-क्रम मे **पोडो** उपयोगी है, वैसे सिर-दर्द और जिगर की वीमारी के पर्याय-क्रम मे, एक रहे तो दूसरी न रहे—इस मे भी यह औषधि उपयोगी है। जिगर की

बीमारी के लक्षण है जिगर के स्थान पर भारीपन, दर्द या मीठा दर्द रहना है, खासने पर जिगर के स्थान पर दर्द होता है, भोजन के खट्टे डकार आते है, पीलिया हो जाता है, मुह कडवा रहता है, चक्कर आते हैं, और साथ ही दस्तों और कब्ज का भी पर्याय-क्रम रहता है। **पोडो मुख्य तौर पर जिगर के रोगों की दवा है**—(It is primarily a liver remedy)

(७) **गुदा-द्वार या जरायु का बाहर निकल पडना**—पाखाने के पहले और बाद मे गुदा-द्वार का बाहर निकल पडना इसका चरित्रगत-लक्षण है। भारी वस्तु उठाने से स्त्रियो मे जरायु भी अपने स्थान मे बाहर आ सकता है।

(८) **ज्वर सात बजे प्रात आता है**—रोगी को ज्वर प्रात. सात बजे आता है। सर्दी और ज्वर की अवस्था मे रोगी बहुत बोलता है, और पसीने की अवस्था मे सो जाता है। नीद के समय बहुत पसीना आता है।

(९) **दाहिनी तरफ का रोग**—इस औषधि का लाइको की तरह शरीर के दायें भाग पर विशेष प्रभाव है। दाये गले, दाये डिम्ब-कोष, दायी कोख मे दर्द आदि का आक्रमण होता है।

(१०) **शक्ति**—६, ३०, २००

सोरिनम (PSORINUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सपूर्ण-शरीर से अत्यन्त बदबू आना, (क्रियोजोट मे भी बू है), (Great filthy odor of the whole body)

(२) त्वचा-सबधी अनेक प्रकार के रोगो की प्रकृति (Susceptibility to all kinds of skin diseases), स्नान न करना

(३) गर्म मौसम मे भी ठंड महसूस करना

(४) शीत-प्रकृति का होते हुए भी एग्जीमा पर ठंडी हवा चाहना

(५) दमे मे लेटने तथा जिस्म से हाथ अलग फैलाकर पडने मे आराम

(६) रोग के आक्रमण के एक दिन पहले अत्यन्त स्वस्थ अनुभव करना

(७) गर्भपात के बाद कुछ दिन थोडा-थोडा खून झरना

(८) पतला दस्त भी मुश्किल से निकलना

(९) बच्चे का दिनभर खेलना, रात भर रोना (लाइको से उल्टा)

(१०) सुनिर्वाचित-औषधि से भी जीवनी-शक्ति मे प्रतिक्रिया का न होना; सल्फर से तुलना (जीर्ण-रोग मे सोरिनम तथा तरुण-रोग मे सल्फर)

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*गर्मी से रोगी को आराम
*गर्म पोशाक पहनने से आराम
*सिर पर कपडा लपटने से रोगी का आराम अनुभव करना
*चुपचाप लेटे रहने से आराम
*नक्सीर फूटने से रोगी को आराम
*खाने से रोगी का आराम अनुभव करना
*सिर नीचा करके लेटने से आराम अनुभव करना

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*ठंड, ठडी हवा से वृद्धि
*मौसम के एकदम बदलने से रोगी का परेशान हो जाना, ठंड महसूस करना
*स्नान से रोग की वृद्धि
*बिस्तर की गर्मी से वृद्धि
*प्रति-वर्ष रोग का आगमन
*त्वचा के रोग के दबने से वृद्धि

(१) सपूर्ण शरीर से अत्यन्त बदबू आना, (क्रियोजोट मे भी बू है) (Great filthy odor of the whole body)—इस औषधि का मर्म-

प्रधान लक्षण इसकी बदबू है। सड़े मास की-सी, या सडे अडे की-सी रोगी से बदबू आती है। रोगी के प्रत्येक स्राव से—मल-मूत्र, कान की पस, प्रदर, पसीना, माहवारी—से ऐसी दुर्गन्ध आती है कि पास खडा नहीं रहा जाता। डा० टायलर ने ऐसे कुछ रोगियो का ज़िक्र किया है जिनसे इतनी दुर्गन्ध आती थी कि उनके पास से हट जाने पर उस दुर्गन्ध को भगाने के लिये चिकित्सक को ठडी हवा लेने की आवश्यकता महसूस होती थी। ऐसे रोगियो को **सोरिनम** देने से उनका रोग तो ठीक होता ही है, उनकी दुर्गन्ध भी जाती रहती है। इस प्रकार की दुर्गन्ध का न होना इस औषधि को न देने का लक्षण है। इस औषधि का निर्वाचन तभी किया जाना चाहिये जब रोगी मे इस प्रकार की दुर्गन्ध आती हो। ऐसी दुर्गन्ध का लक्षण **क्रियोज़ोट** मे भी है।

(२) **त्वचा-सम्बन्धी अनेक प्रकार के रोगों की प्रकृति** (Susceptibility to all kinds of skin diseases), **स्नान न करना**—रोगी की त्वचा, खासकर चेहरा गन्दा लगता है। रोगी की आकृति ऐसी प्रतीत होती है जैसे कब से उसने स्नान नही किया। वह स्नान करने से घबराता भी है, स्नान कम करता है, या नही भी करता। अपने को खूब धो भी ले तो भी वह गन्दा, मैला ही दीख पडता है। त्वचा खुरदरी होती है, कही से साफ कही से मैली, जगह-जगह फटी हुई। खुजली, छिलकेदार फुन्सिया, त्वचा मे दरारें जिनमे से आसानी मे खून निकलता है, खोपडी तथा चेहरे का एग्ज़ीमा, सिर पर पपडिया, बाल झडना आदि त्वचा के रोग इस औषधि की प्रकृति मे है। रात को बिस्तर मे रोगी खुजली से दीवाना हो जाता है। अगर रात को कपडा उतार फेंकता है तो सर्दी सताती है, अगर बदन पर कपडा ओढ लेता है तो खुजली सताती है।

(३) **गर्म-मौसम मे भी ठड महसूस करना**—रोगी इतनी ठड महसूस करता है कि गर्म-मौसम मे भी गर्म कपडे पहने रहता है। आसमान मे बादलो के आते ही मकान मे घुस जाता है, बाहर की ठडी हवा बर्दाश्त नहीं कर सकता। यद्यपि उसने पहले ही गर्म कपडे पहने होते है, वह उनमे भी ज्यादा गर्म कपडे ओढ लेता है। यह रोगी एक तरह का बैरोमीटर होता है। मौसम का उतराव-चढाव उसमे दीख पडता है।

(४) **शीत-प्रकृति का होते हुए भी एग्ज़ीमा पर ठडी हवा चाहता है**—यद्यपि **सोरिनम** का रोगी शीत-प्रकृति का है, सर्दी से घबराता है, तो भी जहा तक उसके एग्ज़ीमा का सबन्ध है, वह उस पर ठडक ही चाहता है, उस पर गर्म-सेक मे उसे तकलीफ होती है। रात को एग्जीमा का कष्ट बढ जाता है। रोगी की त्वचा ठड से बचती है परन्तु उसकी त्वचा का एग्ज़ीमा ठड चाहता है। हम पहले भी कई जगह लिख आये हैं कि रोगी के लक्षणो मे और रोगी के अगो के लक्षणो मे विरोध हो सकता है, परन्तु इस विरोध के होते हुए भी औषधि का

चुनाव रोगी के 'व्यापक-लक्षणों' (Generals) के आधार पर ही होगा, एकांगी (Particulars) के आधार पर नहीं। इस प्रकार का विरोध **फॉसफोरस** और **आर्सेनिक** में भी पाया जाता है। **फ़ॉस** शीत-प्रधान—Chilly—औषधि है, परन्तु इसका रोगी पेट में ठंड ही पसन्द करता है, आइस-क्रीम खाना चाहता है, सिर नंगा रखना चाहता है। इसी प्रकार **आर्सेनिक** भी शीत-प्रधान —Chilly— है, परन्तु सारे जिस्म पर कम्बल ओढ़े हुए भी वह अपना सिर खिड़की की हवा के सामने रखना चाहता है। क्योंकि **फॉस** का रोगी आइस-क्रीम चाहता है या **आर्स** अपना सिर ठंडी हवा में रखता है—इस 'एकांगी' (Particular) लक्षण को महत्व नहीं दिया जायगा, इनके 'व्यापक-लक्षणों' (Generals) को ही ध्यान में रखा जायगा, यह देखा जायगा कि अपने स्वरूप में रोगी किस प्रकृति का है।

(५) **दमे में लेटने तथा जिस्म से हाथ अलग फैला कर पड़ने में आराम**—दमे का रोगी साधारण तौर पर बैठा रहने में चैन अनुभव करता है, परन्तु दमे में इस औषधि का विचित्र-लक्षण यह है कि वह लेटने पर अपने रोग में आराम अनुभव करता है। इस विचित्र-लक्षण पर **सोरिनम** देने से दमे को लाभ हो जाता है। इसके साथ इसका यह भी लक्षण है कि रोगी अपने अंगों को एक-दूसरे के संपर्क में लाना पसन्द नहीं करता, बिस्तर में ऐसे लेटता है जिससे हाथ जिस्म से न मिले रहें, बिस्तर पर अलग फैले रहें। हाथ को छाती पर रखकर नहीं सो सकता। **लैकेसिस** हाथ को पेट पर रखकर नहीं सो सकता, उसे बद-आरामी होती है।

(६) **रोग के आक्रमण के एक दिन पहले अत्यन्त स्वस्थ अनुभव करना**—इसका एक विचित्र-लक्षण यह है कि जब भी किसी रोग का आक्रमण होता है, उससे एक दिन पहले रोगी अत्यन्त स्वस्थ अनुभव करता है। इस प्रकार के विचित्र तथा अद्भुत लक्षण होम्योपैथी में महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।

(७) **गर्भपात के बाद कुछ-दिन थोड़ा-थोड़ा खून झरना** (After abortion a little gushing of blood every few days)—कभी-कभी ऐसा होता है कि गर्भपात के बाद जब प्लेसेंटा—खेढ़ी—भी निकल जाता है, तब भी थोड़े-थोड़े दिन बाद कुछ ताजा खून, चमकीला, लाल, थक्केदार झरा करता है, या कई दिन या हफ्तों थोड़ा-थोड़ा लाल खून रिसा करता है। जब भी यह स्त्री खड़ी होती है नये सिरे से यह रक्त-स्राव होने लगता है, रोगिणी ठीक होने में नहीं आती। ऐसी दशा में दो ही औषधियां हैं जो इस रोग को ठीक करती हैं—एक है **सोरिनम**, दूसरी है **सल्फर**।

(८) **पतला दस्त भी मुश्किल से निकलना**—इस औषधि के इस लक्षण को भुलाया नहीं जा सकता। पतला दस्त तो आसानी से निकल जाना

चाहिये, परन्तु इसमें पतला दस्त भी आसानी से नहीं निकलता। इस औषधि में पाखाने के लिये दौड़कर जल्दी बाथ-रूम जाने का सल्फर का लक्षण, पाखाने के समय पेट में हवा का एलो का लक्षण, और पतले दस्त में भी कठिनाई से पाखाना निकलने का एलूमिना, चायना और नक्स मौस्केटा का लक्षण एक-साथ पाया जाता है।

(९) बच्चे का दिन भर खेलना, रात भर रोना—बच्चा दिनभर खेलता है, रात भर रोता है। जेलापा में भी बच्चा दिन भर ठीक रहता है, रात भर परेशान रहता है। इस दृष्टि से सोरिनम तथा जेलापा एक-समान हैं। लाइको इन दोनों के विपरीत दिन भर चिल्लाता है, रातभर सोता है।

(१०) सुनिर्वाचित-औषधि से भी जीवनी-शक्ति में प्रतिक्रिया का न होना; सल्फर से तुलना—हनीमैन का कथन है कि अगर लक्षणों के आधार पर औषधि का चुनाव किया जाय, और फिर भी रोग पूर्णतया शान्त न हो, तो इसका यह अर्थ है कि रोगी के शरीर में कोई ऐसी 'धातुगत-बाधा' (Constitutional obstruction) है, जो उचित दवा के उपयोग से भी रोग को शान्त नहीं होने देती। ऐसी बाधाएं तीन प्रकार की होती है—सोरा, साइकोसिस तथा सिफिलिस। इनमें से साइकोसिस (प्रमेह—सुज़ाक—गोनोरिया का विष-बीज) का जिक्र हम मैडोराइनम में और सिफिलिस (उपदंश—सिफिलिस—का विष-बीज) का जिक्र मर्क्यूरियस में कर आये है। सोरा (शारीरिक तथा मानसिक खुजली का विष-बीज जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन 'सल्फर' में किया गया है) ऐसा सर्व-व्यापक दोष है, जो सुनिर्वाचित औषधि देने पर भी रोग को निर्मूल नहीं होने देता। इसलिये हनीमैन का कथन है कि अगर लक्षणानुसार दवा देने पर भी रोग जड़ से नहीं जाता या बार-बार उठ खड़ा होता है, तो इसका कारण सोरा-दोष है। इसका नाश करने के लिये सल्फर देना चाहिये। अगर सल्फर देने पर भी रोग जड़-मूल से नहीं जाता तब सोरिनम दिया जाना उचित है।

जीर्ण-रोग में सोरिनम तथा तरुण-रोग में सल्फर—रोग की तरुण (Acute) अवस्था में अगर सुनिर्वाचित-औषधि से लाभ नहीं होता, तो सल्फर दिया जाता है, और जीर्ण (Chronic) अवस्था हो, रोग की कठिन [illegible]
हो, तब सोरिनम दिया जाता है। अगर सल्फर देने के बाद भी रोग [illegible]
हो, या सल्फर देने के बाद सुनिर्वाचित-औषधि काम न करे, तब भी
दिया जाता है। वैसे सल्फर और सो[illegible] समानता
जाती है। दोनों स्नान पसन्द नहीं कर[illegible] ता।
फोड़े-फुन्सियों से भरे रहते हैं, मैले-[illegible] प्रयोग
शक्ति की रोग के प्रतिक्रिया के न होने [illegible] जब
शक्ति रोग द्वारा ऐसे आक्रान्त हो

जीवनी-शक्ति को सचेत नही करती, तव **सोरिनम** उस पर कांडे का-सा प्रहार कर उसे जागृत कर देता है और वह रोग के साथ युद्ध करने मे जूझ पडता है, और रोग को परास्त कर देता है।

(११) इस औषधि के विषय मे अन्य ज्ञातव्य बातें—

i **गर्भावस्था मे माता तथा बच्चे की दोष-नाशक है**—जब माता गर्भवती होती है, तब उसकी शारीरिक-अवस्था होम्योपैथिक-औषधि के प्रभाव के लिये इतनी उपयुक्त हो जाती है कि उस समय उसके किसी भी रोग पर औषधि देने से उसके अपने तथा वच्चे के भावी-रोग जड-मूल से जाते रहते हैं। इस-लिये गर्भावस्था मे किसी योग्य-चिकित्सक से होम्योपैथिक इलाज कराना भावी-जीवन के लिये ठीक रहता है। सोरिक प्रकृति होने पर गर्भावस्था मे **सोरिनम** २०० की मात्रा लेने से माता तथा शिशु के अनेक रोग दूर हो जाते हैं।

ii **रजोधर्म के समय चेहरे पर फुन्सियां**—(Acne) रजोधर्म के समय अगर युवती स्त्रियो के चेहरे पर फुन्सिया निकलें, तो इससे लाभ होता है। जो फुन्सियाँ हर जाडे मे प्रकट होती और गर्मी मे चली जाती हैं उनमे भी यह फलप्रद है।

iii **सुजाक जो न अच्छा हो, न दबे**—ऐसे सुजाक मे जो वर्षों से चल रहा हो, अच्छा होने मे न आता हो, जिसमे ग्लीट का मवाद कपडो मे लगता रहता हो, यह लाभ करता है।

iv. **हर सर्दी की ऋतु मे खांसी**—जिन लोगो को हर शीत-ऋतु मे खाँसी हो जाती है, या जिन्हें खुजली या एग्ज़ीमा के दब जाने से खासी आती रहती है, उनके लिये भी यह उपयोगी है। खखार का स्वाद नमकीन होता है।

v **आइसोपैथी तथा होम्योपैथी**—आइसोपैथी तथा होम्योपैथी मे यह भेद है कि आइसोपैथी मे तो जिस रोग के विष से दवा बनाई जाती है, वह उसी रोग मे दी जाती है। उदाहरणार्थ, चेचक के विष से जो लिम्फ लिया जाता है वह चेचक को रोकने के लिये दिया जाता है। होम्योपैथी मे जिस रोग के विष से औषधि बनायी जाती है वह उसी रोग मे नही दी जाती, उस प्रकार के लक्षणो वाले (उसमे नही, उस-जैसे मे) रोग मे दी जाती है। होम्योपैथी मे सिर्फ **सोरिनम** का प्रयोग आइसोपैथी के आधार पर किया जाता है क्योंकि इसकी परीक्षा (Proving) करने पर देखा गया है कि त्वचा की खुजली के विष से बनाई गई यह औषधि त्वचा के रोगो को दूर करती हैं। रोग के विषो से अन्य-औषधिया भी होम्योपैथी मे बनी हैं जिनका एक-साथ वर्णन हमने पुस्तक के अन्त मे 'नोसोड्स' (Nosodes)—'रोगज-औषधियो'—मे दिया है।

(१२) शक्ति तथा प्रकृति—३०, २०० (औषधि 'शीत'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

चाहिये, परन्तु इसमें पतला दस्त भी आसानी से नहीं निकलता। इस औषधि में पाखाने के लिये दौड़कर जल्दी बाथ-रूम जाने का सल्फर का लक्षण, पाखाने के समय पेट में हवा का एलो का लक्षण, और पतले दस्त में भी कठिनाई से पाखाना निकलने का एलूमिना, चायना और नक्स मोस्केटा का लक्षण एक-साथ पाया जाता है।

(९) बच्चे का दिन भर खेलना, रात भर रोना—बच्चा दिनभर खेलता है, रात भर रोता है। जेलापा में भी बच्चा दिन भर ठीक रहता है, रात भर परेशान रहता है। इस दृष्टि से सोरिनम तथा जेलापा एक-समान हैं। लाइको इन दोनों के विपरीत दिन भर चिल्लाता है, रातभर सोता है।

(१०) सुनिर्वाचित-औषधि से भी जीवनी-शक्ति में प्रतिक्रिया का न होना, सल्फर से तुलना—हनीमैन का कथन है कि अगर लक्षणों के आधार पर औषधि का चुनाव किया जाय, और फिर भी रोग पूर्णतया शान्त न हो, तो इसका यह अर्थ है कि रोगी के शरीर में कोई ऐसी 'धातुगत-बाधा' (Constitutional obstruction) है, जो उचित दवा के उपयोग से भी रोग को शान्त नहीं होने देती। ऐसी बाधाएं तीन प्रकार की होती हैं—सोरा, साइकोसिस तथा सिफिलिस। इनमें से साइकोसिस (प्रमेह—सुज़ाक—गोनोरिया का विष-बीज) का जिक्र हम मैडोराइनम में और सिफिलिस (उपदंश—सिफिलिस—का विष-बीज) का जिक्र मर्क्यूरियस में कर आये हैं। सोरा (शारीरिक तथा मानसिक खुजली का विष-बीज जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन 'सल्फर' में किया गया है) ऐसा सर्व-व्यापक दोष है, जो सुनिर्वाचित औषधि देने पर भी रोग को निर्मूल नहीं होने देता। इसलिये हनीमैन का कथन है कि अगर लक्षणानुसार दवा देने पर भी रोग जड़ से नहीं जाता या बार-बार उठ खड़ा होता है, तो इसका कारण सोरा-दोष है। इसका नाश करने के लिये सल्फर देना चाहिये। अगर सल्फर देने पर भी रोग जड़-मूल से नहीं जाता तब सोरिनम दिया जाना उचित है।

जीर्ण-रोग में सोरिनम तथा तरुण-रोग में सल्फर—रोग की तरुण (Acute) अवस्था में अगर सुनिर्वाचित-औषधि से लाभ नहीं होता, तो सल्फ़र दिया जाता है, और जीर्ण (Chronic) अवस्था हो, रोग की कठिन अवस्था हो, तब सोरिनम दिया जाता है। अगर सल्फर देने के बाद भी रोग शान्त न हो, या सल्फर देने के बाद सुनिर्वाचित-औषधि काम न करे, तब भी सोरिनम दिया जाता है। वैसे सल्फर और सोरिनम के लक्षणों में समानता भी पायी जाती है। दोनों स्नान पसन्द नहीं करते, दोनों को खुजली बहुत सताती है, दोनों फोड़े-फुन्सियों से भरे रहते हैं, मैले-बदन होते हैं, दोनों का प्रयोग जीवनी-शक्ति की रोग के प्रतिक्रिया के न होने की अवस्था में होता है। जब जीवनी-शक्ति रोग द्वारा ऐसे आक्रान्त हो जाती है कि अच्छी-से-अच्छी दवा भी

जीवनी-शक्ति को सचेत नही करती, तब **सोरिनम** उस पर कोडे का-सा प्रहार कर उसे जागृत कर देता है और वह रोग के साथ युद्ध करने मे जूझ पडता है, और रोग को परास्त कर देता है।

(११) **इस औषधि के विषय मे अन्य ज्ञातव्य बातें**--

i **गर्भावस्था मे माता तथा बच्चे की दोष-नाशक है**—जब माता गर्भवती होती है, तब उसकी शारीरिक-अवस्था होम्योपैथिक-औषधि के प्रभाव के लिये इतनी उपयुक्त हो जाती है कि उस समय उसके किसी भी रोग पर औषधि देने से उसके अपने तथा बच्चे के भावी-रोग जड़-मूल से जाते रहते हैं। इस-लिये गर्भावस्था मे किसी योग्य-चिकित्सक से होम्योपैथिक इलाज कराना भावी-जीवन के लिये ठीक रहता है। सोरिक प्रकृति होने पर गर्भावस्था मे **सोरिनम** २०० की मात्रा लेने से माता तथा शिशु के अनेक रोग दूर हो जाते हैं।

ii **रजोधर्म के समय चेहरे पर फुन्सियां**—(Acne) रजोधर्म के समय अगर युवती स्त्रियो के चेहरे पर फुन्सिया निकले, तो इससे लाभ होता है। जो फुन्सियाँ हर जाडे मे प्रकट होती और गर्मी मे चली जाती हैं उनमे भी यह फलप्रद है।

iii **सुजाक जो न अच्छा हो, न दबे**—ऐसे सुजाक मे जो वर्षों से चल रहा हो, अच्छा होने मे न आता हो, जिसमे ग्लीट का मवाद कपडो मे लगता रहता हो, यह लाभ करता है।

iv **हर सर्दी की ऋतु मे खांसी**—जिन लोगो को हर शीत-ऋतु मे खांसी हो जाती है, या जिन्हें खुजली या एग्जीमा के दब जाने से खासी आती रहती है, उनके लिये भी यह उपयोगी है। खखार का स्वाद नमकीन होता है।

v **आइसोपैथी तथा होम्योपैथी**—आइसोपैथी तथा होम्योपैथी मे यह भेद है कि आइसोपैथी मे तो जिस रोग के विष से दवा बनाई जाती है, वह उसी रोग मे दी जाती है। उदाहरणार्थ, चेचक के विष से जो लिम्फ लिया जाता है वह चेचक को रोकने के लिये दिया जाता है। होम्योपैथी मे जिस रोग के विष से औषधि बनायी जाती है वह उसी रोग मे नही दी जाती, उस प्रकार के लक्षणो वाले (उसमे नही, उस-जैसे मे) रोग मे दी जाती है। होम्योपैथी मे सिर्फ **सोरिनम** का प्रयोग आइसोपैथी के आधार पर किया जाता है क्योंकि इसकी परीक्षा (Proving) करने पर देखा गया है कि त्वचा की खुजली के विष से बनाई गई यह औषधि त्वचा के रोगो को दूर करती है। रोग के विषो से अन्य-औषधिया भी होम्योपैथी मे बनी हैं जिनका एक-साथ वर्णन हमने पुस्तक के अन्त में 'नोसोड्स' (Nosodes)—'रोगज-औषधियो'—मे दिया है।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (औषधि 'शीत'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

पल्सेटिला (PULSATILLA)

यह 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) औषधि है। इसके लक्षण भी बहुत हैं, इसलिये हम इस औषधि का विवरण दो भागों में विभक्त करके दे रहे हैं।

[प्रथम-भाग—व्यापक-लक्षण]

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) रोगिणी की शारीरिक रचना—मोटी-ताजी, नक्स पतली-दुबली

(२) लज्जाशील, नम्र, कोमल, क्रन्दन-शील तथा दीर्घसूत्री स्वभाव

(३) क्रन्दनशील स्वभाव में पल्स, नैट्रम म्यूर, लाइको, सीपिया, इग्नेशिया, स्टैनम की तुलना

(४) पल्सेटिला का मृदु, नक्स का उग्र, कैमोमिला का क्रोधी स्वभाव है

(५) उचित-अनुचित के संबंध में पल्स के रोगी की विभिन्न विचार-सरणी

(६) इक-तरफा शिकायतें

(७) मुंह खुश्क होने पर भी प्यास न होना

(८) गाढ़ी, मृदु, हरी या पीली रतूबत

(९) प्रकृति—'खुली हवा की इच्छा' और 'चलने-फिरने से आराम'

(१०) गरिष्ठ-भोजन की इच्छा जो उसे रुग्ण कर देता है (पल्स तथा नक्स की पेट के लक्षणों में तुलना)

(११) लक्षणों की परिवर्तनशीलता और दर्द के साथ ठंड महसूस होना (Changeability of symptoms and feeling of chilliness with pain)

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणों में कमी (Better)

* ठंड, ठंडी हवा से रोग घटना
* कपड़ा न ओढ़ने से आराम
* हल्का चलने-फिरने से रोग घटना
* दिल भरकर रोने से जी हल्का हो जाना
* सहानुभूति प्रदर्शित करने से रोग में कमी अनुभव करना
* खूब रो लेने पर अच्छा अनुभव करना

लक्षणों में वृद्धि (Worse)

* गर्मी, गर्म कमरे से परेशानी
* पांव भीग जाने से रोग होना
* स्राव के रुकने से रोग-वृद्धि
* सायंकाल रोग का बढ़ना
* आराम से रोग का बढ़ना
* हरकत की शुरुआत में तकलीफ महसूस करना
* गरिष्ट भोजन, घी आदि के पदार्थ खाने से बदहज़मी
* माहवारी से पहले रोग-वृद्धि
* गर्भावस्था या जवानी के रोग
* लोह या कुनीन के टॉनिक लेने से किसी रोग का हो जाना

(१) **रोगिणी की शारीरिक रचना (Constitution)**—शरीर-रचना की दृष्टि से **पल्स**-स्त्री मोटी-ताजी होती है। उसका शरीर कफ-प्रकृति का होता है। उसके शरीर को देख कर कोई नही कह सकता कि वह रोगिन है। **पल्स** मुख्य तौर पर स्त्रियो की औषधि है। इसके मुकाविले मे **नक्स** पुरुषो की औषधि कही जाती है। **नक्स** का रोगी पतला-दुबला, वात-प्रकृति का कहा जा सकता है। इन दोनो के स्वभाव मे भी परस्पर-विरोध है। **पल्स** मृदु-स्वभाव, लज्जाशील और नम्र-प्रकृति की स्त्री या पुरुष होता है, **नक्स** का उग्र-स्वभाव होता है, परन्तु इसका यह मतलव नही कि स्त्रियो को **नक्स** या पुरुषो को **पल्स** नही दिया जा सकता, लक्षणानुसार सब को सब-कुछ दिया जा सकता है।

(२) **लज्जाशील, नम्र, कोमल, क्रन्दनशील तथा दीर्घ-सूत्री स्वभाव**—इस औषधि की प्रकृति की स्त्री लज्जाशील, नम्र, मृदु, कोमल स्वभाव की होती है, वीसियो मे उसे पहचाना जा सकता है। वह इतनी मृदु-स्वभाव की और मीठे बोल की होती है कि उसके मुख से किसी के लिये कडवी बात नही निकलती। उसे कोई कुछ भी कह दे वह सब सह लेती है, अत्यन्त धैर्यशीला होती है। उसके नम्र, मृदु तथा कोमल स्वभाव के कारण सब उसे चाहते हैं। वह किसी से झगडती नही। पति के साथ उसका व्यवहार सदा प्रेम और सौजन्य का होता है। कई स्त्रिया कर्कशा होती हैं, पति को एक की दो सुनाती है, वह ऐसी नही होती। उसके कोमल-स्वभाव को देखकर लोग उसका नाजायज़ फायदा भी उठाया करते हैं। वह किसी वात मे निर्णय पर नही पहुच पाती। सदा सोचा करती है—क्या करू, क्या न करू, दृढ निश्चय का उसमे अभाव होता है। तुर्त-फुर्त काम कर डालना, मुस्तैदी से, विना झिझक जो मन मे आया उसी समय उसे निपटा लेना उसे नही आता। सब की वात वने—यही सोचा करती है, और यही कारण है कि सब उसे चाहते हैं। हनीमैन ने **पल्स** पर लिखते हुए लिखा है "Pulsatilla is specially adapted for slow phlegmatic temperaments, and little suited for persons who form their resolutions with rapidity, and are quick in their movements even though they may appear to be good tempered"—अर्थात्, यह औषधि दीर्घसूत्री-स्वभाव के लोगों के लिये उपयुक्त है, और जो व्यक्ति झटपट अपना निर्णय कर डालते हैं, और हर काम मे तेजी दिखलाते है, वे मृदु-स्वभाव के भी क्यो न हो, उनके लिये उपयुक्त नही है। इस दृष्टि से मृदु-स्वभाव की अपेक्षा दीर्घ-सूत्री-स्वभाव, आलसी-स्वभाव इस औषधि का मुख्य-लक्षण है।

क्रन्दनशील-स्वभाव—अगर उसमे कोई दोष है, तो यही कि वह छोटी-सी वात से भी इतना परेशान हो जाती है कि जरा-जरा-सी वात पर रोया करती है। अगर कुछ नही भी हुआ, तो भी उसके आसू टपका करते हैं, कभी-कभी यह

समझना ही कठिन हो जाता है कि वह रो क्यों रही है। चिकित्सक के सामने अपने रोग के लक्षण कहते-कहते वह रोने लगती है। इस प्रकार का क्रन्दनशील-स्वभाव पल्स का अत्यन्त प्रमुख-लक्षण है। क्रन्दनशील-स्वभाव की अन्य औषधियाँ भी हैं जिनका हम अभी उल्लेख करेंगे।

(३) **क्रन्दनशील-स्वभाव मे पल्स, नेट्रम म्यूर, लाइको, सीपिया, इग्नेशिया, स्टैनम की तुलना**—इन सब औषधियो मे क्रन्दनशील-स्वभाव है, परन्तु इस स्वभाव के होते हुए भी इनमे निम्न भिन्नता है

पल्स—यह स्त्री स्थूल-शरीर की, मृदु-स्वभाव की और आलसी होती है, जरा-जरा-सी वात मे रोया करती है। जव कोई उसके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करता है, तव उसका जी हल्का हो जाता है। वह अपने दुःख मे सहानुभूति के लिये तरसा करती है।

नेट्रम म्यूर—रक्तहीन दुवली स्त्री या पुरुष वडा दुःखी, हतोत्साह होता है, परन्तु अपने दुःख पर उसे काबू होता है जैसा पल्स को नही होता। नेट्रम के दुःख का प्रकाश तव होता है जव कोई उसके साथ उसके दुःख मे सहानुभूति दर्शाता है। पल्स को अपने दुःख पर काबू नही होता, वह सवके सामने अपने दुःख की गाथा सुनाया करती है। नेट्रम मे ऐसा नहीं है। जव लोग उसके दुःख मे सहानुभूति प्रदर्शित करने लगते हैं, यह कहते हैं कि किस प्रकार उसके साथ अन्याय हुआ, तव नेट्रम जार-जार आसू वहाने लगती है, सहानुभूति प्रदर्शित करने से उसका दुःख कम नही होता, और उभर आता है, और वह नहीं चाहती कि कोई उसके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करे। कभी-कभी तो लोगों को पछताना पड जाता है कि उन्होंने क्यो सहानुभूति दिखलाई जिससे उसका दुःख घटने के वजाय वढ गया। **नेट्रम इग्नेशिया** की क्रौनिक है।

लाइकोपोडियम—अगर वह किसी के प्रति उपकार का कार्य करे, और उसे धन्यवाद दिया जाय, तो धन्यवाद की वात मे ही उसे रुलाई आ जाती है। जव वह रोती है तो धाडें मार-मार कर रोती है। लाइको की रोगिणी शारीरिक-दृष्टि से कमजोर होती है।

सीपिया—घर के काम मे इसका जी नहीं लगता, उदास रहती है, रोया करती है। प्राय इसके रोने का कारण कोई जरायु-सम्बन्धी रोग होना है। यह सहानुभूति पसन्द नहीं करती, इसमे यह **नेट्रम म्यूर** के समान है।

इग्नेशिया—इसे जो दुःख होता है उसे दवाकर रखती है, किसी से कहती नही, एकान्त मे वैठ कर खामोशी से दुःख सहती है, आहें भरती है, और रोया करती है। आहें भरना इसका प्रधान-लक्षण है।

स्टैनम—यह भी रोया करती है, रोने से इसकी तकलीफें वढ जाती हैं। रोगिणी अत्यन्त कमजोर, विशेषकर छाती मे अत्यन्त कमजोरी महसूस होती है।

(४) **पल्सेटिला का मृदु, नक्स का उग्र, तथा कैमोमिला का क्रोधी स्वभाव होता है—तीनों की तुलना**—जैसा पहले कहा जा चुका है, पल्स और नक्स का स्वभाव एक-दूसरे के विपरीत है। पल्स को स्त्रियो की और नक्स को पुरुषो की औषधि कहा जाता है। इसका सिर्फ इतना ही अर्थ है कि इनमे से पल्स की शिकायतें अधिकतर स्त्रियो मे, और नक्स की शिकायतें अधिकतर पुरुषो मे पायी जाती हैं। पल्स के स्वभाव के विषय मे डा० हेरिंग ने लिखा है "मृदु, कोमल तथा दूसरो की बात मान लेना इसका स्वभाव है, किसी भी बात मे रोगी रोने लगता है, शोकातुर और निराश, हर बात मे आसू, रोने के कारण रोगी अपने लक्षण भी नही बता पाता।" नक्स का स्वभाव तेज़ होता है, उग्र-स्वभाव, झगडालू, चिडचिडा, प्रतिहिंसाशील, एक की दो सुनाने वाला। इसीलिये कहा जाता है कि इन दोनो औषधियो के स्वभाव एक-दूसरे से उल्टे हैं। कैमोमिला का स्वभाव भी तेज़ होता है, परन्तु उसमे क्रोध और चिडचिडाहट ज़्यादा पायी जाती है। उदाहरणार्थ, कान के दर्द मे पल्स दें या कैमोमिला दें—इसका निर्णय कैसे होगा? दोनो दवाए कान के दर्द मे दी जाती है। कैमोमिला के कान के दर्द मे बच्चा क्रोध दिखलायेगा, चिडचिडाहट दिखलायेगा, किसी बात से खुश नही होगा, माता और नर्स पर बिगडेगा, उसे लेकर घूमने रहें तभी चुप होगा। चिडचिडापन हो तो कैमोमिला से ही यह दर्द दूर होगा। परन्तु अगर बच्चा दयनीयभाव से रोता है, उसे छाती से चिपटा कर उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने की आवश्यकता होती है, अगर इस से बच्चा चुप हो जाता है, तब उसे पल्स देना होगा, जो बच्चा यू ही चिल्लाता जाय, चिडचिडाहट दिखलाये, जिस पर दया आने के स्थान पर उसे परे फेंक देने को जी करे उसे कैमोमिला देना होगा।

(५) **उचित-अनुचित के सबन्ध मे पल्स के रोगी की विचित्र विचार-सरणी** (Strange notions of good or bad)—उसके विचारो मे अजीब गोरखधधा पैदा हो जाता है। वह सोचने लगती है कि सभ्य-समाज मे कुछ बातें करना उचित है, कुछ न करना उचित है। उदाहरणार्थ, खाने के कुछ पदार्थों के विषय मे उसकी अटपटी धारणाए बन जाती हैं। वह सोचने लगती है कि दूध नही पीना चाहिये, अमुक पदार्थ नही खाना चाहिये, और यह सोचते-सोचते दूध पीना छोड देती है, कोई विशेष वस्तु खाना छोड देती है। रोगी सोचने लगता है कि उसे अपनी पत्नी मे सहवास नही करना चाहिये, रोगिणी सोचने लगती है कि पति से सहवास करना घृणित कार्य है, नवयुवक या नवयुवती मे विवाह के प्रति ही घृणा पैदा हो जाती है। रोगी बैठा-बैठा धार्मिक विषयो को सोचा करता है। यह विचार-सरणी बढते-बढते, पागलपन का रूप धारण कर लेती है, और वह चुप बैठा रहता है, अगर कोई प्रश्न पूछा जाय तो उत्तर

नही देता, देता है तो सिर्फ 'हां' या 'ना' मे उत्तर देता है। इस प्रकार की विचित्र विचार-धारा पल्स के रोगी की हो जाती है।

(६) **इक-तरफा शिकायतें** (One-sided complaints)—इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण यह है कि इसमे इक-तरफा शिकायतें पायी जाती हैं। सिर के एक तरफ दर्द होगा, अधसीसी-दर्द, सिर के एक हिस्से मे पसीना आयगा, दूसरे मे नही, चेहरे के एक हिस्से मे पसीना होगा, दूसरे मे नही, शरीर मे बुखार होगा तो एक तरफ गर्म होगा, दूसरा हिस्सा ठीक होगा। डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि एक स्त्री को जच्चा-ज्वर था, उसके एक हिस्से में ज्वर के साथ पसीना आ रहा था, दूसरा हिस्सा ज्वर से गर्म तो था, परन्तु उसमे पसीना नही आ रहा था। पल्स देने से उसका ज्वर जाता रहा। डॉ० टायलर लिखती हैं कि उनके अस्पताल मे एक व्यक्ति इस बात से परेशान था कि उसके चेहरे के एक तरफ़ बहुत पसीना आ रहा था, चेहरे का दूसरा हिस्सा खुश्क था। दूसरी सब तरह से वह ठीक था, परन्तु इस लक्षण ने उसे चिंतित कर दिया था। उससे जब पूछा गया कि वह क्या कोई औषधि ले रहा था, तो उसने कहा कि वह पल्स बहुत देर से ले रहा था। अस्ल मे, अनजान मे वह पल्स की 'परीक्षा-सिद्धि' (Proving) कर रहा था। औषधि बन्द कर दी गई, और इक-तरफा पसीना आना भी बन्द हो गया। पल्स मे निम्न-लक्षण पाये जाते हैं—शरीर के सिर्फ दायी या बाईं तरफ़ पसीना, एक हाथ या एक पाव गर्म, दूसरा ठंडा, चेहरे का एक तरफ ठंड से कांपना, दूसरी तरफ ठंड न लगना। ऐसे लक्षण विलक्षण हुआ करते हैं, और औषधि के निर्वाचन मे सहायक सिद्ध होते हैं।

(७) **मुह खुश्क होने पर भी प्यास न होना**—यह भी विचित्र-लक्षण है। रोगी का मुख खुश्क हो तो प्यास लगनी चाहिये, परन्तु इस औषधि मे मुह के खुश्क होने पर भी प्यास नही लगती। यह लक्षण **नक्स मौस्केटा** मे भी पाया जाता है, परन्तु उसमें मुह मे ही नहीं संपूर्ण शरीर मे खुश्की पायी जाती है। मुंह इतना खुश्क होता है कि खुश्की के कारण भोजन गले के नीचे नही उतरता। पल्स मे इतनी प्रबल खुश्की तथा सब अगो की खुश्की नही होती। **मर्क्यूरियस** मे मुंह तर रहता है परन्तु मुख के तर रहने पर भी रोगी को बेहद प्यास लगती है। एपिस मे भी प्यास न होने के लक्षण हैं, परन्तु उसमे प्यास न होने के साथ शरीर मे शोथ होती है।

(८) **गाढी, मृदु, हरी या पीली रतूबत निकलना** (Thick, bland, green or yellow discharge)—इस औषधि के स्रावो की भी अपनी विशेषता है। स्राव गाढे, मृदु, खराश न पैदा करने वाले, न लगने वाले, हरे या पीले रंग के होते हैं। आख, कान, नाक या खासी के रूप मे मुख से जो भी

पस या थूक आदि निकलते हैं वे गाढे होते हैं, हरे या पीले रग के होते हैं, और मृदु होते हैं, लगते नहीं। थूक का स्वाद कडवा होता है ।

प्रदर का स्राव लगनेवाला होता है—इन स्रावो मे प्रदर का स्राव अपवाद रूप है । और स्राव तो लगते नही, परन्तु पल्स के रोगी का प्रदर का स्राव लगने वाला (Excoriating) होता है । इसका यह अभिप्राय नहीं कि पल्स के रोगी का प्रदर का स्राव न लगने वाला (Bland) कभी नही होता । इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण तो न लगनेवाला, मृदु स्राव ही है, सिर्फ़ प्रदर मे अपवाद है । कभी-कभी अन्य लक्षणो के प्रबल रहते अगर पल्स-रोगिणी को न लगने वाला प्रदर हो, तो पल्स ही दवा है क्योकि औषधि का निर्वाचन करते हुए लक्षण-समष्टि (Totality of symptoms) पर ही ध्यान रखना उचित है, एक लक्षण पर नही ।

जुकाम जिसमें गाढ़ा, हरा या पीला स्राव नाक से निकले—रोगी को जुकाम के बार-बार आक्रमण होते हैं जिनमे छीकें आती हैं, नाक बन्द हो जाता है, नाक मे गाढी, हरी या पीली रतूबत भरी रहती है, छीको के साथ नाक से पानी भी बहता है । नाक का स्राव लगता नही, मृदु (Bland) होता है, और रोगी को जुकाम के होने पर भी बाहर, खुली हवा मे टहलने से आराम अनुभव होता है, गर्म कमरे में जाने से उसका जुकाम बढ जाता है, तबीयत परेशान हो जाती है । बाहर ठडी हवा मे घूमने से वह सास सरलता से ले सकता है, बन्द गर्म कमरे मे नाक वन्द हो जाती है । कभी-कभी इस से उल्टा भी होता है, रोगी को वन्द कमरे मे छीकें अधिक आने लगती हैं, परन्तु ऐसी हालत मे अन्य लक्षणो को ध्यान मे रखकर औषधि का निर्वाचन करना चाहिये । साधारण तौर पर पल्स के रोगी को जुकाम मे खुली हवा अच्छी लगती है, नाक की रतूवत गाढी, पीली होती है । नक्स के जुकाम मे भी खुली हवा रोगी को ठीक लगती है, परन्तु उसका जुकाम पनीला होता है, रोगी भी शीत-प्रधान होता है ।

(९) **प्रकृति—'खुली हवा की इच्छा' और 'चलने-फिरने से आराम'**—इस औषधि की प्रकृति इसके निर्वाचन मे वडी सहायक है । इसकी प्रकृति के मुख्य लक्षण दो हैं, एक है 'खुली हवा की इच्छा' (Better in the open air), तथा दूसरा है 'चलने-फिरने से आराम' (Better from slow movement) इन दोनो मे 'खुली हवा की इच्छा' ज्यादा प्रमुख है ।

खुली हवा की इच्छा परन्तु भीग जाने से रोग बढ़ना—रोगी को खुली हवा पसन्द होती है, खुली, ठडी हवा मे घूमने से उसकी तबीयत हरी रहती है । बन्द कमरे मे उसे घुटन महसूस होती है । दर्द भी बन्द कमरे मे रहने से बढ़ता है । सब प्रकार की सूजन, स्नायु-शूल, वात-रोग—इन सब मे ठंडक से

उसे आराम मिलता है, ठंडी वस्तुएं खाने से, ठंडे पेय पीने से, सूजन आदि पर ठंडी पट्टी लगाने में तबीयत ठीक रहती है। यद्यपि **पल्स** के रोगी को प्यास नहीं लगती, तो भी ठंडा पानी पीकर उसे राहत मिलती है। ठंडे भोजन को वह आसानी से पचा लेता है, गर्म भोजन से तबीयत गिर जाती है। प्यास न रहने पर भी पानी में बर्फ डालकर वह पानी पीना पसन्द करता है। **पल्स** का रोगी 'ऊष्णता'-प्रधान—Warm-blooded—होता है, इसीलिये वह ठंड पसन्द करता है। इस से उल्टा **नक्स** 'शीत'-प्रधान—Chilly—होता है।

ठंड पसन्द करने पर भी भीगने से रोग बढ़ता है—खुली हवा में सिर-दर्द, चक्कर, जुकाम, खांसी, दांत का दर्द आदि पीड़ाएं **पल्स** के रोगी की कम हो जाती हैं, परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि अगर वह भीग जाता है, तो उसके रोग के लक्षण बढ़ जाते हैं। भीग जाने से उसे पेट-दर्द का दौर पड़ सकता है, आंव आने लग सकती है, दस्त आ सकते हैं, पेशाब रुक सकता है, डिम्ब-ग्रन्थियों का दर्द हो सकता है, माहवारी रुक सकती है, वात-रोग हो सकता है, जोड़ों में दर्द हो सकता है। इसलिये यह समझ लेना चाहिये कि **पल्स** के रोगी को ठंडी हवा तो पसन्द है, परन्तु खुश्क ठंडी पसन्द है, नमीदार ठंडी हवा नहीं। इस प्रकार औषधि की प्रकृति के भेद को समझने से ही उचित औषधि का निर्वाचन हो सकता है। औषधियों को चुनने में रोगी तथा औषधि की 'प्रकृति'(Modality) को ध्यान में रखना, और दोनों का मेल हो जाय तभी औषधि का निश्चय करना—यही होम्योपैथी में सफलता की कुंजी है।

चलने-फिरने से आराम—रोगी को ठंडी हवा से ही नहीं, ठंडी हवा में धीरे-धीरे चलने-फिरने में आराम मिलता है। अगर वह न चले-फिरे, हरकत न करे, तो परेशान रहता है, तबीयत बिगड़ जाती है। उसे कुछ-न-कुछ करते रहना चाहिये, बिना कुछ किये बैठे रहना उसकी प्रकृति में नहीं है, कुछ-न-कुछ करते रहने से तबीयत बहाल रहती है। हरकत हल्की-हल्की, तेज नहीं। आराम से पड़े रहने से परेशानी, कुछ-न-कुछ करते रहना, खुली हवा में धीरे-धीरे घूमना, बन्द कमरे में रोग का बढ़ना, बन्द कमरे में तबीयत का गिरना—ये लक्षण **पल्स** की प्रकृति को सुन्दरता से सूचित करते हैं। धीरे-धीरे चलने-फिरने से रोगी को आराम होना जिन थोड़ी-सी दवाओं में पाया जाता है उनमें **पल्स** तथा **फेरम मेट** मुख्य हैं। जल्दी-जल्दी हरकत से आराम महसूस होने में मुख्य औषधियां **आर्सेनिक** तथा **ब्रोमीन** हैं। **आर्स** के रोगी-बच्चे को तो जितनी भी तेज़ गति दी जाय वह थोड़ी जान पड़ती है, **पल्स** प्रकृति का बच्चा धीरे-धीरे की हरकत से सन्तुष्ट हो जाता है। क्योंकि तेज़ हरकत से उसका शरीर गर्म हो जाता है, और गर्मी को वह पसन्द नहीं करता, यही कारण है कि मन्द-गति उसे भाती है।

(१०) गरिष्ठ-भोजन की इच्छा जो उसे रुग्ण कर देती है (पल्स तथा नक्स की पेट के लक्षणो मे तुलना)—रोगी को आइस-क्रीम, पेस्ट्री आदि हज्म नही होती, परन्तु इन्ही वस्तुओं के लिये उसमे चाह बनी रहती है। वह आइस-क्रीम या अन्य गरिष्ठ-वस्तुए खा जाता है, जो चीजे बिगाड करती हैं उन्हा के लिये ललचाया करता है, उन्हें खा लेता है, और फिर खा लेने के बाद पेट फूल जाता है। घी के पदार्थ उसे पचते नही, परन्तु उन्हे वह छोडता भी नही। ऐसी अवस्था मे गरिष्ठ-भोजन न पचने पर इस दवा से लाभ होता है। पेट की शिकायतो मे **नक्स** भी उत्तम औषधि है, प्राय अपचन मे **नक्स** देने की ही प्रथा है, परन्तु पेट के रोग मे **नक्स** और **पल्स** मे भेद है। **नक्स** घी-दूध पसन्द करता है, पचा भी लेता है, मिर्च-मसाले ज्यादा खाता है, उन्ही मे उसका पेट बिगडता है, **पल्स** का पेट घी-चर्बी-गरिष्ठ वस्तुओं को खाने से बिगडता है, और उन्ही को वह खाता भी है। **पल्स** ठडा खाना चाहता है, वही उसे पचता है, **नक्स** गर्म खाना पसन्द करता, वही उसे पचता है, ठडा खाना वह पसन्द नहीं करता।

(११) दर्द, पाखाना आदि लक्षणो की परिवर्तनशीलता और दर्द के साथ ठड महसूस होना (Changeability of symptoms and chilliness with pain)—दर्द एक जोड से दूसरे जोड मे चला जाता है, दर्द का लक्षण बदलता रहता है। रोगी को कभी कब्ज, कभी दस्त, पाखाने का रग कभी कुछ, कभी कुछ, ठड लगती है तो कभी एक-सी नही होती। लक्षण इतने बदलते रहते हैं कि उनका आगा-पीछा समझ नही आता। रोगिणी आज जिन लक्षणो की चर्चा करती है अगले दिन आकर उन लक्षणो की चर्चा न कर दूसरे ही किन्ही लक्षणो की शिकायत करने लगती है। रक्त-स्राव कभी होता है, कभी बन्द हो जाता है, फिर शुरु हो जाता है, उसका रग भी लगातार बदलता रहता है। दस्तो का रग कभी हरा, कभी पीला, कभी सफेद, कभी गाढे, कभी पनीले, कभी झागदार। लक्षणो का बदलना दर्द, पाखाना, ठड और रक्त-स्राव तक ही सीमित नही रहता, यह परिवर्तनशीलता उसके स्वभाव मे भी चित्रित दिखलाई देती है—रोगिन कभी चिढती है, कभी रोती है, कभी बडा मीठा बन जाती है। लक्षणो की परिवर्तनशीलता इसका चरित्रगत-लक्षण है।

दर्द के साथ ठंड महसूस होना (Chilliness with pain)—दर्द के संबध मे इस औषधि का विशेष-लक्षण यह है कि दर्द के साथ भुरभुरा-सा जाडा लगता है, और जिस परिमाण मे दर्द बढता है उसी परिमाण मे जाडा भी जोर पकडता है। रोगी की प्रकृति यद्यपि ऊष्णता-प्रधान है, तो भी दर्द के साथ जाडा होना इसका अद्भुत तथा विशिष्ट लक्षण है। **पल्सेटिला और ठंडक**—यह विचित्र-सी बात लगती है, क्योकि **पल्स** को हम ऊष्ण-प्रकृति (Warm-blooded) समझते हैं, परन्तु कभी-कभी **पल्स** मे गर्म कमरे मे ठड महसूस क

(Chilliness in a warm room) का लक्षण भी पाया जाता है। इसके लक्षणों का उल्लेख करते हुए 'Chilly yet worse from heat'—'शीत-प्रकृति का परन्तु गर्मी न सह सकना'—यह भी पाया जाता है। बोरिक की 'मैटीरिया मेडिका' मे पल्स के लक्षणो मे लिखा है 'Thirstless, peevish and Chilly'. बोगर की 'सिनोप्टिक की' मे पल्स के लिये लिखा है 'Chilly yet averse to heat' —बोगर की 'सिनोप्टिक की' की रिपर्टरी मे पल्स को मोटे अक्षरों



डा० सी० एम० बोगर
(१८८८–१९३५)

मे— Chilly— –लिखा है। इस सबसे पल्स का मुख्य-लक्षण इतना ही है—रोगी शीत-प्रकृति का हो या ऊष्ण-प्रकृति का हो, गर्मी को वह बर्दाश्त नही कर सकता, दर्द के साथ उसे ठंड की झुरझुराहट प्रतीत होती है। दर्द एकदम आता है, धीरे-धीरे जाता है।

पल्स और शीत-प्रकृति—पल्स और साइलीशिया का संबंध—जैसा हमने अभी कहा, पल्स अपने स्वभाव से ऊष्णता-प्रधान (Warm-blooded) है, रोगी खुली हवा चाहता है, ठंड पसन्द करता है। परन्तु इतने से यह नही समझ लेना चाहिये कि वह 'शीत-प्रधान' (Cold-blooded) नही है। पल्स के रोग के दो रूप हैं 'तरुण-रूप' (Acute stage) तथा 'जीर्ण-रूप' (Chronic stage)। इन दोनो मे से 'तरुण-रूप' मे पल्स 'शीत-प्रधान' (Chilly) होता है, 'जीर्ण-रूप' मे 'ऊष्णता-प्रधान' (Hot) होता है। डॉ० कैन्ट साइलीशिया पर लिखते हुए कहते हैं: "Puls in its chronic manifestations is overburdened with

heat, but in an acute trouble is chilly. Silica and Puls are reversed as to their acute and chronic states Puls in the beginning is chilly and sweating"—पल्स का रोगी प्रारंभ मे शीत-प्रधान ही होता है, परन्तु ज्यो-ज्यो रोग बढता जाता है, वह ऊष्णता-प्रधान होता जाता है। इसीलिये पल्स के लक्षणो के होने पर—उसकी ऊष्ण-प्रकृति को छोड कर—अगर रोग के प्रारंभ मे पल्स से लाभ न हो, तो साइलीशिया (जो शीत-प्रधान है) देना चाहिये, उससे लाभ होगा। इस दृष्टि से स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि सर्दी-गर्मी की दृष्टि से पल्स और साइलीशिया मे भेद है, तो भी इन दोनो का एक-दूसरे से संबंध है, और शुरु-शुरु मे जब पल्स काम नही करता, तब पल्स के काम को साइलीशिया कर देता है। पल्स और साइलीशिया के इस संबंध पर हमने कैलि सल्फ पर लिखते हुए प्रकाश डाला है।

[द्वितीय-भाग—मुख्य-रोग]

PARTICULARS

मुख्य-रोग

(१) पाव भीग जाने से ऋतु-धर्म रुक जाना (इस मे पल्स तथा कैलकेरिया फॉस की तुलना)

(२) विलम्ब से, और थोडे ही समय तक मासिक-धर्म होना

(३) प्रसव की पीडा मे अनियमितता (Irregularity)

(४) मासिक-धर्म जारी होने के समय से किसी रोग का प्रारंभ होना

(५) मासिक से पहले या बीच मे नक्सीर फूटना

(६) चेहरे पर झूठी लालिमा का होना जो मासिक-स्राव के हो जाने से दूर हो जाती है

(७) कान-दर्द मे बच्चो के दीनता-पूर्वक चिल्लाने पर उत्कृष्ट औषधि है

(८) जुकाम तथा खासी में गाढ़ा, पीला या हरा स्राव निकलना, प्रातःकाल तर और शाम को सूखा स्राव, नाक बन्द होना

(९) आख की गुहौरी (स्टाई)

(१०) गोनोरिया मे गाढ़ा, पीला या हरा मवाद निकलना

(११) खसरे की उत्कृष्ट औषधि है

(१२) रोग के एक जगह से हटने पर दूसरी जगह चले जाना (Metastasis)

(१) पाव भीग जाने से ऋतु-धर्म रुक जाना (पल्स तथा कैलकेरिया फॉस की तुलना)—जिन कुमारियो या स्त्रियो को ऋतु-धर्म हो रहा हो, उनका पाव भीगने से, या ऋतु-धर्म मे ठडे पानी से स्नान करने से, या गीली जगह देर तक बैठने से ऋतु बन्द हो जाता है। ऋतु-धर्म के होने के स्थान मे उसके रुक जाने से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। लडकी सूकती जाती है, पीली पड जाती है, दोनों फेफडो के ऊपर के भाग मे दर्द होने लगता है, समय पर चिकित्सा न

जाय, तो क्षय-रोग होने की संभावना रहती है। ऐसी अवस्था में पल्स से ऋतु-धर्म होने लगता है। डॉ० केन्ट इस संदर्भ में लिखते हैं कि अगर लड़की का ऋतु-काल में स्नान से रज स्राव बन्द हो जाय, उसकी माँ आकर कहे कि जब से यह ऋतु-काल में नहायी है, तब से इसका रोग प्रारंभ हुआ है, तब अगर वह लड़की हृष्ट-पुष्ट दीखती है, मोटी-ताजी है, तब तो पल्स देना चाहिये, परन्तु अगर वह लड़की पतली-दुबली है, और उसने ठंडे पानी में पाँव रख दिये हैं, या ठंडे पानी से नहा ली है, और तब से उसे दर्द होने लगा है या कोई रोग तब से चला आ रहा है, तो कैलकेरिया फॉस से लाभ होगा।

(२) **विलम्ब से, और थोड़े ही समय तक मासिक-धर्म होना**—यह औषधि ऋतु-संबंधी रोगों में स्त्रियों को प्रिय है। ऋतु विलम्ब से, और थोड़े ही समय तक रहे, रह-रहकर थोड़ा-थोड़ा होना रहे, और फिर बन्द हो जाय, कभी लाल, कभी पीला, कभी रंग रहित, कभी जमा हुआ, कभी पतला, लक्षण बदल-बदल कर हों, मासिक से पहले पेट में दर्द की अनुभूति हो, दर्द नोचने जैसा, रोगिणी को बेचैन करे, और दर्द के साथ सर्दी की ठिठुरन हो, तब पल्स लाभ करता है। जैसा पहले कहा जा चुका है, दर्द के साथ ठिठुरन, शीत लगना इसका विशेष-लक्षण (Peculiar symptom) है। रोगिणी ठंडी हवा पसन्द करती है, बन्द कमरे में घुटन अनुभव करती है।

(३) **प्रसव की पीड़ा में अनियमितता**—प्रसव के समय का दर्द भी अगर अनियमित हो, कभी कम, कभी ज्यादा, कभी एकदम बन्द हो जाय, शुरु से ही दर्द में जोर न हो, रोगिणी खुली हवा चाहे, बन्द कमरे के दरवाजे-खिड़कियां खुलवाना चाहे, हर दर्द के आवेग के साथ ठंड की झुरझुरी अनुभव हो, तो पल्स देने से दर्द में नियमितता आ जायेगी, और प्रसव सरलता से हो जायेगा।

(४) **मासिक-धर्म जारी होने के समय से किसी रोग का प्रारंभ होना**—अगर रोगिणी कहे कि जब से उसके मासिक-धर्म होने का समय आया, तब से मासिक की गड़बड़ी के कारण वह अस्वस्थ चली आ रही है, चेहरा पीला पड़ गया है, शरीर में रक्त नहीं रहा, क्षय-रोग के लक्षण प्रकट होने लगे हैं, खांसी-जुकाम रहता है, इनसे पीछा नहीं छूटता, तब पल्स से लाभ होता है और मासिक ठीक हो जाने से सब उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

(५) **मासिक से पहले या बीच में नकसीर फूटना**—जब किसी स्त्री को मासिक-धर्म से पहले या बीच में नक्सीर फूटे, मासिक के रुक जाने से, देर में होने से, थोड़ा होने से नक्सीर फूटे, या मासिक इतना हल्के रंग का आये मानो प्रदर का-सा स्राव है, और अगर रुधिर-स्राव हो, तो भी थोड़ा-बहुत काला धब्बा या रुधिर का काला-सा टुकड़ा निकले, तो पल्स लाभ करता है।

(६) चेहरे पर झूठी लालिमा जो मासिक-स्राव हो जाने से हट जाय—कई स्त्रियों के चेहरे पर झूठी लालिमा आ जाती है, चेहरा फूल जाता है, आख, पेट, पाव सब मे सूजन-सी आ जाती है। इस फूल जाने से रोगिणी जूता भी नही पहन सकती। मासिक-स्राव होते ही यह झूठी लालिमा, अगो की सूजन, उनका फूलना जाता रहता है। **पल्स** इस दशा मे लाभप्रद है।

(७) कान के दर्द मे बच्चो के दीनतापूर्वक चिल्लाने पर उत्कृष्ट औषधि है—यह बच्चो के कान के दर्द मे अत्युत्तम है। कई लोग तो बच्चो के कान के दर्द मे इसे अक्सीर मानते हैं। **पल्स** के रोगी का कान का बहना साधारण-सी बात है। गाढा, पीला मवाद निकलता है जो मृदु (Bland) होता है, जहा लगता है वहाँ जलन नही पैदा करता। कान बन्द-सा हो जाता है, कान का पर्दा फट जाने पर यह अत्युत्तम है। खसरे के परिणामस्वरूप अगर कान से सुनाई कम देने लगे, तो इस से लाभ होता है। बच्चो के कान के दर्द मे **कैमोमिला** भी दी जाती है, परन्तु इन दोनो के मानसिक-लक्षणो मे भेद है। **कैमोमिला** के बच्चे मे क्रोध, खिजलाहट है, उसे पुचकारे तो भी चीखता है, उसे चपतियाने को जी करता है, **पल्स**-बच्चे के रुदन को सुनकर दया आती है, वह दीनतापूर्वक चिल्लाता है और वह पुचकारने मे चुप हो जाता है। कान के दर्द मे भी इन मानसिक-लक्षणो के आधार पर दवा दी जानी चाहिये।

(८) जुकाम तथा खासी मे गाढ़ा, पीला या हरा स्राव, प्रात काल तर और शाम को सूखा, बन्द नाक—जुकाम पक जाने पर जब गाढा, पीला या हरा स्राव नाक से आता हो, तब **पल्स** तथा **मर्क सौल** उत्तम औषधिया है, परन्तु इनमे भेद यह है कि **पल्स** मे प्यास नही रहती, **मर्क** मे प्यास रहती है। **पल्स** मे जुकाम और खासी दोनो प्रात काल तर रहती हैं, शाम को नाक बन्द हो जाती है और खासी खुश्क आती है। अगर रोगी का स्वभाव मृदु हो, तो पुराने जुकाम और खासी मे निम्न-लक्षणो के रहते **पल्स** चमत्कारी प्रभाव करता है। लक्षण हैं—प्रात काल खूब गाढी, पीली या हरी रतूबत निकले, शाम को सूख जाय, रोगी को खुली हवा पसन्द हो, खुली हवा मे चलने-फिरने को जी करे और नाक को किसी प्रकार की गन्ध अनुभव न हो।

(९) आँख की गुहौरी (स्टाई)—यह औषधि आख की ऊपर की पलको पर गुहौरी के लिये उत्तम है। इसकी विशेषता यह है कि गुहौरी पक कर अच्छी होती रहती है। गुहौरी अच्छी होकर एक सख्त ढेला-सा पड जाय और बार-बार हो, तो **स्टैफिसैग्रिया** उत्तम है।

(१०) गोनोरिया मे गाढ़ा, पीला या हरा मवाद—गोनोरिया मे जब गाढा, पीला या हरा मवाद आता है, अगर रोगी गर्मी से परेशान होता और बाहर खुली हवा मे चलना-फिरना पसन्द करता है, तब **पल्स** की इन दो

मुख्य-प्रकृतियों (Modalities) के होने पर पल्स लाभप्रद सिद्ध होता है। अगर ठंड लगने से गोनोरिया के रोगी का दबा हुआ रोग उभर आये, या स्त्री-प्रसंग से उक्त प्रकार का स्राव जारी हो जाय, तब भी यह उत्कृष्ट औषधि है।

(११) **खसरे की उत्कृष्ट औषधि है**—खसरे (Measles) की यह उत्कृष्ट औषधि है। इसे 'प्रतिरोधक' (Preventive) के तौर पर भी दिया जा सकता है। खसरे के दिनों में ३० शक्ति की मात्रा देते रहने से लाभ होता है।

(१२) **रोग के एक जगह से हटने पर उसके दूसरी जगह चले जाना (Metastasis), पल्स तथा एब्रोटेनम की तुलना**—उक्त दोनों दवाएँ एक रोग के हटने पर उसके स्थान में रोग के दूसरी जगह चले जाने में दी जाती हैं। अगर स्त्री को मम्प्स (Mumps)—गलपेड़े—हो जायें, और गलपेड़ों की हालत में उसे ठंड लग जाय, तो गले के स्थान में स्तन सूज जाते हैं, या सूजन किसी दूसरी जगह चली जाती है; पुरुष में ठंड से गलपेड़े की सूजन अंडकोश में चली जाय—इस हालत में पल्स दिया जाता है। पल्स में स्नायु-शूल या वात-रोग पाया जाता है, दर्द इधर-उधर दौड़ता है, एक जोड़ से दूसरे जोड़ में जाता है, सूजन एक ग्रन्थि से दूसरी ग्रन्थि में चली जाती है, परन्तु इस प्रकार इसके एक जगह से हटने और दूसरी जगह चले जाने में एक विशेषता है। शिकायत अपनी जगह तो बदल देती है, परन्तु अपनी प्रकृति नहीं बदलती। उदाहरणार्थ, दर्द एक जोड़ से हटता है तो दूसरे जोड़ में चला जाता है, रहता वह जोड़ों का दर्द ही है, एक ग्रन्थि का शोथ हटता है, दूसरी ग्रन्थि में चला जाता है, परन्तु रहता वह ग्रन्थि-शोथ ही है। जगह बदलता है, प्रकृति नहीं बदलता। **एब्रोटेनम** में भी रोग जगह बदलता है, परन्तु इसमें रोग जगह ही नहीं बदलता अपनी प्रकृति भी बदल देता है। उदाहरणार्थ, रोगी को आज दस्त आ रहे हैं, दस्त बन्द होंगे तो गठिये का रोग हो जायेगा, या रक्त-स्राव होने लगेगा। बवासीर के मस्से काट दिये गये, तो एक नई बीमारी खड़ी हो गई जिसका पहली से कोई सबब नहीं। बच्चे के दस्त रोक दिये गये, तो मस्तिष्क, गुर्दे, या जिगर की कोई बीमारी खड़ी हो गई। ऐलोपैथ इसे नई बीमारी का नाम देते हैं, परन्तु होम्योपैथी की दृष्टि से यह नया कहा जाने वाला रोग वही पुराने रोग का, जो दबा दिया गया, नया रूप है, और इसकी औषधि **एब्रोटेनम** है। इस में रोगी नीचे से कृश होने लगता है, और यह कृशता नीचे से ऊपर को आती है।

(मासिक-धर्म-संबंधी रोगों की मुख्य-मुख्य औषधियां)

पल्सेटिला मुख्य तौर पर स्त्रियों के रोगों की औषधि है। इसका रजोधर्म पर विशेष प्रभाव है। हम यहां रजोधर्म के संबंध में कुछ मुख्य-मुख्य औषधियां दे रहे हैं। कुछ का वर्णन हम **नक्स** में कर आये हैं—

पल्सेटिला—माहवारी अनियमित होती है, विलम्ब से होती है, खून जब आता है तब थोडा-थोड़ा आता है। दिन को जब स्त्री चलती-फिरती रहती है तब रक्त-स्राव ज्यादा होता है, रात को कम होता है। रक्त-स्राव का रग हल्का होता है, कभी-कभी इतना हल्का कि प्रदर-जैसा रग होता है।

कॉस्टिकम—माहवारी सिर्फ दिन को होती है। जब रोगिणी लेट जाती है तब स्राव बन्द हो जाता है। रात को रक्त-स्राव नही होता। रक्त-स्राव रुक-रुक कर होता है। जारी होता है, फिर बन्द हो जाता है, फिर जारी होने लगता है।

कॉफिया—इस मे भी माहवारी सिर्फ दिन को होती है, लेकिन दिन को भी माहवारी दोपहर बाद होती है ।

हैमेमेलिस—इसमे माहवारी बहुत अधिक परिमाण में होती है, परन्तु होती सिर्फ दिन को है, रात को बिल्कुल बन्द हो जाती है । रक्त स्राव जब होता है, तब लगातार एक-सार होता जाता है, **कॉस्टिकम** की तरह रुक-रुक कर नहीं होता। पेड़ू मे सख्त दर्द होता है, कमर मे भी दर्द होता है, दर्द पेट तक जाता है।

बोविस्टा—इसमे रक्त-स्राव रात को होता है जब रोगिणी लेट जाती है। उठते ही बन्द हो जाता है। माहवारी हर दो हफ्ते बाद होती है, और उससे पहले दस्त आने लगते हैं। पेडू में दर्द होता है।

मैग्नेशिया कार्ब—इसमे भी **बोविस्टा** की तरह रक्त-स्राव सिर्फ रात को होता है, उठते ही बन्द हो जाता है। रक्त-स्राव जारी होने से पहले जुकाम हो जाता है, नाक बन्द रहने लगती है, और प्रसव जैसी पीडा होती है।

सीपिया—इसमे माहवारी की हर प्रकार की अनियमितता पायी जाती है—जल्दी हो, देर में हो, कम हो, अधिक हो, दर्द हो, न हो, परन्तु इन सब मे एक मुख्य-लक्षण यह पाया जाता है कि रोगिणी यह अनुभव करती है कि जरायु आदि सब आन्तरिक-अग योनि-द्वार से बाहर खिसके आ रहे हैं और वह इस सकट को रोकने के लिये एक जाघ को दूसरी जाघ से दबा कर बैठती है।

(अपने-आप पेशाब निकल जाने पर मुख्य-मुख्य औषधिया)

पल्सेटिला—अगर रोगिणी पीठ पर लेटती है तो पेशाब जाने को रोक नही सकती, अगर करवट से सोये तो रातभर सोती रहे पेशाब नही जायेगी, परन्तु सोते हुए भी ज्यों ही वह पीठ के बल आयेगी तो उसे झट पेशाब की हाजत होगी और सोते से भी वह जग जायेगी। अगर वह सोचेगी कि पेशाब जाने की जल्दी क्या है, तो उसका बिस्तर मे ही पेशाब निकल जायेगा। खासने से, छीकने से, किसी मानसिक-आघात से, आश्चर्यमय घटना से, आशातीत प्रसन्नता से, हसने से अनायास पेशाब निकल जाना इसका लक्षण है। रोगिणी

को हर समय निरंतर अपना ध्यान पेशाव रोकने पर केन्द्रित करना पड़ता है, अन्यथा पेशाब निकल जाता है। ज्यो ही वह सोती है कि पेशाव वह पड़ता है क्योंकि उस समय उसका पेशाव को रोकने का ध्यान हट जाता है। छोटे बच्चे जिनका मृदु स्वभाव होता है, मोटे-ताज़े, ऊष्ण-प्रकृति के जो सोते हुए कपड़े को लात मार कर परे फेंक देते हैं, उनका अनायास पेशाव करना पल्स से ठीक हो जाता है।

सीपिया—पतले-दुवले, मरीज़ के-से, जो सोते ही पहली नींद में अनायास पेशाव कर देते हैं, उनके लिये उपयुक्त है।

कॉस्टिकम—यह तथा **सीपिया** दोनों पहली नींद में पेशाव करने पर दी जाती है।

रस टॉक्स—जवतक रोगी चलता-फिरता रहता है, हरकत करता है, अपने काम में लगा रहता है, तवतक पेशाव रुका रहता है, परन्तु ज्यो ही वह बैठ जाता है, उसे पेशाव रोकने के लिये यत्न करना पड़ता है—इतनी जोर से पेशाव आता है। **रस टॉक्स** का लक्षण ही है—चलने-फिरने से रोग में कमी, वही लक्षण इस समय प्रकट होता है।

सल्फर—इस औषधि से भी सोने में पेशाव निकल जाने का रोग ठीक हो जाता है।

(१३) **पल्सेटिला का सजीव तथा मूर्त्त-चित्रण**—भूख नहीं, प्यास नहीं, रोती है, इतना रोती है कि अपनी वात भी नहीं कह सकती, सहानुभूति की भूखी, शाम को उसके लक्षण उभर आते हैं, आलसी, धीरे-धीरे काम करती है, सोच-विचार भी धीरे-धीरे, किसी निर्णय पर नहीं पहुचती, लज्जाशील, नम्र, मृदु-स्वभाव, शरीर से देखने में हृष्ट-पुष्ट, स्त्री-रोगों की शिकार, बन्द गर्म कमरे में परेशान, खुली हवा में चलने-फिरने से तबीयत हरी हो जाती है, दर्द में ठंड की झुरझुरी या सिहरन महसूस होती है, गरिष्ठ भोजन, आइस क्रीम आदि की इच्छा रहती है, परन्तु इनसे हाज़मा विगड जाता है, तबीयत गिर जाती है—यह है सजीव तथा मूर्त्त-चित्रण **पल्सेटिला** का।

(१४) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०,२०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

पाइरोजेन (PYROGEN)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) विषैले-ज्वर (Septic fevers) की औषधि
(२) शरीर को 'पीड़ा' (Soreness) के कारण बिस्तर का कड़ा अनुभव करना (जैसे, टाइफॉयड-ज्वर मे)
(३) हड्डियो मे दर्द (Pain in bones)
(४) बेचैनी जो गर्मी और हरकत से कम हो
(५) प्रसूत-ज्वर
(६) भ्रूण या नारबेल के गर्भाशय मे सड़ जाने या 'मैला-पानी' न निकलने से होने वाला ज्वर
(७) विषैली-गैस को सूघने से ज्वर (Sewer-gas poisoning)
(८) ऑपरेशन से होनेवाला विषैला-ज्वर (Surgical infection)
(९) असहनीय दुर्गंध
(१०) प्रसूत-ज्वर के बाद के उपद्रव

(१) विषैले-ज्वर (Septic fevers) की औषधि—यह औषधि सोरिनम की तरह एक 'नोसोड' (Nosode) है। इसका प्रारभ डॉ० ड्रिसडेल ने किया था। उनके बाद डॉ० स्वान ने, जैसे अन्य नोसोड्स की उच्च-शक्तियो का निर्माण किया, वैसे इसका भी सडी हुई पस से शक्तिकरण किया। यह ज्वरो के लिये महान् औषधि है। ये ज्वर एकोनाइट की तरह के तरुण-ज्वर (Acute fevers) नहीं, परन्तु जिन ज्वरो मे सडाद आती है, बेहद बदबू—ऐसे ज्वरो मे, टॉइफायड, प्रसूत-ज्वर, भ्रूण के गर्भाशय मे मर जाने पर अन्दर सडते रहने पर आनेवाला ज्वर, नार-बेल (Placenta) के न निकलने परन्तु अन्दर सडने पर होनेवाला ज्वर, विषैली-गैस सूघने से आनेवाला ज्वर, ऑपरेशन से डाक्टर की अगुली आदि कट जाने से विष चढ जाने पर ज्वर—इस प्रकार के सब विषैले-ज्वरो मे यह औषधि उपयोगी है।

(२) शरीर की 'पीड़ा' (Soreness) के कारण बिस्तर का कड़ा अनुभव करना (जैसे, टाइफॉयड-ज्वर मे)—टाइफॉयड एक विषैला-ज्वर है। इसमे अगर ठीक समय पर यह औषधि दे दी जाय, तब या तो रोग होता नही, या उसकी मियाद घट जाती है। रोगी को बिस्तर कडा अनुभव होता है, रोगी बिस्तर पर पड़ा ऐसा अनुभव करता है मानो चट्टान पर पडा हो, तकिया बडा कडा प्रतीत होता है। सारा शरीर छिटा-पिटा महसूस होता है। शरीर की इस 'पीड़ा' (Soreness) मे इसके लक्षण आर्निका तथा बैप्टीशिया मे मिलते हैं।

(३) हड्डियों में दर्द—रोगी की सिर्फ शरीर की मास-पेशिया ही दर्द नही करतीं, उसकी हड्डियो में भी दर्द होता है। यह दर्द यूपेटोरियम के हड्डियो के दर्द जैसा होता है।

(४) **बेचैनी जो गर्मी और हरकत से कम होती हो**—ज्वर के लक्षणों में शरीर की पीड़ा तथा हड्डियों में दर्द के अतिरिक्त इसका तीसरा लक्षण यह है कि रोगी बेचैन रहता है, और यह बेचैनी 'गर्मी' और 'हरकत' से कम होती है। इन दो लक्षणों में **रस टॉक्स** तथा **पाइरोजेन** एक-समान हैं, परन्तु इनमें भेद यह है कि **रस टॉक्स** जब पहली हरकत करता है तब दर्द बढ़ता है, जब लगातार हरकत जारी रहती है तब दर्द कम हो जाता है, **पाइरोजेन** जब पहली हरकत करता है, तब दर्द घटता है, परन्तु थोड़ी देर बाद फिर दर्द शुरु हो जाता है, वह फिर हरकत करता है जिससे दर्द घटता है, परन्तु कुछ देर बाद फिर दर्द शुरु हो जाता है। **पाइरोजेन** के बुखार का रोगी थोड़ी-थोड़ी देर के बाद हरकत करता रहता है। **रस टॉक्स** में पहली हरकत में दर्द बढ़ता है, **पाइरोजेन** में हर पहली हरकत में दर्द घटता है।

(५) **प्रसूत-ज्वर (Puerperal fever)**—प्रसूत-ज्वर भी विषैला-ज्वर है, और जैसे हर विषैले-ज्वर में **पाइरोजेन** लाभ करता है, वैसे इस में भी लाभ करता है। विषैले-ज्वर में झुरझुरी चढ़ा करती है। प्रसूत-ज्वर में दोनों कंधों के फलकों के बीच से जाड़ा चढ़ता है, शरीर में दर्द होता है, हड्डियों में भी दर्द होता है, रोगी को बिस्तर कड़ा अनुभव होता है, बेचैनी होती है, गर्मी और हरकत से आराम मिलता है। बुखार बहुत ऊंचा चला जा सकता है।

(६) **भ्रूण या नार-बेल के गर्भाशय में सड़ जाने या 'मैला-पानी' न निकलने से ज्वर**—अगर गर्भाशय में भ्रूण मर जाय या गर्भपात के बाद 'नार-बेल' (Placenta) न निकले, अन्दर ही सड़ जाय, तो विषैला-ज्वर (Septic fever) हो जाता है। कभी नार-बेल आधी निकलती है, आधी भीतर रह जाती है और भीतर सड़ती है, ज्वर आ जाता है। कभी-कभी प्रसव के बाद जरायु से जो 'मैला-पानी' (Lochia) निकलना चाहिये वह नहीं निकलता और ज्वर हो जाता है। इन सब दशाओं में **पाइरोजेन** अमोघ-औषधि है। गर्भपात या प्रसव के बाद यदि नार-बेल (Placenta) पूरा बाहर न निकले, और उसका कुछ अंश भीतर रह जाय, तो **कैन्थरिस** से वह निकल जाता है। इसके अलावा **सिमिसिफ्यूगा** (जिसे एक्टिया रेसिमोसा भी कहते हैं) इस कार्य के लिये दिया जाता है। इन दोनों से फल न मिले, तो **पाइरोजेन** का प्रयोग करना चाहिये।

(७) **विषैली-गैस को सूंघने से ज्वर (Sewer-gas poisoning)**—अगर विषैली गैस को सूंघने से ज्वर चढ़ जाय, और विषैले-ज्वर के उक्त लक्षण प्रकट होने लगें, तो इसे स्मरण करना चाहिये।

(८) **ऑपरेशन से विषैला-ज्वर (Surgical infection)**—कभी-कभी ऑपरेशन करते हुए डाक्टर को ही नश्तर लग जाता है और उसे विषैला-ज्वर हो जाता है। उसमें भी यह लाभ करता है।

(९) **असहनीय दुर्गन्ध**—रोगी के प्रत्येक स्राव से असहनीय दुर्गन्ध आती है। ऋतु-स्राव, मैला-पानी, पसीना, सास, मुह—इन सब से अत्यन्त बदबू का आना इस औषधि में पाया जाता है।

(१०) **प्रसूत-ज्वर के बाद के उपद्रव**—अगर किसी स्त्री को प्रसूत-ज्वर के बाद से ही तरह-तरह की शिकायतें चली आ रही हो, तो इस औषधि के समान दूसरी औषधि नही है।

(११) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है, मात्रा को दोहराना ठीक नही है)

रैननक्युलस (RANUNCULUS)

(१) **हरपीज ज़ोस्टर, शिंगल्स** (Herpes zoster or Shingles) **की औषधि**—त्वचा की स्नायुओ के मार्ग पर दर्द करने वाले छालो का समूह-का-समूह उभर आता है, इसे हरपीज ज़ोस्टर या शिंगल्स कहते हैं। इस रोग में, डॉ० टायलर के अनुसार, यह उच्च-शक्ति मे दी जाय, तो अपूर्व लाभ करती है। अगर इन छालो मे जलन हो जिसमे गर्म सेक से लाभ हो, तो **आर्सेनिक** उपयुक्त है। कई डॉक्टरो का कहना है कि उन्होंने **मेज़ेरियम** से विशेष लाभ देखा है। हरपीज ज़ोस्टर मे डॉ० बर्नेट के अनुसार **वेरियोलीनम** दर्द, और उसके साथ के रोग के अन्य सभी लक्षणो को साफ कर देती है। हरपीज ज़ोस्टर मे **रस टॉक्स** का भी विशेष महत्व है।

(२) **पसलियों की हड्डियो के बीच दर्द** (Intercostal pain)—पसलियो के बीच के दर्द मे इससे लाभ होता है। प्लुरिसी, न्यूमोनिया आदि मे ठड लगने से छाती में और पसलियो की हड्डियो के बीच दर्द होता है। पसलियो के बीच इस प्रकार के दर्द के लिये यह औषधि स्पेसिफिक समझी जाती है। **ब्रायोनिया** मे भी प्लुरिसी, न्यूमोनिया आदि मे छाती मे दर्द होता है, छाती मे टीस पडती है, परन्तु **ब्रायोनिया** के रोगी को दर्दवाले भाग की तरफ़ लेटने से, उसे दवाने से आराम मिलता है, इस प्रकार उस भाग के दब जाने से उधर हरकत नही होती, और हरकत न होने से **ब्रायोनिया** का रोगी अच्छा अनुभव करता है, **रैननक्युलस** दर्दवाले भाग को छूना या दवाना वर्दाश्त नही कर सकता। इसके अतिरिक्त **ब्रायोनिया** का रोगी खुश्क, ठडी हवा पसन्द नही करता, उसमे उसका रोग बढ जाता है, उसका रोग **एकोनाइट** की तरह खुश्क, ठडी हवा से बढ जाता है, **रैननक्युलस** का रोग नम मौसम मे बढता है। छाती के दर्द मे **आर्निका** भी बहुत उपयोगी है, छाती के दर्द मे यह प्रसिद्ध औषधि है, इसमे भी छाती मे टीस पडती है, ऐसी टीस कि रोगी गहरा सास भी नही ले सकता, शरीर के अग कुचले-से प्रतीत होते हैं

जैसे उन्हें कूटा-पीटा गया हो, आर्निका के इन लक्षणों पर सर्दी, गर्मी, खुश्क, नम आदि मौसमो का प्रभाव नही होता, सिर्फ शरीर कुचला गया महसूस होता है और बिस्तर अत्यन्त कठोर लगता है, बिस्तर का कडापन सहा नही जाता। रैननक्युलस छाती के वात-रोग (Rheumatism) मे भी उत्तम है।

(३) **शराब पीने के बुरे फल को दूर करता है**—डॉ० एलन का कहना है कि शराव पीने के बुरे फल को यह दूर करता है। उदाहरणार्थ, शराव पीने से हिचकी वध जाय, अग फड़कने लगें या और कोई तकलीफ उठ खडी हो, तो इससे लाभ होगा।

(४) **ठंड और नमी से रोग का बढ़ना**—रोगी ठड तथा बरसात की नमी को बर्दाश्त नही कर सकता। इसकी प्रकृति डलकेमारा जैसी है। ठडी, खुली हवा, नम मौसम से उसे सिर-दर्द हो जाता है, वात-रोग (Rheumatism) हो जाता है, छाती का दर्द, मेरु-दड या डिम्ब-ग्रन्थियो मे दर्द होने लगता है। ठड लगने से छाती की मास-पेशिया दुखने लगती हैं। ठडी हवा का झोका शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे दर्द पैदा कर देता है। बरसात, तूफान और झभावात से तो उसे महान् कष्ट होता है। ऐसे मौसम मे उसे कान, छाती, जिगर, पेट, कन्धे, जोड, मेरु-दड, कमर, कमर मे कन्धो के बीच काटता-चुभता दर्द होने लगता है।

(५) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

रियूम (RHEUM)

(१) **बच्चों में कच्चे-फल खाने से या दांत निकलते समय दस्त आना, खट्टी बू आना**—कच्चे-फल खाने से बच्चो को जो दस्त आने लगते हैं, उनमे यह प्रमुख औषधि है। कच्चे-फल खाने से पेट बिगड जाता है, दस्त आने लगते हैं। इस औषधि का मुख्य-लक्षण खट्टी बू है। इस लक्षण के होने पर बच्चो के दस्तो मे कोई इस औषधि को भूल नही सकता। दात निकलते समय के दस्तो मे अगर दस्तो से खट्टी बू आये, तब भी यही औषधि दी जानी चाहिये। विशेष रूप से यह बालको की औषधि है। हरकत से दस्त आते है, आराम से पड़े रहने पर रोगी ठीक रहता है।

(२) **खट्टी बू तथा खट्टापन**—इस औषधि का मुख्य-लक्षण खट्टापन है, ऐसा खट्टापन, खट्टी बू जो बालक को चारो तरफ से घेरे रहती है। उसके शरीर के सब स्रावों से खट्टेपन की बू आती है। टट्टी मे खट्टी बू, पसीने मे खट्टी बू, मुह से खट्टी बू, उसके मुह का स्वाद भी खट्टा, यहा तक कि उसका स्वभाव भी खटाई जैसा तीखा। बच्चा इस खट्टेपन से ऐसा घिरा रहता है

कि उससे कोई बचाव नहीं। बच्चे को कितना ही निल्हाया-धुलाया जाय, खट्टी बू उसका पीछा नही छोडती। उसके तकिये और बिस्तर तक से खट्टी बू उठती है।

(३) **शरीर के हर भाग मे पसीना आना**—खट्टी बू के अतिरिक्त इस औषधि का दूसरा लक्षण है शरीर के हर भाग मे खूब पसीना आना। पसीना लगातार आता रहता है और खूब आता है। सिर पर, माथे पर, चेहरे पर, मुख पर, नाक पर—उसकी हर जगह पसीने से तर रहती है। **कैलकेरिया कार्ब** मे केवल नीद के समय सिर पर पसीना आता है। **रियूम** मे बच्चे के सिर के बाल हर समय पसीने से तर रहते हैं।

(४) **बच्चा रात भर रोता है और दिन को ठीक रहता है**—बच्चा रात भर रोता है, दिन भर ठीक रहता है। जेलापा तथा **सोरिनम** में भी यह लक्षण है। **लाइको** मे बच्चा दिन भर चिल्लाता और रात को आराम से सोता है। **रियूम** के बच्चे को सन्तुष्ट करना कठिन होता है, अधीर तथा तेज मिजाज का होता है।

(५) **खट्टी बू के दस्तों मे मैग कार्ब और रियूम की तुलना**—बच्चो के दस्तो मे जब खट्टी बू आती हो, तब **मैग कार्ब** और **रियूम** मे भेद करना आवश्यक है। **मैग कार्ब** मे खट्टी बू है, परन्तु दस्तो का हरा रग होना मुख्य है, **रियूम** मे भी दस्त हैं, परन्तु इनमे खट्टी बू मुख्य है।

(६) **शक्ति**—३, ६, ३०

रोडोडेन्ड्रन (RHODODENDRON)

(१) **बिजली कडकने और अंधड़ आने से पहले रोग की वृद्धि**—इस औषधि की 'प्रकृति' (Modality) ही इसका मुख्य-लक्षण है। कोई भी रोग क्यो न हो, अगर अंधड आने से और बिजली कडकने से पहले रोग बढ जाता है, तो इस औषधि को स्मरण करना पडता है। अंधड आने से पहले रोग का बढना ठड या नमी के कारण नही होता, वायु-मडल में विद्युत् के संचार के कारण होना है। होम्योपैथी मे कुछ औषधिया ऐसी हैं जिनका मौसम से सबध है। वर्षा-ऋतु मे लक्षणो का बढना डलकेमारा में है, अंधड-बिजली मे लक्षणो का बढना रोडोडेन्ड्रन मे है। **नैट्रम सल्फ**, रस टॉक्स तथा **नक्स मोस्केटा** नम मौसम की औषधिया हैं, **नैट्रम फॉस** उस मौसम की औषधि है, जब बरफ पिघल रही हो और बर्फीली ठड पड रही हो। **रोडोडेन्ड्रन** के रोगी का गठिया तथा वात-रोग बिजली-अंधड से पहले बढ जाता है, पेचिश का बिजली-अंधड से पहले आक्रमण होता है, सिर मे तथा अगो मे अंधड से पहले दर्द होने लगता है, अंधड से पहले जोडो मे दर्द होता है। जब ऐसे रोगी को **अंधड** से

पहले होनेवाले ये या इन जैसे लक्षण प्रकट होने लगें, तो वह इन लक्षणों को देखकर कह देता है कि आंधी आने वाली है, या बिजली कड़कने वाली है। तूफान निकल जाने के बाद रोग के लक्षण कम हो जाते हैं। **रोडोडेन्ड्रन** तथा **रस टॉक्स** दोनों में वात-रोग (Rheumatism) का दर्द तर हवा में बढ़ता है, हरकत से घटता है, परन्तु इनमें भेद यह है कि **रोडो** का वात-दर्द अस्थियों में अधिक होता है, अस्थियों के आवरण (Periosteum) में, दांतों में, हाथ की, और घुटने के नीचे की हड्डी (Tibia) में पाया जाता है, **रस टॉक्स** का वात-दर्द मांस-पेशियों (Muscles) में अधिक होता है, **रोडो** का वात-दर्द अंधड़ में, बिजली कड़कते समय पाया जाता है, अंधड़ निकल जाने पर हट जाता है, **रस टॉक्स** का वात-दर्द समूची वर्षा-ऋतु में बना रहता है। **रस टॉक्स** का वात-दर्द पहली हरकत में बढ़ता है, यह लक्षण **रोडो** में नहीं है। वात-रोग में दर्द एक जोड़ से दूसरे जोड़ में चला जाता है, इस प्रकार चलता-फिरता यह दर्द फिर पहले जोड़ में भी कभी आ जाता है। यह लक्षण **रोडो** में है, **रस टॉक्स** में नहीं है।

(२) **अण्डकोष की वृद्धि और सूजन**—इस औषधि का अण्डकोषों पर विशेष प्रभाव है। 'वात-रोग' (Rheumatism) में या सुज़ाक के परिणाम स्वरूप अण्डकोष के सूज जाने पर यह औषधि लाभप्रद है। इसका विशेष प्रभाव दायें अण्डकोष पर होता है। बच्चों के अण्ड-कोष फूल जाने में यह उपयोगी है। अगर अण्डकोष की वृद्धि का कारण सिफिलिस हो, और रोगी को ठीक करने के लिये पारे का कोई योग दिया गया हो, तो **ऑरम**, अगर अण्ड-वृद्धि का कारण गोनोरिया का औषधियों से दब जाना हो, तो **क्लैमेटिस** या **पल्सेटिला**, अगर वात-रोग (Rheumatism) के कारण अण्ड-वृद्धि हो गयी हो, तो **रोडोडेन्ड्रन** उपयोगी सिद्ध होता है।

(३) **रोगी टांग पर टांग रखकर सोता है**—इस औषधि का एक विचित्र लक्षण यह है कि रोगी टांग पर टांग रखे बगैर नहीं सो सकता।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (रोग अंधड़ तथा बिजली की कड़क से बढ़ता है)

रस टॉक्स (RHUS TOX)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) मुख्य लक्षण—विश्राम से रोग-वृद्धि; हरकत से रोग घटना; प्रथम हरकत से दर्द, बाद को नहीं
(२) दूसरा मुख्य-लक्षण—नमी या ठंड को न सह सकना
(३) गर्मी या पसीने की हालत मे भीग जाने या ठंड लगने से उत्पन्न हुए रोग
(४) मांस-पेशियो के अकड़ जाने मे उन में दर्द से बेचैनी, इस दर्द का हरकत से कम होना, वात-रोग, कमर में दर्द आदि
(५) अत्यधिक-श्रम (Over-exertion) से उत्पन्न रोग; मोच (Sprain), सुन्नपन (Numbness) आदि कष्ट
(६) बेचैनी (Restlessness)—एकोनाइट तथा आर्स से तुलना
(७) जीभ के अग्र-भाग पर लाल-लाल तिकोना
(८) चर्म-रोग, खुजली, पित्ती उछलना, हरपीज़ जोस्टर
(९) मुख के आस-पास बुखार के छाले पड़ना, सविराम तथा अविराम ज्वर मे उपयोगी

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणों मे कमी (Better)
*गर्मी से, गर्म सूखी हवा से रोग मे कमी
*लगातार हरकत से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*नम-हवा से रोग का बढ़ना
*गर्म से सर्द होने से रोग होना
*पसीने मे ठंड लग जाने से रोग
*विश्राम मे रोग का बढ़ना
*पहली हरकत से दर्द होना

(१) मुख्य-लक्षण—विश्राम से रोग-वृद्धि, हरकत से रोग घटना प्रथम हरकत से दर्द—इस औषधि का मुख्य-लक्षण इसकी 'प्रकृति' (Modal है। प्राय विश्राम से रोग घटा करता है, परन्तु इस औषधि का विलक्षण लक्षण यह है कि रोग विश्राम से बढ़ता और हरकत से घटता है। इसका कारण यह है कि यह शीत-प्रधान औषधि है, ठंड या नमी की हवा को रोगी बर्दाश्त नही कर

सकता, गर्मी से उसे आराम मिलता है। वात-रोग (Rheumatism) मे जब रोगी चलता-फिरता है, तब उसके अगो मे गर्मी आ जाती है और इसलिये उसे आराम पहुचता है। यह **रस टॉक्स** की प्रकृति है। इसके विपरीत **ब्रायोनिया** मे विश्राम से रोग घटता, और हरकत से, चलने-फिरने से बढता है। हम आगे देखेंगे कि **एकोनाइट, आर्सेनिक** तथा **रस टॉक्स**—ये तीनो बेचैनी की औषधिया हैं, तीनो मे रोगी बिस्तर पर पडा करवटें बदलता रहता है, परन्तु **एकोनाइट** तथा **आर्सेनिक** मे करवट बदलने से तबीयत मे फर्क नही पडता, परन्तु **रस टॉक्स** मे करवट बदलने से रोगी को आराम मिलता है क्योकि करवट बदलना भी तो एक प्रकार की हरकत है। **ब्रायोनिया** मे रोगी जितनी भी हरकत करता है उतना ही उसका कष्ट बढता है, **रस टॉक्स** मे रोगी जितना चलता-फिरता है, अगो का सचालन करता है उतना ही उसे आराम पहुचता है, परन्तु **रस टॉक्स** के सबध मे एक बात का ध्यान रखनी चाहिये। यद्यपि रोगी हरकत से, चलने-फिरने से कष्ट मे कमी अनुभव करता है, तो भी चलते-चलते वह थक भी जाता है और अपने को शक्तिहीन पाता है। किसी प्रकार का भी निरन्तर परिश्रम, भले ही वह शारीरिक हो या मानसिक, रोगी को थका देता है और वह आगे श्रम नही कर सकता।

हरकत से कष्ट कम होने के अनेक दृष्टात पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, वक्ता का गला बैठ गया है परन्तु वह बोलता जाता है। पहले कुछ कष्ट होता है परन्तु वह ज़ोर लगाता जाता है और गला खुल जाता है, आवाज़ दूर-दूर सुनाई देती है। गायक का गला बैठ गया, पहले उसका गाना सुनाई नही देता, परन्तु वह आवाज़ मे जोर लगाता जाता है और गाना सुनाई पडने लगता है। बच्चा दूध पीने के लिए मा के स्तन मे मुह देता है, शुरु-शुरु मे मा को दर्द होता है, परन्तु ज्यो-ज्यो बच्चा स्तन चूसता जाता है दूध निकलने लगता है और मा का स्तन दर्द करना बन्द कर देता है। ये सब दृष्टात हरकत से कष्ट दूर हो जाने के हैं और इन सब मे **रस टॉक्स** लाभ करता है।

(२) दूसरा मुख्य-लक्षण—**नमी या ठंड को न सह सकना**—हरकत से रोग की कमी के अतिरिक्त इस औषधि का दूसरा मुख्य-लक्षण नमी या **ठड** न सह सकना है। रोगी वायु-मडल के लगातार होने वाले परिवर्तनो को नही सह सकना। आसमान मे बादल आने पर एतियातन वह गर्म कपडा ओढ लेता है। थोडी-सी भी नमी या हवा लगने से **रस** के दर्द, वात-रोग उभर आते हैं। ठड के प्रति निम्न-औषधियो की निम्न प्रतिक्रिया है—

एकोनाइट तथा **ब्रायोनिया**—खुश्क, ठडी हवा से रोग होता और बढ़ता है।

कोलचिकम तथा **डलकेमारा**—ठडी, नमीदार हवा से रोग होता और बढ़ता है।

रस टॉक्स—ठंड, नमी और बरसात से भीगने से रोग होता और बढ़ता है।

रोडोडेन्ड्रन—तूफान और बिजली चमकने से रोग होता और बढ़ता है।

सोरिनम, ट्युबरकुलीनम—खुश्क, तथा नमीदार किसी भी प्रकार की ठंड को रोगी बर्दाश्त नही कर सकता।

रस टॉक्स और ब्रायोनिया एक-दूसरे के पूरक हैं—डॉ० फैरिंगटन ने लिखा है कि **रस टॉक्स** तथा **ब्रायोनिया** एक-दूसरे के पूरक है। हनीमैन ने लिखा है कि इन दोनो के लक्षण समान होते हुए भी इनकी 'प्रकृति' (Modality) मे भेद है—रस हरकत से ठीक होता है, **ब्रायोनिया** दुःखी। इस भेद के कारण हनीमैन ने इन दोनो औषधियो को 'एक-दूसरे के विरुद्ध बहनें' (Two antagonist sisters) कहा है। एक ही रोगी मे **रस टॉक्स** के लक्षणो के बाद **ब्रायोनिया** के लक्षण आ सकते हैं। उस हालत मे जिसे रस टॉक्स दिया है उसे **ब्रायोनिया** देना पड सकता है और जिसे **ब्रायोनिया** दिया है उसे **रस टॉक्स**।

प्रथम हरकत से दर्द—यद्यपि रोगी को हरकत से, चलने-फिरने से आराम होता है, तो भी इस बात को ध्यान मे रखना चाहिये कि प्रथम हरकत से दर्द होता है। उदाहरणार्थ, अगर रोगी बैठा हुआ है, तब जब वह पहले-पहल उठेगा तब दर्द होगा। अगर घुटने का दर्द है, कमर का दर्द है, तो उठते हुए पहली हरकत मे तो घुटने मे या कमर मे दर्द महसूस होगा, परन्तु ज्यो-ज्यो रोगी चलना-फिरना शुरू करेगा त्यो-त्यो अगो के गर्म हो जाने के कारण दर्द घटता जायगा।

(३) **गर्मी या पसीने की हालत मे भीग जाने या ठंड लगने से उत्पन्न हुए रोग**—जब कोई व्यक्ति पसीने की हालत मे भीग जाय, और उसे तर हवा की ठंड लग जाय, तो अनेक शिकायतें पैदा हो जाती हैं। इसे बोल-चाल की भाषा में गर्म-सर्द होना कहते हैं। ऐसी हालत मे बुखार आ सकता है, जुकाम हो सकता है, किसी प्रकार का वात-दर्द हो सकता है, दस्त लग सकते हैं। **डलकेमारा** मे भी गर्मी की हालत मे, या पसीना आते हुए बरसाती हवा मे भीग जाने से, ये लक्षण उत्पन्न हो जाते है। होम्योपैथिक औषधि पशुओ पर भी वैसा ही असर रखती है जैसा मनुष्यो पर—इसका उदाहरण हनीमैन के मित्र तथा समकालीन डा० बोनिनघॉसन ने देते हुए लिखा है कि एक किसान अपने घोडे को उनके पास इलाज के लिये लाया। घोडा तीन महीने से बीमार था और पशु-चिकित्सालयो के इलाज से भी ठीक नही हुआ था। पूछने पर पता चला कि जब वह गाडी खीच रहा था, तब वह पसीने से तर-ब-तर था, इतने मे सख्त बारिश आ गयी, बर्फीला पाला भी पडने लगा। तब से वह रोगी था और इतना कमजोर हो गया था कि गाडी नही खीच सकता था। उसे **रस टॉक्स** २०० की एक मात्रा दी गयी और वह पूरी तरह स्वस्थ होकर अपना काम करने लगा। प्राय किसान खेतो में काम करते-करते पसीने से तर हो जाते हैं, इतने मे बारिश आ जाय तो

पसीने की हालत में भीग जाते हैं, और खासी, जुकाम, बुखार, दम्म, जोड़ों में दर्द आदि से पीडित हो जाते हैं। उनके लिये यह महौषधि है।

सीलन मे बैठने से बच्चो का पक्षाघात (Infantile paralysis due to dampness)—प्राय देखा जाता है कि बच्चों की अयायें बच्चो को घुमाने ले जाती हैं और किसी पार्क मे बच्चे को सीलनवाली जमीन पर खेलने के लिये बैठा देती है। कुछ दिन बाद उस सीलन के चढ़ जाने के कारण बच्चे को पक्षाघात का आक्रमण होने लगता है। इन अवस्थाओं के लिये यह औषधि अमृत तुल्य है।

(४) मासपेशियो के अकड जाने से उनमे दर्द होने मे बेचैनी, इस दर्द का हरकत से कम होना, वात-रोग, कमर मे दर्द आदि—इस औषधि का मुख्य-प्रभाव मासपेशियों, पुट्ठों पर होता है। मासपेशियों के पुट्ठे अकड जाते हैं, दर्द करने लगते हैं। इस दर्द के कारण अनेक हो सकते हैं। या तो पुट्ठों का यह दर्द वात-रोग (Rheumatism) के कारण हो सकता है, या कोई भारी वस्तु उठाने से हो सकता है, या कठिन शारीरिक-श्रम से हो सकता है, या ठड लगने से हो सकता है, या पीठ की मासपेशियो और मेरु-दड पर जोर पडने से हो सकता है। हर प्रकार का दर्द हरकत से कम हो जाता है। इन दर्दों मे यह औषधि उपयोगी है।

वात-रोग का हरकत से कम होना (Rheumatism relieved by movement)—वात-रोग का नाम लेते ही रस टॉक्स का ध्यान आता है। यह नाना-प्रकार के गठिया और वात-रोग मे लाभप्रद है। रोगी को हड्डियो मे दर्द होता है, मासपेशिया, मास-तन्तु, जोड—ये सब दर्द करते है। पसीने की हालत मे बारिश मे भीग जाने से पसीना रुक जाता है, ठड लगने से भी पसीना रुक सकता है। इसका परिणाम गठिये का दर्द, बुखार सहित या बिना बुखार के भी जोडो मे दर्द होने लगता है। रोगी को हरकत से और गर्म सेक से आराम मिलता है, शरीर अकड जाता है, पुट्ठे अकड जाते है। इस अकडन मे जब रोगी पहले-पहल हिलता-जुलता है तब दर्द होता है, परन्तु लगातार चलते रहने से शरीर गर्म हो जाता है और दर्द जाता रहता है। चलते-चलते वह थक जाता है, आराम करने लगता है, परन्तु आराम से देर तक बैठ नही सकता, बैठने पर उसे बेचैनी घेर लेती है, वह फिर उठकर चलने लगता है। अब जब वह फिर उठता है, तब उठने पर होनेवाला दर्द फिर होता है, परन्तु चलते-चलते फिर यह दर्द चला जाता है।

कमर-दर्द का हरकत से कम होना (Lumbago relieved by movement)—कमर का दर्द भी सीलनवाली जगह मे सोने या सीलनवाले फर्श पर बैठने से होता है। रस टॉक्स के रोग गर्म या पसीने की हालत मे बरसात से भीग जाने से, सीलनवाली जमीन पर बैठने या सोने से, नदी मे देर तक स्नान

करने से या देर तक तैरते रहने से हुआ करते हैं, भले ही शरीर का वात-दर्द हो या कमर का दर्द हो, या मासपेशियो का अकड जाना हो। उक्त कारणो से होनेवाले रोगो मे **रस टॉक्स** उपयोगी औषधि है।

(५) **अत्यधिक-श्रम** (Over-exertion or strain) **से उत्पन्न रोग; मोच** (Sprain), **सुन्नपन** (Numbness) **आदि**—जब कोई रोग अत्यधिक-श्रम के कारण उत्पन्न हो, रोगी का इतना बूता न हो जितना श्रम उसने कर दिया, तब भी **रस टॉक्स** उपयोगी सिद्ध होता है। उदाहरणार्थ, अगर मुंह की फूक से बाजे को बजाने वाले को फेफडो से खून आने लगे, तो इस दवा से लाभ होगा क्योकि उसका रोग अत्यधिक-श्रम से हुआ है। अत्यधिक-शारीरिक-श्रम से रोगी को पक्षाघात हो जाय, अत्यधिक-श्रम से हृदय पर बोझ पड जाय, धडकन होने लगे, तो इसमे लाभ होगा।

अति-श्रम, मिचकोड़ तथा सुन्नपन (Strain, sprain and numbness) —जैसे अति-श्रम से उत्पन्न रोगो मे यह लाभप्रद है, वैसे ही मिचकोड तथा सुन्नपन में इससे लाभ होता है। पैर के गिट्टे मे मिचकोड आ जाती है और रोगी चल नही सकता। प्राय इस शिकायत मे **आर्निका** दिया जाता है, परन्तु अगर उससे लाभ न हो तो **रस टॉक्स** देना चाहिये। मिचकोड के बाद प्राय मासपेशियो मे शिथिलता आ जाती है। शरीर के जिस अग मे मिचकोड आ जाती है उसके साथ के जोड मे भी कमज़ोरी महसूस होने लगती है। इस दशा को **रस टॉक्स** दूर कर देता है।

हृदय को जब अपनी शक्ति से अधिक काम करना पड़ता है, तब बायें हाथ मे सुन्नपन का अनुभव होने लगता है, कभी-कभी हाथ मे शक्ति नही रहती। इस दशा में भी **रस टॉक्स** देना उचित है।

(६) **बेचैनी** (Restlessness)—**एकोनाइट तथा आर्स से तुलना**—डा० नैश लिखते हैं कि बेचैनी की तीन दवाए हैं—आर्सेनिक, एकोनाइट तथा **रस टॉक्स**। एकोनाइट की बेचैनी किसी जगह सूजन मे बुखार चढ जाने या 'अविराम-ज्वर' (टाइफॉयड) आदि मे पायी जाती है। एकोनाइट की बेचैनी के विषय मे डा० हेरिंग ने लिखा है "गर्मी, प्यास, भरी हुई नाडी, घबराहट, अधीरता, किसी तरह भी शान्त न होना, आपे-से बाहर, अत्यन्त कष्ट से बिस्तर पर करवटें बदलना"—ये लक्षण है **एकोनाइट** के। आर्सेनिक के विषय मे कहा जा सकता है कि इसके समान बेचैन दूसरी कोई दवा नही है। **एकोनाइट** की बेचैनी शोथ-रोगो के प्रारभ मे होती है, जब कि ज्वर बहुत ऊचा चला जाता है। **आर्सेनिक** का प्रभाव-क्षेत्र तब आता है जब रोगी अत्यन्त दुर्बल, क्षीण, शक्ति-रहित हो जाता है, या जब टाइफॉयड जैसा ज्वर होता है। **एकोनाइट** का रोगी बेचैनी, घबराहट और भय से परेशान बिस्तर पर करवटें

बदलता है, आर्सेनिक का रोगी भी बेचैनी मे करवटें बदलना चाहता है, परन्तु वह इतना कमज़ोर हो चुका होता है कि करवट बदलने की भी उसमे ताकत नही रहती। वह जैसी हरकत चाहता है वैसी नही कर सकता, परन्तु चाहता है कि उसके अभिभावक उसे एक बिस्तर से दूसरे और दूसरे से तीसरे बिस्तर पर ले जाते रहे, उसकी मानसिक-बेचैनी इतनी ही ज़बर्दस्त होती है जितनी शारीरिक-बेचैनी। **रस टॉक्स** की बेचैनी इन दोनो से भिन्न है। उसका तो शरीर, उसकी मासपेशिया दर्द करती हैं, और इस दर्द मे हरकत से उसे आराम मिलता है। **रस टॉक्स** के रोगी के शरीर के दुखने के अलावा उसमे एक और तरह की भी बेचैनी होती है। यह स्नायविक-अधीरता है जिसके कारण अगर शरीर मे दर्द नही भी है, तो भी वह आराम से टिक कर लेटना नही चाहता। थोडे शब्दो मे कहा जा सकता है कि **एकोनाइट** की बेचैनी के साथ उत्तेजना (Excitement) की प्रबलता होती है, **आर्सेनिक** की बेचैनी के साथ कमज़ोरी (Prostration) की प्रबलता होती है, **रस टॉक्स** की बेचैनी मे न तो **एकोनाइट** की उत्तेजना पायी जाती है, न **आर्सेनिक** की कमज़ोरी पायी जाती है, इसमे बेचैनी के साथ मासपेशियो आदि मे पीडा तथा दर्द (Soreness and pain) विशेष रूप से पाया जाता है।

(७) **जीभ के अग्रभाग पर लाल-लाल तिकोना**—जीभ के अग्रभाग पर तिकोनिया लाल निशान बन जाना इस औषधि का विशेष सूचक है। जीभ पर इस प्रकार का लाल त्रिकोण, पेचिश, न्यूमोनिया, वात-रोग, मलेरिया तथा टाइफ़ॉयड मे बन सकता है। बीमारी का कुछ भी नाम हो, अगर इस प्रकार का तिकोन चिन्ह जीभ पर बने, तो वह रोग इस औषधि के प्रभाव-क्षेत्र मे है।

(८) **चर्म-रोग, खुजली, पित्ती उछलना (Urticaria) तथा हरपीज़ ज़ोस्टर (Herpes zoster)**—चर्म रोगो मे इस औषधि का प्रमुख स्थान है। चर्म-रोग मे रोगी को सारे शरीर मे खुजली होती है, बालवाले हिस्सो मे विशेष रूप से खुजली होती है। फुन्सियाँ, छाले, एग्ज़ोमा पर मोटी पपडी का जम जाना, उसमे से बदबूदार पानी निकलना—इन मे बेचैनी के लक्षण साथ हो और रोगी हरकत करता रहे, ठड से घबराये, तो इस औषधि से अवश्य लाभ होता है। पित्ती उछलने की भी यह उत्कृष्ट दवा है। डा० नैश लिखते हैं कि हरपीज़ ज़ोस्टर (त्वचा का वह रोग जिसमे स्नायु-मार्ग पर दर्द भरे छाले समूह-के-समूह रूप मे उभर आते हैं) मे प्राय इसी औषधि से लाभ होता है। हरपीज़ मे **रैननक्युलस** भी उपयोगी है, परन्तु इस रोग मे **रस** का स्थान उस से भी ऊचा है। हरपीज़ मे डॉ० बर्नेट **वेरीयोलीनम** के भक्त हैं।

(९) **मुख के आस-पास बुखार के छाले पड़ना (Fever blisters around mouth)**—अगर बुखार मे मुख के आस-पास छाले पड जायें, तो उस

ज्वर मे इससे लाभ होता है। ज्वर मे यह इस औषधि का विशेष-लक्षण है। रस का उपयोग 'सविराम' (Intermittent—मलेरिया आदि) तथा 'अविराम' (Remittent—टाइफॉयड आदि) दोनो प्रकार के ज्वरो मे किया जाता है।

सविराम ज्वर मे जांघ या कन्धों के बीच से शीत शुरु होता है—सविराम (Intermittent—मलेरिया)-ज्वर मे रस का शीत एक टांग, साधारणत एक जांघ से शुरु होता है। शीत दोनो कधो के बीच से या कधे के फलक से भी शुरु हो सकता है। शीत के बाद गर्मी की हालत मे सारे शरीर मे पित्त (Urticaria)उछल आता है, शरीर मे खुजली होती है, और उसके बाद पसीने की अवस्था आने पर पित्त चला जाता है। इस ज्वर मे होठो पर मोती के-से छोटे-छोटे दाने उभर आते हैं जिनका हम अभी पहले ज़िक्र कर आये हैं। इस तरह के मोती के-से दाने **नेट्रम म्यूर** के ज्वर मे भी है। रस के ज्वर मे रोगी लगातार हरकत किया करता है। डनहम का कहना है कि सविराम-ज्वर मे रस का रोगी शीतावस्था मे खासता है। डा० नैश ने लिखा है कि ज्वर मे यह बड़ा विश्वासनीय लक्षण है।

अविराम-ज्वर मे पतला या खूनी दस्त आना रस टॉक्स का लक्षण है—हमने पहले कहा था कि रस का उपयोग सविराम तथा अविराम दोनो ज्वरो मे किया जाता है। अविराम (Remittent—टाइफॉयड)-ज्वर मे रोगी को पतले दस्त आने लगते हैं, कभी-कभी खूनी दस्त आते हैं। अविराम-ज्वर (टाइफॉयड) मे रोगी को हल्की बेहोशी (Mild delirium) होती है, रोगी बेचैन होता है, शान्त होकर बिस्तर पर लेट नही सकता। ऐसे लक्षण किसी भी ज्वर मे हो, रस लाभ करेगा, ज्वर का नाम क्या है—यह टाइफॉयड है, या कुछ और ज्वर है—यह महत्व की बात नही है।

रुटीन तौर पर औषधि देनेवाले टाइफॉयड मे अगर खुश्क टट्टी आती हो, तो **ब्रायोनिया** और अगर दस्त आते हो, तो **रस टॉक्स** दिया करते हैं।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३० २०० (रोगी नमी या बरसात की हवा को नही सह सकता)

रुमेक्स (RUMEX)

इस औषधि के प्रभाव-क्षेत्र के तीन स्थान है वे हैं—(१) श्वास-प्रणालिका (Respiratory organs), (२) आतें (Bowels) तथा (३) त्वचा (Skin)। श्वास-प्रणालिका पर के प्रभाव से यह खासी की, आतो पर के प्रभाव से यह दस्तो की, और त्वचा पर के प्रभाव से यह खुजली की औषधि है।

(१) **रुमेक्स का श्वास-प्रणालिका पर प्रभाव—सास मे ज़रा-सी भी ठडी हवा के आने से गले मे सुरसुराहट के साथ लगातार सूखी खासी छिड जाना**—होम्योपैथी मे ऐसी दूसरी कोई दवा नही है जिसमे ठडी हवा का श्वास-प्रणालिका पर इतना ज़बर्दस्त प्रभाव होता हो जितना **रुमेक्स** का होता है। रोगी अपने सिर को विस्तर मे ऐसे ढाप लेता है कि किसी कोने से भी ठडी हवा सास मे न आने पाये। डा० चौधरी एक गर्भवती स्त्री की खासी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि उसे ऐसी सख्त सूखी खासी थी कि खासते-खासते सारा जिस्म हिल जाता था, गर्भपात न हो जाय—ऐसा डर लगता था। अनेक औषधिया जो निर्दिष्ट लगती थी दी गई परन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त मे, इस लक्षण पर कि वह ठडी हवा वर्दाश्त नही कर सकती थी, उसे **रुमेक्स** की कुछ मात्राए दी गई और खासी जाती रही। जब भी उसे देखा गया वह अपने मुह को कपडे से ढापे पडी होती थी और ठडी हवा को सास मे लेने की परेशानी से वचने की कोशिश करती थी। डा० कैंट लिखते हैं कि इस औषधि मे जुकाम तथा खासी का प्रमुख स्थान है। नाक, आख, छाती, सपूर्ण श्वास-प्रणालिका से वहुत अधिक परिमाण मे श्लैष्मिक-स्राव वहता है। उन्होने लिखा है कि नाक तथा आभ्यन्तर श्वास-प्रणालिका से जुकाम और खासी के रूप मे उन्होने इतना अधिक सफेद, झागदार पानी-जैसा पतला-स्राव निकलते देखा है, ढेर-का-ढेर, कि थोडी देर मे ही प्याला भर गया है। ऐसे जुकाम तथा खासी मे जव रोगी अपने सिर को ठडी हवा से वचाने के लिये इस प्रकार ढक ले कि उसके सास मे ठंडी हवा न जा सके, जाये तो एकदम ज़ोर का जुकाम और खासी उठ खडी हो, तब यह औषधि एकदम असर करती है और जुकाम और खासी को ठीक कर देती है।

1 **ठडी साँस लेने से खाँसी के लक्षण मे रुमेक्स, स्पंजिया और फॉस की तुलना**—ठडी सास लेने से खासी उभर आने का लक्षण रुमेक्स के अतिरिक्त **स्पजिया** और **फॉस** मे भी पाया जाता है, परन्तु **रुमेक्स** मे यह सब से ज्यादा है। **स्पजिया** की खासी मे खासने के समय सूखा हिस-हिस या आरे से लकडी को चीरने का-सा शब्द सुनाई देता है, **फॉस** मे वाई करवट सोने से खासी वढ जाती है।

11 **रुमेक्स की खाँसी रात को ११ वजे छिडती है और क्षय-रोग मे रात को २ वजे**—इस औषधि की खासी रात के ११ वजे छिडती है। ११ वजे खासी छिडनेवाली दो है औषधियाँ—**रुमेक्स** तथा **लैकेसिस**। वच्चा ११ वजे तक जागता रहे तो खासी न हो, किन्तु अगर जल्दी सो जाय तो ११ वजे खासी छिड जाय, ऐसी हालत मे **लैकेसिस** औषधि है क्योकि नीद मे रोग का वढना इसका लक्षण है। **लैकेसिस** मे वच्चा ११ वजे तक नही सोया तो खासी नही छिडी, सो

गया तो ११ बजे खासी ने जगा दिया। रुमेक्स मे तो बच्चा चाहे जागता रहे, चाहे सो जाय, ११ बजे रात को उसे खासी आती ही है।

रुमेक्स क्षय-रोग की खासी मे भी लाभ करता है। क्षय-रोग की खांसी जब रात को २ बजे छिड़े तब इससे लाभ होता है।

iii. **गर्म स्थान से ठडे स्थान मे जाने से खासी का बढ़ना**—अगर रोगी गर्म-स्थान से ठडक मे जाता है, गर्म कमरे से बाहर ठडक मे जाता है, तो खासी बढ जाती है, या न हो तो आने लगती है। **नेट्रम कार्ब** मे इस से उल्टा है। इस मे ठंडक से गर्म कमरे मे जाने से खासी आने लगती है, या बढ़ जाती है। **ब्रायोनिया** मे गर्म मे सर्द या सर्द से गर्म होने से जुकाम-खासी-बुखार हो जाता है।

(२) **रुमेक्स का आतो पर प्रभाव—प्रात काल भूरे रग के दस्त खासी सहित, क्षय-रोग मे भी ऐसे दस्त आना**—श्वास-प्रणालिका के अतिरिक्त इसके प्रभाव का दूसरा क्षेत्र आते हैं। रोगी को सवेरे ही दस्त आते है। बिस्तर से उठते ही सवेरे दस्त आने मे **नेट्रम सल्फ, एलो, सल्फर और पोडोफाइलम** मुख्य-औषधिया हैं, परन्तु **रुमेक्स** के प्रात काल के दस्त बादामी रग के होते है, इन दस्तो मे खासी का लक्षण भी साथ रहता है। जैसे सल्फर मे रोगी उठते ही बाथ-रूम को भागता है, वही लक्षण इस औषधि मे भी है। क्षय-रोग की बढी हुई अवस्था मे यह लक्षण पाया जाता है। क्षय-रोगी भी दस्त के वेग के कारण प्रात काल उठते ही बाथ-रूम की ओर भागता है, उसे खासी भी होती है, इसलिये खासी के साथ क्षय-रोग के प्रात काल के इन दस्तो मे यह औषधि लाभप्रद है।

(३) **रुमेक्स का त्वचा पर प्रभाव—त्वचा पर ठड लगने से या कपड़े उतारते हुए ठड लगने से खुजली**—त्वचा पर ठड के प्रभाव से खुजली, जबर्दस्त खुजली इसका तीसरा लक्षण है। सोते समय जब व्यक्ति कपडे उतारता है, तब हवा की ठडक से उसे अत्यन्त खुजली होने लगती है। त्वचा पर फुन्सिया हो जाती हैं या पित्ती उछल आने की-सी (Urticaria) दशा हो जाती है। **रुमेक्स** की खुजली ठडक मे होती है, परन्तु गर्मी से खुजली बढ जाना, खासकर बिस्तर की गर्मी से खुजली बढ जाना **मर्क सौल** का लक्षण है।

(४) **सर्व-प्रधान लक्षण है ठडी हवा के सास से रोग बढ़ना**—ऊपर जिन लक्षणो का हमने उल्लेख किया, उनमे आधारभूत लक्षण इस औषधि की प्रकृति है। खासी ठडी हवा के सास लेने से बढ जाती है, रोगी अपना सारा शरीर—आख, नाक, कान, मुह—सब-कुछ कपडे से इस प्रकार लपेट लेता है कि किसी छिद्र से भी ठडी हवा का प्रवेश न हो सके।

(५) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ६, ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

रूटा ग्रैवियोलेन्स (RUTA GRAVEOLENS)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) शरीर में कुचले जाने का-सा दर्द

(२) हड्डी के परिवेष्टन (Periosteum) के कुचले जाने या मोच आ जाने से दर्द (सिम्फाइटम के बाद अस्थि-परिवेष्टन की चोट मे रूटा लाभप्रद है)

(३) रूटा तथा रस टॉक्स की तुलना (रूटा का क्षेत्र 'अस्थि-परिवेष्टन' (Periosteum) है, रस टॉक्स का क्षेत्र मास-पेशी है)

(४) चोट के बाद गाठ पड जाना (Hardened spots after bruises), चोट मे आर्निका के बाद बची-खुची चोट को ठीक करता है।

(५) आख की मासपेशी से अधिक काम लेने (बारीक टाइप पढ़ने, घडीसाज का काम करने, सिलाई का काम करने) से आखो मे दर्द, सिर दर्द; जलन, आखो की कमजोरी आदि का रोग होना

(६) कलाई और गिट्टे का मुड जाना

(७) शियाटिका का दर्द (Sciatica)

(८) कांच निकल पड़ना (Prolapsus of the rectum)

(९) मूत्राशय पर पेशाब के लगातार दवाव के कारण बार-बार पेशाब जाने की हाजत होना

(१) शरीर मे कुचले जाने का-सा दर्द—सिर से पाव तक रोगी को शरीर के कुचले जाने का-सा दर्द होता है। सारा शरीर इतना दुखता है कि किसी करवट भी नही लेटा जा सकता। खोपडी, आखें, जघा, टागें, गिट्टे—इन सब मे ऐसी पीडा होती है मानो किसी ने पीट कर शरीर की भुजिया बना दी हो। रोगी के हर जोड मे, प्रत्येक हड्डी मे ऐसी पीडा होती है कि उस से झुका तक नही जाता। हाथ की कलाई और पैर के गिट्टो मे ऐसा दर्द होता है मानो अपनी जगह छोड गये हो, मानो मोच आ गयी हो।

(२) हड्डी के परिवेष्टन (Periosteum) के कुचले जाने से दर्द—डा० नैश का कहना है कि रूटा का अस्थि-परिवेष्टन (Periosteum) के साथ, कलैंडुला का चोट लग कर फटने और छितर-वितर हो जाने वाले जख्म के साथ, स्टैफिसैग्रिया का छुरा या अस्तुरा जैसे तेज़ औज़ार से हो जाने वाले घाव के साथ, रस टॉक्स का मिचकोड के साथ, और आर्निका का कोमल अगो के कुचले जाने के साथ विशेष-सबध है, और इन सबधो को दृष्टि मे रखकर ही दवा का निश्चय करना चाहिये। शरीर मे जहा-जहा हड्डी के ऊपर मास कम होता है, उस स्थान मे हड्डी के ऊपर का आवरण चोट लगने से दुखने लगता है, कभी-कभी उस जगह सुपारी की तरह की गाठ पड जाती है। घुटने के नीचे की हड्डी—टीबिया—जैसी हड्डियो की अस्थि-परिवेष्टनो की चोट मे रूटा से विशेष

लाभ होता है। अस्थि-परिवेष्टन की चोट मे उस जगह के कुचले जाने का-सा दर्द होता है। ऐसी चोट में **सिम्फाइटम** के बाद इसे देने से लाभ होता है।

(३) रूटा तथा रस टॉक्स की तुलना (रूटा का क्षेत्र अस्थि-परिवेष्टन है, रस टॉक्स का क्षेत्र मांसपेशी है)—प्रकृति की दृष्टि से ये दोनो औषधिया एक ही वर्ग की हैं, दोनो की शिकायतें एक-दूसरे से मिलती हैं। दोनो मे ठड से रोग की वृद्धि होती है, नमीदार हवा से रोग बढता है, शरीर के अगो का जरूरत से ज्यादा श्रम करने से, अत्यधिक-श्रम से शिकायतें पैदा हो जाती हैं, परन्तु **रूटा** का विशेष-लक्षण यह है कि इसकी शिकायतो का केन्द्र शरीर के वे स्थल हैं जिनमे हड्डी पर मास बहुत पतला रहता है। उदाहरणार्थ, घुटने के नीचे 'टीबिया'-हड्डी पर मास बहुत कम पाया जाता है, कलाई पर, गिट्टे पर मास कम रहता है। इन स्थलो पर चोट लगने का प्रभाव सीधा अस्थि-परिवेष्टन पर पडता है। ऐसी चोटो मे **रस टॉक्स** काम नही देता, **रूटा** काम देता है।

(४) चोट के बाद गांठ पड जाना (Hardened spots after bruises)—अस्थि-परिवेष्टन की जिन चोटो का हमने वर्णन किया, वे धीरे-धीरे ठीक हो जाती हैं, परन्तु अस्थि-परिवेष्टन की चोटवाला हिस्सा मोटा हो जाता है, वहा गाठ पड जाती है, वह दर्द करता रहता है और ठीक होने मे नही आता। कभी-कभी यह गाठ महीनो, सालो बनी रहती है। इस प्रकार की गाठो मे **रूटा** लाभप्रद है। चोट मे **आर्निका** के बाद कभी-कभी देना पडता है।

(५) आंख की मांसपेशी से अधिक काम लेने (बारीक टाइप पढ़ने, घडीसाजी का काम करने, सिलाई का काम करने) से आंखो मे दर्द, सिर-दर्द, जलन, आंखो की कमज़ोरी—जो लोग आँखो से ज्यादा काम लेते हैं, उनकी आखो की मासपेशियो पर बोझ पडने से आख के गोलक मे दर्द होने लगता है, आख पर ज़ोर पडने के कारण सिर-दर्द भी होने लगता है, आखें लाल हो जाती हैं, जलन होने लगती है। किताब के बारीक अक्षर पढने से, बारीक सिलाई करने से, घडीसाज का काम करने से जिसमे बारीक पुर्ज़ो पर आखें गडानी पडती हैं आखो मे दर्द होने लगता है, रोगी किसी एक केन्द्र पर ध्यान नहीं गडा सकता। आखो की ऐसी शिकायतो मे इस से लाभ होता है।

(६) कलाई और गिट्टे का मुड़ जाना—इस औषधि का अस्थि-परिवेष्टन पर विशेष प्रभाव है—यह ऊपर लिखा जा चुका है। हाथ की कलाई और पैर के गिट्टो मे भी हड्डियो के ऊपर मास कम होता है, वहा भी इस औषधि का विशेष प्रभाव है। इन स्थानो की मास-पेशियाँ जब सिकुड जाती हैं, तब कलाई और गिट्टे मुड जाते हैं। ऐसी अवस्था मे **रूटा** को स्मरण करना चाहिये।

(७) शियाटिका का दर्द (Sciatica)—इस औषधि के लक्षणो मे **दर्द एक मुख्य-लक्षण है**। किसी भी तरह का **दर्द** हो, वह **इसके प्रभाव-क्षेत्र**

मे आता है—काटता हुआ, चीरता हुआ, किसी प्रकार का भी शियाटिका का दर्द होने पर इस औषधि की याद आती है । दर्द पीठ से शुरु होता है, कूल्हो से होता हुआ जाघो मे चला जाता है । रोगी रात को ज्यो ही बिस्तर पर लेटता है कि दर्द शुरु हो जाता है । **कोलोसिन्थ** के प्रकरण मे हम शियाटिका की औषधियो का वर्णन कर आये हैं।

(८) **कांच निकल पड़ना** (Prolapsus of the rectum)—ज़रा-सा भी जोर लगाने से काच (गुदा-द्वार) का निकल पडना, या रोगी झुके तो भी काच निकल आना इस औषधि का प्रधान-लक्षण है । प्रसव के बाद काच निकलने मे भी इससे लाभ होता है। काच निकल पडने का लक्षण **इग्नेशिया, पोडोफाइलम** तथा **म्यूरियेटिक ऐसिड** मे भी पाया जाता है । **इग्नेशिया** मे **नक्स** की तरह बार-बार पाखाना जाने के साथ काच निकल आने की प्रधानता है, पतले दस्त से रोगी को कष्ट होता है; **पोडो** मे काच निकलने के साथ पतला दस्त आना मुख्य है, **म्यूरियेटिक ऐसिड** मे पाखाने के साथ बवासीर की मुख्यता है, **रूटा** मे ज़रा-से जोर लगाने या झुकनेमात्र से काच निकल आना मुख्य-लक्षण है ।

(९) **मूत्राशय पर पेशाब के लगातार दबाव के कारण बार-बार पेशाब जाना**—रोगी मूत्र को रोक नही सकता । मूत्राशय मे मूत्र के आते ही बाथ-रूम जाने की इच्छा होती है । अगर रोगी जबर्दस्ती से मूत्र को रोक लेता है, तो बाद को पेशाब करना कठिन हो जाता है, मूत्राशय मे दर्द होने लगता है और भरा हुआ मूत्राशय खाली नही होता ।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—१ से ६, आखो मे इसका लोशन बनाकर लगाया जाता है । (ठड या नमी से रोग बढता है)

सैबैडिला (SABADILLA)

(१) **जुकाम मे लगातार छींकें आना** (Catarrhal, sneezing remedy), हे-फीवर—रोगी को जुकाम मे लगातार बार-बार छीकें आती है, अनगिनित छींकें । पहले नाक से पतला पानी आता है, फिर गाढा हो जाता है । नाक भीतर मे जलने लगती है, नाक बन्द भी हो जाती है । जब जुकाम बहुत लम्बा हो जाता है, साधारण दवाओ मे भी लाभ नही होता, देर तक बना रहता है, छीकें आती रहती है, नाक से मवाद जाते-जाते नाक मे जख्म-से हो जाते हैं, तब यह औषधि लाभ करती है । ऐसी हालत हे-फीवर मे हो जाया करती है । हे-फीवर उस मौसमी-ज्वर का नाम है जिसमे ज्वर के साथ घोर जुकाम हो जाता है, नासिका की झिल्ली का शोथ और नाक से पानी बहा करता है, नाक बन्द भी हो जाती है, दमे का-सा अनुभव होता है । इस प्रकार के जुकाम मे भी **सैबैडिला** लाभ करता है ।

(छीकों के साथ जुकाम में मुख्य-मुख्य औषधिया)

सँबँडिला—बहुत छीकें, आखो से पानी, आखो मे जलन, सिर-दर्द, स्राव जलन नही करता।

एलियम सीपा—छीकें, आखो से पानी, नाक की रतूबत से नाक मे जलन।

यूफ्रेशिया—छीके, आखो के पानी से गाल छिल जाते हैं, नाक की रतूबत से कुछ नहीं होता।

आर्सेनिक—छीकें, आखो के पानी से कुछ नही होता, नाक की रतूबत से होठ और नाक के किनारे छिल जाते हैं।

नक्स वोमिका—सुबह बहुत छीकें, नाक और गले मे सुरसुराहट होती है।

(२) **नियत समय पर रोग का आना** (Periodicity)—नियत समय पर किसी रोग का उत्पन्न होना इस औषधि का विशेष-लक्षण है। इसी लक्षण के आधार पर स्नायु-शूल (Neuralgia), सिर-दर्द, ज्वर आदि मे इसका मुख्य-स्थान है। नियत समय पर ज्वर आदि मे मुख्य औषधिया निम्न है

(रोग के नियत समय पर आने मे कुछ मुख्य-मुख्य औषधिया)

सँबँडिला—इसका रोग ठीक घडी के अनुसार निश्चित समय पर प्रकट होता है। ज्वर आयेगा तो अपने निश्चित समय पर, सिर-दर्द होगा तो निश्चित समय पर। जहा तक ज्वर का सबध है, इसके ज्वर मे शीत टागो से शुरु होता है, धीरे-धीरे टागो से ऊपर चढता है। ज्वर की तीनो अवस्थाओ—'शीत' (Chill), 'ज्वर' (Heat), 'स्वेद' (Sweat)—मे से 'ज्वर' की अवस्था कभी-कभी नही रहती, कभी-कभी हल्की रहती है, परन्तु 'शीत' की अवस्था सपूर्ण-ज्वर मे मुख्य रहती है। 'शीत' की अवस्था इतनी मुख्य रहती है कि रोगी अगीठी जलाकर उसके पास ही बैठा रहता है। **वेरेट्रम** मे तो 'शीत' इतना प्रधान होता है कि अंगीठी के पास बैठने से भी जाडा नही जाता, परन्तु उस मे **सँबँडिला** की तरह ज्वर का घडी के अनुसार निश्चित-समय पर आना नही है।

सिड्रन—इसमे भी **सँबँडिला** की तरह घडी के अनुसार निश्चित-समय पर ज्वर आता है। ज्वर के सब लक्षण उसी दिन, उसी समय, उसी घडी प्रकट होते है। ज्वर सुबह आ सकता है, शाम को भी आ सकता है, परन्तु पहली बार जिस समय आया अगली बार ठीक उसी समय आयेगा, और अगले जितने भी रोग के आक्रमण होगे उसी निश्चित समय पर होगे। किसी भी रोग मे अगर रोग का दुबारा आक्रमण बिलकुल घडी की चाल से हो, तो सिड्रन को नही भुलाया जा सकता, यह इस दृष्टि से मुख्य-औषधि है।

चायना—इस का रोग हर सातवें दिन उभरता है।

आर्सेनिक—इसका रोग १४ वें दिन या प्रति-वर्ष प्रकट होता है।

नक्स तथा सीपिया—इनका रोग २८ वें दिन प्रकट होता है।

(३) रोग का बायीं तरफ से दाहिनी तरफ़ जाना—टांसिल आदि रोगों में इसका रोग लैकेसिस की तरह बाईं तरफ से दाहिनी तरफ़ जाता है। गले का दर्द पहले बाईं तरफ होता है, बाईं से दाहिनी तरफ जाता है। इन दोनों में भेद यह है कि लैकेसिस में तो गर्म वस्तुओं से गले का दर्द बढ़ जाता है, गला दब-सा जाता है, गर्म वस्तुओं से पकड़ा-सा जाता है, इसीलिये वह ठंडी चीजें पीता है, परन्तु सैबेडिला को गर्म सेंक से तथा गर्म वस्तुएं खाने-पीने से आराम मिलता है, वह अंगीठी गर्म करके उसकी गर्म हवा से सांस लेना चाहता है।

(४) कृमि-रोग की प्रधान औषधि—बच्चों के पेट में छोटे-छोटे किचुओं, कीड़ों, फीते की तरह के कृमियों को दूर करने की यह अमूल्य औषधि है। कृमि से उत्पन्न सिर-दर्द आदि के लिये भी उपयोगी है। सिर की खोपड़ी में, गुदा-प्रदेश में, नाक में, कानों तथा शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में जो कृमि-रोग से खाज होती है, उस पर इसे दिया जाता है। इस दृष्टि से यह कीट-नाशक औषधि है। सिना तथा ट्यूक्रियम के सदृश यह कृमि-नाशक है। डा० कैन्ट लिखते हैं कि एक घरेलू कुत्ते को जो बार-बार अपने गुदा-प्रदेश को जमीन से घिसता था, गुदा की खाज के लक्षण पर उन्होंने सैबेडिला दिया और परिणामस्वरूप उसके पेट में से कृमियों के गुच्छे-के-गुच्छे निकल आये।

(५) रोगी के मानसिक लक्षण—रोगी न होता हुआ भी अपने को रोगी समझता है—इस रोगी के अजीब मानसिक-लक्षण होते हैं। वह रोगी नहीं होता, परन्तु अपने को रोगी समझता है। डा० हेरिंग ने इस लक्षण के आधार पर एक स्त्री को, जो गैस से पेट फूल जाने के कारण गर्भवती न होते हुए भी अपने को गर्भवती समझती थी, इस औषधि से ठीक कर दिया। रोगी समझता है कि उसका शरीर दुबला, क्षीण होता जा रहा है, उसके अंग टेढ़े-मेढ़े हैं, उसकी ठोडी लम्बी हो गई है। यह सब देखते हुए भी कि कुछ नहीं हुआ ख्याल में वह ऐसा समझा करता है। वह समझता है कि उसे गले का कोई भयंकर रोग हो गया है जिससे उसकी मृत्यु हो जायगी। इस प्रकार के काल्पनिक-लक्षण मानसिक-विभ्रम को सूचित करते हैं। थूजा की रोगिणी कल्पना किया करती है कि उसका शरीर कांच का बना हुआ है, ठोकर लगने से वह टूट जायगा। वह यह भी सोचा करती है कि उसके पेट में जिन्दा जानवर है, उसका आत्मा शरीर से अलग है, या कोई अपरिचित पुरुष उसके पास लेटा हुआ है। पल्स के रोगी की मिथ्या-धारणा होती है कि अपनी पत्नी से सहवास पाप है। ऐनाकार्डियम का रोगी कहता है कि उसके एक कन्धे पर शैतान और दूसरे कन्धे पर फरिश्ता बैठा है जो उससे बातें करते हैं, वह अपने को एक नहीं दो समझता है।

(६) शीत-प्रधान रोगी—यह रोगी शीत-प्रधान होता है, ठंड को सहन नहीं कर सकता, ज़रा-सी ठंड में सारा शरीर ठंड से थर-थर कांपता है। वह

ठडे कमरे मे, ठडी हवा मे नही रह सकता। गर्म पानी पीने से उसे आराम मिलता है। ऊपर हम लिख ही आये हैं कि यद्यपि **लैकेसिस** तथा **सैबैडिला** के गले के लक्षण बाईं तरफ़ से चलकर दाहिनी तरफ जाते हैं, तो भी **लैकेसिस** तो ठडा पानी पीता है, **सैबैडिला** गर्म पानी पीता है। ठडी वस्तु गले के नीचे उतारना उसे कठिन प्रतीत होता है, गर्म वस्तु ही वह खाना-पीना चाहता है।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३ से ३० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

सेबाल सेरुलेटा (SABAL SERRULATA)

मूत्राशय मूल-शायी ग्रन्थि का प्रदाह (Prostatitis)—इस औषधि का प्रभाव-क्षेत्र इतना सीमित है कि सिर्फ़ इसी वजह से इस औषधि का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है। प्रोस्टेट ग्लैंड के वढ जाने पर इसका विशेष प्रभाव है। प्रोस्टेट-ग्रन्थि का शोथ, उसका स्राव तथा उसके रोगो के लिये यह परीक्षित औषधि है। औषधि का अर्क १० से ३० बूंद तक लिया जा सकता है, परन्तु अगर वह ताजा होगा तभी उपयोगी होगा। ३ शक्ति की औषधि प्राय अधिक लाभ करती है।

सैबाइना (SABINA)

(१) **रक्त-स्राव की औषधि** (Hemorrhagic remedy); **रक्त-स्राव के साथ दर्द कमर से चल कर योनि के ऊपर उठी हुई हड्डी या जरायु तक जाता है**—यह रक्त-स्राव की प्रमुख-औषधि है। किसी प्रकार का भी रक्त-स्राव हो, गुर्दे से, मूत्राशय से, मल-द्वार से, बवासीर के मस्सो से, जरायु से। अगर कहीं से रक्त-स्राव हो रहा है, तो रक्त-स्राव की औषधियो की तरफ़ ध्यान देते हुए इस औषधि को भी ध्यान मे रखना आवश्यक है। इस औषधि का विशेष उपयोग जरायु से होने वाले रक्त-स्राव पर होता है। जरायु से रक्त-स्राव का मुख्य लक्षण है—'रक्त-स्राव के समय कमर मे दर्द'। यह दर्द कमर से उठता है, और सीधा योनि के ऊपर उठी हुई हड्डी या जरायु तक जाता है। असहनीय पीडा होती है। इस लक्षण के रक्त-स्राव को यह रोकती है।

रक्त-स्राव के साथ कमर से उठ कर योनि के ऊपर उठी हुई हड्डी तक जानेवाला दर्द **सैबाइना** तथा **वाइबर्नम** मे पाया जाता है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि दर्द उठता तो दोनो में कमर से ही है, किन्तु **सैबाइना** मे सीधा योनि के ऊपर की हड्डी या जरायु तक जाता है, **वाइबर्नम** मे सीधा न जाकर कमर के चारो ओर से होता हुआ योनि के ऊपर की हड्डी या जरायु तक पहुचता है।

रक्त-स्राव के साथ इस प्रकार का दर्द तीन अवस्थाओ मे पाया जाता है—जब 'अत्यधिक रक्त-स्राव' (Menorrhagia) हो, जब 'एक माहवारी

तथा दूसरी माहवारी के बीच के दिनो मे रक्त-स्राव' (Metrorrhagia) होता रहे तथा जब 'गर्भपात की आशका' (Threatened abortion) हो।

(२) **रक्त-स्राव अधिक; चमकीला लाल या काला, थक्के-थक्के, और फुव्वारे-सा फूटता है** (Flow is copious, dark, clotted and comes in gushes)—रक्त-स्राव कहीं का भी क्यो न हो, सैबाइना का रक्त अधिक परिमाण मे बहता है, चमकीला लाल या काला होता है, इसमे रक्त के थक्के मिले होते हैं, और बीच-बीच मे फव्वारे-सा फूटता है। हम क्योकि इस औषधि के जरायु पर विशेष-प्रभाव की चर्चा कर रहे हैं, इसलिये यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि रजोधर्म मे चाहे 'अतिरज' (Menorrhagia) हो, चाहे एक माहवारी से दूसरी माहवरी के बीच रज-स्राव (Metrorrhagia) हो, चाहे गर्भपात की आशका (Threatened abortion) से रज. स्राव हो, रक्त-स्राव की प्रकृति यही रहगी, अर्थात् रक्त-स्राव दर्द के साथ होगा, अधिक परिमाण मे होगा, काला-काला थक्केवाला होगा, और बीच-बीच मे फव्वारे का-सा फूटेगा। दर्द का वही लक्षण होगा जिसका हम ऊपर वर्णन कर आये हैं।

(३) **हर तीसरे महीने गर्भपात या गर्भपात की आशका**—अभी तीन प्रकार के जरायु-सबधी रक्त-स्राव का हमने वर्णन किया। इन तीनो रक्त-स्रावो मे से गर्भपात की आशका पर इस औषधि का विशेष प्रयोग होता है। जिन स्त्रियो को हर तीसरे महीने रक्त-स्राव के साथ गर्भपात हो जाता है, या तीसरे महीने रक्त-स्राव से गर्भपात की आशंका हो जाये, तो इस औषधि से लाभ होता है। तीसरे महीने होनेवाले गर्भपात को यह औषधि रोक देती है। तीसरे महीने गर्भपात को रोकने के लिये मुख्य तौर पर दो औषधियाँ हैं—**बेलाडोना** तथा **सैबाइना**।

i. **तीसरे महीने गर्भपात को रोकने का बेलाडोना का लक्षण**—'सवेदनशीलता' (Hyperaesthesia)—अगर रोगिणी अत्यन्त-संवेदनशील हो, स्पर्श, शब्द आदि को न सह सकती हो, नर्स जब बिस्तर बनाती हो तब चादर की जरा-सी भी फडकन न सह सके, जरायु से जो रुधिर जा रहा हो उसका बहना रोगिणी को अनुभव होता हो, उज्वल रक्त-वर्ण का रुधिर हो और इतना गर्म हो कि रोगिणी उसकी गर्मी अनुभव करती रहे, यह महसूस होता रहे कि रुधिर गर्म है, दर्द यकायक आये और यकायक चला जाये—इन लक्षणो के होने पर तीसरे महीने के गर्भपात को रोकने के लिये **बेलाडोना** औषधि होगी।

ii **तीसरे महीने गर्भपात को रोकने का सैबाइना का लक्षण—रक्त-स्राव के साथ दर्द कमर से चलकर योनि के ऊपर उठी हुई हड्डी** (Pubes) **या जरायु तक जाता है**—अगर तीसरे महीने गर्भपात हो जाता हो, या तीसरे महीने गर्भपात के लक्षण दिखलाई देने लगें, दर्द के साथ रक्त-स्राव होने लगे,

और यह दर्द कमर से चलकर योनि के ऊपर उठी हुई हड्डी जहा बाल उगते हैं वहा या जरायु तक चला जाय, तो इन लक्षणो के होने पर तीसरे महीने के गर्भपात को रोकने के लिये **सैबाइना** मुख्य-औषधि है। **सैबाइना** की रोगिणी गर्मी सहन नहीं कर सकती, ठडक पसन्द करती है। **सिकेल कौर** मे भी तीसरे महीने मे होनेवाले गर्भपात को रोकने का लक्षण है।

(गर्भपात को रोकने की अन्य मुख्य-मुख्य औषधिया)

i. **पहले महीने गर्भपात**—वाइवर्नम
ii. **दूसरे महीने गर्भपात**—एपिस, कैलि कार्ब
iii. **तीसरे महीने गर्भपात**—सैबाइना, सिकेल कौर, बेलाडोना, सीपिया, थूजा
iv. **तीसरे, पाँचवें, सातवें महीने गर्भपात**—सीपिया

(४) **लटकते रहनेवाले रक्त-स्राव** (Lingering hemorrhages) **में सल्फर या सोरिनम**—रक्त-स्राव के कई रोगियो को रक्त-स्राव का जीर्ण-रोग हो जाता है, पुराना-रोग। औषधि के सेवन से रक्त-स्राव एक बार रुक जाता है, परन्तु फिर किसी कारण से शुरु हो जाता है। प्राय उन स्त्रियो को जिन्हें गर्भपात हो चुका होता है, ऐसी शिकायत हो जाया करती है। जरायु के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का भी रक्त-स्राव ठीक हो-होकर फिर-फिर होने लगता है, फव्वारे-सा फूटता है। ऐसी दशा मे **सैबाइना** लाभ तो करेगा, परन्तु इस से चिर-स्थायी लाभ नहीं होगा। ऐसी हालत मे एन्टी-सोरिक दवा देनी होगी। **सल्फर** से लाभ होगा, **सल्फर** भी लाभ न करे तो **सोरिनम** से स्थिर लाभ होगा। **सल्फर और सोरिनम** दोनो एन्टी-सोरिक हैं।

(५) **रक्त-स्राव तथा गठिये मे पर्याय-क्रम**—जब रक्त-स्राव हो तब गठिया न रहे, जब गठिया प्रकट हो तब रक्त-स्राव चला जाय, इस प्रकार के पर्याय-क्रम मे गठिये को यह दवा ठीक कर देती है। हाथ की कलाई और पैर की अगुलियो मे सूजन वाले वात-रोग मे **सैबाइना**, हाथ की कलाई और पैर की अगुलियों की सूजन का वात-रोग स्थान परिवर्तन करता रहे, तो **कॉलो-फ़ाइलम**, और बडी-बडी मासपेशियो मे वात-रोग के दर्द मे **सिमिसिफ़्यूगा** लाभ करता है। स्त्रियो के इन वात-रोगो मे जरायु की कुछ-न-कुछ गडबडी होनी चाहिये।

(६) **सैबाइना का रोगी संगीत नहीं सह सकता**—संगीत इस रोगी को अधीर बना देता है, वह मानो उसकी हड्डियो तक को छेद देता है, सगीत को वह सहन नही कर सकता। **थूजा** का रोगी सगीत सुनकर रोने लगता है। ये दोनो सगीत को सहन नहीं कर सकते।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३, ३० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

सैंग्विनेरिया (SANGUINARIA)

GENERALS AND PARTICULARS व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग	MODALITIES प्रकृति
(१) दाहिनी तरफ आधे सिर मे दर्द जो सूरज के चढ़ने के साथ दाहिनी आंख पर जम जाय	लक्षणो मे कमी (Better) *ठंडी हवा से रोगो में कमी *नींद के बाद अन्धकार मे रोग घटना *लेटने से रोग का घटना *खट्टी चीज खाने से घटना
(२) सैंग्विनेरिया मे सिर के दायीं और स्पाइजेलिया मे बाईं तरफ दर्द होता है, सिर-दर्द का सूर्योदय-सूर्यास्त के साथ संबध	
(३) दाहिनी बाह और कन्धे मे 'वात-दर्द' (Rheumatic pain)	
(४) ३रे या ७वें दिन का सिर-दर्द	लक्षणो मे वृद्धि (Worse) *सूर्य की गर्मी से रोग वृद्धि *सामयिक तौर पर (Periodically) रोग का बढ़ना *हर सातवें दिन रोग-वृद्धि *रजोनिवृत्ति से रोग-वृद्धि
(५) गालों पर लाल रग का गोल दाग	
(६) ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया, तपेदिक मे ढीले खखार से ऐसी दुर्गन्ध जिससे रोगी को भी घिन आती है	
(७) रजोनिवृत्ति की शिकायतें	

(१) **दाहिनी तरफ आधे सिर मे दर्द जो सूरज के चढ़ने के साथ दाहिनी आँख पर आकर जम जाय**—ऐसा सिर-दर्द जो प्रात काल सूर्य के चढने के साथ शुरु हो, सिर की गुद्दी मे चलता हुआ ऊपर से होकर दाहिनी आख के ऊपर और सिर के दाहिनी तरफ आकर ठहर जाय, इस औषधि से अवश्य ठीक होता है। दिन को दर्द बढता है, प्रकाश मे दर्द और बढता है, रोगी अंधेरे कमरे मे बिस्तर पर जा लेटता है, इस मे उसे कुछ आराम मिलता है। दर्द के बाद उल्टी आ जाती है और उल्टी आने पर दर्द चला जाता है। यह दर्द शाम तक रहता है। अगर रात को बिस्तर पर लेटते हुए रोगी के हाथ-पैर जलते हो, वह उन्हें ओढन मे बाहर रखना चाहता हो, तो यह इस औषधि को पुष्ट करनेवाला एक अतिरिक्त लक्षण है। सोने मे रोगी को आराम मिलता है। इस प्रकार के दाहिनी तरफ के सिर-दर्द मे यह औषधि बहुत लाभ करती है। **बेलाडोना** मे भी सिर के दाहिनी तरफ दर्द होता है, परन्तु **बेलाडोना** के सिर-दर्द मे सिर मे रक्त की अधिकता होती है, उठकर बैठने से रक्त का वेग ऊपर जाना कम हो जाता है, इसलिये उठकर बैठने से उसे आराम मिलता है, सिर गर्म रहता है। **सैंग्विनेरिया** मे उठकर बैठने से नही, परन्तु लेटने से रोगी को आराम मिलता है।

(२) **सैंग्विनेरिया मे सिर के दायीं और स्पाइजेलिया मे बाईं तरफ दर्द होता है, सिर-दर्द का सूर्योदय-सूर्यास्त के साथ सम्बन्ध**—इस औषधि का दाहिनी तरफ प्रभाव है। अगर सिर की गुद्दी से उठकर दर्द दाहिनी आख पर आकर जम जाय, तो **सैंग्विनेरिया**, और अगर बायी आख के ऊपर आकर जम जाय, तब **स्पाइजेलिया** उचित औषधि है। इस औषधि के सिर-दर्द का सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ सबध है। यह सिर-दर्द प्रात काल शुरु होता है, दोपहर तक बढता जाता है, और दोपहर के बाद सूर्यास्त के साथ-साथ घटता जाता है। सिर की गुद्दी से यह दर्द शुरु होकर, सिर पर से होता हुआ, दायी आँख के ऊपर आकर ठहर जाता है। रोगी प्रकाश, गध, शोर, शब्द को सहन नहीं कर सकता। जब दर्द शिखर पर पहुच जाता है तब उसे पित्त की तथा खाये-पीये की कय हो जाती है।

(३) **दाहिनी बाँह और कन्धे मे वात-दर्द** (Rheumatic pain in right arm and shoulder)—जैसा हमने ऊपर कहा, इस औषधि का शरीर के दाहिने भाग पर विशेष प्रभाव है। जैसे यह सिर के दाहिने भाग मे दर्द को ठीक करता है, वैसे दाहिनी बाह और दाहिने कन्धे के वात के दर्द को भी ठीक करता है। अगर रोगी का चेहरा लाल हो जाय, वात-दर्द रात को बढे, दाहिनी तरफ हो, हरकत से दर्द तेज हो जाय, चुप पडे रहने से आराम हो, तो **सैंग्विनेरिया** औषधि है, अगर रोगी का चेहरा पीला पड जाय, वात-दर्द रात के बजाय दिन को हो, दर्द बायी तरफ हो, और हल्की हरकत से रोगी को आराम मिले, तो **फेरम मेटेलिकम** औषधि है। बायी तरफ की बाँह और कन्धे के दर्द मे **नक्स मोस्केटा** से भी लाभ होता है।

(४) **तीसरे या सातवें दिन का सिर-दर्द**—इस औषधि मे तीसरे या सातवें दिन सिर-दर्द का लक्षण पाया जाता है। सातवें दिन के सिर-दर्द में **सैंग्विनेरिया, साइलीशिया** तथा **सल्फर** लक्षणानुसार तीनों उपयुक्त हैं। जो सिर-दर्द हर दो सप्ताह बाद आता है वह **आर्सेनिक** से ठीक होता है।

(५) **गालो पर लाल रंग का गोल दाग**—ब्रोकाइटिस, न्यूमोनिया और तपेदिक मे दोपहर के बाद अगर रोगी के गालो पर लाल रग का गोल दाग पड जाय, तो यह इस औषधि का विशेष-लक्षण है।

(६) **ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया, तपेदिक मे ढीले खखार से ऐसी दुर्गंध जिस से रोगी को भी घिन लगती है**—जब ब्रोकाइटिस या न्यूमोनिया का तीव्र आक्रमण हो, तब रोगी की छाती से ढीली खखार आती है जिस मे से ऐसी दुर्गंध उठती है जिस से रोगी को स्वय बदबू आती है, दूसरो की तो बात ही क्या है। ऐसा लगता है कि रोगी को तपेदिक हो जायगी। रोगी श्वास-प्रणालिका के इस रोग से अत्यन्त कमजोर हो जाता है, ठड को बर्दाश्त नही कर सकता, ऋतु-

परिवर्तन, हवा का झोका उसे परेशान कर देता है। वक्षोस्थि (Sternum) के पीछे छाती मे जलन होती है, छाती से गाढा, लसदार, मृत-सा कफ निकलता है, हाथ-पैर जलते हैं, रोगी को क्षय होनेवाला ही होता है। ऐसे रोगियो को प्राय हाथ-पैर की जलन के कारण चिकित्सक सल्फर दिया करते हैं, परन्तु इस से रोगी को नुकसान होता है। इस अवस्था में सल्फर नहीं देनी चाहिये। हनीमैन का कथन है कि क्षय-रोग को आता देखकर इस अवस्था मे फॉसफोरस भी नही देनी चाहिये, उस मे भी हानि होगी। इस अवस्था मे सैंग्विनेरिया रोग को दूर तो नही करेगा, परन्तु रोगी के कष्ट को कुछ हद तक कम कर देगा।

(७) रजोनिवृत्ति को शिकायतें (Complaints of climacteric period)—एक खास आयु मे आकर स्त्रियो का रजोधर्म वन्द हो जाता है। रजोनिवृत्ति के समय के निम्न-प्रकार के अनेक कष्ट इस से दूर हो जाते हैं। लैकेसिस और सल्फर से लाभ न हो, तो सैंग्विनेरिया से लाभ होता है—

i रजोनिवृत्ति के समय आधे सिर मे दर्द होने लगता है

ii माहवारी वन्द होने से रोगिणी की हथेली और तलुओ से आग के शोले-से निकलते हैं

iii. रज के वन्द होने से स्तनो का वढ जाना और उनमे दर्द होना—इस औषधि से ठीक हो जाता है

(८) शक्ति तथा प्रकृति—सिर-दर्द मे मूल अर्क, वात-रोग मे ६ शक्ति प्राय प्रयुक्त होती है, परन्तु २०० शक्ति का भी प्रयोग हो सकता है। औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है।

सार्सापैरिला (SARSAPARILLA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) गुर्दे का दर्द (Renal colic), बरबेरिस तथा सार्सापैरिला की तुलना

(२) पथरी हो तो पेशाब रखने से सफेद तलछट नीचे बैठ जाता है और पेशाब कर चुकने के बाद अत्यन्त दर्द होता है (सार्सा, लाइको तथा बरबेरिस की तुलना)

(३) पेशाब कर चुकने के बाद कराहने का-सा दर्द

(४) रज स्राव के दिनो मे पेशाब की शिकायत नहीं रहती

(५) बैठकर पेशाब करने से मूत्र बूद-बूद आता है, खडे होकर पेशाब करने से ठीक-से होता है

(६) मूत्र-नली से हवा खारिज होती है

(७) बच्चो तथा बूढ़ो के सूके के रोग मे उपयोगी है

(८) दबे हुए सुजाक से सिर-दर्द हो जाया करता है

(९) रोगी ठडा भोजन, ठडा पानी पीना चाहता है, परन्तु शरीर के बाहर त्वचा पर गर्म सेक से उसे आराम मिलता है

(१) **गुर्दे का दर्द (Renal colic); बरबेरिस तथा सार्सापैरिला की तुलना**—गुर्दे के दर्द मे जैसे **बरबेरिस** उत्तम है, वैसे **सार्सापैरिला** भी इस दर्द मे उत्तम लाभ करती है। डॉ० हैरिंग ने गुर्दे की दर्द के सबध मे इस औषधि के अनेक गुण गाये हैं। खासकर 'वात-रोग' (Rheumatism) से पीडित व्यक्तियो के गुर्दे मे पथरी बन जाने और उसके निकलने के समय होनेवाले दर्द मे इस से लाभ होता है। डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि यह औषधि मूत्राशय की पथरी को घोल देती है। यह मूत्र की प्रकृति को ही इस प्रकार बदल देती है कि पथरी बनना ही बन्द हो जाता है, और जो बनी होती है वह मूत्र की प्रकृति के बदल जाने से घुल-घुल कर छोटी हो जाती है। **सार्सापैरिला** देने से गहरे रग का रुधिर-तथा-श्लेष्मा-मिश्रित-मूत्र जिसमे पथरी के कण मिले रहते हैं, साफ रग का हो जाता है। जब इस औषधि से मूत्र साफ रग का हो जाने के बाद फिर गदला होने लगे, तब इस औषधि की दूसरी मात्रा देने का समय आ गया—यह समझना चाहिये। वे लिखते है कि एक रोगी के मूत्राशय मे पथरी इतनी बडी थी कि डाक्टरो ने उसे ऑपरेशन की सलाह दी। उसे डॉ० कैन्ट ने **सार्सापैरिला** से ठीक कर दिया। पथरी घुलकर निकल गई।

(२) **पथरी हो तो पेशाब रखने से सफेद तलछट नीचे बैठ जाता है और पेशाब कर चुकने के बाद अत्यन्त दर्द होता है (सार्सा, लाइको, बरबेरिस की तुलना)**—इस औषधि तथा **लाइकोपोडियम** की पथरी के लक्षण मे भेद यह

है कि लाइको मे पेशाव को किसी वर्तन मे रखने से लाल चूरा नीचे बैठ जाता है, इसमे लाल की जगह सफेद रेत-के-से कण पेशाव के नीचे वैठ जाते हैं। लाइको मे पथरी का दर्द गुर्दे के दाहिनी तरफ से उठता है, **बरबेरिस** मे वायी तरफ से। वरवेरिस मे नाभि के केन्द्र-स्थल से दर्द उठकर चारो तरफ फैल जाता है, **सार्सापैरिला** मे पेशाव कर चुकने के वाद रोगी को अत्यन्त दर्द होता।

(३) **पेशाव कर चुकने के वाद कराहने का-सा दर्द**—इस औपधि मे पथरी के दर्द का विशेप-लक्षण यह है कि पेशाव करने से पहले या पेशाव करते समय रोगी को इतना दर्द नही होता जितना पेशाव करने के वाद होता है। रोगी दर्द से चिल्लाने लगता है। छोटे वच्चे जिन्हें पथरी का दर्द होता है पेशाव करने से पहले भी चिल्ला उठते हैं। इसका कारण यह है कि पेशाव के वाद जो दर्द उन्हें हुआ करता है उसकी याद आते ही वे पेशाव से पहले भी चिल्लाया करते हैं, परन्तु इसका दर्द मुख्य तौर पर पेशाव करने के वाद होता है। यह लक्षण मूत्राशय के रोग मे हीरे के समान है। अगर किसी अन्य कारण से भी पेशाव रुक जाय, और यह लक्षण मिले, तो इस औपधि से अवश्य लाभ होगा। डॉ० केस ने मूत्र रुक जाने पर इस लक्षण के होने पर अनेक रोगी ठीक किये। **कैन्थरिस** तथा **मर्क सौल** मे भी पेशाव के साथ दर्द का लक्षण है, परन्तु इनमे पेशाव से पहले या पेशाव करना शुरु करने के समय दर्द होता है, **सार्सा** मे पेशाव करने के वाद दर्द होता है।

(४) **रज स्राव के दिनो मे पेशाब की शिकायत नहीं रहती, फिर शुरु हो जाती है**—इसका एक विशेप-लक्षण यह है कि जव रज स्राव होता है तव पेशाव की तकलीफ, जो-कोई भी हो, तवतक के लिये रुक जाती है, उन दिनो नही होती, परन्तु ज्यो ही रज स्राव वन्द होता है, पेशाव की तकलीफ फिर शुरु हो जाती है, और जवतक अगला रज स्राव नही आ जाता तवतक वनी रहती है।

(५) **बैठकर पेशाव करने से मूत्र बूंद-बूंद आता है, खडे होकर करने से ठीक-से होता है**—इसका एक विशेष-लक्षण यह है कि रोगी जब बैठकर पेशाव करता है, तव वूंद-वूंद टपकता है, जव खडा होकर करता है तव ठीक-से पेशाव होता है। स्त्रियो के सवध मे इस लक्षण का विशेष महत्व है। **कॉस्टिकम, कोनीयम** तथा **हाइपेरिकम** मे भी खडे होकर रोगी आसानी से पेशाव करता है। **जिकम** मे रोगी सिर्फ बैठकर पेशाव कर सकता है, या उसे पेशाव के लिये पीठ की तरफ झुकना पडता है।

(६) **मूत्र-नली से हवा खारिज होती है**—इस औषधि का एक अद्भुत-लक्षण यह है कि रोगी की मूत्र-नली से हवा खारिज होती है। पथरी के कारण या अन्य किसी भी कारण से मूत्राशय मे श्लैष्मिक-झिल्ली की सड़ाद के कारण जो गैस बनती-रहती है वही हवा के रूप में मूत्र-नली से खारिज होती है।

(७) **बच्चो तथा बूढ़ो के सूके के रोग (Marasmus) मे**—बच्चो के सूके के रोग मे गर्दन विशेष रूप मे दुबली हो जाती है। शरीर की त्वचा मे झोल पड जाते हैं। जिन बच्चो को माता-पिता के उपदश-रोग के वशानुगत होने से सूका हो जाता है उनके लिये यह उत्तम औषधि है। बच्चो के अतिरिक्त वृद्ध-व्यक्तियो के लिये भी यह औषधि उपयोगी है। शरीर के सब अग शिथिल हो जाते हैं, रुधिर का ठीक-से सब अगो मे सचार नही हो पाता, वैरिकोज वेन्स (Varicose veins) का रोग हो जाता है, बवासीर मे नीले मस्से बन जाते हैं, मुख पर नीले धब्बे पड जाते हैं, हाथ-पैर की पीठ पर भी ऐसे नीले धब्बे दीखने लगते हैं। यह-सब वृद्धावस्था मे रुधिर के सचार की कमी के कारण होता है। सारे शरीर पर रुधिर की शिथिलता की छाप पड जाती है। इस अवस्था मे यह औषधि लाभप्रद है।

(८) **दबे हुए सुजाक से सिर-दर्द**—सुजाक को ठीक करने के बजाय उसे तेज़ दवाओ से दवा देने पर अगर सिर-दर्द का लक्षण प्रकट हो जाय, तो इस से लाभ होता है।

(९) **रोगी ठडा भोजन, ठडा पानी चाहता है, परन्तु शरीर के बाहर त्वचा पर गर्म सेक से आराम होता है**—ठड और गर्मी के विषय मे इस औषधि का विचित्र-लक्षण यह है कि रोगी खाने को तो ठडी वस्तुए पसन्द करता है, ठडा भोजन, ठडा पानी चाहता है, परन्तु शरीर की त्वचा पर ठडक पसन्द नही करता, त्वचा पर गर्म कपडा ओढना पसन्द करता है।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—१ से ६ (नमी से रोग वढता है, पेशाब करने के बाद रोग वढता है, रज स्राव के दिनो मे रोग घटता है)

[पित्त-पथरी तथा मूत्र-पथरी की मुख्य-मुख्य औषधिया]
(BILIARY AND URINARY STONE)

पित्त-पथरी—पथरी दो तरह की होती है—पित्त-पथरी तथा मूत्र-पथरी। 'पित्त-कोष' (Gall bladder) मे 'पित्त-रस' (Bile) जम जाय, तो पित्त-पथरी बन जाती है। जबतक यह पित्त-कोष मे पड़ी रहती है तबतक दर्द नही करती। जब 'पित्त-नली' (Biliary duct) मे आ फसती है तब दर्द करती है। पेट मे थोडा-बहुत या ज़ोर-का दर्द उठता है। पित्ताशय दाहिनी तरफ है इसलिये यह दर्द दाहिनी कोख से उठकर चारो तरफ फैल जाता है। दर्द कई घटे से कई सप्ताह तक रह सकता है। पित्त ड्यूडीनम मे जाती है, इसलिये पित्त-पथरी के कण जब ड्यूडीनम मे पहुच जाते हैं तब दर्द समाप्त हो जाता है। टट्टी को धोने से पथरी के कण हाथ मे आ जाते हैं। पित्त-पथरी १०० मे १० को, और १० मे भी ज्यादातर स्त्रियो को होती है, पुरुषो को कम। आक्रमण के समय

ठडा पसीना, नाडी कमज़ोर, चेहरे पर पीलापन, सास में कष्ट होता है, कय के लक्षण बहुत कम पाये जाते हैं, कय के लक्षण गुर्दे के दर्द मे ज़्यादा पाये जाते हैं।

मूत्र-पथरी—मूत्र-पथरी 'पित्त-कोश' मे नही, 'मूत्र-पिण्ड' (Kidney) मे बनती है। जबतक 'मूत्र-पिण्ड' मे रहती है तबतक या तो दर्द नही होता या होता है, तो कमर मे धीमा-धीमा। 'मूत्र-पिण्ड' से खिसककर पथरी 'मूत्र-नली' (Ureter) मे आ सकती है, वहा से होती हुई 'मूत्राशय' (Bladder) मे आ सकती है। जब पथरी 'किडनी' (मूत्र-पिण्ड) से खिसककर 'यूरेटर' (मूत्र-नली) मे आती है, तब कमर से अण्डकोशो तक असह्य-दर्द होता है, इसी को 'गुर्दे का दर्द' (Renal colic) कहते हैं। यह दर्द कभी-कभी नीचे पैर तक फैल सकता है। इसमे कय, पसीना होता है, पीलपन नही होता, पीलापन तो पित्त-पथरी मे पाया जाता है। इसमे पेशाब का कोई-न-कोई कष्ट होता है, बूद-बूद आता या एकदम बन्द हो जाता है। मूत्र-पथरी के दर्द मे पित्त-पथरी या अपैंडिक्स के दर्द का भी भ्रम हो जाया करता है। यह प्राय पुरुषो का रोग है। पेशाब रखने से सफेद या लाल तलछट बैठ जाता है, पेशाब मे पस या खून आ सकता है ।

[पित्त-पथरी की औषधिया]
(BILIARY OR GALL STONE DRUGS)

कैलकेरिया कार्ब ३०, २००—डॉ० सैण्ड्स मिल्स तथा डॉ० ह्यूजेज़ लिखते हैं कि पित्त-पथरी का कष्ट दूर करने के लिये **कैलकेरिया कार्ब** अत्युत्तम औषधि है। पन्द्रह-पन्द्रह मिनट का अन्तर देकर यह दवा देनी चाहिये । तीन घटे मे दर्द दूर हो जाता है।

बरबेरिस वलगेरिस—यदि **कैलकेरिया** से दर्द बन्द न हो, तो बरबेरिस टिंचर की १०,२० बूद बीस-बीस मिनट बाद या ६ शक्ति मे यह दवा देनी चाहिये ।

कोलेस्टरीन २ x या ३ विचूर्ण—यह गॉल-स्टोन (पित्त-पथरी) से बना नोसोड है। डॉ० बर्नेट और डॉ० स्वान ने पित्त-पथरी मे इसे बहुत उपयोगी पाया है। डॉ० यिंगलिंग लिखते हैं कि 'पित्त-पथरी के दर्द' (Gall-stone pain) मे रोगी के लक्षण पाना बहुत कठिन होता है। उन्होने इस दर्द मे **कोलेस्टरीन** ३ शक्ति के विचूर्ण को बहुत उपयोगी पाया है।

दुबारा आक्रमण को रोकने के लिये सिनकोना (चायना ६ x)—डॉ० फैरिंगटन लिखते हैं कि बोस्टन के डॉ० थेयर का कथन है कि पित्त-पथरी की प्रवृत्ति रोकने के लिये **चायना** ६ x का कई महीने तक प्रयोग करना चाहिये। पहले १० दिन तक रोज़ दो बार दे, फिर दो-तीन दिन का नागा देकर १० दिन तक दे, फिर चार-पाच दिन का नागा देकर १० दिन तक दे, नागा के दिनो को

बढ़ाता जाय, और कुछ महीने लगातार यह इलाज चलाये। इससे रोग जड-
मूल से चला जाता है।

[मूत्र-पथरी की औषधिया]
(URINARY STONE DRUGS)

हाइड्रेन्जिया—पेशाव मे सफेद तलछट या खून। गुर्दे का दर्द, खासकर
बाई पीठ मे दर्द। 'मूत्र-नली' (Ureter) पर इसका विशेष प्रभाव है। ५ से
१० बूद टिंचर दिन मे ३-४ बार दें।

सोलिडेगो—पेशाव बहुत कम आता है, गुर्दे का दर्द (Renal colic)
पेट तथा मूत्राशय तक जाता है। इस के प्रयोग से कभी-कभी कैथीटर के इस्तेमाल
की भी जरूरत नही पडती। टिंचर या ३ शक्ति मे औषधि का प्रयोग करें।

लाइकोपोडियम—मूत्र मे लाल कण के तलछट बैठ जाते हैं। पेशाव करने
से पहले कमर मे दर्द होता है, पेशाव कर चुकने के बाद दर्द बन्द हो जाता
है। पेशाव धीरे-धीरे आता है, जोर लगाना पडता है, कभी-कभी रुक भी जाता
है। **लाइको** २०० शक्ति देने से मूत्र-पथरी वनने की प्रवृति रुक जाती है।

अर्टिका उरेन्स—अगर लाइको से लाभ न हो, और रोगी मे यूरिक
ऐसिड वनने की प्रवृत्ति हो, तो इससे लाभ होता है। टिंचर या ६ शक्ति का
होता है।

कैलकेरिया कार्ब तथा बरबेरिस—ये दोनो दवाए जैसे पित्त-पथरी मे
लाभप्रद हैं वैसे मूत्र-पथरी मे भी लाभप्रद है।

ओसिमम कैनम (तुलसी के पत्ते का रस)—रोगी मे यूरिक ऐसिड की
प्रवृत्ति, पेशाव मे लाल तलछट, गुर्दे का दर्द—खास तौर पर दाईं तरफ।
६, ३०, २०० शक्ति मे यह औषधि दी जा सकती है।

सार्सापैरिला—इसके पेशाव का तलछट सफेद होता है, **लाइको** का लाल।
डॉ० हेरिंग इस औषधि के बडे भक्त थे। पथरी तथा गुर्दे के दर्द की यह उत्तम
औषधि है, रोगी की तकलीफें गर्म खाने-पीने से बढती हैं किन्तु गर्म सेक से
उसे आराम मिलता है। इसका विशेष-लक्षण यह है कि रोगी को पेशाब के अन्त
मे असह्य-कष्ट होता है। बच्चो मे प्राय देखा जाता है कि पेशाव कर चुकने
के बाद वे इस दर्द से चिल्लाते हैं। पेशाब के आखीरी हिस्से मे खून आता है।
बैठकर पेशाव करने से बूद-बूद निकलता है, खडे होकर आसानी से आ जाता है।

सिकेल कौरनूटम—अर्गट, SECALE CORNUTUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) गर्भपात या प्रसव के बाद जरायु का मल साफ़ करने के लिये स्थूल-अर्गट का प्रयोग

(२) तीसरे महीने के गर्भपात को रोकने के लिये सिकेल का प्रयोग

(३) निरन्तर रक्त-स्राव से बेहद कमज़ोरी मे सिकेल का प्रयोग

(४) प्रसव-वेदना हल्की हो तब प्रसव-वेदना बढ़ाने के लिये भी इसका प्रयोग होता है

(५) पतली-दुबली, कमज़ोर शारीरिक-रचना की स्त्रियों तथा अत्यत क्षीण, वृद्ध-पुरुषों के लिये

(६) बाहर से त्वचा ठंडी परन्तु भीतर से जलन का अनुभव होना इसका विचित्र-लक्षण है

(७) रोगी को ठंडक से आराम मिलता है

(८) गैंग्रीन मे परिणत हो जानेवाली शोथ की जलन मे सिकेल के रोगी को ठडक से और आर्सेनिक के रोगी को गर्मी से आराम मिलता है

(९) हाथ-पैर की अगुलियाँ अलग-से फैल जाती और उल्टी तरफ़ मुड़ जाती हैं (क्यूप्रम से उल्टा)

(१) गर्भपात या प्रसव के बाद जरायु का मल साफ करने के लिये स्थूल-अर्गट का प्रयोग—इस औषधि का स्थूल रूप मे नातजुर्बेकार चिकित्सक या तो गर्भपात के लिये प्रयोग करते हैं, या एलोपैथी मे इसके टिक्चर का, और आयुर्वेद मे इसके क्वाथ का प्रसव के बाद जरायु के मल को साफ करने के लिये प्रयोग होता है। प्रसव के बाद जो प्रसव-पीडाएं बच रहती हैं (Lingering pains) और जिन मे जरायु के मल के पूर्ण रूप से साफ न होने के कारण थोड़ा-बहुत स्राव होता रहता है, उसके लिये वैद्य लोग इसका क्वाथ दिया करते हैं। प्रसव के समय जरायु मे जो शिथिलता आ जाती है उसे दूर कर इसका क्वाथ उसे सकुचित कर देता है, और जरायु अपनी पहले की-सी अवस्था मे आ जाता है, जरायु का मल साफ हो जाता है, थोडा-बहुत होनेवाला रक्त-स्राव दूर हो जाता है, दर्द जाते रहते हैं।

जहा तक गर्भपात का प्रश्न है, होम्योपैथी का शक्तिकृत सिकेल कौर गर्भपात जैसे कुकर्म मे सहायता नही करता, अलबत्त गर्भपात को रोक अवश्य देता है। इसका हम अभी आगे वर्णन करेंगे। डॉ० कैन्ट का कहना है कि कई स्त्रिया इतनी मूर्खा होती हैं कि जिस-किसी तरह भी वे गर्भ गिराना ही चाहती हैं। वे प्राय अर्गट लिया करती हैं। उन्हें नही मालूम कि इस प्रकार वे किसी चिर-स्थायी रोग की शिकार हो जाती हैं और अपनी आयु घटा लेती हैं। जिस

प्रकार सोरा-दोष मनुष्य के रोगो को समूल नष्ट नही होने देता, उसी प्रकार अर्गट से गर्भपात करा लेनेवाली स्त्रियाँ अर्गट-दोष के अधीन हो जाती हैं। उन्हें अर्गट की स्थूल मात्रा से गर्भपात होने के बाद से अनेक रोग हो जाते हैं, वे कहा करती हैं कि जब से गर्भपात हुआ तब से तबीयत ठीक नही रहती, स्वास्थ्य तो तब से जाता ही रहा है। डॉ० कैन्ट कहते हैं कि अर्गट के इस प्रकार के प्रयोग से जब स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है, तब वह फिर सुधरता नही है। डॉ० पैंगोट का कथन है कि जबतक जरायु मे कुछ भी हो—भ्रूण हो, बच्चा हो, नार-बेल हो, रुधिर का थक्का ही क्यो न हो, स्थूल-अर्गट का तबतक प्रयोग नहीं करना चाहिये। अर्गट ही लैटिन भाषा मे **सिकेल कौरनूटम** कहा जाता है।

यह तो हुआ गर्भपात के विषय मे। अब रहा—प्रसव के बाद जरायु का मल साफ करने के लिये, स्थूल-अर्गट का प्रयोग। होम्योपैथी का कथन है कि इस के लिये स्थूल-अर्गट की अपेक्षा शक्तिकृत **सिकेल** अधिक अच्छा काम करता है। डॉ० एलन का कथन है कि स्थूल-अर्गट हानिकर है, शक्तिकृत अर्गट (**सिकेल**) से हानि की समावना नही रहती।

(२) **तीसरे महीने के गर्भपात को रोकने के लिये सिकेल का प्रयोग**—इस औषधि की स्थूल-मात्रा से गर्भपात हो जाता है यही इस बात का प्रमाण है कि शक्तिकृत **सिकेल** गर्भपात को रोक देता है। जिन स्त्रियो को तीसरे महीने गर्भ-पात होने की प्रवृत्ति होती है उनके लिये **सैबाइना** की तरह यह भी उत्तम औषधि है। गर्भपात के विषय में महीनेवार औषधियो का परिगणन हम **सैबा-इना** में कर आये हैं। पहले महीने के गर्भपात की प्रवृत्ति मे **वाइबर्नम**, दूसरे महीने के लिये **एपिस** तथा **कैलि कार्ब**, तीसरे महीने के लिये **सैबाइना**, **सिकेल**, **बेलाडोना**, **सीपिया** तथा **थूजा**, तीसरे-पाचवें-सातवें के लिये सीपिया के लक्षण देखने चाहियें।

(३) **निरन्तर रक्त-स्राव से बेहद कमजोरी मे सिकेल का प्रयोग**—शरीर के किसी भी अग से—नाक, मूत्राशय, गुदा-प्रदेश, जरायु आदि से—निरन्तर रक्त-स्राव होनें पर अगर सीमातीत, बेहद कमजोरी हो जाय, तो इस औषधि से लाभ होता है। जब यह गर्भपात को रोक देता है तब अन्य प्रकार के रक्त-स्राव को रोकने मे इसका उपयोगी होना स्वय-सिद्ध है। इसके रक्त-स्राव का विशेष-लक्षण यह है कि काला, पतला रक्त-स्राव निरन्तर होता रहता है और इस से रोगी अपने को अत्यन्त दुर्बल, शक्तिहीन अनुभव करता है। जरायु से रक्त-स्राव हो, तो वह एक माहवारी से दूसरी माहवारी के बीच मे लगातार बना रहता है, परन्तु उसका रूप पतला, पनीला, काला होता है, और इस प्रकार का रुधिर निरन्तर रिसा करता है। कमजोरी बेहद हो जाती है। रोगिणी को खुली हवा की उत्कट इच्छा होती है, शरीर मे जलन होती है, कपडा ओडना नही चाहती।

(४) प्रसव-वेदना हल्की हो तब प्रसव-वेदना बढ़ाने के भी लिये इसका प्रयोग होता है—डॉ० कौपरवेथ का कहना है कि एलोपैथी मे प्राय हल्की प्रसव-वेदना मे प्रसव को सहायता देने और प्रसव-वेदना को तीव्र करने के लिये स्थूल मात्रा मे इस औषधि का प्रयोग होता है। रोगिणी के भावी स्वास्थ्य के लिये यह प्रथा हानिकर है। डॉ० गुएरेन्सी का कहना है कि हल्की प्रसव-वेदना



"औबस्टैरिक्स" (१८६६) के लेखक
डा० हैनरी एन०गुएरेन्सी

मे, या जब रोगिणी प्रसव न होने से परेशान हो रही हो, तब २०० शक्ति की एक मात्रा प्रसव मे अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। डॉ० डनहम का कहना है कि हल्की प्रसव-वेदना मे लक्षणानुसार पल्सेटिला तथा नक्स वोमिका अत्युतम कार्य करते हैं।

(५) पतली-दुबली, कमजोर शारीरिक-रचना की स्त्रियों तथा अत्यन्त क्षीण, वृद्ध-पुरुषो के लिये उपयोगी है—इस औषधि का प्रयोग करते हुए रोगी या रोगिणी की शारीरिक-रचना पर भी ध्यान देना आवश्यक है। रोगिणी पतली-दुबली, कमज़ोर शरीर की होती है, हड्डिया निकली हुईं, शरीर पर झुरिया पडी हुई, मास-मज्जा बहुत कम। ऐसी शारीरिक-रचना की स्त्रियो के लिये यह औषधि विशेष उपयोगी है। सिकेल के रोगी का शरीर क्षीण होता है, त्वचा साफ नही होती, उस पर नीले-भूरे दाग और झुरिया पड़ जाती हैं। शरीर के जिन भागो में रक्त-संचार कम रहता है—हथेली के पीछे का भाग, घुटने के नीचे की टीबिया हड्डी के ऊपर की त्वचा आदि—उन पर खून कम होने के

कारण धब्बे पड़ जाते हैं। ये स्थान सुन्न पडने लगते हैं, उनमें झनझनाहट होती है, ऐसा अनुभव होता है कि त्वचा के और मास के बीच मे कीडे रेंग रहे हैं। अगुलिया और पैर के अगूठे मृत-प्राय हो जाते हैं, ऐसा लगता है मानो काठ के हों। यह अवस्था स्त्रियो मे ही नही, वृद्ध-पुरुषो मे भी पायी जाती है। रक्त-सचार करने वाली प्रणालिया सिकुड जाती हैं, खून का खुला दौर नही होता। इसका यह अभिप्राय नही है कि स्थूल-काय व्यक्तियो में इस औषधि का प्रयोग नहीं होता, लक्षण मिलने पर उनमें भी यह औषधि लाभ करती है। इस औषधि के प्रयोग से रक्त-सचार ठीक होने लगता है, और वृद्ध-व्यक्तियो के शरीर की क्षीणता रुक जाती है। जिन वृद्ध-व्यक्तियो के शरीर मे रक्त-सचार शिथिल हो जाता है, पतले-दुबले, झुर्रियो वाले, जिनकी रक्त-सचार करने वाली प्रणालिकाए सिकुड जाती हैं, हाथ-पैर तक रुधिर नही जाता, अग लकडी के-से प्रतीत होते हैं, उनके लिये यह औषधि उपयोगी है, रक्त-सचार मे सहायता पहुचाती है।

(६) **बाहर से त्वचा ठंडी परन्तु भीतर से जलन**—जलन इस औषधि का लक्षण है, त्वचा जलती है, हाथ-पैर जलते हैं। इस जलन का विशेष-लक्षण यह है कि बाहर से छूने पर तो अग ठडा लगता है, परन्तु भीतर से रोगी को जलन अनुभव होती है। गला, मुह, फेफडे, पेट, आतें—इन सब मे रोगी को जलन के साथ खुश्की का अनुभव होता है।

(७) **रोगी को ठडक से आराम मिलता है**—रोगी के लक्षण गर्मी से बढते हैं, ठडक से उसे आराम मिलता है। जैसा ऊपर कहा गया है, इसका विलक्षण-लक्षण यह है कि यद्यपि हाथ से छूने पर अग बर्फ के समान ठडे अनुभव होते हैं, तो भी रोगी ठडक ही पसन्द करता है, शरीर पर कपडा रखना नही चाहता, दरवाज़े-खिडकिया खुली रखना चाहता है। रक्त-स्राव मे, भले ही कमरा ठडा हो, रोगी कपडे से शरीर ढाकना नही चाहता। कोई ज़ख्म हो, उसे ठडक ही चाहिये, सेक या गर्मी नही चाहिये, ज़ख्म को ढकने भी नही देता। पेट की शिकायत हो, आतो की शिकायत हो, रोगी को ठडक पसन्द है, गर्मी नही। बाहर ठडक और भीतर जलन का अद्भुत-लक्षण कई बार अनेक कठिन रोगो मे सिकेल द्वारा ठीक हो जाता है। इस सबध मे डॉ० चैरेट जो पहले एलोपैथ थे अपना अनुभव लिखते हुए कहते हैं कि एक रोगी जिसकी धमनिया सकुचित हो गयी थी, जिसके पाव मे रक्त न पहुचने के कारण उनमें गैंग्रीन—सडांद—हो गयी थी, पैर सडने लग गये थे, पैरों मे दर्द के कारण अत्यन्त परेशान था, उनके पास इलाज के लिये आया। एलोपैथी मे इसके लिये जो दवा हो सकती थी वह उन्होंने उसे लिखकर दे दी, और कुछ दिन बाद जब उनकी रोगी से भेंट हुई, तो कहने लगा कि उसका रोग ठीक हो गया है।

डॉक्टर ने पूछा कि क्या उन पुड़ियों से पेट मे दर्द तो नहीं हुआ ? रोगी कहने लगा—कैसी पुड़िया, मैंने तो तुम्हारा नुस्खा कैमिस्ट को भेज दिया था और उसने एक शीशी मे कुछ द्रव-पदार्थ भेजा था, उस पर प्रतिदिन ४ चम्मच लेने के लिये लिखा था, वही मैंने लिया, पुड़िया तो कैमिस्ट ने मुझे कोई नहीं भेजी। उसी शीशी से मै ठीक हो गया। यह सुनकर डॉ० चैरेट कैमिस्ट के पास गये, और उस से पूछा कि तुमने मेरे मरीज को क्या दवा भेजी थी। कैमिस्ट शराबी था, उसने गलती मे एक दूसरे मरीज के लिये एक होम्योपैथ ने जो नुस्खा लिखा था वह दवा इस मरीज को भेज दी थी। उस नुस्खे को देखा गया, तो पता चला कि होम्योपैथ ने किसी दूसरे मरीज के गैंग्रीन के लिये शुद्ध जल मे सिकेल कौर के टिंचर का एक बूंद डाल कर देने को लिखा था। डॉ० चैरेट को इस से आश्चर्य हुआ। उन्होंने होम्योपैथी की पुस्तकों से इसका लक्षण देखना चाहा। वहा लिखा था कि रोगी का अग छूने को बर्फ-सा ठंडा होता है और फिर भी वह अग पर बाहर ठडक पसद करता है। गैंग्रीन के इस रोगी का पाव छूने मे अत्यन्त ठडा था, परन्तु वह उसे विस्तर से बाहर रखकर उसपर ठडे पानी की पट्टी लगाता रहता था। डॉ० चैरेट तो एलोपैथ थे, इसलिये इस लक्षण को उन्होंने कोई महत्व नहीं दिया था, परन्तु अब रोगी को **सिकेल कौर** से आश्चर्यजनक तौर पर ठीक हुआ देखकर इस लक्षण के महत्व को उन्होंने समझा और इसके बाद वे एलोपैथ से होम्योपैथ हो गये। ये एक फ्रांसीसी डॉक्टर थे जिन्होंने आगे चलकर होम्योपैथी मे बडा नाम कमाया।

(८) **गैंग्रीन मे परिणत हो जानेवाली शोथ की जलन में सिकेल को ठंडक से और आर्सेनिक को गर्मी से आराम मिलता है**—भिन्न-भिन्न प्रकार की शोथ को दूर करने मे, जो अन्त मे जाकर गैंग्रीन या सडाद मे परिणत हो जाती है, **सिकेल** तथा **आर्सेनिक** दोनो मे समानता है। जरायु-शोथ, डिम्ब-ग्रन्थि-शोथ, पाकाशय की सूजन, आतो को लपेटकर रखनेवाले आवरण का शोथ, न्यूमोनिया मे शोथ—इन सब शोथो मे प्रदाह होता है, जलन होती है। शोथो मे पेट फूल जाता है, पेट मे गैस भर जाती है, तेज़ प्यास लगती है, खून का वमन होता है—इन रोगो मे ये सब 'रोग के विशेष-लक्षण' (Particulars) प्रकट होते हैं। होम्योपैथी मे ध्यान रखने की बात यह है कि अगर 'रोग के विशेष-लक्षण' एक-समान हो, तो उन पर ध्यान देने के स्थान मे, औषधि के 'व्यापक-लक्षणो' (Generals) पर ध्यान देना, और उन्ही के आधार पर औषधि का निर्वाचन करना होता है। उक्त प्रकार के 'विशेष-लक्षण' जब **सिकेल** तथा **आर्सेनिक** के एक-समान हो, तब 'व्यापक-लक्षणो' की तरफ ध्यान देना होगा। ये दोनो औषधिया विशेष-लक्षणो मे एक-समान होती हुई भी अपने व्यापक-लक्षणो मे अत्यन्त भिन्न हैं। **सिकेल** की जलन मे ठडक से आराम मिलता है, **आर्सेनिक** की जलन

मे गर्म सेक से आराम मिलता है। सिपेल बाहर से ठंडा होता हुआ भी गर्म कपड़े को बर्दाश्त नही कर सकता, भीतर से जलता है, बाहर से त्वचा को छूने पर ठडा लगता है, और ठडा लगने पर भी गर्म कपडा नही सहता, आर्सेनिक गर्म कपडा चाहता है—यह लक्षण दोनो मे भेद कर देता है।

(९) **हाथ-पैर की अगुलिया अलग-अलग फैल जाती और उल्टी तरफ मुड़ जाती हैं**—हिस्टीरिया मे इस औषधि का एक विलक्षण-लक्षण यह है कि रोगी की हाथ-पैर की अगुलिया अलग-अलग फैल जाती हैं, और उल्टी तरफ टेढी हो जाती हैं। **क्यूप्रम** मे हाथ की अगुलिया अन्दर की तरफ मुडती हैं।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (औषधि 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लिये है)

सेलेनियम (SELENIUM)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) **यौबनावस्था मे स्त्री-सहवास या हस्त-मैथुनादि कुकर्मो द्वारा वीर्य-क्षय से उत्पन्न हो जाने-वाली कमजोरी आदि**

(२) **नपुसकता**

(३) **भौंओं, मूछों आदि से बाल झडना**

(४) **मल निकलते निकलते लौट जाता है (कब्ज)—साइलीशिया मे भी ऐसा होता है**

(५) **स्वर-लोप** (Aphonia)

(६) **कुत्ते की-सी नींद सोना**

(७) **रोगी गर्म प्रकृति का होता है**

(१) **यौवनावस्था मे स्त्री-सहवास या हस्त-मैथुनादि कुकर्मो द्वारा वीर्य-क्षय से उत्पन्न कमजोरी आदि**—जननागो पर इस औषधि का विशेष प्रभाव है, और होम्योपैथी मे अति-विहार, स्त्री-सहवास तथा हस्त-मैथुन आदि कुकर्मों से उत्पन्न होनेवाले दोषो मे इसका प्रयोग किया जाता है। इस औषधि का प्रमुख-लक्षण असामान्य-दुर्बलता है। रोगी वीर्य-क्षय तथा सेक्स-सबधी कुकर्मों आदि से इतना कमजोर हो जाता है कि कुछ काम नही कर सकता। शारीरिक-दृष्टि से ही वह सत्वहीन, दुर्बल नहीं हो जाता, मानसिक-कार्य भी वह नही कर सकता। **स्टैनम** मे भी कमजोरी पायी जाती हैं, परन्तु वह कमजोरी छाती तक सीमित है, रोगी को छाती मे कमजोरी अनुभव होती है। शारीरिक-कमजोरी सबसे अधिक **आर्सेनिक** मे पायी जाती है, उसम मानसिक-उत्तेजना बनी रहती है, **सेलेनियम** मे तो रोगी शक्तिहीन, नि सत्व, जीवन-शून्य हो जाता है। टाइफ़ॉयड आदि मे अगर इस प्रकार की कमजोरी पायी जाय, तो **सेलेनियम** को नहीं भूलना चाहिये। अत्यधिक वीर्य-नाश, अप्राकृतिक या अति-मैथुन आदि से कमजोरी मे इस से लाभ होता है। इन अवस्थाओं मे रोगी नपुसक हो जाता

है। बैठे-बैठे या पखाने मे ज़ोर लगाने पर प्रोस्टेट-ग्लैंड का स्राव निकल पडता है।

(२) नपुसकता—रोगी मे भोग की प्रवल इच्छा बनी रहती है, परन्तु शरीर से वह नपुमक हो जाता है। इच्छा अविक परन्तु शक्ति कम। स्त्री-सहवास के समय जननेन्द्रिय शिथिल हो जाती है। रोगी कामावसाद (Sexual neurasthenia) का शिकार हो जाता है। कामोत्तेजक विचार उसके मस्तिष्क मे चक्कर काटा करते हैं, परन्तु शारीरिक-दृष्टि से वह नपुसक होता है। कामोत्तेजना हल्की, अपर्याप्त होती है, और वीर्य-पात झट-से हो जाता है, जिसकी अनुभूति देर तक वनी रहती है। स्त्री सहवास के वाद उसका मूड विगडा रहता है। प्राय अनजाने वीर्य अयवा प्रोस्टेट-ग्रन्थि का स्राव टपका करता है, पाखाने के समय या स्वप्न मे वीर्य-क्षय हो जाता है। नपुसकता को दूर करने के लिये इसके इलावा अन्य निम्न औपधियाँ हैं

(नपुंसकता-निवारण के लिये मुख्य-मुख्य औषधिया)

एगॅरिकस—स्त्री-सहवास के वाद कमज़ोरी तथा सुस्ती वढ जाती है, प्रत्येक सहवास के वाद रात को वडे-वडे पसीने आते हैं।

एग्नस कॅस्टस—स्त्री-सहवास की इच्छा ही कम हो जाती है, परन्तु प्रत्येक सहवास के वाद शरीर हल्का अनुभव होता है, मनुष्य अपने को स्वस्थ अनुभव करता है। रोगी का सेक्स-सवधी-जीवन निम्नतम स्तर पर होता है, कामोत्तेजक कल्पनाओ से भी उत्तेजना नही होती।

कॅलेडियम—अर्ध-निद्रित अवस्था मे इन्द्रिय मे उत्तेजना होती है, परन्तु जाग आते ही समाप्त हो जाती है। कामोत्तेजक स्वप्न तो अनेक आते हैं परन्तु कामोत्तेजना नही होती।

कॅलकेरिया कार्ब—प्रत्येक सहवास के वाद अत्यन्त कमज़ोरी अनुभव होती है—शारीरिक तथा मानसिक दोनो। नव-यौवन मे जो युवक हस्त-मैथुन के शिकार हो जाते है उनके लिये उपयोगी है।

कोनायम—नपुसकता की यह उत्कृष्ट औषधि है। जो लोग ज़बर्दस्ती काम का दमन करते हैं उनके रोगो के लिये उपयुक्त है।

लाइकोपोडियम—रोगी स्त्री-सहवास मे ही सो जाता है। जो लोग वृद्धावस्था मे शादी करते हैं, कामेच्छा तीव्र होती है परन्तु शक्ति नही होती, उनके लिये उपयोगी है।

फॉसफोरस—अति-विहार से उत्पन्न होनेवाले उपद्रवो मे लाभदायक है। रोगी इतना वीर्य-क्षय कर चुका होता है कि सहवास मे वीर्य ही नही निकलता। **कोनायम** की तरह ज़बर्दस्ती काम-दमन से उत्पन्न रोगो के लिये भी यह उपयोगी है। विधवाओ मे काम की अत्युग्रता के लिये भी यह उनके काम के वेग का शमन कर देती है।

सेलेनियम—काम के लिये इच्छा अधिक, परन्तु शक्ति कम। कामोत्तेजक कल्पनाए अधिक, परन्तु शारीरिक असमर्थता।

(३) **भौओं, मूछों आदि से बाल झड़ना**—इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण यह है कि आख की भौओ से, मूछो से, जननेन्द्रिय से बाल झडने लगते हैं।

(४) **मल निकलते-निकलते लौट जाता है (कब्ज)**—इसका कब्ज साइलीशिया के समान होता है। इतना कडा और खुश्क होता है कि निकलते-निकलते फिर पीछे को लौट जाता है। उसे हाथ की अगुलियो से निकालना पडता है। आतो की मल को बाहर धकेलने की क्रिया (Peristaltic action) शिथिल पड जाती है, इसीलिये ऐसा होता है। मल इतना अधिक परिमाण मे होता है, और इतना खुश्क होता है कि मल-द्वार फट न जाय, इसके लिये रोगी घबराया करता है।

(५) **स्वर-लोप (Aphonia)**—वक्ता या गायक लोग जो बहुत ऊचे बोला करते हैं उनका गला बैठ जाया करता है। बोलते-बोलते गले मे श्लेष्मा आ अटकता है जिसे उन्हे बार-बार साफ करना पडता है। वक्ता या गायक खासकर गला साफ किये बगैर न बोल पाते हैं, न गा पाते हैं। **अर्जेन्टम मेटैलिकम** तथा **स्टैनम** मे भी बार-बार गला साफ करने का लक्षण है।

(६) **कुत्ते की-सी नींद सोना**—इस औषधि की **सल्फर** जैसी नीद होती है। **सल्फर** का रोगी कुत्ते की-सी नीद सोता है। ज़रा-सी आहट से जग जाता और फिर झट सो जाता है। रात मे अनेक बार जगता है, फिर सो जाता है, और ज़रा-सी आहट होने पर फिर जग जाता है। दिन को तो रोगी को काम-धधे की सुध नही रहती, रोजगार की बातें भूली रहती हैं, परन्तु जब वह ऊघने लगता है तब भूली हुई बातें याद आने लगती हैं। यह इसका विचित्र-लक्षण है।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (औषधि गर्म—Hot—प्रकृति के लिये है)।

सेनेशियो ऑरियस (SENECIO AUREUS)

(१) **युवती-लडकियो के माहवारी के दिनो मे भीज जाने से खांसी आदि तपेदिक के लक्षण उठ खडे होना**—प्राय देखा जाता है कि लडकियो के अभिभावक उन्हें माहवारी के दिनो मे ठडे पानी मे पाव रखने या भीज जाने से जो उपद्रव उठ खडे होते हैं, उनसे सावधान नही करते। इन दिनो ठडे पानी मे पाव रखने या भीज जाने से माहवारी बन्द हो जाती है, और कभी-कभी महीनो बन्द रहती है। लडकी पीली, कमज़ोर दीखने लगती है। उसे सूखी खासी के ठसके आते हैं, फेफडो से खून आने लगता है, माहवारी के बजाय अन्य स्थानों से खून जारी हो जाता है। वे आकर शिकायत करती हैं कि

जबसे माहवारी का आना बन्द हुआ है, तब से खासी शुरु हो गई है, खासी भी पुरानी हो गई है, उससे पीछा नही छूटता। ऐसी अवस्था मे इस औषधि से माहवारी भी जारी हो जायगी, और खासी भी जाती रहेगी। अगर माहवारी बन्द होने के साथ खून मिली खखार आने लगे, खासी का ठसका बना रहे, तो यह औषधि अवश्य लाभ करेगी। अगर इस दवा के देने से खाँसी घटने लगे तो समझ लेना चाहिये कि औषधि काम कर रही है। इस दशा मे दी जानेवाली अन्य औषधियाँ भी हैं, परन्तु उनमे उक्त लक्षणो मे यही मुख्य है। अगर रोगिणी का माहवारी बन्द होने तथा साथ खाँसी हो जाने के लक्षण मे सेनेशियो से इलाज न किया गया, तो उसे तपेदिक हो जाने की सभावना रहती है। डॉ० फॉस ने एक १८ वर्ष की लडकी को **सेनेशियो** 1x देकर ठीक कर दिया जिसे १५ महीनो से माहवारी बन्द थी और उसमे रक्त-क्षीणता के सब लक्षण दीखने लगे थे, पेट मे पानी भर गया था।

(२) **भीज जाने से माहवारी का रुकना, माहवारी की जगह प्रदर, माहवारी का अधिक होने लगना, नियत समय से पहले होना, कष्ट से होना आदि लक्षण**—माहवारी के दिनो मे भीज जाने से इतना ही नही कि माहवारी रुक सकती है, अन्य लक्षण भी हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, माहवारी की जगह प्रदर जारी हो जाय, माहवारी मे अधिक खून जाने लगे, माहवारी में दर्द होने लगे, कमर दर्द हो—ये सब लक्षण माहवारी के दिनो मे ठडे पानी के स्नान से हो सकते हैं। ठडे पानी मे भीजने से इन लक्षणो के होने पर यह दवा लाभ करती है।

(३) **माहवारी रुकने से अन्य स्थानों से रक्त-स्राव** (Vicarious hemorrhage)—ऊपर हमने माहवारी के दिनो मे भीज जाने से खासी आदि तपेदिक के लक्षण उठ खड़े होने की चर्चा की है। इसके अतिरिक्त किसी अन्य कारण से भी अगर माहवारी रुक जाय, और नाक, मुह, फेफडा, मूत्राशय—अन्य किसी भी स्थान से रक्त-स्राव होने लगे, तो इस औषधि से लाभ होता है। रजोधर्म के बन्द होने से शरीर के अन्य किसी स्थान से रक्त-स्राव का जारी हो जाना इस औषधि का विशेष-लक्षण है। **ब्रायोनिया** मे भी यह लक्षण है।

(४) **माहवारी से पहले दाहिने गुर्दे की या गले, छाती आदि की शोथ** (Inflammation of the kidney and other organs)—इस औषधि का गुर्दों पर विशेष-प्रभाव है, खास तौर पर दाहिने गुर्दे पर। मूत्र थोड़ा आने लगता है, गहरे रग का होता है, खून मिला होता है। जब गुर्दों की शोथ के कारण हाथो या पैरों मे शोथ आ जाय, तब इस औषधि से लाभ होता है। अगर **मूत्राशय की खिजलाहट** (Irritation) के साथ सिर-दर्द हो, तब भी इस

औषधि से लाभ होता है। माहवारी से पहले गले, छाती, मूत्राशय की शोथ हो जाने पर इससे लाभ होता है।

(५) शक्ति—मूल-अर्क या ३ शक्ति से ३० शक्ति।

सेनेगा (SENEGA)

(१) **इसका मुख्य प्रभाव 'स्वर-यन्त्र' (Larynx), 'श्वास-नली' (Trachea) तथा 'वायु-नली' (Bronchi) पर है, इनके शोथ से खांसी उठती है**—जब हमे खासी होती है, तब 'स्वर-यन्त्र', 'श्वास-नली' तथा 'वायु-नली' मे से किसी स्थान का शोथ होता है। 'स्वर-यन्त्र' स्वर निकलने का यन्त्र है, जीभ के पीछे के भाग से यह शुरु होता है। इसके बाद से अगला भाग 'श्वास-नली' है जिससे सास भीतर को जाता है, जिसे मोटे शब्दो मे गला कहते हैं। गले के आगे 'वायु-नली' है, जो दो भागो मे विभक्त होकर एक भाग दाहिने और दूसरा बायें फेफडे मे चला जाता है। इनमे से किसी भी हिस्से मे शोथ हो जाने से खासी होती है, और अगर शोथ नीचे फेफडे तक पहुच जाये, तो ब्रोंकाइटिस और न्यूमोनिया हो जाता है। 'स्वर-यन्त्र', 'श्वास-नली और 'वायु-नली' के शोथ से निम्न लक्षण पैदा हो जाते है—

i गले मे एलब्यूमिन जैसा श्लेष्मा चिपक जाता है जिसे निकालना कठिन होता है, इसलिये रोगी बार-बार खासता है ताकि यह श्लेष्मा निकल जाय।

ii गले तथा छाती मे दुखन होती है—Soreness of the throat and chest

iii छाती पर ऐसा बोझ पडा महसूस होता है मानो किसी ने फेफडों को मेरु-दड की तरफ दबा कर रखा हो।

इन लक्षणो से स्पष्ट है कि खासी मे इस औषधि का विशेष महत्व है।

(२) **वृद्ध-पुरुषों को परेशान करनेवाली खांसी तथा दमा**—वृद्ध-पुरुषो को परेशान करनेवाली खासी मे यह विशेष रूप से उपयोगी है जबकि छाती मे अत्यधिक परिमाण मे कफ इकट्ठा हो जाता है, और खांसने मे खडखड या साय-साय शब्द निकलता है। डॉ० क्लार्क ने एक स्थूल-काय वृद्धा का, जो तपेदिक की मरीज़ थी और जिसके दोनो फेफडो मे न्यूमोनिया का प्रभाव था, सेनेगा की कुछ ही मात्राओ से कफ दूर कर दिया। उसे खासी के दौर पडते थे और फेफडो से रक्त-मिश्रत कफ निकलता था। वृद्ध-पुरुपो का यह खखार आसानी से नही निकलता, लसदार होता है, वायु-नली मे जम जाता है, निकालने मे तकलीफ होती है। दमे मे भी इसी प्रकार की खासी आती है, लसदार कफ होता है, भीतर से जमा हुआ। इस प्रकार के लसदार जमे हुए

कफ मे **कैलि बाईक्रोम** भी लाभ करता है, कफ भीतर से मुश्किल से निकलता है, लसदार और तारदार होता है। कफ की घडघडाहट मे **ऐन्टिम टार्ट** भी लाभ करता है, ऐसा लगता है कि फेफडा कफ से भरा पडा है, परन्तु कफ आसानी से नही निकलता। वृद्ध-पुरुषो की श्लेष्माभरी खासी मे यह मुख्य औषधि है।

(३) **फेफडे मे श्लेष्मा के भरे होने से कफ या दमे मे निम्न-शक्ति लाभप्रद है**—डॉ० नैश लिखते हैं कि जब छाती मे कफ भरा पडा हो, घडघडाहट या सॉय-सॉय की आवाज़ आती हो, सास लेने मे भी कष्ट होता हो, तब उनके अनुभव के अनुसार निम्न-शक्ति ही काम करती है, उच्च-शक्ति नही। वे लिखते हैं कि दमे का एक रोगी बडे कष्ट मे था। उसे उन्होने ठडे पानी के आधे गिलास मे **सेनेगा** की ३ बूंद डालकर दी, जिसका उसने दो-दो घटे मे एक बडा चम्मच पिया। वह ठीक हो गया। एक अन्य महिला का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि उसे दमा था, उसे तकियो के सहारे बैठा कर रखा जाता था, छाती से घडघड और साय-साय का शब्द सुनाई देता था, छाती मे कफ भरा पडा था। उसे इपिकाक, **आर्सेनिक**, **ऐन्टिम टार्ट** दिया गया, पर किसी से लाभ नही हुआ। अन्त मे **सेनेगा** के मूल-अर्क से लाभ हुआ। उच्च-शक्ति के **सेनेगा** से भी कोई लाभ नही हुआ।

(४) **अल्पकालिक, एव ब्रायोनिया तथा रस टॉक्स के बीच की दवा है**—यह औषधि अल्पकालिक है, **साइलीशिया** तथा सल्फर जैसी दीर्घकालिक नही है। इसके लक्षण **ब्रायोनिया** जैसे तीव्र हैं, ठड लगने के बाद एकदम खाँसी शुरु हो जाती है, परन्तु विश्राम से रोगी को लाभ नही होता जैसा **ब्रायोनिया** मे हुआ करता है। **सेनेगा** के रोगी को चलने-फिरने से राहत मिलती है जैसे **रस टॉक्स** मे होता है, परन्तु इसके अन्य लक्षण **रस टॉक्स** से नही मिलते। इसीलिये कहते हैं कि इसका स्थान उक्त दोनो औषधियो के बीच का है। छाती का दर्द, वात-रोग का दर्द (Rheumatic pains), शोथ का दर्द—इन सब मे **रस टॉक्स** की तरह आराम करने से रोग की वृद्धि होती है, परन्तु खासी और दमे मे **ब्रायोनिया** की तरह आराम करने से रोग कम हो जाता है।

(५) **शक्ति**—डॉ० नैश के अनुसार मूल-अर्क अधिक लाभ करता है। ३ से ३० शक्ति दी जा सकती है।

सीपिया (SEPIA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) शारीरिक-रचना—पतली-दुबली, लम्बी, कन्धे से कूल्हे तक एक-सार स्त्री
(२) शारीरिक-रचना—दोनों गालो के ऊपर के हिस्सों मे घोडे की जीन की तरह नाक पर से जाता हुआ पीला दाग़
(३) मानसिक-लक्षण—घरेलू कार्यों में चित्त न लगना, पुत्र-पति आदि के प्रति उदासीनता, रुदन
(४) मानसिक-लक्षण—रोगिणी का जीवन उत्साहहीन पड़ जाना, चुप-चाप बैठे रहना
(५) गर्भाशय और भग के बाहर निकल पड़ने जैसा अनुभव (Bearing down sensation)
(६) गुदा-प्रदेश या भीतरी अगो मे गोले का-सा अनुभव
(७) भूख लगने, और खाने पर भी पेट खाली अनुभव होना
(८) रजोरोध के समय उत्ताप की लहरो (Flushes of heat during climacteric) के साथ पसीना आना
(९) मल-द्वार मे एक भारी ढेला-सा मालूम होना—कब्ज

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*तेज़ हरकत से अच्छा लगना
*गर्मी से रोगी को अच्छा लगना
*ठंडा पेय पसन्द करना

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*ठंड, ठंडी हवा, नमी से वृद्धि
*बर्फीली ठंड से रोग-वृद्धि
*अति-विहार से रोग वृद्धि
*सवेरे तथा शाम को रोग-वृद्धि
*मासिक से पहले वृद्धि
*गर्भपात की आशका

(१) शारीरिक-रचना—पतली-दुबली, लम्बी, कन्धे से कूल्हे तक एक-सार स्त्री—यह औषधि 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) है, और विशेष तौर पर स्त्रियों के अनेक रोगो मे इसके 'व्यापक-लक्षण' (Generals) पाये

जाते है। रोगिणी की शारीरिक-रचना को देखकर योग्य-चिकित्सक उसे पहचान जाता है। उसका शारीरिक गठन लम्बा, पतला-दुबला होता है। वह कन्धे से कूल्हे तक एकसार होती है—जैसा पुरुषो का गठन होता है। जिस स्त्री का नितम्ब-प्रदेश चौडा न हो, वह सन्तानोत्पन्न नही कर सकती, पुरुषो जैसा नितम्ब-प्रदेश होने से सन्तान उत्पन्न करने का कार्य नही हो सकता। लम्बी-स्त्रियो की रचना मे **सीपिया** को और लम्बे-पुरुषो की रचना मे **फॉसफोरस** को याद करना चाहिये।

(२) **शारीरिक-रचना—दोनो गालो के ऊपर के हिस्सों मे घोडे की ज़ीन की तरह नाक पर से जाता हुआ पील़ा दाग़**—शारीरिक-लक्षणो मे **सीपिया** की रोगिणी का एक मुख्य-लक्षण यह है कि उसके दोनो गालो पर पीले-पीले-से दाग होते है, जो नाक के ऊपर के हिस्से से जाकर एक-दूसरे के साथ ऐसे मिल जाते है मानो नाक पर घोडे की ज़ीन पडी हुई हो। इस औषधि का मुख्य-क्षेत्र जरायु का रोग है, और जिस स्त्री को जरायु का रोग होता है प्राय उसकी गालो पर ऐसे दाग पड जाया करते है। इस स्त्री के मुख के इन दागो को देखकर चिकित्सक पहचान जाता है कि इसे कोई जरायु-सबधी रोग है और इसकी औषधि **सीपिया** ही है। ये दाग पीले या भूरे रग के होते है, रोगिणी रक्त-शून्य होती है, ३५ वर्ष की हो, तो ५० वर्ष की दीखती है।

(३) **मानसिक-लक्षण—घरेलू कार्यो मे चित्त न लगना, पुत्र-पति आदि के प्रति उदासीनता का भाव, रुदन**—इस औषधि का सबसे प्रमुख-लक्षण इसकी मानसिक-अवस्था है। रोगिणी का मन घरेलू कार्यो मे नही लगता, उसका अपने पुत्र तथा पति से प्रेम भी नही रहता। माता कहती है मैं अपने पुत्रों से प्रेम करती थी, पति से प्रेम करती थी, परन्तु अब न-जाने क्या हो गया है कि मुझे न पुत्रो से प्रेम रहा है, न पति से प्रेम रहा है। इस प्रकार के मानसिक-लक्षण भी जरायु-सबधी रोग के कारण उत्पन्न हो जाते हैं। इस से यह नही समझना चाहिये कि अपने पुत्र आदि से प्रेम का अभाव, उनके प्रति उदासीनता की भावना केवल स्त्रियो मे पायी जाती है, अगर किसी पुरुष मे भी ऐसी उदासीनता पायी जाय, तब भी **सीपिया** ही औषधि होगी। इस प्रकार की उदासीनता पल्सेटिला, **नेट्रम म्यूर, लिलियम टिग्रिनम** तथा **प्लैटिना** मे भी पायी जाती है, परन्तु इन सब की उदासीनता मे निम्न भेद है:

पल्सेटिला और **उदासीनता**—इस की उदासीनता के साथ रोगिणी मे नम्रता, कोमलता, मधुर स्वभाव पाया जाता है, परन्तु **सीपिया** की उदासीनता के साथ क्रोध, हठीलापन पाया जाता है। **पल्स** घरेलू काम-काज करती रहती है, सीपिया घर का काम-काज भी छोड देती है। **पल्स** मोटी ताज़ी होती है, सीपिया कमजोर, पतली-दुबली होती है।

नेट्रम म्यूर और उदासीनता—इसकी उदासीनता मे रोगी के साथ सहानुभूति दर्शायी जाय तो उसे क्रोध आ जाता है, सीपिया मे ऐसा नही है।

लिलियम टिग्रिनम और उदासीनता—इसकी उदासीनता के साथ रोगिणी सदा काम मे लगे रहना चाहती है जो सीपिया मे नही है।

प्लेटिना और उदासीनता— इसकी उदासीनता मे रोगी मे घमड पाया जाता है, वह दूसरो को अपने मे बहुत छोटा समझता या समझती है। यह लक्षण अन्य किसी औषधि मे नही है।

सीपिया तथा रुदन; रुदन मे सीपिया की पल्स तथा नेट्रम म्यूर से तुलना—रोगिणी अपने भूत या भावी जीवन से ही असन्तुष्ट नही होती, उसे अपने वर्तमान जीवन से भी असन्तोष होता है। इस असन्तोष के कारण उसका मन सदा हतोत्साह रहता है, गिर गिरा, और वह अपनी हालत को देख-सोच कर आसू बहाया करती है। इस प्रकार आसू बहाने और रोने की प्रवृत्ति मे उसकी पल्सेटिला तथा नेट्रम म्यूर से बहुत समानता है। सीपिया तथा पल्स दोनो दुःखी रहती हैं, रोया करती हैं, उन्हें यह भी पता नही होता कि वे क्यो रोती है। दोनो जरायु-सबधी रोग के पीडित होती हैं। ऐसी अवस्था मे अगर रोने के लक्षण को देखकर पल्स से लाभ न हो, तो सीपिया देना चाहिये, परन्तु सीपिया देते हुए इसके आधारभूत-लक्षण को कभी नही भुलाना चाहिये। सीपिया का आधारभूत लक्षण है—अपने काम-काज के प्रति अरुचि, उपेक्षा, उदासीनता, अपने घरेलू काम के प्रति भी ध्यान न देना, परिवार के सदस्यो—पुत्र, पति, मित्र या जिनको भी वह प्रेम करती थी—सब के प्रति उदासीन हो जाना। **नेट्रम म्यूर और सीपिया**—इन दोनो मे भी रोने का लक्षण पाया जाता है, दोनो में सहानुभूति से रोग बढता है, परन्तु नेट्रम म्यूर 'गर्म'—Hot—प्रकृति की है, सीपिया 'सर्द'—Chilly—प्रकृति की है। डॉक्टर को अपने रोग के लक्षण सुनाते हुए सीपिया स्त्री रोती है—इस में यह पल्स जैसी है, सहानुभूति को सीपिया बर्दाश्त नहीं कर सकती—इसमे यह नेट्रम म्यूर जैसी है क्योकि पल्स तो सहानुभूति चाहती है, परन्तु पल्स और नेट्रम म्यूर गर्म-प्रकृति की, और सीपिया सर्द-प्रकृति की है—इस विवरण से इन तीनो का भेद स्पष्ट हो जाता है।

(४) **मानसिक-लक्षण**—**रोगिणी का जीवन उत्साहहीन पड जाना, चुपचाप बैठे रहना**—अनेक कारणो से रोगिणी का जीवन जो कभी स्फूर्तिमय था, घर तथा बाहर के काम मे वह उत्साह प्रदर्शित करती थी, अब ठडा पड जाता है, स्फूर्ति जाती रहती है, उत्साह समाप्त हो जाता है, वह चुपचाप बैठी रहती है, किसी से कुछ नही कहती, बोलती-चालती नही, जीवन मे उसे किसी प्रकार का आनन्द नही दिखलाई देता, अपने स्वास्थ्य के विषय मे चिंतित रहती है, कभी-कभी आत्मघात करने की सोचती है। ऐसा क्यो होता है, वह

जीवन जो कभी उत्साह से पूर्ण था अब उल्टी दिशा मे क्यो चल पडा, इसके अनेक कारण हैं। ऐसी अवस्था प्रसव-काल मे, जरायु से लगातार रक्त-स्राव होते रहने मे, दीर्घकालीन अपच के रोग मे, शरीर तथा मन के कमजोर हो जाने पर, अति हृष्ट-पुष्ट बच्चे को दूध पिलाने पर जो माता का सारा सत खीच कर उसे नि सत्व बना देता है, अति विषयी पति के कारण स्वास्थ्य नष्ट हो जाने पर हो जाती है। वह ठडी पड जाती है, उत्साहहीन, चुपचाप बैठी अपने दु:खी जीवन से छुटकारा पाने की सोचा करती है। उसे अन्य किसी वस्तु की नही, **सीपिया** की ज़रूरत होती है।

(५) गर्भाशय और भीतर के यंत्र भग से बाहर निकल पडने-जैसा अनुभव (Bearing down sensation)—रोगिणी को सदा अनुभव हुआ करता है कि उसके भीतर के यन्त्र—गर्भाशय आदि—भग से बाहर निकल पडेंगे, इसलिये वह सदा जाघ पर जाघ रखकर बैठती है। भीतर का अग बाहर निकल पडेगा (Prolapsus)—ऐसा अनुभव होना **सीपिया** का विश्वासयोग्य-लक्षण है। इस लक्षण के होने पर गर्भाशय का किसी प्रकार का भी स्थान-भ्रंश हो, **सीपिया** से लाभ होगा। रोगिणी के भीतर के अग इतने शिथिल हो जाते हैं कि उन अगो के बाहर निकल पडने के डर से वह उन अगो पर पट्टी बाध रखना चाहती है या उन्हें हाथ से दबाये रखना चाहती है, और जब बैठती है तब एक जाघ को दूसरी जाघ पर दबा कर बैठती है। **एगैरिकस, बेलाडोना, लिलियम, म्यूरेक्स** और **सैनिक्यूला** मे भी जननागो के निकल पडने के लक्षण हैं।

(जननागो के बाहर निकल पडने के अनुभव मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

i **एगैरिकस तथा जननांगों के बाहर निकल पड़ने का अनुभव**—जब बडी आयु में रजोनिवृत्ति हो जाती है तब रोगिणी को अगर अनुभव हो कि उसके जनन के यत्र बाहर निकल पडेंगे तब यह उपयोगी है।

ii **बेलाडोना और जननांगो के बाहर निकल पडने का अनुभव**—इसको भी ऐसा अनुभव होता है कि पेट के भीतरी अग भग-द्वार से बाहर निकल पडेंगे, परन्तु इस मे रोगिणी को खडा होने से या सीधी होकर बैठने से आराम मिलता है।

iii **लिलियम और जननांगों के बाहर निकल पड़ने का अनुभव**—इस मे रोगिणी भग-प्रदेश को हाथ लगाकर ऊचे पकडे रखती है। इसे सगम की इच्छा बढ़ी हुई होती है। **सीपिया** मे सगम की इच्छा नही रहती।

iv **म्यूरेक्स और जननांगो के बाहर निकल पड़ने का अनुभव**—इसमे रोगिणी **सीपिया** की तरह जाघ पर जाघ रखकर बैठती है ताकि कही भीतर

मे यत्र बाहर न निकल पडें, परन्तु इसमे **लिलियम** की तरह सगम की इच्छा अधिक रहती है ।

v **सैमिक्युला और जननागो के बाहर निकल पडने का अनुभव**—इस मे भी गर्भाशय के भग से बाहर निकल पडने की आशका रहती है, रोगिणी भग-प्रदेश मे हाथ लगा कर उसे ऊचा उठाये रखती है, रोगिणी के हाथ-पाव जलते हैं, उन्हें ओढन से बाहर रखने से उसे आराम मिलता है ।

(६) गुदा-प्रदेश या भीतरी अगो मे गोले-का-सा अनुभव (Sensation of a ball in the anus or inner organs)—माहवारी के दिनो मे, गर्भावस्था मे या जरायु-सबधी रोगो मे रोगिणी को गुदा-प्रदेश मे एक गोले का-सा अनुभव होता है । इसके अतिरिक्त प्रदर मे, बच्चे को दूध पिलाते समय या बवासीर मे—किसी भी रोग मे अगर रोगिणी को अनुभव हो कि उसके शरीर के किसी स्थान मे गोला-सा लुढक रहा है, तो **सीपिया** से लाभ होगा ।

(७) भूख लगने, और खाने पर भी पेट का खाली अनुभव होना (All gone feeling in stomach)—इस औषधि के रोगी को आतो को काटती-सी भूख लगती है, परन्तु खाने से भी रोगी को सतोष नही होता । रोगी कितना ही क्यो न खा जाय, और खाता भी वह भर-पेट है, परन्तु खा लेने पर भी पेट मे भूख का अनुभव बना ही रहता है, पेट खाली-खाली अनुभव होता है । हम आगे देखेंगे कि **सीपिया** के रोगी को अक्सर कब्ज रहती है, परन्तु कब्ज़ के कारण पेट भरा हुआ हो और भूख भी महसूस होती जाय—यह विचित्र-लक्षण है, ध्यान देने योग्य है क्योकि विचित्र-लक्षणो का बडा महत्व है ।

पेट के खाली लगने की अनुभूति (Feeling of goneness in the stomach) केवल **सीपिया** मे ही नही है, **कौक्युलस, इग्नेशिया, कैलि कार्ब, लोबेलिया, पैट्रोलियम, फॉसफोरस, स्टैनम** और **सल्फर** मे भी है । इनके लक्षण निम्न हैं .

(पेट खाली अनुभव होने के लक्षण में मुख्य-मुख्य औषधिया)

कौक्युलस—इसमे पेट के खालीपन का अनुभव निद्रा-नाश, या ट्रेन अथवा स्टीमर की यात्रा से होता है ।

इग्नेशिया—इसमे स्नायु-प्रधान रोगिनो को पेट मे खालीपन का अनुभव होता है पर साथ ही ये गहरी आहें भरती हैं ।

कैलि कार्ब—इसमे पेट के खालीपन की अनुभूति खा लेने के बाद जाती रहती है, परन्तु पेट फूल जाता है ।

लोबेलिया—खालीपन पेट के ऊपरी भाग, हृदय तक अनुभव होता है, जी मिचलाता और बहुत पसीना आता है ।

पैट्रोलियम—इसमे पाखाना जाने के बाद खालीपन अनुभव होने लगता है।

फॉसफोरस—इसमे पेट के खालीपन का लक्षण मुख्य तौर पर रात को पाया जाता है और साथ जी भी मिचलाता है, रोगी रात को उठकर खाया करता है, प्राय तपेदिक के लक्षणो में यह अधिक उपयोगी है।

स्टैनम—इस मे वक्षोस्थि (Sternum) के पीछे खालीपन अनुभव होता है। रोगी को बोलने मे भी बहुत कमज़ोरी अनुभव होती है। इसका मुख्य लक्षण छाती की कमज़ोरी है।

सल्फर—इस मे ११ बजे दोपहर पेट मे खालीपन अनुभव होने लगता है, उस समय उसे अवश्य कुछ खाना चाहिये नही तो तबीयत परेशान हो जाती है।

हाईड्रैस्टिस—इस मे पेट के अलमर में खालीपन का अनुभव होता है।

सीपिया—इसमे खालीपन का संबध जरायु रोग से होता है, रोगिणी को गर्भाशय और भग के बाहर निकल पड़ने का-सा (Bearing down sensation) अनुभव होता है।

(८) **रजोरोध के समय उत्ताप की लहरो (Flushes of heat during climacteric) के साथ पसीना**—रोगिणी को उत्ताप की लहरें अनुभव होती हैं। भिन्न-भिन्न अगो मे ये लहरें प्रकट होती हैं। इन लहरो के बाद शरीर मे एकदम पसीना छूटता है। हथेली और पाव के तले जलते हैं। ज़रा-से भी श्रम से शरीर मे गर्मी की लहरें उठने लगती हैं। प्राय रजोरोध के समय जब बडी उम्र मे माहवारी बन्द हो जाती है तब ऐसे लक्षण उत्पन्न होते हैं, उस समय सीपिया से लाभ होता है। इन लहरो के साथ सपूर्ण शरीर मे हृदय की धडकन होने लगती है और यह धड़कन शरीर के भिन्न-भिन्न अगो मे अनुभव होती है। उत्ताप की लहरो का यह लक्षण सीपिया के अतिरिक्त सल्फर मे भी पाया जाता है, परन्तु सीपिया मे उत्ताप की इन लहरो का सबध जरायु से होता है। सीपिया मे उत्ताप की लहरें उठती ही जनन-प्रदेश से हैं, और वहा से शरीर के अन्य भागो मे फैल जाती हैं, सल्फर मे ऐसा नही है। सल्फर मे 'जलन' (Burning) है, सीपिया मे 'गर्मी' (Heat) है।

(९) **मल-द्वार मे एक भारी ढेला-सा मालूम होना**—रोगी को मल-द्वार मे एक भारी ढेला-सा मालूम होता है जिसकी अनुभूति पाखाना हो आने पर भी बनी रहती है। मल थोडा, सख्त, मेंगनी की तरह का होता है, छोटी-छोटी गाठें निकलती हैं। जब स्पष्ट लक्षण किसी दवा के न हो, तब कब्ज़ मे सीपिया या नक्स देने की रुटीन प्रथा है, सीपिया तथा नक्स दोनो मे पाखाने के समय रोगी ज़ोर लगाता है, ज़ोर लगने पर भी थोडा पाखाना आता है, गुदा-प्रदेश मे भारीपन बना रहता है, ऐसा लगता है कि गुदा मे एक भारी ढेला-सा अटका पडा है। सीपिया के रोगी को कई दिन तक पाखाना न आये—ऐसा भी हो

सकता है। आतो मे मल को निकालने की शक्ति नही रहती। यद्यपि वह टट्टी जाता है, परन्तु गुदा मे भारीपन, ढेले-का-सा अनुभव बना रहता है। जबतक बडी आतो मे बहुत-सा मल इकट्ठा नही हो जाता, तबतक मल नही निकलता। अगर मल-द्वार से निरन्तर कुछ स्राव रिसता रहे, और वहा भारी ढेले का-सा अनुभव बना रहे, तब भी सीपिया लाभ करता है।

(१०) **इस औषधि के अन्य लक्षण—**

i **तीसरे, पाँचवें, सातवें मास गर्भपात**—जिन स्त्रियो को ३रे, ५वें या ७वें मास गर्भपात हो जाया करता है उनके लिये उपयोगी है।

ii **प्रत्येक प्रकार की अनियमित माहवारी जिसमे आभ्यन्तर अंग बाहर निकलते आन पड़ें**—अगर रोगिणी को 'योनिद्वार से सब आभ्यन्तर यन्त्रो के बाहर निकल पडने का-सा' (Bearing down sensation as if everything will protrude from pelvis) अनुभव हो, तो प्रत्येक प्रकार का माहवारी की अनियमितता का रोग इस से दूर होता है। जल्दी, देर मे, कम, अधिक, किसी प्रकार की भी माहवारी की अनियमितता क्यो न हो, उक्त लक्षण रहने पर सीपिया से वह दूर होगी।

iii **जरायु-रोग के कारण अध-सीसी दर्द**—जिन स्त्रियो को जरायु-रोग के कारण आधे सिर का दर्द होता है, सिर की गुद्दी से शुरु होकर सिर पर से होता हुआ आखो पर आ जाता है, उनके अध-सीसी दर्द को यह ठीक करता है। यह दर्द प्रात काल शुरु होता है, दोपहर या शाम तक बना रहता है, आराम से और अधेरे मे पडे रहने से रोग कम हो जाता है। सीपिया-स्त्री के सब कष्टो का कारण प्राय जरायु-सबधी कोई-न-कोई रोग होता है।

iv. **रजः निवृत्ति के बाद बालों का झडना**—वृद्धावस्था मे जब माहवारी बन्द हो जाती है तब स्त्रियो के बाल प्राय झडने लगा करते हैं। सीपिया इसमे भी सहायक है।

v. **हाथ गर्म तो पैर ठंडे, पैर गर्म तो हाथ ठडे**—इसका एक विचित्र-लक्षण यह है कि अगर रोगी के हाथ गर्म अनुभव होते हैं तो पैर ठडे हो जाते हैं, और अगर पैर गर्म होते हैं तो हाथ ठडे हो जाते हैं।

vi. **पहली नींद मे खाँसी**—रोगी को पहली नीद मे खासी आती है। मध्य-रात्रि तक खासी छिडती है, बाद को नही।

vii **पहली नींद मे पेशाब कर देना**—जो बच्चे पहली नीद मे पेशाब कर देते हैं, उनके लिये यह उपयोगी है। सीपिया-रोगिणी को हर समय अपने मूत्र-मार्ग पर ध्यान जमाये रखना पडता है ताकि पेशाब निकल न जाय। सोते ही वह ध्यान हट जाता है और पेशाब अनायास निकल पडता है।

viii **दाँतों के निकलने के समय दूध न पचा सकने से बच्चों को हरे दस्त**

आना—**सीपिया** का रोगी दूध नही पचा सकता। गर्म दूध पीने से उसे हरे दस्त आने लगते है। **सीपिया** का वच्चा दूध बिलकुल सहन नही कर सकता।

IX **चर्म-रोग मे त्वचा पर भूरे रंग के दाग पड़ना, उनमे खुजली होना**—त्वचा के रोग मे **सीपिया** और **सल्फर** मे समानता है। दोनो सोरा-दोष नाशक (Anti-psoric) हैं, और दोनो एक-दूसरे के पीछे सफलतापूर्वक दी जा सकती हैं, एक-दूसरे की पूरक हैं। इसकी खुजली मुह, हाथ, पाव, पीठ, पेट किसी जगह भी हो सकती है। त्वचा पर भूरे रग के दाग़ पड जाते हैं। पहले त्वचा पर दाद-जैसा एक खुश्क दाना निकलता है, खुजलाने से वह बडा गोलाकार हो जाता है। इस प्रकार के गोलाई लिये हुए चकत्ते अगर झुड-के-झुड भी हो, तो १००० शक्ति की **सीपिया** से ये ठीक हो जाते हैं।

X **पुरानी खांसी-जुकाम जिसमे गाढ़ा, बिना खराश का कफ निकले (सीपिया और पल्स की तुलना)**—पुराने जुकाम या खासी मे जब गाढा, बिना खराश (Bland) का कफ़ निकले, **सीपिया** तथा **पल्स** दोनो मे से कोई एक दवा दी जा सकती है, परन्तु ध्यान मे रखने की वात यह है कि अगर **पल्स** दी जायेगी, तो वह जुकाम ठीक करने के साथ-साथ माहवारी के खून को भी वढा देगी, और अगर **सीपिया** दी जायगी तो वह जुकाम-खासी के साथ-साथ माहवारी के दोष को भी ठीक कर देगी।

XI **गर्म कमरे मे साधारण हरकत से रोग बढ़ना और खुली हवा मे तेज हरकत से घटना**—अगर रोगी गर्म कमरे मे हल्के-हल्के चले-फिरे तो उसका दर्द बढ जाता है, परन्तु अगर खुली हवा मे तेज़ी से चले-फिरे तो दर्द घट जाता है। खुली हवा में तेज़ी से चलने-फिरने से अगो मे गर्मी आ जाती है और रोगी को अच्छा लगता है। रोगी का शरीर क्योकि शिथिल होता है इसलिये उसे कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार उसे शरीर स्वस्थ अनुभव होता है। वैसे **सीपिया** रोगी को ठड सताती है इसलिये अगर खुली हवा मे वह तेज़ी से नही चलेगा, कठिन व्यायाम नही करेगा, तो उसके शरीर मे गर्मी नही आयेगी, और उसे ठडक तग करेगी।

XII **स्त्रियों का पेट बढना**—स्त्रियो के पेट बढने मे **सीपिया** और बच्चो के पेट बढने पर सल्फर उपयोगी है।

(११) **सीपिया का सजीव तथा मूर्त-चित्रण**—पतली-दुबली-लम्बी, रक्तहीन, पीली शक्ल की स्त्री जो कन्धो से कूल्हे तक एक समान हो, नितम्ब-प्रदेश भी बढा हुआ होने के स्थान मे सकुचित हो, मुह पर दोनो गालो पर काले-पीले दाग हो जो नाक के ऊपर से एक-दूसरे से मिल कर घोडे की ज़ीन की-सी शक्ल बनाते हो, जिसे पेट मे खुरचन की-सी भूख लगती हो, जो खाने के बाद भी बनी रहती हो, जिसे कब्ज रहती हो, जननागो के भग-द्वार से बाहर निकल

पडने का डर वना रहता हो, इसी डर से जाघ पर जाघ रख कर वैठती हो, जो घर के काम-काज से उदासीन हो, पुत्र-पति-वधु-वाधव के प्रति जिसे किसी-प्रकार के प्रेम की अनुभूति न रहे, एकान्त मे रहना पसन्द करती हो परन्तु साथ ही यह भी चाहती हो कि कोई पास वना रहे, एकान्त मे वैठ कर अपनी हालत पर आसू बहाती हो, घर के किसी काम मे चित्त न लगता हो—देर तक पानी मे रहने, कपडे घोने वगैरह से कई रोग हो जाते है इसलिये कई लोग इसे धोविनो की दवा भी कहते है—ऐसी जिसकी प्रकृति हो, उसे **सीपिया** का सजीव तथा मूर्त रूप कहा जा सकता है ।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २००, १००० (डॉ० ज्योर्ज रायल अपनी पुस्तक 'दी होम्योपैथिक थेरेप्यूटिक्स ऑफ डिज़ीज़ेज़ ऑफ दी व्रेन एण्ड नर्वस' मे लिखते हैं कि **सीपिया** ३० शक्ति से नीचे काम नही करता । ५०० या १००० शक्ति ३० से भी अच्छा काम करती है। यह 'अनेक-कार्य-साधक'—Polychrest—दवा है । डा० गिवसन मिल्लर का कहना था कि अगर होम्योपैथी मे उन्हें सिर्फ एक औषधि से सव रोग ठीक करने को कहा जाय, तो वे **सीपिया** को चुनेंगे । डा० चौधरी ने लिखा है कि अगर उन्हें सिर्फ एक औषधि को चुनना हो तो वे **सल्फर** को चुनेंगे । सीपिया का रोगी 'सर्द'—Chilly—प्रकृति का होता है)

साइलीशिया (SILICEA)

[साइलीशिया का वायोकैमिक उपयोग]

शुस्लर की १२ वायोकैमिक औषधियो मे **साइलीशिया** भी एक है। शुस्लर का कहना है कि शरीर के कोमल तथा कठोर तन्तुओ (Soft and hard tissues) की रचना मे **साइलीशिया** होता है। अगर शरीर के ततुओ को बनानेवाले 'कोष्ठको' (Cells) मे इस की कमी हो जाय, तो उनमे शरीर के गन्दे माद्दे को वाहर फेकने की शक्ति कम हो जाती है। उदाहरणार्थ, जव शरीर के किसी भाग मे फोडा वन कर पस पड जाती है, तो उस पस को वाहर निकाल फेंकने का काम **साइलीशिया** करता है । यही कारण है कि जव फोडे मे पस पड जाय, तव **साइलीशिया** देने से पस वाहर निकल जाती है। इस वायोकैमिक लवण को देने से शरीर के 'कोष्ठको' मे ताकत आ जाती है, और वे पस को वाहर फेंकने लगते है । होम्योपैथी के अनुसार **साइलीशिया** मे यह शक्ति है कि अगर इसे उच्च-शक्ति मे दिया जाय, तो यह पस को अन्दर ही जज्व कर लेती है, और अगर निम्न-शक्ति मे दिया जाय, तो यह फोडे-फुन्सी को फोड देती है, पस को वाहर निकाल देती है। होम्योपैथी मे यही काम **हिपर सल्फ**

भी करता है, परन्तु हिपर के फोडे-फुन्सी मे स्पर्श के प्रति असहिष्णुता बहुत अधिक पायी जाती है, फोडे को जरा भी छूने से दर्द होता है, रोगी फोडे को छूने नही देता, साइलीशिया मे यह बात नही है। साइलीशिया पस को ही नही, उच्च-शक्ति मे फोडे-फुन्सी के खून को भी जज्ब कर देता है। कभी-कभी शरीर के भिन्न-भिन्न अगो की दो झिल्लियो के बीच जो सीरम इकट्ठा हो जाता है, भले ही वह फेफडो मे हो या घुटनो मे हो, साइलीशिया से वह जज्ब हो जाता है।

अगर शरीर मे 'यूरेट आफ सोडा' जमा हो जाय, तो वह कभी-कभी जोडो मे बैठ जाता है जिससे गठिये का दर्द होने लगता है। कभी-कभी यह 'यूरेट ऑफ सोडा' गुर्दे मे जमा हो जाता है जिस से गुर्दे मे पथरी बन जाती है। डॉ० शुस्लर का कहना है कि इस अवस्था मे साइलीशिया यूरेट से मिलकर उसे घोल देता है और उसे शरीर से निकाल देता है। इस प्रकार जोडो के दर्द और गुर्दे की पथरी के लिए बायोकैमिक **साइलीशिया** लाभप्रद है।

कभी-कभी पावो का पसीना एकदम रुक जाने से कई बीमारिया पैदा हो जाती हैं। किसीको आखो से दीखना एकदम बन्द हो जाता है, मोतिया हो जाता है, अर्धांग तक हो जाता है। ऐसी अवस्था मे साइलीशिया बहुत लाभ देता है। इसे देने से पावो का पसीना जारी हो जाता है, और बीमारी दूर हो जाती है।

शुस्लर की सम्मति यह है कि **'कैलकेरिया सल्फ'** की जगह **साइलीशिया** और **नैट्रम फॉस** काम दे सकते हैं, इसीलिये शुस्लर ने अपने इलाजो मे **कैलकेरिया सल्फ** का जिक्र न करके जहा-जहा **कैलकेरिया सल्फ** देना चाहिये, वहा-वहा **साइलीशिया** और **नैट्रम फॉस** का उल्लेख किया है। **कैलकेरिया सल्फ** और **नैट्रम फॉस** के प्रकरण मे भी हम इस बात का उल्लेख कर आये हैं। **साइलीशिया** और **नैट्रम फॉस** दोनो मे सूजन की पस को सुकाने की शक्ति है। सूजन तथा पस मे **नैट्रम फॉस** के बाद **साइलीशिया** देने का इतना अधिक प्रयोग होता है कि अगर यह कह दिया जाय कि **नैट्रम फॉस** का क्रौनिक **साइलीशिया** है, तो भी जहातक सूजन तथा पस का सबध है, इस कथन मे कोई अत्युक्ति नही होगी।

कई लोगो का कथन है कि बायोकैमिक औषधियो का प्रभाव निम्न समयो मे अच्छा होता है

कैलकेरिया फ्लोर (१५ जून से १४ जुलाई)
कैलकेरिया फॉस (१५ दिस. से १४ जन)
कैलकेरिया सल्फ (१५ अक्तू. से १४ नव)
फेरम फॉस (१५ फर्वरी से १४ मार्च)
कैलि म्यूर (१५ मई से १४ जून)
कैलि फॉस (१५ मार्च से १४ अप्रैल)
कैलि सल्फ (१५ अग से १४ सित)
मैग फॉस (१५ जुलाई से १४ अग)
नैट्रम म्यूर (१५ जन से १४ फर्व)
नैट्रम फॉस (१५ सित. से १४ अक्तू.)
नैट्रम सल्फ (१५ अप्रैल से १४ मई)
साइलीशिया (१५ नव. से १४ दिस)

[साइलीशिया का होम्योपैथिक उपयोग]

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) शारीरिक रचना—पेट तथा सिर बड़ा, अन्य अंग क्षीण, हाथ-पैर दुबले, झुर्रियाँ पड़ी हुई, परिपोषण क्रिया का अभाव
(२) शारीरिक रचना—शीत-प्रकृति का होते हुए भी नवीन रोगों में कभी-कभी 'ऊष्णता-प्रधान' होना, परन्तु पुराने रोगों में 'शीत-प्रधान' ही होना
(३) मानसिक लक्षण—डरपोक, अपनी योग्यता में सन्देह, परन्तु काम को हाथ में लेने पर उसे योग्यता से निबाह लेना, दिमागी काम करनेवालों की मस्तिष्क की थकावट, कुछ निश्चित विचार
(४) सोने पर माथे से गर्दन तक पसीना आना परन्तु शरीर खुश्क होना
(५) पांवों में बदबूदार पसीना आना, या पसीने के दब जाने से रोग
(६) घाव में मवाद धीरे-धीरे बनते रहने की हालत में, या मवाद निकलने के बाद घाव को भरने में उपयोगी
(७) आंख, गुदाद्वार आदि का नासूर
(८) सुई, कांटा, खप्पच, गोली आदि को निकाल देता है
(९) कब्ज—लम्बी, सूखी टट्टी जो निकलते-निकलते पीछे को लौट जाती है (सिलेनियम में ऐसा है)
(१०) श्लैष्मिक-स्राव—जुकाम आदि में—एकोनाइट, पल्स तथा साइलीशिया की तुलना
(११) तपेदिक में साइलीशिया

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणों में कमी (Better)

*गर्मी (पेट के सिवाय) से कमी
*सिर लपेट लेने से रोग में आराम
*पेशाब खुलकर आने से रोग में कमी
*जल-भरी हवा में रोग का घटना
*गर्म कमरे के अन्दर रोगी को अच्छा लगना

लक्षणों में वृद्धि (Worse)

*ठंड तथा ठंडी हवा से वृद्धि
*ठंडे पानी से स्नान से वृद्धि
*ठंड में सिर नंगा रखने से वृद्धि
*पावों का पसीना दबने से वृद्धि
*सीलन से रोग में वृद्धि
*हरकत से रोग में वृद्धि
*रात के समय रोग में वृद्धि
*सुबह के समय रोग में वृद्धि
*दूध या शराब पीने से वृद्धि
*अमावस्या के दिन रोग का बढ़ जाना
*मस्तिष्क का काम करने से थकावट हो जाना
*मानसिक उत्तेजना से वृद्धि
*माहवारी के दिनों में वृद्धि

(१) **शारीरिक-रचना—पेट तथा सिर बडा, अन्य अंग क्षीण, हाथ-पैर दुबले, झुरिया पडी हुई, परिपोषण-क्रिया का अभाव**—रोगी का शारीरिक-गठन अपने ही प्रकार का होता है। अन्य अंगो की अपेक्षा पेट तथा सिर बडा होता है, हाथ-पैर दुबले-पतले, क्षीण होते हैं, चेहरे पर झुरिया पडी दीखती है। सारा शरीर क्षीणता का चित्र होता है, पीला चेहरा, रक्तहीन। रोगी का सिर सदा पसीने से तर रहता है, शरीर के अन्य भागो मे पसीना नहीं आता, वह सूखा रहता है। खोपडी मे बडा नाजुकपन होता है, वह सिर पर हैट नहीं रख सकता, सिर के बाल इतने नाजुक होते हैं कि वह कघी तक नहीं कर सकता। सिर के नाजुकपन का एक दूसरा परन्तु विचित्र-लक्षण यह है कि वह सिर पर हैट तो रख नही सकता, परन्तु सिर को ठड से बचाने के लिये उसे हर समय कपडे से लपेटे रहता है। **कैलकेरिया** का शरीर गोरा, मोटा, थुलथुला, चर्बीदार (Fair, fat, flabby, obese) होता है, **साइलीशिया** का शरीर दुर्बल, ठिगना (Weak, puny) होता है, **सल्फर** का शरीर **कैलकेरिया** से उल्टा—तेज, पतला, सीक-सा, स्नायविक, क्रियाशील (Quick, wiry, nervous, active) होता है; **लाइकोपोडियम** का शरीर पित्त-प्रधान, कालिमा या पीलिमा लिये (Bilious, swarthy, yellowish) होता है, **ग्रेफाइटिस** का शरीर मोटा, चर्बीदार होता है परन्तु इसके साथ उसे कोई-न-कोई त्वचा का रोग (Fat, flabby with skin trouble) होता है। **साइलीशिया** के रोगी के चेहरे पर झुरिया पड जाती हैं, छोटी उम्र का होते हुए भी बूढो का-सा चेहरा होता है।

साइलीशिया और कैलकेरिया—दोनो को ठड बहुत महसूस होती है, सोने पर इन दोनो मे पसीने से तकिया भीज जाता है, परन्तु **साइलीशिया** का बच्चा अच्छा खाते हुए भी परिपोषण क्रिया के अभाव (Imperfect assimilation) के कारण, और **कैलकेरिया** का बच्चा परिपोषण क्रिया के विकार (Defective assimilation) के कारण परिपुष्ट नहीं हो पाता। **कैलकेरिया** का बच्चा थुलथुल होता है, **साइलीशिया** का बच्चा दुर्बल और ठिगना होता है, **कैलकेरिया** के बच्चे का सिर तथा पेट दोनो बढ जाते है, **साइलीशिया** के बच्चे का पेट बढ़ जाता है। सब लक्षणो को ध्यान मे रखा जाय, तो निम्न तीन औषधियो मे भेद निम्न प्रकार है

कैलकेरिया	साइलीशिया	सैनीक्यूला
माथे मे बहुत अधिक खट्टी बू का पसीना आता है, और नींद आते ही तकिया पसीने मे भीज जाता है	माथे से गर्दन तक अधिक बदबूदार पसीना आता है, और नींद आते ही तकिया भीज जाता है	बच्चा ऊपर की ओर से नीचे पतला होता जाता है और नींद के समय पसीना आता है

कैलकेरिया	साइलीशिया	सैनीक्यूला
बच्चा मोटा-ताजा थुलथुला होता है	बच्चा छोटा, दुर्बल होता है, बूढा-सा लगता है, झुरिया पड जाती है	बच्चे का चमडा झूल जाता है
सिर और पेट अन्य अगो से अपेक्षाकृत बडे होते हैं	केवल पेट अपेक्षाकृत अन्य अगो से बडा होता है, वैसे सिर भी बडा हो सकता है	x
परिपोषण क्रिया के विकार के कारण शरीर का कोई भाग अधिक बढ जाता है	परिपोषण क्रिया के अभाव के कारण पुष्ट-भोजन खाने पर भी शरीर पुष्ट नही होता	दिन-रात भूख लगती है परन्तु दिनोदिन पतला होता जाता है
माथे की हड्डी नही मिलती (शरीर की हड्डिया पुष्ट नहीं होती)	माथे की हड्डी नही मिलती	x

गण्डमाला-दोष तथा रिकेट-दोष ग्रस्त बालक (Scrofulous and Rickety children)—जैसा हमने ऊपर कहा साइलीशिया का बालक पुष्टि-कारक भोजन खाने पर भी पनपता नही क्योंकि उसमे पोषण-क्रिया का अभाव (Defective nutrition) होता है। उसकी पाचन-शक्ति ठीक नही होती। वह खालिस दूध पीयेगा, परन्तु वह जिस्म मे नही लगेगा। बच्चा सूकता चला जाता है। बच्चो के सूके की बीमारी मे लक्षण मिलने पर यह उत्कृष्ट दवा है। गण्डमाला दोष-ग्रस्त बच्चो के लिये यह उपयोगी है। गण्डमाला का अर्थ है—Scrofula यह शरीर की ग्रन्थियो की बीमारी है जो तपेदिक की प्रकृति के लोगो मे पायी जाती है। इसी प्रकार रिकेट-रोग-ग्रस्त बच्चो के लिये भी यह उपयोगी है। रिकेट—Rickets—बच्चो की वह बीमारी है जिस मे हड्डिया नर्म और टेढी पड जाती है। बच्चो की रीढ की हड्डी टेढी पड जाने पर (Spinal curvature) भी इस औषधि का अचूक प्रभाव है। गण्डमाला तथा रिकेट-दोष-ग्रस्त बच्चो की खोपडी के जोड खुले (Open fontanelles and sutures) रहते है, सिर पर पसीना आता है। इन लक्षणो मे **साइली-शिया और कैलकेरिया फास** मिलते-जुलते है। दोनो मे खोपडी के जोड खुले रहते है और सिर पर पसीना आता है, परन्तु **साइलीशिया** के रोगी को कब्ज रहती है, **कैलकेरिया फास** के रोगी को पतले दस्त आते है। **कैलकेरिया कार्ब**

मे भी सिर मे पसीना आने का लक्षण है, परन्तु उसके पसीने मे खट्टी वू आती है, **साइलीशिया** और **कैलकेरिया फॉस** के पसीने मे सिर्फ बदबू आती है, खट्टी वू नही।

साइलीशिया के वच्चे की वढती मानो रुक जाती है—यह वच्चा हर वात मे पिछड जाता है। वडा पेट और सिकुडा हुआ शरीर, अगो मे मास का अभाव, चमडी-ही-चमडी, वच्चा चलना भी देर मे सीखता है। ऐसा मालूम पडता है कि मानो उसकी सारी वढती रुक गई है। खूब खाने-पीने पर भी वढता नही, सूकता चला जाता है। इसीलिये सूके के रोग मे इसे अवश्य ध्यान मे लाना पडता है। अगर ठीक समय पर **साइलीशिया** न दिया जाय, तो वह सूकता-सूकता मृत्यु के मुख मे जा पडता है। डॉ० नैश लिखते हैं कि इस प्रकार के अनेक वच्चो को ३० या ऊपर की शक्ति की इस औषधि से उन्होने मृत्यु के मुख से वचाया है।

(२) शारीरिक-रचना—शीत-प्रकृति (Chilly) का होते हुए भी कभी-कभी नवीन रोगो मे भी 'ऊष्णता-प्रधान' (Warm) होना—रोगी मुख्य तौर पर शीत-प्रधान होता है, ठड को वर्दाश्त नही कर सकता, सिर को हर समय लपेटे रखना चाहता है, गर्म कमरे मे भी उसे ठड महसूस होती है। परन्तु डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि यह ध्यान रखने की वात है कि कभी-कभी नवीन रोगो मे वह 'ऊष्णता-प्रधान' (Warm-blooded) भी हो सकता है, नवीन रोगो मे यह हो सकता है कि गर्मी को न सह सके। पुराने रोगो मे तो वह 'शीत-प्रधान' (Chilly) ही होता है, पुराने रोगो मे ठडक को वर्दाश्त नहीं कर सकता, स्वभाव से वह शीत-प्रधान ही होता है। **साइलीशिया** की प्रकृति (Modality) मे हमने लिखा है कि गर्मी से उसका रोग घटता है—इसका यही अर्थ है कि वह शीत-प्रकृति का होता है, परन्तु शीत-प्रकृति का होते हुए भी जहा तक पेट का सवध है, वह खाने-पीने के लिये गर्म वस्तुओ के स्थान मे ठडी चीजे खाना-पीना चाहता है। इस दृष्टि से **साइलीशिया** का 'व्यापक-लक्षण' (General symptom) तथा 'प्रकृति' (Modality) तो शीत-प्रधान होना, गर्म वस्तुओ को चाहना, गर्मी पसन्द करना ही है, परन्तु नवीन रोगो मे वह ठड चाह सकता है, खाने-पीने मे ठडी वस्तु पसन्द कर सकता है, परन्तु व्यापक-लक्षण की दृष्टि से वह 'शीत-प्रकृति' का ही है, और क्योकि होम्योपैथी मे 'व्यापक-लक्षण' का ही विशेष महत्व है, इसलिये **साइलीशिया** का निर्वाचन करते हुए इसी वात को ध्यान मे रखना चाहिये कि रोगी शीत-प्रधान हो। परन्तु शीत-प्रधान और शीत-प्रकृति का होते हुए अगर नवीन रोगो मे उसे ठडक पसन्द हो, या खाने-पीने मे वह ठडी वस्तु पसन्द करे, तो इस मे **साइलीशिया** देने मे कोई रुकावट नही आनी चाहिये। औषधि का निर्वाचन करते हुए 'व्यापक-लक्षण' ही मुख्य वस्तु है।

(३) **मानसिक-लक्षण—डरपोक, अपनी योग्यता मे सन्देह परन्तु काम को हाथ में लेने पर उसे योग्यता से निबाह लेना, दिमागी काम करनेवालों की मस्तिष्क की थकावट , कुछ निश्चित विचार**—रोगी के मानसिक-लक्षण भी अपने ही प्रकार के विचित्र होते हैं। रोगी मे हिम्मत नही होती। दिल कमजोर हो जाता है, घबडाया रहता है, हर समय हारा-हारा रहा करता है। जिस व्यक्ति मे कभी भरपूर आत्म-विश्वास था, स्वतत्र विचार कर सकता था, अपनी आवाज बुलद कर सकता था, वह चिकित्सक को आकर कहता है कि उस मे आत्म-विश्वास नही रहा, साहस का अभाव हो गया है, उसे ऐसे लगता है कि जनता के सम्मुख भाषण देने खडा होगा तो बीच मे ही लडखडा जायगा। वह मानसिक-कार्य मे इतना जुटा रहा है कि उसका मन का ढाचा ही टूट गया है। यह सब-कुछ होते हुए भी अगर जबर्दस्ती वह अपने काम मे जुट जाय, व्याख्यान के लिये जनता के सम्मुख खडा हो जाय, तो बखूबी से अपना काम निभा ले जाता है, उसका आत्म-विश्वास उसमे लौट आता है, और सारा काम सफलता मे हो जाता है। **साइलीशिया** की विचित्र मानसिक-अवस्था का रूप यह है कि व्यक्ति को अपनी असफलता का डर बना रहता है। डॉ० डनहम का कहना है कि **साइलीशिया** का रोगी समझा करता है कि वह कुछ नही कर सकता, परन्तु जब उसे किसी काम करने को बाधित कर दिया जाता है, तब वह जोश मे उस काम को इतना अधिक कर डालता है कि उसे स्वय आश्चर्य होता है कि उसने यह कार्य कैसे किया। अगर उसे कोई मानसिक-कार्य करना है, तो उसे यही भय बना रहता है कि वह इस काम को सफलता-पूर्वक कर सकेगा या नहीं, यद्यपि जब वह उस काम को करने लगता है, सिर पर ही आ पडती है, तब वह उसे योग्यता से निबाह ले जाता है। ऐसा रोग की प्रारभिक अवस्था मे होता है। इस अवस्था मे **साइलीशिया** उस व्यक्ति मे हिम्मत बाध देगा। अगर इस अवस्था मे रोग को न पकडा गया, तो आगे चलकर ऐसी अवस्था भी आ जाती है जब व्यक्ति काम करने के अयोग्य हो जाता है, करता है तो ठीक नही कर पाता। इस हालत मे भी **साइलीशिया** देने से रोगी सुधर सकता है।

विद्यार्थियो की दिमागी कमजोरी मे साइलीशिया—उदाहरणार्थ, एक विद्यार्थी बरसो मेहनत करता-करता अब अपने अध्ययन के अतिम-काल मे आ पहुचा। इम्तिहान आ गया, परन्तु उसे डर सताने लगा कि कही असफल न हो जाय। वह इम्तिहान मे बैठता है और सफलतापूर्वक सवालो को हल कर लेता है। परिश्रम समाप्त होने के बाद उसे ऐसी मानसिक-थकान आ घेरती है कि सालो तक वह किसी धघे के लायक नही रहता। उसे किसी भी धधे मे हाथ लगाने से डर लगता है, उसका मस्तिष्क थकान का शिकार हो गया है। **साइलीशिया** उसको एकदम खडा कर देगा।

व्यावसायिको की दिमागी कमजोरी मे साइलीशिया—विद्यार्थियो, वकीलो, व्याख्याताओ आदि की सीमातीत मानसिक कार्य करने के परिणामस्वरूप होने-वाली दिमागी कमज़ोरी मे इस से लाभ होता है। वकील कहता है कि जब मे मैने अमुक मुकदमा दिन-रात लगकर लडा है, तब से दिमाग इतना थका-थका रहता है कि कुछ काम नही हो पाता, रात को नीद भी नही आती। ऐसे लोग जिनके दिमाग पर काम का बे-इन्तिहा ज़ोर पड जाता है, इस ज़ोर पडने से जिनका दिमाग काम करने लायक नही रहता, उन्हे **साइलीशिया** देने से दिमागी थकान दूर हो जायेगी, और वह दिमाग से फिर पहले-सा काम करने लगेगा।

साइलीशिया शारीरिक तथा मानसिक बल लौटा लाता है—इस औषधि का व्यक्ति कमज़ोर, पीले बदन का होता है, मास-पेशिया इसकी ढीली होती है, उनमे ताकत नही रहती। शरीर के समान मन भी असमर्थता की मूर्ति हो जाता है। उसके स्नायु-सस्थान पर शक्तिहीनता छाई रहती है। वह अधीर होता है, स्नायु-क्षीण, साहसहीन (Grit all gone)—ऐसे रोगी के लिये **साइलीशिया** अमृत-तुल्य है, यह ढहते को खडा कर देता है, गिरते को उभार देता है, रोगी की बुझती जीवन-ज्वाला चमक उठती है, आशा का दीप जल उठता है, निराशा और हतोत्साह का स्थान आशा और नवोत्साह ले लेता है।

कुछ निश्चित विचार (Certain fixed ideas)—इस औषधि का रोगी कुछ निश्चित परन्तु काल्पनिक विचारो का शिकार होता है। उदाहरणार्थ, उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके चारो तरफ पिन बिखरे पडे हैं, उसे डर लगता है कि कही उसका पाव इन पर न पड जाय, वह उन्हे ढूढा करता है, न मिलने पर भी उसे यकीन नही आता कि वहा कुछ नही है। उसे ऐसा लगता है कि वह एक व्यक्ति नही, दो भागो मे विभक्त है, कोई जीवित वस्तु उसके कान मे घुसी हुई है, उसकी आँखे रस्सियो से सिर की तरफ खिची हुई है, उसकी जीभ के अग्रभाग पर एक बाल है, उसके गले के भीतर एक पिन अटका पडा है, उसकी अगुलियो के अगले हिस्से कागज के बने है। इसी प्रकार के कुछ बधे-बधाये, निश्चित विचारो का वह शिकार हो जाता है। होम्योपैथी मे इस प्रकार के लक्षणो का बडा महत्व है। डॉ० क्लार्क ने इसी प्रकार के एक रोगी को जिसे इन्फ्लुएन्ज़ा के बाद पागलपन सवार हो गया था और वह हर समय पिन ढूढता फिरता था इस लक्षण के आधार पर **साइलीशिया** ३० से ठीक कर दिया और वह पिन ढूढना भूल गया।

(४) **सोने पर माथे से गर्दन तक पसीना आना परन्तु शरीर खुश्क होना, पसीने के साथ सिर-दर्द**— रोगी को नीद आते ही माथे पर गर्दन तक पसीना आना शुरु हो जाता है, उसका तकिया पसीने से भीज जाता है, शरीर पर पसीना नही आता, वह खुश्क बना रहता है। **कैलकेरिया** मे भी सोने पर माथे

पर पसीना आता है, गर्दन पर नहीं आता। **साइलीशिया** का पसीना बदबूदार होता है, **कैलकेरिया** का खट्टी बू का। **कोनायम** में तो आंख बन्द करते ही पसीना आने लगता है जो इसका विशिष्ट-लक्षण है। **सैम्बूकस** में नींद खुलते ही पसीना आने लगता है। **पल्सेटिला** में शरीर के सिर्फ एक तरफ पसीना आता है। **रस टॉक्स** में सिर खुश्क रहता है सिर्फ शरीर पर पसीना आता है, **साइलीशिया** में सिर्फ सिर और गर्दन पर पसीना आता है, शरीर खुश्क रहता है।

माथे पर पसीने के साथ सिर-दर्द—इस औषधि में सिर-दर्द के साथ माथे पर पसीने का लक्षण है। पुराना सिर-दर्द जो प्रातः या दोपहर सिर के पिछले भाग से शुरु होकर माथे तक पहुंच जाता है, रात को तेज हो जाता है, एवं दाईं आंख के ऊपर का स्नायु-शूल—इन दर्दों के साथ बहुत-सा पसीना आ जाता है और मतली या उल्टी हो जाती है। इन लक्षणों में यह औषधि लाभ करती है। सिर पर ठंडा, चिपचिपा, बदबूदार पसीना जो चेहरे तक आये, परन्तु शरीर के नीचे के अंग खुश्क रहें या खुश्क-से ही रहें—यह इस औषधि का विशिष्ट लक्षण है। शरीर के ऊपर के हिस्से—सिर, चेहरे आदि में पसीना और नीचे का हिस्सा खुश्क रहना—इस लक्षण के साथ सिर-दर्द हो, तो इस औषधि से ठीक हो जाता है। सिर को लपेटे रखने से आराम मिलता है। रोगी को सोते समय सिर तथा गर्दन पर पसीना आता है।

(५) पांवों से बदबूदार पसीना आना, अंगुलियों के बीच में ज़ख्म हो जाना, या पसीने के दब जाने से उत्पन्न रोग—बदबूदार पसीना इस औषधि का व्यापक-लक्षण है। सिर-माथे के पसीने के विषय में हम लिख आये हैं, सिर-माथे की तरह **साइलीशिया** में पैरों से भी बदबूदार पसीना आता है, अंगुलियों के बीच में ज़ख्म हो जाते हैं। इस पसीने के लक्षण के आधार पर रोगी को किसी रोग में भी **साइलीशिया** दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कई बार ठंड लगने से या किसी अन्य कारण से रोगी का पांवों का पसीना दब जाता है। पसीने के इस प्रकार दबने से अनेक रोग उठ खड़े हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, पांवों के पसीने के दबने से ऐंठन पड़ सकती है, दौरे पड़ सकते हैं, हाथ-पैर बेकार हो सकते हैं, नाक-कान से मवाद आ सकता है, ट्यूमर हो सकता है, पेट में सूजन आ सकती है, दिमाग़ी बीमारी या मस्तिष्क की थकान हो सकती है। अगर रोगी कहे कि जब से पैर का पसीना बन्द हुआ है, तब से अमुक रोग हो गया है, तो इस औषधि के देने से पैरों का पसीना जारी हो जायगा और रोग चला जायगा। अगर **साइलीशिया** उस रोगी की 'धातु-गत-औषधि' (Constitutional drug) होगी, तो धीरे-धीरे यह पैरों का पसीना भी चला जायगा।

पांवों का बदबूदार पसीना और सिर का सारे शरीर से ज़्यादा बड़ा होना—ये दो लक्षण **साइलीशिया** और **कैलकेरिया कार्ब** में एक-से हैं, दोनों को

सिर मे ठंड बहुत ज्यादा महसूस होती है, दोनो मानसिक-विकास मे पिछड़े होते है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **साइलीशिया** मे तो **कैलकेरिया** जैसा सिर मे खूब पसीना आता है, **बैराइटा कार्ब** मे यह लक्षण नही है। इसके अतिरिक्त **बैराइटा** मे **साइलीशिया** की अपेक्षा मानसिक-क्षीणता बहुत अधिक होती है। **साइलीशिया** मे बच्चा अपनी बात पर अडनेवाला और दूसरे की इच्छा का विरोध करता है।

(६) घाव मे मवाद धीरे-धीरे बनते रहने की हालत मे, या मवाद निकलने के बाद घाव को भरने मे उपयोगी है—इस औषधि के विषय मे यह समझ लेना आवश्यक है कि **साइलीशिया** हमारे बाल, नख, त्वचा, भीतर के अगो के आवरण, स्नायु-मडल, मास-पेशी, हड्डी—सब जगह पाया जाता है। जब परिपोषण-क्रिया का अभाव (Imperfect assimilation or malnutrition) होता है, तब सब प्रकार के रोग उठ खडे होते है। बाल झड़ने लगते हैं, नख टेढे हो जाते है, हड्डिया गलने-सडने लगती है, त्वचा पर फोडे-फुन्सी हो जाते हैं, उनमे पस पड जाती है, कार्बंकल, विसहरी—बिटलो—भगदार—फिश्चुला—आदि भयकर फोडे भी हो जाते हैं। ये सब तकलीफें इसीलिये होती हैं क्योकि शरीर मे परिपोषण-क्रिया ठीक-से नही हो रही होती। **साइलीशिया**, जो नख से शिख तक हमारे प्रत्येक अग मे मौजूद है, उसका काम परिपोषण-क्रिया को ठीक बनाये रखना है। शक्तिकृत (Potentized) **साइलीशिया** परिपोषण-क्रिया के अभाव को दूर कर देता है, और शरीर का स्वास्थ्य सुधार कर फोडे, कार्बंकल, विसहरी, भगदर आदि को दूर कर देता है।

इस पृष्ठ-भूमि को सामने रखते हुए हमे इस औषधि के शरीर पर घावो के सबध मे प्रभाव को समझना होगा। **साइलीशिया** का प्रयोग फोडो-घावो-कार्बंकल आदि पर इसीलिये होता है क्योकि यह शरीर की परिपोषण-क्रिया को ठीक कर देता है।

जब शरीर मे कोई घाव होता है, फोटा, कार्बंकल आदि बनता है, तब पहले सूजन (Inflammation) होती है, वह पक कर पस (Suppuration) पैदा कर देती है, पस निकल जाने के बाद घाव अच्छा (Healing) होने लगता है। यह प्रक्रिया शरीर के किसी भाग मे भी हो सकती है। क्योकि **साइलीशिया** का काम परिपोषण-क्रिया को ठीक करना है इसलिये, भले ही शरीर के 'कोमल' (Soft) अगो मे घाव हो या 'कठोर' (Hard) अगों मे घाव हो, साइलीशिया हर अग के घाव पर अपना असर करेगा। त्वचा पर, नासूर पर, ग्रन्थि पर, हड्डी पर—जिस-किसी जगह घाव होगा, यह औषधि वही पर प्रभाव दिखलायेगी। परन्तु इसका प्रभाव कब शुरु होता है, और फोडे की किस अवस्था मे इसे देना चाहिये—यह प्रश्न है।

फोड़े मे **साइलीशिया** दो अवस्थाओ मे उपयोगी सिद्ध होता है। पहली अवस्था तो वह है जब फोडा पुराना हो जाय, उसमे मवाद धीरे-धीरे बनता ही रहे, ठीक होने मे न आये, तब इसकी १००० शक्ति की मात्रा देने से शरीर की परिपोषण-क्रिया क्रियाशील हो जाती है, और यह धीरे-धीरे रिसते मवाद को क्रियाशील बनाकर एकदम मवाद को निकाल बाहर करता है और घाव जल्दी भर जाता है। दूसरी अवस्था वह है जब फोडे से मवाद बाहर निकल जाय और फिर भी घाव ठीक होने मे न आये, या अगर फोडा ठीक भी हो जाय तो उसके चारो तरफ के किनारे उभरे रहें। इस अवस्था मे इस औषधि को देने से घाव जल्दी ठीक हो जाता है और फोडे के किनारे उभरे न रहकर त्वचा साफ, एकसार हो जाती है। इस से स्पष्ट है कि इस औषधि के देने का समय फोडे के शुरु मे नही है, बाद मे जब मवाद बनता ही रहे, या जब घाव का भरना हो, तब है। इस से पहले **हिपर सल्फ या कैलकेरिया सल्फ** देने का समय होता है क्योकि उनका काम, जो पस बन चुकी है, उसे निकालने का है। यह हम हिपर तथा **मर्क** के प्रकरण मे पहले ही लिख आये हैं कि फोडे को पकाने (Suppuration) का—अर्थात् फोडा पक कर उसमे पस जमा हो जाय—यह काम **मर्क सौल** का है।

(७) आख, गुदा-द्वार आदि के नासूर (Fistula) को ठीक करता है— आख, गुदा-द्वार आदि के नासूर मे यह औषधि अत्यन्त लाभप्रद पायी गई है। इसका मुख्य काम पोषण-क्रिया को ठीक कर इन घावो को भर देना है। १९२७ की होम्योपैथिक कांग्रेस मे डॉ० नौश बार्कर ने गुदा-द्वार मे भगदर के एक रोगी के विषय मे अपने अनुभव का उल्लेख करते हुए बतलाया कि उसे २० साल से वह रोग था। भगंदर मे इतना बडा छेद था कि वे अपनी छोटी अगुली उसमे डाल सकते थे। रोगी को पाखाना जाते हुए भयकर दर्द होता था। उसे उन्होने **नाइट्रिक एसिड** दिया, कुछ लाभ नही हुआ। फिर लक्षण लिये गये। रोगी शीत-प्रधान था, बडे तेज़ मिजाज का था, छोटी बात पर ही भडक उठता था, गुस्सा बेहद था, पेट भी खराब रहता था, कई बार टट्टी जाता था परन्तु पेट साफ नही होता था। इन लक्षणो पर **नक्स** दिया गया, परन्तु कुछ लाभ नही हुआ। उसके बाद फिर उसके लक्षण लिये गये। पता चला कि उसकी अगुलिया कही-कही-से फटी हुई थी, पस निकलता था, ठीक नही होता था। सब से बडा लक्षण यह था कि जब से उसके पावो से पसीना आना बन्द हुआ था, तब से उसका स्वास्थ्य कभी सुधरा नही था। इस लक्षण के आधार पर उसे साइलीशिया १०M दिया गया जिसका चमत्कारी प्रभाव हुआ। एक दिन तो उसे असीम कष्ट हुआ, परन्तु अगले दिन से उसकी दशा सुधरने लगी। कब्ज़ जाता रहा, पाखाने मे दर्द होना बन्द हो गया, और तीन महीने के बाद नासूर का निशान तक न रहा। पाव का पसीना रुक जाने के लक्षण पर इस औषधि ने जो

चमत्कार दिखलाया उससे स्पष्ट हो जाता है कि होम्योपैथी मे इस प्रकार के लक्षणो का कितना महत्व है।

(८) **सूई, कांटा, खप्पच, गोली आदि को निकाल देता है**—यह औषधि शरीर के किसी स्थान मे पडे हुए बाह्य-तत्व को बाहर निकाल देती है, ठीक ऐसे जैसे पस को निकाल देती है। अगर शरीर मे सूई चली जाय, काटा या खप्पच चुभ जाय, गोली जा बैठे, तो इस औषधि से वह शरीर से बाहर निकल आती है। यहाँ तक इसका इस दिशा मे प्रभाव है कि अगर शरीर मे कही गोली जा बैठे, तो इस से वह बाहर निकल आयेगी। कभी-कभी किसी रोगी के फेफडो मे गोली जा बैठती है। वहा उसके चारो तरफ कैलसियम का आवरण उसे घेर लेता है इसलिये गोली रोगी को कोई नुक्सान नही पहुचाती। ऐसी हालत मे रोगी को **साइलीशिया** देना खतरनाक है क्योकि इस से गोली अपना स्थान छोडकर निकलने की कोशिश करेगी और रोगी का जीवन सकट मे पड जायगा।

(९) **कब्ज—लम्बी, सूकी टट्टी जो निकलते-निकलते पीछे को लौट जाती है (Bashful stool)**—इस औषधि की टट्टी की विशेषता यह है कि वह अत्यन्त सूखी, सख्त तथा लम्बी होती है। गुदा-प्रदेश मे देर तक अटकी पडी रहती है इसलिये गुदा मे उसे निकालने की शक्ति भी नही रहती। इस मे अगर श्लेष्मा भी लिपटा हो, तो भी यह आसानी से नहीं निकलती। यह निकलते-निकलते वापस लौट जाती है। डा० मोनग्रे ने इसे 'शर्मीले-मल' (Bashful stool) का नाम दिया है, मानो उसे बाहर आते शर्म लगती है। अन्त मे, इसे हाथ की अगुलियो से निकालना पडता है। इसे निकालने मे रोगी को जो जोर लगाना पडता है उस से गुदा मे घाव भी हो जाते हैं। **थूजा** मे भी टट्टी बाहर आती-आती पीछे को लौट जाती है। **सेलेनियम** मे भी यह लक्षण है।

(१०) **श्लैष्मिक-स्राव—जुकाम आदि—मे एकोनाइट, पल्स तथा साइलीशिया की तुलना**—जुकाम या किसी भी स्थान की श्लैष्मिक झिल्ली के स्राव मे तीन अवस्थाओ का हमे सामना करना पडता है। जुकाम की पहली अवस्था मे जब श्लैष्मिक-स्राव पतला, पनीला होता है, तब **एकोनाइट** का लक्षण है, जब यह श्लैष्मिक-स्राव गाढा, पीला तथा मृदु—न लगनेवाला—हो जाता है, तब **पल्स** का लक्षण है, जब यह श्लैष्मिक-स्राव श्लेष्मा न रह कर पस बन जाता है, सड जाता है, तब **साइलीशिया** का लक्षण होता है।

(११) **तपेदिक मे साइलीशिया**—डा० कैन्ट अपनी 'मैटीरिया मैडिका' के पृष्ठ ८९२ मे लिखते हैं कि यद्यपि तपेदिक की प्रवृत्ति को दूर करने के लिये इस से उत्तम दूसरी कोई औषधि नही है, और जब रोग ने उग्र-रूप न धारण किया हो, तब तपेदिक की प्रवृत्ति को यह जड-मूल से नष्ट कर देता है, तो भी अगर फेफडे मे टी० बी० की गाठ (Tubercle) पड गई हो, तब

साइलीशिया देना खतरनाक हो सकता है। **साइलीशिया** का काम विजातीय-तत्त्व को बाहर निकाल देना है। अगर फेफडे मे टी० बी० की गाठ पड गई है, तो इस औषधि को देने से गाठ की जगह सूजन हो जायगी, पस पड जायगी ताकि गाठ बाहर धकेल दी जाय। अगर सारे फेफडे मे इस प्रकार की टी० बी० की गाठें पड गई हैं, तो **साइलीशिया** देने से सारा फेफडा पस से आक्रान्त हो जायगा। इस औषधि का प्रयोग शुरु-शुरु मे जब रोग ने स्पष्ट रूप धारण नही किया तभी किया जाना चाहिये। इस दशा मे **फॉस** और **सल्फर** का देना भी खतरे से खाली नही होता। हमने **सल्फर** के प्रकरण मे डा० कैन्ट के **सल्फर**, **साइलीशिया** और **फॉस** के सबध मे टी० बी० विषयक इन विचारो का उल्लेख किया है।

(१२) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i **दांत निकलते समय साइलीशिया-प्रकृति के बालक के दस्त**—दात निकलते समय बच्चो को दस्त आया करते हैं। इन मे **कैमोमिला** आदि औषधि दी जाती है, परन्तु अगर बच्चा **साइलीशिया** की प्रकृति का है, सिर पर पसीना आता है, पेट ढोल-सा बडा है, खाता है पर शरीर मे लगता नही, पुष्टिकारक खाने पर भी वजन कम होता जाता है, तो **साइलीशिया** देने से उसे इन दस्तो मे आराम आ जायगा।

ii **बच्चे के दूध चुसकते समय माता को छाती या जरायु मे दर्द होना या रुधिर आना**—अगर बच्चे के दूध पीते समय माता को छाती या जरायु मे तीखी पीडा का अनुभव हो, तो इस लक्षण पर माता के अनेक प्रकार के रोग इस से दूर हो जाते हैं। इस लक्षण पर कैंसर तक ठीक हुए हैं। कभी-कभी जब बच्चा माता का स्तन चुसकने लगता है तब जरायु से रुधिर आने लगता है। यह भी बडा महत्वपूर्ण लक्षण है। इस मे यह औषधि लाभप्रद है।

iii **गर्म से एकदम सर्द हो जाने पर दमा आदि रोग**—एक चिकित्सक जिसे पसीना आ रहा था, गर्म कोट पहने था, उसने ठडी जगह जाकर कोट उतार दिया और शरीर को ठडा करना चाहा। थोडी देर मे ही उसे खासी छिड गई, दमे का आक्रमण हो गया, जो महीने भर चलता रहा। अनेक औषधिया दी गई, किसी से लाभ न हुआ। डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि अन्त मे **साइलीशिया** से लाभ हुआ।

iv **टीके का बुरा फल**—टीका लगाने के बुरे फल को यह दूर करता है। कभी-कभी बच्चो को टीका लगवाने के बाद पतले दस्त आने लगते हैं। इन मे इस मे लाभ होता है। **थूजा** भी टीके के बुरे फल को दूर करता है।

v **सिर लपेट कर रखना**—रोगी को सिर खुला रखने से ठड लगती है, सिर-दर्द होता है। वह सिर को लपेट कर रखा करता है। इस प्रकार की प्रकृति के रोगी को सिर-दर्द आदि हो जाने पर इस औषधि मे लाभ होता है।

vi नाखून टूटना, बिसहरी—हाथ पैर की अंगुलियों के नाखून टूट जाते हैं। बिसहरी—Whitlow—होता है, अंगुली पर सूजन आ जाती है, अंगुली-अंगुली के बीच के जोड़ कच्चे लगते हैं (Rawness between toes), कभी-कभी नाखून अंगुली में धंस जाता है, उसे चीरना पड़ता है। इन सब रोगों में यह लाभदायक औषधि है।

vii पल्स और साइलीशिया—कई बीमारियों में अगर लक्षणों के ठीक चुनने पर भी पल्स से लाभ न हो, तो साइलीशिया से लाभ होता है। जैसे एकोनाइट का पूरक सल्फर है, वैसे पल्स का पूरक साइलीशिया है।

viii दूध नहीं पचना—इसके लिये बच्चों में इथूजा, नेट्रम कार्ब तथा साइलीशिया मुख्य हैं। जब बच्चों को दूध नहीं पचता तब लक्षण के तौर पर इसे प्रायः इथूजा दिया जाता है, परन्तु अगर बच्चे की शारीरिक-रचना साइलीशिया की है, तो इसी औषधि से लाभ होगा।

ix ऋतु-स्राव के समय और पहले कब्ज बढ़ जाता है—ऋतु-स्राव के समय और उस से पहले कब्ज बढ़ जाता है। इस से उल्टा, ऋतु-स्राव से पहले और ऋतु-स्राव के समय दस्त आने लगें तो अमोनिया कार्ब औषधि है।

(१२) साइलीशिया का सजीव तथा मूर्त-चित्रण—दुबला, पतला बच्चा, शरीर की अपेक्षा पेट बड़ा हुआ, शरीर पर मांस का अभाव, हड्डियां दीखती हों, टेढ़ी-मेढ़ी हों, पुष्टिकारक खाना खाने पर भी वजन घटता जाता हो, रीढ़ की हड्डी टेढ़ी हो जाये, चलने में देर लगाये, बड़ा होकर शरीर की क्षीणता की तरह जिस का मन भी शिथिल हो, न पढ़ सके, न लिख सके, हर का मारा, सोते हुए जिसका तकिया सिर-माथे से निकले बदबूदार पसीने से तर हो जाय, दूध न पचा सके, ऐसा प्रतीत हो कि उसकी सारी बढ़ती परिपोषण-क्रिया के अभाव से रुकी पड़ी है, ठंड को न बर्दाश्त कर सके, पाँव ठंडे रहें—यह है सजीव तथा मूर्त-चित्रण साइलीशिया का।

(१३) शक्ति तथा प्रकृति—३०, २०० (यह 'अनेक-कार्य-साधक'—Polychrest—औषधि है। औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

स्पाइजेलिया (SPIGELIA)

स्नायु-शूल (दर्द) की दवा—इस औषधि का क्षेत्र स्नायु के शूल, अर्थात् दर्द के ऊपर विशेष रूप से है। हृदय, सिर, चेहरे, आंख के दर्द के ऊपर इसका मुख्य-प्रभाव है। हृदय-शूल तथा शिर शूल जो बायीं आंख के ऊपर आकर जम जाय—इन दो में इसका विशेष-प्रयोग होता है। इन्हीं की यहां चर्चा की जायगी।

(१) हृदय-शूल (Pain in the heart)—हृदय-शूल के लिये यह अमूल्य-औषधि है। इस औषधि का हृदय का दर्द इतना 'तेज़' (Severe)

होता है जितना **कैक्टस** मे, और इतना 'उग्र' (Violent) होता है जितना **कैक्टस और डिजिटेलिस** दोनो मे नही होता। **स्पाइजेलिया** का हृदय शूल इतना उग्र होता है कि कपडो के भीतर मे हृदय धडकता दीखता है, सारी छाती हिलती दीखती है, और कुछ दूरी से हृदय धडकता सुनाई भी पडता है। हृदय के हाल ही के दौर पर ही इसका प्रभाव नही होता, परन्तु हृदय के पुराने वैल्व्यूलर-रोग मे भी जिसमे तेज़ आवाज़ और उग्र धडकन होती है इससे लाभ होता है। डॉ० नैश लिखते है कि हृदय की धडकन के उग्र दौरो को उन्होंने इस से शीघ्र शान्त होते देखा है। इस प्रकार के हृदय के शूल मे रोगी केवल दाई तरफ और सिर ऊचा कर के ही लेट सकता है। ऐन्जाइना पैक्टोरिस (Angina pectoris) जो हृदय का रोग है, और जिस मे हृदय का दर्द सीने से प्रारम होकर बाये कन्धे और बायी बाह तक फैल जाता है, उसमे भी यह विशेष लाभदायक है। पसलियो के बीच नसो के दर्द (Intercostal neuralgia) तथा हृदय-कोष के वात-रोग (Rheumatic pericarditis) मे भी इससे लाभ होता है।

(२) **शिरः शूल** (Neuralgic headache)—सिर-दर्द, चेहरे का दर्द तथा आखो के दर्द मे इस औषधि का प्रमुख स्थान है। सिर-दर्द प्राय एक तरफ होता है। प्रात काल सूर्य के उदय के साथ यह शुरु होता है, ज्यो-ज्यो सूर्य चढता जाता है त्यो-त्यो यह बढता जाता है, और सूर्य के अस्त होने के साथ यह समाप्त हो जाता है। यह दर्द सिर की गुद्दी से उठता है, सिर पर चढ कर बायी आख के ऊपर जाकर ठहर जाता है। **साइलीशिया** और **सैग्विनेरिया** मे यह दर्द दायी आख के ऊपर जा जमता है। **नैट्रम म्यूर** और **टैबेकम** मे भी सिर-दर्द सूर्य के उदय तथा अस्त के साथ बढता और घटता है। **स्पाइजेलिया** मे जिस आख के ऊपर दर्द जमता है उसमे से पानी निकलने लगता है। **चैलीडोनियम** मे दर्द दायी आख पर जमता है, और उसमे से पानी की धार बहा करती है। **स्पाइजेलिया** मे रोगी को किसी तरफ भी देखने के लिए सारा सिर फिराना पडता है।

(३) **शक्ति तथा प्रकृति** ६, ३० (हरकत, शोर-गुल, आख हिलाने से रोग बढता है, ठड, नमी तथा बरसात से रोग बढता है, औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है)

स्पंजिया (SPONGIA)

(१) **खुश्क खांसी, सांय-सांय की आवाज, कुत्ते की तरह की-सी भौं-भौं की आवाज, क्रूप खांसी** (Dry, wheezing sound, barking, croupy cough)—इस औषधि का श्वास-प्रणालिका पर विशेष प्रभाव है। रोगी की

आवाज़ बैठ जाती है, खुश्क खासी होती है, कुत्ते की तरह की भौ-भौ की-सी आवाज़ होती है जिसे 'कुत्ता खासी' कहते हैं। क्रूप खासी भी हो जाती है। क्रूप मे सारी श्वास-नलिका—लेरिंग्स तथा ट्रेकिया—की सूजन हो जाती है, साँस रुक जाता है और श्वास-नलिका के भीतर श्लैष्मिक झिल्ली बन जाती है। जहा जीभ समाप्त होती है वहा मे चलनेवाली श्वास-नलिका को 'लेरिंग्स' कहते हैं, हिन्दी मे इसे 'स्वर-यत्र' कहते हैं। लेरिंग्स के आगे की श्वास-नलिका को 'ट्रेकिया' कहते हैं, हिन्दी मे इसे 'श्वास-नली' कहते हैं। इनमे सूजन और झिल्ली पड जाने का रोग 'क्रूप' कहलाता है। इस रोग में खुश्क खासी होती है, झिल्ली पड जाने से सास रुक-रुक कर आता है, छाती मे भारीपन अनुभव होता है। प्राय देखा जाता है कि अगर बच्चे को खुश्क, ठंडी हवा लग जाय, तो उसी दिन रात के पहले हिस्से मे ही उसे खुश्क खासी आ दबोचती है और पहली नीद मे ही उठकर वह खासने लगता है। 'क्रूप' के इस प्रकार ठड लगते ही पहली रात मे, और पहली रात के भी प्रथम भाग मे ही प्रकट होने के लक्षण मे **एकोनाइट** दिया जाता है। **स्पंजिया** का 'क्रूप' ठड लगने के पहली रात मे ही नही उभर आता। बच्चे को कल ठड लगी या परसो लगी। परसो ठड लगने के बाद आज उसे कुछ छीकें आयी, नाक सूकने लगी, और फिर खुश्क खासी शुरु हो गई या कुत्ता-खासी जारी हो गई। इस प्रकार ठड लगने के एक-दो दिन बाद आनेवाली 'क्रूप' या 'कुत्ता-खासी' **स्पंजिया** के क्षेत्र मे आ जाती है। **एकोनाइट** मे ठड लगने की पहली रात, और पहली रात के पहले हिस्से मे खासी छिडती है, **स्पंजिया** मे ठंड लगने के एक-दो दिन बाद, और मध्य-रात्रि के बाद के हिस्से मे खासी छिडती है। अगर **एकोनाइट** से यह खासी ठीक होती होगी, तो पहले दिन ही ठीक हो जायगी; अगर यह पहले दिन ठीक न हो, अगली रात फिर 'क्रूप' खासी आये, उस से अगले दिन फिर आये, तो **एकोनाइट** का क्षेत्र जाता रहता है, **स्पंजिया** का क्षेत्र आ जाता है। डा० नैश कहते हैं कि 'क्रूप' मे खासी खुश्क होती है, साय-साय की आवाज़ आती है, ऐसी आवाज़ जैसी लकडी को आरे से चीरने के समय निकलती है, कफ का प्रत्येक ठसका आरे को धकेलने की-सी आवाज़ जैसा होता है। उनके अनुभव के अनुसार **एकोनाइट** ३० या २०० की मात्रा से रोग का शमन हो जाता है, परन्तु अगर ऐसा न हो, रोगी का नीद से उठने पर दम घुटता प्रतीत होता हो, तो **स्पंजिया** देना आवश्यक हो जाता है। जब यह खुश्क 'क्रूप' तर हो जाय, कफ ढीला पड जाय, और खासी प्रात काल बढे, तब **हिपर सल्फ** का क्षेत्र आ जाता है। इस प्रकार क्रूप मे पहले **एकोनाइट**, फिर **स्पंजिया**, फिर **हिपर सल्फ** देने की आवश्यकता पड सकती है। डॉ० नैश का कहना है कि अगर क्रूप के लक्षण शाम को बढे तो **फॉसफोरस** मे लाभ होगा।

(२) **बोनिनघॉसन का क्रूप-खांसी का नुस्खा**—क्योकि क्रूप-खासी **एको-**

नाइट, स्पंजिया, हिपर सल्फ मे से किसी से ठीक हो जाती है, और प्राय शुरु मे **एकोनाइट** से ही ठीक हो जाती है, उस से न हो तो **स्पंजिया** से ठीक हो जाती है, उस से भी न हो तो **हिपर** से ठीक हो जाती है, इसलिये डॉ० वोनिनघॉसन ने अपना एक रुटीन नुस्खा बना लिया था जिसे 'वोनिनघॉसन का क्रूप का नुस्खा' (Boenninghausen's croup remedies) कहा जाता है। वे तीन पाउडर दिया करते थे—**एकोनाइट** २००, **स्पंजिया** २०० तथा **हिपर सल्फ** २०० जिन्हें एक के बाद दूसरा दिया जाता था। अगर इन से भी 'क्रूप' ठीक न हुआ, तब तीन पाउडर देने के बाद फिर **स्पंजिया** २०० और उस के बाद **हिपर** २०० देते थे। परन्तु इस का यह अभिप्राय नही है कि इस प्रकार एक के बाद दूसरा पाउडर दिया ही जाय। जिस औषधि के बाद रोग थम जाय उस के बाद अगली औषधि की मात्रा रोक देनी चाहिये। क्योंकि वोनिनघॉसन रोगियो को देखने नही जाते थे, अपने घर पर ही नुस्खा लिख देते थे इसलिये ऐसी प्रथा चल पडी।

(३) **तपेदिक मे लेरिंग्स (स्वर-यंत्र)—गले—का बैठ जाना** (Hoarseness in pthisical patients)—जिन रोगियो मे तपेदिक की प्रवृत्ति वशानुगत चली आती है, फेफडे कमजोर हो, भले ही फेफडो मे तपेदिक के प्रत्यक्ष-लक्षण न मौजूद हो, उन मे अचानक, एकदम गला बैठ जाया करता है, उनके स्वर-यंत्र (गले) पर ठंड का एकदम प्रभाव हो जाता है। गले पर ठंड का जो असर होता है उसमे घडघडाहट नही होती सिर्फ गला बैठ जाता है, बोलने मे तकलीफ होती है। इस प्रकार के तपेदिक की प्रवृत्ति के रोगियो के गला बैठ जाने के लक्षण मे **स्पंजिया** उत्तम औषधि है। अगर गले मे घडघडाहट (Rattling) हो, तब यह इसका क्षेत्र नही है।

(४) **सांय-सांय या सीटी की-सी आवाज का दमा** (Wheezing and whistling asthma)—जैसा हमने कहा, इस औषधि का श्वास-प्रणाली पर विशेष प्रभाव है। यही कारण है कि दमे मे यह औषधि लाभ करती है। दमे के रोगी के सास मे साय-साय की या सीटी-की-सी आवाज आनी चाहिये, घडघडाहट (Rattling) की आवाज नहीं। रोगी विस्तर मे आगे झुक कर बैठा रहता है। कभी-कभी, सास रुकने के घोर कष्ट के बाद श्वास-प्रणालिका मे कुछ श्लेष्मा बनता है जिसे रोगी थूक नही सकता, यह आता है और इसे निगलना पडता है। रोगी लेट नही सकता, लेटते ही सास रुक जाता है।

(५) **दिल की धडकन तथा दिल मे बेचैनी**—दिल की धडकन और दिल की बेचैनी मे भी यह उत्तम औषधि है। रोगी को घबराहट, भय—मृत्यु का भय—आ पकडता है, दम घुटता है, ऐसा लगता है कि न-जाने क्या होनेवाला है, मृत्यु-जैसी कुछ भयकर घटना का डर समा जाता है, रोगी भय से सोते से जग उठता है। यह सब घबराहट और भय हृदय के रोग के कारण होता है।

छाती मे, हृदय-प्रदेश मे रोगी को वोझ-सा अनुभव होता है। ये सब लक्षण—भय, मृत्यु-भय, घवराहट—**एकोनाइट** के भी है, परन्तु इन दोनो मे भेद निम्न है

दिल की बीमारी मे स्पजिया और एकोनाइट की तुलना—इन दोनो औषधियो मे दिल की बीमारी मे भय मौजूद है, दोनो मे भय के साथ घवराहट, बेचैनी भी है, **एकोनाइट** का रोगी तो अपनी मृत्यु की घटी की पेशीनगोई भी करने लगता है, परन्तु **एकोनाइट** मे जब ये लक्षण प्रकट होते हैं तब ज्वर के लक्षण भी मौजूद रहते है, **स्पजिया** मे ज्वर नही रहता, रहे भी तो बहुत कम रहता है। **एकोनाइट** का प्रभाव स्वल्पकालीन है, यह गहरी औषधि नहीं है, **स्पंजिया** गहराई मे जानेवाली औषधि है। **स्पजिया** का हृदय-रोग धीरे-धीरे प्रकट होता है, हृदय के ततुओ मे ही परिवर्तन हो जाता है, हृदय के वाल्व जो रुधिर को फेकते हैं उन्ही मे तव्दीली आ जाती है—इसलिये इसका असर **एकोनाइट** की तरह उपराल्रू न होकर गहरा है। रोगी चित्त नही लेट सकता, सिर को ऊचा कर के लेटना पडता है, सिर नीचा कर के लेटने से दम घुटने लगता है। 'ऐनजाइना पैक्टोरिस' (Angina pectoris) मे भी लक्षण मिलने पर इस से लाभ होता है।

(६) **गलपेडा (Goitre)**—यह औषधि शरीर की ग्रन्थियो को भी प्रभावित करती है। गले की थायरॉयड-ग्रन्थि के वढ जाने से गलपडे का रोग इस से दूर हो जाता है।

(७) **शक्ति तथा प्रकृति**—टिंचर, २ य विचूर्ण, या ३, ६, ३०, २०० (औषधि 'सर्द'—Chilly—प्रकृति के लिये है, ठडी चीज पीने से रोग वढ जाता है, और सोने के वाद खासी-दमा आदि रोग वढा हुआ प्रतीत होता है)

स्टैनम—टीन, (STANNUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) छाती मे बेहद कमजोरी, इसमे अर्जेंटम मेटैलिकम से तुलना
(२) छाती या पेट मे खालीपन का अनुभव (Empty all gone sinking sensation), रोगी सीढियाँ चढने मे नहीं थकता, उतरने मे थकता है
(३) दर्द का सूर्य के विना या सूर्य की गति के साथ धीरे-धीरे बढना, धीरे-धीरे घटना, सिर-दर्द मे भी यही लक्षण है
(४) सूर्य के चढने-उतरने के साथ दर्द मे कैलमिया, नेट्रम म्यूर, सैंग्विनेरिया से तुलना
(५) पेट-दर्द मे दबाव से आराम—कोलोसिन्थ से ठीक न हो तो स्टैनम लाभ करता है
(६) स्नायु-शूल के दबने के बाद प्रदर का हो जाना
(७) स्वप्न-दोष
(८) तपेदिक की खासी और स्टैनम, (तपेदिक की खाँसी मे फॉस, साइलीशिया, पल्स तथा सीपिया की तुलना)
(९) मानसिक लक्षण—दु खी, निराश, रोने का स्वभाव

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)
*बलग़म निकल जाने से कमी
*किसी नोकीली वस्तु के साथ ज़ोर से दबाने से रोग मे कमी (कोलोसिन्थ मे भी ऐसा लक्षण है)
*तेज हरकत से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)
*बोलने से रोग मे वृद्धि
*हसने से रोग मे वृद्धि
*गाने से रोग मे वृद्धि
*दायीं तरफ लेटने से वृद्धि
*गर्म वस्तु पीने से वृद्धि
(ठडी वस्तु पीने से वृद्धि—स्पंजिया)

(१) छाती में बेहद कमजोरी, इसमे अर्जेन्टम मेटैलिकम से तुलना—इस औषधि मे छाती मे वेहद कमजोरी अनुभव होती है। रोगी को छाती मे इतनी कमजोरी अनुभव होती है कि वह बोलने, हसने, ज़ोर-से पढने, गाने, बात करने से एकदम थक जाता है। इस सब कमजोरी का केन्द्र-स्थल उसकी छाती होती

है। अपने दैनिक काम के लिये उसे बार-बार आराम करना पड़ता है। बोलते हुए भी वह हांफने लगता है, सांस लेने के लिये बोलते-बोलते रुकना पड़ता है। छाती मे कमजोरी इतनी होती है कि रोगिणी सवेरे कपड़े आदि पहनने और तैयार होने मे कई बार आराम करने को बैठ जाती है। सारी कमजोरी छाती से प्रारम होकर सपूर्ण शरीर पर छा जाती है। जरा-से भी श्रम मे हृदय मे धड़कन होने लगती है। जो व्यक्ति देर से कमजोर होते चले आ रहे है, उनके लिये यह उपयुक्त है। यह कमजोरी इतनी गहरी होती है कि इसे देखकर कहना पडता है कि रोगी के शरीर मे कोई 'धातुगत-दोष' (Constitutional defect) है। रोगी का अगर इतिहास पूछा जाय, तो पता चलेगा कि उनके खासी-जुकाम (Catarrhal conditions) या स्नायु-शूल (Neuralgias) आदि रोगो के पीछे चिर-काल से किसी प्रकार की कमजोरी चली आ रही है, इस चिरकालीन कमजोरी से ही उसे खासी-जुकाम-दर्द आदि होने लगे है। छाती की इस प्रकार की बेहद कमजोरी सब से अधिक स्टैनम मे, या इस से उतरकर अर्जेन्टम मेटैलिकम मे पायी जाती है। इन दोनो मे भेद यह है कि स्टैनम के थूक का रग अडे की सफेदी जैसा या पीलिमा लिये हरे रग का होता है, मीठा होता है, अर्जेन्टम का थूक भूरे (Grey) रग का होता है। थूक का स्वाद नमकीन हो तो सीपिया या कैलि आयोडाइड पर, और कडवा हो तो पल्स पर ध्यान जाता है।

(२) छाती या पेट मे खालीपन का अनुभव (Empty all gone sinking sensation), रोगी सीढियां चढ़ने मे नहीं थकता, उतरने मे थकता है—छाती मे जिस कमजोरी का हमने अभी वर्णन किया उसका स्वरूप क्या है? इस खालीपन का वर्णन करते हुए रोगी कहता है कि उसे छाती खाली-खाली अनुभव होती है, उसमे कुछ नही—ऐसा लगता है, दिल बैठा जाता है, नीचे को धसता जाता है, ऐसा प्रतीत होता है कि सारी छाती एक खोल है। यह खालीपन का अनुभव पेट के सबध मे भी हो सकता है। चैलीडोनियम, फॉस और सीपिया मे भी इस प्रकार का खालीपन का अनुभव होता है। छाती या पेट का खालीपन अनुभव होना कमजोरी का ही एक रूप है। पेट के खालीपन के अनुभव की औषधियो का वर्णन हम सीपिया मे कर आये है।

रोगी सीढियां चढ़ने मे नहीं थकता, उतरने मे थकता है—इसका एक विलक्षण-लक्षण (Peculiar symptom) यह है कि रोगी सीढ़िया चढने मे इतनी थकान अनुभव नही करता जितनी थकान वह सीढिया उतरने मे अनुभव करता है। **कैलकेरिया कार्ब** मे भी यह लक्षण पाया जाता है। नीचे आने की गति मे भय खाना **बोरैक्स** का लक्षण है। **बोरैक्स** औषधि के रोगी बच्चे को जब पालने मे नीचे लिटाते हैं तब वह डर जाता है।

(३) **दर्द का सूर्य के बिना या सूर्य की गति के साथ धीरे-धीरे बढना, धीरे-धीरे घटना, सिर-दर्द मे भी यही लक्षण है**—किसी प्रकार का भी दर्द हो—चेहरे का, आखो का, पेट का, आतो का—दर्द धीरे-धीरे बढता है, और धीरे-धीरे घटता है। कई वार यह दर्द सूर्य के उदय होने के बाद ज्यो-ज्यो वह चढता जाता है त्यो-त्यो दर्द भी बढता जाता है, और ज्यो-ज्यो सूर्य ढलता जाता है दर्द भी कम होता जाता है और सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाता है। यह भी हो सकता है कि दर्द सूर्योदय के साथ न शुरु हो, किसी समय भी शुरु हो जाय, १० बजे प्रात शुरु हो, दस-बीस मिनट तक बढ़ता चला जाय, और फिर धीरे-धीरे हट जाय। सिर-दर्द मे भी ऐसा ही होता है। **स्टैनम** का सिर-दर्द धीरे-धीरे बढता है, धीरे-धीरे ही घटता है। बढकर अगर ठहर जाता है, तो प्राय बायी आख पर ठहरता है।

धीरे-धीरे दर्दों का बढ़ना और घटना—इस प्रकरण मे यह भी लिख देना असगत नही होगा कि **पल्सेटिला** का दर्द धीरे-धीरे बढता है किन्तु एकदम समाप्त हो जाता है, **बेलाडोना** का दर्द एकदम आता है, झट अपने उच्च-शिखर पर पहुच जाता है, कुछ घटे ठहर कर फिर एकदम ही काफूर भी हो जाता है। दर्द का धीरे-धीरे बढना और धीरे-धीरे घटना **प्लैटिनम** मे भी पाया जाता है, परन्तु भेद यह है कि **प्लैटिनम** मे दर्द का स्थान सुन्न हो जाता है, **स्टैनम** मे सुन्न नहीं होता। इसके अतिरिक्त **स्टैनम** की-सी छाती की कमजोरी **प्लैटिनम** में नही है। **स्टैनम** की रोगिणी **पल्स, सीपिया** तथा **नेट्रम म्यूर** की तरह रुदन-शील स्वभाव की होती है, **प्लैटिनम** की रोगिणी घमण्डी होती है।

(४) **सूर्य के चढने-उतरने के साथ दर्द मे कैलमिया, नेट्रम म्यूर, सैंग्विनेरिया से तुलना**—अनेक औपधियो मे सूर्य के उदय के साथ सिर-दर्द का शुरु होना तथा सूर्यास्त के साथ सिर-दर्द का समाप्त होना पाया जाता है जिन मे से कुछ-एक का उल्लेख हम यहाँ कर रहे है

(सूर्योदय तथा सूर्यास्त के साथ सिर-दर्द मे मुख्य-मुख्य औपधियाँ)

कैलमिया—सूर्योदय के साथ सिर-दर्द शुरु होता है, सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाता है, परन्तु इस मे अनियमितता भी पायी जाती है, यद्यपि हर हालत मे दोपहर को दर्द शिखर पर होता है।

नेट्रम म्यूर—इसका सिर-दर्द १० बजे प्रारम होता है, २-३ बजे शिखर पर पहुँच जाता है और सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाता है।

सैंग्विनेरिया—इसका सिर-दर्द सवेरे सूर्योदय मे शुरु होता है, दोपहर को शिखर पर पहुच जाता है, जब शिखर पर पहुचता है तब रोगी खाये-पीये की या पित्त की कय कर देता है, और सूर्यास्त के साथ सिर-दर्द समाप्त हो जाता है।

स्टैनम—इस औषधि में सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ सिर-दर्द के बढ़ने उतरने के अतिरिक्त छाती की कमजोरी भी पायी जाती है।

(५) **पेट-दर्द में दबाव से आराम—कोलोसिन्थ से ठीक न हो तो स्टैनम लाभ करता है**—पेट के दर्द में पेट पर दबाव पड़ने से आराम आने के लक्षण में सब से पहले कोलोसिन्थ की तरफ ध्यान जाता है, परन्तु अगर पेट-दर्द के ये दौर पुराने हो जायें और ऐसा प्रतीत हो कि रोग लम्बा होता जा रहा है, ठीक होने में नहीं आता, तो स्टैनम का प्रयोग करना चाहिये। अगर रोगी बच्चा होगा तो कन्धे से लगाने में उसके पेट-दर्द को आराम पहुँचेगा, क्योंकि कन्धे से लगाने पर पेट के ऊपर दबाव पहुँचता है और बच्चे को चैन पड़ता है।

(६) **स्नायु-शूल के दबने के बाद प्रदर का हो जाना**—कभी-कभी ऐसी रोगिणी आती है जिसे स्नायु-शूल था, उसे किसी तेज दवा से दबा दिया गया। अगर वह कहे कि जब से उसका स्नायु-शूल (Neuralgia) तेज़ दवा ने दबा है, तब से उसे बहुत ज्यादा, गाढ़े, पीले-हरे प्रदर का स्राव जारी हो गया है, तो यह रोग स्टैनम से ठीक हो जायगा। इस रोगिणी को छाती में कमज़ोरी का अनुभव होगा। प्रकृति शरीर के आन्तरिक रोगों को श्लैष्मिक-स्रावों के रूप में बाहर निकाल फेंका करती है, अगर वह ऐसा न करे तो रोग भीतर ही किसी नाजुक अंग पर हमला कर देता है। तेज दवा से स्नायु-शूल दबा देने के बाद इस रोगिणी को प्रदर हो जाने से वह तपेदिक की मरीज़ होने से बच गई है, परन्तु स्टैनम उसे तपेदिक और प्रदर दोनों में बचा लेगा।

(७) **स्वप्नदोष**—डॉ० चौधरी अपनी 'मैटीरिया मैडिका' में लिखते हैं कि इस औषधि का प्रभाव विशेष रूप से मानव की काम-वासना (Voluptuous remedy) पर है। इस औषधि की परीक्षा (Proving) में शीघ्र वीर्य-पात हो जाता है। काम को जागृत करने की कोई चेष्टा या विषय-वासना का कोई भी विचार आते ही वीर्य-पात हो जाता है। इसीलिये स्वप्न-दोष में या जिनको सहज वीर्य-स्राव हो जाता है, जिन्हें स्नायु-शैथिल्य (Neurasthenia) का रोग हो, उनके लिये यह औषधि उपयुक्त है। रोगी की यह हालत हो जाती है कि बाह्य की खुजली से ही जननांगों में हर्षोद्रेक होकर पुरुष या स्त्री को विषय-भोग के हर्ष का-सा अनुभव होने लगता है। जिन्हें यूंही वीर्य-स्राव होता रहता है उनके लिये भी यह उपयोगी है।

(८) **तपेदिक की खांसी और स्टैनम (तपेदिक की खाँसी में फॉस, साइलीशिया, पल्स तथा सीपिया)**—यह औषधि श्वास-प्रणालिका के रोगों को शान्त करने के लिये विशेष महत्व की है, खासकर फेफड़ों के तपेदिक में इसका प्रमुख स्थान है। रोगी को तपेदिक का शाम को बुखार आया करता है, रात को भारी पसीना आता है, खासी भी फेफड़े की गहराई से आती है, शरीर को

हिला देती है, फेफडा खोखला-सा लगता है । थूक की मात्रा बहुत होती है, उसका रग अडे की सफेदी जैसा, परन्तु प्राय पीलिमा लिये हरा होता है, थूक का स्वाद मीठा या कभी-कभी नमकीन भी हो सकता है । ज़रा-से बोलने से खासी छिड जाती है, छाती मे खालीपन का अनुभव होता है । इन लक्षणो मे रुटीन के तौर से दवा देनेवाले ब्रायोनिया की निम्न-शक्ति की मात्रा देंगे जिस से कफ़ बाहर निकल जाय, परन्तु स्टैनम देने से साइलीशिया की तरह यह जीवनी-शक्ति को सचेत कर रोगी को सुधार की राह पर ला सकती है । अगर शुरु मे रोग की कुछ वृद्धि हो तो घबराना नही चाहिये क्योंकि उसके बाद रोग धीमा पड जायगा । स्टैनम से हानि नही हो सकती । अगर स्टैनम देने के बाद ढीला और आसानी से निकल जानेवाला कफ सूक जाये, खासी का घसका बढ जाय, तो पल्स देने से खासी फिर ढीली हो जायगी ।

तपेदिक की बीमारी मे स्टैनम के अतिरिक्त फॉस, साइलीशिया, पल्स, सीपिया तथा कैलि कार्ब के भी लक्षण हो सकते हैं । इन औषधियो को इस रोग मे निम्न-लक्षणो मे दिया जाता है

(तपेदिक की बीमारी मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

फॉसफोरस तथा तपेदिक—रोगी को स्टैनम की तरह का छाती मे खालीपन का (Empty all gone sensation) अनुभव होता है, परन्तु इसका उपयोग उन रोगियो मे होता है जिनकी बढती बहुत तेजी से होती है, जिनका मन शरीर की अपेक्षा तीव्र गति मे विकास करता है । फॉसफोरस के प्रकरण मे हम लिख आये हैं कि डॉ० कैन्ट के कथनानुसार टी० बी० की शुरुआत मे यह उपयोगी औषधि है, परन्तु जब रोग बढ जाय, तब न तो निम्न-शक्ति देनी चाहिये, न उच्च-शक्ति । इन दोनो से रोगी को जीवन का खतरा हो सकता है । ऐसे रोगियो को फ़ॉस की ३० या २०० मे ऊपर या नीचे की शक्ति नही देनी चाहिये, और वह भी दोहरानी नही चाहिये ।

साइलीशिया तथा तपेदिक—तपेदिक की बढी हुई हालत मे इस का प्रयोग होता है । साइलीशिया फेफडो मे पस पडने की प्रक्रिया पर नियन्त्रण करता है, और रोग को आगे बढने नही देता । डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि तपेदिक की प्रकृति को जड से उखाड फेंकने के लिये साइलीशिया से गहरी दूसरी दवा नही है, परन्तु लक्षण मिलने चाहियें । तपेदिक का बीमार प्राय ठडी नम हवा मे ठीक नही रहता, ठडी खुश्क हवा उसे माफिक पडती है ।

पल्सेटिला तथा तपेदिक—इसमे गाढा, पीला, हरे रग का कफ निकलता है, शाम को ज्वर बढ जाता है, प्यास नही लगती, बग़ल मे पसीना आता है, छाती

से जख्म और दबाव मालूम होता है, रोगी देखने में हृष्ट-पुष्ट परन्तु पीला, रक्तहीन दीखता है। मूत्र लगातार होता है।

सीपिया तथा तपेदिक—रोगी का पेट खाली अनुभव होता है, बायीं तरफ के फेफड़े में तीसरी हड्डी के नीचे के फेफड़े में दर्द होता है।

फॉस्फोरस तथा तपेदिक—डॉ० नैश के कथनानुसार यह तपेदिक के सब प्रकार के रोगों में उत्कृष्ट औषधि है, विशेषकर उन रोगियों में जिन्हें न्यूमोनिया के बाद तपेदिक का रोग हो जाता है और छाती में सुई चुभने जैसी टीस उठा करती है। इसका मुख गोल-मटोल होता है, ३ बजे प्रातः रोग बढ़ता है, दाब से तथा स्पर्श नहीं सह सकता, गला बैठ जाता है, पसलियों पर सूजन आ जाती है, छाती तो स्टैनम की तरह कमजोर होती ही है।

(९) मानसिक-लक्षण—दुःखी, निराश, रोने का स्वभाव—रोगिणी इतनी दुःखी, निराश होती है कि हर समय रोने को मन किया करता है। वह अपना रोना रोक लेती है क्योंकि रोने से उसका चित्त और दुःखी होता है। रोने का लक्षण पल्स, नैट्रम म्यूर और सीपिया में भी है।

पल्सेटिला और रोना—यह कभी रोती है, कभी हँसती है, लक्षण एक-से नहीं रहते, अपना दुःख सब से कहती फिरती है, आंसू बहाती है, मृदु स्वभाव की, कोमल प्रकृति की होती है, सांत्वना देने से इसका दुःख हल्का हो जाता है।

नैट्रम म्यूर और रोना—यह भी दुःखी रहती है, रोया करती है, परन्तु अगर कोई तसल्ली की बात कहे, तो खिज उठती है, तसल्ली देने से इसको क्रोध आ जाता है।

सीपिया और रोना—यह भी दुःखी रहती है, रोया करती है, सांत्वना देने से इसे भी तसल्ली नहीं होती, परन्तु इसका मुख्य-लक्षण पुत्र-पति या घर के लोगों के प्रति उदासीनता है।

स्टैनम और रोना—यह भी दुःखी रहती है, रोने को दिल किया करता है, परन्तु रोने से जी और खराब हो जाता है, इसलिये रोना रोक लिया करती है।

(१०) शक्ति—३०, २००

स्टैफिसैग्रिया (STAPHISAGRIA)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) अपमान से क्रोध का घूंट पी जाने के कारण थकान, अनिद्रा, क्रोध से कांपने लगना, दस्त, पेट-दर्द, सिर-दर्द आदि किसी बीमारी का होना (Complaints from suppressed anger)
(२) अति-विषय, हस्त-मैथुन आदि से मग्रज खाली हो जाना और नामर्दी
(३) प्रोस्टेट की वृद्धि (Enlarged Prostate)
(४) मूत्र न करते समय जलन, परन्तु मूत्र करते समय जलन का न रहना
(५) बिलनी निकलना (Styes)
(६) सर्जन के ऑपरेशन मे शुद्ध, तेज औजार की काट के बाद लाभप्रद है
(७) एग्जीमा तथा खुजली
(८) दांत काले पड जाते तथा टुकड़े-टुकड़े होकर गिरने लगते हैं
(९) रात को बिस्तर मे कमर-दर्द

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*गर्मी से रोग मे कमी
*आराम से रोग में कमी
*तेज-शस्त्र से किसी जगह के कटने पर उपयोगी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*क्रोध से रोग का बढ़ना
*किसी से झगड पड़ने से रोग का बढ़ना
*दु ख से रोग का बढ़ना
*खिजलाहट से रोग का बढ़ना
*अति-व्यसन या विषय-भोग से रोग का बढ़ना
*हस्त-मैथुन से रोग का बढ़ना

(१) अपमान से क्रोध का घूट पी जाने के कारण थकान, अनिद्रा, क्रोध से कांपने लगना, दस्त, पेट-दर्द, सिर-दर्द आदि किसी बीमारी का होना (Complaints from suppressed anger)—स्वस्थ व्यक्ति का किसी से झगडा हो जाय, तो उसका मानसिक-सन्तुलन नही बिगडता, वह समझता है कि उसने जो-कुछ कहा-किया, वह ठीक किया और सब-कुछ करके उसे भूल जाता है, परन्तु कई ऐसे व्यक्ति होते हैं जो झगडा होते ही गुस्से से आग-बबूला हो जाते हैं, और अगर उन्हें वह गुस्सा अपमान के कारण अन्दर-ही-अन्दर पी जाना पडे, तो

उनकी नस-नस टूट जाती है, सिर से पांव तक कांपने लगते हैं, आवाज निकालने से नही निकलती, किसी काम को चित्त लगाकर नही कर सकते, नींद गायब हो जाती है, सिर-दर्द होने लगता है, किसी-किसी को दस्त आने लगते हैं। छोटे बच्चो को जब सजा दी जाती है, उन्हें मन के भीतर तो क्रोध आना ही है, उसे वे प्रकट नही कर सकते, इस अपमान को उन्हें दबाना पड़ता है और इस दबे क्रोध से वे पेट-दर्द या दस्तों के चिर रोगी हो जाते हैं। क्रोध से दर्द के लक्षण मे कोलोसिन्थ तथा कैमोमिला भी उपयोगी हैं। कैमोमिला का क्रोध 'चिडचिडाहट' (Irritability) का होता है, स्टैफिसैग्रिया का क्रोध 'अपमान' (Insult) का होता है।

लोगो के जीवन मे ऐसे भी अवसर आते हैं, जब उन्हें अपने अफसर की झाड खानी पडती है। मनुष्य समझता है कि उसका कोई दोष नही है, परन्तु उसका अफसर या अन्य कोई व्यक्ति उस से ऐसा व्यवहार करता है जिस के सामने उसे खून का घूट पीकर रह जाना पडता है। अपमान सह कर जब उसके प्रतिकार करने का अवसर या साहस न हो, तो वह अपमान भीतर क्रोध का एक उबाल पैदा कर देता है जो बाहर न निकल सकने के कारण मनुष्य के स्नायु-मडल को छिन्न-भिन्न कर देता है, गुस्से को रोक कर वह भीतर-ही-भीतर घुलता है। रातो नींद नही आती, सारा शरीर थका-सा रहने लगता है, दिमाग काम नही करता, हफ्तो दफ्तर का बाबू इस अपमान को अन्दर दबाये अकों का जोडना-घटाना नही कर सकता, लिखने मे गलतियां करता है, बार-बार पेशाब आता है, ऐसा लगता है कि माथा सुन्न हो गया है। इसका एक विचित्र लक्षण यह है कि गुस्से की हालत मे रोगी बार-बार थूक को निगलता है। ये सब लक्षण क्रोध को दबाने से पैदा हो जाते है, और स्टैफिसैग्रिया की एक मात्रा सारा दृष्टिकोण बदल देती है।

स्टैफिसैग्रिया क्रोध पी जाता है, नक्स तुर्की-ब-तुर्की जवाब देता है और लाइको दूसरो के अपमान का भी बदला लेता है—क्रोध आने पर स्टैफिसैग्रिया तथा नक्स मे मानव की प्रतिक्रिया एक-दूसरे के विपरीत होती है। स्टैफिसैग्रिया-प्रकृति का व्यक्ति जहा क्रोध को चुपचाप पी जायेगा, सामने कुछ नही बोलेगा, अन्दर-अन्दर घुलता जायगा, वहा नक्स-प्रकृति का व्यक्ति अपमान होने पर एक मिनट देर नही लगायेगा, तुर्की-ब-तुर्की जवाब देगा, और आगे के लिये कुछ उधार नही रखेगा। लाइको-प्रकृति का व्यक्ति नक्स से भी आगे बढेगा, वह अपने अपमान का ही नही, दूसरो के अपमान का भी बदला लेने के लिये डडा लेकर खडा हो जायगा।

बच्चो के क्रोध मे स्टैफिसैग्रिया तथा कैमोमिला—मन पर प्रभाव करने की औषधि के रूप मे बच्चो के क्रोध मे प्राय कैमोमिला का प्रयोग होता है,

परन्तु **स्टैफिसैग्रिया** कभी-कभी बच्चो के क्रोध मे ज्यादा लाभ करता है।

युवाओ के क्रोध मे स्टैफिसैग्रिया तथा नक्स—मन पर प्रभाव करने की औषधि के रूप मे युवाओ के क्रोध मे प्राय **नक्स** का प्रयोग होता है, परन्तु **स्टैफिसैग्रिया** कभी-कभी युवाओ के क्रोध मे ज्यादा लाभ करता है।

क्रोध से पेट-दर्द मे स्टैफिसैग्रिया तथा कोलोसिन्थ—क्रोध से पेट-दर्द हो जाने मे प्राय **कोलोसिन्थ** का प्रयोग होता है, परन्तु कभी-कभी क्रोध से पेट-दर्द होने मे **स्टैफिसैग्रिया** ज्यादा लाभ करता है।

विषय-भोग से होनेवाले रोगो मे स्टैफिसैग्रिया तथा ऐसिड फॉस—अति-मैथुन, हस्त-मैथुन आदि कुकर्मों से जो रोग उत्पन्न हो जाते हैं, अगो की शिथि-लता, मन की खिन्नता आदि के लिये प्राय **ऐसिड फॉस** का प्रयोग होता है, परन्तु कभी-कभी इन अवस्थाओ मे **स्टैफिसैग्रिया** ज्यादा लाभ करता है।

(२) **अति-विषय, हस्त-मैथुन आदि से मगज़ खाली हो जाना और नामर्दी**—युवावस्था मे जो लोग व्यसनो मे फसकर अति-विषय करते हैं, हस्त-मैथुन आदि कुकर्मों से वीर्य-क्षय करते हैं उनका मगज खाली हो जाता है, चित्त में ग्लानि घर कर लेती है, मिजाज चिडचिडा हो जाता है, शरीर तथा मन मे फुर्ती नही रहती, जरा-सी मेहनत से मनुष्य कमज़ोरी अनुभव करता है, मन किसी काम मे नही लगता। ऐसी अवस्था मे यह औषधि लाभ करती है।

ऐसा व्यक्ति जब विवाह करता है, तब स्त्री-प्रसग की इच्छा रहते हुए भी वह अपने किये हुए अप्राकृतिक-कुकर्मों के कारण अपने को नामर्द अनुभव करता है। शर्म के मारे किसी से आखे नही मिला सकता, यह समझता है कि लोग उसके कुकर्मों को जान गये है। चेहरा पीला पड जाता है, आँखो मे चमक नही रहती। ऐसो का **स्टैफिसैग्रिया** परम-मित्र है। डॉ० चौधरी लिखते हैं कि इस शताब्दि के व्यसनो मे डूबे लोगो के मानसिक-पतन मे यह बीसवी सदी की प्रमुख औषधि है।

(३) **प्रोस्टेट (मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि) की वृद्धि** (Enlarged prostate)—प्रोस्टेट-ग्रन्थि के बढ जाने पर बार-बार पेशाब आने की इच्छा होती है, खासकर वृद्ध-पुरुषो को यह तकलीफ सताया करती है। वृद्ध-पुरुषो के प्रोस्टेट के बढ जाने पर बार-बार पेशाब की हालत मे पेशाब कर लेने के बाद भी बूद-बूद पेशाब टपका करता है। इस बीमारी मे इसका सर्वोत्तम दवाओ मे स्थान है।

(४) **मूत्र न करते समय जलन, परन्तु मूत्र करते समय जलन का न रहना**—ऐसी अनेक औषधिया हैं जिन मे मूत्र करने से पहले जलन पायी जाती है, मूत्र करते समय जलन पायी जाती है, मूत्र करने के बाद जलन पायी जाती है, परन्तु **स्टैफिसैग्रिया** ही एकमात्र ऐसी औषधि है जिस मे मूत्र करते समय

नही रहती। इस प्रकार के अद्भुत-लक्षण चिकित्सा में बहुत सहायक होते हैं इसलिये इस अद्भुत-लक्षण को सदा ध्यान में रखना चाहिये।

(५) बिलनी निकलना (Styes)—आंख की ऊपर की पलकों पर बिलनी निकलना इस औषधि का प्रसिद्ध-लक्षण है। रोगी को बार-बार बिलनी निकलती है, अच्छी होती है तो उस की जगह एक ढेला-सा बन जाता है। इस औषधि से बिलनी निकलने की प्रवृत्ति ठीक हो जाती है। बिलनी पर कोनायम तथा थूजा का भी प्रभाव है। पल्स में भी बिलनी निकलती है, वह पक कर ठीक हो जाती है।

(६) **सर्जन के ऑपरेशन में शुद्ध, तेज औजार की काट के बाद लाभप्रद है**—सर्जरी के ऑपरेशन के बाद जब शुद्ध शस्त्र-क्रिया की गई हो, सफाई के औजारों से काट-छाट की गई हो, तब **स्टैफिसैग्रिया** देने से जख्म जल्दी ठीक हो जाता है। जब सर्जन ने बहुत ज्यादा काँट-छाट की हो, रोगी कमजोर हो गया हो, खून बहुत बहा हो, तब कई लोग **कार्बो वेज** देने की सोच सकते हैं, परन्तु डॉ० कैंट का कहना है कि इस समय सर्जन के लिये **स्ट्रौन्टियम** ही **कार्बो वेज** का काम करता है। **स्ट्रौन्टियम** का काम काँट-छाट से रोगी को जो 'शॉक'—सदमा—पहुचा है, उसका प्रतीकार कर देना है। भिन्न-भिन्न प्रकार की चोट आदि के विषय में भिन्न-भिन्न औषधियों का उल्लेख हम **आर्निका** में कर आये हैं।

(७) **एग्जीमा तथा खुजली**—एग्जीमा की पपडी के नीचे पीला, ज़हरीला, लगनेवाला स्राव निकलता है, जो किसी भी जगह लग जाने पर नया घाव उत्पन्न कर देता है। एक स्थान पर खुजलाने से खुजली वहा तो मिट जाती है, परन्तु खुजली झट दूसरे स्थान पर होने लगती है।

(खुजली तथा एग्जीमा की मुख्य-मुख्य औषधिया)

ऐन्टिम क्रूड—ऐसा एग्जीमा जिसमे त्वचा सीग-जैसी मोटी हो जाय।

आर्सेनिक—त्वचा मोटी, छिछडे उतरें या त्वचा पर फुन्सिया बन जायें, पस पड जाय, जलन हो, सेक से आराम मिले।

बोरेक्स—त्वचा कही से जरा-सी भी छिल जाय, तो पस पडने लगे, अगुलियो के पिछवाडे खाज हो, किसी अग के पिछवाडे के एग्जीमा (Dorsal eczema) मे यह तथा **नेट्रम कार्ब** दोनो उपयोगी हैं। अगुलियो के जोडो मे छोटे-छोटे ज़ख्म। जोडो के ज़ख्मो मे **सीपिया** बहुत लाभप्रद है।

कैलकेरिया कार्ब—थुलमुल प्रकृति के बच्चो का एग्जीमा जो खोपडी से शुरु होकर नीचे चेहरे पर आ जाता है और वहा मोटी चाक-जैसी सफेद पपड़ी जम जाती है।

क्रोटन टिग—यह अण्डकोष की थैली के एग्जीमा की अत्युत्तम दवा है।

डोलीकोस प्यूरियेन्स—बुढापे की खुजली, साफ त्वचा पर बिना फुन्सियो के बेहद खुजली।

ग्रैफाइटिस—खुरखुरी, मोटी त्वचा, गोद या शहद का-सा स्राव रिसने वाला एग्ज़ीमा, कान के पीछे एग्ज़ीमा। एग्ज़ीमा की यह प्रसिद्ध औषधि है।

हिपर सल्फ—एग्ज़ीमा से पस, सवेरे बढ जाना, खुजली होना, झट-से रुधिर निकलने लगना, छूने न देना, एग्ज़ीमा से **सडे पनीर की-सी बू** आना।

हाइड्रोकोटाइल—पैर, अण्डकोष या किसी भी अग मे अन्त कोष्ठको (Cellular proliferation) **के अत्यन्त बढ जाने से त्वचा मोटी**—एलीफेंटिएसिस—और छिछडेदार हो जाय, पैर के तलुओ मे असह्य खुजली, यह कुष्ठ-रोग की भी दवा है।

कैलि ब्रोम—चेहरे पर छोटी-छोटी फुन्सियो से घिरे काले-लाल सख्त दाने जो पक जायें, हस्त-मैथुन से होने वाली **युवको के चेहरे पर की फुन्सियां**, ऐसी फुन्सियां जो पक कर चेचक के दानो की तरह बीच मे से दब जाती हैं, शरीर की **गिल्टियों पर** होने वाला एग्ज़ीमा।

क्रियोज़ोट—त्वचा पर '**छिछडो**' (Scales) की भरमार।

मेज़ेरियम—टी० बी० के मरीज़ो का एग्ज़ीमा जिसमे सख्त, मोटी, **चाक के रंग की-सी पपडी** बनकर उस मे से बहुत ज़्यादा पस जाय, रात को बिस्तर की गर्मी से सख्त खाज, कभी-कभी एग्ज़ीमा के चारो तरफ फुन्सिया हो जाती हैं, सिर पर पस की सफेद पपडी बन जाना।

नैट्रम म्यूर—बच्चो के सिर पर **बालों के गुच्छे की पपडी** (Matting of hair—Crusta lactea) बन जाना, एग्ज़ीमा के पस से पपडी बन जाना।

पैट्रोलियम—कान के पीछे के जोड का एग्ज़ीमा। **ग्रैफाइटिस** मे भी कान के पीछे के जोड का एग्ज़ीमा है, परन्तु वह हरपीज़-जैसा, दाने-दानेवाला होता है, **पैट्रोलियम** का शुद्ध एग्ज़ीमा होता है जो **सर्दी मे** होता है, गर्म-ऋतु मे नही रहता।

सोरिनम—छिछडेदार, **गन्दे फोड़े-फुन्सी**, खुजली, रात को बिस्तर की गर्मी से खुजली बढ जाना।

रस टॉक्स—इसका त्वचा पर विशेष प्रभाव है। अगर चेहरे पर एग्ज़ीमा का आक्रमण हो तो पलकें तक सूज जाती हैं, जलन और खुजली होती है। **एपिस** मे भी **सूजन**, जलन और **खुजली** होती है, परन्तु उसमे **चुभन** भी होती है जो रस मे नही है। एग्ज़ीमा मे **रस** और **मेज़ेरियम** की तुलना की जानी चाहिये। दोनो टी० बी० के रोगी के एग्ज़ीमा मे उपयोगी हैं। **रस** तथा **डेलकेमारा** का एग्ज़ीमा तर हवा मे बढ जाता है।

सेलेनियम—जहा भी त्वचा का जोड हो, अगुलियो के बीच, गिट्टे के जोड मे खुजली, खोपडी पर एग्ज़ीमा की फुन्सिया जिन पर खुजली करने से स्राव बहे, सिर के, पलको के, मूछो के बाल झडते हैं।

सीपिया तथा नेट्रम कार्ब—हाथ के पीछे या जोडो का एग्ज़ीमा। जोड़ो की त्वचा खुश्क, खुरदरी, फट-सी जाती है। सीपिया एग्ज़ीमा की अच्छी दवा है।

स्टेफिसेग्रिया—विशेष तौर पर सिर तथा चेहरे का एग्ज़ीमा। फुन्सिया प्राय खुश्क होती हैं, मोटी पपडी जम जाती है, भयकर खुजली होती है। ऐसी भयकर खुजली मे इसका बाहरी प्रयोग लाभप्रद है। इस खुजली की विशेषता यह है कि **एक जगह खुजलाते है तो वह दूसरी जगह होने लगती है।** सिर के एग्ज़ीमा मे भी यह उपयोगी है।

सल्फर—जोडो के मोड मे, **अगुलियों के बीच** खुजली। ऐसी खुजली मे त्वचा को साबुन से धोकर, ठीक-से पोछ कर, **ऑयल ऑफ लैवेण्डर** लगाना चाहिये, जिस से कीटाणु के अण्डे मर जायेंगे और रोग दबेगा नहीं। साथ सल्फर भी दें।

(८) दात काले पड़ जाते तथा टूटते हैं—दातो के रोग मे इस औषधि का विशेष प्रभाव है। दात काले पड जाते हैं, उन पर काली रेखाए दीखती हैं, कितना ही मजन करें ये रेखायें मिटती नही। दात भी टुकडे-टुकडे होकर टूटने लगते हैं। दातो की जड खुरने लगे, तो **मेजेरियम** तथा **थूजा** से लाभ होता है। **मेजेरियम** मे दातो का क्षय एकदम शुरु होता है, दातो का इनैमल पहले खुरदरा हो जाता है, फिर उतर जाता है। **थूजा** में भी दात जड से सडते हैं, दात का बाकी भाग ठीक दिखलाई देता है। **क्रियोज़ोट** के दात निकलते साथ ही सडने लगते हैं।

(९) रात को बिस्तर मे कमर-दर्द—जैसा हमने कहा, इस औषधि का जननागो पर विशेष प्रभाव है। जननागो के अति-प्रयोग से स्त्री तथा पुरुष दोनो को रात मे बिस्तर मे पडे-पडे कमर मे दर्द होता है। इसकी विलक्षणता यह है कि रात को बिस्तर मे पडे-पडे, और प्रात काल उठने से पहले यह दर्द बढा हुआ लगता है। इस दर्द को यह ठीक कर देता है।

(१०) शक्ति—३०, २००, १००० । जैसे **सल्फर, कैलकेरिया** तथा **लाइकोपोडियम** की त्रिक-शृखला है, एक दूसरे के पीछे लक्षणानुसार दिये जाते हैं, वैसे ही **कॉस्टिकम, कोलोसिन्थ** तथा **स्टेफिसेग्रिया** की तथा **कोलोसिन्थ, कॉस्टिकम** एव **स्टेफिसेग्रिया** की भी त्रिक-शृखला (Series) है—ये भी लक्षणानुसार एक-दूसरे के पीछे दिये जाते हैं—इन अनेक त्रिक-शृखलाओं (Series of trios) का वर्णन हमने **कैली सल्फ** मे एक-साथ कर दिया है।

स्टिक्टा (STICTA)

(१) **स्टिक्टा खुश्क जुकाम की अतिश्रेष्ठ औषधि है**—डॉ० नैश का कथन है कि जुकाम की जो दवाएं हैं उनमे इसका बहुत ऊचा स्थान है। इसके जुकाम के लक्षण क्या हैं ?

(२) **स्टिक्टा के जुकाम के शुरु मे माथे और नाक की जड़ मे दर्द होता है**—इसके जुकाम का लक्षण यह है कि जब जुकाम शुरु होता है तब वह खुश्क होता है और रोगी को माथे और नाक की जड मे दर्द होता है।

(३) **स्टिक्टा के जुकाम मे जब नाक से स्राव जारी हो जाता है तब दर्द कम हो जाता है**—इस जुकाम मे जब नाक से स्राव बहने लगता है तब माथे और नाक की जड का दर्द या तो चला जाता है, या कम हो जाता है।

(४) **जब नाक से स्राव आना बन्द हो जाता है तब माथे का दर्द और नाक की जड़ मे दर्द शुरु हो जाता है**—जुकाम मे जब नाक का स्राव बन्द हो जाने से माथे मे और नाक की जड मे दर्द शुरु हो जाय, नाक का स्राव सूक जाय, रोगी को नाक मे खराश हो, वह नाक सिनके, परन्तु कुछ निकले नही, नाक का स्राव सूक कर उसकी नाक मे पपडियां बन जायें, माथे और नाक की जड मे दर्द हो, तब ऐसे जुकाम मे **स्टिक्टा** लाभ करता है।

(५) **कैलि बाईक्रोम तथा स्टिक्टा की तुलना**—इस प्रकार का सूखा जुकाम जिसमे माथे मे और नाक की जड मे दर्द हो **कैलि बाईक्रोम** मे भी पाया जाता है, परन्तु इन दोनो मे भेद यह है कि **कैलि बाईक्रोम** मे जब भी नाक का स्राव निकलता है वह सूत-सा होता है, सख्त होता है, **स्टिक्टा** मे सूत-सा श्लेष्मा नही निकलता। **युफ्रेशिया, मर्क, आर्सेनिक** और **कैलि आयोडाइड** मे बहता हुआ जुकाम होता है, **स्टिक्टा** का जुकाम बिल्कुल खुश्क होता है, बहता नही, **पल्स, सीपिया, कैलि सल्फ** मे गाढा, न लगनेवाला, बिना खराश का श्लेष्मा होता है, **स्टिक्टा** मे यह भी नही होता क्योकि इसका जुकाम खुश्क होता है।

(६) **स्टिक्टा, नक्स, एरम ट्रिफ की जुकाम मे तुलना**—

स्टिक्टा का जुकाम—नाक से हवा लेने मे हवा अन्दर लगती है, सवेरे जुकाम कम होता है, दोपहर को तेज़ होता है, तेज़ खुश्की महसूस होती है।

नक्स का जुकाम—दिन को तेज़ बहता हुआ जुकाम होता है, रात को नाक सूख जाती है, प्रात काल ३ बजे जुकाम की परेशानी बढती है।

एरम ट्रिफ—नाक से लगातार तीखा, काटता हुआ स्राव बहता रहता है फिर भी नाक सूकी होती है, रुकी हुई; रोगी लगातार नाक को कुरेदता है।

हवा लेने से नाक के अन्दर हवा का लगना (Sensitiveness to

inspired air) इमेक्स, फॉस्फ कार्बोक्रोम, फॉस तथा इलकेमारा मे भी पाया जाता है।

(साइनस वाले जुकाम की मुख्य-मुख्य औषधियाँ)

'साइनस' खोखली-प्रणालिका (Cavity) को कहते हैं। यह हड्डी मे हो सकता है, कान मे हो सकता है, किसी फोडे के साथ हो सकता है जिसके द्वारा पस बाहर रिसता रहे, नाक मे हो सकता है। प्राय नाक के साइनस के मरीज़ बहुत पाये जाते हैं। माथे की हड्डी के भीतर एक खाली जगह है जो दिखलाई नही देती, भीतर छिपी रहती है, उसके साइनस का संबंध नाक से रहता है, और रोगी को माथे मे दर्द तथा नाक मे पुराना जुकाम रहा करता है। इसे डॉक्टर लोग—Frontal Sinusitis—का नाम देते है। साइनस का स्राव कहा से है, पतला या गाढा है, मृदु या तीक्ष्ण है, इन तथा इनके साथ सर्दी-गर्मी आदि लक्षणो पर ध्यान देना आवश्यक है। इसकी मुख्य-मुख्य औषधिया निम्न हैं

आर्सेनिक—रोगी का नाक बन्द रहता है, फिर भी लगने वाला स्राव बहता रहता है, नाक के भीतर तथा बाहर इस स्राव से जलन होती है, स्राव नाक को छील देता है, बेचैनी होती है, छींकें आती है पर उनसे आराम नही मिलता। बाहर खुली हवा मे जाने से रोग बढ जाता है।

बेलाडोना—जुकाम मे चेहरा लाल हो जाता है, नाक सिनकने मे सख्त दर्द होता है, शरीर गर्म और पसीना भी गर्म आता है। गर्म कमरे मे भी रोगी को ठंड लगती है।

ब्रायोनिया—अगर जुकाम होने से पहले कब्ज़ हुआ हो, कब्ज़ के कारण रोग हो तब लाभ करता है।

कैलकेरिया सल्फ—डॉ० कैन्ट का कहना है कि साइनस के पुराने रोगियो के लिये यह अत्युत्तम है। कान के साइनस मे भी जब पीला, गाढा, पस जैसा स्राव निकलता है, इससे लाभ होता है।

क्युप्रेस्सस—कान, नाक के पुराने साइनस मे, कभी-कभी कर्णशोथ के कारण २० साल के पुराने बहरेपन को भी यह ठीक कर देता है। डॉ० वीलर ने एक ७२ वर्ष के बहरे रोगी को इस का २X देकर ५ सप्ताह मे ठीक कर दिया था। डॉ० बर्नेट ने मुह के रुधिर रिसते ट्यूमर को इस से ठीक किया। बम्बई के डॉ० वाडिया ने भी एक ३ वर्ष के बच्चे के मुख के भीतर के स्राव-रिसते ट्यूमर को क्युप्रेस्सस २०० से ठीक किया।

हिपर सल्फ—सर्दी के हर झोंके से साइनस का दर्द और सिर-दर्द होने लगता है, सर्दी बर्दाश्त नही होती, स्राव से खट्टी बू आती है। डॉ० विलियम बोरिक का कहना है कि सर्दी से नाक बन्द हो तो हिपर १ x देने से नाक बहने लगती है।

हाईड्रैस्टिस—ओहियो मैडिकल सोसायटी का कहना है कि **हाईड्रैस्टिस, पल्स** तथा **क्युप्रेस्सिस** इन तीन से ही कान या नाक के अनेक रोगी ठीक हो जाते हैं। हाईड्रैस्टिस का स्राव **गाढा, पीला, सूतदार, अधिक मात्रा** मे होता है। स्राव नाक के भीतर से अन्दर को (Posterior nares) गिरता है। **पल्स** मे भी ये लक्षण हैं, परन्तु इसका स्राव **पीला होता हुआ भी ज्यादा गाढ़ा** होता है।

कैलि बाईक्रोम—इसका मुख्य-लक्षण स्राव का सूतदार (Ropy) होना है।

मेडोराइनम—बहुत **पुराना** साइनसाइटिस (Sinusitis), नाक के भीतर के पिछले हिस्सो (Posterior nares) मे बार-बार कफ जमा हो जाना, **दिन को** रोग का विशेष बढना, विशेषकर अगर रोगी को गोनोरिया रहा हो। इस औषधि को **'पस और कटार की मा'** (Mother of pus and Catarrh) कहा जाता है।

मर्क सौल—नाक सूज जाय, दुखने लगे, **छींकें** आये, नाक से **बदबूदार** स्राव निकले, रात को पसीना आये, न गर्मी बर्दाश्त हो न सर्दी। **बेलाडोना तथा मर्क सौल से साइनस के अधिकतर रोगी ठीक हो जाते हैं।**

नैट्रम म्यूर—डॉ० क्लार्क का कहना है कि ठड लगकर जुकाम आदि रोग होने मे यह औषधि **विशेष मूल्यवान** है।

स्टिक्टा—अत्यन्त **खुश्क जुकाम,** इतना खुश्क कि दर्द होने लगे, नाक बार-बार साफ करना पर कुछ न निकलना, खुश्की के कारण नाक मे **पपड़िया** जम जाना। (औषधि की विशेषता हमने काले अक्षरो मे दी है)।

सक्षेप मे, साइनसाइटिस या जुकाम आदि की शिकायत की शुरुआत मे प्राय **नक्स** के लक्षण हुआ करते है, उसके बाद दूसरी स्टेज मे **पल्स** के, ज्यादा छींकें आयें तो **मर्क**, नाक बन्द हो तो **स्टिक्टा, इपिकाक, नक्स**, नाक पहले बन्द हो फिर खुल जाय तो **पल्स**; अगर बन्द तो हो परन्तु बहती भी रहे तो **आर्स**, दिन को बन्द शाम को बहे तो **नक्स**, शाम को बन्द या बन्द कमरे मे बन्द और खुली हवा मे बहे तो **पल्स**, अगर ऐसी बन्द हो कि सास लेना भी भारी हो और मध्य-रात्रि को सास रुकती-सी खासी से बच्चा सोते-सोते उठ बैठे तो **सैम्बूकस** या **स्टिक्टा**, अगर सिर्फ एक नाक पर जुकाम का असर हो तो हिपर, नाक से पानी बहे तो **मर्क**, नाक तथा आख से पानी बहे तो **युफ्रेशिया**, जलन-वाला स्राव बहे तो **आर्स**, गाढा, नीला-पीला स्राव हो तो **पल्स**, बदबूदार हो तो **मर्क**, नाक के बहते रहने पर भी बन्द महसूस हो तो **एरम ट्रिफ** लाभकर है।

(७) **खसरा और इन्फ्लुएंजा के बाद, या तपेदिक की सूकी खांसी मे लाभ करता है**—खसरा और इन्फ्लुएंजा के बाद गले मे खुरखुराहट के साथ कष्टप्रद सूकी खासी हुआ करती है। तपेदिक मे भी ऐसी सूकी खासी होती है। इस खासी मे **स्टिक्टा** लाभप्रद है। इस खासी से रोगी सो भी नही सकता। इस

औषधि से यह खासी दूर हो जाती है, और खासी दूर हो जाने से रोगी आराम से सोता है।

(८) **दायें कन्धे के जोड का दर्द, कलाई, अगुलियो और घुटनो का दर्द ठीक करता है**—डॉ० हेल का कहना है कि उन्होने इस औषधि से अनेक रोगियो के दाये कन्धे के जोड का दर्द, हाथ की कलाई का दर्द, अगुलियो का दर्द, घुटने के जोडो का दर्द दूर कर दिया—इस दृष्टि से इस प्रकार के वात-रोग मे यह उत्तम औषधि है।

(९) **शक्ति**—टिंचर, ३, ६

स्ट्रैमोनियम—धतूरा, (STRAMONIUM)

(१) **पागलपन, रोगी बकता चला जाता है (उन्माद तथा पागलपन मे बेलाडोना, हायोसाएमस, स्ट्रैमोनियम की तुलना)**—हम पहले **बेलाडोना** और **हायोसाएमस** का वर्णन करते हुए पागलपन की इन तीनो मुख्य-औषधियो का वर्णन कर आये हैं। डॉ० नैश ने इन तीनो को पागलपन का 'त्रिक' कहा है। **बेलाडोना** मे सिर गर्म हो जाता है, हाथ-पैर ठडे रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सारा खून सिर की तरफ दौड पडा है, यही कारण है कि किसी औषधि मे इस प्रकार का निरतर रहनेवाला उन्माद नही पाया जाता जितना **बेल** मे पाया जाता है। उन्माद मे रोगी को भूत-प्रेत दिखलाई पडते है, भयावने चेहरे, पशु तथा कीट-पतग दीखने लगते है जिनकी कोई सत्ता नही होती। **हायोसाएमस** मे भी उन्माद (Delirium) है, परन्तु इस मे उन्माद वढता-घटता है, निरन्तर नही बना रहता। **बेल** मे तीव्र-उन्माद मुख्य है, मन्द-उन्माद अपवाद है, **हायोसाएमस** मे मन्द-उन्माद मुख्य है, तीव्र-उन्माद अपवाद है। **हायो** बैठा-बैठा धीरे-धीरे गुनगुनाया करता है, कभी-कभी बीच मे तेज़ हो जाता है। **बेल** का चेहरा लाल, तमतमाता है, **हायो** का चेहरा पीला और धसा हुआ होता है। **हायो** का रोगी कमजोर होता है और क्रमश कमज़ोरी वढती जाती है, वह इतना कमज़ोर होता है कि उन्माद की तीव्रता अगर हो भी तो देर तक नही बनी रह सकती। **हायो** का उन्माद तीव्रता से प्रारभ हो सकता है, परन्तु ज्यो-ज्यो समय बीतता जाता है यह मन्द पडता जाता है, अन्त मे यह टाइफॉयड के-से लक्षण प्रकट करने लगता है। **स्ट्रैमोनियम** के उन्माद के लक्षण उक्त दोनो औषधियो से भिन्न होते हैं। यह भिन्नता उन्माद की तीव्रता के रूप मे पायी जाती है। इसका उन्माद भयकर होता है, बडे ज़ोर-से, ऊचे-ऊचे गाता है, हसता है, दात निकालता है, सीटी बजाता है, चिल्लाता है, गाली बकता है, कभी-कभी दीन-भाव से प्रभु से प्रार्थना करने लगता है। इसका मुख्य लक्षण

'बकना' है। बकवास (Loquacity) इस औषधि मे प्रधान रूप से पाया जाता है। लैकेसिस मे भी बकना है, परन्तु लैकेसिस के पागलपन मे रोगी एक विषय को लेकर बकना शुरु कर देता है,—उसे छोड दूसरे पर बकना शुरु कर देता है, विषय-मे-विषय पर छलागे मारता जाता है, परन्तु स्ट्रैमोनियम मे ऐसा नहीं है, वह एक ही बात बकता जाता है। स्ट्रैमोनियम के रोगी के मन मे मानो भूचाल आ जाता है, वह हिंसा पर आमादा हो जाता है, कपडे फाड डालता है, अपने को नगा कर लेता है।

(२) **बुखार, हिंसात्मकता तथा कमजोरी मे उक्त तीनो की तुलना**—पागलपन मे 'बुखार', 'हिंसापरकता' तथा 'कमजोरी' की दृष्टि से इन तीनो की तुलना की जाय तो क्रम इस प्रकार बनता है

बुखार मे—बेलाडोना (सबसे अधिक बुखार—दोपहर २ बजे से ३ बजे रात तक), **स्ट्रैमोनियम** (बेल से कम बुखार), **हायो** (बहुत ही कम बुखार)

हिंसात्मकता मे—**स्ट्रैमोनियम** (सब मे अधिक), **बेल** (स्ट्रैमो से कम), **हायो** (बेल से भी कम हिंसात्मकता)

कमजोरी मे—**हायोसाइमस** (सबसे अधिक कमजोरी), **बेल** (हायो से कम कमजोरी), **स्ट्रैमो** (बहुत कम कमजोरी)

(३) **स्ट्रैमोनियम का रोगी प्रकाश तथा साथ (कपनी) चाहता है**—इसका रोगी अधेरे से डरता है, इकला रहना नही चाहता, किसी-न-किसी का साथ चाहता है। अधेरे मे सो नही सकता, कमरे मे रोशनी जलती रहनी चाहिये। इकला भी नही रह सकता। बेल इसके विपरीत है, वह अधेरा चाहता है, इकला रहना पसन्द करता है।

(४) **जल या किसी भी द्रव अथवा चमकीली वस्तु को देखने से ऐंठन पड जाती है** (Hydrophobia—cannot bear the sight of bright objects)—यद्यपि रोगी प्रकाश चाहता है, अधेरे कमरे मे सो नहीं सकता, तो भी विलक्षणता यह है कि आयना या चमकीली वस्तु को देखकर उसे दौरा पड जाता है, ऐंठन होने लगती है। पानी को या किसी द्रव-पदार्थ को नही देख सकता। जल को न देख सकने का लक्षण पागल कुत्ते के काटने मे पाया जाता है।

(५) **दर्द का सर्वथा अभाव**—जिस रोग मे दर्द की सभावना हो उसमें भी दर्द का सर्वथा अभाव पाया जाय तो यह विलक्षण बात है। ऐसा लक्षण **स्ट्रैमोनियम** तथा **ओपियम** दोनो मे है।

(६) **बहुत अधिक पढने से पागलपन**—जो विद्यार्थी रात-रात भर जाग कर काम किया करते है, कालेज का काम इतना होता है कि दिन को पूरा नही होता, उन्हें कभी-कभी मस्तिष्क की उत्तेजना के कारण **स्ट्रैमोनियम** के लक्षणो वाला पागलपन हो जाता है। ऐसी अवस्था को यह ठीक कर देता है।

(७) तुतलाना—रोगी को एक शब्द उच्चारण करने में देर तक प्रयत्न करना पड़ता है। बोलने की चेष्टा करते-करते वह मुंह बिगाड़ कर बोलता है, हकलाता है, बेहोशी में अगर रोगी हकला कर बोले तो इस औषधि का लक्षण समझना चाहिये।

(८) **वृद्ध-पुरुषों के हलक का पक्षाघात**—वृद्ध-पुरुषों के हलक के पक्षाघात में खाने की वस्तु निगलने में कष्ट हो तो यह औषधि तुरत लाभ करती है।

(९) दमा—दमे में स्ट्रैमोनियम की चुरुट पीने से आराम होता है इसलिये इस बात की खोज करने की आवश्यकता है कि यह औषधि शक्तिकृत् होकर दमे में क्या प्रभाव रखती है।

(१०) शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (अन्धेरे घर में, इकले रहने पर, चमकीली वस्तु देखने से रोग बढ़ता है; रोगी रोशनी चाहता है, इकला रहना नहीं चाहता)



डॉ० जे० कौम्पटन बर्नेट (१८५०-१९०१) अपनी पुत्री मिस वीरा कौम्पटन सहित
[डॉ० बर्नेट की पुत्री मिस वीरा कौम्पटन बर्नेट (लंदन) के सौजन्य से प्राप्त]

सल्फ़र—गन्धक, (SULPHUR)

[प्रथम-भाग—व्यापक-लक्षण]

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सल्फर सोरा-दोष-नाशक औषधियो का राजा है, सोरा-दोष क्या है ?

(२) शारीरिक लक्षण — दुबला-पतला, झुककर चलने वाला, बदहजमी का शिकार (दुबलेपन मे फॉस से तुलना, फॉस मे सल्फर की बदबू नहीं है)

(३) शारीरिक लक्षण—मैला-कुचैला, बिखरे बाल, न नहानेवाला

(४) शारीरिक लक्षण—रोगी से दुर्गन्ध आती है, स्नान करना पसन्द नहीं करता (दुर्गंध मे सोरिनम से तुलना)

(५) शारीरिक लक्षण—शरीर से स्वय दुर्गंध छोडता है, परन्तु अपनी दुर्गंध को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता

(६) मानसिक लक्षण—स्वार्थी-मनोवृत्ति

(७) मानसिक लक्षण—चीथडो मे लिपटा दार्शनिक, फिलासफर लगता है

(८) मानसिक लक्षण — सल्फर तथा आर्सेनिक के परस्पर विरोधी मानसिक-लक्षण

(९) मानसिक लक्षण—कुछ काम न कर निठल्ला बैठा रहता है

(१०) मानसिक लक्षण—अपने को बहुत बडा समझता है

(११) मानसिक लक्षण — धार्मिक तथा दार्शनिक मेलकोलिया, पागलपन, या निरतर विचार से कभी-कभी सत्य का आविष्कार कर डालता है

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*खुली हवा का अच्छा लगना
*खुश्क, गर्म हवा अच्छी लगना
*गर्म सेक से आराम होना
*दाहिनी तरफ लेटने से अच्छा लगना

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*एक जगह खडे रहने से परेशानी
*बिस्तर की गर्मी से परेशानी
*स्राव के दब जाने से रोग
*स्नान से, या नम मौसम से वृद्धि
*विश्राम से रोग मे वृद्धि
*दिन के ११ बजे रोग मे वृद्धि
*रजोरोध से रोग मे वृद्धि
*रात मे रोग का बढ जाना

(१) सलफर सोरा-दोष-नाशक औषधियो का राजा है, सोरा-दोष क्या है ?—मनुष्य के लिये रोगी होना अस्वाभाविक है, स्वस्थ रहना ही उसकी स्वाभाविक अवस्था है। अगर वह रोगी होता या रोगी रहता है, तो इसका कारण उसके भीतर किसी प्रकार का 'धातुगत-दोष' (Miasm) ही समझना चाहिये। जैसे आयुर्वेद मे यह माना जाता है कि वात-पित्त-कफ—इन प्रकृतिगत दोषो से शरीर मे विकार, रोग उत्पन्न होता है, वैसे ही होम्योपैथी मे भी यह माना जाता है कि मनुष्य मे कोई 'धातुगत-दोष' —'विकार'—(Miasm) है जिसके कारण उसे रोग होता है, या वह रोगी रहता है।

'धातुगत-दोष' (Miasm) दो तरह का माना गया है एक है 'तरुण-धातुगत-दोष' (Acute miasm), दूसरा है 'जीर्ण-धातुगत-दोष' (Chronic miasm)।

हम अभी आगे देखेंगे कि 'धातुगत-दोष' (Miasm) से अभिप्राय 'सोरा'-'साइकोसिस'-'सिफिलिस' से है। जब इन तीनो दोषो Miasms) मे से कोई-सा दोष 'तरुण-रोगो' (Acute diseases) के दूर होने मे बाधक हो रहा होता है, तब 'तरुण-रोग' ठीक दवा के मिलने पर भी दूर नही होते, 'जीर्ण-रोगो' (Chronic diseases) मे तो इन तीनो 'धातुगत-दोषो' (Miasms) मे से कोई-न-कोई दोष रोग के दूर होने मे बाधक होता ही है। जब सोरा-साइकोसिस-सिफिलिस मे से कोई-सा 'धातुगत-दोष' (Miasm) तरुण-रोग (नये-रोग) के दूर होने मे बाधक हो रहा होता है, तब उसे 'तरुण-धातुगत-दोष' (Acute miasm) कहते हैं, जब वह जीर्ण-रोग (पुराने-रोग) के दूर होने मे बाधक हो रहा होता है तब उसे 'जीर्ण-धातुगत-दोष' (Chronic miasm) कहते हैं। नवीन-रोग को हमने 'तरुण-रोग' का नाम दिया है, पुराने-रोग को हमने 'जीर्ण-रोग' का नाम दिया है।

'नवीन-धातुगत-दोष' (Acute miasm) से 'नवीन-रोग' (Acute diseases) पैदा होते हैं, 'पुराने-धातुगत-दोष' (Chronic miasm) से 'पुराने-रोग' (Chronic diseases) पैदा होते हैं।

'नवीन-धातुगत-दोष' (Acute miasm) से जो 'नवीन-रोग' (Acute diseases) पैदा होते हैं, वे तीन क्रमो मे से गुजरते हैं। वे तीन क्रम निम्न हैं

i रोग का 'पूर्व-रूप' (Prodromal stage of disease)

ii रोग का 'पूर्ण-रूप' (Stage of progress of disease)

iii रोग का 'क्षय-रूप' (Stage of decline of disease)

जब रोग पहले-पहल अपने लक्षण प्रकट करने लगता है, वह रोग का 'पूर्व-रूप' है, जब रोग अपने यौवन में, पूरे रूप मे आ जाता है वह उसका 'पूर्ण-रूप' है, जब पूर्ण-रूप मे आने के बाद रोग ढलने लगता है और अन्त मे समाप्त

हो जाता है वह उसका 'क्षय-रूप' है। जितने 'नवीन-रोग' हैं, वे इन तीन अवस्थाओ मे से गुज़र कर या तो ठीक हो जाते हैं, अगर ठीक नही होते तो रोगी मर जाता है। खसरा, बुखार, चेचक आदि सब रोगो मे यही प्रक्रिया देखने मे आती है।

'पुराने-धातुगत-दोष' (Chronic miasm) से जो 'पुराने-रोग' (Chronic diseases) पैदा होते हैं, वे तीन क्रमो मे से गुज़रने के स्थान मे केवल दो क्रमो मे से गुज़रते हैं। वे दो क्रम हैं

i रोग का 'पूर्व-रूप' (Prodromal stage of disease)

ii. रोग का 'पूर्ण-रूप' (Stage of progress of disease)

'पुराने-धातुगत-दोष' (Chronic miasm) से जो 'पुराने-रोग' (Chronic diseases) पैदा होते हैं, वे पहले अपना रूप प्रकट करते हैं, फिर अपने पूर्ण रूप मे आ जाते हैं, परन्तु वे नष्ट नही होते, जीवन-पर्यन्त बने रहते है। अगर तेज़ दवा देने से वे दब भी जाते है, या कुछ देर के लिये शान्त हो जाते हैं, तो भी रोग के अनुकूल परिस्थिति आने पर वे फिर अपना सिर ऊंचा उठा लेते है, और हर अगली बार जब प्रकट होते हैं तब उनका पहली बार से भी विकट रूप होता है। उदाहरणार्थ, गठिया (Gout), वात-रोग (Rheumatism), पुराना सिर-दर्द (Chronic headache), दमा (Asthma) आदि अगर तेज़ दवाइयो से दबा भी दिये जायें, तो भी वे समूल नष्ट नही होते, कुछ देर शान्त रह कर फिर और ज़ोर से प्रकट हो जाते हैं।

नवीन तथा पुराने रोगो को उत्पन्न करने वाला 'धातुगत-दोष' (Miasm) होम्योपैथी के मत के अनुसार तीन तरह का है

i 'कंडु'-धातुगत-दोष (Psoric miasm)

ii 'प्रमेह'-धातुगत-दोष (Sycotic miasm)

iii 'उपदंश'-धातुगत-दोष (Syphilitic miasm)

'कंडु' खुजली या 'सोरा' को कहते है, 'प्रमेह' गोनोरिया या 'साइकोसिस' को कहते हैं, 'उपदंश' सिफिलिस को कहते है, इसलिये हमने इन तीनों को कंडु, प्रमेह, उपदंश 'धातुगत-दोष'—यह नाम दिया है।

'नवीन-रोगो' (Acute diseases) के विषय मे हनीमैन का कहना था कि यद्यपि नक्स वोमिका, इग्नेशिया, एकोनाइट, बेलाडोना, ब्रायोनिया, आर्निका, चायना आदि अल्पकालिक औषधियो से नवीन-रोगो के कुछ लक्षणो को वे शान्त कर देते थे, या इन रोगो के सब लक्षणो को इन औषधियो से वे शान्त कर देते थे, तब भी उन्हें आश्चर्य होता था कि इन औषधियो से ठीक हुए अनेक नवीन-रोग बार-बार प्रकट होने लगते थे। इसका उन्होंने यही अभिप्राय निकाला कि लक्षणो के मिलने पर भी औषधि रोग की जड तक नही पहुंच

पाती थी जिस से वह उसको जड से उखाड फेंकती, और इन नवीन-रोगो की जड मे भी कोई 'पुराना-धातुगत-दोष' (Chronic miasm) काम कर रहा था जो रोग के सदा के लिये ठीक होने मे बाधक बनकर पडा था।

'पुराने-रोगो' (Chronic diseases) के विषय मे तो यह स्पष्ट ही था कि ऐलोपैथी से तो ये रोग जड से उखडते ही नही, केवल तेज़ दवाओ के ज़ोर से कुछ देर के लिये दब जाते हैं, दबने का समय निकलने के बाद फिर हरे हो जाते हैं, और जब दूसरी बार हरे होते हैं तो पहली बार से भी ज्यादा ज़ोर पकडते हैं। इसका भी यही अभिप्राय था कि इन पुराने रोगो की जड मे भी कोई 'पुराना-धातुगत-दोष' (Chronic miasm) काम कर रहा था जो रोग को जड से उखडने नही देता था।

तो फिर, इस समस्या का क्या समाधान था ? हनीमैन इस परिणाम पर पहुचे कि जो नवीन-रोग (तरुण-रोग) जड से नही उखडते उनके बने रहने या बार-बार उभर आने का कारण उनके आधार मे कोई 'धातुगत-दोष' (Miasm) है, जो रोग को जड से नही हिलने देता। इसी प्रकार पुराने-रोग (जीर्ण-रोग) भी जड से नही जाते क्योकि उनको बनाये रखनेवाला कारण भी कोई 'धातुगत-दोष' (Miasm) ही है। इसी 'धातुगत-दोष' का अनुसधान करते-करते वे इस परिणाम पर पहुचे कि नवीन-रोगो के जड से नष्ट न होने, बार-बार होने तथा पुराने रोगो के बने रहने का कारण ये तीन 'धातुगत-दोष' (Miasms) हैं जिनका हमने ऊपर उल्लेख किया और जिनको उन्होने 'सोरा', 'साइकोसिस' तथा 'सिफिलिस'—ये नाम दिये।

'नवीन-रोग' (Acute disease) जब उपयुक्त औषधि देने पर भी जड-मूल से नष्ट न हो, तब उसका कारण सोरा-दोष या साइकोसिस-दोष या सिफिलिस-दोष—इन मे से कोई-सा भी दोष हो सकता है। इसी प्रकार 'पुराना-रोग' (Chronic disease) इसीलिये ऐलोपैथी से नही जाता क्योकि उसके उत्पन्न होने का कारण भी सोरा, साइकोसिस या सिफिलिस मे से कोई-सा 'धातुगत-दोष' (Miasm) रोग को दूर करने मे बाधक हो रहा होता है। नवीन तथा पुराने बने रहनेवाले रोगो को समूल नष्ट करने के लिये ऐसी औषधियो का प्रयोग करना होगा, जो एन्टी-सोरिक हो, एन्टी-साइकोटिक हो, एन्टी-सिफिलिटिक हो। हनीमैन ने 'सोरा'-दोष नष्ट करने के लिये सल्फर, 'साइको-सिस'-दोष दूर करने के लिये **थूजा** और 'सिफिलिस'-दोष दूर करने के लिये **मर्क्यूरियस** को उनके लक्षणो के आधार पर चुना। हम यहा सल्फर पर लिख रहे हैं इसलिये साइकोसिस तथा सिफिलिस पर न कह कर—'सोरा'-दोष क्या है—प्रकरणसगत इस मुख्य प्रश्न पर प्रकाश डालने का यत्न करेंगे। 'साइको-सिस'-दोष का **थूजा** तथा 'सिफिलिस'-दोष का **मर्क** मे वर्णन किया गया है।

सोरा-दोष क्या है ?—हनीमैन ने लिखा है कि सल्फर सोरा-दोष-नाशक औषधियो का राजा है। प्रश्न यह है कि सोरा दोष क्या है ?

डा० कैन्ट अपनी 'लेक्चर्स ऑन होम्योपैथिक फिलोसोफी' मे लिखते हैं कि मोटे तौर से 'सोरा' का अर्थ खुजली समझा जाता है, परन्तु हनीमैन ने 'सोरा'-शब्द का बहुत गहरे अर्थ मे प्रयोग किया है। त्वचा पर खुजली अर्थात् 'कडु' या किसी प्रकार का त्वचा का अन्य रोग तो 'सोरा' का वाह्य रूप है, यह बाहर की खुजली भीतर की मानसिक-खुजली का प्रकट रूप है।

मानसिक-खुजली—या डा० कैन्ट के शब्दो मे 'आध्यात्मिक-रोग' (Spiritual sickness)—ही शारीरिक-रोग का कारण है। 'मानसिक-खुजली' या 'आध्यात्मिक-रोग' का क्या अर्थ है ? जब तक मनुष्य का मन निर्मल था, वह दूसरो से प्रेम-पूर्वक व्यवहार करता था, किसी से ईर्ष्या नही करता था, लडाई-झगडो से दूर था, शान्त-जीवन व्यतीत करता था, तब तक उसके मन तथा आत्मा मे रोग का बीज नही पडा था, और रोग के बीज के मन मे न पडने से उसका दैनिक-जीवन नियमित रहता था, वह हर बात मे अपने को सयम मे रखता था। जब से मनुष्य के मन मे ईर्ष्या-द्वेष-अशान्ति-लडाई-झगडे का—काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि का—बीज पडा, तब से उसका दैनिक-जीवन अनियमित हो गया, वह किसी बात मे अपने को सयम मे नही रख सका, और तभी से उसके मानसिक तथा शारीरिक रोगो का सूत्रपात हुआ। डा० कैन्ट का कहना है कि यह 'मानसिक-खुजली', यह 'आध्यात्मिक-रोग'—यह ईर्ष्या, द्वेष, अशान्ति, लडाई-झगडे—यही 'सोरा' का वास्तविक रूप है, 'मानसिक-खुजली' सोरा का अप्रकट रूप है, 'शारीरिक-खुजली' सोरा का प्रकट रूप है।

मन मे विकार न हो, तो शरीर मे विकार नही आता। उदाहरणार्थ, गोनोरिया तथा सिफिलिस का 'धातुगत-दोष' (Miasm) कैसे उत्पन्न होता है ? पहले मन मे किसी वेश्या के घर जाने का मन मे विचार उत्पन्न होता है, परन्तु यह विचार मन मे इतनी खुजलाहट पैदा कर देता है कि व्यक्ति वेश्या के यहाँ जा पहुचता है और उसके ससर्ग से गोनोरिया या सिफिलिस का शिकार हो जाता है। इस मे सन्देह नही कि गोनोरिया से रोगी के शरीर मे साइकोसिस का 'धातुगत-दोष' (Miasm) पैदा हो जाता है, सिफिलिस से रोगी के शरीर मे सिफिलिस का 'धातुगत-दोष' (Miasm) पैदा हो जाता है, इन दोषो के उत्पन्न होने से पुराने—जीर्ण—रोग (Chronic diseases) ठीक होने मे नही आते, उन्हें ठीक करना हो तो साइकोटिक रोगो के लिये **थूजा** आदि एन्टी-साइकोटिक औषधि और सिफिलिटिक रोगो के लिये **मर्क्यूरियस** आदि एन्टी-सिफिलिटिक औषधि देनी होगी, परन्तु डॉ० कैन्ट का कहना है कि साइकोसिस तथा सिफिलिस का भी तो आधारभूत कारण सोरा-

दोष ही है। मन में विकार न हो तो क्यों कोई वेश्या के घर जायगा, क्यों उसके संसर्ग से गोनोरिया या सिफिलिस का शिकार होगा? इसलिये डॉ० कैन्ट के कथनानुसार सब रोगों का आन्तरिक कारण मनोविकार ही है, मानसिक-खुजली ही है, आध्यात्मिक-रोग ही है, दूसरे शब्दों में 'सोरा' ही है।

हनीमैन का कहना है कि मनुष्य के पुराने—जीर्ण—रोगों (Chronic diseases) का कारण सोरा दोष ही है। सोरा-दोष के कारण ही वर्तमान-युग के मानव को आठ में से सात बीमारियां जकड़े हुए हैं।

यह सोरा-दोष न-जाने कब से चला आ रहा है। यह मनुष्य के अन्तरात्मा के भीतर छिपा सहस्र सिरों वाला राक्षस है जो युग-युगान्तर से, सन्तति से सन्तति में, वंशानुगत रूप में जीवित है। इसका भौतिक-रूप त्वचा की खुजली, त्वचा के रोग है, इसका अभौतिक रूप मन का विकार है। हनीमैन का कथन है कि त्वचा के रोगों को ऐलोपैथी की तेज दवाओं से जब दबा दिया जाता है, तब त्वचा का रोग दब कर नष्ट नहीं हो जाता, यह भीतर अनेक उपद्रवों को उत्पन्न कर देता है। अनगिनत रोग—स्नायु-दुर्बलता, हिस्टीरिया, मानसिक-अवसाद, पागलपन, दुःखी-स्वभाव, मृगी, ऐंठन, कैंसर, गठिया, बवासीर, जलोदर, माहवारी के रोग, दमा आदि अनेक रोग जिन्हें हम असाध्य या पुराने—जीर्ण-रोग—कहते हैं, त्वचा की खुजली या त्वचा के रोगों को दबा देने से होते हैं। एन्टी-सोरिक दवा से भीतर के रोग बाहर आने लगते हैं, त्वचा पर प्रकट होने लगते हैं। हनीमैन का कहना है कि स्वस्थ होने का यही सही मार्ग है।

हनीमैन ने सोरा-जनित रोगों के लक्षणों का भिन्न-भिन्न सोरा-पीड़ित रोगियों के अध्ययन से संग्रह किया, इसके साथ ही स्वस्थ-व्यक्तियों पर सल्फर की 'परीक्षा-सिद्धि' (Proving) की, और वे इस परिणाम पर पहुंचे कि सोरा-ग्रस्त रोगियों के लक्षण और सल्फर की परीक्षा के लक्षणों में अपूर्व समानता है। इसी कारण उन्होंने सल्फर को सोरा-दोष-नाशक औषधियों के राजा का नाम दिया।

(२) **सल्फर के शारीरिक-लक्षण—दुबला-पतला, झुक कर चलने वाला, बदहजमी का शिकार, दुबलेपन में फॉस से तुलना**—इसका रोगी दुबला-पतला होता है, सीधा नहीं चल सकता, कुबड़ों की तरह झुक कर चलता है, शरीर के कोने निकले दिखाई देते हैं, हड्डियां उभरी हुई, बूढ़ों की तरह गर्दन नीचे किये चलता है। शरीर पुष्ट नहीं होता, हाथ-पांव दुबले होते हैं। रोगी का हाजमा भी ठीक नहीं होता, पोषण-क्रिया के विकार के कारण रोगी निर्बल होता है। जब कोई व्यक्ति घर से बाहर नहीं निकलता, घर में बैठा रहता है, अपने कमरे में बंद पड़ा पुस्तकों का कीड़ा बन जाता है, खुली हवा में चलता-फिरता

नही, व्यायाम नही करता, तब उसकी ऐसी हालत हो जाती है कि जो-कुछ भी खाना खाता है उस से शरीर का ठीक तरह से पोषण नही हो पाता। वह पतला हो जाता है, चलता भी झुका हुआ, बैठता भी झुका हुआ, टिक कर एक स्थान पर खडा नही रह सकता, परन्तु पतले होने का यह मतलब नही है कि मोटे व्यक्तियो के लिये यह औषधि नहीं है। सल्फर के रोगी के लिये एक जगह टिक कर खडा न हो सकना बडा मुख्य लक्षण है।

दुबलेपन मे फॉस से तुलना। (फॉस मे सल्फर की बदबू नहीं है)—यह औषधि तथा **फॉसफोरस** दुबलेपन मे एक-दूसरे से मिलते हैं। दोनो पतले-दुबले, कन्धे झुका कर चलने वाले हैं। दोनो के लिये एक जगह टिक कर खडे रहना कठिन है। दोनो का चेहरा बडा कोमल दीखता है, दोनो रक्तहीन होते है। डॉ० नैश कहते हैं कि **सल्फर** और **फॉस**—इन दोनो मे इतनी समानता है कि अगर **फॉसफोरस** मे भी सोरा-दोष इतना प्रबल होता जितना प्रबल यह **सल्फर** मे है, तो ये दोनो एक-दूसरे के इतने नजदीक होते कि इन्हे अलग-अलग समझना ही कठिन हो जाता। फिर भी **सल्फर** की तेज बदबू, मैलापन, त्वचा के रोग इसे **फॉसफोरस** से पृथक् कर देते हैं।

(३) **सल्फर के शारीरिक-लक्षण—मैला-कुचैला, बिखरे बाल, न नहाने वाला**—इस रोगी का एक और भी शारीरिक रूप है जिसे देखकर झट-से **सल्फर** का रोगी पहचाना जा सकता है। वह देखने मे मैला-कुचैला होता है, बाल बिखरे हुए, न-जाने कब से कघी नही की। चेहरा इसका लाल होता है, जरा-सी बात पर चेहरे पर लाली आ जाती है, हर मौसम का प्रभाव चेहरे पर नज़र आता है। चेहरा हर समय मैला दीखता है, कितना भी वह नहाये-धोये मैलापन उस से नही छूटता। अगर रोगी बच्चा है, तो माँ चाहे उसे कितनी बार नहलाये, ऐसा लगता है कि वह कभी नहाया ही नही। बच्चे इतने गन्दे होते हैं कि नाक का मल ओठो पर आते ही मना करने पर भी उसे चाट जाते हैं।

(४) **सल्फर के शारीरिक-लक्षण—रोगी से दुर्गन्ध आती है, स्नान करना पसन्द नहीं करता (दुर्गन्ध मे सोरिनम से तुलना)**—इस रोगी के शरीर से इतनी दुर्गन्ध आती है कि दूर से उसे इस दुर्गन्ध से पहचाना जा सकता है। यह दुर्गन्ध इसलिये ही नही आती क्योंकि वह अपने को धोता नही है, वह अपने को कितना ही क्यो न धोये, यह दुर्गन्ध उसका पीछा नही छोडती। जैसे गन्दे लोगो के लिये स्वाभाविक है, वह स्नान करना पसन्द भी नही करता। केवल स्नान न करने के ही लक्षण पर **सल्फर** दे देना उचित चिकित्सा नही है। कई बच्चे सर्दियो मे स्नान करना पसन्द नही करते, स्नान न करने पर **सल्फर** तब देना चाहिये अगर या तो व्यक्ति का स्वभाव ही गन्दा रहने का हो, या स्नान करने से उसके रोग मे वृद्धि हो जाती हो।

दुर्गन्ध मे सोरिनम से तुलना (सोरिनम अत्यन्त शीत-प्रधान है)—जहाँ तक दुर्गन्ध और त्वचा के रोगो का सम्बन्ध है, सल्फर और सोरिनम एक ही कोटि मे आते है, फिर भी सोरिनम मे त्वचा के रोग सल्फर मे ज्यादा पाये जाते हैं। दुर्गन्ध दोनो मे पाई जाती है, परन्तु सोरिनम अत्यन्त शीत-प्रधान—Chilly—है, गर्मी मे भी वह गर्म कपडा ओढे रहता है—इस उसे इतना सताती है, सल्फर का रोगी प्राय अपने मकान के दरवाजे-खिडकियां खुली रखना चाहता है, उसे मुख्यतौर पर 'शीत-प्रधान'—Chilly—नहीं कहा जा सकता, वह मध्य तापमान का है।

(५) सल्फर के शारीरिक-लक्षण—स्वयं दुर्गन्ध छोडता है, परन्तु अपनी दुर्गन्ध को भी बर्दाश्त नहीं करता—सल्फर का मरीज दुर्गन्ध से परेशान हो जाता है, परन्तु यह अचम्भे की बात है कि सल्फर का मरीज-बच्चा नाक, आंख या अन्य अगो मे दुर्गन्धयुक्त स्राव को चाट जाता है। रोगी अपनी गन्ध से भी घिनौनापन अनुभव करता है, अपने सास की गन्ध से भी उसे उबकाई आती है, अपने मल से उसे ऐसी दुर्गन्ध आती है कि पाखाना होने के बाद भी उसे पाखाने की बू हर जगह पकडे रखती है, दिन भर उसे अपने पाखाने की ही बू आती रहती है, वह अपनी बगल को, अपने जननागो को कितना ही धोये—उन से बू आती ही रहती है।

(६) सल्फर के मानसिक लक्षण—स्वार्थी मनोवृत्ति—इस रोगी की मनोवृत्ति अत्यन्त स्वार्थमयी होती है। उसे अपने सिवाय अन्य किसी के मनोभावो का ख्याल नही होता। वह जो-कुछ भी सोचता या करता है, अपने ही फायदे के लिये करता है। किसी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना उसके स्वभाव का अग नहीं है। स्वार्थ-वृत्ति उसका चरित्रगत-लक्षण है।

(७) सल्फर के मानसिक लक्षण—चीथडो मे लिपटा दार्शनिक—हेरिंग ने सल्फर के रोगी को चीथडो मे लिपटा दार्शनिक (Ragged philosopher) का नाम दिया है। दार्शनिक, वैज्ञानिक दिन-रात एक कर के किसी प्रश्न के समाधान मे जुटा रहता है। उसे कपडो की चिन्ता नही, कपडे फटे पडे हैं, सिर के बाल बढ गये हैं, कई दिन से हजामत नही की, पुस्तको का ढेर टेबल पर अस्त-व्यस्त बेतरतीब पडा है, हर वस्तु बेढगी है, 'परवाह नही' की मनोवृत्ति मे वह रहता है। उसने कपडे कई दिनो से न बदले हो, परन्तु इसकी उसे चिन्ता नही होती। वह अपने को बडा दार्शनिक, वैज्ञानिक समझता है, और उसे यह सोच कर निराशा होती है कि दुनियाँ उसकी कद्र नही करती। प्राय देखा गया है कि ऐसे बेढगे दार्शनिक को जब सल्फर दिया जाता है, तब कुछ देर बाद उसके रहने का तरीका बदल जाता है, वह हजामत करने लगता है, कपडे साफ पहनने लगता है। कई ऐसे पागल होते हैं जो चीथडे पहन कर अपने को आलीशान

समझते हैं, अत्यन्त खूबसूरत। वे इसी हालत मे वडे प्रसन्न दीखते हैं, कोई चिन्ता नही, फिक्र नही, फाका नही, अत्यन्त हर्ष मे मग्न, वदसूरती मे भी उन्हें सुन्दरता-ही-सुन्दरता दिखलाई पडती है।

(८) सल्फर तथा आर्सेनिक के परस्पर-विरोधी मानसिक-लक्षण—सल्फर गंदा, आर्स साफ—इसके विपरीत **आर्सेनिक** का रोगी वडा शौकीन, नाजुक-मिजाज़ होता है, और दोनो औषधिया इस दिशा मे एक-दूसरे से उल्टी हैं। आर्स का रोगी अपने कपडे साफ-सुथरे चाहता है, दीवार पर तस्वीर टेढी लटकी हो तो झट उसे सीधा कर देना चाहता है, चाहता है कि उसके कमरे मे हर चीज़ ढग की हो, कोई चीज़ बेढगी न हो। डा० हेरिंग ने आर्स के रोगी को 'Gold-headed-cane patient'—सोने की मूठ वाली वेंत हाथ मे रखने वाला रोगी—यह नाम दिया है।

(९) सल्फर के मानसिक-लक्षण—कुछ काम न कर निठल्ला बैठा रहता है—(काम न करने मे फॉस और सीपिया से तुलना)—रोगी कुछ काम नही करता, निठल्ला बैठा रहता है। उसकी स्त्री सव काम-काज करती है, कपडे धोती है और उसकी देख-रेख करती है। वह समझता है कि उसकी स्त्री इसी काम के लायक है। इस रोगी मे सस्कृति का कुछ अश भी दिखलाई नही देता, विल्कुल जगली का-सा हो जाता है, **आर्सेनिक** के शराफत-पसन्द रोगी से विल्कुल उलटा, अक्खड। -

काम न करने मे फॉस और सीपिया से तुलना (फॉस तथा सीपिया मे अपनो से उदासीनता होती है)—इस औषधि के रोगी मे प्रत्येक वस्तु के प्रति उपेक्षा-वृत्ति (Indifference) आ जाती है। वह कोई काम नही करता, हर वस्तु के प्रति उदासीन हो जाता है। उदासीनता और उपेक्षा की मनोवृत्ति **फॉस** और **सीपिया** मे भी पायी जाती है, परन्तु ये दोनो अपने सगे-सबधियो, मित्रो, प्रेमियो के प्रति उदासीन हो जाते हैं, उनके प्रति उनमे उपेक्षा-वृत्ति आ जाती है, किन्तु **सल्फर** का रोगी तो किसी भी सासारिक काम-धधे को घृणा की दृष्टि से देखने लगता है। अगर उसे किसी वात मे दिलचस्पी होती है, तो केवल अपनी 'मुक्ति' मे, या इसी प्रकार के दार्शनिक-विचारो मे। वह बैठा दार्शनिक-विचारो की वाल की खाल उधेडा करता है, दुनियाँ के काम-काज से उसे कोई सरोकार नही।

(१०) सल्फर के मानसिक-लक्षण—अपने को बहुत वडा समझता है—वह अपने को वहुत वडा कल्पित करता है, अपने को राजा कहता है, शिक्षा को तिरस्कार की दृष्टि से देखता है, पढे-लिखो, साहित्यिको को घृणित समझता है, उनकी योग्यता को भी हेय गिनता है, उसे आश्चर्य होता है कि लोगो को समझ क्यो नही आता कि वह शिक्षा आदि से वहुत ऊचे स्तर का व्यक्ति है।

(११) **सल्फर के मानसिक लक्षण—धार्मिक तथा दार्शनिक मेल-कोलिया, या पागलपन, या निरतर-विचार से सत्य का आविष्कार**—वह धार्मिक-विषयो की बातें किया करता है, परन्तु धर्म के संबध मे बेवकूफी की बातो पर ही उसका ध्यान गडा रहता है। अपने कमरे मे बन्द होकर लगातार प्रार्थना किया करता है, कराहा करता है, परमात्मा ने मुझे क्यो छोड दिया, भगवान्! मेरा उद्धार कैसे होगा—इस प्रकार के निराशाजनक उद्‌गार उचारा करता है। एक व्यक्ति इसी प्रकार के धार्मिक तथा दार्शनिक विचार मे फसा हुआ हर बात का कारण पूछा करता था। हमको किसने पैदा किया, जिसने पैदा किया उसे किसने पैदा किया? अन्त मे, जब परमात्मा तक पहुचा तब वह पूछता गया कि परमात्मा को किसने पैदा किया? जब कोई विचार उसको पकड लेता है तब वह छुटाये नही छूटता। यह हालत पागलपन मे भी हो सकती है, मन द्वारा नवीन तथ्यो के आविष्कार मे भी हो सकती है। कई विचारक ऐसे होते हैं, जो एक विचार के पीछे पड जाते हैं, निरतर सोचते रहते हैं, सोचते-सोचते वे किसी अद्‌भुत-सत्य का आविष्कार भी कर डालते हैं। ऐसा मन सल्फर का होता है—यह पागलपन की तरफ भी मुड सकता है, किसी उच्च-सत्य का आविष्कार करनेवाले दार्शनिक-महापुरुष के रूप मे भी प्रकट हो सकता है।



प्रसिद्ध पुस्तक 'लीडर्स इन होम्योपैथिक थेराप्यूटिक्स' के विश्व-विख्यात लेखक
डॉ० इ० बी० नैश

[द्वितीय-भाग—व्यापक लक्षण]

(१) जलन, हाथ-पैर की जलन, तरेरें आना, भग की जलन, जलन की अन्य औषधिया
(२) शरीर के स्राव (जुकाम, प्रदर, पेशाब, मल आदि) जलते तथा खराशदार होते हैं (Excoriating discharges)
(३) स्रावो के खराशदार होने से स्राव लगने के कारण अग लाल रहते हैं
(४) रोग के लक्षणो का रात को बढना
(५) मध्य-दिन, प्रति सप्ताह या प्रति दो सप्ताह रोग का बढना
(६) प्रातःकाल उठते ही दस्त की हाजत और फिर दिन भर ठीक रहना, प्रात दस्तो की हाजत मे अन्य औषधिया उचित है
(७) एक जगह देर तक खडे न रह सकना, स्नायु-प्रधान होना
(८) पीना अधिक, खाना कम
(९) दोपहर ११ बजे पेट खाली मालूम पडना, इस लक्षण की अन्य औषधियाँ
(१०) कुत्ते की नींद सोना (Cat-nap sleep), बार-बार नींद टूटना या प्रात ३ बजे तक ही सो सकना
(११) रोग के लक्षणो का अस्पष्ट होना या उनमे सिर-पैर न होना
(१२) सुनिर्वाचित-औषधि से रोग ठीक न होना, जीर्ण-रोगो के शुरु मे और नवीन रोगो के अन्त मे सल्फर देना उचित है
(१३) रोग का ठीक होकर बार-बार पलट कर आना
(१४) सिफिलिस, गोनोरिया के दबने पर किसी अन्य रोग का हो जाना (जैसे, दमा आदि)
(१५) नाना प्रकार के चर्म-रोग

(१) जलन, हाथ-पैर की जलन, तरेरें आना, भग की जलन, जलन की अन्य औषधिया—इसके व्यापक-लक्षणो मे जलन का मुख्य स्थान है । गन्धक के लिये प्रसिद्ध है कि नरक मे गन्धक लगातार जला करती है—यह बात किसी ने यू ही नही कही । रोगी को सिर के भीतर-बाहर, आखो मे, हर जगह जलन का अनुभव होता है, नाक से जलता हुआ पानी बहता है, चेहरे पर जलन होती है, जीभ मे जलन के साथ दर्द होती है, मुह मे छाले जलते अनुभव होते हैं, गला पक जाता है परन्तु साथ ही गले मे जलन होती है, पहले गले के दाहिनी तरफ, फिर बाईं तरफ, पेट मे जलन, गुदा-प्रदेश मे जलन के साथ भारीपन, जलते अगारो के समान बवासीर के मस्से, बाहो मे जलन, मूत्र-प्रणाली मे जलन, स्त्री के भग मे जलन, पीठ की दोनो फलकास्थियो के बीच में जलन (फलकास्थियो के बीच मे जलन फॉस और लाइको मे भी पायी जाती है), हाथो मे जलन, पैरो मे जलन—हाथ-पैर की जलन ऐसी कि रोगी हाथो तथा पैरो को ओढन से बाहर रखने का प्रयत्न करता है—गर्म तरेरें जैसे वृद्धावस्था मे रजोरोध के समय स्त्रियो को आया करती है, सारे शरीर

की त्वचा की जलन, फोडे-फुन्सियो के खुजलाने पर जलन—इस औषधि मे इतनी, सर्वव्यापी जलन पायी जाती है कि जलन को इसका मुख्य-लक्षण कहा जा सकता है। जब रोगी जलन की शिकायत करे तब सल्फर की तरफ़ ध्यान जाना अनिवार्य है। शरीर का प्रत्येक हिस्सा जलता है, शरीर मे कही रक्त-संचय हो जाता है इसीलिये जलता है, त्वचा जलती है, सारी त्वचा नही जलती तो कुछ हिस्सा यहा, कुछ वहा—भिन्न-भिन्न स्थानो मे जलन होती है, शरीर की ग्रन्थिया जलती हैं, पेट, फेफडे, आतें, पेशाव, मूत्राशय—किसी-न-किसी जगह जलन पायी जाती है।

हाथ-पैर की जलन, खोपडी की जलन—वैसे तो सल्फर मे किसी भी जगह जलन का लक्षण हो सकता है, परन्तु रोगी प्राय इस लक्षण को बतलाते हुए कहा करते हैं कि पैरो मे या हथेलियो मे से आग निकलती है, सिर पर जलन अनुभव होती है, सोते हुए बिस्तर मे ओढन से पाव बाहर निकाल कर सोना पडता है, रोगी बिस्तर मे पाँवो के लिये ठडा स्थान ढूढा करता है, बिस्तर मे लेटते ही ऐसा लगता है कि शरीर मे गर्मी चढने लगती है।

स्त्रियो मे तरेरें आना, भग की जलन—स्त्रियो को वृद्धावस्था मे माहवारी के बन्द होने पर जैसी गर्मी की लहरें—तरेरें—आया करती हैं, चेहरे तथा सिर पर गर्मी की लहर दौड जाती है, वैसी तरेरें आना इस औषधि मे पाया जाता है। सल्फर मे गर्मी की यह लहर प्राय हृदय-प्रदेश से उठती अनुभव होती है। रोगी कहता है कि छाती से गर्मी उठती है, ऐसा प्रतीत होता है कि हृदय या छाती से गर्मी की एक ज्वाला उठकर चेहरे की तरफ जाती है। चेहरा गर्म हो जाता है, लाल हो जाता है और अन्त मे इस गर्मी के चढने पर चेहरे पर पसीना आ जाता है। कभी-कभी रोगी कहता है कि शरीर के भीतर गर्म भाप-सी ऊपर उठती अनुभव होती है जिसका अन्त पसीने मे होता है। इस शिकायत मे प्राय देखा जाता है कि रोगिणी बैठी-बैठी हाथ मे पखा लिये मुह पर जोर-शोर से हवा करती है, दरवाजे-खिडकिया खोल देना चाहती है। यह अवस्था सल्फर तथा लैकेसिस दोनो मे पायी जाती है। स्त्रियो मे भग की जलन मे भी सल्फर के लक्षण पाये जाते हैं। भगोष्ठ मे कष्टप्रद खुजली होती है, खुजली के साथ जलन होती है, जननागो से बदबू आती है, यह बदबू इतनी सताती है कि जी मतलाने लगता है।

(जलन की मुख्य-मुख्य औषधिया)

आर्सेनिक—इस मे असहनीय जलन होती है, बेचैनी, एकदम निम्सत्तापन (Sudden prostration), मध्य-रात्रि या मध्य-दिन मे जलन बढ जाती है, रोगी शीत-प्रकृति का होता है। डॉ० नैश का कथन है कि जलन के नवीन-रोगो (Acute) मे **आर्सेनिक** तथा पुराने (Chronic) रोगो मे **सलफ़र** सर्व-श्रेष्ठ

औषधिया हैं । **आर्सेनिक** की जलन मे गर्म सेक से रोगी को आराम आता है।

फॉसफोरस—शरीर मे सब जगह जलन होती है, कभी-कभी किन्ही भिन्न-भिन्न स्थानो मे जलन होती है । रोगी रक्तहीन (Anaemic) होता है। नाजुक मिजाज (Over sensitive) होता है, शरीर की तपेदिक की-सी प्रवृत्ति होती है । जलन के सम्बन्ध मे **फॉस** और **सल्फर** की तुलना की जाय, तो कहा जा सकता है कि जब गर्मी की तरेरें या ज्वाला या गर्मी का अनुभव हृदय के पास से या छाती से हो तब **सल्फर** के-से लक्षण समझने चाहिये, जब यह गर्मी पीठ मे या पेट मे विशेषरूप से अनुभव हो तब **फॉस** के लक्षण समझने चाहियें। इसके अतिरिक्त **फॉस** की जलन विशेष रूप से हथेलियो मे, बाहो मे होती है, हथेलियो मे जलन के साथ पसीना आ जाता है, **सल्फर** की जलन विशेष रूप से पाव के तलुवो मे होती है ।

एकोनाइट—शोथ की शुरुआत मे जब जलन हो, तेज़ बुखार हो, बेचैनी हो, बहुत प्यास हो, तब **एकोनाइट** के लक्षण होते हैं ।

एपिस—इसमे सूजन आ जाती है, डक काटता-सा दर्द और जलन होती है, इसकी जलन मे रोगी को ठडक से आराम मिलता है, प्यास नही होती ।

एगैरिकस—बर्फ आदि ठड के लगने से भी कभी-कभी त्वचा मे जलन होने लगती है । ऐसी जलन मे ठड से जलन और बढती है, गर्मी से आराम मिलता है ।

कैन्थरिस—मूत्र-प्रणाली मे आग की-सी जलन होती है। पेशाब करने की निरन्तर इच्छा बनी रहती है, परन्तु साथ ही असह्य-जलन पेशाब के साथ होती है।

एनथ्रैसीनम—इसका उपयोग गले-सडे फोडो, पचनशील घाव (Gangrenous ulcers) तथा बिसहरी (Felon) आदि की जलन मे होता है। मुर्दा चीरते समय कभी-कभी असावधानी से शस्त्र हाथ मे लग जाने से घाव हो जाता है जिसकी गैंग्रीन मे परिणत हो जाने की सम्भावना होती है। उसकी जलन मे इसका प्रयोग होता है ।

(२) शरीर के स्राव (जुकाम, प्रदर, पेशाब, मल आदि) जलते तथा खराशदार होते हैं (Excoriating discharges)—रोगी के सब श्लैष्मिक-सस्थानों पर इसका प्रभाव है । जहा-जहा भी 'श्लैष्मिक-झिल्ली' (Mucus membrane) है, वहा-वहा से स्राव हो सकता है। जुकाम का पानी नाक से बह कर होंठो को जहा-जहा छूता है वहा-वहा खराश पैदा करता है, जलन पैदा करता है, उन स्थानो को काटना-सा जाता है, यह स्राव होंठो को जलाता जाता है—इतना तेज़ होता है—इसके बहने से जिस-जिस स्थान को यह छूता है वे लाल हो जाते है। प्रदर का स्राव जननागों मे जलन पैदा करता है ।

पतला दस्त गुदा मे जलन करता है, सारा गुदा-प्रदेश लाल हो जाता है। स्त्रियो के रोग मे अगर पेशाब का एक बूद भी रह जाय, तो जननागो मे जलन होने लगती है, इस बूद को कपडे मे पूछ देना काफी नही होता, इसे पानी से धो डालने पर ही यह जलन शान्त होती है—इतना तेज़, तेज़ाब की तरह तेज़ इसका असर होता है। बच्चो के गुदा-प्रदेश के दोनो तरफ के हिस्से मल की तेज़ी से लाल पड जाते है, नीचे की सारी सीवन मल की तेज़ी और उसकी खराश से लाल हो जाती है। सक्षेप मे कहा जाय, तो कह सकते हैं कि इस औषधि मे रोगी का हर किसी अग का स्राव जहा-जहा से छूता हुआ गुज़रता है वहा-वहा जलन, खराश, लाली पैदा कर देता है।

(३) **स्रावों के खराशदार होने से स्राव लगने के कारण अग लाल रहते हैं**—जैसा ऊपर कहा गया है, इस औषधि का स्राव इतना तेज़ होता है कि जहा-जहा छूता है वहा-वहा अग को छील देता है। यही कारण है कि जहा छीलता है वहा रुधिर का सचार हो जाता है, वह स्थान लाल हो जाता है। अग का लाल होना इस औषधि का चरित्रगत-लक्षण है। भिन्न-भिन्न निकास के स्थान (Orifices) लाल रहते हैं। होठ सिंदूर के-से लाल, जननाग का अग्रभाग लाल, मग लाल, गुदा लाल, आख के कोने लाल, कान लाल—अगो की लालिमा को देख कर **सल्फर** को स्मरण करना चाहिये।

(४) **रोग के लक्षणो का रात को बढ़ना**—इस औषधि मे रोग के लक्षणों का रात को बढना विशेष रूप से पाया जाता है। रात को साँस रुकने का दौर पडता है। सोते-सोते रोगी एकदम पूरा जाग उठता है। दोपहर को ऊघाई आती है, शाम को सूर्य ढलने के बाद निंदासा हो जाता है, परन्तु सारी रात नीद नही आती। सिर-दर्द शाम को खाने के बाद शुरु होता है और ज्यो-ज्यो रात बढती है सिर-दर्द भी बढता जाता है, इस दर्द के कारण वह सो नही सकता। सब प्रकार के दर्द रात को हुआ करते या बढा करते हैं, रात को प्यास सताती है। रोगी बिस्तर मे लेटता है कि खुजली शुरु हो जाती है। रात को लक्षणो का प्रकट होना या बढ जाना इसका व्यापक-लक्षण है।

(५) **मध्य-दिन, प्रति सप्ताह या प्रति दो सप्ताह रोग का बढना**—जैसे रात को रोग का बढना **सल्फर** मे पाया जाता है, वैसे ही मध्य-दिन, दोपहर को रोग का बढना भी इसमे पाया जाता है। ठीक दोपहर को जाडा लगकर बुखार चढ जाता है, ज्वर आ रहा हो तो दोपहर को बढ जाता है, मानसिक-लक्षण दोपहर को बढ जाते हैं, सिर-दर्द दोपहर को अपने शिखर पर आ जाता है। कई शिकायतें हर सातवें, हर चौदहवें दिन नियमपूर्वक प्रकट होती हैं—यह भी **सल्फर** का लक्षण है। सिर-दर्द हर सातवें दिन हो, हर चौदहवें दिन हो—इसी प्रकार अन्य

कोई रोग नियमपूर्वक हर सातवें या हर चौदहवें दिन प्रकट हो तो यह इस औषधि का लक्षण है।

(६) **प्रातःकाल उठते ही दस्त की हाजत और फिर दिन भर ठीक रहना, प्रात दस्त की हाजत मे अन्य औषधिया**—इस औषधि के डायरिये का अपना विशेष समय बधा होता है। यह मध्य-रात्रि के बाद और सवेरे उठने के समय रोगी को परेशान करता है। प्राय दस्त की हाजत उस समय होती है जब व्यक्ति सोकर उठने की सोच रहा होता है। दस्त की हाजत इतनी तेज होती है कि वह बिस्तर से उठकर बाथ-रूम को भागता है। प्राय दस्त पतला, पनीला होता है, ज्यादा भी नही होता, कभी-कभी बहुत थोडा ही होता है, वेग से भी नही निकलता, कभी-कभी इसका रग पीला होता है। प्राय इस दस्त के आने के बाद उसे अगले दिन सवेरे तक कोई कष्ट नही होता। ऐसे अनेक व्यक्ति पाये जाते हैं जिन्हें सालो इस प्रकार सवेरे दस्त आने की हाजत होती है, वे इसे रोक नही सकते। कभी-कभी इस प्रकार के दस्तो के साथ रोगी के पेट मे दर्द, ऐंठन, बेचैनी, जलन आदि शिकायतें होती हैं। पाखाना जिस-जिस स्थान को छूता है वहा-वहा खराश होती है, जलन होती है, वह स्थान लाल हो जाता है।

(प्रात काल उठते ही दस्त आने की मुख्य-मुख्य औषधिया)

सल्फर—दस्त की हाजत से व्यक्ति प्रात नीद खुलते ही बाथ-रूम को भागता है।

ब्रायोनिया—जब व्यक्ति उठ जाता है, बिस्तर छोड चुका होता है, तब दस्त की हाजत होती है।

नैट्रम सल्फ—जब व्यक्ति उठकर कुछ देर तक टहल लेता है, तब दस्त की हाजत होती है।

फॉसफोरस—पतले-दुबले व्यक्तियो को दस्त ऐसे छूटता है जैसे नल से पानी झरे।

पोडोफाइलम—दोपहर तक दस्त आते रहते हैं, फिर स्वाभाविक पाखाना आता है, रोगी समझता है कि अब ठीक हो गया, परन्तु अगले दिन फिर सवेरे से दोपहर तक दस्त आते रहते हैं।

रूमेक्स—इसमे भी दस्त रोगी को सवेरे उठते ही बिस्तर से दौडाते हैं, सल्फर की तरह ही इसे सवेरे दस्त आता है, परन्तु इसका 'विशेष-लक्षण'—खुश्क, खराशदार खासी—इन दस्तो के साथ रहता है।

(७) **एक जगह देर तक खडे न रह सकना** (Standing is the worst position), **स्नायु-प्रधान होना**—रोगी एक जगह देर तक खडा नही

रह सकता, जब भी वह खड़ा होता है उसे बे-आरामी अनुभव होती है। बैठने के लिये कुर्सी दिख जाय, तो झट बैठ जाता है। सल्फर के रोगी को अगर कुछ देर खड़ा रहना पड़े, तो उसकी तबियत घबड़ा जाती है। खड़े रहने पर उसका मन डावाडोल हो जाता है, दिल घबराने लगता है, चक्कर आने लगता है, पेट मे, आंतो मे, पैर की नाड़ियो मे भारीपन अनुभव होने लगता है, स्त्रियो मे पेडू मे बोझ लगने लगता है। या तो व्यक्ति जगह ढूंढ कर बैठ जाता है या टहलने लगता है, खड़ा किसी हालत मे नही रह सकता। चलने मे उसे दिक्कत नहीं होती, परन्तु देर तक खड़ा रहने मे उसे परेशानी हो जाती है।

स्नायु-प्रधान होना—इस औषधि का रोगी देर तक एक जगह पर खड़ा नही रह सकता। इसका मुख्य-कारण यह है कि वह 'स्नायु-प्रधान' (Nervous) होता है, उत्तेजित (Full of excitement) होता है। चिकित्सक नहीं समझता कि रोगी स्नायु-प्रधान है, परन्तु वास्तव मे सल्फर का रोगी स्नायु-प्रधान होता है, उत्तेजित होता है, जरा-से शोर-शराबे से चौंक उठता है, सोते हुए कोई आवाज हो जाय, तो चौक कर ऐसे उठता है मानो तोप की आवाज सुनी हो।

(८) **पीना अधिक, खाना कम**—इस औषधि के संक्षिप्त सूत्रो का निर्माण करते हुये किसी लेखक ने लिखा है—"पीता अधिक खाता कम" है। रोगी कहता है कि उसे भूख लगी है, परन्तु जब खाने को बैठता है तब खाया नही जाता। बहुत साधारण-सा खाना खा सकता है, अत्यन्त हल्के पदार्थ। इस प्रकार के एक ही सूत्र के लक्षण पर बहुत भरोसा नही करना चाहिये।

(९) **दोपहर ११ बजे पेट खाली मालूम पड़ना, इस लक्षण की अन्य औषधियाँ**—अगर दिन के २४ घंटो मे कोई समय ऐसा है जब सल्फर का व्यक्ति पेट मे खालीपन का, भूख का-सा अनुभव करता है, तो वह दोपहर के ११ बजे का समय है। जिन लोगों को १२ बजे खाने की आदत है, वे एक घंटा पहले—११ बजे—पेट मे खाली-खालीपन का-सा अनुभव करने लगते हैं मानो पेट अंदर को धंसा जाता है, बेचैन हो जाते हैं, ठहर नही सकते। अगर उनके खाने का समय १ बजे है, तो १२ बजे उन्हें एक प्रकार की बेचैनी होने लगती है। खाने के नियत समय से एक घंटा पहले पेट की एक प्रकार की बेचैनी सल्फर का चरित्रगत-लक्षण है। पेट मे इस प्रकार खालीपन (All gone feeling) अन्य औषधियो मे भी पाया जाता है जिनमे से कुछ मुख्य निम्न हैं

(पेट में खालीपन के अनुभव मे मुख्य-मुख्य औषधियाँ)

कौक्युलस—इस मे पेट मे खालीपन का अनुभव निद्रा-नाश या ट्रेन मे अथवा स्टीमर पर की यात्रा से होता है।

इग्नेशिया—इस मे स्नायु-प्रधान रोगियो को पेट मे खालीपन का अनुभव होता है, परन्तु साथ ही ये गहरी आहें भरते हैं, और खाने से भी खालीपन मे शान्ति नही होती।

कैलि कार्ब—इस मे पेट के खालीपन की अनुभूति खा लेने के बाद जाती रहती है, परन्तु पेट फूल जाता है।

लोबेलिया—खालीपन पेट के ऊपरी भाग, हृदय तक अनुभव होने लगता है, जी मतलाता है और बहुत पसीना आता है।

पैट्रोलियम—इस मे पाखाना जाने के बाद खालीपन अनुभव होता है।

फ़ासफोरस--इस मे पेट के खालीपन का लक्षण मुख्यतौर पर रात को पाया जाता है, साथ ही जी मतलाता है, रोगी रात को उठ कर खाया करता है, प्राय तपेदिक के लक्षणो मे यह अधिक उपयोगी है।

स्टैनम—इस मे वक्षोस्थि (Sternum) के पीछे खालीपन का अनुभव होता है, रोगी को बोलने मे भी बहुत कमजोरी अनुभव होती है। इसका मुख्य-लक्षण छाती की कमज़ोरी है।

सल्फर—दोपहर के ११ बजे पेट खाली अनुभव होता है, खाने के समय से घटा भर पहले।

हाईड्रैस्टिस—पेट के अल्सर मे खालीपन का अनुभव होता है।

सीपिया—इस के खालीपन का सम्बन्ध जरायु रोग से होता है, रोगिणी को गर्भाशय और भग के बाहर निकल पडने का-सा (Bearing down sensation) अनुभव होता है।

(१०) कुत्ते की नींद सोना, बार-बार नींद टूटना या प्रात ३ बजे तक ही सो सकना (cat-nap sleep)—इस औषधि का व्यक्ति कुत्ते की नीद सोता है, सोता है, झट जाग जाता है, फिर सो जाता है। नीद स्वप्नो से भरी रहती है। स्वप्न बड़े स्पष्ट होते हैं—सजीव। रात्रि के प्रथम प्रहर मे उसे निद्रा आ घेरती है, प्राय सवेरे ३ बजे तक सोता है, परन्तु ३ बजे के बाद नीद टूट जाती है या बे-आरामी की नींद आती है, या बिलकुल नही आती। वह देर तक सोना चाहता है, दिन निकलने तक सोना चाहता है, सूरज की रोशनी न निकले, वह सोता रहे—यह चाहता है, और अगर ३ बजे के बाद उसे नींद आ जाय, तो गहरी नींद आती है, उठाये नहीं उठता, सवेरे देर तक सोते रहना चाहता है। यह समय ऐसा होता है जब अगर नीद आ जाय तो इस नींद मे उसे आनन्द आता है, यह स्वप्न-रहित निद्रा होती है। **नक्स** का रोगी भी ३ बजे तक ही सोता है।

(११) रोग के लक्षणो का अस्पष्ट होना या सिर-पैर का न होना--हनीमैन के समय मे जब किसी रोग मे लक्षण अस्पष्ट हो, बहुत कम हो, उनका कुछ सिर-पैर न हो, तब सल्फर दिया जाता है, क्योंकि यह समझा जाता है कि

रोग के आधार मे प्रसुप्त 'सोरा'-दोष विद्यमान है। अनुभव से देखा गया है कि जब किसी रोग मे लक्षण स्पष्ट नही होते, तब सल्फर के स्पष्ट लक्षणों के न होने पर भी इस औषधि को देने से यह रोग के ठीक होने मे बाधा डाल रहे 'सोरा-दोष' को नष्ट कर रोगी को नीरोग कर देता है, या लक्षणो के आधार पर जो सुनिर्वाचित औषधि दी जा रही थी और काम नही कर रही थी उसके लिये रास्ता साफ कर देता है, और सल्फर देने के बाद वह औषधि ठीक-से काम करने लगती है। अगर सल्फर के लक्षणो के स्पष्ट न होने पर भी यह औषधि रोग को पकड लेती है, तो इस का यही अभिप्राय हो सकता है कि रोग के आधार मे जो लक्षण छिपे तौर पर बैठे थे वे सल्फर के ही लक्षण थे।

(१२) **सुनिर्वाचित-औषधि से रोग ठीक न होना, जीर्ण (पुराने) रोगो के शुरु मे और तरुण (नवीन) रोगो के अन्त मे सल्फर देना चाहिये**—प्राय देखा जाता है कि चिकित्सक ने रोगी के लक्षणो और औषधि के लक्षणो को मिला कर ठीक औषधि को चुना है, परन्तु फिर भी रोग ठीक होने मे नही आता। रोगी के लक्षण अस्पष्ट नही होते, लक्षण स्पष्ट रूप से एक निश्चित औषधि की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हैं, परन्तु वह औषधि रोग की गहराई तक नही जाती। हनीमैन का कहना है कि इस का कारण 'सोरा-दोष' ही है। 'सोरा-दोष' बाधक बन कर रोग की जड मे बैठा होता है, और जब तक सल्फर के द्वारा उस पर प्रहार नही होता, तब तक सुनिर्वाचित औषधि भी अपने को बेबस पाती है। ऐसी हालत मे सल्फर 'सोरा-दोष' को नष्ट कर सुनिर्वाचित औषधि के लिये मार्ग प्रशस्त कर देता है।

जीर्ण (पुराने) रोगो के शुरु मे और तरुण (नवीन) रोगो के अन्त मे सल्फर देना चाहिये—जब रोगी किसी नवीन-रोग मे से लम्बी बीमारी भुगत कर गुजरता है और शीघ्र आरोग्य लाभ नही करता, तब उसका यही अभिप्राय होता है कि शरीर के सर्वथा नीरोग होने मे कोई अटक पडी हुई है। यह अटक 'सोरा-दोष' ही होता है। इसलिये जब नवीन-रोग (Acute) लटकता चला जाय, रोगी पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने मे देरी लगाये, रोगी मे शक्ति का सचार अत्यन्त धीमी गति से हो, तब सल्फर देने से जीवनी-शक्ति को स्फुरणा मिलती है, और रोगी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करता है। यह देरी 'सोरा-दोष' के कारण ही होती है। जिस प्रकार नवीन-रोग के अन्त मे सल्फर देने से लाभ होता है, उसी प्रकार पुराने-रोग (Chronic) के प्रारम्भ मे सल्फर देने से या तो रोग शान्त हो जाता है, या सुनिर्वाचित-औषधि के लक्षण स्पष्ट हो जाते है, और वह औषधि सफलतापूर्वक कार्य करती है क्योकि उसके मार्ग की बाधा दूर हो जाती है। डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि अगर किसी नवीन-रोग मे जीवनी-शक्ति निर्बल हो, तो सल्फर की एक मात्रा देकर

कुछ घंटे बीत जाने देने चाहियें, अगर पुराना-रोग हो तो कुछ दिन बीत जाने देने चाहियें। उसके बाद सुनिर्वाचित-औषधि, जिसे हम दे रहे थे और काम नहीं कर रही थी, अब दिये जाने पर पहले से अधिक सफलतापूर्वक काम करने लगेगी। इसका कारण सल्फर द्वारा 'सोरा-दोष' का नाश कर देना ही है।

जब रोगी नाक, छाती, फेफड़ो की बीमारी के बाद स्वस्थ होने मे देर लगाता है—प्राय देखा जाता है कि अगर रोगी को नाक, छाती, फेफडे की कोई बीमारी हुई है, तो वह जीवनी-शक्ति की कमजोरी के कारण स्वस्थ होने मे देर लगाता है। उदाहरणार्थ, रोगी को न्यूमोनिया हो गया, छाती घडघडाने लगी। चिकित्सक ने **ब्रायोनिया** दिया, रोगी बहुत कुछ ठीक हो गया, खतरा निकल गया, परन्तु अब जब कि रोगी को सभल जाना चाहिये था, वह लटकता चला जाता है, थका रहता है, सारे शरीर पर पसीना आ जाता है, रोगी चिकित्सक को कहता है "डाक्टर ! क्या बात है, मैं अपने को ठीक अनुभव नही करता, सास भारी आता है, बुखार नहीं है परन्तु शरीर तपता है, छाती पर बोझ बना रहता है, इस से छुट्टी नही मिलती।" इस अवस्था मे, जब हाथी निकल गया परन्तु पूछ रह गई, तब **फॉस, लाइको, सल्फ़र** मे से कोई दवा देने का समय आ जाता है, और इन तीनो मे भी **सल्फ़र** का दावा सब से ऊपर है।

सर्दी लगने पर उसका नाक या छाती पर असर होकर दमे की शिकायत हो जाना—रोगी को जब भी ठड लगती है उसका असर छाती पर हो जाता है, या नाक पर असर होकर जुकाम हो जाता है। इन दोनो मे से कोई भी शिकायत हो—छाती की या नाक की—तकलीफ लम्बी होती जाती है, ऐसा लगता है कि इसका कभी अन्त ही नही होगा, हर समय नज़ला या छाती से कफ जारी रहता है। अगर नम हवा मे सर्दी हुई है तो **डलकेमारा** दिया जाता है, उस से रोग कुछ शान्त होता है, परन्तु अन्त मे थोडी-बहुत शिकायत बनी ही रहती है। इस समय रोगी को गहरे असरवाली दवा देने की ज़रूरत होती है, और **सल्फर** से यह काम बखूबी हो जाता है। **डलकेमारा** की **सल्फर** पूरक-औषधि (Complementary) भी है।

(१३) **रोग का ठीक होकर बार-बार पलट कर आना**—हनीमैन का कहना था कि उन्हें इस बात से आश्चर्य होता था कि यद्यपि अपने पूरे ज्ञान के साथ वे कई रोगियो का, रोगी तथा औषधि के लक्षणो के मिलान के बाद, **नक्स वोमिका** या **इग्नेशिया** जैसी औषधियो से इलाज करते थे, तो भी रोग ठीक हो-होकर बार-बार लौट कर आ जाता था, जड से नष्ट नही होता था। वे लिखते हैं कि उन्होंने १२ साल इस बात का पता लगाने मे व्यतीत किये

कि रोग क्यों इस प्रकार का जीर्ण (Chronic) रूप धारण कर लेता है कि लक्षणों के मिलने पर भी जड से नहीं जाता, ठीक हो-होकर बार-बार लौट आता है। अन्त में, उन्होंने इस दिशा में जो आविष्कार किया, उसी को उन्होंने 'सोरा-दोष' का नाम दिया। हमारे भीतर 'सोरा-दोष' अन्तरतम में छिपे रोग को जड से नष्ट नहीं होने देता। इस सिद्धान्त के आविष्कार के बाद उन्होंने 'सोरा-दोष-नाशक' औषधियों (Anti-psoric drug) को ढूंढना शुरु किया, और इस प्रकार की अनेक औषधियों का पता लगाया जिनमें सल्फर को उन्होंने एन्टी-सोरिक औषधियों का राजा पाया। यही कारण है कि जब रोग ठीक होकर फिर-फिर पलट आता है, तब 'सोरा-दोष' को नष्ट करने के लिये सल्फर का देना लाजमी हो जाता है। इसके देने से रोग फिर बार-बार नहीं लौटता।

(१४) सिफिलिस, गोनोरिया के दबने पर किसी अन्य रोग का हो जाना— जब सिफिलिस या गोनोरिया के लक्षण त्वचा पर स्पष्ट दीख रहे हों, तब सल्फर देने की स्थिति नहीं होती। प्राय ऐलोपैथी मे इन रोगों के लक्षणों को मर्करी या अन्य औषधियों से दबा दिया जाता है। जब ये रोग इस प्रकार दबा दिये जाते हैं तब रोग नष्ट नहीं होता, रोग अन्तर्मुखी हो जाता है और किसी को दमा, किसी को गठिया, किसी को कोई दूसरा रोग हो जाता है। ऐसी अवस्था में सल्फर इन तेज़ दवाओं का असर दूर कर देता है, और सिफिलिस या गोनोरिया के जो प्रारंभिक-लक्षण थे वे फिर-से प्रकट हो जाते है। सल्फर ऐसी दवा है जो दबे हुए रोगों को बाहर ले आती है। अगर ठड से किसी रोग के दाने दब गये हैं, तेज दवा ने किसी रोग को दबा दिया गया है, अगर स्थूल-सल्फर से ही क्यों न राग को दबा दिया गया हो, दबा हुआ रोग शक्तिकृत सल्फर से बाहर उभर आयेगा और रोग पर पडा पर्दा हट जायगा। अगर सिफिलिस दब गया है तो सिफिलिस, अगर गोनोरिया दब गया है तो गोनोरिया, अगर रोग के दाने दब गये हैं तो दाने सब बाहर आ जायेंगे और तब उचित औषधि से रोग का उपचार करना सम्भव होगा। होम्योपैथी का मत है कि जब तक रोग दबा रहेगा तब तक वह भीतर-ही-भीतर अन्य रोगों को जन्म देता रहेगा, रोग को नष्ट करने के लिये उसे बाहर लाना होगा। इस काम में सल्फर का सर्व-प्रथम स्थान है।

(१५) नाना-प्रकार के चर्म-रोग, चर्म-रोग या एक्ज़ीमा के दबने पर दमा—इस औषधि के रोगी को नाना प्रकार के चर्म-रोग होते हैं, नाना प्रकार के फोडे-फुन्सियां, दाने। कुछ फुन्सियां खुश्क होती है, कुछ मे मवाद भरा होता है, कुछ मे छिलके उतरते है। शरीर मे जगह-जगह झुड-के-झुड फोडे निकलते हैं, एक अच्छा होता है तो दूसरा निकल आता है। सब मे बेहद खुजली

होती है, कुछ मे मवाद निकलने लगता है, कुछ पक जाते हैं, उनमे पस पड जाता है। कभी-कभी बिना फोडे-फुन्सी के त्वचा मे खुजली होती है। बिस्तर की गर्मी से खुजली शुरु हो जाती है, ऊनी कपडा पहनने से शरीर खुजलाने लगता है। सल्फर के कई रोगी कभी-कभी रेशमी या सूती कपडे के सिवाय दूसरा कपडा पहन ही नहीं सकते, पहने तो खुजली होने लगती है। खुजली को नाखूनो से खुरचना पडता है, जलन होती है। रात को बिस्तर मे खुजली और सोकर उठने के बाद फिर खुजली शुरु हो जाती है। फुन्सियो मे खुजली होती है, उनमे से स्राव निकलता है। इन फुन्सियो के अलावा भी सल्फर के रोगी की त्वचा मैली, गन्दी दिखलाई देती है। छोटे-छोटे जख्म सडने लगते हैं, उनमे से पस आने लगती है, त्वचा ठीक होने मे नही आती।

चर्म-रोग या एग्ज़ीमा के दब जाने पर दमा—चर्म-रोग रहेगा तो दमा हट जायगा, दमा हटेगा तो चर्म-रोग हो जायगा। होम्योपैथिक-साहित्य मे अनेक दृष्टान्त मिलते है जिनमे सिद्ध होता है कि जब एग्ज़ीमा को तेज़ दवाओ से दबा दिया जाता है तब दमा उग्र रूप धारण कर लेता है, और जब दमा ठीक होता है तब पुराना एग्ज़ीमा प्रकट हो जाता है। डॉ० विल्लर्स ने एक लडकी का उल्लेख किया है जिसे भयकर एग्ज़ीमा था। बाहर की तेज़ दवाओ से उसका एग्ज़ीमा ठीक हो गया, दीखने को न रहा, परन्तु इसके लुप्त होते ही उसे भयकर दमे का रोग हो गया। उन्होंने उस लडकी को सल्फर C M की एक मात्रा दी जिस से दमा तो शान्त हो गया परन्तु भयकर एग्ज़ीमा प्रकट हो गया। उसे इस एग्ज़ीमा से इतना कष्ट हुआ कि उसने छुरी से अपनी त्वचा को छीलना शुरु किया। उसने अपने कपडे फाड डाले, ज़मीन पर लोटने लगी। परन्तु यह होम्योपैथिक-औषधि की स्वाभाविक रोग-वृद्धि (Aggravation) थी। दो-चार दिन उसके कान से, योनिद्वार से जलनवाला स्राव बहा, परन्तु उसके बाद वह लडकी दमे और एग्ज़ीमा दोनो से मुक्त हो गई।

[तृतीय-भाग—मुख्य-रोग]

(१) प्रसूत-ज्वर (Puerperal fever)—कभी-कभी चिकित्सक को ऐसी रोगिणी को देखना पडता है जिसमे प्रसव के तीसरे दिन के बाद भी पुरैन—मैला पानी—Lochia—बाहर नही निकलता। वह अन्दर पडा सडता है। पुरैन के इस प्रकार अन्दर दब जाने से रोगिणी को ज्वर आ जाता है। पुरैन के अन्दर रह जाने से रोगिणी को जाडा चढता है, तेज बुखार आ जाता है, सिर से पैर तक वह पसीने से तर हो जाती है। रोगिणी के ओढन के नीचे हाथ डाल कर देखा जाय, तो शरीर से इतनी गर्म भाप निकल रही होती है कि हाथ हटा लेना पडता है। ये लक्षण पुरैन के भीतर दब जाने के हैं—यही प्रसूत-ज्वर है। इस समय एकोनाइट, ब्रायोनिया, बेलाडोना देने से लाभ नही होगा, इनके देने से निराशा के सिवाय कुछ हाथ नही लगेगा। इस दशा मे सल्फर देने से अनेक रोगियो का दुःख दूर हुआ है।

अगर रोगिणी को पुरैन के दब जाने से बुखार नही चढा किन्तु स्तनो मे दूध आ जाने से ज्वर हुआ है, तब एकोनाइट जैसी अल्पकालिक औषधियो से काम चल जायगा, परन्तु अगर प्रसूत-ज्वर दूषित-ज्वर (Septic fever) के तौर से आया है, तब गहराई मे जानेवाली सल्फर जैसी औषधि ही देनी होगी।

(प्रसूत-ज्वर मे मुख्य-मुख्य औषधिया)

सल्फर—जब पाव जलते हो, पेट मे खालीपन का, भूख का अनुभव होता हो, रात को तकलीफ बढती हो, दिल बैठता जाता हो, शरीर मे अत्यन्त निर्बलता हो शरीर से गर्म भाप उठती हो, गर्मी की लहरें एक-दूसरे के बाद

आती हो, तब प्रसूत-ज्वर मे सल्फर से ही लाभ होगा क्योंकि यह प्रसूत-ज्वर दूषित-ज्वर मे परिणत हो गया है । अगर ऑपरेशन के बाद रोगिणी को ज्वर आने लगे, ज्वर के साथ शरीर मे से गर्मी की लहरें उठें, तो सल्फर उपयोगी सिद्ध होता है।

लाइकोपोडियम—अगर प्रसूत-ज्वर मे गर्म पसीना आये और प्रसूत-ज्वर के अन्य लक्षण मौजूद हो, शरीर मे एक के बाद एक जाडे की सिहरन उठे और इन सिहरनो का कोई अत न हो, आती ही चली जायें, तब लाइको के बिना रोगी का निस्तार नही हो सकता । लाइको भी सल्फर की तरह दीर्घगामी औषधि है।

पाइरोजेन—प्रसूत-ज्वर जब सेप्टिक हो जाय, अगर रोगिणी को ठड लगने के साथ साथ सारे शरीर मे कपन हो, और इन दोनो का मिश्रण लगातार होता चला जाय—कुछ जाडा लगे, साथ ही कुछ कपन हो, और नाडी के स्पदन तथा शरीर के तापमान मे कोई अनुपात न रहे, तब पाइरोजेन देना लाज़मी हो जाता है।

फेरम मेट—अगर प्रसूत-ज्वर मे रोगिणी का चेहरा लाल-नीला (Purplish) पड जाय, सारे शरीर मे पसीना आये, अगर लगातार या समय छोड-छोडकर जाडा लगे, जब जाडा लगे तभी प्यास हो, अन्य किसी समय न हो, जाडा लगने के समय चेहरा लाल-लाल तमतमा उठे, तब फेरम के लक्षण समझने चाहियें क्योंकि ये लक्षण अन्य किसी औषधि मे नही हैं।

पल्सेटिला—प्रसूत-ज्वर मे अगर शरीर का एक भाग गर्म हो, दूसरा ठडा हो, रोगिणी झट रो देती हो, आसू बहाती हो, भय से कापती हो, स्नायविक हो, उत्तेजित हो, बेचैन हो, तब पल्स देना चाहिये ।

(२) दूषित-ज्वर मे सल्फर देने से लाभ (Advantage of giving Sulphur in septic fever)—चिकित्सक को यह स्मरण रखना चाहिये कि रोगिणी मे दूषित-ज्वर के जड पकड लेने से पहले ही उसे २४ घटे के भीतर ही अपनी औषधि का प्रयोग कर इस ज्वर पर हावी होना है । दूषित-ज्वर को बढने नही दिया जा सकता । अगर दूषित-ज्वर मे एकोनाइट, बेलाडोना आदि जैसी कोई अल्पकालिक औषधि दी गई, तब सल्फर देने का समय निकल जायगा, और रोग हावी हो जायगा । चिकित्सक को चाहिये कि दूषित-ज्वर के लक्षण प्रकट होते ही सल्फर का प्रयोग करे । इसका एक लाभ तो यह है कि यह औषधि रोग की जड पर जाकर कुठाराघात करेगी, दूसरा लाभ यह है कि अगर सल्फर देने मे गलती भी हो गई है, और हम देखते हैं कि सल्फर भी रोग को नही पकड पाती, तो भी यह रोग को गहरा होने नही देगी, यह लाभ ही करेगी, रोग को बिगडने नहीं देगी । सल्फर देने से सुनिर्वाचित-औषधि देने की

उचित भूमिका तैयार हो जायेगी। यह हम पहले ही कह आये है कि जब किसी रोग मे उसके लक्षण स्पष्ट रूप से प्रकट न होते हो, तब सल्फर देना लाभकारी रहता है।

(३) डॉ० कैंट की तपेदिक मे सल्फर, साइलीशिया और फॉस न देने की सलाह—डॉ० कैंट ने तपेदिक मे सल्फर, साइलीशिया, अथवा फॉस न देने के संबध मे अपने विचार अपनी 'मैटीरिया मैडिका' मे दिये हैं। सल्फर के विषय मे वे पृष्ठ ९२६ मे लिखते हैं "साइलीशिया की तरह सल्फर भी खासकर फेफडे के रोगो मे भयकर औषधि है। तपेदिक की हालत जब बहुत आगे बढ गई हो तब इसे देना खतरा मोल लेना है, अगर देने की जरूरत पड जाय तो भी उच्च-शक्ति मे तो इस हालत मे कभी न दे। अगर रोगी को कष्ट-प्रद लक्षण हो और तुम समझो कि लक्षणो के आधार पर सल्फर ही देना चाहिये, तब भी ३० या ज्यादा-से-ज्यादा २०० शक्ति से ऊपर नही जाना चाहिये। तपेदिक मे प्राय सवेरे का डॉयरिया पाया जाता है। इसे सल्फर से रोकने का प्रयत्न नही करना चाहिये। तपेदिक के बीमार को रोग की बढी हुई हालत मे रात के पसीने आया करते हैं। उस समय औषधि के कितने ही स्पष्ट लक्षण क्यो न दीख पड़े, इसका प्रयोग नही करना चाहिये।"

तपेदिक मे साइलीशिया का प्रयोग भी बड़ी सावधानी से होना चाहिये—डॉ० कैंट **साइलीशिया** पर लिखते हुए अपनी पुस्तक के ८९२ पृष्ठ मे लिखते हैं कि यद्यपि तपेदिक की प्रवृत्ति को दूर कर देने के लिये इस से उत्तम दूसरी कोई औषधि नही है, और जब रोग ने उग्र रूप न धारण किया हो तब तपेदिक की प्रवृत्ति को यह जड-मूल से नष्ट कर देती है, तो भी अगर फेफडे मे टी० बी० की गाठ (Tubercle) पड गई हो, तब **साइलीशिया** देना खतरनाक हो सकता है। **साइलीशिया** का काम विजातीय-तत्व को बाहर निकाल देना है। अगर फेफडे मे टी० बी० की गाठ पड गई है, तो इस औषधि को देने से गाठ की जगह सूजन हो जायगी, पस पड जायगी ताकि गाठ बाहर धकेल दी जाय। अगर सारे फेफडे मे इस प्रकार की टी० बी० की गाठे पड गई है, तो साइलीशिया देने से सारा फेफडा पस मे आक्रान्त हो जायगा। इस औषधि का प्रयोग शुरु-शुरु मे जब रोग ने स्पष्ट रूप धारण नही किया तभी किया जाना चाहिये।

तपेदिक मे फॉस का भी प्रयोग बडी सावधानी से होना चाहिये—डॉ० कैन्ट अपनी उक्त पुस्तक के ७८६ पृष्ठ मे **फॉसफोरस** पर लिखते हुए कहते हैं "जिन लोगो की छाती तग है, पतले-दुबले हैं, जीवनी-शक्ति दुर्बल है, हर बार ठड जाकर जिनकी छाती मे बैठ जाती है, बुखार होने लगता है, चेहरा लाल हो जाता है, रात को पसीने आते हैं, दोपहर बाद ज्वर आता है और मध्य-रात्रि तक बना रहता है, उन्हे शुरु-शुरु मे **फॉसफोरस** देने मे लाभ होता है।

अगर रोग असाध्य नही है, तो उक्त अवस्था मे उच्च-शक्ति की फॉस की एक मात्रा देने से तेज़ बुखार घट जायगा और रोगी को चैन पड जायगा, यद्यपि रोग नष्ट नही होगा।

डॉ० कैन्ट का कहना है कि तपेदिक की साध्य अवस्था मे जब फॉस से ज्वर कम हो जाय, तब फॉस की दूसरी मात्रा देने की गलती नही करनी चाहिये। अगर दूसरी मात्रा दे दी गई तो उसका उल्टा असर होगा, ज्वर घटने के स्थान मे बढ जायगा। तपेदिक के दस्त और पसीने को फॉस से या किसी अन्य औषधि से रोकने का प्रयत्न नही करना चाहिये। पहली मात्रा मे अगर ज्वर चला गया, तो उसी से दस्त और पसीना भी अपने-आप चला जायगा और रोगी शान्त-मुद्रा मे बना रहेगा। तपेदिक के कई रोगियो को फॉस की उच्च-शक्ति देना खतरनाक है, खास कर जब रोग असाध्य अवस्था मे चला जाय, अन्तिम अवस्था मे पहुच जाने पर इसकी उच्च-शक्ति कभी नही देनी चाहिये। ऐसे रोगियो को फॉस की उच्च-शक्ति की मात्रा तब दी जानी चाहिये थी जब वे साध्य अवस्था मे थे। अगर रोग की बढी हुई हालत मे भी फॉस देने के लक्षण दीख पडें तो परीक्षण के तौर पर ३० शक्ति की मात्रा देकर देख लेना चाहिये कि रोगी को लाभ होता है या नही। अगर ३० शक्ति देकर रोगी की जीवनी-शक्ति प्राणवती होती दीखे, प्रतिक्रिया अनुकूल हो, तब उच्च-शक्ति के देने की बात सोची जा सकती है, परन्तु तपेदिक के जो रोगी रुग्णावस्था मे बहुत आगे बढ चुके हैं, उन्हें ३० या २०० से ऊची शक्ति की मात्रा नही दी जानी चाहिये। अगर ऊची नही दी जानी चाहिये तो इस की नीची शक्ति भी तपेदिक के रोगी के लिये खतरनाक है, यह उसके लिये जहर का काम करेगी। फॉस की ३० मे निम्न-शक्ति देने पर भी तपेदिक के कई रोगी मर नही जाते इसका कारण, डॉ० कैन्ट कहते हैं, यही है कि जिन रोगियो को वह दी गई होती है वे **फॉस** के लक्षणो के रोगी ही नही होते।

(४) **माहवारी मे असह्य-दर्द** (Dysmenorrhea)—माहवारी में असह्य-दर्द होने पर **सल्फर** तथा **सीपिया** उपयोगी औषधियाँ हैं। लडकियो तथा प्रौढ आयु की स्त्रियो मे भी इस प्रकार के दर्द मे ये दोनो औषधिया अच्छा काम करती हैं। जिन स्त्रियो को माहवारी शुरु होने के दिनो से महीनो, सालो तक इस प्रकार का दर्द हुआ ही करता है उनके लिये सल्फर सदा उपयोगी है।

(५) **पेचिस (डिसेंट्री) मे सल्फर, मर्क सौल, मर्क कौर की तुलना**—पेचिश मे ये तीनो औषधिया उपयोगी हैं। पेचिश मे **मर्क सौल** और **सल्फर** के लक्षण एक-समान हैं, और अगर पेचिश का रोगी **मर्क सौल** से ठीक न हो तो **सल्फर** से ठीक हो जाता है। पेचिश मे इन तीनो के लक्षणो की तुलना निम्न प्रकार है—

मर्क सोल	सल्फर	मर्क कोर
१ खूनी आव मिली टट्टी	१ खूनी आव मिली टट्टी	१. शुद्ध खून की टट्टी
२ मरोड ज्यादा नही	२ मरोड ज्यादा नही	२ मरोड अत्यन्त भयकर
३ टट्टी के समय पेशाव मे मरोड की-सी हाजत नही होती	३ टट्टी के समय पेशाव मे मरोड की-सी हाजत नही होती	३. टट्टी के समय पेशाव मे भी मरोड की-सी हाजत होती है।
४ खून कम आव ज्यादा	४ खून कम आव ज्यादा	४. खून ज्यादा आव कम

(६) ववासीर मे सल्फर और नक्स वोमिका से लाभ—डॉ० वर्नेट अपनी पुस्तक 'डिजीजेज ऑफ दी वेन्स' मे लिखते है कि ववासीर के हजारो रोगी सिर्फ नक्स वोमिका और सल्फर से ठीक हो सकते हैं। किसी भी शक्ति मे इनका प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु निम्न-शक्ति की अपेक्षा ३० शक्ति अधिक असर रखती है। जब ववासीर के लिये ऑपरेशन कराने की दौड-धूप नही चली थी, तब प्रात काल सल्फर ३० तथा सोने से पहले नक्स ३० देकर होम्योपैथ ववासीर को ठीक कर दिया करते थे। इस से भीतरी, बाहरी ववासीर, मस्सो के गुच्छोदार ववासीर, खूनी-वादी, जलनवाली—सब तरह की ववासीर अच्छी हो जाती है। डॉ० टायलर अपनी पुस्तक 'होम्योपैथिक ड्रग पिक्चर्स' के सल्फर के प्रकरण मे लिखती हैं कि ये दोनो औषधिया एक-दूसरे की 'पूरक' (Complementary) हैं।

(७) गठिये को हृदय आदि कोमल अंगो मे जाने से रोकना—इस औषधि की प्रकृति रोग को भीतर से वाहर निकाल देने की है। रोग भयकर रूप तभी धारण करता है जब वह बाहर से भीतर को जाता है, सल्फर रोग को भीतर से बाहर फेंकता है। यही कारण है कि अनेक वार सल्फर देने से दमा, गठिया आदि ठीक हो जाता है, परन्तु त्वचा पर फोडे-फुन्सी, एग्जीमा, कान मे मवाद आदि आना शुरु हो जाता है। वाह्य-रोग घातक नही है, आन्तरिक-रोग घातक है—यह रोगी को समझाने की आवश्यकता है। जब सल्फर भीतर से रोग को वाहर फेंकता है, तव धीरे-धीरे वाहर का रोग भी उसी प्रक्रिया के आधार पर त्वचा से भी वाहर हो जाता है। इसके प्रयोग से गठिया हाथ-पैर मे तो वना रह सकता है, परन्तु वह हृदय आदि कोमल अगो मे प्रवेश नही कर पाता, जीवन के लिये रोग का भीतर की तरफ चले जाना ही खतरनाक है। रोग के अच्छा होने का क्रम रोग का केन्द्र से हटकर परिधि की तरफ, भीतर से हटकर बाहर की तरफ आना है—और इसी प्रक्रिया मे सल्फर सब से अधिक सहायक है।

(८) ठीक न होनेवाले फोडे (Indolent ulcers)—कई फोडे ऐसे

होते हैं जिनमे जलन होती रहती है, उनमे से स्राव सरा करता है, आस-पास की त्वचा मे वह जलन पैदा करता रहना है, फोडा सूकने मे नही आता। ऐसे बने रहने वाले, जलने और स्राव सरने वाले फोडो को **सल्फर** ठीक कर देता है।

(९) **पैर के तलुओ के गट्टे (Corns) या मुंह मे दातो से अल्सर**—जूते आदि के दवाव के कारण पैर के तलुओ मे अक्सर गट्टे पड जाया करते हैं। दवाव से गट्टे पड जाना या त्वचा का मोटा हो जाना इस औषधि मे विशेष रूप से पाया जाता है। दवाव से त्वचा मोटी होती जाती है। इसी प्रकार मुंह के भीतर अगर त्वचा के कोमल स्थान पर दात लगातार लगता रहे, तो वह स्थान सख्त होने लगता है, और कालान्तर मे वहा अल्सर हो जाता है। अगर यह प्रक्रिया चलती रहे, तो मुह मे कैंसर भी हो सकता है। लक्षणो के आधार पर अगर **सल्फर** दिया जाय, तो यह अवस्था रुक जाती है।

(१०) **सूके के रोग मे अंग सूकते और पेट फूलता है**—इस औषधि के सूके के रोग मे विचित्र वात यह है कि रोगी के शेष अग तो सूकते जाते हैं, परन्तु पेट फूलता जाता है। पेट फूलता है, उसमे गडगडाहट होती है, जलन और दर्द होता है। गर्दन, पीठ, छाती, और सब अग सूकने लगते हैं, पेट की मास-पेशिया भी सूक जाती हैं, परन्तु पेट वढा रहता है। वच्चो के सूके के रोग मे ऐसे लक्षण प्राय दिखलाई पडते हैं। **कैलकेरिया कार्ब** मे भी इसी प्रकार का सूका होता है, परन्तु दोनो के 'व्यापक-लक्षण' भिन्न-भिन्न हैं। **सल्फर** मे वदवू आती है, **कैलकेरिया** मे खट्टी वू आती है, **सल्फर** गर्म दवा है, **कैलकेरिया** सर्द दवा है, **सल्फर** पतला-दुवला होता है, **कैलकेरिया** मोटा, थुलथुल होता है। अगर वच्चे का शारीरिक-विकास ठीक न हो, अगर उसकी हड्डिया कमजोर रहे, सिर की सीवन के मिलने मे देर लगे, तो **कैलकेरिया** से लाभ होगा, इस प्रकार के शिथिल-विकास मे **सल्फर** का दावा **कैलकेरिया** के वाद आता है, पहले नही।

(११) **सोने मे पेशाब निकल जाना**—कई वच्चो को सोने मे पेशाव निकल जाता है। इस लक्षण मे मुख्य-मुख्य औषधियो का वर्णन हमने '**पल्स**' के प्रकरण मे किया है। **सल्फर** भी इस रोग मे उपयोगी है।

(१२) **खसरे मे लाभ करता और टीके के बुरे फल को दूर करता है**—खसरे (Measles) मे यह महौषध है। रुटीन के तौर पर अगर **सल्फर** या **पल्सेटिला** दिया जाय, तो रोग कावू मे रहता है, वीच-वीच मे जुकाम-खासी के लिये **एकोनाइट** या **युफ्रेशिया** दिया जा सकता है। अगर खसरे के दाने पूरी तरह से न निकलें, तो **सल्फर** से वहुत सहायता मिलती है।

टीके के अनेक दुष्परिणाम होते हैं जिन्हें होम्योपैथ भलीभाति जानते हैं। इन दुष्परिणामो को दूर करने के लिये जैसे **थूजा** उपयोगी है, वैसे ही **सल्फर** भी उपयोगी है।

[चतुर्थ-भाग—सल्फर का कुछ मुख्य-औषधियों से सम्बन्ध]

(१) **सल्फर तथा एकोनाइट**—नये-रोग में **एकोनाइट** लाभ करता है क्योंकि इसके लक्षण नवीन-रोग के समान होते हैं, पुराने-रोगों में सल्फर लाभ करता है क्योंकि इसके लक्षण पुराने-रोगों के समान होते हैं। एक ही रोग के नवीन लक्षणों में जहां **एकोनाइट** लाभ करता है, उसी रोग के पुराना पड़ जाने पर या **एकोनाइट** के बचे-खुचे लक्षणों को **सल्फर** दूर कर देता है। नवीन रोगों के अन्त में सल्फर देना लाभकारी पाया गया है जिसमें रोग बार-बार पलटा नहीं खाता, पुराने रोगों के प्रारंभ में यह उपयोगी पाया गया है।

(२) **सल्फर और आर्सेनिक**—प्राय देखा जाता है कि रोगी को कुछ देर **सल्फर** देने के बाद **आर्सेनिक** देने की आवश्यकता पड़ जाती है। फिर कुछ समय **आर्स** देने के बाद **सल्फर** पर लौट आना पड़ता है। प्राय जब रोगी के अन्तिम क्षण होते हैं, नब्ज़ छूट रही होती हैं, तब **आर्सेनिक** देने की दशा आ जाती है, परन्तु डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि इतना ही काफी नहीं है। **आर्सेनिक** देने के बाद फिर **सल्फर** देना चाहिये—रोगी कहेगा, मेरी तबीयत अच्छी है। अगर सिर्फ **आर्सेनिक** दिया जायगा और उसके बाद **सल्फर** नहीं दिया जायगा, तो रोगी कुछ देर के लिये संभल भले ही जाय, अन्त में चलता बनेगा।

(३) **आर्सेनिक तथा फॉसफोरस**—जैसे अन्तिम क्षणों में **आर्सेनिक** देकर **सल्फर** देने पर रोगी संभल जाता है, वैसे कभी-कभी **सल्फर** के स्थान में इस हालत में **आर्सेनिक** के बाद **फॉस** देने की आवश्यकता पड़ जाती है। यह तब होता है अगर **आर्सेनिक** देने के बाद रोगी संभल तो जाय, परन्तु उसे ज्वर चढ़ जाय, शरीर गर्म हो जाय, तेज़ प्यास लगे, रोगी बर्फ के समान ठंडा पानी पीना चाहे, जितना भी पीये उसकी प्यास न बुझे। ऐसी हालत में **आर्सेनिक** के बाद **फॉस** देना चाहिये, और यह इस दशा में रोगी को मृत्यु के मुख से खींच लाने का वही काम करेगा जो अन्य अवस्थाओं में **सल्फर** करता है।

(४) **सल्फर-कैलकेरिया-लाइकोपोडियम**—हम इस से पहले **कैलि सल्फ** के प्रकरण में औषधियों के त्रिकों की शृंखला का वर्णन कर आये हैं। वहां हमने ११ त्रिक दिये हैं जिनमें **सल्फर-कैलकेरिया-लाइकोपोडियम** का त्रिक भी दिया गया है। प्राय देखा जाता है कि **सल्फर** देने के बाद **कैलकेरिया** के लक्षण प्रकट होने लगते हैं, **कैलकेरिया** देने के बाद **लाइकोपोडियम** के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसलिये कई रोगियों को इस शृंखला में से गुज़ारना पड़ता है। इस आधार पर ही कहा जाता है कि **सल्फर** को **लाइको** से ठीक पहले नहीं देना चाहिये—पहले **सल्फर**, फिर **कैलकेरिया**, फिर **लाइकोपोडियम**—इसके बाद फिर **सल्फर**, क्योंकि 'त्रिक' में **लाइकोपोडियम** के बाद **सल्फर** अच्छा

काम करता है। त्रिको की शृंखला (Series of trios) का अभिप्राय
यह है कि अमुक औषधि के पीछे अमुक औषधि अच्छा काम करती है। इस
त्रिक-शृंखला मे से रोगी को तभी गुज़ारना हितकर है जब एक के बाद दूसरी
औषधि के लक्षण प्रकट होने लगें, रुटीन के तौर पर नही।

(५) **सल्फ़र तथा फॉसफोरस**—इन दोनो औषधियो के लक्षण इतने
मिलते-जुलते हैं कि इनमे भेद करना एक समस्या बन जाता है।

दोनो मे समानता—दोनो दुबले-पतले, कंधा झुकाकर चलने वाले हैं। दोनो
के लिये एक जगह टिक कर खडे रहना कठिन है। दोनो का चेहरा बडा
कोमल दीखता है, दोनो रक्तहीन होते हैं। दोनो मे जलन प्रधान है।

दोनो मे असमानता—दोनो मे जलन तो है परन्तु **फॉस** की जलन विशेष
रूप से पीठ और पेट मे, और **सल्फर** की जलन विशेष रूप से छाती मे, **फॉस**
की जलन विशेष रूप से बाहो और हथेली मे, और **सल्फर** की जलन विशेष
रूप मे पैर के तलुओ मे होती है। **सल्फर** न गर्म है, न ठंडा—गर्मी भी बुरी
मानता है, ठंडक भी बुरी मानता है। **फॉस** शीत-प्रधान है, परन्तु सिर और
पेट के लिये ठंड ही पसन्द करता है। **सल्फर** मे किन्ही स्थानो मे जलन है तो
शरीर मे कई ऐसे भी स्थान हो सकते हैं जिन मे ठंडक हो—उल्टे लक्षण, जैसे
नैट्रम म्यूर मे कहीं स्राव अधिक होता है तो कही उसका उल्टा खुश्की पायी
जाती है। **फॉस** मे बदबू नही है, **सल्फर** मे बेहद बदबू है।

[पंचम-भाग—सल्फर की प्रकृति तथा उस का मूर्त-चित्रण]

(१) **सल्फर का रोगी गर्मी तथा सर्दी दोनों को बर्दाश्त नहीं करता—**
यद्यपि इस औषधि के रोगी को खुली हवा की उत्कट इच्छा होती है, तो भी
न वह गर्मी बर्दाश्त कर सकता है, न सर्दी बर्दाश्त कर सकता है। उसे मध्य-
तापमान रुचता है, अगर वातावरण मे बहुत उथल-पुथल हो—अधिक सर्दी पड
जाय या अधिक गर्मी पड जाय—तो उसे अच्छा नही लगता। जहातक उसके
श्वास-प्रश्वास का संबंध है, जब उसे छाती मे बोझ महसूस होता है तब वह
दरवाज़े और खिडकियां खुली रखना चाहता है। जहातक उसके शरीर का
सम्बन्ध है, वह उसे ढांप कर रखना चाहता है, परन्तु अगर उसने अपने को
गर्म कपडो से ढांप रखा है तो उसे त्वचा मे खुजली सताने लगती है। मुख्य तौर
पर **सल्फर** के रोगी को 'गर्म'—Hot—व्यक्ति कहा जा सकता है, परन्तु नम
मौसम मे या नमीदार ठंडी मौसम मे उसकी तकलीफें बढ जाती हैं। **पल्स,**
नैट्रम म्यूर को जिस कदर खुली हवा की इच्छा होती है, **सल्फर** को उस कदर
खुली हवा या ठंडक की इच्छा नही होती।

(२) **सल्फर का रोगी घी के पदार्थ पसन्द करता है**—'गर्म'—Hot—
औषधियो मे **सल्फर** ही ऐसा है जो घी के पदार्थ—गरिष्ठ-पदार्थ—पसन्द

करता है। **पल्स** 'गर्म' है, परन्तु घी के पदार्थ या गरिष्ठ भोजन उसे नही पचता। **नक्स** 'सर्द'—Chilly—है, परन्तु घी-दूध हजम कर लेता है। **सल्फर** को घी के पदार्थों से वैसा ही प्रेम है, जैसा **अर्जन्टम नाइट्रिकम** को मीठे से या **नेट्रम म्यूर** को नमक से प्रेम होता है। इन औषधियों मे जिन पदार्थों से रोगी को प्रेम है, वे उसे अनुकूल नही पड़ते।

(३) **सल्फर का सजीव तथा मूर्त्त-चित्रण**—पतला-दुबला, आगे को झुका हुआ, कुबड़ा-सा व्यक्ति, मैला-कुचैला, बाल बिखरे हुए, दाढी बढी हुई, हजामत किये हुए कई दिन बीत गये, कपड़ो मे पैबन्द लगे हुए, सम्पन्न होने पर भी गन्दा दीखनेवाला, शरीर से बदबू—दोपहर को ११ बजे जो भूख लगती है तो सह नही सकता, एक जगह टिक कर देर तक खडा नही रह सकता, अपने मैले कपड़ो को भी खूबसूरत समझनेवाला, हाथ-पाव से गर्मी निकलती है, सोते समय पैर बिस्तर से बाहर निकाल देता है, पैरो के लिये बिस्तर मे ठडी जगह ढूढता है, घी के पदार्थ—पूरी-कचौडी बडे मजे से खाता है पर पचते नही—सवेरे उठते ही बाथ-रूम को भागता है, न ठड सोहाती है न गर्मी, अपने मे मस्त, स्वार्थी—यह है सजीव तथा मूर्त्त-चित्रण सल्फर का।

(४) **शक्ति तथा प्रकृति**—प्रारभ करने के लिये १२ शक्ति उपयुक्त है। उसके बाद चिकित्सक ऊपर-नीचे जा सकता है। पुराने रोगो मे २०० शक्ति उपयुक्त रहती है, फोडे-फुन्सियो के लिये निम्न-शक्ति। यह 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) औषधि है। इस विषय मे डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि मानव को जितने भी रोग हो सकते हैं वे सब इसमे पाये जाते है और चिकित्सक समझ सकता है कि उसे किसी अन्य औषधि की आवश्यकता ही नही है, परन्तु ऐसा समझना भूल है। **सल्फर** वही तक काम करेगी जहा तक इसके लक्षणो की गति होगी। इस औषधि की दीर्घगामी-गति के सबध मे लिखते हुए डॉ० चौधरी लिखते हैं कि अगर उन्हे एक ही औषधि से इलाज करने को कहा जाय, तो वे इसे ही चुनेंगे। यही बात **सीपिया** के विषय मे डा० गिब्सन मिल्लर ने कही थी कि अगर उनके पास सिर्फ **सीपिया** ही हो, तो वे केवल उस से सब रोगो का इलाज करना पसन्द करेंगे। **सल्फर** मुख्य तौर पर 'गर्म'—Hot—प्रकृति के रोगी के लिये है, परन्तु इसका रोगी मध्य-तापमान पसन्द करता है। यह नही कहा जा सकता कि 'शीत'—Chilly— प्रकृति के रोगियो को **सल्फर** नही दी जानी चाहिये। शीत-प्रकृति के अनेक रोगियो के लिये भी यह उतनी ही लाभप्रद है जितनी ऊष्ण-प्रकृति के रोगियो के लिये।

सल्फ्यूरिक ऐसिड (SULPHURIC ACID)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) बाह्य-कपकपी न होने पर भी सपूर्ण शरीर मे आन्तरिक-कपकपी अनुभव करना (Sensation of quivering all over the body without visible trembling)

(२) रोगी में जल्दबाजी रहती है (Feels in a great hurry)

(३) खट्टी बू तथा सर्वांगीण खटास (Sour smell and acidity)

(४) मा या बच्चे के मुह मे सफेद छाले (मुहा—Aphthe)

(५) कमजोरी, कमज़ोरी मे ऐसिड फॉस, म्यूरियेटिक ऐसिड, कार्बो वेज से तुलना

(६) किसी प्रकार का भी दर्द धीरे-धीरे बढता है, हद दर्जे पर पहुच कर एकदम बन्द हो जाता है

(७) माहवारी शुरु होने से पहले नींद मे छाती पर डरावना बोझ (Nightmare before menstrual period)

(८) शराब पीने की आदत छुड़ा देता है

(९) बच्चो का बायीं तरफ का हर्निया (आत उतरना)

(१) बाह्य-कपकपी न होने पर भी सपूर्ण शरीर मे आन्तरिक-कपकपी अनुभव करना (Sensation of quivering all over the body without visible trembling)—इस औषधि का अति-प्रधान लक्षण यह है कि रोगी को शरीर मे और अगो मे भीतर-ही-भीतर कपकपी का अनुभव होता है, यद्यपि बाहर से देखने पर कपकपी नही दिखलाई देती। इस कपकपी का सबध रोगी की कमजोरी से होता है। प्राय यह लक्षण पुराने शराबियो मे, और उन लोगो मे पाया जाता है जिन्होंने अप्राकृतिक-कुकर्मों मे अपने शारीरिक-बल को नष्ट कर दिया है। इस प्रकार की शरीर के अन्दर की कपकपी के लक्षण मे इस से लाभ होता है।

(२) रोगी मे जल्दबाजी रहती है (Feels in a great hurry)—रोगी हर काम मे जल्दबाज़ी करता है। जो काम करना हो तुरत करना चाहिये, एक मिनट की भी देर न हो। बेहद कमजोरी तो इसका चरित्रगत-लक्षण है ही, पस्त पडा रहता है, परन्तु उसका हर काम मेल-ट्रेन की रफ्तार से होना चाहिये। कमज़ोरी मे तो देरी करना स्वाभाविक है, परन्तु इस रोगी मे कमज़ोरी के साथ जल्दबाजी जुडी रहती है, जो एक विलक्षण-लक्षण है। अर्जेन्टम नाइट्रिकम मे भी जल्दबाज़ी है।

(३) खट्टी बू तथा सर्वांगीण खटास (Sour smell and acidity)

—बच्चे को कितना ही नहलाओ, उसमे से खट्टी बू आती ही रहती है। खट्टा-पन इसका प्रधान लक्षण है। बच्चे की दात निकलते समय पतले दस्त आते हैं, पाखाना पीला, पतला या हरे रग का होता है। उसके शरीर से खट्टी बू नही जाती। ऐसे दस्तो मे इस से लाभ होता है। पेट मे खट्टे डकार आते हैं। खटास इतनी बढ जाती है कि दात खट्टे अनुभव होते हैं। जब हम कच्चे खट्टे आम खाते हैं तब दातो मे खटास का जो अनुभव होता है वैसा अनुभव रोगी के दातो मे बना रहता है।

(४) माँ या बच्चे के मुह मे सफेद छाले (मुहा—Aphthe)—माँ या बच्चे के मुह मे छाले पड जाते हैं, वह मा का दूध नही पी सकता। मा के मुह मे भी ऐसे छाले पड सकते हैं। मुह का भीतरी भाग सफेद नज़र आता है। ये छाले मुह से पेट तथा गुदा तक जा सकते हैं। मल-द्वार की परीक्षा करने से वहा तक घावो की यह सफेदी दिखलाई देती है। गले मे ये सफेद घाव ऐसे हो जाते हैं कि परीक्षा करने पर ऐसा दीख पडता है मानो गले मे सफेदी पुती हो। मुहा मे **मर्क** और **बोरेक्स** से भी लाभ होता है, परन्तु उनमे इस औषधि की कमज़ोरी नही है। **सल्फ्यूरिक ऐसिड** मुहा की सर्व-प्रधान औषधि है।

(५) कमज़ोरी, कमज़ोरी मे ऐसिड फॉस, म्यूरियेटिक ऐसिड, कार्बो वेज से तुलना—कमज़ोरी इस औषधि मे बेहद पायी जाती है। कमज़ोरी से रोगी पस्त पडा रहता है। इसी कमज़ोरी के कारण उसे शरीर के भीतर-ही-भीतर कपन होता है। इसी कमज़ोरी के कारण प्राय टाइफॉयड या दूषित-ज्वरो मे इसके लक्षण पाये जाते हैं। रोगी से जब सवाल किया जाता है, तब सवाल को कई बार दोहराना पडता है क्योकि कमज़ोरी की वजह से वह धीरे-धीरे उत्तर देता है।

टाइफॉयड की कमज़ोरी मे इसकी तुलना **ऐसिड फॉस, म्यूरियेटिक ऐसिड** तथा **कार्बो वेज** से की जा सकती है। सबसे अधिक कमज़ोरी तो **कार्बो वेज** मे पायी जाती है, उससे कम **म्यूरियेटिक ऐसिड** मे और उससे कम **ऐसिड फॉस** मे। टाइफॉयड की कमज़ोरी के लक्षण **म्यूरियेटिक** ऐसिड मे विशेष रूप से पाये जाते हैं। डॉ० एलन ने टाइफॉयड के एक रोगी को जो बार-बार सभाले जाने पर भी कमज़ोरी के कारण बिस्तर मे नीचे की तरफ लुढक जाता था देख कर कहा मेरा इस रोगी के विषय मे निदान है—**'म्यूरियेटिक ऐसिड'**। टाइफॉयड मे **म्यूरियेटिक** ऐसिड उत्कृष्ट दवा है। **ऐसिड फॉस** मे मानसिक कमज़ोरी पहले दिखलाई देती है, शारीरिक पीछे, **म्यूरियेटिक ऐसिड** मे शारी-रिक-कमज़ोरी पहले दिखलाई देती है, मानसिक पीछे। जितने ऐसिड हैं सब मे कमज़ोरी का लक्षण पाया जाता है।

(६) **किसी प्रकार का भी दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है, हद दर्जे पर पहुच कर एकदम बन्द हो जाता है**—इसके दर्द का विशेष-लक्षण यह है कि दर्द धीरे-धीरे बढता है, हद दर्जे पर पहुच कर एकदम बन्द हो जाता है। सिर-दर्द हो, कान का दर्द हो, चेहरे मे दर्द हो—किसी प्रकार का भी दर्द हो, वह धीरे-धीरे बढता है, और बढ़कर एकदम गायब हो जाता है। दर्द मे गर्म सेक से आराम पडता है, दर्द की तरफ लेटने से भी रोगी को आराम मिलता है। दात के दर्द मे भी अगर वह धीरे-धीरे शुरु हो, और एकदम समाप्त हो जाय, तो इस से लाभ होता है। पेट का दर्द जो धीरे-धीरे बढे और एकदम हट जाय, इस से ठीक हो जाता है। दर्द के इस प्रकार के विलक्षण-लक्षणो मे निम्न लक्षणो मे निम्न औषधिया उपयोगी हैं

(दर्द-सबधी विलक्षण-लक्षण तथा उनकी औषधिया)

i **धीरे आना धीरे जाना**—दर्द हल्का-हल्का शुरु होता है, धीरे-धीरे बढता है, शिखर पर पहुच कर धीरे-धीरे उतरता है **स्टैनम, प्लैटिना, सिफिलीनम।**

ii **एकदम आना एकदम जाना**—तेज़ दर्द एकदम आता है और एकदम चला जाता है **बेलाडोना, कैलि बाईक्रोम, नाइट्रिक ऐसिड, कार्बोलिक-ऐसिड, मैग फॉस।**

iii **धीरे आना एकदम जाना**—दर्द धीरे-धीरे आता है और एकदम चला जाता है **सल्फ्यूरिक ऐसिड।**

iv **एकदम आना धीरे-धीरे जाना**—दर्द एकदम शुरु होता है, तेज़-दर्द, और धीरे-धीरे जाता है **कोलोसिन्थ।**

(७) **माहवारी शुरु होने से पहले नींद मे छाती पर डरावना बोझ** (Nightmare before menstrual period)—डॉ० क्लार्क लिखते हैं कि एक नाजुक स्त्री को हर माहवारी से पहले सोते समय छाती पर इतना बोझ मालूम पडता था कि वह भय से जाग उठती थी। उसे उन्होने सल्फ्यूरिक-ऐसिड ३० की एक मात्रा प्रतिदिन सोने से पहले दी जिस से उसे आराम हो गया।

(८) **शराब पीने की आदत छुडा देता है**—डा० हेरिंग लिखते है कि **सल्फ्यूरिक ऐसिड** के एक भाग को तीन भाग अल्कोहल मे मिलाकर रख लिया जाय, और उसकी १० से १५ बूद तक प्रतिदिन तीन बार तीन या चार सप्ताह लगातार दी जाय, तो उसके सेवन करने से शराब पीने की उत्कट-इच्छा चली जाती है।

(९) **बच्चो का बायीं तरफ का हर्निया** (आंत उतरना)—डॉ०

गुएर्नेसी लिखते हैं कि अगर ऐसा अनुभव हो कि बच्चे के बाईं तरफ हर्निया के-से आसार दीखते है, तो इस औषधि से ठीक हो जाता है। बाईं तरफ आंत उतर आने के-से लक्षणों में यह तथा **नक्स वोमिका** लाभप्रद है। दाईं तरफ के हर्निया मे लाइको औषधि है।

(१०) **शक्ति तथा प्रकृति**—३०, २०० (आंत उतरने के लक्षण के सिवाय इस औषधि का दायें भाग पर विशेष प्रभाव है। रोगी 'सर्द'—Chilly—प्रकृति का होता है। जब **सल्फ्यूरिक ऐसिड** देने मे उसकी शीत-प्रकृति चली जाती है, तब अगर वह 'गर्म'—Hot—प्रकृति के लक्षण प्रकट करने लगे, तो **पल्स** देने की आवश्यकता पड जाती है)

सिमफ़ाइटम (SYMPHYTUM)

(१) **टूटी हुई हड्डी को जोडने मे सहायक** (Facilitates union of fractured bones)—होम्योपैथी की पुस्तकों मे टूटी हुई हड्डियों को जोडने तथा हड्डियों के ऊपर के आवरण (अस्थि-परिवेष्टन—Periosteum) पर चोट लगने पर उसे ठीक करने मे इस औषधि के चमत्कारी प्रभाव का अनेक स्थानों पर उल्लेख पाया जाता है। डॉ० हेरिंग ने एक ऐसे रोगी का उल्लेख किया है जिसके गिर जाने से जाँघ की हड्डी टूट गई थी। उसे **सिमफाइटम** ४ प्रति छ घंटे दिया जाता रहा और २० दिन मे उसकी हड्डी जुड गई। हड्डी टूट जाने पर उसको अगर अपने स्थान पर ठीक-से बैठा दिया जाय, तो बाकी काम **सिमफाइटम** पर छोडा जा सकता है।

(२) **हड्डी जुड जाने के बाद भी उस स्थान पर दर्द बने रहना**—अगर हड्डी टूटने के बाद जुड जाय, और टूटे स्थान मे आराम होने के बाद भी दर्द बना रहे, तो इस मे ठीक हो जाता है। यह दर्द चुभता-सा अनुभव हुआ करता है।

(३) **आंख पर बच्चे की मुट्ठी से चोट**—अगर बच्चे की मुट्ठी से मा की आंख पर चोट लग जाय, तो भी इस मे आराम हो जाता है। संक्षेप मे, हड्डी पर या अस्थि-परिवेष्टन पर जहा-कही भी चोट लगे, वहा इस से लाभ होता है। अगर कहीं भी, और किसी प्रकार भी हड्डी की चोट या हड्डी पर आघात हो, चाहे आपरेशन से ही क्यो न हो—ऐसी हालत मे इस औषधि का प्रयोग करने मे लाभ होता है।

होम्योपैथी मे चोट मे अनेक औषधियां हैं, प्राय सब के लक्षण मिलते-जुलते हैं, किसी प्रकार की चोट में भी प्रत्येक औषधि थोडा-बहुत तो असर कर ही देती है, परन्तु फिर भी उनके भिन्न-भिन्न लक्षणों के आधार पर औषधि का

चुनाव विशेष लाभ करता है। हम आर्निका के प्रकरण मे इन औषधियो का वर्णन कर आये हैं, फिर भी उनका यहा भी दोबारा उल्लेख कर रहे है

(चोट आदि लक्षणो मे मुख्य-मुख्य औषधियाँ)

आर्निका—इसका प्रभाव रुधिर की नाडियो और मास-पेशियो की चोट पर विशेष होता है। शरीर की मास-पेशिया इतनी दुखती हैं कि रोगी किसी को छूने के लिये पास नही आने देता। शारीरिक तथा मानसिक आघात मे मांस-पेशियो—पुट्ठो—से सीमा से अधिक काम लेने पर उन मे दर्द होने मे इस से लाभ होता है। इसकी मात्रा मुह मे ली जाती है। बाहर अगर टिंचर का प्रयोग करना हो, तो तभी करना चाहिये अगर त्वचा कही से कटी न हो। कटी त्वचा पर इसका प्रयोग करने से सूजन हो जाती है।

कलैंडुला—यह गेंदे का नाम है। यह कटे हुये स्थान को सेप्टिक नही होने देता। खुले ज़ख्म पर—चाहे कही हो—इसके लोशन मे गाज़ डुबोकर बाध देने से ज़ख्म सडने नहीं पाता, उसमे पस नही पडती। प्रसव के बाद अपत्य-पथ मे ज़ख्म को इसके लोशन से धोने से ज़ख्म नही बनता। चोट लगने की पहली हालत मे इसका इस्तेमाल करने से वह स्थान पकता नही, उस मे पस भी नही पडता। गले-सडे घावो को इस से धोने से लाभ होता है। घाव पर मूल-अर्क से बना हुआ मरहम लगाया जा सकता है या गर्म पानी मे मूल-अर्क डालकर उसे धोया जा सकता है। इस के साथ रोगी को शक्तिकृत कलैंडुला भी दे देना चाहिये।

हाइपेरिकम—शरीर के वे भाग जिन मे स्नायु (Nerves) कट जाती या छिद जाती है, इस कटने-छिदने से दर्द करती हैं, उनका दर्द शान्त करने के लिये यह अमोघ औषधि है। कभी-कभी होठ कट जाता है, अगुलियो के अग्र-भाग, जहा स्नायु बिछी हुयी हैं, उनमे चोट लग जाने पर इस से लाभ होता है। स्नायु-पीडा (Nerve-pain) मे जब असह्य-दर्द होता हो, तब इस से लाभ होता है। मेरु-दण्ड की चोट, भले ही कितनी पुरानी हो, त्रिकास्थि की चोट—इन सब प्रकार की चोटो की दर्द मे इस मे लाभ होता है। ३ ६ या २०० शक्ति की दवा देते ही रोगी कहता है—ओह ! दर्द तो गायब हो गया।

रूटा—यह भी **सिमफाइटम** की तरह हड्डियो की चोट तथा अस्थि-परिवेष्टन की चोट मे लाभ पहुचाता है। सुई से काम करने, बारीक टाइप पढने तथा आख से ज्यादा काम लेने पर आख के थकने आदि के कष्ट मे यह लाभप्रद है। शक्ति १ से ६ मे प्रयुक्त होती है। आख मे इसका लोशन बना कर डाला जाता है।

अर्टिका युरेन्स—अगर त्वचा का कोई भाग जल जाय, दर्द होने लगे,

तो इस से आश्चर्यजनक तौर पर तुरन्त लाभ होता है। टिंचर तथा निम्न-शक्ति की औषधि का प्रयोग होता है।

(४) शक्ति—सिमफाइटम के टिंक्चर का प्रयोग होता है।

सिफिलीनम (SYPHILINUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सिफिलिस के दब जाने से होने-वाले रोग
(२) खासी, दमा, स्नायु-पीडा, हड्डियो मे दर्द आदि की रात को वृद्धि
(३) इसके लक्षण सिर्फ सिफिलिस के साथ ही बधे हुए नहीं हैं
(४) सोकर उठने के बाद भयकर कमज़ोरी
(५) रात को सिर-दर्द के कारण नींद नहीं आती
(६) दोनो कनपटियो से दर्द समानान्तर चलकर सिर के पीछे के हिस्से को जाता है (Linear headache)
(७) दर्द धीरे-धीरे वढ़ता, धीरे-धीरे घटता है
(८) फोडे-फुन्सियो का एक-दूसरे के बाद लगातार निकलते रहना
(९) शराब के लिये प्रबल इच्छा को यह औषधि दूर करती है (सल्फ्यूरिक ऐसिड मे भी यह है)
(१०) प्रदर का इतना स्राव होता है कि टागो तक वह जाता है
(११) सिर के बाल झड़ने लगते हैं
(१२) कन्धे के जोड़ो मे गठिये के दर्द को दूर करता है
(१३) रोगी पहाड पर ठीक रहता है
(१४) वर्षो पुराना कब्ज दूर करता है

(१) सिफिलिस के दब जाने से होने वाले रोग—यह सिफिलिस के मवाद से बना नोसोड है। प्राय देखा जाता है कि सिफिलिस (गर्मी) मे त्वचा पर जो फोडे आदि हो जाते हैं उन्हे पारे से बनी हुई दवाओ से दवा दिया जाता है। ये घाव ठीक नही होते, इनका विष शरीर के भीतर दब जाता है, और इन रोगियो को गले के रोग या त्वचा के अन्य प्रकार के रोग होने लगते हैं। जबतक चिकित्सक को पता नही होता कि रोगी को सिफिलिस हुई थी तबतक वह उसका अपनी समझ से सुनिर्वाचित औषधि से इलाज करता रहता है, परन्तु रोग ठीक होने मे नही आता। जब अचानक या खोद-खोद कर पूछने पर उसे पता चलता है कि रोगी को सिफिलिस हुई थी, तब रोग की जड उसके हाथ मे आ जाती है। डॉ० एलन लिखते है कि जो रोगी सिफिलिस से पीडित हैं, या जिन्हें सिफिलिस (गर्मी) का घाव हो चुका है और वाहर के लेप आदि से जिन्होने इलाज कराया है, उन्हें सालो गले या त्वचा के रोग

सताते रहते हैं। ऐसे रोगियो को इस औषधि से विशेष लाभ होता है। डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि जब कहने को सिफिलिस वाह्य-लेपो से दब गया होता है और उसका कोई प्रत्यक्ष चिन्ह नही दीखता, घाव मिट जाता है, तूफान निकल जाने के वाद कमज़ोरी आदि उसके अवशेष रह जाते हैं--अवशेष भी कैसे—रोगी कमज़ोर होने लगता है, टाइफॉयड आदि कोई बीमारी आ घेरती है तो पनप नही पाता, नीद नही आती, सिर-दर्द सताने लगता है—तव **सिफिलीनम** की एक मात्रा देने मे प्राय दवा हुआ रोग उभर आता है, गले के घाव, फोडे आदि निकल पडते है, और रोगी इनके निकलने पर तन्दुरुस्त होने लगता है, कमज़ोरी जाने लगती है, नीद आने लगती है, दर्द कम होने लगता है। इस से भी स्पष्ट है कि वाह्य-लेपो से रोग गया नही था, दवा था, नही तो अव उभर क्यो आता। इस दवा से दवा रोग उभर कर रोग के अन्य लक्षण जहा ठीक हो जाते हैं, वहा ये दबे हुए लक्षण उभर आने के बाद दवने के बजाय मिट जाते हैं।

(२) **खासी, दमा, दर्द, स्नायु-पीडा, हड्डियो मे दर्द आदि की रात को वृद्धि**—सब प्रकार के लक्षण दिन ढलते ही शुरु होने लगते हैं, और सूर्योदय के साथ समाप्त होते हैं। खासी शाम से शुरु होती है, रातभर चलती है, सवेरे हट जाती है, दमा सूर्य के ढलते ही जाग जाता है, रातभर परेशान करता है, सुवह शान्त हो जाता है, स्नायु-दर्द तथा हड्डियो के दर्द का भी यही किस्सा है। सिफिलिस के रोगियो को अक्सर रात को हड्डियो मे दर्द हुआ करता है। रात को रोग वढने का यह लक्षण इतना प्रवल और निश्चित है कि रोगी रात का नाम लेते ही डरता है। डॉ० चौधरी अपनी 'मैटीरिया मेडिका' मे लिखते हैं कि रोगी के रात से डरने का लक्षण इतना प्रधान है कि ज्यो-ज्यो रात के आने मे घटे पर घटा, मिनट पर मिनट वीतता है, त्यो-त्यो उन्होंने रोगी को आनेवाले लक्षणों के भय के कारण कापते देखा है। रात का अन्धेरा उनका महान् शत्रु है। प्राय ये लक्षण सिफिलिस के रोगी मे पाये जाते हैं, परन्तु अगर रोगी मे सिफिलिस का कोई चिन्ह न भी मिले, तो भी रोग की रात मे वृद्धि के लक्षण पर यह औषधि अपूर्व काम करती है।

(३) **इसके लक्षण सिर्फ सिफिलिस के साथ ही बधे हुए नहीं हैं**—यह समझना भूल है कि इस औषधि के लक्षण उन्ही रोगियो मे प्रकट होते हैं जिन्हें सिफिलिस है या हो चुका है। किसी भी रोग मे उक्त प्रकार के लक्षण मिलने पर यह औषधि लाभ करती है—सिफिलिस हुई हो या न हुई हो। यह वात ठीक है कि सिफिलिस के रोगी को अगर अन्य सुनिर्वाचित औषधियों से लाभ न हो, तो इस से लाभ हो जाता है।

(४) **सोकर उठने के बाद भयकर कमज़ोरी**—रोगी जब सोकर उठता

है तो उसे शारीरिक तथा मानसिक असह्य-कमजोरी महसूस होती है, ऐसी कमजोरी कि रोगी मर जाना अच्छा समझता है। उसे रात भी इसीलिये भयावह लगती है क्योंकि उसे मालूम होता है कि रात बीतने के बाद सवेरे नीद से उठने पर उसका क्या हाल होगा। सोने के बाद लक्षणों का बढ़ना **लैकेसिस** मे भी पाया जाता है।

(५) **रात को सिर-दर्द के कारण नींद नहीं आती**—जब रोगी को सिर-दर्द के कारण रात भर नीद न आये, वह बेचैन रहे, लेट न सके, घूमता रहे, तब इस से लाभ होता है। तेज़ सिर-दर्द मे घूमते रहना इस औषधि का मुख्य-लक्षण है। सिर-दर्द ४ बजे शाम से शुरु होता है, रातभर रहता है।

(६) **दोनो कनपटियो से दर्द समानान्तर चल कर सिर के पीछे को जाता है (Linear headache)**—ऐसा सिर-दर्द जो सिर की दोनो कनपटियो से शुरु होकर रेखा की एक सीध मे समानान्तर चल कर पीछे की तरफ एक कान से दूसरे कान तक जाये, रात भर रहे, उस मे यह उपयोगी है।

(७) **दर्द धीरे-धीरे बढ़ता, धीरे-धीरे घटता है**—हम **सल्फ्यूरिक ऐसिड** के प्रकरण मे पहले लिख आये है कि **स्टैनम, प्लैटिना** और **सिफिलीनम** का दर्द धीरे-धीरे बढता है और धीरे-धीरे घटता है।

(८) **फोडे-फुन्सियों का एक-दूसरे के बाद लगातार निकलते रहना**—रोगी को फोडे-फुन्सी लगातार होते रहते हैं, एक-दूसरे के बाद आते रहते है, उनका कही अन्त नही होता। फोडो से भरा शरीर इसका विशेष लक्षण है।

(९) **शराब के लिये प्रबल-इच्छा को दूर करता है**—डॉ० क्लार्क लिखते हैं कि ग्रीक लोगो का शराब का देवता बाक्कुज तथा काम की देवी वीनस का निकट का संबंध है, शराबी कामी होता है, कामी शराबी होता है। **सल्फर, सल्फ्यूरिक ऐसिड** तथा **सिफिलीनम** शराब पीने की इच्छा को दूर करते हैं। **एसरम** से भी शराब पीने की उत्कट इच्छा दूर होती है।

(१०) **प्रदर का इतना स्राव कि टांगो तक बह जाता है**—प्रदर का इतना स्राव बहता है कि कपडा सोखकर एडी तक बह जाता है। **एलूमिना** मे भी यह लक्षण है। यह रोग इस से दूर होता है।

(११) **सिर के बाल झडने लगते हैं**—सिर के बाल झडने के लक्षणो मे इस से लाभ होता है।

(१२) **कन्धे के जोडों मे गठिये का दर्द दूर करता है**

(१३) **रोगी पहाड़ पर ठीक रहता है**—इसका रोगी पहाड पर ठीक रहता है, **मेडोराइनम** का रोगी समुद्र-तट पर ठीक रहता है।

(१४) **वर्षों पुराना कब्ज दूर करता है**—मल-द्वार मे ऊपर की तरफ एक तरह की 'सिकुडन' (Stricture or contraction) होती है जिस से

कब्ज बनी रहती है। पाखाने के रास्ते के इस प्रकार सिकुड़ा होने के अनुभव के कारण कब्ज होने मे यह औषधि उपयोगी है।

(मल-द्वार की 'सिकुडन' के कारण कब्ज मे मुख्य-मुख्य औषधियां)

सिफिलीनम—ऐसा अनुभव होता है कि मल-द्वार ऊपर की तरफ सिकुडन से बंधा हुआ है।

चेलिडोनियम—सिकुडन के साथ मल-द्वार मे अत्यन्त खुजली होती है।

ग्रैफाइटिस—मल-द्वार के किनारे या अन्दर की तरफ फटने (Fissure) के कारण सिकुडन अनुभव होती है। जब भी रोगी पाखाने जाता है, अत्यन्त काटने वाला दर्द होता है। पाखाने के बाद घंटों सिकुडन का अनुभव होता है। मल-द्वार के फटने और उसमे सिकुडन के कारण ही मल नही उतरता।

लैकेसिस—इस औषधि मे मल-द्वार की सिकुडन और कब्ज का कारण गुदा-प्रदेश मे बवासीर के अनेक मस्सों का होना है जो बाहर निकले होते हैं।

लाइकोपोडियम—गुदा-प्रदेश की सिकुडन के कारण टट्टी आना असंभव-सा हो जाता है। टट्टी जाने की इच्छा होते ही मल-द्वार मे सिकुडन होने लगती है।

मेजेरियम—सिकुडन के कारण गुदा-प्रदेश मे ही नही, गुदा और जननेन्द्रिय के बीच के भाग—सीवन—मे भी दर्द होता है जो मूत्र-प्रणाली तक पहुंचता है। इस दर्द के कारण पाखाना नही उतरता।

नेट्रम म्यूर—गुदा-द्वार की 'सिकुडन' (Contraction of rectum) की शिकायतों को दूर करने की यह महौषध है। पाखाना जाने के बाद मल-द्वार मे जलन और खराश होती है। मल खुश्क, कड़ा होता है और फटे हुए गुदा मे से टूट-टूट कर गिरता है। रोगी जोर लगाता है, उस से खून निकलता है।

नाइट्रिक ऐसिड—पाखाना जाने के बाद घंटों तक सिकुडन होती रहती है। गुदा के फटे हुए स्थान से पनीला-स्राव रिसता रहता है। गुदा मे इस कदर दर्द होता है मानो किसी ने छुरी से काटा हो।

नक्स वोमिका—आंतों के क्रियाशील न होने के साथ मल-द्वार की सिकुडन का सबंध होता है। पाखाने की हाजत होती है परन्तु मल निकलता नही है, थोडा-बहुत निकलता है, तो भी यही अनुभव होता रहता है कि अभी कुछ बाकी रह गया।

(१५) **शक्ति तथा प्रकृति**—इस औषधि की उच्च-शक्ति—२००, १०००—दी जाती है, बार-बार नही दी जाती। रात को—सूर्यास्त से सूर्योदय तक रोग बढ़ता है, रोगी न ज्यादा ठंड, न ज्यादा गर्मी बर्दाश्त करता है। पहाड़ पर तबियत ठीक रहती है, समुद्र-तट माफिक नही पडता।

टैरेन्टुला हिस्पैनिका—मकड़ी का विष
(TARENTULA HISPANICA)
GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) बेचैनी और घबराहट, (Restlessness and anxiety)
(२) बेचैनी मे टैरेन्टुला और आर्सेनिक की तुलना
(३) बेचैनी मे सिर को तकिये पर इधर-उधर हिलाना (Rolling head on pillow from side to side to relieve distress)
(४) हृदय मे घबराहट, एन्जाइना पेक्टोरिस (Cardiac anxiety, Angina pectoris)
(५) हिस्टीरिया के लक्षण, सगीत से लक्षणो मे कमी, रोगी अपने को तथा दूसरो को चोट पहुचाता है (Tormenting and violent patient)
(६) कम्पन, झटकन, ऐंठन, वांयटा, ताडव-नृत्य (Trembling, Jerking, Spasms, Convulsions and St Vitu's dance)
(७) जब रोगी की तरफ ध्यान जाता है तब हिस्टीरिया का आक्रमण होता है या वह रोगी होने का बहाना करता है
(८) लक्षणो का प्रतिवर्ष या निश्चित समय पर प्रकट होना, मलेरिया-ज्वर मे पसीना न आना
(९) पुरुष तथा स्त्री मे विषय-भोग की उत्कट इच्छा
(१०) हर बात मे जल्दी की इच्छा
(११) जलनवाले दूषित घाव, कार्बंकल, गैंग्रीन आदि त्वचा के रोग मे टैरेन्टुला क्युबेनसिस उत्तम औषधि है

(१) बेचैनी और घबराहट (Restlessness and anxiety)—डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि मकडी के विष से बनी इस औषधि के 'व्यापक-लक्षण' (General symptoms) बेचैनी तथा घबराहट हैं। यह बेचैनी रोगी के हर अग मे दिखलाई देती है—कभी मन मे बेचैनी, कभी सारे शरीर मे बेचैनी, कभी शरीर के किसी अग मे, कभी पेट मे बेचैनी। रोगी अपने हाथ, पैर, गर्दन को हिलाता रहता है। डॉ० कैन्ट लिखते है कि रोगी के लक्षण आर्सेनिक के-से होते है—एक जगह टिकता नही, एक कुर्सी पर बैठता है, उसे छोड दूसरी पर जा बैठता है, एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर पर जाता है, कमरे मे घूमता रहता है, कही टिक कर नही बैठ सकता।

(२) बेचैनी मे टैरेन्टुला तथा आर्स की तुलना—इस मे अत्यन्त बेचैनी आर्सेनिक की तरह पायी जाती है, आर्सेनिक की तरह ही यह गहराई मे जाने-

वाली औषधि है। जब आर्सेनिक के लक्षण स्पष्ट दीख पडें और उस से लाभ न हो, तब इस से लाभ होता दिखाई दिया है। घबराहट, बेचैनी, हाथ-पैर की लगातार गति, गर्दन तथा सिर की हरकत, रात को सोने के लिये जाने से पहले अंगो मे बेचैनी इस के लक्षण है।

(३) बेचैनी मे सिर को तकिये पर इधर-उधर हिलाना (Rolling head on pillow from side to side to relieve the distress)—रोगी के हर अग मे हरकत के लक्षण पर एक रोगी की कब्ज मे यह दवा दी गई और कब्ज़ ठीक हो गया। डॉ० कैन्ट अपनी 'न्यू रेमेडीज' मे लिखते हैं कि एक रोगी को सख्त कब्ज थी, तेज दवाओ से भी उसे पाखाना नही होता था। अपनी परेशानी मे वह लेट कर तकिये पर सिर इधर-उधर हिलाता था और कराहता था, कहता था—ओह, मेरा क्या होगा। तकिये पर इस-प्रकार सिर की हरकत के लक्षण पर उसे यह औषधि दी गई और उसके बाद उसका कब्ज हो जाता रहा। इस लक्षण का भी मुख्य-आधार घबराहट और बेचैनी मे अगो का हिलाना ही था।

(४) हृदय मे घबराहट, एनजाइना पेक्टोरिस (Cardiac anxiety; Angina pectoris)—जैसे रोगी के मन मे और शरीर मे बेचैनी होती है, वैसे यह बेचैनी हृदय मे घबराहट का रूप ले लेती है। हृदय जोर-ज़ोर मे गति करने लगता है, ऐसा धडकता है जैसे डर के मारे हृदय धक्-धक् किया करता है। रोगी डरा न भी हो, तो भी हृदय जोर-से धक्-धक् करता है। इसमे 'एनजाइना पेक्टोरिस' (Angina pectoris) के भी लक्षण पाये जाते हैं, यह रोग भी इस से ठीक हुआ है।

(५) हिस्टीरिया के लक्षण, सगीत से लक्षणों मे कमी, रोगी अपने को तथा दूसरों को चोट पहुचाता है (Tormenting and violent)—इस औषधि मे हिस्टीरिया के-से लक्षण पाये जाते हैं। रोगी हसता है, उछलता है, कूदता-फादता है, नाचता है। ये सब हिस्टीरिया के-से लक्षण है। गाने से, सगीत से उसके लक्षणो मे कमी आ जाती है। सगीत का उस पर विशेष-प्रभाव दिखाई पडता है। कभी-कभी सगीत सुनकर वह उत्तेजित हो जाता है। प्राय सगीत से लक्षणो मे कमी आती है, परन्तु कभी-कभी लक्षण बढ भी सकते हैं। सगीत उसे पागल बना देता है। हसते-गाते-उछलते हुए रोगी को कभी पागलपन का दौर भी पड जाता है, वह अपने को ही पीटने लगता है, कपडे फाड डालता है। इस पागलपन मे वह दूसरो पर भी चोट कर सकता है। डा० फैरिंगटन ने इसी प्रकार के एक पागल के इस औषधि से ठीक होने का उल्लेख किया है जिसने अपनी माता के किसी बात पर जरा-सा एतराज करने पर घडा उठाकर उसके सिर पर दे मारा था। खैरियत हुई कि वह

घंडा उसकी माता के सिर पर न लगकर एक दर्पण पर जा टकराया जिस से वह चूर-चूर हो गया, नहीं तो उसकी माता का ही सिर फूट जाता। इस औषधि से वह ठीक हो गया।

(६) **कंपन, झटकन, ऐंठन, बायटा, ताण्डव-नृत्य** (Trembling, jerking, spasms, convulsions, St. Vitu's dance)—हिस्टीरिया प्रबल रोग है, उसके मृदु रोग में शरीर की मांस-पेशियों में कंपन होता है, हाथ-पैर हिलते रहते है, झटके लगते हैं, ऐंठन पडती है, बायटा पड जाता है और इस-प्रकार के उग्र-रोग में रोगी बिना होश-हवास के अजीब तरह से हाथ-पैर की नाचने की-सी हरकत करता है। डॉ० नैश का कहना है कि मांसपेशियों की फुदकन और झटकन (Twitching and jerking of muscles) में इस औषधि को सदा ध्यान में रखना चाहिये।

(७) **जब रोगी की तरफ ध्यान जाता है तब हिस्टीरिया का आक्रमण होता है या वह रोगी होने का बहाना करता है**—जबतक रोगी की तरफ कोई ध्यान नहीं देता तबतक वह भला-चंगा बना रहता है, जब उसकी तरफ ध्यान केन्द्रित किया जाता है, उसे मालूम होता है कि उसे देखा जा रहा है, तब उसके शरीर की मांसपेशियों में फुदकन होने लगती है। इसी से रिपर्टरी में इसका उल्लेख करते हुए कहा गया है कि रोगी रोग का बहाना करता है। असल में चंगा होते हुए ही नहीं, रोगी रोगी होते हुए भी चंगा होने का बहाना कर सकता है। डॉ० टायलर एक लडकी का उल्लेख करते हुए लिखती हैं कि वह कोरिया से पीडित थी। जब डॉ० रोगियों को देखने के लिए जाता था वह भली-चंगी नजर आती थी, परन्तु ज्योंही वह देखती थी कि उसे कोई देख नहीं रहा वह उठकर किताबें लेकर फाडने लगती थी और जो खिलौने उसके हाथ में आते थे उन्हें तोड डालती थी। रोगिणी कभी-कभी बेहोशी का बहाना करके पड जाती है और सब लोगों के चले जाने पर छिप-छिप कर देखती है कि लोगों पर उसका क्या प्रभाव पडा।

(८) **लक्षणों का प्रतिवर्ष या निश्चित समय पर प्रकट होना, मलेरिया ज्वर में पसीना न आना**—समय-क्रम (Periodicity) इस औषधि का विशेष लक्षण है। कई लक्षण प्रतिवर्ष निश्चित समय पर प्रकट होते हैं, उनमें इस औषधि से लाभ होता है। कई रोग प्रतिवर्ष तो नहीं, परन्तु निश्चित समय पर प्रकट होते हैं। मलेरिया ज्वर में अगर बुखार निश्चित समय पर आये, शरीर के अंगों में बेचैनी हो, हड्डियों में दर्द हो, घबराहट हो—अगर इस ज्वर में पसीना न आये—तब इससे लाभ होता है।

(९) **पुरुष तथा स्त्री में विषय-भोग की उत्कट इच्छा**—इस औषधि में 'उत्कट-इन्द्रिय-संवेदन' (Hyperesthesia) हो जाता है, जरा-सा भी छू जाने

से उत्तेजना हो जाती है, इसलिये पुरुष तथा स्त्री दोनो मे कामोत्तेजना हद से बाहर चली जाती है, न पुरुष अपनी काम-वासना पर काबू पा सकता है, न स्त्री। स्त्री के कामोन्माद (Nymphomania) को शान्त करने के लिये इस से लाभ होता है।

(१०) **हर बात मे जल्दी की इच्छा**—डॉ० मैकाडोनो ने एक लडकी का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसके मानसिक-रोग के लक्षण मे जल्दबाजी ने इतना घर कर लिया था कि वह हर काम मे जल्दबाजी दिखलाती थी। चलती थी तो जल्दी-जल्दी, तेजी से, हर समय काम मे लगी रहती थी, ऐसा लगता था कि कोई भूत उस मे घुस गया है जो उसे चैन से बैठने नही देता। वह अपने पिता से कहती थी कि घर मे निठल्ले मत बैठो, भागते रहो, स्वय भी हर समय तनी रहती थी। सोती तक नही थी। हर समय काम, हर समय काम, हर काम मे जल्दी और तेजी। उसे कई औषधिया दी गई, किसी से ठीक न हुई। अन्त मे, डॉ० कैन्ट को उसके लक्षण लिखकर पूछा गया कि उसे क्या औषधि दी जाय। हर बात मे जल्दी के लक्षण के आधार पर उन्होंने तार दिया कि लडकी को टैरेन्टुला 10M दिया जाय। इसके देते ही रोगिणी का नक्शा बदल गया। कहा सब सोचते थे कि वह पागलखाने मे जा पहुचेगी, कहा वह स्वस्थ होकर घर का काम-काज करने लगी।

(११) **जलनवाले दूषित घाव, कार्बंकल, गैंग्रीन आदि त्वचा के रोग मे टैरेन्टुला क्युबेनसिस उत्तम है**—डॉ० नैश लिखते हैं कि हम सोचा करते थे कि सडे, दूषित घावो मे जिन मे जलन हुआ करती है **आर्सेनिक और ऐन्थ्रैसीनम** ही दो दवाए हैं, परन्तु अनुभव ने सिद्ध कर दिया कि ऐसे घावो मे **टैरेन्टुला क्युबेनसिस** आश्चर्यजनक लाभ करता है। डॉ० बेनर्थैक का कहना है कि किसी भी फोडे या घाव मे जिस मे अत्यन्त दर्द हो, **टैरेन्टुला क्युबेनसिस** उनके हाथ मे अमोघ-शस्त्र का काम करता है। उनका कहना है कि पहले वे सोचा करते थे कि दूषित, जलन वाले घावो मे **आर्सेनिक** और **ऐन्थ्रैसीनम** ही एकमात्र दवाए है, परन्तु अब उन्होंने अनुभव किया है कि इन घावो मे **टैरेन्टुला** की ३० शक्ति की मात्रा उक्त दोनो मे भी अच्छा काम करती है। **टैरेन्टुला हिस्पैनिका** और **क्युबेनसिस** दोनो मकडी के विष से बनी औषधियाँ है।

(१२) **शक्ति तथा प्रकृति**—६, ३०, २०० (रोगी 'सर्द'—Chilly—प्रकृति का होता है)

टैरिबिन्थिना—तारपीन का तेल, (TEREBINTHINA)

(१) **इसका मुख्य-प्रभाव गुर्दे, मूत्राशय तथा मूत्र-नली पर है** (Chief malignity is centered on urinary organs—kidneys, bladder and urethra)—इसके प्रभाव का मुख्य-क्षेत्र गुर्दे, मूत्राशय तथा मूत्र-नली है। गुर्दे, मूत्राशय तथा मूत्र-नली की शिकायतों के साथ कमर में दर्द भी रहता है। ये सब लक्षण **बरबेरिस** में भी पाये जाते हैं, परन्तु इनमें भेद यह है कि **टैरिबिन्थिना** में मूत्र बूंद-बूंद करके निकलता है, और जलन के साथ निकलता है, और मूत्र में रुधिर की मात्रा **बरबेरिस** की अपेक्षा अधिक होती है। अगर पेशाब को शीशी में रख दिया जाय, तो वह भूरा, काला, धुएं के-से रंग का, रुधिर-मिश्रित होता है। जहां तक जलन का सम्बन्ध है **टैरिबिन्थिना** की जलन **कैन्थरिस** और **कैनेबिस सैटाइवा** की जलन के अधिक निकट है, **बरबेरिस** के निकट नहीं। कमर-दर्द हो, मूत्र में रुधिर का अंश अधिक हो, मूत्र बूंद-बूंद करके आये, जलन हो और मूत्र में कष्ट हो, तो इस औषधि की तरफ ध्यान जाना चाहिये। पेशाब की बीमारियों में चाहे एलब्यूमिनोरिया हो, ब्राइट्स डिज़ीज़ हो, गुर्दे की सूजन—नेफ्राइटिस हो, इन सब में उक्त लक्षण होने पर इस से लाभ होता है।

(२) **मूत्र में बनफशे की गन्ध या मीठी गन्ध आती है**—इसका अद्भुत-लक्षण यह है कि रोगी के पेशाब में से बनफशे की गन्ध आती है। इस लक्षण को 'मीठी'-गन्ध भी कहा जाता है। पेशाब की गन्ध के विषय में कहा जाता है कि **नाइट्रिक एसिड** तथा **बेनज़ोइक एसिड**—इन दोनों में घोड़े के पेशाब की-सी गन्ध आती है।

(३) **जीभ लाल और बिल्कुल चिकनी होती है**—इस औषधि का किसी भी रोग में मुख्य-लक्षण जीभ का लाल होना और बिल्कुल चिकनापन है। जीभ के कांटे सब मिट जाते हैं, जीभ एकदम चिकनी हो जाती है।

(४) **शक्ति**—१, ६, ३०

थेरीडियन (THERIDION)

(१) **आंखें बन्द करते ही या शोर से घुमेरी या चक्कर आ जाना** (Vertigo on closing the eyes)—डॉ० नैश का कहना है कि उन्होंने इस लक्षण को ठीक-से आजमा कर देख लिया है। किसी भी रोग में अगर आंखें बन्द करते ही घुमेरी या चक्कर आ जाय, तो इससे लाभ होता है। मन्दिर, मस्जिद गिर्जे में आंखें बन्द करके प्रार्थना करते समय भी चक्कर आ जाता है। आंखें बन्द करने में जी मिनलाने लगता है। इस औषधि में चक्कर आने

का दूसरा लक्षण यह है कि ज़रा-से शोर से, कपडे को फाडने, दरवाज़े को बन्द करने, किसी भी आहट से रोगी को चक्कर आ जाता है। ज़रा-से भी शोर का शब्द रोगी के सम्पूर्ण शरीर मे मानो घुसता चला जाता है। शोर से चक्कर आ जाना विलक्षण-लक्षण है। थोडी-सी आवाज़ भी शरीर को भेद देती है। दात के दर्द मे ऐसा अनुभव होता है कि आवाज़ दात को भेद कर भीतर चली जा रही है और रोगी को मितली आने लगती है।

(२) रीढ मे नाज़ुकपना (Great sensitiveness of spine)—रोगी की रीढ की हड्डी नाजुक होती है, उस मे दर्द होता है, रोगी कुर्सी पर टेढा होकर बैठता है जिस से रीढ की हड्डी पर ज़ोर न पडे, पड जाने से दर्द होता है।

(३) पीठ मे नीचे के स्थान मे जलन (Burning in lumbar region)—डॉ० टायलर **पिकरिक ऐसिड** पर लिखती हुई 'होम्योपैथिक ड्रग पिक्चर्स' मे लिखती है कि **थेरीडियन** के मुख्य-लक्षणो मे एक लक्षण पीठ के नीचे के स्थान (Lumbar region) मे जलन का होना है। रोगी स्पर्श और शोर को सहन नही कर सकता। **पिकरिक ऐसिड, जिकम** तथा **फॉस** मे भी कभी-कभी कमर के नीचे जलन होती है।

(४) थेरीडियन तथा थाइरॉयडीन—होम्योपैथी मे एक औषधि थाइरॉयडीन है। वह थाइरॉयड ग्लैंड से बनी है और एक नोसोड है। इसका वर्णन हमने पुस्तक के अन्त मे नोसोड्स के प्रकरण मे किया है। उसका प्रभाव गल-गड (गॉयटर) मे होता है। जिस औषधि का हम ज़िक्र कर रहे हैं वह **थेरीडियन** है। यह सन्तरे के पेड की एक मकडी का नाम है, उसके जीते-जी का टिंचर बनाया जाता है। इसकी 'परीक्षा' (Proving) डॉ० हेरिंग ने की थी जिन्होने **लैकेसिस** आदि सर्प-विषो की भी अपने ऊपर परीक्षा की थी। **थेरीडियन** तथा **थॉइरायडीन** को एक ही नही समझ लेना चाहिये।

(घुमेरी या चक्कर के लिये मुख्य-मुख्य औषधिया)

थेरीडियन—आख बन्द करने या अन्धेरे मे चक्कर आना, शोर से चक्कर आना।

पल्स तथा साइलीशिया—ऊपर देखने से चक्कर आना।

फॉस, सल्फ, स्पाइजेलिया—नीचे देखने से चक्कर आना।

कोनायम—सिर को एक तरफ घुमाने से चक्कर आना, लेटते हुए चक्कर आना।

ब्रायोनिया—सिर किसी प्रकार भी हिलाने से चक्कर आना।

कौक्युलस तथा नक्स वोमिका—गाडी मे चढने या नीद कम आने से चक्कर आना--जैसे पहरेदार को चक्कर आना।

लैकेसिस—सोने के बाद चक्कर आ जाना।

पल्स, साइक्लेमन—माहवारी बन्द होने से चक्कर आना।

जेल्स, साइलीशिया, पेट्रोलियम—सिर के पीछे मे चक्कर आना।

ब्रायोनिया, कौक्युलस, फॉस, पल्स—अगर चक्कर के समय लेटने मे लाभ हो।

बोरेक्स—नीचे उतरते हुए चक्कर आना।

कैलकेरिया कार्ब—ऊंचाई पर चढने हुए चक्कर आना।

(३) शक्ति—३०, २००

थूजा (THUJA)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) 'साइकोसिस' क्या है? थूजा साइकोसिस-दोषनाशक औषधि है

(२) गोनोरिया, या उसे दवा देने से—गठिया, वात-रोग, पैरों मे दर्द, मस्से, दमा आदि—जो रोग उत्पन्न होते हैं उनमे लाभ करता है (गोनोरिया मे कैनेबिस सैटाइवा और दमे मे आर्स से तुलना)

(३) टीके के बुरे परिणाम—'वैकसीनोसिस'—से दमा तथा स्नायु-शूल, दस्त आदि अनेक रोगो को थूजा दूर करता है

(४) मानसिक - लक्षण — झगडालूपन, उन्निद्रता, आत्मघात, असभव बद्धमूल धारणाए (Impossible fixed ideas)

(५) खोपडी मे कील चुभने का-सा सिर-दर्द, किसी भी दर्द मे पेशाव ज्यादा होना, पेशाव का विचार आते ही पेशाव के लिये भागना

(६) शरीर के सिर्फ खुले भाग पर पसीना आना, सोते ही पसीना आना, जागते ही सूख जाना

MODALITIES
प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*गर्मी से, सिर लपेटने से कमी
*बायीं करवट सोने से कमी
*टांगो को एक-दूसरी पर रखकर लेटने से रोग मे कमी

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*नमीदार ठंड से रोग बढना
*बिस्तर की गर्मी से रोग बढना
*३ बजे सवेरे रोग का बढना
*साल-साल बाद रोग का बढना
*पेशाब को रोक न सकना
*गोनोरिया के बुरे परिणाम
*टीके के बुरे परिणाम
*चाय तथा प्याज नापसन्द

(१) **'साइकोसिस' क्या है ? थूजा साइकोसिस-दोष नाशक है**—हम पहले **मर्क्यूरियस** तथा **सल्फर** के प्रकरण मे लिख आये हैं कि हनीमैन का कहना था कि १२ साल के निरन्तर परीक्षण से वे इस परिणाम पर पहुचे कि मानव-समाज के रोग सुनिर्वाचित-होम्योपैथिक-औषधियो से भी इसलिये जड से नही जाते क्योकि अनेक रोगियो के शरीर मे 'सोरा'-'साइकोसिस'-'सिफिलिस' का विष संचार कर रहा होता है जो रोगी के ठीक होने मे बाधक बना होता है। अगर रोगी के शरीर मे सोरा-दोष, या गोनोरिया (साइकोसिस), या सिफिलिस का दोष नही होगा, तब तो **एकोनाइट, बेलाडोना, नक्स वोमिका, इग्नेशिया** आदि औषधियो से अवश्य लाभ होगा, परन्तु अगर रोगी के शरीर मे इनमे से कोई दोष होगा, तो सुनिर्वाचित-औषधियो मे रोग ठीक हो-होकर भी फिर-फिर उभर पडेगा या ठीक ही नही होगा । इसी कारण हनीमैन ने अत्यन्त परिश्रम से एन्टी-सोरिक, एन्टी-साइकोटिक तथा एन्टी-सिफिलिटिक औषधियो का पता लगाया जिन मे से मुख्य तौर पर **सल्फर** सोरा-दोषनाशक है, **थूजा** साइकोसिस-दोषनाशक है और **मर्क सौल** सिफिलिस-दोषनाशक है।

प्रश्न यह है कि 'साइकोसिस' क्या है ? साइकोसिस का अर्थ है—गोनोरिया के तेज़ दवाओ से दवा दिये जाने पर शरीर की वह अवस्था जिसमे गोनोरिया का विष बाहर निकलने के स्थान मे दब कर शरीर के भीतर के कोमल अगो पर अपना प्रभाव करने लगता है। गोनोरिया के दवा दिये जाने की अवस्था को समझने के लिये कुछ बातो की जानकारी आवश्यक है ।

गोनोरिया पर प्रकाश डालते हुए डॉ० कैन्ट अपनी पुस्तक 'लेक्चर्स ऑन होम्योपैथिक फिलासफी' मे लिखते हैं कि गोनोरिया मे 'मूत्र-नली की साधारण शोथ' (Simple inflammation of urethra) हो जाती है, उस मे से स्राव आने लगता है। मूत्र-नली की 'साधारण-शोथ' हो जाने को ही गोनोरिया नही कहा जा सकता । इस प्रकार की शोथ देर तक धूप मे रहने, सर्दी लग जाने या गर्म चीज़े खाने से भी हो सकती हैं । यह शोथ 'सक्रामक' (Contagious) नहीं होती। इस प्रकार की 'साधारण-शोथ' (Simple) के अतिरिक्त मूत्र-नली की एक 'विशेष-शोथ' (Specific) होती है, जो सक्रामक होती है । यह गोनो-रिया-रोग से दूषित-स्त्री के साथ सहवास से होती है, उसके बिना नही । यही असली अर्थो मे गोनोरिया है। इसे 'मूत्र-नली की विशेष-शोथ' (Specific inflammation of urethra) कहा जा सकता है। मूत्र-नली की इस विशेष-शोथ के दो भाग हैं एक है—'नवीन' (Acute), दूसरी है—'पुरानी' (Chronic) । 'नवीन-गोनोरिया'—ऐसा गोनोरिया है, जो व्यक्ति को जीवन मे पहली बार हुआ हो, जिसका बीज उसे माता-पिता द्वारा वश-परपरा से न प्राप्त हुआ हो, जो कुछ सप्ताह या कुछ मास मे ठीक हो जाय । यह तीन क्रमो

मे से गुज़रता है—'पूर्वरूप' का क्रम (Prodromal period), 'पूर्ण रूप' का क्रम (Period of progress) तथा 'क्षय रूप' का क्रम (Period of decline), और जिस प्रकार ज़ुकाम, बुखार आदि दूसरे रोग इन तीन क्रमो से गुज़र कर शान्त हो जाते हैं, वैसे यह भी इन तीन क्रमो मे से गुज़र कर शान्त हो जाता है और इस नूतन-रोग की होम्योपैथिक-चिकित्सा की जाय, तो जड मे नष्ट हो जाता है, और इसकी शरीर मे 'धातुगत-प्रकृति' (Constitutional miasm) बनने नही पाती। इस 'नवीन-गोनोरिया' (Acute gonorrhea) को नष्ट कर देने से शरीर मे ऐसी विकृति नही उत्पन्न हो जाती जिसे 'साइकोसिस' कहा जाय। गोनोरिया के जिस 'विशेष-रूप' (Specific) को हमने 'पुराना' (Chronic) नाम दिया है, वह 'पूर्वरूप', 'पूणरूप', 'क्षयरूप'—इन तीन क्रमों मे से गुज़र कर अपने-आप नष्ट नही हो जाता, वह सम्पूर्ण-शरीर को घेर कर बैठा रहता है, शरीर मे इस रोग को ग्रहण करने का वंशानुगत रूप से रुझान होता है, यही 'साइकोसिस' है, और हनीमैन के कथनानुसार योग्य-चिकित्सक का काम इसी को नष्ट करना है।

मूत्र-नली की शोथ से मवाद तो तीनों प्रकार के गोनोरिया से आने लगता है—'साधारण' से, 'नवीन' से, 'पुराने' से, परन्तु पुराने गोनोरिया मे जब मवाद आने लगता है, तब उसे ऐलोपैथिक-चिकित्सा मे सिलवर नाइट्रेट आदि से दवा देने पर रोग के लक्षण बाहर प्रकट होने के स्थान मे अन्तर्मुखी हो जाते हैं। 'पुराने-गोनोरिया' (Chronic gonorrhea) को दवा देने पर शरीर की जो विकृत-अवस्था हो जाती है, उसी को 'साइकोसिस' कहते है। 'साइकोसिस' की इस अवस्था को सूचित करनेवाले अनेक चिन्ह है। उदाहरणार्थ, अगर शरीर मे 'साइकोसिस' की 'धातुगत-अवस्था' (Constitutional state) हो, तो शरीर मे जगह-जगह मस्से निकल आते हैं, अंजीर या फूलगोभी की शक्ल के मस्से निकलते हैं, हाथ, नाक, पुरुष की जननेन्द्रिय की खाल पर, गुदा-प्रदेश मे तथा अन्य स्थानो पर उभरे मस्से (Wart-shaped excrescences) दिखलाई पडते हैं, रोगी कमज़ोर, रक्तहीन हो जाता है।

डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि पुरुष को गोनोरिया जिस हालत मे होता है, उसी हालत मे वह रोगी की स्त्री को मिलता है। गोनोरिया की पूर्वावस्था (Prodromal stage) मे मूत्र-नली से पस-मिश्रित स्राव निकलता है। अगर रोगी इस हालत मे पत्नी के साथ सहवास करता है, तो पत्नी को भी पूर्वावस्था का ही गोनोरिया हो जाता है, उसे भी पस आने लगता है। पूर्वावस्था के बाद जब क्षयावस्था आती है, इंजेक्शन आदि से पस सुका दिया जाता है, अगर वह तब पत्नी के साथ सहवास करता है, तब पत्नी को भी उसी अवस्था का गोनोरिया होता है, उसे भी पस नही आता। प्राय देखा जाता है कि एक स्वस्थ लडकी

विवाह के दो-एक साल के भीतर ही जरायु या डिम्ब सबधी रोगो से पीडित हो जाती है। पूछने पर पति कहता है कि उसे गोनोरिया हुआ था, परन्तु इजेक्शनों से ठीक हो गया था, तब उसने विवाह किया, परन्तु इजेक्शन से रोग नष्ट नही हुआ था, अन्तर्मुखी हो गया था, केवल पस सूखा था, और उसी हालत का गोनोरिया पत्नी को हुआ जिस से उसे जरायु-सबधी रोग हो गये, रक्तहीनता आ गई, तबीयत गिरी-गिरी रहने लगी। पति से पूछा जाय तब भी पता चलेगा कि जब से इजेक्शनो से उसका गोनोरिया ठीक हुआ लगता है, तब से उसने भी कभी अपने को पूर्ण स्वस्थ नही अनुभव किया। यह सारी अवस्था 'साइकोसिस' के कारण ही होती है। इन पति-पत्नी के सन्तान या तो होती नही, या बहुत कम होती है। क्योकि 'साइकोसिस' मे स्त्री के वन्ध्या हो जाने का खतरा रहता है। सन्तान भी जन्म की रोगी, रक्तहीन, मोम का-सा चेहरा, पतले दस्त, हाज़मा बिगडा हुआ, बढता नही, पनपता नही—ऐसी हालत को देखकर चिकित्सक को यही सोचना पडता है कि बालक को वश-परपरा की विरासत मे कही 'साइकोसिस' की प्रकृति मिली है जो उसके पूर्ण-स्वस्थ होने मे बाधक हो रही है।

'साइकोसिस' का रोग 'सोरा-दोष' की तरह फोडे-फुन्सी के रूप मे अपने को—त्वचा पर प्रकट नही करता, 'सिफिलिस' की तरह मुह मे, गले मे, जननेन्द्रिय पर घाव के रूप मे या त्वचा पर विशेष प्रकार के चकत्तो के रूप मे भी अपने को नही प्रकट करता, अगर त्वचा पर इसका कोई रूप दिखाई पडता है तो मस्सो के रूप मे ही दीखता है, परन्तु शरीर के भीतर गठिया, वात-रोग या रक्तहीनता के रूप मे यह प्रकट होता है। 'साइकोसिस' का यह धातुगत-दोष थूजा से दूर होता है।

थूजा साइकोसिस-दोष नाशक है—डॉ० नैश लिखते हैं कि सोरा-साइकोसिस-सिफिलिस का सिद्धान्त ठीक है या गलत, कुछ नही कहा जा सकता, परन्तु यह बात अनुभव मे सिद्ध है कि सल्फर, थूजा तथा मर्क ये तीनो औषधिया शरीर मे रोग ठीक होने की किसी बाधा को अवश्य दूर करती हैं क्योंकि इनके देने के बाद या तो रोग ही दूर हो जाता है या सुनिर्वाचित-औषधि, जो पहले काम नही करती थी, अब ठीक-से काम करने लगती है। उदाहरणार्थ, जब शरीर पर मस्से दिखलाई देते है तब भिन्न-भिन्न रोगो मे यह सोचकर कि रोगी साइकोटिक है थूजा देने मे या तो लाभ ही हो जाता है या चुनी हुई दवाई जो फल नही देती थी ठीक काम करने लगती है।

थूजा के सम्बन्ध मे हनीमैन ने परीक्षा कसे की—इसकी भी एक कहानी है। धार्मिक-सस्था के एक विद्यार्थी ने अचानक इस औषधि के कुछ पत्ते चबा लिये। उसे गोनोरिया के-से लक्षण प्रकट होने लगे, मूत्र-नली मे शोथ हो गया,

मवाद आने लगा। इन लक्षणों को देखकर हनीमैन ने इसकी परीक्षा शुरू की, और इस परिणाम पर पहुँचे कि गोनोरिया के लक्षणों में यह सर्वोत्तम औषधि है। इस औषधि के वृक्ष का नाम है 'जीवन का वृक्ष'—Arbor vitae—Tree of life—यही इसकी उत्कृष्टता का अच्छा प्रमाण है। हनीमैन ने मस्सों तथा गोनोरिया के लिये इसे "The only efficacious remedy"—"इन रोगों में एकमात्र उपयोगी औषधि" कहा है। उन्होंने पहले ३० शक्ति में इसकी परीक्षा की, उसके बाद ६० शक्ति में, और ६० शक्ति में परीक्षा करने के बाद लिखा कि ऊँची शक्ति में जाने पर इसके गुण कम होने के स्थान पर बढ़ गये। थूजा के विषय में हनीमैन ने लिखा है "An uncommonly powerful medicinal substance. . . useful in some of the most serious diseases of mankind for which hitherto there has been no remedy" इस औषधि को उन्होंने मनुष्य के लिये ही नहीं, मानव-समाज के लिये उपयोगी कहा है क्योंकि उनका अनुभव था कि मनुष्य-जाति का बहुत बड़ा भाग 'साइकोसिस'-दोष से पीड़ित है।

(२) गोनोरिया, या उसके दबा देने से—गठिया, वात-रोग, पैरों में दर्द, मस्से, दमा आदि—जो रोग उत्पन्न होते हैं उनमें लाभ करता है (कैनेबिस से तुलना)—गोनोरिया में मूत्र-नली सूज जाती है उस सूजन की वजह से मूत्राशय पूरा खाली नहीं होता, मूत्र की कुछ बूंदें बची रह जाती हैं, मूत्र कर चुकने के बाद भी धीरे-धीरे बूंदें रिसती रहती है, कपड़ा खराब हो जाता है। मूत्र-नली से पतला, नीला-सा स्राव निकलता है, पेशाब करने के बाद जलता हुआ दर्द होता है। ऐसे गोनोरिया में इस से लाभ होता है। 'साइकोसिस'-दोष-युक्त स्राव में सर्वोत्तम औषधि थूजा ही है। अगर मूत्र-नली के शोथ तथा उसके स्राव का सम्बन्ध गोनोरिया से न हो, तो कैनेबिस सैटाइवा ही रोग के शमन के लिये पर्याप्त है, परन्तु जिन रोगियों में 'साइकोसिस' का विष काम कर रहा है, जो गोनोरिया से पीड़ित हैं, उन्हें कैनेबिस से लाभ नहीं होता, इस से सिर्फ पेशाब करते समय या बाद की जलन में और पीले-नीले गाढ़े स्राव को कम करने में फायदा हो सकता है, परन्तु जब तक इस के बाद एन्टी-साइकोटिक दवा नहीं दी जाती, तब तक रोग जड़-मूल से नहीं जाता। थूजा के सम्बन्ध में यह बात नहीं है क्योंकि यह रोग को जड़ से उखाड़ फेंकता है।

गोनोरिया के दब जाने पर गठिया या वात-रोग—(Arthritis, Gout and Rheumatism), रस टॉक्स से तुलना—हम ऊपर लिख आये हैं कि गोनोरिया के स्राव को तेज दवाइयों से दबा दिये जाने पर वह बाहर से मिटता दीखता है, परन्तु असल में मिटने के स्थान में वह अन्दर को मुड़ जाता है और शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर अपना असर करने लगता है। प्रायः उसका

प्रभाव जोडो पर होता है जिस से जोडो मे दर्द होने लगता है। गठिया इसी का परिणाम है। जोडो के दर्द, गठिया के दर्द और वात-रोग 'साइकोसिस' से ही हुआ करते हैं। अगर रोगी से इन कष्टो का इतिहास पूछते-पूछते यह पता चले कि उसे कभी गोनोरिया हुआ था, या उसके खानदान मे इसका कोई लेश है, तब थूजा आश्चर्यजनक लाभ करेगा। जुडे हुये जोड खुलने लगेंगे, जो रोगी चल-फिर नही सकता था वह आसानी से घूमने-फिरने लगेगा। कभी-कभी रोगी को हरकत से आराम होता है, चिकित्सक रस टॉक्स देने की सोचता है, परन्तु 'साइकोसिस' होने पर रस टॉक्स से लाभ नही होता, थूजा से ही लाभ होता है।

गोनोरिया के दब जाने पर साइकोसिस के कारण पैरो मे दर्द—जब गोनोरिया का स्राव तेज़ दवाइयो से दबा दिया जाता है, तब कभी-कभी पैर के तलुओ मे दर्द होने लगता है। रोगी मे ऐसा 'धातु-दोष' (Dyscrasia) पैदा हो जाता है कि पैर के तलुए, घुटने, टखने, गिट्टो के जोड, पीठ तथा पेडू से टाग मे आनेवाली शियाटिक-नर्व (Sciatica) मे दर्द होने लगता है। कभी-कभी इसका आक्रमण हाथो पर होता है, प्राय पैरो पर होता है। दर्द इतना तेज होता है कि रोगी चैन से नही बैठ सकता, चलते-फिरते रहने से कुछ आराम मालूम होता है। परन्तु जैसा हमने अभी लिखा, क्योकि इस तकलीफ का कारण 'साइकोसिस' है, इसलिये रस टॉक्स के लक्षण होने पर भी उस से लाभ नही होता। इन लक्षणो के पीछे 'साइकोसिस' होने पर थूजा या मेडोराइनम से लाभ होता है।

गोनोरिया के दब जाने या साइकोसिस के कारण अजीर या फूलगोभी की शक्ल के मस्से या ट्यूमर—अजीर या फूलगोभी की तरह के फटे-कटे मस्से 'साइकोसिस' का विशेष-लक्षण है। ऐसे मस्से शरीर मे किसी भी जगह हो सकते हैं। कई रोगियों की जननेन्द्रिय पर ऐसे मस्से हो जाते हैं जिनकी अजीर की-सी शक्ल होती है। वे लिंग की त्वचा के भीतरी भाग पर या लिंग की त्वचा के अग्र-भाग पर हो जाते है। इन मस्सो मे बदबूदार पतला-पतला स्राव भी रिसा करता है जिस से रोगी परेशान रहता है। रोगी की दोनो जाघो के अन्तराल के भागो की अण्डकोश के साथ रगड लगने से त्वचा मे खराश और जलन होती रहती है, अण्डकोशो की थैली से भी स्राव निकला करता है। स्त्रियो मे इस प्रकार के मस्से भग के आस-पास हो जाते है। प्राय ऐसे मस्से गुदा-प्रदेश मे पाये जाते हैं। थूजा की स्वस्थ व्यक्तियो पर परीक्षा (Proving) करने से पाया गया है कि इस से शरीर के कोष्ठको मे सीमातीत वृद्धि (Cell proliferation) होने लगती है, इसी कारण मस्से हो जाते है, ट्यूमर भी हो जाते हैं। यही कारण है कि मस्सो तथा ट्यूमर के लिये इसका उपयोग लाभप्रद सिद्ध होता है। कोष्ठको की वृद्धि मे हाइड्रोकोटाइल भी उपयोगी है।

डा० टायलर लिखती है कि एक कोचवान को उसके घोड़ों के मस्सों के कारण एक शीशी में थूजा का मूल-अर्क (टिंक्चर) देकर यह कहा गया कि इस का कुछ भाग पानी में डालकर वह इन मस्सों को धोये। उसने समझा कि इस औषधि को वह घोड़े के दाने में डालकर उसे खिला दे। थूजा के मूल-अर्क को दाने के साथ खिलाने से वे सारे मस्से झड़ गये।

थूजा से ट्यूमर का ठीक होना—थूजा से ट्यूमर ठीक होने की एक विलक्षण घटना का उल्लेख डा० बार्कर ने 'मिरेकल्स आफ हीलिंग' में किया है। आस्ट्रिया के रिटायर्ड फील्ड-मार्शल कॉउन्ट रैडेट्स्की की आंख में ट्यूमर था। यह कॉउन्ट नैपोलियन के साथ लड़नेवाली मित्र-पक्षों की सेना का मुखिया था। जर्मनी के बादशाह ने फील्ड मार्शल के इस ट्यूमर की आंख में अपने विशेषज्ञों से चिकित्सा कराई परन्तु ट्यूमर बढ़ता ही गया। अन्त में होम्योपैथ डा० हार्टंग ने उन्हें थूजा ३० तीन औंस पानी में डालकर एक-एक चम्मच लेने को दिया। थूजा को बाहर ट्यूमर पर भी लगाया जाता रहा। चार औंस कोसे पानी में मूल-अर्क की ६ बूंद डाल कर उस से प्रति घंटे ट्यूमर को धोया भी जाता रहा। चौथे दिन ट्यूमर से होनेवाला आंख का दर्द शान्त हो गया, ट्यूमर से रिसनेवाला दुर्गंधित स्राव बन्द हो गया। आठवें दिन कार्बो एनिमैलिस ३० की एक मात्रा दी गई और कार्बो एनिमैलिस १२ से आंख को धोया जाने लगा। थूजा से धोने का क्रम भी जारी रहा। इन दोनों औषधियों का पर्याय-क्रम से भीतर और बाहर प्रयोग किया जाता रहा। छः सप्ताह में आंख का ट्यूमर जाता रहा, आंख ठीक हो गई। काउन्ट की ७५ वर्ष की आयु में उसका यह इलाज हुआ और ठीक होने के बाद ९२ वर्ष की आयु में उसका देहान्त हुआ।

कई लोग किसी भी प्रकार या किसी भी स्थान के मस्से पर थूजा का प्रयोग करते हैं। यह ठीक नहीं है। मस्से का लक्षण कॉस्टिकम, ऐन्टिम क्रूड तथा स्टैफिसैग्रिया में भी है। कॉस्टिकम का मस्सा एक ठोस-जान तथा कड़ा (Solid body and very thorny) होता है, थूजा का मस्सा कटा-कटा गोभी के फूल की तरह का होता है। कॉस्टिकम का मस्सा साधारणतः चेहरे पर, ऐन्टिम क्रूड का हाथ-पैर के तलुओं पर, स्टैफिसैग्रिया का साधारणतः आंख की पलकों पर निकलता है। थूजा के मस्से का मुख्य-लक्षण इसका अंजीर की तरह का होना या फूल गोभी की तरह कटा-कटा होता है। इस औषधि को शक्तिकृत देने के साथ-साथ मस्से पर मूल-अर्क को लगाना भी चाहिये।

गोनोरिया के दब जाने से दमे का रोग, आर्सेनिक से तुलना—दमे में प्रायः आर्सेनिक के लक्षण प्रकट होते है, परन्तु अगर रोग की पृष्ठ-भूमि में 'साइकोसिस' है, अगर रोगी का गोनोरिया दब जाने से दमे का प्रकोप हुआ है,

तव आर्सेनिक रोग की जड को नही पकड सकेगा, रोगी को कुछ देर के लिये ही इस से आराम होगा, आर्सेनिक द्वारा 'साइकोसिस' के 'धातुगत-दोष' (Constitutionality) तक नहीं पहुचा जा सकता। जहा तक सोरा और सिफिलिस का सबंध है आर्सेनिक इन दोषो को जड से पकड लेता है, इसका प्रभाव देरतक रहता है, परन्तु जहा तक 'साइकोसिस' का—गोनोरिया के दब जाने पर दमा आदि रोग के उभर आने का—संबध है, आर्सेनिक रोग की तह-तक नही पहुच पाता, थूजा या नेट्रम सल्फ 'साइकोसिस'-दोष मे रोग की तह तक जा पहुचते हैं, रोग को ठीक कर देते हैं। 'साइकोसिस' आदि मे रोग को ठीक करने का क्या अर्थ है? हमने पहले ही कहा कि 'साइकोसिस' मे दमा आदि रोग गोनोरिया के स्राव को तेज दवाओ से दबा दिये जाने के कारण प्रकट होते हैं। थूजा या नेट्रम सल्फ़ से यह दबा हुआ स्राव फिर प्रकट हो जाता है, इसके प्रकट होते ही दमा शान्त हो जाता है, जो विष भीतर जाकर उथल-पुथल मचा रहा था, वह भीतर का रास्ता छोडकर बाहर आ जाता है, अब बाहर आये शत्रु पर जो छिप कर प्रहार करने के स्थान मे सामने आ खडा हुआ है, प्रहार करना आसान हो जाता है। या तो थूजा से ही, या उपयुक्त औषधि से रोग ठीक हो जाता है। होम्योपैथी के मत के अनुसार रोग के ठीक होने का क्रम रोग का केन्द्र से परिधि की तरफ, भीतर से बाहर की तरफ आना है। अगर रोग भीतरी अगो को छोडकर बाहर, त्वचा पर आने लगे, तब समझ लेना चाहिये कि रोगी स्वस्थ होने लगा है। अगर रोग बाहर को छोडकर भीतर जाने लगे तब समझ लेना चाहिये कि रोग उग्र होने लगा है।

डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि यद्यपि आर्सेनिक साधारणतौर पर 'जीर्ण'—'क्रौनिक-औषधि' (Chronic remedy) है, परन्तु जहा तक साइकोसिस का संबध है, वहा तक यह 'तरुण'—'एक्यूट-औषधि' (Acute remedy) का काम करता है। 'साइकोसिस' के क्षेत्र मे आर्सेनिक को 'एक्यूट-औषधि' तथा थूजा को 'क्रौनिक-औषधि' कहा जा सकता है क्योंकि गोनोरिया के स्राव के दब जाने पर दमा आदि के जो लक्षण प्रकट होते हैं, वे आर्सेनिक से जड-मूल से नष्ट नही होते, थूजा से वे सदा के लिये चले जाते हैं।

(३) **टीके के बुरे परिणाम—'वैक्सीनोसिस'—से दमा, मृगी, स्नायु-शूल, दस्त आदि अनेक रोगों को थूजा दूर करता है**—कोई समय था जब चेचक का रोग सर्वत्र फैला हुआ था। हर किसी को चेचक हो जाया करती थी। लेडी मेरी वोर्टले मौंटेगु जब पूर्वीय-देशो की यात्रा को निकली, तब टर्की मे उन्होने देखा कि वहा के लोग चेचक के रोगी के पस की कुछ मात्रा लेकर स्वस्थ-व्यक्ति के शरीर मे प्रविष्ट कर देते थे। इसे 'इनओक्युलेशन' (Inoculation) कहा जाता है। इस से उस व्यक्ति को हल्की चेचक हो जाती थी, और आगे के लिये

उसे चेचक का डर नही रहता था। १७२१ मे इग्लैंड मे लेडी मौन्टेगु ने इस प्रथा को जारी किया। परन्तु यह तरीका खतरे से खाली नहीं था। हल्की होने पर भी आखिर थी तो यह चेचक ही। १७९८ मे जेन्नर ने गौ के चेचक के विष (Cow-pox) से चेचक के टीके का प्रचार किया जो अव तक चला आ रहा है। इसे 'वैकसीनेशन' (Vaccination) कहते हैं। यह तरीका होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुकूल बैठता है क्योकि होम्योपैथी के अनुसार एक रोग को उसी रोग से (Same) नही, परन्तु उस-जैसे (Similar) रोग से दूर किया जाता है। इस प्रकार जान्तव-विष मे रोग को दूर करने के सिद्धान्त को हनीमैन ने 'आइसोपैथी' (Isopathy) का नाम दिया, परन्तु उनका कहना था कि वैकसीनेशन के लिये तय्यार की जानेवाली इस औषधि को होम्योपैथी (Homoeopathy) के शक्तिकरण के सिद्धान्त के अनुसार तय्यार किया जाना चाहिये। होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार वैकसीनेशन के लिये जो शक्तिकृत औषधि तय्यार की जाती है उसका नाम **'वेरियोलीनम'** या **'वैकसीनीनम'** है क्योकि होम्योपैथी मे औषधि की स्थूल मात्रा नही दी जाती, सूक्ष्म और शक्तिकृत मात्रा दी जाती है, इसलिये वह समान-लक्षणो के होने पर 'प्रतिरोधक' (Prophylactic) का तो काम करती है, टीके के दुष्परिणाम नही होने देती। चेचक के 'प्रतिरोधक' के रूप मे होम्योपैथ **वेरियोलीनम** २०० शक्ति की एक मात्रा दिया करते हैं जो टीके का काम करती है।

वैकसीनेशन से लाभ इसलिये होता है क्योकि यह होम्योपैथी के अनुकूल सिद्धान्त है, परन्तु स्थूल मात्रा मे देने के कारण इस मे हानि भी कम नही होती। टीके से जो हानिया होती है उनकी तरफ डॉ० वर्नेट ने चिकित्सको का ध्यान खीचा। टीके से होनेवाले दुष्परिणामो का नाम उन्होने 'वैकसीनोसिस' (Vaccinosis) रखा।

डॉ० वर्नेट का कहना था कि होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार एक ही रोग का कोई स्पेसिफिक इलाज नही है। रोगी और औषधि के लक्षण जहा सम बैठेंगे, वही औषधि सफल होगी, अन्यत्र नही। वैकसीनेशन—चेचक का टीका—भी जिन रोगियो के लक्षणो के सम होता है, उन्हीको लाभ करता है, जिनके लक्षणो के सम नही होता, उनके शरीर के भीतर जाकर यह विष नाना-प्रकार के रोग उत्पन्न कर देता है। उदाहरणार्थ, ऐसे रोगियो की कमी नही है जो कहते हैं कि जबसे उन्होने चेचक का टीका कराया तबसे स्वास्थ्य विगडता चला आ रहा है। इस प्रकार टीके के वाद होनेवाला जीर्ण-रोग (Chronic ill-health) भिन्न-भिन्न व्यक्तियो के वैयक्तिक-स्वास्थ्य की भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न रोगो का रूप धारण कर लेता है। किसी को दमा, किसी को मृगी, किसी को स्नायु-शूल—सिर-दर्द—किसी को दस्त आने लगते हैं। कई

लोगो को टीका लगाने पर वह उठता नही—इस का कारण यह है कि वे टीके के विष को जज्ब (Absorb) कर लेते हैं। टीके का न उठना टीके के विष को जज्ब कर लेना है और उस से वे रोग उठ खडे होते हैं जिन्हें डॉ० बर्नेट ने 'वैकसीनोसिस' का नाम दिया है।

डॉ० बर्नेट का कहना था कि 'वैकसीनोसिस' के कारण जो रोग उत्पन्न होने हैं उनका 'विष-नाशक' (Antidote) थूजा है। जिन रोगो का प्रारम्भ टीके से हुआ हो, उनमे थूजा देने से तुरन्त लाभ होता है। इस प्रकरण मे डॉ० बर्नेट तथा अन्य चिकित्सको के कुछ अनुभवो का हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं

वैकसीनोसिस से हुए दमे का थूजा से ठीक होने का दृष्टान्त—एक नर्स थी जिसे दो साल से दमे के जोर-के दौरे पडते थे जो तीन-चार दिन तक इतने उग्र होते थे कि वह सास तक मुश्किल से ले पाती थी। उसे पाच वार चेचक के टीके लग चुके थे, पाचवा टीका उभरा नही था। उसे उच्च-शक्ति की **थूजा** की एक मात्रा दी गई, उस के वाद साढे तीन साल तक उसे दमे का आक्रमण नही हुआ। इस के वाद फिर रोग आया, इस वार फिर थूजा दिया गया और वर्नेट लिखते हैं कि नौ मास बीत जाने पर भी रोगिणी वापस नही लौटी जिसका अभिप्राय यही है कि वह ठीक हो गई। इसी प्रकार एक अन्य देवी का उल्लेख करते हुए डॉ० वर्नेट लिखते है कि उसको सात साल से दमा था, उसकी माता को, पिता को भी दमा था। माता के परिवार मे तपेदिक के भी लक्षण थे। उस देवी का कहना था कि सात साल पहले जव उसने चेचक का टीका करवाया, वह बिगड गया, उसके वाद से ही उसे दमे का रोग हो गया। उसे **थूजा** देने पर वह साल भर दमे से मुक्त रही, औषधि की दूसरी मात्रा देने की जरूरत ही नही पडी। उसके वाद जव फिर रोग आता दीखा, तव **थूजा** की दूसरी मात्रा दी गई जिसके वाद से वह असाधारण तौर पर स्वस्थ हो गई।

वैकसीनोसिस से हुई मृगी का थूजा से ठीक होने का दृष्टान्त—२९ वर्ष की एक स्त्री थी जिसे सप्ताह मे एक वार मृगी का दौर पडता था। उसने दो वार चेचक का टीका लिया था, दूसरा टीका विगड गया था। थूजा उच्च-शक्ति की एक मात्रा लेने के वाद दस मास बीत जाने पर भी उसे मृगी का दौर नही पडा और उसने डॉ० वर्नेट से कहा कि अव वह विल्कुल स्वस्थ है।

वैकसीनोसिस से हुए स्नायु-शूल, सिर-दर्द का थूजा से ठीक होने का दृष्टान्त—एक ६० वर्ष की स्त्री थी जिसे भयकर सिर-दर्द होता था। तीन वार चेचक का टीका ले चुकी थी। तीसरा टीका विगड गया था। तीसरा टीका लेने के वाद वह इतनी बीमार हो गई कि उसे विस्तर की शरण लेनी पडी, डिलीरियम तक होने [illegible] थूजा लेने के एक महीने वाद सिर-दर्द कम होने लगा। टीका लेने [illegible] स-कष्ट होने लगा था, हड्डियो मे दर्द होने

लगा था। अब थूजा लेने के बाद यह श्वास-कष्ट तथा हड्डियों में दर्द जो मिट चुका था, फिर होने लगा। डॉ० बर्नेट लिखते हैं कि दबे हुए रोग के लक्षण अगर फिर वापस आने लगें, तो समझना चाहिये कि औषधि ठीक-से चुनी गई है क्योंकि सुनिश्चित-औषधि का काम रोगी के दबे हुए लक्षणों को उखाड कर उन्हें नष्ट करना है। थूजा से ये लक्षण भी चले गये। थूजा का एक लक्षण यह है कि रोगी नींद से जाग कर यह अनुभव करता है कि किसी अथाह गढे में जा गिरा। यह लक्षण भी इस रोगिणी में था। थूजा से वह भी जाता रहा।

वैकसीनोसिस से हुए दस्तों का थूजा से ठीक होने का दृष्टांत—डॉ० चौधरी अपनी 'मैटीरिया मैडिका' में लिखते हैं कि उनके एक सहायक को सवेरे उठते ही दस्त आते थे। क्योंकि बिस्तर से उठते ही उसे बाथ-रूम भागना पडता था, इस लक्षण पर उसे **एलो, पोडो, सल्फर** आदि औषधियां दी गईं परन्तु कुछ लाभ न हुआ। एक दिन जब वे उसके पास बैठे थे, तो उन्हें उसके पेट में गडबड का ऐसा शब्द सुनाई दिया जैसा बोतल में से पानी निकलने में होता है। डॉ० चौधरी लिखते हैं कि ऐसे दस्त 'वैकसीनोसिस' में आया करते हैं। थूजा के दस्त प्रातःकाल का नाश्ता लेने के बाद चला करते हैं—पनीले, दर्द-रहित, वायु-मिश्रित। इन लक्षणों के आधार पर उसे **थूजा** २०० दिया गया और वह तुरंत ठीक हो गया।

डॉ० बर्नेट प्रत्येक रोगी से पूछा करते थे कि उसने टीका कितनी बार लिया, टीका उठा या नहीं, क्या वर्तमान रोग की शुरुआत टीका लेने के बाद हुई? अगर उनका भरोसा हो जाता था कि रोग का चेचक के टीके से कोई भी संबंध है, तो वे **थूजा** का प्रयोग करते थे और इस से उन्हें रोग के दूर करने में अपूर्व-सफलता मिलती थी। उनका कहना था कि सिर्फ **थूजा** से ही उन्हें २०० पौंड प्रति वर्ष की आमदनी है। होम्योपैथी में इतना महत्व है **थूजा** का।

(४) **मानसिक लक्षण—झगडालूपन, उन्निद्रता, आत्मघात, असंभव बद्धमूल धारणाएं** (Impossible fixed ideas)—इस औषधि का रोगी बडा झगडालू होता है, ज़रा-ज़रा-सी बात पर क्रोध में उबल पडता है। जीवन के प्रति उसे घृणा हो जाती है, मन गिरा-गिरा, बडा उदास रहता है। नींद नहीं आती। उन्निद्रता तथा असंतोष उसके चेहरे पर लिखा होता है। हर किसी से नफरत करता है। कभी-कभी उसके सिर पर आत्मघात का भूत सवार हो जाता है। वह खिडकी में से कूद कर आत्मघात करने की कोशिश भी करता है। जीवन के प्रति उदासीनता, उपेक्षा का भाव जैसा **सीपिया** या **लिलियम** में दीखता है, वैसा **थूजा** में भी पाया जाता है।

असंभव-बद्धमूल-धारणाएं (Impossible fixed ideas)—रोगी के मन में कुछ असंभव-बद्धमूल-धारणाएं घर कर जाती हैं। उदाहरणार्थ, उसे

लगता है कि कोई अजनबी उसके पास खड़ा है, मानो उसके शरीर तथा आत्मा अलग-अलग हैं, मानो कोई जीवित प्राणी उसके पेट मे है, मानो किसी दैवी-शक्ति ने उसे अपने प्रभाव मे ले लिया है, मानो किसी ने उसे हाथ-पैर बाँध कर डाल दिया है, मानो उसके पैर बहुत लम्बे है, मानो वह शीशे का बना हुआ है और जरा-से धक्के से ही टूट जायगा। **थूजा** के प्रत्येक रोगी मे ये लक्षण नही होते, परन्तु अगर किसी रोगी मे ये लक्षण पाये जायें तो औषधि थूजा है।

(५) खोपडी मे कील चुभने का-सा दर्द, किसी भी दर्द मे पेशाब ज्यादा होना, पेशाब का विचार आते ही पेशाब के लिये भागना—रोगी को सिर-दर्द मे ऐसा अनुभव होता है मानो किसी ने सिर के ऊपर खोपडी मे कील गाड दी। सिर मे या कनपटियो मे कील गाडने का-सा दर्द **इग्नेशिया** तथा **कॉफिया** मे भी पाया जाता है। इस बात को ध्यान मे रखना चाहिये कि **थूजा** के रोगी की पृष्ठ-भूमि मे 'साइकोसिस' अथवा 'वैकसीनोसिस' का अश प्राय अवश्य होता है। दर्द कही भी हो, सिर-दर्द हो या किसी अन्य अग मे दर्द हो, दर्द जब शिखर पर होना है, तेज होता है, तब रोगी को बार-बार पेशाब जाने की हाजत होती है, वह बार-बार पेशाब के लिये जाता है। **थूजा** रोगी के पेशाब के लक्षणो मे एक लक्षण यह भी है कि जब भी उसे पेशाब जाने की हाजत होती है, तब वह एक क्षण के लिये भी पेशाब को रोक नही सकता। पेशाब निकल जाने के डर से वह मूत्रेन्द्रिय को पकड कर बाथ-रूम को भागता है, तब भी कई बार रास्ते मे ही पेशाब निकल पडता है।

(६) शरीर के सिर्फ खुले भाग पर पसीना आना, सोते ही पसीना आना, जागते ही सूख जाना—पसीने के सबध मे इस औषधि मे विचित्र-लक्षण पाये जाते है। जो अग कपडे से ढके रहते हैं उनमे पसीना नही आता, वे खुश्क रहते हैं, परन्तु शरीर का जो भाग कपडे से ढका नही होता, खुला रहता है, उनमे पसीना आता है। इसके विपरीत **बेलाडोना** मे खुले हुए अग मे पसीना नही आता, शरीर के ढके हुए भाग मे पसीना आता है। या यह भी हो सकता है कि **थूजा** मे सारे शरीर मे पसीना आये, केवल माथे पर न आये। इसके विपरीत **साइलीशिया** मे केवल माथे पर पसीना आता है, सारे शरीर पर नही आता। पसीने के सबध मे **थूजा** का दूसरा विचित्र लक्षण यह है कि रोगी को सोते समय पसीना आने लगता है, जागते ही पसीना आना बन्द हो जाता है। इसके विपरीत **सैम्बूकस** मे सोते समय पसीना नही आता, सोते से जागते ही पसीना आना शुरु हो जाता है। **साइलीशिया** मे भी सोते समय माथे पर पसीना आने का लक्षण है, माथे से इतना पसीना आता है कि तकिया भीज जाता है, शरीर पर पसीना नही आता, वह खुश्क बना रहता है। **कैलकेरिया**

मे भी सोने पर पसीना आने का लक्षण है, परन्तु साइलीशिया कमजोर और कैलकेरिया थुलथुल होता है। इसके अतिरिक्त कैलकेरिया मे सिर्फ माथे पर पसीना होता है, गर्दन तक नही जाता, साइलीशिया का पसीना माथे और गर्दन दोनो तक होता है। साइलीशिया मे बदबू आती है, कैलकेरिया मे खट्टी बू आती है। पल्स मे शरीर के सिर्फ एक भाग पर पसीना आता है, दूसरा भाग खश्क रहता है।

(७) इस औषधि के अन्य लक्षण—

i सिर्फ दिन को खाँसी—इस औषधि की खाँसी विलक्षण है। सिर्फ दिन को आती है, रात को शायद ही कभी तग करती हो।

ii दातो की जडें घुन जाती हैं—इस रोगी की दातो की जडे घुन जाती हैं, चोटी समूची बनी रहती है। मेजेरियम मे भी दात की जड घुनती जाती है। स्टैफिसैग्रिया मे दात मे किनारे टुकडे-टुकडे होकर गिरने लगते हैं। क्रियोजोट मे दात निकलते साथ ही सडने लगते है। मर्क्यूरियस मे दात तथा दातो मे दर्द के साथ उनमे पीव आने लगती है।

iii कुडकीले नाखून (Brittle nails)—नाखून टेढे-मेढे होते हैं, टूट जाते है, अगूठे का नाखून अगूठे मे घस जाता (Ingrowing toe nails) है। टेढे-मेढे नाखून ऐण्टिम क्रूड मे भी है।

iv निरन्तर उन्निद्रता (Persistent insomnia)—रोगी को निरन्तर उन्निद्र-रोग बना रहता है।

v बायें डिम्बकोश मे माहवारी के समय कष्ट—इस औषधि का एक विचित्र-लक्षण यह है कि रोगिणी के सब कष्ट माहवारी के दिनो मे बढ जाते हैं। साधारण तौर पर माहवारी से कष्ट दूर होने चाहियें, परन्तु थूजा की रोगिणी मे उलटा पाया जाता है। जिकम और लैकेसिस मे माहवारी होने से कष्ट कम हो जाते है। थूजा का स्त्री के बायें डिम्ब-कोश पर विशेष प्रभाव है। वैसे तो थूजा का शरीर की सभी ग्रन्थियो पर प्रभाव पाया जाता है, ग्रन्थियो मे काटने का-सा दर्द होता है, परन्तु बायी डिम्ब-ग्रन्थि पर इसका विशेष प्रभाव है, उसमे दर्द होता है, और माहवारी का रक्त-स्राव ज्यो-ज्यो बढता जाता है त्यो-त्यो दर्द भी बढता जाता है, जो एक विचित्र-लक्षण है।

(८) शक्ति तथा प्रकृति—मूल-अर्क का मस्से के ऊपर बाहरी प्रयोग करना चाहिये और भीतरी प्रयोग ३० या २०० शक्ति का। डॉ० बर्नेट के प्रयोगो मे ३०X का प्रयोग बहुधा पाया जाता है। रोगी 'सर्द'—Chilly—प्रकृति का होता है।

ट्युबर्क्युलीनम—बेसीलीनम
(TUBERCULINUM—BACILLINUM)

GENERALS AND PARTICULARS
व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) ट्युबर्क्युलीनम तथा बेसीलीनम मे भेद—ट्युबर्क्युलीनम टी०-बी० के पस से और बेसीलीनम टी० बी० के कृमि—बेसीलस—वाले फेफडे से बना है

(२) क्षय-रोग की प्रकृति तथा प्रवृत्ति (Consumptiveness) को रोकने की औषधि है

(३) डॉ० बर्नेट क्षय-रोग की प्रकृति तथा प्रवृत्ति के लोगो को इसे रुटीन के तौर पर दिया करते थे

(४) डॉ० केन्ट के अनुसार इस औषधि को रुटीन के तौर पर क्षय-रोग मे नहीं देना चाहिये, फिर भी इस से लाभ होता देखा गया है

(५) डॉ० केन्ट के अनुसार क्षय-रोग का वशानुगत-विष जिनके रुधिर मे हो, उन्हें यदा-कदा इस की १०M, ५० M या C M की दो-दो मात्रा देने से क्षय-रोग का बीज नष्ट हो जाता है।

(६) जब सुनिर्वाचित-औषधि से लाभ न हो, और रोगी की पृष्ट-भूमि क्षय-परक हो तब यह लाभप्रद है

(७) क्षय-रोग होने की सभावना वाले व्यक्ति की शारीरिक-रचना (Constitution of a person with tubercular diathesis)

(८) क्षय-रोग के उग्र-रूप मे इस से लाभ नहीं होता (Unavailing when the disease is in full blaze called galloping consumption)

(९) डॉ० बर्नेट का कहना था कि क्षय-रोग के साथ अन्य रोग जुड़े हो, तो पहले अन्य रोगो को हटाना चाहिये, फिर क्षय को

(१०) डॉ० बर्नेट के अनुसार दाद का होना वश मे क्षय-रोग के बीज के कारण होता है

(११) डॉ० केन्ट का कहना है कि जब रस टॉक्स के लक्षण होने पर उस से लाभ न हो, तब ट्युबर्क्युलीनम से लाभ होता है

(१) ट्युबर्क्युलीनम तथा बेसीलीनम मे भेद—ट्युबर्क्युलीनम टी० बी० के पस से और बेसीलीनम टी० बी० के 'कृमि'—बेसीलस—वाले फेफडे से बना है—ये दोनों तपेदिक के मवाद से बने हैं। ट्युबर्क्युलीनम तो तपेदिकवाले फेफडे की पस से बना है (Prepared from a drop of pus obtained from a pulmonary tubercular abscess or sputa), बेसीलीनम फेफडे के

उस मवाद से बना है जिस मे वैसीलस—'कृमि'—पाया जाता है (Prepared from a tuberculous lung in which the bacillus tuberculosis has been found microscopically)। ट्युवर्क्युलीनम का निर्माण फिंक एण्ड स्वान ने किया था, वैसीलीनम का निर्माण हीथ से किया था। वैसीलीनम का प्रयोग पहले-पहल डॉ० वर्नेट ने किया क्योंकि हीथ ने वैसीलस वाले फेफड़े मे इसका निर्माण करके उन्हे दिया था। वैसे असर मे दोनों मे कोई विशेष भेद नही है—मूलत, दोनो एक ही है, नाम अलग-अलग हैं। क्योंकि रोगी के रुग्ण अश से इसका निर्माण होता है, इसलिये अन्य नोसोड्स की तरह यह भी एक नोसोड है। किसी रोग के विष को उसी रोग के इलाज के लिये प्रयोग करने को 'आइसोपैथी' कहते हैं, और उस विष को शक्तिकृत करके जब वह औपधि बन जाता है तब उसे होम्योपैथी मे 'नोसोड' (Nosode) कहते हैं। आइसोपैथी तथा नोसोड्स के विषय मे हमने पुस्तक के अन्त मे लिखा है।

(२) **क्षय-रोग की प्रकृति तथा प्रवृत्ति (Consumptiveness) को रोकने की औषधि**—इस औपधि का मुख्य रूप से प्रयोग डॉ० वर्नेट ने किया था। उन्होंने इसकी अपने ऊपर 'परीक्षा' (Proving) की थी, और वे इस परिणाम पर पहुचे थे कि जिन लोगो को क्षय-रोग की वशानुगत-प्रकृति होती है, उनको इसके देने से वह प्रकृति तथा प्रवृत्ति जाती रहती है, और वे क्षय-रोग का शिकार होने से बच जाते हैं। इस प्रकृति तथा प्रवृत्ति को उन्होने 'कनज़म्प्टिवनेस' (Consumptiveness) का नाम दिया था। क्षय-रोग की प्रवृत्ति के लक्षण क्या हैं ? रोगी निर्बल होता है, शक्तिहीन, रक्तहीन, माता-पिता मे से या वश से कोई क्षय-रोग का शिकार हो चुका होता है, रोगी को निरन्तर डायरिया बना रहता है, रात को पसीने आते है, शरीर लगातार क्षीण होता जाता है, खराश के साथ कष्टप्रद खासी आती है, खासी मे बिना लेस का (Non-viscid) कफ निकलता है, गालो पर लाली की झलक आया करती है, रोगी हाफने लगता है, सांस रुक-रुक कर आता है, फेफडो से कफ की आवाज आती है, बोलने मे कफ की गूज होती है, बुखार आया करता है। रोग बढने से पहले, शुरु-शुरु मे, ट्युबर्क्युलीनम की कुछ मात्राए सोच-समझ कर देने से रोगी क्षय-रोग का शिकार होने से बच सकता है।

(३) **डॉ० बर्नेट क्षय-रोग की प्रकृति तथा प्रवृत्ति के लोगों को इसे रुटीन के तौर पर दिया करते थे**—जिन रोगियो को वशानुगत के तौर पर क्षय-रोग प्राप्त हुआ था, उन्हे डा० बर्नेट रुटीन के तौर पर यह औपधि दिया करते थे। जैसे 'वैकसीनोसिस' मे वे **थूजा** देते थे, वैसे 'कनज़म्प्टिवनेस' मे वे **वैसीलीनम** देते थे। ये दोनो औपधिया उनकी प्रिय औषधिया थी। जिन रोगियो मे तपेदिक के प्रारभिक-लक्षण पाये जाते हैं, जिनके घराने मे इस रोगी की जड

मौजूद है, उन्हें इस औषधि से लाभ होता है—यह अनुभव से सिद्ध हो चुका है।

(४) **डॉ० कैन्ट के अनुसार इस औषधि को रुटीन के तौर पर क्षय-रोग मे नहीं देना चाहिये, फिर भी इस से लाभ होता देखा गया है**—डा० कैन्ट लिखते हैं कि कई लोगो की यह धारणा है, और कही-कही चिकित्सक लोग विद्यार्थियो को यह शिक्षा भी देते पाये गये हैं कि जहा सिफिलिस का अश पाया जाय वहा **सिफिलीनम** से लाभ होगा, जहा गोनोरिया का अश पाया जाय वहा **मेडोराइनम** से लाभ होगा, जहा सोरा पाया जाय वहा **सोरिनम** से लाभ होगा, और जहा तपेदिक का अश पाया जाय वहा **ट्युबर्क्युलीनम** से लाभ होगा। डॉ० कैन्ट लिखते है कि यह वैज्ञानिक-सिद्धान्त नही है, यह केवल 'आइसोपैथी' है। आइसोपैथी का अर्थ है रोग को उसी के विष से दूर करने का सिद्धान्त। डॉ० कैन्ट यह भी लिखते है कि यद्यपि यह सिद्धान्त ठीक नही है तो भी इस पद्धति से अनेक रोगियो को लाभ हुआ है।

(५) **डॉ० कैन्ट के अनुसार क्षय-रोग का वशानुगत विष जिनके रुधिर मे हो, उन्हें यदा-कदा इसकी १० M, ५० M या C M की दो-दो मात्रा देने से क्षय-रोग का बीज नष्ट हो जाता है**—डॉ० कैन्ट लिखते हैं जिन बच्चो या युवको के रुधिर मे वशानुगत रूप से क्षय-रोग का बीज हो, उन्हें काफी समय छोड-छोड कर अगर इस औषधि के १० M, ५० M तथा C M मे से प्रत्येक शक्ति की दो-दो मात्राए दे दी जायें, तो उनका स्वास्थ्य बिगडने नही पायेगा, और वे पूर्ण स्वास्थ्य से जीवन व्यतीत करेगे। इस से एडेनॉयड (Adenoids) तथा गले की टी० बी० की ग्रन्थिया ठीक हो जायेंगी।

(६) जब सुनिर्वाचित-औषधि से लाभ न हो, और रोगी की पृष्ठ-भूमि **क्षय-परक हो तब लाभप्रद है**—जब किसी रोगी को सुनिर्वाचित-औषधि देने से लाभ न हो तब भी इसका प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ, हमने किसी रोगी को लक्षणो के आधार पर सल्फर दिया, उस मे लाभ न होने पर **सोरिनम** दिया, परन्तु उस से भी रोगी अच्छा नही हुआ, तब इस से लाभ होगा। दमे मे **सोरिनम** से भी लाभ न होने पर **ट्युबर्क्युलीनम** से लाभ होता है, इस अवस्था मे यह 'धातुगत-औषधि' (Constitutional remedy) का काम करता है।

परन्तु सुनिर्वाचित-औषधि मे लाभ न होने का अर्थ क्या है ? अगर हमारी दृष्टि से जो औषधि सुनिर्वाचित है उस से लाभ न हो, तो इसका यह अर्थ नही है कि सुनिर्वाचित-औषधि से लाभ नही हुआ है, इसलिये **ट्युबर्क्युलीनम** दे दी जाय। 'सुनिर्वाचित'-शब्द एक सापेक्षिक शब्द है। जब सुनिर्वाचित-औषधि अपना प्रभाव दिखलाये, किन्तु औषधि के अनुकूल प्रभाव होने पर भी शरीर ढलना ही जाय, और हमारी सुनिर्वाचित-औषधि अपना असर दिखलाते हुए भी रोग को पूरी तरह से न पकड सके, इसलिये न पकड सके क्योकि यद्यपि

रोगी में क्षयरोग के कोई प्रत्यक्ष-लक्षण तो नहीं दीखते तो भी उसकी पृष्ठ-भूमि क्षय-परक है, तब कहा जायगा कि सुनिर्वाचित-औषध ने लाभ नहीं किया, और तब **ट्युबर्क्युलीनम** देना उचित होगा।

(७) क्षय-रोग होने की संभावनावाले व्यक्ति की शारीरिक-रचना (Constitution of a person with tubercular diathesis)—जिस व्यक्ति को **ट्युबर्क्युलीनम** दिया जाना चाहिये उसकी शारीरिक-रचना अपने ढंग की ही होती है। हल्के रंग का चेहरा, लम्बा, परन्तु पतला-दुबला, कन्धे झुके हुए, छाती तंग और तख्ती के समान सपाट, मांस-पेशियां ढीली, कोई भी बीमारी हो जाय तो ठीक होने में देर लगती है जिससे प्रतीत होता है कि जीवनी-शक्ति का स्तर अत्यन्त निम्न है, हर बदलते मौसम का उस पर प्रभाव पड़ता है, सदा थका-थका, चलने-फिरने से शरीर में गर्मी चढ़ जाती है, काम करने को जी नहीं करता। मानसिक-दृष्टि से रोगी बड़ा बुद्धिमान् होता है परन्तु शारीरिक-दृष्टि से अत्यन्त असमर्थ। वायु-मंडल में जो भी रोग चल रहा हो उसका झट शिकार हो जाता है, क्षय-रोग की संभावना सदा बनी रहती है। ऐसी शारीरिक-रचना के साथ इस रोगी में निम्न पांच विशेषताएं पायी जाती हैं

I **लक्षणों की परिवर्तनशीलता** (Changeability of symptoms)—डॉ० एलन लिखते हैं कि इस रोगी के लक्षण सदा बदलते रहते हैं, कभी इस अंग में लक्षण प्रकट होते हैं, कभी उस अंग में, कभी मस्तिष्क में, कभी फेफड़ों में, कभी गुर्दे में, कभी जिगर में, कभी पेट की तकलीफ, कभी स्नायु-मंडल की शिकायत। कोई भी लक्षण देरपा नहीं होता। बीमारी अपना स्थान और रूप बदलती रहती है। क्षय-रोग होने की संभावनावाले शरीर की शायद यह 'धातुगत-प्रकृति' (Miasmatic diathesis) है। लक्षण एकदम शुरु होते हैं और एकदम ही समाप्त हो जाते हैं।

II **सर्दी खा जाने की निरंतर प्रवृत्ति** (Great sensitivity to taking cold)—रोगी ठंड से बचने का हर संभव उपाय करता है, परन्तु उसे समझ नहीं पड़ता कि कब, कैसे, कहां वह ठंड खा जाता है। उसे ऐसा लगता है कि जब भी वह ताजी हवा में सांस लेता है वह ठंड खा जाता है, जुकाम, खांसी हो जाती है। अगर रोगी के लक्षण बदलते रहें, ठंड खा जाने की प्रवृत्ति हो, जरा-सी ठंडी हवा चली नहीं कि सर्दी लग गई, सुनिर्वाचित-औषधि देने पर भी लाभ नहीं होता, तब इसी औषधि से लाभ होगा।

III **तेजी से शरीर की क्षीणता** (A pronounced and rapid emaciation)—इस रोगी का तीसरा लक्षण यह है कि अच्छे-से-अच्छा भोजन खाने पर भी शरीर तेजी से क्षीण होता जाता है, खाया-पीया शरीर में नहीं लगता।

iv **किसी एक जगह न टिक सकना** (Cosmopolitanism, Constant desire to change, to travel)—यह रोगी एक जगह टिक नही सकता, सदा परिवर्तन चाहता है, कभी कही जाता है, कभी कही, यात्रा किया करता है, कभी कुछ करता है और उसके वाद दूसरा काम ढूढा करता है, कभी एक डाक्टर के पास जाता है, कभी दूसरे के पास भागता है, किसी के पास टिक कर इलाज नहीं कराता। यह इस रोगी की चौथी विशेषता है।

v **वश मे क्षय-रोग होने का इतिहास** (Tubercular family history)—इस रोगो को निश्चित तौर पर इस औषधि के देने के निश्चय पर पहुचने के लिये पाचवी वात यह है कि अगर उक्त चारो लक्षणो के अलावा यह भी पाया जाय कि रोगी के वश मे कही क्षय-रोग का इतिहास मौजूद है, तव इस समय कोई भी रोग क्यो न हो—प्रत्यक्ष रूप मे तपेदिक न हो, परन्तु उक्त पाच लक्षण मौजूद हो—तव इस औषधि से अवश्य लाभ होगा।

(८) **क्षय-रोग के उग्र-रूप मे इस से लाभ नहीं होता** (Unavailing when the disease is in full blaze called galloping consumption)—जैसा हम पहले कह आये हैं, इस औषधि का प्रभाव-क्षेत्र तभी है जब रोग मे 'कनज़म्प्टिवनेस' की दशा हो, रोगी पूर्णतया इस रोग के चगुल मे फस नही चुका हो परन्तु इस रोग के लक्षण प्रकट होने लग रहे हो। जव रोग पूर्ण रूप से प्रकट हो जाय तव इस से लाभ नही होता।

(९) **डॉ० वर्नेट का कहना था कि क्षय-रोग के साथ अन्य रोग जुडे हों, तो पहले अन्य रोगो को हटाना चाहिये**—डॉ० वर्नेट को ट्युवर्क्युलीनम (वैसीलीनम) का विशेष अनुभव था। उन्होंने हर प्रकार के रोग मे जिसकी पृष्ट-भूमि मे क्षय-रोग था, इसे देकर रोगी को चगा होते देखा था। अगर किसी के वश के इतिहास मे क्षय के रोगी पाये गये थे, तो उन्होने किसी भी रोग मे —माहवारी की कठिनाई, सिर-दर्द या कोई भी दूसरा रोग हो—इस औषधि से लाभ होते देखा था। परन्तु डॉ० वर्नेट का कहना था कि इस औषधि का प्रभाव-क्षेत्र सिर्फ तपेदिक के विष को दूर करने तक सीमित है। अगर किसी रोग के ठीक होने मे तपेदिक का विष वाधक हो रहा है तव यह औषधि उस विष को नष्ट कर देगी, परन्तु अगर क्षय-रोग के साथ अन्य कोई रोग जुडा हुआ है, तव पहले उस रोग पर प्रहार करना होगा। उदाहरणार्थ, हनीमैन के कथनानुसार सोरा, सिफिलिस, साइकोसिस रोगी के चगा होने मे वाधक हैं। अगर तपेदिक के रोगी के लक्षणो मे साइकोसिस भी मिला हुआ है, तव पहले **थूजा** देकर साइकोसिस को नष्ट करना होगा, उसके वाद ट्युवर्क्युलीनम (वैसीलीनम) देना उचित होगा। जैसे अन्य औषधियो के काम न कर सकने मे वाधक सोरा, सिफिलिस, साइकोसिस है, वैसे ट्युबर्क्युलीनम के सफल प्रयोग

मे भी ये बाधक हो सकते हैं। डॉ० वर्नेट लिखते हैं कि चेचक के टीके का रोग—जिसे उन्होंने 'वैकसीनोसिस' का नाम दिया—सुनिर्वाचित औषधि को सफल नही होने देता। इसलिये जहा 'वैकसीनोसिस' और 'ट्युबर्क्युलोसिस' दोनो मिले-जुले पाये जायें—रोगी को असफल टीका लग चुका हो, और वश मे तपेदिक का इतिहास भी मिले—वहा पहले थूजा द्वारा 'वैकसिनोसिस' को नष्ट करना होगा, तब ट्युबर्क्युलीनम से लाभ होगा, अन्यथा नही। उनका कहना था कि अगर तिल्ली के रोग के कारण, जिगर के रोग के कारण या किसी भी अन्य अग के रोग के कारण क्षय-रोग हुआ है, तब ट्युबर्क्युलीनम के प्रयोग से पहले तिल्ली, जिगर आदि के रोग को दूर करने की औषधि दी जानी चाहिये क्योंकि इन दशाओ मे टी० बी० का अन्य रोगो से सम्मिश्रण होता है, और इस सम्मिश्रण को तोडने के लिये इन रोगो के उपचार की दवा को पहले देना आवश्यक है, तभी ट्युबर्क्युलीनम काम करता है। अगर रोग का आधार रोगी मे या उसके वश मे केवल तपेदिक का विष हो, वह अन्य किसी धातुगत-प्रकृति से मिला हुआ न हो, तब सिर्फ ट्युबर्क्युलीनम देने से लाभ हो जाता है क्योंकि इसका प्रभाव-क्षेत्र सिर्फ तपेदिक के विष को नष्ट करना है। उस विष के नष्ट हो जाने से जो अन्य रोग उत्पन्न हुए होगे वे अपने-आप नष्ट हो जाते हैं, परन्तु अगर क्षय-रोग के साथ अन्य धातु-गत रोग मिले हुए हैं तब पहले उन्हें नष्ट किये बगैर इस औषधि से लाभ नही होगा—यह उनका अनुभव है।

(१०) **डॉ० वर्नेट के अनुसार दाद का होना वश मे क्षय-रोग के बीज के कारण होता है**—डॉ० वर्नेट का कहना था कि दाद उन्ही लोगो को हुआ करता है जिनके वश के इतिहास मे क्षय का कोई लक्षण मौजूद होता है। दाद के रोगियो मे वे रुटीन की तरह बैसीलीनम २०० का प्रयोग कर दिया करते थे, विशेषतौर पर अगर बच्चे को दाद होता था तो वे इसका प्रयोग करने से न चूकते थे।

(११) **डॉ० कैन्ट का कहना है कि जब रस टॉक्स के लक्षण होने पर इस से लाभ न हो, तब ट्युबर्क्युलीनम से लाभ होता है**—इस औषधि का एक विशेष-लक्षण यह है कि रोगी के दर्द आदि कष्ट घूमने-फिरने, हरकत करने से दूर हो जाते है। डॉ० कैन्ट का कहना है कि उनके अनुभव मे यह आया है कि हरकत से दर्द कम होने के लक्षण पर रस टॉक्स से जब लाभ या तो न हो, या कुछ समय के लिये ही हो, तब ट्युबर्क्युलीनम से पूरा लाभ हो जाता है। इस-प्रकार के रोगी प्राय क्षय-रोग की प्रकृति के होते हैं और इसीलिये उनमे रस टॉक्स उनके रोग की जड तक नही पहुच पाता।

(१२) **इस रोग के अन्य लक्षण**—

1 **सवेरे के दस्त जिनमे सल्फर असफल रहे**—प्रात काल उठते ही

रोगी को दस्त आ जाता है। पाखाना काला, भूरा, पनीला, बदबूदार होता है और बड़े वेग से निकलता है। इस प्रकार के प्रात काल के दस्तो मे जब सल्फर से लाभ नही होता, तब इस से लाभ हो जाता है।

ii **जब न्यूमोनिया साफ होने मे न आये**—अगर न्यूमोनिया ठीक होता-होता भी पूरा साफ होने मे न आये, और पूछने से रोगी मे या उसके खानदान मे क्षय-रोग का इतिहास मिले, तब इस औषधि की २०० शक्ति की एक मात्रा से पहले तो कुछ घटे बुखार बढेगा, बाद को गला जायगा और फिर दोबारा नही आयेगा।

iii **बायें कन्धे के फलक मे तेज दर्द** (Very sharp pain in left Scapula)—रोगी के बाये कन्धे की फलकास्थि मे तेज दर्द को यह शान्त कर देता है। दायें कन्धे की फलकास्थि मे दर्द हो तो **चेलिडोनियम** दवा है।

iv **तेज सिर-दर्द**—रोगी को बेचैन कर देनेवाला इतना तेज सिर-दर्द होता है कि वह चेतनाशून्य हो जाता है, दर्द से पागल हो जाता है। वह दर्द से चिल्लाता है, अपने बाल नोचता है, सिर पर हाथ मारता है, सिर को दीवार से टकराता है। डॉ० स्वान ने एक रोगी का ऐसा सिर-दर्द जो ४५ साल से चला आ रहा था इस से ठीक कर दिया। उसका सिर-दर्द माथे के दायें हिस्से से चल कर सिर के पीछे के दायें हिस्से की तरफ जाता था।

v **पाठशाला मे पढनेवाली लडकियो का सिर-दर्द**—पाठशाला मे पढने वाली लडकियो का सिर-दर्द जो पढने के साथ बढने लगता है इस औषधि से ठीक हो जाता है बशर्ते कि उनमे या खानदान मे तपेदिक का इतिहास पाया जाय।

vi **बचपन मे कुत्ते या जानवर का डर**—बच्चा कुत्ते या किसी जानवर से बचपन मे ही डरने लगता है। यह **ट्युवर्क्युलीनम** का विचित्र-लक्षण है।

(१३) **ट्युवर्क्युलीनम का सजीव तथा मूर्त चित्रण**—हल्के रग का चेहरा, लम्बा परन्तु पतला-दुबला, कन्धे झुके हुए, छाती तग और तख्ती के समान सपाट, बच्चे की सिर की जटाए उलझी हुई, मास-पेशिया ढीली, थका-थका, खासी-जुकाम बुखार का शिकार, हर मौसम मे किसी रोग से पीडित, जीवनी-शक्ति साथ नही देती, जन्म से ही किसी-न-किसी रोग मे फसा रहता है, बातचीत करने मे बुद्धिमान् परन्तु शरीर से अशक्त, कही टिक कर रहने की तबीयत नही करती, पूछने पर खानदान मे कही तपेदिक का इतिहास पाया जाता है, कभी कोई रोग आ घेरता है, कभी कोई—ऐसा है सजीव तथा मूर्त चित्रण **ट्युवर्क्युलीनम** का।

(१४) **शक्ति तथा प्रकृति**—२००, १००० या ऊची शक्ति। डॉ० बर्नेट लिखते हैं कि रोग जितना बढा हुआ हो औषधि की शक्ति भी उतनी ही ऊची

देनी चाहिये—The worse the case the higher the potency as a rule रोगी बन्द कमरे मे आराम नही अनुभव करता, खुली हवा पसन्द करता है। नमीदार ठड उसके माफिक नही पडती, ठडी हवा उसे अच्छी लगती है। रोगी ठडा दूध पीना चाहता है, मीठा पसन्द करता है, फिर भी रोगी मुख्य तौर पर 'सर्द'—Chilly—प्रकृति का होता है, तभी हर ठड मे खासी-जुकाम-बुखार हो जाता है।

अर्टिका यूरेन्स (URTICA URENS)

(१) **जल जाने मे (Burns) उपयोगी**—गहरे जलने पर नहीं, परन्तु ऊपरी त्वचा के जल जाने पर **अर्टिका** टिक्चर के कुछ बूद पानी मे डाल कर जली हुई जगह पर रूई मे भिगो कर लगा देने से आश्चर्यजनक तौर पर जली हुई जगह ठीक हो जाती है। डॉ० टॉयलर लिखती हैं कि होटल के एक लडके का मुह झुलस गया था। उसे होम्योपैथिक अस्पताल मे भर्ती करके **अर्टिका** का लोशन रूई मे भिगो कर मुह पर रख दिया गया। अगले दिन यह पहचानना भी कठिन हो गया कि उसका मुह झुलसा था। एक डॉक्टर का उल्लेख करती हुई व लिखती हैं कि जल जाने पर **अर्टिका** के आश्चर्यजनक प्रभाव की बात सुनकर वह उसे परियो की कहानी की-सी बात कहा करता था। भाग्यवश उन्ही का हाथ जल गया। उसकी दर्द **अर्टिका** से तत्काल ठीक हो गई और कुछ ही दिनो मे जला भाग भी ठीक हो गया। तब उन्हें इस औषधि के अपूर्व-गुण पर विश्वास हुआ। इस से जले हुए पुराने घाव जो अनेक उपचारो के बाद भी ठीक नही होते आश्चर्यजनक तौर पर ठीक होते देखे गये हैं।

(२) **अन्होरी तथा पित्त उछल कर शरीर पर ददोड़े पड़ जाने पर (Nettle-rash and Urticaria) उपयोगी**—शरीर की त्वचा पर इस औषधि का विशेष प्रभाव है। अन्होरी तथा पित्त उछल कर सपूर्ण शरीर पर ददोडे पड जाने पर इस से विशेष लाभ होता है। सारे शरीर मे खुजली होती है, डक-सा चुभता है, बेहद जलन होती है, स्त्री तथा पुरुष के जननागो मे खुजली मचती है। डॉ० टॉयलर एक स्त्री का उल्लेख करते हुए लिखती हैं कि उसने बकरी का दूध पी लिया था, कुछ घटे बाद उसकी त्वचा पर बेहद खुजली शुरु हो गई, कमरे मे जाकर उसने सारे कपडे निकाल फेंके, सिर से पैर तक खुजली से परेशान हो गई। वह **अर्टिका** से खुजली दूर होने की बात सुन कर हसा करती थी, परन्तु इस समय उसे **अर्टिका** का स्मरण हो आया, उसने इस औषधि के मूल-अर्क के कुछ बूद पानी मे डाल कर पीये, तत्काल शान्ति आ गई और अगले दिन ददोडो, पित्त और खुजली का नामोनिशान न रहा। एक अन्य

रोगी को पित्त उछल आने पर अर्टिका १०M दिया गया, और वह अगले दिन ठीक हो गया।

(३) **दूध छुड़ाने के बाद दूध सुखाने के लिये उपयोगी**—एक स्त्री ने दो औंस अर्टिका की चाय बना कर पी ली तो उसे विचित्र-लक्षण उत्पन्न हो गये। सारे शरीर मे ददोड़े निकल आये, शरीर पर पित्ती उछल आयी और सब से विलक्षण-लक्षण यह दिखाई दिया कि यद्यपि तीन साल से उसे कोई बच्चा नही हुआ था फिर भी उसके स्तन दूध से भर गये। यह एक प्रकार से इस औषधि की 'परीक्षा-सिद्धि' (Proving) हो गई। होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार जो औषधि स्वस्थ व्यक्ति पर जो लक्षण उत्पन्न करती है, उन्ही लक्षणो को किसी भी रोग मे वह दूर भी करती है। इसीलिये जहाँ ददोडो के लिये यह उत्तम औषधि है, वहा जब बच्चे को दूध छुडाना हो तब माता के स्तनो मे दूध सुखाने के लिये भी यह उत्तम है। सुखाने के अतिरिक्त अगर मा के स्तनो मे दूध न आता हो तब इस औषधि की स्थूल मात्रा की चाय पिलाने से दूध आने तथा बढने भी लगता है।

(४) **मलेरिया-ज्वर (Intermittent—Ague) मे उपयोगी**—डॉ० बर्नेट को अनेक औषधियो का अनुभव था जिन मे से थूजा तथा ट्युबर्क्युलीनम का जिक्र हम पहले कर आये हैं। अर्टिका के विषय मे भी उनका अनुभव अद्भुत था। उन्होंने लिखा है कि मलेरिया-ज्वर मे इसके टिंक्चर से उन्होने अनेक रोगियो को सफलतापूर्वक ठीक किया। मलेरिया पर अर्टिका के प्रभाव का उन्हें कैसे पता चला इसका उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि एक स्त्री का, जिसे मलेरिया का आक्रमण होता था, वे इलाज कर रहे थे। एक दिन वह स्त्री उनसे आकर कहने लगी कि वह सर्वथा ज्वर-मुक्त हो गई है, परन्तु डॉक्टर के इलाज से नहीं, अपनी नौकरानी के इलाज से उसका ज्वर छूट गया। डॉ० बर्नेट ने सारा विवरण पूछा तो पता चला कि उसकी नौकरानी ने उसे अर्टिका की चाय बना कर दी थी जिस से ज्वर जाता रहा। उस के बाद डॉ० बर्नेट ने अनेक रोगियो को मलेरिया मे अर्टिका के टिंक्चर से ठीक किया। डॉ० बर्नेट यह भी लिखते है कि हरेक रोगी इस से ठीक नही होता, किसी-किसी को लक्षण होने पर नेट्रम म्यूर देना पडता है, परन्तु हरेक रोगी के इस से ठीक न होने का यही अभिप्राय है कि होम्योपैथी मे किसी रोग की कोई स्पेसिफिक दवा नही है, जो रोगी इस से ठीक हो जाते हैं उनके लक्षण इस औषधि के समान होते हैं तभी वे इस से ठीक हो जाते हैं, जो नही ठीक होते उनके लक्षण इस औषधि के लक्षणों के सम नहीं होते, परन्तु अधिकतर इससे ठीक हो ही जाते है।

(५) **पथरी तथा गठिये पर उपयोगी**—डॉ० बर्नेट का कहना था कि गठिया के रोगियो को गठिये का दर्द प्राय इसीलिये होता है क्योंकि शरीर मे

से यूरेट्स निकलने के बजाय जगह-जगह बैठ जाते हैं। इसी कारण दर्द होता है, इन यूरेट्स के गुर्दे मे जमा हो जाने के कारण ही पथरी भी हो जाती है। उनका अनुभव था कि अर्टिका देने से यूरेट्स निकलने लगते हैं, बनने बन्द हो जाते हैं, पथरी बनती नही, बनी हुई घुल कर निकल जाती है, यूरेट्स न बनने के कारण गठिया भी ठीक हो जाता है। पथरी तथा गठिये मे वे एक छोटे गिलास में, कोसे पानी मे, पाच बूंद अर्टिका की टिंक्चर डाल कर पीने को देते थे। कुछ घंटे बाद गठिये का रोगी कहता था—दर्द गायब हो गया। पथरी के रोगी कहते थे कि पेशाब में पहले कभी पथरी नही निकली, परन्तु अब पथरी के छोटे-छोटे टुकड़े निकल रहे है। डा० बर्नेट **अर्टिका** के मूल-अर्क का कुछ दिनों तक लगातार प्रयोग करवाते थे और इस से गठिया तथा पथरी दोनों ठीक हो जाते थे। गठिये को इस औषधि से ठीक करने की उनकी प्रसिद्धि इतनी हो गई थी कि लोग उन्हे 'मिस्टर अर्टिका' कहने लगे थे।

(६) **मधु-मक्खी के काटे पर उपयोगी**—अगर मधु-मक्खी काट खाये, तो **अर्टिका** के मूल-अर्क के लगाने से लाभ होता है, अगर ततैय्या काट खाये तो **आर्निका** के मूल-अर्क के लगाने से लाभ होता है, अगर विषैली मक्खी या मच्छर काट खाये, भयंकर सूजन हो जाय, जलन हो, तब **कैन्थरिस** २०० की एक मात्रा लेने से शान्ति हो जाती है।

(७) **शक्ति**—गठिया तथा पथरी मे मूल-अर्क की कुछ बूंदें कोसे पानी में डाल कर कुछ दिन लेना, पित्त उछल आने मे २०० या १ M की मात्रा लाभ करती है।

वेलेरियन (VALERIAN)

(१) **हिस्टीरियाग्रस्त बच्चों तथा स्त्रियों के लक्षणों पर**—बच्चों तथा स्त्रियों मे हिस्टीरिया के लक्षणों मे यह उपयोगी है। स्नायु-मंडल की तीव्र-उत्तेजना, कांपना, अंगों का फुदकना, दिल का धड़कना, अंगो मे ऐंठन, पेट में गोले का उठना (Globus hystericus), पेट से गर्म भाप का-सा कुछ उठना आदि हिस्टीरिया के लक्षण इस में पाये जाते हैं। रोगी का सारा स्नायु-संस्थान उत्तेजित तथा चिन्ताग्रस्त होता है। रोगी को स्नायविक-बेचैनी (Nervous restlessness) घेर लेती है। स्नायु-मंडल की इसी बेचैनी के कारण उसे सिर-दर्द या शरीर के अन्य भागों मे दर्द होता है।

यह औषध स्नायु-संस्थान को शान्त कर देती है, रक्त-संचार की उत्तेजना को कम कर देती है, उन्निद्रता को हटा देती है, नींद लाती है और शान्ति तथा आराम की भावना को जन्म देती है।

(२) **धीमी हरकत से स्नायविक-उत्तेजना कम होती तथा विश्राम और**

तेज़ हरकत से स्नायविक-लक्षण बढ़ जाते हैं—स्नायु सबधी सब लक्षण आराम की हालत मे बढ जाते हैं, हल्की, धीमी हरकत से घट जाते हैं, परन्तु तेज हरकत या कडे परिश्रम से भी बढ जाते हैं। आराम की हालत मे सारे शरीर मे वेधने का-सा दर्द होता है। आराम मे लक्षणो का बढना, हल्की हरकत से घटना और तेज़ परिश्रम से भी लक्षणो का बढना इस औषधि का लक्षण है।

(३) **बेचैनी इसका प्रधान लक्षण है**—'बेचैनी' (Restlessness) इस औषधि का प्रधान-लक्षण है। रोगिणी देर तक निश्चल नही रह सकती। स्नायु-सबधी उत्तेजना इतनी प्रबल होती है कि वह जगह-से-जगह चलती-फिरती, जगह बदलती रहती है। बातचीत मे भी एक विषय पर नही टिकती, एक विषय से दूसरे विषय पर मानो छलागें भरती है। एक विषय छेडती है, उसे छोड़ दूसरे पर चल देती है।

(४) **मेरु-दड की उत्तेजना (Spinal irritation)**—स्नायु-मडल की उत्तेजना के सबध मे जो रोग प्रकट होते हैं, उनमे अगर आराम से लक्षण बढें, हल्की हरकत मे घटें, और तेज़ हरकत या कठोर परिश्रम से भी बढे, तो इस औषधि मे मेरु-दड की उत्तेजना के लक्षण शान्त हो जाते हैं।

(५) **शियाटिका का दर्द**—शियाटिका के दर्द के सबध मे इसका विचित्र-लक्षण यह है कि लेटने पर दर्द नही होता, बैठते हुये अगर सामने कुर्सी या स्टूल पर पाव रख कर बैठा जाय, तब भी दर्द नही होता, परन्तु खडे होने पर या पाव को जमीन पर रखने से शियाटिका का दर्द होने लगता है। डॉ० नैश ने एक गर्भवती स्त्री का शियाटिका का दर्द इसी लक्षण के आधार पर इस औषधि से ठीक कर दिया था।

(६) **दिमाग़ तेज़ होता है, विचारो से भरा रहता है, परन्तु मन मे कल्पित विचार आते रहते हैं**—इस औषधि की रोगिणी का दिमाग तेज़ होता है, वह बुद्धिमती होती है, दिमाग हर बात मे चलता है। दिमाग विचारो से इस कदर भरा रहता है कि रोगिणी बड़ी आसानी से एक विचार पर बात करती-करती दूसरे विचार पर जा पहुचती है, परन्तु इस उत्तेजना का परिणाम हिस्टीरिया के लक्षण प्रकट हो जाना भी है। उसके मन मे काल्पनिक, निराधार विचार आया करते हैं। रोगिणी को मनुष्यो, पशुओ की काल्पनिक सूरतें दिखलाई देने लगती हैं। ये शक्ल निराधार होती हैं। वह सोचती है कि वह स्वय कोई और ही है, और इसीलिये बिस्तर पर एक किनारे पर होकर अपने लेटने के लिये जगह बनाया करती है। उसे कल्पना में ऐसा लगता है कि उसके बिस्तर पर कोई जानवर लेटा है जिस से उसे डर लगता है। इस सब मे विलक्षण-लक्षण यह है कि जबतक वह बैठी या लेटी रहती है तबतक उसे ऐसे विचार आया करते हैं, ज्योही उठकर वह चलने-फिरने लगती है, ये विचार गायब हो जाते हैं। हम अभी ऊपर लिख

आये हैं कि इस औषधि के लक्षण विश्राम की हालत मे बढ जाते हैं—यह लक्षण उसी का उदाहरण है।

(७) इस औषधि के हिस्टीरिया के-से अन्य लक्षण—

i रोगिणी अपने को इतना हल्का अनुभव करती है मानो हवा में तैर रही हो। स्टिक्टा मे रोगिणी अनुभव करती है मानो उसकी टांगे हवा मे तैर रही हो।

ii रोगिणी को सिर पर बर्फ के समान ठडक अनुभव होती है।

iii रोगिणी ऐसा अनुभव करती है मानो गले के भीतर तागा लटक रहा हो।

iv अगर माता ने क्रोध किया है, तो बच्चा दूध पीने के बाद उल्टी कर देता है। इस लक्षण पर इस से लाभ होता है।

v स्नायु के अनेक प्रकार के रोगो मे जब ठीक चुनी हुई औषधि से लाभ न हो, तब इसके प्रयोग से अनेक बार लाभ दिखलाई देता है।

(८) शक्ति—मूल-अरिष्ट, ६, ३०

वेरियोलीनम (VARIOLINUM)

डा० एलन लिखते हैं कि योग्य, अनुभवी तथा विश्वसनीय व्यक्तियो का अनुभव है कि साधारण दानो की, मिले-जुले दानो की और दूषित चेचक को ठीक करने की वेरियोलीनम मूल्यवान् औषधि है। यह प्रत्येक शक्ति मे—६ से C M तक—शानदार काम करती है।

वे आगे लिखते है कि चेचक के 'प्रतिरोधक' (Preventive) के तौर पर आजकल के प्रचलित टीके (Vaccination) से, जिस मे चेचक का स्थूल विष प्रयोग मे लाया जाता है, यह ज्यादह प्रभावशाली है। वेरियोलीनम भी चेचक के विष से ही बना है, परन्तु यह शक्तिकृत (Potentized) है। प्रचलित टीके के जो दुष्परिणाम होते हैं, वे इस से नही होते।

होम्योपैथी के अनुभवी चिकित्सको का कथन है कि जब चेचक फैल रही हो, तब इस औषधि की हज़ार या लाख शक्ति की एक मात्रा देने से रोग के आक्रमण का डर नही रहता। कोई-कोई चिकित्सक इस औषधि की ६ X शक्ति की प्रति सप्ताह एक मात्रा तीन सप्ताह तक देने का परामर्श देते हैं।

ब्रिटिश होम्योपैथिक जरनल मे डॉ० टॉयलर लिखती है कि एक रोगी को चेचक हो गई थी, उसका चेहरा बुरी तरह से बिगड गया था। चेचक होने के १४-१५ साल बाद उन्होंने उसे वेरियोलीनम दिया, और चेहरे के चेचक के दाग मिट गये। अन्य नोसोड्स की तरह वेरियोलीनम भी रोग का विष होने के कारण नोसोड ही है। इसी प्रकार का एक नोसोड इनफ्लुएन्ज़ीनम है जो इन्फ्लुएन्ज़ा

के विष से बना है। डॉ० फरजाई वुड्स लिखते हैं कि एक रोगी जिसे २० साल पहले इन्फ्लुएन्ज़ा हुआ था, तब से गिरा-गिरा रहता था, शरीर मे ताकत नहीं रही थी, बीस साल बाद इन्फ्लुएन्ज़ीनम २०० की एक मात्रा देने से उसकी शिकायतें जाती रही। इन सब दृष्टातो से स्पष्ट है कि शक्तिकृत नोसोड्स का कितना गहरा प्रभाव होता है—१५, २० साल के रोग को भी वे जड से उखाड फेंकते हैं।

डॉ० एलन लिखते हैं कि जडवादी लोग शक्तिकृत-औषधि के प्रभाव को नही समझ पाते क्योकि उन्हें होम्योपैथी की शक्तिकृत-औषधि मे औषधि का स्थूल-अश ही नही दीखता। डॉ० एलन पूछते हैं कि चेचक, खसरा, हवा मे उडकर लगनेवाले रोग हमें कैसे हो जाते है? उन से रोग हो जाना समझ मे आ जाय, और शक्तिकृत-औषधि का प्रभाव समझ मे न आये—यह क्या असगत बात नही है?

वेरेट्रम एल्बम (VERATRUM ALBUM)

(१) **माथे पर ठडा पसीना आना**—इस औषधि का सब से मुख्य-लक्षण माथे पर ठडे पसीने का आना है। इस औषधि की हैज़े मे विशेष प्रसिद्धि है, परन्तु हैज़े मे भी इसकी प्रसिद्धि का यही कारण है कि इसका मुख्य-लक्षण—'माथे पर ठडा पसीना आना'—हैज़े मे मौजूद रहता है। किसी भी रोग मे अगर यह लक्षण हो, तो इस औषधि को विचार-कोटि मे रखना ही होगा। खासी, दमा, हैज़ा, ब्रोकाइटिस, न्यूमोनिया, टाइफॉयड, कब्ज़—कोई भी रोग क्यो न हो, अगर उस मे माथे पर ठडा पसीना आने का लक्षण मौजूद है, तो इस औषधि से लाभ होगा।

इस औषधि मे ठडक आश्चर्यजनक रूप मे पायी जाती है। अगर किसी रोग मे यह औषधि रोग को ठीक करेगी, तो रोग के साथ ठडक का होना अवश्य जुडा होगा। शरीर बिल्कुल ठडा, शरीर से जो स्राव निकलें वे ठडे, रोगी बिल्कुल नि सत्व, शक्तिहीन, अत्यन्त ठडा, गर्मी का नामोनिशान नही, होठ इतने ठडे कि नीले पड जाये, अगुलिया भी ठड के कारण नीली, शरीर मे रक्त इतना ठडा मानो बर्फ का पानी नाडियो मे दौड रहा हो, सिर ठडा, हाथ-पैर इतने ठडे मानो रोगी मरा पडा हो, मानो सिर पर बर्फ का टुकडा पडा हो, इस ठडक मे भी आश्चर्य की बात यह है कि माथा ठडे पसीने से तर—शरीर के किसी अग मे गर्मी नही दीख पडती।

(२) **धुले हुए चावल के पानी की तरह के पिचकारी-भरे पतले दस्त**—रोगी को धुले हुए चावल के पानी की तरह के दस्त आते हैं, ऐसे निकलते हैं जैसे पिचकारी छूट रही हो। पेट में सख्त दर्द होता है, रोगी को प्यास बेहद

लगती है, ठडा पानी मागता है। दस्त भारी-भारी होते हैं, जल्दी-जल्दी होते हैं, दस्तो के समान कय जल्दी नही होती। रोगी के माथे पर ठडा पसीना आता है, रोगी अत्यन्त कमज़ोर हो जाता है, मुर्दे के समान विस्तर से लग जाता है, सारा शरीर वर्फ के समान ठडा हो जाता है, रोगी को ऐसा लगता है मानो सिर पर वर्फ का टुकड़ा रखा हुआ है। यह ठडक हैज़े के रोगियो मे पायी जाती है, हैज़े की तीनो दवाओ—कैम्फर, वेरेट्रम, क्यूप्रम—मे भी पायी जाती है, परन्तु जैसा हमने ऊपर लिखा, इतनी ठंड लगने पर भी माथे पर ठडा पसीना आना इस औषधि का अपना लक्षण है। कैम्फर मे ठडक का लक्षण मौजूद है, परन्तु पसीने का लक्षण नही है।

(३) ऐंठन (Cramps)—रोगी की पिडलियो मे, जाघो मे, मास-पेशियो मे कष्टप्रद ऐंठन होती है

(४) **हैज़े मे वेरेट्रम एल्बम, कैम्फर और क्यूप्रम की तुलना**—हम कैम्फर और क्यूप्रम के प्रकरण मे लिख आये हैं कि १८३१ मे, जब हनीमैन ७६ वर्ष के थे, युरोप मे हैज़े का प्रकोप हुआ। तवतक हनीमैन के सामने हैज़े का कोई मरीज नही आया था। रोग के लक्षणो के आधार पर उन्होने कहा कि इस रोग के लक्षण तीन औषधियो मे पाये जाते हैं—कम्फर, क्यूप्रम तथा वेरेट्रम एल्बम। उनका कथन था कि हैज़े के लक्षण जब पहले-पहल प्रकट हो—कय, दस्त आदि—तब सब से प्रथम औषधि कैम्फर है। इसका प्रभाव बहुत क्षणिक होता है, इसलिये शुरु-शुरु मे हर पाच मिनट के अन्तर से स्पिरिट ऑफ कैम्फर के कुछ बूद तवतक देते रहना चाहिये जवतक शरीर मे गर्मी न आ जाय। इन तीनो औषधियो के लक्षणो की तुलना निम्न है जिस से स्पष्ट होता है कि किस औषधि मे कौन-सा लक्षण सर्व-प्रधान है, हैज़े के कय-दस्त आदि लक्षण तो तीनो मे रहते ही हैं।

कैम्फर	वेरेट्रम	क्यूप्रम
१. मुख्यतम लक्षण शरीर का ठडा होना है	१ मुख्यतम लक्षण भारी-भारी दस्त-कय है	१ मुख्यतम लक्षण ऐंठन (Cramps) का होना है
२ नीला पड जाने का लक्षणो मे दूसरा स्थान है	२ नीला पड जाने का लक्षणो मे दूसरा स्थान है	२ रोगी नीला इसमें भी पडता है
३ कय-दस्त थोडे होते हैं—इस मे खुश्क हैजा होता है	३ ठडा पड जाने का लक्षणो में तीसरा स्थान है	३. कय-दस्त इसमे भी आते हैं
४ ठंडक है, पसीना नहीं	४. माथे पर ठंडा पसीना	x x x

(५) **हैज़े मे आर्सेनिक**—जिन तीन औषधियो का हैज़े के लक्षणो मे हमने ऊपर ज़िक्र किया, उनके अतिरिक्त आर्सेनिक मे भी हैज़े के-से लक्षण हो सकते हैं। उन लक्षणो के अलावा बेचैनी और जलन—ये दो लक्षण और जुड जाये, तो आर्सेनिक का क्षेत्र आ जाता है। इस मे धुले हुए चावलो के पानी के-से दस्त नही होते, दस्तो का रग काला-सा होता है, परिमाण थोडा होता है और वे बदबूदार होते हैं।

(६) **हैज़े मे कार्बो वेज**—हैज़े मे जब कय और दस्त बन्द हो जाये, फिर भी अगर रोगी ढहता चला जाय, शक्ति क्षीण होती जाय, पेट फूल जाय, पेट मे हवा भर जाय, रोगी मृतक-समान हो जाय, प्रतिक्षण जीवन की ज्योति बुझती दीखे, मृत्यु का बर्फीला पजा रोगी को पकडता दीखे, तब कार्बो वेज देना चाहिये।

(७) **हैज़े के प्रतिरोधक के तौर पर वेरेट्रम**—कई चिकित्सको का कहना है कि हैज़े के शुरु-शुरु के लक्षणो मे जब रोगी को दस्त आने लगें, कय हो, और माथे पर ठडा पसीना आये, तब इस औषधि को 'प्रतिरोधक' (Prophylactic) के तौर पर देने से हैज़ा अपना उग्र रूप धारण नही करता और रोग हैज़े मे परिणत नही होता।

(८) **हैज़े के प्रतिरोधक के तौर पर कैम्फर**—हनीमैन ने हैज़े के लक्षणो की शुरुआत मे कैम्फर को 'प्रतिरोधक' के तौर पर देने की सिफारिश की है। कैम्फर का विशेष-क्षेत्र सूके हैज़े (Dry cholera) मे है। रोग का आक्रमण अचानक और एकदम होता है, और रोगी का बल एकदम लुप्त होता जाता है।

(९) **वेरेट्रम का पागलपन—हर समय कुछ-न-कुछ करते रहना, कुछ नहीं तो कपडे फाड देना, घुटने टेक कर घटो प्रार्थना करना**—रोगी हर समय कुछ-न-कुछ करते रहना चाहता है, अगर कुछ भी करने को न हो, तो कपडे ही फाडने लगता है, घुटने टेक कर घटो प्रार्थना करता है, प्रार्थना भी इतनी ज़ोर से करता है कि कई घर दूर उसकी आवाज़ सुनाई देती है। वह समझता है कि वह कोई महान् अवतार है, दुनियाँ को पुकार-पुकार कर कहता है कि अपने पापो का प्रायश्चित करो। बडे-बडे लेक्चर झाडता है। सोचता है कि दुनियाँ भस्म हो जानेवाली है। कभी-कभी गन्दे गीत गाता है, अपने को नगा कर लेता है। प्रसूति के बाद कई स्त्रियो को इस प्रकार का पागलपन हो जाया करता है, स्त्री चीखती-चिल्लाती है। जो स्त्री गर्भवती नही भी है वह भी कहती है कि शीघ्र ही वह बच्चा जनेगी।

(१०) **शक्ति**—६, ३०, २०० (दस्तो मे ६ शक्ति से नीचे मत दो)

वाइबर्नम ओप्युलस (VIBURNUM OPULUS)

(१) कष्टदायक ऋतुस्राव (Dysmenorrhea)—इस औषधि की 'परीक्षा-सिद्धि' (Proving) डॉ० एलन ने की थी। डॉ० हेल लिखते हैं कि कष्टदायक-ऋतुस्राव के लिये जो चिकित्सक उपयुक्त औषधि को ढूढ निकालेगा, वह इस प्रकार का कष्ट भोगनेवाली हजारो स्त्रियों के आशीर्वाद का पात्र होगा। वाइबर्नम इसी प्रकार की औषधि है। यह कष्टदायक-ऋतुस्राव के लिये अत्युत्तम दवा है। इसके मूल-अर्क का प्रयोग किया जाता है, 3x तक प्रयोग किया जा सकता है। अमरीका की जगली जातियों मे इसका कष्टदायक-ऋतु-स्राव मे प्रयोग देखकर इस पर परीक्षण किये गये, और इस कष्ट मे इसे असाधारण तौर पर लाभप्रद पाया गया। ऋतुस्राव के कष्ट मे चार औषधियां मुख्य हैं—बोरॅक्स, गुएकम, अस्टिलेगो तथा वाइबर्नम। इन से ऋतुस्राव का कष्ट बन्द हो जाता है। यह गहराई मे जानेवाली औषधि नही है, परन्तु प्रभावशाली अवश्य है। दर्द की प्रत्येक लहर के बाद कोसे पानी मे मूल-अर्क की कुछ बूदे डाल कर लेते रहना चाहिये।

(२) प्रसूति के झूठे-दर्द तथा गर्भपात की आशका—(False labour pains and threatened miscarriage)—डॉ० हेल लिखते हैं कि प्रसूति के असली दर्द से पहले जो झूठे-दर्द आते रहते है, जिस से माता को असहनीय-कष्ट होता रहता है, उनके लिये यह अत्युत्तम औषधि है। गर्भवती स्त्री के पेट तथा टागो मे ऐंठन को और गर्भपात की आशका को भी यह दूर कर देती है।

योहिम्बीनम (YOHIMBINUM)

(१) नपुसकता—पुरुषो के लिये यह कामोत्तेजक औषधि है। इस के प्रभाव का मुख्य-क्षेत्र जननाग (Sexual organs) हैं। अगर पेट मे जलन आदि की कोई तकलीफ हो तो इस औषधि का प्रयोग नही करना चाहिये। अगर पुरुष मे कामोत्तेजक-शक्ति घट जाय तो इस औषधि के एक भाग के साथ १०० भाग पानी मिलाकर (एक प्रतिशत औषधि) उसकी ५-१० बूद दिन मे एक बार लेने से काम-शक्ति लौट आती है। होम्योपैथी मे नपुसकता को दूर करने की यह महौषधि है।

(२) स्तनो मे दूध बढ़ाना—इस औषधि के सेवन से स्तन की ग्रन्थियो मे रक्त का सचार बढ जाता है, और स्त्री के स्तनो मे दूध की मात्रा बढ जाती है। ५-१० बूद मूल-अर्क, अथवा ३, ६, ३० मे कोई-सी शक्ति दी जा सकती है।

जिकम मेटैलिकम—जस्ता, (ZINCUM MET)

GENERALS AND PARTICULARS

व्यापक-लक्षण तथा मुख्य-रोग

(१) सपूर्ण स्नायु-मडल की शिथिलता तथा प्रतिक्रिया का अभाव (Nervous prostration and lack of vital reaction)

(२) स्नायु-मडल की शिथिलता के कारण खसरा-चेचक आदि के दाने न निकलने से रोग—डिलीरियम, मैंनिजाइटिस आदि

(३) स्नायु-मडल की शिथिलता के कारण माहवारी का रक्त-स्राव न होना, इस से मासपेशियों मे फडकन, हिस्टीरिया आदि होना

(४) स्नायु-मडल की शिथिलता के कारण जीवनी-शक्ति की असीम निर्बलता—दमे में खखार का बाहर न निकाल सकना

(५) पैरो को चलाते रहना

(६) सारी रीढ में जलन तथा मेरु-दड के रोग के लक्षण (Burning of spine and Spinal symptoms)

(७) तकिये पर सिर को इधर-उधर फेरना—पक्षाघात की सभावना के लक्षण (Rolling of head from side to side)

(८) शराब न सह सकना

(९) टैरीजियम—Pterygium

(१०) रोगी बैठकर और पीछे की ओर झुककर ही पेशाब कर सकता है

(११) जिकम का नक्स, इग्नेशिया, क्यूप्रम, बैराइटा कार्ब, सिमिसिफ्यूगा, लैकेसिस से सबध

MODALITIES

प्रकृति

लक्षणो मे कमी (Better)

*दानों के निकलने पर आराम

*स्रावो के बहने पर आराम

*गर्म किन्तु खुली हवा से लाभ

लक्षणो मे वृद्धि (Worse)

*दानो या स्राव के रुकने से कष्ट

*थकान से रोगी का कष्ट बढना

*शराब पीने पर रोग बढ़ना

*शाम के समय रोग का बढ़ना

(१) संपूर्ण स्नायु-मंडल की शिथिलता तथा प्रतिक्रिया का अभाव (Nervous prostration and lack of vital reaction)—यह एक अत्युत्तम 'अनेक-कार्य-साधक' (Polychrest) औषधि है। इसका मुख्य लक्षण संपूर्ण स्नायु-मंडल की शिथिलता है। स्नायु-मंडल की कमजोरी, शक्ति-हीनता, सामर्थ्य का अभाव इस औषधि में कूट-कूट कर भरा हुआ है। स्नायु-मंडल इतना शक्तिहीन हो जाता है कि त्वचा पर कीड़ियों के चलने का-सा अनुभव होता है। डॉ० नैश लिखते हैं कि श्री वर्ट का कहना था कि लोह का रक्त की कमी को दूर करने में जो असर है, जिंक का स्नायु-शक्ति की कमी को दूर करने में वैसा ही असर है। इस रोगी की शारीरिक तथा स्नायविक रचना लगभग टूट चुकी होती है, मस्तिष्क काम नहीं करता, क्लान्त (Brain-fag) रहता है, मस्तिष्क में रक्तहीनता की वजह से कमजोरी आ जाती है। रोगी का मन अत्यन्त धीमी गति से काम करता है, रोगी अशक्त और थका रहता है। जब उस से कोई प्रश्न किया जाता है, तो वह उत्तर देने से पहले प्रश्न को दोहराता है। दोहराता इसलिये है ताकि प्रश्न के अभिप्राय को वह समझ ले। प्राय ऐसी हालत टाइफॉयड के रोगी में पायी जाती है जब कि वह पूर्ण स्वस्थ होने के स्थान में लटकता रहता है। जिंकम के रोगी की तरफ देखने से यह नहीं पता चलता कि वह इतना शक्तिहीन हो गया है, परन्तु अगर उस से कोई प्रश्न किया जाय, तो वह उत्तर देने के बजाय तुम्हारी तरफ ताकता भर है, और कुछ देर बाद कहता है—ओह! 'ओह'—वह इसलिये कहता है क्योंकि इतनी देर बाद वह प्रश्न का समझ चुका होता है। रोगी को कोई बात याद नहीं रहती। मस्तिष्क की थकावट और अशक्ति (Cerebral exhaustion) इतनी जबर्दस्त हो जाती है कि कोई-सा भी मानसिक-कार्य करने में कठिनाई अनुभव होती है। रोगी किसी बात को समझ नहीं पाता, और एक विचार को दूसरे विचार से जोड़ नहीं पाता। दिनभर में उसने जो काम स्वयं किये होते हैं उनकी भी उसे याददाश्त नहीं रहती।

प्रतिक्रिया का अभाव (Lack of vital reaction)—रोगी जीवन का संहार करनेवाली किसी बीमारी के विनाशकारी-प्रभाव के वशीभूत होता है। यह विनाशकारी-प्रभाव उसकी जीवनी-शक्ति पर आक्रमण करता है। जीवनी-शक्ति कमज़ोर हो जाने के कारण रोग को बाहर फेंक देने में अशक्त हो जाती है, और रोग शरीर के भीतर-ही-भीतर अपने विनाशकारी प्रभाव के द्वारा रोगी के आन्तरिक कोमल अंगों को मानो शत्रु की तरह काटता, कचोटता जाता है। जिंकम का काम इस भीतर छिपे हुए शत्रु का मुकाबिला करना है। जबतक रोगी को भीतर से सतानेवाला शत्रु बाहर नहीं आ जाता, तबतक उसका संहार भी नहीं किया जा सकता। जिंकम जीवनी-शक्ति—स्नायु-मंडल

—मे वल का संचार कर उसे समर्थ वना देता है। दवा हुआ रोग भीतर छिप-कर रोगी को सताया करता है। उदाहरणार्थ (i) स्नायु-मडल की शिथिलता तथा प्रतिक्रिया के अभाव के कारण खसरा-चेचक आदि के दानो का बाहर न निकल सकना, और रोग के भीतर रहने से डिलीरियम, मैनेंजाइटिस आदि रोग उत्पन्न कर देना, (ii) स्नायु-मडल की शिथिलता तथा प्रतिक्रिया के अभाव के कारण युवावस्था आ जाने पर लडकियो की माहवारी न होना और माहवारी न होने से अंगो मे फडकन या रोगी को हिस्टीरिया आदि होना, (iii) स्नायु-मडल की शिथिलता तथा प्रतिक्रिया के अभाव के कारण दमे आदि रोग मे रोगी का इतना निर्बल हो जाना कि खखार भी वाहर न फेंक सके, (iv) स्नायु-मडल की शिथिलता के कारण रोगी का पैरो को निश्चल न रख सकना और उन्हे चलाते रहना। इन सव अवस्थाओ मे जिकम लाभप्रद है।

(२) स्नायु-मडल की शिथिलता और जीवनी-शक्ति मे प्रतिक्रिया के अभाव के कारण दांत न निकलने, खसरा-चेचक आदि के दानो के दव जाने से डिलीरियम, मैनेंजाइटिस आदि रोग उत्पन्न हो जाना—कभी-कभी वच्चो के जब दात नही निकल पाते, तो अन्दर-ही-अन्दर वे स्नायु-मडल को उत्तेजित कर मस्तिष्क के रोग उत्पन्न कर देते है। वच्चे को तेज बुखार चढ जाता है, डिलीरियम तक हो जाता है। खसरा-चेचक आदि के दाने अगर न उभरें, अन्दर ही दव जाये, तव उसका भी मस्तिष्क पर प्रभाव पड जाता है। डॉ० चौधरी अपनी 'मैटीरिया मैडिका' मे एक वालक का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि उसे वहुत तेज बुखार था, वुखार आदि के लक्षणो पर एकोनाइट, बेल आदि दिया गया, परन्तु रोग काबू मे न आया। उन्होने उस समय के प्रसिद्ध होम्यो-पैथ डा० मजूमदार को सलाह-मशविरे के लिये वुलाया। डॉ० मजूमदार ने वालक के रोग का सारा इतिहास सिलसिलेवार पूछा, तो पता चला कि जव उसे खसरा निकल रहा था, तव उसकी नर्स ने उसे स्नान करा दिया था, तव से दाने दव गये और बुखार चढ गया। रोगी वहुत कमजोर हो चुका था, फिर भी उसे जिकम की तीन मात्राए दी गई। इनके देने से अन्दर छिपे दाने वाहर आ गये, परन्तु वालक अवतक इतना निर्बल हो चुका था कि वच न सका। जिकम दव गये दानो को वाहर निकाल देता है और रोग भीतर-ही-भीतर रोगी को कचोटने के स्थान मे वाहर आ जाता है। वाहर आ जाने पर अगर रोगी साध्य है, तो उसकी लक्षणानुसार अन्य औषधियो से चिकित्सा की जा सकती है। मैनेंजाइटिस मे वच्चा सोते-सोते चीख उठता है, चौंक उठता है, इस मे दाने दव जाने से मस्तिष्क की झिल्ली मे सूजन आ जाती है जिस मे जिकम लाभप्रद है।

(३) **स्नायु-मण्डल की शिथिलता और जीवनी-शक्ति मे प्रतिक्रिया के अभाव के कारण युवावस्था आ जाने पर लडकियो की माहवारी न होने से अगो मे फडकन तथा हिस्टीरिया के लक्षण उत्पन्न हो जाना**—जब कोई लडकी यवावस्था मे आ जाती है, तब उसके रज स्राव का समय होता है, परन्तु अगर किसी कारण रज स्राव बन्द हो जाय, तो वह हिस्टीरिया के लक्षण प्रकट करने लगती है। उसके अगो मे फुदकन होने लगती है, गर्दन की पीठ मे दर्द होने लगता है, मेरु-दड मे जलन होने लगती है, हाथ-पैर मे कीडिया-सी चलने का अनुभव होने लगता है—भिन्न-भिन्न प्रकार के हिस्टीरिया के-से लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इन सब का कारण स्नायु-मडल की शिथिलता और जीवनी-शक्ति मे रोग को बाहर फेकने की शक्ति का—प्रतिक्रिया का—अभाव है। **जिकम** देने से जीवनी-शक्ति मे शक्ति आ जाती है, वह रोग के प्रति प्रतिक्रिया करने लगती है, और दबी हुई माहवारी, जो जीवनी-शक्ति की कमजोरी के कारण होती है, खुलकर होने लगती है।

(४) **स्नायु-मडल की शिथिलता के कारण जीवनी-शक्ति की असीम निर्बलता होने से दमे आदि रोग मे खखार का बाहर न निकाल सकना**—इस औषधि का रोगी इतना कमजोर हो जाता है, उसका स्नायु-मडल इतना शिथिल और उसकी जीवनी-शक्ति मे प्रतिक्रिया करने का इतना अभाव हो जाता है कि दमे आदि रोग मे वह खखार को बाहर भी नही निकाल सकता। जब खखार बाहर निकल आये तब उसे चैन पडता है। जैसा हमने माहवारी के विषय मे लिखा, कमजोरी के कारण वह भी नही होती, रुकी रहती है, माहवारी का स्राव होने लगे, तो रोगिणी अच्छी हो जाती है, हिस्टीरिया के लक्षण नही रहते। उसी प्रकार दमे के रोगी मे जब खखार को बाहर निकालने की शक्ति रोगी मे न हो तो वह परेशान रहता है, खखार निकल आये तो तबियत ठीक रहती है। अगर स्नायु-मडल की शिथिलता और प्रतिक्रिया के अभाव के कारण इस प्रकार की निर्बलता पायी जाय, तो **जिकम** के व्यवहार से रोगी के स्नायु-मडल को ताकत मिलती है और वह खखार को बाहर फेक सकता है।

(५) **पैरो को चलाते रहना**—इस औषधि का एक खास और अद्भुत लक्षण यह है कि इतना निर्बल हो जाने पर भी रोगी दोनो टागो को लगातार हिलाता रहता है, वह टागो को स्थिर नही रख सकता। यह नही कि दुर्बल अवस्था मे टागो को लगातार हिलाते रहने मे **जिकम** औषधि है, अगर रोगी सबल भी हो, और टागो को हिलाते रहने का लक्षण बडा प्रबल हो, तो इस औषधि को नही भुलाया जा सकता। रात को सोने पर भी रोगी घटो टाँगो को हिलाता रहता है। हाथ-पाव की गति पर उसका वश नही रहता। यदि यह अवस्था उचित औषधि से दूर न कर दी जाय, तो पक्षाघात हो सकता है।

(६) सारी रीढ़ मे जलन तथा मेरु-दड के रोग के लक्षण (Burning of spine and spinal symptoms)—रोगी की रीढ मे जलन होती है, ऊपर से नीचे तक रीढ मे जलन। यह जलन असली जलन नही होती, केवल रोगी को अनुभव होती है—Purely subjective—क्योकि रोगी का रीढ का तापमान साधारण ही रहता है। जिंकम मे मस्तिष्क तथा मेरु-दड के लक्षणो की भरमार रहती है। मेरु-दड की जलन, हाथ-पैर मे कीडियो का-सा चलना, मेरु-दड की उत्तेजना (Spinal irritation), शक्ति का अत्यन्त अभाव, कमर का दर्द, कमर को छूने से दर्द होता है, रोगी कमर को हाथ नही लगाने देता। चलने-फिरने से यह दर्द घट जाता है, बैठे रहने से बढा रहता है। ये सब मेरु-दड के रोग के लक्षण हैं, और इन मे जिंकम से लाभ होता है।

(७) तकिये पर सिर को इधर-उधर फेरना—पक्षाघात की सभावना के लक्षण (Rolling of head from side to side)—डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि कभी-कभी ऐसे रोगी मे वास्ता पड जाता है जिसके लक्षण सूचित करते है कि उसे पक्षाघात होनेवाला है। रोगी को मस्तिष्क-सबधी गभीर रोग होता है। कई दिन तक तकिये पर पडा इधर-उधर सिर हिलाता है, शरीर क्षीण होता जाता है, मल-मूत्र अनायास विस्तर मे ही निकल जाता है, जीभ सूक जाती है, चमडे की-सी लगती है, प्रतिदिन रोगी पहले दिन से ज्यादा बूढा हो गया—ऐसा लगता है। एक हाथ या एक पैर का फालिज हो जाता है, ऐसा लगता है कि सारा शरीर फालिज से ग्रस्त है। रोगी दर्द से चिल्लाता है यद्यपि उसकी चीख एपिस जैसी तीव्र नही होती। इस समय रोगी को जिंकम देने से कभी-कभी उसका बुझता हुआ जीवन-दीप जग उठता है। औषधि देने के कुछ दिन बाद जिन अगो मे सवेदन नही था, जो गतिहीन पडे थे, उनमे कपन, स्फुरण होने लगता है, या रोगी को उन अगो मे पसीना आने लगता है। यह जीवनी-शक्ति के जागरण का लक्षण है, जीवनी-शक्ति की रोग प्रति प्रति-क्रिया का लक्षण है। देखनेवालो को ऐसा दीखता है कि रोगी चला, अब बचता नही क्योकि रोग से लडने की जीवनी-शक्ति की जो यह प्रक्रिया चल पडती है, गतिहीन अगो मे फुदकन, स्फुरण, उनमे काटो की-सी चुभन, कीडियो के रेंगने का-सा अनुभव—ये सब कष्ट रोगी को बर्दाश्त होते नही लगते, रिश्तेदार भी घबरा जाते हैं, परन्तु वास्तव मे ये लक्षण जीवनी-शक्ति के रोग से लडने के लक्षण होते हैं। एक-दो सप्ताह तक इस प्रकार का कष्ट बना रह सकता है, और सभव है कि एक-दो सप्ताह के बाद फिर-से पक्षाघात के वापस लौटने के लक्षण दीख पडें। उस समय इस औषधि की दूसरी मात्रा देने का समय होता है। इस प्रकार के रोगी को जिंकम ही ठीक कर सकता है। तकिये पर इधर-उधर सिर डोलाना बेल और हेलेबोरस मे भी पाया जाता है, परन्तु पूर्ण

स्वास्थ्य-लाभ जिंकम से ही होता है। डॉ० कैन्ट लिखते हैं कि पक्षाघात के-से उक्त रोग में से निकलने के लिये उक्त प्रकार के कष्ट में से रोगी को गुज़रना ही होगा, तभी वह नीरोग हो सकेगा।

(८) शराब न सह सकना—इस औषधि का एक मुख्य-लक्षण यह है कि रोगी किसी प्रकार की शराब को सहन नहीं कर सकता।

(९) टेरीजियम (Pterygium)—आंख में नाक की तरफ के कोने से आंख की पुतली तक एक त्रिकोणाकार मांस की वृद्धि इस रोग में होती है। इस रोग को दूर करने में जिंकम प्रसिद्ध है।

(१०) रोगी बैठकर और पीछे की ओर झुककर ही पेशाब कर सकता है—रोगी बैठकर, और बैठकर भी पीछे की ओर झुककर ही पेशाब कर सकता है। क्रियोज़ोट लेटे बिना पेशाब नहीं कर सकता, सार्सापैरिला खड़े हुए बिना पेशाब नहीं कर सकता।

(११) नक्स तथा जिंकम परस्पर-विरोधी हैं—कुछ लोग सामर्थ्य से अधिक काम करते हैं, उत्तेजनशील होते हैं। ये दोनों लक्षण नक्स तथा जिंकम में पाये जाते हैं, परन्तु जिंकम के पहले या बाद नक्स नहीं दिया जाना चाहिये।

जिंकम तथा इग्नेशिया—जैसा हमने ऊपर कहा, जिंकम के बाद नक्स नहीं देना चाहिये, परन्तु जिंकम के बाद इग्नेशिया अच्छा काम करता है।

जिंकम तथा क्यूप्रम—जब किसी बाह्य-कारण से किसी रोग के दाने दब जायें, तब क्यूप्रम दिया जाता है, जब जीवनी-शक्ति की कमज़ोरी के कारण दाने न निकलें, शक्तिहीनता, दुर्बलता की वजह से न निकलें, तब जिंकम दिया जाता है। सोरा-दोष के कारण—त्वचा के रोग के कारण—अगर दाने न निकलें तब सल्फर दिया जाता है।

जिंकम तथा बैराइटा कार्ब—जो बालक या रोगी जन्म से स्नायु-शक्ति-हीन हैं, जन्म से ही उनका मस्तिष्क दुर्बल है, उनके लिये जिंकम उपयुक्त औषधि नहीं है। उनके लिये बैराइटा कार्ब उपयुक्त औषधि है क्योंकि स्वभाव या जन्म से ही निर्बल-मस्तिष्क को शक्ति देने का क्षेत्र बैराइटा कार्ब का है।

जिंकम तथा सिमिसिफ्यूगा—माहवारी के दर्द में इन दोनों के परस्पर-विरोधी लक्षण हैं। जिंकम में ज्यों ही माहवारी का रक्तस्राव शुरु होता है डिम्ब-कोशों में से दर्द हट जाता है, और ज्यों ही रक्त-स्राव बन्द हो जाता है, डिम्ब में दर्द फिर शुरु हो जाता है। सिमिसिफ्यूगा में जिस समय रक्तस्राव हो रहा होता है तब हिस्टीरिया के तथा दर्द के लक्षण प्रकट होते हैं, जितना ही रक्त-स्राव होता है उतना ही दर्द भी बढ़ता है। लैकेसिस में रक्तस्राव के साथ जिंकम की तरह दर्द घट जाता है।

(१२) शक्ति तथा प्रकृति—६, ३०, २०० (रोगी 'सर्द'—Chilly—है)

रोगज–औषधियां
(NOSODES)

१. होम्योपैथी में आईसोपैथी का प्रवेश

होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार जो औषधि स्वस्थ-शरीर मे जिस रोग को उत्पन्न करती है, उसी प्रकार के रोग मे वह औषधि उस रोग को दूर करती है। यहा 'उसी-प्रकार'—यह शब्द विशेष ध्यान देने योग्य है। होम्योपैथी का सिद्धान्त यह है कि औषधि 'उसी-प्रकार' (Similar) के रोग को ठीक करती है, 'उसी' (Same) रोग को नही। एपिस मधु-मक्खी के डक से बनती है। यह मधु-मक्खी के डक की-सी सूजन को—जलोदर, किडनी की बीमारी से सूजन आदि को—ठीक कर सकती है, परन्तु शहद की मक्खी के काटे को ठीक नही करती क्योकि यह बात 'उसी-प्रकार' (Similar) मे न आकर 'उसी' (Same) मे आ जाती है।

परन्तु क्या रोग उस रोग के ही विष से ठीक नही होता? हनीमैन के समय मे भी यह विचार चिकित्सा-जगत् मे मौजूद था कि जो रोग हो वह उसी रोग के विष से दूर हो सकता है। हनीमैन का कहना यह था कि इस विचार को 'आइसोपैथी' (Isopathy) कहा जा सकता है, 'होम्योपैथी' (Homoeopathy) नही। वे होम्योपैथी के पृष्ठ-पोषक थे, आइसोपैथी के नही। इसे कुछ भी नाम क्यो न दिया जाय, हनीमैन के बाद, हनीमैन के ही सिद्धान्त से कि जब 'उसी-प्रकार' के रोग को उत्पन्न करनेवाली औषधि से रोग ठीक हो जाता है, तब 'उसी' रोग को उत्पन्न करनेवाली औषधि से उसे क्यो ठीक नही होना चाहिये—इस दिशा मे चिकित्सको ने विशेष रूप से सोचना शुरु किया, और इसी चिंतन से 'रोगज-औषधियो' (Nosodes) का जन्म हुआ। 'नोसोस' (Nosos) ग्रीक-भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है—'रोग'। रोग के विष से जो औषधिया होम्योपैथिक-पद्धति से शक्तिकृत की जाती हैं उन्हें 'नोसोड' कहते हैं। क्योकि वे रोग के विष से बनती है इसलिये हमने 'नोसोड' के लिये हिन्दी मे 'रोगज' शब्द का प्रयोग किया है।

नोसोड्स (Nosodes—रोगज-औषधियां)—हनीमैन के बाद होम्योपैथी में अनेक 'रोगज'-औषधियो (Nosodes) का समावेश हुआ है। डॉ० गोल्डबर्ग के अनुसार कई चिकित्सक हर बीमारी मे नोसोड्स का प्रयोग करने लगे हैं, वे इन्हें रुटीन के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। सब से पहले डॉ० हेरिंग ने रोग के विषो का उन्ही रोगो को दूर करने मे होम्योपैथी मे विश्वासपूर्वक

प्रयोग किया । उन्होने १८३३ मे 'लाइसीन' या 'हाइड्रोफोवीन' (Lyssin or Hydrophobin) की परीक्षा—'प्रूविंग'—की। 'लाइसीन' या 'हाइड्रोफ़ोवीन' पागल कुत्ते की राल को शक्तिकृत कर के बनाई जाती है। हेरिंग ने यह परीक्षण लुई पास्चर से, जिनके नाम से पागल कुत्तो से काटे हुए मनुष्यो की चिकित्सा की जाती है, पचास वर्ष पहले किया था । अच्छे या पागल किसी भी कुत्ते के काटने पर शक्तिकृत लाइसीन अपना पूरा प्रभाव दिखाती है। डॉ० हेरिंग के एक अनुयायी थे—डॉ० सैमुअल स्वान । उन्होंने अनेक रोगो के विषो से 'रोगज-औषधिया' (Nosodes) तैयार की जिनमे से 'ट्युवर्क्युलीनम' मुख्य है, जो टी० बी० के विष से बनाई जाती है और क्षय-रोग मे दी जाती है। इसके बाद डॉ० एच० सी० एलन ने 'मैटीरिया मैडिका ऑफ नोसोड्स' लिखा जिसमे अनेक रोगज-औषधियो के लक्षणो का विस्तार से वर्णन किया।



"मैटीरिया मैडिका ऑफ नोसोड्स" (१९०८) के लेखक डॉ० हैनरी सी० एलन (१८३६-१९०९—वृद्धावस्था मे)

यह पुस्तक उनकी १९०९ मे मृत्यु के वाद १९१० मे प्रकाशित हुई। आजकल जो 'वैक्सीन्स'—Vaccines—द्वारा इलाज होता है वह होम्योपैथी का 'नोसोड्स'—Nosodes—का ही इलाज है। अब होम्योपैथी मे 'रोगज-औपधियो' ने अपना स्थान वना लिया है जिनमे से मुख्य-मुख्य निम्न हैं

ऐगैरिकस, एम्ब्रा ग्रीसिया, एंथ्रैसीनम, ट्युबर्क्युलीनम (बैसीलीनम), कारसिनोसीन, कोलेस्टरीन, डिफ्थीरीनम, इन्फ्लुएन्ज़ीनम, लाइसीन, मैलेन्ड्रीनम, मेलेरिया, ऑफिसिनेलिस, मैडोराइनम (गोनोरिनम), मोरबिलिनम, पैरोटाइ-

डीनम, परटुस्सीन, सोरिनम, पाइरोजेन, सिर्रीनम, सिकेल कोरनूटम, सेप्टीसिमीन, स्ट्रेप्टोकोकसीन, सिफिलीनम, अस्टिलैगो, वेरियोलीनम—आदि।

सारकोड्स (Sarcodes—**जान्तव-औषधिया**)—जैसे 'रोगज-औषधियो' का होम्योपैथी मे प्रयोग होता है वैसे जानवरो के स्वस्थ अंगो से औषधियो का होम्योपैथिक-निर्माण होता है जिन्हें 'सारकोड्स' (Sarcodes)—'जान्तव-औषधिया'—कहा जाता है। उदाहरणार्थ, कैलकेरिया कार्ब घोंघे (Oyster-shell) से बना है, कार्वो ऐनीमैलिस बैल की चमडी को जला कर कोयला बनाने से बना है, कैस्टर इक्वी घोड़े के खुर से बना है। लैक कैनाइनम कुतिया के दूध से बना है, लैक डिफ्लोरेटम सेपरेटा-दूध से बना है। शरीर के स्वस्थ अगो से होम्योपैथिक ढग से बननेवाली अन्य भी अनेक औषधिया हैं। उदाहरणार्थ, कोलेस्टेरिनम, पैंक्रियेटीनम, पेपसिनम, थाइरॉयडीनम, युरिया, यूरिक ऐसिड आदि। इनका भी होम्योपैथिक उपयोग होता है।

२. आईसोपैथी के विषय में होम्योपैथिक समाधान

'होम्योपैथी' के सिद्धान्त को तो 'उसी-प्रकार' (Similar)—यह नाम दिया जा सकता है, 'आइसोपैथी' में 'उसी-प्रकार' की बात न होकर, 'उसी' (Same) की बात है, फिर 'आइसोपैथी' का 'होम्योपैथी' से मेल कैसे बैठता है? जिन लोगो ने इन दोनो मे मेल बैठाने की कोशिश की है उनका कहना है कि जब किसी रोग के विष को 'शक्तिकृत' (Potentize) किया जाता है, तब वह 'वही' (Same) नहीं रहता, 'वैसा' (Similar) हो जाता है—इसलिये वह आइसोपैथिक न रह कर होम्योपैथिक हो जाता है। इसका एक दूसरी तरह से भी समाधान किया जाता है। दूसरी तरह से समाधान करनेवालो का कहना है कि किसी रोग का जो विष उसी रोग मे दिया जाता है वह 'रोगज-औषधि' (Nosode) उसी व्यक्ति से तो नही ली जाती। किसी दूसरे व्यक्ति से रोग का विष लेकर अन्य व्यक्तियो को दिया जाता है—इस प्रकार वह 'वही' (Same) न रहकर, 'वैसा' (Similar) हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी भिन्न-भिन्न प्रकृति होती है, प्रकृति की उस भिन्नता के कारण 'रोगज-औषधि' (Nosode) को 'सम' (Similar) तो कहा जा सकता है, 'इदमेव' (Idem—Same) नही कहा जा सकता। इस दृष्टि से 'आसोपैथी' तथा 'होम्योपैथी' मे जो विरोध दीखता है वह विरोध नही रहता। इसमे एक लाभ यह हो जाता है कि रोग के लक्षणो के सदृश्य औषधि के लक्षणो मे समानता ढूढने मे तो दिक्कत पडती है, लक्षणो को मिलाने मे बहुत मगजपच्ची करनी पडती है, परन्तु 'रोगज-औषधि' (Nosodes) मे लक्षणो को मिलाने की असुविधा दूर हो जाती है क्योकि उसी रोग के विष से ही तो 'नोसोड' को तयार किया जाता है जिस रोग का उस 'नोसोड' से इलाज करना होता है।

इस प्रकरण मे इस बात का उल्लेख कर देना असगत न होगा कि रोग के विष को 'शक्तिकृत' (Potentize) करके देने से रोग ठीक होता हुआ देखा भी गया है। उदाहरणार्थ, डा० ग्रीन लिखते हैं कि एक रोगी को एग्ज़ीमा था जो **ग्रेफाइटिस, पैट्रोलियम, मेज़ेरियम, सल्फर** आदि किसी से भी ठीक नही हुआ। जब एग्ज़ीमा के स्राव को शक्तिकृत कर के उच्चशक्ति मे दवा दी गई, तो वह ठीक हो गया। इस से जो भी परिणाम निकाला जा सकता हो उसे ध्यान मे रखते हुए ही हमे 'आइसोपैथी' तथा 'होम्योपैथी' के समन्वय को समझना होगा।

३. होम्योपैथी, आइसोपैथी और टॉटोपैथी में भेद

होम्योपैथी मे रोग के समान रोग उत्पन्न करनेवाली औषधि दी जाती है, आइसोपैथी मे रोगज-विष से शक्तिकृत दवा उसी रोग मे दी जाती है, टॉटोपैथी मे ऐलोपैथी की दवाओ से जो रोग उत्पन्न हो जाते है उन रोगो को दूर करने के लिये ऐलोपैथी की दवाओ को शक्तिकृत कर के इन दवाओ से होने-वाले रोगो को दूर किया जाता है। उदाहरणार्थ, आजकल एस्पिरीन बहुत ली जाती है। इस से अनेक उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं। अनेक रोगो मे पैन्सिलीन, स्ट्रैप्टोमाइसीन तथा अन्य ऐन्टी-बायोटिक दवाए दी जाती हैं जो एक रोग को दूर करती हैं, दूसरे रोगो को उत्पन्न कर देती हैं। इन उपद्रवो को शान्त करने के लिये इन्ही औषधियो को होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार शक्तिकृत किया जाता है। एस्पिरीन को ३०, २०० आदि की शक्ति मे तथा अन्य औषधियो को भी शक्तिकृत करके इन औषधियो से उत्पन्न होनेवाले रोगो को दूर किया जाता है। टॉटो (Tauto) का अर्थ है—'वही' (Same)—इसप्रकार की चिकित्सा का नाम 'टॉटोपैथी' है। आइसोपैथी मे रोग के विष को और टॉटोपैथी मे जिस एलोपैथिक दवा से रोग उत्पन्न हुआ है उसी दवा को शक्ति-कृत किया जाता है।



डॉ० रमनलाल पटेल (जन्म १९२६)

टॉटोपैथी का प्रचार डॉ० रमनलाल पटेल ने किया है। उनकी फार्मेसी का नाम है हनीमैन होम्योपैथिक फार्मेसी, परानगोट मलिकाल, कोडीमठ, कोट्टायम, केरल स्टेट। वे ही इन औषधियो का निर्माण करते हैं।

हम क्योकि 'रोगज-औषधियो' (Nosodes) पर लिख रहे हैं, इसलिये यहा मुख्य-मुख्य नोसोड्स का उल्लेख कर देना आवश्यक है

४. मुख्य-मुख्य नोसोड्स तथा उनके लक्षण

क सोरिनम
(PSORINUM)

यह सब से पहला 'नोसोड' है। सब से पहले इसका प्रयोग स्वय हनीमैन ने किया था। उन्होंने त्वचा की 'खुजली' (Scabies) के पीपमय मवाद से इसे तैयार किया था। अन्य नोसोड्स का प्रयोग हनीमैन के बाद हुआ, इसका प्रयोग उन्होने स्वय किया। होम्योपैथी मे सोरा-दोष (Psoric miasm) के लिये जैसे सल्फर मुख्य दवा है, वैसे ही **सोरिनम** भी उतनी ही मुख्य है। दोनो का प्रयोग त्वचा के रोगो के लिये विशेषरूप से होता है, जहा सल्फर काम नही करता वहा **सोरिनम** काम कर देता है, परन्तु फिर भी दोनो के लक्षणो मे भेद है।

सोरिनम 'शीत-प्रधान' (Chilly) है, रोगी गर्मी मे भी गर्म कपडा सिर पर तथा जिस्म पर लपेटे रहता है, **सल्फर** को गर्मी लगा करती है, वह 'ऊष्णता-प्रधान' (Hot) है। **सोरिनम** को निराशा घेरे रहती है, **सल्फर** चिन्ता-रहित, आशावान् तथा दार्शनिक-मनोवृत्ति का होता है। इन भेदो के होते हुए भी जब **सल्फर** निष्फल हो जाता है, तब **सोरिनम** लाभ कर देता है।

टाइफॉयड के दुष्परिणाम—जब रोगी टाइफ़ॉयड के बाद पूर्ण-स्वास्थ्य लाभ न करे, तब **सोरिनम** उपयोगी पाया गया है। डॉ० एलन लिखते हैं कि एग्जीमा के रोग मे पूर्ण-लाभ तबतक नहीं होता, जबतक इसे न दिया जाय। उनके कथनानुसार इस युग मे **सल्फर** की अपेक्षा **सोरिनम** अधिक उपयोगी हो गया है।

सोरिनम के कुछ 'विलक्षण-लक्षण' (Peculiar symptoms) हैं जिनकी तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये। वे हैं—

i किसी रोग के आक्रमण से पहले रोगी अपने को असाधारण तौर पर स्वस्थ अनुभव करता है। यह लक्षण **ब्रायोनिया, नक्स वोमिका, फॉसफोरस** तथा **सीपिया** मे भी है।

ii दमे मे रोगी प्राय बैठा रहता है, परन्तु सोरिनम के दमे के रोगी को दमे मे लेटने से आराम मिलता है।

iii इसके रोगी को सिर-दर्द होने से पहले भूख सताने लगती है।

iv. बचपन के पक्षाघात (Infantile paralysis) में इससे लाभ होता है।

v. जब बच्चा दिन भर खेलता है और रात भर रोता है तब इस से लाभ होता है। जलापा में भी ऐसा है। लाइको में इस से उल्टा है।

ख ट्युबर्क्युलीनम या बैसीलीनम
(TUBERCULINUM OR BACILLINUM)

यह 'नोसोड' टी० बी० के पस से बनता है। इस के लिये हम लोग डा० बर्नेट तथा स्वान के ऋणी हैं। ट्युबर्क्युलीनम तथा बैसीलीनम दोनों का निर्माण टी० बी० के मूल-रोग से होता है। ट्युबर्क्युलीनम का टी० बी० से फेफड़े के पस से, और बैसीलीनम का टी० बी० के फेफड़े के बैसीलस (कीटाणु) से निर्माण होता है, परन्तु दोनों का प्रयोग एक ही प्रकार का है। इस औषधि का प्रयोग निम्न रोगों में होता है

i. **ट्युबर्क्युलोसिस**—जब रोगी को लगातार दस्त आयें, रात को पसीने आयें, देह क्षीण होता जाय, खांसी में बिना-तारवाला कफ निकले, गालों पर कृत्रिम लाली आये, सांस में कष्ट हो—ऐसी हालत में इस औषधि की कुछ मात्राएं देने से टी० बी० की रोक-थाम हो जाती है।

ii. **परिवार में क्षय-रोग का इतिहास**—अगर रोगी के परिवार में क्षय-रोग का इतिहास पाया जाय, तो किसी भी रोग में इस से लाभ होता है। जिन रोगियों के खानदान में क्षय-रोग का इतिहास मिलता था उन्हें डा० बर्नेट रुटीन के तौर पर इस औषधि को दिया करते थे।

iii. **झट-झट सर्दी लगना या न्यूमोनिया होते रहना, या फ्लु के दुष्परिणाम**—जिन्हें झट-झट जुकाम-खांसी हो जाती हो, ज़रा-सी ठंड लगने से नाक बहने लगे या बन्द होने लगे, उन्हें यह दिया जाता है। कई ऐसे रोगी होते हैं जिन्हें ज़रा-सी ठंड से प्लुरिसी या न्यूमोनिया हो जाता है। ऐसे रोगियों को इस से लाभ होता है। जुकाम जल्दी अच्छा नहीं होता। डॉ० पावल लिखते हैं कि जब इन्फ्लुएन्ज़ा जल्दी ठीक न हो तब इस औषधि की १ m की मात्रा से विशेष लाभ होता है। इन्फ्लुएन्ज़ा के बाद की कमजोरी में ३०x से लाभ होता है। फ्लु के बाद होनेवाले दुष्परिणामों में यह लाभप्रद है।

iv **परिवर्तन की अभिलाषा**—रोगी बड़ा बेचैन होता है। हर बात में परिवर्तन चाहता है। एक जगह टिक कर नहीं रह सकता, घूमा करता है। परिवर्तन की इच्छा इतनी प्रबल होती है कि कपड़े बदलता रहता है, मकान बदलता रहता है, काम-धंधा बदलता रहता है, दोस्तों को, डाक्टरों को भी

बदलता रहता है, यहा तक कि उसके रोग के लक्षण भी सदा बदलते रहते हैं। यह बदलते रहना इसका विलक्षण-लक्षण है।

v **परेशानीवाली खांसी** (Teasing cough)—ब्रौंकाइटिस की परेशान करने वाली खासी जिससे अनेक रोगी पीडित रहते है ट्युवर्क्युलीनम एविए रे 1 m की एक मात्रा से ठीक हो जाती है।

vi. **मासिक जारी होने पर दर्द बढना**—डॉ० बोरिक का कथन है कि इसका एक विलक्षण-लक्षण यह है कि मासिक-स्राव जारी होने पर रोगिणी का कष्ट वढ जाता है जो कि साधारणतया कम हो जाना चाहिये।

vii **बच्चो मे पेशाब निकल जाना** (Enuresis)—डॉ० एच० सी० एलन का कथन है कि रात को पेशाब अपने-आप निकल जाने के एक-तिहाई रोगी **ट्युबर्क्युलीनम** से ठीक हो जाती है।

viii **मानसिक रोग**—डॉ० टायलर स्मिथ लिखते हैं कि दो-तिहाई मानसिक रोगियो को इससे लाभ होता है। अगर जरूरत पडे तो इसके बाद मैंडोराइनम देने से रोग का उन्मूलन होता देखा गया है।

ग मैंडोराइनम या गोनोरीनम
(MEDORRHINUM OR GONORRHINUM)

यह 'नोसोड' गोनोरिया के विष से बनाया गया है। इसके लिये हम डॉ० स्वान के ऋणी हैं। इसका निम्न रोगो मे विशेष उपयोग होता है

1 **दबे हुए गोनोरिया के उपद्रवो मे**—जब गोनोरिया को तेज दवाओ से दवा दिया जाय, तब अनेक उपद्रव उठ खडे होते हैं। उनका इस से शमन होता है। गोनोरिया के रोगी माता-पिता की सन्तान को अनेक कष्टो का सामना करना पडता है। कई बच्चे 'सूके' (Marasmus) के शिकार हो जाते हैं, कई दमे (Asthma) से पीडित हो जाते है, कइयो का 'जुकाम' (Catarrh of the nose) हटता ही नही, कइयो की आखो मे गीद आता रहता है, कइयो को जन्म से दाद हो जाते हैं, कई बौने रहते है। अगर पता चले कि पिता या माता को गोनोरिया था, तो इस औषधि को स्मरण करना चाहिये। युवको को गोनोरिया के दबने से गठिया या वात-रोग (Gout or Rheumatism) हो जाता है। उसके लिये भी यह हितकर है। जब गठिया ठीक न हो तो समझना चाहिये कि रोगी के रक्त मे कही गोनोरिया का विष छिपा है। ऐसी हालत मे इससे गठिया जाता रहता है।

ii **छाती और घुटनो के बल सोना**—डा० वेकर का कहना है कि बच्चे या युवा का छाती और घुटने के बल सोना (Sleeping in knee-chest position) इस औषधि का सर्वोत्कृष्ट लक्षण है। रोगी पेट के बल लेटता है।

III पैर के तलुओं से न चल सकना—यह भी इसका विशेष लक्षण है।

IV प्रजनन तथा मूत्र-प्रणाली (Urogenital organs) के रोग—जननेन्द्रिय, मूत्र-प्रणाली, जरायु आदि के रोगों में, उनके शोथ में यह उपयोगी है। अगर कोई अन्य औषधि भी निर्दिष्ट हो, तो भी डॉ० गोरट्ंग का कहना है कि बीच में इस औषधि को दे देने से लाभ होता है।

V 'शियाटिका—डॉ० बर्नेट का कहना है कि बायीं तरफ के शियाटिका के उनके पचास फी सदी रोगी इससे ठीक हुए हैं।

VI किसी रोग के अन्त में रहने वाली खांसी (Terminal cough)—किसी रोग के बाद जो खांसी बनी रहती है वह ट्युबर्क्युलीनम, मैडोराइनम या इन्फ्लुएन्ज़ीनम से चली जाती है।

VII साइनस (Sinus)—जिन रोग में पस और कफ अधिक बनता है। साइनस आदि में यह लाभप्रद है। इसे पस तथा कफ पैदा करने को भी कहा जाता है।

४. सिफिलीनम
(SYPHILINUM)

यह 'नोसोड' आतशक के विष से बना है। डॉ० नैश लिखते हैं कि 'सोरिनम'-'मैडोराइनम'-'सिफिलीनम' आदि सोरा, गोनोरिया तथा सिफिलिस न होने पर भी—वंश में इनका कोई इतिहास न होने पर भी—अगर इन के-से लक्षण दीख पड़ें, तो इन लक्षणों में ये लाभ करते हैं। उदाहरणार्थ, त्वचा पर खाज करनेवाली फुन्सियां सोरिनम से, गठिया तथा वात-रोग मैडोराइनम से, हड्डियों का गलना-सड़ना सिफिलीनम से ठीक होते देखे गये हैं—भले ही रोगी को, या रोगी के वंश में ये रोग विद्यमान न हों। सिफिलीनम निम्न-लक्षणों में लाभ करता है

I **रात को कष्ट का बढ़ना**—कोई भी रोग हो, रात को अगर वह बढ़े, तो **सिफिलीनम** उपयुक्त रहेगी। **मैडोराइनम** का रोग दिन को बढ़ता है, परन्तु 'रात को नहीं बढ़ता'—यह नहीं कहा जा सकता। **मैडो** का रोग दिन को प्रातःकाल विशेष रूप से बढ़ता है।

II **बच्चा सदा रोता रहे**—अगर बच्चा सिर्फ तभी चुप हो जब वह सोता है या जब दूध पी रहा होता है, अन्यथा रोता ही रहे, तो इस औषधि की १ m, या ऊंची मात्रा देने से वह शान्त हो जाता है। अगर माता कहे कि बच्चा जिस दिन से पैदा हुआ तभी से रोगी है, तब भी यही दवा लाभ करेगी।

III गंज (Alopecia)—जब शरीर के तंतु (Tissues) नष्ट होते जायें, यथा बाल झड़ते जायें, तब भी इस से लाभ होता है।

iv. **बार-बार गर्भपात**—अगर रोगी को बार-बार गर्भपात होता रहा हो तब उपयोगी है।

v. **भयकर चक्कर (Terrible vertigo)**—डॉ० ओल्ड्स कहते हैं कि भयकर चक्कर मे इससे लाभ होता है।

ङ. कारसिनोसीन
(CARCINOSIN)

यह 'नोसोड' कैंसर से बना है। इसका प्रूविंग डॉ० डब्ल्यू० एल० टैम्पलटन ने किया था और डॉ० फाउबिस्टर ने इसका रोगियों पर परीक्षण किया था। डॉ० फाउबिस्टर का कथन है कि कैंसर के रोगी मे यह औषधि रोग को एक स्थान से दूसरे स्थान मे परिवर्तित कर सकती है, परन्तु डॉ० क्लार्क का कथन है कि जिस रोगी मे, या उसके वश मे, कैंसर का इतिहास पाया जाय, उमे यह औषधि देने से रोग धीमा पड जाता है। डॉ० ले हन्टे कूपर ने इस औषधि का विशेष रूप से उपयोग किया था। उनका कथन है कि कि कैंसर का कोई भी रोगी ऐसा नही है जिसे रोग की किसी-न-किसी अवस्था मे इस से लाभ न हो। वे कहते हैं कि कैंसर के रोगी को यह औषधि देनी ही चाहिये—इस से सदा लाभ होने की समावना रहती है। बम्बई के डॉ० शकरन एक रोगी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि एक १४ बरस की लडकी को रात मे पेशाब हो जाया करता था। उसकी मा को भी यही बीमारी २० साल की आयु तक रही थी। ऐलोपैथी, होम्योपैथी—किसी भी दवा से उमे लाभ न होता था। परिवार मे कैंसर के लक्षण पर कारसिनोसीन की एक मात्रा दी गई और लडकी बिल्कुल ठीक हो गई। परिवार मे कैंसर का इतिहास मिलने पर किसी भी रोग मे इस से लाभ होता है।

च पाइरोजेन या सेप्सीन
(PYROGEN OR SEPSIN)

यह 'नोसोड' डा० स्वान ने 'सडाद' (Sepsis) से बनाया था। इसीलिये इसे 'सेप्सीन' भी कहते हैं। सडी हुई पीप या पानी मे सडे हुए मास से इस औषधि का निर्माण होता है, इसलिये जहा सडाद हो, गैस आदि से कोई रोग हो, वहा इसका प्रयोग होता है। प्रसूतिका-ज्वर भी तो नारबेल (लोचिया) के अन्दर सड जाने से होता है। उस मे इस से लाभ होता है। सेप्टिक-ज्वर मे, टाइफॉयड मे इस से लाभ होता है। निम्न रोगो मे इसका प्रयोग होता है—

1 **प्रसूत-ज्वर के बाद**—जब कोई स्त्री कहे कि प्रसूत-ज्वर के बाद से उसे नाना प्रकार के उपद्रव शुरु हो गये हैं, तब इस औषधि का प्रयोग करना

चाहिये। प्रसूत के बुखार के लिये इसके समान दूसरी कोई औषधि नही है।

ii **चौबीस घंटो मे दो बार ज्वर का चढ़ना**—अगर २४ घटो मे दो बार बुखार चढे, तो इस दवा से लाभ होता है। बहुत ऊंचे ज्वर मे—१०६ नबर तक के ज्वर मे—इस से लाभ होता है।

iii **टायफॉयड मे**—इस औषधि मे **आर्निका, आर्सेनिक** तथा **बैप्टीशिया**—तीनो के लक्षण पाये जाते हैं, इसलिये टाइफॉयड मे यह बहुत उपयोगी है। डॉ० यिगल्गि ने डॉ० स्वॉन का उद्धरण देते हुए लिखा है कि जब बुखार मे अन्य औषधियो से लाभ न हो, तब इसकी तरफ ध्यान जाना चाहिये। टाइफॉयड मे क्लोरोमाइसिटीन से भी लाभ न होने पर इससे लाभ होता देखा गया है।

छ डिफथीरीनम
(DIPHTHERINUM)

यह 'नोसोड' डिफथीरिया के विष से बना है। डॉ० एलन का कथन है है कि वे २५ साल से डिफथीरिया के 'प्रतिरोधक' (Prophylactic) के तौर से इसका प्रयोग करते रहे हैं, और जिस परिवार मे उन्होंने इसे दिया उस मे इस रोग ने प्रवेश नही किया। जो लोग कहें कि डिफथीरिया के आक्रमण के बाद से उन्होंने कभी स्वस्थ अनुभव नही किया वे इस औषधि से रोग-मुक्त हो जाते है।

फिरिंजाइटिस के पुराने रोगी जिन्हें किसी औषधि से आराम नही आता इस से ठीक हो जाते हैं। औषधि १ m या इस से भी उच्च-शक्ति मे दी जानी चाहिये, दोहराना नहीं चाहिये।

ज वैरियोलीनम
(VARIOLINUM)

यह 'नोसोड' चेचक के मवाद से बनाया जाता है। 'प्रतिरोधक' के तौर पर इसे चेचक मे दिया जाता है। १ m या cm शक्ति की एक मात्रा दी जाती है। चेचक के टीके के बाद, भले ही कितने साल बीत जायें, जो रोग हो जाय उसमे यह लाभ करता है। डॉ० बोगर दो लडकियो का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि चेचक के टीके के बाद उन्हें एग्ज़ीमा हो गया। थूजा से कुछ लाभ न हुआ, परन्तु **वैरियोलीनम** की d m m की एक मात्रा से एग्ज़ीमा जाता रहा। डॉ० शकरन चार वर्ष की एक बच्ची का उल्लेख करते है जिसे चेचक का सख्त आक्रमण हुआ था। चेचक तो ठीक हो गई, परन्तु बच्ची दिनोदिन कमज़ोर होती गई, मरणासन्न हो गई। एक होम्योपैथ ने सिर्फ इस लक्षण पर कि चेचक के बाद ऐसा हुआ उसे ३०, २०० तथा १००० शक्ति की तीन मात्राए एक-एक दिन बाद क्रमश दी, कुछ ही दिन बाद उसका नक्शा ही बदल गया।

झ वैकसीनीनम
(VACCININUM)

चेचक के टीके से कई उपद्रव उठ खड़े होते हैं। इनके संबंध में इस पुस्तक के 'थूजा' के प्रकरण में विशेष जानकारी मिलेगी, परन्तु वैकसीनीनम २०० या इससे उच्च-शक्ति की मात्रा देने से बहुत लाभ देखा गया है। वैकसीनीनम तथा वैरियोलीनस सम-गुण नोसोड्स हैं।

ञ परटुस्सीन
(PERTUSSIN)

कुकुर-खांसी (Whooping cough)—डॉ० मिचेल का कथन है कि कुत्ता-खांसी में ड्रौसरा शुरु में लाभ करता है, परन्तु अगर ऐसी खांसी देर से चली आ रही हो, तो परटुस्सीन से लाभ होता है। यह 'नोसोड' हूपिंग कफ के थूक से बनता है। डॉ० क्लार्क ने हूपिंग-कफ़ के लिये इस औषधि का निर्माण किया था। ३० शक्ति व्यवहार में आती है।

ट थाइरॉयडीनम
(THYROIDINUM)

होम्योपैथी में एक औषधि 'थेरीडियन' है, एक 'थाइरॉयडीनम' है। थेरीडियन सन्तरे के पेड़ की एक मकड़ी का नाम है जिसका जीते-जी टिंचर बनाया जाता है। आंख बन्द करते ही चक्कर आना इसका लक्षण है। चक्कर के साथ जी मतलाता है। रोगी आवाज़ सहन नहीं कर सकता। मेरु-दंड की जलन—Spinal irritation—इसका मुख्य लक्षण है। इसकी गणना 'नोसोड्स' में नहीं है। 'थेरीडियन' और 'थाइरॉयडीन' के नामों की समानता है, परन्तु ये दोनों भिन्न-भिन्न हैं। पहला सारकोड है। थाइरॉयडीनम के निम्न लक्षण हैं

i गले में गॉयटर (गलगंड) होता है, रोगी जड़-बुद्धि होता है, शरीर विकृत होता है।

ii आंखों का ढेला बाहर निकला पड़ता दीखता है।

iii शरीर में चर्बी बढ़ती जाती है—मोटापे में दिया जा सकता है।

iv डॉ० क्लार्क लिखते हैं कि डायबिटीज़ में यह लाभ करता है, रोगी को मीठा खाने की अर्जेन्टम नाइट्रिकम की-सी तीव्र इच्छा होती है।

v. नींद के समय अनजान में पेशाब हो जाना इसका एक लक्षण है। १X की २ ग्रेन मात्रा दिन में तीन बार दी जाती है। उच्च-शक्ति नहीं दी जाती।

ठ कोलेस्टरीनम
(CHOLESTERINUM)

यह गॉल-ब्लैडर की पथरी से बनाया जाता है। डॉ० स्वान का कथन है कि पित्त-पथरी (गॉल स्टोन) के दर्द के लिये यह स्पेसिफिक है और दर्द को

एकदम शान्त कर देता है। जिगर के कैंसर में भी इसका उपयोग होता है। रोगी चलते हुए कमर को हाथ में पकड़ कर चलता है ताकि कमर न दुखे। यह ३ शक्ति के विचूर्ण में दिया जाता है। यह सारकोड है

ड लैक कैनाइनम
(LAC CANINUM)

यह कुतिया के दूध से बनता है। डॉ० डिक्सन लिखते हैं कि रात को पेशाब निकल जाने (Nocturnal enuresis) में उन्होंने इस औषधि से विशेष लाभ देखा है। डॉ० परकिन्स लिखते हैं कि अगर नाइट्रिक ऐसिड से लाभ न हो तो इससे लाभ होता है। यह सारकोड है।

ढ इन्फ्लुएन्ज़ीनम
(INFLUENZINUM)

डॉ० फरगी वुड्स लिखते हैं कि एक रोगी इन्फ्लुएन्ज़ा के बाद दिनोदिन क्षीण होता जाता था, किसी दवा से ठीक नहीं होता था। उसे इन्फ्लुएन्ज़ीनम २०० शक्ति की एक मात्रा दी गई, वह ठीक हो गया। इन्फ्लुएन्ज़ा के बाद अगर कोई रोग हो जाय, तो वह इस से ठीक हो जाता है।

नोसोड तथा सारकोड २०० या इस से भी उच्च-शक्ति में ही दिये जाते हैं।

हमने मुख्य-मुख्य नोसोड्स का वर्णन कर दिया है, परन्तु इनके अतिरिक्त भी अनेक नोसोड्स हैं जिनका विशेष रूप से प्रयोग नहीं होता।

औषधि के पचास-हज़ारवें अंश से शक्ति-क्रम
(50 MILLESIMAL SCALE POTENCIES)
१. पचास-हज़ारवें शक्ति-क्रम का अर्थ

होम्योपैथ अब तक या तो 'दाशमिक-क्रम' (Decimal-scale) की
औषधियो का प्रयोग करते रहे हैं, या 'शत-क्रम' (Centesimal-scale) की
औषधियो का प्रयोग करते रहे है। 'दाशमिक-क्रम' मे १ १० के अनुपात
से, और 'शत-क्रम' मे १ १०० के अनुपात से औषधि का निर्माण होता है
जिसका अर्थ है—कुल १० हो तो उस मे १ या कुल १०० हो तो उस मे १ हिस्सा
औषधि—९ या ९९ हिस्सा शूगर ऑफ मिल्क या अलकोहल का, और १
हिस्सा औषधि का। परन्तु अब 'पचास हज़ार-क्रम' (50 Millesimal scale)
की चर्चा चल पडी है, जिसका अर्थ है—कुल पचास हज़ार हिस्से मे सिर्फ
१ हिस्सा औषधि का प्रयोग। दूसरे शब्दों मे 'दाशमिक-क्रम' मे अगर औषधि
को कुल १० हिस्सो मे बाटा जाय, तो ९ हिस्सा तो 'शुद्ध-दुग्ध-शर्करा'
(Sugar of milk) का होगा, १ हिस्सा औषधि का होगा जिसे १X आदि
के रूप मे लिखा जाता है, 'शत-क्रम' मे अगर औषधि को कुल १०० हिस्सो
मे बाटा जाय, तो ९९ हिस्सा 'शुद्ध अलकोहल' का होगा, एक हिस्सा औषधि
का होगा जिसे १C आदि के रूप मे लिखा जाता है, और 'पचास हज़ार-
क्रम' मे अगर औषधि को कुल ५० हजार हिस्सो मे बाटा जाय, तो ४९,
९९९ हिस्सा 'शुद्ध अलकोहल' का होगा, सिर्फ १ हिस्सा औषधि का होगा जिसे
०/१, ०/२, ०/३ आदि के रूप मे लिखा जाता है। 'दाशमिक-क्रम मे १X
लिखने का अर्थ है—दस में एक हिस्सा, अर्थात्, दसवा भाग औषधि, 'शत-क्रम'
मे १C लिखने का अर्थ है—सौ मे एक हिस्सा, अर्थात्, सौवा हिस्सा औषधि,
'पचास हज़ार-क्रम' मे ०/१ लिखने का अर्थ है—पचास हज़ार मे औषधि
का १ हिस्सा, अर्थात्, कुल पचास हज़ारवा हिस्सा औषधि। शून्य लगाना
पोस्त के शून्य के समान छोटे-से बीज का चिन्हमात्र है—पोस्त का चिन्ह इस
क्रम मे इसलिये लगाया जाता है क्योकि पचास-हज़ारवी शक्ति के निर्माण
मे पोस्त के बीज जितनी छोटी-छोटी गोलिया इस्तेमाल की जाती है। इनका
प्रयोग प्राय ०/१ शक्ति से ०/३० शक्ति (ज़ीरो तीस) तक किया जाता है। जैसे
'दश-क्रम' या 'शत-क्रम' मे औषधि का दसवा या सौवा हिस्सा अलकोहल मे
मिला कर उसे झटको (Successions) द्वारा शक्तिकृत (Dynamize)

किया जाता है, वैसे ही पचास-हजारवे क्रम मे औषधि का ५० हजारवा हिस्सा झटको द्वारा शक्तिकृत किया जाता है।

२. औषधि के पचास-हजारवें अश से शक्ति-क्रम का इतिहास

हनीमैन की विचार-धारा का आधार 'ऑर्गेनन' (Organon) है। इसके कई सस्करण हुए है। पाचवा सस्करण १८३३ मे प्रकाशित हुआ जिसमे उन्होने 'शत-क्रम' (१ १००)—अर्थात्, कुल सौ १०० हिस्सो मे १ हिस्से औषधि की सिफारिश की थी, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपनी इस विचार-धारा से सन्तुष्ट नही थे, और उन्होने इस विचार को और आगे बढाया, और १०० मे १ हिस्सा औषधि के स्थान मे कुल ५०,००० हिस्सो मे १ हिस्सा औषधि के विचार को जन्म दिया। 'ऑर्गेनन' के पाचवें सस्करण के बाद उसका उन्होंने सशोधन किया, जो १८४१ मे पूरा हो गया। १८४२ मे उन्होने अपने प्रकाशक को लिखा कि १८ महीने के परिश्रम के बाद मैंने 'ऑर्गेनन' का छटा सस्करण तैयार किया है, जो अन्य सब सस्करणो की अपेक्षा पूर्ण है, उसे छापने का प्रबन्ध करें, परन्तु इस बीच १८४३ मे उनकी मृत्यु हो गई, और छटा सस्करण उनके जीवन-काल मे प्रकाशित न हो सका।

उनकी मृत्यु के बाद अनेक लब्ध-प्रतिष्ठ होम्योपैथों ने छटे सस्करण की जर्मन-भाषा की मूल-प्रति छपवानी चाही, परन्तु इस प्रति के लिये उनकी पत्नी ५० हजार डालर माग रही थी, जो कोई दे न सकता था। चिर-काल तक छटे सस्करण को प्रकाशित न किया जा सका। पहले १८५६ मे डॉ० बोनिनघौसन ने प्रयत्न किया, वे असफल रहे। दूसरा प्रयत्न हनीमैन के पोते डॉ० सुस्स हनीमैन ने १८६५ मे किया, वे भी असफल रहे। तीसरा प्रयत्न डॉ० कौन्स्टेन्टाइन हेरिंग ने किया, उन्हे भी सफलता नही मिली। चौथा प्रयत्न डॉ० कैरोल डनहम ने किया, परन्तु भाव-ताव करने के बीच ही उनकी मृत्यु हो गई। अन्त मे, २७ मई १८७८ मे हनीमैन की पत्नी का देहान्त हो गया और उनके वशजो से डॉ० विलियम बोरिक को छटे सस्करण की प्रति उचित दामो मे मिल गई जिसका अग्रेजी अनुवाद दिसम्बर १९२१ मे प्रकाशित हुआ। छटे सस्करण का यह सक्षिप्त इतिहास है जिसमे कुछ होम्योपैथो के कथनानुसार 'पचास हजारवें-क्रम' (50 Millesimal scale) का उल्लेख है।

३. १९५४ के बाद इस क्रम से शक्ति-निर्माण पर ध्यान गया

यद्यपि 'ऑर्गेनन' का छटा सस्करण १९२१ मे प्रकाशित हो गया था, तो भी १९५४ तक औषधि के इतने सूक्ष्म भाग से शक्ति-निर्माण प्रारभ करने

पर होम्योपैथी का ध्यान नही गया । इस समय तक अमरीका के डॉ० जेम्स टायलर कैंट ही होम्योपैथिक-जगत् पर छाये हुए थे । डॉ० जेम्स टायलर कैंट से पहले डॉ० बोनिनघासन का 'रिपर्टराइजेशन' (Repertorisation) का तरीका सर्वत्र प्रचलित था । उसके अनुसार जिस औषधि मे रोग के सब से अधिक लक्षण पाये जाते —Totality of symptoms—वही औषधि रोग के लिये चुनी जानी चाहिये—यह कहा जाता था । डॉ० कैन्ट ने इस विचार-धारा मे यह बात और जोड दी कि औषधि के चुनने मे 'व्यापक-लक्षणों' (Generals) तथा 'प्रकृति' (Modality) पर विशेष ध्यान देना चाहिये, सब लक्षणो के न मिलने पर भी 'व्यापक-लक्षण' तथा 'प्रकृति' सब से अधिक महत्व की बात है । इसी बात को ध्यान मे रखकर हमने भी इस पुस्तक में सब औषधियों के विषय मे विचार किया है । इसके साथ डॉ० कैन्ट ने औषधियो की 'शक्ति-शृंखला' (Scale of potencies) की तरफ भी चिकित्सको का ध्यान खींचा । उनका कहना था कि होम्योपैथी मे औषधियो की 'शक्ति-शृंखला' सगीत के तारतम्य के अनुसार नीचे से ऊपर की तरफ जाती है, और ज्यों-ज्यों हम ऊची 'शक्ति-शृंखला' मे जाते हैं, त्यो-त्यो औषधि का प्रभाव बढता जाता है । जैसे संगीत का अष्टक (Octave) है—स, रे, ग, म, प, ध, नि, स—वैसे होम्योपैथिक-औषधियो का भी ३०, २००, १m, ५०m, c m, १०c m, m m—यह शक्ति-तारतम्य है । जब औषधि की एक शक्ति अपना प्रभाव छोड देती है, तब उस से ऊची शक्ति का प्रयोग करने से उसका प्रभाव फिर-से प्रकट होने लगता है । डा० कैन्ट का ६ जून १९१६ मे देहान्त हो गया, और तब तक 'आर्गेनन' का छटा सस्करण प्रकाशित नही हुआ था, इसलिये उनके समय तक औषधियो का शत-क्रम (Centesimal scale) ही प्रचलित रहा, और क्योंकि उनका विशाल-प्रभाव अवतक मौजूद है, इसलिये अबतक भी होम्यो-जगत् मे वही क्रम तथा वही शक्ति-शृंखला चल रही है ।

४. औषधि के ५० हजारवें अंश से शक्ति-क्रम पर हनीमैन के विचार

'ऑर्गेनन' के छटे सस्करण के सेक्शन २७० के फुट नोट १५५ मे हनीमैन लिखते है :

"According to first directions, one drop of the liquid of a lower potency was to be taken to 100 drops of alcohol for higher potentiation This proportion of the medicine of attenuation to the medicine that is to be dynamized (100 1) was found altogether too limited to develop thoroughly and to a high degree the power of the medicine by means of a number of such succussions without specially using great force of which wearisome experiments have convinced me

"But if only one such globule be taken, of which 100 weigh one grain, and dynamize it with 100 drops of alcohol, the proportion of 1 to 50,000 and even greater will be had, for 500 such globules can hardly absorb one drop for their saturation With this disproportionate higher ratio between medicine and diluting medium many successive strokes of the vial filled two-thirds with alcohol can produce a much greater development of power But with so small a diluting medium as 100 to 1 of the medicine, if many succussions by means of a powerful machine are forced into it, medicines are then developed which, especially in the higher degrees of dynamization, act almost immediately but with furious, even dangerous, violence, especially in weakly patients, without having a lasting, mild reaction of the vital principle But the method described by me, on the contrary, produces medicines of highest development of power and mildest action, which, however, if well chosen, touches all suffering parts curatively"

हनीमैन के उक्त उद्धरण का आशय यह है कि पहले तो यह निर्देश दिया गया था कि उच्च-शक्ति बनाने के लिये निम्न-शक्ति की औषधि का एक बूद अलकोहल के १०० बूद से मिलाया जाय, परन्तु आगे चलकर देखा गया कि १ १०० का अनुपात औषधि की अन्तर्निहित-शक्ति को पूर्णतया विकसित करने के लिये बहुत सीमित था। औषधि की अन्तर्निहित-शक्ति उसे बार-बार झटके देने से विकसित होती है, परन्तु उक्त अनुपात मे ये झटके बहुत ज़ोर से देने पडते थे। अनेक थका देने वाले परीक्षणो से यह निश्चय हुआ कि इस प्रकार औषधि की शक्ति का पूर्ण विकास नही हो पाता।

परन्तु, अगर औषधि की पोस्त के बीजो-जैसी इतनी छोटी-छोटी गोलिया ली जाये, जो १ ग्रेन मे १०० चढे, और उन्हे १०० बूंद अलकोहल के साथ मिला कर 'शक्तिकृत' (Dynamize) किया जाय, तब औषधि का अनुपात १ ५०,००० का हो जायगा। क्यो यह अनुपात हो जायगा ? इसलिये क्योकि इन १०० बूदो मे सिर्फ १ बूद पोस्त के बीजो-जैसी छोटी-छोटी ५०० गोलियो मे खप सकेगी। अगर एक बूद मे औषधि का १००वा हिस्सा है, और औषधि के १००वे हिस्से वाली १ बूद ५०० गोलियो मे खप रही है, तो इस प्रकार की प्रत्येक गोली मे औषधि का ५०,००० वा हिस्सा ही तो आया। दश-क्रम मे औषधि का १० वा हिस्सा, शत-क्रम मे औषधि का १०० वा हिस्सा, और ५० हज़ार-क्रम मे औषधि का ५० हजारवा हिस्सा। मदर-टिंचर के १ बूद मे ९९ बूद अलकोहल मिलाने से, उसकी १ बूद मे, मदर-टिंचर का १००

वा हिस्सा आता है। क्योंकि मदर-टिंचर की १०० वे हिस्से वाली १ बूंद में पोस्त के बीजों जैसी छोटी-छोटी ५०० गोलियां तर हो जाती हैं, इसलिये इन ५०० गोलियों में से एक-एक गोली में औषधि का ५० हज़ारवां हिस्सा अपने-आप हो गया। इस प्रकार औषधि की मात्रा दश-क्रम तथा शत-क्रम की अपेक्षा अत्यन्त न्यून हो गई। इस न्यूनतम मात्रा को दश-क्रम और शत-क्रम की तरह 'झटके' (Succussions) देकर शक्तिकृत किया जाता है। हनीमैन ने ऑर्गेनन के छठे संस्करण में लिखा है कि इस नवीन-पद्धति से औषधि की रोग को दूर करने की शक्ति बढ़ जाती है, और 'शत-क्रम' (Centesimal scale) से जो रोग-वृद्धि (Aggravation) की संभावना रहती है, वह भी नहीं रहती।

'शत-क्रम' (Centesimal scale) और 'पचास-हज़ारवें-क्रम' (Millesimal scale) के भेद को समझने के लिये यह जान लेना आवश्यक है कि 'शत-क्रम' में औषधि की भिन्न-भिन्न 'शक्तियां' (Potencies) पहली निम्न-शक्ति के एक बूंद में ९९ 'बूंद' अलकोहल की मिला कर बनाई जाती हैं—इसलिये इसे 'बिन्दु-पद्धति' (Drop method) कहा जाता है, औषधि की इन बूंदों में १०, २० आदि नम्बर की गोलियों को रचा कर औषधि बनती है, 'पचास हज़ारवें-क्रम' में औषधि की भिन्न-भिन्न शक्तियां पोस्त जैसी बारीक गोलियों को औषधि में रचा कर फिर उन गोलियों में से एक 'गोली' को अलकोहल में मिला कर, उसमें फिर पोस्त-जैसी गोलियों को रचा कर औषधि बनती है—इसलिये इसे 'गौलिक-पद्धति' (Globule method) कहा जाता है। इन्हें शत-क्रम की तरह झटके देकर शक्तिकृत (Dynamize) किया जाता है।

५ इस नवीन शक्ति-क्रम की औषधि को नित्य बार-बार लिया जा सकता है

होम्योपैथी के विषय में यह धारणा है कि उच्च-शक्ति की औषधि को दोहराया नहीं जा सकता, उसे बार-बार नहीं लिया जा सकता। हनीमैन ने 'ऑर्गेनन' के छठे संस्करण में अपना जो अनुभव लिखा है उसका आशय यह है कि '५० हज़ारवें शक्ति-क्रम' (50 Millesimal scale) की औषधि को हफ्तों, महीनों लिया जा सकता है। इस विषय में वे छठे संस्करण के सेक्शन २४६, फुट नोट १३२ में लिखते हैं

"What I said in the fifth edition of the 'Organon', in a long note to this paragraph in order to prevent these undesirable reactions of the vital energy, was all that the experience I then had justified But during the last four or five years, however, all these difficulties are wholly solved by my new altered but

perfected method The same carefully selected medicine may now be given daily and for months, if necessary in this way namely, after the lower potency of the medicine has been used for one or two weeks in the treatment of chronic disease, advance is made in the same way to higher degrees, (beginning according to the new dynamization method, taught herewith, with the use of the lowest degrees)"

—अर्थात्, 'आर्गेनन' के पाँचवें संस्करण में जो लिखा गया था कि जीवनी-शक्ति की प्रतिक्रिया से —Aggravations से— बचने के लिये औषधि को दोहराना नहीं चाहिये, वह उस समय तक के अनुभव के आधार पर लिखा गया था, परन्तु पिछले ४-५ वर्षों के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि औषधि के निर्माण का अब जो नया तरीका निकाला गया है, जिसे पूर्ण-पद्धति कहा जा सकता है, उसके अनुसार उचित प्रकार से चुनी हुई औषधि को प्रतिदिन, जरूरत पड़े तो महीनों लगातार दिया जा सकता है।

लगातार उसी औषध को देते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि औषधि की शक्ति थोड़े-थोड़े दिनों बाद बदलती रहे, क्योंकि जीवनी-शक्ति उसी एक शक्ति की औषधि को सदा के लिये नहीं लिया करती। इस संबंध में हनीमैन ने 'आर्गेनन' के सेक्शन २४७ तथा २४८ में लिखा है

'It is impractical to repeat the same unchanged dose of a remedy once, not to mention its frequent repetition But if the succeeding dose is changed slightly every time, namely, potentized somewhat higher then the vital principle may be altered without difficulty by the same medicine (the sensation of natural disease diminishing) and thus the cure brought nearer"

Section 247

"For this purpose, we potentize anew the medicinal solution (with perhaps 8, 10, 12 succussions) from which we give the patient one or (increasingly) several tea-spoonful doses, in long-lasting diseases daily or every second day, in acute diseases every two to six hours and in very urgent cases every hour or oftener Thus in chronic diseases, every correctly chosen Homoepathic medicine, even those whose action is of long duration, may be repeated daily for months with ever increasing success If the solution is used up (in 7 to 15 days) it is necessary to add to the next solution of the same medicine if still indicated one or (though rarely) several pellets of a higher potency with which we continue so long as the patient experiences continued improvement" Section 248

—अर्थात्, किसी भी औषधि को एक बार देने के बाद उसी को दोहराना क्रियात्मक नहीं है, बार-बार दोहराने की तो बात ही करना फिजूल है परन्तु अगर उसी औषधि की अगली मात्राए थोडी-थोडी बदल दी जाये, उनकी शक्ति पहली शक्ति से बढा दी जाय, तो उसी औषधि मे जीवनी-शक्ति को बिना कठिनाई के परिवर्तित किया जा सकता है—जीवनी-शक्ति रोग के जिन लक्षणो मे आक्रान्त हो गई है उन्हे कम किया जा सकता है—और स्वास्थ्य लाया जा सकता है—(सेक्शन २८७)। इस विषय पर इस पुस्तक के १० पृष्ठ मे हमने सक्षिप्त-सा सकेत भी दिया है।

इस उद्देश्य से, शीशी मे पडी औषधि के घोल को ८, १०, १२ झटके देकर दुबारा शक्तिकृत करना चाहिये। इस दुबारा शक्तिकृत-औषधि मे से पुरानी बीमारी (Chronic) के रोगी को प्रतिदिन या प्रति दूसरे दिन चाय के चम्मच जितनी कई मात्राए दी जानी चाहिये, नई बीमारी (Acute) के रोगी को हर २ से ६ घटे के बीच और सकट की हालत मे हर घटे या उस से भी जल्दी दवा दी जानी चाहिये। इस प्रकार पुरानी बीमारियो मे, ठीक से चुनी हुई होम्योपैथिक दवा, भले ही उसका दीर्घकालीन प्रभाव क्यो न हो, महीनो हर रोज लगातार दी जा सकती है और उसका उत्तरोत्तर अच्छा प्रभाव होगा। अगर ७ से १५ दिन में शीशी के भीतर की दवा समाप्त हो जाय, तो जिस शक्ति की दवा हम दे रहे थे, उस से अगली उच्च-शक्ति की उसी दवा की एक गोली या कुछ गोलिया शीशी मे घोल देनी चाहिये और जबतक रोगी को लाभ होता दीखे तबतक उसे देते रहना चाहिये—(सेक्शन २४८)

६. दवा लेने का प्रकार

इस प्रकरण मे एक बात को ध्यान मे रखना चाहिये। शीशी मे घोली दवा को ८, १० या १२ झटके देकर उच्च-शक्ति बना लेना 'योग-पद्धति' (Plussing method) कहलाता है। औषधि की जिस शक्ति का हम प्रयोग कर रहे हैं, उसमे ८-१० झटको द्वारा शक्ति कुछ जुड जाती है, उसका 'योग' हो जाता है, 'शक्ति' (Potency) मे बहुत अधिक फर्क नहीं पडता—इतना फर्क नहीं पडता जो ०/१ से ०/२ मे या अगले क्रमो मे पड जाता है। एक शक्ति की दवा देकर कुछ दिन तक झटके देकर उस दवा की शक्ति को 'योग-पद्धति' (Plussing method) से बढाते-बढाते देते रहना चाहिये, परन्तु १०-१५ दिन बाद उसी दवा की शक्ति को अगली शक्ति मे बदल देना चाहिये—अगर हम ०/६ शक्ति की दवा दे रहे हैं, तो उसे बदल कर ०/१० मे या जैसा हम उचित समझें उस मे बदल देना चाहिये, और उसे फिर 'योग-पद्धति' द्वारा बोतल को झटके दे-देकर १०-१५ दिन लगातार चलाना चाहिये।

शक्ति बदलते हुए नयी कोरी शीशी का इस्तेमाल करना चाहिये। शुद्ध जल मे कुछ अलकोहल मिला देनी चाहिये ताकि कई दिन तक पडे रहने के कारण जल गन्दा न हो जाय। पोस्त के परिमाण की दवा की एक गोली आध औंस पानी मे डालकर शीशी मे रख लेनी चाहिये, और इस मे से ४-५ बूद लेकर एक ड्राम पानी मे डाल कर उसका डोज़ बनाना चाहिये। सक्षेप मे, इसे इस प्रकार कहा जा सकता है

(क) एक आध औंस की शीशी ले। उस मे तीन-चौथाई शुद्ध पानी भर दे जिस मे कुछ रैक्टीफाइड स्पिरिट डाल दे ताकि पानी खराब न हो। फिर शीशी मे निर्दिष्ट ५० हज़ारवी-शक्ति की दवा की पोस्त के बीज के समान एक-दो छोटी-सी गोली डाल कर शीशी को खूब हिलाये ताकि गोली उसमे घुल जाय। इस दवा से आप के अगले डोज बनेगे।

(ख) उक्त शीशी से ४-५ बूद एक ड्राम पानी मे डाल कर उसे खूब मिला ले। यह आप का पहला डोज़ बना।

(ग) अगला डोज़ बनाते हुए पहली शीशी को १० बार ज़ोर के झटके दें, और उस मे से फिर ४-५ बूद एक ड्राम पानी मे डाल कर खूब मिला लें। यह आप का दूसरा डोज बना।

(घ) इस प्रकार कुछ दिन तक कुछ मात्राए लेने के बाद आप अगली उच्च-शक्ति पर आ जाये और उसका भी इसी प्रकार प्रयोग करे।

इस प्रकार एक ही औषधि की ०/3, ०/६, ०/१२, ०/२४, ०/३० शक्ति को हफ्तो, महीनो लगातार ले सकते है। कई चिकित्सक 'शत-क्रम' (Centesimal scale) की दवाओ को भी इस प्रकार दिया करते है, इस सम्बन्ध मे डॉ० क्लार्क ने भी अपनी पुस्तक 'प्रिस्काइबर' के ६० पृष्ठ पर ज़िक्र किया है, परन्तु झटके देकर दवा लेने की इस पद्धति का उल्लेख हनीमैन ने अपनी नवीन-पद्धति—'पचास-हज़ारवे शक्ति-क्रम' (50 Millesimal scale) के लिये ही किया है, 'शत-क्रम-पद्धति' के लिये नही—यह डॉ० रमनलाल पटेल का मत है। औषधि की पचास हज़ारवे क्रम से शक्ति-कृत औषधि के प्रयोग का इस देश मे मुख्य तौर पर प्रचार डा० रमनलाल पटेल ने किया है जिनका उल्लेख हम इस पुस्तक के ७२६ पृष्ठ मे टॉटोपैथी पर लिखते हुए कर आये हैं।

डॉ० नैश द्वारा निर्दिष्ट औषधियों के त्रिक

(TRIOS OF DRUGS MENTIONED BY DR E B NASH)

डा० नैश एक प्रसिद्ध होम्योपैथ हुए हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'लीडर्स इन होम्योपैथिक थेराप्युटिक्स' में अनेक औषधियो के 'त्रिक' (Trios) का वर्णन किया है। किसी एक लक्षण मे जो मुख्य तीन औषधिया हैं उनका उन्होंने 'त्रिको' के नाम से उल्लेख किया है। होम्योपैथिक-चिकित्सक के लिये इन त्रिको का जानना औषधि की तरफ ध्यान देने मे बहुत सहायक सिद्ध होता है—इसलिये उनकी पुस्तक मे जिन त्रिको का उल्लेख है उन्हे हम यहा दे रहे हैं। ये विद्यार्थी के लिये बहुत सहायक सिद्ध होगे। इनका आपस का भेद समझने के लिये हम नैश की 'लीडर्स इन होम्योपैथिक थेराप्युटिक्स'-पुस्तक की पृष्ट-सख्या दे रहे है जहा यह भेद स्पप्ट किया गया है

१ **प्रकृति-दोषो के नाशक-त्रिक** (3 Miasms) सल्फर, (सोरा-दोष नाशक), मर्क्यूरियस (सिफिलिस-दोप नाशक), थूजा (साइकोसिस-दोष नाशक)—पृष्ठ-सख्या ४००

२ **मुख्य एण्टी-सोरिक त्रिक** (Anti-psoric) सल्फर, कैलकेरिया, लाइकोपोडियम (५८)

३ **पेट के अफारे के नाशक त्रिक** (Flatulent remedies) कार्बो-वेज, चायना, लाइकोपोढियम (५९)

४ **पेट तथा आंतो के लिये चार** (Alimentary Canal) नक्स, पल्स, ब्रायोनिया, ऐन्टिम क्रूड (३६)

५ **जलन के त्रिक** (Burners) आर्सेनिक, फासफोरस, सल्फर (६७)

६ **बेचैनी के त्रिक** (Restless remedies) एकोनाइट, आर्सेनिक रस टॉक्स (८३, ६५)

७. **दर्द-नाशक त्रिक** (Pain remedies) एकोनाइट, कैमोमिला, कॉफिया (८४)

८ **खुश्क हवा के रोगों के चार** (Dry air remedies) ब्रायोनिया, कॉस्टिकम, हिपर, नक्स (८७)

९ तर हवा के रोगो के चार (Wet weather remedies) डलकेमारा, नक्स मोस्केटा, नेट्रम सल्फ, रस-टॉक्स (८७)

१० **छाती मे कमजोरी के त्रिक** (Chest weakness) ऐसिड फॉस, स्टैनम, सल्फर (९३)

११. पेट में कमजोरी अनुभव करने के त्रिक (Goneness in Stomach) इग्ने, हाईड्रैस्टिस, सीपिया (अगर यह कमजोरी—खालीपन—पेट के नीचे तक महसूस हो तो फॉसफोरस)—९३

१२. डिलीरियम तथा पागलपन का त्रिक (Delirium and madness remedies) वेलाडोना, हायोसाइमस, स्ट्रैमोनियम (१००)

१३ साँप के विषो का त्रिक (Snake poisons) लैकेसिस, नेजा, क्रोटेलस (१२६)

१४ चलते-फिरते दर्द का पंचक (Wanderi g pains) कैलि वाईक्रोम, कैलि सल्फ, पल्सेटिला, लैक कैनाइनम, मैंगेनम ऐ. टिकम (१३६)

१५ न्यूमोनिया के बाद खासी बने रहने का त्रिक (Long continued cough after pneumonia) कैलि हाइड्रोआइड, सैंग्विनेरिया, स्टैनम (१३७)

१६. भय के कारण रोग का त्रिक (Effect of fright) एकोनाइट, इग्नेशिया, ओपियम (१६५)

१७ अगो की फडकन का पंचक (Twitchings) इग्नेशिया, जिंकम, ऐगैरिकस, हायोसाइमस, क्यूप्रम (१६६)

१८ पलको के झूल पडने का त्रिक (Drooping of eye-lids) जेल्सीमियम, कास्टिकम, सीपिया, (कोनियम भी)—२०४,२६९

१९ स्त्री-रोगो की मुख्य-औषधियो का दशक (Woman remedies) सीपिया, म्यूरेक्स, लिलियम टिग्रिनम, वाइबरनम, सिकेल कौर, कॉलोफाइलम, एक्टिया रेसिमोसा, पल्स, सैबाइना, हेलोनियास (१९९-२१७)

२० खून रोकने की दवाओ का त्रिक (Control hemorrhage) इरिजेरोन, ट्रिलियम, मिलेफोलियम (२१९)

२१ हृदय-रोग की चार दवाए (Heart remedies) डिजिटेलिस, कैक्टस, स्पाइजेलिया, कैलमिया (२२१)

२२. निद्रालुता का त्रिक (Sleepiness) ओपियम, ऐन्टिम टार्ट, नक्स मौस्केटा (२३७, ३४९)

२३ कय का त्रिक (Vomiting) इपिकाक, एन्टिम टार्ट, आइरिस वीर (२२८-२३८)

२४ टाइफॉयड का पचक (Typhoid) ऐसिड फॉस, आर्निका, वैप्टीशिया, म्यूरियेटिक ऐसिड, जेल्सीमियम (२४२)

२५ स्नायु-रोग का अष्टक (Nervous complaints) पिकरिक ऐसिड, जेल्सीमियम, फॉसफोरस, ऐसिड फॉस, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, सल्फर, एलुमिना, साइलीशिया (२५१)

२६. कॉलरा का त्रिक (Cholera) कैम्फर, क्यूप्रम, वेरेट्रम गेल्बम

२७. देरपा दु.ख-जनित-रोग की चार दवाएं (Long-lasting grief) इग्नेशिया, नैट्रम म्यूर, ऐसिड फॉस, कॉस्टिकम (२७०)

२८ पुराना वात-रोग तथा पक्षाघात (Chronic rheumatism and paralysis) कॉस्टिकम, रस टॉक्स, सल्फर (२७४)

२९ बुनिनघॉसन का कुत्ता-खांसी का पचक (Croup remedies) एकोनाइट, स्पजिया, हिपर, फिर स्पंजिया, हिपर—इस क्रम से २०० शक्ति की दवा देनी चाहिये (२७८)

३०. ऊपर के होठ के सूजने का त्रिक (Upper lip swollen) बेलाडोना, केल्केरिया कार्ब, नैट्रम म्यूर (३३०)

३१ देह क्षीण होते जाने का त्रिक (Emaciation) नैट्रम म्यूर, सार्सापैरिला, आयोडियम (३३३)

३२ ग्रन्थियों के कड़ेपन का त्रिक (Glandular remedies) कार्बो एनिमैलिस, कोनियम, ब्रोमाइन (३५६)

३३ लोचिया के न निकलने का त्रिक (Lochia not coming) क्रियोज़ोट, रस टॉक्स, सल्फर (३७०)

३४. शरीर के दुखने मे छ दवाएं (Soreness of body) बैप्टीशिया, फाइटोलैक्का, रस टॉक्स, रूटा, आर्निका, स्टैफिसैग्रिया (३८७)

३५ सिर मे रक्त-संचय का त्रिक (Head remedies) ग्लोनॉयन, बेलाडोना, मेलिलोटस (४५१)

मुख्य-रोग और उनकी औषधियां
(THERAPEUTIC INDEX)

[इन रोगो तथा इनकी औषधियो का सकलन बोरिक की 'मैटीरिया मैडिका', एंडविन ए नीटवाई तथा थौमस जी स्टोनहम (मई-अक्तूबर १९६८ के 'होम्योपैथिक-सन्देश' मे प्रकाशित) की 'मैन्युअल ऑफ होम्यो-थेराप्यूटिक्स', नैश की 'लीडर्स इन होम्योपैथिक थेराप्यूटिक्स', भट्टाचार्य कपनी की 'होम्यो-पारिवारिक चिकित्सा', कैंट की 'रिपर्टरी', गज़दर की 'स्पेसिफिक थेराप्यूटिक्स' आदि ग्रन्थो से छाट कर किया गया है। औषधियां प्राय ३० शक्ति मे दी जाती हैं। Q का अर्थ मदर टिंचर है। P का अर्थ है कि इस पुस्तक के उस पृष्ठ में इस रोग की मुख्य औषधिया दी गई हैं। औषधियो का पूरा नाम किसी अन्य पुस्तक से देखना होगा। इटैलिक्स मे दी गई औषधिया उस रोग मे मुख्य हैं]

Abortion, threatened, गर्भपात की आशका, (P 51, 579), *Actea racemosa*, Apis; *Caulophy*, Secale, Sabina, Vib Q, (Viscum गर्भपात कर देता है)

Abscess, फोडा, Bell; *Hepar*, Merc-s, Silicea

——Recurring, बार-बार फोडे होना, *Pyrogen* 200, *Echinacea*

Acidity, अम्ल-रोग, Arg-n, Calc-c., Nux-v, *Robin*, Sulph

Acne, फुन्सिया, *Berberis aquif* Q; *Kali Brom* 30, Ferr, Graph, *Puls*, Rhus-t, *Silcea*

Adenoids, नाक और कठ के बीच के ततुओ का बढना, Calc-id (See glands also); *Calc-p*, *Tuberculinum*

After-Pains बच्चा होने के बाद के दर्द, Actea, Arn, Caulo, Mag phos

Agalactia, मा का दूध कम होना, Agnus, Asaf, Lactuca, Urtica

Albuminaria, पेशाब मे एल्व्यूमिन आना, Canth, Kalmia, *Kock's lymph* 6, Merc-c, Tereb.

Alcoholism, शराब की आदत, Avena, Canth, Nux-v, *Quercus* Q, Sulph, (*Sulph-ac* one part+3 parts alcohol, 10 drops 3 tims a day)

Alopecia (Baldness or Hair Falling), गज, बाल झडना, *Aloes* 6 (Adults), Fluoric-ac; Psor, *Sepia*

Amenorrhea, मासिक रुक जाना, (P. 497) Caulo ; Graph.; Nat-m , Phos., *Polygonum* Q (एक छोटा चम्मच दिन मे तीन वार, सात दिन तक); Puls.; Sulph.

Anemia, खून की कमी, Calc-p , Carbo-v , China, Ferr-m , Nat-m., Phos ; Pic-ac

Aneurism, नाड़ी का फैल जाना, Baryta-c , Lyco

Angina Pectoris, दिल का दर्द, Bry , Cact , Glon , Naja, Sp g ; *Tabacum*

——Chronic, पुराना दिल-दर्द, *Latrodectus* 6

Anorexia, भूख न लगना, *Aur-ars* ; *China*, *Nux-v* , *Hydrast* , *Vanadium*, (*Nux* १*x*+*Carbo-v* १*x*+*Pepsin* १*x*)

Aphonia (Hoarseness), गला बैठ जाना, Arg-m , Caust , *Ip* , Nit-ac , Phos

Apthae (Thrush), मुह के छाले, *Borax*, *Merc-s* , Nit-ac , Sulph-ac ; Thuja

Apoplexy, सिर की नस फट जाना, Bell , Glon , Nux-v., Phos

Appendicitis, अपैंडिमाइटिस, Bell , Bry , Lach , Merc-c , *Plumb-iod*

Arterio-Sclerosis, (ब्लड प्रेशर) धमनी का कडापन, *Adrenalin* 3, 6, 12, Aurum 30, *Aur-m-nat* 3x, Glon 2x, Thiosinamine 2x (½ grain, never more three times a day)

Arthritis, जोडो का दर्द, Arbutus, Bry , Elatrium. Sulph ; Thuja

Ascites, जलोदर, Acet-ac , Apis , Apocy , Ars , *Aur-m* (3 grains daily of 1st potency), *Dig*

Asthenopia, दृष्टि-क्षीणता, दृष्टि-दोष, Nat-m., Ruta

Asthma, दमा, Ars ; *Bacil* 200 (सप्ताह मे एक वार), Carbo-v , *Euphorbia pilulifera* Q, *Ipec* , Nat-s , Sulph , Thuja

Astigmatism, भेंगापन, Lilium

Backache (Lumbago), कमर का दर्द, Bry , Cimicif , *Hydrangea* Q (प्राय पथरी में), Kali-c · Nux-v , Rhus-t

Bedsores, पडे-पडे जखम हो जाना, Fluoric acid

Biliousness, पित्त बढ जाना, Bry , Chelid , Merc-s , Nux-v Podo., Sulph

Bladder (Irritable), मूत्राशय की जलन, Apis; *Copaiva* Q, *Eup-purp.*; Nux-v., Sarsap.

——(Haemorrhage), मूत्राशय से खून जाना, Hamam, *Nit-ac*

Blepharitis, पलकों की सूजन, Arg-n, Borax; Merc-s; Puls, Staphy.

Blood Poisoning, रुधिर के विकार के कारण त्वचा पर फुन्सियां या रुधिर-विकार-जन्य रोग, Hepar 200 देकर दो दिन बाद Gun powder 3x दिन मे तीन-चार बार देना।

Blood-Pressure (High), रक्त का ज्यादा दबाव, *Aur-m-nat* 3x *Baryta-m.*, Glon, *Viscum.*

——(Low)—(Bradycardia) दिल की गति धीमी होना, Abies-n, Apoc, Digit., Kalm.

Boils, फोड़े, *Bell*, Bellis; *Hepar*, Psor, Sili, Sulph

Brain-Fag, दिमागी थकावट, *Aethusa* (डॉ० क्लार्क का फक पाउडर). Anacar, Cal-phos, Pic-ac., Phos, Sili, *Zinc-br.* 3x

Bright's Disease, गुर्दे की शोथ से पेशाब मे एल्ब्यूमिन आना और सूजन होना, Apis, Ars, Merc-c.; Phos-ac, Tereb

Bronchitis, वायु-नली की सूजन, Aco.; All-c *Bry*, Euop-perf, *Fer-phos*, *Kali-iod*, *Nitr-ac*, Phos

Broncho-Pneumonia, ब्रोंको-न्यूमोनिया, Antim-t, *Aviare* 30, Kali-bichrome

Burns, जल जाना, Canth, *Oil of peppermint*, Pic-ac, Urtica

Burning Sensation, जलन, (P 654), Apis, Ars, Bell, Canth, Merc-s; Nux-v, Phos., Sulph

Calculi, (Biliary) पित्त-पथरी, (P 585) *Berberis*, Chelid; China, *Natr-s*, Sulph., Urt-ur—See Gravel

——(Renal), गुर्दे की पथरी, Berberis, *Hydrangea*, Nux-v., Sarsa

Cancer (Bladder), मूत्राशय का कैंसर Taraxacum (1 to 2 drams fluid extract)

——Epithelial, त्वचा का कैंसर, Acetic-ac

——Gastric, पेट का कैंसर, Geranium, *Hydrastis* १x every four hour.

——Hereditary history of, घराने मे कैंसर का पाया जाना, कभी-कभी Radium 30 देना चाहिये।

——Rectal, गुदा का कैंसर, Hydrastis, Kali--cyan , Ruta, Ornithogalum (टिचर)
——Stomach, पेट का कैंसर, Cundurango (टिचर)
——Tongue, जीभ का कैंसर. Fuligo . Kali-cyana , Rad-brom
——Throat. गले का कैंसर, Smoking of Artista Indica leaves
——Mammae, स्तन का कैंसर, Aster , Carcinosin, Con , Phyt ,
——Uterus, बच्चेदानी (जरायु) का कैंसर, Phos

Carbuncle, पीठ का फोड़ा, *Anthrac* , *Ars.*, Gun powder 3x three times a day preceded 2 days before with Hepar 200, Hepar.; Lach . Phyt , *Tarentula- cub*

Caries. हड्डियो की सूजन. Asaf , Aur , Calc-p (of vertebra), Phos-ac : Phos , Merc , Nitr-ac , Sili

Cataract, मोतियाबिन्द, Agar. 12, Calc-fluor., Cineraria, *Naphth.* (3x); *Phos* ; *Zinc-sulph C M.* (Corneal opacity)

Catarrh, श्लैष्मिक-झिल्ली का शोथ, Alli-cepa, *Aurum*, Dulc. and Hydrast (Post nasal), *Eucal* Q (20 drops); Gels (Eustachian tube), Hepar (Various sorts), *Kali-bich* (Nasal), Kali-s . Merc-dul , Mez (Vulva), Natr-c , Natr-s : Podo. and Puls (Duodenal), Sep

Chancre, आतशक का फोड़ा Kali-iod , Merc-bin-iod , Merc-proto , Merc-s

Chicken-Pox, चेचक. Kali-m , Rhus-t , Tart-emet

Chilblains, सर्दी मे त्वचा की सूजन, Abrot , *Agar*

Chlorosis, लडकियो का हरा-पीला रग पड जाना, Alumi , Ars , Ferr , Puls

Cholera, हैजा, Ars , *Camphur* Q. 8 to 10 drops on sugar every half hour, Cupr. *Verat*

Cholera Infantum, बच्चो के गर्मी मे दस्त, Aethusa Ars , Calc-phos; Croton-t.; Ferr-phos

Chorea, ताडव रोग, *Agar* 2x; Cimici , *Gels* Q. Ign , Taren

Climacteric Flushings, मासिक बन्द होने की झले, *Lach* , Ovarian gland 5 grains thrice a day, Sep., Sulph

Coccygodynia. गीढ के नीचे की हड्डी का दर्द, Caust . Sili

Coitus (Exhausting). मैथुन मे कमजोरी, Agar , Calc.

——Painful, मैथुन मे दर्द, Agar ; Berberis (in women), Nat-m

Cold, सर्दी से जुकाम, गला पडना आदि, Saponaria

Colic, पेट मे ऐंठन का दर्द, Chamo.; Colocy , Diosc , Mag-p

Colitis कोलन से आव आना, Allium-sat ; Aloe, Arg-n , Bry , Graph , Dulc, (नमक के पानी से अनीमा).

Collapse, जीवनी-शक्ति का पतन, Ars ; Camph , Carbo-v , Stron-Carb (after operation), Verat.

Condyloma, गुदा के पास मस्से का उभार, *Thuja*

Conjunctivitis, आख की झिल्ली की सूजन, Aco , Alum or Thuja (Chronic), Arg-n or Merc-c (Acute); Euphra., Natr-m (granulations), Sulph (Acute and chronic)

Constipation, कब्ज, Alumen, Bry ; Graph , *Hydrast* 2x, Nat. m , Nux-v , Mag-m , Op ; Plumb , Sep ; गर्म पानी मे ३ चम्मच शुगर ऑफ मिल्क; Sulph; Thuja; (गेहू, चना, जौं आदि का चोकर इसकी बढिया दवा है, कभी-कभी लिक्विड पैराफीन ले लें)

——in children, बच्चो की कब्ज, Aescul , Alumina, Bry , Collinso , Psorinum

——alternating with diarrhea, कब्ज और दस्त पर्याय-क्रम से आना, Antim-c ; Iris, Phos . Verat-al

Convulsions (Spasms), कपन, ऐंठन, (P 277), *Bell* , Cicuta, *Cupr* , Mosch , *Passiflora*

Corns, गट्टे जैसे पैर के तलुओ मे पड जाते है, (P 99) Antim-cr., Lyco , Medor , Puls

Coryza, जुकाम, (P 373), Aco , Ars , Cepa (Acrid), Euphr ; *Gels* , Graph (Chronic), *Nat-m* , Nat-s (Chronic), Naja (Acrid).

——recurring with every cold, ठड लगने मे बार-बार जुकाम हो जाना, *Iodum* ; *Kali-brom*

——tenacious discharge falling in throat, गले मे रेशा गिरना, Hydrastis

——yellow discharge with violent sneezing, पल्सेटिला की तरह पीले स्राव के साथ अत्यन्त छीके Cyclamen

Cough (Dry), खुश्क खासी मे, (P 438), Alum, Bell , Hyoscy , Rumex, Spong ; Sticta.

——Hoarse, गला बैठने की खासी मे, Bry , Hepar, Phos , Samb , Spong

——Laryngeal, स्वर-यत्र की खासी मे, Brom., Capsi , Caust , Lach.; Nit-ac

——Loose, ढीली खासी मे, Ipec , Kali-s , Merc , Puls , Stannum. Tart-emet

——Nervous, स्नायवीय खासी मे, Ambra, Hyoscy , Ign , Kali-br

——Phthisical, तपेदिक की खासी मे, All-sat , Crotal , Naja, Stannum

——Spasmodic, ऐंठन की खासी मे, *Bell* , Cupr , Drosera, Mag-p

Croup, घुडी खासी मे Aco ,Spong , Hepar (All three 200 one after the other)

Cyanosis, नीला पड जाना, Carbo-v , Lach , Laurocer , Op , Tart-emet

Cystitis, मूत्राशय की जलन, Canth., Caust , Hydrastis (Chronic), Terebinthina

Dandruff, रूसी, Ars , Badiaga, Kali-s , Lyco

Deafness, वहरापन, Caust , Chenop , Graph , Kali-m , Puls

Debility, कमजोरी, Alfalfa, Aletris (for women), China, Gels , Nat-m.; Pic-ac , Phos-ac ; (Nux-v. १x and Calcarea Hypophos 3x is an all-round pick-me-up—Burnett)

Delirium, प्रलाप, Agari , Bell , Hyoscy , Phos (Muttering), Psor and Bry. (Mild), Stram (Furious)

Dentition, वच्चो के दात निकलने मे कष्ट, Calc-phos , Chamo

Diabetes Insipidus (Polyuria), वहुमूत्र, पेशाव ज्यादा आना, Acet-ac , Alfalfa, Arg-m , *Ars-brome* 3 drops thrice daily, Caust , Kali-c , Murex (Noct.), Phos-ac, (दो मास तक सिर्फ 'सैपरेटा'—मक्खन निकला हुआ दूध—पेट भर पीना—फैरिंगटन)

——**Mellitus** (Glycosuria), मधुमेह, पेशाव मे शक्कर आना, Chimphila, Iod , Iris, Kreos , Phos-ac , Sili , Syzyg , (दो मास तक सिर्फ सैपरेटा पेटभर पीना)

Diarrhea. दस्त, (P 657), China, Nat-s , Phos-ac , Phos (Chronic), Podo (Noct), Puls , Sulph.

——Teething, दात निकलते समय के दस्त, बच्चो के दस्त, (p 427), Calc-phos , Chamo

——Immediately after eating or drinking, खाने-पीने के झट बाद पाखाने की हाजत, (P 273), *Aloe*; Arg-n , Ars , China, Podo

Diphtheria, गले की झिल्ली की सूजन, Lach. (Left), Lyco (Right), Merc-cyan ; Nit-ac ; Phyto (Mild).

Dropsy (Anasarca), पानी भर जाने से शरीर मे सूजन, Apis; Apocy, Ars , Digit., Kali-c.

Dwarfed (Stunted physically and mentally), शारीरिक तथा मानसिक बढन रुक जाना, Medorrhinum.

Dysentery, रक्तामाशय, मरोड मे खून ज्यादा आना, Nux-v., *Merc-c*

——Mucous आमरक्त, मरोड मे आव ज्यादा आना, Aloe, *Merc-s* , Colocy

Dysmenorrhea, मासिक मे दर्द, (P 498). Caulo , Mag-phos ; Puls , Viburn

——Membranous, झिल्लीवाले स्राव मे दर्द, *Borax*, Calc-acetica

Dyspepsia, बदहजमी, Anacard , Carbo-v , Colchi , Lyco , Mag-c. or Nat-s (Acidity), Nux-v , Puls (Chronic), *Vanadium* 6x (digestive tonic), (*Nux-v* *१x*+*Carbo-v* *१x*+*Pepsin* *१x*).

Dyspnea, भारी सास, Ipec , Nat-s , Psor , Spong

Dysuria, पेशाब कष्ट से आना, Apis , Bell ; Camph , Canth , Lyco ; Nat-m , Nat-s

Earache, कान का दर्द, *Aco.*; Alli-cepa, Bell , Chamo , Mullein oil; *Puls* , Sanguinaria

Ear Discharge, कान से पीप आना, Hepar; Kali-m., Merc , Psori ; Puls , Sulph

Eczema, एग्जीमा, (P 634) Ars , Calc-phos or Kali-m. (Scalp), Crot-tig (Scrotum), Graph (Ear), Psori or Lyco or Nat-m (Chronic); Rhus-t , Sulph

Elephantiasis, त्वचा मे कही भी ततुओ की असीम वृद्धि, Hydrocotyle 6.

Emission, वीर्य जाना, *Lupulin* १x; *Phos-ac* (18 c.—जहाज की सम्पत्ति मे स्वप्नदोष के लिये यह शक्ति उपयुक्त है); Selen.; Staphy

Emphysema, फेफडे या ततुओ मे वायु-सचय, Ammon-c ; *Aspido-sperma* Q (It is called Digitalis of lungs), Ipec., Kali-c.

Enuresis, पेशाब निकल जाना, (P 555), Caust (Noct), Cina, Sep (Noct.); Sulph , Thuja , *Tuberculinum* (*Noct.*).

Epilepsy, मृगी, Cupr , Ign , Kali-brome, Oenanthe 3 or 6, Plumb

Epistaxis, नकसीर, *Ferr-phos* , Glon , Hamam , Melilo, Nitr-ac , Phos.

Epithelioma, त्वचा का कैंसर, Ars , Ars-iod , Con (Lips); Hydr ; Kreos (Face or Uterus), Thuja (Vagina)

Erysipelas, विसर्प, त्वचा या श्लैष्मिक झिल्ली के शोथ के साथ ज्वर, Apis, Bell , Canth , Rhus t

Exostosis, हड्डियो का अनियमित बढ जाना, Calc-f , *Hekla lava*, Merc , Nitr-ac , Phos , Staphy

Fever, ज्वर, (P 294), *Aco* , Ferr-phos , *Gels*

——Gastric, पेट की गडबडी से ज्वर, Antim-crude

——Hay, हे-फीवर, *Sabadilla*

——Hectic, क्षय-ज्वर, Ars , Chininum-ars , Phos , Sangui

——Intermittent, मलेरिया आदि, *Ars* , Cedron, *China*, Eup-perf , Ign , Ipec, *Natr-m* , Phos-ac

——Inflammatory, शोथ-ज्वर, Aco , Bell , Ferr-phos , Merc, Nux-v

——Puerperal, प्रसूतिका-ज्वर, (P 664), Apis, Carbo-v , Glon , Ign , Kali-c , Pyrog , Verat-a

——Relapsing, अच्छा होते-होते बीच मे ज्वर का फिर आ जाना, Bry

——Typhoid, टाइफॉयड-ज्वर, Arn , Ars , Bapt , *Bry* , Gels , Muriatic-ac , Phos-ac , *Pyrogen*, *Rhus-t.* (डा० हेल का कहना है कि युकलिप्टस का तेल इसकी सर्वोत्तम औषधि है)

Fissure-in-Ano and other Organs, गुदा अथवा अन्य अगो का फटना, (P 681), Graph (Anus), Hepar (Hands and feet), Ledum, Nat-c (Fingers, toes), Nat-m , Nitr-ac , Petro, Sili (Anus)

Fistula, भगदर, Fluor-ac , *Myristica* 3x (यह हिपर तथा साइलीशिया से भी अधिक लाभप्रद है), Nitr-ac , Sili (One dose C M)

Flatulence (Tympanitis), पेट मे वायु-सचय, Arg-n ; *Asaf* ; Carbo-v , China, Lyco., *Nux-mos.*, Slag 3x (5 gr thrice daily).

Forgetfulness, भुलक्कडपन (P 402), Anac , Baryta-c , *Aethusa*, Glon , Phos-ac

Freckles, त्वचा पर गोल-गोल दाग, Badiaga, Sep

Fright, Effect of, भय के कारण रोग, *Aco.*; Chamo ; *Gels.*, *Ign.*

Gall Stone (Biliary stone), पित्त-पथरी, (P 585) *Berb* ; Cheli , China; *Cholesterine*, *Hydrastis* Q, Mang ; Sulph.

——Renal, गुर्दे की पथरी, *Cal-c.*, Lyco (Red sand), Nux-v.

Gangrene, अगो का गलना, Ars , Crotal , Kreos , Lach.; *Secale*

Gas in Stomach, पेट मे हवा, Calc-phos.

Gastralgia, पेट का दर्द, (P 260), Arg-n ; Bism , Bry , Chamo , Coccu , *Iris-v* , Mag-phos , Nux-v , Petro , Phos ; Rumex, Staphy , Sulph

Gastric Ulcer, पेट का फोडा, Antim-cr , Arg -n , Ars , Bry , Ipec , Kali-bichr , Nux-v , Puls

Gastritis, पेट मे सूजन, Antim-cr , Ars , Ars-i, Hydrast ; Merc (Chronic); Nux-v , Oxalic-ac , Phos

Gastro-Entritis, पेट तथा आतो की सूजन, Arg-n , Ars , Bry ; Merc

Glands (Swollen) गिल्टियो मे सूजन, Bell ; *Cistus* (Neck), *Con* , Kali-hyd , Merc-iod , *Phyt*

——Lymphatic, (induration of), लिम्फ की नाडी का कडापन, Brom , Calc , Phyt (Neck-r), Sili , Spong (Neck)

——Inflammation of, ग्रन्थि की सूजन, Bell , Hepar, *Iodoform* 3x; Kreos , Merc , Phyt

——Salivary (Inflammation), मम्प्स मे गले के भीतर सूजन, Ailan ; Bar-c , Brom.; Merc , *Puls*.

Glaucoma, धुधला दीखना, Arg-n , Gels , Phos

Gleet, पुराना सुजाक, Abies-can , Kali-iod , Puls , Sep , Thuja.

Glossitis, जीभ की सूजन, Apis , Lach , Merc , Mur-ac

Globus Hystericus, पेट से गोला उठना, Asaf ; Ign.

Goitre, गिल्लड, *Iodum* 6x, Spong

Gonorrhea, सुजाक, Cann-sat , Hydrst , Medorr , Merc-c, *Nat-sulph* 3x *with Thuja* 30 *once a day*, Puls , Sarsa ; Sulph., Tereb , Thuja (Acute and chronic).

Gout, गठिया (P. 415), Ammon-benz , Berb , Bry , Colchi , Ledum; Lyco ; *Urtica* Q (10 drops twice a day). *Viscum*

Gravel, पथरी, Berb , Cal-c ; Hydrangea, Lyco , Sarsa , Sep.; Solidago, Urt (पथरी बनने की प्रकृति बदलने के लिये China 30 लगातार एक मास तक दें—फैरिंगटन)—See Calculi

Growing Pains (Neuralgic pains in limbs during youth), बढन की दर्द, Calc-phos , Guaiacum, Phos-ac

Gumboil, मसूडो मे फोडा, Bell., *Hekla Lava* 8x, Merc , Phos

Headaches, Anemic, कमजोरी से सिर-दर्द, (p. 627) China, *Chionanthus* Q (Any headache), Ferr-phos

——Congestive, रक्त-सचय से सिर-दर्द, Aco , Bell , Gels , Glon.; Lach

——Frontal, सामने माथे की तरफ सिर-दर्द, Ammon-c , Arg-m., Bry.; Ferr., Nat-m., Nux-v , Phos , Pic-ac , *Ptelia Trif* ; Thuja

——Nervous, स्नायविक सिर-दर्द, Cimici , Coff , Ign , Zinc

——Left Hemicrania, सिर के बायें भाग मे दर्द, Bry , Lach , Onosmodium, Puls , Sep

——Occipital, सिर की गुद्दी मे दर्द, Agar , *Carb-v* , China, Ferr , Gels , *Juglan cin* , Nux-v , Sang , spig , Thuja, Zinc-p (Periodical headache of teachers)

——Right Hemicrania, सिर के दायें भाग मे दर्द, Cact , Gels , Sangui

——Temporal, कनपटी मे दर्द, Arg-m , Berb , Caulo , Cedron, China, Murex, Nat-c , Puls , Thuja

——Vertical, सिर की चोटी मे दर्द, Nux-v , Phos -ac , Phos ; Sili., Sulph

Heart affections, हृदय के रोग, (P 461) Aco., *Cactus*, *Crataegus* Q, *Dig* ; Lyco , *Naja*; Spig , Spong

Heartburn (Pyrosis), पेट मे जलन के साथ डकार, पेट का अल्सर, नीबू का रस लें, Bismuth, Cap , Carbo-v., Gallic-ac , Geran Q

Hematemesis, खून की उल्टी, Crotal, Hamam, Ipec, Lach, Millefol, Phos

Hematuria, पेशाब मे खून, Ars, Canth, Hamam, Lach, Lyco, Millef, Nit-ac, Phos, *Thlaspi Bursa Pastoris* Q

Hemiopia, आधा दीखना, Lyco, Mur-ac; Nat-m.

Hemiplegia, आधे अग का लकवा, Baryta-m., Coccul (Both these drugs are left-sided)

Hemoglobin, Lack of, खून मे रक्त-कणो की कमी, Ferrum-phos 3x

Hemoptysis, थूक मे खून आना, Cact, Ferr-p 6x (टी० बी० में), Hamam, Ipec, Millef, Phos, Sulph-ac

Hemophilia, रक्तस्रावी प्रकृति, Halix tosta, Phos

Hemorrhages, रक्तस्राव (P. 367), Aur-m 3x three times a day (womb), China (Passive), Coccus (Black clots), Crocus (Black clots with long strings), Crotal, Erigeron, Geranium Q (Stomach), Hamam (Bright from nose), Ipec, Millef, Phos (Ratina, lung, skin), Sabina, *Trillium* Q

——Chronic, ऑपरेशन मे रक्तस्राव के वाद लगातार कमज़ोरी, Strontia.

Hemorroids (Piles), बवासीर, (P. 71), Aescu, *Aloe*, Ars, Collin, Fluo-ac, *Hamam*, Lach, *Mur-ac*, *Negundium* Q, *Nux-v*, Sulph

Hepatitis, जिगर की सूजन, Bry, Chelidon; Lach, Merc, Nat-s (Chronic)

Hernia, आंत का उतरना, Lyco (Right), Nux-v (Left), *Sulph-ac*, Thuja (Left inguinal—hernia through an abdominal ring)

Herpes Zoster, स्नायु के मार्ग पर छाले, Ars, Mez (Old people), Nat-m (Lips), *Rhus-t*

Hiccough, हिचकी, *Ginseng* Q, Iodine tinture 3 drops in water, Mag-phos, Mosch, Nat-m, Nux-m, Ratanh, Sulph-ac

Hoarseness, गला बैठना, चने के बराबर सुहागा मुह मे रखने से लाभ होता है, Copaiva १x (Catarrhal), Hepar

Homesickness, घर जाने की बेचैनी, Capsicum; Ign.

Hydrocele, अण्डकोष की वृद्धि, *Fluoric-ac* , Grpah., Iod , Psori , Puls , Rhodo

Hydrocephalus, सिर (कपाल) मे जल-सचय, Apis, Apocy (Chronic); Arg-n ; Helleb , Ipec , Zinc.

Hydrothorax, छाती मे जल-सचय, *Adonis;* Apis, Apocy.; Kali-c.

Hyperchlorohydria (Heart Burn), ऐसिड की अधिकता से भोजन-नली की जलन, Arg-n , Alum, Anacar , Calc , Chin-ars , Sep

Hypochondriasis, व्याधि-कल्पना, अपने को बीमार समझते रहना, Actea , Arg-n., Aur., Cheli , Con. (Sexual), Nat-m , Nux-v , Staphy., Stannum, Thuja

Hysteria, हिस्टीरिया, बेहोशी (P 459), Asafa , Caulo, Cimici., Cupr , Gels (Paralytic), Ign , Mosch , Nat-m , *Nux-m* 3x , Plat , *Pothos* Q, Puls , Valer , *Zinc* (Twitching)

Impetigo, त्वचा के शोथ मे पस वाली फुन्सिया, Anacar , Ars , Caust ; Dulc , Graph , Mezer , Tart-em

Impotence, नपुसकता (P 63, 594), Agnus, Caladi , Con , Gels , *Lyco* , *Onosm* (C M for women), *Phos-ac*, Phos , Pic-ac , Selen , *Yohimbin*

Inflammation, शोथ, सूजन, Aco , Bell , Ferr-phos , Sulph

Influenza, इनफ्लुएन्ज़ा, (P 492), Alli-c , Ars ; Ars-iod , Bry , Eup-p , *Gels* , *Rhus-t*

——after effects of, फ्लु के दुष्परिणाम, Tuber , Psori

Injuries (Traumatism), चोट, (P 119, 416), Arnica, Bellis, Hypericum, Ledum, Rhus-t , Ruta , Staph (Injury to sexual organs)

Insanity (Mania), पागलपन, Bell , Hyoscy , Kali-br , Lach., Platina, Puls (Puerperal), Stram

Insomnia, उन्निद्र-रोग, नीद न आना, (P 280), *Aquilegia* (Hysterical women first potency), Avena-s , Carcinosin 200 (morning and evening for some days in carcinoma), *Coff* , Cyprip , Ign , Kali-p 200x, Op (High), Passifl , Phos (Sweat), Scutellaria, Sulph., *Zinc-Val* १x.

Iritis, आँख की तारा का शोथ, Bell , (Colch , Colocy , Kali-bi ,

Tereb. in Rheumatic patients); (Merc., Syphili , Thuja in Syphilitic patients).

Irritablity, चिड़चिड़ाहट (P 97), Antim-t., Chamom.; China, Iod., Sanicula

Itch, खाज, *Antipyrine* 2x, Psori; Sep., Sulph , (साफ त्वचा पर भयकर खाज—Dolichos Pruriens).

——Barber's, बालों की जड़ों में खुजली, *Sulph-iod* , Thuja

Jaundice, पीलिया, Chelid ; China, *Chionan ı*. Q; Cholest ; Crotal (Malignant), Natr-phos , Sulph

Kidney Trouble (Congestion), गुर्दे में रक्ताधिक्य-सचार, Bell ; Canth , Phos , Tereb

Labour-Pains, प्रसव-पीड़ा, (P 384), Caulo ; Camom ; *Kali-phos*, Nux-v., Puls

Lack of Reaction, प्रतिक्रिया का अभाव (P. 414), Carb-v.; Capsicum, Lauro , Op , Sulph , Psori

Laryngitis (Larynx is the upper part of the wind pipe, Organ of voice), स्वर-यन्त्र प्रदाह, Aco , Apis; Canth , Caust , Drosera (Tubercular), *Hepar* (hoarseness of professional singers), Phos , Spong

Leprosy, कोढ़, Anacar , Antim-c , Ars , *Hydrocot* Q, Kali-bichr , Merc

Leucocythemia, श्वेत-रक्तकणों की अधिकता के साथ ग्रन्थियों (गाठों) का बढ़ जाना, Ars , Ars-iodide 3x (2 grains after meals); China, Ferr-phos , Natr-m., Pic-ac ; Thuja

Leucoderma, त्वचा पर सफेद दाग, Arg-m , Ars (1M or CM), Ars-sulph-flav 3x; *Ars-sulph-rub* 3x, Drosera, Mang ; Selen

Leucorrhea, प्रदर, Alum., Hydras., *Jacaranda* Q (इसके टिंचर को १० प्रतिशत पानी में घोल कर प्रात-साय कई दिन डूश लेना); Kreos , Puls , Sep , Thuja

——In Little Girls, बच्चियों का प्रदर, Calc , Cubeba , *Sepia*

Liver, Atrophy, जिगर की क्षीणता, Croc , Lach., Naja, Phos

——Cirrhosis, जिगर का बढ जाना, Aurum; Iod , Mag-m , *Merc.*; Phos , Plumbum

——Congestion, जिगर मे रक्त-सचय, Aloe; Berberis-v , Bry , Carduus; Cheli ; *Merc* ; Natr-s ;Nux-v.; Phos ; Podo ; Sangui

——Tumor or Cancer, जिगर का ट्यूमर या कैंसर, *Cholesterine* 3x (बर्नेट के अनुसार)

Liver Spots, शरीर पर पीले दाग, Nat-hyposulph

Lochia (Abnormal), बच्चेदानी मे से मैला पानी निकलने मे गडबडी, Glon. (Scanty), Kreos (Fetid), Puls and Secale (Suppressed)

Locomotor-Ataxia, मेरु-मज्जा के क्षय से पैर ठीक न रख सकना, Alumina; *Aragallis*, Arg-n., Caust.; Con , Gels., Oxal-ac., Pic-ac , *Plumb-phos* ; Zinc-phos

Lumbago, कमर की बाय का दर्द, Calc-c ; Dulc , Fluor-ac , Guaicum, Nux-v , *Rhus-t* , Sep , Sulph.; *Variolinum*

Malaria, मलेरिया, Carbo-v (Tertiary), Gels (Recent); Ipec (Recurring), Natr-m and Natr-s. (Chronic)

Malnutrition, अपोषण, Alfalfa, Arg-n ; Calc-phos , China (Chronic); Nat-m., Sil

Marasmus, सूके का रोग, (P. 34), Abrot , Ars-iod ; Baryta-c , Iod , Natr-m ; (पेट पर कोड लिवर ऑयल लगातार मलना—डा० हेल)

Mastitis, स्तनो की सूजन, Apis, Bell , Bry , Conium, *Ferrum-phos*, Lac-c ; Phyto

Mastodynia, स्तनो मे दर्द, Bry , Con , Croton (Nipple), Murex, Phyto

Masturbation, हस्त-मैथुन, Con , Gels , *Origanum* 3; Phos-ac (18 C), Platina (For females), *Staphy*. (For bad effect)

Measles, खसरा, *Aco* (शुरु मे), Bry , Ferr-phos , Gels (Early), Kali-m , Lach (Malignant), *Puls*

Melancholia, चित्त का गिरे-गिरे रहना, Aurum-met ; Cimicif , Ign , Natr-m , Nux-v , Puls

Menier's Disease (Aural Vertigo), कान की नर्व के दोष के कारण चक्कर आना, Chenipodium, Natrum salicyl ; Sal-ac ; Sili., Pilocarp-m

Meningitis, मस्तिष्क की झिल्ली की सूजन, Apis; Bacil , Cupr.; Gels., *Iodoform* 3x.

Menorrhagia, मासिक अधिक होना, (P 498), Amm-c.; Chin ; Croc , *Hydrastis* (१x मासिक होने के दिनों में दें, और ३x न होने के दिनों में दें), Kreos (Cancer), Mag-c., Phos ; Psor ; Sabina, Sulph

Menstruation Menopause, मासिक बन्द हो जाना, (p 554), Glon ; Graph , *Jonosia Ashok* Q (सब प्रकार के मासिक के रोगों में लाभ करता है), Lach , Psori , Puls , Sangui

——Delayed, मासिक देर से होना, (P. 497) Calc-phos ; Caulo.; Natr-m , Puls

——Painful (Dysmenorrhea), मासिक का दर्द से होना, Bell , Mag-phos , Viburn; *Zanthoxylum* १x

——Profuse, मासिक अधिक होना, Amm-c ; China, Bell, Chamom , *Hydrastis*, Ipec ; Sabina (*See* Menorrhagia).

——Scanty or absent, मासिक न होना या कम होना, Caust ; Graph ; Nat-m ; Nux-m , Puls , Thuja

——Suppressed, मासिक दब जाना, Aco., Calc-c ; Bry , Puls

——Vicarious, मासिक की जगह अन्य स्थान से रक्त-स्राव, Bry ; Hamam , Millef

Metrorrhagia, दो मासिकों के बीच में जरायु से रक्त जारी रहना, (P.499) Ars , Caulo , Chamom , *Hydrastis* १x; Ipec , Mag-c , Phos , Polygonum, Psor ; Sabina; Secale; Sulph.

Migraine, सिर की किसी नस में दर्द, प्राय एक तरफ, Coff , Stan ; Iris, Cheli and Sangui (Right), Sep and Spig (Left)

Miscarriage, Repeated, बार-बार गर्भपात होना, Bacill ; Syphili.

——Threatened, गर्भपात की आशंका, Apis, Caulo , Sabina, Secale, Viburn

Morning Sickness, गर्भावस्था में प्रातःकालीन कय, Coccul ; Ipec , Nux-v

Mumps, गलपेड़े, Carbo-v (Metastasis); Bell , Merc , *Pilo-carp-mur* 3x, Puls

Muscae Volatantes, आंखों के सामने मच्छर का-सा घूमना, Caust ; China, Cypriped

Myalgia, पुट्ठो मे दर्द, Aco., Bry., Rhus-t

Myelitis, मेरु-मज्जा की सूजन, Ars ; Dulc.; Oxal-ac , Plumb.; Secale.

Myocarditis, हृदय की मास-पेशी की सूजन, Ars-iod ; Aurum-m., Digit

Nasal Catarrh, नाक के भीतर की झिल्ली की सूजन, Sili (Chronic); Spig and Stan (Post-nasal catarrh), Sulph, (Recurrent), Thuja (Chronic)

——Polypus, नाक का ट्यूमर, Teucrium, Lemna Q

Nausea, Pregnancy, गर्भावस्था मे जी मतलाना, Symphoricarpus

Neckstiff, गर्दन अकड जाना, Lachnantes 3 Mag-phos

Nephritis, गुर्दे की सूजन, Apis; Berb , *Cad-sulph* , Canth , *Gallic-ac* , Kali Chloricum; Merc-c , Tereb

Neuralgia, किसी नस मे दर्द, *Aco* , *Ars* , Bell , Colocy , Mag-phos ; Oxalic ac , Passif , *Spig* ; (दर्दवाली जगह पर पेपरमेट का तेल हल्के-हल्के लगाना चाहिये)

Neurasthenia, स्नायु-दौर्बल्य, Anac , Arg-n , *Gaertner* (This Nosode in every sort of Neurasthenia), Gels , Ign , (*Mephitis* 3x for exhaustion—फैरिंगटन), Nux-v , Pic-ac

Neuritis, स्नायु-शूल, Aco , Ars , Hyperi , Plumb , Sangui (Face), Stannum

Night Sweats, रात के पसीने, Acet-ac , Agaric , Calc-c , China, Merc , Pilocarp

Nipples Cracked, स्तनो का तरेड जाना, Ratanhia

Nose Bleed, नकसीर, Natrum Nitricuma 2 शक्ति का पाउडर

Nosodities of Joints, जोडो मे गाठें, Ammon-phos

Nymphomania, स्त्री मे मैथुन की प्रवल इच्छा, (P 529), Canth , Murex, Phos , Plat

Old Age, बुढापा, Baryta-c , Conium, Thiosinamine 2x (1 gram twice daily—इस से अगो का कडापन नही होने पाता)

Obesity, मोटापा, Ammon-br , Calc-c , Caps , *Fucus* (5 to 10 drops of tinture 3 times a day before meals), Graph , Phyt , Thyroidin, (रोज़ सवेरे गर्म पानी मे दो नीबू का रस और चार चम्मच शुद्ध शहद पीने से मोटापा छुट जाता है)

Oedema (Edema), शरीर के ततुओ मे सीरम भर जाने से सूजन हो जाना, Apis, Ars ; Canth., Dig ; Kali-hyd.

Omalgia, कन्धे के जोड का ऊपर न उठा सकना, Sanguinaria

Ophthalmia, आख आना, Arg-n (Purulent); Euphr , Nit-ac. (Neonatorum—नवजात शिशु की आख आ जाना)

Optic Neuritis, आख की नर्व मे दर्द, Lach., Plumb.

Orchitis, अण्डकोष की सूजन, Aurum; Bell ; Puls , Rhododen (Right), Spong

Otalgia, कान का दर्द, Chamomilla; Pulsatilla

Otorrhea, कान पकना, *Calc-c* , Hepar; Merc , Psori , *Puls* ; Sulph , Tellurium

Ovaritis, डिम्ब-कोष की सूजन, Apis, Colocy ; Lach., Platina; Sep

Ovarian Pain, Left, डिम्ब-कोष का दर्द (बायी तरफ), Arg-m ; Canth , Colocy., Lach , Lilium-t , Zinc.

——Right, (दायी तरफ), Apis, Bry , Canth ; Hamam

——Either side, (किसी भी तरफ), Lil , Murex, Platina; Podo, Rhododen

Ozena, पीनस, नाक का फोडा, Alum, Aurum, *Cadmium*, Merc , Nitr-ac ; Phyt (Syphilitic), Sulph

Pain remedies, दर्द की दवाए, (P 434), Aco , Amm-m., Ars , Cham., Coff , Ign , Gels , Mag-p , Spig , Sanguinaria

Palpitation, धडकन, Arg-n (Night), Cactus, Dig , Kalm (Left); Lach., Nux-m (Nervous), Nux-v, Puls (Left)

Pancreatic Troubles, पैंक्रियास के रोग, *Iris*

Paralysis Agitans, मासपेशियो का लगातार कापना, Alum, Aurum-s , Gels , Mang , Merc , Plumb, *Tarentula*

Paralysis, लकवा, Aco (Face), Arg-n , Caust (Face), Coccu , Gels , Lach., Merc (Face), Plumb

Paraplegia, टागो का लकवा, Arg-n ; Gels , Plumb , Rhus-t (Rheumatic)

Paresis (Respiratory), श्वास-नली का हल्का-सा पक्षाघात, Lobelia purp

——Type-writer's, टाइपिस्टो का हल्का-सा पक्षाघात, Stannum

Peptic ulcer, पेट का फोडा, Cortisone 30—3 doses

Pericarditis, हृदय के आवेष्टन की सूजन, Ars., Bry., Digit , Naja ; Spig.; Spong ('आवेष्टन' का अर्थ है—ढकने वाली झिल्ली या परत)
Periostitis, हड्डियो के आवेष्टन की सूजन, Asaf ; Aurum, Kali-bichr , Merc , Mez , Ruta, Staphy.
Peritonitis, आतो के आवेष्टन की सूजन, Apis Bell , Bry , Calc. (Chronic), Colocy , *Merc-c* , Tereb (Pelvic)
Pharyngitis, गलकोष (मुख और नाक के भीतर का भाग जहा दोनो मिलते हैं) की जलन, Aescu , Hydast , *Sangui* 3x
Phlebitis (Inflammation of a vein), शिरा-प्रदाह, Alli-c , Crotal , Hamam , Lach., Puls , *Vipra torva.*
Placenta, Expulsion of, नारवेल के निकालने के लिये, Viscum-alb
Pleurisy, फेफडो की आवरक-झिल्ली की सूजन, Aco , *Bry* , Phos , Sulph.
——Effusion stage, जब इस झिल्ली मे पानी पड जाय, Apis, Ars , *Canth* , Sulph
Pleurodynia, छाती मे दर्द, Bry , Cimici , *Guaiacum* 6
Pneumonia, न्युमोनिया, *Bry 6x and Phos 6x alternately*, Chelid. (Right), Ferr-phos (early), Hepar (Late), Iod , Ipec (Broncho); Kreos (Chronic), Lyco (Acute and chronic), Nat-s (Left), Op (Stupor), Oxal-ac (Left base), Phos (Lobar right base), Pneumo-coccin , Sangui (Enteric), Stram (Mania), Sulph.
Polio, मेरु-दड (रीढ) के ग्रे मैटर की सूजन, *Bungaris*, Kali-phos , Lathyrus
Polypus, अर्बुद (नाक, कान, गुदा आदि मे ट्यूमर), Alli-c (Nasal), Calc (Aural and nasal), Calc-phos (Ear, nose, rectum, uterus), Hepar (Ear), Phos , Sangui (Uterus), Teuc (Nose), Thuja
Prophylactics (Preventives), प्रतिषेधक या प्रतिरोधक दवाए
——Appendicitis, अपेंडिसाइटिस के बार-बार आक्रमण, Psorinum
——Calculus, पथरी, Urtica urens Q (प्रतिदिन ५ बूद दो बार), China 30 (दो मास तक) Calcarea renalis २x (दिन मे दो बार),
——Cholera, हैजे की, Camph ; Cupr ; *Veratr-ab* (Once daily)
——Coryza, ठड लगने से बार-बार जुकाम, Iodum एक बूद टिंचर

——Diphtheria, डिफ्थीरिया की, Diphtherinum 200.
——Erysipelas, विसर्प, Graphites 30 को प्रति रात्रि महीनों लेते रहना
——Gall stone colic, पथरी का दर्द, डा० थेयर के अनुसार चायना 6x दस दिन तक, फिर एक दिन छोड कर १० दिन तक, फिर महीने मे एक वार चायना 6x लेते रहने से रोग जाता रहता है।
——Influenza, इन्फ्लुएन्जा, Tuberculinum 200
——Malaria, मलेरिया, Leptandra
——Mumps, गलपेडे, Parotidinum 30, three doses daily; Pilocar, Puls
——Polio, पोलियो की प्रतिरोधक, Gels , Lathyrus
——Scarlet fever, स्कारलेट-ज्वर की प्रतिरोधक, Bell
——Small-pox, चेचक की, Variolinum 30 twice daily on alternate days with an occasional dose of Sulphur 30.
——Tetanus, टेटेनस की प्रतिरोधक, Hypericum
——Tonsilitis, टासिल की प्रवृत्ति की प्रतिरोधक, Baryta iodide
——Whooping cough, कुत्ता खासी की प्रतिरोधक, Cupr ; Drosera १x, Pertussin

Prolapsus Ani, काच निकलना, Aloe, Ign , Podo , Sulph
——Uteri, वच्चेदानी का जगह से हट जाना, Actea ; Aescu ; Aloe, Natr-m., Nux-v , Podo , *Sep.*

Prostatitis, प्रोस्टेट ग्लैंड की शोथ, Conium, *Hydrangea* Q, Merc-dul , Pic-ac , Psori , *Sabal* Q, Staphy , *Thuja*

Prostration, शक्तिहीनता, बेहद कमज़ोरी, Gels (Febrile), Mur-ac (Typhoid), Phos-ac , Pic-ac

Pruritus, अत्यन्त खुजली, *Antipyr* 2x, Fagop , Rhus-t , Sep , Sulph , (५ ग्रेन मैन्थौल १ औंस पानी मे घोल कर लगायें)

Psoriasis, त्वचा के शोथ के वाद उसका सूक कर झडना, *Ars* , *Borax*, Graph (Palms), Kali-ars , Kali-bro , Psori , Sulph

Ptosis, आख की ऊपर की पलक का झूल पडना, *Apis* (नीचे की पलक सूजना), Caust , Gels ; *Kali-carb* , Kalm., Naja, Rhus-t , Sep

Ptylism, गर्भावस्था मे या किसी तरह मुख से लार टपकते रहना, Iod , Iris ; Merc , Natr-s , *Pilocarp* 6x; Puls , Trifol

Puberty Boils, मुहासा, Borax, Calc-c ; Graph , Nitr-ac , Sulph-ac

Purgative, दस्तावर दवा, शुगर ऑफ मिल्क के भरे हुए ३ चम्मच गर्म दूध या पानी मे ब्रेकफास्ट से २ घटे पहले लो, पेट साफ हो जायगा।

Purpura (Scurvy), त्वचा पर बैंगनी रग की छोटी-छोटी फुन्सिया (व्रमल रोग), Acet ac , Ars , Crotal , Merc , Phos

Pyorrhea, मसूडो मे पस पड जाना, Kali-c , Staphy , Plantago

Pyrosis, पेट मे जलन और दर्द, Bismuth, Caps , Carbo-v , Gallic-ac ; Geran Q

Rachitis (Rickets), बच्चो की हड्डियो का टेढा-मेढापन (अस्थि-विकृति), Calc-c , Calc-p , Phos , Silic (गर्भावस्था मे माता को Calcarea phos 6x देते रहने से बच्चे को रिकेट नही होता)

Ranula, जीभ के नीचे सिस्ट वाला ट्यूमर, Thuja

Rectum, Pain, गुदा मे अत्यन्त दर्द, Ignatia 30 दो-दो घटे बाद लो।

——Intolerable itching, गुदा मे भयकर खुजली, Sanguinaria-n

Rheumatism, वात-रोग (वाय) गठिया, Aco , *Bry* ; Cimici , Colchi., Dulc , Merc , Puls , *Rhus-t* , *Stellaria* 2x

——Chronic, पुराना वात-रोग, Stellaria 2x, *Sulph*; Viscum

——Deltoid, कन्धे का वात-रोग, Sangui , Urtica urens Q

——Muscular (Myalgia) पुट्ठो मे वाई का दर्द, Aco , Bry , Rhus-t

——Of joints, जोडो मे वाई का दर्द, Hyoscy, Nux-v , *Viscum*

——Of the heart, दिल मे वाई का दर्द, Ars , Cimici , Rhus-t

——Of Wrist or small joints, कलई या छोटे जोडो मे वाई का दर्द, Actea-spi , Caulo

——Gonorrheal, सुजाक के कारण वाई का दर्द, Clemet , Hamam., Sarsa , Thuja

Rhinitis, नासिका-प्रदाह, Aco , Bell , Hepar , Kali-bi , Lemna

Ringworm, दाद, Ars , Bacillinum, Sep , Sulph., Tellurium

Satyriasis, मैथुन की प्रबल इच्छा, Pic-ac , Phos , Plat

Scarletina, आरक्त-ज्वर, Bell , Rhus-t , Stram

Sciatica, गृध्रसी, कमर मे टाग की तरफ नस मे दर्द जाना, (P 262), Kali-carb, *Colocy* , *Gnaph* , *Passif* Q, Rhus-t, Ruta (Left), *Viscum-album* १x

Scrofula, गण्डमाला, Aethiop , Calc-c , Ferr-iod , Kali-iod , Sulph., Theridion

Scrotitis, अण्डकोष की थैली का शोथ, Apis , Ars.

Seminal Emissions, वीर्य-क्षय, Lupulin 1x

——Early, जल्दी वीर्य-क्षय हो जाना, Tinanium.

Senile Decay, बुढापे की क्षीणता, Baryta-c.

Sepsis, सड़ाद, Ars , Bapti., Crotal , Lach

Sexual Desire completely destroyed, मैथुन की इच्छा का नष्ट हो जाना, Onosmodium C M , use one dose only.

——increased, कामोत्तेजना बढी हुई, (P 529), Plat , Hyoscy.

Sinus (Cavity), (P. 638), *Calc-sulph* , Fluoric acid, *Cupressus* 3x or 30

Skin Diseases, खुजली, एग्जीमा आदि रोग, Skookum Chuck 2x, 3x.

Sleeping Sickness, कुम्भकर्णी नीद का रोग, Gels , Nux-m ; Op

Slipped Disc, पीठ के मोहरे का स्थान से हट जाना, Tellurium 30.

Small Pox, चेचक, Ant-t , Crotal , Hydrast , Thuja

Smoking Habit, स्मोक करने की आदत, Caladium C M one dose.

Somnabulism, सोते हुए चलना-फिरना, Kali-brome, Kali-p , Nux-m

Sore-Throat (**Quinsy, Tonsilitis**), टासिल मे बुखार तक आ जाना, Aescu , Apis , Merc (दो-दो घटे बाद फाइटोलेक्का तथा एक्टिया रेसिमोसा का टिकचर देने से लाभ होता है)।

Spermatorrhea, स्वप्न-दोष, China, *Digitalis* 3x (सवेरे); Natr-m ; Nux-v , Phos-ac (18 C), Pic-ac , Salix; Staphy

Spinal Irritation, मेरु-दड (रीढ) मे जलन आदि, Agari , Arg-n , Coccu , Ign., Nat-m ; Nux-v , *Phos.*, *Pic-ac* , Zincum-m, Sulph

Spleen Affections, तिल्ली का रोग, Ceanothus, Halianth, Natr-m , Polymnia, Quercus

Sterility, बाझपन, Agnus, Baryta-c , Borax, *Bursa pastor* Q 3 *drops once a day* (बर्नेट), Natr-c (Obstinate sterility), Natr-m., Onosmodium C M की एक मात्रा अगर स्त्री मे भोग की कतई इच्छा न होने के कारण ऐसा हो तो स्त्री को दो ।

Stings, ततैय्ये का काटना, Ledum

Stiffness in Back, कमर का अकडे रहना, (लवेगो, शियाटिका तथा रुमेटिज्म), Ginseng १x.

Stomach (Atrophy), पाकाशय की शक्ति का ह्रास, 10 to 15 drops of Hydrochloric acid with water; Nux-v.

——Dilatation of, पाकाशय का प्रसारण, Hydrasticum Muriaticum 3x Trituration

——Ulcer of, पाकाशय का अलसर, Arg-n , Hydrast 3x and *Atropine* 4 tri; Kali-bichr , Kreos , *Ornithogalum* Q का सिर्फ एक डोज देकर देखो।

Stomatitis, मुख के भीतर शोथ, Arg-n , Borax, Kali-m., *Nitr-ac.*

Stranguary, पेशाब तकलीफ से आना, Apis, Canth , Clem , Nitr-ac , Nux-v , Tereb

Stricture, मूत्र-नली का सिकुडना, (P 681), Apis, Canth., Clem., Phos ; Tereb.

Stuttering (Stammering), हकलाना, Can-sat. 30, Caust , Stram.

Stye, गुहोरी, Puls 30 or 1000, Silicea, Staphy

Sun-stroke, लू लगना, Aco , Glonoin, Lach , Mellilo , Natr-c

Suppuration, फोडे का पकना, Hepar (Empyema), Phos , Silic

Sweat, affected parts, रुग्ण अग पर पसीना आना, Ambra-g , Antim-t , Merc , Rhus-t ; Sep

——Anxiety, during, चिंता होने पर पसीना, Ars , Calc , Chamo , China; Phos-ac , Phos ; Sep , Sulph.

——Closing eyes, आख बन्द करते ही पसीना, Bry , Con , Lach.

——Cold sweat, ठडा पसीना, Ars , Carbo-v , China, Ferr , Ip , Lyco , Secale, Sep , Sulph., Thuja, Tuber , Verat

——Day and night, दिन-रात पसीना, Hepar.

——Midnight, मध्य-रात्रि मे पसीना, Ars , Ferr , Mur-ac , Phos , Samb

——Night sweats, रात के पसीने, Ars , Carbo-v., Caust , Con ; Merc , Puls , Sep , Silic , Sulph , Thuja

——One-sided sweat, शरीर के एक तरफ पसीना, Bar-c., China; Nux-v ; Phos , Petr , *Puls* , Sulph., Thuja.

——Single parts, एक ही अग मे पसीना, Calc-c ; Caust., Ign., Mez ; Puls , Sep

Sycosis (anti), सुजाक के विष की नाशक, Lyco , Nitr-ac.; Thuja.

Syphilis (anti), आतशक के विष की नाशक, Aurum-m., Iod (Tertiary), Kali-iod , Lach. (Nasal), Lyco (Nasal), Merc., Nitr-ac ; Sarsa

Tachycardia, हृदय की अनियमित तेज़ गति, *Abies-n* , Agnus, Iod

Temperature, Subnormal, बहुत निम्न तापमान होना, Helderma 30

Tetanus, मांसपेशियों की अकड़न, Cicu , Ipec , Nux-v , Passiflo , Physost , Strych , Upas

Tetany, हाथ-पैर की अंगुलियों की अकड़न, (Same as above).

Thrombosis, हृदय या धमनी में जमे रुधिर का थक्का पड़ जाना, Lach

Tinnitus Aurium, कान में सनसनाहट का शब्द होना, Antipr., Cann-ind', Carboneum-sulph , Caust , China; *Kali-iod* ; *Nicotianum Tabacum* Q, Petrol , Puls ; Sal-ac , Sulph-ac , *Thiosinamine* 2x

Tired Feeling in Women, महिलाओं का थका-थकापन, Aletris far (पुरुषों के लिए चायना)

Tobacco-Craving, तम्बाकू की प्रबल इच्छा, Dalphne-ind 1 to 6 Tr

Tonsillitis, टांसिल बढ़ना (P 65, 339), Baryta-c , Bell , *Guaicum* 3x, Lach , Lac-c , Lyco , Merc , Phyt , Psori, Tuber (डा० वुड कहते हैं कि ९९ प्रतिशत रोगी इससे ठीक हो जाते हैं—बच्चों के टांसिल में ट्युबर्क्युलीनम 200 विशेष हितकर है)

Toothache, दांत में दर्द, Ant-c , Bell , Chamo , Coff , Mag-c.; Mez , Plantago, Sep (Pregnancy), Staphy (Pregnancy), (थाइमोल लगाना चाहिए)

Tuberculosis or Phthisis, क्षय-रोग, (P 629), Acalypha (Incipient phthisis), Ars-iod , Brom , Calc-c , Ferr (Intestinal), Iod , Kali-c (Lungs), *Kali iod and Cannabis sat* (दोनों १x एक दूसरे के बाद दो), Kali-hy , Phos , Puls , Stann , Sticta, Spongia, Sulph., Theriod , Tuber

——Laryngeal, स्वर-यन्त्र का क्षय-रोग, Drosera, Stann , Selen

Tumors, अर्बुद, ट्यूमर (बच्चेदानी के ट्यूमर में Aurum-mur-nat लाभप्रद है), Calc-fl , Con , Hydrast , Lach , Phyto , Thuja

Tympanitis (Flatulence), पेट फूलना, Asaf , Camph , China, Colchi , Erigeron, Lyco , Natr-c , Natr-s , Puls , Tereb

Typhoid, अविराम-ज्वर, देखो Fevers

——after effects of, टाइफॉयड के दुष्परिणाम, Psorinum

Ulcers, घाव, Ars , Lach , Nitr-ac , Puls , Silic.

——Of all kinds, सब तरह के अल्सर, Calc-ph १x पाच ग्रेन दिन मे तीन बार ।

Urethritis, मूत्रमार्ग मे जलन, Aco , Apis, *Canth*

Urine Retention, मूत्र मे रुकावट, (Aco and Gels or Aco and Canth. alternately), Caust , Spirit-camphor, Mag-phos.

Urine Suppression (Anuria), मूत्र न आना, Aco , Canth , Tereb.

Urticaria, पित्ती उछलना, Antim-c ; Antipyr , Apis ; *Chloralum* 1st tri (¼ gr every 3 hours); Natr-m.

Uterine Displacement, नाभ हटना या जरायु का अपने स्थान से हटना, (p 603), Abies-c , Ferr-iod , Puls , Sep

Uterine Tumor, जरायु का अर्बुद (ट्यूमर), *Aurum-m-nat*

Uterus enlarged, जरायु का बडा होना, Fraxinus Americanus, मूल अर्क ५ से १० बूद लगातार प्रतिदिन ।

Vaginismus (A painful vaginal spasm), यौनि का आक्षेप, Cact ; Bell.; Plumb

Varicose Veins, शिराओ का फूल जाना, Calc-fl , Fl-ac , Hamam , Lach.; Puls , Thuja

Vertigo, चक्कर, (P 687), Coccu , Con , Gels , *Granatum* १x (for persistent vertigo, every 3 hours), Phos

Vomiting, कय, Aethusa, Anti-t , Chelid , Ipec , (Kali-c , Nux-v , Podo , Staphy —Any of all these four for vomiting in pregnancy), Natr-phos

Warts, मस्से, Ant-c , Merc-s (Genitals), Nitr-ac ; Ruta (Hard), *Thuja*

Weakness, कमज़ोरी, (P 526), China, Ethusa, Pic-ac , phos-ac

Whitlow, नाखूना, Myristica 30

Whooping (Cough Pertussis), कुत्ता-खासी, (P. 249), *Drosera*, Mag-phos , Pertussin

Worms, पेट के कीडे, *Chelone* (Tincture 1 to 5 drops), Cina, Hyoscy (Children)

——tape, टेप कीडे, ३५ ग्रेन पोटाश और ४ ग्रेन आयोडाइन को ४ औंस पानी मे घोल कर १० बूदें दिन मे ३ बार मे दे तो ये मर कर निकल जाते है । Cuprum Oxy. १x से सब तरह के कीडे खत्म हो जाते हैं ।

Wounds, जो ज़ख्म ठीक न हो, Hekla Lava 6x

मुख्य औषधियां, उनके रोग तथा शक्ति
(INDEX OF REMEDIES WITH POTENCIES)

औषधियो की शक्ति तथा उनके देने के विषय मे यह जान लेना आवश्यक है कि ३० तथा उसके नीचे की शक्तिया दोहराई जा सकती है क्योकि इनका गहरा असर नही होता। २०० तथा इस से ऊपर की शक्तियो का गहरा असर होता है, कई दिन तक रहता है, इसलिये उन्हें दोहराना नही चाहिये। 'तरुण' (Acute) रोगो मे निम्न तथा 'जीर्ण' (Chronic) रोगो मे उच्च-शक्ति दी जाती है। कई औषधिया निम्न-शक्ति मे ही काम करती हैं, कई उच्च-शक्ति मे ही काम करती हैं, परन्तु अनुभव सिद्ध करता है कि अधिकतर औषधियो का प्रभाव ३० तथा इस से भी उच्च-शक्ति मे चिर-स्थायी होता है। औषधि की शक्ति तथा रोग की गहराई मे मिलान होने से रोग जल्दी जाता है, इसलिये कभी-कभी रोगी तथा औषधि के लक्षण मिलने पर भी ठीक शक्ति न होने के कारण रोगी जल्दी नीरोग नही होते। औषधि के लक्षण मिलने पर भी यदि रोग किसी एक शक्ति से ठीक नही होता, तो औषधि की शक्ति बदल देने से रोगी ठीक होने लगता है। 'जीर्ण' (Chronic) रोग का इलाज करते-करते अगर बीच मे कोई 'तरुण' (Acute) रोग आ जाय तो पहले 'तरुण'-रोग का इलाज करना चाहिये, उसके हट जाने पर फिर 'जीर्ण'-रोग की दवा पर आ जाना चाहिये। साधारणत, ३० शक्ति से ही इलाज शुरु करना उचित है। जब औषधि से आराम होने लगे तो औषधि देना बन्द कर देना चाहिये, अन्यथा हानि हो सकती है। अगर औषधि से लाभ होना बन्द हो जाय तो वह दोहराई जा सकती है, या लक्षणानुसार दूसरी औषधि दी जा सकती है। होम्योपैथी का बक्सा बनाते हुए मुख्य-मुख्य औषधियो की ३०, २०० तथा १००० शक्ति का संग्रह कर लेना ठीक रहता है।

1 Abrotanum, 30—नीचे के अगो का सूका-रोग पर भूख अच्छी, दस्त ठीक होने पर जोडो मे गठिये का दर्द या दर्द ठीक हो तो बवासीर की शिकायत; बच्चो मे नकसीर, बच्चो के पोते बढना।

2 Aconite, 3x, 3, 30, 200—आख, मूत्राशय आदि के ऑपरेशन के बाद, सूखी, ठडी हवा लगने से यकायक कोई भी बीमारी (बुखार, आख आना, दात का दर्द, जुकाम, खासी आदि); अत्यन्त गर्म मौसम मे पेट या आतो की शिकायत—दस्त, किसी नई बीमारी के शुरु मे, भय से उत्पन्न रोग, बुखार मे १x, २x, ३ आदि दें, दस्त आकर बुखार उतर जायगा, स्नायविक रोगों मे ३०, २०० दें। सर्दी लगने से

जलनेवाला स्राव बहना, उक्त किसी लक्षण मे पेट के रोगो मे २X, ३X आदि और त्वचा के तथा नर्वस रोगो मे ३०, २०० दो, पेट के रोग मे इस से लाभ न हो तो आर्स आयोडाइड ३X दो।

20. Asafoetida, 2, 6, 30—पेट से एक गोला गले तक उठना मालूम होना, पेट मे गुडगुड होना।

21 Aurum Met 30, 200—आत्मघात की प्रवल प्रवृत्ति, हाई ब्लड प्रेशर मे उच्च-शक्ति, सिफिलिस मे २X, ३X आदि। हाई ब्लड प्रेशर मे **फंगोपाइरम** ३, १२X से भी लाभ होता है। डा० बर्नेट कहते हैं कि २X ऑरम हृदय-रोग के लिये ठीक है।

22 Bacillinum (Tuberculinum), 200—क्षय-रोग, अगर परिवार मे क्षय का इतिहास हो, टासिल मे 1M की एक मात्रा काफी है।

23 Baryta carb, 30—बच्चे की शारीरिक तथा मानसिक बढन न होना—मूर्खता, बुढापे के रोग। टासिल की प्रवृत्ति को रोकने के लिये ३० या २०० शक्ति दो।

24 Belladonna, 3, 6, 30, 200, 1M—तेज़ बुखार, सिर-दर्द, प्रचड पागलपन, ऐंठन, बच्चो के अनेक रोगो की औषधि। 'तरुण' (एक्यूट) रोगो मे इसे **एकोनाइट** की तरह दोहराना चाहिये।

25 Berberis vulgaris, Tincture, 6—पित्त-पथरी, पथरी से दर्द। टिंचर से लाभ होता है। गुर्दे या मूत्राशय की पथरी मे **हाइड्रेन्जिया** का टिंचर दो। पथरी की प्रवृत्ति रोकने लिये **चायना** ३० महीने भर दो।

26 Borax, 3 विचूर्ण, 30—मुह के छाले, बच्चो के मुह के छालो के साथ पेट-दर्द और दस्त, स्त्रियो में श्वेत प्रदर, बाझपन, बच्चो के किसी रोग मे नीचे की गति से भय, उसका पालने मे डालते समय भयभीत होकर चिल्लाने लगना। गला बैठ जाय तो चने बराबर सुहागा (बोरैक्स) मुह में घुल जाने पर जादू के तौर पर गला खुल जाता है।

27 Bryonia, 12, 30, 200, 1M—खुश्क खासी, छाती मे सांस लेने से भी दर्द, जोडो मे ज़रा भी हिलने से दर्द, सिर मे ज़रा भी हिलने से दर्द बढना, हरकत से रोग बढना, टॉइफॉयड जब कब्ज़ से शुरु हो (अगर दस्तो से शुरु हो तो **रस टॉक्स**), कब्ज़ मे निम्न-शक्ति नही देनी चाहिये, ३० या २०० दें, शिकायत वाली करवट लेटने से आराम।

28 Cactus, 3, 30— हृदय को मानो कोई लोहे के शिकजे से कस रहा है, लक्षणो का बार-बार निश्चित समय पर होना (Periodicity)—बुखार आदि मे, लो ब्लड प्रेशर (**लाइकोपर्सीकम**), एन्जाइना पैक्टोरिस मे ६ X से लाभ होगा।

29 Calcarea carb, 30, 200, 1M—पावो मे ठडी, भीगी जुराब पहने-रहने का-सा अनुभव, शीत-प्रकृति का व्यक्ति ठडे कमरे मे जाने पर भी सिर तथा पैरो मे पसीजता है, थुल-थुल बच्चो मे लाइम की कमी के कारण हड्डियो मे कमजोरी, गर्दन आदि के ग्लैड्स का कडापन, क्षय की प्रवृति। वृद्ध लोगो मे कई वार दोहराना ठीक नही। गले मे पख लगने के-से अनुभव से लगातार खुरखुराहट वाली खासी।

30 Calcarea fluor, 3x, 12x— एडोनॉयड, मोर्तियाबिन्द, कही भी कडापन। प्रभाव प्रकट होने मे समय लगता है, हुत बार दोहराना ठीक नही।

31 Calcarea phos, 30, 200—बच्चो की बढन के समय की दवा, बढन के समय के दर्द (Growing pains), दात निकलने मे 6x सहायक है।

32 Camphora, १x, 3—जुकाम की शुरुआत मे जब ठड लगे, छीकें आयें, हैज़े मे जब शरीर बिल्कुल ठडा पड जाय, अत्यन्त लो ब्लड प्रेशर (लो ब्लड प्रेशर मे **थाइरोडिनम** भी लाभप्रद है), सकट के समय हृदय को उत्तेजना देता है, अन्तिम अवस्था के लक्षण, टिंचर देने से बन्द पेशाब खुल जाता है। इसे दोहराना पडता है।

33 Cannabis sativa, 3, 30—तुतलाने मे 30 शक्ति, गोनोरिया मे C M की एक मात्रा देने से लाभ होता है लेकिन ४–५ दिन बाद असर होता है। C M शक्ति से लाभ न हो तो टिंचर दो।

34 Cantharis, Q, 6, 30, 200—पेशाब मे सख्त जलन, प्रोस्टेट की जलन, छालो मे जलन। इसे दोहराया जा सकता है। जल जाने या एग्ज़ीमा की जलन मे पानी मे 1x या 2x घोल कर लगाते हैं। इस का घोल हर घर मे रहना चाहिये। जलने पर पहली चीज़ इसी का दस-दस मिनट बाद रूई मे भिगो कर उपयोग होना चाहिये, छाले नही पडते, त्वचा ठीक-से आती है, दर्द तत्काल जाता रहता है।

35 Carbo veg, 30, 200—डकार, पेट के ऊपरी भाग मे हवा, कार्बो-वेज १x और पपीते के बीजो का १x मिलाकर १ या २ ग्रेन देने से बदहज़मी नही रहती, मरने से पहले C M देने से या बुखार आकर रोगी अच्छा हो जाता है या शान्ति से मरता है।

36 Causticum, 30, 200, 1M—लकवा मार जाना, पेशाब स्वय निकल जाना। लकवे की हालत मे २०० या १००० शक्ति सप्ताह या दो सप्ताह मे एक बार दी जा सकती है। बरसात या ठड मे गठिये मे आराम मिलता हो तो इस से लाभ होता है। चेहरे पर मस्से।

37 Chamomilla, 12, 30—बच्चो के दाँत निकलते समय के रोग—मसूढे फूलना, लार बहना, हरे-पीले दस्त, चिडचिडा स्वभाव, क्रोध से होनेवाले रोग।

38 Chelidonium, Q, 3x, 30, 200—जिगर के रोग। प्राय निम्न-शक्ति दी जाती है। दायें अस्थि-फलक के नीचे दर्द (बायें अस्थि-फलक के नीचे के दर्द मे चेनोपोडी ग्लाउसी एफिस लाभ करता है)

39. Chelone, Q—पेट मे किसी प्रकार के भी कीडो को नष्ट करता है। टिंचर की ५ बूद पानी मे दो-तीन बार दें।

40 China, 30, 200—रात के पसीने, खून या वीर्य जाने से कमजोरी, किसी भी रोग का १, २, ७ या १५ दिन बाद बढना, समूचा पेट फूल उठना—सारे पेट मे वायु भर जाना, जीवित कृमियो की उल्टी के स्वप्न, पथरी बनने की प्रवृत्ति को रोकता है—३० शक्ति की एक मात्रा महीना भर दें।

41 Cicuta, 200—सिर, गर्दन रीढ का पीछे को मुड जाना (धनुष्टकार), हिचकी, कप या खीचन (Convulsions)

42 Cina, 3, 200—पेट मे केंचुए की तरह के कीडे (सूत की तरह के कीडों मे ट्युक्रियम), नर्वस बच्चो को ३० या २०० शक्ति की मात्रा दो।

43 Clematis, 30, 200—सुजाक, पेट की नली मे असह्य दर्द, बूद-बूद पेशाब होना, अण्डकोष का पत्थर की तरह कडा होना।

44. Cocculus, 30—गाडी आदि की यात्रा की गति से मतली या जी कच्चा-कच्चा होना, नीद की कमी से रोग—चक्कर आदि।

45 Coffea crude, 200—शुभ-समाचार से अनिद्रा, दातों-कमर-प्रसव आदि का दर्द (मुह मे ठडा पानी रखने से दांत के दर्द मे कमी हो जाती हो तो कॉफिया लाभप्रद है)

46 Colchicum, 30—किसी भी रोग मे रोगी रसोईघर की गध बर्दाश्त नहीं कर सकता, अफारा—मनुष्य या पशु के पेट में गैस इतनी भर जाती है कि मानो फूट पडेगा—इस मे 3x उपयोगी है, 200 भी।

47 Colocynth, 6, 30, 200—पेट-दर्द मे सामने की ओर झुकने या पेट दबाने से आराम होना (डायोस्कोरिया मे उल्टा है, उस मे पीछे की ओर मुडने से आराम होता है)

48. Conium, 30, 200—बुढापे के रोग, टागो से पक्षाघात शुरु होकर ऊपर को जाना, सिर इधर-उधर घुमाते ही चक्कर आना, आख बन्द करते ही पसीना आना किसी भी रोग मे क्यो न हो, यकायक विधुर या विधवा होने पर सेक्स-सबधो के छूट जाने पर होने वाले

स्नायविक रोग उन्हें जिन्हें सेक्स की आदत हो, नपुंसकता ।

49 Croton tig, 30—पानी की तरह पतला दस्त जो गोली के-से वेग के समान एकदम सारा निकल आता है; भोजन के बाद दौड कर दस्त के लिये भागना, अण्डकोशो की थैली मे वेहद खुजली ।

50. Cuprum met, 30—अकडन जो हाथ-पैर की अगुलियो से चलकर सारे शरीर मे फैल जाय, अकडन मे अगुलिया अन्दर की ओर मुडती हैं (सिकेल कोर मे अंगुलिया बाहर की ओर फैलती हैं); हैजे की प्रतिरोधक है, किसी दबे हुए त्वचा के रोग मे जिस के दब जाने से नया रोग उत्पन्न हो गया हो यह त्वचा-रोग को बाहर ले आता है।

51 Dioscorea, 3—नाभि से दर्द उठकर सारे शरीर मे फैल जाता है; पेट-दर्द सामने की ओर झुकने से बढता, पीछे की ओर होने से घटता है (कौलोसिन्थ से उल्टा), किसी भी दर्द मे यह लक्षण हो तो यह दवा दो।

52 Drosera, 12, 30, 200—हूप खासी की दवा है, मात्रा दोहरानी नही चाहिये, व्याख्याताओ का स्वर-भग, दमा; टी बी ।

53 Dulcamara, 30—तर हवा से, भीजने से दर्द, जुकाम, दमा, दस्त, लकवा आदि कोई भी रोग होना ।

54 Eupatorium perf, Q, 3, 30—मलेरिया, फ्लु, डेंगू आदि ज्वर मे हड्डियो मे दर्द मानो वे चूर-चूर हो गई हो।

55 Euphrasia, Q, 6, 30—आख के रोग में दो-चार बूद टिंचर १ औंस डिस्टिल्ड वाटर (आख धोने के लिये), जुकाम मे आँख से जलनेवाले आसू पर नाक से न जलनेवाला पानी (एलियम सीपा से उल्टा), मूल अर्क का बाहरी प्रयोग (कजक्टिवाइटिस आदि आखो के रोग मे १ भाग टिंचर ८ भाग डिस्टिल्ड वाटर)।

56 Fagopyrum, 12x—आखो मे भयकर खुजली, पढने से सिर दर्द, हाई ब्लड प्रेशर 12 x दो।

57. Ferrum phos, 12—रुधिर मे रक्त-कण कम हो तो 3x देना चाहिये, रोगी कमज़ोर पर चेहरे पर झूठी लालिमा, ज्वर की प्रथम अवस्था जिस मे एकोनाइट की-सी तेज़ी न हो।

58 Fluoric acid, 6, 30—भगदर, आखो का या दातो का नासूर, बाल झडना, वेरीकोज वेन्ज ।

59 Gelsemium, 3, 30, 200—सिर की गुद्दी मे दर्द, ज्वर मे निदासा पडे रहना, निद्रालुता, चक्कर, कपन, लकवा, थकावट या नर्वस होने से नींद न आना, भय या बुरे समाचार से दस्त लगना। ३ शक्ति का

अधिक प्रयोग होता है। जिन रोगो के साथ दिमागी रोग मिले रहे उनमे उपयोगी है। १०-११ बजे रोग बढकर शाम तक ढलना।

60. Glonoine, 30—लू लगना, सिर-दर्द सूर्योदय के साथ बढ़ता, सूर्यास्त के साथ घटता है (नेट्रम म्यूर मे भी ऐसा है), हाई ब्लड प्रैशर (ऑरम, फैगोपाइरम और ऑरम म्युरियेटिकम नेट्रोनेटम मे भी यह है)

61 Graphites, 30, 200, 1M, 10M—एग्जीमा में शहद के समान चिपचिपा निकलना, (पेट्रोलियम मे पनीला स्राव); कान के पीछे गीली फुन्सिया, मुह पर लाल-लाल धब्बे (Red bloches)

62 Hamamelis 6—नाक, फेफडे, पेट, मूत्राशय, जरायु, मल-द्वार आदि से जमा हुआ और काला (Veinous) खून निकलना, बवासीर मे नीले मस्से।

63 Hepar sulph. 6, 200, 1M—फोड मे पीप हो तो निम्न-शक्ति उसे पका कर फोड देती है, पीप पडने से पहले उच्च-शक्ति दी जाय तो पीप को सुखा देती है, अगर बच्चे से खट्टी बू आती हो तो कान बहने मे दो, गर्म मौसम मे भी ठड अनुभव होना मानो जिस्म पर ठडी हवा लग रही है, कपडे से लिपटे हुए भी ठड अनुभव होना।

64. Hydrastis Q, 30—गला, पेट, जरायु, मूत्र-नली—कही से भी गाढा, पीला, लेसदार, सूत की तरह स्राव, गले मे रेशा गिरना, पेट का अल्सर या कैंसर, श्वेत-प्रदर, सुजाक (उक्त सब रोगो मे गाढा लेसदार स्राव इसका विशेष लक्षण है)। कैलि बाईक्रोम मे भी—जिस मे सूतदारपना बहुत अधिक होता है—ये लक्षण हैं।

65 Hyoscyamus, 30, 200—सन्देहशीलता, पागलपन, प्रसूता का उन्माद, टेटुए के बढने से लेटने से खासी बढना तथा उठ बैठने से दब जाना।

66 Hypericum, Q, 3, 1M—स्नायुओ की चोट जिस मे अगुली, नख आदि मे काटा, आलपिन आदि गड जाय।

67 Ignatia, 30, 200, 1M—चित्त-वृत्ति की दवा (हिस्टीरिया), शोक, भय, क्रोध से उत्पन्न रोग, अनिद्रा, काच निकलना; गले मे गोला उठना, परस्पर-विरोधी लक्षण—जैसे दर्द वाली करवट लेटने से दर्द घटना, भोजन करने पर पेट खाली लगना, खासने पर खासी बढना; घूमने पर बवासीर का कष्ट घटना, ज्वर मे शीतावस्था मे प्यास, गाने-बजाने से कर्णनाद घट जाना आदि। २०० शक्ति लाभप्रद है।

68 Iodum, 1M—राक्षसी-भूख के साथ शरीर दुबला होते जाना, प्रदर इतना तेज कि जहा स्राव लगे वहा जख्म हो जाय, ठड से बार-बार जुकाम होने की शिकायत।

69 Ipecac, 3, 30, 200—लगातार मितली और कय, टॉइफॉयड के बाद थोडा-थोडा बुखार बने रहना, दमा जो हर साल एक ही समय उभरे, जरायु से रुधिर रिसते रहने के साथ समय-समय पर उस में से खून की 'फुहार' (Gush) छूटे और मितली हो।

70 Kali bichrome, 30, 200, 1M—लेसदार, सूत की तरह लटकने और चिपटने वाला श्लेष्मा।

71 Kali carb, 200—आख की ऊपर की पलक सूज जाना (**एपिस** से उल्टा); प्रसव के समय का अत्यन्त तेज दर्द, सूई वेधने या कतरने की तरह का दर्द। गठिये, टी० वी० या ब्राइट्स डिज़ीज़ मे देते हुए सावधानी वरतनी चाहिये। कई वार नही देना चाहिये। कोई भी शिकायत सवेरे ३ वजे वढ जाती है। कूल्हे से घुटने तक जाने वाला शियाटिका का दर्द या किसी भी रोग मे ऐसा दर्द।

72 Kali hydriodide, 30, 200—न्यूमोनिया के वाद वच रहनेवाली, तग करने वाली सूकी या तर खासी।

73 Kali mur, 12—श्वेत प्रदर, जुकाम, मध्य-कर्ण की शोथ, कान मे कडक का-सा शब्द होना, कर्णनाद, कर्णनाद मे **थियोसिनेमाइन** २x.

74 Kali phos 30, 200, 1M—स्नायु-रोग, कमज़ोरी, चक्कर आना।

75 Kali sulph 12—फोडे, जुकाम, कान का पकना, प्रदर आदि मे पीला स्राव—स्राव का पीलापन इसका मुख्य लक्षण है।

76 Kalmia, 6—वात-रोग (रुमेटिज्म), वात-रोग का ऊपर से नीचे को जाना (**लीडम** से उल्टा)

77 Kreosote, 30, 200—वच्चो के काले, भुरभुरे दात; दातो मे कीडे लगना, मसूडो से खून आना।

78 Lachesis, 8, 30, 200, 1M—स्त्रियो के मासिक बन्द होने के समय के रोग; वाचालता, गले पर स्पर्श—जैसे वटन लगाने, टाई वाघने आदि से सास रुकने लगना, कमर मे भी कुछ वाघ न सकना, नीद से जागने पर सव तकलीफो का बढ जाना, वाईं तरफ से तकलीफ का दाईं तरफ जाना, जैसे टासिल आदि वाईं तरफ से शुरु हो दाईं को जाय (**लाइको** से उल्टा), कडी वस्तु निगल सकना परन्तु तरल के निगलने मे कष्ट होना, मुर्दे जैसा नीला पड जाना।

79. Ledum, 30, 200—गठिये मे ठड से आराम (यह विलक्षण-लक्षण है), वात-रोग का पैर से शुरु होकर ऊपर को जाना (**कैलमिया** से उल्टा), पैर फर्श पर रख कर न चल सकना।

80 Lycopodium, 30, 200 1M—पेट फूलना, पेट की गडगडाहट, नाभि

से नीचे वायु, रोग का दायें से बायें को जाना (लैकेसिस से उल्टा), टांसिल का दायीं तरफ होना या पहले दायी तरफ होकर बायी को जाना; दाहिनी ओर का हर्निया, नपुसकता, बुखार आदि किसी रोग का ४ से ८ सायकाल बढना, बच्चा दिनभर रोता रातभर सोता है (जैलेपा और सोरिनम से उल्टा), पसीना बिल्कुल न आना।

81 Magnesia carb 30—बच्चो के हरे, काई-जैसे, लेई के-से दस्त, खट्टी बू आना, मासिक सिर्फ सोने या लेटने पर होता है, चलने-फिरने से बन्द हो जाता (लिलियम टिग्रिनम से उल्टा) है।

82 Magnesia phos 6, 30, 200, 1M—दर्द का एकदम आना और एकदम चले जाना (बैलेडोना मे भी ऐसा है), यह दर्द की दवाओ का राजा कहा जाता है। गर्म पानी मे ६X देने से अच्छा काम करता है।

83 Medorrhinum, 200, 1M—सूर्योदय से सूर्यास्त तक रोग रहना (सिफिलीनम से उल्टा), दबे हुए गोनोरिया की वजह से कोई रोग।

84 Merc cor, 30, 200—डिसेन्ट्री मे खून ज्यादा आव कम, डिसेन्ट्री मे पाखाना होने पर भी ऐंठन—Tenesmus—Cannot finish—के कारण टट्टी करते बैठे रहना। (नक्स मे जरा-सी टट्टी से आराम लगना।

85 Merc sol, 6, 30, 200, 1M—सफेद डायरिया, डिसेन्ट्री मे आव ज्यादा खून कम, पाखाने मे बस न होना—'Never get gone feeling', रात को हड्डियो मे दर्द, जीभ तर परन्तु प्यास अधिक, स्टैफिसैग्रिया की तरह दात की जड ठीक परन्तु अगला भाग खुरता जाता है (थूजा और मैजेरियम से उल्टा)।

86 Mezereum, 6, 30, 200—थूजा की तरह दात ठीक परन्तु जड गल जाती है (मर्क सौल से उल्टा), पैर की लम्बी हड्डियो मे दर्द।

87 Moschus 1, 3—हिस्टीरिया।

88 Muriatic acid, 3, 200—गर्भावस्था की बवासीर, रोगी पेशाब तभी कर सकता है अगर टट्टी भी साथ ही करे।

89 Natrum carb, 6—दूध हज्म नही होता, उस से पतले दस्त आने लगते हैं, चलने पर पैर ठंडे हो जाते हैं, चलने से घुटने की खोल मे दर्द होता है, निपट वन्ध्यापन को दूर करता है।

90 Natrum Mur 30, 200, 1M—स्कूली बच्चो का सिर-दर्द, दिन के ९-१०-११ बजे बुखार आना, क्रोध, भय आदि से रोग, शोक से नीद न आना, किसी विचार को छोड न सकना, खाने-पीने पर भी खासकर गला दुबला होना, छीकों से जुकाम की शुरुआत मे 30 शक्ति दो, रोगी की नमक के लिये ज्यादा इच्छा, बुखार को दू

करने वाली औषधियो की इसे राजा कहा जाता है। अनीमिया, कुनीन अधिक लेने के बाद होने वाले रोग, डॉ० बर्नेट का कहना है कि इसके ६X से उन्होने गठिये के अनेक रोगी ठीक किये हैं, प्रति २-३ घटे के बाद दो, पेशाब गाढा हो जायगा, गठिया ठीक हो जायगा। रोगी दूसरो के सामने पेशाब नही कर सकता—यह इसका विलक्षण लक्षण है; **सीपिया** की तरह सहानुभूति पसन्द न करना।

91 Natrum phos , 3, 30—एसिडिटी, खट्टे डकार, खट्टे डकारो के साथ पेट मे वायु, पीलिया, पीली जीभ आखो मे पीली गीघ। पीलिया मे १X लाभप्रद है।

92 Natrum sulph 30—पेट मे हर समय हवा भरी रहना और रात को डायरिया की सख्त शिकायत होना।

93. Nitric acid, 6—फास की चुभन का-सा दर्द—गले मे, गुदा मे—जैसे फट गये हो ऐसा महसूस करना।

94. Nux Vomica, 1, 30, 200, 1M—पतले-दुबलो, शारीरिक-श्रम न करने वालो, मिर्च-मसाले आदि खाने वालो के बदहज़मी आदि रोग, बार-बार पाखाने जाना—'Fruitless frequent urging', रात को नाक बन्द होना, कमर-दर्द मे बिस्तर से उठकर बैठने पर ही कमर बदली जा सकती है, ३ बजे के बाद न सो सकना।

95 Opium, 30, 200—सख्त कब्ज़ या गोल, कठोर, काला, गेंद-सा मल, प्रसव के बाद पेशाब रुक जाना।

96 Petroleum, 30, 200, 1M—प्रत्येक सर्दी मे हाथ-पैर-मुह फट जाते हैं, उन से खून निकलता है, दस्त केवल दिन को आता है, रात को नही, एग्ज़ीमा आदि के ठीक होने के बाद त्वचा के बदरगपने को हटा देता है। एग्ज़ीमा मे पनीला स्राव, चिपचिपे स्राव मे **ग्रैफाइटिस**।

97 Phosphoric acid, 18, 30—स्वप्न-दोष मे १८ शक्ति; शोक, भग्न-प्रेम, मानसिक आघात से रोग; भारी दस्त परन्तु कमज़ोरी नही।

98. Phosphorus, 30, 200—ऑपरेशन से पहले या बाद इस के दो-चार २०० शक्ति के डोज़ देने से बाद के कष्ट नही होते, मेरु-दड तथा पीठ की जलन, बुढापे मे चक्कर और अनिद्रा, पानी की तरह पतला, पिचकारीनुमा दस्त का वेग से निकलना, बच्चा जनने के बाद सब-कुछ ठीक होने पर भी ज्यादा रक्त-स्राव होना जो जमे नही। टी०बी० मे बहुत नीचे की शक्ति न दें, न लगातार दें—रोगी के मर जाने का डर रहता है, बहुत ऊची शक्ति भी न दे। इस के मानसिक लक्षण मुख्य हैं, रोगी निराश होना है।

99 Phytolacca, 3—ग्रन्थि-शोथ (टासिल, स्तन आदि सूज जाना)

100 Picric acid, 6, 30, 200—दिमागी थकावट, मेरु-दड की जलन, विद्यार्थियो का परीक्षा मे फेल होने का डर (इग्नेशिया मे भी यह है)

101. Plumbum, 30—सख्त कब्ज, कम्पोज़ीटरो का पेट-दर्द, उनकी कब्ज तथा उनका लकवा, आतो का एक-दूसरे मे घुस जाना।

102 Podophyllum, 3, 30, 200—पानी की तरह हरे, बदबूदार, बहुत भारी दस्त का प्रात ७ से १० बजे तक आना, फिर दोपहर बाद स्वाभाविक टट्टी आना, और अगले दिन फिर वैसे ही दस्त आना । बच्चो के हैज़े जैसे दस्तो मे २०० या १००० शक्ति से लाभ होता है।

103 Psorinum, 200, 1M—त्वचा के खुजली आदि रोग (एक्यूट मे सल्फर, क्रौनिक मे सोरिनम), पतली टट्टी भी कठिनाई से आती है, जैलापा की तरह बच्चा दिनभर खेलता रातभर सोता है (लाइको से उल्टा), मैथुन की शक्ति होने पर भी उस मे आनन्द न आना । लगभग ९ दिन बाद इसका असर दीखने लगता है।

104 Pulsatilla, 3, 30, 200, 1M—तेल तथा घी की गरिष्ठ वस्तुओ से बदहज़मी (नक्स इन्हें पचा लेता है), मासिक मे देरी या कष्ट, दर्द के समय ठड की सिहरन तथा दर्द का स्थान बदलते रहना, प्यास न लगना, ठड से दात दर्द हट जाना, जुकाम, खासी, प्रदर मे गाढा, पीला स्राव, सहानुभूति का भूखा होना, (नैट्रम म्यूर तथा सीपिया से उल्टा), शरीर के केवल एक हिस्से में पसीना आना।

105 Rheum, 3, 6,—बच्चो की दवा, सिर, नाक, मुह से लगातार पसीना, पसीने मे खट्टी बू आना—इन लक्षणो मे दस्त आने पर या दूध न पचा सकने पर उपयोगी है, ऐसा डायरिया जो हरकत न होने पर न आये, हरकत होने पर आये।

106 Rhus tox, 6, 30, 200, 1M—ऑपरेशन के बाद की बेचैनी, जोडो मे दर्द जब चलने-फिरने से आराम मिले, बैठी हालत से उठने पर जब शुरु मे दर्द हो पर हरकत के बाद बन्द हो जाय, तर हवा या सीलन से कोई भी रोग होना, मासपेशियो में दर्द, मिचकोड, टॉइफ़ॉयड मे जब दस्तो से रोग की शुरुआत हो (टाइफॉयड की कब्ज से शुरुआत हो तो ब्रायोनिया), जीभ के प्रारभ मे तिकोना।

107 Ruta, 30, 200, 1M—हड्डी के आवरण पर चोट, पढने-लिखने, घडीसाज़ी, सीने आदि के बारीक काम से आखो पर ज़ोर पडना, काच निकलना, शियाटिका का दर्द।

108 Sabadilla, 30—देर तक रहने वाला जुकाम; हर समय खखार की आवाज़ करते रहना, (वौथिया—Wyethia की ६ शक्ति से हर समय खखारने वाले—फॅरिंजाइटिस—मे लाभ होता है).

109 Sabina, 3, 30—तीसरे महीने गर्भपात होने की प्रवृत्ति को रोकता है। जिन्हें गर्भपात हो जाया करता है उन्हें— सिमिसिफ्यूगा'—एक्टिया रेसिमोसा—की ३० शक्ति की गर्भपात की आशका के दिनो से १५-२० दिन पहले से प्रतिदिन ३ मात्राए देनी चाहियें। मस्सो पर इस का टिंचर लगाओ।

110 Sanguinaria, 6, 200—सिर की गुद्दी से उठकर हर सातवे दिन दाईं आख पर आ ठहरने वाला सिर-दर्द, लगातार वहने वाला रुधिर—अग्रेजी मे Sanguine का अर्थ ही 'full of blood' है। यह औषधि जोक से बनी है जिसके काटने से रुधिर वहने लगता है।

111 Sarsaparilla, 6—मूत्र मे पथरी के सफेद कण, पेशाव के अन्त मे अत्यन्त पीडा; लाल कण हो तो लाइको उपयोगी है, त्वचा पर गर्मी के छोटे-छोटे दाने (मगेरी)

112 Secale cor (Ergot), 30—तीसरे महीने गर्भपात (सैवाइना की तरह), ऐंठन जिसमे अगुलिया पीछे को मुडती हैं (क्यूप्रम से उल्टा), रोगी के अग छूने से ठडे महसूस होते हैं परन्तु रोगी उनका ढकना वर्दाश्त नही कर सकता, जरायु से रक्त-स्राव।

113 Selenium, 200—केश झडना, प्रोस्टेट की सूजन (प्रोस्टेट मे सवल सेरुलेटा के टिंचर के १० से ३० बूद तक देना चाहियें, ३री शक्ति भी अच्छा काम करती है), पुरुष के जननागो की कमज़ोरी।

114 Sepia, 1x twice a day or 30, 200, 1M—सहानुभूति न सह सकना (पल्स से उल्टा), कपडे धोने आदि से देर तक पानी मे खडे रहने से रोग (धोवियो की दवा), स्त्री का पति-पुत्र से प्रेम न रहना, गर्भपात की प्रवृत्ति, रजो-निवृत्ति के समय गर्मी की झलें, जननागो से जरायु निकल पडेगा—यह सोच कर स्त्री का टाग से टाग दवाकर वैठना, वच्चे का पहली नीद मे पेशाव कर देना।

115 Silicea, 6, 12, 30, 200, 1M—फोडे से मवाद निकलने के वाद उसे भरने के लिये, नासूर, भगदर मे C M की एक मात्रा, व्यापारियो, वकीलो, विद्यार्थियो के मस्तिष्क की थकावट मे, वडे पेट वाला वच्चा जिसकी सिर की हड्डी नही जुडती, सिर तथा चेहरे पर पसीना परन्तु शेष शरीर पर नही, सोने पर सिर-माथे से पसीना (थूजा मे शरीर से), शवो या मृत-व्यक्तियो के सपने आना।

116 Spigelia, 30, 200, 1M—गुद्दी से दर्द का उठ कर बाईं आंख पर रुक जाना (संग्विनेरिया से उल्टा), हृदय का दर्द (ऐसा लगना कि हिलने-डुलने से दिल बन्द हो जायगा)

117 Spongia, 30, 200, 1M—क्रुप खांसी में एकोनाइट २००, स्पंजिया २००, हिपर २०० एक-दूसरे के बाद दो, परन्तु अगर एकोनाइट से ही ठीक हो जाय तो आगे न बढ़ो।

118 Stannum 30—टी० बी० की खांसी, मीठा कफ, छाती में खाली-खाली अनुभव होना।

119. Staphysagria 30, 200—मर्क सौल की तरह दांतों के अगले भाग का मुर जाना, ऊपरी पलक पर बार-बार गुहोरी या मस्से होना।

120 Stramonium, 3, 6, 30—बच्चों में तुतलाना (कैनेबिस सैटाइवा), पागलपन में हंसना, गाना, मुंह चिड़ाना, प्रार्थना करने लगना।

121 Sulphur 30, 200, 1M, 10M—जलन, हाथ-पैरों की जलन, मुख तथा सिर की तरफ रजोरोध की-सी झलें, प्रातःकाल का डायरिया, ११ बजे दोपहर असह्य भूख, जी डूबता-सा होता, कुत्ते की नींद सोना, सवेरे ३ बजे के बाद न सो सकना, खुजली, चुनी हुई दवा से लाभ न होना, देरतक एक जगह खड़े न रह सकना, त्वचा के किसी दबे हुए रोग को जिस से दमा आदि कोई रोग हो गया हो फिर से त्वचा पर बाहर लाना।

122. Symphytum, 200—हड्डी पर चोट, हड्डी टूटने को जोड़ देती है, आंख पर चोट।

123 Syphilinum, 1M—रात को रोग बढ़ना (मैडोरिनम से उल्टा), अत्यधिक प्रदर-स्राव।

124 Tellurium, 6, 30—कान से बदबूदार और ज़ख्म करने वाला पीप बहना, दाद।

125 Terebinthina, 6—किडनी (मूत्र-ग्रन्थि) की बीमारी, पेशाब में खून आना, पेशाब रुकना।

126 Teucrium marum, 6—पुराना ज़ुकाम जो कभी बहे, कभी न बहे; पेट में सूत के-से कीड़े, चिलूड़े।

127 Thiosinamine 2x—कान में आवाज़ें (चेनोपोडियम), आंख में जाला, डॉ० हार्ड के अनुसार बुढ़ापे को रोकता है।

128 Thlaspi, Q, 6—जरायु संबंधी के दबे हुए रोग।

129. Thuja, Q, 30, 200, 1M—मुख, आंख, हाथ, गुदा, जननांग आदि पर फूल-गोभी की तरह के मस्से (बाहर मूल अर्क लगाओ, खाने को

२०० शक्ति दो), माथे के अलावा सारे शरीर पर पसीना आना (साइलीशिया से उल्टा), दातो की जड का क्षय या दात-दर्द, नाखून टूटते या टेढे-मेढे होना, सवेरे के दस्त, सुजाक, ट्यूमर।

130. Trillium—जरायु मे पिड (Uterine fibroids) के कारण रक्त-स्राव
131 Thyrodinum, 6, 30—लो ब्लड प्रेशर (कैम्फोरा भी लाभप्रद है)
132. Tuberculinum, 1M—देखो बैसिलीनम।
133 Urtica urens, 3x—माता के दूध कम होना, गठिये मे टिंचर दो।
134 Ustilago, 3—हस्त-मैथुन की बीमारी मे लाभप्रद है।
135 Vaccininum or Variolin or Malandrinum, 200—टीके के दुष्परिणाम, स्नायु-शूल, फुन्सिया जो ठीक होने मे न आयें, अजीर्ण, पेट फूलना आदि।
136 Veratrum album, 30—हैजे मे शरीर का ठडा पड जाना, माथे पर ठडा पसीना आना, उल्टी, ऐठन।
137 Viburnum opulus, 6—स्त्रियो की औषधि, गर्भपात को रोकती है, मासिक देर मे, थोडा और कुछ ही घटे रहता है।
138 Viscum album, Q, 3, 6—शियाटिका।
139 X-ray, 12, 30—डिम्बाशय, अण्डकोश आदि ग्रन्थियो का कैंसर।
140. Zincum met, 6, 30—दिमागी थकावट।

नोट—हमने इस प्रकरण मे मुख्य-मुख्य होम्योपैथिक औषधियो के मुख्य-मुख्य लक्षण दिये हैं जिनको पढने के बाद विद्यार्थी के मस्तिष्क मे प्रत्येक औषधि की एक सक्षिप्त-सी रूप-रेखा बन जायगी। इस रूप-रेखा को आधार बना कर विद्यार्थी प्रत्येक औषधि के विषय मे विस्तृत जानकारी लेने का प्रयत्न करेगा तो उसके मन मे औषधि का चित्र बनने लगेगा, और धीरे-धीरे वह प्रत्येक औषधि की अन्तरात्मा तक पहुच सकेगा। जो-कुछ हमने इस प्रकरण मे दिया है वह औषधि की झलक मात्र लेने के लिये दिया है।

मुख्य-मुख्य औषधियों का पारस्परिक-संबंध तथा प्रभाव-काल

(DRUG-RELATIONSHIP AND DURATION-TIME)

नीचे जो औषधिया दी जा रही हैं उनमे 'अनुकूल' (Compatible) का अर्थ यह है कि वे दवाए एक-दूसरे के अनुकूल पडती हैं, एक-दूसरे के वाद ठीक से चल सकती हैं, 'पूरक' (Complementary) का अर्थ यह है कि जिस दवा को वह 'पूरक' लिखी गई है उस मुख्य-दवा की रोग को दूर करने मे यदि कमी रह जाय, तो उसे पूरा कर देती है, 'विरोधी' (Inimical) का अर्थ यह है कि वह उस दवा के साथ नहीं दी जा सकती, इसके वाद ये (Is followed well by) का अर्थ यह है कि जो दवाए इस शीर्षक में लिखी गई हैं वे अगर देने की जरूरत पडे तो मुख्य-दवा के वाद अच्छा काम करती हैं, 'इनके वाद यह' (Follows well) का यह अर्थ है कि इस शीर्षक मे जो दवाए लिखी गई हैं उनके वाद यह दवा जरूरत पडने पर अच्छा काम करती है। मुख्य-दवाओ के साथ ब्रैकेट मे जो समय दिया गया है उसका अर्थ यह है कि वह दवा उतने समय तक अपना प्रभाव रख सकती है। इस से पता चलता है कि दवा अल्पकालीन है या दीर्घकालीन है। समय का यह मतलब नही है कि दवा उतने समय से पहले नही दी जा सकती। 'तरुण' (Acute) रोगो मे दवा दोहराई जाती है, 'जीर्ण' (Chronic) रोगो मे देर तक इन्तिज़ार किया जाता है। दवा देते हुए उनका आपसी-सवध तथा प्रभाव-काल देखना जरूरी है। दवाओ के नाम का सकेतमात्र, और आपसी-सवध की जरूरी बात ही दी है।

१ एब्रोटेनम—

अनुकूल—(Compatible) फोडे मे हिपर के वाद, प्लुरिसी मे एकोनाइट और ब्रायोनिया के वाद।

२. एसेटिक ऐसिड (१४ से ४० दिन तक)—

अनुकूल (Compatible) रक्तस्राव मे चायना के वाद।

विरोधी (Inimical) आर्निका, बेलाडोना, कॉस्टिकम, लैके, मर्क, नक्स वोमिका, रैननक्युलस, सार्सापैरिला।

३ एकोनाइट (१ घंटे से कई सप्ताह तक)—

पूरक (Complementary) ज्वर, निद्रानाश, असह्य-दर्द मे कॉफिया, मासपेशियो तथा आख पर चोट मे आर्निका, सव प्रकार के रोगो मे सल्फर की पूरक है।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्निका, आर्स, बेला, ब्रायो, कैक्टस, कौवयुलस, हिपर, इपिकाक, कैलि ब्रोम, मर्क, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, स्पंजिया, सल्फर।

इनके बाद यह (Follows well) आर्निका, कॉफिया, सल्फर। चेचक आदि जिन रोगो मे दाने निकलते हो उनमें एकोनाइट से लाभ नही होता। रोग की नवीन अवस्था मे एकोनाइट और पुरानी अवस्था मे सल्फर उपयोगी है।

४. एस्क्यूलस—

अनुकूल (Compatible) कोलिनसोनिया, नक्स वोमिका, सल्फर। बवासीर मे कोलिनसोनिया से लाभ न होने पर इस से पूर्ण लाभ हो जाता है। बवासीर मे सल्फ़र और नक्स से कुछ फायदा हो जाय, तो इस से पूरा फायदा हो जाता है।

५. इथूजा (२० से ३० दिन तक)—

पूरक (Complementary) कैलकेरिया कार्ब।

६. एगनस कैस्टस (८ से १४ दिन)—

अनुकूल (Compatible) आर्स, ब्रायो, इग्ने, लाइको, पल्स, सल्फर।

इसके बाद ये (Is followed well by) लिंगेन्द्रिय की दुर्बलता या नपुसकता मे कैलेडियम और सेलेनियम अच्छा काम करते हैं।

७. एलियम सीपा (१ दिन)—

अनुकूल (Compatible) मासार्बुद (Polypus) मे कैलकेरिया-कार्ब या साइलीशिया से पहले।

पूरक (Complementary) फॉस, पल्स, सार्सपैरिला, थूजा।

विरोधी (Inimical) एलो, एलियम सैटाइवा।

८. ऐलो (३० से ४० दिन)—

विरोधी (Inimical) एलियम सीपा, एलियम सैटाइवा।

९. एलूमिना (४० से ६० दिन)—

पूरक (Complementary) ब्रायोनिया, फैरम मेट।

इनके बाद यह (Follows well) : अर्जेन्टम मेट, ब्रायो, लैके, सलफर। नई कब्ज़ मे ब्रायो, पुरानी मे एलूमिना। पेंटरो के पेट-दर्द मे यह प्रधान दवा है।

१० एम्ब्रा ग्रीसिया (४० दिन)—

इसके बाद ये (Is followed well by) लाइको, पल्स, सीपिया, सल्फ।

११ ऐमोनिया कार्ब (४० दिन)—

विरोधी (Inimical) लैकेसिस।

इसके बाद ये (Is followed well by) बेलाडोना, कैल्केरिया कार्ब, लाइको, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फ़र ।

१२. ऐमोनिया म्यूर (२० से ३० दिन)—

इसके बाद ये (Is followed well by) ऐन्टिम क्रूड, कॉफ़िया मर्क, नक्स वोमिका, फ़ॉस, पल्स, रस टॉक्स ।

१३. ऐनाकार्डियम (३० से ४० दिन)—

लाइको, प्लैटिना, पल्स के पहले और बाद अच्छा काम करता है।

१४ ऐन्टिम क्रूड—

पूरक (Complementary) स्क्विला।

इसके बाद ये (Is followed well by) कैल्के कार्ब, लैकेसिस, मर्क, पल्स, सीपिया, सल्फर ।

इनके बाद यह (Follows well) इपिकाक, पल्स ।

१५. ऐन्टिम टार्ट (२० से ३० दिन)—

अनुकूल (Compatible) न्यूमोनिया, लैरिंग्स की सूजन आदि मे फ़ॉस।

इसके बाद ये (Is followed well by) बैराइटा कार्ब, कैम्फ़र, इपिकाक, पल्स, सीपिया, सल्फ़र, टैरिविन्थिना ।

इनके बाद यह (Follows well) पल्स, साइली, टैरिबिन, वेरियोली ।

१६ एपिस—

पूरक (Complementary) नैट्रम म्यूर एपिस का क्रौनिक है।

विरोधी (Inimical) दानो मे रस टॉक्स से पहले या पीछे ।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्स, ग्रैफाइट, आयोडाइड।

इनके बाद यह (Follows well) ब्रायोनिया मे जब मस्तिष्क-रोग में रोगी चीखे, हैलेबोरस जब मूर्च्छा आ जाय ।

१७. अर्जेन्टम मेटैलिकम (३० दिन)—

इसके बाद ये (Is followed well by) कैल्के कार्ब, पल्स, सीपिया।

इनके बाद यह (Follows well) एलूमीना, प्लैटिना ।

१८ अर्जेन्टम नाइट्रिकम (३० दिन)—

विरोधी (Inimical) कॉफिया ।

इसके बाद ये (Is followed well by) कैल्के का, कैलि कार्ब, लाइको, मर्क, पल्स, सीपिया, साइलीशिया ।

इनके बाद यह (Follows well) ब्रायोनिया, कॉस्टिकम, स्पाइजेलिया, स्पजिया, विरेट्रम ।

१९ आर्निका (६ से १० दिन)—

पूरक (Complementary) एकोनाइट, इपिकाक, वेरेट्रम एल्बम ।

विरोधी (Inimical) शराब। पागल जानवर के काटने पर आर्निका देने से नुकसान होता है।

इसके बाद ये (Is followed well by). एकोन, आर्स, बेला, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के कार्ब, कैमोमिला, चायना, कोनायम, हिपर, इपिक, नक्स वोमिका, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सल्फ-ऐसिड।

२०. आर्सेनिक ऐल्बम (६० से ९० दिन)—

पूरक (Complementary) ऐलियम सैटाइवा, कार्बो वेज, नैट्रम सल्फ, फॉस, थूजा।

इसके बाद ये (Is followed well by) एपिस, बेला, कैक्टस, कैमो, चैलिडो, चायना, साइक्यूटा, फैरम, फ्लोरिक ऐसिड, हिपर, आयोडियम, इपिक, कैलि बाई, लाइको, मर्क, नक्स वो, रस टॉक्स (त्वचा के रोगो मे), सल्फर, वेरेट्रम ऐल्बम।

२१. आर्सेनिक आयोडाइड—

पूरक (Complementary) फॉस।

इनके बाद यह (Follows well). कोनायम (छाती की घुडी मे), सल्फर (टी वी मे)

२२ ऑरम मेटैल्लिकम (५० से ६० दिन)—

ऑरम के बाद सिफिलीनम और सिफिलीनम के बाद ऑरम अच्छा काम करते हैं।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोन, बेला, कैल्के कार्ब, चायना, लाइको, मर्क, नाइट्रिक ऐसिड, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फर।

२३. बैसीलीनम—

पूरक (Complementary) कैल्के का, हाइड्रैस्टिस, लैके, कैलि कार्ब।

२४ बैप्टीशिया—टाइफॉयड के रक्त-स्राव मे इसके बाद क्रोटेलस, हैमेमेलिस, नाइट्रिक ऐसिड अच्छा काम करते हैं।

२५ बैराइटा कार्ब (४० दिन)—

पूरक (Complementary) डल्के, सोरिनम (बैराइटा के बाद सोरिनम की उच्च-शक्ति से टासिल की प्रवृत्ति जड से चली जाती है)।

विरोधी (Inimical) कैल्केरिया।

इसके बाद ये (Is followed well by) ऐन्टिम टार्ट, कोनायम, फॉस, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, सल्फर।

इनके बाद यह (Follows well) आर्सनिक, सल्फ़र।

२६. बेलाडोना (१ से ७ दिन)—

पूरक (Complementary) बेल कैल्केरिया कार्ब का क्रौनिक है।

विरोधी (Inimical) डल्केमारा, ऐसेटिक ऐसिड, विनिगार।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोन, आर्स, कैक्टस, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कैमो, चायना, कोनायम, हिपर, हायोसा, लैके, मर्क, मोस्कस, म्यूरियेटिक ऐसिड, नक्स वो, पल्स, रस टॉक्स, सेनेगा, सीपिया, साइलीशिया, स्ट्रैमोनियम, सल्फ, वेलेरियाना।

२७. बोरैक्स—

अनुकूल (Compatible) ब्रायो, कैल्के कार्ब, लाइको, मर्क, नक्स वो, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, सल्फर।

विरोधी (Inimical) ऐसेटिक ऐसिड, विनिगार, शराब।

२८. ब्रायोनिया (७ से २१ दिन)—

पूरक (Complementary) रस टॉक्स (ब्रायोनिया का क्रौनिक एलूमीना है)।

विरोधी (Inimical) कैल्केरिया कार्ब।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्स, बेला, कैक्टस, कार्बो वेज, ड्रौसरा, हायोसा, कैलि कार्ब, म्यूरिये ऐसिड, नक्स वोमिका, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सैबेडिला, सीपिया, साइलीशिया, सल्फर।

इनके बाद यह (Follows well) एकोनाइट, नक्स वोमिका, ओपियम, रस टॉक्स, सल्फर।

२९. कैलकेरिया कार्ब (६० दिन)—

पूरक (Complementary) बेला (बेलाडोना कैलकेरिया का एक्यूट है, कैलकेरिया कार्ब बेलाडोना का क्रौनिक है), रस टॉक्स।

विरोधी (Inimical) बेराइटा कार्ब, ब्रायो। हनीमैन का कथन है कि कैलकेरिया का प्रयोग नाइट्रिक ऐसिड तथा सल्फ से पहले न करे।

इसके बाद ये (Is followed well by) एगैरिकस, बेला, ड्रौसरा, ग्रैफा, इपिका, लाइको, नैट्रम कार्ब, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वो, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सार्सा, सीपिया, साइली, थेरीडियोन।

इनके बाद यह (Follows well) कैमो, चायना, कोनायम, क्यूप्रम, नक्स वोमिका, पल्स, सल्फर।

३०. कैलकेरिया फॉस (६० दिन)—

पूरक (Complementary) हिपर, रूटा, सल्फर, जिंकम।

इसके बाद ये (Is followed well by) रस टॉक्स, सल्फर।

इनके बाद यह (Follows well) आर्स, चायना, आयोडाइड, मर्क।

३१. कैन्थरिस (३० से ४० दिन)—

पूरक (Complementary) कैम्फर।

विरोधी (Inimical) कॉफिया।

इसके बाद यह (Is followed well by) बेला, कैलि वाईक्रोम, मर्क, फॉस, पल्स, सीपिया, सल्फर।

३२ कार्बो एनिमैलिस (६० दिन)—

पूरक (Complementary) कैल्केरिया फॉस।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्स, बेला, ब्रायो, नाइट्रिक ऐसिड, फॉस, पल्स, सीपिया, साइलीशिया, सल्फ, वेरैट्रम एल्बम।

३३ कार्बो वेज (६० दिन)—

पूरक (Complementary) चायना, ड्रौसरा, कैलि कार्ब, फॉस।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोनाइट, आर्स, लाइको, नक्स वोमिका, ऐसिड फॉस, पल्स, सीपिया, सल्फ़र।

३४ कॉलोफाइलम—

विरोधी (Inimical) कॉफ़िया।

३५. कॉस्टिकम (५० दिन)—

पूरक (Complementary) कार्बो वेज, कोलोसिन्थ, मर्क कौर।

विरोधी (Inimical) सब तरह के ऐसिड, कौक्युलस, कॉफ़िया, फॉस (फॉस से पहले या पीछे यह दवा नही दी जाती)

इसके बाद ये (Is followed well by) ऐन्टिम टार्ट, कैल्के कार्ब, कॉलि आयोडाइड, लाइको, नक्स वोमिका, पल्स, रस टॉक्स, रूटा, सीपिया, साइलीशिया, स्टैनम, सल्फर।

३६ कैमोमिला (२० से ३० दिन)—

पूरक (Complementary) बेलाडोना (बच्चो के रोगों मे कैमोमिला का प्रभाव पेट और बेलाडोना का प्रभाव मस्तक पर ज्यादा होता है), मैग कार्ब, पल्स।

विरोधी (Inimical) नक्स वोमिका, जिंकम।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोन, आर्निका, बेला, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के कार्ब, कौक्युलस, मर्क, नक्स वो, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, सल्फ़र।

३७ चायना (७ दिन)—

पूरक (Comlepmentary) फैरम मेट।

विरोधी (Inimical) डिजिटेलिस, क्रियोज़ोट, सेलेनियम।

इसके बाद ये (Is followed well by) ऐसेटिक ऐ, आर्निका, आर्स, एसाफेटिडा, बेला, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, लैके, मर्क, फॉस, ऐसिड फॉस, पल्स, सल्फर ।

३८. कौक्युलस (३० दिन) —

अनुकूल (Compatible) : कैमोमिला, इग्नेशिया, नक्स वोमिका ।

विरोधी (Inimical) · कॉस्टिकम, कॉफिया ।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्स, बेला, हिपर, इग्नेशिया, लाइको, नक्स वो, ओपियम, पल्स, रस टॉक्स, सल्फर ।

३९ कॉफिया (१ से ७ दिन)—

पूरक (Complementary) : एकोनाइट ।

विरोधी (Inimical) · अर्जेंटम नाइट्रिकम (सिर-दर्द मे), कैन्थरिस, सिस्टस, कोक्युलस, इग्नेशिया, मिलिफोलियम, स्ट्रैमोनियम ।

इसके बाद ये (Is followed well by) · एकोनाइट, ऑरम मेट, बेला-डोना, लाइको, नक्स वो, ओपियम, सल्फर ।

४० कोलचिकम (१४ से २० दिन)—

पूरक (Complementary) · मर्क ।

विरोधी (Inimical) : ऐसेटिक ऐसिड ।

इसके बाद ये (Is followed well by) · कार्बो वेज, मर्क, नक्स वोमिका, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया। जलधर (Dropsy) मे अगर एपिस या आर्स से लाभ न हो तो कोलचिकम से लाभ हो जाता है। (लाइको के बाद कोलिचिकम अच्छा काम करता है) ।

४१. कोलोसिन्थ (१ से ७ दिन)—

पूरक (Complementary) . डिसेन्ट्री मे मर्क ।

इसके बाद ये (Is followed well by) बेला, ब्रायो, कॉस्टिकम, कैमोमिला, मर्क, नक्स वो, पल्स, स्पाइजेलिया, स्टैफ़िसेग्रिया ।

४२ कोनायम (३० से ५० दिन)—

विरोधी (Inimical) सोरिनम ।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्निका, आर्स, बेला, कैल्के कार्ब, साइक्यूटा, ड्रोसरा, लाइको, नक्स वो, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, स्ट्रैमोनियम, सल्फर ।

४३. क्यूप्रम (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) · कैल्के कार्ब ।

इसके बाद ये (Is followed well by) · आर्स, बेला, कैल्के कार्ब, कॉस्टिकम, साइक्यूटा, हाइयोसाइमस, पल्स, स्ट्रैमो, विरेट्रम

एल्वम (कुकर खासी और हैज़े मे क्यूप्रम के वाद वेरेट्रम एलवम अच्छा काम करता है)

४४ डिजिटेलिस (४० से ५० दिन)—
विरोधी (Inimical) . चायना ।
इसके बाद ये (Is followed well by) वेला, ब्रायो, कैमिमो, लाइको, नक्स वो, ओपि, फॉस, पल्स, सीपिया, सल्फर, वेरेट्रम एल्वम ।

४५ ड्रोसरा—
अनुकूल (Compatible) . कैल्के का, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फ ।
पूरक (Complementary) नक्स वोमिका ।

४६. डलकेमारा (३० दिन)—
पूरक (Complementary) · वैराइटा कार्व ।
विरोधी (Inimical) : वेला, लैकेसिस ।
इसके बाद ये (Is followed well by) वेला, कैल्के कार्व, लाइको, रस टॉक्स, सीपिया ।
इनके बाद यह (Follows well) व्रायो, कल्के कार्व, लाइको, रस टॉक्स, सीपिया, वेरेट्रम एल्वम ।

४७ युपेटोरियम पर्फ--इसके बाद नेट्रम म्यूर और सीपिया अच्छा काम करते हैं ।

४८ फेरम मेट (५० दिन)—
पूरक (Complementary) · एलूमिना, चायना, हैमेमेलिस ।
विरोधी (Inimical) ऐसेटिक ऐसिड, वीयर ।
इसके बाद ये (Is followed well by) . एकोन, आर्निका, वेला, चायना, कोनायम, लाइको, मर्क, फॉस, पल्स, सल्फ, वेरेट्रम ए । सिफिलिस मे फेरम नही देना चाहिये, रोग वढ जाता है ।

४९ फ्लोरिक ऐसिड (३० दिन)—
पूरक (Complementary) साइलीशिया ।
इसके बाद ये (Is followed well by) ग्रेफाइट, नाइट्रिक ऐसिड ।
इसके बाद यह (Follows well)· आर्स (जिन—एक तरह की शराव—पीनेवालो की लिवर की बीमारी से जलघर मे तथा कूल्हे की बीमारी मे कैलि कार्व के वाद, डायविटीज़ मे ऐसिड फॉस के बाद फ्लोरिक ऐसिड अच्छा काम करता है)

५०. जेलसीमियम (३० दिन)—
अनुकूल (Compatible) : टाइफॉयड तथा इन्फ्लुएन्ज़ा मे बैप्टीशिया और एग्यू मे इपिकाक के साथ चल सकता है ।

५१. ग्रेफाइटिस (४० से ५० दिन)—

पूरक Complementary) . आर्स, कास्टिकम, फेरम, हिपर, लाइको ।

इसके बाद ये (Is followed well by) युफोर्बिया, नैट्रम सल्फ, साइलीशिया ।

इसके बाद यह (Follows well) कैल्के कार्ब, लाइको, पल्स, सीपिया, सल्फर ।

५२ हिपर सल्फ (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) चोटो मे कैलेंडुला ।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोन, आर्निका, बेला, ब्रायो, आयोडाइड, लैकेसिस, मर्क, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वो, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, स्पजिया, सल्फर, जिंकम ।

इनके बाद यह (Follows well) एकोन, आर्निका, बेला, लैके, मर्क, नाइट्रिक ऐसिड, साइलीशिया, स्पजिया (क्रुप मे बुनिनघॉसन इस क्रम से अपने पाउडर देते थे—एकोनाइट २००, स्पजिया २००, हिपर २०० या एकोनाइट २००, हिपर २००, स्पजिया २००).

५३ इग्नेशिया (९ दिन)—

पूरक (Complementary) नैट्रम म्यूर ।

विरोधी (Inimical) कॉफिया, नक्स वोमिका, टैबेकम ।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्स, बेला, कैल्के कार्ब, लाइको, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, सल्फर ।

५४ आयोडियम (३० से ४० दिन)—

पूरक (Complementary) बेडियागा, लाइको ।

इसके बाद ये (Is followed well by) · एकोन, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, कैल्केरिया कार्ब, कैलि बाईक्रोम, लाइको, मर्क, फॉस, पल्स ।

५५ इपिकाक (७ से १० दिन)—

पूरक (Complementary) आर्निका, क्यूप्रम ।

इसके बाद ये (Is followed well by) ऐन्टिम टार्ट, आर्निका, आर्स (कमजोरी, ठड, क्रुप, बच्चो के हैजे मे), बेला, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमोमिला, चायना, क्यूप्रम, इग्ने, नक्स वोमिका, फॉस, पल्स, रिउम, सीपिया, टैबेकम, वेरेट्रम एल्बम ।

५६ कैलि बाईक्रोम (३० दिन)—

विरोधी (Inimical) कैल्केरिया कार्ब ।

इसके बाद ये (Is followed well by) · (जुकाम तथा त्वचा के रोगो मे इसके बाद ऐन्टिम टार्ट), पल्स ।

इनके बाद यह (Follows well) · एपिस के बाद (आँख आने पर), कैन्थरिस के बाद (डिसेंट्री मे जब मरोड बने रहें परन्तु जेली की तरह का स्राव निकले), आयोडियम के बाद (क्रुप मे)

५७ कैलि कार्ब (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) : कार्बो वेज।

इसके बाद ये (Is followed well by) आर्स, फ्लोरिक ऐसिड, लाइको, नाइट्रिक ऐसिड, फॉस, पल्स, सीपिया, सल्फर (कैलि कार्ब के बाद नाइट्रिक ऐसिड बहुत अच्छा काम करता है)

५८ क्रियोजोट (१५ से २० दिन)—

विरोधी (Inimical) . कार्बो वेज, चायना।

इसके बाद ये (Is followed well by) : आर्स (दूषित घाव मे), बेला, कैल्के कार्ब, कैलि कार्ब, लाइको, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वो, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फर।

५९. लैकेसिस (३० से ४० दिन)—

पूरक (Complementary) . हिपर, लाइको, आयोडियम, कैलि आयोडाइड, नाइट्रिक ऐसिड।

विरोधी (Inimical) : ऐसेटिक ऐसिड, ऐमोनिया कार्ब, डलकेमारा।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोन, एलूमिना, आर्स, बेला, कैक्टस, कार्बो वेज, कॉस्टिकम, चायना, साइक्यूटा, कोनायम, हिपर, हायोसाय, कैलि बाई, लैक कैना, लाइको, मर्क, नैट्रम म्यूर, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वो, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, साइलीशिया, सल्फर, टैरेन्टुला।

६०, लाइकोपोडियम (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) चैलिडोनियम, आयोडा, इग्ने, इपिक, कैलि आयोडाइड, लैके, पल्स।

विरोधी (Inimical) कॉफिया, (सल्फर के बाद लाइको नही देना चाहिये, सल्फर से पहले दे सकते हैं—सल्फर, कैलकेरिया, लाइको—यह त्रिक-क्रम है)

इसके बाद ये (Is followed well by) ऐनाकार्ड, बेला, ब्रायो, कोलचि, ड्रोसरा, ग्रैफा, हायोसा, कैलि कार्ब, लैके, लीडम, नक्स वो, फॉस, पल्स, सीपिया, साइलीशि, स्ट्रैमोनि, थैरीडियोन, वेरेट्रम ए, (लाइको के बाद कार्बो वेज का एक डोज प्रति ८वें दिन देने से लाइको का प्रभाव बढ़ जाता है)।

६१. मैग्नेशिया कार्ब (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) : कैमो, रिउम (बच्चे को दूध हज़म न होने और खट्टी बू आने पर रिउम मैग कार्ब का पूरक है)

इसके बाद ये (Is followed well by) कॉस्टि, फॉस, पल्स, सीपिया, सल्फर।

६२. मर्क्यूरियस सोल (१ से ३ दिन)—

पूरक (Complementary) . बैडियागा।

विरोधी (Inimical) · साइलीशिया (मर्क और साइलीशिया एक-दूसरे से ठीक पहले या पीछे नही देने चाहियें), ऐसेटिक ऐसिड से मर्क के लक्षण बढ़ जाते हैं।

इसके बाद ये (Is followed well by) · आर्स, ऐसाफेटिडा, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, चायना, हिपर, आयोडियम, लाइको, म्यूरियेटिक ऐ, नाइट्रिक ऐ, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फर, थूजा।

इनके बाद यह (Follows well) : एकोन, बेला, हिपर, लैके, सल्फ।

६३. मर्क्यूरियस कोर—

इसके बाद यह (Follows well) . एकोन, अर्जेन्टम नाइट्रिकम।

६४ नेट्रम कार्ब (३० दिन)—

पूरक (Complementary) · सीपिया।

इसके बाद ये (Is followed well by) · कैल्के कार्ब, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वोमिका, पल्स, सीपिया, सल्फर।

६५ नेट्रम म्यूर (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) · एपिस, कैपसिकम, इग्ने, सीपिया (नैट्रम म्यूर है क्रौनिक एपिस और कैपसिकम का, और वेजिटेबल एनैलोग है इग्नेशिया का)

इसके बाद ये (Is followed well by) · ब्रायो, कैल्के कार्ब, हिपर कैलि कार्ब, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फ, थूजा। (नये रोग में इग्नेशिया, पुराने रोग मे नैट्रम म्यूर—पुराने रोग मे लक्षणो के अनुसार दूसरी 'अन्त: औषध' —Inter-current— के बिना प्रयोग किये नैट्रम म्यूर का बार-बार प्रयोग ठीक नहीं)। चढ़ते बुखार मे इसे नही देना चाहिये। प्राय प्रत्येक औषधि रोग के उतरती हालत मे देना ठीक रहता है जिससे अगला दौर रुक जाता है। इसके प्रयोग के बाद अगर सिर का चकराना और दर्द बढ जाय या दुर्बलता देर तक बनी रहे, तो नक्स वोमिका से ये उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

इनके बाद यह (Follows well) कल्के फॉस, फैरम फॉस, कैलि म्यूर, कैलि फॉस, कैलि सल्फ, नैट्रम सल्फ ।

६६ **नाइट्रिक ऐसिड (४० से ६० दिन)—**

पूरक (Complementary) आर्स, कैलेडियम ।

विरोधी (Inimical) लैके (हनीमैन के कथनानुसार नाइट्रिक ऐसिड और सल्फर से पहले कैल्केरिया नही चलता, कैल्केरिया के बाद नाइट्रिक ऐसिड चल सकता है—देखो 'मैटीरिया मैडिका प्यूरा'—कैल्केरिया कार्व के प्रकरण मे)

इसके बाद ये (Is followed well by) · आर्निका (डिसेन्ट्री मे नब्ज छूटने की हालत मे), कार्बो वेज, कैलि कार्व, क्रियोज्रोट, मर्क, फॉस, पल्स, सिकेल, सीपिया, साइलीशिया, सल्फर, थूजा ।

इनके बाद यह (Follows well) ऑरम मेट, कैल्के कार्व, कार्बो एनि (ब्यूवो मे), हिपर (गले मे), कैलि कार्व (थाइसिस मे), मेज़ेरियम (सेकेन्डरी सिफिलिस मे), नैट्रम कार्व, पल्स, सल्फर, थूजा ।

६७ **नक्स वोमिका (१ से ७ दिन)—**

पूरक (Complementary) कैल्के कार्व, कैलि कार्व, सीपिया, सल्फ ।

विरोधी (Inimical) . नक्स से पहले या बाद मे कोई भी ऐसिड नही चलता, इग्नेशिया, जिंकम ।

इसके बाद ये (Is followed well by) · एक्टिया स्पाइ, आर्स, बेला, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के कार्व, कार्बो वेज, कोलचि, कौक्यु, हायो, लाइको, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फर ।

इनके बाद यह (Follows well) आर्स, इपिक, मैग म्यूर, फॉस, सीपिया, सल्फर ।

६८ **फॉसफोरिक ऐसिड (४० दिन)—**

इसके बाद ये (Is followed well by) : आर्स, बेला, कैल्के, फॉस, कॉस्टि, चायना, फेरम, फेरम फॉस, कैलि फॉस, लाइको, नैट्रम फॉस, नक्स वो, पल्स, सीपिया, सल्फ, वेरेट्रम ए । दुर्बलता करनेवाले पसीने और पतले दस्तो मे चायना के पहले या बाद अच्छा काम करता है ।

६९ **फॉसफोरस (४० दिन)—**

पूरक (Complementary) · आर्स, एलियम सीपा, कार्बो वेज, इपिक ।

विरोधी (Inimical) . एपिस, कॉस्टिकम ।

इसके बाद ये (Is followed well by) . आर्स, बेला, ब्रायो, कैल्के का,

कार्बो वेज, चायना, कैलि कार्ब, लाइको, नक्स वो, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, साइलीशिया, सल्फर।

७०. सोरिनम (३० से ४० दिन)—

पूरक (Complementary) . आर्निका के बाद (यदि डिम्ब-ग्रन्थि मे चोट लगी हो), बैसिलीनम (बैसिलीनम सोरिनम का एक्यूट है), लैक्टिक ऐसिड के बाद (गर्भावस्था की कय मे), सल्फर।

विरोधी (Inimical) चायना, कोनायम (कभी-कभी), लैकेसिस, सीपिया (कभी-कभी)

इसके बाद ये (Is followed well by) . एलूमिना, बोरैक्स, कार्बो वेज, हिपर, सल्फ (अगर लक्षण सल्फर के हो और उस से लाभ न हो रहा हो, तो सोरिनम देना चाहिये)

इनके बाद यह (Follows well) आर्निका, लैक्टिक ऐसिड, सल्फर।

७१ पल्सेटिला (४० दिन)—

पूरक (Complementary) . आख आने मे पल्स के बाद नाइट्रिक ऐसिड की जरुरत पड जाती है, कैमो, एलियम सीपा, लाइको, साइली, स्टैनम (स्टैनम मे पल्स की तरह मासिक बहुत जल्दी और बहुत अधिक होता है), सल्फयूरिक ऐसिड।

इसके बाद ये (Is followed well by) एनाकार्ड, एन्टिम टार्ट, आर्स, एसाफेटिडा, बेला, ब्रायो, कैल्के कार्ब, यूफ़ोर्बियम, ग्रैफ, इग्ने, कैलि कार्ब, लाइको, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वो, फॉस, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फर।

७२. रैननक्युलस—

विरोधी (Inimical) ऐसेटिक ऐसिड आगे या पीछे, अलकोहल, विनिगार, स्टैफिसैग्रिया, सल्फर।

इसके बाद ये (Is followed well by)- ब्रायो, इग्ने, कैलि कार्ब, नक्स वोमिका, रस टॉक्स, सीपिया।

७३ रिउम (२ से ३ दिन)—

अनुकूल (Compatible) इपिकाक।

पूरक (Complementary) · कैमो, बच्चे को दूध हज्म न होने और खट्टी बू आने पर मैग कार्ब की पूरक है।

इसके बाद ये (Is followed well by) . बेला, पल्स, रस टॉक्स, सल्फ।

७४ रस टॉक्स (१ से ७ दिन)—

पूरक (Complementary) ब्रोयोनिया, कैल्केरिया कार्ब।

विरोधी (Inimical) : त्वचा के रोग में एपिस से पहले या पीछे।

इसके बाद ये (Is followed well by) . आर्निका, आर्स, बेला, ब्रायो, कैक्टस, कल्के कार्ब, कल्के फॉस, कैमो, कोनायम, ड्रोसरा, ग्रैफा, हायो, लैके, मर्क, म्यूरियेटिक ऐसिड, नक्स वो, फ़ॉस, पल्स, सीपिया, सल्फर।

७५. रूटा (३० दिन)—

पूरक (Complementary) · कैल्केरिया फॉस (जोडो के दर्दो मे)

इसके बाद ये (Is followed well by) : कल्केरिया कार्ब, कॉस्टिकम, लाइको, फॉस-ऐ, पल्स, सीपिया, सल्फ, सल्फ्यूरिक ऐसिड।

इनके बाद ये (Follows well) · आर्निका, सिम्फाइटम।

७६ सैबाइना (२० से ३० दिन)—

पूरक (Complementary) . थूजा।

७७ सार्सापैरिला (३५ दिन)—

पूरक (Complementary) : एलियम सीपा, मर्क, सीपिया।

विरोधी (Inimical) ऐसेटिक ऐसिड।

इसके बाद ये (Is followed well by) बेला, एलियम सीपा, हिपर, मर्क, फॉस, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फर।

७८. सेलेनियम (४० दिन)—

विरोधी (Inimical) : चायना, शराब।

इसके बाद ये (Is followed well by) कैल्के कार्ब, मर्क, नक्स वोमिका, सीपिया।

७९. सीपिया (४० से ५० दिन)—

पूरक (Complementary) · नैट्रम कार्ब, नैट्रम म्यूर, नक्स वो, (नक्स इसके असर को बढा देता है), फॉस, सैबेडिला, सल्फर।

विरोधी (Inimical) ब्रायो, लैकेसिस, पल्स, दूध।

इसके बाद ये (Is followed well by) · बेला, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, ग्रैफ़ा, लाइको, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वोमिका, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सार्सापैरिला, साइलीशिला, सल्फर।

८०. साइलीशिया (४० से ६० दिन)—

पूरक (Complementary) : फ्लोरिक ऐसिड, पल्स (पल्स का क्रौनिक साइलीशिया है), सैनिक्यूला, थूजा।

विरोधी (Inimical) : मर्क सौल।

इसके बाद ये (Is followed well by) : आर्स, ऐसाफेटिडा, बेला, कैल्के कार्ब, क्लैमेटिस, फ्लोरिक ऐ, ग्रैफा, हिपर, लैके, लाइको, नक्स वो, फ़ॉस, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया (अगर साइलीशिया देते

हुए रोग मे सुधार होना रुक जाय, तो सल्फ़र की १-२ मात्रा देने के बाद साइलीशिया काम जारी कर के रोग को समाप्त कर देगा)

इनके बाद यह (Follows well) बेला, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस (रिकेट मे जब कैल्के फॉस काम न करे तब साइलीशिया काम कर देता है), सिना, ग्रैफा, हिपर, इग्ने, नाइट्रिक ऐसिड, फॉस।

८१ स्टैनम (३५ दिन)—

पूरक (Complementary) · पल्स।

इसके बाद ये (Is followed well by) बैसीलीनम, कैल्के कार्ब, हाइड्रोफोबीनम, नक्स वो, फॉस, पल्स, रस टॉक्स, सेलेनियम, सल्फर।

इनके बाद यह (Follows well) कॉस्टिकम, सिना।

८२. स्टैफिसैग्रिया (२० से ३० दिन)—

पूरक (Complementary) कॉस्टिकम, कोलोसिन्थ।

विरोधी (Inimical) · रैननक्युलस आगे या पीछे।

इसके बाद ये (Is followed well by) · कैल्के कार्ब, कॉस्टि, कोलोसि, इग्नेशिया, लाइको, नक्स वो, पल्स, रस टॉक्स, सल्फर। कॉस्टिकम-कोलोसिन्थ-स्टैफिसैग्रिया—इस क्रम से ये तीनो औषधिया लक्षणानुसार अच्छा काम करती हैं, यह इस का 'त्रिक' है।

८३ स्ट्रैमोनियम—

विरोधी (Inimical) कॉफिया।

इसके बाद ये (Is followed well by) · एकोन, बेला, ब्रायो, क्यूप्रम, हायोसाइमस नक्स वोमिका।

इनके बाद यह (Follows well) बेला, क्यूप्रम।

८४. सल्फ़र (४० से ६० दिन)—

पूरक (Complementary) · एलो, सोरिनम, एकोन, नक्स वो, पल्स (सल्फर इन तीनो का क्रौनिक है), अगर सल्फ़र और नक्स का एक-दूसरे का पूरक प्रभाव लेना हो तो सल्फर प्रात. और नक्स सायकाल देना चाहिये, एलो, फेफड़े के रोगो मे ऐन्टिम टार्ट या इपिकाक देने के बाद सल्फ़र देने से लाभ होता है। आर्स, बैडियागा, सोरिनम भी सल्फ़र के पूरक हैं। सोरिनम गर्मी पसन्द करता है, सल्फ़र गर्मी से भागता है। लकवे मे रस टॉक्स भी सल्फर की मदद करता है। साइलीशिया देते हुए बीच मे सल्फ़र देने से साइलीशिया अच्छा काम करता है।

विरोधी (Inimical) · हनीमैन का कथन है कि कैल्केरिया कार्ब के बाद सल्फर नही देना चाहिये।

इसके बाद ये (Is followed well by) : एकोन, एलूमिना, आर्स, बेला, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, ड्रोसरा, युफोर्बिया, ग्रैफा, मर्क, नाइट्रिक ऐसिड, नक्स वो, फॉस, पल्स, सार्सा, सीपिया।

इसके बाद यह (Follows well) : मर्क के बाद सल्फर अच्छा काम करता है।

८५ **सल्फयूरिक ऐसिड (३० से ४० दिन)—**

पूरक (Complementary) · पल्स।

इसके बाद ये (I s followed well by)· आर्निका, कैल्के कार्ब, कोनायम, लाइको, प्लैटिनम, सीपिया, सल्फर।

इनके बाद ये (Follows well) . आर्निका, कोनायम, रूटा (चोट मे)

८६. **थूजा (६० दिन)—**

पूरक (Complementary) · आर्स, राइनम, नैट्रम सल्फ, सैवाइना, साइलीशिया।

इसके बाद ये (Is followed well by) · थूजा के बाद मर्क और सल्फर बहुत ही अच्छा काम करते हैं। ऐसाफेटिडा, कल्के कार्ब, इग्ने, कैलि कार्ब, लाइको, पल्स, सैवाइना, पल्स, वैकसीनीनम।

इनके बाद यह (Follows well) ' मैडोराइनम, मर्क, नाइट्रिक ऐसिड।

८७ **वेरेट्रम एलबम (२० से ३० दिन)—**

पूरक (Complementary) · आर्निका।

इसके बाद ये (Is followed well by) एकोन, आर्निका, आर्स, बेला, कार्बो वेज, कैमो, चायना, क्यूप्रम, ड्रोसरा, इपिक, पल्स, रस टॉक्स, सीपिया, सल्फ।

इनके बाद यह (Follows well) ऐमोनिमा कार्ब, आर्निका, आर्स, बोविस्टा (रजोधर्म के दिनो मे उल्टी और पतले दस्त आना बोविस्टा का लक्षण है, ऐसे लक्षणो मे बोविस्टा की कमी को वेरेट्रम पूरा कर देता है), कैम्फर (हैज़े मे), कार्बो वेज, चायना, क्यूप्रम, इपिक, लाइको, नक्स वो (बच्चो की कब्ज़ के दर्द मे नक्स की कमी को वेरेट्रम पूरा कर देता है)

८८ **जिंकम (३० से ४० दिन)—**

पूरक (Complementary) सिर मे पानी भर जाने पर कैल्के फॉस।

विरोधी (Inimical) . कैमोमिला, नक्स वोमिका, शराब।

इसके बाद ये (Is followed well by) हिपर, इग्ने, पल्स, सीपिया, सल्फर।

इनके बाद यह (Follows well) ऐपिस, बेलाडोना।